गुजराती हिन्दी शब्दकोष

(२७००० शब्द)

संकलन कर्त्ता

विद्यावाचस्पति,

पं. गणेशदत्त शर्म्मा (गौड़)

प्रकाशक

जयदेवब्रदर्स बड़ोदा

प्रथमवार　　१९२४　　मूल्य ६ रुपये.

Pages 1-320 printed at the L. V. Press Baroda and the rest printed by Mr. C. I. Patel at the Laxmi Electric Printing Press Bhaukale's Lane Baroda and published by Anand Priya B. A. LL. B. for Jadeva Bros. Baroda

3-5-24

ओ३म

समर्पण

श्रीयुत नन्दनाथ केदारनाथजी दीक्षित,
बी. ए. एम. डी. पी.

विद्याधिकारी बड़ौदा राज्य

मान्यवर,

जो अखंड परिश्रम आप गतवर्षोंसे बड़ौदा राज्य तथा गुजराती प्रजा में राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार के निमित्त कर रहे हैं उसको देखकर यह ग्रन्थ आपकी सेवामें सादर समर्पित किया जाता है.

गणेशदत्तशर्म्मा.

गुजराती हिंदी शब्दकोष

विद्यावाचस्पति

पं. गणेशदत्त शर्मा (गौड)

ओ३म्

प्रकाशकीय वक्तव्य

हिन्दी प्रचार के लिए इस समय भारत में जो आन्दोलन होरहा है वह प्रत्येक हिन्दी प्रेमी को सुविदित ही है। यह भी प्रत्येक राष्ट्र प्रेमी जानता है कि कोई भी देश अथवा राष्ट्र जिस की बहुतसी भाषाए हो वह उन्नति के शिखर पर नहीं पहुच सकता। एक भाषाका प्रचार होने से देशमें शीघ्र उन्नति होता है इसी लिए जब हम भारत में एक भाषा के प्रचार का ध्यान करते हैं तब हमे प्रतीत होता है कि 'हिन्दी' ही एक ऐसी भाषा है जो भारत वर्ष की राष्ट्र भाषा हो सकती है। इसी उद्देश को ध्यानमें रखकर हमने 'गुजराती हिन्दी शिक्षक' नामा पुस्तक सन् १९१८ मे प्रकाशित की थी और हमे प्रसन्नता होती है जब हम देखते है की हमारे इस प्रयत्न से बहुत कुछ हिन्दी प्रचार भी हुआ।

गुजराती साहित्य में दिन प्रतिदिन उन्नति हो रही है एवम् हिन्दी जानने वाले भी इस भाषाके साहित्य रत्नो का अध्ययन करने के लिए लालायित होरहे थे इसी उद्देशको रखकर हमने विचार किया कि यदि एक कोष गुजराती से हिन्दी में हो तो जनता को कितना लाभ पहुचे खासकर उस दशा मे जब कि गुजराती साहित्य के बहुतसे ग्रन्थ हिन्दी में अनुवादित हो रहे हैं। हम इसी न्यूनताको पूर्ण करने की धनमेंही थे कि हमें पांचवर्ष पूर्व श्रीयुत विद्यावाचस्पति पं० गणेशदत्तजी शर्मा ने पत्र किया कि उन्होंने एक कोष तय्यार किया है जो कि यदि हम प्रकाशित करना चाहें तो वह दे सकते हैं। हमें अतीव हर्ष हुआ जब हमने देखा कि हमारे एक मित्रने इस कार्य को पूर्ण कर दिया है। तब हमने नये कोष बनाने के विचार को स्थगित कर दिया और पण्डितजी से भी पत्र व्यवहार शुरू किया जिसका फल स्वरूप यह गुजराती हिन्दी शब्द कोष आपके सन्मुख है।

हमें कदापि यह आशा न थी कि हम इतने महत्व पूर्ण कार्य को सुचारु रूप से संपादन कर सकेंगे परन्तु ईश्वरकी कृपासे कई अड़चनों के होते हुए भी हम इस कार्य को पूर्ण कर सके हैं.

हिन्दी प्रचार के लिए अनेक वर्ष हुए कि काशी की हिन्दी प्रचारिणी सभाने एक वैज्ञानिक कोषको प्रकाशित कर जनता का भारी उपकार किया था और उसके पश्चात हिन्दी साहित्य संमेलन के परिश्रम से हिन्दी भाषा के लिए एक सच्चा और भारी अनुराग इस समय सर्व देशसेवकों के हृदय में उत्पन्न हो गया है। यह देश के सौभाग्य का शुभ तथा महान् चिन्ह है। इसके अतिरिक्त **महर्षि स्वामी दयानंदजी सरस्वती, कर्मवीर श्रीयुत महात्मा गांधी विद्यामूर्ति देशहितैषी श्रीमंत सयाजीराव महाराज** और आर्य संस्कृति के उपासक आर्य जाति को एक सूत्र में संगठित करने वाले देशभक्त श्री **पंडित मदनमोहन मालवीयजी** आदि के पुरुषार्थका फल है कि सर्वत्र हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा बनाने के लिये सज्जन जन उत्साहित हो रहे है। इनसब उत्साही सज्जनों के हाथ में हमारा यह **गुजराती हिन्दी शब्दकोष** एक उपयोगी साधन सिद्ध होगा ऐसी दृढ आशा है। देशमें हिन्दी प्रचार के लिए जितने भी वाचनालय, पुस्तकालय, राष्ट्रीय विद्यालय, पाठशालाएं गुरुकुल तथा अन्य जो भी हिन्दी प्रचार के निमित्त संस्थाएं हैं वह इस कोषको अपनाएंगी ऐसा हमारा दृढ विश्वासहै। ईश्वर हम सबको राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार के लिए व्रतधारी बनावे यही प्रार्थना है।

हमें पूर्ण आशा है कि जनता इस पुस्तक की आवश्यकता को अनुभव करती हुई हमारे इस महान् कार्य में हाथ बटाएगी।

हम **श्रीयुत शांतिप्रियजी** का धन्यवाद करते हैं जिन्होंनें इस कोष के प्रूफादि देखने तथा प्रकाशित कराने में पूर्ण सहायता प्रदान की है।

श्रीयुत छोटालाल लालभाई पटेल मैनेजर लक्ष्मी इलेक्ट्रिक प्रेस बड़ोदा धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस कोष को अपने प्रेसमें छापकर हिन्दी भाषा प्रचार में भारी योग दिया।

विनीत,

आनंद प्रिय
बी. ए. एल. एल. बी.
प्रकाशक.

बड़ोदा.

ओ३म्

प्रस्तावना

बिना कोष के साहित्य का अंग अपूर्ण माना जाता है। जिस भाषाका कोष सर्वांग पूर्ण होता है वही भाषा पृथ्वीपर सर्वोच्च मानी जा सकती है। जब से हिन्दी भाषा को "राष्ट्र की भाषा" होनेका पद प्राप्त हुवा है तबसे इस बातकी बड़ी भारी आवश्यकता उत्पन्न हो गई कि लोगोंको एक दूसरे प्रांतकी भाषा का ज्ञान होना बड़ा जरूरी है। यदि बंगाल का रहनेवाला हिन्दी भाषाको सीखना चाहे और इसी तरह हिन्दी भाषा भाषी बंगला भाषाका ज्ञान प्राप्त कर उस साहित्य से लाभ उठाना चाहे अथवा बंगाल में हिन्दी प्रचार करना चाहे तो उसे दोनों भाषाओंका ज्ञान करना जरूरी हो जावेगा। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये सबसे पहिले अक्षर ज्ञान होना चाहिए और उसके बाद फौरनही कोषकी बड़ी भारी आवश्यकता आपड़ती है। अक्षर ज्ञानके लिये प्रायः सब भारतीय भाषाओंकी हिन्दी में पुस्तकें तैय्यार हो चुकी हैं किंतु कोषोंका अभी तक बड़ा भारी अभाव है। यह कोई साधारण अभाव नहीं कहा जा सकता बल्कि एक ऐसा भारी अभाव है जिसके बिना साहित्य पंगु (लंगड़ा) कहा जा सकता है।

भारतीय भाषाओं में से हिन्दी भाषाही राष्ट्र भाषा हो सकती है— यह अब निर्विवाद सिद्ध हो चुका है। आर्य धर्म्म के पुनरुद्धारक महर्षि श्री दयानन्द सरस्वतीजी महाराज ने अपने श्री मुखसे आजसे कईवर्ष पूर्व एक गुजराती होते हुवे भी अपने सत्यार्थप्रकाश में यह बात कह चुके हैं जिसे कि आज प्रत्येक भारतीय मान रहा है। उन्होंने लिखा है

कि "हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषाका पद दिये बिना भारतकी उन्नति असंभव है।" इसी लक्ष्यको आगे रखकर उस महात्माने अपनी सारी पुस्तकें अपनी प्यारी मातृभाषामें न लिखकर राष्ट्र-भाषामें ही लिखीं। पहिले पहिले उनकी लिखी हुई पुस्तकें बहुतही अशुद्ध रहीं किन्तु उन्होंने लिखी हिन्दी मेंही—कारण इसका यह था कि वे इसबात को अपने तपोबल द्वारा देख चुके थे कि आगे चलकर एक न एक दिन आर्य भाषा (हिन्दी) ही राष्ट्र-भाषा होनेका अत्युच्च पद पावेगी। यही हुआ भी। जबसे हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना हुई तबसे उसका लक्ष्य हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनानेका था। अष्टम हिन्दी साहित्य सम्मेलन जोकि प्रातःस्मरणीय महात्मा मोहनदास कर्मचन्दजी गान्धी महाराजके सभापतित्व में बड़े समारोह के साथ मध्य भारत के प्रसिद्ध नगर इन्दौर में हुआथा उस समय हिन्दी भाषा ही राष्ट्र भाषा होने योग्य है इस बातका शंख, बड़े ज़ोरसे फूंक दिया गया। उन्होंने अपने भाषणमें अपने श्रीमुखसे कहा था कि "आज हिन्दी से स्पर्धा करनेवाली दूसरी कोई भाषा नहीं है।" "अन्त में उन्होंने कहाथा कि "हिन्दी साहित्य सम्मेलन शीघ्रतासे एक दूसरे प्रान्त की भाषाका ज्ञान कराने वाली पुस्तकें बनवावे इत्यादि।

भारत के प्रसिद्ध प्रसिद्ध साहित्य सेवियों तथा नेताओं ने जैसे श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विदुषी एनिबिसेण्ट, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक आदि महापुरुषोंने भी हिन्दी को राष्ट्र भाषा के पद पर बिठाने के लिये अपनी अपनी सम्मतियां दीं। सारांश यहकि विविध प्रान्तवासी पुरुषोंने भी हिन्दीकोही राष्ट्रभाषाके पद पर बिठाना योग्य समझा। उसके बाद सम्मेलन ने पुस्तकें वगैरः तो जैसी प्रकाशित कीं वा लिखाई वे सब लोगोंको मालूमही हैं किन्तु मद्रास प्रांतमें हिन्दी भाषाका बहुत कुछ प्रचार हिन्दी साहित्य सम्मेलनने महात्मा गांधीकी सहायता से किया और अच्छी सफलता रही। महात्माजीने द्राविडमें हिन्दी भाषाका प्रचार होने के लिये अपने श्रीमुख से कहाथा कि "सबसे कड़वाई मामला

द्राविड भाषाओं के लिये है।" अर्थात् महात्माजीने अन्य सब भाषाओंको सरल माना है। सब भारतीय भाषाओंमें गुजराती ही एक ऐसी भाषा है जो अत्यंत सरल और थोड़ेसे परिश्रम से ही समझ में आ जाने वाली है। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि गुजराती लिपि बिलकुल हिन्दी लिपि (देवनागरी) से मिलती जुलती है। यदि थोड़ा बहुत फर्क है तो अ, ई, क, ख, च, ज, झ, फ, ब, भ, इन अक्षरों में है। यह भेद ऐसा थोड़ा है कि एक बार के देखलेनेपर ही सब समझ में आजाता है। बंगला लिपि में यह बात नहीं है और न द्रविड़ देशीय भाषाओं में ही है। हां एक लिपि औरभी है वह लिपि पंजाबी (गुरुमुखी) है। उसके अक्षरभी अधिकांश हिन्दी लिपिसे मिलते जुलते हैं। वहभी गुजराती भाषाकी भांति बहुत ही सहज है। किन्तु उसभाषा में इतने उत्तमोत्तम ग्रंथ नहीं है जिनको देखने के लिये उसे सीखना जरूरी है। सिवाय धर्म ग्रंथों के ऐसे और ग्रंथ नहीं हैं जो साहित्यमें अपना पद उच्च रखते हों। पंजाबी भाषाका ज्ञान करलेना जरूरी है और मुझे जहांतक स्मरण है "पंजाबी हिन्दी शिक्षक" नामसे एक पुस्तक भी प्रकाशित हो गई है। अस्तु।

गुजराती भाषा बड़ी मनोहर और मधुर है। इसके माधुर्य्य की प्रशंसा प्रायः लोग किया करते हैं। वास्तवमें गुजराती ऐसीही है इसका साहित्य भी हराभरा कह जासकता है। गुजराती किसी प्रकार हिन्दी भाषासे कम नहीं कही जा सकती। इसके ग्रन्थों और पत्रों के पढने से मनुष्य के ज्ञानकी वृद्धि होसकती है। गुजराती जान लेने के बाद लेखों तथा ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद और इसीप्रकार गुजराती भाषा भाषियों को हिन्दी पुस्तकों का अनुवाद करने से दोनों भाषाओं के साहित्य की पुर्ति हो सकती है और अपना भी लाभ हो सकता है। लेकिन दूसरी भाषाको सीखलेना बच्चोंका खेल नहीं है हरकोई नहीं सीख सकता। यद्यपि गुजराती और हिन्दी भाषा में अधिक भेद नहीं है तथापि उसे सीख

लेना सहज भी नहीं है । ऐसे स्थानों में जहां गुजराती या हिन्दी भाषा के जाननेवाले नहीं हैं और यदि हैं तो वे एक दूसरेको लिखना पढ़ना बोलना वगैरः नहीं सिखा सकते । ऐसे स्थानमें पुस्तक ही एक ऐसा साधन है जो दोनों को एक दूसरे की भाषाका ज्ञान करा सकती है । इसी लिये " जयदेव ब्रदर्स बड़ौदा " ने " गुजराती हिन्दी शिक्षक " पुस्तक प्रकाशित करके हिन्दी भाषाके जानने वालों के लिये गुजराती और गुजराती भाषा के जाननेवालों के लिये हिन्दी भाषा का सीखना सुगम कर दिया है । अक्षर ज्ञान होनेके बाद शब्द ज्ञान होना आवश्यक है और उसका एक मात्र साधन शब्दकोष है ।

गुजराती भाषासे मतलब गुर्जर देशीय भाषासे है । इस देश में समय के हेर फेर से नये नये राज्य हुए और नाश भी हुए । इस उलट फेर और घटा बढीका भाषा पर भी प्रभाव हुए बिना नहीं रहा । बहुत से प्रांतों के मनुष्यों तथा धर्मोपदेशकों के यहां आने से उनकी भाषा के शब्द भी गुजराती भाषा मे आगये, इस प्रकार गुजराती के शब्दों में खूबही वृद्धि हुई और यही मुख्य कारण है कि अर्बी, फार्सी, संस्कृत, लेटिन, अंग्रेजी, मराठी आदि भाषाओं के शब्द भी बिगड़े रूप में इस भाषा की वृद्धि कर रहे हैं ।

गुजराती के ऐसे बहुत से शब्दकोश हैं जो गुजरातीसे गुजराती या गुजराती से अंग्रेजी हैं, किंतु उनमे हिन्दी भाषाके प्रेमियों को कोई लाभ नहीं । अभीतक हिन्दी भाषा में कोई गुजराती कोष नहीं है, हिन्दी साहित्य में यह एक बड़ा भारी अभाव था । वर्षों से यह अभाव मेरे दिलमें खटक रहाथा और इसी ताकमें बैठा रहताथा कि शीघ्रही किसी गुजराती हिन्दी शब्दकोष के प्रकाशित होने की बात सुनाई पड़ेगी । किन्तु मुझे निराशा पूर्वक दिन काटने पड़े । दिन प्रतिदिन व्यग्रता ने प्रबलता धारण की । मैंने कई गुजराती हिन्दी प्रेमियोंको ऐसी पुस्तक के लिखने को कहा

परंतु किसीनेभी स्वीकार नहीं किया। मैं यह चाहता था कि कोई अनुभवी विद्वान ऐसी पुस्तक को लिखता तो साहित्यका बहुत कुछ उपकार होता किन्तु दिनोंतक मैं अपने विचारों को दबा न सका। व्यसनी व्यक्ति के व्यसन की तरह मेरी व्यग्रता बढती ही गई। तब यही इरादा किया कि खुदही इस कार्य को करूं। प्रस्तुत पुस्तक उसी विचारका फल है। उस परम पिता परमात्मा की कृपासे मैं अपने इस कार्य में आज सफल हो सका हूं।

मेरी मातृ-भाषा हिन्दी है, ऐसी दशामें इस कोष में अनेक त्रुटियों का रहजाना संभव है तथापि मेरे इस अनधिकार परिश्रम के लिये मैं अपने को क्षम्य समझता हूं। मैं अपने गुजराती हिन्दी जानने वाले पाठकों से नम्रता पूर्वक प्रार्थना करता हूं कि इस उपस्थित कोषकी त्रुटियों से मुझे या प्रकाशकों को अवश्य सूचित करते रहें ताकि इस के दूसरे संस्करण में वे दोषभी दूर कर दिये जावें। ऐसा करनेसे मुझपर तो कृपा होगीही किन्तु साथही हिन्दी भाषाकी सर्वांगसुन्दरता का भी साधन होगा। मुझे पूर्ण भरोसा है कि भाषा प्रेमी महाशय मेरी इस प्रार्थना को सदा ध्यान में रखने की कृपा करेंगे।

एक बात यहां और कहनेकी है कि गुजराती शब्दोंमें ह्रस्व दीर्घ के प्रयोगों मे कुछ शिथिलता है इस लिये कोष देखने वाले सज्जन इस बातका ध्यान रखें कि यदि शब्द ह्रस्वमें न मिलें तो दीर्घ में और दीर्घ में न मिलें तो ह्रस्व में देख लेना चाहिये। इसी तरह श, ष, स का हाल है—ज़रा इस बातका ख़याल रखना चाहिये। साथही यहभी कह देना ठीक समझता हूं कि कोषोंके लेखक "क्ष" को "क" में "ज्ञ" को "ज" में और "त्र" को "त" में लिखजाते हैं क्यों कि ये तीनों अक्षर संयुक्ताक्षर माने गये हैं। किन्तु मेरी यह इच्छा थी कि जिस प्रकार ये अक्षर वर्णमाला के अंतमें हैं उसी प्रकार मैं भी रखूंगा। परंतु

खेदकि क्ष और ज्ञ तक तो खयाल रहा और ज्ञ के लिये भूल गया अतएव वह त अक्षर में आगया। मैं अपनी इस भूल के लिये पाठकों से क्षमा चाहताहूं। आशा है आप क्ष त्र ज्ञ के लिये इस प्रार्थनाको नहीं भूलेंगे।

इस कोष के लिखने में मैंने वैसे तो कई कोषोंकी मदद ली है किंतु "नर्मकोष" गुजराती अंग्रेजी कोष और "गुजराती शब्दकोष" से विशेष सहायता प्राप्त की है अतएव मैं उक्त कोषोंके लेखकों का आभार मानताहूं। अब अन्तमें मैं अपनी भूलचूकों के लिये अपने सहृदय पाठकों से क्षमा चाहताहुआ इस "प्रस्तावना" को यहीं समाप्त करताहूं "बधिरःकोष विवर्जितः"

शांतिकुटी, आगर माळवा रामनवमी सं. १९८१ विक्रमीय.	प्रार्थी गणेशदत्तशर्मा गौड़.

शब्दोंके लिये व्याकरणशास्त्र विषयक संकेत.

(सं०)	=	संज्ञा
(क्रि०)	=	क्रिया
(स०)	=	सर्वनाम
(क्रि.वि.)	=	क्रियाविशेषण
(उ०)	=	उपसर्ग
(विस्म.)	=	विस्मयार्थ बोधक
(वि०)	=	विशेषण
(अ०)	=	अव्यय
( ) / (——)	=	कहावत वगैरःकेलिये।

कोष पर सम्मतिएं.

सुप्रसिद्ध राजोपदेशक श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्दजी सरस्वती (शिमला) "इस कोषकी वास्तव में बड़ी आवश्यकताथी जिसको पूर्ण कर आपने देश, जाति और राष्ट्रकी भारी सेवा की है। प्रत्येक हिन्दी प्रचारक संस्था तथा महानुभाव सज्जनको इसके प्रचारमें योग देना अपना पवित्र कर्तव्य समझना चाहिए।"

देशभक्त कुंवर चांदकरणजी शारदा अजमेर "इस समय मुझे बंबई प्रान्तमें घूमने का जो अवसर मिला उसमें मैंने अनेक स्थलों पर गुजराती भाषा भाषी सज्जनों के लिए इस जरुरत को अनुभव किया जिसे आपने गुजराती हिन्दी कोष द्वारा पूर्ण किया है। इस सफलता के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। आपने देश राष्ट्र और हिन्दी भाषाकी ऐसी सेवा की है जिसका वर्णन हो नहीं सकता। आपका यह कोष प्रत्येक देश हितैषी सज्जन के पास होना चाहिए। इसकी विशेषता एक यह है कि इतना उपयोगी होने पर बहुत सस्ता है।"

राजरत्न पं० आत्मारामजी एज्युकेशनल इन्स्पेक्टर बड़ोदा 'यह कोष मैंने विचारपूर्वक पढा। मैं इसको न केवल गुजराती बंधुओं के लिएही एक परम उपयोगी वस्तु समझता हूं किन्तु हिन्दीदानों के लिए भी यह एक बड़े कामकी चीज है। जिस देशमें शब्दकोषोंका अभाव है वहाँ कभी कोई संस्था, विद्यालय, पाठशाला अपना पूर्ण काम नहीं कर सकती, सच तो यह कि एक शब्दकोष सौ मास्टरों से भी बढ़ कर भाषा प्रचारका साधन है और मैं कह सकता हूं कि आपका उत्तम तथा उपयोगी कोष राष्ट्रीय भाषा हिन्दी प्रचार में एक प्रबल और अपूर्व साधन सिद्ध होगा। प्रत्येक हिन्दी प्रचारक देशहितैषी सज्जनको इसके प्रचार के लिए भरसक प्रयत्न करना चाहिए।"

अमरेली काठियावाडवाळा रा. छोटालाल र. भट्ट विकटोरीया स्पेशियालिस्ट लखे छे, " आ गुजराती हिन्दी शब्दकोषनुं पोताना पहेलुं पुस्तक अने वधाराला बीजा भागनां छपेला फार्म हुं जोई गयो छुं अने असाधारण प्रयत्नथी शास्त्रीय रीते तैयार थएला आ अतिउपयोगी ग्रंथनी गुजराती प्रजा पूर्ण कदर करे एम इच्छुं छुं ज्यारे हिन्दी भाषाने राष्ट्रभाषा तरीके स्वीकारवानुं देशना दरेक शुभ नायकोने आवश्यक लाग्युं छे त्यारे आवा एक कोषनी अगत्य अनिवार्य छे ए तो देखीतुंज छे. गुजरात विद्यापीठ जेवी प्रजाकीय संस्थाओमां अने वडोदरा राज्य जेवी देशहित-चिंतक राज्यमां आ पुस्तक टेक्स्टबुक थाय तोज थोडा वर्षमां देशनी बधी जनताने एक भाषाद्वारा एकठी थवानो सुयोग प्राप्त थाय. एवो एक प्रयत्न मात्र सेवा दृष्टिथीज आदरीने तेने सफळ पार उतारवा माटे श्री जयदेव ब्रदर्स वडोदराने अनेक धन्यवाद घटे छे. "

ओ३म्

गुजराती-हिन्दी-कोष

અ

અ-गुजराती वर्णमालाका प्रथम अक्षर निषेधार्थ उपसर्ग, (जिस शब्द के आगे आता है, उसका अर्थ विपरीत हो जाता है)
અકર (सं) बनावट, दिखावट.
અકડબાજ (सं) छैला, (गु. सं.) चटकीला, भड़कीला.
અકડા અકડી (सं.) स्पर्द्धा, रीस,
અકડાઈ (सं.) भड़कीलापन, गर्व, दिखाना, अकड़ [ठनना
અકડાવું (क्रि.) शेखी करना, बनना
અકથનીય (गु. सं.) अकथनीय,
અકબરી મોહોર (सं.) अकबर के समय का एक स्वर्णका सिक्का
અકર્મ (सं.) बुराकाम
અકર્મક (गु. सं.) अकर्मक (क्रिया)
અકર્મી (,,) कम्बख्त, अभागा,
અકરાંતિયું-યો (गु. सं.) भुक्खड़, अधिक खानेवाला
અકડૂ (गु. सं.) उकडू, एक प्रकार की बैठक-पंजों के बल बैठा हुवा।
અકલગરો (सं.) रीढ, कौंचा, अकरकरा। [बुद्धि-चातुर्य.
અકલ (गु. सं.) बुद्धिमान, અકલ-
અકલ્પિત (गु. सं.) अकल्पित, सत्य,
અકલ્યાણ (सं.) कम्बख्ती, दुर्भाग्य।
અકસ (सं.) कीना, बुग्ज लाग रखना [करनेवाला।
અકસખોર (गु. सं.) कीनावर द्वेष
અકસ્માત (सं०) अचानक घटना
અકસર (क्रि. वि.) प्रायः, अगर, शायद
અકસીર (गु. सं.) अकसीर
અકળ (गु. सं.) बुद्धिसे परे, समझ से बाहर, जो समझा न जा सके।
અકળ વિકળ (गु. सं.) घबराया हुवा, परेशान [बेचैनी
અકળામણ (सं.) व्याकुलता,

અકળાવવું (क्रि.) घबरा देना, थका देना, या दिक करना.

અકળાવું (क्रि.) थक जाना, घबरा जाना, दिक हो जाना।

અકાળત (गु. सं.) गूढ़, गुप्त

અકાબર (सं.) बड़ा आदमी, भला मानस

અકારણ (गु. सं.) अकारण व्यर्थ,

અકારત (गु. सं.) बे फायदा, नाहक, फलहीन।

અકારૂં (वि.) अरोचक, नापसंदीदा।

અકાલિક (वि.) असामयिक, कुसमय। [काल।

અકાલ (वि.) असमय, अप्राप्त-

અકાળ મૃત્યુ (सं.) बेमौत, असामायिक मृत्यु।

અકીક (सं.) संगे सुलेमानी, एक प्रकार का मूल्यवान पत्थर

અકીર્તિ (सं.) निन्दा,

અકુપ્ય (सं.) स्वर्ण અકૂપાર (सं.) समुद्र [कुलका।

અકુલીન (वि.) अकुलान, नीच

અકૃપા (सं.) अवकृपा, नाराज़ी।

અકેક (क्रि. वि.) एक के बाद एक।

અકોટી (सं.) कान की बाली।

અકંચન (वि.) दीन, गरीब।

અક્કલ (सं.) बुद्धि, समझ, जिहन, बोध, ज्ञान [बांका

અક્કડબાજ (वि.) अलबेला, रंगीला

અક્કલમંદ (वि.) अक़्मन्द, बुद्धिमान,

અક્કલ હોંશિયારી (सं.) कुशल बुद्धि, राजी खुशी से।

અક્ષ (सं.) पांसा,

અક્ષત (सं.) छिलके सहित चांवल, धान,

અક્ષય (वि.) बेहद, अनन्त

અક્ષર (सं) हुर्फ़, अक्षर, ब्रह्म.

અક્ષરગણિત (सं.) बीजगणित, ग़लजबरा।

અક્ષરે અક્ષર (क्रि. वि.) हर्फ़ ब हर्फ़, अक्षर, अक्षर, शब्दशः।

અક્ષાંશ (सं.) अक्षांश।

અક્ષિ (सं.) नेत्र, आंख. नयन.

અખંડ-ડિત (वि.) सम्पूर्ण, पूरा. अविभाजित।

અખંડનીય (वि.) संपूर्ण, अखण्डनीय।

અખંડસૌભાગ્ય (सं.) सदासुहाग,

અખંડ્ય (वि.) अकाट्य, जो खंडन न किया जा सके। [खबर, सन्देश।

અખબાર (सं) सम्वाद, समाचार

અખત્યાર (सं.) अधिकार, जोर

અખબારનવીસ-નીસ (सं.) सम्वाद दाता [प्रसिद्ध फल

અખરોટ (सं.) अखरोट नामक

અખાડાઠરવા (क्रि.) अवहेलना।

અખાડો (सं.) अखाडा, मैदान, दंगल [गड्ढा।

અખાત (सं.) खाड़ी, खलीज,

અખિલ (वि.) समस्त, तमाम, अखिल। [पार न हो।

અખુટ (वि.) अनन्त, जिसका

અખોડ (वि.) अखरोट, निर्दोष

અખોવન (सं.) एक स्त्री–न विधवा और न जिसका बच्चा मरा हो।

અખતરો (सं.) परीक्षा, परख, जाँच।

અખ્યાણું (सं.) एक प्रकारकी दक्षिणा, जो अन्न या फल रूपमे पुरोहित को त्यौहारपर दी जाती है।

અગ (सं.) सर्प, सूर्य, पर्वत, एक वृक्ष।

અગડબંબ (सं.) मोटा, स्थूल।

અગણિત (वि.) असंख्य, बेशुमार, अनन्त, बेहद, अगणित।

અગત્ય (सं.) आवश्यकता, इच्छा, चाह, जरूरत,

અગત્યનું (वि.) आवश्यक, जरूरी, ध्यान देने योग्य, उपयोगी, प्रधान।

અગથીઓ (सं.) एक प्रकारका पुष्प

અગ્નિ (सं.) ताप, आग, दर्द,

અગમ (सं.) भावी घटना, भावी वृतांत।

અગમનિગમ (सं.) भूत भविष्य

અગમચેતી (सं.) दूरदर्शी, अग्रदृष्टि, पूर्व ज्ञानी, पूर्व विधानी, भविष्यवक्ता।

અગમબુદ્ધિ (सं.) दूर अंदेशी, अगम पूर्व विचार।

અગમબુદ્ધિવાળુ (वि.) दूर दर्शी

અગમ્ય (वि.) गंभीर, कठिन, गूढ़, पहुच से बाहर।

અગર (सं.) नमक के कढाव- समुद्रके निकटस्थ गढा जो नमक बनानेके काम मे आता है। अगर यदि, कदाचित

અગરજો (अ.) कदाचित

અગરનહીં (अ.) यदि नहीं, अन्यथा

અગરબત्ती (सं) अगरबत्ती, ऊदबत्ती, सुगंधित पदार्थों द्वारा तैयार की हुई एक लम्बी सलाई, गन्धशलाका।

અગવડ (सं.) कठिनता, मुश्किल, दुख, पीड़ा, बाधा। [रहनुमा

અગવો (सं.) अगुवा, पथप्रदर्शक,

અગાડે-થી, અગાડી-થી-(क्रि. वि.) पहिलेसे, पेशतरसे ।

અગાડી પછાડી, (क्रि वि.) आगे [पाछ ।

અગાત (क्रि. वि) पूर्वकालमे, पुराने वक्तोमे ।

અગાધ (वि.) बहुत गहिरा, अधिक औंड़ा, अगाध ।

અગાર (सं.) भवन, मकान, घर

અગાસી (सं) चबूतरा, छत, कोठा ।

અગીઆરા ગણવા (क्रि) भाग- जाना, लेभागना, रफूचक्कर होना ।

અગીઆરી (स) सिघड़ी, अंगीठी, बरोसा, आग रखने का स्थान ।

અગુણી (वि) कृतघ्न, अधन्यवादा

અગોચર (वि) बेसमझ, अदृश्य, न मालुम पड़नेवाला, अगोचर ।

અગ્નિ-(सं) आग, अग्निदेव ।

અગ્નિકુંડ (सं.) हवन की वेदी । अग्निकुड ।

અગ્નિકોણ (सं.) पूर्व और दक्षिण के बीचकी दिशा, आग्नेयकोण ।

અગ્નિહોત્રી (सं.) वह ब्राह्मण जो नित्य अग्निहोत्र करता हो, उस अग्नि को सदा सावधानी से सुरक्षित रखनेवाला ।

અગ્ર (सं.) सिरा, पहिला, अग्र ।

અગ્રગામી (वि.) आगे चलनेवाला ।

અગ્રજ (वि.) पहिले पैदा हुवा, बड़ा ।

અગ્રભાગ (सं.) आगेका हिस्सा, [नोक ।

અગ્રવાદી (सं.) मुद्दई, वादी ।

અગ્રાહ્ય (वि.) अलीन, नापसन्द, नागवार,

અગ્રેસર (वि.) अगुवा, एक खास [मनुष्य, अव्वल ।

અઘ (सं) अपराध, पाप, अधर्म ।

અઘટિત (वि) अनुचित, बेजा ।

અઘરણી (सं) प्रथम गर्भ, सगर्भ ।

અઘરું (वि) कठिन, सख्त ।

અઘ્રામણ (सं.) अतिसार, संग्रहणी । [पक्षियो का विष्ठा ।

અઘાર (सं.) चिड़ियों की बीठ ।

અઘોર (वि) खतरनाक, भयंकर, हानिकारक, दुष्ट, [आलसी ।

અઘોરી (सं.) निर्दय, हानिकर,

અંક (सं.) अक, संख्या, अदद, अक (नाटक)

અંકગણિત (सं.) अंकगणित, हिसाब किताब । [खीचा हुवा ।

અંકાવવું (क्रि) चित्रित, रेखा

અંકોડાબંધ (क्रि. वि.) एक पंक्ति में एक सतर में ।

અંકોડો (स.) अंकुश, आकडा, हुक,

અંકોળ (सं.) एक प्रकार का छोटा वृक्ष,

અંગ (सं.) शरीर, जिस्म, भाग, खंड, टुकड़ा, अंग।

અંગઉધાર (वि.) उधार लिया हुवा, कर्ज लिया हुवा।

અંગકાઠી (सं.) शरीर पञ्जर,

અંગ ચપલતા (सं.) फुर्ती, तेजी, चपलता।

અંગજા (सं) बेटी, पुत्री, तनया, सुता। [जिस्मानी–ताकत।

અંગબળ (सं.) शारीरिकशक्ति,

અંગરખુ (सं.) अंगरखा, कोट।

અંગરોગ (स) देहरोग, शरीररोग अंगरोग। [देहका भाव।

અંગ -લક્ષણ (सं.) शरीरके लक्षण।

અંગવર્ણ (स.) रूप–रंग,

અંગવસ્ત્ર (सं) पोशाक, दुपट्टा, रूमाल। माशूका। [अंग स्थिति।

અંગ સ્થિતિ (स.) उस भाव,

અંગારો–રા (स.) आग का अंगारा जलता हुवा कोयला या अन्यवस्तु

અંગીકાર (स.) स्वीकार अंगीकार

અંગીકાર કરવું (क्रि.) स्वीकार करना, मंजूर करना।

અંગીકૃત (वि.) अंगीकृत। स्वीकार किया हुवा। [अंगोछा।

અંગુછિ (सं.) रूमाल, तौलिया,

અંગુઠી (सं.) अंगूठी, मुद्रिका।

અંગુઠો–ઠ (सं.) अंगुष्ठ, अँगूठा।

અંગૂર (सं.) अंगूर नामक प्रसिद्ध फल।

અંગેઠી (स.) चूल्हा, भट्ठी, भाड़, अंगीठी [के निवासी अंग्रेज,

અંગ્રેજ (स.) यूरोपीयन, इङ्गलेण्ड

અંઘોળ (स) स्नान, मुँह हाथ धोना [नहाना।

અંઘોળવું (क्रि.) स्नान करना,

અંગેઅંગ। (क्रि वि.) प्रत्येक अंगमें।

અચકવુ (क्रि) ठहरना, अटकना, हकलाना, डगमगाना, रुकजाना, हिच किचाना, आगा पीछा करना सन्देह करना तुतलाना, हटाना

અચકાવવુ (क्रि.) अकस्मात ठहराना, अचानक रुकना, रोकना, अटकाना, अलग करना।

અચનં અચકે। (सं) एक प्रकारका खेल जो लड़कियां खेला करती हैं।

અચંચલ (सं) सुस्त, मूढ, मन्द, स्थिर दृढ, अचंचल।

અચાનક (क्रि वि.) अकस्मात, अचानक एकाएक,

અચંબો (क्रि. वि.) आश्चर्य, अचम्भा, घबराहट।

અચર (वि.) स्थिर, स्थावर, अचर

અચરત (सं.) आश्चर्य, अद्भुत, विस्मय

અચરતી (सं.) अचंभा, घबराहट।
અચળ (वि.) अचल, दृढ, मजबूत।
અચાર (सं.) अचार, अथाना,
અચાનક (क्रि वि) अकस्मात् एकाएक [से बाहर, अचिंत्य।
અચિંત્ય (वि.) अशोच्य, समज
અચૂક (वि.) ठीक, सही, उचित,
અચેત् (वि.) बेहोश, निर्जीव, अज्ञानी, अनाड़ी, अनजान।
અચેતન् (वि.) देखो अचेत्
અચ્છુ-ચ્છો (वि.) उत्तम, उम्दा, अच्छा, श्रेष्ठ, ठीक, बहुत ठीक।
અચ્છેદ્ય (वि) जो काटा न जा सके
અચ્છેર (सं) आधासेर, दो पाव आठ छटाँक
અચ્યુત (सं) अविनाशी, ईश्वर, अच्युत। [दुष्प्राप्य,
અછત (सं.) खाली, कमी, रहित,
અછબડા (स) एक प्रकारकी चेचक
અછોડો (स.) नाथ (बैलकी), जजीर।
અછોવાનાં કરવાં (क्रि.) खुश करना, खातिर करना, मन रखना, पुचकारना, प्यार करना।
અજ (सं.) ब्रह्मा, ईश्वर, बकरा, अजन्मा, जो पैदा न हुवा हो।
અજગર (सं.) बड़ा साँप, अजगर।
અજબ (क्रि.) अद्भुत, अजीब, विस्मयकारक।
અજમાવવું (क्रि.) अजमाना, प्रयत्न करना, परिश्रम करना, परीक्षा करना, जाँच करना, परख करना।
અજમાયશ (स.) प्रयत्न, परीक्षा, जांच, परख। [मोदा।
અજમો (सं) अजवायन, अज-
અજમોદ-દા (सं.) अजमोद.
અજમોખોડી (सं.) खुरासानी अजवायन।
અજરામર (वि.) अमर्त्य तथा अजर जो न मरे न बूढ़ा हो। ईश्वर। [घटना।
અજલ (सं.) मृत्यु, अन्त,
અજવાળવું (क्रि) उजालना, धोना। [नी से प्रकाशित।
અજવાળી (वि) चाँदनी, चाँद-
અજવાળું (सं.) प्रकाश, उजाला, रोशनी, जगमगाहट।
અજા (सं.) बकरी, अजा।
અજાણ-ણ્યું (वि.) अनजान, अज्ञान, मूर्ख, अशिक्षित।
અજાણ્યો (सं.) अद्भुत, विदेशी, अनजाना।

अजपालक (सं.) गड़रिया, भेड़बकरी पालने वाला।

અજીઠું (वि.) जूठा, उच्छिष्ट।

અજીત (वि.) अजेय, जो न जीता गया हो, अजीत।

અજીરણ (सं.) बदहज़्मी, अजीर्ण, कुपच। ताजा, नया।

અજ્ગુ (सं.) मात्रा " ा "

અંચર (सं.) अंत आखिर,

અંજન (सं.) नेत्रा मे लगाने का अजन, सुरमा, काजल।

અંજાઈ જવું (क्रि) चौंधिया जाना, ठगे जाना, धोका खाना।

અંજીર (सं.) अंजीर नामक प्रसिद्ध फल। [बचाव, दामा।

અઝર (सं.) बहाना, छुटकारा,

અટક (सं.) इण्डस नाम्नी अटक नदी, कुल नाम, पद।

અટકચાળું (वि.) हानिकारक, दुष्ट, बुरा, रसिक, ठठेबाज।

અટકણ (सं.) स्तंभ, आश्रय,

અટકવું (क्रि.) ठहरना, इन्तजार, करना, प्रतिज्ञा करना, रोकना अटकना। [अटकल, अनुमान।

અટકળ (सं.) अन्दाज, कयास,

અટકળ બાંધવી (क्रि.) अनुमान करना, अंदाज बांधना, कयास करना।

અટકાવ (सं.) बाधा, रोकटोक, मासिक—धर्म, रजस्वला, रजोदर्शन।

અટકો મટકો (सं.) नाज नखरा, चटक मटक। [भ्रमण।

અટણ (सं.) प्रवास, यात्रा,

અટપટું (वि.) अटपटा, कठिन, घबरानेवाला, पेचदार, उलझा हुवा, [विचरना।

અટવાવું (क्रि.) घूमना, भटकरना

અટામણ (सं.) पलोथन, चांवलो का आटा जो गेहूँ की रोटियों को कठोर बनाने के लिये प्रयोग किया जाता है।

અટારી (सं.) ऊपरका मकान, दूसरी मंजिल, अटारी, अट्टालिका,

અઠવાડિયું (सं.) सप्ताह, हफ्ता, सात दिनों की अवधि।

અઢીંગવું (क्रि.) विश्राम करना, आराम लेना, झुकटना, संभालना निहुरना, टेकलगाना सहारा लेना।

અઠાસીયાં (सं.) पैरमें पहिनने का एक प्रकार का आभूषण।

અડ (सं.) बाधा, रोक टोक, अटकाव। दृढता, धुन, हठ, जिद, सरकशी

અડકવું-અડવું (क्रि.) मिड़ जाना, उसकाना, विघ्न डालना, पहुँचना।

અડકાએલી (सं.) रजस्वला स्त्री ।

અડકાવવું (क्रि.) बंद करना, ठहराना ।

અડગડી (सं.) ठहरानेवाली, अड़गड़ी जो द्वार पर लकड़की दरवाजा बन्द करने को लगाई जाती है, आगल । [बाधा ।

અડંગો (सं.) अडंगा, रुकावट,

અડચણ (सं.) कठिनता दुख, पीडा, बाधा, तकलीफ ।

અડતલો (स.) रक्षा, शरण, बचाव, पक्ष, आश्रय, पनाह, सहारा, महारा, खम्भा ।

અડતું (वि.) निकट, समीप, पास,

અડથલ (वि.) मजबूत, दृढ़, बड़ा, बलवान, साहसी, मोटा ।

અડથલો (सं.) एक बड़ा रोक ।

અડદ (स.) उड़दकी दाल, उड़द ।

અડદાલો કહાડવો (क्रि.) बुरा तरह से पाटना, काठण दण्ड देना ।

અડધું (वि.) आधा, $\frac{1}{2}$,

અડધો (सं.) अठन्ना

અડપલું वि.) दुष्ट, ठठेबाज, व्यर्थ दखल देनेवाला, अनधिकार चर्चाशील, हस्तक्षेप करनेवाला ।

અડબટ (सं.) घूँसा, मुक्का, मांड़, पंच ।

અડબંગ (सं.) मूर्ख, बेवकूफ, जिद्दी ।

અડવું (क्रि.) छूना, स्पर्श करना, (वि.) सीधा सादा । सादा ।

અડવાણગ (सं.) उपानह, नंगे पैर ।

અડસો (सं.) कूत, जांच, आंक अटकल से कूत ।

અડાયું (सं.) कंडा, छाना, ऊपला।

અડાળી (सं.) बरांडा बरामदा, उसारा । [अड़ियल ।

અડિયલ (वि.) हठी, जिद्दी, मूर्ख,

અડીવેળા (क्रि. वि.) आवश्यकता के समय, जरूरत के वक्त, कठिन समय

અડુકદડીયું (वि.) उथळा पुथल ।

અડોઅડ (वि.) निकट, पास, समीप बराबर ।

અડોસી પડોસી (स.) पड़ोसी, पास रहनेवाला, हमसाया ।

અણઘડ (वि) निकम्मा, बेकार । [कड़ा, मजबूत ।

અણમ (वि.) दृढ़, पक्का, ठोस,

અઢી (वि.) ढाई, अढाई, $2\frac{1}{2}$,

અઢેલવું (क्रि.) विश्राम करना, आराम करना । टिकना, झुकना ।

અણઆવડી-કસ્બી (वि.) बेहुनर, अजान, अनाड़ी ।

અણુંકૂટ (सं.) अन्नकूट

અણુખત (सं.) पक्षपात, ईर्षा, डाह, घृणा, अरुचि, [नाखुश।

અણગમતું (वि.) अप्रसन्न,

અણઘટતું (वि.) अघटित, अनुचित, बेजा, अयोग्य.

અણચિંતુ (वि.) आकस्मिक, एकाएक अचानक।

અણછતું (वि.) गुप्त, खानगी, घर।

અણદીઠું (वि.) अनदेखा, अदृष्ट, अलक्ष।

અણબનાવ (वि.) झगड़ा, अनबन, नाराजी, रुष्टता।

અણમાનીતું (वि.) अमान्य, कृपाम बाचत, अप्रिय।

અણવટ (स.) एक प्रकार का चाद का आभूषण।

અણવર (न) दुल्हा या दुल्हिन का साथी। विनायक (विन्दायक)

અણસમજુ (वि.) मूर्खता, बेसमझ,

અણસારો (सं.) इसारा करना, सैन करना, नजारा मारना। आँख झपकाना या मटकाना।

અણહદ (वि.) असाम, बेहद।

અણિમા (सं.) अष्टसिद्धियोंमे से एक।

અણી (सं.) नोंक, भेग, छोर, लिखनेकी पत्ती, काग्रुद समय। पैना।

અણી કાઢવી (क्रि.) धार करना, पैना करना, तेज करना।

અણીઆળુ-દાર (वि.) पैना, तेज, निगित।

અણીદાર કાંટા (सं.) खूंटी, कील।

અણીશુદ્ધ (वि.) सारा, पूर्ण, बिलकुल,

અણુ (स.) अणु, परिमाण,।

અણોજો (सं) छुट्टी, तातील।

અંટવાવું (क्रि.) घबड़ाना, फैंसाना, उलझाना।

અંટસ (सं.) दुश्मनी, फर्क, अन्तर, विराध, वैर, शत्रुता।

અંડ (स) अंडा, अडकोष वृषण।

અંડજ (वि) अंडा देनवाले। अउज। [दाकल, अंडाकृति।

અંડાકૃતિ (वि.) अंड की

અતડો-ડું (वि.) चुपचाप, दूर, चालाक, अलाहदा। [विदेशी

અતરાઈ (स.) अदभुत, विचित्र,

અતરે (क्रि. वि.) यहाँ, इसजगह।

અતલસ (सं.) एक रेशीन मशीना कपड़ा। [गवैया।

અતાઈ (सं.) सुरागी, अच्छा

અતિ-તી (वि.) अधिक, अति, अत्यंत, जियादः, बहुत।

અતિકાળ (सं.) दीर्घकाल, कालान्तर, देर। [जियादः।
અતિઘણું (वि.) अत्यधिक, बहुत
અતિત્ (सं.) जोगी, फकीर, भिक्षुक, संन्यासी, योगी, अतीत।
અતિવાદી (सं.) शूर, वीर, बहादुर,
અતિશય (वि.) अतिशय,
અતિશયોક્તિ (स.) अतिशयोक्ति, बढकर बोल, अत्युक्ति वाक्य-विस्तार।
અતિસાર (सं.) एक प्रकार का रोग, अतिसार, दस्त लगना।
અતુલ્ય (वि.) अनोखा, अनूप, बेमिसाल, अनूठा, अद्वितीय।
અતુળ (वि.) अतुल, जो तोला न जा सके।
અત્તર (सं.) इत्र, अत्तर, सुगन्ध।
અત્તરઘડી (क्रि. वि) अभी हाल, एकदम, इसी क्षण, अभी अभी।
અત્તારી (सं.) अत्तार, इत्र का धन्धा करने वाला, गन्धी।
અત્યંત (वि.) अत्यंत, बहुत।
અત્યાર પછી (क्रि. वि.) इसके आगे, इसके बाद।
અત્યાર લગી (क्रि. वि.) अद्यावधि, अभी तक, इस समय तक।
અત્યારે (क्रि. वि.) अभी, इसी वक्त। [जगह।
અત્રે (क्रि. वि.) यहाँ, इसी
અથ (क्रि. वि.) अथ, आरंभ, शुरू।
અથ ઇતિ (क्रि. वि.) आद्यंत, आरंभ से अंत तक। अथ इति।
અથડાવું (क्रि.) टकराना, मठरगस्त करना। [वेद।
અથર્વ (सं.) अथर्व वेद। चौथा
અથવા (अ.) या, यदि, अगर, कोई प्रत्येक, एक न एक, अथवा।
અથાગ (वि.) अथाह, अगम्य, बहुत–गहिरा।
અથાગ ખાડો (सं.) गहिरा गड्ढा।
અથાણું (सं.) अचार, मुरब्बा, अथाना।
અથોટી (सं.) हथौटी, हथकडा, चतुराई, चालाकी, अनुभव।
અથોડી–ડો (सं.) हथौडा, घन।
અદકું (वि.) अधिक, जियादः।
અદખોલું (वि.) अदखुला, अर्द्धविकसित।
અદગ્ધ (वि.) बेदगा, बेजला, अदग्ध। [गरीब, नम्र, अदना।
અદના (सं.) नीच, कमीना,
અદબ (सं.) अदब, मान, इज्जत।

અદ્ભુત (वि.) विचित्र, अद्‌भुत।
અદલ (वि.) उचित, वाजिब, निष्पक्ष, न्यायी, सत्य, शुद्ध.
અદલબદલ કરવું (क्रि.) हेरफेर करना, अदलबदल करना।
અદલા બદલી (सं.) हेरफेर, परिवर्तन, अदल बदल।
અદસરતું (वि.) अधमरा।
અદા (सं.) भाव, चेष्टा, अदा, वैर, विरोध, घृणा, नफरत, द्वेष।
અદા કરવું (क्रि.) ऋण चुकाना।
અદાલત (सं.) अदालत, न्यायालय। [दुश्मनी, शत्रुता।
અદાવત (सं.) वैर, विरोध,
અદીન (सं.) धनवान, दौलतमंद।
અદીપે (सं.) भेंट, उपहार।
અદેખાઇ (सं.) ईर्षा, डाह, कुढ़न, जलन। [वाला।
અદેખું (वि.) ईर्षालु, डाह करने
અદ્રસ્ય (सं.) अदृश्य, अलोप।
અદ્રવ્ય (वि.) जो न पिघले (टिघले) अद्रव।
અદ્યાપિ (क्रि. वि.) अभी तक, इस समय तक, अद्यावधि।
અદ્રક (सं.) अदरख।
અદ્રિ (सं.) एक पहाड़।
અધ (वि.) अर्द्ध, आधा, ½।
અધકચરું (वि.) अधकचरा, गदर बेपका, अधपका, अधसीजा।
અધણીયાતું (वि.) बे मालिक, स्वामिहीन, अनाथ।
અધધધ! (विस्मय.) ओफ! हा!—अहाहा!
અધમ (सं.) नीच, जघन्य, निम्न, कमीना, खळ, निकम्मा, अधम।
અધમા (सं.) नीच स्त्री, दुष्ट भार्या। [घायल, क्षत।
અધમુઓ–વો (वि.) अधमरा,
અધર (वि.) लटकता हुवा, झुलता हुवा। बे सहारा। असहाय। (सं.) नीचे का ओष्ट, अधर।
અધરણ (सं.) वह पानी जो चावल, दाल आदि वस्तु उबालने के लिये चूल्हे पर पहिले से चढ़ा दिया जाता है। [सर्व शक्तिमान।
અધર ધરનહર (सं.) परमात्मा,
અધર્મ (सं.) पाप, दोष, अन्याय, अधर्म।
અધર્મિક (वि.) अधर्मी, पापी, बेदीन, भ्रष्ट। [अधर्मा, धर्मच्युत।
અધર્મી (वि.) बे दीन, विधर्मी,
અધમુવું (वि.) अधमरा, अर्द्धमृत
અધિકમાસ (सं.) लौंदका महीना, पुरुषोत्तम मास, अधिक मास।
અધિકાર (सं.) अधिकार, स्वत्व।

અધિકારી (सं.) अधिकारी।
અધિપ (सं.) स्वामी, मालिक, प्रभु, अधिष्ठाता अधिपति।
અધિપતિ (सं.) संपादक, मुखिया, शासक, अधिपति, अधिष्ठाता।
અધિરું-રો (सं.) बेसब्र, उतावळा अधीर।
અધિરાઈ (सं.) अधैर्यता, बेसब्री।
અધિષ્ઠાન (सं.) अधिकार प्रधानता, श्रेष्ठता, घर, मकान स्थान।
અધુરુ (वि) अधूरा, असमाप्त।
અધુરે જવું (क्रि.) वृथा होना, उलट जाना, गर्भ गिरना।
અધોળ (वि.) $\frac{1}{16}$ शेर, $2\frac{1}{2}$ तोला।
અદ્દર (वि.) बेसहार, आश्रयहीन, लटकता हुआ, अधर। [अध्यक्ष।
અધ્યક્ષ (सं.) अधिपति, सरदार,
અધ્યયન (सं) विद्याभ्यास, पठन, ध्यान, अध्ययन। [अध्याय।
અધ્યાય (सं. खण्ड, परिच्छेद,
અધ્યારૂ (सं) पारसी महजरका पुजारी।
અધ્યાહાર (सं.) रिक्तस्थान जो भरने के लिये खाली छोड दिया गया हो। [अन्न, अनाज।
અન कि. वि.) बिना, वगैर (सं.)
અનંગ (सं.) कामदेव, प्रेम, प्यार (वि.) देहहीन, अनंग।
અનંત (वि.) अपार, अनंत, जिस का अंत न हो, ईश्वर।
અનંતશક્તિ (सं.) परमेश्वर, सर्व-शक्तिमान्। [अनन्तश्रेणी।
અનંત શ્રેણી (सं.) अनंतमाला,
અનગળ (वि.) बहुत, बेहद, खूब, अपार।
અનર્થ (सं.) निकम्मापन, अनर्थ, नाश, भंग, क्षय, विध्वंश, विपद, दुर्भाग्य, विपत्ति।
અનર્થક (सं.) व्यर्थ, फिजूल, बेमानी
અનનાસ (सं.) अन्नास नामक एक फल। [क्रोध।
અનલ (सं.) अग्नि, आग, अनल,
અનશન (सं.) व्रत, उपवास, अन्न न खाना। [हज, अनाहत।
અનહિ (सं.) हानि, नुकशान,
અનાગત (सं. भविष्यकाल, भावी, आनेवाला समय।
અનાચારી (वि.) दुराचारी, विधर्मी अधमा, लंपट, अभ्याशी, पापी, दुष्ट।
અનાજ (सं.) अन्न, अनाज, धान्य।
અનાડી (वि.) मूर्ख, शठ, बे अक्ल, भद्दा, बेडौल,
અનાજનો દેડો (सं.) अन्नका काल।
અનાથ (सं.) दीन, कंगाल गरीब, त्याज्य, अनाथ।

અનાદર (सं.) अपमान, तौहीन, बेइज्जती, अवज्ञा, तिरस्कार, निरादर, अनादर।

અનાદિ (वि.) सनातन, नित्य, आदि रहित, स्वयंभू, अनादि।

અનામત (वि.) धरोहर, थाती, बन्धक, अनामत, गिरवी, जमानत।

અનાર (सं.) अनार नाम से प्रसिद्ध फल।

અનાવૃષ્ટિ (सं.) सूखा, दुर्भिक्ष, कालवृष्टि का अभाव, अनावृष्टि।

અનાશ્રય (वि.) आश्रयहीन, असहाय, बेमदद, अनाथ, लाचार, अशरण, अनाश्रय।

અનાસ્થા (सं.) अपक्षपात, बेतरफदारी, बेपरवाही, उदासनिता।

અનિત્ય (वि.) कभी कभी, थोड़े दिन का, नाशमान, अनित्य।

અનિયમિત (सं.) बे कायदा, गड़बड़, अनियमित।

અનિલ (सं.) पवन, वायु, हवा।

અનિવાર (सं.) विशेष, अधिक, हठी, अड़ियल, माननीय, अत्याज्य, अवश्य, अनिवार्य।

અનિષ્ટ (सं.) हानि, बुरा, अनिष्ट, (क्रि. वि.) अवांछित के चाहा!

અનિશ્ચિત (सं.) संदिग्ध, निश्चय-रहित, अनिर्णीत, अनिश्चित।

અનીક (सं.) सेना, बल, फौज, दल, रिसाला।

અનીતિ (सं.) दुर्नीति, अत्याचार, अन्याय, दुराचार, अनीति।

અનીશ્વરવાદી (सं.) नास्तिक, जो ईश्वरपर विश्वास नहीं कर सकता।

અનુકરણ (सं.) नकल, उतार, मेल अनुकरण।

અનુક્રમ (सं.) ढंग, तर्ज, तौर, तरीका, विधि, तरतीब,

અનુક્રમણિકા (सं.) फिहरिस्त, सूची, भूमिका, विषयसूची, अनुक्रमणिका।

અનુકૂળ (वि.) मुआफिक, ठीक, योग्य, अनुकूल, उचित, फबता हुवा।

અનુગ્રહ (सं.) कृपा, दया, अनुग्रह!

અનુચર (सं.) सेवक, भृत्य, नौकर, अनुचर, परतंत्र,

અનુચિત (वि.) अयोग्य, गैर मुनासिब, अशुद्ध, अनुचित।

અનુજ (सं.) छोटा भाई, अनुज।

અનુતાપ (सं.) पश्चात्ताप, पछतावा, प्रायश्चित, तोबा, शोक, रंज, गम।

અનુનાસિક (वि.) नासिका सम्बधी, नाक का, अनुनासिक ।

અનુપકારી (वि) कृतघ्न, अधन्य-वादी, उपकार न करनेवाला ।

અનુપમ (वि.) बेजोड़, बेमिसाल, उपमारहित, अनुपम ।

અનુપવેશ્યા (सं.) एक के बाद दूसरे का प्रवेश। एक के बाद एक आने वाला । [सुधारक ।

અનુપાન (सं.) विषनाशक दवाई,

અનુપ્રાસ (सं.) यमक शब्द, अनुप्रास, वह शब्दालङ्कार जिसमें किसी पद में एक ही अक्षर बार २ आकर उस पद की शोभा को बढावे।

અનુભવ (सं.) तजुर्बा, भोगविलास सफलता, अनुभव । अनुभूति, परीक्षा, जाँच ।

અનુભાવ (सं.) अन्तर, भेद, श्रेष्ठता, बड़प्पन, मर्यादा, पदवी, शक्ति ।

અનુમત (सं.) प्रसन्नता, मान, सहमत, सम्मत, अनुमत ।

અનુમાન (सं.) अन्दाज, अनुमान। (क्रि.) अन्दाज करना ।

અનુમેય (वि.) जो अनुमान किया गया हो, अनुमेय ।

અનુરાગ (सं.) प्रेम, स्नेह, प्रीति, प्यार, अनुराग। [अनुवाद ।

અનુવાદ (सं.) मुवाफिक, मेल,

અનુશાસન (सं.) नियम, कायदा, अनुशासन । [मुवाफिक ।

અનુસરતું (क्रि. वि.) अनुसार,

અનુસરવું (क्रि.) अनुसरण करना, पीछा करना, प्रसन्न होना ।

અનુસંગી–સાથી (सं.) दोस्त, साथी, संगी ।

અનુસંધાન (सं.) ध्यान, चौकसी. अन्वेषण, तहकीकात, अनुसंधान।

અનુષ્ઠાન (सं.) पूजा, कर्मारंभ ।

અને (अ.) और,

અનેક (वि.) बहुत, कई, अनेक ।

અનેકવચન (सं.) बहुवचन ।

અંતઃકરણ (सं.) मन, अन्तारिन्द्रिय, दिल, अन्तःकरण ।

અંતઃપુર (सं.) जनानखाना, हरम, घर में स्त्रियों के रहने का स्थान ।

અંતકાળ (सं.) अंतिम समय, मृत्यु समय, मृत्यु शय्या ।

અંતર (सं.) फर्क, फासला, अन्तर ।

અંતરગળ (सं.) कोषवृद्धि, अंड-वृद्धि, फोते में एक प्रकार का रोग ।

અંતરજામી (सं.) ईश्वर, वह जो दूसरों के मन की जान ले, (वि.) सर्व ज्ञानी, अनन्त ज्ञानी, अंतर्यामी ।

અંતરપટ (सं.) पर्दा, वस्त्र की आड़, अंतरपट ।

અંતરધાન (सं.) दिखलाई न देना, दृष्टि से बाहिर, गायब, अन्तर्धान ।

અંતે (क्रि.) अन्त में, आखिर में, सब के बाद, निदान ।

અંદર (उ.) भीतर, मे, अन्दर ।

અંધ (सं.) नेत्रहीन, अंधा, सूरदास ।

અંધારૂં (सं.) अन्धेरा, तिमिर, (वि.) धुंधला, उदास, गड़बड़ घबराहट ।

અંધેર (सं.) गड़बड़, कुप्रबन्ध ।

અન્ન (सं.) अनाज, दाना, भोजन, अन्न ।

અન્નદાતા (सं.) स्वामी, ईश्वर, मालिक, अन्न अथवा अन्य इच्छित वस्तुओंका देनेवाला अन्नदाना ।

અન્નોદક (सं) नाजपानी, अन्नजल ।

અન્ય (वि.) दूसरा, अन्य (सं) विचित्र !

અન્યથા (क्रि. वि.) नहीं तो, नौबेत, अन्यथा, दूसरे, इसके अतिरिक्त ।

અન્યાય (सं.) गैर इन्साफ, अन्याय अनीति, जुल्म ।

અન્યાયી (वि.) दोषी, अपराधी, कुसूरवार, अधर्मी, अन्यायी !

અન્યોઅન્ય (वि.) परस्पर, दुतर्फा ।

અન્વયી (वि.) मिलानेवाला, सम्बंध करानेवाला, अनुगामी संबंधी ।

અપ (वि.) जिस शब्द के आगे लगाया जावे उसका अर्थ बुरा हो जाता है ।

અપકાર (सं.) अनुपकार, अधन्यवाद, नमकहराम, बेवफा ।

અપકીર્તિ (सं.) अपयश, बदनामी निन्दा, अपकीर्ति ।

અપક્ષપાત (सं.) पक्षपातरहित, निष्पक्ष, न्याय, इन्साफ, उचित ।

અપંગ (वि.) लंगडा, लूला, जख्मी.

અપચો (सं.) कुपच, अपच, अजीर्ण, बदहज़मी ।

અપજશ (सं.) अपयश, बदनामी, कम इज्जती !

અપતિવ્રતા (सं.) अशुद्ध, व्यभिचारी, असाधु, कुलटा, वेश्या, पतिव्रतहीन

અપતીજ (सं.) अविश्वास, बेयकीन सन्देह, शुभा बे ऐतबार ।

અપદ્વાર (सं.) पीछेका द्वार, बुरा मार्ग ।
અપભ્રંશ (सं) बिगाड अपभ्रंश ।
અપમાન (वि.) मानरहित, कमइज्जती, तौहीन, बे आबरू,, अपमान् ।
અપરંપર (वि.) अगणित, बे गिनती अनन्त, अन्तहीन, अपरिमित ।
અપરાજિત (वि.) अजेय, न जीता हुवा
અપરાધ (सं.) कसर, अपराध, गुन्हा,
અપલક્ષણ (सं.) दोष, कमी, त्रुटी, अपलक्षण ।
અપવાદ (सं.) निन्दा, कलङ्क, झूठ. अविश्वास, अपवाद ।
અપવાસ (सं.) व्रत, उपवास ।
અપવિત્ર (वि) अशुद्ध, मैला, गन्दा, अपवित्र ।
અપશબ્દ (सं.) बुरे वचन, गाली गलौज, निन्द्य शब्द ।
અપશકુન (सं.) बुरे शकुन ।
અપહરણ (क्रि.) ले भागना, निकाल ले जाना, चुराना [बुराई,
અપાય (सं.) बदी, नुकसान,
અપાર (वि.) जिसका पार न हो
અપારદર્શક (वि.) अस्वच्छ, धुंधला ।
અપાસરો (सं) जैन साधुओं के ठहरने का स्थान
અપુત્ર (वि.) पुत्रहीन, निपुत्र, अपुत्र । [अधूरा ।
અપૂર્ણ (वि.) जो पूरा न हो
અપૂજ્ય (वि.) बिनापुजा ! बे-पुजा ।
અપૂર્ણકાળ (सं.) अधूरा समय ।
અપૂર્ણાંક (सं.) टुकड़ा, भिन्न, कसर
અપેક્ષા (सं) इच्छा, चाह, आवश्यकता, जरूरत । [अपमान ।
અપ્રતિષ્ઠા (सं.) बदनामी, बे इज्जती
અપ્રમાણ (वि.) असीम, प्रमाणहीन जो प्रमाण न हो ।
અપ્રમાણિક (वि.) मिथ्या, बे सबूत कपटी, घटिया ।
અપ્રસિદ્ધ (वि.) धुंधला, गूढ, अधूरा, अज्ञात, जो मशहूर न हो।
અફરાતફરી (सं.) गड़बड़, घबराहट।
અફલાતુન (वि.) घमण्डी, अहंकारी मगरूर, अफलातून, [अफवाह ।
અફવા (सं.) समाचार, चर्चा,
અફસોસ (सं.) रंज, गम, शोक, दुःख, अफसोस ।
અફળ (वि.) व्यर्थ, फलहीन फल-रहित, निकम्मा ।
અફળાવું (क्रि.) पटकना, दे मारना

અફીણુ (सं.) अफीम ખી (सं.) अफीम खानेवाला, अफीमची ।

અબજ (वि.) १० अर्बुद, दस अरब, संख्या विशेष ।

અબધૂત (सं.) घूमनेवाला तपस्वी, तपस्वा, फकीर, अवधूत । [मोडल ।

અબરખ (सं.) अभ्रक, अबरख,

અબળ (सं.) निर्बल, कमजोर, शक्तिहीन ।

અબળા (सं.) स्त्री, औरत, अबला ।

અબીલ (स.) अबीर, सुगन्धित चूर्ण, खुशबूदार बुरादा ।

અબોટ (स.) चौका देना ।

અબોટિયું (सं.) रेशमी वस्त्र,

અબોલા (वि.) मौन, बेबोला चुप

અભંગ (वि.) सब, पूर्ण, कुल ।

અભડાયલી (सं.) रजस्वला स्त्री, कपडो हुई औरत । (वि.) बिगड़ा हुवा, कलुषित ।

અભડાવવું (क्रि.) बिगाडना, गंदा करना, अपवित्र करना ।

અભણ (वि.) मूर्ख, बे पढा, अज्ञ, आशिक्षित ।

અભય (वि.) निर्भय, निडर, त्रास-रहित, अभय ।

२

અભય વચન (सं.) रक्षा करनेका विश्वास, अमानतका बीमा, रक्षणका वादा ।

અભરાઈ (सं.) ताख, आलमारी, समुद्रका रेतीला किनारा ।

અભરા ભરણ (सं.) दीनबन्धु, निर्बलोंका रक्षक, परमात्मा ।

અભરામ નંદાવા (सं.) त्याग, मुक्त, रिहाई, छुटकारा, उऋण, बेबा-क, रसीद,

અભાગિયો (वि.) बदकिस्मत फूटी तकदीरका, अभागा ।

અભાવ (सं.) अरुचि, घृणा, अनिच्छा, कुस्वादु, शत्रुता ।

અભિજ્ઞ (वि.) निपुण, प्रवीण, जानकार, परिचित ।

અભિજ્ઞાન (सं.) प्रत्येक बातको जान लेनेकी शक्ति । [सम्मति ।

અભિપ્રાય (सं.) विचार, समज, राय

અભિધાન (सं.) नाम ।

અભિમાન (सं.) गर्व, गुमान, अहंकार घमंड ।

અભિરુચિ (सं.) आनन्द, हर्ष, खुशी, इच्छा । [उमंग ।

અભિલાષ (सं.) ख्वाहिश चाह,

અભિષેક કરવો (क्रि.) जल डालकर छिड़कना, राजपद पर बिठाकर

અભ્યાસ (सं.) मुहाविरा, पठन, अभ्यास ।

અભ્ર (सं.) आकाश, स्वर्ग ।

અભર્થું (वि.) व्यर्थ, वृथा, निष्फल।

અમન ચમન (सं.) आनन्द मंगल, चैनचान, चहलपहल ।

અમર (वि.) मृत्युरहित, अमर, जो न मरे, देवता ।

અમૃત (सं.) पराग, खुशगवार-शरबत । कोई बहुत मीठी आनन्द दायिनी वस्तु, पुराण कथित देवताओंके पीनेका पेय पदार्थ। अमृत ।

અમર્યાદ (वि.) अपमान, हतक, आचरण शून्य, मर्यादाहीन ।

અમલ (सं.) अधिकार, राज्य, हुकूमत, शक्ति, दबाव ।

અમલદાર (सं.) हाकिम, आधिकारी ओहदेदार ! [निरर्थक ।

અમસ્તું (वि.) फलहीन, अकारथ,

અમળાવવું (क्रि.) पकड़ना, मरोड़ना कष्ट देना,

અમળાટ (सं.) मरोड़, पकड़, ऐंठ ।

અમાપ (वि.) जोनापा न जाय !

અમારું (सर्व.) हमारा,

અમાસ (सं.) अमावस्या, चन्द्र मास का अंतिम दिन, ३०,

અમી (सं.) अमृत, दया, कृपा, अनुकम्पा, नम्रता, रस चाट ।

અમીન (सं.) पंच, न्यायकर्ता ।

અમીર (सं.) कुलीन, बड़ा आदमी बड़ा, भला । अमीर ।

અમુક (वि.) कोई, किसी, विशेष, फलॉ, अमुक ।

અમુઝણ (सं.) घबराहट, झंझट, परेशानी, चिंता, सोच, दमा, स्वास ।

અમૂલ્ય (वि.) कीमती, बहुमूल्य, बेशकीमती, अनमोल, अमूल्य ।

અમે (सर्व०) हम, मै का बहुवचन।

અંબટ (वि.) तेजाब, खट्टा, तुर्श ।

અંબર (सं.) बैकुंठ, एक उत्तम अमूल्य जनानी पौशाक।

અંબાડી (सं.) हौदा, हाथीपर बैठनेकी अंबारी ।

અંબાર (सं.) ढेर, इकट्ठा ।

અંબુજ (सं.) कमल पुष्प ।

અંબોડો–ડી (सं.) चोटी, चुटिया।

અયનવૃત્ત (सं.) क्रांतिवृत्त, सूर्य का मार्ग ।

અયાળ (सं.) अयाल, पशु के गर्दन पर के बाल ।

અયોગ્ય (वि.) नालायक, अनुचित, निकम्मा, अयोग्य ।

અરક—અર્ક (सं.) अर्क, सत ।

અર્ધ (सं.) देवता या सूर्य को जलदान । अर्घ्य । [पत्र, अर्जी ।

અરજ—જી (सं.) प्रार्थना, प्रार्थना-

અરણ્ય (सं.) रेगाला मैदान, जंगल, वन ।

અર્ણવ (सं.) समुद्र, जलनिधि ।

અરબી—અરબ્બી (सं.) अरबका, आलू । [के जहाज़ ।

અરમાર (सं.) जहाजी बेड़ा, युद्ध

અરમારી (सं.) आलमारी, बरतन रखने की आलमारी ।

અરવિંદ (सं.) कमल का फूल ।

અરસપરસ (वि.) परस्पर, एक दूसरा, दुतर्फा, आपसका ।

અરિ (सं.) बैरी, शत्रु, दुश्मन ।

અરિઠા (सं.) रीठा, अरीठा नाम से प्रसिद्ध वस्त्रादि धोने के काम में आनेवाला फल ।

અરિષ્ટ (सं.) दुर्भाग्य, विपत्ति, आपत्ति, बदकिस्मती, अरिष्ट ।

અરુચિ (सं.) अनभिलाष, कुस्वादु, घृणा, अरुचि । [प्रातःकाल, भोर ।

અરુણ (सं.) सूर्य, सूर्योदय,

અરુણોદય (सं.) सूर्योदय के पूर्व का लालिमा का उदय [ओफ़ ।

અરેરે (विस्म०) अरे ! ओहो !

અરે (विस्म०) ओ हो, अरे, ऊफ !

અર્ચન (सं.) पूजा, अर्चन ।

અર્થ (सं.) माने, मतलब, इशारा, अभिप्राय ।

અર્થશાસ્ત્ર (स.) सम्पत्तिशास्त्र, पोलिटिकल एकानमी ।

અર્થસિદ્ધિ (सं.) कामयाबी, इच्छित कार्य की पूर्ति ।

અર્થાત્ (क्रि. वि.) इस वास्ते, अतएव, तस्मात्, इस कारण से, अतः । (अव्यय) याने अर्थात ।

અર્થાલંકાર (स.) शब्दालङ्कार के विरुद्ध अलङ्कार, जिसमें अर्थ का चमत्कार दिखाया गया हो ।

અર્થી (सं.) मतलबी, खुदगर्ज़ी ।

અર્થે (क्रि. वि.) वास्ते, लिये ।

અર્ધ (वि.) आधा, ½ ।

અર્ધગોળ (सं.) अर्द्धवृत्त, निस्फ, दायरा। [सरीखा।

અર્ધચંદ્રિકા (वि.) दोज के चान्द

અર્ધરાત્રિ (सं.) आधी रात।

અર્ધાંગના (सं.) हिस्सेदार, साझीदार, पत्नी।

અર્ધાંગવાયુ (सं.) लकवे की बीमारी, वह वात जिस से आधा अंग शून्य हो।

અર્ભક (सं.) बालक, बच्चा।

અર્વાચીન (वि.) पश्चाज्जात, नवीन, हालका, इदानीन्तन।

અર્શ (सं.) बवासीर की बीमारी।

અલખત (सं.) जायदाद, धन।

અલગ (वि.) दूर, फासलेपर, जुदा, निराला, अलग।

અલંકાર (सं.) आभूषण, जेवर, अर्थ और शब्द की वह युक्ति जिस से बोलने में या काव्य में शोभा हो, अलंकार।

અલપાઉ (वि.) निष्फल, बेफायदा, व्यर्थ, बेकाम।

અલબત (क्रि. वि.) बेशक, अवश्य, दर हकीकत, वास्तव में।

અલબેલું (वि.) सुन्दर, खूबसूरत, चटकीला।

અલભ્ય (वि.) प्राप्ति के अयोग्य, जो न मिले, अप्राप्य।

અલમસ્ત (वि.) दृढ, मजबूत, वीर, बहादुर, निडर। [सम्बन्ध।

અલકો (सं.) दावा, अधिकार,

અલાબલા (सं.) खतरा, भय, जोखम, कठिनाई, अलायबलाय।

અલી (सं.) सखी, पत्नी।

અલીજહાં (वि.) अति प्रतापी, आडम्बरी, बड़ा, बहुत बड़ा।

અલેલટપુ (सं.) अंदाजी, कयासी, अटकली।

અલોપ (सं.) गायब, अदृश्य।

અલૌકિક (वि.) लोकातीत, अमानुषिक, असाधारण, अलौकिक।

અલ્પ (वि.) थोड़ा, कम, छोटा।

અલ્પજ્ઞ (वि.) थोडा जानकार, कम जानने वाला।

અલ્લૈ (वि.) मूर्ख, उल्लू, शठ।

અવકાશ (सं.) अवसर, मौका, फुर्सत, छुट्टी, आराम, मौं, अवसर।

અવગણના (सं.) दोषारोपण, कम इज्जती, अपमान।

અવગતિ (सं.) आफत, विपत्ति, कमबख्ती, आत्मा की भटक।

અવગુણ (सं.) दुर्गुण, दोष, ऐब।

અવઘડ (सं.) कठिनाई मुश्किल, दुःख, पीड़ा, बाधा।

અવજ્ઞા (सं.) अपमान, हतक, ना फरमाबरदारी।

અવડ (वि.) अव्यवहारिक, जो काम में न लाया गया हो, अनभ्यस्त।

અવતરણ (सं) उद्धृत भाग, उतार, प्रमाण, हवाला, अर्थ, टीका। [प्रसिद्ध होना।

અવતરવું (क्रि.) उत्पन्न होना,

અવતાર (सं.) जन्म, पैदायश, किसी देवता का पृथ्वीपर जन्म।

અવદશા (स) दुर्दशा, कंबख्ती।

અવધ-ધી (सं.) अंत, आखिर, सीमा, हद। [इच्छा, ध्यान।

અવધાન (सं.) झुकाव, रुख.

અવનવું (वि.) नवीन, नया, अद्भुत, अजीब, अनोखा।

અવનિ (सं.) पृथ्वीतल, पृथ्वी।

અવનિચક્ર (सं.) जन्म मृत्युका चक्र, आवागमन।

અવર (वि.) और, दूसरा, अन्य, (वि.) पंथा (सर्व.) हमारा.

અવરથા (वि.) व्यर्थ, फिजूल, विफल,

અવરોધ (सं.) अटकाव, बाधा, रोक, रोकटोक।

અવલ (वि.) पहिला, उत्तम, उम्दा, अच्छा, अव्वल।

અવલેહ-મ (सं.) चटनी, पतली औषधि।

અવલોકન (सं.) देखरेख देखभाल जाँच, पड़ताल, छिद्रान्वेषण-दोषानु सन्धान, परख, निगाह।

અવશ્ય (क्रि. वि.) जरूर, निस्सन्देह, बेशक, अवश्य।

અવસર (सं.) मौका, समय, माजरा, मृतके लिये एक जातीय कार्य, उत्सव, अवसर।

અવસાન (स) मौका, औसान, अन्त, खत्म।

અવસ્થા (सं.) हालत, दशा।

અવળચંડુ (वि.) हठी, जिद्दी, दिक करनेवाला, चिड़चिड़ा।

અવળુ (वि.) जिद्दी, हठी, उलटा विरुद्ध, विपरीत, विपक्ष, औंधा।

અવાચક (वि.) गूंगा, बे बोल, बे समझ।

આવાજ (सं.) ध्वनि, आवाज, उच्चारण, स्वर ।

આવાજ કરવો (क्रि.) शोरमचाना, फूटना, हल्लाकरना ।

આવારનવાર (क्रि. वि.) बारी-बारीसे, अदलबदलकर, अनुक्रम, एकके बाद एक ।

આવાસ (सं.) निवास, रहन, घर मकान, डेरा, स्थान । [भाग ।

આવાળું (सं.) दांतो के नीचे का

અવિચળ (वि.) अचल, स्थिर, कायम, दृढ, अविचल । [अज्ञान ।

અવિચાર (सं.) अविचाररहित,

અવિનાશી (वि.) नाशरहित, अमर, ईश्वर, सर्वशक्तिमान ।

અવેજ (सं.) हेरफेर, एवज ।

અવેજી (वि.) बदली, एवजी ।

અવ્યય (सं.) एकसा रहनेवाला । व्याकरणमें वह शब्द जिसके रूपमें कभी विकार नहीं होता ।

અવ્યવસ્થા (सं.) कुप्रबन्ध, बद-इन्तजामी, गड़बड़ ।

અવ્હેરું (वि.) घबरायाहुवा, व्याकुल,

અશક્ત (वि.) कमजोर, शक्तिहीन निर्बल, दुर्बल ।

અશક્ય (वि.) असंभव, गैरमुम-किन, जो न हो सके, अशक्य ।

અશરફી (सं.) मोहर, अशरफी, प्राचीन कालका सोनेका सिक्का ।

અશરાફ (वि.) दयालु, महरबान, बडा, शरीफ, कुलीन, सुशील ।

અશાતા (सं.) अभाग्य, दुर्भाग्य, तकलीफ, कष्ट, क्लेश, बेचैनी, व्याकुलता । [खराब, अशुद्ध ।

અશુદ્ધ (वि.) अपवित्र, गलत मैला,

અશુભ (वि.) अमंगल, अमंगल-कर, अशुभ ।

અશોક (सं.) एक प्रकारका वृक्ष ।

અશ્રુ (सं.) आँसु, अश्रु ।

અશ્વ (स.) घोडा, तुरंग, अश्व ।

અશ્વત્થ-(**પીપળો**) (सं) पीपल का पेड ।

અશ્વત્થામા (सं.) द्रोणाचार्य के पुत्र महाभारत युद्ध के महारथी, अश्वत्थामा ।

અશ્વમેધ (सं.) घोडेका बलिदान एक प्रकारका यज्ञ जिसमें घोडे के मस्तक में जयपत्र बांधकर उसे भूमण्ड-लमें घूमने के लिये छोडा जाता है, और उसके पीछे २ सेना सहित रक्षक रहते हैं । सेना के विजयी

होकर लौटने पर घोड़ेका स्वामी बड़ा भारी यज्ञ करता है, जो चक्रवर्तित्वका सूचक है।

અશ્વવિદ્યા (सं.) अश्वपालन, अश्व सम्बन्धी विद्याएं।

અષ્ટ (वि.) आठ, ८, अष्ट।

અષ્ટાવધાની (वि.) कपट,

અષ્ટાવું (क्रि.) कमजोर होना, दुबला-होना, मुर्झाना, सुस्त होना।

અસંખ્ય (वि.) अगणित, जो गिने न जा सकें, असंख्य।

અસત્ય (वि.) मिथ्या, झूठ।

અસ્તર (सं.) अस्तर, दुहरी पोशाकके नीचेका कपड़ा, ढकन।

અસ્તરી કરવી (क्रि.) कपड़ों पर इस्त्री करना। [उस्तरा।

અસ્તરો (सं.) छुरा, क्षुर, अस्तुरा,

અસદ્ધર્મી (वि.) विधर्मी, निंद्यधर्मका उपासक, बेदीन।

અસભ્ય (वि.) गँवार, जंगली, अशिष्ट, बदचलन, बेढंगा, बेहूदा असभ्य।

અસમર્થ (वि.) कमजोर, शक्तिहीन।

અસમાન (सं.) आकाश, आस्मान, (वि.) ऊंचानीचा, असमान।

અસમાની સુલતાની (सं.) दुर्भाग्य विपत्ति, आपद।

અસંભવ (सं.) गैर मुमकिन, जो संभव नहीं, असंभव। [असर।

અસર (सं.) प्रभाव, फल, दबाव,

અસલ (वि.) मुख्य, खास, प्राचीन उत्तम। [चढ़ाहुआ।

અસ્વાર (सं.) आरोही, असवार,

અસ્વારી (सं.) सवारी, आरोहण, निकासी, जुलूस, ठाठ।

અસાર (वि.) सारहीन, निस्सार, निकम्मा, अयोग्य। [खड्ग।

અસિ (सं.) कृपाण, तलवार,

અસીલ (वि.) कुलीन, सुशील, दयालु, कृपालु, (सं.) मुवक्किल यजमान। [प्रकार।

અસું (वि.) ऐसा, इसभांति, इस

અસુ (सं.) सांस, दम, स्वास, जीवन, ज़िन्दगी, आत्मा, जीव।

અસુખ (सं.) दुःख, कष्ट, तकलीफ, बीमारी, रोग।

અસુર (सं.) राक्षस, निशाचर, पिशाच, दुरात्मा, भूत।

અસુઈં (वि.) देर, अबेरकरके, उचित समयके बाद।

અસ્ત (सं.) अस्त, गायब, तारेका अस्त, ग्रहकाअस्त ।

અસ્તિત્વ (सं.) स्थिति, जीवन, हस्ती, वजूद ।

અસ્તુ (विस्मय.) आमीन, ऐसाहीहो, एवमस्तु ।

અસ્ત્ર (सं.) मंत्रित हथियार, फेंककर चलायेजानेवाले हथियार, बाण, तीर ।

અસ્થિ (सं.) हाड़, हड्डी ।

અહંકાર (सं.) गर्व, घमंड, स्वार्थता, अहंमन्यता । [स्वार्थी ।

અહંકારી (वि.) घमण्डी, गर्वी

અહર્નીશ (क्रि. वि.) रातदिन, प्रति-दिन, रोजाना, दैनिक ।

અહિયાં (क्रि वि.) यहां, इधर ।

અહીં-હી (क्रि. वि.) इधरउधर यहां-वहां ।

અહોરાત્રિ (क्रि. वि.) सारादिन और सारीरात । अहोरात्रि २४ घंटे । [अयोग्य ।

અળખામણું (वि.) अप्रिय,

અળગું (वि.) दूर, अलग, जुदा ।

અળવી (सं.) एक बूटीका नाम ।

અળસી (सं.) अलसी नामसे प्रसिद्ध

અળશીઉ (सं.) जमीनका कीड़ा ।

અળાઇ (सं.) छोटीछोटी फुनसियां जो ग्रीष्ममें होजातीहैं । अलाई ।

અજ્ઞાન (सं.) ज्ञानहीन, ज्ञानशून्य मूर्ख, बेवकूफ ।

આ

આ—गुजराती वर्णमालाका द्वितीय अक्षर । (सर्व.) यह, ये

આંક (सं) गणना, मूल्य, कसौटी जांच, परख, पहियेकाधुरा ।

આંકડી (सं.) आंकड़ा, हुक, टेटा मरोड़ ।

આંકણી (सं.) श्लोक, दोहा, छन्द शासक, हाकिम, अधिष्ठाता ।

આંકવુ (क्रि.) लकीरें करना, अंकित करना, परख करना, कीमत करना, मूल्य करना ।

આંકો (सं.) चिन्ह, निशान, कूत, हद, सीमा, किनारा ।

આંકોળિયાં (सं.) नसे, पसलियां ।

આંખ (सं.) नेत्र, नयन, चक्षु, दृष्टिबोध । [की पुतली ।

આંખની કીકી (सं.) पुतली, आँख

આંખ આડા કાન કરવા (क्रि.) आनाकानी करना, भगाना, अलग होना । [नेत्र दर्द होना ।

આંખ આવવી (क्रि.) आँख दुखना

આંખ કાઢવી (क्रि.) डाटना, बुरा भला कहना, घुड़कना, तेवरी बदलना, धमकाना, गुस्से हो जाना ।

આંખ ચોરાવવી (क्रि.) निगाह बचाना, धोका दे कर निकल जाना, दृष्टि बचाकर भाग जाना, सटक जाना, चुपचाप चले जाना, चुरा ले जाना ।

આંખ ઇશારત કરવી (क्रि.) इशारा करना, सैन करना, आँख मारना । [बेहोशी ।

આંખિયાં (सं) मूर्च्छा, अचेतनता,

આંગડિયો (सं.) हुजड़ा, कीमती सामान का रखनेवाला या ले जाने वाला ।

આંગણું (सं.) आंगन, घर के सामने का चौक । [एक इंच ।

આંગળ (सं.) एक अंगुल का माप,

આંગળી (सं.) अँगुली ।

આંગળી કરવી (क्रि.) अंगुली से छेद करना, छेड़ना, चिढ़ाना, खिजाना ।

આંચ (सं.) दुर्ग, नुकसान, हानि, (क्रि.) लौकठना, भड़कना, प्रज्वलित होना ।

આંચળ (सं.) स्तन, चूँची, थन ।

આંજવું (क्रि.) आँखों में अंजन लगाना, आँजना, धोका देना, छल करना, अंधेरा करना ।

આંજણી (सं.) आँखों के पलक पर की फुनसी, गुहेरी ।

આંટ (सं.) गांठ, उधार, दुश्मनी ईर्षा, हसद, डाह, नामवरी, यश, शुहरत, लाग, आट । [आटन ।

આંટણ (सं) आटण, खालपर

આંટી (सं.) गाठ, धागोका गुच्छी, ईर्षा, वैर, डाह ।

આંટો (स.) घुमाव, चक्कर ।

આંડવા (सं.) वृषण, अंडकोष, फोते ।

આંતરડી–ડું (सं.) दिल, आंते ।

આંતરવું (क्रि.) बांटना, हिस्सा करना, बाड़ा लगाना, अपेक्षित करना ।

આંતરે (क्रि. वि.) बारीबारीसे, अन्तरपर, फासलेपर ।

આંતરો (सं.) भाग, हिस्सा ।

આંદોલન (सं.) आंदोलन, लंगर, लटकन, हलचल । [कीड़ा ।

આંધળુ (सं.) अंधा, छिद्र, एक

આંધિ (सं.) आंधि, तेज हवा, उद्दंड-वायु, कुहरा ।

આંફલું ફાંફલું (सं.) घबराया हुवा, भूला हुवा, मिलाहुवा ।

આંમ્ટ (सं.) खट्टा । [इमली ।

આંમલી (सं.) इमलीका वृक्ष, फल,

આંબો (सं.) आमका पेड़, आम्र, रसाल, आम ।

આંબાભોર (सं.) आम्रपुष्प, आमका बौर, एक प्रकारका चाँवल ।

આંબાવાડી (सं.) आम्रकुंज, आमो का बाग ।

આંબા હળદર (सं.) आमी हल्दी,

આંબેિળ (सं.) जैनियोका एक धार्मिक प्रण जिसमें कि दिनमे एक बार भात खाया जाता है ।

આંબોઈ (सं.) नाल, नाभिसे लगी हुई नस, जो बालक के जन्म के समय उसके लिपटा होता है ।

આંમળાં (सं.) आँवले ।

આંશ (सं.) भाग, अंश, डिग्री ।

આંસુ (सं,) अश्रु, आँसू ।

આહા (विस्म.) अहा, वाहवा ।

આઈ (सं.) माता, मा, दादी ।

આઇન (सं.) कानून, रीति चाल, नियम, कायदा । [महँगा ।

આકરૂં (वि.) सख्त, कठिन, कठोर,

આકર્ષ (सं.) खींचनेका कार्य ।

આકર્ષણુ (सं.) खिंचाव, लुभाव, फुसलाव, लालच ।

આકર્ષિત (सं.) खींचा,

આકળવિકળ (वि.) व्याकुल, घबराया हुवा । आकुल व्याकुल ।

આકાંક્ષા (सं.) इच्छा, चाह ।

આકાર (सं.) सूरत, शक्ल, बनावट, चिन्ह ।

આકાશ (सं.) आस्मान, आकाश स्वर्ग, ऊर्ध्वलोक ।

આકાશગંગા (सं.) देवनदी, वह चिन्हजो निर्मल आकाश में धुंधला और स्वेत एक सीधमें लकीर सा होताहै । देवमार्ग, कान्तिवृत । छायापथ ।

આકાશગામી / આકાશચર (वि.) वहजो गुब्बारेमें बैठता है, पक्षी वायुयान । [तरहका खेल ।

આકાચલી (सं.) बाजीगरका एक

આકાશ દીવો (सं.) आकाशका प्रकाश, आकाशमें लटकाईहुई लालटेन । [अति उंचा मार्ग ।
આકાશ માર્ગ (सं.) हवाईरास्ता,
આકાશ મુની (सं.) ऊंट, उष्ट्र ।
આકાશલોક (सं.) स्वर्ग, ऊर्ध्व लोक । [आकाशके समान रंग ।
આકાશવર્ણ (सं.) नीलवर्ण,
આકાશવાણી (सं.) देववाणी, अंतरिक्षकाशब्द, ईश्वरोक्ति ।
આકાશવાસી (सं.) आस्मानमें रहनेवाले ।
આકાશવૃત્તિ (सं) अनायास प्राप्ति-आसामायिक लाभ [भरोसा.
આકીન (सं.) विश्वास, यकीन,
આકુદી (सं.) एक प्रकारसे अधिक नशेदार बनाईहुई भाँग ।
આકુળ (वि.) दुःखी, बेसब्र ।
આકુળવ્યાકુળ (सं.) बेचैन, घबरायाहुवा, अधीर । [आकृति
આકૃતિ (सं.) सूरत, शक्ल,
આક્ષેપ (सं.) अभ्यास, खेद, अर्जी, प्रार्थना ।
આક્રંદ (सं.) दुःख, रंज, विलाप ।
આખડવું (क्रि.) घूमना, भटकना । [शपथ, सौगन्द, कसम ।
આખડી (सं.) एक प्रकारकी
આખર (सं.) अंत, सिरा, परिणाम । [मृत्यु दिवस ।
આખરસાલ (सं.) अंतिमदिन,
આખરે (क्रि. वि.) अंतमें, आखेर—कार । [जो बधिया न हुवाहो।
આખલો (सं.) सांड, वह बैल
આખાખાઉ (सं.) वह मनुष्य जो एकदम बहुत लाभ चाहताहो, लुटेरा ।
આખાડા (सं.) मठ, मन्दिर, अखाड़ा, दंगल ।
આખું (वि.) सारा, समस्त, सब तमाम ।
આખેટ (सं.) शिकार, मृगया ।
આખેર (सं.) अंत, आखेर, समाप्ति, परिणाम ।
આખ્યાન (सं.) किस्सा, कहानी, कथा, वर्णन, बयान ।
આગ (सं.) अग्नि, आग, गर्मी, ज्वाला, पावक ।
આગ સળગાવવી (क्रि.) आग सुलगाना, आग लगाना भड़काना लड़ाई कराना ।

આગ હોલવવી (क्रि.) आग बुझाना
આગ લાગવી (क्रि.) आग लगना,
આગ મુકવી (क्रि.) मृतकको जलाना, अग्निसंस्कार करना।
આગગાડી (सं.) रेलगाड़ी धूम्रयान।
આગતાસ્વાગતા (सं.) अतिथि-सेवा, मेहमानदारी, आदर, सत्कार
આગબોટ (सं.) जहाज़, धूम्रपोत स्टीमर।
આગમ (सं.) धार्मिक कृत्य, प्रारंभ, आदि।
આગમચ (क्रि. वि.) आगे, पूर्व समयमें, पूर्व पेश्तर, पहिलेही।
આગમન (सं.) पहुँच, आगमन।
આગમનપત્ર (सं.) बुलावा, बुलानेकी चिट्ठी, सम्मन.
આગ્રહ (सं.) उद्योग, धुन, हठ, जिद्द, आग्रह। [खकी बीमारी।
આગરૂ (सं.) एक मुखरोग, मु-
આગલું (वि.) अगला, पहिले, सामनेका। [विशेष।
આગવો (वि.) निवारक, अनोखा,
આગળ (क्रि. वि.) पहिलेसे, आगेसे, पूर्वसे, पेश्तरसे। [पुराना।
આગળનું (वि.) पहिला, प्राचीन,
આગળપાછળ (क्रि. वि.) चारों-ओर, आगेपीछे, इर्दगिर्द।
આગળી (सं.) चटखनी, सांकली, प्रलस्तर, अस्तर।
આગળો (सं.) एक लकड़ीकी चटखनी जो किवाड़ बन्द करनेके लिये होतीहै। हरानेवाला।
આગિયો (सं.) एक चमकदार कीड़ा, जुगनू, खद्योत।
આગેવાન (सं.) अगुवा, प्रदर्शक, मुख्य मनुष्य। [मत, अनुशासन।
આગેવાની (सं.) अगवानी, हक़-
આઘાત (सं.) प्रहार, चोट।
આઘું (वि.) दूर, अलग, न्यारा, असमीप। [छुपना, गुप्तहोना.
આઘુંપાછું થઇ જવું (वि.)
આઘે (क्रि.) दूरीपर, दूर.
આચકો (सं.) धक्का, धूमी, खींचतान। धक्का, टक्कर।
આચમન (सं.) थोड़ासा जल पीना, आचमन।
આચરકુચર (सं.) मिला हुआ सामान, बे पका भोजन। [आचरण।
આચરણ (सं.) चालचलन, बर्ताव,
આચરવું (वि.) अनुसार कार्य करना, चाल चलना, बर्तना, व्यवहार करना।

આચાર (सं.) चाल, ढब, रीति, व्यवहार, बर्ताव ।

આચાર વિચાર (सं.) दस्तूर, चलन, व्यवहार, अभ्यास, रीति, चाल ।

આચાર્ય (सं.) गुरु, उस्ताद आचार्य ।

આચ્છાદન (सं.) ढकन, ओढ़न ।

આછો (वि.) कम, थोड़ा, अप्राप्य, दुर्लभ, पुतला । [धुंधला, मन्द ।

આછું (सं.) पतला, अपूर्ण, थोड़ा,

આજ (क्रि. वि.) अभी, आज, इस दिन ।

આજકાલ (क्रि. वि.) आजकल, इन दिनों, वर्तमानमें ।

આજન્મ (क्रि. वि.) जन्मसे, आजन्म, मृत्युतक, आमरण ।

આજપછી (क्रि. वि.) इसके बाद, आजके बाद, भविष्यमें ।

આજમ મહેરબાન (वि.) बड़े दयावन्त, अत्यन्त कृपालु ।

આજલગી (क्रि. वि.) आजतक, इस समय तक ।

આઝાદ (वि.) स्वतंत्र, निरंकुश, आज़ाद ।

આજાર (सं.) बीमारी, मर्ज़, रोग ।

આજારી (वि.) बीमारी, अस्वस्थता,

આજીજી (सं.) विनती, मिन्नत ।

આજીવિકા (सं.) रोज़गार, रोज़ी, रोटी कपड़ा, निर्वाह ।

આજુબાજુ (क्रि. वि.) चारों ओर, सब तरफ, चतुर्दिक

આણ (सं.) ताना [शासन ।

આજ્ઞા (सं.) हुक्म, आज्ञा, अनु-

આજ્ઞા માનવી-પાળવી (क्रि.) आज्ञा मानना, हुक्म मानना ।

આજ્ઞાંકિત (वि.) आज्ञाकारी, कर्तव्यनिष्ठ, वफ़ादार ।

આજ્ઞાપત્ર (सं.) परवाना, वारंट, आज्ञापत्र । गज़ट, सरकारी अखबार।

આટલું (वि.) इतना अधिक, ऐसा अधिक ।

આટોપવું (क्रि.) पूर्ण करना, खत्म करना, तमाम करना ।

આટો (सं.) आटा, कुचलन, भंग, दाय, विध्वंस ।

આડિયો (सं.) बदमाश, दुष्ट, नाच, पाजी, दुर्जन, पापिष्ठी ।

આઠે પહોર (क्रि. वि.) अहर्निश, रात दिन, सदैव ।

આડકતરું (वि.) पेचदार, टेढ़ा-तिर्छा, घोखदार, मूक मुखैया ।

આડકથા (सं.) भूल, भटक, चूक।

આડગીરો (सं.) दूसरी दस्तावेज,

આડણી (सं.) चकला, काठका वह तख्ता जिसपर रोटी वेली जाती है।

આડત (सं.) आढ़त, एजेन्सी दलाली। [एजेन्ट।

આડતીઓ (सं.) आढतिया, दलाल,

આડાઈ (सं.) हट, जिद्द, सरकशी।

આડી (सं.) आड़ा, बेंडा।

આડીતર (सं.) लट्ठोका बेड़ा, डोंगी, घाटकी नाव।

આડું (वि.) टेढा, बेडौल, बेढब।

આડું અવળું મૂકવું (क्रि.) इधर उधर रखना, यथास्थान न रखना।

આડું અવળું સમજાવવું (क्रि.) बहकाना। कुछका कुछ समझा देना।

આડે રસ્તે લઈ જવું (क्रि.) भटकाना, कुमार्ग पर लेजाना।

આડો આંક (सं.) अत्यंत फैलाव, बड़ा अभियोग।

આડોશી પાડોશી (सं.) हमसाया पड़ोसी, निकटवर्ती।

આણ (सं.) [illegible], [illegible], [illegible], आज्ञा अधिकार।

આણવું (क्रि.) लाना, लेआना।

આણીકોર (वि.) इस ओर, दूसरी बाजू, इसके अलावा, इसके अतिरिक्त।

આણું (सं.) पत्नीको उसके पिताके घर से बुलावा। गौना, बिदा, द्विरागमन। [वार, एतवार।

આતવાર (सं.) आदित्यवार, रवि-

આતસ (सं.) आग, अग्नि, गर्मी, ताप, जलन।

આંતરડા आँतें, अंतड़ी, दिल।

આતિથ્ય (सं.) सत्कार, आतिथ्य मेहमानी।

આતુર (वि.) उत्साही, लवलीन, इच्छुक, फिक्रमन्द, चिंतित।

આતુરતા (वि.) उत्साह, जोश, चिंता, सोच, उत्सुकता।

આત્મઘાત (सं.) खुदकशी, आत्महत्या, आत्मघात।

આત્મદ્રોહી (वि.) आत्मद्रोही।

આત્મબુદ્ધિ (सं.) स्वार्थ परता, आत्मबुद्धि। [आत्मशक्ति।

આત્મશક્તિ (सं.) मानसिक बल,

આત્મા (सं.) जीव, सांस, प्राण, आत्मा, रूह।

આત્મારામ (सं.) महात्मा परमात्मा।

આથડવું (क्रि.) घूमना, भटकना, रमना।

આથમણું (वि.) पश्चिमी, पश्चात्य।

આથમવું (क्रि.) छुपना, अस्त होना, गिरना, बैठना, अंत होना।

આથવું (क्रि.) खारा करना, आचार डालना, खमीर उठाना।

આદત (सं.) स्वभाव, मुहाविरा, आदत।

આદમ (सं.) आदम, मनुष्य।

આદમ જાત (सं.) मनुष्यजाति मनुष्य। [आदम के वंशज।

આદમી (सं.) मनुष्य, मानव,

આદર (सं) सत्कार, मान, इज्ज़त, आदर, सन्मान, आदब।

આદરણી (सं.) सगाई।

આદરભાવ (सं.) देखो આદર

આદરમાન (सं.) मान, इज्जत, स्वागत, सत्कार, स्वस्तिवाचन।

આદરવું (क्रि,,) मान करना, सत्कार करना।

આદર્શ (सं.) दर्पण, टीका, टिप्पणी, नमूना, आदर्श।

આહ્વાન (सं.) रोग के पहिचानने का ढंग, आवाहन-पत्र, रसीद।

આદાપાક (सं.) अदरखद्वारा बना हुवा पदार्थ। [बीमारी।

આદાશીશી (सं.) अर्द्धकपाली, आधाशीशी, आधा सिर दुखनेकी

આદિ (वि.) प्रथम, मुख्य, ख़ास, अमला, आदि।

આદિઅંત (क्रि.) प्रारंभ से अंत तक शुरू से आख़िर तक।

આદિક (वि.) इत्यादि, प्रभृति, वगैरं, आदिक। [अस्ली सबब।

આદિકારણ (सं.) मुख्य कारण,

આદિત્ય (सं.) सूर्य, सूरज, वार, रविवार, एतवार।

આદુ (सं.) अदरख।

આદેશ (सं.) हुक्म, आज्ञा, आदेश।

આધાર (सं.) आसरा, आश्रय, अधिकार। [सिक दुःख।

આધિ (सं.) मनकी पीड़ा मान-

આધિવ્યાધિ (सं.) शारीरिक, और मानसिक कष्ट।

આધીન (वि.) वश, आज्ञाकारी नम्र।

આધીનતા (सं.) आज्ञापालन वश्यभूतत्व, फर्माबरदारी, नम्रता, वशीकरण, आज्ञाधीनता, स्वाधीनता

આધુનિક (वि.) नवीन, नया, टटका, ताजा, साम्प्रतिक।

આધેડ (वि.) अधेड़, आधी उम्रका।

આનન (सं.) मुख, मुहँ।

આનંદ (सं.) हर्ष, सुख, आह्लाद।

આનંદકંદ (सं.) ईश्वर, परमात्मा, ब्रह्म। [सुखकारक, हर्षप्रद।

આનંદકારી (वि.) आह्लादकारक,

આનંદમય (वि.) प्रसन्न खुश।

અનંદાશ્રુ (सं.) प्रेमाश्रु।

આનંદી (वि.) मगन, हँसमुख, खुश दिल।

આનાકાની (सं.) टालटूल सन्देह।

આની આનો (सं.) एक आना इकन्नी, चारपैसे, $\frac{1}{16}$ रुपया।

આપ (सर्व.) खुद, स्वयं, आप।

આપ અખત્યાર (वि.) स्वतंत्र, खुद मुख्तार। [अपने में।

આપ આપમાં (क्रि. वि.) हममें,

આપકર્મી (वि.) स्वावलम्बी।

આપખુદી (सं.) स्वयं प्रबल।

આપઘાત (सं.) आत्मघात, सावध।

આપણું (सर्व.) हमारे, हम, हमारे लिये। [विपत्तिका समय।

આપત્કાળ (सं.) मुसीबत कुसमय,

આપત્તિ (सं.) विपत्ति दुःख क्लेश।

આપદા (सं.) दुर्भाग्य, कम्बख्ती, आफत, विपत्ति, विपद।

આપનાર (सं.) देनेवाला, दाता, दानी।

આપમતલબી (सं) खुदगरज स्वार्थी।

આપમતિયું (सं.) आत्माभिमानी स्वेच्छाचारी। [खुदमुख्त्यार।

આપમુખત્યાર (वि.) स्वतंत्र स्वाधीन,

આપલે (क्रि.) बदलना, परिवर्तन, करना, ऋण देना और लेना।

આપવું (क्रि.) देना।

આપી દેવું (क्रि.) छोड़ देना, देदेना।

આપસમાન (वि.) खुद सरीखा, स्वतुल्य, अपने समान।

આપોઆપ (क्रि. वि.) अपने आप, खुद, स्वयं, स्वेच्छापूर्वक।

આફત (सं.) विपत्ति, दुर्भाग्य, आपद। [घाम, सूर्य्य प्रकाश।

આફતાબ (सं.) सूर्य, सूरज धूप,

આફરીન (विस्म.) शाबास! वाहवा! [अफरा।

આફરો (सं.) पेट फूलनेका रोग,

આબ (सं.) पानी, जल, चमक, प्रकाश, खूबसूरती, आबदारी।

આબકારી (सं.) जल अथवा नहर विभाग, एक्साइज डिपार्टमेंट, आबकारी । [बर्तन ।

આબખોરો (सं.) पानीका छोटा

- આબદાગીરી (सं.) राजकीय छत्र ।

આબનુસ (सं.) आबनूस केन्दू, तिंदुक । [नामवरी, नेकनामी ।

આબરૂ (स.) इज्जत, मान, यश,

આબરૂ ખોવી (क्रि.) इज्जत खोना, मान गँवाना ।

આબરૂની ફરિયાદ (सं.) अपवाद पत्र, बदनामीका लेख ।

આબરૂપત્ર (सं.) मानपत्र, साक्षी-पत्र, प्रमाणपत्र ।

આબરૂ લેવી (क्रि.) कम इज्जत करना, अपमान करना ।

આબરૂ લેનાઈ (सं.) निंदक ।

આબાદી (सं.) विजय, कामयाबी सफलता, बसासत ।

આબાદ (वि.) उपजाऊ, फलदायक, जरखेज, सफल, भरापूरा ।

આબેહૂબ (वि.) ठीक, चटक, भड़कदार ।

આભ (सं.) आकाश, बादल ।

આભડછેટ (सं.) अपवित्रता, नापाकी, अछूता, रजोदर्शन, मासिक धर्म ।

આભડવા જવું (वि.) मृतक के साथ जाना, मातम में जाना ।

આભરણ (सं.) सजावट, शृंगार, आभूषण, अलंकार, गहना ।

આભલું (स.) बादल, मेघ, आकाश ।

આભાર (सं.) कृतज्ञता, एहसानमन्दी ।

આભારી (वि.) एहसानमंद, कृतज्ञ,

આભાસ (सं.) सादृश्यता, समानता, धुंध, धुंधलापन, कल्पना ।

આભીર (सं.) गोप, अहीर, ग्वाल।

આભૂષણ (सं.) अलंकार, भूषण, गहना ।

આભ્યંતર (वि.) अन्दरूनी, अन्दरका, भीतरी ।

આમ (क्रि. वि.) इसतरह, ऐसे, आंतों का मरोड़ा, संग्रहणी, पेट चलना, आँव ।

આમની સભા (सं.) साधारण सभा, सार्वजनिक भवन ।

આમજ (क्रि. वि.) इसीतरह, ठीक इसीप्रकार, ऐसेही ।

આમણ (सं.) आँते, अँतड़ियाँ

આમનેસામને (क्रि. वि.) आमने सामने, पारस्परिक ।

આમણુસારો ગંધક (सं.) आँवलासार गंधक ।

આમદાની (सं.) आय, मालगुजारी, प्राप्ति, लाभ, अर्थागम, हासिल ।

આમંત્રણ (सं.) निमंत्रण, [बुलावा

આમલી (सं.) इमलीका वृक्ष और फल

આમવાયુ (सं.) अतिसारद्वारा पुरानी गठियावातका रोग ।

આમળાં (सं.) आँवले ।

આમળીયું (सं.) बच्चोंका आभूषण, कड़ा ।

આમીન (सं.) ऐसाही हो, एवमस्तु,

આમોદ (सं.) सुगन्ध, आनन्द, हर्ष, कौतुक । [अर्थागम ।

આય (सं.) आमद, लाभ, प्राप्ति,

આયનો (सं.) दर्पण, शीशा, मुकुर ।

આયંદે (क्रि.) इसके बाद, इसके आगे, आइन्दा ।

આયપત (सं.) आमद, प्राप्ति, लाभ, पूँजी, मूलधन ।

આયા (सं.) दाई, धाय, दासी, आया । [पहुँच ।

આયાન (सं.) आगमन, आमद,

આયાસ (सं.) परिश्रम, मिहनत, उद्योग ।

આયુધ (सं.) हथियार, शस्त्रास्त्र ।

આયુષ્ય (सं.) उम्र, आयु, जीवनकाल । [आर ।

આર (सं.) नुकीली लोहेकी कील,

આરજા (सं.) जैन तपस्विनी ।

આરજે (सं.) दर्द, दुःख, कष्ट, ।

આરડવું (क्रि.) चिल्लाना, डकारना, जोर से शब्द करना ।

આરણકારણ (सं.) कपट, बहाना, छळ, शक, सन्देह, दुविधा ।

આરત (सं.) इच्छा, चाह, आवश्यकता ।

આરતી (सं.) दीपक जो मूर्तिओंके आगे घुमाया जाता है। छन्दों के टुकड़े जो सायंकालको पढे जाते हैं ।

આરપાર (क्रि. वि.) इधर से उधर ।

આરસપહાણ (सं.) संगमरमर, एक प्रकारका खूबसूरत मूल्यवान पत्थर ।

આરસી (सं.) दर्पण, शीशा, कांच ।

આરંભ (सं.) प्रारंभ, उपक्रम, शुरू ।

આરાધના (सं.) उपासना, सेवा, परिचर्या, शुश्रूषा ।

આરાધવું (क्रि.) पूजाकरना, सेवा करना, नमस्कार करना ।

આરામ (सं.) चैन, सुख, विश्राम, उपशम ।

આરામ કરવો (क्रि.) सुख करना, चैन करना, मौज करना ।

આરામ થવો (क्रि.) सुख होना, विश्राम होना, आराम होना ।

આરી (सं.) करवत, तुरपण ।

આરીયું (सं.) छोटी ककड़ी, छोटा खीरा, आरेया । [नक्षत्र ।

આરૂદ્રા (सं.) आर्द्रानामक छठा

આરૂઢ (वि.) सवार, चढा, आरोहित । [हठी, जिद्दी ।

આરેડું (वि.) हानिप्रद, बुरा, दुष्ट,

આરો (सं.) किनारा, सिरा, हद ।

આરોગવું (क्रि.) भोजन करना, भक्षण करना ।

આરોગ્ય (सं.) रोगहीनता, आराम, स्वास्थ्य, रोगाभाव ।

આરોપ (सं.) दोष, बनावट, मिथ्या रचना, कल्पणा ।

આર્જવ (सं.) सारल्य, सरलता, कोमल, विनय ।

આર્ય (वि.) कुलीन, श्रेष्ठ, मान्य, पूज्य (सं) हिन्दु ।

આર્યા (सं.) श्लोक, दोहा, छंद, एक प्रकारका छन्द ।

આલમ (सं.) संसार, विश्व, जगत मनुष्यजाति । [मकान, घर ।

આલય (सं.) गृह, वासस्थान, गेह,

આલપાકા (सं.) एक प्रकार का वस्त्र अलपका ।

આલાપ (सं.) कथोपकथन, संभाषण, बातचीत, कुशल ।

આલિંગન (सं.) अंगामिलन, हृदयसे लगाना, लिपट, गोदी ।

આલંબન (सं) सहायता, मदद ।

આલિજહાં (सं.) बड़ा, चौड़ा, दीर्घ, विस्तृत ।

આલુ (सं.) बेर, एक खाद्यमूल । कन्द विशेष, एक प्रकार की तरकारी ।

આવક (सं.) आमद, आगमन,

આવક જાવક (सं.) आवागमन, आमद रफ्‌त रोजनामचा, भेजे हुए कागज । [आदर ।

આવકાર (सं.) ग्रहण, स्वीकार,

આવન (सं.) बारबार आनेजाने-का काम । [विज्ञान, गुण ।

આવડ (सं.) विद्या, इल्म, हुनर,

આવડત (सं.) देखो, आवड ।

આવડવું (क्रि.) जानना, समझना ।

આવડું (वि.) इतनाबड़ा, इतना अधिक, इतना ।

આવતું (वि.) भविष्य, आनेवाला ।

આવરકુટો (सं) नियुक्तस्थान, मृत्यु, अंत, सिरा । [सत्काभाव ।

આવભાવ (सं.) मान, आदर,

આવરણ (सं.) लपेटन, आच्छा-दन, ढकनेकी वस्तु, ढकना, ढाल ।

આવરદા (सं.) उम्र, आयु, जीवन ।

આવરો (सं.) हिसाबकीकिताब, बही, रजिस्टर, रोजनामचा, बहीखाता । [आद्योपान्त पढना ।

આવર્તન (सं.) पढाई, बँचाई,

આવલિ (सं.) सतर, पंक्ति, पाँति, श्रेणी, कतार, लाइन । [आना ।

આવવું (क्रि.) आना, समीप-

આવશ્ય (सं.) आवश्यकता, जरू-रत, चाह । [जीवनमरण ।

આવાગમન (सं.) आनाजाना,

આવાસ (सं.) वासस्थान, रहनेका घर ।

આવાહન (सं.) देवताओंकेलिये बुलावा, आदरपूर्वक बुलावा, पूजाका अंग ।

આવી પડવું (क्रि.) आगिरना, होजाना, वाकैहोना ।

આવી પહોંચવું (क्रि.) आजाना, आपहुँचना, पहुँचजाना ।

આવી ફસવું (क्रि.) आफसना जालमेंफँसजाना ।

આવીબનવું (क्रि.) होना, वाकै होना, अन्ततक पहुँचना ।

આવી રહેવું (क्रि.) आरहना, थकजाना, आबसना ।

આવું (वि.) एसा, इसतरहका ।

આવૃત્તિ (सं.) छापा, छपाई, संस्करण,

આવેગ (सं. जोश, बल, पौरुष, दुःख, घबराहट, चिंता ।

આવેશ (सं.) अहंकार, हठ, दुराग्रह, क्रोध, भूतचढना प्रवेश ।

આશ-શા (सं.) भरोसा, आसरा, प्रत्याशा, उम्मीद ।

આશક (सं.) प्रेमी, छैला, चाहने वाला, रसिक, आशिक ।

આશક થવું (क्रि.) प्रेमोन्मत्त होना, प्रेमी होना, आशिक होना ।

આશક માશુક (सं) प्रेमपात्र और प्रेमी, आशिक माशुक ।

આશંકા (सं.) सन्देह, शक, डर, भय, संशय ।

આસમાન (सं.) आकाश, ख,

આસમાની (वि.) नीले रंगका, नीला,

આશાવંધ (वि.) आशायुक्त उम्मीदवार । [रहित ।

આશાભંગ (वि.) निराशा, आशा

આશીર્વાદ (सं.) आशीश, मंगलवचन, शुभकामना । शुभेच्छा ।

આશ્ચર્ય (सं.) अचंभा, तआज्जुब हैरत, अद्भुत ।

આશ્રમ (सं.) झोंपडी, मठ, विद्यार्थियों का वासस्थान, मंदिर, अखाड़ा । [आधार ।

આશ્રય (सं.) आसरा, सहारा,

આશ્રિત (सं,) शरणागत, आश्रय प्राप्त, आधीन, अवलंबित ।

આસક્ત (वि.) लवलीन टेढ़ा, झुकाहुआ ।

આસન (सं.) बैठक, एक प्रकारकी औषधि, ढंग, दशा, स्थान ।

આસનાવાસના (सं.) धीरज, ढाढ़स, मेहमानदारी, आतिथ्य ।

આસપાસ (क्रि. वि.) चारोंओर, इर्दगिर्द ।

આસવ (सं.) मद्यमात्र, शराब, सिरका, मादक औषधि ।

આસરો (स.) सहारा, अवलम्ब, सहायता, कूत, आँक, जाँच ।

આસાએશ (सं.) सुख, चैन, आराम, विश्राम, दिल्लगी, प्रसन्नता ।

આસાન (सं.) एहसान, कृतज्ञता ।

આસામી (सं.) पुरुष, जन, धनाढ्य पुरुष । [अलग २, जुदा२।

આસામીવાર (क्रि. वि.) भिन्न २,

આસુરી (वि.) असुर सम्बन्धिनी,

આસો (सं.) आश्विनमास, कुँवारका महीना ।

આસોપાલવ (सं.) आसापालाका वृक्ष, एक प्रकारका वृक्ष ।

આસ્તિક (सं.) ईश्वरभक्त, वेदानुयायी, धर्माचारी । [मन्द ।

આસ્તે (क्रि. वि.) धीरे, आहिस्ते,

આસ્થા (सं.) भक्ति, विश्वास ध्यान।

આંહીં (क्रि. वि.) इधर, यहाँ।

આહાર (सं.) भोजन, खाना, भक्ष्यपदार्थ। [खाऊ।

આહારી (सं.) खानेवाला, पेटू,

આહીર (सं.) अहीर, गड़रिया।

આહુતિ (सं.) यज्ञकेसमय घी और सामग्रीका अंश बार बार मंत्र पढकर देवताओंके निमित्त अग्निमें डालना, बलि, होम।

આહેડી (सं.) शिकारी, मृगयार्थी।

આળ (सं.) दोष, अपवाद।

આળપંપાળ (वि.) व्यर्थ, निरर्थक।

આળસ (सं.) सुस्ती, ढील, आलस, तन्द्रा।

આળસીજવું (क्रि.) सुस्तहोजाना, अलसाजाना, मुरझाजाना।

આળસુ (सं.) ढीला, सुस्त, बेफिक्र, आलसी।

આળીગાળું (वि.) दुष्ट, बुरा, नुकसान पहुँचानेवाला, नाहक दखल देनेवाला, हस्तक्षेप करने वाला।

આળુ (वि.) शब्दके अंतमें यह शब्द लगाया जाताहै तब उसका अर्थ "कापूरा" होताहै, जैसे "દયાળુ"

આળોટવું (क्रि.) लुढकाना, लपेटना, मथना, बिलोना।

ઇ—ઈ

ઇ—ઈ=वर्णमाला का तृतिय और चतुर्थ अक्षर।

ઇકબાલ (सं.) भाग्य, किस्मत, होनहार, प्रारब्ध, यश, सफलता, प्रताप।

ઇકરાર (सं.) कौल, करार, वचन।

ઇક્ષુ (सं.) सांठा, गन्ना, ईख।

ઇખલાસ (सं.) मुहब्बत, प्रेम, स्नेह, प्यार। [अंगरेज।

ઇંગ્રેજ (सं.) योरोपियन, गौरांग,

ઇંચ (सं.) इंच। $\frac{1}{12}$ फुट

ઇંચવુ (क्रि.) गलेतकभरना, नाक तकभरना, एकदम बहुत खालेना।

ઇચ્છવું (क्रि.) इच्छाकरना, चाहना। [वाञ्छा, कामना।

ઇચ્છા (सं.) चाह, ख्वाहिश,

ઇચ્છાફળ (सं.) वाञ्छित बात। त्रैराशिक का उत्तर।

ઇચ્છિત (वि.) मनोभिलषित, मनवांछित, इच्छानुसार।

ઇજ્જત (सं.) मान, आदर प्रतिष्ठा।

ઇજન (सं.) निमंत्रण, बुलावा।

ઇજા (सं) हानि, नुकसान, हर्ज।

ઇજાફત (सं.) पारितोषक, इनाम।

ઇજાર (सं.) पायजामा, खूसना।

ઇજારદાર (सं.) ठेकेदार, किसान।

ઇજારો (सं.) ठेका, विक्रयका आधिकार।

ઇઝરાવું (क्रि.) झुराना, लटजाना, रंजीदा होना।

ઈંટ (सं.) ईंट

ઇંટાળો (सं.) इंटे बनानेका साँचा।

ઇડા (सं.) मिट्टी, भोजन, खाना कला, गुण।

ઈંડું (सं.) अंडा,

ઇતબાર (सं.) विश्वास, यकीन।

ઇતમામ (सं.) सवारी, ठाठबाठ, संस्थापन।

ઇત્યાદિ (वि..) वगैरः, प्रभृति।

ઇતરાઝ (सं.) अभिमान, घमण्ड, आत्मस्तुति, आत्मश्लाघा।

ઇતરાજી (सं.) अप्रसन्नता अवकृपा, अरुचि।

ઇતરાવું (क्रि.) शेखी मारना, गर्व करना, बड़ी २ बातें मारना।

ઇતિ (सं.) अंत, सिरा, समाप्ति।

ઇતિહાસ (सं.) तवारीख, वर्णन।

ઇન્તેજાર (सं.) चिंतित, उद्विग्न, चिंताशील। [बांका।

ઇતરબાજ (वि.) अहंकारी, छैला,

ઇદ (सं.) मुसलमानों का पर्व दिन।

ઇનકાર (सं.) नकार, अस्वीकार।

ઇનમીન (वि.) थोड़ेसे, चन्द, कम, इने गिने।

ઇનશાઅલ્લાતાલા (वि.) हरिइच्छा, ईश्वरेच्छा। [मनुष्यजाति।

ઇનસાન (सं.) आदमी, मनुष्य,

ઇનસાનિયત (सं.) मनुष्यता, तर्कशक्ति, ल्याकत, उपयुक्तता !

ઇનસાફ (सं.) न्याय,

ઇનસાફી (वि.) यथार्थ, ठीक, उचित, न्यायानुमोदित। [भेंट।

ઇનામ (सं.) पुरस्कार, उपहार,

ઇનામ આપવું (क्रि.) पुरस्कार देना, भेट करना।

ઇન્દ્ર (सं.) शचीपति, देवताओंका राजा, इन्द्र, शक्र ।

ઇન્દ્રિ (सं.) इंद्रिय, अंग, लिंग, उपस्थेन्द्रिय ।

ઇન્દિરા (सं.) लक्ष्मी, कमला, धन की अधिष्ठात्री देवी ।

ઇન્દુ (सं.) चन्द्रमा, चाँद, सोम ।

ઇન્દ્રજવ (सं.) औषधी विशेष, इंद्रजौ ।

ઇન્દ્રજાળ (सं.) मायाकर्म, छळ, कपट, बाजीगरी ।

ઇન્દ્રધનુષ્ય (सं.) शक्रधनु, सर्यकी किरण, वर्षाऋतु में दिखनेवाला धनुष ।

ઇન્દ્રવારણું (सं.) औषधि विशेष एक प्रकारका फल, इन्द्रायण ।

ઇન્દ્રિનીલ (सं.) नीलमणी, नीलम,

ઇન્દ્રિયગમ્ય (वि.) ज्ञानगम्य, प्रत्यक्ष, दिखाऊ ।

ઇન્દ્રિય ગોચર (वि.) इन्द्रियोंका विषय, ज्ञानगम्य, ज्ञानपथवर्ती ।

ઇન્દ્રિયજીત (सं.) अपनी इन्द्रियो को दमन करनेवाला ।

ઉધબુધીરી (सं.) मूर्ख, मन्द ।

ઇંધણું (सं.) ईंधन, बलीता–री (सं.) एक प्रकारका भोजन ।

ઇહાં (क्रि. वि.) इस तरफ, इसँ ओर, इधर ।

ઇબારત (सं.) शब्द रचना, बनावट ।

ઇભ (सं.) हाथी, गज,

ઇમાન (सं.) निश्चय, विश्वास, यकीन, धर्म, सचाई, मत ।

ઇમાનદાર (सं.) सच्चा, विश्वासी, वफादार । [णिकता ।

ઇમાનદારી (सं.) सच्चाई, प्रामा-

ઈમાની (वि.) विश्वास योग्य ।

ઇમામ (सं.) मुसलमानों का पुरोहित ।

ઇમારત (सं.) गृह, धाम, हवेली, कोठी, बनावट ।

ઇયળ (सं.) एक प्रकारका कीड़ा ।

ઇર્ષા–ર્ષ્યા (सं.) डाह, द्रोह, द्वेष,

ઇરાદો (सं.) अभिप्राय, इच्छा, फळ, प्रयोजन, आशय, आकांक्षा ।

ઇલકાબ (सं.) पदवी, उपपद ।

ઇલમ (सं.) विद्या, हुनर, जादू, टोना, इन्द्रजाल । [पटु, गुणी,

ઇલમી (सं.) चतुर, होशियार,

ઇલા (सं.) विश्व, पृथ्वी।

ઇલાકો (सं.) अधिकार, स्वत्व, अमलदारी, अख्तियार, प्रान्त, ज़िला।

ઇલાજ (सं.) उपाय, औषधोपचार, हिकमत, तदबीर, यत्न।

ઇલાયચી (सं.) इलाची, एला, इलायची।

ઇલાવૃત્ત (सं.) जम्बूद्वीप के नव वर्षान्तर्गत एक वर्ष विशेष।

ઈશ (सं.) शासक, प्रभू, पति, ईश्वर, स्वामी (विस्म.) हिश, हुश।

ઇશક (सं.) प्रेम, चाह।

ઇશકબાજ (सं.) मतवाला प्रेमी, लंपट, अय्याश, कामी, रताभिलाषी

ઇશકી (वि.) छैला, अलबेला, रसिया, रंगीला, कामी।

ઇશારત–રો (वि.) आँखोका सकेत, सैन, संकेत, सूचना।

ઈશ્વર (सं.) प्रभु, सर्वशक्तिमान।

ઈશ્વરસ્તુતિ (सं.) भजन, प्रार्थना गीत।

ઈશ્વરકૃપા (सं.) प्रभुकी दया।

ઈશ્વરી (सं.) दैवी, पवित्र,

ઈશ્વરી નિયમ (सं.) प्रकृति के नियम, विधि विधान।

ઈશ્વરી પુરુષ (सं.) पवित्र मनुष्य, बुद्धिमान।

ઈશ્વરેચ્છા (सं.) परमात्माकी इच्छा।

ઇષ્ટ (वि.) वाञ्छित, पूजित, मानित। [उपास्य देव।

ઇષ્ટદેવ (सं.) कुलदेव पूजनीय,

ઇષ્ટમિત્ર (सं.) प्यारा मित्र, सच्चा मित्र। [स्थान, क्रम।

ઇષ્ટરાશિ (सं.) (गणितमें)

ઇષ્ટિ (सं) याग, यज्ञ, अभिलाष इच्छा। [के सीरापाटी।

ઈસ (सं.) चार पाई के बाजू, खाट

ઇસકોતરી (सं.) लिखनेका टेबल, छोटी सन्दूक।

ઇસ્ટાપડી (सं.) रोकनेवाली, ठहरानेवाली। [ईसबगोल।

ઇસબગોળ (सं.) औषधि विशेष

ઇસસ (सं.) लोबान, एक सुगन्धित गोंद। [आहिरखबर।

ઇસ્તેહાર (सं.) विज्ञापन, सूचना,

ઇસવી (वि.) मसीही, ईसाई।

ઇસવી સન (सं.) ईसाई सम्वत, सन् ईस्वी। [की इस्तरी।

ઇસ્ત્રી (सं.) कपड़ों की तह करने

ઉઆયલ (सं.) गड़बड़ी, इत्यादिक।

ઉ–ઊ

ઉ–ઊ वर्णमाला का पाँचवाँ और छठा अक्षर।

ઉકરડો (सं.) ऊपलों का ढेर, कंडो का ढेर, कर्कट का ढेर, कचरेका ढेर

ઉકલવું (क्रि.) पढने योग्य होना (लिखा हुवा)

ઉકળવું-કાળવું (क्रि.) उबालना, गर्म होना। गर्म करना।

ઉકળાટ (सं) ताप, गर्मी, घबराहट, हैरानी।

ઉકાળો (सं.) काढा, उबाल, गर्मी।

ઉકેલ (सं.) चालाकी, निपुणता, चतुरता, सुलझावट, मुक्त !

ઉકેલવું (क्रि.) पढना, पढ़ने योग्य बनाना, निर्णय करना, उधेड़ना, खोलना, समझाना।

ઉખાડવું-ખેડવું (क्रि.) तोड़ डालना, बरबाद कर डालना, अलग करना, खोलना, उखाड़ना।

ઉખર (वि.) बिना उपजाऊ, ऊसर, अनुपजाऊ।

ઉખરવસ્તુ (सं.) नई आबादी, उपनिवेश, नई बस्ती।

ઉખળ (सं.) खरल, ऊखल, उलूखल।

ઉખાણું (सं.) पहेली, प्रावाल्हिका, गोरखधन्धा, बुझौवल, गूढ प्रश्न।

ઉગમ (सं.) निकास, उद्गम, उदय।

ઉગમણુ-ણી (सं.) पूर्व, प्राची दिशा,

ઉગમણું (वि.) पूर्वी, पूर्व दिशाका।

ઉગરવું (क्रि) भागना, बचना, खोलना।

ઉગવું (क्रि.) उदय होना, उगना, निकलना, फूटना, प्रकट होना,

ઉગામવું (क्रि) उठाना, दिल बढाना, [मुनाफा।

ઉગાર (सं.) लाभ, बचत, फायदा,

ઉગારવું (क्रि.) बचाना, रक्षा करना, छुड़ाना।

ઉગી નીકળવુ (क्रि.) निकल आना, प्रकट होजाना, [कटु, क्रोधी।

ઉગ્ર (वि.) उत्कट, रौद्र, तीक्ष्ण,

ઉંઘ (सं) उंघाई, नींद, निंदास, नींदका प्रथम रूप,

ઉંઘવું (सं.) झपकीमें होना, नींद आना, आराम करना, लेटना, सोना। [निंद्रालु।

ઉંઘાખણું (वि.) सुस्त काहिल,

ઉંઘણુસી (वि.) निंद्रालु, नींदमें भरा हुवा, उंघाया, आलसी।

ઉઘડું (वि.) आलसी, ढीला, धीमा, दीर्घसूत्री, मन्द गति ।

ઉઘડવું (क्रि.) खोलना, साफ होना, (किस्मत) खुलना, बादल हटना ।

ઉઘરાણી (सं.) आवश्यक मांग ।

ઉઘરાણું (सं.) चन्दा, दान ।

ઉઘરાત (सं.) मालगुजारी का संग्रह, महसूल संग्रह ।

ઉઘરાવો (सं.) भोजन अथवा तरल पदार्थ परसनेका बड़ा चमचा ।

ઉઘરાવવું (क्रि.) एकत्र करना, द्रव्य पाना । [आकाश ।

ઉઘાડ (सं.) स्वच्छ ऋतु, निर्मल

ઉઘાડવું (क्रि.) खोलना, ताला खोलना, प्रकाश करना प्रत्यक्ष करना ।

ઉઘાડી રીતે (क्रि. वि.) खुल्लमखुल्ला, प्रकट रीतिसे, दिन दहाड़े ।

ઉઘાડું (वि.) प्रत्यक्ष, खुला, साफ, नंगा, शृंगारहीन ।

ઉઘાડું કરવું (क्रि.) खोलना, प्रकट करना, प्रत्यक्ष करना । [शरीफ

ઉંચ (वि.) बड़ा कुलीन, ऊँचा,

ઉંચકવું (क्रि.) लेजाना, उठा लेना।

ઉચકો (सं.) टीका, सगाई, मंगनी ।

ઉંચકામણ (सं.) भार लेजानेकी मजदूरी ।

ઉંચકાવવું (क्रि.) उठवा देना ।

ઉંચક્કો (सं.) दुष्ट, नीच, पाजी, बेवकट ।

ઊંચનીચ (वि.) छोटा बड़ा, ऊंचा नीचा, विषम, असमान ।

ઉંચરવું (क्रि.) कहना, बोलना

ઉંચાઈ (सं.) उच्चता, ऊंचाई, बड़प्पन ।

ઉંચાટ (सं.) व्यग्रता, बेसब्री ।

ઉંચાણ (सं.) ऊंचाई,

ઉચાપત (सं.) अपहरण, अनुचित कार्य, दुरुपयोग ।

ઉચાળા (सं.) घरका काठका सामान, घरकी सामग्री । [योग्य ।

ઉચિત (वि.) ठीक, मुनासिब,

ઉંચું (सं.) ऊंचा, ज्येष्ठ, महान ।

ઉંચું કરવું (क्रि.) उठाना, पकड़ना ।

ઉંચું નીચું કરવું (क्रि.) ठीक ठीक करना ।

ઉંચે (क्रि. वि.) ऊपर, [उन्नति ।

ઉચ્ચાટ (सं.) व्यग्रता, उदास,

ઉચ્ચાટન (सं.) उखाड़ना, जगहसे उत्पाटन, किसी मनुष्यपर मंत्र द्वारा अपत्ति लाना ।

ઉચ્ચાર (सं.) उच्चारण, कथन ।

ઉચ્છિષ્ટ (वि.) जूठा, खानेसे बचा हुआ पदार्थ ।

ઉચ્છેદ (सं.) छेदन, काटना, विनाश।

ઉચ્છેદક (सं.) नाशक, विध्वंसक ।

ઉચ્છૃંખળ (वि.) अनियंत्रित, अनर्गल, विश्रृंखल, नटखट, बेरोक ।

ઉછંગ (सं.) गोदी, छाती, हृदय।

ઉછરંગ (सं.) परमानन्द, अत्यानन्द । [ऊपर आना ।

ઉછરવું-ઉછેરવું (क्रि.) उठना, उगना,

ઉછળવું (क्रि.) कूदना, उछलना ।

ઉછાંછળું (वि.) नटखट, उच्छृंखल, अविचारी । [कर्जा ।

ઉછીતું-નું (वि.) ऋण, उधार,

ઉછેરવું (क्रि.) उत्पन्न करना, पालन करना, उठाना, उस्काना, ऊपरलाना । [ऊसर, अनुपजाऊ।

ઉજડ (वि.) सूनसान, निर्जन,

ઉજાડ કરવું (क्रि.) उखाड़ना, सूना करना, निर्जन करना ।

ઉજવવું (क्रि.) देखालना, एक धार्मिक संकल्पको बदस्तूर पूर्ण करना ।

ઉજવું (क्रि.) तेल लगाना चर्बी लगाना, औंगना, मंत्र शक्ति से अच्छा करनेकी दम भरना ।

ઉજળું (सं.) सफेद, स्वेत, शुभ्र चमकीला, खूबसूरत ।

ઉજળું એટલું દુધ નહીં-सोने के समान कान्तिवान, दूध समान सफेद ।

ઉજળાઈ (वि.) चमकीलापन, स्वच्छता, सफाई ।

ઉજાગરો (सं.) सावधानी, सजगता, चौकस, जाग ।

ઉજાણી (सं.) दावत, जेवनार, त्यौहार, भोजन ।

ઉજાસ (सं.) प्रकाश, चमक उजेला।

ઉઝત (सं.) हठ, जिद्द, सरकशी, हुज्जत ।

ઉઝરવું (क्रि.) कुदेरना, काटना ।

ઉઝરડો (सं.) खुरचन, चीरफाड़।

ઉંટ (सं.) उष्ट्र, ऊँट ।

ઉટકવું-ઉકવું (क्रि.) निर्मलकरना, जिल्लकरना, चमकाना ।

ઉંટવૈદ્ (सं.) मिथ्या चिकित्सा ।

ઉઠાંગ (सं.) गपशप, कहानी, चर्चा, अटकल, कयास। [बीज।

ઉટિયા જીઈ (सं.) ऊंटकटारी के

ઉઠતા બેસતાં (वि.) प्राय , अक्सर, जबतब, हमेशा, सदैव।

ઉઠબેસ (सं.) बेचैनी, बेआरामी, ऊठक बैठककी सज़ा जो पाठशालामें विद्यार्थियों को प्राय. दी जाती है।

ઉઠમણું (सं) मातम, अथवा शोक मनानेका अंतिम दिन।

ઉઠવું (क्रि) उठना, खड़ा होना, जागना, उदय होना। [भड़काना।

ઉઠાડવું (क्रि) उठाना, जगाना,

ઉઠાડી મેલવું (क्रि.) निकाल देना, दूर भेज देना, बाहिर करना।

ઉઠાડી લેવું (क्रि.) खींच लेना, उठा लेना, बुला लेना।

ઉઠાંતરી (सं.) कूच, प्रस्थान, रवानगी।

ઉઠાવ (सं.) चाह, पूछ, ऊंचाई।

ઉઠાવણી કરવી (क्रि.) आक्रमण करना, धावा करना, चढाई करना।

ઉઠાવવું (क्रि.) उठा लेना प्रकट करना।

ઉઠી જવું (क्रि.) निकल जाना, गुजरना, चला जाना, विदा होना।

ઉડતું (वि.) बेसबब, नाहक निर्मूल, उड़ता, फैलनेवाला, छूत से लगनेवाला, उड़नेवाला।

ઉડભગ (सं.) मूर्ख, हठी, ज़िद्दी

ઉડવું (क्रि.) उड़ना, फैलना, छूत से लगना।

ઉડળ (सं.) गोद, आलिंगन।

ઉડળ ઝુડળ (क्रि. वि.) गड़बड़ीसे, घबराहटसे, बेपरवाहीसे, असावधानीसे।

ઉડાણ (वि.) गहराई

ઉડાઉ (वि.) अतिव्ययी, लुटाऊ, दानी, अपव्ययी, खर्राच, फ़ुज़ूल खर्ची,

ઉડાવવું (क्रि.) उड़ाना, भगाना, अलग करना।

ઉડેલ (वि.) खर्च, अपव्यय, चंचल, अधीर, बेठिकाना, (सं.) लुच्चा, लंपट। [अगाध

ઉડું (वि.) गहरा, औंड़ा, गंभीर

ઉઢણુ (स.) भार लेजाने के लिये सिर पर कपड़े की गोल घड़ी करके रखी हुई ईंडुई, चूमली, ईंडुई ·

ઉડુ (सं.) तारे, नक्षत्र,

ઉઢા (सं.) नव विवाहिता

ઉતંગ (वि.) ऊंचा,

ઉંચું (वि.) न्यून, कम, थोड़ा, अपर्याप्त, अपूर्ण, ऊर्णा।

ઉતરચઢ (सं.) बार बार चढ़ाव और उतार।

ઉતરડ (सं.) बर्तनोंकी श्रेणी जो एक के ऊपर एक रखा हो।

ઉતરડી નાખવું (वि.) उधेड़ डालना, छील डालना।

ઉતરણ (सं.) ढाल, उतार,

ઉતરતી (सं.) घटती, उतार,

ઉતરતી ભાંજણી (सं.) क्रमश. न्यूनता। [छोटा, नीच।

ઉતરતું (वि.) अप्रधान, मातहत,

ઉતરવું (क्रि.) उतरना, सवारीसे उतरना, नीचे आना, घटना, कम करना, आगे चलाना, रास्ता दिखाना, पार करना, टिकना, बसना, धरना, नीचे होना, बैठना, धीमा होना, मुरझाना, कुम्हलाना, नकल करना, उतारना।

ઉતરાયણ (सं.) सूर्यका उत्तर दिशामें गमन, उत्तरायण।

ઉતરાવવું (क्रि.) नकल कराना, नीचा कराना, नीचे लाना, उतराना।

ઉતરી જવું (क्रि.) बिगड़ जाना, नष्ट होजाना, झुकना, ढलना, उतर जाना। [चना,

ઉતરી પડવું (क्रि.) सिरे पर पहुँ-

ઉતારવું (क्रि.) उतारना, नीचे करना, नकल करना।

ઉતારી પાડવું (क्रि.) धीरे से बात काटना, नम्रता पूर्वक बात काटना।

ઉતારુ (सं) यात्री, मुसाफर,

ઉતાવળ (सं.) जल्दी, त्वरा, शीघ्रता

ઉતાવળું (सं.) बेसब्र, जल्दबाज,

ઉત્કંઠા (सं.) अभिलाषा, खेद, व्याकुळता।

ઉત્કર્ષ (सं.) उत्तमता, श्रेष्ठता, प्रधानत्व, यश, प्रताप, विजय।

ઉત્કૃષ્ટ (सं.) उत्तम, उम्दा, श्रेष्ठ, प्रकृष्ठ।

ઉત્ક્રમ (सं.) उलटा क्रम, अनिक्रमण।

ઉત્તમ (सं.) सबसे अच्छा, नफीस, अच्छा, बढ़िया।

ઉત્તર (सं.) जवाब, नतीजा, अदालतमें डिफेंस नतीज, उत्तर दिशा,

ઉત્તરક્રિયા (सं.) दाह कर्म, अन्त्येष्ठी

ઉત્તર ધ્રુવ (सं.) उत्तरीय सिरा, ध्रुव नामक तारा जो उत्तर दिशामें स्थिर है।

ઉત્તરોત્તર (क्रि.) अधिकाधिक, धीरे धीरे, क्रमशः ।

ઉત્તેજક (वि.) भड़कानेवाला, प्रेरक,

ઉત્તેજન (सं.) भर्त्सना, प्रेरणा, व्याकुलकरण, तेज़ी ।

ઉત્થાપન (सं.) उठाना, भड़काना, जगाना । [आविर्भाव ।

ઉત્પત્તિ (सं.) पैदायश, जन्म,

ઉત્પન્ન કરવું (क्रि.) जन्मदेना, पैदा करना, रचना, बनाना, कारण होना ।

ઉત્પાત (सं.) उपद्रव, अशुभ घटना आपद, दुर्गति, अपशकुन ।

ઉત્પ્રેક્ષા (सं.) उपमा, अर्थालंकार, मिलान तुलना ।

ઉત્સર્ગ (सं.) त्याग, छोड़ ।

ઉત્સવ (सं.) त्योहार, खुशीका अवसर । [साहस हुलस ।

ઉત્સાહ (सं.) हिम्मत शक्ति,

ઉત્સાહ ભંગ (सं.) हतोत्साह, साहसहीन, टूटादिल ।

ઉત્સુક (वि.) इच्छुक, शौकीन ।

ઉથલપાથલ (सं.) गड़बड़, घबराहट, उलट पलट, लोट पोट,

ઉથલાવવું (क्रि.) औंधजाना, उलट जाना । [पलटाव ।

ઉથલો (सं.) जवाब, उत्तर, लौटफेर

ઉથાપવું (क्रि.) आज्ञा भंग करना, अपमान करना ।

ઉદક (सं.) पानी, जल ।

ઉદધિ(सं.) समुद्र, वारिधि, सागर

ઉદઘાત (सं.) गर्व, दुःख, बट्टी, नुकसान बुराई ।

ઉદય (सं.) प्रकाश, यशप्राप्ति, ज्योतिर्दीप्ति उत्थान ।

ઉદર (सं.) पेट, जठर, पेडू, (क्रि. वि.) वहाँ, उधर ।

ઉદર પોષણ (सं.) जीविका, सत्व, भोजन, रोजी ।

ઉદર નિર્વાહ (सं.) जीविका, रोजी,

ઉદરાવો (सं.) चिंता, सोच, फिक्र ।

ઉંદર (सं.) मूषक, चूहा, गणेशवाहन।

ઉંદરવાઈ (सं.) चूहे पकड़ने का फंदा । [गंजा सिर ।

ઉંદરિ–દ્રિ (सं.) मैलयुक्त सिर,

ઉદાર (वि.) फय्याज, ईमानदार, दयालु, दाता, चतुर, खुशदिल ।

ઉદારતા (सं.) उदारपना, फैयाजी, नेकी, भलाई ।

ઉદારતાથી (क्रि. वि.) उदारतापूर्वक,
ઉદાસી (सं.) रंजिश, खेद, शोक।
ઉદાહરણ (सं.) दृष्टांत, मिसाल।
ઉદિત (वि.) प्रकाशित, आविर्भूत, ऊगाहुवा।
ઉદ્દેશ (सं.) अनुसंधान, अभिप्राय, इच्छा, निशान, लक्ष्य।
ઉદો (सं.) हलका नीला रंग, ऊदा रंग। [उजड्ड, नटखट।
ઉદ્ધત (सं.) गँवार, भड़काहुवा,
ઉદ્ધતાઈ (सं.) गँवारपना, उजड्डपना, बेअदबी।
ઉદ્ધાર (सं.) बचाव, रिहाई छुटकारा, मुक्ति, अभ्युदय।
ઉદ્ધારવું (क्रि.) बचाना, छोड़ना, मुक्त करना। [पैदायश।
ઉદ્ભવ (सं.) उत्पत्ति, जन्म,
ઉદ્‌ભિજ્જ (सं.) पृथ्वी फाडकर उत्पन्न हुवा, वृक्ष, वनस्पति आदि।
ઉદ્યમ (सं.) उद्योग, कोशिश, परिश्रम, साहस।
ઉદ્યાન (सं.) बाग़, वाटिका, उपवन।
ઉદ્યાપન (सं.) समाप्ति, पूर्ति, व्रतका अंत। [उद्यम।
ઉદ્યોગ (सं.) यत्न, चेष्टा, उत्साह,
ઉદ્યોગશાળા (सं.) उद्योग पाठशाला। जवान वा कमसिन अपराधियोंके सुधारनेकी पाठ शाला।
ઉદ્યોત (सं.) प्रकाश, चमक, आलोक, उजियाली।
ઉદ્વેગ (सं.) व्याकुलता, चिंता, विरहजन्य दुःख।
ઉધડું-ડ (सं.) थोकबिक्री,
ઉધરવું (क्रि.) ऋणी होना,
ઉધરસ (स.) खासी, धाँस, फेफडे की सूजन।
ઉધરેલું (वि.) उधार बेचाहुवा,
ઉધાઈ (सं.) सफेद चिउँटी, पतिंगा।
ઉધાન (सं.) ज्वारभाटा, समुद्र के पानी का चढाव जो शुक्लपक्ष मे द्वितीया और पूर्णमासीपर होता है (वि.) तीन।
ઉધાન પાયા (वि) विपथगामी, अव्यवस्थित।
ઉધાર (सं.) उधार, ऋण, कर्ज़।
ઉધાર પાસું (सं.) हिसाब की किताब में नामें लिखने की ओर।
ઉધાર લેવું (क्रि.) कर्जपर खरीदना, नामे लिखाकर मोललेना।
ઉધારો (सं.) देरी, विलम्ब वादा, नियम, वचन, शर्त।

ઉલ્લુ (सं.) बेवकूफ, मूर्ख, अहिवर.

ઊર્ધ્વ (क्रि. वि.) ऊपर, ऊँचा, अधिक, (वि.) ऊपरवाला, ऊपरका।

ઊધિયું (वि.) मिट्टीके पात्रमें पकी हुई भाजी तरकारी।

ઊંધી પુતળીનું (वि.) हीन दृष्टिका कम नज़र। [भाग, नीचे।

ઊંધું (वि.) औंधा, ऊपरका

ઊંધું મારવું (क्रि.) औंधा करना लौटदेना।

ઊંધે મહોડે (वि.) मुहँकेबल

ઊન (सं.) मेषलोम, भेड़केबाल, रोम, ऊन।

ઉન્મત્ત (वि.) विक्षिप्त, बौराह, मतवाला, पागल। [शरीफ।

ઉન્નત (वि.) उच्च, ऊँचा, ऊर्ध्व,

ઉનવા (सं.) उबलताहुवापानी, एक प्रकारका रोग। [बर्तन।

ઉનાળિયો (सं.) पानी गर्म करनेका

ઉનાવું (क्रि.) झुकना, मुड़ना।

ઉન્હાળો (सं.) ग्रीष्म, गर्मीका मौसिम।

ઉન્માદ (सं.) चित्तविभ्रम, पागलपन, अचेतता, गर्व, खुशी।

ઉપકરણ (सं.) हथियार, औजार बासन, सामग्री। [भलाई।

ઉપકાર (सं.) कृपा, सहायता,

ઉપકાર કરવો (क्रि.) दयाकरना, कृपाकरना, भलाईकरना।

ઉપકાર માનવો (क्रि.) शुक्रिया अदाकरना, धन्यवाद देना।

ઉપક્રમ (सं.) आरंभ, शुरू परिश्रम, यत्न, उद्योग।

ઉપગુરૂ (सं.) छोटा अध्यापक, अधप्रानगुरु, नायब मुदर्रिस।

ઉપગ્રહ (सं) तारे, राहु, केतु, उपग्रह। [बर्ताव।

ઉપચાર (सं.) सेवा, टहल, इलाज

ઉપજ (सं.) पैदा, जन्म, उत्पत्ति आमद, आय।

ઉપજ નિપજ (स.) उत्पत्ति और उन्नति, जन्म और वृद्धि।

ઉપરામણી (सं.) वैवाहिक रीति, पहरावनो, दहेज।

ઉપડવું (क्रि.) रवानाहोना, कूच करना, अदृश्यहोना, तेज होना, जहाज़ चलाना, निकट पहुँचना, विना तुतलाहटके बोलना।

ઉપણવું (क्रि.) फटकना, पछोरना छानना। [बखेड़ा, विद्रोह।

ઉપદ્રવ (सं.) उत्पात, अन्याय,

ઉપદેશક (सं.) शिक्षक, उपदेष्टा, उपदेशकर्ता। [मंत्रदान, सलाह।

ઉપદેશ (सं.) शिक्षा, हितकथन,

ઉપધાતુ (सं.) कच्ची धातु, निम्न सात उपधातु कहाती हैं— सोनामाखी, नीलाथोथा, हरताल, अभ्रक, खपड़िया, सुर्मा, और मेनसिल ।

ઉપધાન્ય (सं.) छोटाअन्न ।

ઉપનામ (सं.) वंशपरंपरा गतनाम, कुळनाम, पदवी ।

ઉપભોગ (सं.) विलास सामग्री ।

ઉપમા (सं.) मिसाल, उदाहरण, सादृश्य । [दृष्टान्त ।

ઉપમાન (सं.) बयान, वर्णन,

ઉપયુક્ત (सं.) ठीक, योग्य, उचित, मौजूं ।

ઉપયોગ (सं.) इस्तैमाल, प्रयोग औचित्य, लाभ । [मन्द, अनुकूल।

ઉપયોગી (वि.) उचित, फायदे-

ઉપર (उप०) पर, ऊपर ।

ઉપર ઉપરથી (क्रि. वि.) थोड़ा थोड़ा, ऊपरी, हलकेपनसे ।

ઉપરચોટીયુ (वि.) डॉवाडोल, अस्थिर ।

ઉપરણો (सं.) छोटासा कपडा जो कंधोपर डालाजाताहै, दुपट्टा ।

ઉપરતિ (सं.) मृत्यु, उदासीनता,

ઉપરવાડિયો (सं.) एककृषक उस-गाँवका न रहनेवाला जिस गांवमें वह खेती करता हो ।

ઉપરવાસ (सं.) भूमिपर न रहने-वाला दुमंजिलेमें रहेनेवाला, ऊप-रका चढाव,

ઉપરાઉપરિ (क्रि. वि.) प्रायः अव-सर, शीघ्र, तेज, वेगवान

ઉપરાછાપરી (क्रि. वि.) लगातार, परंपरागत, अनुक्रमिक, क्रमानुसार

ઉપરાણું (सं.) स्थापन, पुष्ट, रक्षा

ઉપરાન્ત (उप०) अलावा, पीछे, बाद, अतिरिक्त

ઉપરી (सं.) प्रबन्धकर्ता, अध्यक्ष ऊँचा, बड़ा, श्रेष्ट, उत्तम ।

ઉપરીપણું (सं.) हुकूमत, अनु-शासन

ઉપલક-ગ (सं.) अधिकता, शेष, बचत, बढती, आवश्यकतामे अधिक हिसाबमे नहीं लिया हुवा ।

ઉપલક્ષણ (सं. वह शब्द शक्ति-जिससे निर्दिष्ट वस्तुसे भिन्न तत्स दृश वस्तुका ज्ञान होताहै, उपलक्षण ।

ઉપલું (वि.) पूर्वका, ऊर्ध्व लि-खित, उपरोक्त, कथित ।

ઉપવન (सं.) बाग, उद्यान, वाटिका ।

ઉપવાસ (सं.) व्रत, अनाहार, लंघन, दिनरात भोजनाभाव ।

ઉપશાંતિ (सं.) कमी, घटी, धीरज, शान्ति, तसल्ली, स्वास्थ्य ।

ઉપસર્ગ (सं.) आमेल्गाना ।
ઉપસવું (क्रि.) बढ़ना, फैलना, अकड़ना ।
ઉપસાગર (सं.) खाड़ी ।
ઉપસ્થાન (सं.) उपासना, अप्रकट-पूजा, मानसिकपूजा ।
ઉપસ્થિત (वि.) जानाहुवा, जोताहुवा, सुधराहुवा, बोयाहुवा ।
ઉપહાર (सं.) इनाम, भेंट, नज़र।
ઉપહાસ (सं.) ठट्ठा, मजाक, हँसी । [लेना
ઉપાડવુ (क्रि.) उखाड़ना, खींच-
ઉપાદાન (सं.) प्राप्ति, ग्रहण, बयान, कथन, हेतु ।
ઉપાધિ (सं.) झगड़ा, छल, इल्लत।
ઉપાધ્યાય-ધ્યો (सं.) पुरोहित, शिक्षक ।
ઉપાન (सं.) जूतियाँ, पदत्राण ।
ઉપાય (सं.) इलाज़, तदबीर ।
ઉપાયન (सं.) सम्मानित भेंट ।
ઉપાર્જન (सं.) प्राप्ति, हासिल ।
ઉપાર્જિત (वि.) अर्ज्जन, धनादि संचय, संचित, एकत्रित ।
ઉપાસક (सं.) पूजा करनेवाला, अनुगामी ।
ઉપાસના (सं.) सेवा, टहल, पूजन, देवपूजा, मूर्तिपूजा, सुश्रूषा ।
ઉપેક્ષા (सं.) अनादर, त्याग, उदासीनता । [प्रस्तावना ।
ઉપોદ્ઘાત (सं) आरंभ, भूमिका
ઊફ (सं.) गर्मी, हरारत, जोश, रक्षा, पोषण, सहायता ।
ઊફાળું (वि.) गर्म, गुनगुना, कम गर्म । [द्वार ।
ઊંબર-રો (सं.) देहली, थली,
ઉબક (सं.) कै, वमन, छर्दि, उलटी, उछाँट ।
ઉભાડિયું (सं.) बारबार आग का भड़कना और शांत होना। आग-बबूला ।
ઉભાણો (सं.) ईंधन ।
ઉભી (सं.) नाजके भुट्टे, सिरे, गेहूँ अथवा जौकीबाल ।
ઉભય (उप.) दोनों, दो.
ઉભયચર (सं.) जलचर और थलचर, जल और पृथ्वीपर रह-नेवाले । [दोनरफ ।
ઉભયપક્ષ (सं.) दोनों दोनोंपक्ष,
ઉભયલોક (सं.) दोनोलोक, इह-लोक और परलोक ।
ઉભયાન્વયી (वि.) मेल, संगम ।
ઉભયાર્થ (वि.) गोलमोल, दो आशयवालीबात, सन्देहपूर्ण, संदिग्ध । [स्पर्शज्ञान, बोध।
ઉભરો (सं.) उदय, और फैलाव

ઉભરાવુ (क्रि.) ऊपरसे बहचलना झुंड, इकठ्ठाहोना, भीड़ ।
ઉભરણી (सं.) कमरेकी उंचाई ।
ઉભળવુ (क्रि.) पलटाव, पूर्वदशा में आजाना, उघड़ाहुवा, उबलाहुवा
ઊભું (वि.) बहुतवाळू, खड़ा. सिरकेबल, सीधा ।
ઊભું થવું (क्रि.) खड़ाहोना ।
ઊભું રાખવું (क्रि.) ठहराना. खड़ारखना, रोकना ।
ઊભેળવુ (क्रि.) बलनिकालना, उघेड़ना, आँटखोलाना ।
ઊભાં ઊભાં (क्रि. वि.) तत्क्षण. उसीदम, तुरत, खड़ेखड़े ।
ઉભોમાર્ગે (सं.) ऊँचा रास्ता. मुख्य सड़क । [प्रसन्नता ।
ઉમંગ (सं.) आनन्द, खुशी, हर्ष
ઉમદા (सं.) बड़ा, उम्दा, श्रेष्ठ प्रसिद्ध ।
ઉમર (सं.) आयु, अवस्था, उम्र।
ઉમરાવ (सं.) कुलीन मनुष्य, शरीफ आदमी, नवाब ।
ઉમરાવજાદી (सं.) नवाबकी लड़की ।
ઉમરાવજાદો (सं.) नवाबका लड़का।
ઉમળકો (सं.) गौरव, अत्यंत-प्रेम । [शिवा, गौरी ।
ઉમા (सं.) पार्वती, गिरिजा,
ઉમેદ (सं.) आशा, इच्छा, लालसा आकांक्षा । [भिलाषी, प्रार्थी,
ઉમેદવાર (सं.) अभिलाषी, पदा-
ઉમેરણ (सं.) जोड़, संकलन, बढ़ती ।
ઉમેરવું (क्रि.) बढ़ाना, जोड़ना ।
ઉમેરો (सं.) जोड़, वृद्धि, बढ़त ।
ઉર (सं.) वक्षस्थळ, छाती, दिल, हृदय, गोदी ।
ઉરગ (सं.) साँप, सर्प, पन्नग
ઉરઝવું (क्रि.) लटकना, झूलना, टाँगना । [उर्फ़ ।
ઉર્ફે (वि.) या, अथवा उपनाम,
ઉર્મિ (सं.) लहर, प्रकाश, तरंग, खुशी, आनन्द ।
ઉરાડવું (क्रि.) फेंकना, उड़ाना, दावा रद्द करना ।
ઉલ્લંગવું (क्रि.) लाँघना, तोड़ना, उल्लंघन करना, भंग करना ।
ઉલટ (सं.) उत्साह, जोश, उमंग, आनंद, प्रसन्नता, हर्ष खुशी ।
ઉલટ પાલટ–પુલટ (वि.) अव्यवस्थित, स्थानच्युत, उलट पुलट ।
ઉલટભેર (क्रि. वि.) आनन्द से प्रसन्नतासे, उत्सुकतासे ।
ઉલટાવવું (क्रि.) औंधाना, लौट देना, उँडेल देना ।

ઉલટી (सं.) वमन, छर्दि, कय।
ઉલટી કરવી (क्रि.) कैकरना, छादना, वमन करना।
ઉલટું (क्रि. वि.) विपरीत, विरुद्ध विपक्ष, (वि.) औंधा, उलटा।
ઉલાળો (सं.) एक प्रकारकी काष्ठ की चटखनी, ठंढी साँस, उबकाई।
ઉલટો અર્થ (सं.) अशुद्ध अर्थ।
ઉલટો અર્થ કરવું (क्रि.) बात फेरना, विपरीत अर्थ करना।
ઉલ્કાપાત (सं.) बिजली पतन, वज्रपात, अचानक आपद्।
ઉલ્લંઘન (सं.) अतिक्रमण, पार पहुँचना, आज्ञाभंग, ऊपरसेजाना।
ઉલ્લાસ (सं.) आल्हाद, आनन्द, खुशी, हर्ष,
ઉલ્લુ (वि.) मूर्ख मूढ, शठ।
ઉવેખવું (क्रि.) झूठा कलंक लगाना, अपयश देना। [उँड़लना।
ઉલેચવું (क्रि.) खाली करना,
ઉશ્કેરવું (क्रि.) उत्तेजित करना, भपकी देना, उभाड़ना, उस्काना।
ઉષ્ણ (सं.) गर्म, ताता
ઉષ્ણ કટિબંધ (सं.) गर्म घेरा, उष्ण भूकटिबंध।
ઉષ્ણતા (सं.) गर्मी, ताप,
ઉષ્ણ માપક યંત્ર (सं.) थर्मामीटर, तापमापक यंत्र।
ઉષ્મોદક (सं.) गर्मजल, तातजल।
ઉસ (सं.) कार्बोनेट सोडा, गन्ना, साँठा, ऊख। [मजबूत, दृढ़।
ઉસ્તાગર (सं.) वीर, बहादुर,
ઉસ્તવારી (सं.) शक्ति, बल, पौरुष।
ઉસ્તાદ (सं.) शिक्षक, अध्यापक, उपदेशक।
ઉસ્તાદી (वि.) मक्कारी, चालाकी, होशियारी, चातुरी, हुनरमन्दी।
ઉસીકું (सं.) तकिया [करना।
ઉસેડવું (क्रि.) फेंकना, निर्मल
ઉસેડી નાંખવું (क्रि.) फेंक देना।
ઊંહું (वि.) नहीं, मत।

ઋ

ઋ=गुजराती वर्णमाला का सातवां अक्षर।
ઋણ (सं.) कर्ज़ा, उधार,
ઋણાનુબંધ (सं.) कर्जेका तमस्सुक।
ઋતુ (सं.) वसन्त आदि छः प्रकारका काल, स्त्रीकुसुम, रजोदर्शन।
ઋતુદર્શન (सं.) प्रथम रजोदर्शन।
ઋતુપ્રાપ્તિ (सं.) बहार आना, मौसिमका आरंभ। [मदन।
ઋતુરાજ (सं.) वसंतऋतु, कामदेव,
ઋતુવંતી (सं.) ऋतुस्नाता, ऋतुमती।

ઋષભ (सं.) बैल, वृषभ, साँड।
ઋષિ (सं.) मुनि, योगी, तपस्वी।
ઋષિકેશ (सं.) विष्णु, [पंचमी।
ઋષિપંચમી (सं.) भादों सुदी
ઋષિપત્ની (सं.) मुनिभार्या, तपस्विनी।

એ

એ=गुजराती वर्णमाला का आठवाँ अक्षर। [ओ। ए।
એ (सर्व०) यह, वह (विस्म०)
એઉ (सर्व.) वे, ये,
એક (सं.) एकाई, एक।
એકએક (वि.) प्रत्येक, नम्बरसे, क्रमशः, एक एक करके।
એક કાલિક–ળી (वि.) समवयस्क, तुल्यवयस का, हमउमर, समकालीन। [एक बाजू।
એક કોરે (क्रि. वि.) एक तरफ,
એક ચક્રવે (वि.) बड़ा, आला, सर्व श्रेष्ठ, प्रधान, महान, परम, पूरा, बिलकुल।
એકચિત્ત (सं.) एक मन, एकान्ती, अनन्यमनाः। [बड़ा।
એક છત્રે (वि.) सर्व श्रेष्ठ, महान,
એકજ (वि.) एक मात्र, एकही, एक सौं, उसी तरह, समान, सदृश। [मनुष्य।
એક જણ (सं.) एक आदमी, एक
એક જથે (क्रि. वि.) एकत्र, एक ढेरम।
એક જાત (वि.) सजाति, एकसा, एकरंग, एक समान, उसी तरह का।
એકઠું (वि.) इकठा, एकत्रित।
એકઠું કરવું (क्रि.) इकट्ठा करना, संग्रह करना, ढेर करना, मिलाना, जोड़ना। [मिलना।
એકઠું થવું (क्रि.) सभा करना,
એકડે એક (सं.) गणित का नियम जो संख्या लिखना सिखाता है।
એકડો (सं.) एक का अंक, हस्ताक्षर, चिन्ह, निशानी।
એકડો કરવો (क्रि.) हस्ताक्षर करना, चिन्ह करना।
એક ઢાળિયું (वि.) ढलाव की छत, ढालू छत।
એક તંત્રે (क्रि वि.) लगातार, बराबर, एकमत से, सर्व सम्मति से।
એક તરફ (क्रि. वि.) एक ओर, एक बाजू। [द्वारा।
એક તરફી (सं.) पक्षपाती, तरफ-
એક તારૂં (वि.) एक बराबर, इक तारा, एक तार का वाद्ययंत्र, तम्बूरा।

એક તાલ (सं.) राग का माप तौल, समताल, एक स्वर।
એકત્ર (वि.) इकठ्ठा, मिला हुवा।
એકત્વ (सं.) ऐक्य, एका, निज्-भाव।
એક દંડી (सं.) अंतिम स्वांस।
એકદમ (क्रि. वि.) फौरन, तुरंत।
એક દિલી (सं.) मेल, एकलय, मतैक्य, एकमता। [दृष्टि।
એક દૃષ્ટિ (सं.) इकटकी, इकटक,
એક દેશી (वि.) एक देश का, स्वदेशी, एक नगर का। [वाला।
એકધારી (वि.) एक ओर धार
એક નિશ્ચય (सं.) दृढ विचार, दृढ संकल्प, पक्का इरादा।
એકનિષ્ટા (सं.) वफादारी, एकही विषय पर आसक्ति, ईमानदारी।
એકનું એક (वि.) सिर्फ. केवल, वही, एक समान।
એકંદર (सं.) इकठ्ठा जोड़, कुल, सब, तमाम, इकठ्ठा। [विचार।
એકમત (वि.) एकराय, एक
એકમાર્ગી (वि.) एक पथ पर चलने वाला।
એકમેક (वि.) मिला हुवा, परस्पर दुतर्फा, आपसका। [वाला।
એકરસ (वि.) एकसा, न बदलने

એકરાર (सं.) वच, पवित्र वचन, धार्मिक वचन, इकरार।
એકરારનામું (सं.) शपथ लेख, शपथ पत्र, हलफनामा। [गर्जी।
એકલપેટું (सं.) स्वार्थी, खुद
એકલું (वि.) अकेला, केवल, एक मात्र।
એકવચન (सं.) व्याकरण में एक वचन, एक का द्योतक शब्द।
એક વચની (सं.) इकरार, वफादार, भक्त, सच्चा, खरा।
એકવડું (सं.) झुका हुवा, दुबला मासहीन, अकेला।
એકવર્ણ (सं.) एक जाति, जातीय, स्वजाति, सजाति।
એકવાર (क्रि.) एक समय, एकदा, एक दिन, एक काल।
એક વિચાર (सं.) समान विचार, मिले हुए विचार, एकराय।
એકસંપ (सं.) मेल, एका, नाता, ऐक्य, संघ।
એક સરખું (वि.) एक मोताबिक, एकसाः, एक समान।
એક હથ્થુ (वि.) एक मनुष्यद्वारा प्रबन्ध किया हुवा।

એકાંતરે (वि.) बारी बारी से, अदल बदल, पारी पारी आने वाला, अन्तरेका, एक दिन बाद आने वाला ज्वर। [अचानक।
એકાએક (क्रि. वि.) अकस्मात,
એકાકાર (सं.) मेलजोल, खिचड़ी
એકાગ્ર-તા (वि.) स्थिरचित्, एक चित्त, एकाग्र चित्तता।
એકાચાર (सं.) एकाकार, एक समान आचरण।
એકાદ-દું (वि.) कोईएक, एकाधा, कोई, किसी, कुछ, थोड़ा।
એકાદશી (सं.) ग्यारस, ग्यारहवीं तिथि सौर मास की।
એકાદું (वि.) एकयादो, कोई एक।
એકાંત (सं.) निराळा, अलग, निर्जन भिन्न, खानगी कमरा।
એકાંતરિયો (सं.) इकॉतरा ज्वर।
એકાંત વાસ (स.) एकाकी रहना अलग रहना।
એકી (सं.) विषम संख्या, पाठशाला के विद्यार्थियों द्वारा किया हुव पेशाब के लिये संकेत।
એકીન (सं.) विश्वास, यकीन।
એકી બેકી (सं.) एक प्रकार का सम विषम का खेल।
એકે એક-કેક-કેકું (क्रि. वि.) सब समस्त, सब अलग अलग कर के लिये गये, प्रत्येक, हरेक।
એક્કો (सं.) इका, बैलकी गाड़ी, एका, ऐक्य (वि.) दुर्लभ्य, अनूठा।
એખરો (सं.) एक प्रकार की औषध, इन्कार, अस्वीकार।
એખલાસ (सं.) प्रेम, प्रीति, मुहब्बत।
એજ (वि.) यही। [बुलावा।
એજન (क्रि. वि.) यही, निमंत्रण,
એજ પ્રમાણે-મુનો (क्रि. वि.) ऐसा, इसी भाँति, इसी प्रकार।
એટલામાં (क्रि. वि.) इसीबीच, इतनेमें।
એટલા માટે (अव्य.) इसलिये, अतएव, इसकारण, तस्मात्, अतः
એટલું (वि.) इतना अधिक, ऐसा जियादः।
એટલે (क्रि. वि.) अर्थात्, यानी, दूसरे शब्दों में, अतएव।
એટલે જે (क्रि. वि.) अर्थात् यानी,
એટલે લગી-સુધી (क्रि. वि.) अबतक, इस समय तक।
એઠવાડ (सं.) उच्छिष्ट, जूठन,
એઠું (सं.) जूठा बचाहुवा भोजन में का शेष। [अश्वतोदन।
એડી (सं.) एड़, एड़ीमारना

એડક (सं.) भेड़ा, भेड़ी ।

એણીકોર-રે-ગમ (क्रि. वि.) इस तरफ, यहाँ, वहाँ ।

એણે (सर्व.) वह ।

એદી (सं. ; सुस्त, काहिल मूर्ख मन्द निकम्मा, अधम, खल ।

એધાણ-ણી (सं.) चिन्ह, निशान, पता ।

એન (सं.) सूक्ष्मसमय, थोडा समय, (वि.) ठीक, उत्तम, उमूदा, श्रेष्ठ,

એ પ્રકારે-પ્રમાણે (क्रि. वि.) इस भांति, इस तरह ऐसे । [पता ।

એબ (सं.) अवगुण, दोष, कुरू-

એભક (सं.) अकस्मात भय,

એમ (क्रि. वि.) ऐसे, ऐसा, इस तरह ।

એમ કરતાં-છતાં (अव्य.) ऐसा करनेपर, ताहम, फिर भी, तौ भी तथापि ।

એમનુંએમ (क्रि. वि.) जैसा का तैसा, ऐसा ।

એરણ (सं.) निहाई ।

એરંડિયું (सं.) अरंडी का तेल, कास्टर ऑइल ।

એરંડો-ડી (सं.) एरण्ड का पेड़, एरण्डी, एरण्ड ।

એરો (सं.) गमनागमन, आना-जाना, पानी का बर्तन ।

એલચી (सं.) राजदूत, दलाल, इलायची । [इच्छा, ख्वाहिश ।

એલતેમાસ (सं.) प्रार्थना, अर्ज,

એલફેલ (वि.) निंदा गाली, गलौज, गुस्ताखी बेअदबी (सं.) उछल कूद, खेल कुकेल ।

એલાહિદું (सं.) अलग, जुदा, निराला, मुख्तालिफ ।

એવડું (क्रि. वि.) इतना बड़ा, इतना अधिक ।

એવાન (सं.) बड़ाकमरा, सज्जित कमरा, दालान । [इसी वक्त ।

એવામાં (क्रि. वि.) इसीबीच, तव,

એવું (वि.) ऐसा, यह,

એશ (सं.) आनन्द, भोग, विलास, ऐश इशरत । [ऐश इश्रत ।

એશ આરામ (सं.) आनन्दभोग,

એસ્તેકબાલ (सं.) अगवानी, मेहमान के स्वागत के लिये घर से बाहर गमन । [पागल ।

એહમક (वि.) मूर्ख, बेवकूफ,

એહવાલ (सं.) हाल, दशा, बखान, वर्णन ।

એહસાન (सं.) कृपा दया,

એળ (सं.) सांप, कीड़ा, [अजगर ।

એળિયો (सं.) मुसब्बर, घीकुंआर

ઐણે (क्रि. वि.) व्यर्थ, फ़ुजूल, अकारथ । [विश्वास, भरोसा ।
ઐંઠ (सं.) हठ, जिद्द, सरकशी,

ઐ

ઐ=गुजराती वर्णमाला का ९ वाँ अक्षर [मौसिम ऋतु ।
ઐઆમ—યામ (सं.) समय,
ઐક્ય (सं.) एका, संघ, मेळ ।
ઐતિહાસિક (वि.) इतिहास सम्बन्धी । [वाहन
ઐરાવત (सं.) हाथी, इन्द्र का
ઐહિક (वि.) पृथ्वी का, यहाँ का ।

ઓ

ઓ=गुजराती वर्णमाला का दसवां अक्षर ।
ઓ (विस्म०) ओह ! अरे ! अफ़सोस बुलावे का उत्तर ।
ઓઇયાં કરવાં (क्रि.) निगलना हड़प करना, खाजाना ।
ઓક (सं.) कय, वमन उलटी, छर्दि ।
ઓકવું (क्रि.) वमन करना, कय करना, उलटी करना ।
ઓકારી (सं.) काय, वमन, उलटी
ઓખદ–દ (सं.) दवा, औषधि,
ઓખર (सं.) पद, उपनाम,
ઓખરવું (क्रि.) गोबरखाना, लीदखाना ।
ઓખાણું (सं.) पहेली बुझौवल,
ઓગઠ (सं.) पशु का शेष चारा, पशु का बाकी दाना या भोजन ।
ઓગરાળો (सं.) बड़ा चमचा, बड़ा करछुल ।
ઓગળવું (क्रि.) पिघलना, टिघलना, गलना, द्रवीभूत होना ।
ઓઘ (सं.) माफ़, चलता हुवा, चढाव, धार बहुतायत ।
ઓઘો (सं.) घास का गंज, अन्न का खजाना, ऊर्न का ब्रश जो जैनियोंके काम में आती है ।
ઓઘો બાળવો (क्रि.) धोकासे पकड़ा देना, घासके ढेर जलाना, गुप्त बात प्रकट करना ।
ઓચર–ઓચરીયાં (सं.) लेख, प्रमाण, दस्तावेज़, सनद, रसीद,
ઓચરવું (क्रि.) बोलना, कहना, उच्चारण करना ।
ઓચીંતું (वि.) अचानक, अकस्मात्, यकायक । [दिन ।
ઓચ્છવ (सं.) उत्सव, हर्ष, छुट्टीका
ઓછંગ (सं.) छाती, हृदय, गोद,
ઓછાડ (सं.) ढक्कन

ઓછું (वि.) कम, थोड़ा इच्छा।
ઓછું પાત્ર (वि.) नीचकुलका, घमंडी, अहंकारी। [न्यूनाधिक।
ઓછું વત્તું (क्रि.) कम जियादः,
ઓજાર (सं.) हथियार, औजार।
ઓઝ (सं.) जलाशय, कुंड, ताल, सोते हुए मनुष्य के मुहँसे लार टपकना।
ઓઝટ (सं.) साया, छाया, परछांई, भूत प्रेत का असर।
ઓઝપવું (क्रि.) झेंपना, शर्मिन्दा होना, लज्जित होना।
ઓઝલ (सं.) घूँघट, ओट, पर्दा, जनानखाना, स्त्रीगृह।
ઓઝલ પડદો (सं.) पर्दा जो स्त्रियों के लिये किया जाता है।
ઓઝો (सं.) भार, बोझा, वज़न, कुम्हार, वर्तनवाला।
ઓટ (सं.) भाटा, उतार, घटती।
ઓટકાર-ડકાર (सं.) डकार।
ઓટલી-લો (सं.) बरामदा, बरंडा, ड्योढ़ा, उसारा।
ઓટવું (क्रि.) पौशाक को गोट लगाना, कपड़े को मगजी लगाना।
ઓટી (सं.) पजामे का कावेल।
ઓઢવવું (क्रि.) दूर निकल आना, कपट प्रबन्ध करना, अधम प्रेम करना।

ઓઠીગવું (क्रि.) सहारा लेना, तकिया लगाना, आराम करना।
ઓઠું (सं.) क्षमा, नमूना, आदर्श, छाया, प्रतिबिम्ब।
ઓડ (सं.) छाया या छादन (बैलों के लिये।)
ઓડવું (क्रि.) पहिनना, ओढ़ना।
ઓઢણી-ણું (सं.) स्त्रियों के ओढने का उपवस्त्र, ओढना, फरिया, लूघड़ी।
ઓઢવું (क्रि.) देखो ઓડવું। [झूल।
ઓઢો (सं.) बैलों को उढ़ाने की
ઓતવું (क्रि.) उंडेलना, साँचा-बनाना, ढालना।
ઓથ-થો (सं.) मदद, सहारा, सहायता, शरण, आश्रय।
ઓથામાં ભરાઈ રહેવું (क्रि.) घात के स्थान मे लेट रहना।
ઓદન (सं.) उबले हुवे चावल, भात, भोजन, भक्ष्य।
ઓધરવું (क्रि.) क्षमा करना, छोड़ना, मुक्त करना।
ઓધાન (सं. गर्भ, आधान, हमल,
ઓધાર (सं.) नजात, मुक्ति, मोक्ष, उद्धार, पापोंसे छुटकारा।
ઓથે ઉતરવું (क्रि.) अधिकार पाना, वारिस होना। [सहारा लेना।
ઓથે લેવું (क्रि.) आश्रय लेना,

ઓહેદાર (सं.) ओहदेदार, अफसर,
ઓહો (सं.) पद, दर्जा, श्रेणी, मान।
ઓપ (सं.) चमक, मुलम्मा।
ઓપણી (सं.) मुलम्मा करनेका औजार, चमक करनेवाला।
ઓપવું (कि.) चमक करना मुलम्मा करना। [आश्चर्य।
ઓય (विस्म.) अफसोस ! खेद,
ઓર (क्रि. वि.) मा, ख्वाह, भी, अलवा (सं.) नाल जो बालक की नाभिसे लगा होता है (जन्म के समय) पाँति, पंक्ति।
ઓરડી (सं.) कोठरी, छोटा कमरा।
ઓરડો (सं.) कोठा बड़ा कमरा।
ઓરડો કરવો (कि.) पति पत्नी को उनकी तरूणा वस्था में एक अलग कमरा देना।
ઓરણું (सं.) अन्न बोने की बांस की नलिका। ओरना।
ઓરણી (सं.) बोनीका वक्त, अन्न वपन का समय, ओरना।
ઓરત (सं.) स्त्री, लुगाई, पत्नी।
ઓરતો (सं) इच्छा, चाह, ख्वाहिश, लालसा, अभिलाषा।
ઓરમાઈ (वि.) सौती, सौतीली मा, पिताकी किंतु दूसरी माता।
ઓરમું (सं.) एक प्रकारका तरल भोजन जो घी आटे प्रभृतिसे बनता है। [गलतेक भरना।
ઓરવું (कि.) बोना बखेरना फेंकना,
ઓરસિયો (सं.) ओरसा, उरसा, पत्थर जो चन्दनादि घिसने के काम में आता है। [पहिराना।
ઓરાઢવું (क्रि.) उढाना, वस्त्र
ઓરિઓ (सं.) देखो ઓરતો।
ઓરી (सं.) हलकी चेचक एक बीमारी, शीतलामाता का रोग।
ઓરે (सं.) निकट, पास, इधर।
ઓલ (सं.) शरीरबन्धक, जमानत, पाँति, पंक्ति, जीभ छीलने का, जिव्हा मल दूर करने का।
ઓલાં (सं.) उपल, आले,
ઓલા (सं.) चमड़ा, चर्म, खाल।
ઓલાદ (सं.) संतान, वंशज,
ઓલિયું (सं) सादा, भोला, साफ, बड़ा, भला।
ઓલોદોલો (वि.) उदार, दानशील
ઓવારો (सं.) नदीकानीर, तट।
ઓશકવું (कि.) शर्माजाना लज्जित होना, शर्मिन्दाहोना।
ઓશિયાળું (वि.) एहसानमंद, शुक्रगुजार, कृतज्ञ, ऋणी।
ઓસ (सं.) शबनम, ओस।

ઓસડ (सं.) औषधि, भेषज, दवा। [उस्ताद।

ઓસ્તાદ (सं.) शिक्षक, गुरु,

ઓસરવું (क्रि.) घटना, कमहोना पीछेहटना, पीठदेना।

ઓસરી (सं.) बरामदा, मकान के सामनेका भाग, उसारा।

ઓસારવું (क्रि.) कमकरना, घटाना।

ઓસાવવું (क्रि.) चावल आदि उबालकर पानी या माड़निकालना पसाना।

ઓસિયાળું (वि.) आधीन, अवलम्बित, गरीब, कंगाल, दरिद्र। [कृतज्ञता।

ઓસિંગણું (सं.) एसानमन्दी,

ઓસીકું-શીકું (सं.) तकिया, सहारा। [कतार,।

ઓળ (सं.) पंक्ति, लकीर, सतर,

ઓળખ (सं.) पहिचान, परिचय उपनाम, वंशनाम, चिन्ह।

ઓળખવું (क्रि.) जानना, पहिचानना। [हेलमेळ, परिचय।

ઓળખાણ (सं.) पहिचान,

ઓળખાવવું (क्रि.) परिचय कराना, मुलाकात कराना।

ઓળખાવું (क्रि.) जानना, पहिचानना।

ઓળખીતું (वि.) जाना, पहिचाना।

ઓગળ (सं.) आशिर्वाद, भोजन करचुकनेपर आशिर्वाद।

ઓળંગવું (क्रि.) लांघना, कूदना, उलांघना।

ઓળંભો-ભા (सं.) शिकायत, ताना, तानेबाजी, दोष।

ઓળવવું (क्रि.) बेजा काम में लाना, खा जाना, निकाल देना।

ઓળા (सं.) हरे चने, होला।

ઓળામણા (सं.) आशिर्वाद लेने का दस्तूर। [कागज।

ઓળિયું (सं.) हिसाब का कच्चा

ઓળું (वि.) भीगा, आला, गीला, साला।

ઓળો (सं.) छाया, पनाह, आड़।

ઔ।

ઔ = गुजराती भाषा की वर्णमाला का ग्यारहवाँ अक्षर।

ઔદાર્ય (सं.) उदारता, फैयाजी, बड़प्पन। [उदासी।

ઔદાસ્ય (सं.) रंज, गम, फिक्र,

ઔરસ (सं.) आत्मज, विवाहित पत्नी से उत्पन्न पुत्र।

ઔષધ (सं.) दवाई, भेषज, रोग नाशक द्रव्य।
ઔષધી (सं.) जड़ी, बूटी,
ઔંસ (सं.) $\frac{1}{16}$ पौंड, पाउण्ड का १६ वां भाग।

ક

ક = गुजराती वर्णमाला का बारहवां अक्षर, व्यंजनों का प्रथम अक्षर, बुरापन आदि अर्थों का बोधक।
કંઈક–એક (वि.) कोई वस्तु, किंचित्, कुच्छ, थोड़ा।
કંઈ નહિ (क्रि. वि.) कुछ नहीं, कुछ चिंता नहीं। [चित, विरुद्ध।
કંઈનું કંઈ (सं.) अयोग्य, अनु-
કંઈપણ–ભી (क्रि. वि.) कुछभी, किंचित भी।
કંસારી (सं.) झींगुर।
કઈ (सर्व) क्या ? कौन ?
કઈક (वि.) कई, बहुतसे, कुछ।
કઉવત (सं.) शक्ति, बल, ताकत, पौरुष, सत्व।
કઋતુ (सं.) ऋतुविपर्यय, असामयिक ऋतु।
કકડતું (वि.) उबलता हुवा गर्म, अत्यंत, अधिक।
કકડવું (क्रि.) थर्राना (ठंडसे), थरथराना, बहुत गर्म करना।
કકડા કરવા (क्रि.) टुकड़े २ करना,
કકડાવવું (क्रि.) गर्म करना, उबालना, दाँत पीसना, किचकिचाना।
કકડી–કોર–ક (वि.) छोटा टुकड़ा,
કકડીને (क्रि. वि.) गंभीरतासे, कठिनतासे, प्रबलतासे। [भाग।
કકડો (सं.) टुकड़ा, खण्ड, कतल,
કકડા–કોર (वि.) छोटा टुकड़ा।
કકળાટ–ટો (सं.) घृणा, अरुचि, नफ़रत। [असमान।
કકરું (वि.) खुरदरा, नाहमवार,
કકલવું–ળવું (क्रि.) बड़बड़ाना, गुरगुराना, कुड़कुड़ाना।
કકળાટ (सं.) बड़े जोरकी गुर्राहट, उच्च स्वर से बड़बड़ाहट।
કકળાણ (सं.) विलाप, शोक।
કક્ષ (सं.) कोख, पेटकी बाजू।
કક્ષા (सं.) ग्रहपथ, जहाज़का रस्सा, कक्षा।
કંક (सं.) सारसपक्षी, बगुला,
કંકણ (सं.) चूड़ी, कंगन।
કંકર (सं.) कंकड़, साधारण पत्थर।
કંકાસ (सं.) कलह, लड़ाई, झगड़ा, रार, बखेड़ा।
કંકાસિયું (वि.) झगडालू, लड़ाकू, बखेड़ी।
કંકુ (सं.) रोली, कुमकुम, तिलक लगाने का लाल पाउडर।

कंकुडो (सं.) कागजकी पतंग, चंग

कंकोडी (सं.) एक प्रकारका चूर्ण जो हिन्दुओं के स्नान समय काम आता है। [पत्र।

कंकोत्री (सं.) विवाहका निमंत्रण

कंकोल (सं.) औषधि विशेष।

कंगणु (सं.) देखो कंकणु।

कंगाल (सं.) दीन, गरीब अधम निर्धन, दरिद्र। [दीनता।

कंगालियत (सं.) गरीबी, दरिद्रता

कंगुरा (सं.) मीनार शिखर।

कच (सं.) तंग रास्ता, संकीर्ण मार्ग।

कच कच (सं.) बकबक, बकझक बडबड़ाहट, बकवाद।

कचकचाट (सं.) पूर्ववत्।

कचकचावुं (कि.) जोर से बांधना, दांत पीसना। [से, दृढता पूर्वक।

कचकचावीने (कि. वि.) मजबूती

कचकचीयुं (वि.) हठी, मुहँजोर, गुस्ताख, हुल्ला करनेवाला शोर मचानेवाला।

कचकडुं (सं.) कछुए की ढाल, कछुए की पीठ। [करना मसलना।

कचरवुं (कि.) कुचलना, पददलित

कचडा कचडी (सं.) मनुष्यों के एकत्र होने के कारण भीड़, भीड़, सूक्ष्मसमय।

कचडावुं (कि.) कुचलाजाना,

कचपच (सं.) मूर्खतापूर्ण बात बकबक।

कचरघाणु थवो-वुं (कि.) टुकड़े टुकड़े होजाना, कुचलकर मरजाना।

कचरापटी-कचरावाळो (सं.) मंगी, मेहतर। [दलित होना।

कचरावुं (कि.) कुचलाजाना, पद

कचरीयुं (सं.) कच्चे सागका आचार, रायता।

कचरो (सं.) मैला, गन्दा, कूड़ा, बे काम, अवशिष्ट, निकम्मा।

कचरो कहाडवो (कि.) झाड़ना, बुहारना, साफ करना।

कचवाट (सं.) घबराहट असुविधा, असम्मत।

कचवावु (कि.) हिचकिचाना, आगापीछा करना।

कचाट (सं.) देखो, कचकच।

कचाटियुं (वि.) मुहँजोरी, उलझा हुवा पेचदार।

कचुंभर-चूभर (सं.) कच्चा अचार, छोटे छोटे टुकड़े। [दफ्तर।

कचेरी (सं.) अदालत, बड़ा कमरा

कच्चर (सं.) एक छोटा टुकड़ा, कुचलन।

કુચ્ચરધાણુ (सं.) अत्यंत कुचला हुवा, विध्वंश, क्षय, नाश ।

કુચ્ચાં બચ્ચાં (सं.) बालबच्चे ।

કુચ્ચાઈ-સ (सं.) अपक्वता, बेपका, नातजुर्बेकारी, अनाड़ीपना ।

કુચ્છ-છો (सं.) लंगोटा, कछनी कछुआ, कच्छप ।

કછોટી-બંધ (सं.) लंगोटी, लंगोट ।

કજળવું (क्रि.) राख सेढकजाना, कजलाजाना ।

કજા (सं.) होनी, भावी, भाग्य, बदकिस्मती, दुर्भाग्य, मृत्यु, मौत ।

કજાત (वि.) बुरा, पापी, दुष्ट, नीच, नीच वंशका ।

કજા રજા (सं-) देखो કજા

કજીયાખોર (वि.) झगड़ालू , लड़ाकू ।

કજીયા દલાલ (वि.) वह जो लड़ाई या झघड़ा छिड़ाता है ।

કજીયો (सं.) झगड़ा, विवाद, नाराजी, मुकदमा, अभियोग ।

કજીયો પતાવવો (क्रि.) लड़ाई मिटाना, झगड़ा साफ करना ।

કજીયો માંડી બાળવો (क्रि.) झगड़ा आपस में मिटा लेना । [उठाना ।

કજીયો વહોરવો (क्रि.) झगड़ा

કજોડ (वि.) असमान, अवरश, मिल बे मेळ ।

કંચન (सं.) स्वर्ण, सोना, धन ।

કંચની (सं.) छिनाल, वेश्या, रंडी, नाचनेवाली ।

કંચવો-ચુકી (वि.) अंगिया, चोली।

કંજુસ (वि.) कृपण, सूम, लालची । [३ मीलका १ माप ।

કટ (सं.) कमर, कटकट शब्द,

કટક (सं.) सेना, फौज़, कलाई, पहुंची ।

કટ:ટ (सं.) लड़ाई, झगड़ा, तकरार, एक प्रकार का शब्द ।

કટકો (सं.) टुकड़ा, खण्ड ।

કટાકટ-ટી (सं.) प्राणघातिनी, शत्रुता, हत्या, वध, क़तल ।

કટાક્ષ (सं.) तिरछी निगाह, दृष्टि इशारा, नज़र ।

કટાણું (वि.) घृणा, अरुचि, मुर्चा लगा हुवा, पुराना ।

કટાર-રી (सं.) खंजर, छूरी ।

કટિ (सं.) कमर, कोख ।

કટિબંધ (सं.) कमरबंधा, पटका, करधनी, कटिसूत्र, तागड़ी ।

કટિસ્નાન (सं.) पैरसे छाती के नीचे तक का नहाना ।

કટુ (सं.) कड़ुवा, तीक्ष्ण,

કટેરો (सं.) कटघरा लोहेके छड़ोंकीआड़, कठहरा ।

કટોરી-રો (सं.) बेला, बेली प्याला।

કટ્ટું (वि.) बदलालेनेवाला, प्रत्यपकारेच्छुक, कड़ुवा, घातक, फ़ानी ।

કઠ (सं.) बोरा जोकि नारियल अथवा ताड़की चटाईका बनता है ।

કઠણ (सं.) कठिन, मुश्किल, सख्त, पैना, तेज, कटा,

કઠવું (क्रि.) नोचना, तङ्गकरना,

કઠારો (सं.) पसीना, परिश्रम ।

કઠણુ-ણાઈ (वि.) कठोरता, मुश्किल, निष्ठुरता, (सं.) सख्ती, कड़ाई, उग्रता, बदकिस्मती ।

કઠિયારો-આરો (सं.) लकड़कट्टा, लकड़हारा, काष्ठविक्रेता ।

કઠેડો-રો (सं.) देखो, કટેરો ।

કઠોડું-(सं.) बोतल रखनेकी तिपाई ।

કઠોદર (सं.) जलन्धररोग ।

કઠોર (वि.) निर्दय, सख्तदिल, करी, सख्त । [दाल ।

કઠોળ (सं.) दाल, हरप्रकारकी

કડ-કડ (सं.) कमर, जोरसे टूटनेकाशब्द, काटना।

કડક (वि.) बेपैसा, दीन, गरीब, कच्चा, व्रत, उपवास, क्रोधी, तेजतरार, जोरदार, गर्ममिज़ाजका

કડકડ (सं.) कड़कड़ाहटका शब्द,

કડકડતું (वि.) कड़कताहुवा, उबलताहुवा ।

કડકડાટ (सं.) गड़गड़ाहटका भयंकरशब्द, (क्रि. वि.) धड़ाकेसे ।

કડકડીને (क्रि. वि.) प्रबलतासे, गंभीरतासे, सख्तीसे ।

કડકણો-ણું (सं.) काटखानेवाला, दाँतोंसे काटखानेवाला । [कंगाल ।

કડકબંગાલી (वि.) भड़कीला,

કડકો-કી (सं.) टुकड़ा, खण्ड,

કડછી-છો (सं.) छोटाचम्मच ।

કડડડ (सं.) लगातार बिजलीकी गर्जना, वृक्षके गिरनेकाशब्द ।

કડદો (सं.) परिणाम, फल, कमी, घटी, घटाव ।

કડપ (सं.) भय, डर, रोक, अधिकार, आदर, इज्जत, सन्मान

કડપ-બ (सं.) चारा, कड़बी ।

કડવાસ (सं.) कड़ुवापन ।

કડવું (सं.) कड़ुवा, चरपरा, अप्रिय, अयोग्य, गीतका वह भाग जिसे सब मिलकरगावें, प्राकृतिक पद्य अथवा गानका भाग, छंद ।

કડાકુટ (सं.) कष्ट, तकलीफ, कठिनाई, व्याकुलता।
કડાકુટિયુ (वि.) कष्टप्रद ।
કડાકા (सं.) कठोरव्रत, कठिन उपवास, जोरसे गड़गड़ाहटका शब्द। [पूर्वक, बेरोकटोकसे ।
કડાબીડ (क्रि. वि.) निर्विघ्नता-
કડાયુ (सं.) एक औडीबड़ी कढाई कढाव ।
કડિયુ (सं.) अंगरखा ।
કડિયો (सं.) कुम्हार, राज,
કડી (सं.) ऑकडा, हुक, छल्ला, गीत की तुक ।
કડીઆકામ (स.) ईंटोका काम ।
કડીતોડ (वि.) सही, दुरुस्त, यथार्थ, क्रमपूर्वक, कठिन, सख्त ।
કડું (सं.) स्वर्ण या अन्य धातुका बना कडा, बाजूबन्द ।
કડુચું (सं.) कडुवा ।
કઢંગુ (सं.) बेढंगा, गँवार, बदसूरत, भद्दा, बेहूदा ।
કઢણ (सं.) पहाड़का निकलाहुवा हिस्सा, चट्टानकी निकलीहुई नोक, घाटी, दर्रा । दो पहाड़ों के बीचकी तंग जगह । [का पात्र, कढ़ाव ।
કઢા (सं) उबालनेके लिये लोहे
કઢાઇ (सं.) कढ़ाही,
કઢાપો (सं.) उष्णता, गर्मी, रंज, शोक ।
કઢી (सं) बेसन और खटाईसे बनायाहुवा साग । कढी ।
કઢેલુ (वि.) उबलाहुवा, मोटा ।
કણ (सं.) अन्नका दाना, रेज़ा, बहुत छोटासा जर्रा, परिमाणु ।
કણક (सं) सानाहुवा आटा, गूंधाहूवा आटा ।
કણકણ (सं.) एकप्रकारका शब्द
કણકણા (सं.) घृणा, अरुचि ज्वरकी हरारत ।
કણકી (सं.) चॉवलोंके टुकड़े, टूटे हुए चावल ।
કણઝી (सं.) एक प्रकारका बीज।
કણપીઠ (सं.) अन्नका बाज़ार। गल्लेकी मंडी ।
કણબી (सं.) कृषक, किसान ।
કણવું (क्रि.) कराहना हायमारना आहेभरना, कॉखना ।
કણસ-લુ (सं) अन्नकीबाल, सिरा, भुट्टा । [पतिंगा ।
કણસારી (सं.) सफेद चिउँटी,
કણિયો (सं.) अन्न विक्रेता, गल्लेका व्यापारी ।
કણી (सं.) एक छोटा परिमाणु मणि या हीरेका टुकड़ा।

કણુ (सं.) परिमाणु, जर्रा, अणु–कणिका ।

કણુક (सं.) देखो કણુક

કણોતું–ચુયતું (सं.) अन्न के रूपमें मासिक वेतनदेना ।

કણો (सं.) बालकसाँप, छोटासर्प ।

કંટક (सं.) काँटा, रोक, आड़, घातक बीमारी, मरी, कंटक

કંટલ (सं.) बंबूलवृक्ष ।

કંટાળવું (कि.) थकना, घबड़ाना, बीमारहोना, नचाहना, घृणाकरना

કંટાળો (सं.) अरुचि, घृणा, सुस्ती, थकावट, श्रान्ति ।

કટેવાળો (सं.) पकानेके बर्तनपर चूल्हेपर या अग्निपर रखने के पूर्व राख या मिट्टी लगाना [स्वर।

કંઠ (सं.) गला, हल्क, आवाज़,

કંઠી (सं.) कंठमें पहिननेकी किनारी गोटा, अंगरखेके गलेपर कसीदा [बेंतों के बुने हुए।

કંડિયો (सं.) संदुक बाँस या

કન (सं.) कलमका सिरा, लेखनीका अग्र भाग

કતલ (सं.) वध, संहार, हत्या ।

કતલ કરવું (कि.) वध करना, काटडालना, मारडालना

કતલનીરાત્રિ (सं.) ताजियोंकी कतल की रात। मुसलमानी मुहर्रम महिनेकी तारीख ९ की रात्रि ।

કતલેઆમ (सं.) सर्व संहारी नाश ।

કતાન (सं.) किरमिच, विलायती टाट [उतारनेवाला

કંતારી (सं.) खरादी, खरादपर

કંથ (सं.) पति, स्वामी, मालिक, खसम, कंत ।

કથક–ન (सं.) बयान, कहानी, बखान, वर्णन [बर्तन

કથરોટ (सं.) एक बड़ा गोल

કથવું (कि.) कहाना, वर्णन करना । [घाटाहोना, हानि होना

કથળવું–લવું (कि.) बर्बादहोना,

કથા (सं.) कहानी, किस्सा, अपूर्व कहानी, झूठा किस्सा ।

કથાનક (सं.) कहानीका एक भाग, इत्तिफाकी, आकस्मिक ।

કથિત (वि.) कियाहुवा, वर्णन कियाहुवा ।

કથીર–લ (सं.) टीम, जस्ता

કથોલું (सं.) कठिन, मुश्किल

કદ (सं.) माप, परिणाम, डौल, रूप, वजन, [नाश

કદન (सं.) खून, वध, हिंसा,

કદમ (सं.) २ ½ कानाप, क़दम,
કદમબોસી (सं.) पैर चूमनेकी रीति, राजा या पिताको प्रणाम
કદિમ (सं.) प्राचीन, पुराना, पारसी जाति।
કદર (सं.) मूल्य, कीमत, गुणागुण, बोधविचार, दया, रहम ।
કદરજ-રી (सं.) कमखर्च, कंजूस कृपण, किफायतसार, सूम ।
કદરદાન (सं.) चाहनेवाला, कीमत जाननेवाला, सहानुभूति प्रदर्शक ।
કદરૂપું (सं.) बदसूरत, बेडोल ।
કદળી (सं.) केलेका पेड़।
કદા (क्रि. वि.) कुछदिन, ब, कभी, किससमय ।
કદાચ-કદાચિત-કદાપિ (क्रि. वि.) यदि, अगर, शायद, किंचित ।
કદાવર (सं.) डील डौऊमें ऊंचा पूरा, अंतिम, लम्बा ।
કદિ-દી (क्रि. वि.) हरकभी, किसीभी समय ।
કદી નહીં (क्रि. वि.) कभी नहीं, किसी भी समय नहीं।
કંદ (सं.) जड़ मूल, जड़ वह जो खाई जा सकती है। [खोह ।
કંદરા (सं.) गुफा, गार, माँद
કંદર્પ (सं.) मदन, काम, अतनु, मार।
કંદિલ (सं.) काच का दीपक,
કંદિલિય (सं.) रोशनी घर, वह घर जिसमें जहाजवालों को रातमें रास्ता दिखानेके लिये ऊंचे पर रोशनी होती है ।
કંદુક (सं.) खेलने की गेंद ।
કંદોઇ (सं.) हलवाई, मिठिया ।
કંદોરો (सं.) कमर में बांधनेकी सूत्र, चाँदी अथवा सोनेकी तागड़ी।
કધોડુ (सं.) पशुओंको खेत जोतन आदि के लिये किराये पर लेना ।
કનક (सं.) धन, स्वर्ण, धतूरा ।
કનડત-ડાટ (सं.) घबड़ाहट, बखेड़ा, तंगी ।
કનવાર (सं.) अपराधों की खोज, सम्बन्ध, चिंता ।
કનાત (सं.) तम्बू की दीवार, कपड़े की बनी हुई आड़, कनात।
કનિષ્ટ (वि.) छोटा, निम्न, नीचा।
કનિષ્ટકા (सं.) आखीर की अंगुली, पाँचवीं अंगुली ।
કને (सर्व.) पास, निकट, समीप,
કનેરી (सं.) लपसी, माँड, कगूरा, कगनी, सीका। [वधू ।
કન્યા (सं.) कुँआरी, दुलहिन, बहू,
કન્યાકાળ (सं.) कुवारापन, कुमारित्व। दश वर्ष की अवस्था ।

કન્યાદાન (सं.) विवाह, अपनी लड़की को विवाह में उसके पतिके सिपुर्द कर देना। [कोई ऐब।
કન્યાદોષ-કલંક (सं.) कुंआरी में
કન્યારાશી (सं.) ६ ठी राशि, कन्या राशि।
કપ (सं.) आग लगानेवाली वस्तु, शीघ्र दाह्य वस्तु, रूई, कपास, प्याला
કંપ (सं.) थर्राहट, कपकपी (कि.) थर्राना, काँपना।
કપચી (सं.) सड़क के लिये धातु।
કપટ (सं.) छल, धोका।
કપટી (वि.) धोकेबाज, छली, कपटकारी, छद्मवेशी।
કપડાર (सं.) एक लंबा और मोटा टुकड़ा जोजलाने के लिये काटा हो।
કપડછાણ (सं.) कपड़े में छानना।
કપડાલતાં (सं.) पौशाक, कपड़े इत्यादि।
કપડાં (सं.) पौशाक, वस्त्र,
કપરેડ (सं.) वह खाई जो दूसरी खाई को आरपार करती हो।
કપાણ (सं.) लू, धूपकी लपट।
કપાતર (सं.) नीच, कमीना, निकम्मा।
કપાલ (सं.) खोपड़ी, मस्तक, ललाट, भाल,
કપાલી (सं.) महादेव, शंकर, शिव।
કપાસ (सं.) कच्ची रूई, रूई का पेड़, कर्पास।
કપાસિયા (सं.) रूई के बीज, बिनौले, काकड़ा। [नहीं।
કપાળ (सं.) मस्तक, भाग्य, कुछ
કપાળકુટ (सं.) मिहनत, काम, मजदूरी, सुस्ती, थकावट, श्रांति।
કપિ (सं.) बन्दर, वानर, शाखामृग, मर्कट। [तित्तिर पक्षी।
કપિંજલ (सं.) चातक पक्षी,
કપિતાન (सं.) कष्टप्रद, दुःखदायक बुरा, दुष्ट।
કપિલા (सं.) भूरी गाय, गऊ।
કપુ (सं.) भीड़, झुंड, टोली, संगत साथ। [बेटा।
કપુત (सं.) निन्दित पुत्र, बुरा
કપૂર (सं.) कर्पूर, काफूर।
કપોટી (सं.) ऊपर की झिल्ली।
કપોત (सं.) कबूतर, परेवा पारावत।
કપોલ (सं.) गाल, गण्ड स्थल।
કપોલ કલ્પિત (वि.) घड़ंत, बनाई हुई बात, रचना, गप्प।
કપ્પી-પ્પો (सं.) घिरन, गरारी, थैला जो चटाई का बना हुआ हो।

કફ (सं.) श्लेष्मा, खखार, थूक, बलगम, शरीरस्थ धातु विशेष ।
કફન (सं.) मृतक पर डालनेका वस्त्र, अंतिम वस्त्र ।
કફની (सं.) फकीरोंके पहिननेका एक प्रकारकी पोशाक, फकीरोंका झंगा ।
કફલાર (सं.) पलस्तर, अस्तर ।
કફોદર (सं.) कफ सम्बन्धी पेट का रोग ।
કબજ (सं.) जब्ती, रोक, कोष्ठ बद्धता, कब्जियत, अपचनत्व ।
કબજ કરવું (क्रि.) अधिकार करना, पकड़ना ।
કબજ-કોડો-અત (सं.) कोष्ठ बद्धता, कुपच, बदहज्मी । [रक्षा।
કબજે (सं.) अधिकार, हवालात,
કબર (सं.) मृतक के गाड़ने का गड्ढा, समाधि, चित्य, क़ब्र ।
કબરસ્તાન (सं.) मुर्दे गाड़ने की जगह ।
કબાટ-બટ (सं.) आलमारी, बरतन रखने की आलमारी ।
કબાબચીની (सं.) औषधि विशेष, कबाबचीनी ।
કબાલો (सं.) बिक्री की दस्तावेज़, अधिकारपत्र । बैनामा ।
કબિલો (सं.) कुनबा, कुटुम्ब, घरगृहस्थी । [बच्चा ।
કબી-બૂ (क्रि. वि.) कभी, बाज़
કબીર (सं.) कवि, भाट, एक कवि का नाम ।
કબુધિયું-દ્ધી (सं.) मूर्ख, बेहूदा, कुधर्मी, बदमाश । [पक्षी ।
કબૂતર (सं,) फाखता, कबूतर
કબૂતરખાનું (सं.) कबूतरों के रहने का स्थान ।
કબૂલ (वि.) स्वीकार, मन्जूर ।
કબૂલત-લાત (सं.) लिखित या जबानी राजीनामा, वचन, वादा ।
કબૂલવું (क्रि.) वचन देना, प्रसन्न होना ।
કભાય (सं.) एक बड़ी लम्बी बिखरी हुई पोशाक, चोगा, जामा ।
કમ (वि.) न्यून, थोड़ा, हीन,
કમઅક્કલ (वि.)मूर्ख, न्यून बुद्धि बुद्धिहीन (सं.) कम समझी, नासमझी ।
કમ કમવું (क्रि.) काँपना, थर्राना झिझकना, सिकुड़ना ।
કમકમાટ (सं.) कंपन, अरुचि, घृणा, कपकपी, थर थराहट ।
કમ કરવું (क्रि.) घटाना, थोड़ा करना ।

કમખો (सं.) अंगिया, चोली ।
કમચી (सं.) कोड़ा, छड़ी, बेत,
કમજાત (सं.) नीचवर्ण, कमीना नीच, तुच्छ, निकम्मा ।
કમજોર (वि.) निर्बल, कमताकत, शक्तिहीन ।
કમઠ (सं.) केंकड़ा, कछुवा, कच्छप ।
કમંડળ (सं.) एक मिट्टि या लकड़ का जलपात्र जो साधुओं के पास होता है, कमंडुल ।
કમતી (सं.) कमी, घटी, न्यूनता,
કમનશીબ (वि.) अभागा, बद-किस्मत, भाग्यहीन ।
કમબખત-ખ્ત (वि. दुर्भाग्य, सं. अवारा, दुष्ट, लुच्चा, शुहदा ।
કમર-મ્મર (सं.) कमर, कटि, कूल्हा, पुट्ठा ।
કમરખ (सं.) एक फलका नाम ।
કમરપટો-બંધ (सं.) कमर पेटी । कटिबंध । [कमल के बीज ।
કમળ કાકડી (सं.) कमळ गट्टे ।
કમળા-ળા (सं.) देवी लक्ष्मी,
કમળો (सं.) पांडुरोग, कंवलरोग पीलाज्वर, डाह, ईर्षा ।
કમાઈ-ણી (सं.) प्राप्ति, लाभ, नफा, आमदनी, आय ।
કમાઉ (सं.) कमाने वाला, आमद करनेवाला । [किंवाड़ ।
કમાડ (सं.) द्वार, दरवाजा, कपाट
કમાન (सं.) धनुष, इन्द्र धनुष, महराब, वृत्तखण्ड, चाप ।
કમાનદાર (वि.) महराबदार, आधा गोल, झुका हुवा, टेढ़ा ।
કમાલ (वि.) सुन्दर, खूबसूरत उत्तम श्रेष्ठ, ठीक, उचित ।
કમાવું (क्रि.) प्राप्त करना, पैदा करना, कमाना ।
કમી (वि.) न्यूनता, घटी ।
કમી જાસ્તી (वि.) थोड़ा या बहुत ।
કમીન (सं.) नीच, निम्न, शूद्र, पतित ।
કમોત (सं.) बे मौत, असामयिक मृत्यु, आकस्मिक मृत्यु ।
કમોદ (सं.) एक प्रकारके चावल, -આપવી (क्रि.) लाठीमारना पीटना ।
કંપ (क्रि.) हिलना ।
કંપની (सं.) समाज, टोली ।
કંપાસ (सं.) दिशानिरूपण यंत्र, कुतुबनुमा । [ताहुवा ।]
કંપિત (वि.) कोंपताहुवा, थर्रा-
કંપુ (सं.) डेरा, पड़ाव, फौज ।

કંમલ (सं.) कामरि, लोई, ऊनी चादर । [देनेका दिन ।
કયામત (सं.) न्यायकादिन, दंड-
કયાસ (सं.) अनुमान, अटकल । कच्चीकूत ।
કયો (सर्व.) कौन, क्या ।
કર (सं.) हाथ, टेक्स, महसूल, दीर्घ, ऊँचा, मालगुजारी ।
કરકટી (सं.) अर्थी, मुर्दों के ले-जानेकी गाड़ी, काठेकी ठटिया ।
કરકડાટ (कि. वि.) साफ साफ, स्पष्ट स्पष्ट, [तीखा ।
કરકરૂં (वि.) खुरदरा, तेज,
કરકસર (सं.) किफायत, वारा मितव्ययता ।
કરકાઠિયું (सं.) मांसहीन, केवळ आस्थिपंजरमात्र, जिसकी हड्डियां दिखती हों ।
કરગી (स.) कृषक, किसान ।
કરગરવું (कि.) विनती करना, माँगना, घिघियाना ।
કરગરીને (कि. वि.) चाहसे, अनुरागसे, रंजसे,
કરચ (सं.) टुकड़ा, खंड, हिस्सा।
કરચલી (सं.) झालर, झुर्री, चुनन पर्त, तह ।
કરચલું (सं,) केंकड़ा ।
કરજ (सं.) ऋण, जवाबदेही, -દાર ऋणी
કરંજ-જો (सं.) झरना, फव्वारा
કરડવું (कि.) काटना, कुतरना, नोंचना ।
કરડીદષ્ટિ-નજર (सं.) क्रोधपूर्वक दृष्टि, रूखीनिगाह, कठोर दृष्टि ।
કરડો (वि.) कठोर, कड़ा, रूखा, कर्कश, निर्दय (सं.) पांवके अंगूठेमें पहिननेका छल्ला ।
કરણ (सं.) युद्धका एक हथियार । कान, सूर्यरश्मि, कारण, सब्ब,
કરણી (सं.) कर्म, व्यवसाय, कार्य गुण, योग्य, उजाड, मरुस्थळ ।
કરતલ (सं.) हाथकी हथेली ।
કરતાં (क्रि. वि.) बनिस्बत, अपेक्षा, करतेहुए, तोभी । [कठनाल ।
કરતાલ (सं.) झांझ, मजीरा,
કરતુવ-ક (सं.) बुराकाम, वर्ताव, आचरण । [एजेण्ट, दलाल ।
કરનાર (वि.) कर्ता, करनेवाला,
કરપ (सं.) ठाठ, धूमधाम, शान-शौकत, भय, डर । [बातचीत ।
કરપલ્લવ (सं.) अंगुलियोंसे
કરપીણુ (वि.) लालची, मक्खी-चूस, कृपण, कमीना ।
કરમ (सं.) काम, कर्म, कार्य, भाग्य, बुराकाम, कृमि, कीड़ा ।

કરમકહાણી (सं.) भाग्यका-
वृत्तान्त ।
કરમદું (सं.) करौंदे वृक्षकाफल ।
કરમાધરમી (क्रि. वि.) धर्माधर्मी।
કરમાવું (क्रि.) कुम्हलाना,
मुरझाना ।
કરમાળા (सं.) अंगुलियों पर माला
का काम । स्मरणी, माला ।
કરમી (सं.) भाग्यवान, खुश-
किस्मत । [पशु रोग ।
કરમોડિયા (सं.) एक प्रकारका
કરવત (सं.) आरी, लकड़ी चीर-
नेका औज़ार ।
કરવતી (सं.) छोटीआरी, गाड़ी ।
કરવું (क्रि.) करना, बनाना,
तैयार करना, पूरा करना, रचना।
કરશણી (सं.) कृशक, किसानी ।
કરાં (सं.) ओला, चूड़ियां,
पहुँची ।
કરાજવું-અવું (क्रि.) आतोंका
ऐंठना, अंतडियोंका मरोड़ना ।
કરાડી (सं.) आराकश, लकड़ी
चीरनेवाला । [करारा
કરાડ (सं.) ढाल, ढालू, भूमि
કરાણી (सं.) जहाजका तहवी-
लदार ।

કરામત (सं.) यत्न, उपाय, चतु-
रता, चालाकी, हुनर, अक्लमंदी ।
કરાર (सं.) वचन, वादा, कौल,
करार, अचल, दर्द में आराम ।
કરારફાદ (सं.) वचन वादा,
राजीनामा ।
કરારનામું (सं.) दस्तावेज, तमस्सुक,
लिखित वचन पत्र ।
કરાળ (वि.) भयंकर, टेढा, भयानक ।
કરિયાણું (सं.) पसरहट्टा, किराना
औषधिया, बीजे ।
કરિયાતું (सं.) चिरायता ।
કરી (सं.) हाथी, पथ्य, परहेज ।
કરીને (क्रि. वि.) द्वारा, से, अतएव,
કરીમ (वि.) उदारतायुक्त, दयालु,
मिहरबान, दाता ।
કરી લેવું (क्रि.) गोद लेना (पुत्र)
કરુણા (सं.) दया, कृपा, अनुग्रह,
अनुकम्पा ।
કરુણાકર (सं.) दयानिधि, कृपा-
निधान ईश्वर।
કરુણામય (वि.) दयालु, मिहरबान।
કરુણારસ (सं.) नवरसों में से एक
रस, शोकजनक वृत्तान्त, करुणा
पूर्ण गाथा ।

કરૂપ (वि.) बदसूरत, भद्दा कुरूप,
કરેઢી (सं.) स्वेत रेती, सफेदबालू।
કરેડું (सं) बच्चा जनने के बाद शीघ्रही निकाला हुवा गो दुग्ध ।
કરેણુ-ણ્યુ (सं.) कनेर वृक्ष, कनेर का पुष्प । [दीवार ।
કરો (सं.) मकान के बगल की
કરોઠું (सं.) व्यवहार, रीति, चाल।
કરોડ (सं.) रीढ, काँटा, (वि.) दश लाख, कोटि । [अगणित ।
કરોડો (वि.) अनेक कोटि,
કરોળિયો (सं.) मकड़ी, जाला,
કર્ક (सं.) केंकड़ा, कर्क राशि ।
કર્કશ (वि.) कठोर, कड़ा ।
કર્કશા (सं) झगड़ालू स्त्री, मुहँ जोर औरत, लड़ाकी स्त्री ।
કર્ણ (सं.) कान, श्रोत्रेन्द्रिय, कर्ण ।
કર્તરિ પ્રયોગ (सं.) वह वाक्य जिसमें उसके विषय से क्रिया मिलती हो ।
કર્તવ્ય (वि.) करणीय, करने योग्य (सं.) काम, कार्य ।
કર્તા (सं.) करनेवाला, बनानेवाला, पुस्तक का लेखक, प्रबंधक ।
કર્પૂર તેલ (सं.) कपूर, कपूर का तेल । [नाश करनेवाला।
કર્તા હર્તા (सं.) रचनेवाला और
કર્મ (सं.) कार्य, काम, आचरण, वरताव, भाग्य, किस्मत, तकदीर,
કર્મકાન્ડ (सं.) वेदोंका वह भाग जिसमें शास्त्रोक्त कर्म वर्णित हैं ।
કર્મભ્રષ્ટ (वि.) ढीला, उदास, नर्म, आचार सम्बन्धी कर्तव्य कर्मों को भूला हुवा ।
કર્મયોગ (सं.) प्रारब्ध शक्ति, भाग्य, किस्मत ।
કર્મેન્દ્રિય (सं.) हाथ, पाँव, मुख, गुदा, और लिंग ये ५ कर्मेन्द्रिय ।
કલગી (सं.) मुकुट, चोटी, फूल का गुच्छा, गुलदस्ता ।
કલંક (सं.) अपवाद, अपयश, दोष, दुष्कीर्ति, दाग
કલજુગ (सं.) चौथा युग, वर्तमान युग, [कीचड़ ।
કલણ (सं.) दलदल, पँसाव,
કલ્પના (सं.) उपाय, मनोगति ख्याल, विचार, खयाली पुलाव ।
કલ્પવું (क्रि.) विचार करना, मन के लड्डू बनाना
કલ્પાંત (सं.) दुःख, शोक, कष्ट, रुदन, करुणक्रंदन, महा प्रलय ।
કલપ (सं.) खिजाब,
કલમલ-લાટ (सं.) हुलड़, कोलाहल, धूमधाम, शोरगुल

કલમ (सं.) लेखनी, प्रकरण हस्तलिपि, भाषा, देश भाषा, चित्रकार की ब्रुश, खंड, भाग, पौधोंपर कलम लगाना, वाक्य खंड, मजमून ।

કલમ કરવી (क्रि.) वृक्षों को काटना, कलम बनाना ।

કલમ કાપવી (क्रि.) बरखास्त कर देना, पदच्युत, कर देना, निकाल देना ।

કલમદાન (सं.) दावात कलम रखने की पेटी, दावात ।

કલમબંદી (सं.) रोक, कलमबंदी ।

કલમો (सं.) कुरानकी आज्ञा ।

કલ્યાણ (सं.) शुभ, आशिर्वाद ।

કલવો–લેવો (सं.) विवाह के समय का कलेवा, कुँवर कलेवा ।

કલહ (म.) झगड़ा, लड़ाई, विरोध, द्वन्द्व ।

કલાક (सं.) एक घंटा, ६० मिनिट, बड़ी घड़ी,

કલાબતુ (सं.) रेशमी धागा जिस पर सोना चाँदी का काम हो, कलाबत्तू ।

કલાદ (सं.) सुनार, स्वर्णकार ।

કલાપી (सं.) मोर, मयूर, कोयल, कोकिला । [रुदन ।

કલાપિટ (सं.) हुल्लड़, शोक, रंज,

કલાલ (सं.) शराब बेचनेवाला, कलार, कलवार ।

કલાલખાનું (सं.) शराब की दुकान, मद्यगृह, शराबखाना ।

કલિ (सं.) संसारका चौथापन, चौथा युग, वर्तमान युग ।

કલિંગડું–કાલિંગડું (सं.) हिनवाना, कलींदा, तरबूज़ ।

કલેજું (सं.) दिल, हृदय ।

કલેડું–ડું (सं.) कड़ाही, तम्बूर रोटी पकाने का मिट्टीका गोल पात्र

કલેવર (सं.) लोथ, निर्जीव देह, देह ।

કલૈ–લાઇ (सं.) टीन

કલૈ કરવી (क्रि.) कलई करना, मुलम्मा करना भर (सं.) टिन साज़ । [विनोद, तेज़ आवाज ।

કલોલ–કલ્લોલ (सं.) खेलकूद,

કલ્કી (सं.) विष्णु का दसवाँ अवतार, भावी अवतार ।

કલ્પ (सं.) ब्रह्मा का एक रात एक दिन, हमारे ४,३२,००,००,००० वर्ष,

કલ્પદ્રુમ–કલ્પવૃક્ષ–કલ્પતરૂ (सं.) देववृक्ष, अभिलषित फल देने वाला वृक्ष ।

કલ્પિત (वि.) बनाया, कृत्रिम, रचित, मिथ्या प्रकाशित ।
કલ્લા (सं.) गलमुच्छे ।
કલ્લી-લ્લું (सं.) चाँदी या सोने का बाजूबन्द ।
કલ્લો (सं.) शब्द, शोरगुल, घास के अंकुर ।
કવચ (सं.) बिच्छू का पेड़, वर्म्म, झिलम, बाजू, सन्नाह, बखतर ।
કવન (सं.) काव्य रचना, कविता,
કવાયત (सं.) कवायद, सैनिक युद्ध शिक्षा, कपट यत्न, कपट उपाय ।
કવિ (सं.) काव्यकार, भाट ।
કવિતા (सं.) पद्य, श्लोक, छन्द ।
કવેળા (वि.) असमय, ऋतु-विरुद्ध ।
કશીદો (सं.) दस्तकारी, शृंगार सजावट, बेलबूटे काढनेका कार्य ।
કશું (वि.) कोई, जोकुछ, जितना ।
કષ્ટ (सं.) शारीरिक क्लेश, दुःख दर्द ।
કષ્ટાવું (क्रि.) प्रसवकी पीरमें होना, बालक उत्पन्न होते समयकी प्रसव पीड़ा होना । [दुखित
કષ્ટિત-ષ્ટિ (वि.) प्रसव कष्ट,
કસ (सं.) कसौटीपर सोने या चांदी की परख, सत, गूदा, तत्व, शक्ति, गांठ, बन्धन ।
કસકસતું (क्रि. वि.) तंग,
કસકસાવવું (क्रि.) कसकर बांधना।
કસટિયો (सं.) गिरो रखनेवाला बंधक ग्राहक, व्याजपर रुपया देनेवाला ।
કસદ (सं.) परिश्रम, उद्योग, इच्छा, लालसा ।
કસદાર (वि.) पुष्ट, मजबूत, बलवान, रसीला, सरस ।
કસબ (सं.) सोने या चाँदी के तार जो कसीदे के काममें आते हैं । हुन्नर, होशियारी, शिल्पविद्या
કસબણ-બાતણ (सं.) वेश्या, कुकर्म करनेवाली, रंडी, छिनाल ।
કસબાતી (सं.) कस्बेका निवासी,
કસબી (सं.) हुन्नरमंद, गुणी, चतुर, होशियार, सोने या चांदीके तारका बनाहुवा ।
કસબો (सं.) गाँव, कस्बा,
કસમ (सं.) शपथ, सौगन्द ।
કસમ આપવા-અપાવવા (क्रि.) शपथ दिलाना, हलफ दिलाना।
કસમખાવા (क्रि.) सौगन्दखाना शपथ लेना ।

કસંબો—સુંબો (सं.) कसूमका रंग, एक प्रकारका लाल वस्त्र; अफीमको पानीमें पतला करके बनाहुवा पेय द्रव्य ।

કસર (सं.) कमी, घटी, न्यूनता, कमआदम, मितव्ययता, रोग के कुछकुछ चिन्ह अवशिष्ट जो लगभग आराम होतुकाहो, अरुचि, नाराजी ।

કસરત (सं.) अभ्यास, मुहाविरा, व्यायाम ।

કસરતશાળા (सं.) व्यायामशाला ।

કસરિયું (वि.) किफायती, कमखर्च मितव्ययी ।

કસલી (सं.) छोटा लोटा या कटोरा।

કસવું (क्रि.) कसकर बांधना, प्रयत्न करना, शोधना, जॉचना, सोने को परखना ।

કસાઈ (सं.) घातक, वधिक, निर्दय, मांस बेचनेवाला । [मोहल्ला ।

કસાઈવાડો (सं.) कसाइओं का

કસારી (सं.) झींगुर ।

કસુંબી, કેશંબી (वि.) लाल केशर, द्वारा रंगा हुवा । [गलती ।

કસુર (सं.) अपराध, दोष, पाप,

કસુવાવડ (सं.) गर्भपात, गर्भस्राव।

કસોટી (सं.) धातु परीक्षक पत्थर, शोधक, पहचान जांच । [कचरा ।

કસ્તર (सं.) कूड़ा, कर्कट, मैला

કસ્તૂરી મૃગ—રિયુઅ (सं.) वह हरिण जिसमें कस्तूरी होती है ।

કસ્તૂરી (सं.) मृगमद, औषधि विशेष, मुश्क । [निकालना ।

કહાડવું (क्रि.) निकाल देना, खींच

કહાડી નાંખવું (क्रि.) निकाल देना काट देना, मिटा देना ।

કહાડી મેલવું (क्रि.) बरखास्त करना, पदच्युत करना, निकाल बाहिर करना । [वर्णन ।

કહાણી (सं.) किस्सा, बयान,

કહાર (सं.) पालखी उठानेवाला ।

કહેવું (क्रि.) कहना, कथन करना, (सं.) शब्द, वर्णन व्याख्या ।

કળ (सं.) उपाय, यत्न, तदबीर, हिकमत, उपाय, ताला, चीरफाड़ का दर्द, अभ्यास, मुहाविरा, उपाय, सहायता, सुख चैन ।

કળતર (सं.) जोडों में दर्द, चीरफाड़ का अधिक दर्द ।

કળવું (क्रि.) समझना, सोचना, विचारना ।

કળશ—સ (सं.) गुम्बज, गृह, मीनार, मंदिर का मुकुट, घट, घड़ा ।

કળશિયો (सं.) छोटा जलपात्र, गगरी, लोटा, कटोरा,
કળસી (सं.) १६ मन का वज़न।
કળા (सं.) सोलहवां अंश, शिल्प आदि विद्या, हुनर, चतुरता, बाला की, मुख की कांति, मोर की उठाई हुई पूँछ।
કળા કૌશલ્ય (सं.) कला और विज्ञान, कला कौशल्य।
કળાધર (सं.) चन्द्रमा, चाँद, मोर
કલાવન્તી (सं.) नाचनेवाली, रंडी, वेश्या।
કળી (सं.) कलिका, चने के आटे का बना हुवा सूत्र सामान खाद्य पदार्थ, मिठाई की किस्म, अंगरखेमें लगनेवाली तिकोनी कली।
કળી ચુનો (सं.) बेबुझा चूना, आहक।
કક્ષા (सं.) ग्रहपथ, ग्रहमार्ग।
કાં (क्रि. वि.) क्यों, काहेको, किस लिये।
કાંઇ (क्रि. वि.) कुछ थोड़ा
કાંકરી (सं.) छोटे छोटे पत्थर, रेत, बालू, कंकड़ी पथरी।
કાંકરો (सं.) पत्थर, कंकर। शक शुभा, सन्देह।
કાંચીડો (सं.) गिरगट।
કાં કે (क्रि. वि.) क्यों कि, कारण कि, इसवास्ते, से, जैसा,
કાંચુ (वि.) स्वादिष्ट, कोमल, निर्बल, कमजोर, अशक्त।
કાંચવું (क्रि.) बहकाना, फुसलाना, धोका देना, छल करना, जुड़ना संभोग करना, मैथुन करना
કાંચળી (सं.) छाती ढांकने का कपड़ा, अंगिया। [लेई, सरेस।
કાંજી (सं.) कंजी, माँड, लपसी,
કાંટલો (सं.) तोते के गले में नये रंग की कंठा, ढरकी, नारी।
કાંટો (सं.) कंटक शूल, तराजू, घड़ी के काटे, पैनी नोंक, रोक, आड़ रोढ़, पीठकी हड्डी, मछली पकड़ने का काटा, बालों का खड़ा होना, नाक पहिनने का भूषण, नुकीली पैनी मछली की हड्डी, गुणाकार को सही या गलत जानने की तरकीब, शक।
કાંઠો (सं.) किनारा, तीर कुएकी परिधि, सीमा, सीरा।
કાંડું (सं.) कलाई, पहुँचा।
કાણું (सं.) छेद, छिद्र, द्वार, काणा, एक आँखका।
કાતવું (क्रि.) कातना धागाखींचना, घटाना, कम करना।

કાંદો (સં.) प्याज, काँदा, लाभ, फायदा। [किस्त।
કાંધ–ધું (સં.) स्कंध, कंधा (सं.)
કાંપ (સં.) फाँक, टुकड़ा, केम्प, काली जमीन खाद के योग्य।
કાંપવું (ક્રિ.) काटना, थर्राना, धूजना। [कामरि।
કાંબળી–ળો (સં.) कम्बल, लोई
કાંબી (સં.) एक प्रकार का चाँदी का भूषण [लिये।
કાંય–ર (ક્રિ. વિ.) क्यों, किस
કાંસ (સં.) आबपाशी के लिये बनाई हुई नाली।
કાંસકી–કા (સં.) कंघा, कंघी
કાંતા–સિયાં (સં.) बड़ी झाँझ, बड़ी करताल। [धातु।
કાંસું (સં.) कांस्य धातु, काँसी
કાઈજવું (ક્રિ.) घबराजाना, थक जाना, कँदराजाना, उकताजाना।
કાઉ કાઉ–(સં.) काँय काँय शब्द,
કાક (સં.) कौवा, कागा, कपटी
કાકડો (સં.) मोटा पलीता, बड़ी मशाल, मानसिक, दिली, एक मोटी बत्ती, लटकन, लङ्गर।
કાકપત્ર–ત્રું (સં.) भूल का चिन्ह, निशान, यह बतलानेवाला चिन्ह कि इस स्थान पर यह होना चाहिये।
કાકર (સં.) करवत के दाँते, आरे के दाँते। [चिरौंसी।
કાકલુતી (સં.) प्रार्थना, विन्ती,
કાકવી (સં.) राब, शीरा, गुड़।
કાકા–કો (સં.) सगा चाचा, बाप का सहोदर बंधु, बाप का छोटा भाई, काँव काँव। [कोकिला।
કાકાકૌઆ (સં.) काकतुवा, कोयल,
કાકાપુરી (વિ.) निकम्मा, व्यर्थ, वर्णशंकर, नीच।
કાકાબળિયા (સં.) छोटी चेचक।
કાકી (સં.) काकी, चाचा की पत्नी।
કાખ (સં.) काँख, बगल,
કાખબલાઈ–બિલાડી (સં.) एक प्रकार की काँख की बीमारी।
કાગડો (સં.) कौवा, वायस, (वि.) नटखट, धूर्त।
કાગદી (સં.) कागज कलम आदि लिखनेकी सामग्री बेचनेवाला। कागज का कारीगर या दस्तकार, पतली कोमल वृक्ष छाल या चमड़ा
કાગવાસ (સં.) काकबलि, कौओंके निमित्तका पदार्थ।
કાગવિદ્યા (સં.) भविष्यत् कथन, भविष्यद्वाक्य, आगम।
કાગળ (સં.) कागज, पत्र, चिठ्ठी

કાગળપત્ર (सं.) पत्रव्यवहार, पत्रालाप ।

કાગારોળ (सं.) विलाप, सदन, आपद, दुर्गति ।

કાંક્ષા (सं.) इच्छा, चाह, ख्वाहिश,

કાચ (सं.) दर्पण, शीशा, मुकुर, बिल्लौर, कच्चा हीरा ।

કાંચંડો (सं.) एक प्रकार का जानवर, गिरगट ।

કાચર (सं.) छोटा टुकड़ा ।

કાચલી (सं.) नारियल के ऊपर का छिलका, नरेठी ।

કાચી જપ્તિ (सं.) न्याय होने के पूर्व रोक, रोक। [नोट।

કાચી નોંધ (सं.) कच्ची बही, कच्चे

કાચી બુદ્ધી–દ્ધિ (वि.) भौला, मूर्ख पागल (सं.) अनभ्यस्त, अनाड़ीपन, न तजुर्बेकारी ।

કાચી મુદ્દત (सं.) निश्चित समय से पूर्व, अनिश्चित समय ।

કાચું (वि.) अपक्व, कच्चा, अधूरा ।

કાછ (सं.) कमर, कछुआ, कच्छप,

કાછડી (सं.) लाँग, धोती की लॉग

કાછડી છુટો (वि.) लंपट, अय्याश, गंदा, खुला, बिखरा, भ्रष्ट, पतित।

કાછડો (सं.) साड़ी का पल्ला, साड़ी की लाँग ।

કાછીયો (सं.) काछी जाति, शाक भाजी बेचनेवाला ।

કાજ (सं.) काम, धन्धा, कार्य, कारबार, व्यौहार,

કાજગરૂ–રો (वि.) महँगा, कीमती, मूल्यवान, कोमल, स्वादिष्ट, फला, खिला, कली, बौर ।

કાજ સારવું (क्रि.) पूरा करना, अन्त तक सम्पूर्ण करना ।

કાજળ (सं.) कज्जल, अंजन, दीपककी कारिख, मल्हम, लेप ।

કાજી (सं.) न्यायाधीश (मुसलमानों के लिये) [फल ।

કાજુ (सं.) काजू, एक प्रसिद्ध

કાજે (क्रि. वि.) लिये, वास्ते, अतः एतदर्थ । [शहतीर, मैला ।

કાટ (सं.) मुर्चा, जंग, रोक,

કાટ કાઢાડવો (क्रि.) रोक तोड़ना, मारना, वध करना, तैकरना, निर्णय करना, ठीक करना ।

કાટકૂટ (सं.) मकान बनाने की टूटी फूटी सामग्री, कतरन, कांट छांट [कड़क

કાટકો (सं.) गर्ज, बिजली की

કાટકોણુ–ખુણો (सं.) समकोण ।

કાટપીટીયો (सं.) लकड़ी बेचने-वाला, लट्ठे बेचनेवाला ।

કાટલું-લા (सं.) वज़न, बाट, परिणाम, कमी ।

કાઠડી-ડું-ડે (सं.) लकड़की काठी, बैठक (लकड़की)

કાઠી (सं.) छड़ी, जलानेकी लकड़ी (एक जगह बंधी हुई) मौली, नाप १६- फीटका, काठियावाड़के लोग, डंडा । [शरीरकी बनावट ।

કાઠું (सं.) शरीरका ढॉचा, या

કાઢઘાલ (सं.) बारबार निकालना और रखना । [लेना, लेआना ।

કાઢવું (क्रि.) निकाल लेना, खीच

કાઢો (सं.) क्वाथ (औषधियोका)

કાણ (सं.) दूसरो के शोकमे शोक प्रदर्शित करने को मिलना ।

કાણું (वि.) छेदवाला, छेददार एक ऑख का (सं) छिद्र, छेद।

કાત (सं.) पेट, सुनार का जम्बूर, सुनार का एक औज़ार ।

કાતર (सं.) कैंची, कतरनी ,

કાતરવું (क्रि.) काटना, कतरना, छॉटना, कम करना, घटाना ।

કાતરા (स.) तड़कन की दरार या फॉक ।

કાતરિયું (सं.) अटारी, लकड़ी का शस्त्र विशेष, मकान की अपरी मंजिल ।

કાતરી-ળી (सं.) पतली फॉक ।

કાતી (सं.) लोहा, छल, कपट, करौत, आरी, चाकू ।

કાતું (सं.) चाकू, छुरी,

કાથ (स.) शक्ति, ताकत, कपड़ा, साहस, उत्साह ।

કાથો (सं.) रस्सियों का बंडल,

કાદવ-વાળું (सं.) कीचड, पंक, कचरा, मैला,

કાન (सं.) कर्ण, श्रोत्रेन्द्रिय, तोप या बन्दूक की आख या बत्ती लगाने की जगह ।

કાનકોતરણી (स.) कान का मैल निकालने की सलाई ।

કાનકાપવા (क्रि.) मात करना, हरादेना, बढ जाना, सबकृत ले जाना ।

કાન ખજુરો (सं.) गोबर, खन, खजूरा, कनसळा, कई टॉगों का कीडा । [२ कानों की चमगीदड़,

કાનખિભોર (सं.) चमगीदड़, लम्बे

કાન દેવા-માંડવા (क्रि.) कान देना, ध्यान देना ।

કાન પકડવો (क्रि.) कान पकड़ना, अपराध स्वीकार करना, खेद करना ।
કાન ઝાલવો (क्रि.) पूर्ववत् ।
કાનપર હાથ દેવો–રાખવો–કાનેથી કાઢી નાંખવું (क्रि.) अस्वीकार करना, न मानना, अंगीकार न करना, तुच्छ जानना, घृणा करना
કાન દેવા (क्रि.) ध्यान देना ।
કાનની બૂટ (सं.) कान का सिरा
કાનનું–નો કાચું (वि.) विशेष करके बहिरा, भोळा, सीधासादा ।
કાનનો પડદો (सं.) कान का पर्दा, कानके भीतर की झिल्ली ।
કાન ફુંકવા (सं.) बहकाना, उत्तेजना देना, सावधान करना दिली पक्षपात करना ।
કાન ફૂટી જવા (क्रि.) बहरा हो जाना, या सुध होजाना। [करना ।
કાનમાં કહેવું (क्रि.) काना फूसी
કાનસ (सं.) पंक्ति, कतार,
કાનસુળ–ળા (सं.) कर्ण शूळ, कान का दर्द । [चाळ, चळन ।
કાનુન (सं.) कायदा, नियम, रीति,
કાનો (सं.) काना, जो अक्षर के पास । इस रूपमें लगाया जाता है, जिसके लगनेसे व्यंजन का उच्चारण " आ " युक्त होता है । आ स्वर की मात्रा ।
કાનોમાત્ર (सं.) काना और मात्रा " ो " ओ स्वर की मात्रा ।
કાંત (सं.) पति, प्रेमी, खसम ।
કાંતા (सं.) पत्नि, प्रिया, पृथ्वी.
કાંતિ (सं.) चमक, शोभा, दीप्ति सौन्दर्य, काच ।
કાપ–કામ (सं.) चोट, घाव, जख्म, व्रण, कान का भूषण ।
કાપડ–બજાર (सं.) वस्त्र, टुकड़े माल, कपड़े का बाजार कपड़े का व्यवसाय । [विक्रेता ।
કાપડિયો (सं.) बजाज, वस्त्र
કાપડું (सं.) अंगिया, चोली ।
કાપણી (सं.) फसल पकने का समय, फसल काटने का वक्त ।
કાપવું (क्रि.) काटना, गिरना, कम होना, घटना । [वर्षा ।
કાપશી (सं.) कपास का पौदा ।
કાપાકાપી–(सं.) मारकाट, हत्याकाण्ड, काटाकूटी,
કાપી નાંખવું (क्रि.) काट डालना, छांट डालना ।
કાપુસ (सं.) रुई, कपास, कर्पास ।
કાપો (सं.) चिन्ह, लकीर, सतर काट, धारी, लहर ।

કાફર (सं.) अधर्मी, बेईमान, बुद्ध, नीच, दुर्जन, काफिर।

કાફરી (वि.) दुष्टता, दुर्जनता, काला आदमी, हबशी, नारकी।

કાફલો (सं.) पवित्रात्मा का शरीर, यात्रियों का झुंड, यात्री जहाजों का बेड़ा।

કાફી (सं.) काफी चाह की तरह पी जाती है, राग काफी।

કાબર ચીતરૂં-કાબરૂં (सं.) चित कबरा, भूरा, रंगबिरंगा।

કાબરી (सं.) चावल के छोटे फूल।

કાબા (सं.) भारतीय दक्षिण समुद्र के डाकू।

કાબુ (सं.) अधिकार, हक, शक्ति पौरुष, वजन, प्रभाव, दबाव।

કાબુદાર (वि.) शक्तिवान, प्रभावोत्पादक।

કાબેલ (सं.) होशियार, पटु, चतुर, लायक, निपुण, गुणी।

કાબેલિયત (वि.) चतुरता, लायकी, प्रवीणता, होशियारी। [कर्कशा।

કાભા (सं.) बुरे स्वभाव की औरत,

કામ (सं.) कार्य, धन्धा, प्रयोग, आनन्द, काज, पेशा, ओहदा, कारबार, मामला, पदवी, गौरव, योग्यता, कामेच्छा, कामदेव।

કામ કળા (सं. चालाकी, चतुराई, रति, कामदेव की भार्या।

કામકાજ (सं.) कार्य, बर्ताव, कारबार, व्यौहार। [काजी।

કામગરૂ (वि.) परिश्रमी, काम,

કામ ચલાઉ (वि.) गमनीय, काम चलाने योग्य, काम धकाऊ, एवजी योग्य।

કામ ચલાવવું (क्रि.) काम चलाना, किसी प्रकार काम निकालना।

કામ ચોર (वि.) कामसे जी चुरानेवाला, काम से मुहँ छुपानेवाला।

કામજ્વર (सं.) प्रेम ज्वर, कामदेव से पीडित होकर बुखार हो जाना।

કામ જોગ (वि.) काम के लायक, उपकारी, उपयोगी।

કામઠી-ઠું (सं.) बाँस की चर्पट, बाँस की खपची, कमान, धनुष।

કામણ (सं.) जादू, टोना इन्द्रजाल, टुटका।

કામણગારૂ (सं.) जादूगर, टोने करनेवाला, जादू मंत्री।

કામણ ટુમણ (सं.) जादू, जादूगरी, इन्द्रजाल, टोना।

કામદાર (सं.) सर्कारी सरिश्ते या दफ्तर सम्बन्धी, मंत्री, व्यवस्थापक, सरबराहकार, शासक।

કામદુધા-ર્ગા (सं.) कामधेनु, इच्छित पदार्थ देनेवाली गऊ ।

કામદેવ (सं.) मदन, अतनु, मार, प्रेम के अधिष्ठाता देव ।

કામધંધો (सं.) काम काज, व्यापार, कार्य, काम ।

કામના (सं.) इच्छा, चाह, अभिरुचि, वासना ।

કામની (सं.) कामयुक्ता स्त्री, कोमल हृदयवाली, प्रेमिणी, (सं.) उपादेय, उपयोगी,

કામનું (वि.) मुफीद, काम में आनेवाला, उपयोगी काम का ।

કામરૂપ-પી (वि.) इच्छानुसार रूप धारण करनेवाला, प्रेमी, मोहनी, [रतामिलाषा, कामेच्छा ।

કામ વાસના (सं.) विषयवासना,

કામ વિકાર (सं.) प्रेम की बीमारी, हरी बीमारी । [शास्त्र ।

કામશાસ્ત્ર (सं.) रतिशास्त्र, कोक

કામળ-ળી (सं.) कम्बल, लोई

કામા (सं.) प्रिया, विराम का चिन्ह (,) [पीड़ित, कामुक ।

કામાતુર (सं.) कामीत, काम

કામિની (सं.) रूपवान स्त्री ।

કામી (सं.) कामातुर, रसिया ।

કામેટી (सं.) कमेटी, सभा, पंचायत, परीक्षा, जाँच । [सेजन,

કામોદય (सं.) प्रारंभिक प्रेम, कामो-

કામ્ય (वि.) प्रेम के योग्य स्वार्थी, खुद मतलब ।

કાયદાસર-દેસર (क्रि. वि.) न्याय युक्त, उचित, ठीक, सही ।

કાયદો (सं.) कानून, नियम, आज्ञा हुक्म,

કાયફલ (सं.) एक औषधि विशेष, कायफल ।

કાયમ (सं.) मुकर्रर, नियत, दृढ, मजबूत । [थका, सुस्त ।

કાયર-રૂ (सं.) डरपोक, बुज़दिल,

કાયલી (वि.) बिमारी, अस्वस्थता ।

કાયર કરવું (क्रि.) थकाना, घृणा करना, क्लेश देना, खिझाना, चिड़ाना।

કાયા (सं.) शरीर, देह, जिस्म, बनावट ।

કાયા કષ્ઠ (सं.) शारीरिक दुःख ।

કાર (सं.) प्रत्यय (कर्ता)

કારકીર્દી (सं.) शासन की अवधि कामकावक्त, कार्य काल ।

કારકુન (सं.) क्लर्क, मुन्शी, लेखक।

કારખાનું (सं.) कार्यालय, वर्कशॉप । [कसीदा ।

કારચોબ-બી (सं.) दस्तकारी

કારજ (सं.) कार्य, फौज, काज, उत्सव सम्बन्धी अवसर । [शय।

કારંજો (सं.) फव्वारा, कुंड जला-

કારણ (सं. सबब, गरज़, जरूरत, लिये (अव्य.) क्योंकि (उप.) अतएव, इस लिये ।

કારણસર (क्रि. वि.) इस कारण, कामसे, अतएव ।

કારતુસ (सं.) कारतूस (बन्दूकके)

કારભાર (सं.) प्रबन्ध, कामकाज, शासन । [पक, शासक ।

કારભારી (सं.) मेनेजर, व्यवस्था-

કારમું (वि) अद्भुत, अजीब, विचित्र ।

કારસ્તાન (सं.) धोका, छल, चाला-की, हिस्सा, [कपट, तदबीर ।

કારસ્તાની (वि.) उपाय, यत्न,

કારાગૃહ (सं) जेलखाना, जेल, बन्दीगृह ।

કારી (वि) गहिरा, दिल की इट शब्द के अंतमें कारण बतलानेवाला अक्षर, विकास, प्रभाव, अधिकार, आवश्यक ।

કારીગર (सं.) शिल्पी, शिल्पकार, कामकरनेवाला, दस्तकार ।

કારીગરી–ગીરી (सं.) विद्या, गुण, प्रवीणता, चतुरता, हुनर ।

કારેલું (सं.) करेला, एक प्रका-रकी कड़ी भाजी । [काम धन्धा ।

કારોબાર (सं.) प्रबन्ध कामकाज,

કારોબારી મંડળ (सं.) प्रबंध कारिणी सभा, व्यवस्थापिका सभा।

કાર્મુક (सं.) धनुष, चाप ।

કાર્ય (सं.) काम, धन्धा ।

કાર્ય પ્રયોજન (सं.) उत्सव, कारण वजह, अभिप्राय, प्रयोजन ।

કાર્યસાધક (सं.) दलाल, काम बनानेवाला, [कार्यता ।

કાર્યસિદ્ધિ (सं.) सफलता, कृत

કાર્યકારણુ (क्रि. वि.) आवश्य-कता के लिये पर्याप्त ।

કાલ (सं.) आनेवाला दिन, कल,

કાલબુત (सं.) प्रथम कारण, आदि निकास, कालबूता (लकड़ी का नमूना जूते बनानेको)

કાલવવું (क्रि.) मिलाना,

કાલાં (सं.) कपास का टेंटा ।

કાલાવાલા (सं.) प्रार्थना, विनती,

કાલીંગડું (सं.) तरबूज ।

કાલું (सं.) तुतलाहट मावली घोंघा, सीप ।

કાવડ (सं.) काँवर, बहँगी । [वाला।

કાવડિયો (सं.) काँवरवाला, बँगी-

કાવતરાંખોર–બાજ–ખોર (सं.) चालाक, जुगतबाज़ ।

કાવતરું-ત્રું (सं.) धोका, चालाकी।
કાવરૂં-ત્રા (वि.) पीड़ित, दुखित, उभरा, उकसा।
કાવળું-ણું (वि.) स्वादिष्ट, कोमल, कुड़कीला, भुरभुरा। [केतली।
કાવાદાની (सं.) काफी या चा के लिये
કાવો (सं.) घोड़े को गोल चक्करमें घुमानेका कार्य, उबाल, काढा, काफी।
કાવોદાવો (सं.) मक्कार, चालाक,
કાવ્ય (सं., कविता, पद्य, छन्द, रसयुक्त वाक्य।
કાષ્ટ (सं.) लक्कड़, लकड़ी,
કાષ્ટ ઘંટ-ટા (सं.) एक लकड़ जो भागनेवाली मवेशी के गले में बांधा जाता है।
કાસદ (सं.) वाहक, लेजानेवाला, हलकारा, संवाद लेजानेवाला दूत।
કાસલ (सं.) रोक, भाई, नाश, विध्वंश। [वाला, कहार,
કાહાર (सं.) पालकी ले चलने
કાહેલી (वि.) बीमारी, सुस्ती आलस्य, बेफिक्री।
કાળ (सं.) समय, उम्र, आयु, मृत्यु, यम, दुर्भिक्ष।
કાળચક્ર (सं.) समय का फेर, भाग्य का फेर, आयु परिवर्तन, चक्र, युग।
કાળચોઘડિયું (सं.) बुरावक्त।
કાળજાની કોર (वि.) प्रिय, प्यारा, प्राणाधिक प्रिय, दिली दोस्त।
કાળજાનું ખસેલું (वि.) अव्यवस्थित, केन्द्रसे हटाहुवा, पागल, विषम। [परवाह।
કાળજી (सं.) चिंता, सोच, फिक्र,
કાળજું (सं.) दिल, हृदय, कलेजा, जिगर। [किस्मत।
કાળદશા (सं.) भाग्य, तकदीर
કાળમાન (सं.) समय का परिमाण, एक यंत्र समय देखने का।
કાળમાપક યંત્ર (सं.) समय देखने का यंत्र, एक प्रकार की घड़ी।
કાળાંતરે (क्रि. वि.) देरमें, विलंब से, समयान्तर से।
કાળાશ (सं.) कालापन, अँधेरा, श्यामता, तिमिर। [आभूषण।
કાળીગાંઠી (सं.) गळेमें पहिनने का
કાળીજીરી (सं.) कालाजीरी, एक औषधि विशेष। [दोष, कलंक।
કાળીટીલી (सं.) बदनामी, दाग,
કાળી દરાખ (सं.) काळी किशमिश।
કાળું (सं.) काला, श्याम अंधेरा, बुरा, दुष्ट, शरमिंदा, लज्जित।
કાળું કરવું (क्रि.) शर्मसे या अप्रतिष्ठा के कारण मुहँ छुपाना।

કાળો કેર (सं.) दुर्भाग्य, विपत्ति, आपद्। [काम, निंद्य कार्य।
કાળું ધોળું (सं.) दुष्ट, पापी, बुरे-
કાળું પાણી (सं.) देश निर्वासन, कालापानी।
કિંવા (अ.) या, अथवा,
કિકિયારી (सं.) चिक्कार, चिंघाड़, चीख की आवाज।
કિંકર (सं.) सेवक, भृत्य, दास, पत्थर, पाषाण।
કિંકરી (सं.) दासी, नौकरनी,
કિચકિચ (सं.) बकबक, खिच खिच। [दल दल, मैला, कचरा।
કિચડ–ચ્ચડ (सं.) पंक, कीच,
કિંચિતમાત્ર (वि.) थोड़ासा, कुछ,
કિડિઆં (सं.) काच के गुरिये, काच के दाने।
કિડિયારૂં (सं.) चिउंटियों का बिल,
કિતવ (सं.) जुआरी, जुवा,
કિતાબ (सं.) पुस्तक, पोथी।
કિતાબખાનું (सं.) लायब्रेरी, पुस्तकालय।
કિતા (सं.) हस्ताक्षर दुरुस्तकरने की कापी बुक, भूमि का हिस्सा या बाँटा।
કિનખાપ–બ (सं.) बूटेवाली पट्ट, बादला, कमखाब, वस्त्र की एक किस्म। [वाद्य विशेष।
કિનરી (सं.) सारंगी, चिकारा, बेला,
કિનાખોર (वि.) द्वेषी, द्रोही, लागी, कीनावर।
કિનાત (सं.) तम्बूकी दीवार, कपड़े की परिधि, कनात।
કિનારી–રી (सं.) सिरा, गोटा, रौंश।
કિનારો (सं.) तट, तीर, कूल, हाशिया, किनारा।
કિનો (सं.) द्वेष, द्रोह, डाह, शत्रुता।
કિફાયત (सं.) फायदा लाभ, मुनाफा।
કિફાયત પડતું (सं.) सस्ता, लाभप्रद, फायदा देनेवाला। [महँगा।
કિમતી–તવાન (सं.) मूल्यवान,
કિમિયાગર (सं.) रसायन बनानेवाला, कीमिया बनानेवाला, बाजीगर, जादूगर।
કિમ્મત (सं.) मूल्य, दाम, लागत।
કિમ્મતવાર (वि.) सूचीपत्र, वस्तुओंकी कीमत प्रदर्शित करनेवाला सूचीपत्र।
કિયું (सर्व.) कौन? क्या?
કિરકુલ–કોળ (वि.) पृथक पृथक्, फुटकर, कई एक, मुतफर्रिकात, पचमेल।
કિરણ (सं.) रश्मि, प्रकाश,
કિરતાર (सं.) कर्ता, ईश्वर,
કિરમજ (सं.) कीड़े जिन से एक प्रकारका रंग बनता है।

કિરમજ (सं.) सेंदूरिया रंग, लाल रंग।

કિરાયાદાર (सं.) भाड़ेदार, भड़ैत।

કિરાયું (सं.) भाड़ा, किराया, लगान, महसूल।

કિરીટ (सं.) मुकुट, चोटी, – टी (सं.) अर्जुन (पांडव)

કિલકિલ (सं.) चिड़ियों की चुहचहाना, चहचहाट।

કિલાવો (सं.) रस्सी जो हाथी के गलेमें उतरनेवाले को पायड़ का काम देती है।

કિલિદાર (सं.) खजानची। कोषाध्यक्ष, धनाध्यक्ष। [कीड़ा, घुन,

કિલ્લુ (सं.) एक प्रकारका छोटा

કિલ્લેદાર (सं.) किले का अध्यक्ष, दुर्गपति। [कोट।

કિલ્લો (सं.) क़िला, दुर्ग, गढ़,

કિશોર (सं.) अवस्था विशेष, बालक, नौजवान, छोकरा, नाबालिग २१ वर्ष से कम उम्र का (कानून मे)

કિસમ (सं.) भाँति, प्रकार, जाति,

કિસાન (सं.) कृषक खेतिहार, गँवार।

કિસ્ત (सं.) ऋण, भाग, माल, गुजारी समय समय पर चुकाना, (वि.) हार, पराजय।

કિસ્મત (सं.) भाग्य, कर्म, तकदीर,

કિસ્સો (सं.) कहानी, वर्णन।

કીકી (सं.) लड़की, बालिका, आंख की पुतली,

કીકો (सं.) लड़का, बालक।

કીટ (सं.) कीड़ा मकोड़ा, दक्ष, प्रवीण, निपुण। [मैल।

કીટી (सं.) कपास का धूला, कीट,

કીડી (सं.) चिउंटी।

કીડો (सं.) कृमि, कीड़ा, गुबरीला,

કીર (सं.) तोता, सुवा, सुग्गा,

કીર્તન (सं.) गाकर के स्वर ताल के साथ ईश्वर स्मरण, भजन।

કીર્તનિયો (सं.) झाँझ, करताल, भजन। गायक।

કીર્તિ (सं.) नामवरी, यश, सुख्याति, बड़ाई, स्तुति।

કીર્તિમાન–વાન (सं.) यशस्वी, प्रतिष्ठित, मानी, नामी, कीर्ति, विशिष्ट। [चाबी, खजाना।

કીલી (सं.) लड़की, बालिका,

કીલો (सं.) लड़का, बालक,

કુંચી (सं.) चाबी, कुंजी, ताली, सूत का गोला, पता।

કુંજડો (सं.) शाकभाजी बेचनेवाला, बागवान।

કુંડળી (सं.) एक छोटा गोल छल्ला, जन्मपत्री में आयुका हाल बतानेवाली ग्रहकुंडली ।

કુંડાળું (सं.) गोल, चक्कर,

કુંડી (सं.) मिट्टी या पत्थरकी कूँडी । खरल, चमड़ेकी सुराही, छोटी तलाई, पोखरा, कुंड, जलाशय, गमला, फुलवारी बोने के मिट्टी के पात्र ।

કુંભાર (सं.) कुम्हार, मिट्टी के पात्र बनाने वाला ।

કુંભુ (सं.) भूमि का नापजो लगभग १ एकड़ होताहै ।

કુંવર (सं.) लड़का, बालक, राजपुत्र, राजकुमार ।

કુંવરી (सं.) लड़की, बालिका, राजपुत्री, राजसुता ।

કુંવાર (सं.) घीकुवारका पेड़ ।

કુંવારૂ (सं.) बेब्याहा, अविवाहित ।

કુ (सं.) जिस शब्द के आगे लगादियाजाय उसका अर्थ विपरीत या बुराहोजाता है ।

કુઈ (सं.) छोटाकुवा, कुइया,

કુકડી (सं.) मुर्गी ।

કુકડેકુક (सं.) मुर्गे की आवाज़, मुर्ग़े की बाँग । [शिखा ।

કુકડો (सं.) मुर्ग़; मुर्ग़ा, अरुण-

કુકર્મ (सं.) बुरेकाम, निंद्यकार्य; नीचकर्म । [अन्यायी ।

કુકર્મી (सं.) दुष्ट, बुरा, नीच,

કુકવો (क्रि.) मृतक के साथ रोते हुएजाना, मृतककोलियेरोना ।

કુખ (सं.) पसली के नीचे का भाग, कोख, कुक्ष, कोक ।

કુચ (सं.) छाती, स्तन, थप्पड़, कूद, प्रस्थान, पयान, कूच ।

કુચ કરવી (क्रि.) प्रस्थान करना, गमन करना । [कूची, ब्रश ।

કુચડો (सं.) घड़ा, मटकी, सुराही,

કુચાલ (सं.) कुरीति, बुराचलन, बुरा व्यवहार, कुटेव ।

કુચેષ્ટા (सं.) बुरी इच्छा, बुरे इरादे, चालाकी ।

કુચો (सं.) ब्रश, बुरुश, इनकार, तलछट, गाद, मैल ।

કુછ (क्रि. वि.) थोड़ा, कम, कुछ ।

કુછંદ (सं.) वशीभूत, दोष, बांक,

કુંજો (सं.) सुराई, मिट्टीकी बनी हुई झारी । [कुंज ।

કુંજ (सं.) गुफा, मँडवा, मंडप,

કુંજર (सं.) हाथी, हस्ती, -नी (सं.) हथिनी, हस्तिनी ।

કુટ (सं.) पेच, लपेट, उलझाव, (क्रि.) तोड़ना,

કુટણી (सं.) बुरी, नीच, लड़ाका, झगडालू, कुटनी, दूती, नायका ।

કુટણું (सं.) अधिक रंज के कारण छाती कूटना । [कुटना ।

કુટણું (सं.) भड़वा, भड़वा

કુટુમ્બ–ટંબ (सं.) कुनवा, गृहस्थ, स्त्री, परिवार ।

કુટવું (क्रि.) छाती पीटना, मारना, कूटना, पीटना, भारी चीज से कूटना चूर चूर करना ।

કુટી નાંખવું (क्रि.) पीसना, बुकनी करना, धमाधम्म कूटना, पीटकर दाने को भूसे से अलग करना, धुनना । [हठीला ।

કુટિલ (सं.) झुका, टेढ़ा, जिद्दी,

કુટી (सं.) झोंपड़ी, मढी, छोटा घर, पर्णशाला, मढैया ।

કુટુંબ કલહ (वि.) गृह कलह, आपसी झगड़े, घरू फूट ।

કુટુંબ પરિવાર (सं.) स्त्री पुत्र, बालबच्चे ।

કુટુંબી (सं.) रिश्तेदार सम्बंधी, घरवारी, आत्मीयजन, घरके लोग ।

કુડતું (सं.) कुड़ता, कुरता,

કુંડ (सं.) गडहा, कूप, जलाशय, यज्ञ कुंड, हवन कुंड ।

કુંડળ (सं.) कर्ण भूषण विशेष, बाला, बाली ।

કુતકું (सं.) सोटा, लाठी, डण्डा, गदा, [छत्रक,

કુતરાની ટોપી (सं.) कुकरमुत्ता.

કુતરી (सं.) कुतिया, कूकरी, कुत्ती,

रो, (सं.) कुत्ता, कूकर श्वान ।

કુતૂહલ (सं.) अद्भुत, अपूर्व, कौतुक, खेल, तमाशा ।

કુત્સિત (वि.) निन्दित, मलीन, नीच

કુથલો–લી–થો–લી (सं.) पेचदार विषय, गहन विषय, व्यर्थका किस्सा ।

કુદકારો–કો (सं.) उछल, कूद ।

કુદરત (सं.) प्रकृति, प्रकृति का सौन्दर्य, स्वभाव, शक्ति ।

કુદરતી (सं.) स्वाभाविक, प्राकृतिक, असली । [फाँदना ।

કુદવું (क्रि.) उछलना, कूदना,

કુદી પડવું (क्रि.) कूद पड़ना,

કુંદન (सं.) शुद्धस्वर्ण, असली सोना, खरा सोना ।

કુંદી (सं.) वस्त्रोंपर कलफ़ या इस्तरी करने का कार्य ।

કુંદીપાક (सं.) पिटाई, कुटाई,

કુંદો (सं.) बन्दूक का कुंदा, लाठी सोंटा, डण्डा । [दुराचरण ।

કુપથ (सं.) बुरामार्ग, कुपथ,

કુપથ્ય (सं.) अपथ्य, अनुचित भोजन । [अपात्र ।
કુપાત્ર (वि.) अयोग्य, अनुपयुक्त,
કુપ્પો (सं.) चमड़े का कुप्पा ।
કુબજા (सं.) बदसूरत स्त्री डाइन, जादूगरनी ।
કુબડું (सं.) जिसकी पीठपर कूबड़ हो, बदशक्ल, कुरूप । [मति भ्रम ।
કુબુદ્ધિ (सं.) दुर्बुद्धि, गलत खयाल,
કુબેર (सं.) देवताओंको कोषाध्यक्ष, [राहुवा ।
કુબો (सं.) चूना, कलई, (विश
કુંભ (सं.) कुंभराशि, पानी का घड़ा, मटकी, घट ।
કુભાંડ (सं.) पेचीदा तदबीर, बलदार हिकमत, दुरपवाद, मिथ्या-कलङ्क, सन्देह ।
કુભારજા (सं.) कर्कशा, दुष्टा, नीच औरत ।
કુમક (सं.) सहायता, मदद, योग।
કુમતિ (सं.) दुर्मति, दुर्बुद्धि, अल्पबुद्धि । [करुणा, दया
કુમળાસ (सं.) कोमलता, नाजुकी,
કુમળું (सं.) कोमल, सुकुमार, नाजुक । [राजपुत्र ।
કુમાર (सं.) लड़का, छोकरा,
કુમારિકા (सं.) लड़की, कन्या, अविवाहिता । [रास्ता ।
કુમાર્ગ (सं.) कुपथ, पापमय
કુમાસ (सं.) बनावट, सौन्दर्य्य, उत्कृष्टता । [का, सर्वोत्कृष्ट ।
કુમાસદાર (सं.) अच्छी बनावट
કુમુદ (सं.) सफेद कमल, कुमोदिनी, कोई ।
કુંભકર્ણ (सं.) रावण का बड़ा भाई राक्षस, खूब सोने वाला, निंदासा, आलसी ।
કુંભી (सं.) मीनारे की नेव, खंभे की जड़, स्तंभ मूळ ।
કુરકુરિયું (सं.) पिल्ला, भेडियें का बचा, कुतिया का बच्चा ।
કુરંગ (सं.) हरिण, मृग,
કુરબાન (सं.) वलिदान, भेट, होम, यज्ञ (वि.) अतिप्रसन्न ।
કુરાન (सं.) मुसलमानों की धर्म पुस्तक, कुरान ।
કુલ (सं.) मुवाक्किल, यजमान (वि.) सब, सम्पूर्ण टोटल ।
કુલક્ષણુ (सं.) बदचलनी, कुचाल
કુલટા (सं.) छिनाल, व्यभिचारिणी, रंडी, कसबी, वेश्या ।
કુલડી (सं.) एक मिट्टी का पात्र, कुल्हैया, कुलदा, सारा, पुरवा ।

કુલીન (सं.) माननीय, सभ्य, भला, कुलवान, अच्छे घराने का

કુલીનતા-પણુ (सं.) सभ्यता, भलमंसाहत, श्रेष्ठता ।

કુલીન પુરૂષ (सं.) भला आदमी, सज्जन पुरुष, कुलीन व्यक्ति ।

કુલું (सं.) चूतड़, ढोंगे, कूल्हा,

કુલ્લી (सं.) चमड़े का बर्तन ।

કુવાડી (सं.) कुल्हाडी, बसूला ।

કુવાદ (सं.) दोष, बुराई अपवाद,

કુવાથ (सं.) काढ़ा, क्वाथ,

કુવેતર (सं.) सींची हुई भूमि, कुए से सींचीजानेवाली जमीन ।

કુવો (सं.) कूप, कुआ ।

કુંવારી (सं.) कन्या, अविवाहिता, बे व्याही । [व्याहा ।

કુંવારો (सं.) अविवाहित, बे

કુવાસના (सं.) दुर्गन्ध, बदबू, दोष, कलङ्क । [पवित्र घास ।

કુશ (सं.) दर्भ, डाभ, कुशनाम्नी

કુશળ (सं.) कल्याण, मंगल, भलाई, पुण्य, योग्य लायक ।

કુશળતા-ળી (सं.) कुशळ, क्षेम, कल्याण, निपुणता, योग्यता ।

કુશળ બુદ્ધિ-કુશાગ્રબુદ્ધિ (सं.) तेजी, शीघ्र समझने की बुद्धि, तीव्र बुद्धि, बुद्धिमान, अक्लमंद ।

કુશકી (सं.) चाँवलोंकी भूसी, चोकर भूसी, चावलों का छिलका ।

કુશાગ્ર (सं.) पैना, नुकीला, नोकदार,

કુશાદ (सं.) चौड़ा, विस्तीर्ण, लंबा चौडा, कुशादा, ऊँचा, घमंडी,

કુશીલ (सं.) बदमिजाज, बुरी प्रकृति का ।

કુષ્ટરોગ (सं.) कोढ की बीमारी

કુસંગ-તિ,-ત (सं.) बुरी संगति, बद सोहबत, दुर्जन सहवास, बुरासाथ । [युद्ध, व्यायाम,

કુસ્તી-બાજી (सं.) कुश्ती, मल्ल-

કુસ્તીબાજ (सं.) पहलवान, मल्ल ।

કુસંપ (सं.) असम्मत, अयोग्य ।

કુસ્વપ્ન-પ્નું (सं.) बुरा सपना,

કુસ્વભાવ (सं.) बुरी आदत, दुष्ट प्रकृति ।

કુસુમ (सं.) पुष्प, फूल,

કુહાડી-ડો (सं.) कुल्हाडा, परसा,

કુળ (सं.) वंश, कुल, खान्दान, पीढी, गोत्र, वर्ण, जाति ।

કુળકરણી (सं.) गांवका मुनीम, वह जो लेखा खूब समझता हो ।

કુળતારક-દીપક (सं.) सुपुत्र, वंशमें दीपक के तुल्य, नरश्रेष्ठ,

કુળદેવી (सं.) कुलमें पूजी जाने वाली देवी ।

કુળભૂષણ (सं.) वंशरत्न, कुलमें भूषण के समान, कुलरत्न, कुलश्रेष्ठ ।

કુળવંત-વાન (सं.) कुलीन, खान्दानी, श्रेष्ठ कुलोत्पन्न । [रीति ।

કુળાચાર (सं.) वंश रीति, कुल

કુળાભિમાન (सं.) आत्माभिमान, वंश गर्व । [सभ्य, खान्दानी ।

કુલીન (वि.) उच्च वंशोद्भव, भला,

કુક્ષ (सं.) कोख, पेट,

કૂચા-ચો (सं.) ब्रुश, बुरश, कूची ।

કૂચ (सं.) प्रस्थान, पयान, प्याला, कटोरा, गुप्त, पोशीदा ।

કૂડું (सं.) दुष्ट, बुरा, नीच, बदमाश, झूठा, अविश्वासी ।

કૂર (सं.) उबले हुए चावल, भात । ['किया हुवा' होता है ।

કૃત (सं.) प्रत्यय, जिसका अर्थ

કૃતઘ્ન-ઘ્ની (वि.) उपकार न माननेवाला, अधन्यवादी, किये हुए काम का एहसान न माननेवाला ।

કૃતજ્ઞ-જ્ઞી (सं.) उपकार माननेवाला, एहसानमन्द, शुक्र गुज़ार ।

કૃતયુગ (सं.) सतयुग, प्रथम युग, देवयुग । स्वर्ण समय ।

કૃતાંત (सं.) मृत्यु, मौत, यम, यमदूत, काल । [हाल, सिद्ध मनोरथ ।

કૃતાર્થ-ર્થી (वि.) कृतकार्य, नि

કૃતિ (सं.) काम, काज, कार्य,कर्म ।

કૃત્ય (सं.) कर्तव्य, डयूटी, फर्ज़ ।

કૃત્રિમ (सं.) बनावटी, नकली, झूठा, मुतवन्ना ।

કૃત્રિમી (सं.) पूर्ववत्

કૃદંત (सं.) वह शब्द जो गुणवाचक और क्रिया के लक्षण रखता हो ।

કૃપણ (सं.) कंजूस, मक्खीचूस, सूम । [अनुकम्पा ।

કૃપા (सं.) दया, मिहरबानी,

કૃપાનાથ-નીધી-ધાન (सं) दयालु, दयासागर, ईश्वर, परमात्मा ।

કૃપાળ-ળુ (सं.) दयालु, मिहरबान ।

કૃમિ (सं.) कीड़ा, कीट, आँतके कीडे पेट के कृमि ।

કૃમિનાશક (सं.) कीड़ों को नाश करनेवाला, कीट नाशक ।

કૃશ (सं.) दुबला, पतला, कमजोर, दुर्बल ।

કૃશાન (सं.) आग, अग्नि, पावक ।

કૃષિ (सं.) खेती, काश्त, किसानी ।

કૃષ્ણ (सं.) श्रीकृष्णचन्द्र, देवकी के लड़के (वि.) काला, श्याम ।

કૃષ્ણપક્ષ (सं.) काला पखवाड़ा, अँधेरा पखवाड़ा, बिदी, अंधेरा अर्ध मास ।

કૃષ્ણાર્પણ (सं.) निष्काम कर्म, भेट, त्यागपूर्वक भेंट करना, हरि अर्पण ।

કેંસ (सं.) गांठ, बन्धन, बटन बोताम ।

કે (अ.) वह, या, ऐसे, जैसे ।

કેયામત (सं.) न्याय का दिन, अंतिम दिन, वह दिन जिस दिन मुसलमानों का न्याय ईश्वर करेगा।

કેઈ (सर्व.) कौन ? क्या ?

કેટલાંએક-ક (वि.) कई, बहुत से, बहुतेरे, चन्द, कुछ, थोड़े ।

કેટલું (क्रि. वि.) कितना ?

કેટલીવાર (क्रि. वि.) कब, किस समय ? कितनी वेर ?

કેડ (सं.) कटि, कमर,

કેડી (सं.) पगडण्डी ।

કેડે (उप.) पीछे, बाद (क्रि. वि.) इस के बाद, तब, कमरपर ।

કેડે લાગવું-પડવું-લેવી (क्रि.) पीछे पड़ना, पीछे लग जाना, पीछा न छोड़ना ।

કેડે લેવું (क्रि.) उठाना, पाकना, बच्चेको कमर पर लेना, गोदी लेना।

કેડો (सं.) पीछा, सड़क, सिरा,

કેણીગમ-તરફ, મર (क्रि. वि.) किधर, कहाँ, किस ओर, किस दिशामें । [प्रसिद्ध वृक्ष ।

કેતકી (सं.) केतकी नामक

કેતુ (सं.) नवमग्रह, झंडा, ध्वजा, धूमकेतु, पुच्छलतारा ।

કેદ (सं.) रुकाव, बंधन, कैद, बंन्धुआई, कारावंधन ।

કેદ કરવું-કેદમાં રાખવું (क्रि.) वन्दी करना, बंधनमें रखना, जेलमें रखना । [गृह, जेल ।

કેદખાનું (सं.) कारावास, बन्दी

કેદી (सं.) वन्दी, बँधुआ, कैदी ।

કેન્દ્ર (सं.) मर्कज, दरम्यानी, नुकता । मध्य । [लापन ।

કેફ (सं.) नशा, मस्ती, मतवा-

કેફિયત (सं.) ब्यौरा, तपसील, कारण सबब ।

કેફી (सं.) नशेका अथवा मादक वस्तु का व्यसनी, नशेबाज, नशा ।

કેમ (क्रि. वि.) कैसे, किस प्रकार क्यां?

કેમ કરતા-મે કરીને (क्रि. वि.) किसीभी भाँति, कैसेभी, किस भाँति?

કેમકે-જે (अ.) वास्ते, लिये, अतः क्यों कि, कारण कि, इस लिये ।

કેમરે (क्रि. वि.) क्यो ? किस वास्ते ?

કેર (सं,) दबाव, सख्ती, जुल्म, अन्याय, कठोरता, उपद्रव, स्वतंत्र राज्य ।

કેરબો (सं.) एक प्रकारका नाच, गुजराती नाच कहरवा, गुलाब जल रखनेका शुण्डाकार काच का पात्र । [बेर, एक प्रकारका फल ।

કેરાં (सं.) कैर, टैंट, एक प्रकारके खट्टे

કેરી (सं.) आम, आम्र, चूत ।

કેવડું (क्रि. वि.) कितना, कितना, (अधिक) कितना (बड़ा)।

કેવડો (सं.) केवड़ा वृक्ष, (क्रि. वि.) कितना (पुराना) कितना (बड़ा)

કેવળ (वि.) शुद्ध, केवळ, सिर्फ (क्रि वि.) सब, सब प्रकार, ठीक।

કેવળ પ્રયોગી અવ્યય (सं.) (व्याकरण में) अव्यय ।

કેવારે (क्रि. वि.) कब ? किस समय ?

કેવું (वि.) कैसा, किसभाँतिका,

કેશ-સ (सं.) बाल, कच પાશ (सं.) बालों की गांठ।

કેશર-સર (सं.) जाफरानी रंग । केशरिया रंग । जाफरान ।

કેશવાળી (सं.) सिंह या घोड़े की गर्दन के बाल, अयाल ।

કેશાકર્ષણ (सं.) बालों का खिंचाव केशाकर्षण, बालों की खींच,

કેસરિયાં કરવાં (क्रि.) युद्धमेंजी तोड़ परिश्रम करना ।

કેસરી (सं.) शेर, सिंह, केहरि,

કેસુડાં (सं.) पलाश, वृक्षके पुष्प

કેહેણ (सं.) संदेशा, खबर, बुलावा, निमन्त्रण ।

કેહેણી-તી-વત (सं.) कहावत, कहतूत, मसला, निंदा दोष, कलंक, अपयश । [कथन करना ।

કેહેવું (क्रि.) कहना, बोलना,

કેળ (सं.) केले का वृक्ष, रंभा वृक्ष, कदली वृक्ष ।

કેળપડી (सं.) ग्यारहकी संख्या,

કેળવણી (सं.) शिक्षा, इल्म विद्या उपदेश ।

કેળવવું (क्रि.) सिखाना, शिक्षा देना, पालना, तालीम देना ।

કેળું (सं.) केला, रंभा फल, कदली फल ।

કૈંક (वि.) बहुतेक, बहुतेरे, कई,

કૈલાસ (सं.) कैलास पर्वत, शिवजी के रहने का पहाड ।

કૈલાસવાસી (वि.) शिव धाम के रहनेवाले, मृत, मेराहुवा ।

કૈવલ્ય (सं.) मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण, परित्राण, परधाम की प्राप्ति, लय,

કોઈ (वि.) कोऊ, कोई एक,

કોઈકાળે (क्रि. वि.) किसी समय कभी कभी, विरले ।

કોઈતું (सं.) बसूला, कुल्हाडी ।

કોકબાણુ (सं.) काम बाण, मदन शर, कामदेव के तीर ।

કોકમ (सं.) आम की गुठली, अमचूर । [कुछ गरम, गुनगुना ।
કોકરવાયું (वि.) कुनकुना, कुछ
કોકરવું (सं.) कान की बाली ।
કોકશાસ્ત્ર (सं.) रतिशास्त्र, कामशास्त्र वह शास्त्र जिसमें गर्भ विषयक वर्णन हो । प्रेमशास्त्र ।
કોકિલ–લા (सं.) कोयल, पिक
કોગળિયું (सं.) हैजा, विसूचिका।
કોગળો કરવો (क्रि.) कुल्ला करना, गंडूष કોગળો (सं.) कुल्ला, कुल्ली, गण्डूष । [सेज, शय्या ।
કોચ (सं.) पलंग, खाट, पर्यंक,
કોચરૂં–લું (सं.) कठिन छिलका, नरेठी, नरियल का सख्त छिलका ।
કોચવું (क्रि.) वेधना, छेदना, सूराखकरना, गड़ोना, चुभोना ।
કોટ (सं.) गर्दन, गला, शहर पनाह, नगर प्राचीर, कोट, किला, दुर्ग, कोट (वस्त्र) [कोठा ।
કોટડી (सं.) कमरा, कोठरी,
કોટલ (सं.) जादू, टोना, मंत्र टुटका। [पोलिस मजिस्ट्रेट ।
કોટવાલ (सं.) मुन्सरिम, थानेदार,
કોટવાલી (सं.) पुलिस कचहरी, पुलिस स्टेशन, थाना ।
કોટિ–ટી (सं.) करोड़, दस लाख। आलिंगन, गोद । [डोंगी ।
કોટિયું (सं.) डोंगा, छोटीनाव
કોટિયો (सं.) कातने का औजार, ताकू, तकला ।
કોટી કરવી (क्रि.) लिपटाना, आलिंगन करना, छातीसे लगाना ।
કોઠું (वि.) झांसा, धोखा, कपट प्रबन्ध, अधम प्रेम, फंदा, फाँसी, बन्दोवस्त, प्रबंध ।
કોટયાન કોટિ (वि.) करोड संख्यक, कोटि कोटि, करोडों, अगणित । [एक प्रकार का फल।
કોઠ (सं.) एक प्रकार का साँप,
કોઠાર (सं.) खत्ती, बखारी, भण्डार गृह । [व्यापारी ।
કોઠારી (सं.) भण्डारी, अन्न का
કોઠી (सं.) अन्न भरने की मिट्टी की बनी कोठी, आढत, गोदाम, सरकारी आफिसर के रहने का स्थान । निवास स्थान ।
કોઠું (सं.) सूरत, शक्ल, रूप, दिखावट, मुखलक्षण, निरूपण विद्या, इल्मकयाफ़ा । फल ।
કોઠો (सं.) पेट, उदर, जठर, संक्षेप, सारसंग्रह, भोजन, खाना, अंगरखे का ऊपरी भाग ।

કોડ (सं.) लालसा, अभिलाषा, चाह, चिंता, सोच।
કોડિયું (सं.) कमगहिरा मिट्टी का प्याला, कोडी, कुप्पी।
કોડિલું (वि.) उत्सुक, अनुरागी, अभिलाषी, लालायित, इच्छुक।
કોડી (सं.) कौड़ी, सख्त छिलका, निकम्मा, अनुपयोगी, २० नग।
કોઢું (सं.) चौंधा, मोहरा, [चूल्हा।
કોઢ (सं.) कुष्ट रोग, भट्टी, भाड़,
કોણ (सर्व.) कौन? क्या? (सं.) कोना, खूंट, दोरेखाओं का मेळ।
કોણ જાણે (क्रि. वि) क्या जाने! शायद, सम्भवत।
કોણી (सं.) कुहनी
કોતુક (सं.) अ ुत, अजीब, अचंभा, आश्चर्य,
કોતર (सं.) गुफा, कन्दरा, ग़ार मॉद, छिद्र, तळघर।
કોતરણી (सं.) खुदाई, नक़ाशी, खुदाई करने का औज़ार।
કોતરવું (क्रि.) खोदना, काटना, पत्थरपर नक़ाशी करना, बिल खोदना।
કોનલ (वि.) फालतू, अलग्ययी।
કોર્ઇતાર્ઈ (सं.) कमी, घटी, न्यूनता।
કોથમીર (सं.) धनिये का पौधा।
કોથળી (सं.) थैली, एक प्रकार की संख्या, (बोल चाल की भाषा में)
કોથળો (सं.) थैला, बोरा, [कोठी।
કોદરા (सं.) एक प्रकार का अन्न,
કોદાળી (सं.) कुदाली, फावड़ा, खुर्पी।
કોનવત (सं.) ईशान कोण या वायव्य कोण का खड़ा लम्बाकार
કોનાત્મક (वि.) नुकीला, कोणयुक्त,
કોપ (सं.) क्रोध, राग, तामस, रिस, [तल का मिश्रण।
કોપરપરાસ (सं.) ताँबे और पी-
કોપરાપાક (सं.) एक प्रकार की मिठाई जा खोपरे आर शक्कर के योग से बनती है। मार।
કોપરિયું (सं.) कुहनी [खोपरा।
કોપરું (सं.) नारियल की गरी,
કોપરેલ (सं.) खोपरेका तेल, नारियल का तेल।
કોપવું (क्रि.) क्रुद्ध होना, नाराज़ होना, कीमत करना। [कुपित।
કોપાયમાન (वि.) क्रुद्ध, नाराज़,
કોપીન (सं.) लँगोटी।
કોભર (सं.) खड्ड, दर्रा, घाटी, दो पहाड़ो के बीच की जगह।
કોબીજ (सं.) गोभी, करम सा।

કોબો કરવો (क्रि.) चूने का फर्श पीटकर बनाना, फर्श पर चूना कूटना। [कौम।
કોમ (सं.) लोग, वर्ण, जाति,
કોમળ (सं.) मुलायम, नरम, मृदु। [मृदुता, सुकुमारता।
કોમળતા (वि.) नरमी, मुलायमी
કોયડો (सं.) पहेली, बुझौवल, प्रवाल्हिका। [कोकिला, पिक।
કોયલ (सं.) भारतीय कोकिल,
કોયલો (सं.) कोला, बुझाहुवा अंगारा। [प्रान्त भाग। गोट।
કોર (सं.) किनारा, छोर, कगर,
કોરટ (सं.) कोर्ट, न्यायालय, अदालत।
કોરડું-રાડું (वि.) सूखा, सील नमी, तरी, आदि से रहित।
કોરડો (सं.) चाबुक, कोड़ा, शक्ति, अधिकार।
કોરણ (सं.) देखो કોર
કોરણી (सं.) देखो કોતરણી
કોરમું (सं.) धीमी धीमी आग से पकाई, उबली, हुई, दली हुई दाल।
કોરી (सं.) चाँदी का एक छोटा सिक्का जो लगभग चार आने के होता है।
કોરૂ (सं.) कोरा, नया, सूखा, शुद्ध, बे बर्ती वस्तु, सादा, नीरस।
કોરે (क्रि. वि.) एक तरफ अलग (उप.) के पास, समीप, कोने में।
કોરે મુકવું (क्रि.) अलग रखना, एक तरफ डाल देना।
કોરે રાખવું (क्रि.) एक तरफ डाल रखना, एक ओर बिठा रखना।
કોલ (सं.) शब्द, वचन, जहाज़ का बन्दरगाह में प्रवेश, खरळ, वादा, गिरो, जमानत, बन्धक, रहन। [रार, वादा, संधि, मेळ।
કોલ કરાર (सं.) नियमपत्र, इक-
કોલસો (सं.) देखो કોયલો
કોલાહલ (सं.) रौला, कलकल, शोर गुल। [परिश्रम द्वारा पुष्ट।
કોલાટી (सं.) पुष्ट, शारीरिक
કોલું (सं.) गीदड़, लड़ैया, स्यार, लोमड़ी।
કોશો (सं.) कबरापन, भूरापन।
કોવિદ (सं.) पढ़ा लिखा आदमी, विद्वान, पंडित, डाक्टर, हकीम।
કોશ (सं.) खजाना, भंडार, अभिधान, डिक्शनरी, लुगत। म्यान, कली, कलिका, घन, खोदने का औजार, [प्रयत्न।
કોશિશ-શેશ (सं.) यत्न, उद्योग

કોશેટો (सं.) रेशम का कीड़ा, कच्चे रेशम का कोया।

કોષ્ટક (सं.) लेखा या गिन्ती का नक्शा। कोष्टक। ब्रेकेट।

કોસ (सं.) दो मील, कोश, चमड़े का डोल या डोलची, खोदने का लोहे का औजार, खनित्र।

કોસથુ (सं.) पसलियों के नीचे की बाजू, कोल। [करना।

કોસણવું (क्रि.) मिलाना, मिश्रित

કોસંબી (स) लाल, सुर्ख।

કોસબો (सं.) अफीम के पानी में घोलकर शरबत बनाना।

કોસલું (सं.) हल में लगाया जाने वाला लोहे का औजार।

કોસવું (क्रि.) धिक्कारना, कोसना शाप देना, बातोंद्वारा दुखी करते रहना। [डोलची पर महसूल।

કોસવેરો (सं.) पानी की डोल या

કોસિયો (सं.) वह जो डोल या बालटी से पानी खींचता है।

કોસું-સલું (वि.) कुछ कुछ गर्म गुनगुना। [दोषी।

કોહેલું (वि.) सड़ा, गला, कपटी,

કોહોડ (सं.) कोढ़, कुष्ट, दूकान, कारखाना, कलम, लेखनी।

કોહોલું (सं.) गीदड़, स्यार, जम्बुक, लोमड़ी, कोल्हू, गन्ने का रस निकालने का यंत्र।

કોહોવાણ ૮(सं.) सड़ा, गला, कपट

કોહોવું (क्रि.) सड़ना, गलाना,

કોહોળું (सं.) एक प्रकार का काला कद्दू।

કોળાબોલું (वि.) कड़ी जबान बोलनेवाला, कड़ी तुम्बी, लौकी।

કોળું (वि.) उदासी, चिड़चिड़ा रूखा।

કોળ (सं.) घूंस, बड़ा चूहा।

કોળવાઈ (स.) चूहों के पकड़ने का फन्दा।

કોળિયો (सं.) ग्रास, लुकमा, टुकड़ा, छोटा, कौर। [कोरी।

કોળી (सं.) शूद्रों मे एक जाति

કોળીનાળી (सं.) शूद्र, शूद्रों की सब जातिया।

કોળું (सं.) लौकी, तुम्बी, कद्दू

કૌતક-તુક (स.) अद्भुत, विचित्र, कद्दू।

કૌમુદી (स) चाँदनी, चन्द्रप्रभा,

કૌવચ (स.) बिच्छू का पेड़, कौंच वृक्ष, कौंच की फली की खुजली। [बल।

કૌવત (स.) शक्ति, ताकात, आत्मा,

કૌશલ્ય (सं.) कुशल, निपुणता, दक्षता, होशियारी, हुनरमंदी।
કૌશિક (सं.) विश्वामित्र, कुशिक वंशीय। [( ) कोष्टक, ब्रेकेट।
કૌંસ(सं.) अनन्वित वाक्य,उपवाक्य,
કૌસ્તુભ (सं.) समुद्र मथन के वक्त निकली हुई १४ वस्तुओं मे से एक। रत्न,
ક્યામત (सं.) न्याय का दिन, वह दिन जिस दिन मुसलमानों का न्याय ईश्वर करेगा। अंतिम दिन।
ક્યારડો-રો (स) क्यारा, क्यारी।
ક્યારે (क्रि. वि.) कब? किस वक्त।
ક્યાસ (स.) अटकल, अन्दाज़। मोल, मुलाई।
ક્રમ (स.) परिपाटी, रीति, भाँति, अनुक्रम। [,कदम, अतिक्रमण।
ક્રમણ (सं) चलना, आगे बढना
ક્રયવિક્રય (स.) बेच खोच, बेचना और खरीदना। वाणिज्य,
ક્રાંતિ (सं.) बदल, परिवर्तन, आक्रमण, गमन,। [चक्र।
ક્રાંતિવૃત (सं. ग्रहमंडल, राशि-
ક્રિયા (सं.) व्यवहार,काम, कृत्य, उत्सव, रीति। [क्रिया शब्द।
ક્રિયાપદ (सं.) व्याकरण में क्रिया,
ક્રિયાવિશેષણ (सं.) वह शब्द जिस से क्रिया में कुछ विशेषता पाई जावे [मजाक।
ક્રીડા (सं.) खेल, दिलबहलाव,
ક્રૂર (सं.) सख्त, कठोर, निर्दय बेरहम, भयानक।
ક્રોડ (सं.) कोटि, करोड़।
ક્રોધ (सं.) गुस्सा, कोप,
ક્રોધાયમાન (वि.) कुपित, क्रोध-युक्त, कोपाविष्ट, [प्रकृतिका।
ક્રોધિષ્ટ-ધી (सं.) गुस्सैल, क्रोधी
ક્લિષ્ટ (सं.) दुखी, क्रोधित, कठिन, थका हुवा।
ક્લીબ (सं.) नपुंसक, हिजड़ा,
ક્લેશ (सं.) दुःख, तकलीफ, झगड़ा बखेड़ा, लड़ाई।
ક્વચિત (क्रि. वि.) कुछ, थोड़ा, कदाचित्।
ક્વાથ (सं.) काढ़ा,

ખ

ખ—गुजराती वर्णमाला का १३ वाँ अक्षर, (सं.) स्वर्ग, आकाश, शून्य। [रोग।
ખઈ (सं.) क्षयी, तपेदिक क्षय-
ખખ (सं.) अत्यंत बूढा, खखड़ा, थका

ખખડેલું (वि.) चिड़चिड़ा, बड़बड़ाने वाला, खड़खड़ने वाला, बकवादी।

ખખડવું (क्रि.) खड़ खड़ना, बकवाद करना [खड़खड़ शब्द।

ખખડાટ (सं.) खड़खड़ाहट,

ખખડાવવું (क्रि.) झड़झड़ाना, खड़खड़ाना, झिड़कना, खनखनाना. बक बक करना. डाटना,

ખખરવખર (क्रि. वि.) सड़ना, और तितर बितर हो, तितर बितर।

ખખરવું (क्रि.) अखरना, दुख होना। [बैठे हुए गले का स्वर।

ખખરી (सं.) कंठावरोध, सूखा स्वर,

ખખરો (सं.) दूसरों के दुख में शोक, समवेदना, पछतावा, प्रायश्चित, तोबा।

ખગ (सं.) पक्षी, स्वर्ग,

ખગપતિ (सं.) गिद्ध, पक्षिराज,

ખગવાહન (सं.) ईश्वर, विष्णु

ખગોળ (सं.) स्वर्ग, तारकायुक्त आकाश, आकाश का गोळा।

ખગોળવિદ્યા (सं.) नक्षत्र विद्या, ज्योतिष।

ખગોળવેત્તા (सं.) आकाश विषयक ज्ञान रखनेवाला, ज्योतिषी।

ખગ્રાસ (सं.) संपूर्ण ग्रहण, पूर्ण ग्रहण।

ખંખાર (सं.) हिनहिनाहट

ખંખારવું (क्रि.) हिनहिनाना मगजी लगाना, गोटलगाना, बाज से शिकार कराना।

ખંખેરવું (क्रि.) कचरा झाड़ना, झुड़कना, धमकाना, डाटना।

ખગ (सं.) ईर्षा, डाह, वैर बदला, अन्याय, विरोध, द्वेष, द्रोह, प्रतिफल,

ખચકાવું (क्रि.) ठहराना, पीछे हटना, सिकुड़ना, झिझकना।

ખચરું (वि.) पुराना, प्राचीन, कूड़ा, करकट, मरियल घोड़ा।

ખચ્ચર (सं.) पशु विशेष, खच्चर, गोखर, बनैला गधा।

ખજવાળ-ખંજવાળ (सं.) चुल बुली, खुजाल, खाज।

ખજાનચી-જી (सं.) कोषाध्यक्ष, धनाध्यक्ष, रोकड़िया।

ખજાનો-જીનો (सं.) धनभंडार, कोष, राज्यधनागार।

ખજુર (सं.) खर्जूर, छुहारा (खजूर वृक्ष) [ताड़वृक्ष।

ખજુરી-રૂ (सं.) छुहारेका वृक्ष,

ખંચાવું (क्रि.) संदेह करना, हिचकिचाना, आगापीछा करना, लज्जित होना और ठहरना।

ખંજન (सं.) पक्षी विशेष, खंजन नामक पक्षी।

ખંજર (सं.) छुरी, कटार, छुरा।
ખંજરી (सं.) डफली, खञ्जरी। चंग। [दुष्ट, (वि.) ६, छः
ખટ (सं.) स्वर, तान, अवारा,
ખટકરમ-ર્મ (सं.) धार्मिक कृत्य पूजा। [छेदना, वेधना।
ખટકવું (क्रि.) खटकना, भड़कना,
ખટકો (सं.) रोक टोक, अटकाव, बाधा, रोक, सन्देह, शक।
ખટખટ (सं.) टिकटिक, शब्द, झगड़ा, विवाद, लड़ाई, व्याकुल, बे मेल।
ખટપટ (सं.) उलझाव, पेच, दुख, कष्ट, तकलीफ, चिंता, कपट, प्रबन्ध, फूट, विरोध, भेद, राजदूत, व्यवहार।
ખટપટિયો (सं.) उद्यमी पुरुष, दौड़ धूपकरनेवाला, मामला समझानेवाला, दखल देनेवाला।
ખટમધુર-રૂં (सं.) खट्टा मीठा, खट मिठ्ठा, [स्वेदज जीव।
ખટમલ (सं.) खटमल, एक
ખટરસ (सं.) छः रस, छः स्वाद, बेमेल [बेमेल, कठनाइयाँ फिक्र।
ખટરાગ (सं.) रागके छःप्रकार।
ખટરિપુ (सं.) कामक्रोध, लोभ मोह मद मत्सर ये छः शत्रु।
ખટલો (सं.) ताँता, श्रेणी, साथ, नौकर चाकर, सवारी, ठाटबाट, कुटुम्ब, विवाद, झगड़ा, पेटी, अभियोग।
ખટશાસ્ત્ર (सं.) हिन्दुओं के प्रसिद्ध छः शास्त्र, । सांख्य, योग वेदान्त, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक।
ખટાઈ (सं.) खट्टा अर्क, खट्टापन, तुर्शी, मिठास,
ખટારો (सं.) लढ़ू गाडी, गाड़ा, पुराने ढंगकी भाड़ागाड़ी। [लाभ पाना।
ખટાવવું (क्रि.) भलाई करना,
ખટાશ (सं.) खट्टापन, तुर्शी,
ખટુમડુ (सं.) विशेषतः खट्टा, खट्टा और मीठा। [मरहम, इलाज,
ખડ (सं.) घास, भूसा, तिनका
ખડક (सं.) चट्टान, थपक।
ખડકવું (क्रि.) प्रबन्ध करना, ठीक करना, लादना, बटोरना, पास पास रखना।
ખડકી-(सं.) परिधि, अहाता, मकान का बराण्डा, गली।
ખડખડ (सं.) झन झन, अंगीठी, रोक, आड़! (वि.) साफ तौरसे।
ખડખડવું (क्रि.) खड़खड़ाना, बकवाद करना, झड़झड़ाना, रगड़ना, घिसना, दिक करना।

ખડખડીઆ (सं.) एक प्रकार की सूखी टिकलियाँ, सूखी चपाती ।

ખડખડિયું (सं.) कोई भी वह वस्तु जो खड़खड़ शब्द करती हो, भाड़ की गाड़ी, नरियल, बिदाई, पदच्युति ।

ખડગ (सं.) तलवार, कृपाण, असि, गेंडा का सींग ।

ખડતલ-ળ (वि.) योग्य, बलवान, मजबूत, दुष्ट, पापी, अधम, खल।

ખડતાલ-પાટુ (सं.) दुलती, लात फटकारना ।

ખડધાન (सं.) पृथक पृथक जातिका अन्न । [शब्द करना ।

ખડપવું (क्रि.) छीलना, अप्रिय

ખડબા (स.) करारा, टीका, ऊंची और ढालुवमन, अप्रिय शब्द करनेवाला । [अपमान ।

ખડબચડું (वि.) खुरदरा, विषम,

ખડબડવું (क्रि.) गड़गड़ाना ।

ખડબડાટ (सं.) शोरगुल, कोलाहल, हुल्लड, रौला, हड़बड़ी,

ખડબાં (सं) तरल पदार्थ की ठड से जमी हुई परत ।

ખડબુચું (सं.) खरबूजा,

ખડભડ (सं.) जोरकी खड़खड़ाहट, झगड़ा, विवाद ।

ખડભડવું (क्रि.) खड़खड़ाना, बड़बड़ाना, बकवाद करना, झगड़ना।

ખડવું (क्रि.) लूटना, नष्ट करना, फँसाना, पेच में डालना, गंदा करना, मूर्च्छित होना, हटाना, जलाहना छिड़कना, लीपना, दोष लगाना ।

ખડા (सं.) पादुका, खड़ाऊँ, खड़ा ऊभा । [अदा, बिल, हुंडी ।

ખડા ઉતાર (वि.) देय, वाजिबुल

ખડાઉ (सं.) सूखी घास का ढेर, घास का गज

ખડાખડ (क्रि. वि.) कडकड़ाहट, के साथ, चचलता से ।

ખાડખુ (स.) अकाल, दुभिक्ष, जगली बैल तेंदुआ, चीता ।

ખડિયા (स) दावान, मसिपात्र,

ખડિયા ખાર (स.) सुहागा ।

ખડી (स.) एक प्रकार की सफेद मिट्टी चाक, खरिया मिट्टी पत्थर

ખડીસાકર (सं) मिश्री, कन्द, रवेदार शकर। [वस्त्र

ખડેધાટ (वि) सफेद किया हुवा

ખડે ચોક (सं.) सरे मैदान, मैदानमें, खुल्लमखुल्ला, सबों के सामने।

ખડો (सं) जूतीका पिछला हिस्सा, जो एड़ी के ऊपर होता है ।

ખણખણાટ (सं.) खनखन का शब्द,

ખણખોળ-દ (सं.) अपराध ढूँढ निकालने का काम, द्वेष,

ખણખોદ કરવી (क्रि.) चुगली करना, दोष ढूँढना।

ખણવું (क्रि.) खोदना, कुरेदना,

ખંડ (सं.) भाग, हिस्सा, टुकडा, विभाग, खाका अंगिया चोली के लिये एक कपड़े का टुकडा, खण्ड, મહાદ્વીપ, अलग, [जुर्माना।

ખંડણી (सं.) कर, भेंट, दण्ड,

ખંડન (सं.) तोड़, नाश, तरदाद, काट।

ખડવું-ડી રાખવું-લેવું (क्रि.) ढेरका ढर सस्ते दामो पर खरीदना, मिलाना, आपस मे मिलकर निपटना, हिस्सेरसी से बांटना।

ખંડાવવું (क्रि.) ખાડવું का कारण बतानवाला।

ખંડિત (वि.) ભાગેલું, टूटा, बिखरा, અપમાન થયેલું, अपमानित, झूठा किया हुवा।

ખંડિયર, ખંડિયેર, ખડેર, (सं.) टूटाफूटा गृह, बरबाद भूमि।

ખંડિઓ (सं.) सहायक, मददगार, आधीन, छोटा। करद।

ખંડી આપવું-વાળવું (क्रि.) माल का ढेर सस्ते भाव बेच डालना, कम कीमतको हिस्से रसी से आपस मे बाँट लेना।

ખત (सं.) तमस्सुक, मुचलका, कर्ज की रसीद, વેચાણખત बिक्री का कार्य ઘરેણાખત गिरवा या रहन रखने का धन्धा, लेख प्रमाण।

ખતપત્ર (सं.) लेख प्रमाण, मुचलका, तमस्सुक, चिठ्ठी पत्री।

ખતમ (स) समाप्ति, अंत, आखिर, पूर्ण, परिणाम।

ખતમ કરવું (स.) समाप्त करना, पूर्ण करना, अंत करना।

ખતરો (सं.) शक, सन्देह, डर, भय,

ખતવણી (स.) रोजनामचे और रोकड से खातावही मे रकम लिखना खातावही मे हिसाब लिखना।

ખતવવું (क्रि.) रोजनामचे मे मे बहीखाते में हिसाब लिखना।

ખતા (स.) भूल, गलती, अपराध, हानि, घाटा, पछतावा।

ખદખદવું (क्रि.) उबलना, धीरे धीरे खौलना, सनसनाना।

ખદડવું-ડેડવું (क्रि.) जल्दी निकाल देना, आगे ढकेलना, थकाना, घबराना।

ખડું (सं.) खड्ड, मोटा,

ખડવું (क्रि.) जल्दी आना, शीघ्र आना । [ग्रह, सूर्य ।

ખદ્યોત (सं.) तितली, जुगनू , तारा,

ખન-ખન (सं.) छिद्र, सावधानी, पूर्वक जाँच ।

ખનીજ (सं.) खानिक, धातु, खान से उत्पन्न वस्तु ।

ખંત (सं.) अरुचि, घृणा, धुन, उद्योग चिंता ।

ખંતીલું (वि.) चिंतित, उद्योगी,

ખંધાઈ-દાઈ (सं.) चालाकी, मक्कारी, छल, पाखण्ड, दुष्टता ।

ખંધું (वि.) हटी, जिद्दी, छली, चालाक, पाखण्डी । [क्षय ।

ખપ (सं.) चाह, पूछ, खर्च, व्यय,

ખપતું (वि) योग्य, उचित, ठीक ।

ખપત (स.) चाह, पूछ,

ખપરેલ (वि.) खपरे नारिया आद मे छाया हुयी मकान की छत, खपरा ।

ખપવું (क्रि.) बिक्री होना, खर्च होना व्यय होना, क्षय होना, चाह होना, खपती होना ।

ખપાટિયું (सं.) बांसकी किमची, बांसकी खपची ।

ખપેડી (सं.) एक प्रकार का कीड़ा जो खेती को हानि करता है, खपरा नामक कीड़ा ।

ખપેડો (सं.) बांसकी खपचियों की बनी चटाई ।

ખપ્પર (सं.) खोपड़ी, पात्र विशेष, साधुओं का पात्र, देवी का प्याला ।

ખપ્પરમાં આવવું (क्रि.) भेट में आना, बलि मे आना ।

ખફા (वि.) कुपित, क्रोधित, नाराज, नाखुश, अप्रसन्न ।

ખફા થવું (क्रि.) नाराज होना, अप्रसन्न होना ।

ખબર (स.) सम्वाद, समाचार, इत्तिला, सन्देश, सूचना, गप्प, अफवाह, फिक्र, ज्ञान, इल्म, ध्यान।

ખબર આપવી-કરવી (क्रि.) खबर देना, सूचित करना ।

ખબર રાખવી (क्रि.) फिकर रखना, चौकसी रखना, ध्यान रखना, क्या होता है इसका खयाल रखना । [चिंता करना, बदला लेना।

ખબર લેવી (क्रि.) ख्याल करना,

ખબર અંતર (सं.) देखो ખબર ।

ખબરદાર (वि.) सावधान, होशियार चतुर, गुणी, समझदार, प्रवीण

ખબરદારી (सं) सावधानी, होशियारी, प्रवीणता, चातुरी ।

ખબુતર (सं.) कबूतर, कपोत, फाखता । [का स्थान ।

ખબુતરખાનું (सं.) कबूतरोंके रहने

ખભળવું (क्रि.) घरघराहट, हिलोरना, हलचल मचाना । [आन्दोलन।

ખભળાટ (सं.) घरघराहट, हलचल

ખભો (सं.) स्कंध, कंधा, काँधा,

ખમણ (सं.) नरियल की खरेटी को खराद पर चढ़ाने का काम ।

ખમણવું (क्रि.) नरियल की खरेटी को खराद पर चढाना । [खरादी ।

ખમણી (सं.) खुरचनेवाला करछा,

ખમતી આસામી–ધર (सं.) वह जो मार और हानि सह सके ।

ખમવું (क्रि.) सहन करना, सहना, भुगतना ।

ખમા (सं.) धैर्य, सब्र, नम्रता, मुआफी. सहन शीलता, क्षमा ।

ખમીર (सं.) खमीर, पाचक शक्ति, रुचि, स्वभाव, रोष ।

ખમીસ (सं.) कमीज़, शर्ट, इंग्रेजी काट छाँट का कुरता ।

ખંભ (सं.) स्तभं, थंभा, टेका ।

ખર (सं.) गर्दभ, गदहा, गधा (वि.) चपटा, पैना, तेज़ ।

ખરખરો કરવો (क्रि.) दूसरों के साथ विलाप करना, दुख में होना।

ખરખરે જવું (क्रि.) दुख में जाना, दुखमें सहानुभूति दिखलाने को जाना । [अदालत का व्यय।

ખરચ (सं.) व्यय, खर्च, खपत,

ખરચવું–કરવો (क्रि.)व्यय करना,

ખરચાઉ–ચાળ–ચાળુ (वि.) खर्चीला, खर्च करने में उदार, अपव्ययी, व्ययी ।

ખરચી (स.) खर्च करने को रुपया, जेब खर्च, (वि.) दैनिक प्रयोग के लिये, साधारण, लुटाव, उड़ाव ।

ખરચીપાણી (सं.) व्यय करने को रुपया पैसा । खरच वर्च ।

ખરજ (सं.) खाज, खुजली, चुळ, एक स्वर, षडज़ । [नीच ।

ખરજવું (सं.) खूनकी बीमारी,

ખરડ (सं.) मरहम, इलाज, घास, कच्चा शीशा, कच्ची मणि ।

ખરડવું (क्रि.) लीपना, चुपड़ना गंदा करना, लूटना, बिगाड़ना । मान हानि करना, फँसाना ।

ખરડાવું (क्रि.) नष्ट होना, दागी होना, कलंकित होना । [मजमून ।

ખરડો (सं.) कच्ची नकल, मसौदा,

ખરતલ (वि.) मजबूत, दृढ,

ખરતું કરવું-મૂકવું (क्रि.) छोड़ देना, त्याग देना, तजना।

ખરતું થવું (क्रि.) विदा होना। गमन करना। [नक्षत्र।

ખરતો તારો (सं.) गिरता हुवा

ખરપવું (क्रि.) खोदन, खुरचना, हटाना, कुदाली से खोदना।

ખરપી (सं.) एक प्रकार की कुदाली, खुर्पी।

ખરપો (सं.) खुर्पा, [असमान।

ખરબચડું (वि) खुरदरा, विषम,

ખરવ (सं.) देखो ખર્વ। [लाना।

ખરવું (क्रि.) गिरजाना, कुम्ह-

ખરસલી (सं.) घास की पत्ती।

ખરસાણી (सं.) एक वनस्पति विशेष, एक प्रकार का पौधा।

ખરાખર (क्रि. वि.) बेशक, दरहकीकत, वस्तुत. सचमुच,

ખરાખરી (सं.) सचाई, सत्यता, गुण दोष परीक्षा सम्बन्धी समय, सूक्ष्म समय, आफत, विपत्ति,

ખરાદ (सं.) खराद, चक्र यंत्र,

ખરાપણું (सं.) सचाई, सत्यता, चोखापन,

ખરાબ (वि.) बुरा, दुष्ट,

ખરાબ કરવું (क्रि.) हानि करना, मलत करना, नष्ट, करना, बर्बाद करना, बिगाड़ना।

ખરાબખસ્ત (सं.) बुरा, बहुत-बुरा, उजड़ा, नष्ट,

ખરાબી (सं.) बुरापन, बरबादी, हानि, घाटा, शामत, आफत।

ખરી (सं.) खुर, ठीक, सत्य, न्याय्य, उचित,

ખરીદ (वि.) क्रय, कीमना,

ખરીદદાર (सं.) क्रेता, क्रयकर्ता, ग्राहक, [खरीदना।

ખરીદવું-કરવું (क्रि.) मोललेना

ખરીદભાવ (स.) असली मूल्य लागतमूल्य, उचितमूल्य।

ખરીદી (स.) खरीद, सौदा,

ખરીફ (सं) वह फसल जा शीतकाल मे काटी जाती है, खरीफ।

ખરૂં (स.) सत्य, ठीक, उचित, मुनासिब, (क्रि. वि.) अच्छा, ठीक, (सं) फौलाद।

ખરૂંખોટું (स.) बुराभला, सच्च झूठा, सत्य असत्यका मिश्रण।

ખરે-ખરેખર, ખરેખરૂં-ખરેખાત (क्रि. वि.) सचमुच, वास्तवमें, हकीकतमें, ठीकठीक।

ખરેટો (सं.) बर्तनपरलेपन, बासन पर पोतना। बर्तनपर खरोंच।

ખરૂં (सं.) गाय अथवा भैंसका बच्चा उत्पन्न होने के बाद प्रथम दुग्ध। चीका।
ખરેડી (सं.) चिरल, गरारी।
ખરેરો-રેરે (सं) खुर्रा, खरारा।
ખર્વ (सं.) १०,००,००,००,०००
ખલ (सं.) खरल, पत्थरकी खरल दुष्ट, नीच, अधम।
ખલક (सं.) संसार, सृष्टि,।
ખલતો (सं.) पानसुपारी, इत्यादि रखनेकी थैली।
ખલાસ (वि.) समाप्त, पूर्ण, ख़त्म, व्यतीत, स्वतंत्र, छोड़ा।
ખલાસી (स.) मल्लाह, खेवट, केवट, समुद्री मनुष्य, जहाजी खपरे फेरनेवाला। [खल]
ખલી (सं) गिलहरी, एकप्रकारका
ખલીફ (सं.) खलीफ़ा।
ખલેચી (सं.) थैली, बोरी।
ખલેલ (सं.) खलल, विघ्न, बाधा, हानि, बखेड़ा।
ખવડાવવું-વાડવું (क्रि.) रिश्वत-देना खिलाना, चराना, उठाना, उस्काना, भोजनमे विषदेना ठूँसदेना।
ખવાસ (सं.) आदत, प्रकृति, स्वभाव, पृष्ट, टहलुवा, सेवक।
ખવીસ (सं.) दुष्टात्मा, दुरात्मा, खाऊ, चटोरा, रुण्ड, बिना सिरका राक्षस।
ખસ (सं.) खाज, खुजली, घोड़ो के लिये एक भाँतिकी घास, खस। [अफीम के बीज।
ખસખસ (सं.) पोस्त के दाने
ખસમ (सं.) स्वामी, पति, कान्त,
ખસર (सं.) सतर, पंक्ति, चोट, जरब।
ખસરત (सं.) स्वभाव, आदत, प्रकृति, मिजाज़।
ખસવું (क्रि.) हिलना सरकना दूरजाना, सरकना।
ખસિયાણું (वि.) लज्जित, व्यथित, व्याकुल, दुखी।
ખસી (सं.) बधिया, आँडू।
ખસીજવું (क्रि.) चलेजाना, सरकजाना, खसकजाना।
ખસુસ-ન (क्रि. वि.) यकीनन, मुख्यतया, खासकर, विशेष करके।
ખસેડવું (क्रि.) हटाना, एक तरफ करना।
ખળ (सं.) नीच, दुष्ट,
ખળકો (सं.) कुत्ती, कुरली एक त्रितयोग। [का बालबाल शब्द।
ખળખળ-ળાટ (सं.) एक प्रकार

ખળખળવું (क्रि.) उबलना, घबराना, प्रकट करना।
ખળભળવું (क्रि.) मनमें घबराना, मामूली बलवे में होना, उबलना।
ખળભળાટ (सं.) घबराहट, हैरानी, हलचल। [राना अटकाना।
ખળાવવું (क्रि.) रोकना, ठह-
ખળાવાડ (सं.) खलिहान, बखारी, खत्ती, खलिहान का सीमा या चौक। [बखारी, कूटने का फर्श।
ખળી-ળું (सं.) खलिहान, खत्ती,
ખાં (सं.) स्वामी, राजकुमार,
ખાંખણુ (सं.) रोग नाशक औषधि रोग हारी जड़ीबूटी।
ખાખત (सं.) ध्यान, घृणा, दोष ढूंढने की प्रकृति, छिद्रान्वेषी।
ખાખાખોળા કરવા (क्रि.) इधर उधर ढूंढना,
ખાગડી-ડો (सं.) चोवे की खाल।
ખાંગુ (सं.) भेदिया, गुप्त, दूत, जासूस।
ખાંચ-ખાંચુ (सं.) पेच, उलझाव, ऊंच, नीच, निर्बल, तुच्छ हिसाब में भूल।
ખાંચ ખુંચવાળું (वि.) ऊँचानीचा पेचीला, उलझनदार, असमान।
ખાંચવું (क्रि.) पीछा, खींचना,
ખાંચા ખુંચી (सं.) गलियाँ, कोने, कूंट।
ખાંચો (सं.) गली, कोना, टेढ़ा, हिस्सा, शक, सन्देह, रोक, अटकाव।
ખાજણ (सं.) भूमि जो किनारे के पास पड़ी हो, नमक की दल दल गोरुओं के चरने का स्थान, चरागाह। [के रहने का घर,
ખાંજરૂ (सं.) वेश्यालय, रंडियों
ખાંડ (सं.) शक्कर, चीनी, चाकू इत्यादि की टूटी धार।
ખાંડણિયું-યો (सं.) लकड़ का पत्थर का मूसल। [ऊखली।
ખાંડણી (सं.) ऊखल, उलूखल
ખાંડવું (क्रि.) तोड़ना, नष्ट करना, बुकनी करना, चूर चूर करना कूटना,
ખાડી (सं.) बीस मण का बज़न, कन्दी।
ખાંડું (सं.) चौड़ी मुड़ी हुई तलवार, खाडा (वि.) टूटा, खिराहुवा।
ખાંત (सं.) उत्सुक, अभिलाषी, ध्यान, उत्सुकता पूर्वक खोज या पीछा। [गर्दन, सहायता, मदद।
ખાંધ (सं.) कंधा, स्कंध, बैल की
ખાંધ દેવી (क्रि.) मृतक पुरुष को लेजाना। सहायता देना, मिलकर काम करना।

ખાંધિયો (सं.) वह जो अर्थी को या मृतक को ले जाता है, खुशामदी, मिलकर काम करनेवालों का सहायक।

ખાંધું (सं.) किस्त ऋण, भाग। सामयिक रुपयों की किस्त।

ખાંપણ (सं.) कमी, दोष, ऐब, धब्बार, दरार, कफन, शव परिधान वस्त्र, मुर्देपर लपेटने की चादर।

ખાંપવું (क्रि.) खुरचना, छीलना।

ખાંભ-ભ (सं.) स्तंभ, थंबा,

ખાંસી (सं.) कास, श्वास खांसी,

ખાઈ (सं.) खात, गर्त, नाला गड्ढा, भोजन, खन्दक।

ખાઉ (सं.) अंतमें लगाया जाता है (प्रत्यय) जिसका पेटू, भकोसू अर्थ होता है। [मरा सर्वभक्षी।

ખાઉધર (सं.) पेटू, खाऊ, भुख-

ખાએશ (सं.) ख्वाहिश, इच्छा, चाह, आवश्यकता, जरूरत।

ખાક-ખ (सं.) भस्म, राख, कोयला, सर्वनाश। [आज्ञाकारी।

ખાકસાર (सं.) नम्र, नीच, छोटा,

ખાખર (सं.) पलाश वृक्ष, एक जंगली पेड़।

ખાખરી-રો (सं.) सिकी हुई रोटी।

ખાખાવીખી (वि.) नष्ट, बरबाद,

ખાખી (सं.) तपस्वी, दीन, गरीब, देहाती, गंवार।

ખાજ (वि.) भोजन, खाना, खाद्य

ખાજાં-જલી-જલું (सं.) पापड़, खाजा।

ખાટ (सं.) चारपाई, खटिया, लटकन, झूलन, पलना, लाभ, मुनाफा, फायदा। [निर्दय पुरुष।

ખાટકી (सं.) बूचड़, कसाई,

ખાટકી વાડો (सं.) बूचड़खाना, वह स्थान जहाँ पशु मारे जाते हैं।

ખાટલો (सं.) खाट, पलंग, पलना।

ખાટલે પડવું-લો ભોગવવો (क्रि.) खाट में पड़जाना, रोगी होना, अस्वस्थ होना। [उठाना।

ખાટવું (क्रि.) लाभ उठाना, फायदा

ખાટુંઅવ્ય-સ (वि.) अत्यंत खट्टा,

ખાટું (सं.) खट्टा, तुर्श, नाखुश, रंजीदा। [पोल।

ખાડ (सं.) गड्ढा, खाई, खोखला,

ખાડી (सं.) खाई, तंग समुद्र, नाळा, कोळ।

ખાડું (सं.) भैसोंका झुण्ड।

ખાડો (सं.) गड्ढा, हानि, टोटा।

ખાણ (सं.) सुरंग, खानि, खान, तल घर, खदान, बैठक, ढोरों के लिये भुना हुवा अन्न।

ખાણુ (सं.) भोजन आहार, दावत,

આતર (सं.) खाद, मांस, मेहमा-नवारी, अतिथि सेवा, पक्षपात, तरफदारी, सेंधलगाना, घर फोड़।
આતર જમા (सं.) विश्वास, तोषण, तसली, रजामन्दी, संतोष भरोसा ।
આતરદારી (सं.) मेहमानी, खातिर, लिहाज़, आदर । [જમા ।
આતરનીશા (सं.) देखो આતર-
આનર પાડનાર (सं.) सेंध लगाने वाला, घर फोड़नेवाला ।
આતરવુ (क्रि.) बुरी रीति से काममें लाना, दुर्वाक्य कहना, नाम पुकारना, खाद देना, खाद डालना ।
આતરી (सं.) देखो આતરજમા
આતામધી (सं.) कर या लगान की राति ।
આના ખાડી (सं.) हिसाब की किताब में शेष रकम ।
આનાવહી (सं.) बही खाता, मारतीय ढग की हिसाब लिखने की किताबे । [भाग, मुहकमा ।
આતુ (सं.) हिसाब, विषय, वि-
આતો પીતો (वि) खा पी कर खुश रहनेवाला, अच्छी दशामें,
આદી (सं.) खद्दर वस्त्र खादी कपड़ा । [रसद, दोष, ऐब ।
આધ (सं.) हानि, टोटा, भोजन,
આન (सं.) स्वामी, मालिक, राजकुमार, खाँन नाम्नी पदवी ।
આનગી (वि.) घरू, गुप्त, छिपा,
આનપાન (सं.) खाना पीना,
આનાખરાબી (सं.) दुर्दशा, बर्बादी, विपत्ति ।
આનુ (सं.) भोजन, आहार, खन, स्थान वाचक प्रत्यय । खुराक ।
આનુ ખરાબથાઓ (वि.) तेरा नाशहो ।
આનેઆબાદ (वि.) तेरा भला हो,
આપ (सं.) शीशा, दर्पण, ऐना ४
આંપણુ (स.) शवपरिधान वस्त्र, कफन, [हीराकसीस]
આપરિયુ (सं.) कलमीशोरा, या
આપવુ (क्रि.) खुरचना खुदेरना ।
આબડુ-આલોચિયુ (सं.) एक कम पोला जमीन में छेद, बिल, आवश्यक, मुख्य, खास ।
આભ (स.) कंधा, स्कंध, स्तम, खंभा ।
આભણુ (सं.) कमगहिराबिल ,
આમી (सं.) कमी, न्यूनता, असम्पूर्णता, नादानी, अज्ञानता, चाह, आवश्यकता, गळती ।
આમુખા (क्रि वि.) यूँही, ठीक ठीक सचमुच, वास्तविक । [धैर्य ।
આમોશ-શી (स.) सब्र, मौन

ખાર (सं.) नमक, क्षार, बैर, लाग, डाह, बैर, कीना ।

ખારેક–રેક (सं.) सूखे छुहारे, छुहारे ।

[नमक की खान ।

ખારપાટ (सं.) नमक का गड्ढा

ખારવો (सं.) मल्लाह, खलासी, समुद्री मनुष्य, થ્યાળો खपरेल छानेवाला ।

ખારિલું (वि.) द्रोही, बुराचाहने वाला, द्वेषी डाह करने वाला कुढनेवाला, देखकर जलने वाला ।

ખારૂં (वि.) नमकीन, खारा,

ખારૂંઉસ (वि.) बेहद खारा, अति नमकीन ।

ખારૂંપાણી (सं.) नमकीनपानी, खारापानी, समुद्रीजल,

ખારો (सं.) कार्बोनेट ऑफ सोडा

ખારોડ (वि.) नमकसे घिरा हुवा,

ખાલ (सं.) चर्म, चमडा, खलिहान, बखारी, खत्ती, गढा, खंदक,

ખાલવવું (क्रि.) खाली करना, रिक्त करना ।

ખાલવું (क्रि.) ठहराना, रोकना ।

ખાલપો (सं.) चमार, खटिक,

ખાલસા (सं.) सरकार से लीहुई नयी भूमि । खालसा भूमि । जमीन का कर न देनेवाली रियासत ।

ખાલી (सं.) ध्वनि का बोध । (वि.) खाली, व्यर्थ, बे पैसा, दीन, (क्रि. वि.) केवळ, एक सिर्फ़ ।

ખાલી પડવું (क्रि.) बे प्रयोग या शून्य पड़ा रहना । खाली, निर्बल होना ।

ખાલીપીલી (क्रि. वि.) अकारण, बेकाम, व्यर्थ, नाहक, निर्मूल, बे सबब, निष्काम ।

ખાલું (सं.) वस्त्र बिनने का एक औजार, ढरकी, नारी, बेत या नरकट का खाली, टुकडा ।

ખાલેસ (सं.) शुद्ध, पवित्र. सीधा सादा, निरपराध ।

ખાવંદ–વિંદ (सं.) पति, खसम स्वामी, मालिक ।

ખાવું (क्रि.) खाना, भक्षण करना निगलना, उड़ा जाना, छिनकना, (सं.) खाने योग्य, मिठाई ।

ખાસ–સત–ગી (सं.) अनोखा विशेष, निजका, अपना, आती, जल युक्त भूमि, तलैया ।

ખાસ ખબર (सं.) खास समाचार, मुख्य समाचार ।

ખાસડાખોરિયો–કુટિયો–કુટી (सं.) जूतियों से पिटने वाला, जूतियाँ खानेवाला, आचरणहीन बदचलन ।

ખાસડું (सं.) जूती, जूता, पन्हैया पदत्राण, निकम्मा मनुष्य ।

ખાસદાર (सं.) टहलुवा, सेवक, चाकर, साईस ।

ખાસિયત (सं.) जाय दाद, आदत, स्वभाव, गुण । [सुन्दर, मनोहर

ખાસું (वि.) उत्तम, श्रेष्ठ, उम्दा

ખાળ (सं.) परनाला, मोरी, पेशाब जाने की नाली ।

ખાળકુંડી (सं.) चह बचा, नाबदान । [औंडानाबदान ।

ખાળકુવો (स.) महिराचह बचा,

ખાળવું (क्रि.) रोकना, ठहराना अवरोध । [टकाव ।

ખાળો (सं.) आड़, रोकटोक, अ-

ખિ ખિ (सं.) कह कहा देकर हँसना, खूब ज़ोर की हँसी ।

ખિચડી (सं.) चावल और दाल का मेल, कुमार, मिश्रित ।

ખિચડો (सं.) गड़बड़ी, गोलमाल, मिश्रण, खिचड़ी,

ખિચો ખિચ (सं.) खूब खींच, खचा खच, पासपास । [खेजड़ा

ખિજડો (सं.) एक प्रकार का वृक्ष

ખિજમત–ઝમત (सं.) सेवा, टहल, चाकरी, दफ्तर, दरबार ।

ખિજમતદાર–ગાર (सं.) सेवक, टहलुवा गुलाम, नौकर ।

ખિજવવું (क्रि.) चिढ़ाना, ठठोली, करना, ताना देना,

ખિજવું (सं.) चिढ़ना, कुढ़ना, खफा होना, नाखुश होना ।

ખિણ (सं.) ढाल, ढालू भूमि, खड्ड, दर्रा, घाटी, दो पहाड़ों क बीच की जगह । [मान, इज्जत ।

ખિતાબ (सं.) पद, पदवी, उपाधि,

ખિન્ન (वि.) खेदित, दुखित, थकित, उदास, मलिन, [निराशा ।

ખિન્નતા (सं.) उदासी, मलिनता,

ખિલત (सं.) मानवस्त्र, मानपूर्वक दिया हुआ जामा या समावस्त्र ।

ખિલ ખાકડી (सं.) चूल और कीला, चक्की में का कीला और माची ।

ખિલવત (सं.) खानगी बातचीत, गुप्तविचार, कोठरी, एकान्तवास, तनहाई ।

ખિલવું (क्रि.) फूलना, खिलना, विकसित होना, गोट लगाना, मगजी लगाना।

ખિલાડી–ખેલાડી (सं.) खेलने वाला, चञ्चल, नट (वि.) गुणी, चतुर, होशियार। [रोक, टोक।

ખિલી ખટકો–ખટ (सं.) आड़

ખિલોણું (सं) खिलौना, हल्का गहना, खेलने की वस्तु।

ખિસકોલી (सं.) गिलहरी।

ખિસમિસ (सं.) एक भाँति की किशमिस, दाख विशेष।

ખીજ (सं.) क्रोध, रीस, गुस्सा कोप, ताव।

ખીટી (सं.) एक छोटी लकड़ी की बनी चटखनी या रोक। खूंटी।

ખીમો (सं.) कतरा हुवा मांस, एक प्रकार की चाँवलों की बनी मिठाई। [से बना पदार्थ, खीर।

ખીર (सं.) दूध शकर; और चावल

ખીરું (सं.) खमीर।

ખીલ (सं.) फोड़ा, फुन्सी कठोर और नरम आँखों का बलगम, गीड़।

ખીલી (सं.) पिन, चटखनी, मेख, कील, एक प्रकार का रोग।

ખીલી ભાંકડી (सं.) देखो ખીલ-ભાંકડી.

ખીલો (सं.) कीला मेख, खूँटा,

ખીસા કાતરૂ (सं.) जेब कट, गिरह कट। [हाथ खर्च।

ખીસા ખર્ચ (सं.) जेब खर्च,

ખીસા ખાલી (सं.) गरीब, दरिद्र निर्धन जिसके पास १ पैसा भी नहो। [हिन हिनाहट।

ખીસું (सं.) जेब, पाकेट खुंखारो

ખુંચવું (क्रि.) बेधना, छेदना, दर्द करना।

ખુંચાવવું. ખુંચાવી લેવું ખુંચી લેવું (क्रि.) झपट लेना, छीन लेना, खींच लेना, पकड़ लेना।

ખુંટી (सं.) कीला, कीला, दीवार में लगाने की खूँटी।

ખુંટિયો (सं.) साँड,

ખુંટો (सं.) मेख, खूँटा, लंगर डालने की फीस, जंगली चक्की को पकड़ कर घुमाने का डंडा।

ખુંટો ઘાલવો (क्रि.) जड़ जमाना,

ખુંદવું (क्रि.) कुचलना, रौंदना, पैर से दबाना।

ખુંપરો (सं.) ठूँठ, काँटा,

ખુજલી–ળી (सं.) खाज, खुजाल।

ખુટકો (सं.) कमी, घटी, न्यूनता,

ખુટવું (क्रि.) व्यय होजाना, खतम होना। न रहना।

ખુટેલ (सं.) दिवालिया, दरिद्र, मुफलिस, छली, कपटी विश्वास-घाती ।

ખુદ્દો (सं.) चाँदी या ताँम्बे का सिक्के, रेजगारी, चिल्लर, चेंज ।

ખુદ્દો કરવો (क्रि.) बेचदेना, बेचडालना । [दोरेखाओंका मेल ।

ખુણો (सं.) कोना, नोंक, सिरा,

ખુદ (सं.) स्वयम्, आप, जाती, निज । [शक्तिमान् ।

ખુદા (सं.) ईश्वर, परमात्मा, सर्व

ખુદાઈ (वि.) स्वर्गीय, पवित्र, दैवी । [स्वादी, ईश्वरभक्त ।

ખુદાપરસ્ત (सं.) आस्तिक, ईश्व-

ખુદાવંદ (सं.) श्रीमान्, स्वामी, सर्वशक्तिमान् ।

ખુન (सं.) रक्त, शोणित, वध, हत्या, रक्तपात, कत्ल ।

ખુન કરવું (क्रि.) वध करना, मारडालना, कतल करना ।

ખુનરેજી (सं.) वध, कतल, संहार, हत्या ।

ખુનસ–ત્રાસ (सं.) काम, कीना, द्वेष, द्रोह, विरोध, वैर, [वधिक ।

ખુની (सं.) कातिल, हत्यारा,

ખુબ (सं.) बहुत, अधिक, उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा ।

ખુબસુરત (सं.) रूपवान, सुन्दर, अच्छी शकलका, चमकदार ।

ખુબસુરતી (सं.) शान, सौन्दर्य सुरूप, सुडौली, सुन्दरता, चमक, उत्तमता ।

ખુબી (सं.) विशेष लक्षण, विशेषता, उत्तमता, गुण, योग्यता,

ખુબીદાર (वि.) उत्तम, सुन्दर, विशेषतायुक्त, शानदार ।

ખુમચો (सं) एक छोटा थाल, परात, फलोंकी डाली ।

ખુમારી (सं.) नशा, मतवाला–पन, मस्ती, अधिक नशेकी ऊँघ, झपकी ।

ખુરચન (सं.) दूध की अथवा रबड़ी या मावे की खुरचन । कोई सूखा या कच्चा फल ।

ખુરબાન (वि.) मोहित, प्रीति केवशीभूत, इच्छुक, (सं) कृपा ।

ખુરશેદ (सं.) सूर्य, रवि ।

ખુરસી (सं.) कुर्सी, चौकी, काष्ठासन । [[लकड़ ।

ખુરસું (सं.) एरण गाड़ने का

ખુલવું (क्रि.) खुलना, प्रकट होना सामने आना, चौड़े आना, फटना, प्रकटहोना ।

ખુલાસો (सं.) अर्थ, टीका, व्याख्या, बयान, अनुवाद, निर्मलता, अभिप्राय, आशय, निर्णय, विचार संक्षेप, सारांश, फैसला, स्पष्ट साफ,

ખુલું-લ્લું (वि.) खुलाहुवा, प्रकट, साफ, स्पष्ट, नग्न, मैदान।

ખુવાર (वि.) दुखित, व्यथित, संकटमय।

ખુવારી (सं.) दुख, संकट, व्यथा नाश, बर्बादी। [प्रमुदित

ખુશ (वि.) प्रसन्न, मुदित, हर्षित

ખુશકી (सं.) पैदल रास्ता, सूखीभूमि। सड़क रास्ता।

ખુશખબર (सं.) सुखद संवाद, श्रेष्ठ सन्देशा, शुभसमाचार।

ખુશનુમા (वि.) सुहावना, रूचिर, मनोहर, दिलपसन्द, सुंदर, खूब सूरत। [आनन्द।

ખુશબખ્તી (सं.) हर्ष, प्रसन्नता,

ખુશબોઈ (सं.) गंध, बास, बू।

ખુશબોદાર (सं.) सुगन्धयुक्त।

ખુશમિજાજી (वि.) आनंदी, हंस-मुख, खुशदिल, खिलाडी, लहरी।

ખુશામત (सं.) चापलूसी, खुशामद, चाटुवाद, लल्लो-पत्तो।

ખુશામતિયો (सं.) चापलूस, खुशामदी। खुतरा। [कृपा

ખુશાળ (सं.) प्रसन्नता, सौभाग्य

ખુશાલી (वि.) प्रसन्नता, और स्वस्थता।

ખુશી (सं.) हर्ष, प्रसन्नता, इच्छा, चाह। [वि.] ठीक, पूर्ण।

ખૂંટ (सं.) भूमि-चिन्ह, (क्रि.

ખૂંધ (सं.) कूबड़, झुकीहुई, पीठ, मुड़ी हुई कमर। [पीठ का।

ખૂંધું (सं.) (वि.) कूबडी

ખૂટ (सं.) कमी, घटी, न्यूनता, तंगी। [कतल।

ખૂન (सं.) रक्त, शोणित, वध,

ખેકડો (सं.) केंकड़ा, कर्क।

ખેંચ (सं.) तकाजा, धुन उद्योग, खींच। [प्रार्थना, विन्ती।

ખેંચતાણ-ચાતાણ (सं.) खींचातानी

ખેંચવું (क्रि.) खींचना, कसना।

ખેંચાખેંચ-ચી (सं.) ऐंचातानी, व्याकुलता, घबराहट।

ખેચર (सं.) पक्षी, देव, आकाशगामी, विद्याधर। [की एक क्रिया।

ખેચરી (सं.) पतंग, योग विद्या

ખેડ (सं.) जुताई, जोत।

ખેડવું (क्रि.) जोतना, हल चलाना खेती करना, दरियाई यात्रा करना।

ખેડાણ (सं.) जोतने योग्य भूमि, जुताई, खेती।
ખેડું (सं.) गँवार, देहाती।
ખેડુત (सं.) कृषक, किसान खेतिहार।
ખેતર (सं.) खेत, क्षेत्र पशुओं के चरने की भूमि।
ખેતરપાળ (सं.) देवता विशेष,
ખેતરવા (वि.) खेत की दूरी, ठीक गाँव की हद पर।
ખેતીવાડી (सं) कृषिकार्य,
ખેદ (सं.) रंज, दुख, अफसोस, पश्चात्ताप, शोक। [शोकयुक्त।
ખેદયુક્ત (सं.) रंजीदा, दुखी,
ખેન (सं.) आड, रोक, अटकाव, बाधा, कठिनता, अमनोज्ञ व्यक्ति।
ખેપ (सं.) भार, बोझ,से यात्रा चक्कर, यात्रा का भाड़ा, समुद्रयात्रा, यात्रा, समयपर सामानकी पहुँच, परिश्रम, यत्न, धोबीको एकदम दिए गये वस्त्र।
ખેપિયો (सं.) वाहक, खबर लेआनेवाला दूत, हरकारा।
ખેપી (वि.) परिश्रमी, सावधान।
ખેમ (सं.) अमन, कुशलक्षेम, आनंद, मंगल।
ખેમખુશાળ-લી (सं.) कुशलमंगल, क्षेमकुशल, सफलता, विजय, आरोग्यता, स्वस्थता।
ખેર (सं.) खैर वृक्ष, खदिर वृक्ष, (क्रि. वि.) कुछ परवा नहीं, खैर।
ખેરખાહ (सं.) शुभ चिंतक, भला चाहनेवाला, सत्य मित्र।
ખેરણ (वि.) बिखरा, छितरा, फैला।
ખેરવવું (क्रि.) सताना, खिझाना, गिरन देना, बहाना, छोड़ना, निकाल देना।
ખેરસલ્લા (सं.) अमन, चैन शांति।
ખેરસાર-૨ (सं.) औषधि, कत्था, खैरवृक्ष से निकला हुवा।
ખેરાત (सं.) दान, भिक्षा, पुण्य।
ખેરાતી (वि.) दाता, पुण्यात्मा, उदार, दान पुण्य के लिये एक ओर रखी वस्तु। [चैन।
ખેરિયત (सं.) अमन, शांति सुख
ખેરી (सं.) पतिंगा, धूळ, कचरा।
ખેરીજ (वि.) फालतू, अधिक, न्यूनतापूरक, (उप.) अलावा, सिवा अतिरिक्त। [क्रीड़ा कौतुक।
ખેલ (सं) क्रीड़ा, कलोल, तमाशा,
ખેલવું (क्रि.) खेलना, क्रीड़ा करना, कलोल करना,
ખેલાડી (वि.) देखो ખિલાડી
ખેસ (सं.) स्कंध वस्त्र, डुपट्टा, रूमाल। [सरेस, माढ़ी, कंई।
ખેહ (सं.) धूळ, मिट्टी ખેળ (सं.)

ખેલા (सं.) रंगीली, सुन्दरी, नट। नटी

ખૈ (सं.) व्यय, क्षय, खर्च, खपत।

ખો (सं.) आदत, स्वभाव, कंदरा, गुफा, मॉद, गड्ढा, छिद्र, चाल,

ખોય (सं.) झूलनी खाट, पालना, झोला, थैली।

ખોખરાટ (स.) कठ का वेठ आना, गले में खरखराहट,

ખોખરૂં (वि.) सूखास्वर, खुरखुरा।

ખોખલી (सं.) गीदड़ी, लोमड़ी,

ખોખલો (सं.) दमा, श्वास, वृद्ध मनुष्य, बूढा।

ખોખું (सं.) एक हिसाब या मजमून प्राप्त करना और रुपये देना, सायर के महसूल का फार्म। लकडी का खोखा, पजर, ठठरी।

ખોગીર (सं.) काठी, ज़ीन, गद्दा, तकिया।

ખોજ (सं.) तलाशी, ढूढ,

ખોજો (सं.) हिजड़ा, नपुंसक, जनाना, [कमी, न्यूनता।

ખોટ (सं.) गलती, भूल, हानि,

ખોટવધ (सं.) हानि लाभ, टोटा नफा। [आलस, ढीलापन।

ખોટાઈ-૨ (वि.) असत्यता, सुस्ती,

ખોટી (सं.) देरी, विलम्ब, टाल मटोल। [बुरीचाल।

ખોટી ચાલ (सं.) बदचलनी,

ખોટું (वि.) झूठा, असत्य, अनुचित, अधर्मी, सुस्त, जाली, बनावटी, कल्पित।

ખોડ (सं.) ऐब, बुरी आदत, दोष, दाग, कलंक, बाँक।

ખોડ કહાડવી (क्रि.) दोष ढूंढ निकालना, परछिद्रान्वेषण।

ખોડખાંપણ (सं.) देखो ખોડ असम्पूर्णता, गलतियाँ,

ખોડ ભુલાવવી (क्रि.) ऐब हटाना, बुरी आदत भुलाना।

ખોડંગખોડા (वि.) लंग, लंगड़ा,

ખોડાવું (क्रि.) लंगड़ाना,

ખોડિમાઈ (सं.) झाडीमें का झुका हुवा भाग।

ખોડું (वि.) कुरूप, ऐबी, लंगड़ा, रेंगनेवाला, दोषी, अधूरा।

ખોડો (सं.) बालों का मैल, सिरके बालोंका घूसा, (वि.) लंगड़ा। [खोदना।

ખોતરવું (क्रि.) खरचना, कुरेदना,

ખોદવું (क्रि.) खोदना, खनना, नक्काशी करना, काटना, बिलखोदना। [बना हुवा गड्ढा।

ખોદાણ (सं.) पानी द्वारा कटकर

ખોદામણી (सं.) खुदवाई की मजदूरी ।

ખોદાવવું (सं.) खुदवाना

ખોપડું (सं.) झोंपडा, कुटी, कुटिया, छप्पर ।

ખોપરી (सं.) सिरकी हड्डी, कपाल।

ખોબલો–ભલો–ખો–બો (सं.) अंजली,

ખોભણ–ભાણ (सं.) गुफा कन्दरा, गार माद, खन्दक ।

ખોરડુ (सं.) झुपड़िया, छोटा मकान ।

ખોરવું (क्रि.) खुजलाना, खुजाना, खिजाना, कुढ़ाना । [हार ।

ખોરાક (सं.) भोजन, भक्ष, अ-

ખોરાકી (सं.) जीविका, रसद, भोजन बज, [र्वाह, जाविका ।

ખોરડી પોશાકી (सं.) रोजी, नि-

ખોરાશ (सं.) गंदापन, दुगन्धि, ખોરૂં दुगन्ध, तेजबू,

ખોલ (सं.) खोलापन, पोलापन, ढक्कन, गुफा, खोह ।

ખોલકી (सं.) गधे का बच्चा ।

ખોલવું (क्रि.) खोलना अनावृत करना, उघाड़ना । [कना, कमरा।

ખોલી (सं.) धातु का बना ढ-

ખોવું (क्रि.) खोदेना, गँवादेना, बरबाद करना, उड़ाना ।

ખોસવું–સી–ઘાલવું (क्रि.) घुसेड़ना, धकेलना, छेदना, भोंकना धकेलना, ठेलना ।

ખોહ (सं) गुफा, कन्दरा ।

ખોળ (सं.) ढूंढ, अन्वेषण, तलाशी, तेल की टिकिया, छादन, ढाकन । [करना ।

ખોળવું (क्रि.) ढूँढना, तलाश

ખોળા ખંખોળ (सं.) अन्वेषण, ढूँढ, ध्यानपूर्वक तलाश । [तिभू ।

ખોળાધર (सं.) जमानतदार, प्र-

ખોળિયુ (सं) तोशक, गद्दा, रजाई, गुदड़ी, खोल, शरीर ।

ખોળો (स.) गोद, अङ्क, [भरना ।

ખોળેલેવુ (क्रि) गोदी लेना, अंक

ખોળો પાથરવુ (क्रि.) मागना, प्रार्थना करना, इच्छा करना ।

ખોળો ભરવું (क्रि.) गोदभरना, प्रथम सन्तान उत्पन्न होने के समय की एक रीति । [प्रसिद्धि,

ખ્યાતિ (सं.) प्रतिष्ठा, यश, कीर्ति

ખ્યાલ (सं.) ध्यान, विचार, खयाल, अनुमान, अटकल, अनुसंधान, पीठा, एक प्रकार का गीत, छंद, पद, हँसी, याना और खेल ।

ખ્યાલી (वि.) उमंग पूर्ण, लहरी, ख्याल बनानेवाला । [आनन्द,

ખ્યાલી (सं.) नृत्य गान, खुशी,

ખ્રિસ્તી (वि.) ईसाई, क्रिश्चियन,

ખ્વાબ (सं.) स्वप्न, सपना, छाया ।

ગ

ગ—गुजराती वर्णमाला का' चौदहवा अक्षर । [कल (भूतकाल)

ગઈ કાલે (क्रि. वि.) गत दिवस

ગઈ ગુજરી (वि.) गत, बीती, खतम, गई बीती ।

ગઈ પરમ દિને (क्रि. वि.) गत परसों, गत दिवस के पहिले का दिन । [रात्रि, बीती हुई रात ।

ગઈ રાતે-તરે-ત્રે (क्रि. वि.) गत

ગઉ (सं.) धेनु, गौ, गाय,

ગઉચર (सं.) गोचर भूमि ।

ગઉદાન (सं.) गायदान, गाय पुण्य कर देना । [गोवध ।

ગઉહત્યા (सं.) गोवध का पाप,

ગગડવુ' (क्रि.) गर्जना, घूमना,

ગગડાટ (सं.) गर्जन, भयंकर गर्जन शब्द । [करना ।

ગગડાવવુ' (क्रि.) जोर की गर्जना

ગગન (सं.) आकाश, आस्मान, स्वर्ग ।

ગગરૂ' (सं.) मोटा मोटा पिसा हुवा, दला हुवा । [पीला पड़ना ।

ગગળવુ' (क्रि.) कमजोर होना,

ગગી (सं.) लड़की, पुत्री, कन्या

ગગો (सं.) लड़का, पुत्र.

ગંગ-ગા (सं.) गंगा नाम्नी नदी, सुरसरि, जाह्नवी ।

ગંગાજળ (सं.) नदी गंगा का, पानी पवित्र जल, निर्मल जल ।

ગંગાજમની (वि.) वह्वस्त्र जिस की गोट अनरंग की हो, दो वस्तुओं का मेल ।

ગચકડુ'-ડિયુ' (सं.) हिलते हुए उठना और नीचे होना । झूलते समय की दशा, डकार । वमन कय, छर्दि, उलटी ।

ગચ (सं.) गारा, चूना

ગચિયુ' (स.) चूने या गारे के साथ बजरी या ईंटें का मिश्रण ।

ગચ્છ (सं.) दर्जा, श्रेणी, क्रिया रीति । गणित का अंक जिसका अर्थ (तरतीब) है ।

ગજ (सं.) हाथी, कुंजर, ३६ इंच का माप, लोहे का ३ फुट का छड़ जो कपड़े मापने को प्रायः काम आता है ।

ગજકરણ (सं.) हाथी के कान । गणेशजी, दाद, दद्रु ।

ગજગામિની-મિની (सं.) हाथी की भाँति चलने वाली स्त्री ।

ગજગ્રહ (सं.) बड़ई खाती, प्रातः काल, पौफटे ।

ગજદંત (सं.) हाथी दांत, हाथी [का दांत, गणेशजी।

ગજબ (सं.) जुल्म, सख्ती, उपद्रव, ज्यादती, अचंभा, शोक, दुर्भाग्य, विपत्ति, आफत ।

ગજરગોટો (सं.) एक प्रकार का फूल ।

ગજરાજ (सं.) बड़ा हाथी,

ગજરું-રો (सं. , फूलों का हार, फूलों का हाथ पर पहिनने का हार।

ગજલ (सं.) गीत, एक फ़ारसी गीत । [गरजना ।

ગજવવું (क्रि.) जोर से बोलना,

ગજવા કાતરૂ (सं.) जेब कट, गिरह कट ।

ગજવું (सं.) जेब, पाकेट ।

ગજવેલ (सं.) फौलाद । [स्थान ।

ગજશાળા (सं.) हाथी बांधने का

ગજાનન (सं.) गणेशजी, गणपति ।

ગજાવવું (क्रि.) हिलाना, गरजना,

ગજિયાણી (सं.) स्त्रियों के पहिनने का एक रेशमी वस्त्र ।

ગજી (सं.) खादी, मोटा वस्त्र, एक प्रकार का सूती या रेशमी मोटा वस्त्र । एक गज चौड़ा कपड़ा

ગજીઆ (सं.) छड़, झूलने के लिये लम्बी जंजीरें । [शक्ति, बल

ગજું (सं.) योग्यता, ताकत,

ગજેંદ્ર (सं.) एक प्रकार का हाथी,

ગંજ (सं.) ढेर, खजाना,

ગંજી (सं.) घास की गंजी। सूखी घास का ढेर ।

ગંજીફો-પો (सं. । गंजीफा खेलने के पत्ते । तास ।

ગટ કરી કરવું (क्रि.) निगल जाना, हड़प कर जाना नष्ट करना,

ગટગટ (क्रि. वि.) गटकने खाने या पीने का शब्द, लगातार, बिना ठहरे । [चाल ।

ગટપટ (सं.) मेलजोल, घरू बोल

ગટર (सं.) मोरी नाली, गटर

ગટરપટર (सं.) घरू बोल चाल, अगड़बगड़, कूड़ाकरकट, पक्षपात, तरफदारी । [मोटा, घना ।

ગઠ્ઠું (वि.) ठिगना, छोटा और

ગઠિયો (सं.) ठग, धोकेबाज ।

ગઢ્ઢો (सं.) ढेर, बड़ी, गोठ, गट्ठा ।

ગડગચ્ચો (सं.) भीड़ ढेर ।

ગડગડાટ (सं.) गरज, खूब जोर की ध्वनि, गर्जन । [घूंसाघूंसी ।
ગડદાગડદી (सं.) भीड़, विपत्ति,
ગડદાપાટું-મુક્કી (सं.) घूंसे, घूँसों की मार, मुष्टिक प्रहार ।

ગડદી (सं.) भीड़,
ગડદો (सं.) घूॅसा, मुष्टिक, प्रहार,
ગડબડ-ડાટ (सं.) घबराहट, जल्दी, हलचळ, गोलमाल, कोलाहल, शोरगुल, हड़बड़ी, ध्वनि, भयानक गर्जन ।

ગડબડગોટો (सं.) गड़बड़, रोग ।
ગડબડવું (क्रि.) बकबक करते हुए घूमना. खड़बड़ करते फिरना
ગડબડિયું (सं.) अनाड़ी, (वि.) चंचल, काममें लगा हुवा, फुर्तीला,
ગડબવું (क्रि.) खूब दबाना, उग्रतापूर्वक पीटना ।

ગડાકુ (सं.) गड़ाखू, गुड़ मिला कर बनाई हुई तम्बाकू ।
ગડી (सं.) पल्लादार, एक साधारण मजदूर ।
ગડો (सं.) बण्डल, पार्सल ।
ગઢ (सं.) पहाड़ी किला, पहाड़ी पर्वत ।
ગઢવી (सं.) कवि, भाट, प्रसंशक ।

ગઢાણ (सं.) गोचर भूमि, पशुओंके चरनेकी भूमि,
ગણ (सं.) भीड़, झुंड, परजाति, दर्जा. श्रेणी, शिवदूत, तीन अक्षरोंका बना शब्द (पिंगळ ग्रंथोंमें कथित आठ गण) संख्या, कृपा, दया, (क्रि.) गिनना, गणना करना । [आज्ञा मानना ।
ગણકારવું (क्रि.) ध्यान देना,
ગણગણતું (वि.) अनिच्छुक, विमुग्व, झनझनाहट, झनक ।
ગણગણવું (क्रि.) भिनभिनाना, नाक के द्वारा गुनगुनाना, विमुख होना ।
ગણતરી (सं.) लेखा, गिनती, गणना, विधि, मूल्य, कीमत ।
ગણગણ (क्रि. वि.) भिनाभिनाहट, गुनगुनाहट । [मान ।
ગણના (सं.) गिनती, कूत, इज्जत
ગણવું (सं.) गिनना, गिनती करना, शुमारी करना, आदर करना, मूल्य करना ।
ગણિકા (सं.) वेश्या, रंडी, वारनारी ।
ગણિત (सं.) गणित विद्या, (क्रि.) गिना हुवा ।
ગણિત પ્રમાણ (सं.) गणित विद्याविषयक, अनुरूप करना (गणितमें) [अनुक्रम या बढाव।
ગણિતશ્રેઢી (सं.) गणितविषयक

ગણોતી (सं.) गणित करनेवाला गणितज्ञ । [अधिष्ठाता देव ।
ગણેશ (सं.) गणपति, बुद्धिके
ગણેશિયો (सं.) मकान फोड़नेका एक औजार विशेष ।
ગણોત (सं.) भँड़ैती, किरायेदार । ठीकेदार । [पट्टा या सरखत ।
ગણોતનામું-પટો (सं.) जमीनका
ગણોતિયો (सं.) असामी, भँड़ैत, ठीकेदार,
ગંઠિયો (सं.) ठग, धोकेबाज, जेब कतरनेवाला, गिरहकट ।
ગંડો (सं.) गलेमें पहिननेका आभूषण, कठला, आठफीट का माप।
ગંડમાળ (सं.) कंठमाळ, रोग विशेष,
ગંડવો (सं.) पागल, बेअक्ल, बुद्धिहीन, (सं.) कुटना, भडुवा, दलाल । [या मकान ।
ગંડસ્થળ (सं.) हाथी का स्थान
ગંડિયો, ગંડુ-ડુસ, (वि.) मूर्ख, बुद्धिरहित । [की गिंगोरी ।
ગંડેરી (सं.) गन्ने की गनेरी, ईख
ગત (वि.) गया, गुजरा, बीता, (सं.) हालत, दशा, गुण, कला, शक्ति योग्यता, स्वर, माप ।
ગતે ખાતવું (क्रि.) खाते में ले लेना, हिसाब में ले लेना ।
ગતે જવું (क्रि.) मुक्ति पाना, नजात पाना, मोक्ष प्राप्ति ।
ગત થવું (क्रि.) नष्ट होना, मरना, गुजरना । [गमन बारबारकी हरकत।
ગતાગત (वि.) आया गया, आवा-
ગતિ (सं.) दशा, हालत, भावी, होनी, शक्ति, योग्यता, चाल, वेग, भावी दशा ।
ગતિભંગ (सं.) अटक, रोध, रोक, प्रतिरोध, खाली, सूना ।
ગદગદિત (वि.) हकलाता हुवा, सिसकताहुवा । [अधपका ।
ગદગદું (वि.) गधर, अर्द्धपक्व,
ગદડવું (क्रि.) कुचलना, रौंदना ।
ગદભદિયાં (सं.) विपुलधन, विपुल द्रव्य ।
ગદધું-ડેધું (सं.) गन्दा, मैला, गद्दा. गुदड़ी, तोशक रजाई ।
ગદધાઇ (वि.) मैलापन, गदापन ।
ગદા (सं.) सोंटा, लाठी, वज्र, अस्त्रविशेष ।
ગદિયાણો (सं.) तौल वजन लगभग आधातोला ५० ग्रेन, ड्राम, [प्रबन्ध, इबारत
ગદ્ય (सं.) छन्द रहित वाक्य,
ગધેડી (सं.) गधी,
ગધેડો (सं.) गधा, गर्दभ, मूर्ख बेवकूफ, बुद्धिरहित । [करनेवाला
ગધેવાન-દીવાન (सं.) गधाहाँ-

ગધો–ડો (सं.) गदहा, गधा, गर्दभ, रासभ, खर ।

ગનીમત (सं·) सौभाग्य, खुश किस्मत, आशिर्वाद ।

ગનીમ (सं.) शत्रु, दुश्मन, जनताकाशत्रु, अरि ।

ગંદકી (सं.) दुर्गन्ध, कुवास, दुर्गन्धपात्र, मैला, गन्दा ।

ગંદવાડ (सं.) कचरा, दुर्गन्ध, मैल, कूड़ा । [निर्लज्ज ।

ગંદુ (वि. मैला, भ्रष्ट, अपवित्र,

ગંધ (सं.) बास, बू ।

ગંધક (सं) गंन्धक,

ગંધધાણુ (सं.) अति दुर्गन्ध, सख्त बदबू ।

ગંધપુષ્પ (सं.) चन्दन और फूल, चन्दन के बुरादे और फूलों से तयार किया हुआ द्रव्य ।

ગંધરપ (सं.) गंधर्व, गवैया, बजैया, गायक ।

ગંધર્વ (सं.) अच्छा गवैया, देवताओंका गायक ।

ગંધર્વવિવાહ (सं.) प्रेमपरिणय, आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमे कुमार और कुमारी की इच्छा ही अपेक्षित होती है और किसी प्रकारका सार्वजनिक कृत्य नहीं किया जाता ।

ગંધર્વવેદ (सं.) सामवेद का उपवेद जिसमें गानविद्या का वर्णन है ।

ગંધસાર (सं.) चन्दन, संदल, इत्र या सुगन्धित पदार्थोंका सत्व ।

ગંધાતું–ણું (वि.) सड़ा, गला, बदबूदार । बासदार ।

ગંધાવું (कि.) बदबूकरना, असबदबू निकालना, पादना, सड़ाना ।

ગપશપ (सं.) मामूली बातचीत, बातचीत, बकबक, झूठी सच्ची बात ।

ગપાસ (सं.) अशुद्ध सम्वाद, गड़बड़ाहट, बकझक, अफवाह, किम्वदन्ती, उड़ती खबर ।

ગપાગપી (सं.) घूसा घूंसी, (क्रि. वि.) पोशदगीसे, गुप्तता पूर्वक ।

ગપ્પાષ્ટક (सं.) झूठीबात, अफवाह, किम्बदन्ती, बकवाद, टेंटें ।

ગપ્પીદાસ (सं.) गप्पी, समाचार पत्रों या अखबारोंका बेचने वाला, कहानी कहने वाला, बकबक करने वाला । [गलती, अपराध ।

ગફલત (सं.) लापरवाही, भूल,

ગફલત કરવી–ખાવી (सं.) बेपरवाही दिखाना, गलती करना भूलकरना ।

ગફલતી (वि.) बेपरवाह, लापरवाह, बेफिक्र । [दादा ।

ગબડગંડ (सं.) गोला, सीधा,

ગબડવું (क्रि.) पकड़ना, मरोड़ना घुमाना ।

ગબડાવવું (क्रि.) साथ साथ घुमवाना, शीघ्रता करना, पास पास घुमाना । [दौड़ ।

ગબડી-રડી (सं.) कबड्डी, तेज

ગબદુલ (वि.) मोटे डीलडौल का ।

ગબર (सं.) एक पहाड़ का नाम, दृढ़, मजबूत ।

ગબરૂ (वि.) सुन्दर, रूपवान, खूबसूरत, पूर्ण और रसयुक्त ।

ગબાર (सं.) गड्ढा ।

ગબ્બ લઈને (क्रि.) जल्दी से, चतुरता मे ।

ગબ્બર (वि.) धनवान, दाल रोटी से खुश, धनी, धनाढ्य ।

ગભરાટ (सं.) बेचैनी, घबराहट, खौफ, दर्द, दुःख, संकट ।

ગભરાવું (क्रि.) घबरा जाना, चौंक जाना ।

ગભા (सं.) कफ, खखार, बलगम।

ગભાણ (सं.) ढोरों का बाड़ा, पशुओं के चरने की भूमि ।

ગભારો (सं.) मंदिर का वह भीतरी कमरा जिस में मूर्तियाँ रखी होती हैं। निज मंदिर ।

ગમ (सं.) तर्फ, बाजू, ओर, झुकाव, रुख, इच्छा, परवा, पूरा ज्ञान, धैर्य, सब्र, नम्रता, रंज, (उप.) ओर, के पास, समीप को ।

ગમગીન (वि.) चिंतित, चिंतातुर, रंजीदा, शोकयुक्त ।

ગમગીની (सं.) रंज, खेद, शोक ।

ગમભા (सं.) अरुचि, घृणा, अनिच्छा ।

ગમત (सं.) खेल, तमाशा, विनोद, विलास, मनोरंजन ।

ગમત કરવી (क्रि.) खेल अथवा विनोद करना ।

ગમતું (वि.) विलासिता विनोद ।

ગમન (सं.) चलन, चाल, हरकत, कूच, रवानगी । [आवागमन ।

ગમનાગમન (सं.) जाना और आना,

ગમવું (क्रि.) पसन्द करना, स्वीकार करना, मानना, सुख चैन करना । [वीरता, दिलाई ।

ગમા (सं.) शक्ति, बल, यौवन,

ગમાર (सं.) बेहूदा, मूर्ख, शठ गंवार ।

ગમાવવું (क्रि.) खो देना, गँवा देना, बर्बाद कर देना, उड़ा देना, व्यर्थ व्यय करना, लुटाना।

ગમી (सं.) शोक, रंज, (क्रि. वि.) ओर, के पास, को, समीप।

ગમે તે (क्रि. वि.) जैसा चाहा, इच्छित। [प्रकार, कैसे भी।

ગમે તેમ (क्रि. वि.) किसी भी

ગંભીર (वि.) गहन, गहिरा, अथाह, संजीदा, गुप्त, धीर, सभ्र।

ગંભીરતા-રાઈ-પણું (सं.) विचार शीलता, सहन शीलता, धैर्य भारीपन।

ગમ્ય (वि.) शक्य, गमन योग्य, संभाव्य, आने योग्य।

ગયણ (सं.) स्वर्ग, आकाश, आस्मान।

ગયવર (सं.) बड़ा हाथी।

ગયું (क्रि.) गया, गुजरा, (वि.) भूत, गुज़रा।

ગર (सं.) गूढ़ा, बीज, गरी, तत्व, पवित्र विचार, गुप्त विचार, मंत्री। कर्ता की द्योतक प्रत्यय।

ગરક (वि.) डूबा हुवा, ग्रसित, बोरा हुवा, दबा हुवा।

ગરકાવું-થવું (क्रि.) गहिरा, तमतमा जाना, डूबना, दबाना।

ગરગટ (सं) छोटा आदमी, ठिगना।

ગરગડી (सं.) छोटी घरन, छोटी गरारी, गरीं।

ગરઘરણું (सं.) पुनर्विवाह।

ગરચવું (क्रि.) भकोसना, ठूंसना, गले तक भरना, नाक तक भरकर खा लेना।

ગરજ (सं.) आवश्यकता, जरूरत स्वार्थपरता, स्वार्थ परवाह, ध्यान, ख्याल।

ગરજ સારવી (क्रि.) आवश्यकता पूर्ण करना, गरज रफा करना।

ગર્જના (सं.) भयानक ध्वनि, मेघनाद, भयानक गड़गड़ाहट।

ગરજ પડવી (क्रि.) विवश होना, गरज पड़ना या होना।

ગરજવંત (वि.) लाचार, विवश, स्वार्थी, ऐसा व्यक्ति जिसे गरज हो, गरीब।

ગરજવું (क्रि.) गरजना, साँड की तरह डकारना।

ગરજો (सं.) नुकीला हथियार, काँटा, कण्टक।

ગરણી-જ (सं.) जैनतपस्विनी,

ગરણું (सं.) साफी, छन्ना।

ગરથ (सं.) रुपया, धन, आमदनी, द्रव्य।

ગરદ (वि.) मोटा, भीड़, बाधा हुवा, खोया हुवा। पकड़ा हुवा, (स.) धूल।

ગરદન (स.) गळा, कंठ।

ગરદ મારવું (कि.) सिर काटना, नष्ट करना, बरबाद करना।

ગરદી (स.) भीड़,

ગરનાળુ (स) पटी हुई, मोरी, जमीन के अन्दर ही अन्दर नाली।

ગરબી–બો (स.) एक गीत, वह जिसे स्त्रियाँ चक्कर में नाचते समय गाती है।

ગરભ (सं.) हमल, गर्भ,

ગરમ (वि.) गर्म, उष्ण, क्रुद्ध, नाराज, उस्का हुवा, भड़का हुवा,

ગરમનરમ (वि.) न अति उष्ण, न अति ठडा, शीतोष्ण,

ગરમર (स)एक औषधि या जड़ी विशेष, अचार मे डाली जानेवाली एक वस्तु।

ગરમ મસાલો (सं.) गरम मसाला जो शाक तरकारियों में डाला जाता है।

ગરમાગરમ–મી (वि.) अत्यंत गरम,

ગરમાળો (सं.) नासूर, एक प्रकारका व्रण जो मुंह से बन्द होकर दूसरी ओर से बहने लगे।

ગરમી (सं.) गर्मी, ताप, उष्णता, गुस्सा, रोग विशेष उपदंश रोग,

ગરયું (सं.) एक प्रकारका बर्तन,

ગરલ (सं.) सर्प इत्यादिका विष, जहर, हलाहल।

ગરવું (वि) बड़ा, गरूरी अहंकारी, घमण्डी, (कि.) टपकना, झरना, चूना प्रवेश करना।

ગરાડ (स.) खाई, गड्ढा, (वि.) बडा। [लतिया

ગરાડી (वि.) लिप्त, वशीभूत,

ગરાડો (सं.) गड्ढा, खाई,

ગરાસ (सं) निर्वाहके लिये दीहुई भूमि। [राजपूत।

ગરાસિયો (सं.) जमीनवाला

ગારયો (सं.) सिरा, चोटी,

ગરીબ (वि.) दीन, गरीब, निर्धन दरिद्र, सुशील, सभ्य, सीधा, कोमल, नम्र, मृदु।

ગરીબ ગરબા–ગુરબા (सं.) दीन, (इकठ्ठे) भिक्षुक।

ગરીબનવાજ (वि.) दाता, उदार पुण्यात्मा।

ગરીબ પરવર (वि.) दीनबन्धु, दीनरक्षक, अर्जी में लिखाजाने वाला एक मानसूचक शब्द।

ગરીબાઈ, ગરીબી (सं.) दरिद्रता, दीनता, नम्रता, आजिजी नर्मी ।

ગરુડ (सं.) गरुड पक्षी, पक्षिराज, विष्णुवाहन । [विष्णु भगवान ।

ગરુડગામી–ધ્વજ, ઠાકુર (सं.)

ગરૂર (वि.) गर्व, अहंकारी घमण्ड,

ગુરુવાર सं.) गुरुवार, बृहस्पतिवार,

ગરોદર (वि.) गर्भवती, गर्भिणी

ગરોળી (सं.) छिपकली, बिस्तुइया, पल्ली ।

ગર્જના (स.) मेघनाथ, गर्जन,

ગર્દભ–ગર્ધપ (सं) गधा, गदहा, खर ।

ગર્ભ (स.) हमल, गूदा, जरायू ।

ગર્ભદ્વાર (स.) गर्भ का द्वार गर्भस्थान।

ગર્ભનાડી (सं.) नाल, नाभी से लगी हुई एक नस जो बालक के साथ बाहर आती है ।

ગર્ભપાત (सं.) गर्भ नाश, गर्भ क्षय, गर्भश्राव, गर्भ का गिर जाना

ગર્ભધારણ (सं.) सगर्भ, हमल रहना ।

ગર્ભવંતી–વતી (क्रि. वि.) सगर्भाली. पेटवाली औरत ।

ગર્ભવાસ (सं.) गर्भमें निवास, पेट मे वास । [कमर की झिल्ली ।

ગર્ભવેષ્ટન (सं.) जेर, गर्भ के

ગર્ભવેદના (सं.) गर्भ का कष्ट, बच्चा जनने के पूर्व का दर्द, प्रसूति पीड़ा ।

ગર્ભાશય (सं.) स्त्रीके पेट में वह स्थान जहा पर रजोवीर्य के योग से गर्भ ठहर कर बढ़ता रहता है।

ગર્ભશ્રાવ—સ્રાવ (सं.) देखो ગર્ભપાત

ગર્ભાધાન (सं) १६ संस्कारो में प्रथम संस्कार, सन्तानोत्पत्ति के लिये स्त्री समागम, गर्भस्थान ।

ગર્ભશ્રીમંત (वि) (स.) धनी, द्रव्य पात्र ।

ગર્ભસ્થાન (स.) देखो ગર્ભાશય

ગર્ભિત (स) गर्भ युक्त, गर्भवती।

ગર્વ (स.) घमण्ड, दर्प,

ગર્વિષ્ઠ (सं.) पूर्ववत्

ગલ (सं.) मछली पकड़ने का ऑकडा, आकड़ा, बलिया, गडहा, जहरीलापसीना,

ગલકું (सं.) तरकारी विशेष,

ગલગોટા (सं.) गेंदा, गेंदा वृक्ष या उसके पुष्प, हजारा ।

ગલજીભી (सं.) तरकारी विशेष ।

ગલત (वि.) झूठ, असत्य,

ગલપટો (सं.) गुलबन्द, रूमाल, दुपट्टा, गलेका वस्त्र,

ગલભા (सं.) पटाखा, हल्ला, होहल्ला ।

ગલબો (सं.) धावा, चढाई, आ-आक्रमण, कोलाहल, शोर ।

ગલાલ (सं.) गुलाल [भ्रष्ट,

ગલિત (वि.) गिरा, टपका, पतित

ગલી (सं.) कूचा, सकरापथ, दो पहाड़ों के बीच की तंग जगह ।

ગલીકુંચી (स.) तंग और तिरछी आड़ी गली, कूचा, गली कूचा ।

ગલીચ (वि.) मैला, म्लेच्छ, गन्दा

ચી (सं.) कूड़ा, मैल, गन्दगी,

ગલીચો (सं.) गलीचा, ऊन से बना हुवा रुवेंदार और नयना भिराम बिछोना। [करना, हंसाना

ગલીપચી કરવી (क्रि.) गुदगुदी

ગલેફ (सं.) ढकना, खोल, खोली

ગલેબંધ (सं.) गुलूबन्द,

ગલેરી (सं.) छजा, रंगमहल

ગલોફાં-ફું (सं.) गालका भीतरी भाग, गलाफू, [केका धनुष ।

ગલોલ (सं.) गुलेल, कंकरी फेंक-

ગલ્લો (सं.) रुपयों की सन्दूक, खजाना, तिजोरी, सन्दूक, पिटारा।

ગલ્લાંતલ્લાં (सं.) बहाना, टाल मटोल,

ગવડાવું-વવું (क्रि.) गीत गवाना,

ગવન (सं.) एक प्रकार का वस्त्र जिसे स्त्रियां ऊपर से पहिनती हैं।

ગવાવું (क्रि.) बातें कराना, गाना गवाना । [प्रमाण ।

ગવાહી (सं.) साक्षी, साक्षित्व,

ગવાળો (सं.) बण्डल, चमड़े की थैली या सन्दूक, कपड़ों की गढ़-बड़ । कपड़ों का बण्डल

ગવાક્ષ (सं.) हवाआने का छेद, गोल खिड़की,

ગવૈયો (सं.) गायक, गानेवाला,

ગહન (वि.) गहिरा, घना, जिस में प्रवेश न किया जा सके। गुप्त, छुपा।

ગહું (सं.) गेहूं, गोधूम ।

ગહુંલો (वि.) गेहुँवा रंग, भूरा,

ગળગળવું (क्रि.) दयालु हृदय से विनती करना, हाहा करवाना, गिड़गिड़ाना ।

ગળગળિત, ગળગળું (वि.) द्रवित, पिघला, नम्र, आधीन, (सं.) निकल पड़ना, फूट निकलना.

ગળચટું (वि.) चटोरा,

ગળચવો (सं.) गले का सोने का बना जेवर । स्वर्ण आभूषण जो गले में पहिना जाता है।

ગળાચિ (सं.) कंठ, गिरगटी, हलक, वायुद्वार, स्वांस लेने का छेद, गला, नरेटी ।
ગળણી (सं.) चलनी, झरना
ગળતકોઢ (सं.) गलित कुष्ट, एक प्रकार का कोढ़ रोग ।
ગળપણ (सं.) मिठास, मिष्टता, मधुरता,
ગળફો (सं.) कफ, बल गम,
ગળવું (क्रि.) हड़पना, निगलना, पतलाहोना, पिघलना, चूना, टपकना । [जड़ का गूदा ।
ગળસુંડા (सं.) मसूड़ा, दातों की
ગળા કાપુ (वि.) विश्वासघाती, बेईमान, कपटी, गला काटनेवाला ।
ગળી (सं.) उच्चारण, शब्द, नील ।
ગળીજવું (क्रि.) निगल जाना,
ગળીયારો (सं.) नीलगर, नीलसे रंगनेवाला ।
ગળીયેર (सं.) नील से रंगा हुवा,
ગળીયો (सं.) हठी–जिद्दी बैल, गरिया बैल ।
ગળું (सं.) गला, कंठ,
ગળું કાપવું (क्रि.) धोका देना, कपट करना, छलना, ठगना, गला काटना ।
ગળું પકડવું (क्रि.) गले में खर खरी होना या आवाज बैठना ।
ગળું ફાસવું (क्रि.) गला घोटना, फाँसी लटकाना । [पहिनना ।
ગળે ઘાલવું (क्रि.) माथे मढ़ना,
ગળે નાખવું (क्रि.) दबाव डालना, मंजूर करने को मजबूर करना ।
ગળે પડવું (क्रि.) झूठा दोष लगाना, झूठा दावा करना, पांछे पड़ना । [वाला ।
ગળેપડુ (सं.) झूठा दोष लगाने-
ગળેહાથ (सं.) एक प्रकार का शपथ, दाढी को हाथ से छूकर सौगन्द खानेवाला ।
ગળ્યું (सं.) मीठा, मिष्ट,
ગાઉ (वि.) बागीचे का कुआ । कोष, कोश
ગાંગડી (सं.) एक छोटा टुकड़ा
ગાંગરવું (क्रि.) झिड़कना, फटकारना, रँभाना ।
ગાંગા (सं.) जबड़ा,
ગાંગાતસ્થાં (सं.) पशोपेश, दुविधा, दुब्धा ।
ગાંગો (सं.) घूमता फिरता तेल बेचनेवाला, चलता फिरता तेली ।
ગાંજવું (क्रि.) धोखा देना जीतना,
ગાંજાખોર (सं.) गांजा पीने वाला ।

ગાંજો (सं.) गांजा, भांग, सन ।
ગાંઠ (सं.) ग्रंथि, गठान, बंधन, संयोग, जोड़, मेल,
ગાંઠવું (वि.) निजी, खानगी थैली का।
ગાંઠડી (सं.) गांठ, बन्डल, पुलन्दा, द्रव्य, जायदाद ।
ગાંઠ બાંધવી (क्रि.) ग्रंथि लगाना, स्मरण करना, द्रोही होना, अंटस रखना ।
ગાંઠ વાળવી (क्रि.) बांधना, अनुकूल होना, याद करना । गांठ लगाना ।
ગાંઠવું (क्रि.) गांठ लगाना, आज्ञा मानना, ध्यान देना ।
ગાંઠિયો તાવ (सं.) गठियाज्वर, ग्रंथिज्वर । [जड़ की गांठ ।
ગાંઠીયો (सं.) एक टुकड़ा, जड़,
ગાંડ (सं.) पेंदा, पिछला, गुदा ।
ગાંડ આંગળી કરવી (क्रि.) चिढ़ाना, खिजाना, दुख देना, पीड़ा देना ।
ગાંડગુલામી (सं.) नीच सेवा, कमीना गुलामी, नीच खुशामद ।
ગાંડ ખસવી (क्रि.) नलोंका हट जाना, नाभि सरकना, दस्त लगना।
ગાંડપર હાથ મુકી સુઇ રહેવું (क्रि.) कुछ परवाह न करना, बेफिक्र होकर रहना । [खुद मतलब ।
ગાંડભરૂ (सं.) स्वार्थी, खुदगर्जी,
ગાંડમાં ભરાવું (क्रि.) खुशामद करना, चापलूसी करना, लल्लो पत्तो करना [मन्दबुद्धि, पागल।
ગાંડા (सं.) मूर्ख, बेवकूफ, शठ,
ગાંડાઈ (सं.) पागल पन, मूर्खता, शठता, बेवकूफी ।
ગાંડિયું (वि.) मूर्ख,
ગાંડી ગુજરાત આગે લાત પીછે બાત=बुरे कुत्ते के लिये मारी बोझ। नष्ट देव की भ्रष्ट पूजा ।
ગાંડીવ (सं.) अर्जुन का प्रसिद्ध गाडीव धनुष ।
ગાંડું (वि.) देखो ગાંડા
ગાંડો (वि.) मूर्ख, विपथगामी,
ગાંદરૂ (सं.) गोचर भूमि, गाँव की वह सीमा जहां मवेशी खड़े होते हैं।
ગાંધર્વ (सं.) देखो ગંધર્વ [विवाह।
ગાંધર્વલગ્ન (सं.) देखो ગધર્વ
ગાંધી (सं.) पंसारी, औषधि विक्रेता, महात्मा मोहनदास· कर्मचंद गांधी ।
ગાંધીવડું (सं.) व्यापारियों का बुलावा, निरर्थक बात करना ।
ગાગર (सं.) गगरा, घड़ा, कलश, घट
ગાજ (सं.) एक प्रकार का काज़ाक

ગાજર (सं.) एक प्रकार की भाजी, गाजर,

ગાજરગોટા (सं.) कूकरमुत्ता,

ગાજરિયું (सं.) एक बड़ा चिन्ह जो मस्तक पर रहता है। "U"

ગાજવીજ (सं.) बिजली की चमक और मेघनाद। [ड़ाना।

ગાજવું (क्रि.) गर्जना, गड़ ग-

ગાજીમરદ (सं.) सैनिक, बहादुर, योद्धा, वीर सिपाही,

ગાઠું (वि.) पराजित, थका हुवा।

ગાડદી (सं.) सिपाही, गार्ड, रक्षक।

ગાડર (सं.) भेड़ भेड़ी [धसान।

ગાડરિયો પ્રવાહ (सं.) भेड़िया

ગાડવું (क्रि.) दफनाना, गाड़ देना, अनुमान करना।

ગાડીવાળો (सं.) गाड़ीवान, गाड़ी हांकनेवाला।

ગાડું (सं.) भारवाही गाड़ी, किराये पर चलने वाली गाड़ी।

ગાઢું (सं.) मोटा

ગાણું (सं.) गायन,

ગાત્ર (सं.) अङ्ग

ગાત્ર ભંગ (सं.) अंग भंग,

ગાથા (सं.) कविता, गीत, गायन

ગાદડું (सं.) गद्दा, गदेला, रुई का गदेला।

ગાદી (सं.) गद्दी, गायन।

ગાદીની દોલત (सं.) राज्य खजाना राज्य कोष।

ગાન (सं.) गायन, गीत

ગાનાર (सं.) गवैय्या, गानेवाला।

ગાફેલ (सं.) गाफ़िल, बेहोश, बे-फिक्र, असावधान। [छेद।

ગાબડી (सं.) छोटाछिद्र, सूराख,

ગાબડી (મુકવી) (सं.) भाग दौड़।

ગાબડું (सं.) छिद्र, हानि, टोटा, छोटा छेद।

ગાભ (सं.) देखो गर्भ

ગાભણી (सं.) देखो गर्भिणी

ગાભરૂં (वि.) घबराया हुवा, व्याकुल। [घबराजाना

ગાભરૂં પડવું (क्रि.) व्याकुल होना

ગાભો (सं.) गूदा, तांबे या पीतळ का सीकचा, कपड़ा जो पगड़ी में काम आता है, निकम्मावस्त्र

ગામ (सं.) ग्राम, गांव, कस्बा,

ગામ ત્યાં ઢેઢવાડો =गुलाब में कांटे, कांटों में फूल।

ગામગરાસ (सं.) जाय दाद गैर मनकूला यानी मकान वा जमीन वगैरह।

ગામ ગોર (सं.) गांव का पुरोहित।

ગામડી (सं.) देसी, स्वदेशी।

ગામડિયો (सं.) ग्रामीण, ग्रामवासी, गांव का रहने वाला, गँवार।
ગામડીયો (वि.) जंगली, गंवारू। बेहूदा।
ગામડું (सं.) छोटा गाँव, पुरवा।
ગામદેવી (सं.) ग्राम देवी।
ગામમાં પેસવાના સાંસા ને પટેલને ઘેર ઉનાપાણી=भीख और पिछोर पिछोर।
ગામોટ (सं.) गांव के पुरोहित
ગામોતર (सं.) गांव के नियम से विरुद्ध।
ગામ્ભીર્ય (सं.) गंभीरता,
ગાય (सं.) गऊ, कोमल, नम्र, सीधा सादा, [निष्पाप, निर्दोष,
ગાય જેવું (वि.) सीधा, कोमल,
ગાયત્રી (सं.) वेदमाता, वेदका पवित्र मंत्र, गुरु मंत्र।
ગાયન (सं.) गान, गाना, गीत,
ગાર (सं.) कीचड़, कीच,
ગાર (सं.) ठंडा, [प्रत्यय
ગાર (सं.) कर्ता बतलानेवाली
ગારદી (स.) सिपाही, सैनिक, पहिरेवाला। [लानेवाला, सपेरा।
ગારૂડી (सं.) बाजीगर, सांप खि-
ગારો (सं.) स्त्रियों के पहिनने का वस्त्र विशेष। गीला गोबर का ढेर। कीचड़, कीच।

ગાલ (सं.) कपोल, गंड स्थल,
ગાંલ (सं.) भोजन करने को बैठे हुए मनुष्यों की पंक्ति।
ગાલી (सं.) गली, कूंचा, कुवचन, गाली गलौज़।
ગાલીચો (सं.) देखो ગલીચો
ગાલ્લી (सं.) देखो ગાડું, ३० मण का तौल। [गाड़ी।
ગાલ્લું (सं.) देखो ગાડું भारकस
ગાવડી (सं.) देखो ગાય, प्यारी गाय।
ગાવડોલ (सं.) सबसे ऊपर का,
ગાવદી (सं.) गवदैल, मैला, गन्दा, मूर्ख।
ગાવું (क्रि.) गाना, चरचा करना,
ગાળ (सं.) गाली, दुर्वाक्य, बाकी, तलछट, मैल। [नाम करना।
ગાળ દેવી (क्रि.) गाली देना, बद-
ગાળવું (क्रि.) गलाना, टपकाना, छानना, व्यय करना: [गलौज़।
ગાળાગાળી (सं.) पारस्परिक गाली
ગળિયું (सं.) कामचोर, काम से जी चुरानेवाला, पशु के गले के लिए छोटा फन्दा।
ગાળી નાંખવું (क्रि.) गला देना, पिघाल देना, बेफायदा खर्च कर डालना

ગાભો (सं.) फन्दा, कमरा, भीतरी, अन्तर, एक प्रकारकी औरतों की पोशाक। साफ रूई।

ગિગળા–લાવું (क्रि.) घबरा जाना।

ગિરચ (वि.) पास, घना, मोटा, भीड़, मिचड़।

ગિચ્ચોગિચ્ચ (क्रि. वि.) दबाकर, ठूंसकर, खूब भीड़, गचापच, खचापच भीड़।

ગિદ્દડ (सं.) सुस्त, काहिल, भारी।

ગિદ્દો (सं.) घूँसा

ગિબત (वि.) दोष, अपवाद, कलंक, निंदा, अपयश।

ગિબત કરવી (क्रि.) निंदा करना, दोष देना, कलंक लगाना।

ગિબતખોર (सं.) निंदक, दोष लगानेवाला,

ગિબવું (क्रि.) घूँसे से मारना, मुट्ठी बांध कर पीटना।

ગિબાગિબ (क्रि. वि.) घूँसों से घमाघम्म पीटना।

ગિરદ (सं.) धूळ, कचरा,

ગિરફતાર (वि.) कैद, बंधक, लीन, निमग्न। [लीनता, निमग्नता।

ગિરફતારી (सं.) पकड़ाधकड़ी,

ગિરવી (वि) गिरो, बन्धक, रहन, गहने।

ગિરવી મુકવું (क्रि.) गिरो रखना, बन्धक रखना, गहने धरना।

ગિરા (सं.) वाणी। [पहाड़ी।

ગિરી (सं.) पर्वत, भूधर, पहाड़,

ગિરિધર (सं.) पहाड़ को धारण करनेवाला, श्रीकृष्णचन्द्र।

ગિરીશ (सं.) शिव, महादेव।

ગિરેબાજ (सं.) एक प्रकारका कबूतर जिसके सिरपर कलगी होती है। [काम।

ગિરોખત (सं.) गिरवी आदि का

ગિલ્લી (सं.) गळी, कूचा, गुद-गुदी, गुळ गुली, गिल्ली (खेलनेकी)

ગિલ્લીદંડા (सं.) लड़कों का एक खेल गिल्ली दण्डा।

ગિલ્લો (सं.) अपवाद पत्र, निंदा, कलंक, गाली, धिक्कार।

ગિલોડાં (सं.) एक प्रकारकी तरकारी।

ગીત (सं.) गान, भजन।

ગીત ગાવું (क्रि.) भजन गाना, गीत गाना।

ગીધ (सं.) गिद्ध, गृद्ध।

ગીરો (वि.) बन्धक, गिरवी, रहन,

ગીરોનુ (सं.) निजी, खुदका,

ગીર્વાણુ (वि.) स्वर्गीय, पवित्र, (सं.) संस्कृत भाषा,

ગુંગણું (सं.) नाकसे बोलना,
ગુંગળાઇ મરવું (क्रि.) गला घोटकर मरना। घबराकर मरना।
ગુંગળાવું (क्रि.) घबराना, सांस रोककर मरना। [गूँगा।
ગુંગું-ગો (सं.) मूक, वाणी रहित,
ગુંચ (सं.) पेच, लपेट, उलझ, झंझट, परेशानी, गोरखधन्धा।
ગુંચવણ (सं.) पेच, लपेटन उलझाव,
ગુંચવણમાં આવી પડવું (क्रि.) झंझट मे पड़ना, उलझनमें पड़ना।
ગુંછળું (सं.) धागों की लच्छी, धागोंका गुच्छा।
ગુંજ (वि.) गुप्त, खानगी, घरू, (सं.) प्रतिध्वनि, प्रति शब्द।
ગુંજા (सं.) रस्सी में घास की ग्रंथि, घूंघची, परिमाण विशेष।
ગુંજાશ (सं.) लियाकत, सामर्थ्य, शक्ति योग्यता पहुँच।
ગુંથવું (क्रि.) गूँथना, बटना, जोड़ना, बिनना।
ગુંથાવું (क्रि.) अधिकार प्राप्त होना, रोक रखना, उलझा रखना, फँसा रखना।
ગુંદર (सं.) गोंद, गाद,
ગુંદરપાક (सं.) गोंद द्वारा तयार किया हुवा भोज्य पदार्थ।
ગુંદવું (क्रि.) पीटना, मारना, गूँधना, माड़ना, ओसनना।
ગુંદું (सं.) फल विशेष।
ગુ (सं.) मल, गोबर, विष्ठा, गू।
ગુઇ (सं.) एक छोटा छेद जो खेलने के काम में आता है, गुच्ची।
ગુગળ (सं.) गुग्गल, सुगन्धित गोंद।
ગુગળી (सं.) ब्राह्मणों की एक जाति, पुजारी, पुरोहित, कृपण, कंजूस।
ગુચપુચ (क्रि. वि.) घुसफुस, कानाफूसी, गुप्त रीति से। (सं.) फुस फुसाहट।
ગુચવાવું (क्रि.) फँसना, उलझना, पकड़ में आ जाना।
ગુચ્છા (सं.) लट, जुल्फें, गल गुच्छा।
ગુચ્છો (सं.) समूह, गुच्छा, गांठ फूल।
ગુજ (वि.) गुप्त, घरू, खानगी (सं.) कील, नाखून।
ગુજરવું (क्रि.) मरना, निकल जाना, बीतना। [जीविका, रोज़ी।
ગુજરાન (सं.) बसर, निर्बाह,
ગુજરાન કરવું (क्रि.) बसर करना, निर्वाह करना, गुज़ारा करना।
ગુજરી (सं.) एक प्रकार की चूड़ी जिसे स्त्रियां पहिनती हैं। बाज़ार, हाट, मेला, पैठ, स्त्री,

ગુજરી જવું (क्रि.) मरजाना, निकलजाना, गुज़रजाना।
ગુજરવું (क्रि.) खर्च होना, नष्ट करना, दिखलाना।
ગુજારો (सं.) देखो ગુજરાન।
ગુટકો (सं.) छोटी किताब, ईश्वर की प्रतिमा का पीतल की डिब्बी में रखा हुवा चित्र।
ગુટિકા (सं.) गोली, बटिका,
ગુડવું (क्रि.) काटना
ગુડી (सं.) चैत्र मास का प्रथम दिन, सीधा खड़ा किया जानेवाला दंड।
ગુડી પડવો (सं.) चैत्र मास का प्रथम दिन।
ગુડો (सं.) मातम शोक प्रदर्शन (मृत्यु समय में) पतली हड्डी गेंद,
ગુણ (सं.) लक्षण, सिफत, तारीफ, खूबी, विशेषता, लाभ, असर, प्रभाव धनुष की डोरी, ज्या, बाजे का तार, रस्सी, नस, टाट।
ગુણક (सं.) गुणा करनेवाला।
ગુણકા (सं.) वेश्या, रण्डी, सहेली
ગુણકાંક (सं.) गुणक,
ગુણકારી (वि.) लाभप्रद, फायदेमन्द।
ગુણ ગુણ (सं.) भिन भिन, नाक में गुन गुन।
ગુણપાટ (सं.) टाट, तप्पड़।
ગુણપાડ (सं.) कृपा, दया, अनुकम्पा।
ગુણવંત-વાન (सं.) गुणी, प्रवीण, निपुण, विद्वान, तेजस्वी प्रसिद्ध।
ગુણવાચક વિશેષણ (सं.) वह विशेषण जो गुण का द्योतक हो (व्याकरण में)
ગુણવું (क्रि.) गुणा करना।
ગુણકાર (सं.) लाभ, फल, गुणाकार जरब। [ज़रब।
ગુણાંક (सं.) गुण न फल, हासिल,
ગુણાઢ્ય (सं.) गुणयुक्त, धार्मिक, और प्रतिष्ठित।
ગુણી (सं.) धर्मात्मा, उपकार माननेवाला गुणी। [घड़ा, मटकी।
ગુણિયો (सं.) नकल करनेवाला,
ગુણ્યાંક (सं.) गुणक, मजरूब।
ગુદસ્ત (वि.) गुजरा हुवा, गया बीता।
ગુદા (सं.) गाँड, गुदा।
ગુનેગાર (वि.) अपराधी, दोषी,
ગુનેગારી (सं.) सजा, दंड जुर्माना।
ગુપચુપ (क्रि. वि.) गुप्त रीति से चुपचाप।
ગુપ્ત (सं.) छुपा, अप्रकट, ढका हुवा, ढका, वैश्य जाति का अल्ल।
ગુપ્તદાન (सं.) अप्रकट, पुण्य, ऐसा दान जो छुपा हुवा हो।

ગુપ્ત ધન (सं.) छुपा हुआ खजाना अप्रकट द्रव्य । [गुप्त बात ।
ગુપ્ત ભેદ (सं.) गुप्तत्व, एकांतता
ગુપ્તી (सं.) अस्त्र विशेष, लकड़ी जिसमें छुपे रूप से तलवार होती है।
ગુફા (सं.) कन्दरा, माँद, खोखली जगह । [लुटाना, गँवाना ।
ગુમ કરવું (क्रि) खोना छुपा देना,
ગુમજ (सं.) गुम्बज़,
ગુમડું (सं.) फोड़ा फुन्सी, छाला गिलटी, सूंजन । [शक सन्देह,
ગુમાન (सं.) गर्व, घमण्ड, दर्प,
ગુમાની (सं.) घमंडी, दर्पयुक्त, अहंकारी ।
ગુમાર (सं.) मूर्ख, जंगली, गँवार।
ગમાવવું (क्रि.) खोना, नष्ट करना, बरबाद करना, गंवाना ।
ગુમાસ્તી (सं.) नौकरी, गुलामी, सेवा । [नौकर, सेवक ।
ગુમાસ્તો (सं.) मुहर्रिर, क्लर्क,
ગુરગુરવું (क्रि.) गुर्राना, घुर घुराना।
ગુરજ (सं.) गदा, लाठी, लुहांगी, लड़ाई का शस्त्र विशेष।
ગુરજી (सं.) छोटा कुत्ता, स्पेनियल डॉग । [गदा । लुहांगी ।
ગુરદો (सं.) गुर्दा, लोह की मैंडी
ગુરવું (क्रि.) गुर्राना, गुड़कना,
ગુરુ (सं.) मंत्र गुरु, शिक्षक, आचार्य, कुल गुरु, पुरोहित, बृहस्पति।
ગુરુ (सं.) लम्बा, बड़ा, दीर्घ, भारी, मान्य ।
ગુરુત્વ (सं.) भारीपन, गंभीरता,
ગુરુત્વ મધ્ય બિંદુ (सं.) आकर्षण शक्ति का मध्य । मध्य रेखा का बिन्दु,
ગુરુત્વાકર્ષણ (सं.) आकर्षण शक्ति का खिंचाव । गुरुत्वाकर्षण ।
ગુરુત્વરેષા (सं.) लक्ष्य की रेखा । मुख्य रेखा ।
ગુરુબંધુ-ભાઇ (सं.) एक गुरु के पास शिक्षा प्राप्त ।
ગુરુવાર (सं.) बृहस्पतिवार,
ગુલ (सं.) फूल, पुष्प, दीपक या प्रकाश का अंत, बुझ [करना ।
ગુલ કરવું (क्रि.) बुझाना,. नष्ट
ગુલકંદ (सं.) गुलाब पुष्प और मिश्री आदि पदार्थों से बना मिष्ट पदार्थ । गुलकन्द ।
ગુલબાર (सं.) लाल, सेंदुरी,
ગુલગોટો (सं.) गेंदाका फूल
ગુલછડી (सं.) पुष्पयुक्त छड़ी ।
ગુલજાર (वि.) खूबसूरत, उम्दा,
ગુલઝાર (सं.) पुष्पवाटिका ।

ગુલતાન (वि.) आनंद, हँसमुख, खुश ।

ગુલદાન (सं.) फूलोंका पात्र,

ગુલબાસ (सं.) गुलबाँसका वृक्ष और पुष्प ।

ગુલર (सं.) औदुम्बर वृक्षके फल, गूलर, कानकी बाली । [बागीचा ।

ગુલસ્તાન (सं.) गुलाब के वृक्षोंका

ગુલાંટ (सं.) गुलाँच, उड़ी,

ગુલાબ (सं.) गुलाबका फूल या पेड़

ગુલાબજળ (सं.) गुलाब के फूलों द्वारा तय्यार किया हुवा सुगन्धित जल ।

ગુલાબદાન–ની (सं.) जिस पात्र में छिड़कने के लिये गुलाबजळ भरा जाता है । [के रंगका ।

ગુલાબી (सं.) सुर्ख, लाल, गुलाब

ગુલાબી ઊંઘ (सं.) प्रातःकालीन निद्रा, अल्प निद्रा ।

ગુલાબી ગાલ (सं) गुलाब पुष्प के रंग के समान गाल, लाल गाल, खूबसूरत गाल, सुन्दर कपोल ।

ગુલાબી ઠંડ (सं.) हलकी सर्दी, कम ठंड । [ज्ञुतिहर ।

ગુલામ (सं.) दास, नौकर, मृत्य,

ગુલામગિરી (सं.) नौकरी, दासता, सेवा ।

ગુલાલ (सं.) गुलाल

ગુલી (सं.) नील, कीड़ों मकोड़ों द्वारा बनाया गया छेद ।

ગુવાર (सं.) एक प्रकारकी भाजी गुवारफळी । (गुस्सा ।

ગુસ્સો (सं.) क्रोध, नाराजी

ગુહા (सं.) कन्दरा, माँद, गार, गुफा, खोखला [अप्रकट ।

ગુહ્ય (वि.) गुप्त, खानगी, छुपा,

ગુહ્યાર્થ (सं.) गुप्त अर्थ, छुपे माने गूढार्थ । [अगम्य ।

ગૂઢ (सं.) गुप्त, कठिन, गहिरा,

ગૃહ (सं.) मकान, निवासस्थान ।

ગૃહ પ્રવેશ કરવો (क्रि.) घर में घुसना।

ગૃહસ્થ (सं.) गृह में रहनेवाला, मकानवाला, भला, सज्जन ।

ગૃહસ્થાઈ (वि.) सभ्यता, सज्जनता नम्रता ।

ગૃહસ્થાશ્રમ (सं.) दूसरा आश्रम, घर में रहकर करने का कर्तव्य कार्य

ગૃહસ્થી (सं.) कुटुम्बी, घर में रहनेवाला । [स्वामिनी ।

ગૃહિણી (सं.) पत्नी, भार्या.

ગેંડી (सं.) गेंडा, गेंडी

ગેધુ (सं.) छोटे बैल [बेंट

ગેડી (सं.) खेलनेकी छड़ी बल्ला,

ગેહળ (सं.) हाथियों का समूह ।

ગેબ (सं.) अदृश्य, अलोप, खोया हुवा, अगोचर

ગેબ થવું (क्रि.) गुप्त होना, अदृश्य होना लोप होना ।

ગેબી (वि.) जो नदिखे, छुपा हुवा, अदृष्ट ।

ગેબીઆવાજ (सं.) आकाश वाणी, अंतरिक्ष ध्वनि ।

ગેબીગોળો (सं.) लोक वाद, बाजारी खबर, गप्प ।

ગેબીમાર (सं.) दैवी मार, अज्ञात विपत्ति । [घेवर ।

ગેબર (सं.) एक प्रकार की मिठाई,

ગેર (सं.) अभाव सूचक प्रत्यय ।

ગેરઆબરૂ (सं.) अपमान, कमइज्जत,

ગેરખુશી (सं.) अवकृपा, नाराजी

ગેરત (सं.) शर्म, लज्जा, लाज, सुशीलता ।

ગેર ફાયદો (सं.) हानि, नुकसान

ગેર બંદોબસ્ત (सं.) अव्यवस्था, गैर इन्तजाम ।

ગેર માહિતી (सं.) अज्ञानता, नावाकिफी, अनुभव शून्य ।

ગેર રસ્તે (क्रि. वि.) अनुचित, नामुनासिब । [अप्रसन्नता ।

ગેર રાજી (वि.) नाखुशी, नाराजी,

ગેર રીતિ (सं.) गलत, अन्याय अनुचित,

ગેર લાયક (सं) अयोग्य, नालायक।

ગેરવલ્લે જાવું (क्रि.) गलत रास्ते पर जाना । धोका दिया जाना ।

ગેરવલ્લે પડવું (क्रि.) गलत रास्ते पर होना ।

ગેરવાજબી–વ્યાજબી (वि.) अनुचित, अन्याय, अन्धेर,

ગેરવો (सं.) गेहूं के खेत की बीमारी । रोली नामक गेहूं का रोग

ગેર શિરસ્તે (क्रि. वि.) अन्यायपूर्वक, अनुचित रीति से, बुरी तरह से ।

ગેરસમજુતી (सं.) गलती, नासमझी, कुछ का कुछ समझना ।

ગેરહાજર (सं.) अनुपस्थित,

ગેરહાજરી (सं.) अनुपस्थिति ।

ગેરૂ (सं.) लाल मिट्टी, गेरू, हिरमिची,

ગેલ (सं.) दुलार प्यार पुचकारी, खेल तमाशा ।

ગેલ કરવાં (क्रि.) प्यार करना, दुलारना, खेलना ।

ગેહ (सं.) मकान, घर, भवन ।

ગેંધાટ (सं.) गौगा, पुकार, हड़बड़ी, गर्जना,

ગોધરો (सं.) गांव की गोचर भूमि
ગોધવું (क्रि.) रोकना, बन्द करना सीमा, लगाना ।
ગોયજો (सं.) नाई, नाविक, खवास
ગો (सं.) गाय, गऊ, धेनु,
ગોકળ ગાય (सं.) घोंघा, काहिल, आलसी मनुष्य ।
ગોખ (सं.) ज्योढ़ी, बारजा ।
ગોખલો (सं.) आला, ताखा, ताक़ा
ગોખરૂ (सं.) गोखरू नामक प्रसिद्ध कंटकयुक्त बूटी, एक प्रकार का कंटीला गोटा या चूड़ी,
ગોખવું (क्रि.) ध्यान में आना, लक्ष्य में आना ।
ગોખો (सं.) पक्षियों का घोंसला,
ગોગ્રાસ (सं.) गो के लिये निकाला हुवा अन्नग्रास ।
ગોચર (सं.) चरागाह, पशुओं के चरने की भूमि ।
ગોચરી (सं.) वह जो थोड़े से घरों से थोड़ासा भोजन मांगता है।
ગોઝારી-ઝારી (सं.) दुष्ट स्त्री, बुरी औरत
ગોઝારૂં-ઝારા (वि.) नष्ट, बरबाद किया हुवा । [लेज्ज ।
ગોઝું (वि.) मैला, गन्दा, नि-
ગોટ (सं.) घूंट, चक्कर, दारधुँआं,
ગોટલી-ળી (सं.) गुठली, बीजा, फल के भीतर का बीज ।
ગોટલો (सं.) मांस का ढेर गुठली,
ગોટાળો (सं.) गड़बड़, घबराहट,
ગોટિલો (सं.) ढरकी, नारी, कपास साफ करने का ।
ગોટી (सं.) चाँदी का ढेर, बच्चों की उपयोगी औषधि विशेष, दर्जी के अँगुली में पहिनी जानेवाली अंगुस्तान ।
ગોટે ગેટ (क्रि. वि.) धूँवा का खूब भरजाना, धुवाँ का छुटजाना।
ગોટો (सं.) गुलदस्ता, फूलों का गुच्छा, गेंदा का फूल, नारेल की गरी, चटख, भारी भूल ।
ગોઠ (सं.) गुप्त, आनन्दभोज ।
ગોઠતું (वि.) ठीक, उचित, फिट,
ગોઠવણ (सं.) प्रबन्ध, बन्दोबस्त, तरतीब, हिकमत, उपाय ।
ગોઠિમડું (सं.) गुलॉट, उड़ी,
ગોટિમડું ખાવું (क्रि.) उड़ी लगाना, गुलॉच खाना ।
ગોઠિયો (सं.) साथी, दोस्त, मित्र, सहयोगी ।
ગોઠિયો કરવો (क्रि.) मित्रता करना जान पहिचान करना ।
ગોડી (सं.) जैन धर्म के पूजक ।
ગોડ (सं.) फोड़ा, सूजन, छाला, गिल्टी,

ગોડ ગુમડ (सं.) फोड़े फुन्सी,
ગોડવું (क्रि.) गोड़ना, वृक्ष के आसपास की भूमि गोड़ना ।
ગોડાઉન (सं.) गोदाम, माल, घर कोठी । [मिठास, मधुरता ।
ગોડી (सं.) एक प्रकार का गीत,
ગોડીઉં (सं.) मरोड़, ऐंठ, लच्छी ।
ગોડી પડવો (सं.) चैत्र मास का प्रथम दिन । [इसी भाँति ।
ગોડે (क्रि. वि.) समान, मानिंद,
ગોણ્ણી (सं.) सौभाग्यवती स्त्री जो भोजन के लिये बुलाई जावे, सवासण ।
ગોતડી (सं.) गला, कंठ, हलक,
ગોતર (सं.) कुनबा, कुटुम्ब, कुल, घराना, वंश, खान्दान । पशु के लिये एक प्रकार का चारा ।
ગોતવું (क्रि.) ढूंढना, तलाशना, दरियाफ्त करना ।
ગોતું (सं.) खाद, चारा,
ગોત્ર (सं.) देखो गोत्र
ગોત્રજ (वि.) एक कुटुम्ब के, एक वंशीय, नातेदार,
ગોત્રજ બંધુ (सं.) एक गोत के, गोती भाई ।
ગોત્રી (स.) एक वंश के, रिस्तेदार,
ગોથ (वि.) ४ के लिये गुप्त इशारा
ગોથપડી (सं.) १४ के लिये गुप्त इशारा ।
ગોથું (सं.) वंचक, छली, ठग,
ગોથું ખાવું (क्रि.) धोका खाना, गुलॅाच खाना, उड़ी खाना ।
ગોદ (सं.) गोद, हृदय अंक
ગોદડી (सं.) गैंदा, तोशक, गुदड़ी ।
ગોદમાં લેવું (क्रि.) गोद में लेना, अंकभर हृदय लगाना ।
ગોદાવરી (सं.) गोदावरी, नाम्नी नदी । १२ के लिये गुप्त इशारा ।
ગોદી (सं.) जहाज बनाने का सामान रखने का स्थान ।
ગોદી ઘાલવી (क्रि.) जहाज बनाने का सामान रखने का स्थान बनाना ।
ગોદો (सं.) धक्का, आंकुस, दौड़ ।
ગોદો મારવો / ગોધો ઘાલવો (क्रि.) धक्का मारना, आकुस मारना दौड़ मारना ।
ગોધો (सं.) बैल, वृषभ, सांड,
ગોધણ (सं.) पशुओं का झुंड, गायो का समूह ।
ગોધુમ (सं) गेहूं
ગોપ (सं.) स्वर्ण का आभूषण जो कंठ में पहिना जाता है ।
ગોપાદ (सं.) गाय का पैर,
ગોપાત (सं.) शरण स्थान, आश्रय स्थान, रक्षा, हिफाजत ।

ગોપાળ (सं.) भगवान् कृष्ण, बैलों गायों का झुंड ।
ગોપી (सं.) गोपि का, गोप स्त्री, केवळ गायों का झुंड ।
ગોપી ચંદન (सं.) गोपी तलैया की पीली मिट्टी ।
ગોપી ચંદન કરવું (क्रि.) अपना दूसरों के लिये खरच कर डालना। बरबाद करना, उजाड़ना ।
ગોફણ (सं.) अस्त्र विशेष, गोफन, पत्थर फेंकने का पट्टा, गुफना, भिन्दिपाल
ગોફણી (सं.) बालों में पहिना जानेवाला एक ज़ेवर ।
ગોબર (सं.) गाय का मल, मैला, कूड़ा, गोविष्ठा [गंदु
ગોબરૂં (वि.) मैला, गंदा देखो
ગોબરૂં (सं.) चेचक, शीतला, दुलारी । [होना ।
ગોભાવું (क्रि.) मनमें उदास
ગોભો (सं.) उदासी, घूंसा,
ગોભો પાડવો (क्रि.) देखो ગોભાવું
ગોથમ (सं.) देखो ગોબર
ગોમાંસ (सं.) गाय का मांस,
ગોમુખ (सं.) गाय का मुहँ
ગોમુખી (सं.) गाय के मुख के समान बनी पवित्र वस्त्र की थैली जिस में हाथ छुपा कर माला आदि द्वारा हरि चिंतन करते हैं । जप थैली ।
ગોમૂત્ર (सं.) गायका पेशाब,
ગોમેદ (सं.) पुखराज, एक प्रकारका बहुमूल्य रत्न ।
ગોમેધ (सं.) गाय की बलि, वह यज्ञ जिसमें गाय की बलि दी जावे। इन्द्रिय दमन पूर्वक यज्ञ ।
ગોર (सं.) कुल पुरोहित, एक प्रकारका ध्यान
ગોરજ (सं.) गायों के चलने से उड़ी हुई धूली, ગોરજી प्रतिज्ञा,
ગોરજી (सं.) जैन पुरोहित, जैन पुजारी ।
ગોભાવું (क्रि.) देखो ગોભાવું
ગોભો (सं.) देखो ગોભો
ગોરપદું (सं.) पौरोहित्य, पुजारी का पद । [पीली मिट्टी ।
ગોરમટી (सं.) एक प्रकार की
ગોરંભો (सं.) गड़बड़ होहल्ला,
ગોરસ (सं.) मट्ठा, छाछ, तक्र, दही, छाछ दही रखनेका बर्तन,
ગોરાડુ-ડું (सं.) हलकी पीली मिट्टी (वि.) हल्का, आराकश [हुआ
ગોરાણી (सं.) पुजारिन, पुरोहिता-

ગોરાશ (सं.) स्वच्छता, सफेदी, गोरापन। (स्त्री, स्त्री।
ગોરી (सं.) सुन्दर स्त्री, रूपवान
ગોરી (वि.) खूबसूरत, सुंदर, सफेद, गोरा रंग।
ગોરૂં (वि.) सफेद, स्वच्छ, पवित्र साफ खूबसूरत, [नाम।
ગોરૂ ચંદન (सं.) एक औषधिका
ગોલખ (सं.) रुपयों का सन्दूक, रुपये रखने की पेटी।
ગોલંદાજ (सं.) तोप दागनेवाला, तोप में गोला भरकर चलानेवाला,
ગોલો (सं.) चावल कूटनेवाला, देखो ખવાસ, पागल मनुष्य,
ગોવધ (सं.) गोनाश,
ગોવાંદરૂં (सं.) पशुओं के लिए जेल, कांजी हौद, पशुओं के लिये रोक।
ગોવારૂં (सं.) पशु समूह,
ગોવાલણ (सं.) ग्वालिन, ग्वाल की स्त्री। [ग्वाला, पशु चरानेवाला।
ગોવાળ-ળિયો (सं.) ग्वाल,
ગોષ (सं.) चरवाहे का अहाता, गडरिये के लिये चौक।
ગોષ્ટી (सं.) किस्सा, कहानी, मित्रता, वार्तालाप, बातचीत।
ગોષ્ટી બાંધવી (क्रि.) मित्रता करना दोस्ती करना।
ગોસ (सं.) मांस, मिट्टी, गोश्त, (क्रि.) दाहिनी ओर।
ગોસાઈ-સાંઈ (सं.) स्वामी संन्यासी, जितेन्द्रिय, गुसाईं, संन्यासियों की अल्ल, महन्त, [साधु बनना।
ગોસાઈ થવું (क्रि.) भिखारी होना,
ગોહ (सं.) खोह, कंदरा, तलघर
ગોહેર (सं.) गहिरे विचार, उत्तम विचार, गंभीर विचार।
ગોળ (सं.) गोल, वृत्त, गुड़ राब।
ગોળ (वि.) गोल, गोलासा, गोलाकार, वर्तुलाकार।
ગોળ કેરી (सं.) गुड़ और आमों को उबालकर बनाया हुवा पदार्थ, गुडम्ब।
ગોળ ગોળ (वि.) असमाप्त, असम्पूर्ण, कोमल किया हुवा, (सं.) मिष्ट भाषण सेलालच।
ગોળ ગોળ કરવું (क्रि.) मीठे मीठे शब्दों से उसकाना।
ગોળાકાર (सं.) वृत्ताकार, गोल वर्तुलाकार, मण्डलाकार।
ગોળાકૃતિ (सं.) गोल शकल, गोल सूरत। वर्तुलाकृति,
ગોળાર્ધ (सं.) आधा गोल, गोल का आधा, वर्तुलार्ध, मंडलार्ध।

ગોળી (सं.) पानी भरने का बासन, वटिका, बन्दूक की गोली, अंडकोष, वृषण, हानि, घाटा, गोली।

ગોળી કરવી (क्रि.) वटिका बनाना, खबर करना।

ગોળી મારવી (क्रि.) बन्दूक में गोली भरकर मारना।

ગોળી વાળવી (क्रि.) गोली बनाना, वटिका बनाना।

ગોળો (सं.) एक बड़ा मिट्टी का पात्र, गोला, खबर, सम्वाद, अफवाह, गप्प, लोहपिंड,

ગોળો ગબડાવવો (क्रि.) अफवाह उड़ाना, किम्वदन्ती फैलाना।

ગૌ (सं.) गऊ, गाय, धेनु गैया,

ગૌચર (सं.) गांव के निकट गायों के चरने का स्थान। [जाति

ગૌડ (सं.) बंगाली, ब्राह्मणों की एक

ગૌણ (वि.) अप्रधान, नीचा, छोटा

ગૌદાન (सं.) गोदान।

ગૌમુખી (सं.) देखो ગોમુખી

ગૌમુખેવાઘ (सं.) भेड़ के रूप में या चमड़े में छुपा भेड़िया

ગૌમુત્ર (सं.) देखो ગોમુત્ર

ગૌરવર્ણ (वि.) गोरा रंग

ગૌરી (सं.) अविवाहिता आठ वर्ष की कन्या, पार्वती, उमा,

ગૌશાળા (सं.) गायों के रहने का घर। गो गृह। [गोहिंसा,

ગૌહત્યા (सं.) गोवध का पाप,

ગ્રંથ (सं.) पुस्तक, जिल्द, पोथी,

ગ્રંથકાર (सं.) पुस्तक लेखक, पुस्तकों का बनानेवाला, शास्त्रकार।

ગ્રંથી (सं.) गांठ गठान, गिरह,

ગ્રંથીવા (सं.) एक प्रकार का रोग

ગ્રસ્ત (वि.) युक्त, आच्छादित, आक्रान्त, गृहीत, खायाहुवा।

ગ્રહ (सं.) सूर्यादि नव ग्रह, भवन, मकान, घर।

ગ્રહણ (सं.) पकड़, सूर्य चन्द्र आदि पर पृथ्वी की छाया।

ગ્રહણ કરવું (क्रि.) पकड़ना, लेना, प्राप्त करना, थामना,

ગ્રહણી (सं.) दस्तों की बीमारी, संग्रहणी। अतिसार रोग।

ગ્રહદશા (सं.) मनुष्यों पर ग्रहों का प्रभाव।

ગ્રહપીડા (सं.) ग्रहण, ग्रहों द्वारा दुःख।

ગ્રહમંડળ (सं.) ग्रहों के घूमने का मंडल, + ग्रह चाल।

ગ્રહવું (क्रि.) देखो ગ્રહણ કરવું।

ગ્રહસ્થ (सं.) भला मानस, सभ्य, गृहस्थ

ગ્રામ (सं.) गांव, कस्बा, बस्ती ।

ગ્રામકંટક (सं.) ग्राम घातक, मरी की बीमारी ।

ગ્રામ્ય (वि.) गांव का, बस्ती का,

ગ્રાસ (सं.) कवल, कौर, ग्रहण के समय ग्रसित भाग । [कूकर ।

ગ્રામસિંહ (सं.) कुत्ता, श्वान,

ગ્રાહ (सं.) मगर, मकर, घड़ियाल, सूंस, जल हाथी, नक्र

ગ્રાહક सं.) गाहक, ग्रहण करनेवाला।

ગ્રાહ્ય (सं.) ग्रहण करने योग्य, स्वीकार करने लायक, मनोनीत,

ગ્રીવા (सं) गर्दन, गला, कंठ, गले का पृष्ट भाग ।

ગ્રીષ્મ (सं.) उष्ण, गर्मी, चौथी, ऋतु. निदाघ ।

ગ્લાનિ (सं.) भ्रान्ति, निन्दा, मान सी व्यथा, मन की थकावट, घृणा।

ગ્લાનિ ઉપજવી (कि.) घृणा होना, खेद होना, दुःख होना ।

ગ્વાલ (सं) अहीर, गोपाल, गोप,

ગ્વાહી (सं.) साक्षी ।

ઘ

ઘ=गुजराती वर्णमाला का १५ वां अक्षर चौथा व्यञ्जन ।

ઘઉં (सं.) गेहूं, गोधूम

ઘઉંવરણો (वि.) गेहुंए रंग का भूरा । [विवाह ।

ઘઘરણું (सं.) पुनर्विवाह, द्वितीय

ઘચરકો (सं.) कचूमर,

ઘચપચ (सं.) गड़बड़, हड़बड़ी के साथ ।

ઘટ (सं.) घाटा, हानि, टोटा, घड़ा, पानी का बर्तन, सूरत, शक्ल, दिल, [बनावट ।

ઘટ (वि.) मोटा, घना, गाढ़ा,

ઘટપડવી (कि.) हानि होना, घाटा होना, नुकसान पड़ना । [मुनासिब

ઘટતું (सं.) ठीक, उचित, समान,

ઘટ થવું (कि.) ठोस होना, निकट होना कम होना । [राई,

ઘટના (सं.) वाका, हुनर, चतु-

ઘટવું (कि.) न्यून होना, कम होना, घटना ।

ઘટા (सं.) मेघों का समूह, मेघाच्छादन, पेड़ों का सघन कुंज ।

ઘટાડવું (कि.) घटाना, कम करना [नता, घटी ।

ઘટાડો (सं.) कमी, घाटा, न्यू-

ઘટારત (वि.) उचित, ठीक, योग्य,

ઘટિકા (सं. घड़ी, ६० पल, २४ मिनिट का प्रमाण ।

ઘટિત (वि.) ठीक, योग्य, उचित,

ઘટિત હોવું (क्रि.) उचित होना, योग्य होना।

ઘડનાર (सं.) बनानेवाला, रचनेवाला, सांचा बनानेवाला।

ઘડપણ (सं.) वृद्ध, बूढ़ा,

ઘડવી (सं.) कवि, भाट,

ઘડવું (क्रि.) बनाना, तय्यार करना, खींचना, शकल बनाना।

ઘડામણ (सं.) लोहार सोनार आदि घड़नेवालों की घड़ाई की मजदूरी। बनानेवाले की मजदूरी।

ઘડાએલું (वि.) अनुभूत, परीक्षित

ઘડાવું (क्रि.) बनवाना, तय्यार करना, खींचना, परीक्षा करना ठीक होना।

ઘડી (सं) तह; परत, २४ मिनिट या परिमाण, समय जानने का यंत्र, घड़ी [घंटे के।

ઘડીએક (क्रि. वि.) लगभग एक

ઘડી ઘડી (क्रि. वि.) प्रायः अक्सर, बारबार, लगातार [प्रायः।

ઘડીએ પલકે (क्रि. वि.) बहुधा,

ઘડીબંધ (क्रि. वि.) तह किया हुवा, बिना खुला हुवा।

ઘડીભર (सं.) जरा, कुछ समय के लिये, चन्द मिनिटों के लिये, कुछ क्षण।

ઘડીઆલ (सं.) जेब घड़ी, आफिस क्लॉक, समय जानने का यंत्र।

ઘડીઆળી (सं.) घड़ी साज़, घड़ी सुधारनेवाला।

ઘડીયું (सं.) मटका, घट, ઘડુલો (सं.) घेला, मटकी, छोटा घड़ा।

ઘડો (सं.) करवा, घड़ा, घट

ઘડો લાડવો કરવો (क्रि.) किसी खराब कारण से कोई काम करना, किसी भाँति मनाना, संतुष्ट करना।

ઘડ્યો ઘાટ (सं.) अभी का बना, ताज़ा।

ઘણ (सं.) बड़ा हथौड़ा।

ઘણુંએક (वि.) बहुतसे, कई, अनेकों, बहुतेरे।

ઘણુંખરૂં (क्रि. वि.) मुख्यतया, विशेषतः

ઘણુંઘણું (सं.) घनिष्ट मैत्री, घरोपा, गाढ मित्रता। [अधिकतर।

ઘણીવાર (सं.) अक्सर प्रायः,

ઘણું (सं.) बहुत, ज्यादः, अधिक, गहिरा, समीपी, मोटा, गाढ़ा।

ઘણું કરીને (क्रि. वि.) प्रायः, अक्सर, अधिकांश, विशेषतः

ઘણુંખરૂ (क्रि. वि.) कई अवसरों पर, प्रायः संभवतः।

ઘણું જ (क्रि. वि.) अत्यधिक, बहुत, बहुतही, ज्यादः, अत्यंत ।
ઘણું જ (वि.) पूर्ववत् 　[घंटी
ઘંટ (सं.) घंटा, घटड़ी (सं.)
ઘંટારવ (सं.) घंटे की आवाज, घंट ध्वनि । [की हाथ चक्की ।
ઘંટી (सं.) चक्की, अन्न पीसने
ઘન (सं.) घन, कड़ा, ठोस, मेघ, बादल ।
ઘનઘોર (वि.) मोटा, गाढा, अत्यंत अंधेरा । 　[पागल ।
ઘનચક્કર (सं.) मूर्ख, वेहूदा, कमअक्ल
ઘનફળ (सं.) घनफल ।
ઘનમુળ (सं.) घनमूल,
ઘનશ્યામ (वि.) काळे रंग का, (सं.) श्रीकृष्णचन्द्र ।
ઘભરાટ (सं.) घबराहट, व्याकुलता, बेचैनी ।
ઘમસાણ (सं.) नाश, बरबादी, समूळ नाश ।
ઘર (सं.) मकान, कुटुम्ब, छिद्र, तस्वीर का चौखटा । [वाह करना।
ઘર કરવું (क्रि.) घर बनाना, नि-
ઘરકામ (सं.) घर का धन्धा,
ઘરખટલો (सं.) कुटुम्ब, कुनबा, पत्नी, घरेलू फर्ज ।
ઘર ખરચ (सं.) खर्चा जो घर के लिये हो ।
ઘરગતુ–થું (वि.) गृह सम्बन्धी, घर सम्बन्धी, घरू, खानगी ।
ઘરઘરાઉ (वि.) पड़ोसी या नाते रिश्तेदारों से पाया हुवा या लाया हुवा, [अधर्मी, कपटी, छली ।
ઘરઘાલુ (वि.) मूल्यवान, महँगा,
ઘરચોળુ (सं.) एक वस्त्र जो स्त्रियां पहिनती हैं ।
ઘરજમાઈ (सं) वह मनुष्य जो सपत्नीक अपनी ससुराल में रहता हो । [कलह, घरू लड़ाई ।
ઘરટંટો (सं.) आपसी झगड़ा, गृह
ઘરડ (सं.) लीक, पहिये की लकीर, गडार । 　[पुराना,
ઘરડું (वि.) बूढा, वृद्ध, प्राचीन,
ઘરધણિઆણી (सं.) पत्नी, भार्या, गृहिनी, गृहस्वामिनी ।
ઘરધંધો (सं.) देखो ઘરકામ
ઘરનો (वि.) घरका, अपन्न, पैदा, उत्पन्न । [करना, घर फोड़ना ।
ઘરફોડવું (क्रि.) घरमें फूट उत्पन्न
ઘરબાર (सं.) कुटुम्ब, कुनबा, घर की चीज वस्तु ।
ઘરબારી (सं.) कुटुम्बी,

ઘરબેઠાં (क्रि. वि.) बिना कुछ किये, घर बैठे। [ठाले बैठना।
ઘર બેસવું (क्रि.) नौकरी छूटना,
ઘરભરવું (क्रि.) अपने को धनाढ्य करना, खुद को धनवान बनाना। [घरभाड़ा।
ઘરભાડું (सं.) मकान किराया,
ઘર ભાંગવું (क्रि.) कुटुम्ब का नाश करना, वंश नाश करना।
ઘરભેદુ (सं.) घर का जासूस, घर की सब बातें जाननेवाला।
ઘરમાર્યું (क्रि.) घर लुटना,
ઘરમેળે (क्रि. वि.) खानगी तरीके, मित्रवत्, दोस्तानि ढंग से।
ઘરમેળે માંડી વાળવું (क्रि.) आपस मे झगड़ा तय कर लेना, आपर्सा निपटारा कर लेना।
ઘરવટ (सं.) मित्रता का संसर्ग, घरोपा, निकट का प्रेम।
ઘરવાખરો (सं.) घर का सामान, घर का लकड़ी का सामान।
ઘરવાળો (सं.) पति, खाविंद, गृहपति, मालिक।
ઘરવેરો (सं.) घर का टेक्स।
ઘરસંસાર (सं.) घराने का कारबार
ઘર સંસારી (वि.) वह जो दुनिया के कारबार का प्रबन्ध करता है।

ઘરાક-ગ (सं.) ग्राहक, खरीददार
ઘરાકી (सं.) बिक्री, व्यापार, श्रेष्ठ इच्छा।
ઘરાણિયા (वि.) गहने रखा हुवा, गिरवी रखा हुवा।
ઘરેડી (सं.) छोटी गिर्री,
ઘરેડો (सं.) अंतिम साँस।
ઘરેણાઉપત (सं.) गिरवी रखने का काम।
ઘરેણું (सं.) जेवर, आभूषण,
ઘરેણે મુકવું (क्रि.) गिरवी रखना, रहन रखना।
ઘરોબો (सं.) घनिष्ट प्रेम, घरोपा।
ઘરોળી (सं.) छिपकली, पल्ली,
ઘર્ષણ (सं.) रगड़, घिस्सा।
ઘલાઈજવું (क्रि.) कर्जदार का दिवाला निकलने पर रुपयों का चला जाना।
ઘવડવું (क्रि.) खुरचना, कुरेदना, खुजालना, चुलचलना।
ઘસડવું (क्रि.) खींचना, दबाना।
ઘસરકો-ડો (सं.) खरोंच, हानि, टोटा।
ઘસવું (क्रि.) रगड़ना, घिसना, तेज करना, धार करना, नोक करना।

ધસાઈ જવું (क्रि.) दुबला हो जाना, पतला हो जाना, घिस जाना,
ધસારો (सं.) खरोंच, चीर,
ધસારો ખમવો (क्रि.) हानि, उठाना, टोटा सहना।
ધસાવું (क्रि.) घिसजाना, थामना, उठाना, सहना।
ધા (सं.) व्रण, जख्म, घाव, चोट।
ધાએલ થવું (क्रि.) जख्मी होना, चोट खाना, आहत होना।
ધાએલ થયલું (क्रि.) जख्मी, घायल, चोट खाया हुवा, अधमरा।
ધાધરો (सं.) लहँगा, घाघरा, स्त्रियों के पहिनने का वस्त्र विशेष।
ધાંચી (सं.) तेल निकालने वाला, तेली।
ધાંચો (सं.) चटाई बनाने वाला।
ધાંટી (सं.) हुलक, कंठ, रोक, आड।
ધાટ (सं.) शकल, सूरत, प्रबन्ध, हिकमत, एक प्रकार का सांचा, रेशमी कपड़ा।
ધાટ કરવો (क्रि.) सांचा बनाना, तदबीर करना।
ધાટ ઘડવો (क्रि.) साँचा बनाना सूरत बनाना, उपाय सोचना, हानि करना, वध करना, पीटना।
ધાટડી (वि.) सफेद छींट का एक प्रकार का रेशमी वस्त्र। [वस्त्र।
ધાટ પોત (सं.) एक प्रकार का रेशमी
ધાટીલું (वि.) सुन्दर, खूबसूरत, अच्छी शक्ल का।
ધાડું (वि.) गाढ़ा, मोटा, घना, पाषाण हृदय।
ધાણ (सं.) नाश, बड़ा हथौड़ा, किसी वस्तु का एकदम डालाजाना।
ધાણ કહાડવો (क्रि.) बरबाद करना, नष्ट करना, बिगाड़ना।
ધાણી (सं) तेल निकालने का यंत्र, गन्नों का रस निकालने का यंत्र।
ધાત (सं.) चोट, मार, वध, हिंसा, खून, बुरा समय। [दुष्ट बुरा।
ધાતકી (सं.) खूनी, हिंसक, निर्दय,
ધામ (सं.) धूप, गर्मी, स्वेद, पसीना।
ધામેટ (सं.) देखो ગામેટ,
ધારણ (सं.) घुर्र घुर्र करती हुई निद्रा, निद्रामें घरोटा,
ધારી (सं) एक प्रकार की मिठाई, घेरा, परिधि।
ધારૂં (सं.) गहिरी चोट, बड़ी विपत्ति, जोर का घूँसा, छेद, सूराख।
ધાલ (सं.) हानि, नुकसान,
ધાલમેલ (सं.) अव्यवस्था, अप्रबन्ध, बद इन्तजामी, जल्दी, त्वरा।

ધાલમેલ (वि.) तरकीब और तदबीर से पूर्ण ।

ધાલવું (क्रि.) भीतर डालना, धकेलना, घुसेड़ना, प्रवेश कराना, भरना, छेदना । [कर्जा न चुकाना ।

ધાલી પડવું (क्रि.) ऋण न देना,

ધાસ (सं.) तृण, घास, भूसा, चारा, हानि ।

ધાસ દાણો (सं. घास और दाना, खोराक, पेट खर्ची ।

ધાસવું (क्रि.) रगड़ना, घिसना, साफ करना ।

ધાસિયો (सं.) घोड़े की काठी पर का ऊनी वस्त्र ।

ધિયાળ (वि.) जिसमें घी हो, अधिक घृत युक्त दुग्ध, अधिक दूध देनेवाली ।

ઘી (सं.) घृत, आज्य । [जुलूस ।

ઘીસ (सं.) चौकीदार, होली का

ઘીસો (सं.) झूठा वादा, असत्य, वचन ।

ઘુ ધટ (सं.) घूँघट, ओट, परदा ।

ઘુંધવાટ (सं.) ऊँची उड़ान, शोर-गुल, ઘુઆડ (सं.) उल्लु, घुग्घू ।

ઘુંટડો (सं.) घूँट,

ઘુંટણ (सं.) घुटना, जानु,

ઘુંટણિયાં ભરવાં (क्रि.) घुटनो बल सरकना । [मसलना, घोटना ।

ઘુંટવું (क्रि.) मलना, रगड़ना,

ઘુંટી (सं.) लपेट, उलझाव, कठिनता, टखनों का जोड़ ।

ઘુઘરમાળ (सं.) छोटी छोटी घंटियों की बनी हुई माळा । घुंघरों की माला ।

ઘુઘરી (सं.) एक प्रकार का जेवर, खन खनाहट ।

ઘુઘરો (सं.) घूघरा

ઘુમટ-ડો (सं.) गुम्बज, घूँघट, आड़, ओट । [लोरी,

ઘુમણી (सं.) पळने का संचालन,

ઘુમરડી (सं.) लौट, दौड़, नाच, चक्कर मक्कर ।

ઘુમરાવું (क्रि.) गुर्राना, घुड़कना, उदास होना, अंधेरा होना, तेवरी, चढ़ाना । [घुसजाना,

ઘુમવું (क्रि.) घुसना, गहिरा-

ઘુરઘુર (सं.) आँतों का गुर गुर का शब्द, गुर्राहट ।

ઘુવડ (सं.) उल्लु, घुग्घू,

ઘુસવું (क्रि.) बलपूर्वक प्रवेश करना, घुसजाना ।

ઘુસીયું (सं.) चूहों का जाल । चूहे पकड़ने का फन्दा ।

धूम (वि.) बेहोश, मस्त,
धूस (सं.) बड़ा चूहा, घूँस ।
घृतपात्र (सं.) घी का बर्तन ।
घेंघट (वि.) बेहोश, उन्मत्त, सुस्त, आलसी ।
घेटी (सं.) मेड़ा । [बच्चा
घेटु (सं.) मेमना, मेड़ का
घेटो (सं.) मेढ़ा,
घेन (सं.) बेहोशी, मोहावस्था, अंवतपन, मूर्च्छा, सुस्ती ।
घेर (सं.) गिर्द, घेरा, परिधि, गोलचक्कर, परिमितरेखा,
घेरदार (वि.) कोर युक्त, परिधि युक्त, [करना, रोकना ।
घेरवु (क्रि.) घेरना, अपेष्ठित
घेरावो (सं.) घेरा, परिधि,
घेरी (स) वृत्त, घेरा, परिधि,
घेरी लेवुं (क्रि) रोकलेना, ठहरा रखना,
घेरुं (वि.) गाहेरा, ओंडा,
घेरेघेर (क्रि. वि.) प्रतिगृह,
घेरो (सं.) घेर, नगर परिवेष्टन, परिधि।
घेरोघालवो (क्रि.) घेरा डालना, चारों ओर से घेर डालना ।
घेलछा (सं.) पागलपन, मूर्खता, नादानी, अज्ञानता,
घेलस (वि.) पागल मूर्ख, शठ,
घेलाछ (सं.) पागलपन, मूर्खता,
घेलुं (वि.) देखो, घेलस
घोघाट (सं.) ध्वनि, शब्द, गर्जना, कोलाहल, चिल्लाहट, बखेड़ा ।
घोंचवुं (क्रि.) घुसेड़ना, छेदना, खुरसना, खोंसना ।
घोटवुं (क्रि.) घुर घुर करते हुए सोना । खर्राटे की नींद लेना ।
घोडदोड (सं.) घोड़ों की भाग, घुड़दौड़ ।
घोडेस्वार (सं.) सिपाही, सवार, घोड़ेवाला, अश्वारोही,
घोडेस्वार थवुं (क्रि.) चढना, अश्वारोहण, घोड़ेपर चढना।
घोडागाडी (सं.) वह गाडी जिसे घोड़े खींचते हों ।
घोडार (सं.) अश्वशाळा, अस्त बल, घोडों के रहने की जगह ।
घोडावज (सं.) एक प्रकार की बूटी, सुगन्धितजड़ी (औषधि)
घोडावाळो (सं.) साईस, घोड़े-वाला ।
घोडियुं (सं.) झूलना, पलना,
घोडी (सं) शतरंज के खेलमें एक पदवी, घोड़ी, ढाँचा, चौखट ।

घोडीपडवो। (सं) चैत्र मास का प्रथम दिन। [घोटक।
घोडो। (सं.) अश्व, बाजी, तुरंग,
घोडलीयो–यो (सं.) बैल, साँड,
घोघो। (सं.) गंभीर, संजीदा समाधि। कब्र। [भयानक
घोर (वि.) निर्दय, धुंधला, अंधेरा,
घोरअंधारी (वि.) भयानक, खौफनाक, डरावना।
घोरदुष्कर्म (सं.) नीच कृत्य, दुष्टकर्म, निर्दयकर्म।
घोरवुं (क्रि.) खर्राटा लेना, सोते समय नाक से शब्द करना।
घोष (सं.) शब्द, आवाज, गूँज, प्रति ध्वनि। [छिड़कना, सोचना।
घोळवुं (क्रि.) मिलाना. घोलना,
घोळघोळ (सं.) संदेह, अनिश्चित।
घोळामा करवुं (क्रि.) किसी विषय पर गौर करना। [होने दो।
घोल्युं (क्रि.) कुछ परवाह नहीं,
घ्न (सं.) मारनेवाले की अर्थ द्योतक प्रत्यय, नाशक। [ग्रहण, आघ्राण।
घ्राण (सं.) नाक, नासिका गन्ध
घ्राणेन्द्रिय (सं.) सूँघने वाली इन्द्रिय, नाक, नासिका।

ङ

ङ—गुजराती वर्णमाला का १६ वां अक्षर, पाँचवां व्यंजन।

च

च—गुजराती वर्णमाला का १७ वाँ अक्षर, छठा व्यंजन। [मास।
चईतर (सं.) चैत्र, मधुमास, प्रथम
चईत्री ताप (सं.) अत्यंत गर्मी,
चउटुं (सं.) बाजार, हाट,
चउदश (सं.) चतुर्दशी, हिन्दू चांद्र मास की १४ वीं तारीख।
चक (सं.) बास की खपचियों द्वारा बना हुवा परदा, पर्दा, चिक।
चकचक (सं.) बकबक, चमक, दमक, चूंचूँ, चींचीं।
चक चकतुं (वि.) दमकता हुवा, चमकदार, शानदार।
चकचकवुं (क्रि.) चमकना, दमकना प्रज्वलित होना, प्रकाशित होना,
चकचकाट (सं.) चमक, झिलमिलाहट।
चकचकित (वि.) स्वच्छ, साफ, निर्मल, उज्वल, खूबसूरत।
चकचार (सं.) अन्वेषण, तलाश, ढूँढ, खोज, रखवाली।
चकचूर (वि.) ग्रसित, मस्त मतवाला, मदोन्मत्त।
चकडोळ (सं.) घुमरी, चकरी, एक प्रकार का झूला।

ચકતું (सं.) टुकड़ा, फाँक,
ચકમક (सं.) चकमक पत्थर पथरी,
ચકમક ઝરવી (क्रि.) झगड़ना, वाक् युद्ध करना।
ચકમો (सं.) कम्मल, कामरीं।
ચકરભમર (सं.) चक्कर, चकरी, चारोंओर चक्कर।
ચકરડી (सं.) चक्कर, चकरी, हवा से चलनेवाली चक्की, पवन चक्की। [घूमना।
ચકરી ફરવી (क्रि.) चारोंओर
ચકરડું (सं.) सिफर, शून्य, पगड़ी, चक्कर,
ચકર મારવું (क्रि.) चक्कर लगाना, घूमना, चकर दंड लगाना।
ચકરાવો (सं.) सेना का चक्रव्यूह, परिधि, घेरा, लंबा चक्कर।
ચકરી (सं.) चकरी, एक प्रकार का रोग।
ચકરીઆવવી (क्रि.) चक्कर आना, चारोंओर घूमना।
ચકલેદાર (सं.) गली या महोले का आफिसर।
ચકલો (सं.) गली, छोटा बाज़ार, सीमा, गैरैया (पक्षी) [चक्की।
ચકી (सं.) हाथ चक्की, छोटी

ચકીત (वि.) आश्चर्यान्वित, विस्मित, अचंभित, व्याकुल।
ચકીતથવું (क्रि.) विस्मित होना व्याकुल होना।
ચકોર (सं.) तीतर का एक भेद, पक्षी विशेष, चपल तेज,
ચક્કર (सं.) चक, घेरा, परिधि पहिया, एक प्रकार की बीमारी।
ચક્ર (सं.) चाक, चक, पहिया, चक्कर, वादानुवाद, छल्ला।
ચક્રગતિ (सं.) गोलचाल, पहिये की गति, चारोंओर का चक्कर।
ચક્રદંડ (सं.) एक प्रकार की कसरत। [विष्णुभगवान्।
ચક્રપાણી (सं.) सुदर्शनधारी,
ચક્રવર્તિ (वि.) सार्वभौम, समुद्र पर्य्यन्त प्रजापालन करनेवाला, सम्राट्।
ચક્રવૃદ્ધિવ્યાજ (सं.) मिश्र व्याज। कटवाँ मिती का व्याज।
ચક્રવ્યૂહ (सं.) युद्धार्थ सेना का मंडलाकार व्यूह।
ચક્રાકાર (सं.) गोलाकार, घेरा।
ચગદવું (क्रि.) कुचलना, आक्रान्त करना, रौंदना, मसलना।
ચગદાવું (क्रि.) कुचलाजाना।

ચગાવવું (क्रि.) (पतंग) उड़ाना झुमाना, फुसलाना, उसकाना, हटाना ।

ચંગ (वि.) दृढ, शुद्ध, स्वस्थ, तन्दुरुस्त (सं.) घंटी, ताश का खेल विशेष ।

ચંગારી (सं.) चिनगारी ।

ચંગી (सं.) दुष्ट, गाँजा भाँग को सेवन करनेवाला । [तेज़ ।

ચંગુ (वि.) नटखट, चालाक,

ચચણવું (क्रि.) दाह मालुम होना, जलना ।

ચચરવું (क्रि.) चिलक मारना, टीस मारना, दुखना, देखो ચચણવું. [दर्द ।

ચચરાટ (सं.) तीखा दर्द, अति

ચંચળ (सं.) चपल, अस्थिर, उतावल, लम्पट । [धन ।

ચંચળા (सं.) विजली, लक्ष्मी

ચંચળાઈ (सं.) चपलता, अस्थिरता, खुशादिली, सजीवत्व, चालाकी।

ચટ (सं.) तुरंत, शीघ्र, त्वरित, झट, हठ, चिंता ।

ચટક (वि.) लाल, सुर्ख, रक्त, (सं.) गैरैया पक्षी, [जल्दीसे, तेजीसे ।

ચટકઈને-ચેટુંકને (क्रि. वि.)

ચટકો મારવો (क्रि.) डंकमारना डसना, काटना ।

ચટકો લાગવો (क्रि.) खिझना, चिढना, रगड़ना, दर्द होना ।

ચટણી (सं.) स्वादिष्ट, मजेदार, चटनी, चाटने की वस्तु ।

ચટપટ (सं.) लालसा, अभिलाषा, रंज, घबड़ाहट, क्रोध, चिंता ।

ચટપટી (सं.) बेचैनी व्याकुलता, कष्ट, क्लेश, तकलीफ ।

ચટાઈ (सं.) साथरा, आस्तरण विशेष, फर्श । [घूस देना ।

ચટાડવું (क्रि.) चटाना, रिश्वतदेन।

ચટાપટા (सं.) धारी, लकीरें, रेखा, धब्बा, दाग़ ।

ચડઉતર (सं.) उतरचढ, उत्थान और पतन, उन्नति अवनति ।

ચડ-ણુ (सं.) चढाव, चढाई, फुर्ती, तेजी [जल्दी, सत्वर ।

ચડપચડપ (क्रि. वि.) तुरंत, शीघ्र

ચડભડવું (क्रि. वि.) झगड़ा करना, विवाद करना ।

ચડભડાટ (सं.) निकल पड़ना, बदानुवाद, झगड़ा, टंटा ।

ચડવું-ઢવું (क्रि.) सेकेहुए, उबलना, वृद्धिपाना, बढना, चढना, आरोहणकरना, उठना, आदेश

करना, पूर्ण करना, झूठा बढाव देना फूंकना, हाँफना, अतिशय प्रशंसा करना, मस्तकरना, बेहोश करना, धावा करना, आक्रमण करना चढाई करना, योग्य होना, उचित होना, देवमूर्तिको बलिके रूपमें भेट होना, लेट रहना, पड़ रहना।

ચડવો (सं.) मिट्टीका प्याला, मिट्टीका बना कटोरा।

ચડસીલું (वि.) स्पर्धालु, बराबरी करने में तेज, प्रतिद्वन्दी। [क्रुद्ध

ચડ (वि.) गर्म, उष्ण, कुपित,

ચંડાળ (सं.) दुष्ट, नीच, कमीना, घातक, वर्णशंकर,

ચંડાળચોકડી (सं.) दुष्ट मंडली,

ચંડાળણી (सं.) दुष्ट स्त्री, नीच स्त्री, पतित स्त्री।

ચંડિકા (सं. देवी दुर्गा, उमा, गौरी कात्यायिनी, शिवा, भवानी।

ચડોળ (सं.) कुमरी, लवा, चण्डूल पक्षी विशेष,

ચઢઉતર (सं.) देखो ચડઉતર

ચઢણ (सं.) देखो ચડણ

ચઢતી (सं.) उदय, उत्थान, कृतकार्यता, सफलता, उन्नति, बढोतरी, वृद्धि, ऊँचाई, उत्कृष्टता, उन्नतदशा, अच्छे तरक्की के दिन, अर्थ वृद्धि, उच्च पद, उदयमें सफलता। [उदय विकास।

ચઢતું (वि.) उत्कृष्ट, उत्तम, उत्थान

ચઢતું વ્યાજ (सं.) सूददरसूद, मिश्र ब्याज।

ચઢવું (क्रि.) चढ़ना, आरोहण, वृद्धि पाना, उठना, उदय होना, प्रसार पाना, समाप्त होना, देखो ચડવું [आक्रमण, जलयात्रा।

ચઢાઇ (सं.) धावा, हमला,

ચઢાઉ (सं.) अहंकारी, घमंडी।

ચઢાચઢી (वि.) ईर्षापूर्ण वादविवाद, डाहयुक्त झगड़ा।

ચઢાવવું (क्रि.) उभाड़ना, भड़काना, बहकाना, फुसलाना, थपकी देना, चढाना, प्यार करना, क्षमा करना।

ચઢાવો (सं.) उत्थान, बढती,

ચેઢી આવવું (क्रि.) उठ आना, क्रोधयुक्त हो आना, चढाई करना, दबा लेना।

ચઢીયાતું (वि.) बढिया, उत्तम, श्रेष्ठ,

ચણગી (सं.) छोटी चिनगारी।

ચણભણ (सं.) फोड़े में चीरफाड़ का दर्द। व्रण में चरमराहट।

ચણતર (सं.) राज का काम, मकान चुननेका काम, अटारी, अट्टालिका,

ચણવું (क्रि.) चुनना, भवन निर्माण करना, खड़ा करना, बनाना, रचना। [(सं.) चनेकी दाल।

ચણા (सं.) अन्न विशेष, चणक દાળ

ચણિયારૂં (सं.) चूल, चूलिया, लकड़ में खोदा हुवा वह छिद्र जिसमें किवाड़ घूमा करता है।

ચણિયો (सं.) स्त्रियों के पहिनने का घाघरा, लहँगा।

ચણોઠી (सं.) दाना, बीजा, २॥ ग्रेन का एक तौल।

ચણોઠીભાર (सं.) २॥ ग्रेन के लगभग वजन।

ચત્તું (क्रि.) चित, पीठ के बल लेटा हुवा, मान्य, अनुकूल, दयालु।

ચતુર (वि.) कार्यक्षम, आलस्य-रहित, पटु, निपुण, धूर्त।

ચતુરંગી સેના (सं.) चार प्रकारकी सेना। वह सेना जिस में हाथी घोड़े और पैदल हों।

ચતુર શિરોમણિ (सं.) अत्यंत पटु, बुद्धिमान, अक्लमन्द, पटु, निष्णात,

ચતુરસીમા (सं.) सीमाकी रेखाएँ हद, सीमा।

ચતુર સુજાન (वि.) ज़हीन, चतुर, तीक्ष्ण बुद्धिका, सम्पन्न, सुशिक्षित,

ચતુરા (सं.) चतुर महिला, होशियार, स्त्री।

ચતુરાઈ (सं.) प्रवीणता, दक्षता, होशियारी, बुद्धिमानी, गुण,

ચતુરાનન (सं.) जिसके चार मुख हों, ब्रह्मा, विधाता, विधि।

ચતુર્થાંશ (वि.) चौथा हिस्सा, चौथा भाग, ¼,

ચતુર્થી (वि.) तिथि विशेष, चौथ।

ચતુર્દશ (वि.) चौदह, चौदहवाँ, १४, चार अधिक दश।

ચતુર્દશી (सं.) तिथि विशेष, चौदस।

ચતુર્કોણ (वि.) चतुष्कोण, चौकोना।

ચતુર્દિશા (सं.) चारों ओर, सब दिशा, चार दिशा, पूर्व पश्चिम उत्तर और दक्षिण।

ચતુર્ભુજ (सं.) चार भुजावाला, विष्णु, रेखागणित का एक स्वरूप जो चारों ओरसे घिरा रहता है।

ચતુર્માસ (सं.) चार मास, वर्षा-ऋतु, बरसात, प्रवृष्ट ऋतु, पावस।

ચતુર્મુખ (सं.) चार मुहँवाला, ब्रह्मा, विधि, विरंची, सृष्टिनिर्माता।

ચતુર્વર્ગ (सं.) पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म अर्थ काम और मोक्ष।

ચતુર્વિધ (वि.) चार प्रकार, चार तरह, चौलड़ा, चौहरता।

ચતુષ્કોણ (सं.) चौरस, चौकोना चौकोन।

ચતુષ્ટય (सं.) चार का समूह, इकट्ठे चार, चार का ढेर।

ચતુષ્પદ-પાદ (सं.) चार पैर का ढोर, पशु, चौपाया।

ચદ્દર (सं.) एकलाई, ओढने का एक प्रकार का वस्त्र, बिछौने या पलँग पर बिछाने का वस्त्र, टेबल क्लॉथ। [विशेष, सन्दल।

ચંદન (सं) स्वनाम प्रसिद्ध वृक्ष

ચંદનઘો (सं.) गोय, गोहरे की एक जाति विशेष, पाटागो।

ચદનચુડી (स.) चंदन की बनी हुई चूड़ी जिसे प्रायः स्त्रियां पहिनती है।

ચંદનહાર (सं.) एक प्रकार का गले में पहिनने का उज्ज्वल आभूषण।

ચંદ્રમા (सं.) चाँद, विधु, शशि, मयंक, निशानाथ, रोहणी पति।

ચંદની (सं.) ज्योत्स्ना, चंद्रिका, कौमुदो, चन्द्रप्रभा, चाँदनी। कपड़े की छत, छोटी सोने की अँगूठी

ચંદરવો (सं.) पाल, चन्दवा।

ચંદરસ (सं.) एक प्रकार का कान्तिस, एक प्रकार का गोंद।

ચંદરોજ (क्रि. वि.) कुछ कालमें अल्पकाल में, शीघ्र, जल्दी।

ચંદી (सं.) पशुओं के लिये अन्न विशेष, बांठ, दाना, खोराक।

ચંદો (सं.) घड़ी का चेहरा, डायल।

ચદ્રક (सं.) चिन्ह विशेष जो कपाल पर बनाया जाता है।

ચંદ્રકળા (सं.) चन्द्रमा का सोलह कलाओं मेंसे एक, एक प्रकार का स्त्रियों का वस्त्र विशेष।

ચંદ્રકાન્ત (सं.) मणि विशेष, वह मणि जो चन्द्रमा को देखकर द्रवीभूत हो जाती है।

ચંદ્રગ્રહણ (सं.) राहुद्वारा चन्द्रमा का ग्रसाजाना। चन्द्र ग्रास।

ચંદ્ર તેજ (सं.) चाँदनी, ज्योत्स्ना, चन्द्रमा का प्रकाश।

ચંદ્રનું (वि.) चन्द्रमा का। चाँद।

ચંદ્રબળ (सं.) चन्द्रमा की अनुकुलता, चन्द्रमा की शक्ति।

ચંદ્રબીંબ (सं.) चन्द्रमा की परछाही।

ચંદ્રમંડળ (सं.) चन्द्रमा का गोलाकार स्वरूप, चन्द्रपरिधि, तारे और चाँद।

ચંદ્રમાસ (सं.) चन्द्रमा की चाल के अनुसार गणना किया जाने वाला महीना, चान्द्रमास।

ચંદ્રમુખી-વદની (सं.) चन्द्रमा के समान मुहँवाली, सुमुखी, वरवर्णिनी सुमुखी।
ચંદ્રવંશ (सं.) चन्द्रमा के वंशज, चन्द्रमा का कुल, यदुवंश, यादव।
ચંદ્રવાર (सं.) सोमवार, दूसरावार
ચંદ્રશેખર (सं.) शिव, महादेव ।
ચંદ્રાવળી (स.) एक प्रकार का गीत। गान विशेष ।
ચંદ્રિકા (सं.) चाँदनी, ज्योत्स्ना ।
ચંદ્રુસ (सं.) देखो ચંદરસ
ચંદ્રોદય (सं.) चन्द्रमा का उदय, रात्रिका प्रथम प्रहर ।
ચપ (विस्म.) खामोश, चुप ।
ચપકાવવું (वि.) डाम देना, गर्म लोहे से दग्ध करना, जलाना, झुलसना ।
ચપકો (सं.) तमाचा, सख्त चोट, डंक, डंस, चुभन, जली हुई लकड़ी,
ચપચપ (क्रि. वि.) शीघ्रतापूर्वक, जल्दी से, [पट्ट, बराबर
ચપટ-ચપ્પટ (वि.) चपटा, पाल्थी,
ચપટ બેસવું (क्रि.) पाल्थी मार कर बैठना, पद्मासन बैठना ।
ચપટાવું (क्रि.) टोटा झेलना हानि उठाना, दुखित होना, चपटा करना।
ચપટી (सं.) चुटकी, तकलीफ, क्षण, पल, (वि.) चपटा
ચપટીમાં (क्रि. वि.) एक पलमें. क्षणभरमें, अभी। [ठिगना, छोटा।
ચપટું (वि.) चपटा, बैठा हुवा,
ચપડાવવું (क्रि.) चुराना, खिसक जाना, सटका जाना, उड़ा लेना, हथलपकी करना।
ચપણુ (सं.) मिट्टी का प्याला ।
ચપરાસ (सं.) चपरास, पेटी, एक प्रकारका चिन्ह जो स्वामी भृत्य और भृत्यके पदका सूचक होता है ।
ચપરાસી (सं) नौकर, दूत, हरकारा।
ચપળ (वि.) चंचल, अस्थिर, विकल, उद्विग्न तेज।
ચપળતા (सं.) चंचलता, अस्थिरता, तेजी, व्याकुलता ।
ચપળા (सं.) विद्युत, तड़ित, सौदामिनी, बिजली, चंचल स्त्री, तेज औरत ।
ચપળાં (सं) आँखो की मटक, आँखो के इशारे, सैन,
ચપળાઇ (सं.) तेजी, चपलता,
ચપાટવું-ટી જવું (क्रि.) खाजाना भकोसना, निगलजाना, हड़पकरजाना ।

ચપાટી (सं.) छोटी टिकिया, छोटी रोटी, चपाती ।
ચપેટીમાં આવવું (क्रि.) उलट-जाना, फन्दे में फँसजाना, घबराजाना ।
ચપ્પુ (सं.) चाकू, चक्कू, क्षुर ।
ચબરાક (वि.) तेज, चपल, चंचल ।
ચબુતરો (सं.) थाना, पुलिस के रहेन की जगह, कोतवाली, टेक्स घर, महसूल घर ।
ચમક (सं.) चलक, भड़क, चटक उज्ज्वलता, प्रभा, दीप्ति, दमक, शोभा, अकस्मात भय से चमक-जाना । [अयस्कान्त]
ચમક પથ્થર (सं.) चुम्बक पत्थर,
ચમક મારવી (क्रि.) किरण डालना, चौंधियामारना, चमकना,
ચમકવું (क्रि.) चौंकना, दमकना ।
ચમકાટ (सं.) चमक, दमक, चटक चौंक, प्रकाश का चौंधा ।
ચમકાવવું (क्रि.) डराना, चौंकाना, धमकाना, डाँटना, घुड़कना ।
ચમકી ઉઠવું (क्रि.) चौंक उठना, चौकजाना । [विशेष ।
ચમચમ (सं.) अत्यंतदर्द, ध्वनि
ચમચમવુ (क्रि.) थप्पड़ मारना, चपतमारना पीटना ।
ચમચી (सं.) छोटा चम्मच, कुरछी,
ચમચો (सं.) कुरछा, चम्मच, चमचा
ચમટી (सं.) चुटकी, नोच, चिमटी
ચમત્કાર (सं) विस्मय, अचंभा आश्चर्य, चित्तविस्तार ।
ચમત્કારી (वि.) विस्मयजनक, आश्चर्यकारक,
ચમત્કૃતિ (सं.) देखो ચમત્કાર
ચમન (सं.) आनन्द, खुशी, हर्ष, चरागाह, गोरुओं के चरने का स्थान ।
ચમર (सं.) चँवर, चामर, व्याल व्यंजन, मोर की पंखोंद्वारा बना पंखा, माला, हार, गजरा ।
ચમાર (सं.) चमड़ा कमानेवाला, चमड़े का धन्धा करनेवाला, चर्म-कार, मोची ।
ચંપક (सं.) वृक्ष विशेष, पुष्प विशेष, [जाना बे पते होजाना ।
ચંપત થવું (क्रि.) छू बोलना, भाग
ચંપલ (सं.) पादुका, खड़ाऊँ, स्लीपर, चपकन जूते ।
ચંપાનું ફુલ (सं.) चम्पा वृक्ष का पुष्प ।
ચંપાવરણું (वि.) चम्पाके रंगका ।

ચંપાવવું (क्रि.) दबवाना, अंग दबवाना। [अंगों की दाबा

ચંપી (सं.) हाथ पाँव का चम्पन

ચંપેલી-મેલી (सं.) चमेली, लता विशेष।

ચંબુ (सं.) प्याला, पेय द्रव्य पीने का पात्र।

ચંબૂ (सं.) सेना, दल, कटक, सेना विशेष।

ચર (वि.) उगने योग्य आस्थिर, अस्थाई, चलनशील, (सं.) खाई, खड्ड।

ચરકો-ખો (सं.) घाव, चोट, लाभ चरखा सूत कातने का रहँटा,

ચરચર (क्रि. वि.) तेजी से शीघ्रता पूर्वक, चपलता युक्त, चंचलता पूर्ण।

ચરચર લખવું (सं.) लकीर मारना, सपाटे से लिखना।

ચરચરવું (क्रि.) किसी के लिये अति दुखी होना।

ચર્ચા (सं.) जिक्र, आन्दोलन, तर्क, बतकहाव, विचार।

ચરચાપત્ર (सं.) लिखापढ़ी, पत्री (सं.) लिखापढ़ी करने वाला आढ़तिया।

ચરણ (सं.) पाँव, पैर, पद, अंघ्रि, (सं.) चरने का काम।

ચરણગત (सं.) अनुयायी, अवलंबी आश्रित, परवश, शरणागत,।

ચરણામૃત (सं.) चरणोदक, पादोदक मान्यों के पैरों को धोया हुवा जल।

ચરણારવિંદ (सं.) चरणकमल, पादपद्म, कमल सदृश पैर।

ચરણોદક (सं.) चरणामृत, पादोदक।

ચરંદુ (सं.) पशु, चरनेवाला जीव, चरिन्दा। [चर्बी, गर्व।

ચરબી (सं.) मोटा, पुष्ठ, वसा भेद,

ચરબીદાર-વાળું (वि.) मेदयुक्त, वसापूर्ण, मोटा, भराहुवा।

ચર્મ (सं.) चमड़ा, खाल, त्वक छाल।

ચર્મપત્ર (सं.) लिखने के लिये कमाया हुवा चमड़ा, चमड़े का कागज़।

ચરરર (सं.) शब्द विशेष, चरोंटे का शब्द, चर्चर्र का शब्द।

ચરવાદાર (सं.) साईस

ચરવી (सं.) प्याला, कटोरा, एक प्रकार की कड़ाहा।

ચરવું (क्रि.) चरना, घासखाना।

ચરસ (सं.) प्यार, डाह, स्पर्द्धा, मादक द्रव्य विशेष, बेहोशी पैदा करनेवाली औषधि, मादकबूटी

ચરસાચરસી (સં.) बराबरी, स्पर्धा

ચરાઈ-મણ (સં.) पशु के चराने की मजदूरी धनके रूपमें, चराई के दाम। [प्रकाश, रोशनी।

ચરાગ (સં.) दीपक, दीप, दीवा,

ચરાવવું (क्रि.) चराना, पशु, चराना।

ચરિત્ર (સં.) कार्य, आचरण, वीरता का काम, बड़ा भारी काम, उपाख्यान, तज़किरा, वीरता का वर्णन। [जाना, हड़प करजाना।

ચરી જવું (क्रि.) खाजाना निगल-

ચરૂ (સં.) एक बड़ा ताम्र पात्र, यज्ञान्न, यज्ञ का शेष अन्न।

ચલ ચલ (विस्म०) जा, निकल, दूर हो, चलाजा, हटजा।

ચલણ (સં.) शक्ति, आचरण, चालचलन, चाल। [मौजूद।

ચલણી (वि.) चलता हुवा, वर्तमान,

ચલમ (સં.) चिलम, मिट्टी काष्ठ, या धातु का बनाहुवा पात्र जिसमें तमाखू रखकर पाक की जाती है।

ચલાઉ (वि.) [illegible]ीय, ग्रहण योग्य, धकाऊ।

ચલાણું (સં.) काष्ठ अथवा मृत्तिका का बना हुवा प्याला।

ચલાવવું (क्रि.) सरकाना, हटाना, हिलाना, चाल देना, चलाना, हाँकना, आगे बढ़ाना, दूसरे के लिये व्यवस्था करना, चुकाना, ठीक करना, नेव डालना, आग लगाना, चालु रखना, जारी रखना।

ચલિત (वि.) कंपित, चपल, हिलता हुवा, अस्थिर।

ચલ્લો-લ્લી (સં.) गैरैया (पक्षी)

ચશ (સં.) मोतियों का माप, वज़न, योग्यता, शक्ति, अनुभव, इल्म, ज्ञान, स्वाद, लज़्ज़त, ढंग।

ચવચવ (સં.) एक संग भोजन, आचार, मुरब्बा (वि.) खिचड़ी, मिला हुवा, मिश्रित।

ચવાવવું (क्रि.) खाना या चबाना।

ચવડું (સં.) सख्त, कठिन, कठोर, चिमड़ा, कड़ा। [दार स्वादिष्ट।

ચસદાર (वि.) स्वादयुक्त, ज़ायके

ચવલી (સં.) दुअन्नी, दो आने का सिक्का। [चंचलता, बेकली।

ચવળાટ (સં.) व्याकुलता, बेचैनी,

ચવાઈ (સં.) मज़ाक, दिल्लगी, हँसी, नकल, हँसी ठट्ठा।

ચવાવું (क्रि.) जनता के समक्ष दोषी होना, कलंकित होना।

ચવાણું—ણેણું (सं.) चबाने योग्य, चबेना, शुष्क खाद्य वस्तु।
ચક્ષુ—ક્ષ—ખ્ખ (सं.) नेत्र, आँख, नयन। [सूरदास, फूटी आँखों का।
ચક્ષુભેદ્ય (सं.) अंधा, नेत्र हीन,
ચશ્માં (सं.) ऐनक, उपनेत्र, आँखों के आगे लगाये जाने वाले काच।
ચસકે (सं.) चीसयुक्त दर्द, ऐसा दर्द जिसमें काँटे से चुभते हों।
ચસકવું (क्रि.) हिलना, सरकना पागल होना।
ચસકો (सं.) कान में दर्द, ऐसा कर्णशूळ जिसमें चीस उठती हो, चीर फाड़ सरीखा दर्द, चोंचला, इच्छा, चाह, डींग, शेखी,
ચસચસાટ (क्रि. वि.) लड़ाई की हालत में। [होना, नाश होना,
ચસવું (क्रि.) मरना, डूबना, पतन
ચળ (वि.) अस्थिर, चल, अनित्य थोड़े दिन का, नाशमान, खुल, लत, चिसका, खाज।
ચળક ચળક (क्रि. वि.) उज्ज्वल, दमक दमक, दैदीप्यमान।
ચળકતું (वि.) चमकदार, उज्ज्वल, प्रकाशमान, दमकता हुवा, प्रभान्वित, भड़कदार, शोभित।
ચળકવું (क्रि.) चमकना, दमकना, प्रकाशित होना।
ચળકાટ (सं.) चमक, प्रकाश, शुहरत, नामवरी, तेजज्योति, रोशनी।
ચળવળ (सं.) व्याकुलता, बेचैनी, चिन्ता, सोच, कठिनता।
ચળાવવું (क्रि.) खपरे फिरवाना, घर छवाना, कवेलू फेरना, भुलाना, भटकाना, बहकाना।
ચળિત (वि.) हिलता हुवा, कंपित
ચળી જવું (क्रि.) पागल होना, मूर्ख होना, बेअक़ बनना, भूलना।
ચળું કરવું (क्रि.) भोजन के बाद पानी पीकर हाथ मुँह धोना, कुलू करना। [कूफ, अस्थिर, डगमग।
ચળેલ—લો—(वि.) पागल, मूर्ख, बेव-
ચક્ષુ (सं.) नेत्र, आँख, नयन।
ચા (सं.) चाय, चाय वृक्ष की पत्तियाँ जिसे लोग उबाल कर पीते हैं। एक मादक वस्तु विशेष।
ચાઉસ (सं.) सूबेदार।
ચાક (सं.) खड़िया मिट्टी, चाक मिट्टी, पहिया, चक्की का पाट।
ચાકર (सं.) सेवक, नौकर, भृत्य।
ચાકરડી (सं.) दासी, बाँदी, भृत्या।

ચાકર નફર (सं.) चेला, नौकर, साथी, घरका नौकर, चरू,

ચાકરી (सं.) सेवा, भृत्यता, नौकरी, दासता, गुलामी ।

ચાકરી કરવી (कि.) सेवा करना, नोकरी करना, गुलामी करना, राह देखना ।

ચાકળ (सं.) छोटासा साँप, सपला।

ચાકળો (सं.) पानी खींचने का चाक, पानी निकालने का पहिया ।

ચાકી (सं.) चमड़े का बनी गोल बैठक ।

ચાકુ (सं.) चक्कू, छुरा, छुर ।

ચાખડી (सं.) लकड़ी के जूते, पादुका, खड़ाऊं ।

ચાખવું (कि.) स्वादलेना, चखना, जायकालेना, परीक्षा करना ।

ચાટણું (कि.) चाटना, अवलेह, औषधिका एक रूप (चटनी)

ચાટલું (सं.) दर्पण, शीशा, सूरत शक्ल, रूप, चेहरा ।

ચાટવો (सं.) लकड़ी का चम्मच, चाटू, काठ का बना चमचा ।

ચાડુકી-ડો (सं.) बकी, बातूनी, गप्पी, हरेक काममें अपनेको बुद्धिमान बनाने की दम भरने वाला ।

ચાઠું—ચાભઠું (सं.) चकत्ता, दाग, चिन्ह, चट्टा, फोड़ा, घाव, बाघूर, ददोरा ।

ચાડવર (सं.) हल।

ચાડિયો (सं.) चुगलखोर, निंदक ।

ચાડી (सं.) निंदा, कलंक, दोष, चुगली ।

ચાડીખાવી (कि.) चुगली खाना, अपवाद करना, अपयशदेना, दोष लगाना, झूठा कलंक लगाना ।

ચાડું (सं.) दीवट, दीपक रखने की (दीवट) मुँह, चेहरा ।

ચાતક (सं.) पपीहा, पक्षी विशेष, एक पक्षी जो स्वाति नक्षत्र के वर्षा जल को ही पान करता है ।

ચાતરવું (कि.) हिलना, सरकना, पीछे हटनां, पीठदेना, बाज रहना, फिसलना, खिसकना ।

ચાતરી (सं.) चरखे के पहिये की धुरा, घूमनेवाला, चक्कर खानेवाला।

ચાતુર (सं.) चतुर, चालाक धूर्त, प्रवीण, कुशल ।

ચાતુરમાસ (सं.) चार महीनों की अवधि, चार महीने, वर्षाऋतु ।

ચાતુરી (सं.) दक्षता, नैपुण्य, कौशल, चतुरता, होशियारी ।

ચાતુર્ય (सं.) चतुराई, चतुरता, धूर्तता। [बड़ा उपवस्त्र।
ચાદર (सं.) चद्दर, पलंगपोश, एक
ચાદાની (सं.) केतली, चाय भरने का बर्तन।
ચાનક (सं.) नसीहित, डॉट, रक्षा। चिंता, चितावनी, पूर्वबोधन, सूचना।
ચાનક (सं.) छोटी सिकी हुई रोटी, छोटी टिकिया। मीठी रोटी (छोटी)
ચાન્દ્રાયણ (सं.) व्रत विशेष, चन्द्र व्रत, वह व्रत जिसमे शुक्र प्रतिपदा से नित्य एक ग्रास पूर्णिमातक बढाकर उसी भाँति कृष्णपक्षकी अंतिम तिथि तक फिर एक ग्रास भोजन पर आ ठहरे।
ચાપ (सं.) धनुष, कोदण्ड, शरासन, दाप, चाबुक, हंटर, कोड़ा, प्रतोद।
ચાપાચાપી (सं.) उत्तम प्रबंध, थकान, धीमापन, ढीलापन।
ચાપટ (सं.) एक प्रकार की चपाती आलिङ्गन, गलबहियाँ। आँकड़ा।
ચાપડો (सं.) आँकड़ा, हुक, (लोहे या पीतलका) [पत्तो,
ચાપલુસી (सं.) खुशामद, लल्ला-
ચાબક--ખુક (सं.) घोड़ेका हंटर, कोड़ा, प्रतोद।
ચાબખો (सं.) उपदेश प्रद पद्य, शिक्षाप्रद छंद, नसीहत की नज़्म।
ચાબુકસ્વાર (सं.) चबैया, असवार, घुड़दौड़ का सवार, अश्व शिक्षक। [निशान, ददोरा फोड़ा।
ચામઠું (सं.) चकत्ता, दाग,
ચામડી (सं.) खाल, चमड़ा, चर्म।
ચામડિઓ (सं.) चमार, चर्मकार, चमड़ा रंगनेवाला, चमड़ेवाला।
ચામડું (सं.) चमड़ा, चर्म, सूखा चमड़ा, पका हुवा चमड़ा, खाल, चाम।
ચામર (सं.) चवर, चवँरी, पंखा, बालों की बनी चंवरी, मक्खी उड़ाने का।
ચામરસ (सं.) शारीरिक प्रसन्नता, विषय सम्बन्धी हर्ष।
ચામાચિડિયું (सं.) चमगीदड़, चर्माचिड़ी।
ચામાચેણુ (सं.) पूर्ववत् [कंचन।
ચામીકર (सं.) सोना, स्वर्ण, हेम,
ચામોઢ઼ (सं.) गर्व, घमण्ड, दर्प।
ચાર (सं.) हरी घास, जासूस, भेदिया, गुप्तदूत, चार, ४, संख्या विशेष।
ચારખૂટ (सं.) पृथ्वीके चारोंकोने, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ईशान।

ચારજુગ (सं.) चतुर्युग, सतयुग, द्वापर, त्रेता, कलि ।

ચારટ–ચારઠ (सं.) रथ, गाड़ी।

ચારણ (सं.) स्तुति कर्ता, प्रसंशक, भाट, बन्दी, जाति विशेष ।

ચારણી (सं.) चलनी, (छानने की)

ચાર દાણા (सं.) चार दाने, अन्न के चार दाने । [चराना ।

ચારવું (क्रि.) पशुचराना, ढोर

ચારાગા (सं.) गोचर भूमि, ढोरों के चरने की जगह, चरागाह ।

ચારૂ (वि.) सुन्दर, सुहावना, मनोहर, रमणीय, खूब सूरत ।

ચારેગમ (क्रि. वि.) चहुंधा, चारों ओर, चतुर्दिक ।

ચારો (सं.) चारा, घास, भूसा ।

ચાલ (सं.) चालचलन, आचरण, वर्ताव, लक्षण, गमन, चाल, गति, हरकत, वर्तमान, आधुनिक, रीति, ढङ्ग । [ढब, आचरण, रीति ।

ચાલચલગત–ચલણ (सं.) वर्ताव,

ચાલચલાઉ (वि.) गमनीय, आज्ञा योग, कामधकाऊ ।

ચાલણગાડી (सं.) गाड़ा गाँड़ी, चलती रहनेवाली गाड़ी ।

ચાલતાલગી–સુધી (क्रि. वि.) यथायोग्य, यथासंभव, यथासाध्य ।

ચાલતા–તું–થવું (क्रि.) चलेजाना,

ચાલતું (वि.) वर्तमान, साम्प्रतिक, आधुनिक, चालू ।

ચાલવું (क्रि.) चलना, हिलना, सरकना, जारी रखना, चालू रखना, करना, काम आना, काफी होना, बरबाद होना, ताक़त में होना ।

ચાલાક (वि.) धूर्त, निपुण, दक्ष, कुशळ । [धूर्तता ।

ચાલાકી (सं.) दक्षता, कुशळता,

ચાલી (सं.) घरों की पांक्ति, मकानों की कतार, बाजार, चाल ।

ચાલુ (सं.) वर्तमान, आधुनिक चलता हुवा, गति युक्त ।

ચાલ્યું (विस्म०) कुछ परवाह नहीं, कोई चिंता की बात नहीं, कोई बात नहीं ।

ચાલે તેવું (वि.) टिकाऊ, चलाऊ, गमनीय, धकाऊ ।

ચાવડી (सं.) पुलिस स्टेशन, थाना, दीवान आम ।

ચાવણિયાં (सं.) पीसने वाले, दाढ़ जबड़े, दाँत । [काटना ।

ચાવવું (क्रि.) चबाना, कुचलना,

આવી (सं.) कूँची, कुंजी, ताली, खूँटी,

આપીજવું (क्रि.) चबाजाना।

આસ-સ (सं.) हलकी लकीर, हल द्वारा खोदीगई लकीर, सीता, हानि, नीलकंठ, एकप्रकार का पक्षी।

આસણી (सं.) चाशनी, उबाला हुवा शक्करका रस, स्वाद, मज़ा, जायका, अनुभव, जांच, परीक्षा।

આસણી થવી (सं.) अच्छी प्रकार उबलजाना, सीजजाना।

આસ પાડવો (क्रि.) हलके द्वारा रेखा खींचना, लकीर करना।

આસવું (क्रि.) गहिरा जोतना, ओंडा हल चलाना।

આહ (सं.) इच्छा, प्रेम, ख्वाहिश मुहब्बत, चुनाव, स्नेह, चाय।

આહન (वि.) प्रकट, खुलाहुवा, सामान्य, साधारण, प्रत्यक्ष।

આહાવું (क्रि.) चाहना, इच्छाकरना, प्रेमकरना, ख्वाहिश करना, स्नेहकरना।

આહે (सं.) चाय, चा, पेय द्रव्यजो चाय वृक्षकी पत्तियों को उबालकर बनाया जाता है। [छन्ना।

આળણી (सं.) चालनी, छाननी।

આળવું (क्रि.) छानना, झारना, परखना, निर्णय करना, कवेलू अथवा खपरे छाना।

આળા (सं.) चेष्टाएँ, उछलकूद, खेल, कलोल, चालाकी, चोंचला।

આળાખોર (वि.) चंचल, खिलाड़ी बुरा, दुष्ट।

ચિક (सं.) चिकनाहट, गोंद।

ચિકટ (वि.) चेपदार, चिपचिपा। लेसदार, छुआव, छेड़, कंजूस।

ચિકટાવું (क्रि.) तेलसे या तेलकी किसी वस्तुसे दाग हो जाना, चीकटजाना।

ચિકણાઈ (सं.) चिकनाहट।

ચિકણું (वि.) तेलका, चिपचिपा, लेसदार, चिकना, चिमड़ा, लसलसा, लोभी, कृपण, सूम, कंजूस।

ચિકન (सं.) दस्तकारी, बेलबूटा बनाना, ककड़ी, खीरा।

ચિકનદોજ (सं.) दस्तकार, बेलबूटे काढनेवाला। [पूरा।

ચિકાર (वि.) भरपूर, पूर्ण, भरा,

ચિકાર ભરવુ (क्रि.) ठाँसकर भरना, किनारे तक भरना, होंठ तक भरना।

ચિકારી (सं.) चिकारा, वाद्य विशेष, स्वर यंत्र विशेष, एक प्रकारकी सारंगी ।
ચિકાસ (सं.) चिकनापन, चिकनाहट, चिपचिपापन, बनावट जाली,
ચિકિત્સા (सं.) इलाज, रोगविचार औषध प्रयोग, व्याधिका अपनय ।
ચિકિત્સા ખોર (वि.) दोषान्वेषी व्यक्ति, दोष निहारनेवाला पुरुष, छिद्रान्वेषी । [चहला ।
ચિખલ (सं.) कीच, कीचड़ पंक,
ચિંગુ (वि.) मक्कार, चालाक, धोके बाज ।
ચિચરવટી (सं.) जमीन की तंग गली, जमीन की सकरी धज्जी या पट्टी ।
ચિચરવટો (सं.) डर, भय अन्देशा,
ચિચવો (सं.) एक प्रकार का झूला,
ચિંચવાવવું (क्रि.) तरसाना, ललचाना । [शब्द ।
ચિંચી (सं.) चींचीं, गैरैया पक्षी का
ચિંચિઆરી પાડવી-મારવી (क्रि.) चिक्कार मारना, चिंघाड़ना ।
ચિચિઆરી (सं.) चिक्कार, चिंघाड़ ।
ચિચુડો (सं.) चीयाँ, इमली का बीज,
ચિટકાવવું (क्रि.) चुभाना, कोचना, चिपकाना, छड़ी मारना ।
ચિટનીસ (सं.) मंत्री, सिरस्तेदार पद विशेष ।
ચિઠ્ઠી (सं.) पत्र, खत, निमंत्रण-पत्र, आज्ञा, हुक्म, टीप, तमस्सुक, मुचलका, परचा, टिकट, चिन्ह-पत्र, शोकपत्र, पाती ।
ચિઠ્ઠી કઢાવવી (क्रि.) चिठ्ठी निकलवाना, टिकट लेना ।
ચિડવવું (क्रि.) चिढ़ाना, खिझाना, क्लेशदेना, कुढ़ाना ।
ચિડાવેલું (वि.) चिढाहुवा, कुपित।
ચિડિઅલ-ઓ (वि.) चिड़ चिड़हा, तुनुक मिजाज, [टेनी, नाटा ।
ચિણકુલ (वि.) नन्हा, छोटा,
ચિણગારી-નગારી (सं.) चिनगारी, शोला, लूका, अग्नि, स्फुलिंग ।
ચિત્ત (सं.) विचार, ध्यान, दिल, मन, हृदय, अंतःकरण स्मरण ।
ચિત આપવું-ધાલવું (क्रि.) ध्यान देना, विचार करना, सोचना ।
ચિત્તચોર (सं.) मन को चुराने वाला मनोहर, मनमोहक । [जाति विशेष
ચિત્તપાવન (सं.) ब्राह्मणों की एक
ચિત્તવૃત્તિ (सं.) चित्त का विकार ।
ચિત્તભ્રમ (वि.) उन्माद, चित्त का ज्ञान शून्य होजाना, पागल व्याकुल ।
ચિત્તભ્રમિત (वि.) चित्त की घबराहट ।

चित्तभ्रंश (सं.) चित्त भ्रम, चित्त विक्षेप, मन की भूल।
चित्तवेधक (वि.) दिलपर असर करने वाला, प्रभावोत्पादक, करुणाजनक।
चितरवुं (क्रि.) पता लगाना, खींचना, नकशा खींचना, चित्रबनाना।
चित्तरो-चित्तो (सं.) चीता, व्याघ्र, तेंदुवा। [दिल की हालत।
चित्त स्थिति (सं.) चित्त की दशा,
चितणी (सं.) कँपकँपी, थरथराहट, डर, खौफ, अरुचि, घृणा।
चिता (सं.) मुर्दा जलाने का मचान, मृतक दाह के लिये संचित काष्ठ समूह।
चिंता (सं.) फिक्र, सोच, परवाह।
चिंता करवी (क्रि.) फिकर करना, सोचना, चिंता करना।
चिंतातुर-युक्त (सं.) उद्विग्न, चिंतित, चिंताकुल, व्याकुल, आकुल। [चिंता युक्त, फिकर से।
चिंतापूर्वक (क्रि. वि.) सचिंत,
चिंतामणि (सं.) गणेशजी, मणि विशेष, कल्पित मणि, पारस पथर, एक कल्पित मणि, कहते हैं जिसके संसर्ग से लोहा सोना बन जाता है।
चिताभस्म (सं.) मृतक दाह की राख, चिता की राख, मृतक भस्म।
चिताभूमि (सं.) मरघट, मृतक दाह करने का स्थान, श्मशान, मसान,
चितार (सं.) पसन्दगी, कथन, ख्यान, कहानी, चित्र, छवि, तस्वीर।
चितरवुं (क्रि.) रँगना, तस्वीर उतारना, नक्शा बनाना, चित्र बनाना। [नक्शा खींचनेवाला।
चितारो (सं.) चित्रकार, नक्काश,
चिंतित (वि.) सोची, चिन्तायुत, शोकान्वित, [मूर्ति रूप, नकशा।
चित्र (सं.) तस्वीर, छबि, पट,
चित्रकार (सं.) देखो चितारो।
चित्रकळा (सं.) चित्र विद्या, तस्वीर बनाने की विद्या, नक्शा उतारने का इल्म।
चित्रा (सं.) नक्षत्र विशेष, चौदहवाँ नक्षत्र, श्रीकृष्ण की एक सखी का नाम, एक नदी का नाम।
चित्रामणु (सं.) देखो चित्र
चिथरडी-री-रुं (सं.) फटा वस्त्र, गूदड़, कपरा।
चिथरीयो (वि.) गूदड़िया गूदड़वाला, फटे टूटे वस्त्रोंवाला।
चिथरेहाल (सं.) दीन, गरीब, गूदड़िया।

ચિથરાં વીણવાં (क्रि.) भिक्षुक वृत्ति करना, भिक्षुक से भी दीन रहना।
ચિદ્ઘન-ચિદ્રૂપ (सं.) ज्ञानमय, ज्ञानस्वरूप, स्फूर्तिमान, मनोहर।
ચિદાનંદ (सं.) ज्ञान और आनन्द स्वरूप परमात्मा।
ચિનાઈ કામ-ચિની કામ (सं.) चीनी के बरतन, चीनी का काम।
ચિન્તન (सं.) ध्यान, स्मरण, याद
ચિન્તન કરવું (क्रि.) ध्यान करना, याद करना, स्मरण करना, सोचना।
ચિન્ત્ય (वि.) ख्याल, विचार, जो चिन्तन किया जाय।
ચિંદડી (सं.) धजी, चिन्दी, गुदड़ी,
ચિન્હ (सं.) निशान, लक्षण, अंक, दाग, परिचय।
ચિપવું (क्रि.) टालमटोल करना, हेरफेर करना, उलटापलटी करना।
ચિપડો (सं.) आखों का बलगम, आखों का कीचड़, गीड़।
ચિપિયો (वि.) चिमटा, संगसी,
ચિબાવલું (वि.) दुष्ट, बुरा, कमीना, तुच्छ, हकीर, ओछा, हलका, बालकसा, छिछोरपन।
ચિબુ (वि.) चपटी नाकवाला।
ચિભડું (सं.) खुशबूदार तरबूज या खरबूजा, सिर, मूँड, मुख्य, उत्तम। [लेना।
ચિમટવું (क्रि.) नोचना, चुटकी
ચિમની (सं.) चिमनी [सूम, कंजूस
ચિમ્મડ (वि.) लोभी, कृपण,
ચિમળાઈ જવું (क्रि.) सिकुड़ जाना झुर्री पड़ना, अलसा जाना, कुम्हला जाना।
ચિમળાવું (क्रि.) मुरझाना कुम्हलाना, रंज करना, रोना, दोपहर का भोजन करना।
ચિયાવું (क्रि.) चूँचूँ करना, मुर्गी के बच्चों का चूँचूँ करना।
ચિમોટી (सं.) गर्दन, गला, कंठ।
ચિરકાલ (सं.) दीर्घकाल, बहुत देर। [तराशना।
ચિરવું (क्रि.) चीरना, फाड़ना,
ચિરંજીવ-વી (वि.) दीर्घ जीवी, दीर्घायु, बड़ी उम्रका।
ચિરાડો (सं.) चीर, दरार, तड़कन।
ચિલખત (सं.) कवच, लोहकवच,
ચીખલ (सं.) कीच, कीचड़, गारा गीली मिट्टी, दलदल, पङ्क।
ચીચવો (सं.) झूला, लटकन। [गुण,
ચીજ (सं.) वस्तु, पदार्थ, द्रव्य,
ચીડ (सं.) चिढ़ गुस्सा, क्रोध,
ચિડકણું (वि.) चिड़चिड़ा, तुनुक मिजाज, चिढ़नेवाला। [होना।
ચિડવવું (क्रि.) चिढ़ना, क्रोध

ચીડ (सं.) घृणा, द्वेष,

ચીડવું–ચીડાવું (सं.) कुपित होना, नाराज होना, क्रोधित होना, गुस्से होना । [मिजाज, चटकनेवाला ।

ચીડિયો (सं.) चिड़चिड़ा, तुनुक-

ચીંધવું (क्रि.) दिखलाना,

ચીનીકબાલા (सं.) कबाबचीनी, औषधि विशेष, चीन देश की जड़ी।

ચીનીકામ (सं.) चीनी मिट्टी के बर्तन, चीनी के पात्र, चीनी मिट्टी का काम ।

ચીપ (सं.) बाँसकी फाँस, कीमड़ी बांस की, खपची, धज्जी, चिन्दी । धारी, कतरन, पट्टी

ચીપવું (क्रि.) ताश के पत्ते उलट पुलट करना, ताश पीसना ।

ચીપાસોનું (सं.) शुद्ध सोना, उत्तम स्वर्ण, खालिस सोना, बढिया स्वर्ण । [छिछोरपन ।

ચીબાવળાપણું (सं.) बचपन,

ચીભડું (सं.) तरबूज, खरबूज़ा ।

ચીમળાવું (क्रि.) कुम्हलाना, मुरझाना, सूखना, [सिकोड़ना ।

ચીમડી નાંખવું (क्रि.) समेटना,

ચીર (सं.) फाँक, काट, रेशमी वस्त्र टुकड़ा, खण्ड ।

ચીરડો (सं.) सड़क, पगदंडी ।

ચીરવું (क्रि.) काटना, तराशना, फाड़ना धज्जी उतारना ।

ચીરાઇ–મણ (सं.) चीरने का मेहनताना । तराशने का मूल्य ।

ચીરી (सं.) छोटा टुकड़ा ।

ચીરો (सं.) दरार, चीर, फाड़, काट, पगदंडी, घाट, बाँध ।

ચીલ (सं.) एक पक्षी विशेष ।

ચીલો (सं.) लीक, गाड़ी के पहिये चलने का मार्ग, गडवार, चक्र मार्ग ।

ચીવટ (सं.) चिंता, सोच, फिक्र,

ચીસ (सं.) किलकारी, चाख़, कूक, चिल्लाहट, चिटकार, चिचियाहट ।

ચીસ પાડવી–મારવી (क्रि.) चिल्लाना चिचिया, चीखमारना, कूकना।

ચીહિડિયું (वि.) देखो ચીડિયું ।

ચીંસું (वि.) कंजूस, कृपण, लालची ।

ચુઆ (सं.) एक राळ या गन्धा बिरोजा समान वस्तु विशेष ।

ચુઇ (सं.) गलफड़ा, खिलाड़िन ।

ચુંક (सं.) वायु गोला, वायु झाक, ऐंठन, मरोड़, कँटिया, छोटा काँटा।

ચુક આવવી-આવવી (क्रि.) मरोड़ आना, शूल उठना, जोड़ना, बाँधना, टाँकना । [कुसूर, चूक ।

ચુક (सं.) गलती, भूल, अपराध,

ચુકતે હિસાબે (क्रि. वि.) पूर्ण, पूरा, आखरिमे, पूरीतारसे, अन्त को चूकता खाता ।

ચુકથી (क्रि. वि.) बेपरवाही से, असावधानीसे, गफलतसे, भूलसे।

ચુકવવું (क्रि.) चुकाना, निपटाना ऋण चुकाना, फैसला करना, तय करना, भगना, अलग होना बचना।

ચુકવું (क्रि.) गलती करना, भूलकरना, चूकना, भूलना ।

ચુકાદો (सं.) फैसला, निर्णय, विचार, बन्दोबस्त ।

ચુકાવવું (क्रि) चुकाना, तयकरना फैसला करना, हिसाब चुकाना ।

ચુકું (वि.) आड़ा, तिरछा ।

ચુકેલું (क्रि. वि.) भूलमें, गलत-समझाहुवा, मूल्य, लागत ।

ચુંખલું (वि.) न्यून दृष्टिका, तिरछी आँखोंका, भेड़ा दृष्टिवाला, कैरा ।

ચુગલી (सं.) निंदा, पीठपीछे निंदाकरना, कलह । [खानेवाला ।

ચુગલીખોર (सं.) निन्दक, चुगली

ચુંગાલ (सं.) पौरुष, शक्ति, बल, रखवाली, रक्षा, हवालात, पंजा, नख, चंगुल ।

ચુંગી (सं.) अन्नकाकर, अनाजका महसूल, तामाखू पीनेकी नली । [छाती ।

ચુંચી (सं.) थन, स्तन, स्तनमुख

ચુચું (सं.) चीचों का शब्द, चीची

ચુંચો (सं.) टेढी आँखोवाला, डेरा

ચુંટવું (क्रि.) उठालेना, चुनना, संग्रह करना, पसन्द करना, छानना ।

ચુંટાવવું (क्रि.) चुनना, चाहना ।

ચુંટી (सं.) चुटकी

ચુંટી લેવી (क्रि.) नोंचना, सताना।

ચુંટી કાઢેલું (वि.) छाना हुवा, पसंद किया हुवा, चुना हुवा, छाँटा हुवा ।

ચુડ (सं.) ताना, रस्सी, सोने या चाँदी की चूड़ियाँ जिन्हें स्त्रियाँ ही पहिनती हैं । [कलेश ।

ચુડગર (सं.) चूड़ियाँ बनानेवाला,

ચુડાકર્મ-ડી કર્મ (सं.) पति की मृत्यु पश्चात चूड़ियों का खंडन, संस्कार विशेष. मुंडन, । [फूहड़]
ચુડેલ (सं.) प्रेतिनी, डाकिनी,
ચુડો (सं.) चूड़ा, चूड़ियाँ, हाथों पर पहिनने की बंगड़ी ।
ચુથવું-ઉથલપાથલ કરવું (क्रि.) नोचना, ऊथपुथल करना, नष्ट करना, बरबाद करना, बिगाड़ना । लूटना, खोजना । [खसोट ।
ચુથાચુથ (सं.) नष्ट भ्रष्ट, लूट
ચુંથાવું (क्रि.) व्याकुल होना, बेचैन होना, दुखी होना, घबरा जाना।
ચુંથો (सं.) गूदड़ा, गूदा, चिथड़ा लत्ता । [का वस्त्र; ओढनी ।
ચુંદડી (सं.) चूँदड़ी, स्त्रियों के ओढने
ચુનવું (क्रि.) चुनना, उठाना, बीनना, बटोरना ।
ચુનાની ભઠ્ઠી (सं.) चूनेकी भट्टी, वह भट्टी जिसमें कंकर. जलाकर चूनाबनाया जाता है ।
ચુનારો (सं.) चूनाजलानेवाला, कुंभार, चूनाबनानेवाला, ।
ચુનાક્ષ-ળવો (सं.) चूनेका पात्र, चूना रखनेका बर्तन ।
ચુનોળાં (वि.) चूनेका ।
ચુની (सं.) छोटी मणि, मणि विशेष ।
ચુનો (सं.) चूना, चूर्णजो कङ्कर पत्थर या सीपको जलाकर बनाते हैं, जो मकान बनाने या पोतने के काम में आता है ।
ચુપ (विस्म.) खामोशहो, चुपरहो।
ચુપકીથી (सं.) चुप्पी, शांति, मौनता ।
ચુપચાપ (वि.) खामोश, चुप ।
ચુંબક (सं.) अयस्कान्त, लोहा खींचने वाली एक धातु ।
ચુંબન (सं.) मुख संयोग, चूमा, चुम्बा, प्यार ।
ચુમવું (क्रि.) चूमना, प्यारलेना, मुखसे चूसने का शब्द करना ।
ચુમ્માળો (सं.) मोटा कम्मल, भद्दा कम्मल ।
ચુમીને (क्रि. वि.) आवश्यकता से, क्षण भिड़कर, जरूरत ।
ચુર (सं.) मस्त, उन्मत्त ।
ચુરણ (सं.) चूरा, चूर्ण, पाचक औषधि । [चूरमा ।
ચુરમ (सं.) एक प्रकारनी मिठाई,
ચુરવું (क्रि.) कुचलना, चूर्ण करना, चूराकरना, बुकनी बनाना ।
ચુરો (सं.) चूरा, चूर्ण, खंडखंड, बुकनी, टुकड़ा ।

ચુરો કરવો (क्रि.) चूरचूर करना, टुकड़े टुकड़े करना, पीसना।
ચુલ—લો (सं.) चूल्हा, भट्टी, मिट्टी से बनाहुवा गड्ढा जिसमें आग रख कर भोजन बनाते हैं।
ચુવું (क्रि.) टपकना, चूना, रसना, छनना, गिरना, झरना, चुवना।
ચુવો (सं.) चूहा, मूसा, छेद, दरार।
ચુસવું (क्रि.) पीलेना, चूसलेना, मोखलेना, खींचलेना। [सरगर्म,
ચુસ્ત (वि.) उत्साही, लौलीन,
ચુસવું (क्रि.) देखो ચુસવું,
ચૂડામણિ (सं.) अलङ्कार, विशेष, शिरोरत्न, शिरोभूषण, मुकुटमणि।
ચે (सं.) ढेर,
ચેગ્ગી (सं.) घमण्ड, गर्व, दर्प, शेखी।
ચેંચેં (सं.) पक्षियोंका कलरव, चांचीं, बकबक, बकवाद।
ચેટક (सं.) जादू, चालाकी, मक्कारी टोना इंद्रजाल, दगाबाजी।
ચેડુ (सं.) एक प्रकारका गेंदकाखेल।
ચેંડુલ (सं.) चंडूल, पक्षी विशेष!
ચેરુ (सं.) तिल, मस्सा,
ચેતન—ના (सं.) आत्मा, प्राणी, जीव, बुद्धि, समझ, अनुभव, बोध, ज्ञानवान्।
ચેતવણી (सं.) चेतावनी, खबर, सूचना, पूर्व बोधन।
ચેતવવું (क्रि.) सावधान करना आग लगाना, सुलगाना, सूचित करना
ચેતવું (क्रि.) सावधान होना, होशीयार होना, सँभलना, खबरदार होना, स्मरण रखना।
ચેન (सं.) चैन, सुख, आनंद, हर्ष, अल्हाद, प्रसन्नता।
ચેપ (सं.) छूने से लगनेवाला, बीमारी की छूत, खराब करने वाला, बिल्ली, खरहा, सत, मवाद, पीव, कुसंगति, दुष्ट सम्मिलन, हानिकारक वस्तु, कंटक।
ચેપવું (क्रि.) दबाना, चाँपना, मलना, निचोड़ना।
ચેપી (सं.) स्पर्श से लगजाने वाला, उड़ के लगनेवाला रोग, छूत की बीमारी। [प्रकाश।
ચેરાગ (सं.) दीप, दीपक, चिराग,
ચેરીમેરી (सं.) भेंट, इनाम, पुरस्कार, रिश्वत, घूँस, चेरीमेरी।
ચેરો (सं.) खरोचन, (वि.) नटखट, दुष्ट, बुरा।
ચેલી (सं.) शिष्या, चेली।
ચેલો (सं.) चेला, शिष्य।

ચેષ્ટા (सं.) कायिक व्यापार, मजाक, हँसी ठट्ठा, बुरी चालाकियाँ,

ચેષ્ટાખોર (वि.) दुष्ट, बुरा, निंदक।

ચેહ (सं.) चिता, मृतक के अग्नि संस्कार के लिये संगृहीत काष्ट।

ચેહેરવું (क्रि.) कुरचना, छीलना, मिटाना, खुरेदना।

ચેહેરદાર–રાબાજ (सं.) खुबसूरत, सुन्दर, रूपवान।

ચેહેરો (सं.) सूरत, शक्ल, मुख, चेहरा, रूप, आकार।

ચેહેરો પડાવવો (क्रि.) हजामत बनवाना, क्षौर कराना, बाल बनवाना।

ચેળ (सं.) खाज, खुजली, चुल।

ચેળ આવવી (क्रि.) खुजली होना, चुल चलना, खुजाल उठना।

ચૈતન (सं.) जीवात्मा, चतन, विचार, चेत, चेतना, जीव, आत्मा।

ચૈતનવાળું (वि.) जिन्दा, जीता, सजीव, जीवित।

ચૈતન્ય (सं.) बुद्धि, ज्ञान; ब्रह्म, जीवात्मा, परमात्मा।

ચૈત્ર–ચઈતર (सं.) हिन्दू महीनों का प्रथम मास, मधुमास, वसन्त ऋतु का प्रथम मास।

ચોંક (सं.) चौंक, अकस्मात झिझक ठिठक।

ચોક (सं.) आंगन, अँगना, चौहट्ट, चौराहा, बाजार, चुने का फर्श, चौखुँटा, हाट, पैठ, गूदड़ी।

ચોકઠું (सं.) चौखट, फ्रेम, शृंगार, आभूषण।

ચોકઠું બેસાડવું (क्रि) फ्रेम बिठाना, बिठाना, ठीक करना चौकठ जड़ना।

ચોકડી (सं.) पोशाब सम्बंधी, तारा का चिन्ह, जोड़ का चिन्ह, +, गुणा का चिन्ह, ×,

ચોકડી મુકવી (क्रि.) सिफर लगाना, चौकड़ा का चिन्ह लगाना।

ચોકવું (क्रि.) हिचकना, चौंकना,

ચોકસ (वि.) ठीक, उचित मुनासिब, सावधान, चौकन्ना, सतर्क।

ચોકસાઈ–સી (सं) सावधानी, सतर्कता, रक्षा, कर्तव्यज्ञान।

ચોક્સી (वि.) स्वर्ण और चाँदीकी परीक्षा, जाँच।

ચોકિયાત (सं.) रक्षक, पाहरू, चौकीदार, रखवाला।

ચોકી (सं.) पहिरा, रक्षा, पोलिस का दरवाजा।

ચોકી પેહેરો (सं.) रखवारी, पहरा, खबरदारी, रक्षा।

ચોકો (सं.) गोबर मृत्तिका से लीपा हुआ स्थान, वह स्थान जहाँ रसोई बनाई जाती है, चौकोना स्थान, चौखूँटा स्थान, पवित्र स्थान । [ईमानदारी ।

ચોખ (सं.) निर्मळता, शुद्धता,

ચોખા (सं.) चावल, तंदुल, धान, शालि । [चौकोना, चतुष्कोण ।

ચોખુણુ (वि.) चौखूना, चौखूटा,

ચોખ્ખાઈ (सं.) निर्मलता. पवित्रता, शुद्धता, सफाई ।

ચોગણું (सं.) चौगुणा, चौहरता, चौलड़ा, चतुर्गुण ।

ચોગમ (क्रि. वि.) सबओर, चारोंओर, चहुँधा ।

ચોગાન (सं) क्षेत्र, मैदान, खेत, खुलीजगह, बागीचा, उद्यान ।

ચોટ (सं.) व्रण, घाव, चपेट, घुस्सा, पटकन, आघात, पछाड़, मुक्का, धक्का ।

ચોટલો (सं.) गुथे हुए बाल, चोटी, गुथीचोटी, स्त्रियों की चोटी ।

ચોટલો ગુંથવું (क्रि.) माथा गुथना, सिर गुंथना, बालगुंथना ।

ચોટવું (क्रि.) चिपकना, चिपटना, लगजाना ।

ચોંટાડવું (क्रि.) चिपकाना, जमाना, गोंद लगाना, लेई लगाना ।

ચોટ્ટાઈ (सं.) चोरी, बदमाशी। बेजाकाम ।

ચોટ્ટો (सं.) चोर, तस्कर, स्तेन, बदमाश, दुष्ट, अज्ञान ।

ચોડ (सं.) ढेर, राशि, समूह ।

ચોડવવુ (क्रि.) पकाना, रसोई बनाना ।

ચોડવું (सं.) लगाना, रखना, पलस्तर या अस्तर करना ।

ચોડાણ (सं.) चौड़ाई, फैलाव, विस्तार, पाट, चकलाई, विस्तृति।

ચોડુ કરવું (क्रि.) फैलाना, चौड़ा करना, प्रकट करना, फोड़ना ।

ચોતરફ (क्रि. वि.) चारोंओर, सवतरफ, चहुँधा, चतुर्दिक ।

ચોથિયું (वि.) चतुर्थांश, चौथाई, चौथा हिस्सा, ¼,

ચોતરો (सं.) चबूतरा, चौतरा, पुलिस चौकी, थाना ।

ચોતારો (सं.) वस्त्र विशेष, एक प्रकार का कपड़ा ।

ચોધરી (सं.) समाज का अगुवा, नेता, प्रधान, सरपंच, बाजार का मुखिया, अड्डे का मुखिया ।

ચોપ (सं.) चौंप, रोक, थाम ।

ચોપચીની (सं.) चोबचीनी, औषधि विशेष ।

ચોપડવું (क्रि.) चुपड़ना, चिकना करना, लगाना, चिकनी वस्तु का लेपन । [डूबना ।

ચોપડાવવું (क्रि.) लगवाना, चुप-

ચોપડી (सं.) पुस्तक, किताब, पोथी ग्रंथ, बुक ।

ચોપડી વેચનાર (सं.) बुकसेलर, पुस्तक विक्रेता, कुतुबफरोश।

ચોપડી બાંધનાર (सं.) जिल्दसाज दफ्तरी, पुस्तक सीनेवाला ।

ચોપડું (वि.) चिकना, तेलिया, चर्बीयुक्त, (सं.) रोटी,

ચોપડો (सं.) हिसाबकी किताब ।

ચોપદાર (सं.) चोपदार, छड़ीदार, हरकारा, दूत।

ચોપટ (सं.) चौपड़, चौसर, पाँसों का खेळ, द्यूत, शतरंज, चतुरंग, खेळ विशेष ।

ચોપાનિયુ (सं.) पेम्फलेट, छोटी, पुस्तक, रिसाला, बहुतसे विषयों, के प्रबंधोंका पत्र ।

ચોબ (सं.) छड़ी, दंड, डंडा ।

ચોર (सं.) तस्कर, स्तेन, चोरी, करने वाला ।

ચોમાસું (सं.) वर्षाकाल, वर्षाऋतु के चारमहीने ।

ચોમેર (क्रि. वि.) चारो ओर, सब, दिशाओंमें, चतुर्दिक, चहुँधा।

ચોરખાડો (सं.) चोरगड्डा, वह गड्ढा जिसपर जानवरोंको फँसाने के लिये कुछ बिछा दिया जावे ।

ચોરખાનુ (सं.) गुप्तखन, गुप्त घर, गुप्त, पेटी ।

ચોરણો (सं.) पायजामें की जोड़, खूसनें की जोड़ ।

ચોરદાનત—નજર (सं.) दुष्ट आकांक्षा, बदनियत, नीच आशय ।

ચોરવું (क्रि.) चुराना, हरण करना, अपहरण करना, आँख बचाकर उठालेना ।

ચૉરસી (सं.) चौकोना पत्थर ।

ચોરિયા (सं.) समुद्री डाकू, लुटेरा, एक प्रकार का दर्द ।

ચોરી (सं.) लूट, अपहरण, हरण,

ચૉળી (सं.) एक प्रकार की सेम, शाक भाजी विशेष ।

ચોધું (क्रि.) छेदना, वेधना, डंक मारना ।

ચોસઠ (सं.) संख्या विशेष, साठ और चार, ६४, चौसठ ।

ચોસર (सं.) एक प्रकार का खेल, देखो—ચોપટ.

ચોળવું (क्रि.) मसलना, रगड़ना, दबाना, मलना, कुचलना, चाँपना ।

ચોળા (सं.) एक प्रकार की दाल ।

ચોળા ચોળી (सं.) चित्तकी बेचैनी, व्याकुलता, तकलीफ़, कष्ट ।

ચૌદશ (सं.) चतुर्दशी, चौदहवीं तिथि, चान्द्रमास की चौदहवीं तिथि ।

ચૌરી (सं.) चौरी, चवँरी, छोटा चवँर, तिब्बत देशकी गाय के बालों की बनी हुई चवरी, चमर ।

ચ્યુત (वि.) पतित, पड़ा, भ्रष्ट, गिरा, नष्ट ।

છ.

છ=सातवाँ व्यंजन, गुजराती वर्ण-मालाका १८ वाँ अक्षर ।

છક્કો (सं.) चपत, तमाचा, थप्पड़, धौल, नुकसान, कमी, घाटा ।

છક થઈ જવું (क्रि.) दंग होजाना, घबराजाना, चौंधिया जाना ।

છકી જવું (क्रि.) मरजाना, तुष्ट होना, हारजाना, सन्तुष्टहोना, अघाना ।

છકીત (वि.) चकित, आश्चर्या-न्वित, विस्मित, भयभीत ।

છકોણાકૃતિ (सं.) षट्कोण आकृति, छःपहलू छकोना, षट्भुजक्षेत्र ।

છક્કડમારવી (क्रि.) चपतमारना, थप्पड़मारना तमाचाजमाना, पीटना ।

છકાપંજે (सं.) एक प्रकार का ताशोंका खेल, उपाय चिन्ह ।

છચોક (वि.) प्रकट रूपसे, खुले-खुले, खुल्लमखुल्ला ।

છછુંદર (सं.) मूसे की एक जाति, छछूंदर नामक एक जीव ।

છજું (सं.) छज्जा, बारजा, ओलती, उसारा ।

છંછેડવું (क्रि.) खिझाना, दुःख देना, कुढाना, पीड़ा पहुँचाना, छेड़ना । [सटक जाना

છટકી જવું (क्रि.) भागजाना,

છટકાવવું (क्रि.) छोड़ना, खोलना ।

છટા (सं.) दीप्ति, उजास, शोभा प्रकाश, समाहार, मार्ग, चाल-चलन, साँचा ।
છટેલ (वि.) प्रसन्न, बचाहुआ, शेष, बचाखुचा, बदमाश ।
છડાસ (सं.) छिलके, भूसी, चोकर।
છડ (सं.) नरकट, छड़, लम्बी-छड़ी ।
છડકવું (क्रि.) छिड़कना, उंढेलना ।
છડી (सं.) राजछत्र, छड़ी ।
છડીછાટ (सं.) वंध्या स्त्री वह स्त्री जिस के बालक पैदा नहीं होते।
છડીદાર (वि) छड़ीवाला, छड़ी लेकर राजाओंके आगे चलनेवाला, चोबदार ।
છડું (सं.) अकेला, केवल एक, एक मात्र, तनहा, एकाकी ।
છણુક છણુક (क्रि. वि.) छुम-छुम का शब्द, ध्वनि विशेष ।
છણો (सं.) मोतियों का बना गलहार, कंठा भरण, गलेका आभूषण । [फुफकार ।
છણકો (सं.) फुनकार, सिसकार,
છણ છણ (सं.) झनझन, खनखन
છણવું (क्रि.) छनना, निखरना, रसना, शुद्धहोना । [सिंचाव ।
છંટકાવ (सं.) छिड़काव, सींच,
છંટકાવ કરવો (क्रि.) छिड़काव करना, पानी छिड़कना । सींचना ।
છત (सं.) बहुतायत, अधिकता, इफ़रात, छात, पटान, छत ।
છતરી (सं.) छत्री, छाता, छत्र विशेष ।
છતાં (क्रि. वि.) तथापि, तौभी, ताहम, तिसपरभी । [उंचा छत्र ।
છત્તર (सं.) छत्र, बड़ा और
છત્રપતિ (सं) राजा, भूपाल, नरेश, स्वाधीन नरपति, महाराज।
છંદ શાસ્ત્ર (सं.) पिंगळ मुनिप्रणीत शास्त्र, जिसमें छन्दों का वर्णन किया हो ।
છંદ (सं.) श्लोक, पद्य, काव्य, रचना, अनुष्टुप आदि, पद ।
છંદી (वि.) चालाक, कपटी, धूर्त, प्रतारक, छली, ठग ।
છપતરૂં (वि.) छिछला, अगंभीर, हलका, ओछर, खोखला ।
છપર (सं.) आच्छादन, छांद, छान, छप्पर, छावनी ।
છપ્પનભોગ (सं.) दृढ, अनुमति, छप्पन प्रकार के खाद्य पदार्थ ।
છપ્પર (सं.) पर्णकुटी, घासफूस का बना मकान । [दोहा, छन्द ।
છપ્પો (सं.) षट्पदी छन्द, श्लोक,

છમ (सं.) मूर्ति, प्रतिमा, तस्वीर ।
છમછમું (वि.) छोटा, थोड़ा ।
છમતરૂ (वि.) कम छिछला, देखो-છછરૂં.
છમવું (क्रि.) पहुंचना, आजाना ।
છબી (सं.) तस्वीर, चित्र, फोटो, नकशा । [डुबोना ।
છબકારવું (क्रि.) तरकरना,
છર (सं.) बेवकूफी, खफत, पागलपन, गर्व, घमंड, अहंकार ।
છમછરી (सं.) वार्षिकोत्सव, बरसी ।
છરા (सं.) छर्रा, छोटी गोली ।
છરી (सं.) चाकू, क्षुर, छुरी ।
છલકાઈ જવું (क्रि.) शेखी मारना, डींग हांकना, बड़ीबड़ी बातें मारना, गर्व करना, छलकना ।
છલંગ (सं.) कूद, फांद, उछाल ।
છાવું (क्रि.) ढांकना, छुपाना, दबाना, दुबाना । [प्रतारणा ।
છળ (सं.) कपट, छल, ठगाई
છળભેદ (सं.) दगा, छल, कपट ।
છળવું (क्रि.) धोका देना, दगा करना, कपट करना, छलना।
છાંટ (सं.) काट, कतर, धज्जी, चिन्दी । [क्षेव ।
છાંટણ (सं.) कतरण, टुकड़ा,
છાંટવું (क्रि.) फेंकना, उंडेलना, छिड़कना, काटना, कतरना, नष्ट करना, बुझाना, गप्पे छांटना, झूंठ बोलना, रिश्वत या घूंस देना ।
છાંટા ઉડાવવા (क्रि.) छींटे उड़ाना, छींटना, छींटे डालना ।
છાંટાછાટ (सं.) एक दूसरेपर पानी छिड़कना ।
છાંટી (सं.) वर्षाकी बूँदाबाँदी, फुँहार, छोटी छोटी बूँदों में बरसना ।
છાંટો (सं.) छींटा, बूँद, बिन्दु, हतक, अपमान, धब्बा, बट्टा, कलंक । [मदिरा, दारू, मद्य ।
છાંટોપાણી (सं.) शर्बत, शराब,
છાંડણ (सं.) जाँच, परीक्षा, इम्तहान, तलाश, अनुभव ।
છાંડવું (क्रि.) छाड़ना, इम्तहान लेना, जाँचना, परीक्षा लेना, तजना, त्यागना, अदा करना, चुकाना, तिलाक ।
છાણ (सं.) गोबर के कंडे, आरणा, ढिठाई, वीरता ।
છાણવું (क्रि.) छानना, निथारना, झारना, परखना, निर्णय करना ।

છાણું (सं.) कंडा, छाना, आरणा, ईंधन, बलीता, गोबर की बनी हुई रोटी सी जोजलाने के काम में आती है।

છાતી (सं) हृदय, वक्षःस्थल, सीना, दिल, हिम्मत, साहस, वीरता, धैर्य।

છાતી કુટવી (क्रि) छाती कूटना, शोक से छाती पीटना, विलाप करना।

છાતી કાઢીને ચાલવું (क्रि.) अकड़कर चलना, सीना निकाल कर चलना।

છાતી ઠોકવી (क्रि.) साहस प्रकाश करना, भरोसा देना, छाती ठोकना।

છાતી તોડ-ફોડ (सं.) कठोर, कठिन, सख्त, दारुण, कड़ा।

છાતીનું હાડકું (सं.) वह हड्डीजो कंठ से पेट तक जाती है और जिस में पसलियां लगी होती हैं, छाती की हड्डी।

છાતી પીગળવી (क्रि.) दयार्द्र होना, करुणा से छाती का आर्द्र होना, दिल पिघलना, हृदय द्रवीभूत होना।

છાતીવાળું (सं.) वीर, बहादुर, ढीठ, हिम्मतवाला, साहसी, धीर।

છાના રહેવું (क्रि.) चुप रहना, खामोश रहना, शान्त रहना।

છાની રીતે (क्रि. वि.) चुपके से, गुप्त रीति से, चुपचाप, गुपचुप।

છાનું (वि.) खानगी, घरू, गुप्त, छुपा, अप्रकट।

છાનુંમાનું (क्रि. वि.) बिलकुल चुप, और गुप्त रीतिद्वारा, गुपचुप।

છાનું રાખવું (क्रि.) गुप्त रखना, छुपा कर रखना, शांत रखना।

છાનું રહેવું (क्रि.) चुप रहना, खामोश रहना, शांत रहना।

છાપ (सं.) मुहर, ठप्पा, छापा, टाइप, छापे के अक्षर, यश कीर्ति, चिन्ह, अंगूठे का निशान, छपाई।

છાપખાનું (सं.) प्रेस, छापाखाना, मुद्रण यंत्रालय, जहाँ पुस्तकें छपती हैं। [छापनेवाला।

છાપગર (सं.) मुद्रक, प्रिंटर,

છાપણી (सं.) छपाई, छापने का मूल्य, प्रकाशन, प्रसिद्ध करण, उत्थान।

છાપરું (सं.) छप्पर, घर, छत।

છાપવું (क्रि.) अंकित करना, मुद्रित करना, छापना, मोहर लगाना। [पत्र, सम्वाद पत्र।

છાપું (सं.) अखबार, समाचार

છાપેલું (वि.) छपा हुवा, मुद्रित, मोहर लगा हुवा, छापा हुवा।

છાપો (सं.) मोहर, धावा करना, डाका डालना, कर, टेक्स।

છાબ-ડી (सं.) डलिया, बासों की बनी हुई खोखली डलिया, छबड़ी।

છાયલ (सं.) एक प्रकार का वस्त्र जिसे स्त्रियाँ पहिनती हैं।

છાપરો-છાયા (सं.) साया, छाया, छप्पर, पनाह, आड़, शरण, आश्रय।

છાયાદાર-વાળું (वि.) छायायुक्त।

છાયા યંત્ર (सं.) धूपघड़ी।

છાયો કરવો-આપવો (क्रि.) छाया करना, धूपरहित करना, आदेना, आश्रय देना।

છાર (सं.) क्षार, भस्म, राख, धूलि, खाक, खार।

છારતક (स.) सरपट दौड़, घोड़े की सरपट चाल।

છારી (सं.) झिल्ली, जाला, साँचा।

છારી વાળવું (क्रि.) आपस मे मिलकर लिपटना।

છાલ (सं.) छिलका, बकल्म, त्वक्, चर्म, वल्कल।

છાલક (सं.) लहर, तरंग, छींटे।

છાલકું (वि.) छिलका, खोखला, नीच, कमीना, गरीब।

છાલકો (सं.) गधेपर लादने का बोरा, खोखले छिलका, ओछे मनका।

છાલા (सं.) छिलका, छाल, बकल,

છાવણી (सं.) सिपाहियों के रहने का स्थान, पलटनके रहने का स्थान, शिबिर, केम्प, कण्टूमण्ट।

છાવરવુ-રી વાળવું (क्रि.) छिपाना, गुप्त रखना, अप्रकट रखना।

છાશ-સ (सं.) छाँछ, तक्र, मठा, मही, गोरस,

છિ: (विस्म०) तुच्छ करने का वाक्य, घृणा युक्त वाक्य।

છિંકણી (सं.) नास, हुलास, ऐसी वस्तु जिसके सूंघनेसे छींक आवे।

છિટ્ (विस्म०) देखो छिः (क्रि.) छीकना

છિદ્ર (सं.) छेद, सूराख, बिल, दोष, एब, अपराध, विविर, रन्ध्र, दूषण।

છિદ્ર કાઢવું (क्रि.) दोष निकालना, ऐब ढूँढ बताना, छिद्रानुसन्धान।

છિદ્ર પાડવું (क्रि.) छेदना, सूराख करना, छेद करना।

છિનવી લેવું (क्रि.) झपट लेना, छीन लेना।

છિનાળ (सं.) वेश्या, वेश्यावृत्ति करनेवाली स्त्री, व्यभिचारिणी, दुष्टा।

છિનાળચાળા (सं.) रंडीबाजी, व्यभिचार सम्बन्धी चालाकेया।

છિનાળવાડો (सं.) वेश्यालय, रंडियोंके रहने का बाड़ा, वेश्यागृह।

છિનાળવો (सं.) व्यभिचारी, जिनाकार, विषयी, वेश्या दलाल।

છિન્ન (वि.) विभक्त, खंडित, छेदित।

છિનાળું (सं.) वेश्यावृत्ति, व्यभिचार, रंडीबाजी, छिनाला।

છિપર (सं.) बड़ा पत्थर।

છિપરૂં (वि.) मैला गन्दा,

છી (वि.) बुरा, मैला, गन्दा,

છીંક-છેંક (सं.) सिनक, नाक साफ करने की क्रिया, छींक।

છીંકખાવી-છીંકવું (क्रि.) छींकना,

છીછી (सं.) चावळ, तन्दुळ (वि०) तुच्छ करने का वाक्य, घृणा युक्त वाक्य।

છીટ (सं.) पक्षपात, उज्र, एतराज, आपत्ति, हानि, घाटा।

છીંટ (सं.) छींट (वस्त्र) छपावस्त्र।

છીડું, છીંડું (सं.) बाड़ का खुला भाग,

છેડું ખોળવું-શોધવું (क्रि.) अपराध ढूंढना, ऐब देखना, छिद्रान्वेषण।

છીણી (स.) खोदने का औजार, छेनी, लोहे की बनी हुई जो धातु काटने या पत्थर खोदने के काम में आती है।

છીદડી-રી (सं.) वृद्धा स्त्री की एक प्रकार की पोशाक।

છીપ (सं.) ढाल, लकड़ी के बने हुए छापने के ठप्पे।

છીપો (सं.) कपड़ा छापनेवाला, मुद्रक, मोहर लगानेवाला।

છીપું (सं.) चपटी रकाबी, चपटी थाली।

છીલડો (सं.) हाथ चक्की की सड़क, चक्की का मार्ग, गरँड, आटा गिरने का स्थान।

છીલરૂં (सं.) टूटा फूटा तालाब, भ्रष्ट सरोवर, नष्ट सरोवर।

છુંછા (सं.) पक्ष, पाँख, पंख, पर

છુટ (सं.) स्वतन्त्रता, स्वाधीनता छुट्टी, आज्ञा, मत्ता, छूट।

છુટક (वि.) खरचो, फुटकल, मिश्रित, मिलौना।

છુટકારો-કો (सं.) मुक्ति, छुड़ाव, छुटाव, उद्धार, स्वतंत्रता, स्वाधीन

છુટકો કરવો (क्रि.) मुक्त करना, छोड़ना, स्वतन्त्र करना, खोलना,

છુટકો થવો (क्रि.) मुक्त होना, स्वतन्त्र होना, छूटना।

છુટથી (क्रि. वि.) स्वतन्त्रतापूर्वक, आज़ादी में।

છુટવું (क्रि.) बन्धन रहित होना, छूटना खुलना।

છુટ મુકવી (क्रि.) कमी करना, छूट देना।

છુટા છેડા (सं.) त्याग, स्त्रीपुरुष का तिलाक, स्त्रीपुरुष का छोड़ना।

છુટા છેડા થવા (क्रि.) संतान उत्पन्न होना, अपत्योत्पादन।

છુટાપણું (सं.) स्वाधीनता, स्वतंत्रता छुटकारा, उद्धार।

છુટી-છૂટી (सं.) छुटकारा, अवकाश, अनध्याय, विश्रान्ति समय, विश्राम, तातोल, कार्यबन्द।

છુટી જવું (क्रि) भाग निकलना, छूट जाना, अपराध से छूटना, निर्दोष होना।

છુંદું (वि.) बिखरा, खुला, छूटा।

છુંદું કરવું (क्रि.) बिखेरना, अलग अलग करना।

છુંદું છુંદું (वि.) अलग अलग, पृथक पृथक, निराला।

છુંદવું (क्रि.) કચરવું कुचलना, पादाक्रान्त करना, पददलित करना, कूटना, दलना, ખાંડવું छोटे छोटे टुकड़े करना, कतरना, चूर चूर करना, पीसना, बुरी तरह पाटना।

છુંદો (सं.) किसी वस्तु का चूरा या कुचलन।

છુપવું (क्रि.) अपने को छुपाना, गुप्त होना, छुपना।

છુપાડવું-વવું (क्रि.) छिपाना, गुप्त करना, गायब करना, लुकाना।

છુપાવેલું (वि.) छुपाया हुवा, [अप्रकट।

છુપી રીતે (क्रि. वि.) गुप्त रीति से, घरू तरीके से।

છુપું (वि.) खानगी, घरू, गुप्त,

છુપું રહેવું (क्रि.) छिपा रहना, घात में रहना, दुबकना, छुप कर बैठना। [टुटका।

છુમંત્ર (सं.) जादू, टोना, मंत्र,

છુમંત્રવાળો (सं.) जादूगर, जादूटोनेवाला।

[छुरी-छरी (सं.) क्षुर, छुरा, छुरी, चक्कू, चाकू, उस्तरा।

छुवुं (क्रि.) छूना, स्पर्श करना, बिगाड़ना, कलुषित करना।

छूट (सं.) बट्टा, छूट, बरबादी, स्वतंत्रता, मुक्ति।

छे (क्रि.) है [सूचक वाक्य।

छेः (विस्म०) छिः, हुश, घृणा

छेक (क्रि. वि.) गोलक, इतना (अधिक) लम्बाई, सब, बिलकुल, बहुतायत से, तक।

छेकणुं (सं.) काटकूट, छीलछाल, झुंघनी, हुलास, छींकनी।

छेकवुं, छेकी नांखवुं, (क्रि.) काट डालना, खरोंचना, मिटाना, छीलना

छेको (सं.) लकीर, जोड़ और गुणा का चिन्ह, +, ×, खरोंच, काट, छील।

छेछे (विस्म०) देखो छिः।

छेटुं (सं.) अंतर, फासला, अर्सा, (क्रि. वि.) दूर, अलग, न्यारा,

छेटे (क्रि. वि.) दूर, रूखा, न्यारा, फासलेपर, दूरीपर।

छेटे बेसवुं (क्रि.) ऋतुमती होना, कपड़ों होना, दूर होना, छूतकी होना।

छेडवुं (क्रि.) चिढाना, खिझाना, कुढाना, छूना, स्पर्शकरना, हस्तक्षेप करना, दखलदेना।

छेडती शोधवी (क्रि.) कुसूर ढूंढना, दोषान्वेषण।

छेडे (क्रि. वि.) अन्तमें, आखिरमें।

छेडो (सं.) अंत, सिरा, हद, सीमा, मृत्यु, नाश, समाप्ति परिणाम, कोर, छोर, अंचला, किनारा। [स्त्रीपुरुषका छोड़ना।

छेडो छुटको (सं.) त्याग, तिलाक,

छेडो छोडवो (क्रि.) तैकरना, पीछा छोड़ना, समझमें आना।

छेडो पकडवो (क्रि.) आश्रय लेना, पल्ला पकड़ना, सहारा लेना।

छेडो फाडवो (क्रि.) देखो छेडो छुटको।

छेडो लेवो (क्रि.) केडो लेवो पीछा करना, पीछे लगना, रगेदना।

छेणी (सं.) छेनी, टाँकी, रुखानी।

छेतरनार (सं.) दगाबाज, धोकेबाज, ठग, वंचक, छली।

छेतरपिंडी (सं.) चालाकी, धोका, ठगी, जालसाजी।

छेतरवुं (क्रि) ठगना, धोकादेना,

છેતરામણ (सं.) ठगी, छल, कपट। [जाना, छलेजाना।
છેતરાવું (क्रि.) धोकाखाना, ठगे-
છેતાળીસ–શ (वि.) छियालीस, चालीस और छः, ४६,
છેદ (सं.) सूराख, छिद्र, विविर, रंध्र, भिन्न में लकीर के नीचेका अंक। [भाजक।
છેદક (वि.) छेद करनेवाला, वेधक।
છેદન (सं.) खंडन, वेधना, छेदना।
છેદન બિંદુ (सं.) बीचसे दो भाग करने का बिन्दु। [रेखा।
છેદન રેખા (सं.) काटने वाली
છેદવું (क्रि.) काटना, बाँटना, नष्ट करना, छेदकरना, बिलकरना, छेदना, वेधना।
છેર (सं.) पानी के समान पतला गोबर, पशुओं का पतला विष्ठा।
છેરટો (सं.) मैला, कचरा, धूळ।
છેરવું–રાટો (क्रि.) पतला मलोत्सर्ग करना, पोंकना।
છેલ–ડો (सं.) छैला, अळबेला, बाँका, रंगीला।
છેલછબીલો, છેલબટાઉ (वि.) छैल सुन्दर, मनोहर, उत्तम, चटकीला।
છેલાઈ (सं.) छैलापना, अलबेलापन।
છેલી (सं.) देखो છેલાઈ, ६ के लिये इशारा या संकेत।
છેલ્લીઘડી (सं.), अंतिम समय, आखिर वक्त, अंतकाल।
છેલ્લીવારે (क्रि. वि.) अंतमें, आखिरमें। [पूर्ववत्।
છેલ્લે, છેલ્લે સરવાળે (क्रि. वि.)·
છેવટ (सं.) अंत, आखिर, फल, परिणाम, (क्रि. वि.) अंतिम, आखिर मे अन्तको, पीछे।
છેવાડું (वि.) आखिर, बिलकुल आखिर, सब के बाद।
છેહ (सं.) विश्वासघात, सिरा, छोर, अंत। [संतान।
છૈયાંછોકરાં (सं.) बालक, बच्चे,
છૈયો (सं.) लड़का, छोकरा, पुत्र, आत्मज।
છો (सं.) चूना, खरल, ऊखली, (क्रि.) हो, हैं (विस्म०) कुछ बात नहीं, होने दो।
છોકરવાદ (वि.) बचपन कीसी, लड़कपन कीसी, छछोरपन कीसी, उच्छृंखलता।
છોકરવાદી (सं.) बचपन, छछोरपन।
છોકરી (सं.) पुत्री, तनया, लड़की

છોકરું-રો (सं.) बालक, लड़का, पुत्र, बेटा, तनय, आत्मज ।

છોગું (सं.) झब्बा, फूँदा, लटकन, कलाबत्तुका बना फूँदा जो पगड़ी पर लगाया जाता है, कलगी, तुर्रा।

છોછ (सं.) रोक, अटकाव, बन्धेज। एतराज, उज्र, आपत्ति । [थोड़ा।

છોછું (वि.) छोटा, ओछा, कम,

છોટું (वि.) छोटा, कम ऊँचा,

છોડ (सं.) पौधा, पेड़, छोटा पेड़, झाड़ी । [और खोलना ।

છોડબાંધ (सं.) बारम्बार बांधना

છોડવનાર (सं.) छोड़नेवाला, खोलनेवाला। [सुलझाना, खोलना।

છોડવવું (क्रि.) छुड़ाना, मुक्त कराना,

છોડવું (क्रि.) छोड़ना, स्वतंत्र करना, जाने देना, खोलना, जलाना, छूट देना, बट्टा देना, अलग करना।

છોડવો (सं.) पौदा, छोटा पेड़ ।

છોડાં (सं.) चोकर, भूसी,

છોડાવવું (क्रि.) देखो છોડવવું

છોડી (सं.) टुकड़ा, कतल, फांक, देखो છોકરી

છોડીદે (क्रि.) छोड़ दो, जाने दो।

છોડી મુકવું-દેવું (क्रि.) देखो છોડવું

છોતરું (सं.) छिलका, बक्कल,

છોતેર (सं.) छिहत्तर, सत्तर और छः ७६,

છોબંધ (क्रि. वि.) चूनेका बना ।

છોરૂ (सं.) शिशु, बालक, बच्चा।

છોલ (सं.) देखो, છાલ,–છોલની, (सं.) बसूला, एक प्रकार की कुल्हाड़ी ।

છોલવું (क्रि.) छीलना, खुरचना, खाल निकालना, छिलका निकालना,

છોલાટવું (क्रि.) नुक्स निकालना, दोष निकालना, छीलना, कुरेदना।

છોલાવું (क्रि.) छीला हुवा होना।

છોલાણું (सं.) पलस्तर, अस्तर,

છોલ્વા (सं.) एक प्रकारका दस पॉव का कीड़ा का जिसकी लंम्बाई २ इंच होती है, कुछ हरे रंग का जीवित पकाने पर भूरा रंग हो जाता है । सीप का घोंघा ।

છોવરાવવું (क्रि.) चूने का पलस्तर करवाना, छबवाना।

છોળ (सं.) लहर, तरङ्ग, हिलोर,

જ.

જ=गुजराती वर्णमाला का १९ वां अक्षर, आठवां व्यंजन, निश्चय वाचक, प्रत्यय, स्थिर, पक्का ।

જઈ આવવું (क्रि.) जाना, गमन करना, जाके वापिस आना।
જઈફી–જૈફી (सं.) बुढापा, वृद्धावस्था, वयोवृद्ध।
જક (सं.) हठ, जिद्द।
જકડવું-ડી લેવું (क्रि.) कसकर बाँधना, बाँध लेना, पकड़ लेना।
જકાત (सं.) सायर महसूल, चुंगी, राज्य कर, टाउन ड्यूटी।
જકી-કકી (वि.) हठी, जिद्दी, हठीला, आड़ियल।
જક્ષ (सं.) यक्ष, देव योनि विशेष, मोटा ताजा मनुष्य, तगड़ा आदमी।
જખ (सं.) मत्स्य, मछली, झख।
જખ મારવી (क्रि.) झख मारना, गलत कामों का पश्चात्ताप करना। बुरे कामों का प्रायश्चित्त करना।
જખમ (सं.) व्रण, घाव, चोट, क्षत, अपमान, हानि, नुकसान।
જખમ કરવું (क्रि.) चोट मारना, घाव करना।
જખમ લાગવો (क्रि.) घायल होना, क्षत होना, जख्मी होना।
જખમ રૂઝવો (क्रि.) चंगा करना, घाव का भर जाना।
જખમાવવું-મી (वि.) घायल, आहत, आघात प्राप्त, चोट खाया हुआ।
જખ્ખડ (वि.) बलवान, मिट्ठू, मूर्ख, अल्हड़, लठ्ठाँड़े।
જગ–ત્ (सं.) विश्व, संसार, भुवन, चलने वाला, जंगम।
જગત્કર્તા–જગકર્તા (सं.) सृष्टिकर्ता, विश्वनिर्माता, विधाता, ईश्वर।
જગજ્જીવન (सं.) जगत का आधार, जगत का प्राण, रक्षक, ईश्वर।
જગત્જનેતા, જગજ્જનેતા (सं.) देवी, शक्ति, आदिशक्ति, जगदम्बा।
જગતત્રય (सं.) तीन पृथ्वी, स्वर्ग नर्क पाताळ। तीन लोक।
જગત્પાલક (सं.) ईश्वर, परमात्मा,
જગત્લીલા જગલીલા (सं) सृष्टि का विनोद, जगद्विलास।
જગત્સ્વામી (सं.) सृष्टि का मालिक, विश्वाधार, विश्वशासक, ईश्वर।
જગત્ પ્રસિદ્ધ (वि.) जगद्विख्यात, जिसे संसार जानता हो;
જગત્રય (सं.) देखो જગતત્રય
જગદંબા (सं.) जगन्माता, वैष्णवी शक्ति, आदिशक्ति, भवानी।
જગદંબિકા (सं.) दुर्गा, पार्वती, जगतजननी, अंबिका।
જગદ્ ભૂષણ (सं.) विश्वभूषण, जगदालंकार, प्रतापी, नामवर।

જગદીશ-શ્વર (सं.) विश्वेश, जगत का स्वामी, ईश्वर परमात्मा।

જગદાત્મા (सं.) विश्वात्मा, परब्रह्म, परमात्मा, परमेश्वर।

જગદ્ગુરૂ (सं.) संसार के गुरु, संसार के आचार्य, ईश्वर, ब्रह्मा।

જગદ્વંદ્ય (सं.) जिसकी संसार वंदना करे, ईश्वर परमेश्वर।

જગદાધાર-દ્ધાર (सं.) विश्वाधार, जगत के आधार, अनन्त, वायु, ईश्वर।

જગન (सं.) होम-यजन, यज्ञ, बलि, पूजा, होम।

જગન્નાથ (सं.) जगत्पति, जगदीश, श्री क्षेत्र के देवता, विष्णु विष्णु का नवॉ अवतार।

જગન્નાથી (सं.) एक प्रकारका वस्त्र।

જગન્નિંદ્ય (वि.) जिसकी दुनिया निंदा करती हो, अत्यन्त बुरा, त्याज्य।

જગન્નિયન્તા (सं.) जगत्कर्ता, विधाता, परमात्मा, विश्वनाथ।

જગન્નિવાસ (सं.) विश्वभरण, विश्वपोषक, जगदाधार।

જગન્મિત્ર (सं.) विश्वमित्र, वह जो सबों से प्रेम रखता, विश्व प्रेमी।

જગરાથ (सं.) विश्वेश्वर, सृष्टि का स्वामी, विश्व सूत्रधार।

જગ્યા-આ-જો (सं.) स्थान, जगह, दर्जा, ओहदा, मुकाम, भूमि, पादचिन्ह, पद, ठौर, गीं, शून्यपद।

જગા કરવી (क्रि.) जगह करना, दूसरे के लिये स्थान बनाना।

જગાડવું (क्रि.) जगाना, सावधान करना, उठाना, सूचित करना, निद्रा भंग करना, निद्रा रहित करना।

જગાપરને જાપર (क्रि. वि.) उसी स्थानपर, उसही जगह।

જગાવવું (क्रि.) उठाना, जगाना।

જગે (क्रि. वि.) बदलीपर, स्थानपर, जगहपर, पदपर।

જગેજગે (क्रि वि.) स्थानस्थान, हरेक जगह, प्रत्येक स्थळ।

જઘાત (सं.) भादो बुदी १३ मृत बालकों की कर्म क्रिया करने का मुकर्रर दिन भाद्र कृष्णा त्रयोदशी।

જખના (सं.) कम याद, कुछकुछ स्मरण, कल्पना, ख्याल, स्वप्न।

જંખવાણું જવું (क्रि.) लज्जित हो जाना, शर्मिन्दा हो जाना।

જંખવાણા પડવું (क्रि.) पूर्ववत्

જંખવું (क्रि.) कल्पना करना, किसी विषय पर सोचना।

જંગ (सं.) युद्ध, रण, संग्राम, लड़ाई।

જંગડીઆ (सं.) एक स्थान से दूसरे स्थान तक खजाना ले जाने वाले फौजी कोष रक्षक।

જંગમ (सं.) जोचले, अस्थायी, आस्थिर, चलनशील।

જંગલ (सं.) बन, अरण्य, रेतीला मैदान, विपिन, कानन, निर्जल सथन

જંગલ જવું (क्रि.) पाखाने जाना, टट्टी फिरना, शौच होना, मलोत्सर्ग करना।

જંગલમાં મંગળ—ऐसे स्थान पर आनंद मंगल जहां असंभव हो।

જંગલી (सं.)जंगल का, मूर्ख, शठ, असभ्य, बदतहजीब, गंवार, वन्य,

જંગલી જટ (वि.) गंवार, देहाती।

જંગાલ (सं.) तांबे का मोर्चा, कसाव, पितराई, मुर्चा, जंग, जर।

જંગી (वि.) वीर, बहादुर, हिम्मतवाला, बहुत बड़ा, दीर्घ, विस्तृत।

જજમાન (सं.) यज्ञकर्ता, पुरोहित या पुजारी का संरक्षक, यजमान।

જંજાળ (सं.) उलझन, झंझट, प्रपंच, उलझाव, व्याकुलता उद्विग्नता।

જજીયો (सं.) आदमी पीछे महसूल।

જંજીર (सं.) सांकल, चेन, घड़ी की कमानी।

જંજીરો (सं.) जजीरा, द्वीप, वह किला जिसके चारों ओर समुद्र हो।

જટા (सं.) एक में सटे हुए बहुत से बाल, साधुओं की जटा, जड़ित केश।

જટાધાર–ધારી (सं.) साधू तपस्वी शिव, वटवृक्ष, बड़ का पेड़।

જટામાસી (सं.) एक औषधि विशेष, जटामांसी, शतावरि, कवाछ।

જટાયુ (सं.) इसी नाम का एक पक्षी जिस का रामायण मे वर्णन है, दशरथ का मित्र, संपाती का छोटा, भाई। [लटियां, गुच्छियां।

જટિયાં (सं.) सिर के बालों की

જઠર (सं.) उदर, पेट, गर्भ।

જઠર સંબંધી (वि.) पेट सम्बन्धी

જઠરાગ્નિ (सं.) पेट की आग, अन्न पचानेवाला, आग्नि, क्षुधा, बुभुक्षा। जठरानल, उदराग्नि।

જડ (वि.) भारी, ठोस, स्थिर, निश्चल अचल, निर्जीव, सुस्त, मूर्ख अज्ञ

જડ (सं.) मूल कारण बीज, मूक, मूठ, पूंजी मूलधन, निकास, उद्गम, मेख।

જડતર (सं.) लाभ, जड़ावट, जोड़

જડતું (वि.) ठीक, उचित, मुनासिब।

જડત્વ (सं.) आलस,

જડત્વાકર્ષણ (सं.) खिंचाव, कशिश, आकर्षणशक्ति ।

જડબું (सं.) जबड़ा,

જડબુદ્ધિ–મતિ (सं.) मूर्खता शठता, कमअक्ली, बेवकूफी ।

જડબેસલાખ (क्रि. वि.) ठीक जड़ना, ठीक ठांक जमाना, दृढ करना, यथार्थ, सही ।

જડભરત–શીલ (वि.) मूर्ख, मन्द बुद्धि, हतज्ञान, ज्ञानशून्य ।

જડમૂળથી–માંથી (क्रि. वि.) बिलकुल, तमाम- समूल, मूल सहित ।

જડવું (क्रि) जमाना, जड़ना जोड़ना, ठोकना, बिठाना, पाना प्राप्त करना, ढूँढना, नग बैठाना ।

જડાઈ–મણી (स.) जड़ने की मजदूरी, पच्चीकारी करने का मूल्य ।

જડાવ દાગીના (सं.) जवाहिरातों से जड़े जेवर।

જડાવ કામ (सं.) पच्चीकारी का काम नगीने जमाने का काम ।

જડાવદાર (वि.) जड़ाऊ, जड़ा हुवा, जड़ाई किया हुवा, पच्ची किया हुवा, नग जड़ा हुवा, खचित, मंडित, संलग्न ।

જડિત (वि.) जड़ा हुवा. जवाहिरातों द्वारा जड़ाई किया हुवा ।

જડિયા (सं.) जड़ी, बूटी, जड़ें, मूल, (क्रि) नेंवडालना, जड़ जमाना ।

જડિયો (सं.) जड़नेवाला, जौहरी, सुनार, जड़िया ।

જડી (सं.) मूल, मूरि, बूटी।

જડીબુટ્ટી (सं.) दवाई, रूखरी, औषध, मूल, जड़ी बूटी ।

જણ (सं.) अकेला, एक, एक मनुष्य, व्यक्ति, [ढंग ।

જણતર (सं.) बालक, शिशु, प्रसव

જણતી (स.) मा, माता, जननी, अम्मा ।

જણદીઠ (क्रि. वि.) प्रत्येक, प्रति-मनुष्य ।

જણવું (क्रि.) पैदा करना, बालक उत्पन्न करना, आमेलाना ।

જણાવવું (क्रि.) सूचित करना, सावधान करना, संतान उत्पन्न समय सहायता देना, कहना, बतलाना, सुझाना । [जानना ।

જણાવું (क्रि.) ढूंढना, खोजना,

જત (अव्यय) इस भांति जानना, जानना

જતન (सं.) यत्न उपाय, उद्योग।

જતન કરવું (क्रि.) प्रबन्ध करना, बचाना, रक्षा करना, यत्न करना,
જતરડુ (सं.) तार खींच कर बेढाने का एक यंत्र विशेष, सुनारों के यहा तार खींचने का यंत्र, जर्ता, जंतेरा ।
જતી (सं.) यती, योगी, संन्यासी जैन साधु (जतीजी)।
જતું રહેવું (क्रि.) जाना, चले जाना, खोजाना, चूकना ।
જથર પથર (क्रि. वि.) आकस्मिक, सवान रहित, दैवी ।
જથ્થા (क्रि. वि.) जैसा, त्यों, जिस प्रकार, जिस रीति । [इकट्ठा,
જથાબંધ (क्रि. वि.) थोक बन्द,
જથાર્થ (वि.) ठीक, उचित, मुनासिब, योग्य, यथार्थ, सत्य यथायोग्य । [योग्यतानुसार
જથાશક્તિ (वि.) शक्त्यानुसार,
જથ્થો–થ્થો (स.) ढेर, समूह, संग्रह, भीड, एकत्र, सभा ।
જદપિ–ધપિ (क्रि. वि.) जोभी, अगरचे, यदि ।
જદા (क्रि वि) जब, जिस कालमें।
જન (सं.) मनुष्य, आदमी, संसार।
જનક (सं.) पिता, बाप, बनानेवाला ।
જનકથા (सं.) कहावत, झूठा-किस्सा, परपरा गत कथा, जनश्रुति।
જની–નુની (सं.) माता, मा, अम्मा, [साधारण, विश्वास ।
જનમત (सं.) प्रजामत, लोकमत,
જનમારો (सं.) उम्र, जीवन, जिन्दगी ।
જનરીત (स.) साधारण रीति रिवाज, लोकरीति, प्रचलित रीति,
જનવાર્તા (सं.) प्रचलित बात, प्रसिद्ध बात ।
જનસ (स.) चीज वस्तु, द्रव्य, असबाब पदार्थ, जेवर, शेष भाग।
જનસપડી (वि.) उन्नीस, १९,
જનસબાકી (सं.) शेष, बचत बाकी
જનાકારી (सं.) व्यभिचार, छिनाला, जिनाकारी ।
જનાજો (स.) मुर्दे को उठाने की टट्टी, अर्थी, संगातो ।
જનાદી (सं.) पैसा, पावआना,
જનાનખાનું (सं.) हरम, महलसरा, स्त्रियों के रहने का स्थान, जनाना ।
જનાની (सं.) स्त्रियाँ या औरत कासा, डरपोक, कायर ।
જનાનો (सं.) देखो જનાનખાનું
જનાપવાદ (सं.) लोकापवाद,

જનાશ્રમ (सं.) श्रीमान्, महाशय, मान सूचक शब्द । [बटोही ।
જનાર (सं.) यात्री, मुसाफिर,
જનાર્દન (सं.,विष्णुकानाम, नारायण,
જનાવર (सं.) जानवर, जीव, पशु, ढोर, जन्तु, प्राणा ।
જનિતા (सं.) जनित्री, रचयिता, बनानेवाला, कर्ता,
જનુન ઝનુન (सं.) धार्मिकहठ, व्यग्रता, पागलपण ।
જનુની–ઝનુની (वि.) क्रोधी, गुस्सैल तामसी, तुन्दमिजाज ।
જનેતા (सं.) देखी જનની,
જનોઈ (सं.) यज्ञोपवीत, यज्ञसूत्र ब्रह्मसूत्र ।
જંત-તું (स) प्राणी, जीव, कीड़ा।
જંત્ર(स.) हथियार, यंत्र, मशीन।
જંતરમતર (सं.) नटबाजी, भानमती, जादू, टुटका, टोना ।
જન્મ (स.) उत्पत्ति, पैदा, उद्भव, अवतरण । [जन्म समय ।
જન્મકાળ (सं) पैदा होनेका समय,
જન્મકુંડલી (स) लग्न कुंडली, जिसमें जन्म समयके नवो ग्रहों को यथास्थान रखकर कुंडली बनाईजाती।
જન્મખોડ (सं.) पैदा समयकाऐब, जन्मदोष ।
જન્મગાંઠ(स.) वर्षगाठ, जन्मदिन।
જન્મચરિત્ર (सं.) जीवन चरित्र, जीवनी, जीवन इतिहास।
જન્મતિથિ (सं.) पैदा होनेकी चान्द्रतिथि, जन्मदिन ।
જન્મથી (क्रि. वि.) पैदायशसे, स्वभावसे, खुदबखुद ! सदासे ।
જન્મદરિદ્રી (सं.) सदाका कंगाल ।
જન્મદેશ (सं.) स्वदेश, मातृभूमि, वतन, वह देश जिसमे पदा हुवाहो ।
જન્મનક્ષત્ર (सं) जन्म समयका नक्षत्र ।
જન્મનામ (सं.) वह नामजो जन्म नक्षत्र के अनुसार रखाजाता है।
જન્મદિવસ (सं) देखो જન્મગાંઠ
જન્મનો (वि.) माताक गर्भसे, जन्मका, स्वभाविक, प्राकृतिक ।
જન્મપત્રિકા–ત્રી (सं.) उत्पत्तिके समय ग्रहोंकी चालको दखकर जो शुभाशुभका बोधक फल पत्रबनाया जाता है। लग्नकुंडली, जन्मकुंडली।
જન્મપદી (सं.) कुलीन लोग, शरीफ आदमी,
જન્મબહેરો (वि.) माताके उदरसे बधिर, स्वाभाविक बहरा। [बोल ।
જન્મભાષા (सं.) मातृभाषा देशी
જન્મભૂમી–સ્થાન (सं.) उत्पत्तिस्थान स्वदेश, वतन। [उत्पत्ति नाश,
જન્મમરણ (सं.) जीवन मरण,

જન્મમહીનો (सं.) जन्ममास, वह मास जिसमें उत्पन्न हुवा हो।

જન્મમુલ અધિકાર (सं.) जन्माधिकार। [होनेके दिनकी रात।

જન્મરાત્ર (सं.) जन्मरात्रि, पैदा

જન્મરાશી (सं.) जन्मनामकी राशि।

જન્મરોગ (सं) सदाकारोग, माता के उदरसे साथ आई बीमारी।

જન્મરોગી (स.) सदाका बीमार।

જન્મલેવો (क्रि) अवतार लेना, जन्म-लेना, पैदा होना, प्रगट होना।

જન્માક્ષર (सं.) देखो જન્મપત્રિકા

જન્માતર (स.) जीव की दूसरी स्थिति, इस जन्म के बाद।

જન્માંધ (सं.) जन्म का अन्धा, सूरदास।

જન્મોજન્મ (क्रि. वि.) जीव के सब रूपों मे, जन्म हा जन्म, अनेक योनि,

જન્મોત્રી (सं.) दखो જન્માક્ષર

જપ (सं.) स्मरण, याद, पुनः पुन. माला के मणियो पर देवता का नाम या मन्त्रोच्चारण।

જપ્ત (वि.) जब्त, गिरफ्तार, लिया हुवा, किसी के माल या जाय दाद को धरोहर के रूप से रखना।

જપ્ત કરવું, જપ્તી કરવી (क्रि.) जब्त करना, हड़पना, पकड़ना।

જપતપ (सं.) पूजा पाठ, तपश्चर्या, धार्मिक पूजा, धार्मिक ध्यान।

જપતી (सं.) जब्ती, गिरफ्तारी, पकड़ धकड़।

જપમાળ-માળા (सं.) माला, स्मरणी, सुमरनी, जप करने की माला। दानेदार माला।

જપવું (क्रि.) स्मरण करना, जपना, ध्यान धरना, धैर्यपूर्वक इंतजार करना।

જફા (सं.) दबाव, सख्ती, जुल्म, अन्याय, कठोरता, स्वतन्त्र राज्य।

જબકવુ-કી ઉઠવું (क्रि.) चमकना, भयभीत हो जाना, चौंकना।

જબર (सं.) भारी, शक्ति सम्पन्न, कठोर, बड़ा, कठिन।

જબરજંગ (वि.) बहादुराना, वीर, शूरतायुक्त, जंगी।

જબરદસ્ત (वि.) बलवान, जालिम निहायत सख्त, कठोर :

જબરદસ્તી-રાઈ (स.) सख्ती, दबाव, जुल्म, अन्याय, बलात्कार।

જબાં-બાન (सं.) जिव्हा, जीभ, भाषा, भाषण, बोल।

જબાંદરાઝ (वि.) शीघ्र उत्तर देनेवाला, हाजिर जवाब, शीघ्र भाषी।

જબાની (सं.) गवाही, साक्षी।

જબાબ-વાબ (सं.) उत्तर, जवाब।

જમે કરવું (क्रि.) वधकरना, काटना, कत्लकरना, मारडालना ।
જભે-જભ્ભો (सं) लवादा, अंगा, चोगा, जामा, कबा ।
જમ-ડો (सं.) यमदूत, अन्तक, कृतान्त, काल, मृत्यु, मौत ।
જમણ (सं.) भोजन, खाना, भक्ष्य ।
જમણવાર (सं.) जेवनार, भोज ।
જમણું (सं.) सीधा, दाहिना, दक्षिण ।
જમરૂખ (सं.) जामफळ, अमरूद, बीह, नाशपाती, सेव ।
જમરૂખડી-ખી (सं.) जामफळ, कावक्ष, नाशपातीका पेड़ ।
જમવું क्रि.) खाना जीमना, भोजनकरना, रिश्वतलेना, इकठ्ठे होना, जमना । [(हिसाबमें) उत्पन्न ।
જમા (सं.) आगे, जमाकी जगह
જમાઇ (सं.) जँवाई, जामात्र, पुत्रीका पति ।
જમાખરચ (सं.) देखो જમેખરચ आयव्यय, आमद खरच ।
જમાડવું (क्रि.) जिमाना, भोजनकराना, घूसदेना, रिश्वत देना ।
જમાત (सं.) जाति, सभा, मंडली ।
જમાદાર (सं.) हाकिम जमादारी कपदपर नियुक्तव्यक्ति ।
જમાદારી (सं.) जमादार का काम ।
જમાન (सं.) जमानत, प्रतिभू ।
જમાનો (सं.) समय, वक्त, काल ।
જમાબંદી-ધી (सं.) भूमिकर. जमीनका लगान । [औषधि विशेष ।
જમાલગોટા (सं.) जमालगोटा नामक
જમાવ (सं) बहुतायत, भीड़, झुंड, संग्रह, एकत्र ।
જમાવ કરવો (क्रि.) संग्रह करना, इकठ्ठा करना, एकत्र करना ।
જમાવવું (क्रि.) जमाना, इकठ्ठा करना, गंज करना, ढेर करना जोड़ना, बटोरना, तरक्कीपर लाना ।
જમાવસુલ (सं.) रियासतकी माल गुजारी, सालाना आय, जमा व मुनाफा ।
જમીજવું क्रि.) खाजाना, घूंस या रिश्वतमें रुपये हड़पजाना, जमजाना ।
જમીન (सं.) भूमि, पृथ्वी, जगह ।
જમીનદાર (सं.) जमीनवाला, जमीदार, किसान, कृषक ।
જમીનદોસ્ત કરવું (क्रि.) जमीनपर लिटादेना, जमीनपर पड़ना, मार डालना ।
જમે (सं.) देखो જમા
જમેકરવું (क्रि.) रुपया जमा करना ।
જમેખરચ (सं.) જમાખરચ आयव्यय, जमाखर्च । [तरफ ।
જમેપાસું (सं.) हिसाब में जमाकी

જમૈયો (सं.) छुरी, कटार, छुर।

જંપ (सं.) आराम, विश्राम।

જંબુક (सं.) गीदड़, स्यार, लडैया, बंदूक।

જય (सं.) जीत, पराभव, यश, कीर्ति विजय, फतह।

જયકરવો (क्रि.) भेगववो (क्रि.) यशप्राप्त करना, कीर्ति लाभ करना, पराजय करना, हराना, जीतना।

જયગોપાલ (स) विशेषतया वैश्य जातिमें प्रणाम करनेका शब्द विशेष।

જયજયકાર (सं) जीत, अभ्युदय, आशीर्वादार्थक।

જયંતિ (सं.) विजय दिवस, पार्वती कानाम, विजय मान, विजयी।

જયપાળ (सं) ब्रह्मा का एकनाम।

જયપત્ર (सं.) वह पत्र जिसमें विजेताकी जीत स्वीकारकी गई हो, जीतकालेख, अश्वमेधमें घोड़े के मस्तकपर जो पत्र बाँधा जाताथा।

જયપ્રસ્થાન (सं.) जीतने के लिये कूच, विजय प्राप्ति के निमित्त गमन।

જયવાન (वि.) जीता हुवा, विजेता, विजयी, विजयमान।

જયવિજય (सं.) विष्णु के दो द्वारपाल, जयविजय।

જયશબ્દ (सं.) जय घोष, जयजयकार, जीत सूचक शब्द।

જયશાલી (सं.) जीतने वाला, जयी, विजयी, विजेता।

જયશ્રીરામ, જય સીતારામ (सं.) प्रणाम सूचक शब्द, प्रणाम की रीति। [जयोल्लास, जीत की खुशी।

જયાનંદ-જયોત્સાહ (सं.) वि-

જયા (सं.) धनुष की डोरी, प्रत्यंचा।

જ્યારે જ્યારે (क्रि वि.) जब कभी, जब जब, जिस जिस समय। [तब,

જ્યારે ત્યારે (क्रि. वि.) अब और

જ્યાં હાં (क्रि वि.) कहाँ, किस जगह।

જ્યાહાં જ્યાહાં (क्रि वि.) कहाँ, वहीं, जहाँ जहा, जिस जिस जगह।

જ્યાહાં ત્યાહાં (क्रि. वि.) प्रत्येक स्थान, हर जगह।

જ્યેષ્ઠ (सं.) जेठ मास, हिन्दुओं का तीसरा महीना।

જ્યેષ્ઠા (सं.) जेष्ठा नामक नक्षत्र, १८ वाँ नक्षत्र।

જ્યેષ્ઠ કનિષ્ઠ (वि.) छोटा बड़ा, लघु दीर्घ, बालक वृद्ध।

જ્યોત-જ્યોતિ (स.) प्रकाश, रोशना, आभा, प्रतिभा, चमक, खुबसूरत।

જ્યોતિરૂપ જ્યોતિ સ્વરૂપ (सं.), ईश्वर, परमात्मा, प्रकाशमान।

જ્યોતિર્લિંગ (सं.) शिव, महादेव।
જ્યોતિષ (सं.) वेदांग, शास्त्र विशेष, वह विद्या जिस में आकाश के ग्रहों के सम्बन्ध का ज्ञान वर्णन है। [सत्ताईस नक्षत्रों का चक्र।
જ્યોતિષચક્ર (स.) राशि चक्र,
જ્યોતિષશાસ્ત્ર (सं.) खगोल विद्या, देखो જ્યોતિષ
જ્યોતિષી (सं.) दैवज्ञ, जातिषी, गणितज्ञ, ज्योतिष विद्या जाननेवाला।
જર (सं.) द्रव्य, धन, कृपा, दोलत, कमखाव, जरी।
જરકસી (वि) सोने के तारों का काम, जरी का काम। [जरातुर, जॉजर।
જરજર–રીત (वि.) वृद्ध, जीर्ण,
જરજવાહિર (सं.) कीमती वस्तु, बहु मूल्य पदार्थ। [ड्डा।
જરઠ (वि.) प्राचीन, पुराना, बु-
જરથોસ્તી (सं.) जोरोस्टर के अनुयायी, पारसी।
જરદ (सं.) पीળુ–पीला, पीत, हरिद्रा के रंग का, પીળું (सं.) पीला, कपासी, [पत्र।
જરદો (सं.) जर्दा, तम्बाकू, तमाल-
જરદોજ (सं.) सुनहरी तारो का काम करनेवाला।
જરબ (सं.) भय, डर, त्रास,
જરવું (क्रि.) पचना, हजम होना, सूख जाना, पच जाना।
જરા (सं.) बुढापा, वृद्धावस्था, (वि.) किंचित्, कुछ, थोड़ा, अल्प।
જરાક (वि.) थोड़ासा, किंचिन्मात्र अत्यल्प।
જરાયત (वि.) वह भूमि जो वर्षाऋतु के जल से खेती उत्पन्न करती हो।
જરાયુજ (वि.) गर्भजात, गर्भोत्पन्न, पिंडज, मनुष्य आदि।
જરિયાન (सं) जेवर, आभूषण।
જરીનું (वि) जिसपर रुपहरे और सुनहरे तारों का कसीदा किया गया हो।
જરીપુરાનાં (वि.) पुराना (वस्त्र)
જરીબ (सं.) नापनेवाला, सरवेयर।
જરૂખો (सं.) बारजा, खिड़की की चौखट, झरोखा, खिड़की, गवाक्ष, वातायन।
જરૂર (सं.) अवश्य, निस्सन्देह। (वि.) आवश्यक, प्रयोजनीय, (क्रि. वि.) वास्तविक, सचमुच।
જરૂરીઆત (स.) आवश्यकीय कार्य, आवश्यक बात।
જલ (सं.) पानी, तोय, उदक, रामचिरैया, पक्षी विशेष।

જલદ-જલ્દ (सं.) तीखा, कड़ा, शीघ्र, चर्परा, कठोर, गर्म, तेज।

જલકુમ્ભ (सं.) बेत का वृक्ष, जलन्धर, जलोदर।

જલદી (क्रि. वि.) शीघ्र, तुरत, तेजीसे, फुर्तीसे।

જલંદરવાળું (वि.) जलोदर रोगवाला, जिसे जलन्धर हो।

જલરા (सं) जुल्फी, बालो की लटी।

જલસ્નાન (सं) पानी द्वारा स्नान।

જલાદ (स.) कठोर, हृदयी, निर्दय व्यक्ति, बेरहम, जल्लाद।

જલાભેદ્ય (वि) अप्रवेशनीय, बेगुजर। [पदवी।

જલાલ (सं.) बड़प्पन, मर्यादा,

જલાલો (सं) ठाठ, धूमधाम, शान शौकत, वैभव, ज्योति।

જલધિ (सं) समुद्र, सागर, गहिरा।

જલેબી (सं.) एक प्रकार की मिठाई, जलेबी नामक प्रसिद्ध मिठाई।

જવ (सं.) जो, एक अन्न का नाम, (क्रि. वि.) जब, कब, सदा, कदा।

જવઘનું ખરૂ-કાઠું (सं.) नरकट की छड़, कलम बनाने की बरू।

જવખાર (सं.) जवाखार, कार्बोनेटआव पोटाश।

જવમાળ (सं.) स्वर्ण जौ की माला, सुनहले जौ की स्मरणी।

જવરનાશક (वि.) ज्वर को नाश करनेवाला, बुखार हटानेवाला।

જવરવાળુ (वि.) ज्वरयुक्त, जिसे बुखार हो गया हो। [कमतर।

જવને-જવલે (क्रि वि.) कदाचित्,

જવા દેવું (क्रि.) जाने देना, छोड़ देना, क्षमा करना, मुआफ़ी देना।

જવાન (स.) युवक, युवा, तरुण।

જવાંમર્દ (वि) बहादुर, वीर, साहसी। [साहस, हिम्मत।

જવાંમર્દી (सं.) बहादुरी, वीरता,

જવાબ (सं) उत्तर। [त्तरदाता।

જવાબદાર (वि.) जिम्मेवार, उ-

જવાબદારી (सं) जवाबदेही, जिम्मेवारी, उत्तर दायित्व।

જવાબ દેવો (क्रि) उत्तर देना जवाब देना।

જવાબી હુંડી (स.) वह हुण्डी जिसका रुपया उसके सिकरने तक न दिया जावे। जवाबी हुण्डी।

જવારી (सं) ज्वार, एक प्रकार का अन्न, ज्वारी नामक प्रसिद्ध अन्न।

જવાસો (स.) कटीली घास, वृक्ष विशेष, जवासा नामक पौदा।

જવાહીર-હેર (सं.) मणि माणिक्य, जवाहिरात, कीमती पत्थर।

જવાહીરખાનું (सं.) राजकोष, वह धन का भंडार जिसमे मणि माणिक्य हों।

જવુ (क्रि.) जाना, गमन करना, गुम होजाना, अंतर्ध्यान होना, गमन।

જવે (सं.) एक प्रकार की नरकट छड़।

જશ (सं.) यश, कीर्ति, शोहरत, लाभ, इज्जत, विजय।

જસત (सं.) जस्त, जस्ता,

જસ્તા (सं.) धब्बा, दाग, चिन्ह।

જસાં (उप.) जैसा, मानिंद, समान।

જહાં (क्रि. वि.) जिसजगह, कहाँ।

જહાંગીર (सं.) विश्व विजयी, संसार को जीतनेवाला।

જહાંપનાહ (वि.) विश्व रक्षक, समार का आश्रय, जगत का आसरा।

જહાજ (सं.) पोतयान, बड़ी नौका जलपोत, समुद्र में चलनेवाली बड़ी भारी नाव।

જહાન (सं.) विश्व, संसार, जगत

મ–(सं.) नर्क।

જહી (क्रि. वि.) कहीं, जहा कहीं।

જળ (सं.) पानी, जल, तोय, उदक।

જળ કુકડી (सं.) जल मुर्गी, पानी में रहने वाली मुर्गी।

જળ ક્રીડા (सं.) जलाशय में बराबर वालों के साथ जल छिड़कना आदि जल सम्बन्धी खेल, जल विहार।

જળચક્કી (सं.) पनचक्की, वह चर्खी जो पानी के बहाव से चले।

જળચર (सं.) जलजंतु, जल में रहनेवाले प्राणी, जलजीव, एक प्रकार की मछली।

જળજંતુ (सं.) जळ के निवासी जीव, जळचर। [प्रज्वलित होना।

જળ જળવુ (क्रि.) धधकना आम

જળજળાટ (सं) अत्यन्त उष्णता, बेहद गर्मी, अति प्रकाश, जग मगाहट। [नेत्रों का पानी।

જળજળીયાં (सं.) अश्रु, आँसू,

જળઝળીયાં (सं.) सदा, अश्रुपात।

જળઝારી (सं.) जल भरने का पात्र, झारी, सुराही, कुंजा।

જળતરંગ (सं.) जलकी लहरे, पानी के हिलोरें, वाद्य विशेष।

જળદાહ (सं.) मृतक की जल में अन्त्येष्टि क्रिया। मुर्दे कोपानी मे फेक देना, जलदाग।

જળ દેવતા (सं.) एक ग्रह, वरुण, जल के अधिष्ठाता देव।

જળધર (सं.) बादल, मेघ, घन।

જળનિધિ (सं.) समुद्र सागर, वारिधि । [अधिकारी ।
જળપતિ (सं.) वरुण, जल तत्वों का
જળપાન (सं.) कलेवा, कल्प, प्रातःकालीन भोजन, तरल पदार्थ सेवन । [मे रहनेवाला पक्षी ।
જળપક્ષી (सं.) जल का पक्षी, जल
જળ પ્રળય (सं.) पानी की बाढ़, जलद्वारा नाश, जलडूब ।
જળ પ્રવાહ (सं.) पानी का बहाव, पानी का प्रवाह ।
જળ પ્રાણી (सं.) जलजंतु, जलचर।
જળમય (वि.) सर्वत्र पानी ही पानी । जलामयी, जल प्रलय ।
જળમાર્ગ (सं.) पानी का रास्ता, जल के द्वारा रास्ता, जहाज़ी रास्ता।
જળયંત્ર (सं.) जल के द्वारा गति प्राप्त करनेवाला यंत्र, वह यंत्र जिस से जलद्वारा काम लिया जाता हो, जल सम्बन्धी मशीन ।
જળયાન (सं.) जहाज़, नोका, जल पोत, नाव, जलमें चलनेवाली सवारी।
જળયોદ્ધાધિપતિ (सं.) जहाजी बेड़ों का हाकिम, जलसेना का सेनापति ।
જળરહિત (वि.) सूखा, शुष्क, जिसमें तरी न हो, जलहीन ।
જળવાસ (सं.) जल में रहना, पानी का वास ।
જળ સ્થળચારી (सं.) जलचर और थलचर, वह जो जल और थल दोनों पर चल सकता है ।
જળવું (क्रि.) जलना, भस्म होना, दग्ध होना, दहना, बलना ।
જળહળ (वि.) चमक, दमक ।
જળશાઈ (सं.) विष्णु, जल में सोना, देखो, જળશયન ।
જળાપો (सं.) द्वेष, डाह, ईर्षा, स्पर्द्धा, जलन, कुढन, चिंता ।
જળાભાસ (सं) मृगतृष्णा, धोखा,
જળાશય (सं.) सरोवर, ताळाव, नदी, कूवा, समुद्र, जल का संग्रह।
જળો (सं.) जोक, लकड़ी का फखड़ । लकड़ी की चिप्पट ।
જાંઘ—ઘ (स.) जाँघ, जंघा ।
જાંગડ (वि.) स्वीकृति पर दी हुई वस्तु । [की किताब, स्मृति पुस्तक।
જાંગડબહી—વહી (सं.) याद दाश्त
જાંગલો (सं.) यूरोप का, यूरूपवासी, विलायती, यूरूपियन ।
જાંગી (सं.) बड़ा ढोल ।
જાંગીઓ (सं.) एक प्रकार की छोटी बिरजिस, घुटनों से ऊपर जंघाओं पर पहिनने का पायजामा काछना, कछ, जाँघिया ।

જાંબુ (सं.) जामुन, फल विशेष। जाम्बू फळ।

જાંબુદ્વીપ (सं.) सात द्वीपों में मुख्य द्वीप, हिमालय, और नर्मदा के बीच की भूमि।

જાંબુડો (सं.) जामुन का पेड, जम्बू वृक्ष, एक प्रकार का खिलौना।

જાંબુડું (वि.) बैजनी, जामुनी रंग।

જ્યાં (क्रि वि.) जहाँ, कहा, जिसजगह, जो स्थान।

જ્યાં જ્યાં–ત્યાં ત્યાં (क्रि. वि.) यत्रतत्र, जहाँतहा, हर कहीं।

જ્યાં તલક (क्रि. वि.) जहाँ तक जब तक, तक, यथा संभव, यथा साध्य।

જહાંદાર (सं.) विश्व विजयी, संसार [को जीतनेवाला।

જ્યાં લગણ–વેર–સુધી (क्रि. वि.) देखो જ્યાં તલક।

જાઆવ (सं.) स्वतंत्रता पूर्वक आवागमन, आमदरफत्, जाना आना

જાઈ (सं.) चमेली का फूल, बेळा का फूल, जुही का पुष्प।

જાગ (सं.) જાગરણ–निंद्रा त्याग, जागना, रतजगा। [विशेष।

જાયફળ (सं.) जायफळ, औषधि

જાગ્રતું–ગ્રત (वि.) अनिद्रित, जगताहुवा, बेसोया, सावधान।

જાગતુંજોત–ધ (वि.) देखो જાગતું

જાગરણ (सं.) देखो જાગ

જાગરૂતી–ગૃતિ (सं.) सावधानी, जाग, जागृति, अप्रमत्तता।

જાગવું (क्रि.) जागना, सावधान रहना, अनिद्रित होना।

જાગીર–રી (सं.) सरकारकी ओर से दीहुई मुआफ़ी (जमींनकी) जायदाद।

જાગીરદાર (सं.) जागीरवाला, जायदादवाला, मुआफी प्राप्त।

જાગૃતાવસ્થા (सं.) सावधानी की दशा, जागृत अवस्था, जीवित, सावधान, जगनाहुवा।

જાચક (सं.) याचक, भिक्षुक, मँगता, भिखमंगा।

જાચના (सं.) भिक्षा, भीख, प्रार्थना, विनय, दान।

જાચવું (क्रि.) माँगना, याचना करना, विनती करना, हाथजोड़ना, घिघियाना, भीख मांगना।

જાચું (वि.) दुखदायी भीख, क्लेशदायिनी भिक्षा।

જાજમ (सं.) बिछौना, शतरंजी, दरी, चटाई, गलीचा, जाजिम।

જાજરમાન (सं.) ज्वाजल्यमान, चमकीला, प्रकाशमय, चैतन्य।

જાજરૂ (सं.) पाखाना, संडास, शौचालय, अधम, नीच ।

જાટકવું (क्रि) झटकना, पछोरना, झाड़ना, भड़काना । [असम्भवता ।

જાડાઈ (सं.) मुटाई, भद्दापन,

જાડું (वि.) मोटा, ताजा, घना, पुष्ट, खड्ड ।

જાણ (सं.) ज्ञान, इल्म, सूचना ।

જાણપિછાણ (सं.) जानपहिचान, परिचय ।

જાણભેદુ (सं.) कपटी, पाखण्डी ।

જાણવાજોગ—जानने योग्य,

જાણવામાં—જાણ્યામાં—જાણમેળે (क्रि. वि.) जो कुछ जानते हो उसके द्वारा अटकल या अन्दाज ।

જાણવું (क्रि) जानना, समझना ज्ञात करना, जानलेना ।

જાણીજોઈને (वि.) समझबूझकर, चौकसीसे, सावधानीसे ।

જાણીતુ (वि.) जानकार, परिचित, घरेलू, मेलवाला, चतुर, गुणी ।

જાણે-કે (वि.) मानो, यदि ऐसा, ख्याल करताहूं, मुझे जानपड़ताहै ।

જાત (सं.) गोत्र, जाति, कोम, वर्ण, भेद, किस्म, प्रकार भाँति, वर्ग, दर्जा, कुटुम्ब ।

જાતભાઈ (सं.) गोत्रबंधु, जातिबंधु, कुटुम्बी ।

જાતવંત-વાન (वि.) उच्च कुलोत्पन्न, कुलीन, श्रेष्ट वर्ण का श्रेष्ट, उत्तम ।

જાતિ (सं.) दर्जा, श्रेणी, किस्म, गोत्र, कुल, कुटुम्ब, घराना, बंश ।

જાતિભેદ (सं.) वर्णभेद, गोत्रभेद ।

જાતિભ્રષ્ટ-ભ્રષ્ટ (क्रि. वि.) पतित, जातिच्युत, कुलहीन, जातिसे अलग ।

જાતિવૈર (सं) प्राकृतिक शत्रुता, स्वाभाविक द्वेष ।

જાતિ સ્વભાવ (सं.) जाति का प्रभाव, जातीय आदत, स्वाभाविक विधान ।

જાતીય (वि.) कौमी, जाति का ।

જાતી વ્યવહાર (सं.) कुटुम्बिय जन, समान वर्ताव, हुक्कापानी ।

જાત્યંધ (वि.) जन्माध, सूरदास ।

જાત્યભિમાન (सं.) जातीय गर्व, स्वात्माभिमान । [स्वयं ।

જાતે (वि.) अपने आप, खुद,

જાત્રા (सं.) यात्रा, तीर्थ गमन, मेला ।

જાત્રાળુ (सं.) यात्री, तीर्थगामी ।

જાથુ-ક (क्रि. वि.) स्थिरतापूर्वक, पायदारी, यथाविधि, नियमपूर्वक ।

જાદરણી (सं.) चोलियाँ ओढ़नेके साथ हीं

જાદા-દે (वि.) अधिक, विशेष, ज्यादः ।
જાદુ (सं.) टोना, टुटका, इंद्रजाल ।
જાદુખોર-ગર (सं.) जादू करनेवाला, मायाकार, मायावी, इन्द्रजालिक ।
જાદુગિરી (सं.) जादू का काम, टोना, टुटका, इंद्रजाल ।
જાદુટોણા (सं.) मंत्र टुटका, बुरे काम, निंद्यकार्य ।
જાદુમંતર (सं.) टोना, टुटका ।
જાન (सं.) प्राण, जीवन, कोमल हृदय, हानि, घाटा, मूल्य, जौहर, बरात, जनेत ।
જાન આપવો (क्रि.) प्राण देना, दूसरे के लिये प्राणोत्सर्ग करना ।
જાનઇઆ (सं.) स्त्री पुरुषों का दूल्हे के साथ चलनेवाला समूह । बराती, जनेती, बरात वाले ।
જાનથી મારવું-લેવો (क्रि.) जान से मारना, वध करना, कतूल करना । [जान पहिचान ।
જાન પિછાન (सं.) परिचय,
જાનમાલ (सं.) जीवन और धन ।
જાનવર (सं.) જનાવર पशु, ढोर, प्राणी, जीव । [भीतरी ।
જાની (वि.) दिली, अन्दरूनी ।
જાનીવાસો (सं.) बरातियों के ठहरने का स्थान, जनवासा ।
જાનુ (सं.) घुटना, जानू ।
જાપ (सं.) देखो જપ ।
જાપતો (सं.) रोक, अटकाव, बन्धेज, जाब्ता, बन्दोबस्त, धर्मानावस्थित ।
જાફત (सं.) दावत, भोज, जेवन, आदर, सत्कार, विलास ।
જાફરાન (सं.) केसर ।
જાફાટ (सं.) बेपरवाही, असावधानी अनिश्चितता ।
જામ (सं.) प्याला, कटोरा, याम, प्रहर, राजा, सुराही, झब्बर ।
જામગરી-ગીરી (सं.) बन्दूककी टोपी ।
જામણ (सं.) जमान, जमानेकी वस्तु, पानी दूध आदि जमानेका पदार्थ।
જામદાની (सं.) एक प्रकारका सूतीवस्त्र । [हाकिम, खजानची ।
જામદાર (सं.) सर्वजनिक कोषका
જામદારખાનું (सं.) सार्वजनिक खजाना । [यामिनी ।
જામની-મિની (सं.) रात्रि, रात,
જામફળ (सं.) नासपाती, अमरूद ।
જામવું (क्रि.) जमना, इकट्ठा होना, एकत्र होना, ठोस होना, मिले होना ।

જામીન (सं.) जामिन, प्रतिभू, जमानतदार।
જામીન કરવો (क्रि.) जमानतदार करना, जमानत करना।
જામીનખત (सं.) जमानत की चिठ्ठी, जमानतका तमस्सुक, नियम पत्र। [होना। जिम्मेवार होना।
જામીન થવું (क्रि.) जमानतदार
જામીનગીરી (सं.) जमानत।
જામો (सं.) बड़ा कुबा, जामा, वस्त्र विशेष, सभावस्त्र। [विशेष।
જાયફળ (सं.) जायफल, औषधि
જાયા (सं.) पत्नी, भार्या, गृहिणी।
જાયી (सं.) पुत्री, तनया, आत्मजा।
જાયો (सं.) पुत्र, बेटा, तनय, आत्मज।
જાર (सं.) ज्वार, ज्वारी, धान्य विशेष। यार, आशना, उपपति, आशिक। [कारी।
જારકર્મ (सं.) व्यभिचार, जिना-
જારણ-મારણ (सं.) मंत्रोंद्वारा मारण मोहन। निर्बलता या मृत्यु। [छिनाल, विषयी।
જારી (सं.) व्यभिचारी, जिनाकार,
જારી કરવું (क्रि.) चालू करना, शुरू करना, आरंभ करना।
જારી થવું (क्रि.) जारी होना, बेवस होना, आरंभ होना, शुरू होना।
જારી રાખવું (क्रि.) चलाते रहना, गतिमें रखना, जारी रखना चालू रखना।
જારૂં (सं.) व्यभिचार, छिनाल।
જાલમ (सं.) निर्दय, कठोर, जुल्मी, अन्याय, कड़ा, सख्त।
જાવક (वि.) जो बाहर भेजी जावेगी, जानेवाली।
જાવત (क्रि. वि.) जब, जिस समय, जबतक, थोड़ेमें।
જાવતચંદ્ર દીવાકર (क्रि. वि.) जबतक सूर्य और चंद्र विद्यमान हैं, हमेश, प्रलयकालतक, सृष्टि विनाश पर्य्यन्त।
જાવત નિશાની (सं.) संक्षेपचिन्ह।
જાવંત્રી (सं.) जावित्री।
જાવેદાન (वि.) हमेशा के लिये, सदा सदा के लिये। [नित्यता।
જાવેદાની (सं.) सनातनत्व,
જાસુસ (सं.) गुप्तचर, भेदिया, जासूस, हरकारा।
જાસ્તી (वि.) अधिक, विशेष, (सं.) सख्ती, कड़ाई, उग्रता, कठोरता, बढ़ती, बढाव।

જાસૂદી (સં.) जूते का फूल, जूते पर लगाया जानेवाला फूल।

જહાન્નમ (સં.) नर्क, यमलोक, जहन्नुम।

જાહેર (વિ.) प्रकट, खुला, जाहिर।

જાહેરકામ (સં.) सार्वजानिक कार्य, प्रकट कार्य।

જાહેરખબર (સં.) विज्ञापन, विज्ञप्ति, इश्तिहार।

જાહેર કરવું (ક્રિ.) प्रकट करना सूचित करना, जाहिर करना।

જાહેરથવું (ક્રિ.) उघड़ना, प्रकट होना, आगे आना।

જાહેરનામું (સં.) ढँढोरा, डुग्गी, मुनादी, डोंडी, इश्तहार।

જાહેરાત (ક્રિ. વિ.) खुल्लमखुल्ला, साफसाफ, प्रत्यक्ष।

જાહેલ (સં.) अज्ञान, हठी, जिद्दी, क्रोधी, बदमाश, जाहिल।

જાહોજલાલી (સં.) ठाठ, धूमधाम, शानशौकत, वैभव, ज्योति, चटक।

જાળ (સં.) जाल, बचाव, पालन, [पाश, फन्दा।

જાળવવું (ક્રિ.) बचाना, पालना, रक्षा करना, हिफाजत करना।

જાળી (સં.) झँझरी, झरोखा, खिड़की, जाल सरीखी, मोहरा।

જાળીઉં (સં.) बत्ती, बाती पलीता।

જાળીદાર (વિ.) जाली के काम [का, जालीवाला।

જાળું (સં.) मकड़ी का फाँद, झिल्ली, जाला, आँख का जाला।

જિયાન (સં.) हानि, टोटा, नुकसान।

જિયાફત (સં.) देखो જાફત,

જિયાવર (સં.) दूल्हा, वर, बींद।

જીક–ર (સં.) हठ, जिद्द, वादानुवाद, शास्त्रार्थ।

જીગર (સં.) दिल, हृदय, मन, कलेजा, हृत्पिण्ड।

જીગોડા (સં.) कुत्ते, गाय. आदि पशुओंकी जूँ, चिचड़ी।

જીજ્ઞાસા (સં.) पुछार, प्रश्न, मनोगत, जाननेकी इच्छा।

જીજી (સં.) माता, मा जननी।

જીજીમા (સં.) बड़ीमा, दादी. नानी, माता से बड़ी स्त्री।

જીડ (સં.) आमकी गुठली का छिलका।

જીડવું (સં.) गद्दी।

જીત (સં.) जय, विजय, शत्रु पराजय, शत्रुहार, शत्रुपराभव।

જીતવું (ક્રિ.). जयलाभ करना, जीतना, विजय श्री प्राप्त करना।

જીતખોર (वि.) जिद्दी, हठी, दिक करनेवाला ।

જીતનાર (सं.) जेता, विजयी ।

જીતપત્ર (सं.) विजयपत्र, जय पत्र, जीतका साक्षी पत्र ।

જીતીલેવું (क्रि.) जीतलेना, आधी न करना, वश करना, हराना ।

જીતેંદ્રિય (वि.) इन्द्रियजीत, जिसने इन्द्रियों को वश करलिया हो, ज्ञान, वशी, अकामी ।

જીદ (सं.) हठ, जिद्द, सरकशी ।

જીદ કરવી (सं.) हठ करना, जिद्द करना, अड़ना आग्रह करना।

જીંદગાની-ગી (सं.) जीवन, उम्र, आयु ।

જીદ્દી (सं) हठी, आग्रही ।

જીન (सं.) काठी, जिन्द, प्रेत, खोगर । [गोलोक ।

જીનત (सं.) स्वर्ग, वैकुण्ठ,

જીનગર (सं.) काठी बनाने वाला, जीन बनानेवाला ।

જીન નાખવું (क्रि.) काठी कसना, तय्यार होना ।

જીનપોષ (सं.) काठी ढाँकने का वस्त्र, काठी का वस्त्र।

જીન્નસ (सं.) वस्तु, पदार्थ, द्रव्य।

જીભ (सं.) टुकड़ा, लगाम ।

જીભા (सं.) गोखरू, बनैला वस्त्र ।

જીભ-ભી-ધડી (सं.) जिह्वा, जबान।

જીભ હલાવવી (क्रि.) अल्प भाषण करना, थोड़ासा बोलना ।

જીભાળ (वि.) गन्दे मुहँ का, मैले मुहँवाला ।

જીભી (सं.) जहाज का पाल, जीभी, जीभ का मैल साफ करने की ।

જીરાએત (सं.) कृषि कार्य, खेती, किसानी, जराअत ।

જીરાપાક (सं) जीरापाक, जीरे द्वारा बना हुवा पकान्न, सुगंधित ।

જીરાફ (सं) अफ्रीका का एक चापाया जिसकी अगली टॉंगे पिछलीकी अपेक्षा छोटी होती है, एक प्रकारका ऊँट । [चॉवल ।

જીરેસાળ (सं) एक प्रकारका

જીરાભરીવાળું (स.) मसालेदार, खुशबूदार, तीक्ष्ण, चटपटा ।

જીરૂં (सं.) जीरक, जीरा एक सुगन्धित वस्तु ।

જીર્ણ (सं.) प्राचीन, पुराना, वृद्ध, बूढा, परिपक्व, जर्जरीभूत ।

જીલદ (सं.) पुस्तक की जिल्द, पुस्तक का आवरण, गत्ता, पुठ्ठा ।

જીલદદાર (सं.) दफतरी, जिल्द बांधनेवाला । [प्रांत ।

જીલ્લો (सं.) जिला, जिलासूबा,

જીવ (सं.) प्राण, आत्मा, जिय, जी, प्राणधारी, चेतन, जानदार जन्तु, द्रव्य, धन ।

જીવ આપવો-કાઢવો (क्रि.) अपने प्राणोंको बलि करना, आत्मघात, प्राणोत्सर्ग । [ज्ञात होना ।

જીવ ઉંચો થવો (क्रि.) उदासी

જીવ ઉડી જવો (क्रि.) पागलसा हो जाना, होश उड़ना, घबराजाना ।

જીવ ખોટો થવો (क्रि.) नाखुश होना, नाराज होना, रुष्ट होना, अप्रसन्न होना ।

જીવ ખાવો (क्रि.) तंग करना, सताना, दिक् करना, थकाना ।

જીવજાન-લગ (क्रि.) दिली, जिगरी, अति प्रिय, प्राणप्रिय, प्यारा, कठिन कार्य करना, फिक्र करना, चिंता करना, सावधानी से काम करना, उदार होना. धर्मात्मा होना, शान्त होना, ढीठ होना, बहादुर होना नाराज होना, अप्रसन्न होना, प्रयत्न करना, सताना, जीव खाना, मरना, मारना, बध करना, कंजूस होना, कृपण होना, उदास होना ।

જીવના સમ (सं.) अपनी कसम, मेरी सौगन्ध, अपनी शपथ ।

જીવજંત-તુ-ડું (सं.) कीड़े मकोड़े प्राणी, जानवर । . "

જીવત (सं.) जीवन जीव, जिन्दगी ।

જીવતર (सं.) पूर्ववत्

જીવતદાન (मं.) जीवनदान, अभय वचन, प्राण रक्षा, प्राणदान ।

જીવતું (सं.) जीवित, जिदा, चैतन्य ।

જીવત (वि.) पूर्ववत्

જીવંત કરવું (क्रि.) जिलाना, जीवित करना, जिन्दा करना, साहस दिलाना ।

જીવતા રહેવું (वि.) जीवि॰ रहना, जिन्दे रहना, कायम रहना ।

જીવતો જાગતો (वि.) राजीखुशी, जीवित और जागृत, जीता जागता,

જીવતો જીવ (सं.) जीवित प्राणी, चैतन्य जीव अमृत जीव ।

જીવદાર (बि.) द्रव्यपात्र, रुपये पैसेवाला, जिन्दा, जीवित ।

જીવન (सं.) जीविका, रोजी, भोजन, अस्ति, स्वत्व ।

જીવનગાળો (सं.) जीविका, रोजी, रोटी, कपड़ा, निर्वाह ।

જીવનમુક્તિ (सं.) मोक्ष, नजात ।

જીવંનમુક્ત (वि.) जीवन दशामें ही ज्ञानार्जन की सहायतासे ब्रह्म को साक्षात्कार किये, इस जन्म ही में संसार बंधन सेमुक्त, महात्मा ।

જીવનાર (सं.) जीनेवाला ।

જીવનવસ્તુ (सं.) जीविका, स्वत्व।

જીવપ્રાણ (सं.) आत्मा और जीव जीवन और आत्मा।

જીવમારવો (क्रि.) काम क्रोध को शमन करना, जीव हिंसा करना।

જીવયોનિ (सं.) छोटे छोटे जानवरों की श्रेणी। [मृत, मुर्दा।

જીવરહિત (वि.) निजाव, बेजान,

જીવલગ (वि.) प्यारा, दुलारा, प्राणधिक प्रिय, प्रिय।

જીવવું (क्रि.) जीना, जिन्दा रहना, जीवित रहना, जिन्दा होना।

જીવસટોસટનું (वि.) खतरनाक, भयहेतुक, जोखिमका।

જીવહત્યા (सं.) वध, कतल, जीवनाश, हिंसा।

જીવાઇ (सं.) मुकर्रर जीविका, रोजी, आजीविका!

જીવાડનાર (सं.) संरक्षक, रखवाला, ईश्वर।

જીવાડવું (क्रि.) आत्म रक्षा करना, निमित्त करना, जीना, रहना।

જીવાત (सं.) जीव, कीड़े मकोड़े।

જીવાત્મા (सं.) आत्मा, प्राण, जीव, रूह। [तेज।

જીહામ (सं.) साहसी, शीघ्र, स-

જીહ્વા (सं.) जबान, जीभ, रसेन्द्रिय।

જીહ્વાગ્રે (क्रि. वि.) जबान के सिरेपर, जीभ के अग्र भाग पर।

જીવિકા (सं.) निर्वाह के कारण, गुजारे के सबब। [घरू।

જીવેજાન (वि.) दिली, जिगरी,

જુ (सं.) जूँ, चीलर,

જુક્તિ (सं.) तदबीर, जुगत, हथौटी, कारण, हुनर, योग्यता, रीति।

જુખામ (सं.) सर्दी, जुकाम, ठंड।

જુગ (सं.) युग्म, दो, जोड़ा, युग, ४ युग, १२ वर्ष की अवधि।

જુગજુગ (क्रि वि) चिरकाल तक हिलते हुए, काँपते हुए।

જુગટું (सं) जुआ, द्यूत, जूवा।

જુગતંબા (सं.) देखो જગદંબા

જુગદીશ (सं) देखो જગદીશ

જુગમ (सं.) युग्म, यो इकठे, दो एकत्र।

જુગલ (सं.) दो, जोड़ा, दोहरा।

જુગાર (सं.) जूवा, द्यूत, जुआ।

જુગારી (स.) जुआरी, जुआ खेलनेवाला

જુગોજુગ (क्रि. वि.) प्रत्येक समय, हर अवस्थामें, सदैव नित्य, सदा।

જુજ—વ (वि.) थोड़ा, कम, अल्प, कुछ, तुच्छ, छोटा, हलका।

જુજવું (वि.) अलग, जुदा, निराला, भिन्न, न्यारा, रंग बिरंग, नानावर्ण।

જુઠ (सं.) असत्य, मिथ्या, गलत, अशुद्ध, झूठा

જુઠણ (स.) उच्छिष्ट, भोजन से बचा हुआ, जूठन, जूँठा [झूँठ।

જુઠાણુ (सं.) असत्य, मिथ्या,

જુઠાસેગન (सं.) झूठकिरम, झूठी सागन्ध उठा, मिथ्याशपथ।

જુઠું-ઠ્ઠું (सं.) झूँठा, असत्य।

જુઠું કહેવું (क्रि.) झूठा कहना, मिथ्या कहना, असत्य कथन।

જુઠો (सं.) मिथ्यावादी, असत्य वक्ता झूँठा। [गड्डा।

જુડી—ડો (सं.) पुलिन्दा, बण्डल,

જુતી (सं) पन्हैयाँ, पदत्राण जूती।

જુતીખોર (वि.) जूती खानेवाला, सदा पिटोकरा, सदादोषके योग्य।

જુતીપેન્જાર (सं.) चेतली जूती, चपोरा जूती, ढीली जूती, स्लीपर।

જુતીમારવી (क्रि.) जूतियोंसे पीटना, दोष लगाना, धिक्कारना।

જુથ—ટુ (सं.) भीड़, झुंड, जन समूह।

જુદાઈ (सं.) वियोग, पार्थक्य, अलगाव, भिन्नता।

જુદું (वि.) अलग, पृथक, भिन्न।

જુધ—દ્ધ (सं.) संग्राम, रण लड़ाई, जंग, समर।

જુનું (सं.) पुराना, प्राचीन।

જુનુંખમ (वि.) बिलकुल जर्जरित, जराजीर्ण।

જુનુંપાનું-પુરાનુ (वि.) पुराना, वृद्ध, जर्जर,।

જુનોપાપી (सं.) पुराना पापी, प्रसिद्ध पापी, [वक्ता।

જુબાં—બાન (स.) देशभाषा बोली,

જુબાની (सं.) साक्षी, गवाही।

જુમખો (सं.) गुच्छा, झब्बा फुंदना लटकन। [तमाम।

જુમલે-લ્લે (क्रि. वि.) इकट्ठे, सब

જુમ (सं) बेहोशीकी हालत, गफलत ऊँघ, नींद, झपकी।

જુમ્મો (सं.) जिम्मेवारी, उत्तर दायित्व, अधिकार।

જુમલો (सं.) रकम, जोड़, टोटल।

જુમલ્લો (सं.) पूर्ववत,

જુમેરાત (सं.) बृहस्पति वारकी रात्रि,

જુરત (सं.) शक्ति, बल, साहस।

જુરીઅત (स.) पूर्ववत,

જુલમ (सं.) अन्याय, अनीति, दबाव सख्ती, उपद्रव, कठोरता।

જુલમગારી (सं.) पूर्ववत

જુલમકરવો (क्रि.) अनीति करना, अन्याय करना, सख्ती करना।

જુલમગાર (सं.) अन्यायी, जालिम, निर्दय, पाषाण हृदयी।

જુલમી (सं.) पूर्ववत्,

જુલાબ (सं.) विरेचन, जुल्लाब, पेटसाफ करनेवाली, धमकी, घुड़की,

જુવતી (सं.) स्त्री, जवान स्त्री।

જુવંતી (सं) पूर्ववत्

જુવા (सं.) एक प्रकार का कीड़ा।

જુવખાનું (सं.) जुवा खेलने का घर, द्यूत गृह।

જુગાખોર (सं.) जुवारी, द्यूत प्रेमी।

જુવાન-જોધ-પટ્ટો (सं.) तरुण, जवान, युवक, हट्टाकट्टा, बली।

જુવાની (सं.) यौवन, तरुणावस्था।

જુવાર (सं.) ज्वार, अन्न विशेष।

જુવાળ (सं.) ज्वारभाटा, पानी का चढाव, पानी का बढाव।

જુવું (सं.) द्यूत, जूवा, पासेका खेल।

જુસરી (सं.) जुआ, जूड़ी, बैलोंके कांधेपर रखनेकी, नाथना।

જુસ્સો (सं.) हलचल, घबराहट।

જુહાર (स.) प्रणाम, नमस्कार।

જે (सर्व.) कौन, क्या, जो, वे, विजय, जीत।

જેકાંઈ (क्रि. वि.) जोकुछ।

જેકાંઈ (क्रि. वि.) जो कोई, जोभी।

જેગમ (क्रि. वि.) जहाँकहीं, जिधर,

જેગોપાલ (सं.) प्रणाम सूचक शब्द।

જેજે (सर्व.) जोजो, जोकुछ, जयजय।

જેજેકાર (सं.) जयजयकार, जीत अभ्युदय, आशीर्वादार्थक शब्द।

જેટલું (क्रि. वि.) जितना,

જેટલે (क्रि. वि.) जब, तबतक।

જેટલે સુધી-લગી (क्रि. वि.) जब-तक, उस समयतक, तबतक। जहाँतक। [मास, ज्येष्ठमास।

જેઠ (स.) पतिका बड़ाभाई तृतीय

જેઠાણી (सं.) जेठकीकी, पतिके बड़ेभाईकी पत्नी।

જેઠીપુત્ર (सं.) सबसे बड़ा पुत्र।

જેઠીમધ (सं.) ज्येष्ठीमधु, मधुली।

જેઠીમધનો સીરો (सं.) मधूलीका रस, एक प्रकारकी मीठी जड़ का रस।

જેઠેકાણે (वि.) जिसजगह, जिसस्थान, जहाँ कहीं, जहाँ, यत्र।

જેણીગમ (क्रि. वि.) देखो જેગમ,

જેણે (सर्व.) कौन, किसने, जो, जिसने। [चीज।

જેતે (क्रि. वि.) कुछभी, कोई

જેપ્રમાણે (क्रि. वि.) जिस तरह जिस रीति से, अनुसार, जैसे हो।

જેમ (सं.) पूर्ववत्,

જેમકે (क्रि. वि.) जैसेकि, अर्थात् यानी, उदाहरणार्थ ।

જેમતેમ (क्रि.वि.) जैसे तैसे, यथातथा ।

જેમનું તેમ (क्रि. वि.) वैसाका वैसा, जैसाका तैसा, ज्यों का त्यों ।

જેર (वि.) वशीभूत, जीताहुआ,

જેરકડી (स.) लगामकी कड़ी, लगामकी जंजीर ।

જેર કરવું (क्रि.) वशकरना, आधीन करना, जीतना ।

જેરદસ્ત (सं.) कमजोर, दुर्बल, अशक्त, छोटा, नीचा, मातहत ।

જેરબંધ (सं.) फीता या वस्त्र जो घोड़ेकी लगामके बांधा जाता है कोड़ा चाबुक, हंटर, प्रतोद ।

જેરવવું (सं.) सहना, ठहरना, सुधारना, पचाना ।

જેલ (सं.) कारावास, बन्दीखाना, जेलखाना, कारागार ।

જેવડું (क्रि. वि.) इतना ऊँचा, जितना ऊँचा, [अलङ्कार

જેવર (सं.) आभूषण, भूषण,

જે વખતે, જે વારે, જેવેળા (क्रि. वि.) जबकभी, जिससमय, जब ।

જેવું (क्रि.) जैसा, समान, ऐसाकि ।

જેવું તેવું (क्रि. वि.) जैसा तैसा, ऐसा वैसा, जैसाका तैसा, तथा, वही ।

જેપ (सं.) देखो જેબ, જેબ્રિઅ ।

જેભીકૃષ્ણ (सं.) देखो જેભોપાળ,

જેસલી (सं.) हल, हर, कृषियंत्र ।

જેહેર (सं.) विष, हलाहल, द्रोह, विद्वेष, क्रोध, गुस्सा ।

જેહેર આપવું (क्रि.) विष देना, जहर देना, विषपान कराना ।

જેહેર ઉતરવું (क्रि.) विषके नशेसे छुटकारापाना, विषउतरना ।

જેહેર કચુરો (सं.) कुचला, एक विषैली औषधि विशेष ।

જેહેરખાવું (क्रि.) विष पान करना ।

જેહેર ચડવું (क्रि.) विष द्वारा बेहोश होना, जहरका नशा होना ।

જેહેરી (सं.) विषाक्त, विषपूर्ण, विषैला जहरी द्वेषी ।

જૈન (धर्म) बौद्धधर्म, जिनधर्म ।

જો (अ.) यदि, अगर, बशर्तेकि, इस दशामें (क्रि.) देखना, निहारना, अवलोकन करना ।

જોઈતું (वि.) आवश्यक, जरूरी, चाह इच्छा, प्रयोजनीय, उचित ।

જોઈયે (क्रि.) चाहिये, होना चाहिये लाजमी होना आवश्यक है ।

જોઈજવું (क्रि.) देखजाना, निगाह करजाना ।

જોઉં (क्रि) देखूं तो, देखनेदो ।

જોક (સં.) जोंक, जलजंतु विशेष।

જોકે (अ.) तिसपरभी, तथापि, बावजूदेकि, तौभी।

જોખ (सं.) तोल, माप, भार, परिमाण, वजन,

જોખમ (सं.) दायित्व, भार, रक्षा काभार, चिंता. शङ्का, उत्तरदातृत्व धन, सोना, चाँदी, रत्न।

જોખમઉતારવો (क्रि.) बीमा करा-देना, जिम्मेवारीसे अलग होना।

જોખમકારી (वि.) हानिप्रद, जोखिमका, खतरनाक, भयहेतुक।

જોખમદાર (क्रि.) जवाबदार उत्तर दाता, जिम्मेवार। [परखी।

જોખમાપ (सं.) मापतौल देखा-

જોખમાવું (क्रि.) नुकसान पाना, कष्ट उठाना।

જોખવું (क्रि.) तौलना, वजन करना, पीटना, सख्त मारमारना।

જોગ (सं.) संयोग, जोड, मेळ, (वि.) योग्य,

જોગટી (सं.) योगिन, जादूगरनी, डाइन तपस्विन, महंतनी, साध्वी।

જોગટો (सं.) तपस्वी, योगी, बैरागी।

જોગવાઈ (सं.) मौका, अवसर, योग।

જોગું (वि.) योग्य, उचित, ठीक।

જોજન (सं.) योजन, ४ कोसका परिमाण। [धान होवो,

જોજો (विस्म.) देखो देखो, साव-

જોટવાં (सं.) पैरके अंगूठे में पहि-ननेका चाँदीका छल्ला।

જોટા (सं.) जोड़ा, दो। [दोस्ती,

જોડ (सं.) जोड़ा, जोड मित्रता,

જોડકું (सं.) जोड़ा, दो,

જોડણી (सं.) कहानी, अक्षरविन्यास मेल, जोड़, सम्बन्ध उच्चारण।

જોડકાં (सं.) बारह, दो एक साथ उत्पन्न।

જોડવું (कि) जोड़ना, संग्रह करना, इकट्ठा करना, एकत्र करना, बैल जोतना, मिलाना, बैलों पर जूआ रखना, नाथना।

જોડા (स) जूती जोड़ा, दो जूतियां।

જોડાક્ષર (सं) संयुक्ताक्षर, मिले हुए अक्षर।

જોડાજોડ (क्रि. वि.) पास पास, निकट निकट, सटकर।

જોડી (सं.) देखो જોડ

જોડીયો (सं.) साथी, संगी, सहकारी

જોડુ (सं.) जोड़ा, स्त्रीपुरुष, पति पत्नी। [सहित।

જોડે (क्रि. वि.) साथ, के

જોડો (सं.) जूता, पदत्राण, जोड़ा।

જોણું (सं.) देखना, नजर, निगाह, दृष्टि, देख।

જોત (सं.) ज्योति, प्रभा, सौंदर्य, प्रकाश जलती हुई बत्ती, तेज, दीप्ति।

જોતર (सं.) जोत, जूड़ी, बैलों क कंधों पर रखकर गले में बांधने के पट्टे। पट्टा।

જોતરવું (क्रि.) बैल जोतना, जूड़ी, रखना, जोड़ना, जोतना।

જોતાવારમાં (क्रि.) तुरंत, फौरन, अभी, देखते देखते।

જોધ (सं.) पुष्ट, तगड़ा, मोटा, बलवान, योद्धा, लड़ाका, भट।

જોધ્ધો (सं.) योधा, देखो જોધ

જોબન (सं.) यौवन, जवानी, तरुणावस्था, तरुणाई, स्तन।

જોબનવંતુ (वि.) तरुण, जवान,

જોબના-નવંતી (सं.) जवान स्त्री मदमाती स्त्री, तरुण युवती।

જોબનીઉં (सं.) देखो જોબન।

જોસાવું-ઇળવું-બોછૂટવો (क्रि.) पसीना निकलना, पसीना छूटना, स्वेद प्रवाह होना।

જોમો (सं.) पसीना स्वेद, श्रमजल।

જોમ (सं.) क्रोध, फूट।

જોર (सं.) शक्ति, बल, ताकत, प्रभाव, पौरुष, वेग, प्रचण्डता।

જોર કરવું (क्रि.) ताकत करना, विवश करना, दबाना, आड़ना, रोकना। [शक्ति का प्रयोग करना।

જોર મારવું (क्रि.) जोर लगाना,

જોરકસ (वि.) पुष्ट, बली, खेळ, कबड्डी आदि।

જોરજબરાઈથી, જોરજોર (क्रि. वि) बलसे, जबर्दस्तीसे, हठात्, बळात्।

જોરાવર (सं.) शक्तिमान्, बळवान् हृष्ट, पुष्ट, मजबूत।

જોરાવરી (सं.) जबर्दस्ती, बरजोरी।

જોરૂ (सं.) पत्नी, गृहिणी, स्त्री।

જોરો (सं.) अधिकार हक, बल, दबाव, ताकत।

જોવડાવવું (क्रि.) दिखाना बताना,

જોવા જેવું (क्रि. वि) देखने योग्य, आकर्षण, दृश्य, द्रष्टव्य।

જોવું (क्रि.) परीक्षा करना, जाँचना, देखना, ध्यान देना, सोचना, खयाल करना।

જોશ (सं.) कर्म, प्रारब्ध, होनहार, उबाल, खदखदाहट, क्रोध, गर्मी।

જોશી (सं.) फलित ज्योतिषी, भविष्यवक्ता।

જોસ-સ્સો (सं.) क्रोध, गुस्सा ।

જોસતાન-દાન (सं.) बस्ता, स्लेट किताब कापी इत्यादि रखने का बेग। थैली, बसता, बसना ।

જોળ (सं.) यमक, यमज, जुड़े हुए।

જ્યાદે (क्रि वि.) देखे જાદા

જ્વર (सं.) बुखार, ताप ।

જ્વલિત (वि.) जळता हुवा, प्रज्वलित।

જ્વાળા (सं.) आग, अग्नि, हुताशन, आग की लपट, आँच, लौ।

જ્વાળામુખી (वि.) जिस के सिरेपर आग हो, आग के मुहँवाला ।

ઝ

ઝ=गुजराती वर्णमाला का बीसवा अक्षर ९ वाँ व्यंजन ।

ઝખ (स.) मछली, मच्छी, मीन।

ઝગઝગતું (वि.) जगमगाता, प्रकाशमान, चमकदार, चमकीला ।

ઝગમગવું (क्रि.) जगमगाना, चमकना, प्रकाशितहोना ।

ઝગઝગાટ (सं.) चमक, प्रकाश । तेज, जगमगाहट, लावण्य, उजलाई।

ઝગમગ (सं.) चमक, प्रभा ।

ઝઘર (वि.) अकेला, एकान्त अंधेर।

ઝઘડો (सं.) लड़ाई, झगड़ा टंटा, फसाद ।

ઝઝણાટ (सं.) आपकी खलबली,

ઝઝણી (सं.) सनसनाहट, झन झनाहट ।

ઝંઝેડવું-ઝેડવું (क्रि.) घृणायुक्त बर्ताव करना, हिलाना, झंझोरना ।

ઝટ (क्रि. वि) जल्दीसे, फुर्तीसे, क्षणमें, तुरंत।

ઝટકવું (क्रि.) लूटना, अपहरण करना, छिनालेना, धोकेसे लेलेना, भुलावादेकर लेलेना ।

ઝટકો (सं.) रगड़, खींच, खिंचाव लूट, हरण, घूँसा, काट ।

ઝટઝટ-પટ (क्रि. वि.) जल्दी, विनाविलम्बके, तुरंत, तत्क्षण ।

ઝડાપટી (सं.) लड़ाई, झगड़ा, छीना झपटी, विवाद, टंटा,

ઝડ (सं.) झुकाव, रुख, इच्छा ।

ઝડકો (सं) चीर, खसोटन, फाड़ ।

ઝડપ (स.) शीघ्रता, झपट।

ઝડપવું (क्रि.) झपटना, छीनना, पकड़ना । [विवाद ।

ઝડાકો (सं) आकस्मिक चोट,

ઝડી (सं.) पानी की लगातारवर्षा ।

ઝણકાર-રો (सं.) झंकारध्वनि ।

ઝણઝણવું (क्रि.) झनझनाना, झण-त्कार करना, झनझन करना।

ઝનુન (सं.) व्यग्रता, हठ, जिद्द,

ઝંદ (सं.) एकभाषा, झेंदभाषा।

ઝપઝપ-ઝપ (क्रि. वि.) अचानक अकस्मात, एकाएक। [घूँसा।

ઝપટ (सं.) जल्दी, शीघ्रता, त्वरा,

ઝપાઝપી (सं.) कतल, वध, नाश।

ઝપાટવું (क्रि.) गटकजाना, लील-जाना, मारना, पीटना।

ઝપાટો (सं.) ऑंधी, झोका, वायु वेग, झपाटा, सपाटा।

ઝપેટવું (क्रि.) मारना, पीटना,

ઝબકવું-ઝીઉઠવું (क्रि.) चौकउठना, चमक उठना, डरजाना,

ઝબકારો (सं) अचानक प्रकाश।

ઝબકોળવું-ઝબોળવું (क्रि.) पानी-में डुबोना, पानीमें डुबोकर हिलाना।

ઝભલું (सं.) बच्चोंका पहिननेका वस्त्र, बच्चोकी ऊपरी पोशाक।

ઝભ્ભો (सं.) जामा, सभावस्त्र।

ઝમક (सं) तुक, यमकाशब्द, का-फिया, यमक, कविता।

ઝમઝમ .(क्रि. वि.) झमझम की आवाज सहित, जलने की ध्वनि युक्त। ध्वनि विशेष।

ઝમઝમાટ (सं.) चरपरा और गर्म वस्तु खानेसे की जलन।

ઝંપ (सं.) विश्राम, आराम, चैन।

ઝંપલાવવું (क्रि.) कूदना, गिरना।

ઝંપવું (क्रि.) आराम करना, वि-श्राम करना, आनंद भोग करना, चैन करना।

ઝંપાપાત (सं.) आकस्मिक पतन।

ઝરડી નાંખવુ (क्रि) नोच डालना, खुरेच डालना, कुरेदना।

ઝરણુ (सं.) पानी का झरन पानी का बहाव जमीन में से पानी आना।

ઝરમર (सं) हलका मेह, फुहारों की वर्षा, छोटी छोटी बूंदो की वृष्टि।

ઝરમરીયુ (सं.) रेशमी कपड़ा। गाछ नामक वस्त्र।

ઝરવું (क्रि.) पिघलना, चू-अना, टपकना, धीरेबहना, झरना।

ઝરૂખો (सं.) झरोखा, गवाक्ष, ड्योढी, बरामदा।

ઝરો (सं.) फव्वारा, फुँहारा, बहने-वाला, पानी की तलैया।

ઝલાવું (क्रि.) पकड़े जाना,

ઝળ (सं.) चमक, प्रकाश।

ઝળકદાર (वि.) चमकीला, चम-कदार, प्रकाशमान।

ઝવેર (सं.) जवाहिरात, मणि माणिक्य, हीरा पन्ना ।

ઝવેરી (सं.) जौहरी ।

ઝગકવું (क्रि.) चमकना, चमचमाहट करना, दमकना । [કાટ

ઝગકાટ-ઝગાટ (सं.) देखो ઝગ-

ઝળવું (क्रि.) जलना, दग्ध होना, भस्म होना ।

ઝળાંઝળાં (सं.) चमक। [गाह

ઝાંખ (सं.) धुंधलापन, दृष्टि, नि-

ઝાંખરું (सं.) एक प्रकार की कण्टकयुक्त झाड़ी, कंटीला पौदा ।

ઝાંખવું (क्रि.) घूरना, ताकना, टकटकी ।

ઝાંખી (सं.) दर्शन, लीला, नज़ारा।

ઝાંખું (सं.) धुंधला, मन्द, सुस्त, उदास, पीला, रंजिदा ।

ઝાંજ-ઝ (सं.) मँजीरा, मजीर, झाँक, ताल वाद्य विशेष, क्रोध ।

ઝાંઝ ચડવી (क्रि.) गुस्सा होना, कुपित होना, चिढ़ना ।

ઝાંઝર (सं.) घुंघरू, मजीरे, झाँझ,

ઝાંઝવાં (सं.) मृग तृष्णा, धोका।

ઝાંગમ (सं.) देखो જહાગમ

ઝાંપડો (सं.) मेहतर, गलियों का झाड़ने बुहारनेवाला । [फाटक ।

ઝાંપો (सं.) पैठ, द्वार, आरंभ,

ઝાંય (सं.) छाया, साया, परछाहीं, प्रतिबिम्ब ।

ઝાંસવું, ઝોંસવું (क्रि.) बेदिल से देना, अनिच्छापूर्वक दान ।

ઝાંસો (सं.) क्रोध, अपने शरीर-पर आफत या कष्ट स्वयं कर लेना।

ઝાકઝમાળ (वि.) स्वच्छता और पवित्रता, साफसुथरापन ।

ઝકમઝોળ (सं.) प्रसन्नता, हर्ष, खुशी, आनन्द ।

ઝાકળ (सं.) जाड़ा, पाला, ओस, सबनम, तुसार, तुहिन ।

ઝાજ-ઝ (सं.) जहाज, बड़ी नाव, बड़ीनौका, जलपोत, जलयान ।

ઝાઝું (वि.) अधिक, जियादा, बहुत । ઝાઝુ (वि.) पूर्ववत् ।

ઝાટકવું-ઝાડવું (क्रि.) झाड़ना, झटकना, कचरा बुहारना, दोष देना, दुतकारना, गालीदेना ।

ઝાડ (सं.) पेड़, वृक्ष ।

ઝાડઝ્ખુ (सं.) फटनेकेबाद बची हुई धूल, पिछोरन ।

ઝાડઝુડ (सं.) झाड़पोंछ ।

ઝાડપાન-પાલો (सं.) वनस्पति, शाकजाति ।

ઝાડવું (क्रि.) बुहारना, झाड़ना, झोंचदेना, फटकारना, पौदा, छोटा वृक्ष ।

ઝાડી (सं.) कँटीलापौधा, जंगल ।

ઝાડુ (सं.) बुहारी, झाड़नेकी चीज, जिससे कचरा साफ किया जाता हो ।

ઝાડુ કરનાર (सं.) मेहतर, भंगी, झाड़नेवाला, साफ करनेवाला ।

ઝાડુ કાઢવું (क्रि.) झाडु निकालना, कचरा साफ करना ।

ઝાડુખાવું (क्रि.) हारना, अपमानित होना, चूकना, भूलना ।

ઝાડેજવું-ફરવું (क्रि.) टट्टीजाना, पाखानाजाना, मलोत्सर्ग करना निकटजाना, पासजाना ।

ઝાડો (सं.) पाखाना, दस्त, मलोच्छार, तलाशी ।

ઝાડો બંધ થાય તે (सं.) काबिज, कब्ज करनेवाले, मलावरोधक ।

ઝાડો લાગવો-ઉતરવો (क्रि.) दस्तलगना, पाखाना होना ।

ઝાડો લેવો (क्रि.) ध्यानपूर्वक तलाशीलेना, दिललगाकर ढूँढना ।

ઝાપટ (स.) थप्पड़ चपत, चाँटा ।

ઝાપટવું (क्रि.) झाड़ना, धमकाना, डांटना, घुड़कना ।

ઝાપટું (सं.) वर्षा की बौछार, पानी की झड़ी ।

ઝાંપ (सं.) अंधेरा, शोक, जाली ।

ઝાંખળ (सं.) अंधेरा, उदासी ।

ઝાંપલો-પો (सं.) सदरद्वार, गांवमे या कस्बे में घुसने का मार्ग या फाटक ।

ઝાભરી (सं.) फुनसी, ददोरा, फोड़ा, छाला, गूमड़ा, एक प्रकार का फोड़ा ।

ઝાભવું (क्रि.) तरल औषधि में या पानी में गर्म पत्थर आदिको डुबोना ।

ઝામલ (वि.) आगसा, क्रोधी ।

ઝારવું (क्रि.) गर्म पानी से धोना ।

ઝારી (सं.) सुराही, पानी भरने का कुंजा, करवा ।

ઝારો (सं.) एक पात्र विशेष जो रसोई के काम आता है । लोहे का बना पतला गोल तवा सा जिसमे छेदही छेद होते हैं और एक डंडा पकड़ने को लगा रहता है, झर, झारा ।

ઝાલર (सं.) किनारा, गुच्छेदार किनारा, घंटा घड़ियाल, दाल विशेष ।

ઝાલવું (क्रि.) झालना, पकड़ना

ઝાવલી-ળી (सं.) घास, कूस ।
ઝાડી (सं.) शुभचिंतक, हितेच्छुक ।
ઝાળ (सं.) अग्नि की लपट, झल, सोहले, आग की लौ ।
ઝાળણ (सं.) किसी धातु विशेष से चिपकाया हुवा । झालन ।
ઝાળવું (सं.) जोड़ना, टाँका देना,
ઝીકવું (क्रि.) पटक देमारना, बल पूर्वक फेंकदेना टकराना ।
ઝીંગુર (सं.) झिल्ली, घुरघुरा. कीट विशेष ।
ઝીઝુઓ (सं.) एक प्रकार का घास।
ઝીણાસ (सं.) खूबी, उत्तमता, सौंदर्यता, उत्कृष्टता, अति सूक्ष्मता।
ઝીણું (वि.) उत्तम, पतला ।
ઝીત (सं) जीत, विजय, जय ।
ઝીતવું-મેળવવી (क्रि.) हराना, जीतना, पराजय करना ।
ઝીપવું-લવું (क्रि.) पकड़ना, शब्द पकड़ना । [अडियल, आग्रही ।
ઝીપટો (वि) हठी, हठीला, जिद्दी
ઝીલ (सं.) वह बड़ा पानीभरा हुवा भाग जो समुद्र के किनारे हो । नीची जमीन, मिट्टी का एक बड़ा पात्र ।
ઝીલલ (वि.) भरा पूर्ण ।
ઝીલી (सं.) झिल्ली, पतलीतह ।
ઝીલવું (क्रि.) लेना, झेलना, पकड़ना ।
ઝીલો (सं.) मिट्टी की सुराही याकरवा ।
ઝુઝવું (क्रि.) लड़ना, जूझना, झगड़ना, विवाद करना ।
ઝુટવું-લીલેવું (क्रि.) झपटलेना ।
ઝુંડ (सं.) समूह, ढेर, समुदाय, इकट्ठे, यूथ, दल, ठट्ठ, मण्डल ।
ઝુંડવું (क्रि.) पीटना, मारना,
ઝુંડો (सं.) झंडा, ध्वजा, पतका ।
ઝુંપડી सं.) झोंपड़ी, कुटी, मढ़ी, घास, फूस का घर ।
ઝુંકવું (क्रि.) ऊँघना, झपकी लेना ।
ઝુમ (सं.) हलचल, घबराट, व्यग्रता,
ઝુમખો (सं.) गुच्छ, गुच्छा, झब्बा ।
ઝુમર-મ્મર (सं.) बतियों का झाड़, झाड फानूस ।
ઝુમવું-તીરજવું (क्रि.) घूरना, इशारा करना ध्यान देना, झूमना, डगमगाना, लड़खड़ाना ।
ઝુરવું (क्रि.) झूरना, लटजाना, कुम्हलाना, मुरझाना, झुकना ।
ઝુરાપો (सं.) रज, गम, उदासी, मुर्झायी दशा ।
ઝુલ (सं.) झूल, कपड़े की गोट।
ઝુલતું-લટકતું (वि.) लटकता, हुवा, झूलता हुवा ।

ઝુલફાં (सं.) जुलफें, बालों की लटी। [ऊँघना।

ઝુલવું (क्रि.) लटकना, झूलना,

ઝુલાખાવા (क्रि.) झूलना, झूले की हर्कत, लहराना, हिलना।

ઝુલ્લાખાવા (सं.) पूर्ववत्

ઝુલો (सं.) झूला, लटकन, हानि।

ઝુંસરી (सं.) जूड़ी, जुआ, जूड़ा।

ઝૂસ્તી (सं.) विवाद, झगड़ा, टंटा।

ઝૂમ (सं.) हलचल, घबराहट, व्यग्रता।

ઝૂમ્મર (सं.) देखो ઝુમ્મર

ઝેણુ (सं.) उत्तम धूळ या बुरादा।

ઝેનુ (सं.) धूल, गर्दा।

ઝેર (सं.) विष, जहर, क्रोध, द्रोह।

ઝોસવું (क्रि.) देखो આંસવું

ઝોક (सं.) मोड़, झुकाव, टेढ, रुख, इच्छा, आँखोंमें अकस्मात, धूळ आदि का गिरना।

ઝોકંડા (सं.) आनन्द, खुशी।

ઝોકવું (क्रि.) ठोंकना, झोसना, फेंकना।

ઝોકાવવું (क्रि.) अंधे की भांति प्रवेश, फेंकना, चलाना।

ઝોકું (सं.) झोंका, ऊंघ।

ઝોટડી (सं.) जवान भैंस, तरुण महिषी।

ઝોટી લેવું (क्रि.) देखो ઝુટવું

ઝોડ-ભ (सं.) दुरात्मा, पापात्मा

ઝોરણો (सं.) चमड़े की थैली, थैला, झोला, थैली।

ઝોળી (सं.) पूर्ववत्

ઝોળું (सं.) भीड़, झुंड,

ઞ

ઞ=गुजराती वर्णमाला का २१ वां अक्षर, १० वां व्यंजन।

ટ

ટ=गुजराती वर्णमाला का बाईसवां अक्षर, ग्यारहवां व्यंजन।

ટકટક (सं.) टिकटिक की आवाज, बड़बड़ाहट, बकझक (क्रि वि.) इकटक दृष्टि।

ટકટકીયું (सं.) बक्की, बिना प्रयोजन बोलनेवाला।

ટકવું (क्रि.) चालू रखना, जारी रखना, ठहरना, बहुत देर के लिए ठहरना, टिकना, जमजाना।

ટકાઉ (वि.) टिकाऊ, बहुतकाल तक चलनेवाला, दिनों तक ठहरनेवाला। [व्यर्थ।

ટકાનું (वि.) बेकेका, निकम्मा,

ટકાવ (सं.) टिकाव, ठहराव, चलाव, चिरस्थायित्व ।

ટકો (सं.) तीन पाई, तीन पैसे, एक प्रतिशत, फीसैकड़ा एक ।

ટકોરખાનું (सं.) नक्कार खाना, नौबत खाना ।

ટકોરો (सं.) डंका, घड़ी का शब्द, चोट, टंकार, ध्वनि । [मज़ाक ।

ટકોળ (सं.) खेल, तमाशा, ठठ्ठा,

ટકોળીઉં (सं.) मजाकी, खिलाड़ी ठठ्ठेबाज़ । [ठेलाठेली,

ટક્કર (सं.) मुँड भेड़, ठोकर, कुन्दा, हिस्का, बराबरी, मुकाबला।

ટક્કર મારવી (कि.) कपाल से टकराना, ठोकर मारना, ढकेलना, रेलना, पेलना, ओड़ मारना, मुकाबिला करना, सामना करना, बराबर में खड़ा होना ।

ટક્કર લેવી (कि.) टकराना, टक्कर लेना, सामने खड़ा होना, ठोकर झेलना ।

ટગ–ટગ–મગ–ટગર–મગર (कि. वि) हक्काबक्का रह कर घूरना, उतरे मुख से टकटकी पूर्वक देखना।

ટગુમગુ (वि.) शरीरअस्थिमात्र अवशेष, अस्थिपंजर मात्र रह जाना । [रैरा बक ।

ટંક (सं.) निश्चित समय, मुक-

ટંકણખાર (सं.) सुहागा ।

ટંકશાળ (सं.) टकसाल, रुपया पैसा ढालने की जगह, सिक्के ढालने का स्थान ठप्पनशाला, मुद्रालय ।

ટંકાર (सं.) ज्या शब्द, धनुष के रोदे का शब्द, चिल्ले का शब्द, झनकार ।

ટંકોટંક (कि. वि.) समयपर, भरपूर, ठीकठीक पूर्ण, सम्पूर्ण ।

ટંગડી (सं.) टाँग, पैर,

ટંગાઇ રહેવું (कि.) टंगजाना, लटक जाना, फँस जाना, रुक जाना।

ટચ (सं.) कसौटी, शोध ।

ટચ દઇને (कि. वि.) क्षणभर में, पल में, निमिष मात्र में, तत्क्षण।

ટચકડી, ટચકો (सं.) टंकार, ध्वनि, चुचकार, ढोल का शब्द, थाप ।

ટચલી આંગળી (सं.) सबसे छोटी अंगुली, कनिष्ठका अंगुली ।

ટચાક (वि.) शून्य, निरर्थक, व्यर्थ।

ટટવાણી (स.) छोटी घोड़ी ।

ટટવું (सं.) छोटा घोड़ा, टट्टु ।

ટટળવું (कि.) आशायुक्त होकर खीचना, आराम रहित होना, विश्राम हीन होना, चिढ़ाना, चिचियाना ।

ટટાર (वि.) सीधा, खड़ा, ऊपर की ओर सीधा ।

ટટ્ટી (सं.) बांसो की आड़, बांस की अथवा घास फूसकी बनी दीवार पाखाना, संडास, शौचालय

ટટ્ટુ (सं.) घोड़ा, टट्टू।

ટંટાખોર (वि.) झगडालू, लड़ाका

ટંટો (स,) झगड़ा, लड़ाई, विवाद।

ટંટો કરવો (क्रि.) झगड़ा करना, विवाद करना, लड़ाई करना।

ટંડેલ (सं.) जहाज़ का कप्तान।

ટપ કરીને (क्रि. वि.) क्षण भर में, तुरन्त, फौरन्, तत्काल।

ટપકવું (क्रि.) टपकना, झरना, चुवना, झरना, रिसना, बूंदबूंद करके गिरना।

ટપકાવવું (क्रि.) टपकाना, बूंद बूंद कर के डालना, बूंदें डालना।

ટપકું (स.) बूंद, बिन्दु, कतरा, धब्बा।

ટપકો (सं.) लग्न, जन्मकुंडली।

ટપટપ કરવી (क्रि.) गपशप करना, बातचीत करना, चर्चा करना, बकना।

ટપટપી (सं.) उस्तरा तेज करने का फीताया चमड़ा रेज़र स्ट्रेप,

ટપલો (सं.) सिर पर चपत, कलंक, निन्दा, दोष, मिट्टी के बर्तन ठोकनेकी थप्पी।

ટપવું (क्रि.) उछलना, कूदना, छलांग भरना।

ટપસીઆં (सं.) फटी हुई जूतियां, पुरानी फटी हुई जूतियां।

ટપાટપી (सं.) झगड़ा, विवाद, टंटा।

ટપાલ (सं.) डाक, पोस्ट।

ટપેરવું (क्रि.) पीटना, मारना।

ટપોટપ (क्रि. वि.) तुरंत, तत्काल, फौरन।

ટપ્પો (सं.) फासला, अन्तर, एक प्रकार का गीत, लोकवाद, अफ़वाह। [बरतन।

ટબુડી (सं.) एक छोटा पानी का

ટમટમવું-ળવું (क्रि.) देखो ટટળવું

ટળવું-ળી જવું (क्रि.)हट जाना, चले जाना, गायब होना, स्वस्थ होना।

ટાંક (सं.) $\frac{१}{७२}$ सेर, सेर का ७२ वां भाग, निब, लेखनी की पत्ती, लोहलेखनी, पेनहोल्डर, समय।

ટાંકણી-ચણી (सं.) आलपिन, पिन, कील, खूंटी, टांगने की।

ટાંકણું (सं.) योग, मेल, ऐन वक्त, तातील, छुट्टी का दिन, ठीक अवसर, मौका, छोटी टांकी, छोटी छेनी, छोटी हथानी।

ટાંકવું (क्रि.) सीना, जोड़ना, नोट करलेना, छेनी या टाँकीसे टाँकना।

ટાંકી (सं.) छोटी तलैया, मैथुन सम्बन्धी बीमारी, उपदंश, आतशक।

ટાંકું (सं.) जलाशय, तालाब सरोवर।

ટાંકો (सं.) सीवन, टाँका बखिया।

ટાંગ (सं.) पग, पैर।

ટાંગવું (क्रि.) लटकाना, टाँगना, लगाना, नत्थी करना।

ટાંગાટોળી (सं.) टाँग और हाथ पकड़कर लटकाते हुए लेजाने की क्रिया।

ટાંચ (सं.) रोक, छंक, कमी, घटी, न्यूनता, लेखनी का पत्ती, निब।

ટાંચ મારવી (क्रि.) अलग करना, मिलाना, अपनाना।

ટાંચવું (क्रि.) ढकेलना, भोकना, कोंचना, अल्पव्यय करना, कम-खर्च करना, चिपटना।

ટાંટીઓ (सं.) पग, पैर, पांव, टांग।

ટાંટીઓ કાઢવો (क्रि.) छुटकारा पाना, नौकरी से प्रभाव हीन कर के हटाना।

ટાંડું (सं.) व्यौपारियों या यात्रियों [का झुंड, टांडा।

ટાંણું (सं.) तेवहार, उत्सव अवसर।

ટાંપ (सं.) चिन्ह, निशान, विराम का चिन्ह, पूर्ण विन्दुका चिन्ह।

ટાંપવું (क्रि.) घूरना, ताकना।

ટાંચકો (सं.) अंगकी कड़कन एक प्रकारका खिलौना, हड्डियोंका चटखन शब्द, औषधि विशेष।

ટાટ-પડી (सं) टाट, टाटपट्टी, थैला, गूदड़, सनकावना एक प्रकारका बिछावन।

ટાપટીપ (सं.) दुरुस्ती, मरम्मत।

ટાપસી (सं.) बातचीत के बीच में अपने लिये बोलने का कृत्य।

ટાપસીપુરવી (क्रि.) बातचीत मे दखलदेना, बीच में बोल उठना।

ટાપુ (सं.) टापू, द्वीप, जजीरा।

ટાયડું'-રડું (सं.) छोटा घोड़ां।

ટાહાડ (सं.) शीत, ठंड, जाड़ा।

ટાહાડક (सं.) ठंडाई, शीतलता, तोषण, तसल्ली, संतोष।

ટાહાડાદેવા (क्रि.) बट्टा लगाना, कलंक लगाना, धब्बा लगाना।

ટાહાડી ઉઘરાણી (सं.) बुरी उघाई, बुरी उधार, बुराऋण।

ટાહાડીઓતાવ (सं.) जूड़ी, जाड़े का बुखार, कम्पज्वर।

ટાહાડી શિયળ-શિળી (सं.) श्रावण मास के प्रत्येक पक्ष की सप्तमी।

ઠાઢકું (वि.) ठंढा, सीला, शीतल, धीमा, मंद, शान्ति, मौन, चुप्पी।

ઠાઢાં પાડવું (क्रि.) ठंडा करना, बुझाना, नष्ट करना, शांत करना,

ઠાઢોડ઼ (सं.) देखो ઠાઢાડ઼ शीतलता [पीड़ा, झमेला।

ઠાલેહું (सं.) बकवाद, बकबक,

ટાલ-ળ (सं.) केशहीनता, गंज।

ટાલ પડેલું (वि.) गंजे सिरका, गंजा

ટાલકું (सं.) सिरका मुकुट।

ટાળણ (सं.) बची हुई चीज, छटतीकी वस्तु, बची खुची।

ટાળવું (सं.) हटाना, छांटना, सरकाना, रद्दी करना, खारिज करना, आराम करना, स्वस्थ करना, नापसंद करना।

ટાળો (सं.) बहाना, टालमटोल।

ટિંગાટોળી (सं.) देखो ટાંગાટોળી।

ટિંગાવું (क्रि.) देखो ટંગાવું

ટિચવું (क्रि.) मारना, पीटना, (नफरत) खाना।

ટિકટ-કિટ (सं.) टिकट, प्रवेशाधिकार पत्र, डाक विभाग के टिकट, स्टाम्प, सूचक पत्र, परचा।

ટિક્કડ (सं.) मोटी, रोटी, रोट, रोटा।

ટિક્ત (सं.) काम, नौकरी, जीविका, जीविका, पोषण, सहारा।

ટિકી (सं.) सफलता, अर्थसिद्धि, कृतार्थता, फायदा, ब्याज।

ટિકલ (सं.) खुशी, दिल्लगी, आनंद, बनावट, पाखंड।

ટિખળી (वि.) रसिक, ठट्ठेबाज, मसखरा, खिलाड़ी [नाटा।

ટિચકું (वि.) कम, छोटा, ठिगना,

ટિટિઆણ (सं.) चिल्लाहट, कोलाहल, हाहाकार, शोर।

ટિટોડી (सं.) बरही, एक प्रकारकी चिड़िया।

ટિપણી (सं.) याददास्त, स्मरणार्थ, कुछ लेख, टिप्पणी नोट, पिटाई।

ટિપણું, ટીપણું (सं.) पंचाग, जंत्री, पत्रा।

ટિપરી (सं.) आवसेर का माप।

ટિપ્પણ (सं.) संक्षिप्त स्मरण लेख।

ટિંબ (सं) विराम, विराम चिन्ह।

ટિમરવા (सं.) एक प्रकार का फल टिमरू, तेंदू, [उत्तराधिकारी।

ટિલાયત (सं.) युवराज, वली अहद,

ટીંબો (सं.) टेकड़ा, टेकड़ी, पहाड़ी।

ટીકા (सं.) विवरण, किसी विषयका भावार्थ, कठिन शब्द का सरलार्थ।

ટીકા કરવી (क्रि.) टिप्पणी करना, अर्थ करना, सरलार्थ बनाना।

ટીકાકાર (सं.) टीका करनेवाला ।
ટીકી-કડી (सं.) चांदी या सोने की छोटी सीटिकिया ।
ટીકો (सं.) देखो टीलुं
ટીડ (सं.) टिड्डी, टीड़ी ।
ટીપ (सं.) सूची, फेहरिस्त, कैद, बंधु आई [मारना ।
ટીપવું (क्रि.) कूटना, पीटना,
ટીપું (सं.) बिन्दू, बूंद, टपका, कतरा ।
ટીમણુ (सं.) सूखा भोजन । [टीका।
ટીલું-ટલક (सं.) तिलक, चन्दन,
ટીશી-ટ્રેસી (सं.) चोटी, कली, कलिका, शेखी, रंगीला, बांका छैला, अलबेला ।
ટુંક-કું (वि.) संक्षेप, सारांश, मुख्तासिर, अल्प, कम, थोड़ा ।
ટુંટણું (वि.) टूटे हाथोंका, टूंटा,
ટુંટિયા (सं.) घुटनों के जोड़ में से पैरोंको झुकाने की क्रिया ।
ટુંટીઉ (सं.) एक बीमारी विशेष ।
ટુંપવું (क्रि.) उठाना, चुनना, नोंचना,
ટુંપીઓ (सं.) एक प्रकार की माला, हारकी एक जाति विशेष ।
ટુંપો (सं.) फंदा, फांसी,
ટુંપિખાવો (सं.) गले में खुद फांसी लगाना, गले में फन्दा लगाना ।
ટુંપો દેવો (क्रि.) फांसी देना, गले में फन्दा डाल कर लटकाना।
ટુંબો (सं.) निन्दा, तिरस्कार, धिक्कार ।
ટુચકી (सं.) चिमटी, चोंटीसी खाल पकड़कर नाखूनसे दबाना ।
ટુકડાખાઉ-ખોર (सं.) द्वारद्वारका भिक्षुक, मँगता ।
ટુકડી (सं.) टोली, साथ, भाग, खण्ड, बटवारा ।
ટુકડો (सं.) टुकड़ा, हिस्सा, भाग।
ટુચકો (सं.) एक छोटासा दिल बहलानेवाला वखान या वर्णन ।
ટુટ (सं.) फूट, वियोग, अलगाव, नाराजी, अप्रसन्नता, [नहीं ।
ટુટક (वि.) बेमेल, टूटाहुवा, एकसाँ
ટુટફાટ (सं.) जुदाई, विलगता नाराजी अप्रसन्नता । [फटना।
ટુટવું (क्रि.) टूटना, खंडखंड होना
ટુમટુમી (सं.) किसी विज्ञप्ति यासूचनाके लिये ढोलपीटना, डमडम ।
ટુમણુ (सं.) जादू टोना, टुटका ।
ટુવાલ (सं.) रूमाल, तौलिया अंगोछा।
ટેટો (सं)गर्व, घमण्ड, अहंकार, मनेका रुदन ।

ટેક (सं.) आत्मसम्मान, बड़प्पन, मर्यादा, दृढ़ता, मजबूती, स्थिरता।

ટેકણ (सं.) आश्रय, सहारा, खंभा ।

ટેકરો (सं.) टेकड़ा, पहाड़ी, उठी हुई भूमि, ऊँची जमीन ।

ટેકવું (क्रि.) आश्रयलेना, आराम करना, टिकना, झुकना ।

ટેકાવવું (क्रि.) टिकाना, आश्रय-देना, सहारा देना, ठहराना ।

ટેકી-લું (वि.) जिद्दी, पुष्ट, दृढ, अपनी बातको रखनेवाला, आत्माभिमानी । [यता, थंभा ।

ટેકો (सं.) सहारा, आश्रय, सहा-

ટેકોઆપવો (क्रि.) सहारादेना, आश्रय देना, मददेना, सहायता करना।

ટેટી (सं.) तरबूज, खरबूजा ।

ટેટું (सं.) वैरका मांसयुक्त भाग ।

ટેટો (सं.) शाह बलूतका फल, कड़कने वाला ।

ટેડું (वि.) टेढा, तिरछा, आड़ा, मुड़ाहुवा, झुकाहुवा ।

ટેપ (सं.) नापनेका फीता, टेव, आदत कैदका फैसला या हुक्म ।

ટેબલ (सं) मेज, टलुवाँमेज, डेस्क ।

ટેભા-ભો सीवन, टाँका, बखिया ।

ટેભોમારવો (क्रि.) सीना, टाँकालगाना ।

ટેરવું (सं.) अग्रभाग, सिरा, नोंक ।

ટેરો (सं.) पर्दा, मुसहरी ।

ટેવ (सं.) आदत, झुकाव, रुख, चलन व्यवहार, अभ्यास, बर्ताव ।

ટેવપાડવી (क्रि.) आदत, डालना, बान डालना, अभ्यास करना ।

ટેવવું (क्रि.) अटकल करना, अन्दाज करना, कयास करना, आदत डालना, अनुमान करना ।

ટેહેલ (सं.) सेवा, बन्दगी, खिदमत गौरसे देख भाल ।

ટેહેલીઓ (सं.) सेवक, नौकर, भृत्य सम्वाद दाता ।

ટૈડકો (सं.) क्रोध और घृणा ।

ટૈડપક (सं.) टिर्र, गर्व, घमण्ड, जल्दी, शीघ्रता ।

ટોંચણું (सं.) सूआ, छेद करने का औजार, बरमा । [ललकार ।

ટોક-ણી (सं.) आँकुस, आह्वान,

ટોકરી (सं.) घण्टी के भीतर का छोटा लटकन, याजीम ।

ટોકવું (क्रि.) आंकुस मारना ।

ટોચ, ટોંચ (सं.) सिरा, अग्रभाग, नोंक, चोटी ।

ટોચકું (सं.) गोळ चोटी ।

ટોચવું (क्रि.) छेद करना, निन्दा करना, अंकुश मारना।

ટોટો (सं.) हानि, घाटा, नुकसान, गले का टेटुवा, नरेटी।

ટોટો પકડવો-સહાવો (क्रि.) कंठ, पकड़ना, कंठ को टेटुवे के पास से पकड़ना।

ટોડો (सं.) एक प्रकार का कड़ा (आभूषण) टड्डा।

ટોણો-ણું (सं.) जादू, टोना, टुटका, निन्दा, तिरस्कार।

ટોપ (सं.) लोहे का टोप, इंग्रेजी टोपी, भोजन बनाने का पात्र, छाता, छतरी, बन्दूक।

ટોપલી (सं.) निकम्मी कढाई,

ટોપરું (सं) नारियल की गरी, नारियल का गोला, खोपरा।

ટોપલો (सं.) डलिया, टोकरी।

ટોપી (सं.) शिरत्राण, टोपी।

ટોપીવાળો (सं) अंग्रेज, योरो-पियन, आंग्ल देशी।

ટોપું (सं.) टोप, टोपा, निकम्मी टोपी, आँखों का ढक्कन, पलक।

ટોયલી (स.) एक छोटा बर्तन जो मुख्यत या पानीपीने के लिये होता है।

ટોલ્લો (सं) एक बड़ा लक्कड़ का खूंटा जो दीवार में गड़ा हो।

ટોલ્લેમુકવું (क्रि.) परवाह न करना ध्यान न देना, खयाल न करना।

ટોળ (सं.) हँसी ठठ्ठा, भेष, नकल, दिल्लगी, मजाक, खेल।

ટોળકી-ળી (सं.) दल, जथा, झुंड, टोली, मण्डली।

ટોળીયો (सं.) भाँड, ठठोलबाज स्वाँगी, मसखरा, हँसोड़।

ટોળું (सं.) झुंड, भीड़, समूह, यूथ, दळ, सभा, समिति।

ટોળેટોળાં (सं.) यूथ, दळ, सेना, कटक, रिसाला।

ટૌકો (सं.) खेल, तमाशा ठठ्ठा, कोकिलशब्द, कोयल की आवाज।

ઠ

ઠ=गुजराती वर्णमाला का तेईसवाँ अक्षर, १२ वाँ व्यंजन।

ઠસાવું (क्रि.) मजबूती जोड़ा हुवा, एकदम खूब भक्षण किया हुवा, ठँसना।

ઠઠઠ (सं.) कोलाहल, हो हल्ला।

ઠકરાઈ-त (सं.) राजपूतकी मर्यादा, बड़प्पन, स्वामित्व, प्रधा-नता, ठकुराई।

ઠકરાણી-ણી (सं.) ठाकुर की स्त्री, ठकुराइन, प्रधान की स्त्री।

ઠકરાણો (सं.) देखो ઠાકોર

ઠક્કર (सं.) भाटिया आदि जातियों की एक पदवी ।

ઠગ (सं.) गठकटा, चोर, धोका देकर चोरी करनेवाला, प्रतारक, धोकेबाज, भुलावा देकर चोरनेवाला।

ઠગબાજી-વિદ્યા (सं.) ठगई, धूर्तता, ठगका काम, माया, छल, कपट ।

ઠગવું (क्रि.) ठगना, भुलाना, धोका देना, प्रतारण करना ।

ઠગવેડા (सं.) दुष्ट कृत्य, नीच कार्य।

ઠગાઈ (सं.) देखो ઠગબાજી

ઠગારૂ (सं.) ठग, छली, कपटी, (वि.) कपटी, छलिया ।

ઠગાવું (क्रि.) ठगाना, धोका खाना, ठगा जाना, प्रतारित होना ।

ઠઠ (सं.) यूथ, समूह, झुंड, भीड़।

ઠઠમળવી (क्रि.) झुंड होना, भीड़ भाड़ होना, भीड़ लगाना, इकट्ठा होना,

ઠળવું (क्रि.) निर्बल होजाना, शक्तिहीन होना, कमजोर होना ।

ઠઠારવું (क्रि.) सँवारना, सजाना, सज्जित करना, शृंगार करना ।

ઠઠારો (सं.) ठाठ, धूमधाम, शान शौकत, दिखावा ।

ઠઠ્ઠાખોર-બાજ (सं.) मसखरा, मजाकी, खिलाड़ी, आनन्दी ।

ઠઠ્ઠામશ્કરી, ઠઠ્ઠા (सं.) हँसी दिल्लगी, मजाक, परिहास, मनोविनोद।

ઠણકારવું (क्रि.) झनकारना, भड़काना, ठीसमारना ।

ઠણકો (सं.) मड़क, धड़क, नखे प्रकार की चाल ।

ઠણઠણ (सं.) ठनठन् शब्द, शून्यता, छूछापन, रिक्तता ।

ઠપકવું-કારવું (क्रि.) मारना, टकराना, खटखटाना, थपथपाना ।

ઠપકો (सं.) दोष, ऐब, धब्बा, कलंक, दाग, बदनामी, धिक्कार, डांट, फटकार, घुड़की ।

ઠપકો મુકવો-દેવો (क्रि.) दोष देना, कलङ्क लगाना, बदनामी देना ।

ઠપકો રહેવો (क्रि.) पीछे कलंक या दाग छोड़ देना । [थपथप ।

ઠપઠપ (सं.) ठोकने का शब्द,

ઠમકવું (क्रि.) सुडौल चाल, स्वाभाविक ऐंठन से चलना, ठुमक चाल चलना ।

ઠમકો (सं.) ठुमका, अकड़ की चाल, नाचके समय पैरों द्वारा ताल प्रदर्शन।

ઠમઠમાટ (सं.) गर्व, अहंकार, कोरा ठाठ, खाली धूमधाम, ढूसर।

ઠકાણે-ઠેકાણું (सं.) उचित स्थान पर, निश्चित निवास स्थानपर, ठिकाने ।

ઠરવું (क्रि.) ठहरना, जमना, दृढ होना, सहना, तय होना, फैसल होना, बैठना, उतरना, धीमा पड़ना, शांत होना, ठिठुर जाना, ठंड से जम जाना ।

ઠરાવ (सं.) ठहराव, तय, निपटाव, इरादा, निर्णय, प्रस्ताव, मन्तव्य कौल, करार ।

ઠરાવપત્ર (सं.) इकरारनामा, विचारपत्र, निर्णयपत्र, डिगरी, कुड़की।

ઠરાવવું ठहराना, तयकरना, निश्चयकरना, निर्णयकरना, दृढ करना, जमाना, नियुक्त करना ।

ઠરીઠામ (स.) देखो ઠરઠામ

ઠરેલ (वि.) निश्चित, ठहरा हुवा, बुद्धिमान, चैतन्य, दृढ़, स्थिर, अटल ।

ઠસ-સાઠસ (क्रि. वि.) परिपूर्ण, गलेतक भराहुवा, खूब भराहुवा ।

ઠસઠસાર (वि.) अहंकारी चटकीला, मिथ्या महत्व प्रदर्शक, अकड़ू ।

ઠસકો (सं.) चाल, ढंग, ठसक खांसी ।

ઠસવું (क्रि) दिलपर, प्रभाव, होना, मनपर अंकित होना, घुसना ।

ઠસાવવું (क्रि.) मुहर करना, चिन्ह करना, छापना, घुसेड़ना ।

ઠસોનેભરવું (क्रि.) ठूंसठूंस कर भरना, लबालब भरना, ऊपरतक भरना ।

ઠળીઓ (सं.) बीज, गुठली।

ઠાંસવું (सं) खांसना, धांसना, छापना, घुसेड़ना, चढ़ाजाना, घुड़कना, खूब भरना, खूब ठांसना ।

ઠાંસો (सं.) खांसी, खोखला ।

ઠાકરીઓ (सं) एक प्रकार का बिच्छु ।

ઠાકોર (स) मूर्ति, ठाकुरजी, देव, मुख्य, पदवी मुख्यतया राजपूतों आदि क्षत्रियों के लिये ।

ઠાકોરજી (स.) देवता, मूर्ति।

ઠાકોરદ્વાર-મંદીર (सं.) देवस्थान, मंदिर देवालय, मूर्तिगृह ।

ઠાગે (सं.) धोका, छलें, चालाकी।

ઠાઠ-માઠ (सं.) ठाठबाठ, धूम धाम, दिखाव, मर्यादा, पदवी ।

ઠાઠ ચવો (क्रि.) संवारना, सजाना, बढ़ाई करना, बढ़ाना ।

ઠાઠડી (अं.) मुर्दो को लेजाने की गाडी, अर्थी, संगाती ।

ઠાઠું (सं) पंजर, ठठरी, ढांचा, शरीरअस्थिमात्र, अस्थि पंजर ।

ઠાણુ (सं.) अस्तबल, घोड़े बंधने की जगह, चौंवला। [बर्तन।

ઠામ (सं.) स्थान, जगह, स्थळ,

ઠામઠામ–ભેઠામ (क्रि वि.) प्रत्येक जगह, जगह जगह ।

ઠામ બેસવું–પડવું (क्रि.) आराम लेना, विश्राम लेना, आराम होना, पुनर्विवाह करना। [कुहर, बढई।

ઠાર (स.) जाड़ा, पाला ओस.

ઠાર કરવું (क्रि.) वध करना, मारना, कतल करना ।

ઠારવું (क्रि.) ठिठरना, ठंड से जमना ठंडा होना, संतुष्ट करना, बुझाना। [कार होना।

ઠાલવવું (क्रि.) खाली होना, बे॰

ઠાલુ (वि.) खाली, राता, व्यर्थ, गैर जरूरी, अनावश्यक ।

ઠાવકું (वि.) दृढ, स्थिर, अटळ, अचल, बुद्धिमान, चतुर, मेली, जानकार ।

ઠિકરૂં (सं.) मिट्टी के बर्तन का टुकड़ा, फूटा हुवा बर्तन, ठीकरा ।

ઠિંગડુ (स.) कपड़े का छोटासा टुकड़ा।

ઠિંગણું सं. बावना, ठिगना, छोटा, नाटा, छोट कद ।। [हंसी।

ઠિસીઆરી (वि.) मजाक, दिल्लगी

ઠીક (वि.) उचित, मुनासिब, योग्य (क्रि. वि.) बहुत अच्छा, अच्छा

ઠીકઠાક (क्रि. वि.) सुप्रबन्ध, समुचित प्रबन्ध, ठीक बन्दोबस्त, उचित ।

ઠીઠી (सं) जल्दी की हंसी में दांत दिखाने का कार्य, हंसी, अट्टहास।

ઠીઠું (वि॰) निकम्मा, निरर्थक, बेकाम ।

ઠીબ (सं.) टूटे हुए मिट्टी के बर्तन का नीचेका चपटा भाग ।

ઠુંગણુ–ણો (सं.) कलेवा, उपभोजन, भूना हुवा अन्न, चबेना, सिका अन्न ।

ઠુઠવાવવું (क्रि.) ठंड की अधिकता से ठिठुरना, शीत से कॉपना।

ઠુઠું (वि.) ठूँठ ठूँठी डंठल।

ઠુંડી (सं.) ठुड्डी, ठोडी, चिबुक ।

ઠુમરી (सं.) गीत को जाति विशेष ।

ઠુસકી (सं॰) हिचकी ।

ઠેકડી (सं॰) हँसी ठठ्ठा, नकल।

ઠેકડો મારવો (क्रि.) ठेका भरना, कूदना, फाँदना, उछलना।

ઠેકવું (क्रि.) छलांग भरना, मारना, कूद जाना, उछलना ।

ઠેકાણું (सं.) घर, मकान, निवास स्थान, जगह, हाजिरी, नेव, बुनियाद, कारण, उद्गम स्थान, पता, मुकाम, दफ्तर, कार्यालय ।

ઠેકાણું કરવું (क्रि) उपयोगी कर-लेना, काम के योग्य बनालेना ।

ઠેકાણે (उप०) बजाय, जगहपर, वास्ते, अपेक्षा ।

ઠેકાણે કરવું (क्रि.) उचित स्थानपर स्थापित करना, छुपाना ।

ઠેકાણે થવુ (क्रि.) उचित स्थानपर होना, अपने आपको छुपाना ।

ઠેકાણે પડવું (क्रि.) मुकामपर पहुंचना, जीवन मार्ग पार करना ।

ઠેકાણે રહેવું (क्रि.) दूरदर्शी होना, विचारशील होना, परिणामदर्शी होना । [तक ।

ઠેઠ (क्रि. वि) आखिरतक, अत-

ઠેઠજવું-પોહોચવુ (क्रि) ठेठ पहुंचना, सिरेपर पहुंचना, स्थानपर पहुंचना । [क्रिया ।

ઠેપલું (सं.) मीठी रोटी, मीठीटि

ઠેપાડું (सं.) धोती ।

ઠેબો-ભો (सं.) देखो ટેભે ।

ઠેરવવું (क्रि.) निश्चय करना, ठहराना, तयकरना, हलकरना इरादा करना ।

ઠેરાવ सं.) ठहराव, प्रस्ताव फैसला, निर्णय, विचार, इकरार, कौल, करार, टीका, सगाई, मंगनी ।

ઠેલમઠેલા (सं.) धक्कमधक्का, रेला।

ઠેલવું (क्रि) रेलना, धकेलना, घुसेड़ना।

ઠેલાઠેલ (स) देखो ઠેલમઠેલા,

ઠેસ (सं.) ठोकर, हानि, टोटा, गांठ सुई, कील, खूटी।

ઠોંસવુ (क्रि.) खासना ।

ઠોંસો (स) कफ, कास, श्वास, खासी, घूसा, मुक्का । [कलंक ।

ઠોક (सं.) चोट, घूंसा, दोष,

ઠોકર (सं) देखो ઠેસ ।

ઠોકરખાવી (क्रि.) ठोकर खाना, नसीहत लेना, पाठ सीखना ।

ઠોકરાવું (क्रि.) ठुकराना, लात मारना, अटकल करना ।

ઠોઠ (सं.) मूर्ख, मन्द बुद्धि ।

ઠોબરૂં-રું (वि.) बेढंगा, भद्दा, बेडौल ।

ઠોઠારી (वि.) देखो ઠોઠ

ઠોર (सं.) घर, मकान, निवास स्थान, ठौर नामक पकान, मिठाई विशेष ।

ઠોર કરવું (क्रि.) वध करना, मारना, कतल करना ।

ઠોળિયો-ળીયો (वि.) मूर्ख, पागल गंवार, हंसोड़ा, ठठ्ठेबाज ।

ઠોવાવું (क्रि.) रोकना, ठहराना ।

ठोळीयुं (वि.) मूर्ख, गंवार, पागल, बेवकूफ, बुद्धिहीन।
ठोळीयां (सं.) एक प्रकार की कानों में पहिनने की बाली।

ड

ड=गुजराती वर्णमाला का चौबीसवां अक्षर, तेरहवां व्यंजन।
डंख–स (सं.) डंक, चमक, जहरीला कांटा, गुप्त स्पर्श ज्ञान, बैर, विरोध, डाह, लाग, द्वेष।
डंखवुं–सवुं (क्रि.) काटना, डंक मारना।
डखी–सी (वि.) द्रोही, अहितकारी बदला लेनेवाला, प्रत्युपकारेच्छु।
डकाळ (सं.) अकाल, दुर्भिक्ष।
डकेडो (सं.) घाट, बांध, पुश्ता।
डगो (सं.) चलावा, लम्बीचाल, डेग, कदम, पदविन्यास।
डगमग–डगुंमगुं (वि.) चञ्चल, अस्थिर, कांपनेवाला, डावांडोल, चलायमान, स्थिर न रहनेवाला। [दुविधा।
डगडगो (सं.) पशोपेश, शक सन्देह
डगर (सं) मार्ग, रास्ता, पथ, पद्धति, पैंड़ा, पहिये की लकीर।
डगरुं (सं.) पशु, ढोर, अंबेसी, चौपाये जानवर।
डगली–लो (सं.) फितूई, फतूई, कोट, अंगरखी।
डगलुं (सं.) पाद चिन्ह, सीढी।
डगवुं (क्रि.) हिलना, कांपना भटकना।
डगळुं (सं.) जो दुखदायी भैंस या गाय के गले में लकड़ी या लकड़ी का टुकड़ा बांधा जाता है।
डंको (सं.) बड़ा ढोल, पणव।
डंख (स.) देखो डंख
डंग (वि.) चकित, विस्मित, आश्चर्यान्वित, अचंभित।
डंगी (सं.) नाव, छोटी नाव, डोंगी।
डंगो (सं.) बलवा, दंगा, हुल्लड़, गुलगपाड़ा, बखेड़ा, बगावत।
डंगोरो (वि.) लाठी, सोटा, डण्डा,
डच (वि.) मुखसे "नहीं" प्रदर्शित करने के लिए टिचकारी, पशु हांकने की टचकारी।
डचकवुं (क्रि.) चमकना, चौंकना, झिझकना, डरना। [टचकारी।
डचकारी (सं.) "ना" प्रदर्शक
डचकीयुं–कुं (सं.) डर या रंजका आकस्मिक आघात।
डच्चो–डो (सं.) काग, डाट, कार्क।

ડઝન (સં.) दर्जन, बारह, १२,

ડંડ (સં.) दण्ड, जुर्माना ।

ડંડવું (क्रि) दण्ड देना, जुर्माना लेना । [जुर्माना देना ।

ડંડાવું (क्रि.) दण्डित होना

ડંડૂકો (सं.) एक मोटा सोटा, भारी लाठी । [धमकी,

ડપકાણું-મણું (सं.) बुड़की,

ડપકી (सं.) डुबकी, बुड़की, गोता।

ડપકો (सं.) बूंद, बिन्दु, धब्बा, दाग, डर, भय, खौफ ।

ડપટવું-ટીબેસવું (सं.) गुप्त कारणों से अधिकार प्राप्त करलेना । घुस बैठना । [का थैला ।

ડપોટો (सं.) शक्कर इत्यादि भरने

ડપોળું (सं.) लाठी, छड़ी ।

ડફ-ફું (सं.) खँजरी, डफ, चंग।

ડફડાવવું (क्रि.) चलाना, फेकना, पानी में खमकाना या उसकाना ।

ડફણાવવું (क्रि.) गाड़ना, दफन करना । [शठ ।

ડફોળું-ળુ (वि.) मूर्ख, गँवार,

ડબાસ (सं.) गप्प, झूंठ, अफवाह।

ડબકાંખાવાં (क्रि.) झुककर गिरना औंधे होकर गिरना, ढलकना, गुलाटें खाना । [ડબકાવું ।

ડબકાણું-મણું (सं.) देखो

ડબકી-મણું (सं.) देखो ડપકી ।

ડબડબ (वि.) तेजी से, शीघ्रता से ।

ડબડું (सं.) चमड़े का थैला ।

ડબાડબખાવું (क्रि) गड़पगड़प खाना, जल्दी से निगलना, हड़पना ।

ડબી-બ્બી (सं.) डिबिया, छोटी सन्दूक या डिब्बा ।

ડબો-બ્બો (सं.) छोटी सन्दूक, डब्बा, कागज की लालटेन, घास, पगड़ी, पशुओं का हाता ।

ડબોવવું (क्रि.) डुबोना, बोरना, बुड़ाना, गोता खिलाना नष्ट करना।

ડમકો (सं.) एक प्रकार का डफ ।

ડમડમ (सं.) डमडम, पणव शब्द।

ડમરૂ (सं.) एक प्रकार का ढोलक डमरू, वाद्य विशेष ।

ડંબાળુ (सं.) बकबक, बकवाद ।

ડંભક (सं.) धर्म विरुद्धता ।

ડંભર (सं.) मिथ्या दिखावा, ढोंग, टीमटाम, नुमायश, दिखावा ।

ડર (सं.) भय, भीति, शंका, आतङ्क ।

ડરડર (क्रि वि.) धड़कन, फड़कन।

ડરવું-રાવું (क्रि.) भय खाना, डरना । [धाक, डरावना ।

ડરામણું (वि.) भयानक, खौफ-

ડરાવવું (क्रि.) डराना, भय प्रदर्शित करना ।

ડલી–ળી (सं.) ऊनका कपड़ा या नमदा जो काठी के पहिले घोड़े पर रखा जाता है ।

ડંક–ખ (सं.) एक बड़ा हरा मच्छर, या मक्खी, धातु का जोड़ या झालन ।

ડંખલી–ળી (सं.) शाखा, डाल, पल्लव, डाली, टहनी । [लाठी ।

ડંગ (सं.) एक बड़ा, मोटा लठ्ठ

ડંગર–ગેર (सं.) ढोर, छिलकों युक्त चावल ।

ડાંડ–ગો (वि.) अकेला, बेशरम, निर्लज्ज, खुले मुखका ।

ડાંગાઈ–ગી (सं.) बेईमानी, दुष्टता, डंडीपना ।

ડાંઠિયું (सं) फटे हुए कपड़े को निकालकर फिर से जोड़ा हुवा कपड़ा, पक्ले घाला हुवा कपड़ा।

ડાંઠિયો (सं.) छड़ी का छोटा सा टुकड़ा, चिल्लाने वाला, ढिंढोरा पीटनेवाला, निलज्जे जन्तु, बेहूदा, गँवार ।

ડાંડી (सं.) तराजू की डंडी, छोटी छड़ी, डंडी, छोटा ढोल, सीधा खड़ा, खम्भा । [दण्ड, खंभा ।

ડાંડો (सं.) मूठ, हत्था, लम्बा

ડાંસ (सं.) मच्छर, डाँस ।

ડાક (सं.) डाक, मेल ।

ડાકચોકી (सं.) डाक की चौकी या मुकाम ।

ડાકટર (सं.) वैद्य, हकीम ।

ડાકણ (सं.) डाइन, डाकिन, डाकिनी । [बिगुल ।

ડાકલુ (सं.) एक प्रकार की तुरही,

ડાકિયો (सं.) भुखमरा, पेटू, खाऊ।

ડાકો (सं.) लुटेरो का आक्रमण, डाका ।

ડાખલુ (सं.) देखो ડાકલું ।

ડાગળી ખસવી (क्रि.) देखो ડાગળી ચસવી

ડાગળી ચસવી (क्रि.) पागल होना ।

ડાગળો (सं.) तमाशा करनेवाला चंचल खिलाड़ी, भाँड, नट ।

ડાઘ (सं.) धब्बा, निशान, दाग बैर, डाह, बट्टा, कलंक, गाड़ी ।

ડાઘા ડુઘા (सं.) धब्बे, दाग ।

ડાઘી–ઉં (वि.) द्रोही, ईर्षालु ।

ડાઘીઓ (सं.) जंगली कुत्ता, बनैला कुत्ता, अति क्रूर श्वान ।

ડાઘુ (सं.) वह जो मृतक की अर्थी उठाता है या मृतक संस्कार में सम्मिलित होता है ।

ડાઘેલ (सं.) अंकित, दागलगा हुवा, धब्बा, लगाया हुवा, कलंकित।
ડાઘો (सं.) धब्बा, दाग, कलंक।
ડાચું (सं.) जबड़ा, मुख, शकल।
ડાચો (सं.) देखो ડચ્ચો।
ડાટ (सं.) नाश, बर्बादी।
ડાટણું (सं.) चौखट।
ડાટો (सं.) देखो ડચ્ચો।
ડાટવાળવો (कि.) बर्बाद करना, नाश करना, नष्ट भ्रष्ट करना।
ડાટવું (कि.) गाड़ना, जमीन के नीचे छुपाना, मट्टी देना।
ડાડું ભરવું–ભારવું (कि.) काटना, कुतरना, दात से काटना।
ડાબાજમણી (कि. वि.) दाहिने और बाये, दायें बायें, दक्षिण और बाम।
ડાબીયળ (वि.) बायीं तरफ।
ડાબુ (वि.) बायाँ, बाम।
ડાબેરી (वि.) देखो ડાબીયળ
ડાભ (सं.) एक प्रकार की घास, दर्भा, कुशा, पवित्र घास।
ડામ (सं.) गर्म वस्तु का दाग, जली हुई गर्म वस्तु द्वारा दग्ध।
ડામદેવા (कि.) अपमान करना, गाली देना, निन्दा करना, ताना देना, दग्ध करना
ડામ ચાંપવા (कि.) पूर्ववत्
ડામચીઓ (सं.) लकड़ी की टिकटी, लकड़ी की बनी तिपाई।
ડામણુ (सं.) पशु की आगे की और पीछे की एक एक टाँग बाँधने की रस्सी।
ડામર (सं.) डम्मर, डामर नामक एक दुर्गन्ध युक्त और काला तरल पदार्थ।
ડામવું (कि.) गर्म वस्तु द्वारा दग्ध करना, डाम देना, बांधना, कलंक लगाना।
ડામાડોળ (वि.) हिलता हुवा, अस्थिर, डगमग, चलायमान, डावा डोल।
ડામેલ (वि) डाम दिया हुवा, [दग्ध।
ડારો (सं) धमकी, घुड़की।
ડાહાપણ (स.) चतुरता, होशियारी विचार, बुद्धि। [अक्लमन्द।
ડાહ્યો (सं.) चतुर, बुद्धिमान, अ-
ડાહીનો ઘોડો (सं.) अन्धे की लाठी।
ડાહી રીતે (कि. वि.) बुद्धि मानी से, अक्लमन्दी से, बुद्धिद्वारा।
ડાળ–ળી (सं.) शाखा, डगाली, टहनी, पल्लव।
ડાળાં–પાંખડાં (सं.) पल्लवयुक्त शाखा, पत्तों सहित टहनी।

ડિંગ (सं.) ढेर, समूह, डींग, शेखी, गपशप ।

ડીંગલું (सं.) लकड़ का टुकड़ा, कुंदा।

ડીંગી (सं.) डोंगी, छोटी नाव ।

ડીંડવું (सं.) देखो ડીંડવું ।

ડીંડવાળ (सं.) लोकवाद, चर्चा, अफवाह, गपशप, किम्वदन्ती ।

ડીચ-ડું (सं.) गांठ, ढेर, राशि, टाल, पेड़कातना जिस से पतियां निकलती है, डंठा ।

ડીટ-ડીટી (सं.) स्तन, चूची की घुंडी, स्तन मुख, बोबों की ठेपुनी।

ડીધું (सं.) मोटी छोटी छड़ियां या लठ्ठ ।

ડીડી નાંખવું (क्रि.) किसी न किसी प्रकार खतम करना, किसी तरह पूरा कर डालना ।

ડીમું (सं.) शरीर का निकला हुवा भाग, सूजन, फुलाव, गिलटी ।

ડીમો (सं.) सिसकी, आह ।

ડીમચું (सं.) देखो ડીમચું

ડુંગર (सं.) पहाड़, पर्वत, भूधर, गिरि, टेकड़ी, पहाड़ी ।

ડુંગરવટ (वि.) पहाड़ी की, पार्वती,

ડુંગરી (सं) टीला, छोटी पहाड़ी ।

ડુંગળી (सं.) प्याज, कांदा,

ડુંગો (सं.) धूम्रपान करने की नली, हुका, चोर, जार ।

ડુંચવું (क्रि.) चूसना, होठों से पीना ।

ડુંટી (सं.) नाभि, तोंदी, ढुंडी ।

ડુંડું (सं.) अन्न की बाल, अन्न का सिरा, झब्बा, फुंदना, लटकन, मुकुट, चोटी ।

ડુંભી (वि.) चालाक, मक्कार, धूर्त।

ડુઓ (सं.) मैल, कचरा।

ડુક્કરો-ડુક્કર-રી (सं.) सुअर, वराह।

ડુગડુગી (सं.) ढोलक, तम्बूरा, मृदंग, तबला । [चम्मच ।

ડુધો (सं.) चमचा, डोई, करछुल,

ડુચો (सं.) गूदड़ की बनाई हुई गेंद, डट्टा, डाट ।

ડુળાઈ જવું (क्रि.) खराब होना, बुरी तरह पकाया जाना ।

ડુપટ્ટો (सं.) डुपट्टा, कंधोंपर डालने का उपवस्त्र, रूमाल ।

ડુબકી (सं.) देखो ડબકી

ડુબવું (क्रि.) डूबना, बूड़ना, मग्न होना, सूर्यास्त होना, छिपजाना ।

ડુબી જવું (क्रि.) देखो ડુબવું

ડુબાવવું-બાડવું (क्रि.) डुबाना, बोरना, डुबोना ।

ડુબામણું (वि.) अति गहिरा, बहुत औंडा, गंभीर, अगाध, अथाह ।

ડુબાડ (सं.) जहाज का डूबना ।

ડુબકી (सं.) छोटा ढोल, ढोलकी।
ડુમચી (सं.) काठी, जीन।
ડુમાસ (सं.) एक प्रकार का वस्त्र।
ડુમો (सं.) धड़क, भड़क।
ડુબવું-ડૂબવું (क्रि.) डूबना, लुबकना, औंधजाना।
ડૂલ (सं.) हानि, घाटा, टोटा।
ડેડવું (सं.) पानी का सांप, पनियर सर्प।
ડેર (सं.) देर, देरी, विलम्ब,
ડેરા (सं.) तम्बू, पटमण्डप, कुछ दिनोंके रहने का स्थान, कपडे का घर, विदेश का वासस्थान, घर।
ડેરા કરવો (क्रि.) डेरा डालना, मुकाम करना।
ડેરા નાંખવો (क्रि.) तम्बू गाड़ना, पटमण्डप खड़ा करना। [કરવો
ડેરા મારવો (क्रि.) देखो ડેરા
ડેહકાણી (सं.) गँवडेल, गँवार, मूर्ख, बेवकूफ। [तबेला,
ડેહેલા (सं.) हाता, घुड़साल,
ડોઈઓ (सं.) एक प्रकारका चमचा।
ડોક (सं) गर्दन, कंठ, गला।
ડોકરો (सं) बूढा, वृद्ध, बईस।
ડોકભારી (सं.) उपहार।

ડોકાવવું, ડોકિયાં કરવાં (क्रि.) कुटिलतासे देखना, ताकना, झाँकना।
ડોકી (सं.) देखो ડોક [मस्तक,
ડોકું (सं.) सिर, सबसे ऊंचा,
ડોકું કાપવું (क्रि.) धोकेसे धक्का देना, विश्वासघात करना, सिर काटना, मूंड काटना।
ડોચકી (सं.) देखो ડોક
ડોચકું (सं.) देखो ડોકું
ડોડિયો (सं) देखो ઢોડિયો
ડોફાબો (सं.) बदसूरत, पगली।
ડોબરું (सं.) फूटा बर्तन।
ડોબું (सं.) बूढी भैंस या भैंसा, (वि.) मूर्ख, अज्ञानी, जड़, सिड़ि, सिर्री।
ડોયો (स. ` देखो ડોઈઓ।
ડોલ (सं.) मस्तूल, डोल, डोलची।
ડોલચી (सं.) छोटा डोलची, कपडे का या किरमिच का डोल।
ડોલવું (क्रि.) हिलना, लहराना, झूलना, फिरना, घूमना।
ડોળું (सं.) देखो ડોકું।
ડોસો (सं.) विचारीहुई सुराख।
ડોસલાં (सं.) पारसियों के मुर्दे के दिन।
ડોસી (सं.) बुढ़िया, बूढ़ा, बूढी।

ડોશીવાળિયો (सं.) कपड़े बेचने वाला, बजाज, वस्त्रविक्रेता ।

ડોસું ડગરૂં (वि.) बूढ़ा डोकरा,

ડોસો (सं.) वृद्ध, बूढ़ा आदमी ।

ડોહ (सं.) पानी का गड्ढा ।

ડોહવું–ળવું–ળી નાંખવું (क्रि.) मोटा बनाना, मैला करना, गड़बड़ करना, अत्यन्त निकटसे तलाश करना, दुहना, दूध निकालना ।

ડોળ (सं.) सूरत, शक्ल. ढंग, चेहरा, मार्ग, तर्ज, ठाठ, डौल ।

ડોળદાર (वि.) ढंगदार, योग्य, सुन्दर ।

ડોળવવું (क्रि.) हिलाना, झुलाना ।

ડોળા ઉઘાડવા (क्रि.) होश हवासमें लाना, ज्ञान कराना, चैतन्य करना ।

ડોળા કાઢવા (क्रि.) तेवरी चढाना. घुड़कना, आँखे बताना । [देखना,

ડોળા ફેરવવા (वि.) क्रोधयुक्त

ડોળી (सं) डोली, झूलतेहुए पलंग की छोटी किस्म, नाश, लोप, एक प्रकारके बीजे जिनसे तेल निकलता है ।

ડોળીઉં (सं.) एक प्रकारका तेल, रेंडीका तेल, अम्बीका तेल ।

ડોળો (सं.) नेत्र, आंख, नयन, दृष्टि, बीनाई, नजर, आंखकी पुतली या तारा ।

ઢ

ઢ–गुजराती वर्णमाला का पचीसवां अक्षर, १४ वां व्यंजन ।

ઢ (वि.) मन्द, मूर्ख, सुस्त ।

ઢગ (सं.) ढेर, राशि, समूह ।

ઢગરો (सं. , चूतड़, पुट्ठा, पिछला हिस्सा, सिपाही ।

ઢગલે ઢગલા (वि.) बहुत, अधिक, विशेष, ज्यादा, अत्यन्त ।

ઢગલો (सं.) देखो ढग

ઢગો (स.) बैल, मूर्ख, बेवकूफ,

ઢંકાવું (क्रि.) ढांकना, पास होना, चुप होना, वेष्टित होना, खामोश होना । [चालचलन, आचरण।

ઢગ (सं.) ढब, रीति, प्रकार प्रथा,

ઢકેલવું (क्रि.) धक्का देना, घुसेड़ना, खोंचना, रेलना, ढकेलना ।

ઢકેલો (सं.) धक्का, रेला, ठूंसा ।

ઢકેલપંઢ (सं.) बेपरवाही से काम करनेवाला, असावधान ।

ઢકેલાવું (क्रि.) धक्का खाना, धकेलेजाना । [अजीब, बहुत बड़ा ।

ઢંઢાર (वि.) अद्भुत, अपरिमित,

ढंढेरो (सं.) ढंढोरा, डुग्गी, मुनादी, इश्तिहार।
ढंढेरो फेरववो (क्रि.) ढंढेरा, फिरवाना, प्रकट करना।
ढंढोळवु (क्रि.) दांयें और बांये तरफ फेरना। [आकृति।
ढब-ब (सं.) ढौल, ढंग, गढन, गठन,
ढबु-ब्बु (सं.) अधन्ना, दो पैसे का सिक्का। [शब्द, ढमाढम।
ढमढम (सं.) ढोल की आवाज, पणव-
ढमढोल (सं.) खाली, रीता, दिखावा,
ढसलुं (वि.) भोला, सीधा, सादा।
ढसळुं (वि.) पूर्ववत, झुका हुवा
ढळतुं (वि.) देखो ढळकतुं
ढळवुं-ळी जवु-पडवुं (क्रि.) बाहर आजाना, खिसक जाना, ढुलक जाना, लोभ जाना, लुढकना।
ढळाळ (सं.) ढलाव, ढालू मैदान।
ढळी जवुं (क्रि.) देखो ढोळाई जवुं
ढाळियु (सं.) बड़ा भारी पत्थर।
ढ्ळ्या (विस्म.) जावो तुम, निकल जावो, दुष्ट, बदमाश।
ढांकणु-णी-णुं (सं.) ढक्कन, अच्छादन, ढांकनेका। [पर्दा।
ढांकपिछोडो (सं.) घूंघट, ओट,
ढांकवु (क्रि.) बन्दकरना, ढंक लेना, अच्छादित करना, छुपाना।

ढांकी देवुं, मुकवुं, राखवुं (क्रि.) खामोश करना, सुनसान करना। ढांक कर रखना, छुपाकर रखना।
ढांकी नांखवुं (क्रि.) अंधेरा करना, ग्रहण होना।
ढांकोढुबो (क्रि.) देख भालकर चीजों को यथास्थान संवार कर रखना।
ढांकयुं (सं.) परोसा, किसी के मकान से किसी के घरको लाया हुवा भोजन।
ढांगरुं (सं.) ककड़ी, खीरा।
ढाल (सं.) रक्षक, ढाल, जो समय पर मदद दे, सहायक।
ढाळ (सं.) ढलाव, ढलान, उतार।
ढाळकी (सं.) धातु का कठिन टुकड़ा। [फसल की लुनाई।
ढाळणी (सं.) अन्न की कटनी.
ढाळवुं (क्रि.) बटोरना, बूंद बूंद करके गिराना, छलकाना, ढलकाना बहाना, गळाना, पिघलाना, खेत काटना, घास काटना।
ढाळियुं (वि.) ढालू, तिरछा।
ढांळगो (सं.) नाली, नहर लावक कटनी करनेवाला, फसल काटनेवाला।

ढींगली (सं.) गुड़िया, पुतली, लड़कियोंके खेलने की कठ पुतली।
ढींचणु (सं.) घुटना, जानू।
ढींचवु (क्रि.) बेपरवाही से पीना, खूब पीना, ढोकना, चढ़ाजाना, घुघुकजानां, डचकजाना।
ढींक-को (सं.) पीठपर थप्पड़,
ढीमचुं (सं.) एक मोटा और चौड़ा ठेकड़े का टुकड़ा।
ढीमणुं (सं.) पूर्ववत्
ढीमडुं-ळुं-मुं (सं.) सूजन, फुलाव, गिल्टी, गुमड़ा, फोड़ा।
ढीमर-ध्मर (सं.) मछवाहा, ढीवर, धीमर।
ढील (सं.) देरी, विलम्ब, टालमटोल
ढीलापणुं (सं.) सुस्ती, ढीलापना।
ढीलीदोरी (सं.) ढीला बन्धन, मामूली रोक। [पोक।
ढीलुं (वि.) ढीला, निर्बल, डर-
ढीलुं करवुं (क्रि.) खोलना, ढीला करना।
ढुंढियो (सं.) जैन, धर्म का एक एक दयापालन मत विशेष।
ढुंढवुं-ढवुं (क्रि.) तलाश करना ढूंढना, खोजना।
ढुंढियो (सं.) देखो ढुंढियो।
ढूंसो-ढो (सं.) गेहुं के आटे की एक मोटी रोटी जो वजन में १० सेर से अधिक हो, घुस्सा, दुशाला दरी।
ढूंकडुं (उप.) निकट, पास, नजदीक।
ढेको (सं.) स्तन, चूची, थन।
ढेकाढैया (सं.) सूराख और गड्ढे, खुरदरापन, मोटापन।
ढेको (सं.) तलवार के मूठ की गिरह, ग्रंथी, गाठ, गिरह, गढान।
ढेगी (वि.) सुस्त, काहिल आळसी।
ढेको (सं.) सूजन, फुलाव, गिल्टी।
ढेड-डो (सं.) मेहतर, भंगी।
ढेड फजेती (सं.) बदनामी, सार्वजनिक अपमान। [भंगीपुरा।
ढेडवाडो (सं.) ढेडें के रहने का मुहल्ला
ढेडी (सं.) ढेड की औरत, भांगिन।
ढेडीउं (क्रि.) अपमान करना।
ढेपुं-फुं (सं.) पत्थर, ढेला, लौंदा,
ढेबरुं (सं.) मोटी रोटी, एक प्रकार की मसालेदार रोटी।
ढेल (सं.) मोरनी, मयूरी।
ढेसरो-थो (सं.) गोबर का ढेर।
ढोंग (सं.) छळ, कपट, पाखण्ड, बनावट, कपट वेष। [करना।
ढोंग करवो (क्रि.) पाखण्ड, करना,
ढोंग धतुरो (सं.) देखो ढोंग।

ઢોંગી (सं.) छली, कपटी, पाखण्डी।

ઢોંગી સંન્યાસી (वि.) बनावटी साधु, नकली संन्यासी।

ઢોંચ (वि.) फटा, गला, सड़ा।

ઢોંફોડો (सं.) राज, संगतराश, खाव खोदने वाला, पत्थर फोड़ा।

ઢોડો (सं.) पत्थर, पाषाण, मूर्ख।

ઢોકળાં (सं.) दाल और चाँवल के आटे का बनाया हुवा भोजन।

ઢોકળી (स.) एक छोटी किंतु मोटी रोटी या टिकिया।

ઢોચકું (स.) मृत्तिका पात्र, मिट्टी का बना बर्तन, सिर।

ઢોચકું ઉડાવવું-ની દેવું (क्रि.) शिरच्छेदन करना सिर काटना, मूंड काटना।

ઢોર (सं) पशु, जानवर, चौपाये, (वि.) अज्ञान, मूर्ख।

ઢોલ (सं.) बड़ी ढोलकी, ढोल।

ઢોલક (सं.) पूर्ववत्।

ઢોલડી (सं.) रंगीन पालना, रंगा हुवा झूलना।

ઢોલી (सं.) ढोलवाला, ढोल बजाने वाला ढोल का पेशा करने वाला।

ઢોલીઓ (सं.) चारपाई, पलना।

ઢોલો (वि.) मूर्ख, बुद्धिहीन, शठ।

ઢોળ (सं.) मुलम्मा, चोकर, चूर, मुलम्मा, कलई।

ઢોળ ચડાવવો (क्रि.) मुलम्मा करना, कलई करना पत्तर चढ़ाना।

ઢોળવું (क्रि.) ढुलाना, औंधाना, ऊँडेलना, पलस्तर करना।

ઢોળાવ-વો (सं.) उतार, ढाल, ढलाव।

ઢોળી નાખવું-પાડવું (क्रि.) औंधाना, बिखेर देना, गाली देना, अपमान करना, तौहीन करना।

ઢોંઓ (वि) खोजत, क्लीब, जनाना। नपुंसक।

ણ

ણ—गुजराती वर्णमाला का छब्बीसवाँ अक्षर, पन्द्रहवा व्यंजन।

ત

ત—गुजराती वर्णमाला का सत्ताईसवा अक्षर, १६ वा व्यंजन।

તઇયાર (वि.) देखो तैयार

તઇયારી (सं.) देखो तैयारी

તક (सं.) मौका, अवसर, मौ, माजरा, योग, मेल, ऐनवक्त।

તકતકતું (वि.) चमकीला, भड़कीला, प्रभायुक्त, प्रकाशमान।

तकतकवुं (क्रि.) खूब चमकना, चमकना, प्रकाशित होना।
तक्तो (सं.) देखो तख्तो
तकदीर (सं.) किस्मत, भाग्य, प्रारब्ध।
तकरार (सं.) किस्मत, लड़ाई, झगड़ा, विवाद टंटा, अमेल, भेद।
तकरारखोर-री (वि.) झगडालू, विवादी, फसादी, लड़ाका।
तकलेदी (वि.) निर्बल, कमजोर।
तकसीर-वीर (वि) अपराध, जुर्म, दोष, कुसूर, गुनाह।
तकवा (स.) शक्ति, बल, पौरुष,
तकाजो (सं) तकाजा, देनलेन के लिये आवश्यकता प्रदर्शित करना।
तकाजो करवो (क्रि.) तकाजा करना।
तकाववुं (क्रि) ताक बाधना, इरादा करना, निशाना बाधना।
तकियो (सं.) ओसासा, बलीत, उपधान, सिरहाना, सिर के नीचे रखने की वस्तु।
तकुब्बरी (सं.) गर्व, दर्प, घमण्ड,
तकुफी (स.) रसा काम को थोड़े दिनक लिये रुकना या ठहराना।
तखत-ख्त (स.) मच, काठकी बड़ी चौकी, सिंहासन, तख्त।
तखतनशीन (सं.) राजा, अधिकार प्राप्त राजा, सिंहासनासीन भूपति। [पूरा पृष्ट।
तखती (सं.) पट्टी, कागज का
तखतो (सं.) पट्ठा, तख्ता, शीशे का चौकोर टुकड़ा, दर्पण, चौखटे जड़ी हुई तस्वीर।
तगड (सं.) थकावट, पैदल, चाल।
तगडा (सं.) तीनका अंक।
तगादो-दो (सं.) देखो तकाजो
तगारुं (सं.) कुम्हार का गारा ले जाने का, नाद, कुंडा।
तगणुं (वि.) त्रिगुण, तिगुना,
तगावी (सं.) तकावी, कृषकों को सरकार की ओर से अगाऊ ऋण।
तगेडवुं (क्रि.) तेज हाकना, शीघ्रतापूर्वक चलाना।
तंग (स.) घोड़े का तंग, कसके बाधा हुवा, कसा हुवा, (वि.) दबा हुवा।
तंगास (सं.) देखो तंगी
तंगी (सं.) आवश्यकता, जरूरत, कमी, महंगी, घबड़ाहट, व्याकुलता, बैचेनी।
तगतगवुं (क्रि.) कोधसे चमकना, रोषपूर्ण होजाना।
तज (सं.) दारचीनी, दालचीनी, तेजपात।

તજવીજ (सं.) उपाय, तदबीर, तलाश, खोज, जांच, तहकीकात, बन्दिस, यत्न, उद्योग, प्रयत्न ।

તજવું (क्रि.) छोड़ना, त्यागना, दे डालना, निकाळ देना ।

તટ (सं.) किनारा, तीर, कूळ, नदी का कछार ।

તટબંદી (सं.) गढ बनानेकी क्रिया, किलाबन्दी, मोर्चाबन्दी । [ओर ।

તટસ્થ (वि.) मध्यस्थ, अलग, एक

તડ (सं) जुदाई, भाग, तर्फ, पक्ष ।

તડકવું (क्रि.) डरना, चौंकना, कड़कना, तड़क जाना, दरार होना।

તડકો (सं) धूप, सूर्य्यप्रकास, गर्मी ।

તડાક (क्रि. वि.) चंचलतापूर्वक, किसी वस्तुको भूनते समय या सेकते समय उसका तडतड शब्द ।

તડતડવું (क्रि) तडकना, कडकना, चिरना, दरार होना, फांक होना ।

તડતડિયો (सं.) आगकी चिनगारी ।

તડ પડવી (क्रि.) दरार होना, फाक होना, तड़कना, फटना ।

તડફડવું (क्रि.) देखो તરફડવું

તડબુચ (सं.) तरबूज, फळ विशेष मतीरा । [प्राप्ति ।

તડાકો (सं.) टक्कर, गप्प, लाभ,

તડાતડી (सं.) विवाद, झगड़ा, फसाद, बराबरी, स्पर्द्धा ।

તડિત (सं.) बिजली, विद्युत, सौदामिनी, चपला । [रैंभना, कड़कड़ाना

તડૂકવું (क्रि.) गर्जना, डकारना,

તડૂકો (सं) आकस्मिक गज्जॅन ।

તડોવડ (वि.) समान, बराबर।

તણખલુ-ખુ (सं.) तिनका, तृण, घासकी पत्ती । [चिंगारी ।

તણખો (सं.) शोहला, पतिंग,

તણછ (सं.) एक प्रकारका शहतीर।

તણાયું (क्रि.) खिंचाहुवा, लिपटाहुवा, सिकुड़ाहुवा फजूल खर्चीसे दरिद्र होजाना ।

.તણપાણુ (सं.) देखो પોણુ ।

તણો (सं.) उसको, उसका (कवितामें)

તણાઈજવું (क्रि.) खिचजाना, तनजाना, अकड़जाना । [.कवितामें)

તણું (वि.) षष्ठीका प्रत्यय,का,

તતડવું (क्रि.) तड़कना, कड़कना ।

તતુડી (सं.) छोटी बिगुल, तुरम, तुरही । [उसीक्षण, तुरंत ।

તત્કાળ (क्रि. वि.) उसी समय,

તતખેવ (क्रि. वि.) पूर्ववत् ।

તત્પર (सं.) उद्युक्त, अनलस, लगाहुवा, तदनन्तर ।

તત્પુરૂષ (सं.) समास विशेष ।

તત્ર (क्रि. वि.) तहाँ, वहाँ, उसस्थानमें, उस विषयमें ।

તત્રાપિ (क्रि. वि.) तौभी, इतने परभी, उसपरभी, बिनानामके स्थानका सूचक शब्द ।

તત્ત્વ (सं.) सत्य, तथ्य, सत्यता, सार, उद्देश्य, अन्वेषण, गूदा ।

તત્ત્વબોધ (सं.) तत्वज्ञान, सत्य उपदेश, यथार्थ ज्ञान। [ब्रह्म विद्या ।

તત્ત્વવિદ્યા (सं.) तर्कशास्त्र विद्या,

તત્ત્વશોધક (सं.) तत्वज्ञानी, ब्रह्मज्ञ।

તત્ત્વમસિ (सं.) ईश्वरत्व, खुदाई, वह तूहै ।

તત્ત્વાંશ (सं.) सारांश, आत्मा, रूह।

તત્સમય (सं.) उसवक्त, उसकाल ।

તત્ક્ષણ (क्रि. वि.) उसीदम, उसीवक्त, तुरंत ।

તત્ક્ષણિક (क्रि. वि.) उसी वक्तका ।

તત્ત્વજ્ઞાન (सं.) ब्रह्मज्ञान, सत्यज्ञान ।

તત્ત્વજ્ઞાની-દર્શી (सं.) ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञ, तत्वविद्, फिलासफर ।

તથા (अ.) और (क्रि. वि.) तैसेही, वैसेही, इसकेबाद, उस प्रकार ।

તથાપિ (क्रि. वि.) तौभी, वैसा होनेपरभी, उस परभी ।

તથાસ્તુ (क्रि. वि.) वैसा हो, वैसाही हो, स्वीकारोक्ति ।

તથી (सं.) तिथि, चांद्र तिथि, तारीख।

તદઉપરાંત (क्रि. वि.) उसके बाद। तदुपरान्त, तत्पश्चात, तदनन्तर।

તદન (क्रि. वि.) सब, इकट्ठा, तमाम।

તદપિ (क्रि. वि.) देखो તથાપિ।

તદબીર (सं.) देखो તજવીજ ।

તદા (क्रि. वि.) तब, उस, समय।

તદાકાર-રૂપ (वि.) तदनुरूप, तादृश, तत्तुल्य, उसके समान, वैसाही ।

તન (सं.) शरीर, बदन, जिस्म, अंग, पुत्र, बेटा, तनय ।

તનક (सं.) थोड़ा, कम, छोटा, अल्प ।

તનખ (सं.) चबकदार दर्द, वह दर्द जिसमें टीस होती हो ।

તનખા (सं) तनख्वाह, किराया, आगकी चिंगारी ।

તનદુરસ્ત (सं.) स्वस्थ, निरोग ।

તનદુરસ્તી (सं.) स्वास्थ्य, नैरोग्य ।

તનમન (सं.) शरीर और दिल, मन और शरीर । [द्रव्य ।

તનમનધન (सं.) शरीर, दिल और

તનમનીઉં (सं.) कण्ठमें पहिननेका आभूषण, तिमनिया । [सुत ।

તનય (सं.) बेटा, लड़का, पुत्र,

તનયા (सं.) पुत्री, बेटी, सुता, आत्मजा।

તનસી (सं.) तम्बूकी रस्सी ।

તનિયો (सं.) कपड़ा, वस्त्र ।

તનુ (सं.) शरीर, देह, बदन, अंग।

તનુજ (सं.) पुत्र, बालक, शिशु ।

તનુજા (સં.) पुत्री, बेटी, तनया ।
તને (सर्व.) तुझे, तुझको ।
તનોડો (सं.) कानोंका आभूषण ।
તંત્ર-ત્ર (सं.) धागा, सूत्र, तार, जादूटोना । [अचेत करना।
તતરવું (क्रि.) धोखा देना, छलना,
તંતુ (सं) धागा, डोरा, सूत्र, कृमि-सरीखा धागा, रग, नस, नाड़ी, तागा, सूत । [श्रान्ति ।
તંદ્રા (सं.) ईषत् निद्रा, थकावट,
તંદ્રાળુ (वि.) क्लान्त, श्रान्त, थकित, निद्रातुर, आलस, निद्रालु ।
તન્મય (सं.) निर्दिष्ट, लिप्त, लीन, तल्लीन। [वय्य सम्पन्न युवती ।
તન્વંગી (सं.) कोमलांगी, रूपला-
તપ (सं.) तपस्या, शरीरकष्ट, शरीर संयमका उपाय, हरिभजन, गर्मी, उष्णता ।
તપખીર (सं.) हुलास, तवाखीर ।
તપખીરિયા રંગનું (वि.) तवाखीरके रंगसे मिलता हुवा ।
તપત (सं.) ज्वर, बुखार, ताप ।
તપવું (क्रि.) गर्म होना, तपना, चमकना, इंतजार करना, क्रोध होना ।
તપશ્ચર્યા (सं.) तप, तपस्या ।
તપસીલ (सं.) तफसील, विवरण, वर्णन, खुलासा जिक्र ।
તપસીલવાર (सं.) क्रमपूर्वक, ब्योरेवार
તપસ્વી (सं.) तपकरनेवाला, ऋषि, मुनि, वानप्रस्थाश्रमी, व्रतधारी ।
તપાવવું (क्रि.) तपाना, गर्मकरना, क्रोध भड़काना, किसीके द्वारा इंतजारी कराना, रोकना ।
તપાસ (सं.) तलाशी, ढूंढभाल, जांच पड़ताल, खोज, तहकीकात।
તપાસનાર (सं.) परीक्षक, ढूंढने-वाला, जांचनेवाला ।
તપાસવું (क्रि.) तलाश करना, चौकसी करना, जांच पडतालना, ढूंढना। [क्रोधमें भभक उठना।
તપી જવું (क्रि.) क्रोध होना,
તપેલું (सं.) तबेला, पात्र विशेष (वि.) तपाहुवा, गर्म कियाहुवा।
તપેસરી-સ્વરી (सं.) देखो तपस्वी
તપોબળ (सं.) तपद्वारा प्राप्त शक्ति।
તપોવન (सं.) तपस्वियोंका आश्रम ऋषि मुनियोंके रहनेका वन ।
તપ્ત (वि.) उष्ण, संताप युक्त, तपाहुवा ।
તફરેડફરવું (क्रि.) बेच डालना, छुपाना, गुप्त रखना । [छुपजाना।
તફર કેદવું (क्रि.) गुप्त होना,
તફાવત (सं.) फर्क, फासला, अंतर, गलती, भूल, उपाय ।
તબક (सं.) पत्तर, तख्ता एक छोटा थाल, परात ।

તબકડી (सं.) एक छोटी थाली रकाबी, छोटा पत्तर।
તબડાવવું (क्रि.) उबालना।
તબલચી-ચ્ચી (सं.) तबले बजानेवाला तबलिया।
તબલો (सं.) तबला, वाद्य विशेष।
તબિયત (सं.) स्वभाव रुचि, चाह।
તબીબ (सं.) वैद्य, हकीम।
તબેલો (सं.) अस्तबल, घोड़े, बांधनेका ठान।
તમ (सं.) अंधेरा, अधंकार, तिमिर, क्रोधया अंधापन।
તમણું (वि.) तिगुना, त्रिगुण, तिहोरा, तीनतहता।
તમતમું (वि.) तीक्ष्ण, कटु, चरपरा, कडुवा।
તમને (सर्व.) तुमको, तुम्हारेको।
તમર-મ્મર (सं.) मूर्च्छा, चक्कर।
તમા (स.) प्रयोजन, सम्बन्ध, चिन्ता निसबत। [तमाल।
તમાકુ (सं.) तमाखु, तम्बाकू,
તમાચો (सं) थप्पड, चपत; चाँटा।
તમામ (क्रि. वि.) बिलकुल, सब, (वि.) पूर्ण, सारा, सब।
તમામ કરવુ (क्रि.) पूर्ण करना,
તમામી (क्रि.) स्त्रियोंकी पौशाक जो रेशम और स्वर्णसे मंडित हो।
તમામીઅત (सं.) परिपूर्णता, सम्पूर्णता, कामयाबी, योग्यता।
તમારીમેળે (सं.) तुम्हारे लिये, तुमही, आपही, अपने हीतई।
તમારૂં (सर्व.) तुम्हारा, आपका।
તમાલ (सं) वृक्ष विशेष, कालाखैर।
તમાલપત્ર (सं.) तेजपत्र।
તમાશગીર (सं.) दर्शक, तमाशा देखने वाले, भांड। [खेल।
તમાશો-સો (सं.) दृश्य, कौतुक,
તમે (सर्व.) तुम, आप।
તમેખુ (सं.) बडाचूल्हा, भाड़।
તમોગુણ (सं.) त्रिविध गुणोके अंतर्गत एकगुण विशेष, क्रोधान्धता।
તબાકુ (सं.) देखो तમાકુ
તંબુ (सं.) खीमा, डेरा, पट, मण्डप रावटी, छोलदारी, वस्त्रगृह।
તંબુતાણવે-મારવો (क्रि.) डेरा-खड़ा करना, खेमा लगाना।
તંબુરો (सं) वाद्य विशेष, तानपूरा, तीन तारकी बीन।
તંબોળ(सं.) पान, ताम्बूल, खानेका पान, नागर बेलका पत्ता, तमोल।
તંબોળી (सं.) ताम्बूलि, पानका व्यापारी, पान बेचने वाला, तमोली।
તર (सं.) घाटनाव, छोटी खाडीया कोल, दूधकी मलाई, (वि.)

રસીલા, સરસ, તાજા, ચીલા, ઓદા સીલા, બનાવ્ય, દૌલતમન્દ, મદો- ન્મત્ત, નશેમેંચૂર, આસૂદા, બબૂબી (ક્રિ. વિ.) તબ, ઉસસમય।

તરકટ (સં.) બનાવટ, ઝૂઠ, પાખંડ, ધાકા, કપટ।

તરકટી (સં.) જાલમાજ પાખણ્ડી (વિ.) અધર્મી, બેઈમાન।

તરકડીઓ (સં.) આનન્દી, ગઁવાર।

તરકડું-ડો (સં.) સિપાહી સૈનિક યવન, મુસલમાન।

તરકવું (ક્રિ.) અટકલ કરના અન્દાજા કરના, અનુમાન કરના।

તરકસ (સં.) તૂણ, નિષંગ, ત્રોણ, બાણ રખનેકા માથા।

તરકારી (સં.) શાક, સાગ, ભાજી।

તરખ (સં.) વાદાનુવાદ, વિવાદ ઝગડા, તર્ક।

તરકીબ (સં.) ઉપાય, યત્ન તરીકા હિકમત, તરતીબ, તદબીર।

તરંગ (સં) લહર, ઉર્મિ વીચિ, ઠેઊ, હિલકોરા, ઉમંગ મૌજ, કલ્પના, ખ્યાલ। [આન્હવા।

તરંગીણી (સં.) ગંગાનદી, સુરસરિ,

તરછોડવું-ડીનાંખવું (ક્રિ.) તુચ્છ જાનના, ઘૃણા કરના, નફરત કરના।

તરજુમો (સં.) અનુવાદ, ઉલ્થા, ભાષાન્તર।

તરડ (સં.) દેખો તડ।

તરડાઈને બોલવું (ક્રિ.) ક્રોધમેં બોલના, ગુર્રાકર બોલના।

તરણ (વિ.) તીન (સં.) કોઈભી વસ્તુ જો પાનીમેં તૈરતી હો।

તરણિ (સં.) સૂર્ય. રવિ સૂરજ।

તરણી (સં.) નાવ, નૌકા।

તરણું (સં.) તૃણ, ઘાસ, તિનકા।

તરત (ક્રિ. વિ) તુરંત, શીઘ્ર, ફૌરન, તત્ક્ષણ, સમયપર, સમયમેં।

તરતર (સં.) અસ્તિત્વ, સત્વ, મૂલ, તત્વ।

તરતીબ (સં.) પ્રબન્ધ, બન્દોબસ્ત।

તરતું (વિ.) તૈરતા હુવા, યશવન્ત સફલ, ભરાપૂરા।

તરનાર (સં.) તૈરૈયા, તૈરનેવાલા।

તરપત (સં.) તૃપ્ત, સંતુષ્ટ, પરિતો ષાન્વિત। [કૃશ।

તરપડું (વિ.) દુબલા, પતલા,

તરફ (ઉપ.) ઓર, દિશા, પક્ષ, બગલ।

તરફડવું (ક્રિ.) લડના, છટપટાના।

તરફદારી (સં.) પક્ષપાત।

તરફેણ (સં.) તરફ, પક્ષ।

તરબિયત (વિ.) શિક્ષિત, પઠિત।

તરબુચ-ચ (સં.) तरबूज, फल विशेष। [पत्तर।

તરભાણું (સં.) ताम्रपत्र, तांबेका

તરવાડો (સં.) खजूर वृक्षके मदको खींचकर बाहिर निकालनेवाला।

તરવાર (સં.) तलवार, खड्ग, कृपाण।

તરવારની ધારપર રહેવુ (क्रि.) बड़ा सावधान रहना।

તરવારિઓ (સં.) तलवार वाला, खड्ग धारी, तलवारसे लड़ने वाला।

તરવું (क्रि.) तैरना, बहना, कामयाब होना, सफल होना, मुक्तिपाना मोक्ष पाना, बाहर आना।

તરીજવું (क्रि) पार होजाना, तैर जाना।

તરસ (सं.) तृषा, प्यास, लालसा. अभिलाषा, लकड़बग्घा, पशु विशेष।

તરસવું (क्रि.) बड़ी लालसा करना, तरसना, बदले के लिये ललायित होना। [पिपासित।

તરસ્યું (सं..) प्यासा, तृषित,

તરાંઠ-રાઠ (सं.) तकुआ, डंठा।

તરાગડી (सं.) तराजू, तखड़ी।

તરાજવું (सं.) तौलने का पलड़ा, पूर्ववत्।

તરાજુ (सं.) देखो તરાજવું।

તરાપો (सं.) बेड़ा, लट्ठों का बेड़ा। [सिखाना।

તરાવવું (क्रि.) तैराना, तैरना

તરીઆવવું (क्रि.) तैरआना, ऊपर आना, सफलता पालेना।

તરીઓ (सं.) पारीसे आने वाला ज्वर, आंतराज्वर।

તરીપાર (सं.) पहुँचाव, देशनिकाला।

તરુ (सं.) वृक्ष, पेड़, पादप, द्रुम।

તરુણ (सं.) नवीन, नूतन, युवा।

તરુણાવસ્થા (सं.) जवानी, यौवन।

તરુણી (सं.) युवती, जवान स्त्री।

તરુતલ (सं.) वृक्ष की जड़, पेड़ के पेड़ी के नीचे की भूमि।

તરેલું (सं.) दोजोड़ी बैलों के लिये जूड़ा या जूड़ी।

તરેલા તાણવાં (क्रि.) बड़ा परिश्रम करना, अधम काम करना।

તરેહ (सं.) भेद, प्रकार, अंतर, किस्म, भाँति, ढब, तरह।

તરેહતરેહનું (वि.) किस्म किस्म का, भाँति, भाँति का, अनेक प्रकार का।

તરેહવાર (वि.) भिन्न, न्यारा, नानावर्ण, चित्रविचित्र, सतरंगा।

તરેપણુ (सं.) छोटा बर्मा, बर्मा, छिद्र करने का छोटा यंत्र,

तरेपो (सं.) नारियल, नारेल ।
तरोवर (सं.) वृक्ष, झाड़, तरु, पेड़ ।
तर्क (सं.) कल्पना, ख्याल, अनुमान, बहस, दलील, अनुमान, अनुमानोक्ति ।
तर्कबाज–र्बी (वि. तेजबुद्धि, तर्क बुद्धियुक्त नटखट, तर्ककारक नैयायिक । [न्यायविद्या ।
तर्कविद्या (सं.) आन्वीक्षिकी,
तर्कशक्ति (सं.) तर्क करने का बल ।
तर्कशास्त्र (सं.) दर्शन विशेष, न्यायशास्त्र, इल्मे मंतक, फिलासफी, तत्वज्ञान ।
तर्जनी (सं.) प्रथम अंगुली, अंगूठे के पास की अंगुली ।
तर्त (क्रि. वि.) देखो तरत
तर्पण (सं.) देखो तृप्ति, देवताओं को जलांजलि, मृतपुरुषों के नामोच्चारण सहित जल देना ।
तर्पवुं (क्रि.) खुशकरना, संतुष्ट करना । [इष्ट ।
तर्पित (वि.) तृप्त, संतुष्ट, प्रसन्न,
तर्षित (वि.) प्यासा, तृषित ।
तल (सं.) शरीर पर का तिल, तिल, लसा । [तक, पर्यंत ।
तलक–ग (क्रि. वि.) तक, अब
तलख (वि.) चरपरा, कड़वा, तीखा, कटु । [इच्छा ।
तलप (सं.) कूद, उछल, छलांग,
तलपवुं (क्रि.) इच्छुक होना, तड़पना, किसी वस्तु के लिये लालसा करना । [अधीरता ।
तलपापड (वि.) बेसब्र, बेचैन,
तलपीलवुं (क्रि.) तड़पना, छटपटा जाना ।
तलब (सं.) बुरी आदत ।
तलवार (सं.) देखो तरवार
तलसरा (सं. तिल के वृक्ष, झाड़ी ।
तलाक (सं.) त्याग, स्त्री पुरुष का छोड़ना, तिलाक ।
तलाकनामुं (सं.) त्यागपत्र, तिलाक की दस्तावेज । [त्याग देना ।
तलाक आपवी (क्रि.) तिलाक देना
तलाटी (सं.) गांवकी सालाना माल गुजारी का मुनीम ।
तलावट (सं.) विद्या, गुण, उपाय,
तलाश–स (सं.) ढूंढ, खोज, इन्क्वायरी । [तिल्ली, पेटकी तिल्ली ।
तली–ल्ली (सं.) तिल्ली, पिलही, ताप
तल्लीन (वि.) लीन, गरक, मग्न, निमग्न, तन्मय । [यंत्र, मंत्र ।
तवेशाप (सं.) जादू, टोना, तावीज़,
तलेसमात (सं.) देखो तलसमा

तब (क्रि. वि.) तब, उस समय, तौ।

तवंगर (वि.) धनाढ्य, दौलतमंद।

तवाह (वि.) दुर्भाग्य, विपत्ति, आपद्, तबाही, बर्बादी।

तवाहज्वुं (क्रि.) कमजोर होना, दुर्बल होना, मुर्झाना, पिघळना।

तवाजु (सं.) पूर्ववत् [सभ्यता।

तवाजु (सं.) सुशीलता, नम्रता,

तवारीख (सं.) इतिहास, वर्णन।

तवी–वो (सं.) तवा, लोहेका गोल पत्तर जिसपर रोटीयां सिकती हैं।

तसको (सं.) नकचढी, बोली ठोली, ताना, क्रोध, कोप, रोष।

तसतस्तु (वि.) तंग, कसा, निकट।

तसदी (सं.) तकलीफ, कष्ट।

तसबी (सं.) माळा, सुम्रनी।

तसबीर (सं.) देखो तसवीर

तसमो (सं.) चमड़ेका फीता, चर्म पट्टिका। [लहर।

तसर (सं.) लकीर, धारी, रेखा,

तसवीर (सं.) चित्र, फोटो, छबि मूर्ति। [वैसा,

तसु (क्रि. वि.) उसके समान, तैसा,

तसु (सं.) $\frac{1}{24}$ गज, लम्बाई मापनेके लिये गजका २४ वां भाग, इंच।

तस्कर (सं) चोर, चौर, लुटेरा, चोट्टा अपहर्त्ता, दूसरेका धन हरण करनेवाला।

तस्करवुं (क्रि.) चुराना, छुपाना, हरण करना, चोरना, लूटना।

तस्मात (क्रि. वि.) इसीलिये, कारणात्, इसकारण, इसी सबबसे।

तह (सं.) सावधिसंधि, क्षणिक संधि, सुलह, संधि, विश्राम, सुख, चैन।

तहकीक (वि.) ठीक किया हुवा, निश्चित, स्थापित, ठहराया हुवा, मुकर्रर। [शंकाकी दशामें, शंकित।

तहकुब (वि.) सन्देहकी हालतमे,

तहनामु (सं.) सौदा, व्यौपार, व्यवसाय, लिखित सधिपत्र, लिखाहुवा सुलहनामा।

तहीं (क्रि. वि.) वहीं, वहांही, वहां।

तळ (सं.) पेंदा, अधोभाग, तला, तलवा, तली, पेंदी।

तळगट (सं.) नेंवके लिये गाड़ा हुवा लकड़ीका लट्ठा।

तळघाट (सं.) नीची भूमि, पहाड़की जड़ या तरेठी, पर्वतकी पेंदी।

तळघाटी (सं.) तराई। [कढ़ाई।

तळणी (सं.) भूंनने या तलनेकी

तळपद (सं.) ग्राम भूमि, वह भूमि जो ग्रामके निकट ग्रामसे सम्बन्ध रखती हो।

तळपदुं (वि.) स्वदेश का, देशीय।

તળવળ (सं.) बेचैनी, व्याकुलता।
તળવું (क्रि.) भूनना, तलना।
તળાટ (सं.) तोसक, सुजनी, बिछौना। [हिसाब।
તળાટી (सं.) गाँव का लेखा या
તળાટું (सं.) माल गुजारी के खजानची का धन्धा।
તળાતળ (सं.) लोक विशेष, चोथा पाताल। [सर।
તળાવ (सं.) तालाब, सरोवर,
તળાવડી (सं.) तलैया, छोटा ताल।
તળાસવું (क्रि.) चाँपना, दबाना।
તળી (सं.) जूते की तली।
તળીઆરૂ (स.) पेंदी, पेंदा, तली।
તળીઉં (सं.) पेंदा, तलुवा (पैरका)
તળે (स.) नीचे, उतरकर, तले नीचे की ओर, अधो भाग में कुछ कम।
તળેઉપર (उप.) उलट पुलट, नीचे ऊपर, दोनों तरफ।
તળેઉપર (सं.) बेचैनी, बेकली।
તળેટી (सं.) पर्वतकी पेंदी, पहाड़की तरेटी या तराई।
તક્ષક (सं.) बढई, लकड़ी काठने वाला, सर्पराज। [ओर
તાં (क्रि. वि.) वहां, उधर, उस
તાંત (सं.) तांत, रोवा, सूत, धागा, रेशा, तार, आँतोंद्वाराबना डोरा।
તાંતણો (सं.) धागा, सूत्र।
તાંદલજો-ળિયો (सं.) एक प्रकार का शाक, भाजी विशेष, तरकारी।
તાંદુલ (स.) चांवल,
તાંબડ માટી (सं.) लाल मिट्टी।
તાંબડી-ડો (सं.) ताम्रपात्र, ताँबेकी बनी तस्तरी, ताँबेका गोल पात्र। [करनेका पात्र।
તાંબાકુંડી (स) एक प्रकारका स्नान
તાંમાનાણું (सं.) ताँबेका सिक्का, ताम्र मुद्रा। [विशेष।
તાંબુ (सं.) ताँबा, ताम्र, धातु
તાંબુલ (सं.) पान, नागरवेलका पान, पत्ते और पानका लपेटा।
તાંસળું-સિયું (सं.) भरतका बर्तन, काँसी और पीतलके मिश्रणसे बनाहुवा पात्र।
તાંહાથી (क्रि. वि.) उस स्थानसे, वहाँसे, उस समयसे।
તાંહાં લગી-સુધી (क्रि. वि.) वहाँ तक, तक, उस जगह तक।
તા (सं.) तख्ता, ताव, कागजका तख्ता, शब्दांतमें लगनेवाली गुण द्योतक प्रत्यय।

તાઈ (सं.) धुननेवाला ।

તાઈ (सं.) बेपरवाह, बेफिक्र, असावधान, अपरिणामदर्शी, उतावला । [विशेष ।

તાઉસ (सं.) तारवाद्य, वाद्य

તાએફો (सं.) वेश्याका गाने बजानेका समाज, तवाइफ, नाचनेवाली वेश्या ।

તાક (स.) छाछ, तक्र, मठा, मही, दूधका पानी, तोड, गोरस, महेरी ।

તાકડો (सं.) अवसर, मौका, गौं।

તાકવું (क्रि.) घूरना, ताकना, इकटक दृष्टिसे देखना । [पौरुष ।

તાકાત (स.) शक्ति, बल, ताकत,

તાકીદ (स.) जल्दी, शीघ्रता, हुक्म, आज्ञा, आदेश ।

તાકું (स) गुफा, गुप्तवास, तातील, विश्राम ।

તાકો (स.) कपड़ेका सारा टुकड़ा ।

તાગ (सं.) धागा, सूत्र, गहिराई, मोटा खुरदरा सनीवस्त्र ।

તાગું (सं.) बलवा ।

તાજ (सं.) मुकुट, राजचिन्ह ।

તાજખાતુ (सं.) गुप्त, छुपाहुवा ।

તાજગી (सं.) राजी खुशी, नवीनता, कुशल क्षेम, कुशल आनन्द, सुख ।

તાજવું (सं.) तराजूके पलड़े ।

તાજવાળું (सं.) मुकुट वाला, राजा ।

તાજાકલમ (सं.) अभीका लिखा हुवा, थोड़े समयका लेख, पत्र आदिमें लिखचुकने के पश्चात् लिखाहुवा ।

તાજાપણું (सं.) शीतलता, नवीनता, ताजगी, मिठास ।

તાજીમો (सं.) देखो તાજીમ ।

તાજીમ (सं.) सुशीलता, नम्रता, इज्जत । [मोटा, भराहुवा ।

તાજું (वि.) नया, ताजा, तुरंतका,

તાજું કરવું (क्रि.) ताजा करना ।

તાજુબ (वि.) आश्चर्य विस्मय ।

તાજુબથવું (क्रि.) आश्चर्य होना, विस्मय होना ।

તાજુબી (सं.) आश्चर्य, अचंभा ।

તાજેકલમ (सं.) देखो તાજાકલમ ।

તાજેતર (वि.) ताजा, नया ।

તાજેશકરવી (क्रि.) प्रायश्चित करना, दण्डित होना ।

તાજેસકરવી (क्रि.) पूर्ववत ।

તાજેસરથી (क्रि. वि) फिर आरंभसे, फिरसे, फिर शुरूसे ।

તાટ (सं.) टाट, (वि.) बंद, छुपा ।

તાટી (सं.) बाँसकी चौखट बाँसकी टाटी । [ताल वृक्ष ।

તાડ (सं.) ताड़, ताड़वृक्ष,

તાડછત્ર (सं.) देखो તાડ।

તાડન (सं.) धमकाना, मारना।

તાડપું (सं.) पंखा बनानेके ताडकी पत्ती।

તાડપત્ર (सं.) ताड़का पत्ता।

તાડપત્રી (सं) पूर्ववत्, एक प्रकारका कपड़ा, वस्त्र विशेष।

તાડફળ (सं.) ताड़ वृक्षका फळ।

તાંડવ (सं.) नृत्य, नटन, एक प्रकारका नृत्य। [ताड़ना करना।

તાડવું (क्रि.) दण्डदेना, सजादेना

તાડી (म.) ताड़वृक्षके फल का रस, मादक द्रव्य विशेष, तालरस।

તાઢી (सं.) मृतककी भस्म।

તાણ (सं.) मरोड़, ऐंठन, तङ्गी, कमी, महँगी, तकाजा, हठ, जिद्द, फूट, वियोग।

તાણપડવી (क्रि.) झगड़ा होना, विवाद होना टंटा होना।

તાણવું (क्रि.) खींचना, अपने पक्षमें लेना, तानना।

તાણાતાણ (सं.) खींच ताण, ऐंचा ताणी, घसीटना, और खींचना।

તાણામારવા (क्रि.) तानादेना, भला बुरा कहना।

તાણીયો (सं.) तार बनानेवाला।

તાણીને (क्रि. वि.) जोरसे, खींचकर।

તાણીતોડીને (क्रि वि.) बड़ी कठिनतासे, बड़े कष्ट पूर्वक।

તાણું (सं.) तेरावचे ९३, ताना।

તાણો (सं.) ताना, सूत या रस्सी द्वारा पूराहुआ ताना।

તાણોવાણો (सं.) ताना बाना।

તાત (सं.) बाप, पिता, जनक।

તાતા (सं.) मोटी रोटी।

તાતું (वि.) उष्ण, गर्म, ताता, गर्म मिजाज का, तेजमिजाज का।

તાત્કાળ (क्रि. वि.) तुरंत, फौरन, तत्क्षण। [फानन, फौरन।

તાત્કાલિક (वि.) उसी दम, आनन,

તાત્પર્ય (सं.) अभिप्राय, आशय, मर्म। [अर्थ, वाजबी।

તાત્પર્યાર્થ (सं.) अभिप्राय का

તાતો (वि.) गर्म मस्तिष्क का।

તાન (सं.) राग, स्वर, गान का एक अङ्ग विशेष, चाह, लालसा, अभिमान. घमण्ड, झपट।

તાનો (सं.) ताना, वाग्बाण।

તાપ (सं.) गर्मी, ज्वर, बुखार, तेज, हैरानी, ठाठ। [क्रोधी।

તાપટ (वि.) तीक्ष्ण, कड़ा, आकरा,

તાપણી-ણું (सं.) भूमि पर जलाई हुई अग्नि, तपने के लिये जला हुई आग।

તાપવું (क्रि.) तपना, गर्म होना।

તાપસ (सं.) योगी, तपस्वी, ऋषि, साधु, तप करने वाला।

તાપસકર્મ (सं.) साधुकार्य, ऋषिकर्म, तपस्वी के काम।

તાફ્તો (सं.) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र, रेशमी कपड़ा विशेष।

તાબડતોબ (क्रि. वि.) तुरंत, शीघ्र, फौरन।

તાબુત (सं.) वह सन्दूक जिस म मुर्दा रख कर गाड़ते हैं, मूर्ति प्रतिमा, हसन और हुसेन के नाम पर बनाई हुई अर्थी, ताजिया, बाँस की खपाचयो द्वारा बनाया हुवा मकबरा–जो बहु मूल्य कागजो से वेष्ठित हाता है आर जिसे यावनी मास मुहर्रम मे निकालते हैं।

તાબે (क्रि. वि.) परतन्त्र, परवश, पराधीन।

તાબે કરવું (क्रि.) आधीन करना, स्ववश करना, जीतना, हराना।

તાબે થવું (क्रि.) वश होना, आधीन होना, अधिकार में होना।

તાબેદાર (सं.) नौकर, दास, आधीन, परवश, आश्रित।

તાબેદારી (सं.) दासता, नौकरी आधीनता, गुलामी, विवशता।

તાબો (सं.) अधिकार, वश, हक, कब्जा, दखल।

તામડી–ડો (सं.) देखो તાંબડી

તામસ (सं.) क्रोध रोष, गुस्सा।

તામસી (वि.) क्रोधी, आगसा, चिड़चिड़ा। [पान।

તાંબુલ (सं.) नागरवेल का पत्ता,

તામ્ર (सं.) ताम्बा, धातु विशेष।

તામ્રકાર (स.) तमेरा, ठठेरा, ताम्बा आदि धातु का काम करने वाला।

તામ્રપટ–ત્ર (सं.) ताँबे का बना हुवा पत्र जिसपर पहिले राजाज्ञा लिखी जातीथी। तांबे की पट्टी जिसपर दान या मुवाफी की जायदादो का ब्यौरा लिखा जाताथा।

તાયફો (सं.) नर्तकी सम्प्रदाय, वेश्या समूह, रण्डियों का समुदाय।

તાર (सं.) टेलीग्राफ, तार, धागा, सूत्र। [कर्ता, बचानेवाला।

તારક (वि.) रक्षक, पालक उद्धार

તારકસ (सं.) चांदी और सोने के तारों की दस्तकारी और जरी का काम।

તારણ (सं.) छुटकारा, उद्धार, निर्णय, नजात, मुक्ति, मोक्ष, गिरवी, ऋण प्राप्त करने को बतौर जमानत रखा हुवा द्रव्य।

તારતમ્ય (सं.) न्यूनाधिक्य, सामान्य, थोड़ा बहुत भेद ।
તારતાર (सं.) देखो તારફ
તારપછી (क्रि. वि.) बादमें, उस के या इसके बाद, पीछे, पश्चात् ।
તારવવું (क्रि.) हिसाब की किताब में जमा और खर्च की जाच करना, उठाना ।
તારવુ (क्रि.) उद्धार करना, बचाना, रक्षा करना, छुड़ाना, उठाना ।
તારાજ (सं.) नष्ट, बरबाद ।
તારામંડળ (सं.) नक्षत्र मंडल, नक्षत्र समुदाय । [का दिन ।
તારીખ (सं.) दिन, तिथि महीने
તારીજ (सं.) संक्षेप, सारांश ।
તારીફ (सं.) प्रशंसा, बड़ाई, कीर्ति यश वर्णन, श्लाघा ।
તારીફદાર (वि.) प्रशंसा योग्य, श्लाघ्य, स्तुत्य, उत्तम, श्रेष्ठ ।
તારીફ લાયક (वि.) पूर्ववत् ।
તારૂણી (सं.) तरुणी, युवती ।
તારૂણ્ય (सं.) जवानी, यौवन ।
તારે (क्रि. वि.) उस वक्त, तत्काल, तत्समय, तुझे, तुझको ।
તારો (सं.) नक्षत्र, तारक, ग्रह, आंख की पुतली, तैरैया ।
તારો (सर्व.) तेरा ।
તાલ (सं.) छन्द, पद, नाप, मनुष्य ऊर्ध्व बाहु खड़ा हो वह परिमाण, विनोद, विलास, गर्व, गंजापन । [मुकुट ।
તાલકું (सं.) कपाल, सिर, सिरका
તાલમેલ (सं.) मिथ्या धूमधाम, व्यर्थ का ठाठबाठ ।
તાલાવેલી (सं.) चिंता, शोच, व्यग्रता, बेचैनी, बेकली ।
તાલીમ (सं.) शिक्षा, अभ्यास, विद्या
તાલીમ આપવી (क्रि.) शिक्षा देना। सिखाना, बतलाना, तालीम देना ।
તાલીમખાનું (सं.) अखाड़ा, दगल, शिक्षागृह, जहा कुछ सिखाया जाता हो ।
તાલીમબાજ (सं.) तालीमयाफ्ता, शिक्षा प्राप्त, शिक्षित, सीखा हुवा गुणी । [भाग, तलुवा, तालू ।
તાલુ (सं.) तालू, मुखके ऊपरका
તાલુક (वि.) सम्बन्ध, प्रयोजन, ताल्लुक । [ताल्लुकेदार, जमीदार।
તાલુકદાર (सं.) पटेल, मुखिया,
તાલુકો (सं.) जिला, प्रान्त, इलाका, अमलदारी ताल्लुका ।
તાલુસ્થાની (वि.) तालव्य, जिन का तालुस्थान से उच्चारण हो, इ, ई, च, छ, ज, झ, य, श,

તાલેવંત-નર-વાન (सं.) भाग्य-वान, धनवान, द्रव्यपात्र ।

તાવ (सं.) ज्वर, बुखार, ताप, कागजका तख्ता, पूरा कागज ।

તાવડી-ડો (सं.) हंडा, लोहे या ताम्बे का पात्र, चिकनी मिट्टी का पत्तर ।

તાવવું (क्रि.) गर्म करना, तपाना।

તાવી (सं.) देखो તવી

તાવીજ (सं.) मंत्र, जादू, टोना, गंडा यंत्र, गले में या भुजा पर बांधा जानेवाला अलङ्कार विशेष ।

તાશ (सं.) घण्टा, घड़ियाल, थाल, ताम्रपात्र, तख्ता ।

તાસક (सं.) किसी प्रकारकी धातु से बना हुवा। [वस्त्र ।

તાસતો (सं.) एक प्रकारका रेशमी

તાસણી (सं.) बसूला ।

તાસવું (कि.) काटना, टुकड़े टुकड़े करना ।

તાસીર (सं.) मिजाज़, सूरत, शक्ल, स्वभाव, बान ।

તાસું (सं.) तासा, एक प्रकारका ढोल, वाद्य विशेष ।

તાંસળી (सं.) प्याले सरीखा एक पात्र विशेष ।

તાંસળું (सं.) देखो તાંસળી

તાઢક (सं.) ठंढ, शीतलता ।

તાઢાડક (सं.) ताज़गी, ठंडाई ।

તાઢું (वि.) ठंडा, शीतल ।

તાળ (सं.) देखो તાલ

તાળવું (सं.) तालू, मुख का भीतरी ऊपर का भाग, तारू ।

તાળી (सं.) हाथो की पीट का शब्द, करतल ध्वनि, तारी ।

તાળી પાડવી (क्रि.) तालियां पीटना, ठठ्ठा उड़ाना, ताली बजाना।

તાળો પડાવવી (क्रि.) हँसी कराना, दिल्लगी उड़ाना ।

તાળું (सं.) ताला, कुलफ ।

તાળો (सं.) पत्र व्यवहार, नियम पत्र, कौल, करार । [टिक्कड़ ।

તિક્કડ (सं.) मोटी रोटी, रोट,

તિખટ (सं.) तीखी वस्तु, चर्परी चीज़ ।

તિખલ (सं.) व्याकुलता, खिन्न, घबराहट, दौड़धूप, खड़बड़ी ।

તિખાશ (सं.) तीक्ष्णता, चर्परा-हट, कड़ुवापन ।

તિખું (वि.) तेज, चर्परा, कटु, तीखा । [ध्यक्ष ।

તિજોરર (सं.) खजानची, धना-

તિજોરી (सं.) रुपया पैसा रखनेकी लोह सन्दूक, खजाना, धनागार ।

तिख्खुं (सं.) नोकदार, तेज, पैना।

तितर (सं.) लपसी, हलुवा, पक्षी विशेष।

तिताधीउं (वि) खोखला, खाली।

तितिक्षा (सं.) धैर्य, धीरज, क्षमा, सहन शीलता।

तिथि (सं.) तारीख, चांद्रमास का दिन। चन्द्रकला की क्रिया, प्रतिपदादि तिथि।

तिथिक्षय (सं.) तिथि का नाश, तिथि की हानि, तिथि की टूट।

तिप्पट (वि.) त्रिगुण, तिलडा, तिहेरता।

तिपाई (सं.) टिपाई, तिगठी, तीनपाँव की काष्ट की बनी तिपाई।

तिमिर (सं.) तम, अँधेरा, अंधकार।

तिरछम-छुं (वि.) तिरछा, टेढा, झुका हुवा, मुडाहुवा, ढालू।

तिरंदाज (सं.) धनुष चलाने वाला, धनुर्द्धर, धनुष विद्या में प्रवीण। [धनुर्वेद।

तिरंदाजी (सं.) धनुष विद्या,

तिरंभाज (सं.) देखो तीरंदाज।

तिरंभाजी (सं.) देखो तिरंदाजी।

तिरवो (सं.) इतनी भूमि जिसपर एकबार धनुषद्वारा बाण छोड़ा जावे वह अंतरजो बाण फेंकनेसे हो।

तिरस्कार (सं.) निन्दा, अपमान अप्रतिष्ठा, घृणा।

तिरोहीत (सं.) देखो त्रोहित।

तिल (सं.) देखो तल।

तिलक (सं.) चन्दनादिका मस्तकपर लेपन, सांप्रदायिक चिन्ह विशेष जो मस्तकपर लगाया जाता है।

तिलानो (सं.) राग विशेष, तिल्लाना नामक राग।

तिसमारखां (वि.) क्रोधी, अकडू गर्म मिजाजका, शेखीखोर।

तीकम (स) कुदाली, खनित्री।

तीक्ष्णु (वि.) तेज, तीखा, पैना, क्रोधी, तीता, कडुवा, क्षिप्रकारी।

तीखां (सं.) मिर्च।

तीखुं (वि.) चरपरा, कटु. तीखा।

तीज (सं.) प्रतिपक्षकी तीसरी तिथि, तृतिया।

तीजुं (सं.) तृतीय, तीसरा।

तीड (सं.) टिड्डी, टीडी।

तीतर (सं.) देखो तितर।

तीर (सं.) बाण, शर, किनारा, पुट्ठा, कूल्हा, चूतड़, कड़ी, धरन, शहतीर, धना।

तीरकामठुं (सं.) धनुषबाण, तीरकमान, शरशरासन।

तीरछुं (वि.) तिरछा, टेढ़ा, बाँका।
तीरथ (सं.) क्षेत्र, पुण्यस्थान, ऋषिसेवितजल, तीर्थ। [धर्माचार्य
तीर्थंकर (सं.) जैनियोंके २४
तीर्थयात्रा (म.) तीर्थाटन, तीर्थ गमन, पुण्य स्थानोंका भ्रमण।
तीर्थरुप (सं) पुण्यरूप, पवित्र-रूप, पिता, पूज्य, पूजनीय।
तीर्थवासी (स.) तीर्थोमें रहने वाले, यात्री, पुण्य स्थळवासी।
तीर्थाटन (सं.) तीर्थ गमन, पुण्य स्थलोंमें भ्रमण, तीर्थ पर्यटन।
तीव्र (वि.) अधिक तेज, कटु, कडुवा, प्रखर, गर्म, चपल, चंचल।
तीव्रबुद्धि (स) कुशाग्र बुद्धि, तेज बुद्धि।
तीस (वि.) तीस, त्रिश, ३०,
तीसभारखां (सं) देखो तिसमारखां
तीक्ष्णु (वि.) देखो तीक्षणु
तीक्ष्णता (सं.) तजी, चर्परापन, उल्वण, प्रखरता। [बुद्धि
तीक्ष्ण बुद्धि (सं.) देखो तीव्र
तीक्ष्णाग्र (वि) नुकीलमा, नोंकदार पैनी नोंकवाला।
तुं (सर्व.) तू [मैसोरकी नदी।
तुंगभद्रा (सं.) नदी विशेष,
तुंती (सं.) देखो तुंडार।
तुर्ड (सं.) सोने या चादीकी वरी या गोटा। [तुवरकी दाल।
तुवेर (सं.) तूवर, अन्नविशेष,
तुखम (सं.) बीज, उत्पत्ति, कुळ, वंश।
तुक्कल (सं.) पतंग विशेष, एक प्रकारकी गुड्डी, पतंगकी एक जाति, चंग।
तुक्को (सं.) भोंठा बाण, बोथरा तीर, गपशप, चर्चा, अफवाह।
तुच्छ (वि.) अल्प, थोड़ा, नीच, हीन, अधम, निटल्ला, निकम्मा।
तुच्छ मानवुं (क्रि.) हीन समझना, न कुछ समझना, हल्का मानना।
तुच्छकार (स.) घृणा, नफरत।
तुच्छकारवु (क्रि.) नफरत करना, घृणा करना।
तुच्छावस्था (सं.) हीनावस्था।
तुट (सं.) नाराजी, अप्रसन्नता, तोड़, खंडन, टूट।
तुटक (वि.) टुकड़ा, खंड बिखरा हुवा, अलग, जुदा।
तुटफाट (सं.) फूट, अनैक्य, जुदाई, बिलगता, टूटफूट।
तुटवुं (क्रि.) टूटना, अलग होना, जुदा होना, बिलग होना।
तुटी पडवुं (क्रि.) टूट पड़ना, गिर पड़ना।

તુટેલું (वि.) टूटा हुवा, खण्डित।
તુણવું (क्रि.) कातना, थिगरी या पैवन्द लगाना, टांका मारना।
તુંડ (सं.) सूरत, शक्ल, मुँह।
તુતક (सं.) जहाज का तखता, नौका पृष्ठ।
તુતંભ (सं.) बनावट, झूठ, पाखंड।
તુતી (सं.) पक्षी विशेष। [दर्प।
તુંદ (सं.) घमण्ड, अहंकार, गर्वित,
તુંદી (सं.) घमण्डी, अहंकारी।
તુનીઆટ (सं.) छोटा व्यापारी, छोटा सौदागर।
તુંબડી ડું (सं.) छोटा तूंबा, साधुओंका जलपात्र। [तुम आप।
તુમ (सं.) पहियेकी नाह (सर्व.)
તુમડી (सं.) देखो તુંબડી।
તુમાન (सं.) पजामा, पायजामा, बिरजस।
તુમાર (सं.) बड़ी लिखा पढ़ी।
તુરઈ (सं.) तुरही, तुरम, बिगुल, लोहेकी कील जिसके दोनों ओर नोक हो।
તુરક (सं.) तुर्क, मुसलमान, यवन, मलेच्छ, जाति विशेष।
તુરકસ્વાર (सं.) सवार, बहादुर, सैनिक। [रखनेवाला, तुर्की भाषा।
તુરકી (सं.) तुर्कीस्तानसे सम्बन्ध
તુરકી ચાલ (सं.) घोड़ो की सरपट चाल, तेज चाल, लपट।
તુરંગી (सं.) घोड़ी, तरंगी, मनमौजी, लहरी।
તુરંજ (सं.) एक प्रकारका खट्टाफल।
તુરત (क्रि. वि.) देखो તરત
તુરાઈ (स.) तुरही, तुरम, बिगुल, कपड़ा बुननेवालेका डंडा।
તુરાશ (सं.) कब्ज, कोष्टबद्धता।
તુરી (सं.) घोड़ा, नारी, ढरकी, जुलाहोंके कामका औजार, दोनों और नोकदार कील। [विशेष।
તુરીઉં (सं.) तुरैया, तुरई, शाक
તુરૂં (वि.) न पचनेवाली दवा, कब्ज करनेवाली। [शीघ्र।
તુર્ત (क्रि. वि.) तुरत, फौरन,
તુરો (सं.) देखो તુરૂં-તોરો।
તુશ (सं.) अनाजका पोटा, अनकी चोटा, बाल, या सिरा। [समानता।
તુલના (सं.) कूत, तौल, बराबरी,
તુલવારી (सं.) जमीन का कर, उसकी उत्पत्ति के अनुसार लगान।
તુલસી (सं.) तुलसिका, हरि प्रिया, देव वृक्ष। [तुलसी का पत्ता।
તુલસીપટ (सं.) तुलसी दल,
તુલસી વૃંદાવન (सं.) मकान के आगे तुलसी की वेदी जिसकी नित्य पूजा हो। [तोलने का यंत्र।
તુલા (सं.) काँटा, तराजू, बकान

तुल्य (सं.) समान, बराबर, सदृश ।
तुवर-वेर (सं.) देखो तुम्बेर ।
तुवरसिंग (सं.) एक प्रकार की फली । [चाँवलों की भूसी ।
तुष (सं.) चाँवलों का छिलका,
तुषार (सं.) पाला, ओस, कुहर, ओले, ठंढ, शीत, तुहिन ।
तुष्ट (वि.) खुश, प्रसन्न, आनन्दित ।
तुळाध (सं.) चौरस लकड़ का लट्ठा ।
तुळा (सं.) देखो तुला
तुळादान (सं.) स्वशरीर के बराबर किसी वस्तु का दान, दान विशेष ।
तूत (सं.) कपट प्रबन्ध, गुट्ट, झूठे बयान ।
तूश (सं.) देखो तुश
तूलवारी (सं.) देखो तुलवारी
तृण (सं.) घास, फूस, तिनका ।
तृणचर-भक्षी-हारी (स.) पशु जो घास पात खाते हों ।
तृणाच्छादित-तृणव्याप्त (वि.) तृण संकुलित, घास से ढका ।
तृणवत (वि.) घास के समान, तृण समान, नकुछ, व्यर्थ, निकम्मा ।
तृतीय (सं.) तीसरा ।
तृतीया (सं.) देखो त्रीज
तृतीयांश (वि.) एक का तीसरा हिस्सा । $\frac{1}{3}$, तीसरा भाग ।
तृप्त (वि.) परितोषान्वित, संतुष्ट, हर्षित, प्रसन्न, हृष्ट । [आल्हाद ।
तृप्ति (सं.) सन्तोष, परितोष,
तृषा (सं.) तृष्णा, पिपासा, प्यास ।
तृष्णा (सं.) पिपासा, पीने की इच्छा, उत्कंठा, अत्यंत अभिलाष, लोभ, लोलुपता, अधिक उत्सुकता ।
तें (सर्व) तू, तुम, आप ।
तेंताळीस (वि.) ३ और ४०, तेतालीस, ४३ । [तेतीस, ३३ ।
तेंत्रीस (वि.) ३ और ३०,
तेसठ (वि. / ६० और ३, त्रेसठ, ६३ ।
ते (सर्व.) वह, वो ।
ते उपरांत (अ.) इसके अतिरिक्त, इसके बाद, तदुपरान्त ।
ते छतां (अ.) ते छतां, तिस पर भी, तथापि, बावजूदेकि, तौभी ।
तेओ (सर्व.) वे, ते ।
तेओनुं (सर्व.) उनका, उन्होंका ।
तेओने (सर्व.) उनको, उन्हीं को ।
तेग (सं.) खड्ग, वक्रकृपाण, तलवार, असि । [प्रकाश, गर्मी ।
तेज (सं.) प्रताप, बळ, चमक,
तेज (वि.) मजबूत, दृढ, बढ़ा, अनुसार, मुवाफिक । [सादृश्य ।
तेवते (सं.) समानता, सदृश्यता,

તેજસી (सं.) शीतलता, नवीनता, तैजी, ताजगी ।

તેજ પ્રમાણે (क्रि. वि.) ऐसा, उसी प्रकार, ऐसेही, उसी भाँति, उसी तरह। [मकदार ।

તેજવંત (वि.) चमकीला, च-

તેજવાન-વાળુ-સ્ત્રી (सं.) पूर्ववत् ।

તેજાનો (सं.) मसाला, नमूना ।

તેજાબ (सं.) खटाई, तेजाब, सत्व ।

તેજાળ (सं.) चमक, प्रकाश ।

તેજી (वि.) चंचलता, चपलता, शीघ्रता, जल्दी ।

તેજીમંદી (सं.) चढाव उतार, घट-बढ, शान्त उग्र ।

તેજોમય (वि.) अग्निपुंज, ज्योतिर्मय, प्रकाशमय, प्रकाश स्वरूप ।

તેજોવૃદ્ધિ (सं.) चमक; प्रकाश, शुहरत, नामवरी ।

તેટલાવાસ્તે (उपं.) इसकारण, इस-वास्ते, अतएव, एतदर्थ ।

તેટલામાં (क्रि.) इतनेमें, इसीबीच, उसी समय । [उतना ।

તેટલું (वि.) इतनाज्यादः, इतना,

તેટલે (क्रि. वि.) तब, तक, तलक, अबतक ।

તેડવું (क्रि.) टेरना, बुलाना, निमं-त्रित करना, कमरपर, उठाना ।

તેડાવવું (क्रि.) बुलवाना, बुला भेजना । [टेढ़ा, तिरछा ।

તેડું (क्रि.) निमंत्रण, न्योता (वि.)

તેડુંકરવું (क्रि.) निमंत्रित करना ।

તેણીકોર (क्रि. वि.) वहाँ, उधर ।उसतरफ, उसजगह ।

તેણે (सर्व.) वह [तेणीकोर ।

તેણીગમ-મેર (क्रि. वि.) देखो,

તેણેકરીને (क्रि. वि.) इसकारणसे तस्मात , अतः, इसलिये ।

તેતર (सं) देखो તેતર

તેથી क्रि. वि.) इसकारण, इसलिये ।

તેનાત (सं.) परवशता, वशी भूतता, आधीनता, वशता, तैनात, कायम ।

તેની (सर्व.) उसका ।

તેનીમેળે (सर्व.) उसके लिये, उसके वास्ते । [वहीका वही ।

તેનોતેજ (वि.) सत्य, सच्चा, ठीक,

તેપન (स) त्रेपन, ५० और ३, ५३,

તેપ્રમાણે (क्रि. वि.) उसीके अनुसार, यों, ऐसा, इस रीतिसे, अनुसार ।

તેમ (क्रि. वि.) ऐसे जैसे, तैसे ।

તેમજ (क्रि. वि.) इसी रीतिसे, इसी तौरपर, औरभी ।

તેમધે (क्रि. वि.) उसमें ।

તેમાટે (क्रि. वि,) देखो तेथी,

તેમનું (सर्व.) उनका, उन्होंका ।

तेर (वि.) १३, तेरह, १० और ३, त्रयोदश। [तेरहवाँ।
तेरमुं (सं.) मृतकको तेरहवाँ दिवस
तेरस (सं) तिथि विशेष, त्रयोदशी।
तेरीख (स) तारीख, तिथि, व्याज की दर, सूदकी दर। [द्रव्य:
तेल (सं.) तैल, तिल विकार, निग्ध
तेलकढावुं (क्रि.) तंग करना, थकाना, तेल निकालना, मसलना, कुचलना। [पसीजना, स्वेदबहना।
तेलानकळवुं (क्रि) पसीना निकलना
तेलण (स.) तेलाकी औरत, तेल निकालनेवालेकी स्त्री।
तेलवाळुं (वि.) चिकना, तेलसा, तिलहा, स्निग्ध, तेल युक्त, तेली।
तेलां (स.) नवरात्री में तीन दीन का व्रतोत्सव।
तेली (स) जाति विशेष, तेल वाला, तैल विक्रेता।
तेलीओराजा (सं.) जो तेल में देखकर या स्नान कर के भाविष्य बतलाता हो।
तेवड (सं. देखो ओवड।
तेवडवुं (क्रि.) तीन लडाकरा, तिहोरा करना, त्रिगुण करना।
तेवडु (स) तिगुना, तिहोर, तिलड़ा, त्रिगुण, इतना बड़ा जितना कि वह।

तेवाओ (क्रि. वि.) देखो तेटलाओ
तेवारे (क्रि. वि.) देखो त्यारे।
तेवास्ते (अ.) इसवास्ते, इसलिये। तस्मात्, अतएव, एतदर्थ।
तेवीस (सं.) त्रिविंश, तेईस. २३।
तेवुं (क्रि. वि.) वैसा, उसके समान। [वैसा।
तेवुज (क्रि. वि.) वैसाही, ठीक
तेवे-वो (क्रि. वि.) तुरंत, फौरन, तत्क्षण, शीघ्र।
तेवेळा (क्रि. वि.) तब, उस समय।
तेवोज (क्रि. वि.) ठीक वैसाही।
तेसठ (वि.) ६३, त्रेसठ, ६० और ३
तेहेवार (सं.) पवित्र दिन, पर्वदिनत्यौहार, उत्सव दिन।
तेहेसील (स.) माल गुजारी, या लगान का संग्रह।
तेहेसीलदार (सं) माल गुजारी का संग्रह कर्ता, पद विशेष।
तेहसीलदारी (सं) माल गुजारी आदि संग्रह करने का काम, तहसील्दार का काम।
तेजस (वि.) चमकीला, रोशन।
तैयार (वि) उद्यत, सज्जित, तय्यार पूर्ण, समाप्त प्रस्तुत। [इच्छुता।
तैयारी (सं.) प्रस्तुति, उत्सुकता,
तैल (सं.) देखो तेल।

તૈલાભ્યંગ (सं.) तेलका प्रयोग, तेल और उबटना। [और ३।
તોંતેર (वि.) ७३, तिहत्तर, ७०
તો (उप.) यदि, अगर, तब, तदा, अवश्य, निस्सन्देह, सचमुच।
તોક (सं.) पट्टा, बेड़ी, हथकड़ी।
તોકલ (सं.) घोड़ी, भरोसा, आसरा, विश्वास, सहारा।
તોકવું (क्रि.) चौकस करना।
તોખમ (सं.) देखो તુખમ।
તોખાર (सं) अश्व, घोड़ा, तुरग बाजि।
તોગ (वि) दुखदाई, कठिन, कष्टप्रद।
તોગર (सं.) धनाढ्य, धनवान।
તોછડાઈ (सं.) गँवारपना, कमीनापन, ओछापन। [भद्दा।
તોછડું (वि.) गँवार, शठ, मूर्ख,
તોડ (सं.) आपसमें मिलकर निपटारा, फैसला, तरतीब, उपाय।
તોડકાઢવો (क्रि.) जुगती करना, विचार करना, आपसमें निपटलेना।
તોડવું (क्रि.) तोड़ना, खण्डखण्ड करना, गलाना, पिगलना। [करना।
તોડાવું (क्रि) तुड़ाना, टुकड़े २
તોડીનાખવું–પાડવું (क्रि.) खींच डालना, तोड़ देना, खंडित कर डालना अपमान करना, गाली देना।
તોડો (सं.) एक हजार रुपये जिसमें समा सकें ऐसी एक थैली, एक प्रकारका पैर में पहिनने का आभूषण, तोड़ेदार बन्दुक को चलाने के लिए आग लगानेकी बत्ती।
તોણીઆત (सं.) छोटा व्यापारी या महाजन।
તોતડું બોલવું (क्रि.) तुतला कर बोलना, हकला कर बोलना, तोतरा बोलना [हट
તોતડું (वि.) तुतला हट, हकला
તોતડો (सं.) तुतला, हकला, अस्पष्ट वक्ता।
તોતળા (सं.) एक देवीका नाम।
તોતો (सं.) शुक, सुआ, सुग्गा।
તોપ (सं) आग्नेयास्त्र, शतघ्नी, बड़ी बन्दूक, तोब।
તોપખાનું (सं.) शस्त्रागार, युद्धकी सामग्रीका घर, तोपोंकी पल्टन।
તોપચી (सं.) तोपवाला।
તો પણ (अ.) अगरचे, यद्यपि, तोभी, तिसपरभी, तथापि, बावजूदेकी। [मार, गोलेकी वर्षा।
તોપનો મારો (सं.) तोपके गोलेकी
તોપ ફોડવી (क्रि.) तोप दागना, तोप चलना, तोप छोडना।
તોપ મારવી (क्रि.) देखो તોપ ફોડવી.
તોફા-ફે (वि.) उत्तम, उम्दा, श्रेष्ठ।

તોફાન (सं.) तूफान, आंधी, उद्दण्ड वायु, झक्कड, रौला, बळवा, झंझट, हळचळ, गड़बड़ी, बदी, नुकसान, बुराई, गर्ज्जना।

તોફાની (वि.) बुरा, दुष्ट, नुकसान पहुंचानेवाला।

તોબરો (सं.) घोड़े के मुंहपर बाध कर दाना डालकर खिलाने की थैली, फूला हुवा मुंह।

તોબા (वि.) पछतावा, पश्चाताप, अफसोस, खेद।

તોબા કરવી (क्रि.) तोबा करना, प्रायश्चित्त करना, पछतानाः।

તોબાતોબા (वि.) अफसोस सद-अफसोस, खेद अत्यन्त खेद।

તોય પણ (क्रि. वि.) देखो તોપણ।

તોર (सं) धूमधाम, दिखावा, गर्व, झपट, आक्रमण, खेल, भावना, दृष्टि, आकार, रूप, सनक, मनो-विकार।

તોરડી (सं.) वह मिट्टीका बर्तन जिसमे मृतककी रथीके आगे आगे अग्नि उसके दाहकर्म क लियेले-जाई जाती है।

તોરણ (सं) पत्तोकी बनीहुई झालर बन्दनवार, पत्तोकी माला।

તોરી (वि.) गर्व, घमण्ड, दर्प, (सं.) घोड़ा, अश्व।

તોરો (सं.) गुलदस्ता, फूलों का गुच्छा, मुकुट, पगडी का रेशमी चिल्ला या कोर, अगुवा।

તોલ (सं.) वजन, भार।

તોલઘટ (सं.) कम (वजनमें)

તોલડી (सं.) देखो તોરડી

તોલનાર (सं.) तोलनेवाला, तुलावट।

તોલદાર (वि.) भारी, वजनदार।

તોલવધ (सं.) वजनसे अधिक, वजनमे जियादः।

તે વે (क्रि वि.) समान, मानिन्द।

તોલો (सं.) १२ माशा, वृटिशके रुपये भर, एकतोला, ⅕ छटॉक।

તોશાખાનું (स.) सरकारी खजाना, राजकीय कोषागार।

તોસદાન (सं.) थैली, न्योली।

તોહોતેર (सं.) ७३ तिहत्तर, ३ और ७०। [कलङ्क, निंदा, अपयश।

તોહોમત (सं.) दोष, अपवाद, लगान

તોહોમત મુકવું (क्रि.) झूठाकलंक लगाना, दोष लगाना, अपयश देना।

તોળવું (क्रि) तोलना, वजन करना, सोचना, विचारना।

તોળા (सं.) वजन, बाट।

તોળાટ (सं.) तोलनेवाला, वजन करने वाला।

તોળામણુ (सं.) तोलनेका मजदूरी यातनख्वाह, तुलाई (कीमत)

त्यां (क्रि. वि.) वहां, उधर, तहाँ।
त्यांथी (क्रि. वि.) वहाँसे, उसजगहसे
त्यांलगी (क्रि. वि.) तक, तबतक, तबलग। [विरक्त, वैराग्य, छोड़।
त्याग (सं.) दान, वर्जन, उत्सर्ग,
त्यागकरवु (क्रि.) छोडना, त्यागदेना तजना, परित्याग करना।
त्यागी (सं.) वैरागी, जिसने संसार के आनन्दभोगोंको त्यागा हो।
त्यारथी (क्रि वि.) तबसे उस समयसे।
त्यारकडे (क्रि वि.) बादमें, उपरान्त पश्चात्, अनन्तर। [उसका।
त्यारनुं (क्रि. वि.) उसस्थानसे,
त्यारे (क्रि. वि) तब, उस समय।
त्यांलगी (क्रि. वि.) तक, तबतक उस समय तक, पर्य्यन्त।
त्यासुधी (क्रि. वि.) पूर्ववत्।
त्यासी (सं.) संख्या विशेष, ८३, तिरासी, अस्सी औरतीन।
त्यांहां (क्रि. वि.) वहाँ।
त्याहांनुं (क्रि. वि.) वहाँका, उनका,
त्वचा (स. खाल, चमडा, बक्कल चर्म, छाल।
त्वचारहित (वि.) चर्म हीन, बिना खालका, जिसपर चमड़ा नहो।
त्वरा (सं.) वेग, शीघ्रता, द्रुत, जल्दी।
त्वरित (क्रि. वि.) त्वरान्वित, जल्दीसे, तेजीसे, शीघ्रतासे।
त्रगणुं-णुं (वि.) तिगुना, त्रिगुण तिहोरा, तीनतर, १×३,
त्रणु (वि.) तीन, ३, त्रय।
त्रणुदेव (सं.) तयकल, त्रिदेव, तीन देवता, ब्रह्मा, विष्णु और महादेव।
त्रणसे (वि.) तीनसौ, ३००, त्रिशत।
त्रतिया (सं.) तृतिय देखो ती४,
त्रंबक (सं.) शिव, महादेव, शंकर।
त्रबाणु (सं) तबले की तर्ज का एक बड़ा ढोल विशेष। [चद्दर।
त्रबाणुं (सं) एक प्रकारका ताँबेका
त्रयी (सं) तीन अतरोंका राग, तान बाजोंका मेल, तीनकामेल, त्रिक, तिगड्डा, तीनका जुट्ट।
त्रयोदश (वि.) तेरह, तेरहवाँ।
त्रयोदशा (स.) मृत्यु का १३ वाँ दिन, मौतकी तेरहवी तिथि।
त्रयोदशी (सं.) तिथि विशेष, चान्द्रमासके पक्षकी १३ वीं तिथि, तेरस।
त्रवाडी (स) ब्राह्मणोंका उपनाम त्रिवेदी।
त्रांक-त्राक-ग (सं) तीर, किनारा तट, मौज, रस्सीका बट।
त्रांशु (सं.) दबाव, बरजोरी, बल, घरू मनुष्यकी हानि पहुँचाना।

ત્રાજવું-જુડી (सं.) कांटा तौल-
नेका, तुलायंत्र, तराजू, तखड़ी ।
ત્રાજુડ (सं.) अंगपर सूईसे गड्ढा
करके उसमें नीला लाल या किसी
प्रकारका रंग भरके चिन्हादि
बनाना, गुदना, गोदन । [याद्दट ।
ત્રાડ (सं.) चिल्लाहट, चीख, चिचि-
ત્રાણ (सं.) रक्षण, उद्धार करण,
निस्तार, उद्धार ।
ત્રાણું (वि.) ९३, तेरानवे, नब्बे
और ३ । [बचानेवाला, उद्धारक।
ત્રાતા (सं. रक्षक, त्राणकर्ता,
ત્રાપ મારવી (क्रि.) एकदमसे
पकड़लेना, झपट मारना ।
ત્રાપો (वि.) बेड़ा । [विशेष ।
ત્રાંબુ (सं.) तांबा, ताम्र, धातु-
ત્રાંબડી (सं.) पानी भरनेका पात्र।
ત્રાસ (सं.) त्रय, शंका, डर, दुःख।
ત્રાસ દેવો (क्रि.) सताना, दुःख
पहुंचाना, डराना, भयभीत करना।
ત્રાસકારક (सं.) दुखदायी, भयप्रद।
ત્રાસન (वि.) भयानक, डरावना।
ત્રાસું (वि.) तिर्छा, झुकाहुवा, टेढा,
ત્રાહી-હે-હી (विस्म.) रक्षाकरो,
बचावो, त्राण करो, दया करो।
ત્રાહિત (सं.) तीसरा पक्ष,
तीसरा समाज ।
ત્રિ (वि., तीन, संख्या विशेष, ३ ।
ત્રિકમ (सं) विष्णु, हरि ।
ત્રિકાંડ (वि.) जिसके तीन भाग
हो, तीन दर्जेवाला ।
ત્રિકાળ (सं.) तीनकाल, भूत,
वर्तमान और भविष्य, प्रात,
मध्यान्ह और संध्या ।
ત્રિકાળદર્શી (वि.) ऋषि, मुनि,
तीनों कालका ज्ञाता, सर्वज्ञानी ।
ત્રિકાળજ્ઞ (वि.) पूर्ववत्
ત્રિકાળવેત્તા (वि.) पूर्ववत्
ત્રિકાળજ્ઞાતા (वि.) पूर्ववत्
ત્રિકાળજ્ઞાન(सं.) तीनोंकालोंको जान-
लेनेकी विद्या, सर्वज्ञता, सर्वज्ञान ।
ત્રિકાળજ્ઞાની (वि.) देखो ત્રિકાળદર્શી
ત્રિકુટી (स.) भृकुटीके बीचकी
जगह, भौंके बीच की जगह ।
ત્રિકૂટ (वि) पर्वत विशेष, तीन
शिखरोंका पहाड़ । [विशिष्ट ।
ત્રિકોણ (सं.) तीनकोण, त्रिकोण
ત્રિકોણમિતિ (सं.) त्रिकोण वस्तु
ओंको मापनेकी विद्या ।
ત્રિકોણાકાર (वि.) तिकोना, तीनको
नोंकी शक्लका, त्रिकोण समान ।
ત્રિખંડ (वि.) त्रिभाग, तीन
जगह विभाजित ।
ત્રિગડો (सं) ऊंची बैठक ।
ત્રિગણ (सं.) तीन गण, देव मनुष्य
और राक्षस । [रज और तम।
ત્રિગુણ (सं) तीन गुण, सत्व,

ત્રિધાત (सं.) घन, छःपहला ।
ત્રિપરણુ (सं) तीन पादका ।
ત્રિજગ-ત્ (सं.) तीन जगत, स्वर्ग, नर्क, और पाताल ।
ત્રિજ્યા (सं.) व्यासार्ध रेखा, आधे विस्तारकी रेखा ।
ત્રિતાપ (सं.) तीन प्रकारके दुःख, आध्यामिक, आधिभौतिक, आधिदैविक । [सुरपति, शचीनाथ ।
ત્રિદશપતિ (सं) इन्द्र, देवराज,
ત્રિદંડી (सं.) त्रिदण्डधारी, यति, सन्यासी विशेष।
ત્રિપદ (सं.) पदत्रय, त्रिरेखायुक्त।
ત્રિપદભૂમિ (सं.) तीन कदम जमीन, तीन पैर पृथ्वी ।
ત્રિપાત (वि.) कडक, चटक ।
ત્રિપુટી (सं.) विज्ञ, भिज्ञ, ज्ञाता, किसा वस्तु का ज्ञान और तत्संबंधी अन्य बातों की जानकारी, गुमाश्त', अभिप्राय और काम ।
ત્રિપુંડ્ (सं.) आड़ी तीन रेखाओं का तिलक, शैवतिलक ।
ત્રિપુરુષ (सं.) तीन बड़े आदमी, बाप, दादा और पड़दादा ।
ત્રિફ્લા (सं) ऑवरा, हर्र और बहेड़ा, औषधि विशेष, हरड़ तीन भाग आँवले १२ भाग और बहेड़ा ६ भाग यथा " हरी तक्याखयो भागा धात्र्या द्वादश भाग काः । षड भागाश्च विभीतस्य त्रिफलैकं प्रकीर्तिता " ।
ત્રિભાગ (वि.) देखो त्रिखंड।
ત્રિભુવન (सं.) तीनलोक, स्वर्ग, मृत्यु और पाताल ।
ત્રિમાસિક-ખાડી (क्रि. वि.) तीन महीनेकी, त्रैमासिक ।
ત્રિમૂર્તિ (सं.) तीनदेव, ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र ।
ત્રિયા (सं.) स्त्री, औरत, पत्नी ।
ત્રિરાત્ર (सं.) तीन रात्रि और तीन दिन की अवधि ।
ત્રિવર્ગ (सं.) धर्म, अर्थ और काम, सत्व रज और तम । हानि लाभ और सम, धन, स्त्री और भूमि, जर, जोरु, जमी ।
ત્રિરાશી (सं.) त्रैराशिक, गणित, विशेष । [शिव, रुद्र ।
ત્રિલોચન (सं.) तीन नेत्र का,
ત્રિવળી (सं.) मनुष्य के या स्त्री के पेटमें तीन रेखाएं । [वतार ।
ત્રિવિક્રમ (सं.) विष्णु, वामनात्रिविधतप (सं.) तीन प्रकार का तप ।
ત્રિવિધતાપ (सं.) त्रिताप
ત્રિવિધનાયિકા (सं.) तीन प्रकार की स्त्री, स्त्रियों की तीन जातियां।

त्रिविध (वि.) तीन प्रकार, त्रिधा।
त्रिवेणी (सं.) गंगा, यमुना और सरस्वती का संयम, इडा पिंगला और सुषुम्णा।
त्रिशूल (सं.) तीन नोकों का भाला, महादेव का अस्त्र विशेष।
त्रीज (सं) देखो तीज।
त्रौड (सं.) दर्द, दु:ख।
त्रीस (सं.) तीस, त्रिश, ३०।
त्रीठवुं (क्रि.) खुश होना, प्रसन्न होना, हृष्ट होना, मुदित होना।
त्रेता (सं.) द्वितीय युग।
त्रेतायुग (सं.) द्वितीय युग जिसकी अवधि १२,९६,००० वर्षकी।
त्रेधा (स) तीन मार्ग, तीन रास्ते।
त्रेपन (वि.) ५३, सख्या विशेष, पचास और तीन। [तैयारी।
त्रेवड (सं.) प्रबन्ध, बन्दोबस्त,
त्रेवडुं (वि.) तीनबार, तीन प्रकार का। [त्रिमासिक।
त्रैमासिक-माही (स.) देखो
त्रैराशिक (सं) देखो त्रिराशी,
त्रैलोक्यनाथ (सं.) विश्वनाथ, तीनो लोकों के अधिपति।
त्रैलोक्य (स.) तीन लोक, स्वर्ग मर्त्य और पाताल।
त्रोडवु (क्रि.) तोडना, काटना बाँटना हिस्से करना, भाग करना।

त्यज (क्रि.) छोड़ना।
त्व (सं.) (पन) प्रदर्शक प्रत्यय जैसे लघु+त्व=छोटापन।
त्वगिंद्रिय (सं.) स्पर्शेन्द्रिय।
त्वचा (स.) चमड़ा चर्म, खाल।
त्वरा (सं) जल्दी, शीघ्रता, तेजी।

थ

थ-गुजराती वर्ण मालाका अठाईसवाँ अक्षर, १७ वाँ व्यंजन।
थइचुंकवुं (क्रि) समाप्त होना, खतम होना, पूर्ण होना नष्ट होना,
थइरहेवुं (क्रि.) पूर्ववत।
थइशकेतेवुं (वि) मुमकिन, संभावी होने क योग्य, संभव।
थकववु-काववुं (क्रि) थकना, थकाना, व्यथित करना।
थकी (उप.) से, वास्ते, कारणसे।
थट (स) ढेर, झुड, ठठ्ठ, भाड़।
थटमळवी (क्रि.) भीड होना।
थट्टा (सं.) हँसी दिल्लगी।
थड (सं.) धड, पेडी, सूंड पेंदा, तली, पौधा, जड, पाँव।
थडकवुं (क्रि.) कूदना, ताज्जुब करना, चकित होना, विस्मित होना भयातुर होना, ठिठकना, तुतलाना।
थडथड (क्रि. वि.) ठोकरों और घूसोंकीसी आवाज।

थडथड़ाट (सं.) जोरकी आवाज।
थडाथड (विस्म.) टक्कर, मर्मभेदी धपधप, धपधपाहट।
थडी (सं.) ढेर, मंज, समूह।
थडीकरवी (क्रि.) ढेर करना, घड़ी करना या जमाना।
थंड-डी (सं.) शीत, ठंड, जाड़ा।
थडक (सं.) शीतलता, ठडाई, ठंडक,
थंडपणे (क्रि. वि.) सावधानीसे, शान्तिसे, धीरजसे।
थंडगार (वि) अत्यंतशीत, बहुतही ठंडा, ठंडाबर्फ।
थंडाई (सं.) धीमापन, सीधापन, सुस्ती, सुशीलता, कोमलता मृदुता।
थडी (सं.) ठंडापना, शीतलता, ठंडक, शान्ति।
थडु (वि.) ठंडा, शान्त, धीमा, मंद स्तुस्त, शीतल, मृदु, कोमल।
थंडुंकरवुं-पाडवुं (क्रि.) ठंडा करना धीमा करना, शान्त करना।
थतुं (वि) अस्ति दशा, अवस्था।
थथरावयुं (क्रि.) डाटना, भलाबुरा कहना, झिड़कना धिक्कारना।
थथेडवुं (क्रि.) लीपना, छिड़कना, मोटा मोटा लेसना लपेटना।
थनार (क्रि. वि. होना,) होनेवाला, भविष्य। [चपत, रैपट।
थप्पड-थपाट-थापट (सं. चाँटा,
थप्पडमारवी (क्रि.) थपतमारना, चांटा देना, थाप मारना।
थभणी (सं.) रुपया, खजाना, धन, द्रव्य, पूंजी, खंभा।
थंभ (सं.) स्तंभ, खंभा, खंभ।
थंभवुं (क्रि.) ठहरना।
थयुं (क्रि.) हुवा, भया, हुआ।
थर (सं.) रंग या पलस्तर के समान, तह, क्यारी। [होना।
थरकवुं (क्रि.) डरना, भयभीत
थरथर (क्रि. वि.) कम्प, डगमग, हलचल, एक प्रकार का कम्प।
थरथरवुं (क्रि.) थर्राना, कांपना, कम्पित होना, धूजना, हिलना।
थरथराट (सं.) कम्प, थरथरी।
थरथरावयुं (क्रि.) घुड़काना, धमकाना, डांटना।
थरथरी (सं.) कंपकंपी, कम्प।
थरो (सं.) मैल, तलछट, गाद।
थवु (क्रि.) होना, होजाना, वाका होना, बीतना।
थळ (सं.) जगह, स्थान, स्थल।
थळी (सं.) औजार, हथियार, थली।
थांथाई (वि) सुस्ती, धीमापन।
थांथु-थो (वि.) मन्द, सुस्त, धीमा, ढीला, विलम्बी।

થાંભલો-ભલો (सं.) देखो थंभ ।

થાક (सं.) थकान, थकावट, आराम, विश्राम, सीमा, हद, अंत ।

થાક ખાવો (क्रि.) आराम करना विश्राम लेना, ठहरना, रुकना ।

થાકવું (क्रि.) थकना, हारना, श्रांत होना हार जाना, हाथ पैर आदि का शिथिल होना, अधिक परिश्रम से इन्द्रियों का अवश होना । [हारजाना ।

થાકીજવું (क्रि.) थकजाना,

થાકેલું (वि.) थकाहुवा, थकित, श्रांत । [तली, सीमा, खोज ।

થાગ (स.) पेंदा, सिरा, छोर,

થાગલાગવો (क्रि.) पहुँचना, पाना, पता लगना, गुनतारा लगना ।

થાઠ (सं.) ठाठ, धूम धाम, शान शौकत, रौनक, प्रताप, ऐश्वर्य ।

થાણુદાર-ણેદાર (सं.) कोतवाल, चौकी या स्टेशन का अफसर ।

થાણું (सं.) चौकी, कोतवाली, बड़ी चौकी ।

થાન (सं.) वस्त्र का लम्बा टुकड़ा, कीमती पत्थर, स्त्री के स्तन या छाती ।

થાનક (सं.) बैठक, निवास स्थान ।

થાપ (सं.) थप्पड़, तमाचा, चांटा, कीचें का फर्श, गारे गोबर का फर्श, भूल, गलती, अशुद्धता ।

થાપદેવી-મારવી (क्रि.) धोका देना, छलना, दगा देना, कपट करना, कीचड़ से मैला करना ।

થાપટ (सं.) थप्पड़, चपत, चांटा ।

થાપડવું (क्रि.) थप थपाना, थपियाना ।

થાપડી (सं.) थप्पी, करनी, कन्नी, कनी, थप थप करने की ।

થાપડો (सं.) जहाज पर खेप रखने का लकड़ी का तख्ता, दाल की रोटी । [पूंजी ।

થાપણ (सं.) भंडार, मूल धन,

થાપના (सं.) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा ।

થાપવુ (क्रि.) कीचड़ मे धब्बा लगाना, थापना, थपथपाना ।

થાપા કુંડી (सं.) मिट्टी का कूंडा ।

થાપી (सं.) थप्पी, कन्नी, थप-थप करने की ।

થાપો (सं.) जांघ, जंघा, पुट्ठा, कूल्हा, रीढ़, पीठ, कमर,

થાબડવું (क्रि.) थपथपाना ।

થાબડી (सं.) देखो थापडी ।

થાંભ (सं.) देखो थांभलो ।

થાંભલી (सं.) छोटा खंभा, खंभा ।

થાંભલો (सं.) स्तंभ, खंभ, खंभा, थंभा, मीनार ।

થાભલો (सं.) देखो थांभलो ।

થાય (कि.) हो, होवे, भव ।

થાર (सं.) देखो ઠાર ।

થાવર (सं.) स्थिर, कायम, मुकर्रर अचळ, ठहरा हुवा ।

થાવું (कि.) होना, (सं.) गिरवी, रहन, बन्धक । [परात ।

થાળ (स.) बड़ी थाली, थाळ,

થાળી (स.) थाली, गोल पात्र, भोजन करने का पात्र ।

થાળું (स.) थाला, कुंए या चक्की की परिधि । [थेंगला ।

થિગડું सं.) पैवन्द, जोड़ा, लत्ता,

થિંગડથાગડ (स.) चिथड़ा चिथड़ा, थेगला थेगली ।

થિગડું મારવું (कि.) पैवन्द लगाना, फटे कपड़े को पाती सीना।

થિરતા (सं.) स्थिरता, धैर्य्य, धीरज, सब्र ।

થી (उप०) से, अपेक्षा; बनिस्बत ।

થીજવું (कि.) जमजाना, जमना ।

થીર (सं.) स्थिर, अचल, कायम, शांन्ति, चुप, खामोशी ।

થુંક (स.) राल, मुंह का पानी ।

થુંકવું (कि.) थूकना, घृणा करना ।

થુંથું (विस्म०) छिः छिः । फिस, हुश, दूर हो, छिः । [संग्रह ।

થુંભડું (सं.) अन्न की बालों का

થુવર-વેર (सं.) थूहर नामक कंटीला पेड़, थुहर नामक झाड़ी, सेहुड़, सीज, सेहुण्ड ।

થૂથો (सं.) देखो ઠૂંચો ।

થૂંકું (सं.) भूसी, चोकर ।

થેકડી (स.) देखो ઠેકડી ।

થેલી (सं.) अनाज का थैला, अन्न का बोरा । [टिकिया ।

થેપલાં (सं.) मीठी रोटी या

થેપવું (कि.) भद्देपन से कीचड़ क दाग लगाना, थेपना ।

થેપાડું (सं.) देखो ઠેપાડું ।

થેલી (स.) थैली, झोली ।

થેલો (स.) थैला, झोला ।

થેકાર-થા (सं.) नृत्य और गान, नाचना गाना । [फुलन्दा, गठरी ।

થોક-ડો (सं.) गठ्ठा, बण्डल,

થોકબંધ (वि.) इकट्ठा ।

થોટ (सं.) चाटा, चपत, थप्पड़ ।

થોડું (वि) थोड़ा, अल्प, कम, न्यून ।

થોડુંક (वि.) थोड़ा सा, जरा सा ।

થોડુંઘણું (वि.) कमज्यादः, न्यूनाधिक, कमबहुत । [गिल्टी ।

થોથર (सं.) सूजन, फुलाव

थोथां (वि.) व्यर्थ, बेफायदा, खाली, तुच्छ, छोटा, हल्का, निस्सार ।
थोभवुं (क्रि.) ठहराना, पकड़ना, थामना, रोकना, इंतजार करना ।
थोभावबुं (क्रि.) ठहराना, रोकना आश्रय देना ।
थोभ (सं.) अंत, सिरा ।
थोभणुं (सं.) आश्रय, सहारा, खंभ, आड़, रोक, संभालनेवाला ।
थोभां-भियां (सं.) गलमुच्छे, गलगुच्छे ।
थोर (सं.) देखो थुवर
थोय (सं.) मौका, अवसर, गौं ।
थोथो (सं.) बदनका माँसयुक्त भाग, बदनका मोटा भाग ।

द

द-गुजराती वर्ण मालाका २६ वाँ अक्षर, अठारहवां व्यंजन। तवर्गका तीसरा अक्षर (वि.) देने वाला दाता, दानी ।
डंख (सं.) डंक, कटाहुवास्थान ।
डंखवुं (क्रि.) डसना, काटना, डंक मारना, विषैले जीवका काटना ।
दंग (वि.) चकित, विस्मित, अचंभित ।
दंगकरवुं (क्रि.) चकित करना, विस्मित करना ।
दंगाखोर (वि.) झगड़ालू, लड़ाका बलशाई, बागी, बखेड़िया ।
दंगो (सं.) झगड़ा, रौला, हुल्लड़, बलवा लड़ाई, फसाद, टंटा ।
दंगोकरवो (क्रि.) झगड़ा करना, उपद्रव करना, बलवा करना ।
दंड (सं.) डण्डा, छड़ी, जुर्माना, ४ हाथ कानाप, कसरत, विशेष ।
दंड कहाडवा (क्रि.) दण्ड निकालना दण्ड लगाना (कसरतकी क्रिया विशेष)
दंड पीलवा (क्रि.) पूर्ववत् ।
दंडवत् (सं.) साष्टाङ्ग प्रणाम्, औंधे पड़कर प्रणाम विशेष ।
दंडवतकरवुं (क्रि.) साष्टाङ्ग प्रणाम करना, नमस्कार करना, अभिवादन करना ।
दंडवुं (क्रि.) जुर्माना करना, सजादेना ।
दंडुको (सं.) छोटा सोटा, छोटा लठ्ठ, लाठी ।
दंडो (सं.) पूर्ववत् ।
दंडीलो (वि.) बुरा, दुष्ट ।
दंत (सं.) दाँत, दसना, रदन ।
दंतकथा (सं.) जबानी बात, कहावत गप्प, मौखिक बात, गढन्तबात ।
दंतचुर्ण (सं.) दाँतसाफ करनेका पाउडर, दंतमंजन ।

દંતધાવન (सं.) दन्तशुद्धि, दन्त-मार्जन, दंतकाष्ट, दतुवन। [बतीसी,
દંતપંક્તિ (सं) दाँतोंकी पाँति,
દંતપીડા (सं.) दंतशूल, दाँतोंका दर्द।
દંતવૈદ્ય (सं.) दाँत बनानेवाला, दाँतोंके रोगोंका वैद्य।
દંતાળુ (सं.) दाँतसे सम्बन्ध रखने-वाला, दंत्य, लृ तवर्गल, स, अक्षर।
દંતશૂળ (स.) देखो દતપીડા
દંતી (वि.) देखो દંતાળુ (स.) हाथी।
દંતુશળ (सं.) हाथीका दात।
દંતોષ્ઠ્ય (सं.) व अक्षर, जिसका सम्बन्ध दांत और ओठसे हो।
દંત્ય (वि.) दांत सम्बन्धी, दांतोसे सम्बन्ध रखनेवाला।
દંપતિ (सं.) पतिपत्नी, स्त्रीपुरुष।
દંભ (सं.) धोका, फरेब, शठता, छद्मवेश, पाखण्ड।
દંભી (वि,) फरेबी, धोकेबाज, पाखण्डी।
દંશ सं.) डाह, बैर, लाग, द्वेष, द्रोह, विरोध, देखो દંભ
દંશિત (वि.) डसाहुवा, ग्रसित, द्रोही द्वेषी, विरोधी।
દઇત-દૈત્ય (सं.) जिन्द, राक्षस, असुर, निशाचर, प्रेत।
દઈ (क्रि.) दो, देकरके, देसकना।
દક્ષણ (सं.) देखो દક્ષિણ
દક્ષ (वि.) प्रवीण, निपुण, पटु।
દક્ષણ (सं.) देखो દક્ષિણ
દક્ષણા (सं) धनदान, संस्कार, आदि उत्सवों पर याज्ञिको को जोभेट दीजाती है।
દક્ષણી (वि.) दाक्षणदिशा सम्बन्धी, दक्खिनी, दक्खिनका।
દક્ષતા (वि.) चतुरता, पटुता, नैपुण्य निपुणता।
દક્ષિણ (सं.) दक्षिण दिशा दक्खिन, जनूब, (वि) सीधा, दाहिना फुर्तीला,
દક્ષિણાયન (वि.) कर्करा शिर्से, सूर्यका बदलना, २२ जूनसे २२ दिसम्बर तकका समय जबकि सूर्यकी गति दक्षिण दिशाकी ओर होती है।
દખ (सं.) देखो દુઃખ
દખણા (सं.) देखो દક્ષણા
દખણી (वि) देखो દક્ષણી
દખણેણ (सं) दक्षिणी स्त्री।
દખમું-દોખમું (सं) छुपनेका दुर्ग, छुपनेका बुर्ज।
દખ્ખણ (सं.) दक्षिण, दक्खिन।
દખલ (सं.) रोक, टोक, अटकाव बाधा।
દગડ (सं) पत्थर, पाषाण, पाहन।

દગાઅવસુ (वि) आनाड़ी, उजड़ ।
દગડું (सं.) पत्थरया लकडीका छोटा टुकड़ाजो खंभेया म्याल (शहतार) रखाजाता है।
દગડો (सं.) देखो દગડ
દગદગો (सं.) शक, सन्देह, पशो पेश, दुब्धा, दुबिधा ।
દગલબાજ (वि.) विश्वासघाती, बेईमान, अधर्मी, छली, कपटी ।
દગલબાજી (सं.) छल, बेईमानी, अधार्मिकता, विश्वास घात ।
દગાખોર–બાજ (सं.) देखो દગલબાજ
દગો (सं.) धोका, कपट, छल ।
દગોકરવો (क्रि.) दगा करना, धोका देना, कपट करना, छल करना ।
દગ્ધ (वि.) दग्धै, जलाहुवा ।
દગ્ધા (सं.) अति दुःख ।
દર્જન (सं.) दर्जन, १२,
દઝાડવું (क्रि) जलाना, बालना ।
દટાવું (क्रि.) गाड़ना, भूमिमें दबाना।
દટ્ટો (सं.) डाट, आड, काग, कार्क,
દડ (सं) रेतीली जगह ।
દડકો (स.) ढेला, लौंदा ।
દડધો (सं.) मोटापात्र ।
દડદડ–ડાટ (क्रि. वि.) लगातार, बराबर ।
દડબ (सं.) ढेला, लौंदा ।
દડબડવું (क्रि.) घूमना, फिरना
દડાદાવ (सं.) खेलनेकी टेढी छड़ी, गाड़ी, बग्घी, खेल विशेष ।
દડી (सं.) छोटी गेंद।
દડીઓ (सं.) दोना, पत्तोंका प्याला पर्णपात्र, द्रोण ।
દડુક (क्रि. वि.) मन्दमन्द चालसे दोडाई। [दोना ।
દડુલી (सं.) छोटा पर्ण पात्र, छोटा
દડુલો (सं.) बड़ापलना ।
દડો (सं.) गेंद, कन्दुक. एक प्रकारका भोजन ।
દણ્ડ (सं.) लकड़का टुकड़ा जो गऊ केगले में बाधाजाता है।
દત્ત (वि.) दियाहुवा, प्रदत्त, कृतदान।
દત્તકપુત્ર (सं.) गोद लियाहुवा पुत्र, पोसपूत दत्तक ।
દત્તવિધાન (सं.) गोदलेनेका कार्य या उत्सव आदि, स्वीकृति संस्कार।
દદવું (क्रि.) देना, देडालना ।
દદા (सं.) दूसरोंके आनन्दके लिये किसी स्त्रीको प्राप्त कराने वाली, बीचमें पड़ना।
દદામું (सं.) युद्धकी बिगुलया भेरी, युद्धकी तुरही, ढोल, ।
દદુડો (सं.) ददोरा ।
દહિ (सं.) दधि, दही, छाछ, मठा,

દક્ષિણા (सं.) धन, द्रव्य, लक्ष्मी।
દધીઓત (सं.)विष, जहर, चन्द्रमा मक्खन। [दैनिक प्रवेश पुस्तक।
દધીઈ-નેથુ (सं.) रोजकी लेख पुस्तक,
દન (सं.) दिन, वासर, दिवस, दिवा, सूर्यज्योतिसे नियमित काल।
દનુજ (सं.) देखो દઈત
દપકામણુ (सं.) धमकी, डाट, घुड़की।
દપટ (सं.) अधिकता, बहुतायत, विशेषता।
દપટવું-ટાવવું (क्रि.) छुपाना, तेजीसे हाकना, जल्दीसे हाकना। [गठरी।
દપોટો (सं.) बोरा, थैला, बण्डल,
દફણાવવું (सं.) गाड़ना, दफनाना, जुड़ाना, मिलाना, खेना, डॉट लगाना।
દફતર (सं.) हिसाब की किताब, सरकारी कागज़ात, लेख्यपत्र, बस्ता, विद्यार्थियों का कागज पत्र स्लेट आदि सामान रखने का कपड़ा या थैला।
દફતરખાનું (सं.) सरकारी कागजपत्र रखने का स्थान, पुस्तकालय, लायब्रेरी।
દફતરદાર (सं.) एक ओहदा, दफ्तरदार नामक एक ओहदेदार।
દફતરદારી (सं.) दफ्तरदार का काम।
દફતરી (सं.) कागज पत्रोंको बचा-स्थान रखनेवाला, रिकार्डकीपर।
દફનાવવું (क्रि.) मट्टी देना, गाड़ना, छुपाना, गुप्त रखना।
દફેકરવું (क्रि.) मिटाना, दूर करना, अलग करना।
દફેદાર (सं.) देशी फौजी अफसरों का एक ओहदा। [पागल।
દફોળ-ળંદ (सं.) मूर्ख, शठ, जड़
દબકવું (क्रि.) दबना, वशीभूत होना, आधीन होना।
દબચી રાખવું (क्रि.) छुपाना, लुकाना, दुबकाना।
દબડાવવું (क्रि.) धमकाना, डाटना, घुड़कना, डराना।
દબદબો (स.) दिखावा, बड़प्पन, दबदबा, प्रताप, धूमधाम।
દબવું-આઇ જવું (क्रि.) दबना, आधीन होना, वशवर्ती होना।
દબાણુ (स.) धमकी, घुड़की, डाँट, दाव, (सदाचार विषयक) दबाव।
દબાવવું (क्रि.) दबना, धमकाना, डराना, घुड़कना।
દબી જવું (क्रि.) देखो દબાવવું
દબેલ (वि.) दबनेवाला, परवश, परतंत्र, वश हुवा। [खना।
દબોચવું (क्रि.) छुपाना, गुप्त र-

દમ (सं.) साँस, स्वाँस, जीवन, जीव सम्बन्धी बल, यक्ष्मा, दमा, शक्ति, पौरुष, ताकत, फूँक, मूल्य, जौहर, क्षण, पल । [दबाना ।
દમ આપવો (क्रि.) दम देना,
દમ કાઢવો (क्रि.) मारना, प्राण निकालना ।
દમખાવો-પકડવો-ધરવો (क्रि.) विश्राम लेना, धैर्य रखना, इंतजार करना, बाट जोहना, सब्र करना, ठहरना, दम लेना, सॉस लेना ।
દમ જવો (क्रि.) अंतिम स्वाँस लेना।
દમ જોવો (क्रि.) अपने बलकी परीक्षा करना, निजबल को आज़माना ।
દમ થવો (क्रि.) स्वास का रोग होना, दमे की बीमारी होना। [देना
દમ દેવો (क्रि.) धोका देना, दम
દમ નિકળવો (क्रि.) देखो દમજવો
દમ ભારવો (क्रि.) प्रतीक्षा करना, इंतजार करना ।
દમ મુકવો (क्रि.) साँस छोड़ना, प्राण निकालना, स्वाँस निकालना।
દમ રાખવો-પીસવો-ઘુટવો, ભાસ્વો, રૂંધવો (क्रि.) स्वाँस लेना बन्द होना या करना ।
દમ લેવો (क्रि.) आराम करना, विश्राम करना, दुःख देना, कष्ट देना । [सिक्का, ८ पैसा ।
દમડી (सं.) सबसे छोटा प्राचीन
દમડીમાર (वि.) तृण समान, तुच्छ ।
દમડીનું (वि.) निकम्मा, खोटा, व्यर्थ, गुणहीन, मूल्यहीन ।
દમણી (सं.) बैलोंकी छोटी बैल गाड़ी, दमनी, बैलोंकी बग्घी ।
દમણું (सं.) भारकस गाड़ी, बजन ढोनेवाली गाड़ी ।
દમદમાટ (सं.) चमक दमक, प्रकाश, ठाठ, दिखावा ।
દમન (सं.) विजय, पराजय, पीडा परिश्रम, दुःख ।
દમનો આજાર (सं.) दमे की बीमारी, यक्ष्मा रोग, राजयक्ष्मा ।
દમપર દમ (क्रि. वि.) बारम्बार, पुनः पुनः लगातारीसे ।
દમપર સુમાર (.सं.) छैला, बांका।
દમરો, ડમરો (सं.) एक खुशबूदार, पौदा विशेष ।
દમવાળું (वि.) हिम्मतवाला, साहसी, दमे रोगवाला, यक्ष्मा पीड़ित ।
દમવું (क्रि.) थकना, दुखी होना, सताना, दुख पहुंचाना ।

દમાક-ખ (सं.) बड़प्पन, ठाठ, धूमधाम दिखावा,

દમામ ભરેલું (वि.) रौनकदार, दैदीप्यमान, आडम्बरी।

દમાવવું (क्रि.) थकान, सताना।

દમીઅલ (वि.) दमे की बीमारीवाला।

દમી જવું (क्रि.) थकना।

દમેલ (वि.) थकित, थका हुवा।

દમોદમ (क्रि. वि.) दबावमे, श्रेष्ठतामें, बड़ाईमें, बराबरीमे, मुकाबिले मे, स्पर्धा में।

દયા (सं.) कृपा,; स्नेह, करुणा, अनुग्रह, रहम।

દયા આવવી (क्रि.) समवेदना होना, दिलमे करुणा होना।

દયા કરવી (क्रि.) कृपा करना, रहम करना, अनुग्रह करना।

દયાકર-નિધાન-નિધિ-સાગર (सं.) दयाशीळ, दयाळु, कृपावान, करणामय, रहीम ईश्वर,

દયાધર્મ (सं.) दया प्रदर्शक धर्म, हिन्दू धर्म, अहिंसा धर्म।

દયાપાત્ર (वि.) कृपापात्र, करुणायोग्य दीन दुखी।

દયામય (वि.) दया निधान, कृपानिधि। [दाया।

દયામાયા (सं.) कृपा, महरबानी,

દયામણું (वि.) देखो દયાપાત્ર

દયાયુકત-સમ્પન્ન (वि.) देखो દયામય

દયાવંત-વાન-ળુ (वि.) कृपालु, दयायुक्त, करुणायतन मिहरबान।

દર (सं.) भाव, मूल्य, गुफा, कन्दरा, सूराख, छिद्र (क्रि. वि.) एक, हरेक, प्रति (जिन्म) द्वारा, जरिया, से।

દરકાર (सं.) आवश्यकता, जरूरत, इच्छा, परवाह, सम्बन्ध, मतलब, गर्ज। [पत्र, मनोरथ, विचार।

દરખાસ-સ્ત (सं.) अर्जी, प्रार्थना

દરખાસ્ત કરવી (क्रि.) प्रार्थना करना, हिलाना, विचारना, मनोरथ करना।

દરગા-ધા (सं.) मस्ज़िद, देहली द्वार, थली, पीर का स्थान।

દરગુજર (सं.) धैर्य, सब्र, क्षमा, मुआफ़ी।

દરગુજર કરવું (क्रि.) धैर्य करना, सब्र करना, क्षमा करना।

દરજણ-જેણ (सं.) दर्जी की स्त्री।

દરજી (सं.) दर्जी वस्त्र सीनेवाला, कपड़ा सीनेवाला. एक जाति विशेष।

દરડ (सं.) देखो દડ

દરજ્જો-જ્જો (सं.) श्रेणी, क्लास, ओहदा, पद, पदवी।

દરદ (सं.) दुःख, दर्द, रोग, शोक, गुप्त अभिप्राय, छुपी मुराद। [कार।

દરદાવો (सं.) दावा, हक़, अधि-

દરદી (सं.) रोगी, दुखिया, बीमार, रुग्ण, अस्वस्थ।

દરપણુ (सं.) देखो દર્પણ।

દરબાર (सं.) राजसभा, कोर्ट, सभाभवन, राजा, न्यायालय।

દરબારી (सं.) दरबार का, दरबार सम्बन्धी, नीतिज्ञ।

દરભ (सं.) देखो દર્ભ।

દરમાયો (सं.) मासिक वेतन, महीने वार तनख्वाह, मासिक मजूरी।

દરમીઆન (उप०) मध्यमे, बीचमे।

દરરોજ (क्रि. वि.) नित्य, रोजमर्रह, दैनिक, प्रतिदिन, सदा।

દરવ (सं.) देखो દ્રવ્ય।

દરવંદ (सं.) नास्तिक, ईश्वर को न मानने वाला।

દરવાજો (सं.) फाटक, द्वार, मार्ग, दुआर, किवाड़, कपाट।

દરવાન (सं.) द्वारपाळ, द्वाररक्षक हलकारा, दूत। [साधु।

દરવેશ (सं.) योगी, फ़कीर,

દરશણીઉં (सं.) एक प्रकार की चूड़ी। [होना।

દરશવું (क्रि.) दिखाना, प्रकट

દરાખ (सं.) देखो દ્રાક્ષ।

દરાજ (सं.) दाद, दद्रु, चर्मरोग।

દરાઝ (सं.) पूर्ववत्।

દરિઆઈ (वि.) समुद्री, समुद्र, सम्बन्धी, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

દરિઆફ-ત (सं.) सोच, विचार, अटकल, अनुमान, कल्पना, ख्याल।

દરિઆવ (सं.) देखो દરિયો।

દરિદ્ર-તા-દશા (सं.) गरीबी, निर्धनता, कमी, घटी, न्यूनता, तंगी, विपत्ति।

દરિદ્રી (वि.) निर्धन, कंगाल, अतिदुखी, गरीब। [दरियाई।

દરિયાવની (वि.) सामुद्रिक,

દરિયો (सं.) समुद्र, उदधि, जल-निधि, सिंधु, सागर। [गार।

દરી (सं.) गुफ़ा, कन्दरा, मांद,

દરસ્ત (वि.) ठीक, उचित, दुरुस्त, योग्य, सही।

દરેક (क्रि. वि.) प्रत्येक, हरेक।

દરો-ભ (सं.) दूर्वा, दूब, एक प्रकार की घास विशेष, निरीक्षक।

દરોગો (सं.) दारोगा, निगरां, निरीक्षक, कारागाराधिपति, जेलर ।

દરોડો (सं.) लुटेरों के झुंड का आक्रमण, डाकुओं की पट्टी का हमला । [निर्दोष, अव्यंग ।

દરોબસ્ત (वि.) पूर्ण अपवाद रहित,

દર્દ (सं.) देखो દરદ ।

દર્દી (वि.) देखो દરદી ।

દર્દુર (सं.) मेंढक, दादुर, भेक, दर्दर ।

દર્પ (सं.) गर्व, अभिमान, अहङ्कार, घमण्ड, मान, आत्मश्लाघा ।

દર્પણ (सं.) रूप देखने का आधार, आदर्श, मुकुर, आरसी, शीशा ।

દર્ભ (सं.) कुशा, डाभ, दर्भ, कांश ।

દર્ભાસન (सं.) कुशासन, डाभ का बनाहुवा आसन । दर्भ की बैठक ।

દર્શક (वि.) दिखानेवाला देखने वाला, दर्शयिता, दर्शनकारक ।

દર્શન (सं.) अवलोकन, निरीक्षण, देख, देखना, नजर, नेत्र ।

દર્શનિક (वि.) परिणाम दर्शी, प्रमाणिक, उपपादक ।

દર્શાવવું (क्रि.) दरसाना, दिखाना ।

દર્શી (वि.) जो देखे, देखनेवाला ।

દલ (सं.) देखो દિલ ।

દલગીર (वि.) चिंतातुर, चिंतित, गमगीन, रंजीदा, शोकाकुल ।

દલગીર થવું (क्रि.) चिंतायुक्त होना, रंजीदा होना, शोकयुक्त होना । [मम ।

દલગીરી (सं.) रंज, शोक, खेद,

દલામું (सं.) देखो દહામું ।

દલાલ (सं.) एजेण्ट, आढतिया ।

દલાલી (सं.) दलाल का धन्धा, दलाल की मजदूरी ।

દલાલુ (सं.) पूर्ववत् ।

દલાસો (सं.) देखो દિલાસો ।

દલીલ (सं.) शास्त्रार्थ, तर्क, शंका, प्रमाण, बहस, बहाना, मुकदमा ।

દલ્લો (सं.) एकत्रित कोष, बटोरा हुवा खजाना ।

દવ (सं.) जंगल की भारी आग, दावानल, वनाग्नि, वनदाहा ।

દવાઈ (सं.) दवा, दारु, औषधि ।

દવાખાનું (सं.) औषधागार, अस्पताल, औषधालय, वैद्यगृह ।

દવાડ (सं.) देखो દવ ।

દંશ (सं.) देखो દંખ ।

દશ (सं.) दस, संख्या विशेष, १०

દશક (वि.) दस का समूह, दहाई ।

દશના (सं.) दांत, दंत, दसन ।

દશમું (वि.) दसवां ।

દશમુખો–વદ (सं.) रावण का नाम, दस मुंहवाला ।

દશાંશ (सं.) दशमलवभिन्न $\frac{1}{10}$, दसवां हिस्सा ।

દશા (सं.) हाल, हालत, अवस्था, गति, स्थिति, भाव, मृतक को दसवां दिन ।

દશાનન (सं.) दशंकठ, रावण ।

દશેંદ્રિય (सं.) दस इन्द्रियां कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय ।

દશસેર–શેરી–શેરો (सं.) वजन, १० शेर का वजन ।

દસ (सं.) देखो દશ

દસમ (सं) तिथि विशेष, दशमी ।

દસરા (सं.) देखो દસેરા ।

દસીવીસી (सं.) सफलता और असफलता, उन्नति और अवनति ।

દસેરા (सं.) विजया दशमी, आश्विन शुद्धा दशमी तिथि ।

દસ્કત (सं.) अक्षर, हस्तलिपि, हस्ताक्षर, दस्तखत ।

દસ્કો (सं.) दहाई ।

દસ્ત (सं.) अधिकार, हक, शक्ति जुल्लाब, रेचन।

દસ્તગીર (सं.) रक्षक, संरक्षक, पालक, बचाने वाला, सरपरस्त, मुरब्बी । [पराधिकार प्रवेश ।

દસ્તરાજી (सं.) अनधिकार प्रवेश,

દસ્તાન (सं.) मासिक धर्म, रज दर्शन. हाथों के माजे, दस्ताने ।

દસ્તાવેજ (सं.) लेख प्रमाण, तमस्सुक, टीप, मुचलका ।

દસ્તાવેજી પુરાવો (सं.) हस्तलिखित प्रमाण पत्र, लिखित साक्षी ।

દસ્તુર (सं.) रीति. चाल, रिवाज़, पारसी लोगोंका पुरोहित ।

દસ્તુરી (सं.) दस्तूरकी. फीस, शुल्क।

દસ્તો (सं.) मूसल, लोढा, बट्टा, मूठ, हत्था, कागजोंका दस्ता. २४ तावया लिखनपत्र ।

દહ (क्रि.) जलाके भस्म करना ।

દહન (सं.) जलन, दाह ।

દહી (सं.) दधि, दूधका विकार ।

દહીથરું (सं.) एक प्रकारकी टिकिया।

દહીવડું (सं.) एक प्रकारकी टिकिया जो दहीमें डुबोकर खाई जाती है। दही बड़ा ।

દળ (सं.) एक प्रकारकी मिठाई, शक्ति, फौज, सैन्य संग्रह, गूदा, मुटाई, भद्दापन । [नेकी, चक्की ।

દળણી (सं.) हाथकी चक्की, दल-

દળણું (सं.) पीसने के लिये तय्यार किया हुवा अन्न, पीसन ।
દળદર (सं.) देखो દરિદ્રતા
દળદાર (वि.) मोटा, घना, भद्दा, गूदे दार, मांसयुक्त ।
દળદ્રી (सं.) देखो દરિદ્રી
દળનાર (सं.) पीसने वाला, दलने वाला, पीसनहार।
દળવાદળ (सं.) कुहर, अंधाधुंध, सेना फौज, घनघटा, घोरघटा ।
દળવું (क्रि.) पीसना, दलना, कुचलना, आटा करना, चूरना ।
દળામણુ-ણી (सं.) दलवाई, पीसने की मजदूरी ।
દળાવું (क्रि.) दलाना, पिसाना ।
દાંડ (वि.) अचेत, असावधान, बेपरवाह, अविवाहित, बेव्याहा ।
દાંડાઈ (स.) अविचार, बेपरवाही अज्ञानता, दुष्टता ।
દાંડી (सं.) छड़ी, डण्डी, ढंढोरा, डुग्गी, मुनादी ।
દાંડીઓ (सं.) ढिंढोरा पीटने वाला डुग्गी फेरने वाला, छड़ी ।
દાંડો (सं.) मूढ, हत्था, मूसल, लोढा।
દાંત (सं.) देखो દંત
દાંતકકડાવવા (क्रि.) दांत पीसना ।
દાંતકરડવા (क्रि.) पराजय का बोध होना पराजय के समय दुःखावस्था में होना ।
દાંતકઢાવવા (क्रि.) हंसना, दांत पीसना ठोठी करना।
દાંતકોતરણી (सं.) दांतकुरेदनी, दांत साफ करनेकी सूईयासलाई ।
દાંતખીલી (सं.) दांतबन्द होना, मुहँका नखुलना ।
દાંતજડવા (क्रि.) दांत लगाना ।
દાંતતોડીપાડવા (क्रि.) दांत तोड़ डालना । [કકડાવવા
દાંત દેખાડવા (क्रि.) देखो દાંત
દાંતપીસવા (क्रि) देखोदांत કકડાવવા
દાંતફુટવા-આવવા (क्रि.) दांत निकलना, दांत आना, हिम्मत बांधना, साहस आना ।
દાંતરો-તેરું-તું (क्रि.) दांतला, जिसका एकया दो दांत होठों से बाहिर निकलाहो ।
દાંતવણ (सं.) दतुवन, दतौन, दतून दांत साफ करनेकी बुश, दंतमञ्जन।
દાંતિયાંકરવાં (क्रि.) देखो દાંતકકડાવવા
દાંતો (सं.) दांत, नोक, दांता, करारा, पाहियेका दांत।
દા (सं.) देखो દાવ (क्रि.) भेंट

देना, दानदेना, (वि.) जो देवे, देता है । [पिलानेवाली ।
દાઈ (सं.) धाय, धात्री, बच्चेको दूध
દાઈઅણુ (सं.) पूर्ववत्
દાક્તર (सं.) देखो ડાક્તર
દાખલ (वि.) पहुँचा, शामिल । घुसा, सम्मिलित, (उप.) ऐसा, जैसा मानिंद ।
દાખલ કરવું (क्रि.) पेशकरना, मिलाना, पहुँचाना, पैठने देना, नोट करना, लिखलेना ।
દાખલ થવું (क्रि.) प्रवेश करना।
દાખલા પુરાવા (सं.) लेखपत्र द्वारा साक्षी, प्रमाणिक, गवाही ।
દાખલા (सं.) सुबूत, प्रमाण, शास्त्रार्थ उदाहरण, मिसाल, दलील, वजह, दृष्टान्त, बहस।
દાખવવું (क्रि.) दिखलाना, प्रत्यक्ष करना, निकालना, ढूँढ निकालना, नोटिसमें लाना, दृष्टान्त देना, मिसाल देना ।
દાખવું (क्रि.) सूचित करना, बतलाना, समझाना । [दाहकर्म ।
દાગ (सं.) मृतक का अग्नि संस्कार,
દાગળી (सं.) पैबन्द, थिगरी ।
દાગળી ખસવી-ખસકવી (क्रि.) पागल होना, सिरीं होना ।
દાગીનો (सं.) आभूषण, अदद, पुलिन्दा, गठ्ठा । [स्पर्शज्ञान, कोष।
દાઝ-ઝ (सं.) समवेदना, सहानुभूति,
દાઝણ (सं.) जलन ।
દાઝવું (क्रि.) जलना, दुख उठाना, समदुखी होना । [मोटाई, घनत्व।
દાટ (सं.) बदी, नुकसान, बुराई,
દાટ વાળવો (क्रि.) नाश करना. बर्बाद करना, नष्ट करना, अकारथ करना ।
દાટવું (क्रि.) गाड़ना, जमीन में दबाना, दफनाना, छुपाना, गुप्त रखना । [सघन ।
દાટીવાળું (वि.) ससमूह, भीड़युक्त,
દાટો (सं.) देखो ડાટો
દાટો દેવો (क्रि.) बन्द करना, डाट लगाना, डट्टा देना । [विशेष ।
દાડમ-ડેમ (सं.) अनार, फल
દાડમછાલ (सं.) अनार का छिलका।
દાડમડી (सं.) अनार का पेड़।
દાડિઓ (सं.) मजदूर,काम करनेवाला।
દાડો (सं.) दिन, दिवा, वासर वार।
દાઢ (सं.) चौंढ़, पिछले दाँत, जबड़ा, जाड़, पीसनेवाला दांत ।
દાઢ આવવી (वि.) मसूढ़ों का सूजना।

દાઢ લાગવું—વળગવું (क्रि.) मुँह को स्वाद लगजाना, चाट पड़जाना, चसका पड़ना, लत लगजाना ।

દાઢમાં લેવું-રાખવું (क्रि.) दुश्मनी, करना, ईर्षा रखना, डाह करना ।

દાઢિઓ (सं.) देखो દાડીઓ

દાઢી (सं.) श्मश्रु, चिबुक, मुख के नीचे के ठुड्डी पर के बाल (क्रि. वि.) दैनिक,

દાઢું (सं.) बिना मुँडी हुई दाढ़ी ।

દાઢો (सं.) मासिक धर्म, रजस्राव ।

દાણ (सं.) कर, टेक्स,

દાણચોકી (सं.) वह मकान जहां कर सग्रह किया जाता है ।

દાણ ચોરી (सं.) महसूली माल को छुपाकर बिना महसूल दिये लेजाने का चोरी का काम, कर की चोरी ।

દાણા—કુણી (सं.) कण, अन्न, दाना, मणिया, गुरिया, मणिका ।

દાણા દાણ (सं.) तितर बितर, कण कण, बिखेर

દાણાદાર (वि.) बीजयुक्त, दानेदार, मोटा, खुरदरा ।

દાણાપાણી (सं.) अन्नोदक, अन्न जल जीविका रोगी ।

દાણાવાળો (सं.) अन्नविक्रेता, अनाज बेचने वाला ।

દાણી (सं.) कर इकठ्ठा करनेवाला।

દાણી (वि.) अधिकारी, न्याय संगत, यथोचित ।

દાણીઉં (सं.) काच के मोतियों का बना गलेमें पहिरने का जेवर।

દાણી ગણ (सं.) करद, कर देनेवाला, करदाता ।

દાણો (सं.) दाना, अन्न, अन्न, समान कोई गोल वस्तु, माला का मणिया, संख्या, तादाद ।

દાણો—ચારો (सं.) चारा, दाना, घास, पशु भोजन ।

દાણો પાણી (सं.) देखो દાણા પાણી

દાતણ (सं.) देखो દાંતવણ

દાતણ કરવું (क्रि.) मुख मार्जन करना, दांत साफ करना ।

દાતરડું (सं.) हँसिया दराती, दातली, घास काटने की दराँती ।

દાતાર (सं.) देनेवाला, दाता, दानी, दानशील, वदान्य ।

દાતાર (वि.) उदार, दयालु, हितैषी, सखी, धर्मात्मा, सीधा ।

દાબરી (सं.) मिट्टी की थाली (पात्र)।

દાબરીઉં (सं.) मिट्टी का पात्र विशेष।

દાઝેરો (सं.) किसी वस्तु को सहारा देने के लिये किसी पात्र मे डाली हुई पत्तियां या घास । भरा हुवा मुंह और फूले हुए गाल ।

દાદ (सं.) उलाहना, अभियोग, चिंता, न्याय, इन्साफ, उपाय, औषध । [देना औषधि करना ।

દાદ લેવી (सं.) उपाय करना, बदला

દાદખ્વાહ (सं.) अभियोक्ता।

દાદગર (सं.) सत्य न्यायकर्ता, ईश्वर।

દાદરબારી (सं.) सीढियो मे का झरोखा या किवाड़ा । झिलमिल ।

દાદરો (सं.) दादरा नामक गीत, नसेनी, जीना, सीढी, ताळे का एक हिस्सा ।

દાદર (सं.) देवता का लक्षण या नाम । [पर्य्यायवाची नाम।

દાદાર હોરમજ્દ (सं.) ईश्वर का

દાદી (सं.) वादी, मुद्दई, प्रमाता, बाप की माता, दादी, मातामह ।

દાદુર (सं.) भेक, मेंढक, दर्दर ।

દાદો (सं.) बाप का बाप, प्रपिता, पितामह । [विशेष ।

દાધર (सं.) दाद, दद्रु, चर्मरोग।

દાધવું (क्रि.) जलाना, दग्ध करना।

દાધારણ્યું-રંગ્યું-રીંગું (वि.) रूखा चिड़चिड़हा, उदास ।

દાધેલ (सं.) दग्ध, जलाहुवा, दागेल ।

દાન (सं.) पुण्यार्थ, धनत्याग, त्याग, वितरण, उत्सर्ग, भेट, उपहार ।

દાન કરવું (क्रि.) देना, त्यागना, दान देना, भेट करना ।

દાનગૃહ (सं.) दान करनेका गृह, जहां सदावर्त बटताहो, धर्मशाला ।

દાનત (सं) चित्त, दिल, ख्याल, निश्चय, विश्वास नजर, लीला ।

દાનતદારી(सं.) ईमानदारी, सचाई ।

દાનધર્મ(सं.) दानपुण्य,पुण्यकार्य ।

દાનપત્ર (सं) वृत्ति, दान लिप, दान की हुई वस्तुपर सम्प्रदानका स्वत्व बतलानेके लिये लेख ।

દાનપાત્ર (वि.)दानदेने योग्य व्यक्ति, दानके लिये उचित, देने योग्य, वह पात्र जिसमे दान डाला जावे ।

દાનવ (सं.) असुर, राक्षस जिन्न ।

દાનમંદિર-શાળા (सं.) देखो દાનગૃહ [ज्ञाता, अभिज्ञ ।

દાના (वि.) अनुभवी, बुद्धिमान,

દાનાઈ (सं) बुद्धिमत्ता, ज्ञान, बुद्धि, पूर्व विचार, सचाई ।

દાનાધ્યક્ષ-ધિકારી (सं) दान देने मे मुखिया, दान कुलमें मुख्यया अधिपति ।

દાનાર (वि.) अनुभवी, चतुर ।
દાની (सं.) दाता, देने वाला ।
દ નેશ્વભંદ (वि.) देखो દાનાવ
દાનો(सं.) देखो દાનાવ
દાપું (सं.) दावा, हक, अधिकार ।
દાબણુ (सं.) भय, डर, दाब ।
દાબડી (सं.) छोटीसी डिबिया, हुलास भरने को डिब्बी, डिब्बी ।
દાબડો (सं.) डब्बा, बक्स, पेटी ।
દાબણુ (सं.) वजन, दबानेकी वस्तु, पेक करनेकी सुई ।
દાબણી (सं.) दबानेकी, प्रेस ।
દાબદબાવ (सं.) भय, डर, खौफ ।
દાબવું (क्रि.) देखो ઢાબવું
દાબીરાખવું (क्रि.) दबारखना, छुपाये रहना, गुप्त रखना ।
દાભ (सं.) देखो દર્ભ
દામ (सं.) मूल्य, पैसा, कीमत, द्रव्य ।
દામણુ (सं) देखो ડામણુ दांवन ।
દામણી (सं.) एक प्रकारका आभूषण जिसे स्त्रियां कपालपर धारण करती हैं ।
દામણું (वि.) देखो દયામણું
દામની सं.) रस्सी, बिजुली, विद्युत् ।
દામનું (सं.) कीमती, मूल्यवान, बहुमूल्य । [नाम ।
દામોદર (सं.) श्री कृष्ण चन्द्रका एक

દાયક (सं.) देखो દાની
દાયકો(सं.) दसका योग, दहाई ।
દાયણુ (सं.) देखो દાઈ
દાયરો (सं) सभा, संपत्ति सम्मेलन ।
દાયી (सं.) देखो દાયક
દાર (वि.) द्रावक, ऋण चुकादेने के योग्य, रखने वाला. धरने वाला।
દારી (सं.) स्त्री, औरत, पत्नि, भार्या ।
દારી (वि.) व्यभिचार, जिनाकारी वेश्यागमन, छिनारा, जिना ।
દારિદ્ર (सं.) देखो દરિદ્ર
દારૂ (सं.) लक्कड़, शराब, मदिरा मद, गनपाउडर, बन्दुक भरनेका बारूद, पाउडर ।
દારૂહળદ (सं.) दारूहल्दी, औषधि विशेष, दारू हरिद्रा ।
દારૂકામ (सं.) आगया आग से भड़कने वाले पदार्थोंका कार्य, दारूका काम ।
દારૂખાનું (सं) शराब खाना, वह स्थान जहां बारूदका काम होता है ।
દારૂગોળો (सं.) लड़ाई का सामान, युद्धकी सामग्री, गोळा बारूद ।
દારૂડીઓ-બાજ (सं.) मद्यपी, मद्यप, शराबी, मदपीनेवाला ।
દારૂણુ (वि.) कठिन, घोर, कठोर असह्य, भयानक ।

દારૂબાજ (सं.) देखो દારૂડિઓ।

દારૂબાજી (सं.) शराबखोरी, मद्यपान।

દારોગો (सं.) देखो દારોગો।

દાવ(सं) खेल, पारी, नम्बर, चक्कर, दांव, उछाल, लोहेकी कुटाई जबतक किवह गर्म हो, मेल, जोड़, ऐन वक्त, दांवपेच।

દાલચિનિ (सं.) दारचीनी, दारू चीनी एक वृक्षकी छाल, दालचीनी।

દાવદી (सं.) एक प्रकारका पुष्प, गुल दाऊदी। [चालाकी।

દાવપેચ (सं.) घात, दांव, युक्ति

દાવર (सं.) धर्मिष्ठ, पुण्यात्मा।

દાવાદળ (सं.) आंधी, तूफान, झक्खड़, हलचल।

દાવાદુશ્મન (सं.) बैरी शत्रु, रिपु।

દાવાદુશ્મની (वि.) द्रोह, वैर, द्वेष शत्रुता, विरोध, रिपुता।

દાવાદાર (सं) वादी, मुद्दई, अधिकारी, दावा करनेवाला।

દાવાનળ-ગ્નિ (सं.) देखो દવ

દાવો (सं.) दावा, हक, अधिकार नामलेख, नालिश, मुकद्दमा।

દાવોકરવો (क्रि.) दावा करना, नालिश करना, अभियोग चलाना।

દાવોબાંધવો-દાખલકરવો (क्रि.) नालिश दायर करना, मुकद्दमा दाखिल करना।

દાસ (सं.) भृत्य, किंकर, सेवक, नौकर, गुलाम, अकिंचन, भक्त।

દાસપણું (सं.) सेवा, नौकरी, गुलामी। [ताबेदारी।

દાસત્વ (सं.) पूर्ववत् दासत्व,

દાસાનુદાસ (सं.) दासकाभीदास, सेवककाभीसेवक। [नौकरनी।

દાસી (सं.) टहलनी, बादी,

દાસીપુત્ર (सं.) दासीका बेटा, वर्णसंकर, दासीसे उत्पन्नपुत्र।

દાસ્તાન (सं.) किस्सा, कहानी, बयान।

દાસ્ય (सं.) दासत्व, गुलामी।

દાહ (सं.) जलन, जळादेनेवाली गर्मी।

દાહક (सं.) जलानेवाली, अग्नि, आग। (वि.) जोजलावे, जो भस्म करे।

દહાડી (क्रि. वि) दैनिक, रोज़ाना।

દહજવું (क्रि.) देखो દાઝવું

દહા (वि.) दस, दश, १०

દહાડ (सं.) देखो દાહ

દાઝ (वि.) जोशीघ्रही जल जावे, आगसे झटभड़क उठनेवाला पदार्थ।

દહાડો (सं.) दिन, दिवस, वार वासर, क्रियाकर्म, दाहविधि, प्रेत कर्म, समय।

દાહાડો સિધ્ધ'હરવના (क्रि.) यशवन्त होना, सफल मनोरथ होना, उन्नति होना।
દાહાડાનીચાલ (सं.) गर्दिश, प्रारब्धका प्रभाव, ग्रहदशाका फेर, दिनदशा, होनहार।
દાહાડાવાળી (वि.) गर्भवती, फलयुक्त।
દાહાડેદાહાડે (क्रि.) दिनो दिन, दिन प्रतिदिन, रोज़ रोज़, दिनबादिन।
દાહિત (वि.) ग्रग्ध, जलाहुवा।
દાળ (स) दाल, दलीहुई दाल।
દાળખાઉ (सं.) बनिया वैश्य।
દાળભાત (सं.) सादा भोजन, रूखा भोजन, दालरोटी।
દાળમ (सं.) देखो દાડમ
દાળમછાળ (सं.) अनारका छिलका पिसा हुवा और उसमें कई अन्य वस्तुएं भिळी हुई।
દાળમપાક (सं.) आनारके रस आदिसे तय्यार किया हुवा पाक।
દાળમી (सं) દાડમડી देखो
દાળિયા (सं.) चनेकी सिकी हुई दाल, चनेकी तली हुई दाल।
દાળિયો (सं.) दाल बेचनेवाला,
દિઅર (सं.) देवर, पतिका छोटा भाई।
દિક (सं.) देखो દિશા [क्षेपी।
દિકક (वि.) शंकित, हारा हुवा,
દિકક (सं) शक शुभा, संदेह,
દિકન (सं.) शंका, शक, शुबहा, उज्र, एतराज, आपत्ति, कठिनता।
દિકપાલ (सं.) दिशाओंके स्वामी दिक्पति, दशाध्यक्ष।
દિકરી (सं.) लड़की, पुत्री बेटी।
દિકરો (सं.) पुत्र, बेटा, लड़का,
દિકામાલી (सं.) डिकामाली, औषधि विषेश।
દિગંત (स.) दिग्मण्डल, चक्रवाल, दिशाओंकी परिधि।
દિગંતરેષા (सं.) आकाशवृत्त, आकाशकीरेखा या घेरा।
દિગંતર (सं.) आकाश, आस्मान।
દિગતલીટી (सं) देखो દિગંતરેષા।
દિગભૂઢ (वि.) चकित, विस्मित, स्तब्ध, पागलसा,
દિગંબર (सं.) विवस्त्र, वस्त्ररहित, नग्न, नंगा, शिवकानाम।
દિગર (क्रि. वि) अन्य, दूसरा, दीगर।
દિગરાય (सं.) देखो દિકપાલ
દિગંશ (सं.) ऊर्ध्वदिशा, शिरोबिन्दुसे क्षितिज तक वृत्तखण्ड।
દિગ્ગજ (सं.) बड़ा मोटा डील डौल [illegible], दिशाओं के हाथी।

दिग्गज आठ है, ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन, पुष्पदन्त, सार्वभौम और सुप्रतीक।

દિગ્વિજય (सं.) विद्या अथवा युद्धके द्वारा देश विजय।

દિગ્વિજયી (सं) विश्वजेता, सर्वत्र जयशील, देशजयी।

દિઠ-ઠ (क्रि. वि.) पर, प्रत्येक द्वारा।

દિંડા (सं.) जंगली पौदा।

દિણુંદ (सं.) सूर्य, सुरज रवि, दिनकर।

દિદ (सं) आँख, नेत्र, नयन, चक्षु,

દિદાર (सं.) सूरत, शक्ल, हालत, दशा, दर्शन,

દિધ (वि.) दियाहुवा, दत्त, प्रदत्त,

દિન (सं.) देखो દિવસ

દિનકર (सं) देखो દિણુંદ

દિનનિશ (क्रि.) रातदिन, अहर्निशि।

દિનમાન (सं.) सूर्योदय से सूर्यास्त, तकका समय, दिवसकाळ।

દિનરજની (सं.) देखो દિનનિશ

દિનાંત (सं.) संध्या, सायंकाळ।

દિનાર (सं.) स्वर्णमुद्रा, सोने का सिक्का। [व्याघ्र।

દિપડું-ડો (सं.) चीता, तेंदुवा,

દિપ્ત (सं.) प्रकाश, ज्योति चमक।

દિપવું (क्रि.) चमकना, प्रकाशित होना, योग्यहोना, शोभित होना।

દિપાવડું (सं.) सुंदर, मनोहर, रूपयुक्त, खूबसूरत।

દિબાચો (सं.) भूमिका, प्रस्तावना।

દિમાખ (सं.) देखो દિમાગ।

દિમાગ (सं.) अहंकार, गर्व, मस्तिष्क। [चतुर।

દિમાખદાર (सं.) बड़ा, घमंडी,

દિમાગી (वि.) पूर्ववत्।

દિમામ (सं.) ठाठ, धूमधाम।

દિલ (सं.) चित्त, मन, विचार, इच्छा, प्रेम, हृदय।

દિવેટી (सं.) एक प्रकार का उत्तम फूलवाला वस्त्र।

દિયર (सं.) देखो દિયેર।

દિલ ઉઠી જવું (क्रि.) चित्तभ्रम होना, चित्त अस्थिर होना।

દિલ ઉતારી નાખવું (क्रि.) प्रेम कम करदेना, स्नेह कम करना।

દિલખુલાસો (सं.) अपने दिलकी साफ साफ बातों का कथन।

દિલખુશ (सं.) प्रसन्न, हृष्ट, मुदित, तुष्ट।

દિલ ખુશ કરવું (क्रि.) चित्तप्रसन्न करना, मनखुश करना।

દિલ ખુશી (सं.) प्रसन्नता, हर्ष, मनकी मौज।

દિલ થવું (क्रि.) चाहना, दिल होना, इच्छा होना, ख्वाहिश करना।

દિલ લગાડવુ (क्रि.) प्रेम करना, ध्यान देना, सोचना, विचारना।

દિલગીર (सं.) रंजीदा, चिंतित, शोकाकुल, खेदित। [चिंता।

દિલગીરી (सं.) रंज, शोक, खेद,

દિલદાર (सं.) प्रेमी, अनुरागी, दिलवाला। [सच्ची मित्रता।

દિલદારી (सं.) घनिष्ठमैत्री,

દિલપસન-ચમન (वि.) मुआफिक़, पसन्दीदा, दिलपसन्द, रोचक। [प्यारा।

દિલપસંદ (वि., पूर्ववत्, मित्र,

દિલફરોજ (सं.) मनोहर, सुन्दर।

દિલભરોસો (सं.) विश्वास, यकीन।

દિલ લગાડવું (क्रि.) ध्यान देना, सोचना, विचारना, ख्याल करना।

દિલપાક (सं.) खरा, निष्कपट, सच्चा।

દિલબર (सं.) कोमल, हृदयी, मृदु हृदय का, प्यारा, प्रेमी।

દિલભર (सं.) पूर्ववत्, यार, आशना। [उत्सुकता।

દિલસોજ (वि.) अनुराग,

દિલસોજી (सं.) उत्साह, उद्योग।

દિલાવાર (सं.) वीर, बहादुर, साहसी। [साहस।

દિલાવરી (सं.) बहादुरी, वीरता,

દિલાસો (सं.) तसल्ली, धीरज, साहस।

દિલી (वि.) हार्दिक, सच्चा दिल का।

દિલોજાન (वि.) प्यारा, प्रेमी, हार्दिक, दिल और प्राण, मन और आत्मा। [मनसे, प्रेमसे।

દિલોજાનથી (क्रि.) सच्चे हृदयसे,

દિવટ (सं.) बत्ती, मसाला, पलीता।

દિવડું (सं.) आटे का दीपक, दीपक युक्त टिकिया। [रोज़।

દિવસ (सं.) दिन, वार, वासर,

દિવસ ગુજારો કરવો (क्रि.) दिन काटना, उमरटेर करना, किसी प्रकार दिन व्यतीत करना या गुज़र करना।

દિવાદાંડી (सं.) रोशनीघर, जिस में जहाज वालोंको रास्ता दिखाने के लिये ऊँचे पर रोशनी होती है।

દિવાન (सं.) दीवान, प्रधान मंत्री।

દિવાનખાનું (सं.) बैठक, श्रोता, या आगन्तुकों के लिये भवन।

દિવાનગી (सं.) पागलपन, मूर्खता।

દિવાનગીરી (सं.) मंत्री का काम, दीवान का कार्य।

દિવાનાપણું (सं.) पागलपन, बावलापन, सिड़ीपन, खब्त ।
દિવાની (वि.) देशी, दीवानी ।
દિવાનું (सं.) पागल, सिड़ी, सिरीं ।
દિવાની અદાલત (सं.) सिविल कोर्ट दीवानी का न्यायालय।
દિવાની કાયદો (सं.) सिविल ला, दीवानी कानून ।
દિયાબત્તી (सं.) चिरागबत्ती, दीपक और बत्ती ।
દિવાલ (सं.) दीवार, प्राचीर, भीत, घोड़ा, अश्व ।
દિવાલગીરી (सं.) दीवार पर लटकाने का दीपक। [संध्या ।
દિવાળખત (सं.) सा यं का ल,
દિવાસળી (सं.) अग्निशलाका, दियासलाई, आगकाड़ी, माचिस ।
દિવાસો (स.) आषाढी अमावस्या आषाढ की ३० वीं तिथि ।
દિવાળી (सं.) वर्ष का अन्तिम दिन, दीपमालिका, कार्तिकी अमावास ।
દિવાળીઓ (सं.) दिवालिया, मुफलिस, दरिद्र, अतिव्ययी ।
દિવાળું (सं.) दिवाला, अतिव्यय।
દિવાળું કાઢવું (क्रि.) दिवाला निकाला, गिरना ।
દિવી (सं.) दिवट, दिया रखने की तिपाई, दीपक रखने की स्टैंड ।
દિવેટ (स.) देखो દિવટ ।
દિવેટી (सं.) देखो દિમેટી ।
દિવેલ (सं.) रेंडी का तेल, अंडी का तेल । [अरंडी के बीज।
દિવેલી (सं.) अंडीकेबीज,
દિવેલો (सं.) अरण्डवृक्ष, एरण्डका पेड़ । [मनोज्ञ, स्वर्गीय।
દિવ્ય (वि.) सुंदर, मनोहर,
દિવ્યપાદુકા (सं.) पवित्रखड़ाऊं, पवित्रपादुका ।
દિવ્ય ચક્ષુ-દૃષ્ટિ (सं.) ज्ञानचक्षु, अलौकिकज्ञानसम्पन्न, सर्वज्ञ ।
દિવ્ય દંતી (सं.) सुन्दर, और साफ दात वाली स्त्री । चारु दसना ।
દિવ્યદેહ (सं.) पवित्र शरीर, स्वर्गीय आत्मा ।
દિવ્યરસ (सं.) पारा, पारद।
દિવ્યરૂપ-સ્વરૂપ (सं.) पवित्ररूप, दर्शनी रूप ।
દિવ્યલોક (सं.) स्वर्ग, वैकुंठ, बहिश्त ।
દિવ્યજ્ઞાન (सं.) ब्रह्मज्ञान, उज्ज्वलज्ञान, अलौकिकज्ञान ।
દિશ-શા (सं.) दिक, पूर्वआदि-दसदिशाएं, ओर बाजू, तरफ ।
દિશાએ જવું (क्रि.) पखामाजाना, दस्तजाना, मलोत्सर्ग करना ।

દિસતું (वि.) दृश्य, जो दिखे, दिखता हुआ ।

દિસવું (क्रि.) दिखना मालुम होना।

દિક્ષા (सं.) भजन, पूजन, उपदेश, दीक्षा ।

દિક્ષા આપવી (क्रि.) धर्मोपदेश-देना, मंत्रोपदेश देना, दीक्षादेना ।

દી (सं.) दिन, वासर, वार।

દીએર (नं.) देखो દિઅર ।

દીક્ષિત (सं.) उपदिष्ट, गृहीतमंत्र, मंत्रित, भजन में प्रवृत्त, दीक्षित (पदवी)

દીઠ (क्रि. वि.) देखो દિટ

દીઠે (क्रि. वि.) देखनेसे, दृष्टिसे ।

દીઠું (क्रि.) देखा, समझा, सोचा।

દીધ-ધું (क्रि.) दिया, भेट किया।

દીન (सं.) गरीब, दरिद्र, नम्र, निरन्न, म्लान, दुखी, मुस्लमानीमत।

દીનડકો-જગાડવો (क्रि.) धर्म के नाम पर या धार्मिक कृत्य पर मुसलमानों द्वारा झगड़ाया दंगा उठना ।

દીનતા (सं.) दारिद्र्य, गरीबी, दुःख, आधीनता ।

દીનદયાળ (वि.) कृपालु, दीनपालक दीनोंपर दया करने वाला, दुखियोंकादुःखनाशक, ईश्वर ।

દીનદાર (वि.) मुसलमानों का तपस्वी या भक्त ।

દીનદારી (सं.) तप, भक्ति,

દીનદુનિયા (सं.) संसार, विश्व, जगत्, सृष्टि, भूमण्डळ, ।

દીનપણું (सं.) दीनता, नम्रता।

દીનાનાથ (सं.) दीनों का स्वामी, दीन प्रतिपाळ, ईश्वर, प्रभु ।

દીનબંધુ (सं) गरीबोंको भाइयों, समान मानने वाळा, परमात्मा ।

દીનવંદન (सं.) नम्रतायुक्त प्रणाम, नम्रनिवेदन, नम्रदंडवत ।

દીનવાણી (सं.) दीन भाषण, नम्र प्रार्थना, नम्रता पूर्वक अर्जी ।

દીનસ્વર (सं.) नम्र और धीमी आवाज, मृदुस्वर ।

દીનાર (सं) स्वर्णमुद्रा, सोनेका सिक्का, दीनार ।

દીનોદ્ધાર (सं.) दीनरक्षा, दीनों का उद्धार, दीनों का बचाव ।

દીપક (सं.) प्रकाश, द्योतक, लेम्प चिराग़, दीवा, रोशनी ।

દીપ કલ્યાણ (सं.) राग विशेष।

દીપગૃહ (सं.) देखो દિવાદાંડી

દીપડું (सं.) देखो દિપડું

દીપ દર્શન (सं.) दीपककी वन्दना जब कि वह जलाया जावे।

દીપવવું (क्रि.) जलाना, चमकाना प्रकाश करना, चौंधियाना सुंदर बनाना ।

દીપવૃક્ષ (सं.) झाड या फानूस जिस में मोमबत्तियाँ दीपक जलाये जावे। झाड़, फानूस, बिल्लौरी झाड।

દીપમાળ (सं.) दीपको की पंक्ति, दीपोकी कतार या पाँति ।

દીપવું (क्रि) देखो દિપવું

દીપાવવું (क्रि.) प्रकाशित कराना, जलवाना, चमकाना, खूबसूरत बनाना।

દીપાવળી (सं) जगमगाहट, रोशनी प्रकाश, दिवाळीका उत्सव।

દીપાવું (क्रि.) चौंधना, चुधियाना।

દીપાવડું (वि.) मनोहर, सुन्दर।

દીપિકા (सं.) दीपककी तिपाई या बैठक।

દીપોત્સવ-ત્સવ (स) वह त्योहार जिसमें रोशनी हो, दिवाली, दीपमालिका।

દીપ્ત (वि.) ज्वलित, प्रकाशित, दग्ध, निशित, उग्र, चण्ड।

દીપ્તિ (सं.) प्रकाश, रोशनी, उजाला, शोभा, प्रभा, द्युति सुन्दरता। [स्पिक टक्कर।

દીબો (स.) अचानक धक्का, आक-

દીર્ઘ (वि.) लम्बा, बड़ा, आयत उच्च, उत्तुंग, लम्बा चौड़ा।

દીર્ઘકર્ણુ (सं. बकरी, गधा, कान जिस के बड़े हों, लम्बकर्ण।

દીર્ઘદર્શી (वि) दूरदर्शी, पारदर्शी, दूरन्देशी, आगे की सोचने वाला।

દીર્ઘદૃષ્ટિ (सं.) दिव्य दृष्टि, अग्रदृष्टि बहुज्ञ, प्रवीण।

દીર્ઘદ્વેષી (वि.) निर्दयी, कठोर, संगदिल, बेरहम।

દીર્ઘ નયનવાળી (वि.) विशाल नेत्र वाली, सुन्दर आखोंवाली।

દીર્ઘ વતુ લ (सं.) अडाकार वृत्त, ग्रहवृत्त, वह मार्ग जिस मे ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं।

દીર્ઘસૂત્ર (सं.) लम्बा तार, लम्बा धागा, आलस।

દીર્ઘ સ્વર (स.) द्विमात्रिक स्वर, आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अं. दीर्घ शब्द, लम्बी आवाज।

દીર્ઘાયુ (वि.) चिरायु, चिरजीवी, दीर्घ जीवी, परमायु, बड़ी उम्र।

દીર્ઘાયુષ્ય (सं.) देखो દીર્ઘાયુ।

દીલ (सं.) देखो દિન।

દીવાસળી (सं.) देखो દિવાસળી।

દીવી (सं.) देखो દીપેકા।

દીવો (सं.) देखो દીપક-કુળ દીપક, वंश में होनहार, कुल कमल।

દીસ (सं.) दिन, दिवस, बासर, वार, रोज, तिथि।

દીસવું (क्रि.) देखो हिसवुं ।
દુંટી (सं) नाभि, सूँडी, ढूँटी ।
દુંડ (सं.) वृक्ष की शाखा, पत्र हीन पेड़ी, ठूंठ, बड़ा पेड़, तोंद ।
દુંડિઉં (सं.) छोटा ढेंगा या पट्टा ।
દુંડિઓ (सं.) देखो ડાંડીઓ ।
દુંડી (सं.) देखो ડાંડી ।
દુંડું (सं.) देखो ડુંડું ।
દુણવું (क्रि.) आधे के लगभग जला हुवा होना, अर्द्धदग्ध ।
દુણાયલું (वि.) अधजला, आधा जला हुवा, अर्द्धदग्ध ।
દુ (वि.) दो, २, संख्या विशेष ।
દુઆ (सं.) देखो દુવા ।
દુઆગીર-ગો (सं.) शुभेच्छुक, शुभचिंतक, हितचिंतक ।
દુકરું (सं.) बाळक, बच्चा ।
દુકાન (सं.) हाट, बाजार, जहां सौदा रखा और बेचा जाता है ।
દુકાનદાર (सं.) हाटवाला, दुकानवाला, विक्रेता ।
દુકાનદારી (सं.) दूकानदार का काम सौदा रखने और बेचनका धन्धा ।
દુકાની (सं.) दोपाई, दो कान और दाढी ढकने के काम का वस्त्र ।
દુકાળ (सं.) दुर्भिक्ष, दुष्काल, काळ, महँगी, कहत । [प्रकार ।
દુક્કલ (सं.) तास के खेलमें एक
દુકૂલ (सं.) अत्युत्तम रेशमी वस्त्र. सुन्दर मूल्यवान, रेशमी कपड़े ।
દુકૃત-ષ્કૃત (सं.) अपराध, पाप, कुसूर, गुनाह, अघ ।
દુખદ-દાઈ (वि.) कष्टप्रद, हानिप्रद, दुख देनेवाला, क्लेषप्रद ।
દુઃખ-ખું (सं.) दुःख, क्लेश, कष्ट तकलीफ, दर्द, रंज, शोक, रोग, कठिनता, चोट, पीड़ा, व्यथा, संताप, संभव मनकाक्षोम, आपत्ति ।
દુઃખ આપવું-દેવું (क्रि.) कष्ट देना, तकलीफ देना, सताना ।
દુઃખ થવું (क्रि.) दुःख होना, व्यथा होना, कष्ट होना, क्लेश होना ।
દુઃખ દેવું (क्रि.) देखो દુઃખઆપવું
દુઃખ પામવું (क्रि.) दुःखी होना, व्यथित होना, क्लेशित होना ।
દુઃખકારક-દાયક (वि.) दुःखद, क्लेशद, क्लेशकारी, दुःखदायी दुःखदाता । [देनेवाला, क्लेश देनेवाला।
દુઃખદાઈ (वि.) पूर्ववत्, दुःख
દુઃખપ્રદ (वि.) पूर्ववत्
દુઃખ ભરેલું (वि.) दुःख पूर्ण,दर्दी, दुःखान्वित, दुखिया, क्लेशभाक्,

દુઃખભંજન (सं.) दुःख नाशक, परमार्थी, सर्वप्रिय, खलक दोस्त।
દુઃખવવું (क्रि.) दुखाना, सताना व्यथित करना, चोट पहुँचाना।
દુઃખવું-ખાવું (क्रि.) दुखना दर्द होना, पीडा होना।
દુઃખહરણ (सं.) दुःखनाश, दुःख-मोचन, संकट हरण। [क्लेश।
દુઃખાવ-વો (सं.) दर्द, पीड़ा,
દુઃખી-ખિત-આરો-યુ (वि.) व्यथित, दुखी, पीड़ित, दर्दयुक्त, चोटीला, संतापित, दुखयुक्त, दुखियारा, दुःखान्वित, क्लेशयुक्त, रोगी चिंतातुर, अस्वस्थ।
દુઃખીજીવ (सं.) दुखितजीव, व्यथितव्यक्ति, दुखी प्राणी।
દુઃખી થવું (क्रि.) देखो દુઃખ પામવું
દુઃખેપાપે (क्रि. वि.) बड़े परिश्रमके साथ, बड़ी मिहनतसे बेनसीबीसे, कम्बख्तीसे, निकम्मापनसे।
દુગન (सं.) जल्दीका गान।
દુગ્ધ (सं.) दूध, पय क्षीर, स्तन्य।
દુગ્ધા (सं.) झमेला, पीड़ा, कष्ट।
દુજું (वि.) दूसरा, अन्य, द्वितीय, दीगर।
દુઝણી-તી (वि.) दुधारू दूधवाली, दुग्धप्रद, क्षीरप्रद, क्षीरस्तनी।

દુઝવું (क्रि.) दुहना, दूध निकालना।
દુઝાણું (सं.) दूध देनेवाला पशु।
દુણાવું (क्रि.) झुराना, लटजाना, झुलसजाना, कुम्हलाना, अधजलासा होजाना।
દુંદ (सं.) लम्बोदर, बड़ापेट, तोंद।
દુંદાળો (सं.) बड़े पेटवाला, स्थूलोदर, गणेशजी, गणपति।
દુંડો (सं.) पृष्टोका बंडल, सफो या वर्कोंकी गठरी या पुलन्दा।
દુત (सं.) देखो દૂત
દુદડા (सं.) छोटे जूते, छोटी जूतियां।
દુધ (सं.) देखो દૂધ
દુધપાક (सं.) दूधकी बनी हुई वस्तु, दूधद्वाराबनी वस्तु, चांवल शक्कर दूध आदि मसालोंका मिश्रण, खीर।
દુધભાઇ (सं.) कोका भाई, दुग्ध-बंधु।
દુધવાળો (सं.) ग्वाला, ग्वार, घोसी, दूधबेचनेवाला।
દુધવાળી (सं.) ग्वालिन, घोसिन, दूधवालेकी स्त्री, दूध बेचनेवाली।
દુધારૂ (वि.) दो धार की, दोनों ओर नोंक वाली, दोनों तरफ जिसे धार हो।
દુધાળ (वि.) दुधारु, दूध देनेवाली।

દુધિયાં દાંત (सं०) दूध के दांत, बचपन के दांत। [तुम्बी।
દુધી (सं) सफेद कद्दु, लौकी
દુધેલ (वि.) देखो દુધાળ।
દુનિયા (सं) विश्व, जगत, संसार, मानवसृष्टि, मानव जाति, सृष्टि।
દુનિયા દોરંગી —परिवर्तन शील संसार, दोरंग की दुनिया।
દુનિયાદારી (स.) सांसारिक संबंध, संसार से साधारण सम्बन्ध।
દુનિયાઇ-દાર (वि.) सासारिक, दुनियावी, ससार, सम्बन्धी, गृहस्थी।
દુંદુભિ (सं.) नगारा, डंका, दुंदुभी धौसा। [द्विगुण।
દુપટ (वि.) दुहरा, दोलड़ा,
દુપટ્ટો (सं.) ओढने का चदर, वस्त्र विशेष, रूमाल, कन्धे पर डालने का वस्त्र, दुपट्टा।
દુપ્પટ (सं.) देखो દુપટ।
દુબળી (सं.) भील जाति की स्त्री।
દુબળાઇ (सं.) कृषता, दुबलापन, निर्बलता, पतलापन, कमजोरी।
દુબળાપણું (सं.) पूर्ववत्
દુબળું (सं.) कृष, दुर्बल, पतला, दुबला, निर्बल।
દુબળો (सं.) मजदूर जातिका मनुष्य, मजदूर।
દુભગુ (सं.) कुम्हलाहट, बरबादी, उदासीनता।
દુભવું-ભાવું (क्रि.) सताना, दुख पहुंचाना, खिझाना, क्लेशदेना।
દુભાષિયો (सं) उल्था या तर्जुमा करनेवाला, दोभाषा जाननेवाला।
દુમ (स.) पूंछ, पुच्छ, लाङ्गुल।
દુમચી (सं.) घोड़ेकी दुमची, चमड़ेका थैड़ा जिसमें तमाखु अफीम आदि वस्तुऐं रखीजाती हैं।
દુમાર-રો (सं) दो ओर से आक्रमण, दुतरफा धावा, दुब्धा, चिंता।
દુમાસ (सं) एक प्रकारका वस्त्र।
દુરંદેશો (स.) चौकसी, रक्षा, अग्र दृष्टि, पूर्व दृष्टि, पूर्व विचार।
દુરબીન (सं.) दूर वीक्षण यंत्र, दीर्घ दर्शक काच।
દુરસ-સ્ત (वि.) ठीक, योग्य, उाचत, सही, सहीसलामत, शुद्ध, मुनासिब, ध्वनि, शब्द, (क्रि. वि) अच्छा, उत्तम।
દુરસ્ત કરવું (क्रि.) ठीक करना, सुधारना, बनाना, मरम्मत करना।
દુરાગ્રહ (सं) हठ, जिद्द, व्यर्थका आग्रह, सरकशी, निन्दित हठ।
દુરાચરણ (सं.) कुव्यवहार, विरुद्धाचरण, कुनीति, कदाचार।
દુરાચાર (सं.) पूर्ववत्

દુરાચારી (वि.) अन्यायी, दुःशील लम्पट, क्रूर, उपद्रवी ।

દુરાત્મા (सं.) पापात्मा, निर्दय, दुष्ट, पापी, क्रूर, उपद्रवी ।

દુરિજન (सं.) देखो દુર્જન

દુર્ગ (सं.) गढ, कोट, किला, गढी।

દુર્ગંધ (सं.) दुष्टगन्ध, बुरीबास बदबू, सडॉद, दुर्गन्धि ।

દુર્ગતિ (सं.) दुर्दशा, कुगति, बुरी हालत, दुरावस्था, बुरा अवस्था, विपत्ति, दरिद्रता ।

દુર્ગંધ આવવી (कि.) बदबूआना, बुरीबास आना, सडादआना ।

દુર્ગંધી (वि.) कुबास, बदबू, सडॉद।

દુર્ગમન્મ્ય (वि.) कष्टगम्य दुःखमे जाने योग्य, आघट, बाहट, वीरान।

દુર્ગા (सं.) देवी, शिवा, भगवती, आद्याशक्ति, हिमतनया ।

દુર્ગાચકલી (सं.) एक प्रकार की छोटी कालीचिड़िया।

દુર્ગુણ (सं.) अवगुण, ऐब।

દુર્ગુણી (वि.) ऐबी, गुणहीन, अवगुणी, दुष्ट, नीच ।

દુર્ઘટ (वि.) कष्ट साध्य, दुःसाध्य, कठिन, कठोर, कष्टप्रद, अघट ।

દુર્ઘટતા (सं.) कठिनाई, कठोरता, रोक, आड़, बेकाबू, अजय, अलंघनीय ।

દુર્જન (सं.) क्रूर, दुष्ट, खल, कुत्सित आचारवाला, अधम, नीच, निद्य मनुष्य, बुरा आदमी ।

દુર્જનતા (सं.) क्रूरता, दुष्टता, अधमता, नीचता कमीनापन ।

દુર્જય (वि.) दुःखसे जीतनेयोग्य, अजेय, जो जीता न जा सके ।

દુર્જયતા (सं.) अजयता ।

દુર્જાત (वि.) दुष्ट, बुरा, निकम्मा, चाण्डाल, नीच, जघन्य ।

દુર્દર્શ (वि.) भयप्रद, भयानक ।

દુર્દશા (सं.) दुर्गति, विपत्ति, हीन अवस्था, बुरी हालत, कुदशा ।

દુર્દર્શી (वि.) देखो દીર્ઘદર્શી

દુર્બોધ (वि.) कुशिक्षा, बुरा शिक्षण।

દુર્દેવ (सं.) दुर्भाग्य, कुभाग्य, अभाग, बदकिस्मत, विधिवामता ।

દુર્બળ (वि.) कमजोर, निर्बल, हीन, अशक्त, गरीब, दीन, निधन ।

દુર્બળતા (सं.) अशक्तता, निर्बलता, कमजोरी, गरीबी ।

દુર્ભાન (सं.) देखो દુરભીન

દુર્બુદ્ધિ (सं.) बुरे विचार, नीच बुद्धि, कुविचार, द्वेष, द्रोह मूर्खता ।

દુર્ભાગ્ય (सं.) दुर दृष्ट, अभाग्य, मंदभाग्य, बदकिस्मत ।

દુર્ભાવ (सं.) दुष्टभाव, दुष्ट अभिप्राय, निन्दित स्वभाव, घृणा, द्वेष।

દુર્ભાષણ (सं.) निर्दय वाक्य, गाली, बुरा बोल, असंस्कृत भाषण।

દુર્ભિક્ષ (सं.) काल, अकाल, कुसमय, महंगी, कहत, महर्घ ।

દુર્મતિ (वि.) कुबुद्धि, मंदबुद्धि अज्ञान, मूर्खता, बुरी अक्ल, बुरे विचार ।

દુર્મદ (सं.) मस्त, अहंकारी, घमण्डी तमोगुण युक्त, मतवाला, हट्टा कट्टा ।

દુર્લભ (वि) अप्राप्य, दुष्प्राप्य, प्रिय अति प्रशस्त, जिसका मिलना कठिन हो । [वज्जुद्दी ।

દુર્લક્ષ (सं.) भूल, बेखबरी, बेत-

દુર્લક્ષણ (सं.) अशुभ चिन्ह, अशकुन, बुरे लक्षण, कुलक्षण ।

દુર્વચન-વાક્ય (सं.) देखो દુર્ભાષણ.

દુર્વાસના (सं.) बुरी वासना, असत् अभिलाष, दुष्ट इच्छा ।

દુર્વિકાર (सं.) कुप्रवृत्ति, बुरी इच्छा।

દુર્વ્યસન (सं) बुरी आदत, बुरी इच्छा, कुटेव ।

દુર્વ્યસની (सं.) खोटा, दुष्ट, पापी, सरकश, कुटेवी । [बाली ।

દુલ (सं.) एक प्रकार की कान की

દુલ દુલીતપણું (सं.) मुटाई, पुष्टता।

દુલડુલું (वि.) भरा हुवा, चौकोर, मोटा, ताज़ा ।

દુલવું (क्रि.) डूबना, धसना ।

દુલારી (सं.) पुत्री, बेटी, लड़की।

દુલારો (सं) पुत्र, तनय, आत्मज।

દુલો (वि.) बड़े हौसिलेका, उदार, बहादुर, मनोमहान, सादा, साफ, खरा, सच्चा, निष्कपट ।

દુલ્હો (सं.) मुहर्रममें ताजियों के आगे मुसलमानोका "दूल्हा" कहके चिल्लाने का शब्द ।

દુવા (सं.) आशिर्वाद, आशीष, धन्यवाद, आशिर्वचन । [आन।

દુવાઈ (सं.) दुहाई, शपथ, कसम,

દુવાત (सं.) दवात, दावात, मसिपात्र ।

દુવાગો (सं.) प्रार्थी, विनयी, प्रार्थी, विनतीकरनेवाला ।

દુવાદેવી (क्रि.) दुआ देना, धन्यवाद देना, आसीस देना ।

દુવા માગવી (क्रि.) प्रार्थना करना, विनती करना, दुआ मॉगना ।

દુવાર્ષિક (सं.) अर्द्ध वार्षिक, छमाही, नीमसाला ।

દુશ્મન (सं.) शत्रु, रिपु, अरि, वैरी, नाशक ।

દુશ્મનાઇ—ની-નગીરી, નદાવો (सं.) वैर, शत्रुता, रिपुता, नीच बर्ताव।

દુશાલો (सं.) दुशाला, धुस्सा, दुशाला जोड़ ।

દુશ્શુકન (सं.) अशकुन, अशगुन, बुरे शकुन, बुरे चिन्ह ।

દુશ્શાપ (सं.) कठोर श्राप, भयंकर दुराशीष, भारी सराप ।

દુશાલ (सं.) देखो દુશાલો ।

દુષ્કર (वि.) कठिन, मुश्किल, कष्ट साध्य, असंभव ।

દુષ્કર્મ (सं.) कुकर्म, नीच क्रिया, अधम व्यवहार, निंद्य काम, कुकृत्य ।

દુષ્કર્મી (सं.) दुष्कृतकारी, कुक्रियान्वित, पापी, भ्रष्टाचारी ।

દુષ્કાળ (सं.) देखो दुर्भिक्ष

દુષ્ટ (वि.) बुरा, नीच, उपद्रवी, अधम, पापिष्ट, निर्लज्ज, विरुद्धान्तःकरण ।

દુષ્ટ ઇચ્છા (सं.) बुग्ज़, वैर, बुरी इच्छा, बुरे विचार, निंद्य विचार।

દુષ્ટકર્મ (सं) पापमय कार्य, बुरे काम, नीच कार्य, निंद्य कार्य ।

દુષ્ટકર્મી (सं.) देखो દુષ્કર્મી

દુષ્ટતા (सं.) खलता, दुर्जनता, नीचता, दौरात्म्य ।

દુષ્ટબુદ્ધિ (सं.) नीचबुद्धि, मन्दबुद्धि निंद्यबुद्धि, बुरीअक्ल, अधमबुद्धि ।

દુષ્ટભાવ (सं.) बुरे विचार, नीच विचार, निंद्यभाव द्रोह, विरोध ।

દુષ્ટમતિ (सं.) बुरी अक्ल, अधम विचार, निंद्य प्रवृत्ति ।

દુષ્ટ રીતે (क्रि. वि.) बुरीतरहमे, बुरी प्रकार ।

દુષ્ટ વાસના (सं.) कामाग्नि, रताभिलाष, कामवासना ।

દુષ્ટ વૃત્તિ (सं.) नीच वृत्ति, अधमावृति, बुरी जीविका, निंद्य व्यवसाय।

દુષ્ટ સ્વભાવ (सं.) बुरी आदत, नीच स्वभाव, वैर, विरोध, द्वेष ।

દુષ્ટાઇ (सं.) बुराई, नीचता, अधमता ।

દુઃસંગ (सं.) कुसंग, नीच संग, बुरा संग, खोटी सोहबत ।

દુસકાં—ડુસકાં (सं.) आह, गहरी सांस, सिसकी, ठंडी सांस ।

દુસ્તર (वि.) दुष्पार, अतरणीय, दुस्तरणीय, पार होने के अयोग्य कठिन, मुश्किल, सख्त ।

દુહિતા (सं.) पुत्री, बेटी, तनया।

દુહો (सं.) मिसरा, दोहा, सोरठा।

દૂત (सं.) वार्ताहर, चर, संवाद-दाता, सन्देशी, निसृष्टार्थ ।

દૂતી (सं.) दूतकार्य के लिये नियुक्त की हुई स्त्री, समाचार हारिणी, कुटिनी। [सफेद रंगका रस ।

દૂધ (सं.) दुग्ध, पय, क्षीर वृक्षोंका

દૂયમ (वि.) दूसरा, द्वितीय, छोटा, नीचा।

દૂર (वि.) अनिकट, असन्निकट, अंतर, बीच, व्यवधान, परे, न्यारा, अलग ।

દૂર કરવુ (क्रि.) हटाना, दूर करना, सरकाना, अलग करना, नौकरी से बरखास्त करना, डिसमिस करना, नौकरी से नाम काटना।

દૂરવું (क्रि. वि.) अतिदूर, बहुत दूर, फासलेपर ।

દૂરદૃષ્ટિ (सं.) दूरदर्शन, विवेक, अग्र दृष्टि, परिणाम दृष्टि ।

દૂર્વા (सं.) दूब, तृण विशेष ।

દૂલ (सं.) एक प्रकारकी कानोंकी बाली, कर्णा भूषण विशेष ।

દૂષ્ો (स.) देखो દૂષો।

દૂષક (वि.) दोष देनेवाला, निंदक, निन्दा करनेवाला, कलंकित करनेवाला, दूषयिता ।

દૂષણ (सं.) दोष, त्रुटि, निन्दा, दोष प्रकाशन, भर्त्सन कुलक्षण,

દૂષણીય (वि.) दूष्य, निन्दनीय, गर्हित कुत्सित, । [नयन ।

દૃગ (सं.) दृक्, आँख, चक्षु, नेत्र,

દૃઢ (वि.)पोढ़ा, अचल, कड़ा, कठोर, अतिशय, प्रगाढ, बळवान, कठिन ।

દૃઢભાજક (वि.) गणित विशेष, महत्तम समापवर्त्य (गणितमें)

દૃઢતા (सं.) काठिन्य, कठिनता, स्थिरता, मजबूती।

દૃઢચિત્ત (स.) पुख्तादिल, दृढमन, स्थिरमन अचचलचित्त ।

દૃઢભક્તિ-ભાવ (सं.) धर्मपरायण, अचलश्रद्धा, स्थिर प्रेम ।

દૃશ્ય-માન (वि.) देखने योग्य, दर्शनीय देखनेकी वस्तु, रमणीय, मनोहर ।

દૃઢ નિશ્ચય (सं.) दृढ अभिप्राय पूर्ण यकीन, पूर्ण स्थिरता ।

દૃઢનિર્ધાર (सं) पूर्ववत्

દૃષ્ટાંત (सं.) उदाहरण, उपमा, निदर्शन, समानता करण, तुलना करण, मिसाल ।

દૃષ (सं.) आंख, नेत्र, नयन, चक्षु ।

દૃષ્ટ (वि) आलोकित, ईक्षित, देखा हुवा ।

દૃષ્ટા (सं.) दर्शक, दर्शनकारी, दिखैवैया, देखनेवाला ।

દૃષ્ટાંત રૂપ કથા (सं.) उदाहरण के रूपमें कथा, दृष्टांत, बयान, वर्णन ।

દૃષ્ટાંતિક (वि.) उदाहरण के योग्य, मिसालके लायक, वर्णन योग्य ।

દૃષ્ટિ (सं.) आलोकन, निरीक्षण, दर्शन, चक्षु, नेत्र, नयन, बुद्धि, विवेक, विचार, कृपादृष्टि, कुदृष्टि।

દૃષ્ટિગોચર (वि.) साक्षात्, प्रत्यक्ष, नयन गोचर ।

દૃષ્ટિવિદ્યા (सं.) चक्षुविद्या, नेत्र विद्या, दर्शन ज्ञान, निरीक्षण ज्ञान, मेस्मेरेजम ।

દૃષ્ટિ મર્યાદા (सं.) नेत्रसीमा, लिहाज़, आखोंका हद्द, इंद्रिय गम्यसीमा, इंद्रियसे ज्ञात होनेवाली मर्यादा। [समानान्तर, बराबर।

દૃષ્ટિમંડળ (सं.) दृष्टिवृत्तके

દૃષ્ટિવિષય (सं.) दृश्य अभिप्राय, प्रकट मुराद, लक्ष्य प्रयोजन, निरीक्षण विषय, नेत्रसे सम्बन्ध, रखने वाला विषय ।

દૃષ્ટિજ્ઞાનતંતુ (सं.) देखनेके ततु नेत्रकीनसे, नेत्रतंतु, आखके डोर ।

દે (सं.) पारसी दसवां महीना, (क्रि.) देना, प्रदान करना ।

દેડુ (क्रि.) छोटा सांप (पानीका) डौंड़, पनियर, छोटा सर्प ।

દેખ (सं.) ताक, आलोकन, निरीक्षण (क्रि.) देखना, दर्शन करना गौर करना, ताकना ।

દેખીતું (वि.) प्रकट, मालूम, नुमायशी, भड़कीला, रंगीला ।

દેખડાવવું (क्रि.) देखो દેખાડવું

દેખત (क्रि. वि.) एक क्षणमे, निमिष मात्रमे, पलभरमें, फौरन, उपस्थितिमे, देखेहुए, मौजूदगीमे, देखते हुए ।

દેખતાં (उ.) देखते हुए, देखते समय, (की) उपस्थितिमे, हाजिरीमे ।

દેખનાર (सं.) देखो द्रष्टा

દેખવું (क्रि.) देखना, निरीक्षण करना, गवाह होना ।

દેખાતું (वि.) देखो દેખીતું

દેખાઉ (सं.) उत्तम, उम्दा, देखने योग्य ।

દેખાડવું (क्रि.) दिखाना, दिखलाना, बताना सुझाना, निकालना प्रकट करना ।

દેખાદેખી (सं.) स्पर्द्धा, प्रतिद्वन्दता होड़ाहोड़, दृष्टानुसरण, देखके अनुसरण करना ।

દેખાભણું (सं.) सुन्दर, मनोहर, नयनाभिराम, खुबसूरत, दृश्य ।

દેખાવ (सं.) बाहरी चटक मटक, टीमटाम, फीटफाट, दिखावा, रूप सीन, दिखाव ।

દેખાવડું (वि.) सुन्दर, रूपवान, खूबसूरत, देखने योग्य ।

દેખાવું (क्रि.) दिखाना, प्रकट होना, दृष्टि आना, जाहिरहोना, मालुम होना ।

દેખીતું (क्रि. वि.) साफ साफ, स्पष्ट, स्पष्ट रीतिसे ।

દેગ, ડેગ (सं.) बड़ा धातुपात्र विशेष, देग, देगचा ।

દેગડી (सं.) देगची ।

દેગડો (सं.) देखो દેગ

દેડકો (सं) मेंढक, भेक, दादुर ।

દેણુ (सं.) देय द्रव्य, ऋण, कर्ज एहसान, कर, लगन ।

દેણુદાર (सं) देनेवाला, ऋणी, एहसानमन्द । [बदला ।

દેણલેણુ (सं.) लेनदेन, अदला,

દેણું (सं.) देखो દેણુ

દેણુલેણું (क्रि.) देखो દેવુંલેવું

દેવતા (सं.) आग ।

દેદાર (सं.) शक्ल, रूप. दर्शन ।

દેદીપ્યમાન (वि.) ज्वाजल्यमान, अतिशय दीप्ति विशिष्ट, चमकीला, चमकदार, प्रकाशशील ।

દેર (सं.) अबेर, विलम्ब, ढील, टालमटोल ।

દેરાણી (सं.) पतिके छोटे भाईकी भार्या, देवरानी, देवरकी पत्नि ।

દેરૂં (सं.) मन्दिर, मठ, देवालय ।

દેવ (सं.) अमर, सुर, देवता, ईश्वर, मूर्ति, प्रतिमा, प्रभु ।

દેવરૂણ (सं.) देवताओंका ऋण जो पूजा भजनसे चुकाया जावे, ईश्वरका कर्जा ।

દેવચલ્લી (सं.) एकप्रकारकी काली चिड़िया, पक्षी विशेष ।

દેવજી ઘસાડીયો (सं.) बेडौल, बदसूरत, भद्दा, कुरूप ।

દેવડ (सं.) ऋण, कर्ज, उधार, लेनदेन का पेशा ।

દેવડાવવુ (क्रि.) दिला देना, बंद करना, ऋण दिलाना ।

દેવડી (सं.) ड्योढ़ी, उसारा, थाना, पोलिस स्टेशन, बरोठा ।

દેવડીવાળો (सं.) पौरिया, ड्योढी-वान. द्वारपाळ, द्वाररक्षक ।

દેવતરસ્યો (सं.) एक पक्षी, पक्षी विशेष।

દેવતા (सं.) ईश्वर, सुर, अमर, अग्नि, प्रभु, असुरारि ।

દેવતાઈ (सं.) दैविक, आस्मानी, मनुष्यत्व से अधिक, मनुषातिग, खुदाई, ईश्वरतुल्य, स्वर्गीय, पवित्र।

દેવ દરબાર (सं.) मन्दिर, देवालय, देवस्थान, मठ, ईश्वरका दरबार।

દેવદર્શન (सं.) प्रतिमादर्शन, मूर्ति दर्शन, मंदिरगमन, प्रभुदर्शन।

દેવદાર (सं.) देवद्वार, सनोवर, देवदारू, चीड, वृक्षविशेष, पारिभद्रक।

દેવદિવાળી (सं.) कार्तिक मासकी शुक्ला एकादशी तिथि।

દેવદૂત (सं.) देवता का भेजा हुवा दूत, पवन, वायु, विष्णुदूत। फरिश्ता।

દેવધર્મ (सं.) पवित्र धर्म, धार्मिक कृत्य, धार्मिक अभ्यास।

દેવનાગરી (वि.) संस्कृत अक्षर, हिन्दी लिपि, देवनागरी (लिपि)

દેવપૂજા (सं.) देवपूजा, देवताका पूजन, देवताकी आराधना।

દેવભક્તિ (सं.) हरिभक्ति देवता की सेवा पूजा, ईश्वर भक्ति, धर्मिष्ठता। [भाषा।

દેવ ભાષા (सं.) देववाणी, संस्कृत

દેવ ભૂમી (सं) पवित्र भूमि, पावन स्थान।

દેવભોળું (सं.) भोला, सीधा, सादा।

દેવયજ્ઞ (सं.) पंचमहायज्ञों में से एक, अग्निहोत्र, होमयज्ञ।

દેવરૂપી (वि. , देवताकी शक्ल, देवता के समान, देवता के अनुसार।

દેવલોક (सं.) ऊर्द्ध लोक, स्वर्ग, बैकुण्ठ, गोलोक, अदन का बाग।

દેવવાણી (सं.) देववाक्य, सस्कृत भाषा, आर्य्य भाषा, आकाशवाणी।

દેવસભા (सं.) देवताओं का समाज, देवताओंकी सभा।

દેવસ્થળ-સ્થાન (सं.) मंदिर, देवालय, मठ, देवल।

દેવસ્થાપના (सं.) देव प्रतिष्ठापन, मंदिर में मूर्त्तिकी पधरौनी।

દેવળ (सं.) मंदिर, देवालय, मठ।

દેવાંશી (वि.) दैवी, ईश्वरतुल्य, देवताओं के समान खूबसूरत।

દેવાંગના (सं.) देव स्त्री, देव भार्या, अप्सरा। [देनदार, ऋण ग्रस्त।

દેવાદાર (सं.) देनेवाला, ऋणी,

દેવાધિદેવ (सं.) सुरेन्द्र, इन्द्र, ईश्वर, विष्णु देवताओंका देव।

દેવાળય (सं.) देखो દેવળ

દેવાળિયો (सं.) खाऊ उड़ाऊ, दिवालिया, अति व्ययी, दरिद्री।

દેવાળું (सं.) दिवाला, ऋणसे उऋण न होने की दशा।

દેવાજ્ઞા (सं.) ईश्वराज्ञा, प्रकृति का नियम, देवता का हुक्म।

દેવી सं.) दुर्गा, सामान्य देवपत्नी, ब्राह्मणी, देवभार्या।

દેવું (सं.) ऋण, कर्ज, (क्रि.) देना, आज्ञा देना, जुड़ना, मूँदना, बंद करना।

દેવું કરવું (क्रि.) ऋण चुकाने का भार उठाना, बेचने को राजी होना।

દેવું લેવું (सं.) देन लेन, अदला बदला, व्यापार, रुपये पैसे का व्यवहार।

દેશ (सं.) पृथ्वी का खण्ड, मण्डल चक्र, वतन, राष्ट्र, जन्मभूमि, मातृभूमि।

દેશતેવોવેશ=जैसा देश वैसा भेस, देशके अनुसार पहिरावा।

દેશજવું (क्रि.) मातृभूमि को वापिस लौटना, जन्मभूमि को जाना।

દેશઝાડો (सं.) ताल्लुके के गाँवों की सूची या फिहरस्त।

દેશત્યાગ (सं.) विदेश गमन।

દેશનિકાલ (सं.) देश निकाला, बनवास, काला पाना।

દેશમુખ (सं.) परगने का मुखिया।

દેશવટો (सं.) विदेश भ्रमण, अन्य देशों का पर्य्यटन।

દેશ વ્યવહાર (सं.) देशी व्यवहार, देशकी रीति रस्मके अनुसार आचरण।

દેશહિત (सं.) राष्ट्र-हित, मातृभूमिका कल्याण, स्वदेशानुराग, हुब्बुलवतनी, देशभक्त।

દેશહિતકારી (सं) स्वदेशानुरागी, देशभक्त, स्वदेश प्रेमी।

દેશાઇ (सं.) जमीन का मालिक, भूमि का अधिकारी।

દેશાઇગીરી (सं.) देशाई का वतन।

દેશાચાર (सं.) देखो દેશવ્યવહાર

દેશાટન (सं.) भ्रमण, यात्रा, पर्य्यटन, मुसाफिरी, परदेश वास।

દેશાંતર (सं.) विदेश, अन्यदेश।

દેશાભિમાન (सं.) देखा દેશહિતકર

દેશાવર (सं.) देखो દેશાંતર

દેશી (वि.) देशसम्बन्धी, स्वदेशी राष्ट्रीय। [मनुष्य।

દેશી-જન (सं.) देश बंधु, स्वदेशी

દેશેદેશ-શે-શે (क्रि. वि.) प्रत्येक देश तथा प्रत्येक जगहमें।

દેહ (सं.) शरीर. बदन, अंग।

દેહકાની (सं) गंवार, उजड्ड, देहाती किसान।

દેહત્યાગ (सं.) मृत्यु, मौत, आत्म हत्या, स्ववध, मरण, प्राणत्याग।

દેહદંડ (सं.) शारीरिक दंड, शारीरिक दुःख, शरीर दंड।

દેહધારી (सं.) शरीरवान, अवतारी शारीरिक। [प्राणत्याग, मरण।

દેહપાત (सं.) शरीरनाश, मृत्यु मौत

દેહભાન (सं.) चेत, ज्ञान, मानसिक योग्यता ।

દેહભાવ (सं.) शारीरिक इच्छा ।

દેહરૂ (सं.) देहरा, देवरा, मंदिर चौहरा, देवालय मूर्तिगृह ।

દેહલી (सं) चौखट, ड्योढी, द्वारके नीचेकी लकडी, थली ।

દેહવાન वि.) देखो દેહધારી

દેહવિસર્જન (सं.) देखो દેહત્યાગ

દેહશત (सं.) भय, डर, त्रास, दुःख ।

દેહશુદ્ધિ (सं.) शरीरशुद्धि, शरीर विषयक पवित्रता ।

દેહશુદ્ધિપ્રાયશ્ચિત્ત (स.) देहकी पवित्रताके निमित्त कियागया प्रायश्चित ।

દેહાંત (सं.) जीवनांत, मृत्यु, मौत ।

દેહાંતદંડ (स. प्राणान्तकदण्ड, फांसी सूली, वहदड जिससे मृत्यु हो ।

દેહાંતર (सं.) कायापलट रूपभेद ।

દેહાત્મવાદી (सं.) अनात्मवादी चार्वाक, नास्तिक ।

દેહાભિમાન (सं.) शारीरिक गर्व शरीरका गर्व, आत्मभिमान, आत्म सम्मान, देहका आदर ।

દેહી (वि) शारीरिक, देह सम्बंधी ।

દૈત્ય (सं.) असुर, निशाचर, राक्षस जिन्न, जिन्द, प्रेत, पिशाच, दानव ।

દૈનન્દિન (सं.) प्रात्याहिक दिनभव, दिनदिन, प्रतिदिन होने वाला, नित्यका, प्रतिवासर सम्बन्धी ।

દૈવ (सं.) भाग्य, अदृष्ट, विधाता प्रारब्ध, ललाट, देवता ।

દૈવગતિ (सं) विधि गति, भाग्य गति, तकदीरी चक्कर ।

દૈવત (सं.) शक्ति, कूव्वत, गुण, आत्मा, देव सम्बन्धी, दैवी शक्ति ।

દૈવદશા (सं.) भाग्य, किस्मत, प्रारब्ध तकदीर, ललाट, होनहार ।

દૈવયોગ (सं.) अकस्मात, तकदीर सौभाग्य, शुभासरससे, योगात् भाग्य, प्रारब्ध ।

દૈવવાદ (सं) भाग्यवाद, प्रारब्ध पर विश्वास, आलस्य ।

દૈવહીન (वि.) भाग्यहीन, बदकिस्मत फूटी तकदीरका ।

દૈવજ્ઞ (सं.) गणक, लग्नाचार्य, ज्योतिषी, भविष्यवक्ता ।

દૈવાધીન–નુસારી (वि.) दैवायत्त, ईश्वराधीन, हठात्कार ।

દોકડો (सं.) एक रुपये का शतांश, $\frac{1}{100}$ रुपया ।

દોખમુ (सं.) पारसी बुर्ज, पारसी लोगोंकी मौनविषयक बुर्ज ।

દોંગાઈ (सं.) गंवारपना, उजड्डपन, मोटाई, बेहूदगी ।

દોંગુ (वि.) दुष्ट, बदजात, हठी मुहँजोर, गुस्ताख, मोटा ।

દોજખ (सं.) नर्क, अपवर्ग।

દોટ-ડ (सं.) दौड़, भाग, धावा, सर्प, शीघ्रगमन, अति वेगसे गमन।

દોટી (सं.) मोटा वस्त्र, खद्दर कपड़ा।

દોડધામ (सं.) भाग दौड़, दौड़-धूप, परिश्रम, मेहनत, यत्न, उ-द्योग, चेष्टा।

દોડવુ (क्रि.) दौड़ना, भागना, धावना, सर्पट लगाना।

દોડાદોડ-ડી (क्रि.) देखो દોડધામ

દોડાદોડી કરવી (क्रि.) भाग दौड़ करना, शीघ्रता करना, दौड़ धूप करना।

દોડાવવુ (क्रि.) दौड़ाना, भगाना, जल्दी चलाना, तेज हाँकना।

દોડો (सं.) अन्न की बाल, नाज का भुट्टा, ठोडा।

દોઢ (सं.) देखो દોહડ

દોઢિયું (सं.) पैसा।

દોત (सं.) दावात, मसिपात्र।

દોતિયો (सं.) मुहर्रिर, क्लर्क, लेखक।

દોદડું (वि.) अच्छी तरह नहीं पिसा हुवा, बे पिसा, बेकुटा।

દોધી (सं.) देखो દુધી

દોનો (सं) दोना, पत्रपात्र, पर्ण-पात्र, द्रोण, पत्तों की बनी कटोरी।

દોપટો (सं.) देखो દુપટો

દોપીસ્તા-ન (सं.) नकल करने का पट्टा, लिखने का पट्टा।

દોભ દોભ (सं.) यश, प्रताप, वि-जय, कामयाबी, सफलता।

દોર (सं.) डोर, डोरी, झुलती, पतली रस्सी, ठाठ, धूमधाम।

દોરડું (सं.) रस्सा, डोरा ।

દોરડો (सं.) दूल्हा दुलहिनके हा-थोंमे विवाह के समय बाधा जाने-वाला सूत्र।

દોરનાર (सं.) अगुवा, पथदर्शक, राह दिखानेवाला।

દોરવુ (क्रि.) रूल खींचना, लकीरें करना, लेचलना, आगे चलना।

દોરાપૂર (वि.) बाळ बराबर अ-न्तर, बाळ बराबर बीच, अति अल्प अंतर।

દોરાવું (क्रि.) मार्ग दिखाना, ले-चलना, अगुवा बनना।

દોરાવવું (क्रि.) लकीरें खिंचाना, सतरें कराना, रूल कराना।

દોરાળ (वि.) सूतदार, रेशेवाळा, सूत सरीखा, सूती।

દોરિયો (सं.) घड़ा, मटकी, ल-कीरवाळा कपड़ा, डोरिया (वस्त्र-विशेष)

દોરી (सं.) डोरी, सुतली, बारीक रस्सी, प्रभाव, असर, बागडोर ।
દોરી તુટવી (क्रि.) मरना, नाश, होना, मृत्यु होना, देह त्यागना ।
દોરો (सं.) धागा, डोरा, सूत्र, गलेकीमाला कंठी या हार, कंठा भरण ।
દોરો પરોવવો (क्रि)सूई मेडोरा डालना सूई में धागा पिरोना ।
દોરો ભરવો (क्रि.) सीना, टांकना बखिया करना ।
દોલત (सं.) दौलत. द्रव्य, धन, ज़र, रुपया पैसा '
દોલતજ્યાદા (वि.) अशीर्वाद त्मक मुहाविरा, "ईश्वरकरे भंडार भरपूर रहे" आसीस वाक्य ।
દોલતદાર-મંદ-વાન (वि.) धनी द्रव्यपात्र, रुपये पैसे वाळा, मालदार, धनाढ्य ।
દોલાખ-દારી (सं.) दीवार मेकी अलमारी भंडारा, आला, ताख ।
દોશો (सं.) साफ, उदार, धर्मात्मा सखी, सीधा ।
દોશી-વાણીઓ (सं.) बजाज वस्त्र विकेता, कपड़े बेचने वाला ।
દોષ (सं.) दूषण त्रुटि, कलंक अपराध, पाप, ऐब ।
દોષપાત્ર (वि.) कलंकित, अपराधी पापी, दूषित ।
દોષમોચન (सं.) क्षमा, पापोसे छुटकारा, पाप मोचन ।
દોષી (वि.) कलङ्की, अपराधी, पापी दोषयुक्त, अशुद्ध ।
દોસ-સ્ત-સ્તદાર (सं.) मित्र साथी सखा दोस्त, सहयोगी ।
દોસ્તદારી-સ્તી (वि.) मैत्री मित्रता, सखत्व, दोस्ती ।
દોહગ (सं) अपराध, कुसूर, पाप ।
દોઢ (वि.) डेढ, एक और आधा, १½ १॥, [मूढ़ा
દોઢડાહ્યું (वि.) बेवकूफ, गावदी
દોઢદમડીનું (वि.) व्यर्थ, निकम्मा, निरर्थक, देढदमड़ीका ।
દોઢસો (वि.) डेढसो, एक सौ पचास, १५० ।
દોહણી (सं.) दुग्ध दोहने का पात्र, नांद, कूंडा, दूध दोहनेकी ।
દોહન (सं.) निचोड़, सार सत्व, रस, अर्क, सत्य, दुग्ध, दोहन,
દોહરો (सं.) दोहा, सोरठा, पद्य ।
દોહવું (क्रि.) दूध दोहना, दूध निकालना, दूध काढना ।
દોહિત્ર (सं.) पुत्री की पुत्र, दौहित्र नाती, बेटी का बेटा ।

દૌહિત્રી (सं. नातिनी, नातिन, बेटी की बेटी, दौहित्री, पुत्री की पुत्री।

દોહેલું (वि.) सख्त, कठिन, कठोर, कड़ा, मुश्किल।

દોઢડાહ્યું ચતુર (वि.) अपनी बुद्धि में अक्लमंद, सिरीं, पागल।

દોળો (सं.) झोला, पळना, झूलना।

દાત (सं.) देखो દૌત

દૌલત (सं.) देखो દૌલત

દૌહિત્ર (सं.) देखो દૌહિત્ર

ધ્યાનત (सं.) ईमानदारी, हिताहित का ज्ञान, निश्चय, विश्वास, सचाई।

ધ્યાનતદાર (वि.) सच्चा, खरा, ठीक, ईमानदार।

ધ્યાનતદારી (सं.) सचाई, ईमानदारी, निश्चयता।

દ્યૂત (सं.) जुवा, जुआ, पासा का खेल, क्रीड़ा विशेष।

દ્યૂતકર્મ (सं.) जुएबाजी, द्यूतक्रीड़ा, पासे का खेल।

દ્યૂતિ (सं.) चमक, प्रकाश, दमक, सौन्दर्य्य, उजाला, तेज।

દ્યૌ (सं.) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, सुरलोक, आकाश, आस्मान।

દ્રવ (सं.) पिघलाव, गलाव, स्नेह द्रव्य, रस, गतिवेग।

દ્રવ્ય (सं.) वित्त, धन, नैयायिकों के मत से पृथ्वी आदि तत्व।

દ્રવ્યવાન (वि.) धनवान, धनी, दौलतमन्द, धनाढ्य।

દ્રવ્યહીન (वि.) दीन, हीन, गरीब, निर्धन, निर्द्रव्य, कंगाल।

દ્રષ્ટિ-ષ્ટી (सं.) निगाह, दृष्टि, ताक, निरीक्षण, नेत्र, नयन।

દહ (सं.) जलप्रपात, झरना, बड़ा झरना, मोतियाबिन्द।

દ્રાક્ષ (सं.) दाख, किसमिश, अंगूर।

દ્રાખ (सं.) पूर्ववत्।

દ્રાવ (सं.) अर्क, रस।

દ્રાવક (सं) द्रव कारक, गलानेवाला, सोहागा, पिघलानेवाला।

દ્રાવકરસ (सं.) पिघलानेवाला रस, तेजाब, द्रवकारक अर्क। [गळजावो

દ્રાવ્ય (क्रि.) जो पिघल सके, जो

દ્રાક્ષવેલો (सं.) अंगूर की बेल, अंगूर के बेल की क्यारी।

દ્રાક્ષારસ (सं.) अंगूर का रस, मदिरा, मद्य।

દ્રુત (क्रि. वि.) तुरन्त, शीघ्र, त्वरित, (वि.) पिघलाहुवा, गलित।

દ્રુમ (सं.) वृक्ष, पारिजात, पेड़, रूख, तरुवर, झाड़।

દ્રોણ (सं.) दोना, पर्णपात्र, ६४ सेर का एक तौल।

દ્રોહ (सं.) जिघांसा, बैर, द्वेष, अनिष्ट चिंतन, अपकार, क्षति।

દ્વેષી (वि.) अनिष्टकारी, खल, पिशुन, विरोधी, द्वेषी, वैरी, स्वभाव से शत्रु ।

દ્વંદ્વ (सं.) जोड़ी, युग्म, युगल, मिथुन, समास विशेष।

દ્વંદ્વ યુદ્ધ (सं) दो मनुष्यों का युद्ध, मल्लयुद्ध, दो मनुष्यों की लड़ाई ।

દ્વાદશ (सं.) बारह, दस और दो, १२ (वि.) बारहवां,

દ્વાદશ અરણ્ય (सं.) बारह वन, साङ्केतिक बारह जंगल जो ब्रज में हैं।

દ્વાદશ કોણ (सं.) १२ कोने, बारह कोने का, बारह खूँटा ।

દ્વાદશી (सं.) तिथि विशेष, पक्ष की बारहवीं तिथि, बारस ।

દ્વાપર (सं.) युग विशेष, तीसरा युग, इस का मान ८६४००० वर्ष का होता है ।

દ્વાપર યુગ (सं.) पूर्ववत्

દ્વાર (सं.) मार्ग, दरवाजा, निकलने घुसने का मार्ग, रास्ता, फाटक ।

દ્વારપાલ (सं.) द्वार रक्षक, दरवान, द्वारवान, पहरुवा, प्रहरी, पौरिया।

દ્વારાંતરે (क्रि. वि.) दूसरों के द्वारा, दूसरों की मार्फत ।

દ્વાહી (सं.) दुहाई, कसम, शपथ, आन, सौगन्द, रक्षा के लिये किसी बड़े पुरुष का नाम लेकर दोहाई देना ।

દ્વિ (सं.) २, संख्याविशेष, दो ।

દ્વિખુર (वि.) दो खुरों का, फटे हुए खुरों का, चिरे खुरों का ।

દ્વિપશુ (वि.) दो पैर का पशु, दो पगा, जीव ।

દ્વિજ (सं.) दोबार में उत्पन्न, ब्राह्मण, आदि त्रिवर्ण, अण्डज, पक्षी ।

દ્વિજરાજ (सं.) द्विजपति, चंद्रमा, शशाङ्क, चाँद, चंद्र ।

દ્વિજાત (सं.) देखो દ્વિજ ।

દ્વિતીયા (वि.) दूसरा, अन्य, दूजा ।

દ્વિતીયા (वि.) व्याकरण में द्वितीया विभक्ति, दोयज, तिथि विशेष ।

દ્વિદલ (सं.) दो पत्तों के रूप में प्रथम उत्पन्न होनेवाला वृक्ष, बीच से दो फाँक या चीर होनेवाला अन्न ।

દ્વિદલ ધાન્ય (सं.) दो भागों में विभक्त अन्न कण, चना तुवर, मसूर, मूँग, उर्द, इत्यादि.

દ્વિધા (क्रि. वि.) दो प्रकार, द्व्यर्थ, सन्देह, अनिश्चित, द्विविधि ।

દ્વિપદ (सं.) देखो દ્વિપશુ

દ્વિપદ પ્રાણી (सं.) पूर्ववत्

દ્વિવચન (सं.) दो संख्या की वाचक विभक्ति, दूसरा वचन, अन्य वचन, बहुवचन। [मातिका, द्विधा।
દ્વિવિધ (वि.) दो प्रकार का, दो
દ્વિશફ (वि.) फटाहुवा पैर, चिरा हुवा खुर, जैसे गऊ बकरी, भैंस, प्रभृति पशुओं के पैर।
દ્વીપ (सं.) जल मध्यस्थ पृथ्वी का खंड, जजीरा।
દ્વીપકલ્પ (सं.) प्रायद्वीप, जजीरेनुमा।
દ્વેષ-પ (सं.) विरोध, ईर्ष्या वैर, द्रोहलाग, शत्रुता, दुश्मनी, हिंसा।
દ્વેષ ભાવ (सं.) कुढन, जलन, हसद।
દ્વેષી (वि.) शत्रु, वैरी, हिंसक, दुश्मन।
દ્વૈત-મત (स.) दो प्रकार, भेद सन्देह, जीव और ईश्वर का भेद प्रदर्शक मत। दो वस्तुओं को अनादि मानने का सिद्धान्त, अर्थात् ब्रह्म और जीव अनादि अनन्त और एक दूसरे से भिन्न हैं।

ધ

ધ—गुजराती वर्णमाला का तीसवां अक्षर, तवर्गीय चौथा अक्षर, ३७ वा व्यञ्जन।

ધક (सं.) प्यास, पिपासा, तृषा, ज्वाला, ध्यान, विचार, चित्त, दिल।
ધકધકવું (क्रि.) धक धकाना, धड़कना, फड़कना, मारना, पीटना।
ધકધક (सं.) धड़ धड़ाहट, दिल की चाल, मार, पीट।
ધકેલવું-ઢકેલવું (क्रि.) आगे सरकाना, धक्का मारना, धकेलना।
ધક્કાધક્કી (सं.) रेलाठेली, धक्कम्-धक्का ठेलाठेली।
ધક્કામુક્કી (सं) घूंसे और धक्के, मारकूट, घूसमूघूसा।
ધક્કો (स.) धक्का, रेला, ठेल, हानि, दुर्भाग्य की चोट।
ધખવું (वि.) क्रोधित होना, कुढना, खिन्नना, दुखी होना।
ધગડું (सं.) हरकारा, दूत।
ધગતી (सं.) राख, भस्म, धूळ।
ધગધગવું (क्रि.) भयंकर रूपसे चमकना, धकधकाना, धधकना, गर्म होना, धड़कना, फड़कना।
ધગા (सं) गर्मी, ताप, उष्णता।
ધગારી (सं., हलका ज्वर, बुखार की हरारत। [उष्ण करना।
ધગાધવું (क्रि.) गर्म करना, तपाना,

धचुपचु-ढचुपचु (वि.) अनिश्चितता, अनिर्धारितता, पशोपेश, शक, सन्देह, दुब्धा।

धज (वि) सुन्दर, मनोहर, उत्तम, श्रेष्ठ, उम्दा।

धजा (सं.) ध्वजा, पताका, झंडा, फरहरा, सेना का चिन्ह।

धड (सं.) रुण्ड, शिरहीन शरीर, बिना मूंड की देह, गले से नीचे का शरीर, देह, काय, शरीर।

धडकणु (वि.) भय, डर, भय से उत्पन्न व्याकुलता, हृदय का क्षोभ धुकधुकी, कम्प, सहम।

धडकवुं (क्रि.) धड़कना, भय करना, कांपना, भय से व्याकुल होना, थरथराना, धुकधुकाना, धड़धडाना, फड़कना।

धडदहाडेथी-प्रथमथी-मूळथी (वि) प्रारंभसे, पूर्व से, पहिले से, बहुत पाहिले से।

धडधडवुं (कि) धड़धड़ाना, तड़फड़ाना, छटपटाना, जोरसे कूटना या मारना।

धडधडाट (सं.) गरगराहट, ज़ोर से गर्जन या गूंजने का शब्द, धड़धड़ाहट

धडपुंछडुं (सं.) सिर और पूंछ, मूर्खता, बेवकूफी, शठता।

धडाको (सं.) भय, सन्देह, दुविधा, दुचित्ता, दहल, कड़क, भड़ाका, धड़ाका।

धडाधडी (सं.) भयंकर लड़ाई, धड़धड़ का लगातार शब्द, कार्य में शीघ्रता, जल्दी।

धडुकवुं (क्रि.) धड़कना, गरजना, गुर्राना, गड़गड़ाना।

धडो (सं.) धड़ा, जथा, समूह, पाठ, सबक, रुख, इरादा, दृढ़ता, वजन भार, प्रभाव, पक्ष, तौल, जोख, वह वजन जो सामने के पलवे पर रखे हुए से बराबरी के लिये दूसरे पलवे पर रखा जाता है।

धडो करवो (क्रि.) वजन करना, तौलना। [गायों का झुंड।

धण (सं.) धन, गोधन, गोसमूह,

धणधणवुं (क्रि.) भयंकर रूप से जलना, धकधकाहट के साथ जलना कांपना, थर्राना, धूजना।

धणधणावुं (क्रि.) डाटना, भला-बुरा कहना, कार्य में शीघ्रता करना जलना, कांपना, धूजना, थर्राना।

धणियाणि (सं.) पत्नी, मालकिन स्वामिनी। [मालिक, अधिकारी।

धणी (सं.) पति, खाविंद, स्वामी,

ધણીજોગ (वि.) खरीदने वाले के देने योग्य अथवा देय ।

ધણીધણિયાણી (पुं.) पति पत्नि, औरत मर्द, स्त्री पुरुष, खाविद बीबी । [गार, मालिक, स्वामी ।

ધણીધોરી (सं.) सहायक, मदद-

ધણીપણું (सं.) स्वामीपना, मालिकपन, हाकिमपना, मालकियत, स्वामित्व, अधिकार ।

ધણીઆતું (वि.) जिसका मालिक हो, मालिक वाला ।

ધત (विस्म.) छिः, दुश, छित् ।

ધતરમંતર (सं.) छूमंतर, जादूभरी इंद्रजाल, टोना टटका ।

ધતિંગ (सं.) कोलाहल, चिल्लाहट, बहाना, झूठा दिखावा, बनावट, झूंठा हीला, पाखंड ।

ધતરો-ધંતુરો (सं.) धतूरा, नामक विषैला वृक्ष, धतूर, कनक ।

ધંધાદાર (सं.) कामकाजी, काम धन्धेवाला, व्यापारी, लेनदेन करनेवाला ।

ધંધાદારી (सं.) कामकाजी, तिजारती, (वि.) वृत्ति सम्बन्धी, उद्यम सम्बन्धी ।

ધંધુડો (सं.) झरना, जलप्रपात आखात, पानी का झरना ।

ધંધો (सं.) व्यापार, लेनदेन, उद्योग, व्यवसाय, काम ।

ધંધો કરવો (क्रि.) उद्योग करना व्यवसाय करना, व्यापार करना, लेनदेन करना । [रोजगार, पेशा

ધંધોરોજગાર (सं.) आजीविका,

ધંધડાવવું (क्रि.) डराना, भयभीत करना, धमकाना, डाटना ।

ધધણાવવુ (क्रि.) देखो ધણુ-ધણાવવુ

ધન (सं) वित्त, विभव, सम्पत्ति, द्रव्य, पूंजी, मालमत्ता, खजाना, चिन्ह विशेष, हर्ष, धन्य, (विस्म) वाहवा ! शाबास ।

ધનકોનામ (सं.) उधार रुपया देने वाला, व्याजपर रुपया देने वाला, साहूकार ।

ધનગર (सं.) ग्वाला, गडरिया ।

ધનત્તર (वि.) द्रव्य पात्र धनी, मालदार ।

ધનત્રયોદશી (स.) आश्विन कृष्ण त्रयोदशी, कार्तिक कृष्णा तेरस, दिवाली के दो दिन पूर्व ।

ધનદોલત-ધાન્ય (सं.) द्रव्य, धन, धनधान्य, दौलत, माल ।

ધનપૂજા (सं.) द्रव्यपूजन, दीपमालिका । [देनेवाला, लक्ष्मी ।

ધનગ્રહ (सं.) धनद, कुबेर, धन

धनराशि (सं.) नवम राशि ।
धनरेखा (सं.) हस्त में धन को बताने वाली रेखा, धन प्रदर्शक लकीर, सामुद्रिक रेखा विशेष ।
धनलोभ (सं.) अर्थ लोभ, धन लिप्सा, धनतृष्णा, द्रव्य का लालच ।
धनलोभी (वि.) धनलुब्ध, धन-लोलुप, अर्थ लिप्सु, धन का लालची ।
धनवंत-वान (वि.) कुबेर, धनाढ्य, ऐश्वर्यपात्र, धनी, दौलतमंद ।
धन्वंतरि सं.) शिव का नाम, देव वैद्य, देवताओं का हकीम ।
धन्य (विस्म.) कृतकर्मा, साधु, पुण्यवान, आश्चर्य बोधक शब्द, शाबाश ।
धन्वी (सं.) धनुर्धारी, धानुष्क, धनुर्विद्याप्रवीण, धनुषधारी ।
धन्यभाग्य (सं.) अहोभाग्य, भूरिभाग्य, खुश किस्मती ।
धनसंपत्ति (सं.) द्रव्य का ढेर, धनराशि, अर्थ समूह, द्रव्य ।
धनहीन (सं) दारिद्री, कंगाल, दीन, हीन, गरीब, निर्द्रव्य ।
धनाढ्य (सं.) देखो धनवंत ।
धनाशा (सं.) लोभ, लालच, तृष्णा, ईप्सा, इच्छा ।
धनाधिपति (सं.) धनपति, धन का स्वामी, द्रव्यवान, कुबेर ।
धनाधिकारी (सं.) द्रव्य का हकदार, धन का अधिकारी ।
धनान्ध (सं.) अहंकारी, धनगर्वित, धन के गर्व से अन्धा ।
धनाध्यक्ष (सं.) कुबेर, धन रक्षक खजाञ्ची, भण्डारी ।
धनाश्री (सं.) रागिनी विशेष, एक छंद का नाम, धनासरी ।
धनिक (सं.) कर्जे पर रुपया देने वाला ऋणदाता, धनी, धन विशिष्ट कर्जा देनेवाला । [सत्ता नक्षत्र ।
धनिष्ठा (सं.) नक्षत्र विशेष. चौबी-
धनी (वि) देखो धनवंत ।
धनु (सं.) धनुक, धनुष, चाप, कोदण्ड, शरासन, कमान, कमठा, नवमराशि । [अचेतनता, बेहोशी।
धनुर (सं.) एक प्रकार की मूर्छा,
धनुर्धारी (सं.) धन्वी, बाण चलानेवाला, तीरन्दाज, कमैठा, धनुषधारी । [नवां सौरमास ।
धनुर्मास (सं.) धन की संक्रांति,
धनुर्विद्या (सं.) धनुष के विषय की शिक्षा देने वाली विद्या ।
धनुष्धारी (सं.) देखो धनुर्धारी ।
धनुष-ष्य (सं.) चाप, कमान, कमठा, कोदण्ड, इन्द्र धनुष, वर्षा धनु । [उम्दा ।
धनेतर (वि.) उत्तम, श्रेष्ठ,

ધનેશ્વર (सं.) धनपति, कुबेर, धनाढ्य ।

ધપકારો-બ્બકારો (सं.) धमक, टकर, धक्का, भारी शरीर के गिरने का शब्द, धमाका ।

ધપકો (सं.) पीठ पर का धप्पा, पीठ ठोकने की ध्वनि थप्पटों का शब्द।

ધપાધપ (वि.) हाथों की चोटो की ध्वनि, थप्पडों का शब्द ।

ધપાધપી—ધ્પાધપ્પી— ધ્પાબાજી—ધબ્બાધબ્બી—ધબ્બાબાજી (स.) घूंसों और थप्पड़ों के मारने की क्रिया या काम ।

ધપ્પો-બ્બો (सं.) सिरपर थप्पड का तड़ाका, मस्तक पर चपत ।

ધબ (क्रि. वि.) एकदम उठने का शब्द, गमन और पतन ।

ધબકવી (क्रि.) उठाना, फेकना, ठंटी सास लेना ।

ધબકવું (क्रि.) भड़कन, धड़कना ।

ધબધબ (सं.) चलने के समय शब्द ।

ધબવું-બી જવું (क्रि.) गिरना, पतन होना, दिवालिया होना, मुफलिस होना, एकदम मरना ।

ધબોવવું (क्रि.) हाथों से पीटना ।

ધબ્બલ-ઢબ્બલ (सं.) मूर्ख, शठ, बेवकूफ, पागल । [उत्साह ।

ધમક (स.) ढिठाई, वीरता, साहस,

ધમકાવવું (क्रि.) धमकाना, डाटना, डराना, भय दिखाना ।

ધમકી (सं.) भय, डर, डाट, झिड़क, धिक्कार ।

ધમકારો (सं.) भयंकर धड़ाके का शब्द, जोर का धमाका ।

ધમકો (सं.) पीठपर घूंसे की चोट, अगूठा, अगुष्ट ।

ધમણ (स.) धौकनी, धुकनी, फूंकनी, टप, ढकनी, (गाडीका) ।

ધમણવું (क्रि.) धौंकना, फूंकना ।

ધમધમવું (क्रि.) जोर जोर से शब्द होना, धमधम होना ।

ધમધમાવવું (क्रि.) डराना, घुड़काना, धमकाना, भय दिखाना।

ધમધોકારે (वि.) तेजी से, जल्दी से, शीघ्रता से, चंचलता से ।

ધમની (सं. रक्तवाहक नाड़ी, रक्तवाहिनी नालिका, फुंकनी, छोटी नालिका, छोटी नली ।

ધમની છેદન (सं.) योगाभ्यास की क्रिया विशेष ।

ધમની વર્ણન (सं.) शरीरशास्त्र ।

ધમરોળ (सं.) कोलाहल, शोर गुलगपाड़ा, हो हल्ला, अतिविलाप, अति रुदन, करुण क्रन्दन ।

ધમવું (क्रि.) देखो ધમણવું ।

ધમાચકડી (सं.) झगड़ा, टंटा, रौला, बखेड़ा, गुलगपाड़ा ।

ધમાધમી (सं.) लड़ाई, झगड़ा, फसाद । [ढोरों को नहाना ।

ધમારવું(क्रि.) पशुओंको स्नान कराना

ધમાલ (सं.) बहुत भीड़, अति भाड़, अति समूह, बृहत्समूह ।

ધમાલુ (सं.) बड़ी बेडौल पगड़ी ।

ધમાસો (सं.) एक प्रकार का कटीला पौदा, पौदा विशेष ।

ધમીજવું (क्रि.) चुराना, लूटना, अपहरण करना, डाका डालना ।

ધમોર (सं लम्बे कानों की गाय, दीर्घ कर्णा गऊ ।

ધર (वि.) रखने वाला, धारण करने वाला, थामने वाला।

ધર (सं) दोका पर्यावयाची शब्द, बैलकी उम्र या युग, जूड़ा, भरोसा आसरा, विश्वास । [प्रारंभ से ।

ધર (क्रि. वि.) आरंभ से, शुरु से,

ધરકેતર (सं.) चावल का पौदा, शाल का पौधा ।

ધરણ (सं.) बांध, बंध, पानी की रोक, लपेटन, बंधन, कमरपेटा ।

ધરણી (सं.) पृथ्वी, वसुधा, मेदिनी, भूमि, जमीन, ढंग, चाल, आचरण, पदवी, बनावट ।

ધરણીધર (सं.) जमीदार, पृथ्वीपति, राजा, शेषनाग, पर्वत, विष्णु।

ધરણી-તીકંપ (सं.) भूकंप, भूचाल, जलजला ।

ધર્તા (सं.) धारण करनेवाला, ग्रहण करनेवाला।

ધરતિ (सं.) पृथ्वी, भूमि, जमीन, अर्वान, वसुंधरा ।

ધરતિકંપ-પારો (सं.) देखो ધરણી-તીકંપ [पकड़ धकड़ ।

ધરપકડ (सं.) पकड़ा धकड़ा,

ધરપચ્ચો (सं.) देखो ધરપચપોર

ધરપડી (सं.) बारह, १२,

ધરપચ-ત (सं.) भयानक किंतु अर्थहीन बेहूदी व्यर्थ गर्जना ।

ધરપચપોર (सं.) सनसनानेवाला, बमकनेवाला, लड़ाका झगड़ालू ।

ધરમ-ર્મ (सं.) फर्ज, शुभ कर्म, पुण्य, सुकृत, न्याय, आचार, उपमा, यज्ञ, अहिंसा, जाति-व्यवहार, कर्तव्यकर्म ।

ધરમ કરતાં કરમ નડે—धर्म करते कर्म फूटे, दूसरों के लिये भलाई करते अपने ऊपर कष्ट और आफत का आना।

ધરમ ફરી વળવો (क्रि) सद्‌गुन या सत्कार्य के उपलक्ष्य में ईश्वर द्वारा पुरस्कार दिया जाना।

ધરમની ગાયને દાંત ન હોય—धर्म की गाय के दात नही देखे जाते, जो कुछ दान मिले उस पर सतुष्ट हो,

ધરમ ધક્કો (स०) व्यर्थ का चक्कर, बे फायदा भ्रमण।

ધરવું (क्रि) रखना, धारण करना थामना, पकड़ना, रख छोड़ना भेट करना। [वसुधा।

ધરા (सं.) भूमि, पृथ्वी, अवनि,

ધરાઈ જવું-વું (क्रि.) सन्तोष होना, तसल्ली होना तृप्त होना, तुष्ट होना।

ધરાધર (सं०) शेष, शेषनाग, कूर्म।

ધરાર (क्रि. वि.) निस्संदेह, अवश्य, निश्चय, वास्तव में, सचमुच, बेशक, अधिक भार से लदी हुई गाड़ी।

ધરાવવું (सं.) एहसानमन्द होना, आभारी होना, रखाना, भेट कराना।

ધરી (सं) अक्षरेखा, गाड़ी की धुरी या धुरा, आश्रय, सहारा।

ધર્મકર્તા (सं.) धर्म करनेवाला, धर्मात्मा, धर्मी, धर्मिष्ठ, पुण्यकर्ता।

ધર્મ કામ-કાર્ય-કૃત્ય (सं.) धार्मिक काम, पुण्यकार्य, पावन कृत्य।

ધર્મક્રિયા (सं.) धर्म कर्म, शास्त्र विहित कर्म।

ધર્મખાતું (सं.) धर्म के निमित्त पुण्य के नाम पर, धर्मार्थ।

ધર્મગુરુ (सं.) उपदेशक, धर्म संबंधी अगुवा, पवित्र मार्ग प्रदर्शक।

ધર્મદાન (सं.) पुण्यदान, दान पुण्य, उदारता।

ધર્મધક્કો (स) देखो ધરમધક્કો

ધર્મધુરંધર (सं.) धार्मिक नेता, धर्मकार्यों में आगे रहनेवाला, धर्मात्मा, धर्माचार्य, धर्म का धुरा उठानेवाला।

ધર્મનિષ્ઠા (सं) दया, कृपा, रहम, धर्मिष्ठता, धर्म में विश्वास।

ધર્મની ગાય (स) धरमकी दानकी गाय, मुफ्त की गाय।

ધર્મનો કાંટો (सं.) धर्म का तराजू, सच्चा काटा या तौल।

ધર્મપત્નિ (सं) विवाहिता स्त्री, भार्या, अपने हाथों पाणिग्रहण की हुई स्त्री।

ધર્મપત્રિકા (सं.) दानपत्र, पुण्य की हुई वस्तु का लिखित पत्र ।

ધર્મપુત-પુત્ર (सं.) गोद लिया हुवा लड़का ।

ધર્મપુરી (सं.) पुण्य नगरी, पावन [बस्ती ।

ધર્મપુસ્તક (सं.) पवित्र पुस्तक, वेद, क़ुरान, बाइबल, धार्मिक पुस्तक, मान्य पुस्तक, वेदवाक्य, ईश्वर वाक्य, अमानुषिक पुस्तक ।

ધર્મબંધુ-ભાઈ (सं.) धर्मभ्राता, समपाठाध्यायी, साथ पढनेवाला सगोत्री, अपने गोत्रका ।

ધર્મબુદ્ધિ (सं.) पवित्र विचार, श्रेष्ठ बुद्धि, धार्मिक विचार, धार्मिक कृत्योंकी ओर मनका झुकाव ।

ધર્મમાર્ગ (सं.) पवित्र मार्ग. उत्तम रास्ता, दयाधर्म, पुण्य मार्ग, पाकराह ।

ધર્મયુદ્ધ (सं.) धार्मिक झगड़े, धर्मविषयक लड़ाई, नियमानुकूल युद्ध, युद्ध शास्त्र के अनुसार लड़ाई, पवित्र मन से किया गया युद्ध ।

ધર્મરાજ (सं.) युधिष्ठिर, पांडवों में बड़े, यम, यमराज, नर्काधिपति ।

ધર્મવાન-વંત (सं.) देखो धर्मी

ધર્મવાસના (सं.) धार्मिक इच्छा, पवित्र विचार, अच्छा इरादा ।

ધર્મશાસ્ત્ર (सं.) व्यवस्था शास्त्र, स्मृतिशास्त्र, मनु अत्रि पराशर याज्ञवल्क्य आदि रचित शास्त्र ।

ધર્મશાસ્ત્રજ્ઞ-સ્ત્રી (सं) जो धर्म शास्त्रों का ज्ञाता हो, धार्मिक ग्रंथो का ज्ञाता, स्मृति आदि का जाननेवाला ।

ધર્મશાળા (सं.) उपासना गृह, पूजा गृह, दान गृह, अतिथिशाला, धमार्थ गृह, धरमसाला ।

ધર્મશીળ (सं.) धार्मिक, पुण्यशील, पुण्यात्मा, धर्मिष्ठ ।

ધર્મસભા (सं.) विचारालय न्यायालय, वह समाज जिसमें धर्म विषयक चर्चा हो ।

ધર્મજ્ઞાન (सं.) परलोक सम्बन्धी शुभाशुभ ज्ञान, कर्तव्य ज्ञान, धर्मबोध, धार्मिक विषयों की जानकारी ।

ધર્માચરણ (सं.) पवित्राचरण, पावन आचरण, धर्म्मानुकूल, चाल चलन रीतिरस्म, श्रेष्ठ आचरण ।

ધર્માચાર્ય (सं.) पुजारी, पादरी, काज़ी, धर्मगुरू, उपदेशक ।

ધર્માત્મા-ત્મુ (वि.) देखो धर्मी ।

ધર્માદા (सं.) पुण्य के लिये दी हुई वस्तु, धर्मार्थ दी हुई चीज़ ।

ધર્માંધ (सं.) धर्म के कारण जो अंधा, धर्म के गर्व में अन्धा, धर्मनिष्ठ, लकीर का फकीर, अंध विश्वासी।

ધર્માધિકારી (सं.) पुजारी, पुरोहित, धर्म शिक्षक धार्मिक गुरु।

ધર્માધ્યક્ષ (स.) न्यायाधिश, न्यायमूर्ति, पुरोहित सबंधी न्यायालय का मुखिया।

ધર્માર્થ (स) धर्म के निमित्त, धर्म खाते, दानके लिये।

ધર્માભિષેક (स) धर्म शास्त्रों के अनुसार किएहुए सस्कार या रीति रिवाज।

ધર્મારણ્ય (म) पुण्यस्थान विशेष, तपोवन, महर्षियो का आश्रम, पवित्र वन।

ધર્માસન (स.) आसन जिसपर बैठकर न्याय किया जावे, विचार का आसन न्याय कर्ता की बैठक।

ધર્માળ (वि) दयालु, कृपालु, हितैषी, पुण्यवान।

ધર્મિષ્ટ-ઠ (वि.) दयावान, साधु, पुण्यशलि, धर्मात्मा, धार्मिक, पुण्यवान।

ધર્મોપદેશ (सं.) धर्म के विषय का उपदेश, उत्तम उपदेस, मजहबी हिदायतें। [हितैषिता।

ધર્મીપણું (सं.) धर्म, पुण्य, दया,

ધવ (सं.) बल, शक्ति, द्रव्य, दौलत, पति, खाविंद, खसम।

ધવડાવવું (क्रि) दूध पिलाना, छाती पिलाना, स्तनपान कराना।

ધવલ (वि.) श्वेतवर्ण, शुभ्र, सफेद, सुन्दर।

ધવાડનું (क्रि.) देखो ધવડાવવું

ધવાડનારી-રૂ (सं.) धाय, दूध पिलानेवाला धाय।

ધસકો (स.) धमक, टक्कर, धक्का

ધસવું (क्रि) घुमना, प्रवेश करना, रास्ता दना, धंसना।

ધસારો (म) आक्रमण, धावा, हमला, दौड़, चढाई।

ધસાવડો (स) पूर्ववत्।

ધસી ચાલવું (क्रि.) आगे तेजीसे बढना, शीघ्रतासे आगे घुसना।

ધસી જવું (क्रि) मार्ग देना, रास्ता, देना, घुसजाना, धंसजाना।

ધાંધલ (सं.) निष्प्रयोजन झगड़ा, नटखटी, बिना कारण की लड़ाई, अन्धाधुन्धी।

ધાઇ (सं) स्त्रीकी छाती, बोबे, स्तन, पयोधर, चूची, थन।

ધાક (सं.) भय, डर, धमकी, प्रभाव, आतङ्क, रोब, ठाठबाट, धूमधाम, प्रताप, कीर्ति।

ધાક દેખાડવો (क्रि.) डराना, धमकाना, डाट बताना, रोब दिखाना ।

ધાક ભુક (सं.) भय, डर, खौफ,

ધાક બેસાડવો (क्रि.) रोब जमाना आतंक जमाना भय जमाना ।

ધાંખડી (स.) कल्पना, ख्याल,

ધાગડીઓ (स.) घबराहट, बखेड़ा, रौला, बलवा, झंझट, हलचल, हुड़बड़ी, आन्दोलन ।

ધાગો (स.) धागा, तागा, सूत, सूत्र, तार, धज्जी ।

ધાટી (सं) तराका, मार्ग, तर्ज, ढब, भाँति, राह ।

ધાડ (सं) आकस्मिक आक्रमण, लुटेरोंका समूह, शीघ्रता, जल्दी, तेजी ।

ધાડ પાડવી (क्रि.) डाका डालना लूटना, आक्रमण करना ।

ધાડાધાડ (सं) जल्दी, शीघ्रता, तेजी, अत्यंत त्वरा ।

ધાડું सं.) डाकुओं का जत्था, लुटेरोंका दल, भीड़ ।

ધાણા (स.) धनिया, सुगंधित बीज विशेष, धना ।

ધાણી (सं.) भूना हुवा अन्न, गेहूँ अथवा जौ भुने हुए ।

ધાત (सं.) शरीरधारक वस्तु, कफ, वात, पित्त, रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र पंचतत्व, धातु (व्याकरणकी) सोना, लोहा ताबा, चांदी आदि ।

ધાત ફુટવી (क्रि.) यौवनावस्था में पहुंचना जोबन फूटना तरुण अवस्था प्राप्त करना, फोड़े आदि में से मवाद निकलना, पीव निकलना । [धातु गिरना ।

ધાત જવી (क्रि.) वीर्यपात होना,

ધાતકાર-જ (सं) धातु संबंधी काम ।

ધાતા (सं.) ब्रह्मा, विधाता, सूर्य, पालक, रक्षक, धारक, रचयिता ।

ધાતુ (सं) व्याकरण में वह गण पठित शब्द जो क्रिया को द्योतित करे । स्वर्णादि सप्त धातु, खनिज, खानिक ।

ધાતુ ક્રિયા (सं.) धातु विद्या ।

ધાતુ નામ (सं.) क्रिया सम्बन्धी नाम, (व्याकरण विषय) वाचनिक नाम ।

ધાતુ પરીક્ષક (स.) खनिज पदार्थों की जांच करने वाला, धातुओं का परीक्षक ।

ધાતુપુષ્ટ-પોષક (वि.) पौष्टिक, पुष्ट, ताकतवर, वीर्य पुष्ट ।

ધાતુરૂપ (सं.) क्रिया का रूप (व्याकरण) [धातु विद्या ।
ધાતુવર્ધુન (सं.) खनिज विद्या,
ધાતુ વિકાર-ક્ષય (सं.) वीर्य विकार, वीर्यक्षय, धातु सम्बन्धी बीमारी ।
ધાતુવેત્તા (सं.) धातु विद्या का जानने वाला, भूतत्ववेत्ता ।
ધાતુ સાધિત નામ (सं.) क्रिया मे बनी हुई संज्ञा (व्याकरण विषय)
ધાત્રી (सं.) धाई, उपमाता, दाई पथ्वी, भूमि, जमीन ।
ધાધર (सं.) दाद, दद्रु, चर्म रोग विशेष ।
ધાન્ય (सं.) अन्न, अनाज, भोजन।
ધાન મુઉં (वि.) अन्न के लिये झगड़ा, अत्यन्त नुकीला, तेज डंक का ।
ધાપ (सं.) भूल, चूक, धोका, छल, ठगी, चोरी, गुप्त कर्म ।
ધાપ ખવાડવી (सं.) धोका देना, छलना, झूठा बयान करना ।
ધાપ મારવી (क्रि.) चुराना, निगलना, भकोसना, छापा मारना ।
ધાબડધિંગુ (सं.) मोटा ताजा, हट्टा, कट्टा, हृष्टपुष्ट, तगड़ा, जंगली।
ધાબડવું (क्रि.) धोका देना, ठेलेना । [कांबली ।
ધાબળી (सं.) कम्बल, कामरी,
ધાબળો (सं.) मोटा कम्बल ।
ધાબું-બું (सं.) चौतरा, छत, धब्बा, चिन्ह, दाग ।
ધામ (सं.) घर, स्थान, गेह, भवन, निवास, देश, मकान ।
ધામણ (सं.) एक प्रकारका सर्प विशेष, विषहीन सर्प विशेष ।
ધામણી (स.) मजबूत भैंस, बलवान महिषी ।
ધામધમ (सं.) हल्ला, शोर, गुलगपाड़ा, ठाठ, धूमधाम ।
ધામા (सं.) कई दिनोंका पड़ाव, बहुत दिनो का वास ।
ધાર (सं.) बाढ़, प्रखरता, तीक्ष्णता अस्त्रके आगे भाग, नदी का बहाव, जलधारा ।
ધાર કરવી (क्रि.) तेज़ करना, बाढ करना, तीक्ष्ण करना, उँढेलना
ધારક (वि.) धारणकर्ता, अधमर्ण, धरता, रखनेवाला ।
ધારણ (सं.) ग्रहण, अवलंबन, तोल, मकानका खंभ या सहारा ।
ધારણા (सं.) बुद्धि, विषय ग्रहण करनेवाली बुद्धि, मनकी स्थिरता,

નિશ્ચય, स्मरण, चेत, उचित मार्ग पर स्थिति ।

ધારદાર–વાળું (सं.) तेज, पैना, धारवाला, बाढ़दार, तीक्ष्ण प्रखर, निशित ।

ધાર્મિક (सं.) पुण्यात्मा, पुण्यशील, धर्मनिष्ठ, धर्माचारी ।

ધાર્યું (क्रि.) सोचा, विचारा, इरादा किया, खयाल किया ।

ધારવું (क्रि.) सोचना, विचारना, अटकल करना, अनुमान करना, अन्दाज करना, समझना, खयाल करना, इरादा करना ।

ધારાળો (सं.) मजदूर, मजूर, सैनिक, सिपाही, योद्धा ।

ધારિષ્ટ (वि.) निडर, अभीत, साहसी, बहादुर, निर्भय, (सं.) धैर्य्य, साहस, दृढता, हिम्मत ।

ધારા સભા (सं.) लेजिस्लेटिव्ह कौंसिल, व्यवस्थापिका सभा, नियम स्थापिनी सभा ।

ધારિયું (सं.) खुरपा, घास काटने की हँसिया, दँराती ।

ધારી (वि.) रखनेवाला, ग्रहण करनेवाला, (सं.) रेखा लकीर, धार, रीस ।

ધારીદાર (वि.) रेखायुक्त, लकीरोंवाला, जिसमें लकीरें हों ।

ધારેલું (वि.) इच्छित, अभिलषित, चाहा हुवा, विचारा हुवा, सोचा हुवा ।

ધારો (सं.) नियम, क़ायदा, कानून प्रस्ताव, रीति, दस्तूर, चलन ।

ધારો બાંધવો (क्रि.) नियम बांधना, दस्तूर बांधना, रीति बांधना, व्यवस्था करना ।

ધાવ (सं.) धाई, दाई, धाय, दूध पिलानेवाली, उपमाता ।

ધાવણ (सं.) माता का दूध मा का दुग्ध ।

ધાવણ છોડાવવું (क्रि.) दूध छुडाना (बालक का) स्तनपान छुड़ाना

ધાવણ મુકાવવું (क्रि.) पूर्ववत् ।

ધાવણી (सं.) बच्चे की चूसनी, चूंखनी बालक के मुंह में चूसने का खिलौना विशेष ।

ધાવણું (वि.) दूध पीनेवाला ।

ધાવભાઈ (सं.) उपभ्राता, दूध भाई, कोका भाई

ધાવરું (सं.) बात रोग, बादी की बीमारी, बाई का रोग ।

ધાવવું (क्रि.) चूसना, चोखना ।

ધાવું (क्रि.) दौड़ना, भागना, वेगपूर्वक गमन ।

ધાસ્તી–સ્તી (सं.) खौफ, भय, चौंक, चमक, शोक, चिंता, गुल-गपाड़ा, गौगा, शोरगुल।

ધિંગાણું (सं.) टंटा, झगड़ा, लड़ाई, दगा, बदी, नुकसान ।

ધિંગામસ્તી (सं) अन्यायपूर्ण झगड़ा, ऊधम, बेहूदा ऊधम ।

ધિક્, ધિક (विस्म०) छि, निंदार्थसूचक अव्यय ।

ધિક્કાર (सं.) तिरस्कार, फटकार, अनादर, बेइज्जती ।

ધિક્કારવા જોગ (वि.) घृणाके योग्य, निंदाके योग्य, तिरस्कार के योग्य ।

ધિક્કારવુ (क्रि.) निंदा करना, फटकारना, तिरस्कार करना, अनादर करना ।

ધિક્કારાવસ્થા (सं.) अनादर, अपमान, बेइज्जती ।

ધિંગાણાખોર (वि.) झगड़ालू, लड़ाका, टंटाखोर, फसादी।

ધિંગાણું કરવું (क्रि.) शोर करना, होहल्लामचाना, ऊधम करना ।

ધિંગું (वि.) बड़ा, मोटा, पुष्ट, हृष्ट, कट्टा, तगड़ा।

ધિટાઈ, ધીટાઈ (वि.) ढिठाई, धीरता, चालाकी, शेखी ।

ધિર્ષાળો (सं.) डाहकरनेवाला मनुष्य, ईर्ष्यालु, कुढ़नेवाला ।

ધી (सं.) समझ, बुद्धि, मति, ज्ञान।

ધીકવું (क्रि.) गर्म होना गरम होना ।

ધીજ (स.) अग्नि वा जलद्वारा परीक्षा, कठिन परीक्षा ।

ધીટ (सं.) बहादुर, ढीठ, साहसी।

ધીડી (सं.) बेटी, पुत्री, लड़की, तनया । [ठोकना ।

ધીબવું (क्रि.) मारना, पीटना,

ધીમાધીબ (सं) देखो ધમધૂમ

ધીમર–ઢીમર (सं.) एकजाति विशेष, कहारजाति, मछुआ, मछवाहा, मछली पकड़नेवाला ।

ધીમું (वि.) सुस्त, शिथल, आलसी, कोमळ, धीर, मन्द, धैर्यवान ।

ધીમેધીમે (क्रि. वि) मन्दमन्द, आहिस्ता आहिस्ता, शनै. शनैः, धीरे धीरे ।

ધીર (सं.) धैर्यान्वित, पंडित, बलवान, अचंचल, सुस्थिर, शान्त, स्थिरमता, विनीत, शिष्ट, बुद्धिमान।

ધીરજ (सं.) धैर्य, धीरता, स्थिरता, सब्र, सन्तोष, तसल्ली ।

ધીરજ આપવી (क्रि.) धैर्य बंधाना, तसल्ली देना, सन्तोषदेना ।

ધીરજ પકડવી–રાખવી (क्रि.) सब्र करना, धैर्य धरना, सन्तोष रखना, राह देखना, इन्तजार करना ।

ધીરજવંત–વાન (वि.) सन्तोषी, धैर्ययुक्त, स्थिर, धीरता युक्त ।

ધીરધાર (वि.) फायदेसे व्यापार सम्बन्धी देनलेन ।

ધીરવું (क्रि.) ऊधार देना, किराये पर देना, अगाऊ देना, पेशगी देना ।

ધીરે (क्रि. वि.) देखो धीमे

ધીરે સાંસતે (क्रि. वि.) शांतिसे, सन्तोषसे, ठंडाईसे नम्रतासे ।

ધીરું (वि.) धीमा, ठंडा, शात, सुस्त।

ધીરો (सं.) पूर्ववत, आश्रय, सहारा, खंभ, संभालनेवाला ।

ધુંઅર–વર (वि.) देखो धुमर

ધુંધ–ઓ–વો (सं.) धूम्र, धुआ, धूम, अग्निपताका, अग्निचिन्ह, वाष्पविशेष ।

ધુજતુ–ધ્રુજવું (वि.) थरथराता हुवा, कम्पित, हिलता हुवा ।

ધુજારી (सं.) कंपकपी, थर्राहट, थरथरी ।

ધુજવું–ધ્રુજવું (क्रि) कांपना, थर्राना, धूजना, हिलना, थरथराना, कंपित होना ।

ધુજારી–રો–ધ્રુજારી (सं.) कंपकपी, थर्राहट, थरथरी, कांप, धुज, खौफ, डर ।

ધુજાવવું (क्रि.) कंपाना, थर्राना, डराना, डर पैदा करना ।

ધુડવું (क्रि) ढूंढना, खोजना, तलाश करना, तलाशना । [हुवा।

ધુણતું (वि.) ऊंघता हुवा, हिलता

ધુણવું (क्रि.) हिलाना, सिरहिलाना, ऊंघना

ધુણાવવું (क्रि.) हिलाना, सर झुकाना, धुनाना ।

ધુણી (सं.) धूनी, धुंवायुक्त अग्नि ।

ધુતકારવું (क्रि.) फटकारना, भर्त्सना करना, दुतकारना, घृणा करना ।

ધુતવું (क्रि.) धोका देना, छळ करना, कपट करना, ठगना ।

ધુતારો (सं.) धोका, छळ, कपट, पाखंडी, ठग ।

ધુતાવું (क्रि.) धोका खाना, ठगे जाना, कपटमें फंसना, छले जाना।

ધુંદ (वि.) कुहर, अंधेरा, धुंध, तम, धुंधकार ।

ધુંધળું (वि.) धुंधला, धुधला, अस्वच्छ, अप्रकाश, धुँधला ।

ધુંધવાળું (वि.) धुँवेला, धूम्रयुक्त, धुआँसा, धुन्धयुक्त ।

ધુંધળકું–ળું (सं.) ऊषा, सवेरा, भिनसारा, अमृतवेला, सूर्योदय से पूर्व का समय (वि.) धुंधला, कुहरे सा, अस्वच्छ, कुछप्रकाश कुछ अंधकार ।

ધુધુ (सं.) भेरी का शब्द, तुरही का शब्द, तुरम का शब्द, बिगुल की आवाज ।

ધુન–ધુન (सं.) लौ, अभिलाष, मनोरथ, अभ्यास, चसका, चित्तकी एकाग्रता ।

ધુપડું (सं.) देखो ધુપેલ

ધુપણું (सं.) धूपदान, वहपात्र जिस में अग्नि रखकर धूप दी जाती हो,

ધુપવું (क्रि.) धूपदेना, अग्निपर गुग्गुलादि सुगंधित पदार्थ जलाना ।

ધુપેલ (सं) खुशबूदार तेल, सुगन्ध युक्त तेल । [धाम-धाम,

ધુમ–ભાધુમ–ધોકાર–(सं.) देखो

ધુમસ–ધુમસ (सं.) कोहिरा, धुंध।

ધુમસીલું (वि.) धुंधला, अस्वच्छ,

ધુમવું (क्रि.) उड़ाना, घुमाना ।

ધુમાડિયું (सं.) चिमनी, धुँआ, जाने का मार्ग, कज्जलध्वज।

ધુમાડો (सं.) धुआँ, धूम, धूम। :

ધુમાવું (वि.) धुआँदार, चिड़ चिड़हा, सूखा, उदास, मुहँफुला ।

ધુમેર (सं.) कुहिरा, कुहर, धुंध ।

ધુમેરિયુ (वि.) कुहिरायुक्त, धुंधला धुआँसा ।

ધુરછટ (सं.) धुंधलापन ।

ધુરંધર (वि.) धुरीण, भारवाहक, प्रधान, नेता, मुखिया, अगुवा, बड़े कामों का प्रबन्ध करनेवाला ।

ધુરપત (सं.) चालाकी, चतुरता धूर्तता, गुणकारी यत्न ।

ધુંવાડિયું (सं.) चिमनी, काच की दीप प्राचीर, कज्जलध्वज ।

ધુંવાડો (सं.) देखो ધુંમાડો

ધુંશળ–સરી (सं.) जुआ, जूड़ा, नथना, नाथ, जोत ।

ધુસ્કો (सं.) आकस्मिक अश्रु प्रवाह, अचानक आँसुओं का बहाव ।

ધુળ (स.) धूल, धूलि, मृत्तिकाचूर्ण, धूरि, रज, रेत, रेणु ।

ધુળકોટ (स.) धूल का ढेर, रेणु समूह, मिट्टी का ढेर ।

ધુળધાણી (सं.) नाश, बर्बाद नष्ट, विध्वंस, पराजय, हार, विफल, दिवाला।

ધુળધોયો (सं॰) वह मनुष्य जो स्वर्णकार की भट्टी की राख और उसकी दूकान आदि के सामने की धूल मट्टी एकत्रित कर उसे धोकर उसमें स्वर्ण चाँदी आदि खनिज धातु को निकाल लेता है।

ધુળાડો (सं.) देखो ધુળકોટ

ધુળભળવું-ભીળવું (क्रि.) धूलमें मिलजाना, मिट्टीमें मिलजाना, बिलकुल नष्ट होजाना, (वि.) मैला, गन्दा, धूलयुक्त, गंदला, कचरा कूड़ा।

ધુળ ફાકવી (क्रि.) उदरपोषण के कार्य से रहित होना, धूल खाना रोजगार से छूट जाना, उदर पोषण का आश्रय छूटना।

ધુળમાંથી સોનું મળવું (क्रि.) "धूल में से सोना मिलना, बिल्ली के भागों छींका टूटना, भाग्योदय होना।

ધુળમુંભી (क्रि. वि.) चिंता नहीं, फिकर नहीं, कुछ परवा नहीं, कुछ मुज़ाका नहीं, धूलकी।

ધુળ પડી (विस्म.) भर्त्सना प्रदर्शक शब्द, शर्म, खेद।

ધુળપર ટેકું (सं.) अपमान, लज्जा।

ધૂતો (सं.) वंचक, छली, ठग, कपटी, धूर्त, चालाक।

ધૂપ (सं) रौद्र, घाम, तपिश, किरण, तड़का, तावड़ा, तावड़का, सुगन्ध काष्ट विशेष, गुग्गुल, जलाने की सुगन्धित वस्तु।

ધૂપઘડી (सं) एक यंत्र जिससे, सूर्य की छाया या चलन द्वारा समय देखा जाता है।

ધૂપછતરી (सं.) सूर्य रश्मिया के प्रचंड ताप से रक्षा करनेवाला छत्र, छतरी जो धूप से रक्षा करे।

ધૂપદાની (सं.) वह पात्र जिसमें अग्नि रख कर सुगन्धित द्रव्य जलाया जाता है, धूपाड़ा, आरती पात्र।

ધૂપદીપ (सं.) आरती, धूप या दीपक लेकर मूर्तिया देवताके आगे दाहिनी ओरसे बाई ओर को घुमाना, पूजापाठ, पूजन।

ધૂમ (सं.) धूम्र, धुआँ, अग्नि, अग्निपताका, अग्निसे निकले परिमाणु (क्रि. वि.) शीघ्रतासे, चतुरतासे, शक्तिपूर्वक, बलसे।

धूमकेतु (सं.) पुच्छलतारा, पूछलतारा, ग्रहभेद, शिखायुक्त धूमके आकार का तारा, उत्पातका चिन्ह विशेष उत्पातका प्राकृतिक चिन्ह केतुग्रह ।

धूमस (सं.) देखो धुमस

धूम्र (सं.) कृष्ण रक्त मिश्रितवर्ण, कृष्ण लोहितवर्ण, खररोम, सदश, धुआँ, धूम, अग्निसे निकले परिमाणु, अग्नि चिन्ह ।

धूम्रपान (सं.) तमाखूका धूमपीना, तमाखू बीड़ी, हुक्का, चिलम आदि पीना, धुआँ पीना ।

धूर्त (वि.) वञ्चक, प्रतारक, शठ, खल, चालाक ।

धूसो (सं.) लोई, ऊर्ण वस्त्र विशेष, एक प्रकार का ऊनी कपड़ा धुस्सा धुस्सा ।

धूळ (सं.) रज, कण, रेणु, धूल, धूर, धूरि, मिट्टी ।

धेखुशाळी (सं.) प्रथम गर्भा स्त्री, वह स्त्री जो पहिले पहिल गर्भवती हो ।

धेड गुजराती (सं.) मिली हुई भाषा, मिश्रित भाषा या बोली ।

धेड गुजरी (सं.) भाषाओं का अनियमित मिश्रण, भाषाओं का गँवारू मेल ।

धेड फजेती (सं.) सार्वजनिक अपमान, सबों के आगे अपमान, अत्यंत फजीहत ।

धेडवाडो (सं.) नीचों के रहने का स्थान, भंगीपुरा, देखो ढेडवाडो ।

धेडशृं (सं.) छोटा लौस कद्दू का लौकी का वृक्ष, पौधा विशेष ।

धेडिंयु (सं.) नीच, कमीन, निम्न, क्षुद्र । [ढेढ़ ।

धेडो (सं.) महत्तर, भंगी, डोम,

धेखु (सं.) प्रथम गर्भा स्त्री, वह स्त्री जो प्रथम ही गर्भ धारण कर ।

धेन-नु (सं.) गाय, गऊ, गौ ।

धेनुक (सं) सवत्सा, गौ, नव प्रसूता, गऊ, दुधार गाय ।

ध्येय (सं.) ध्यानाई, ध्यान, गम्य, स्मरणीय, ताकने योग्य ।

धैर्य-ता (सं.) धीरज धीरता, स्थिरता, अचाबल्य, क्षमा, सहिष्णुता, सब्र, शांति, तसल्ली ।

धैर्यवंत-वान (वि.) दृढ़, धीर, शांत, धैर्यशाली, स्थिरता विशिष्ट धीरता पूर्ण ।

धोडो (सं.) पाहन. पाषाण, पत्थर ।

धोसो (सं.) ओढ़ना एक प्रकार का वस्त्र विशेष, धुस्सा ।

ધોઈ (सं.) प्रक्षालन साफ, पखार पानी से शुद्ध करने की क्रिया ।

ધોકડું (सं.) रुई की गांठ, कपास की गठरी या गट्ठा ।

ધોકતી (सं.) छुरे का म्यान ।

ધોકારાબંધ (क्रि. वि.) धड़ाका बन्द, धूमधामसे, चमकदमकसे, भड़कीलेपन से, कामयाबी से ।

ધોકો-ક્કો (सं.) मोटा डंडा, लठ्ठ, लाठी, बदनसीबीकी चोट, धक्का, टक्कर, खतरा, भय, डर, पछतावा, प्रायश्चित्त, जोखिम, दैव गति ।

ધોખો (सं.) धोका, भय, डर, रंज, अफसोस, शोक, दुःख, खेद।

ધોણ-વણ (सं.) मांड, उबले हुए चावलों का धोया हुवा जल, चांवलों का पानी ।

ધોત (सं.) जलप्रपात, झरना, पानी का पतन, आघात ।

ધોતર (सं.) धोती, लज्जानिवारक वस्त्र, धोत वस्त्र, कमर में पहिनने का वस्त्र ।

ધોતાપ (सं.) खुले हाथों का, खर्चीला, उदार, फैयाज़, मुक्त हस्त ।

ધોતાપણું (सं.) उदारता, सखावत, दिर फैयाज़ी, खर्चीलापन मुक्त हस्तता ।

ધોતિયું (सं.) देखो ધોતર ।

ધોધ-વો (सं.) देखो ધોત ।

ધોધો (सं.) जल प्रपात की टक्कर, पानी के गिरने की टक्कर, झरने के झरने का शब्द ।

ધોબાં (सं.) ईंटें, इष्टका ।

ધોબી (सं.) कपड़े धोने वाला, जाति विशेष, रजक ।

ધોબીગ (सं.) वस्त्र धोने का स्थान, धोबीघाट, घाट ।

ધોબો (सं.) मूर्ख, बुद्धिहीन, गंवार।

ધોબટી (सं.) उस्तरे का या छुरे का घर या म्यान ।

ધોબણ (सं.) धोबिन, धोबी की स्त्री, कपड़े धोनेवाली, रजकी ।

ધોભી (सं) देखो ધોબી

ધોળીચારીઓ-યો (सं.) खंजन पक्षी, खंडरिच, पक्षी विशेष ।

ધોયલું (वि.) शुद्ध, पवित्र, धुला हुवा । [हुवा ।

ધોયું (क्रि.) धोया हुवा, धुला ।

ધોરણ (सं.) परम्परागत, क्रमागतरीति, जीविका आश्रय, सहारा झुकाव, ढलाव, अभिप्राय, प्रवृत्ति तात्पर्य्य ।

ધોરિંધર (सं.) देखो धुरंधर ।

ધોરી (वि.) बड़ा, मुख्य, खास आप, सामान्य ।

ધોરીયો (स.) मोरी, नाली, खान में का रास्ता, कुतुब ।

ધોરીનસ—રગ (सं.) मुख्य नस, रक्तवाहिनी नाड़ी, जो सारे शरीर में रक्त फैलाती है वह नाड़ी ।

ધોરી રસ્તો—રાહ (सं.) ऊंचा मार्ग, मुख्य मार्ग, सदरद्वार, सीधी यात्रा, बड़ी सड़क ।

ધોરો (सं.) सीनेतक ऊंची दीवार, मोर्चे की दीवार ।

ધોલધપાટ (सं.) धौल धप्पा, थप्पड़, और घूंसा, ठोकपीट ।

ધોલાઈ (सं.) देखो ધોલામણ

ધોવડાવવું (क्रि.) धुलाना, साफ कराना, धुलवाना, शुद्ध कराना ।

ધોવાઈ જવું—વું (क्रि.) धुल जाना, पानी से पवित्र किया जाना, साफ हो जाना ।

ધોવામણ, ધોવણ, ધોવાઈ (सं.) धोने की मजूरी, धुलवाई ।

ધોવું (क्रि.) धोना, कपड़े धोना, पानी से साफ करना, शुद्ध करना साफ करना, उजला करना ।

ધોળ (सं.) एक प्रकार का गीत ।

ધોળવું (क्रि.) पोतना, चुणकारी होना ।

ધોળાસ (सं.) सफेदी, धवलता ।

ધોળાસ પડતું (वि.) कुछ कुछ श्वेत, थोड़ा सफेद, कुछ सफेदी, लिये हुए ।

ધોળુ (सं.) धौला, धवल श्वेत, सफेद, उज्वल, शुक्ल, शुभ्र ।

ધોળે દિવસે (क्रि. वि) दिनदहाड़े, खुले मैदान, सरेबाजार ।

ધોળેલું (क्रि.) सफेदी किया हुआ, पोता हुआ ।

ધ્યાતા (वि.) ध्यान कर्ता, विचा- [रक सोचनेवाला ।

ધ્યાન (सं.) सोच, विचार, चिंता, स्मरण, अनुध्यान, ज्ञातवस्तु का पुनः स्मरण, लौलगाना, खयाल, उत्कंठापूर्वक स्मरण ।

ધ્યાનવાળુ—ની (वि.) ध्यानकर्त्ता, ध्यान करनेवाला, ध्यान लगानेवाला. जपी, योगी ।

ધ્યાસ (सं.) गुप्त ध्यान, छुपे विचार ।

ध्येय (वि.) ध्यानार्ह, ध्यान योग्य, स्मरणीय।

ध्रुजववुं (क्रि.) देखो ध्रुजववुं

ध्रुजवुं (क्रि.) देखो ध्रुजवुं

ध्रुम्रट (सं.) धुंधारी देखो

ध्रुपद (सं.) राग विशेष,

ध्रुव (वि.) निश्चित, स्थिर, अचल, दृढ, अटळ, नित्य (सं.) तारा विशेष, उत्तानपाद का पुत्र, पृथ्वी के ध्रुव, उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव। दक्षिणीय और उत्तरीय केन्द्रों के ऊपर का भाग।

ध्रुवपद (सं.) अटलपद, स्थिरदशा, गान में निश्चित स्थान, ध्रुपद।

ध्रुववृत्त (सं.) पृथ्वी के अंतिम भाग का घेरा, ध्रुववृत्त।

ध्वंस-स (सं.) नाश, क्षय, हानि, क्षति, बरबादी, नुकसान, नष्ट।

ध्वज (सं.) ध्वजा, केतु, पताका, झण्डा, फरहरा, निशान, झण्डी।

ध्वनि (सं.) शब्द, अवाज, सुर, स्वर, बोल, नाद, रव, निनाद।

न

न-गुजराती वर्णमाला का ३१ वां अक्षर, तवर्गका पंचम अक्षर, बसिवां व्यन्जन।

न (क्रि. वि.) निषेधार्थक अव्यय, नहीं, अभाव, मत, बिन अनि, रोक मना, निषेध।

नकटुं (वि.) नकटा, नककटा, नासारहित, नासिकाहीन, निर्लज्ज, बेशरम, बेनाक का।

नकराभणु (नकराभणु) (सं.) हुंडी के न सिकरने पर उसकी क्षति पूर्ति हुंडी लेनेवालेको उसके न सिकरने पर क्षतिपूर्त्यर्थ दिया हुवा बट्टा।

नकरी-आ (वि.) विना कर का, कररहित, निःशुल्क, बिनाफीस।

नकरुं (वि.) शुद्ध, पवित्र, अमिश्रित, सत्य, खरा, सचा।

नकल (सं.) अनुकरण, प्रतिरूप, हस्तलेख, उतार, मेळ, प्रतिलिपि, अनुरूप, किस्सा, कहानी।

नकल करवी (क्रि.) नकल करना, अनुकरण करना, मिलता हुवा काम करना, हुबहु काम करना।

नकलखोर--ची--चीओ (सं.) नकल करनेवाला, नकल उतारने वाला, भाण्ड, नकली, भांड बहुरूप धारण करनेवाला, बहुरूपिया, स्वांगी, नाटकी।

नकशी (सं.) नक्काशी, खुदाईका काम, जेवर, आभूषण अलंकार।

નકશીગર (सं.) नक्काश, खोदने-वाला, नक्श करनेवाला, मूर्तिकार, लकड़ी या पत्थर पर हस्तकौशल का काम करनेवाला।

નકશીદાર (सं.) अलंकृत, खुदा हुवा, चित्रित, तराशा हुवा, नकश किया हुवा, सुसज्जित।

નકશો (सं.) डौल, ढांचा, चित्र, नकशा, चित्रपट, मसौदा, रूप-रेखा, खसरा।

નકામું (वि.) निकाम, व्यर्थ, फुजूल, बेफायदा, निरर्थक यूंही, बेकाम।

નકાર (सं.) नहीं, , अस्वीकार, प्रतिषेध, निषेध, नाहीं, इन्कार।

નકારવું (क्रि.) नाहीं करना, इन्कार करना, अस्वीकार करना, नामंजूर करना, निषेध करना।

નઠારૂં (वि.) निकम्मा, मैला, गन्दा, अपवित्र, दुष्ट, नटखट।

નકાશો–સો (सं.) देखो નકશો

નકીબ (सं.) प्रवेशक, मुलाकात करानेवाला, चोबदार, आगे चलनेवाला।

નકીર (सं.) लाइन, सतर, लकीर, रेखा, लेन, रुलीट, रूल।

નકુચો (सं.) कब्जा, तुकमा, कुंडा, नकूचा, नकुचा।

નકુલ (सं.) नेवला, न्योला, नेउला, जीव विशेष, चौथा पाण्डव।

નકોડો–ડો (वि.) कठिन, कठोर, कड़ा, (व्रत)।

નક્કર (वि.) भारी, कठिन, गाढ़, ठोस, सख्त, घना, संक्षेप, वजनदार।

નક્કલ (सं.) देखो નકલ

નક્કી (वि.) ठीक, उचित, निश्चित, मुनासिब, परिमित, असली, स्थिर, पक्का।

નક્કી કરવું (वि.) निश्चित करना, ठीक करना, पूर्ण करना, स्थिर करना, पक्का करना।

નક્ર (सं.) मगर, घड़ियाल, नक्र, जल जन्तु, विशेष, मच्छ, ग्राह, कुंभीर, नाका।

નક્ષત્ર (सं.) तारा, तारक, सितारा, २७ नक्षत्र, नखत, तारागण, तारामंडल।

નખ (सं.) नाखून, नखून, नखर, अंगुलियों का अग्र भाग कठिन चर्म विशेष।

નખ જેટલું (वि.) छोटा, तुच्छ, बिलकुल छोटा, नन्हा, थोड़ासा, अत्यल्प।

નખતેલ (સં.) तारपीनका तेल, पन्ना पिरोजाका तेल, एक प्रकारका तेल।

નખચન્દ્ર (સં.) नाखूनों का चांद।

નખછર (સં.) अंगुली की जड़ में फटा हुआ चर्म।

નખદાર (વિ.) नाखूयुनक, पंजोंदार, पंजेवाला।

નખદિયું (સં.) चीर, फाड़, दुख, तकलीफ, कष्ट।

નખભર (વિ.) नाखूनों सहित।

નખરાં (સં.) चोंचला, हावभाव नाज़, मटकचटक।

નખરાંદાર (વિ.) नखरेवाला, नाज़रीन, हावभावपूर्ण, गर्वित।

નખરાંબાજ (વિ.) नखरा करनेवाला, हावभाव प्रकट करनेवाला।

નખરાબાજી (સં.) चोंचला, हावभाव, नाज़, नख़रा।

નખરી (સં.) मनमोहनी, चोंचला करनेवाली, नखरेदार।

નખરૂડ (સં) देखो નખછર

નખરૂડો (સં.) पूर्ववत्।

નખલો (સં.) एक प्रकारका अलंकार जो कपालपर पहिना जाता है

નખશીખ (ક્રિ. વિ.) समस्त, एड़ीसे चोटी, आदिसे अन्ततक, नखसे पैरतक संपूर्ण शरीर।

નખી (વિ.) नख विशिष्ट, नखील, नखधारी, नखवाला।

નખેતર (સં.) देखो नक्षत्र

નખોદ (સં.) बिलकुल बर्बाद, बिलकुल नष्ट, सर्व नाश।

નખોદિયું (વિ.) नाशक, नाशकारक, नष्टकारक, बर्बादी।

નખોરિયું (સં.) नाखून या पंजोंद्वारा चीरनं या खरोंचन।

નગ (સં) पहाड़, पर्वत, जेवर, भूषण, आभूषण, वृक्ष, पेड़।

નગણું-રૂં (વિ.) अधन्यवादी, कृतघ्न, नुगरा, निगुरा, बे गुरुका।

નગદ (વિ.) नकद, रोकड़, रुपया।

નગદી (સં.) सोना, या चांदी, रुपया, पैसा, बहुमूल्य वस्तु, मूल्यवान वस्तु।

નગર (સં.) पुर, ग्राम, बड़ा नगर, गांव, कस्बा, शहर, बस्ती।

નગરશેઠ (સં.) नगरका मुखिया, नगरमें सबसे अधिक द्रव्यवान।

નગરી (સં.) छोटा गांव, छोटा नगर, छोटा कस्बा, छोटा शहर, छोटी बस्ती।

નગારખાનું (સં.) वह स्थान जहां नौबत बजतीहों या रखीजातीहो, ढोल रखनेकी जगह, नगारखाना।

નગારચી (सं.) नक्कारे बजाने वाला, नौबत बजाने वाला, ढोली, ढोल बजाने वाला ।

નગારું (सं.) ढोल, नगारा, नौबत, दुंदुभि ।

નગીનો (सं.) मूल्यवान पत्थर, हीरा, नयनाभिराम, देखने में खूबसूरत, साफ, स्वच्छ, दर्शनीय नगीना ।

નગોડ–ર (सं.) एक प्रकारका पौदा, पौधा विशेष ।

નગ્ન (सं.) नगा, वस्त्रहीन, दिगम्बर।

નઘરોળ (सं) बे फिक्र, बेपरवाह, निश्चित, चिंतारहित ।

નંખાવું (क्रि.) झुकना, सहारा लेना, पड़ना, पड़ जाना, फेंके जाना।

નંખાઈ જવું (क्रि.) कय करना, उल्टी करना, वमन करना, साहसहीन होना ।

નંગ (सं.) जवाहिर, मणि, अपने कुल का गर्व, एक वस्तु, एक जेवर।

નચાવવું (क्रि) नचाना नृत्य कराना।

નચિંત (वि.) बे फिक्र, बेपरवाह, चिन्तारहित, निश्चिंत, नचीत ।

નચિંતપણું (सं.) बे फिक्री, निश्चिंतता, बे परवाही ।

નચિંતાઈ (सं.) पूर्ववत्

નચુકો (सं.) देखो नकूचो।

નજીવું (वि.) मूल्यहीन, निर्बल, जिस के कारण नहीं ।

નજીક (क्रि. वि.) निकट, पास, समीप, अदूर, आसपास ।

નજર (सं.) दृष्टि, निगाह, ध्यान, ख़याल, विचार, कृपा, दया, इनाम, भेट, बुरी निगाह ।

નજર ઉતારવી— વાળવી (क्रि.) टोने टुटके से लगी हुई नजर को उतारना, बुरी दृष्टि को मंत्रों से उतारना, नजर उतारना ।

નજર ઉતારી નાંખવી (क्रि.) कृपादृष्टि न रखना, दयादृष्टि हटा लेना, असतुष्ट होना ।

નજર કરવી (क्रि.) देखना, घूरना, ताकना, दृष्टि करना ।

નજર કરવું (क्रि.) भेट करना, बलि करना, चढाना, सेवा में उपस्थित करना, देदेना, सन्मान पूर्वक किसी वस्तु को देना ।

નજર વાળવી (क्रि.) खूब ध्यान देना, सोचना, ध्यान मग्न होना ।

નજર ચુકવી (क्रि.) निगाह चूकना, गलती होना भूलना ।

નજર ચુકાવવી (क्रि.) निगाह बचाना, आंखें चुराना, दृष्टि बचाना, धोका देना, बचना ।

નજર રાખવી (क्रि.) निगाह रखना, खबरदारी रखना, चौकसी रखना, दृष्टि रखना, आंख रखना।

નજર ફાટવી (क्रि.) दृष्टि फटना, निगाह फटना, नजर फटना, आंखें फटना।

નજર લાગવી (क्रि.) कुदृष्टि द्वारा हानि होना, नजर लगना।

નજરકેદ (वि.) पहिरे में कैद, कड़े पहिरे में, रखवाली में, साधारण कैद, साधारण कारावास।

નજરચૂક (सं.) भूल, गलती, चूक चौकसी, निगरानी।

નજરચોર (सं.) आंखें बचा कर काम करनेवाला, आंखें चुरानेवाला, दृष्टि बचानेवाला, दृष्टिचोर।

નજરનો ખેલ (सं.) आंखों का खेल, दृष्टि का खेल, नजरबन्दी का खेल, आंखों को धोका देने का खेल।

નજરનો ખોટા-પાપી (वि.) दुष्टदृष्टिवाला, जिसकी बुरी निगाह हो, दुष्ट।

નજરબંધ (सं.) जंत्री मंत्री, जादू टोना जाननेवाला, जादूगर।

નજરબંદી (सं.) जादूगरी, आंखों को धोका देकर किया हुआ काम, इन्द्रजाल।

નજરબાજ (सं.) शौकीन मनुष्य, तेज दृष्टि का आदमी।

નજરભૂલ (सं.) देखो નજરચૂક

નજરાણું (सं.) नजराना, भेट, उपहार, पुरस्कार, बलि।

નજરોનજર–રેનજર (क्रि. वि.) मुलाकात, भेट, सलाह, पारस्परिक दृष्टि।

નજલો (सं.) गठिया, सर्दी, श्लेष्मा, नजला रोग विशेष।

નજીક (क्रि. वि.) देखो નજદીક

નજીવું (वि.) निकम्मा, गुणहीन, तुच्छ, छोटा, हलका, सत्वहीन।

નજસ (वि.) मैला, गंदा, बदमिजाज़, खराब, गंदला, भ्रष्ट, अपवित्र।

નજુમ (सं.) ज्योतिष, फलित ज्योतिष, ताराओंकी स्थिति से मनुष्यों का कर्मफल बताने की विद्या।

નજુમી (सं.) ज्योतिषी, फलित ज्योतिषी, भविष्यवक्ता, खगोलज्ञ।

નટ (सं.) नर्तकोंकी एक जाति, नर्तक, नचवैया, भांड, कौतुकी, मायावी, खिलाड़ी।

નટખટ (वि.) दुष्ट, उद्दंड, चंचल, बुरा, पाजी, बदमाश, लुच्चा, झूठा, दगाबाज, छली, अवारा।

નટણી (सं.) नटी, नटकी भार्या, नर्तकी, नाचनेवाली ।

નટવર (सं.) नटों में श्रेष्ठ, प्रभु श्री कृष्णचन्द्र, सिरा या चोटी ।

નટવાઈ (सं.) नटों का काम, रस्सों के ऊपर नाच, नृत्य, विशेष।

નટવો (सं.) नाचनेवाला, नट, रस्सोंपर नाचनेवाला ।

નટી (सं.) नटकी, स्त्री, नाटकों मे सूत्रधारकी स्त्री, खिलाड़िन ।

નટેશ્વર (सं.) महादेव, शिव ।

નઠારું (वि.) बुरा, दुष्ट, बदमाश, निकम्मा, निठल्ला ।

નઠોર (सं.) निर्लज्ज, बेशर्म, लज्जारहित, बेपरवाह, गुस्ताख, ढीठ । [बाधा, आड ।

નડ-તર (सं.) रोकटोक, अटकाव

નડ-ઠેડી (स.) नीच वर्ण का मनुष्य, नीच वर्ण, कमजात आदमी ।

નડવું (क्रि.) रोकना; अटकाना, ठहराना, अडाना, बाधा डालना।

નડાવ (सं.) देखो नड

નણંદ-ણદી (सं.) पति की भगिनी, पति की बहिन, ननंद ।

નણદોઈ (सं.) पतिकी बहिनका पति, ननंद का पति ।

નતભાગ-તાંશ (सं.) शिरोबिन्दु का अंतर, समयान्तर, ऊर्ध्व दिशा का फासला, झुका हुवा हिस्सा, मुड़ा हुवा भाग ।

નતીજો (सं.) परिणाम, फल, नतीजा, फैसला, असर ।

નથ-થણી (सं.) नाक में पहिनने की बाली, नाक का आभूषण विशेष ।

નથી (क्रि. वि) न, नहीं, मत, ना, ऊंहूं:, नहीं है ।

નદ (सं.) बड़ी नदी ।

નદાવો (सं.) उऋणता, बेबाक, रसीद, भरपाई, छूट, अनधिकार, बे हक्क ।

નદી (सं.) सरिता पर्वतों से निकला हुवा वह जलस्रोत जो समुद्र में जा कर मिले ।

નધણિયાતું (वि.) स्वामीरहित, बे मालिक का जिस का कोई मालिक न हो । [गुमनाम, नामहीन ।

નનામું (वि.) बे नाम, नामरहित,

નંદ (सं.) कृष्ण, श्रीकृष्णचन्द्र के समान गुणी या चतुर ।

નંદછળ (सं.) नंद की बालक्रियां, नन्द के छल कपट ।

નંદન (सं.) पुत्र, तनय, बेटा, सन्तान, आनन्ददायक, प्रवासक, इन्द्र का बगीचा, स्वर्गीय उपवन ।

નંદની (सं.) पुत्री, बेटी, तनया, लड़की, कन्या, छोरी ।

નંદવવું (क्रि.) तोड़ना, खंडन करना, टुकड़े टुकड़े करना, चीरना।

નંદિની (सं.) पुत्री, बेटी, लड़की पार्वती का नाम महादेवजीकी स्त्री।

નંદી-કેશ્વર (सं.) शिव का द्वारपाल, शिव का अनुचर, शिववाहन, शंकर का बैल ।

નન્નો (स.) अक्षर " न ", तवर्ग का पंचमाक्षर, निषेधार्थक शब्द ।

નપાટ (सं.) निर्लज्ज, बेशर्म, बेहया, खुले मुहं, लज्जारहित ।

નપુંસક (सं.) क्लीब, हिजड़ा, नामर्द, पुंसत्वहीन, पुरुषत्वहीन।

નપુંસકલિંગ (स.) व्याकरणशास्त्र में लिंग विशेष, तृतीय लिंग ।

નપુંસકપણું (सं.) क्लीबत्व, नामर्दी, नपुंसकता, निर्बलता ।

નફટ (वि.) देखो નપાટ

નફટાઈ (सं.) ढिठाई, धृष्टता, शेखी, गुस्ताखी ।

નફતેલ (सं.) एक प्रकार का तेल, खनिज पदार्थ जैसे कोयला आदि वस्तुओं का तेल ।

નફર (सं.) कमीना, नीच, नौकर सेवक, भृत्य ।

નફરત (सं.) घृणा, जुगुप्सा, घिनघिनी, चिढ़ । [करी, मुलाज़मी

નફરી (सं.) सेवा, खिदमत, नौ-

નફસ (सं.) पशुजीवन ।

નફસપરવર (सं) विषयी, ऐयाश, कामी, इन्द्रियों के वशीभूत, इन्द्रियप्रिय । [ऐयाशी, आरामी ।

નફસાની (वि.) आनन्दी, विलासी,

નફસાનીઅત (सं.) भोगविलास, ऐशइशरत, आनन्दभोग ।

નફસી (वि.) शारिरिक, दैहिक, विषयी।

નફાકારક-વાળું (वि.) लाभप्रद, फायदेमन्द, लाभदायक, हितकारी।

નફેરી (सं.) एक प्रकार का ढोल, वाद्य. विशेष, नफीरी । [मुनाफा।

નફો (सं.) लाभ फायदा, फल,

નફોટોટો (सं.) हानि लाभ, फायदा और नुकसान ।

નફ્ફટ (सं.) निर्लज्ज, बेशर्म, बेहया, लाजरहित, मुहंफट् ।

નફ્ફર (सं.) देखो નફર

નબજ (सं.) नाड़ी, नब्ज, नस ।

નબળાઈ (सं.) निर्बलता, कमजोरी, अशक्तता, बलहीनता, दुर्बलता ।

નબળું (वि.) कमजोर, अशक्त, दुर्बल, अबल, निर्बल शक्तिहीन ।

નભ (सं.) आकाश, गगन, आस्मान, बादल, मेघ, घन ।

નભવું (क्रि.) निभना, चलना, निर्भर रहना, चलना, सरोसे चलना।

નભાવ (सं.) निर्वाह, गुजारा, गुजर।

નભાવવું (क्रि.) चलाना, चलाना, निबाहना, गुजारा करना, निर्वाह करना।

નમક (सं.) नोन, क्षार, लवण।

નમણું (वि.) रूपवान, सुन्दर, खूबसूरत।

નમતું (सं.) झुका, नामित, नम्र।

નમદો (सं.) मोटा ऊन का खुरदुरा वस्त्र, ऊनी कपड़ा, नम्दा।

નમન (सं.) अधोगमन, प्रणाम, विनीत भाव, नत, नमस्कार।

નમનતાઈ (सं.) विनय, विनीतत्व, मृदुता, नम्रता, आजिज़ी।

નમનતાઈભરેલા (वि.) नम्रतायुक्त, विनीत, नम्र, विनयी, कृतप्रणाम।

નમન કરવું (क्रि.) प्रणाम करना, नमन करना, सिर झुकाना, नमस्कार करना, मान करना, झुकना।

નમનશીલ (वि.) लचीला, नर्म, तरबियत, पिजीर, झुकनेवाला।

નમનશીલતા (सं.) नरमी, लचीलापन, विनीतत्व, नम्रता, मृदुता।

નમવું (क्रि.) झुकना, मुड़ना, नमना, टेढ़ा होना, नीचा होना।

નમસ્કાર (सं.) प्रणाम, अभिवादन, अभिनंदन, सम्मान प्रदर्शन।

નમાજ (सं.) मुसलमानोंकी ईश्वरपूजा, इस्लाम धर्मकी धार्मिक उपासना, ईश्वर प्रार्थना।

નમાજી (सं.) ईश्वरभक्त, पाँचों वक्तकी नमाज पढ़नेवाला, उपासक, उपासना करनेवाला (यवन)

નમાનું (वि.) नम्र, सीधा, गरीब, शिष्ट, विनीत।

નમાયું (वि.) बे मा का मातारहित, जिसकी मा न हो, मातृहीन।

નમાર (सं.) एक प्रकारका अन्न, जो स्वयं बिना बोये ऊगता है।

નમાવવું (क्रि.) झुकाना, नवाना, लचाना, मोड़ना।

નમુનો (सं.) आदर्श, नमूना, ढाँचा, प्रतिरूप, बानगी, चखनी।

નમેણુ (सं.) भोजन बनानेका घर, बावर्चीखाना, पाकशाला।

નમેરૂં (वि.) निर्दय, बेरहम, कृपाहीन, दयारहित, कठोर हृदय।

નમોનારાયણ (सं.) एक प्रकारका नमस्कार का पर्यायवाची शब्द, प्रणामद्योतक वाक्य।

નમોત્થુણં (सं.) पूर्ववत्

નંબર (सं.) नम्बर, संख्या, तादाद

નમ્ર (वि.) विनीत, विनयी, मिलनसार, कृतप्रणाम, नरम, सीधा, मुलायम ।

નમ્રતા (सं.) विनय, विनीतत्व, मृदुता नरमी, सादगी, मुलायमी, सुशीलता ।

નમ્રતાપૂર્વક (क्रि. वि.) नरमी से विनयपूर्वक, मृदुतायुक्त, आजिजीसे।

નથ (सं.) नथुनी, नाककी बाली, औरतों के नाक में पहिननेका आभूषण ।

નયન (सं.) आंख, नेत्र, चक्षु, दृष्टि, लोचन, नैन, नजर ।

નર (सं.) मानव, मनुष्य, पुरुष, मानुष, आदमी, इन्सान ।

નરક (सं.) कष्टजनक स्थान, पाप भोगस्थान, पापात्माओं के कष्ठ भोगनेका पुराण कथित स्थान विशेष अर्थात् रौरव, कुम्भीपाक प्रभृति २१ नर्क, दोजख, यमालय, नर्क जहन्नम, गू, गोबर मल, विष्ठा, मैला ।

-નરકકુંડ (सं.) पाप भोगनेका स्थान, यातनास्थानजोकि वन्हिकुण्ड, तप्त कुंड, क्षारकुंड, आदि पुराणोपवर्णित ८६ हैं, कष्टदायक कुंड, नरक में के गढ़े ।

નરકખાડી (सं.) गंदी जगह, मैली बदबूदार जगह, भ्रष्ट स्थान, गू गोबर डालने का स्थान ।

નરકપાત્ર (वि.) धिक्कार के योग्य, निन्दापात्र, मैले का बरतन।

નરકવાસ (वि.) कष्ट में रहना दुःखी रहना, गंदी जगह में रहना यमालय का वास, नर्क वास।

નરખ (सं.) ठीक कीमत, बाजार भाव, निर्ख, निरख़, दर ।

નરઘું (सं.) एक प्रकार का ढोल वाद्य विशेष ।

નરજાતિ (सं.) मनुष्यजाति, मानवजाति, पुलिंग ।

નરડો (सं.) कंठ, गला, हलक, नरेटी, टेढुवा, प्राणनाड़ी ।

નરતાઈ (सं.) बुरापन, खराबी, दुष्टता, असत, बुराई ।

નરતું (वि.) बुरा, अनुचित, खराब, गलत, अशुद्ध, बेठीक ।

નરતો (वि.) बुरा, खराब, अशुद्ध ।

નરદમ (वि.) अमिश्रित, स्वच्छ, चोखा, शुद्ध, पवित्र, सब, पूरा, बिलकुल, अवश्य जरूर, नितान्त, स्वेच्छापूर्वक ।

નરદમ—ભતા (सं.) सत्व, मूल, सार, तत्व, अस्थि, सारपदार्थ ।

नरदेव (सं.) राजा, भूपाल, नरेश, बादशाह, नृप, भूपति, ब्राह्मण, विप्र।

नरदेह (सं.) मानव शरीर मनुष्य शरीर, मानुषिक देह।

नरनार (सं.) स्त्री पुरुष, पतिपत्नि, औरत, मर्द, नरनारी। [नरदेव।

नरपत (सं.) शासक, देखो

नरपशु (वि.) पतला, दुबला, क्षीण, निर्बल, कृश, सूखा, बारीक।

नरम (वि.) मुलायम, नर्म, धीमा शान्त, सादा, सीधा, कोमल, पतला, रसदार, चिकना, गीला, ढीला।

नरम करवुं (क्रि.) नरम करना मुलायम बनाना, गीला करना, कोमल करना।

नरमगरम (वि.) उग्रशांत, तेज मंद, शीत उष्ण, ठंडा गर्म, कोमल कठोर।

नरम पडवुं (क्रि.) नरम होना, नम्र होना, शान्त होना, मुलायम होना।

नरमदा (सं.) रेवानदी, नर्मदा नदी, मध्य भारत की नदी विशेष।

नरमाश-श (सं.) नम्रता, शांति, मुलायमी, नरमी, चिकनाई, सुशीलता।

नरमादा (सं.) स्त्रीपुरुष, पति पत्नी, नर नारी, औरत मर्द, लोग लुगाई।

नरवुं (वि.) तन्दुरुस्त, भला, चंगा, निरोग, मजबूत, मोटा, ताजा, हृष्ट पुष्ट, बलवान, पोढ़ा, बली।

नरस-सुं (वि.) बुरा, दुष्ट, खराब, पापी, हानिकर।

नरसाई (सं.) बुराई, दुष्टता, पाप, खराबी, हानि, नुकसान।

नरसिंह (सं.) विष्णु भगवान का चौथा अवतार, नरहरि, नरकेसरि।

नरहरण (सं.) मृगा, हरिण, मृग।

नरहरी (सं.) देखो नरसिंह।

नराई (सं.) तंदुरस्ती, स्वस्थता, नीरोगता, अरुग्णता। [इंढी।

नराज (सं.) बोझ उठाने की

नराणी-रेणी (सं.) नाखून काटने का औजार, नहरनी, नखरञ्जनी, नुवला, नहन, नख कटनेका शस्त्र विशेष।

નરાધમ (सं.) अधम, नीच, पापी, दुष्कारी, अपकर्मा, दुष्ट ।

નરાધિપ (सं.) नरपति, राजा, शासक, नृपति, भूपति, भूपाळ ।

નરાંત (सं.) मृत्यु, मौत, काल, देहान्त, जीवान्त ।

નરિ (सं.) जूतों के लिये बकरे का चर्म, अजा चर्म, नरी ।

નર્યું-ર્યું (वि.) शुद्ध, पवित्र, अमिश्रित, बेमेल, साफ, पाक ।

નરેડાટ (वि.) निर्जन, शून्य, उजड़ा हुवा, सूनसान ।

નરેંદ્ર-રેશ (सं.) देखो નરાધિપ ।

નરોવા કુંજરોવા (सं.) हाथी हो या मनुष्य ।

નરોજ-વરોજ (सं.) पारसियों का त्योहार दिवस ।

નર્તક (सं.) नचनिया नाचने वाला, नट, नचवैया, जोनाचे ।

નર્તકી (सं.) वेश्या, रन्डी, नाचनेवाली, नृत्य करनेवाली स्त्री ।

નર્તન (सं) नाच, नृत्य, अंग भंगी।

નલિન (सं.) पद्म, कमल, सरोज, अम्बुज, पंकज ।

નલિની (सं.) कमल का वृक्ष, पद्मलता, कमलिनी कुमुदिनी ।

નવ (वि.) नौ, ९, संख्या विशेष, नूतन, नया, ताजा, अभिनव ।

નવ ઇંદ્રિય (सं.) शरीर के नौ द्वार, नौ इंद्रियां, २ कान, २ नेत्र १ मुख २ नासिका, १ लिंग १ गुदा । [९ अंश ।

નવકુળ (सं.) नव गोत्र, नौ कुल,

નવખંડ (सं) पृथ्वी के जम्बु, भरत आदि नौ भाग, समस्त पृथ्वी, इलावृत्ति, रम्यक्, हिरण्मय कुरु, हरिभारत, केतुमाल, भद्राश्व, और किंपुरुष ये नौ खंड हैं ।

નવગણું (वि.) नौ गुना १×९ नौबार, नौलड़ा, नौघड़ी या तहका

નવગ્રહ (सं.) नौ ग्रह, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, देवगुरु, दैत्याचार्य, शनि, केतु और राहु ।

નવટાંક (सं.) सेर का आठवां भाग, $\frac{1}{8}$ शेर, आधपाव, दो छटांक ।

નવટાંકી (सं.) $\frac{1}{8}$ सेर का वजन, अधपई, आध पाव का बाट ।

નવડો (सं) ९ अंक, नौका अंक।

નવતર-વું (वि.) नया, अनोखा, हालका ।

નવતરું (वि.) पूर्ववत् ।

નવતી (सं.) कली, कलिका, कोंपल, कोमलापुष्प, पुष्प का पूर्व रूप ।

નવનાગ (सं.) नौ प्रकार के सर्प, ९ जाति के सांप, नाग विशेष ।
નવનિધિ (सं.) कुबेर का भण्डार, देवताओं के नौ खजाने ।
નવનીત (सं.) नवीन घृत नया निकला हुवा घृत, माखन, मख्खन, नैनू, नोनाघी ।
નવનીધ (सं.) देखो નવનિધિ ।
નવપલ્લવ (सं.) नये नये पत्ते, कोंपल, किसलय, नूतन पर्ण ।
નવમ (वि.) नवां, नौकी संख्या पूरक, संख्या विशेष ।
નવમાલિકા (सं.) एक भांति का पुष्प, नवमालिका, पुष्प विशेष ।
નવમી (सं.) तिथि विशेष, चन्द्रमा की नवीं कलाका क्रिया काल, कृष्ण और शुक्ल पक्ष की ९ वीं तिथि, नौमी ।
નવયૌવના (सं.) युवति, तरुणा, स्त्री, जवान औरत, नव बाला ।
નવરંગી (वि.) नाना प्रकार के रंगों का, अनेक रंगों का, बहु रंगी।
નવરત્ન (सं.) नौ प्रकार के रत्न, ९ प्रकार के मणि माणिक्यादि रत्न, नौ रत्नों का समूह, नव प्रकार के मणि, विक्रमादित्य की सभा के नौ पंडित यथा " धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंह शङ्कु, वेतालभट्ट घटखर्पर कालिदासाः । ख्यातोवराहमिहिरो नृपतेः सभाया, रत्नानिवैवररुचिर्नव विक्रमस्य।
નવરસ (सं.) नौ तरह के रस, १ शृंगार, २ हास्य, ३ करुणा, ४ रौद्र, ५ वीर, ६ भयानक, ७ बीभत्स, ८ अद्भुत और ९ शांत ।
નવરાત્ર (सं.) नौरात्रि, व्रत विशेष, वे नवरात्रियां जिन में आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से नवमी पर्य्यन्त दुर्गा का व्रतानुष्ठान किया जाता है।
નવરાવવું (क्रि.) स्नान करना, नहाना, शरीर मार्जन करना ।
નવરાશ (स.) छुट्टी, फुर्सत, आराम, अवकाश, सुख, सुभीता, सुविधा।
નવરૂં (वि) अलग, ठाला, बे काम, निर्व्यापार, बैठाहुवा, निरुद्यम ।
નવરોજ (सं.) देखो નૌરોજ
નવલ (सं.) नया, नूतन, ताजा ।
નવલખી (वि.) नौ लाख का ।
નવલસા હીરજી (सं.) जब की कोई साधारण मनुष्य अपने कार्यों को एक बड़े भले आदमी के तुल्य कहता है तब कही जाने वाली कहावत ।

નવસાર-ગર (सं) नौसादर।

નવ વિધાભક્તિ (सं) ईश्वर भक्ति के नव प्रकार, १ श्रवण, २ कीर्तन, ३ स्मरण, ४ अर्चन, ५ वन्दन, ६ चरण सेवा, ७ आत्म निवेदन, ८ दासत्व और ९ सख्य।

નવસા, નવસી (सं.) दुलहा, दुलहिन, वर वधु, लाड़ा लाड़ी, बींद, बींदणी।

નવસો (सं) दुलहा, वर, बींद।

નવસું (सं.) नग्न, नंगा, वस्त्रहीन, बेकपड़ा, उघारा।

નવસરવું (क्रि.) सफल होना, सिद्ध होना, बन पड़ना, बन जाना।

નવસપ્ત (सं.) १६, सोलह, सख्या विशेष।

નવસિંદો (सं.) लिखने वाला, लेखक।

નવળ (वि) देखो नवલ

નવાઇ (सं.) विचित्रता, अनूठापन, अचंभा, आश्चर्य, अद्‌भुत, नयापन, नवीनता।

નવાજશ (सं.) कृपा, दया, मिहरबानी, अनुकम्पा, दयालुता।

નવાડવું (क्रि.) निल्हाना, स्नान कराना, नहाना।

નવાણ (सं.) जलाशय, वापीकूप, तड़ागादि। जल प्राप्ति, ऋतुधर्म रजोदर्शन, रजस्राव।

નવાણું-વ્વાણું (वि.) निन्यानवे, नौ और नब्बे, ९९, संख्या, विशेष, ९०+९।

નવાબ (सं.) नवाब, उच्चपदाधिकारी, पद विशेष।

નવાબી (वि.) नवाब की प्रभुता, नवाब का आधिपत्य।

નવારસું (वि.) स्वामीहीन, लावारिश, रक्षकहीन, अनाथ, जिसका कोई धनी धोरी नहो।

નવાલો (सं.) कौर, टूकड़ा, ग्रास लुकमा, नवाला, नया, नूतन।

નવીજૂની (सं.) खबर, सम्वाद, समाचार, सन्देसा, झगड़ा, विवाद टंटा, फसाद।

નવીન (वि.) नया, नूतन, नवल।

નવીસંદો-સીંદો (सं.) नकल, करनेवाला, क्लर्क, मुहर्रिर. लेखक।

નવું (स.) नया, ताजा, नवीन, वर्तमान, हालका, टटका।

નવુંજુનું (सं.) अदल बदल, नया, पुराना, नया और विचित्र।

નવુંસવું (वि.) नया, हालका, ताजा, टटका, अभीका, तुरंतका ।
નવેશુ (सं.) पाकशाळा, बावर्चीखाना, भोजन बनाने का घर ।
નવેખિયો (सं.) रसोइया, बावर्ची भोजन बनानेवाला ।
નવેતર (क्रि. वि.) नूतन, थोड़े, दिन हुए, अभी हाल मे वर्तमान मे, अभी ।
નવેનામે-સરથી (क्रि. वि.) फिरसे, नये सिरेसे, दुबारा, पुनर्वार ।
નવોઢા (सं.) नवविवाहिता स्त्री ।
નશાખોર (वि.) मद्यपी, नशा-करनेवाला, मादक द्रव्य सेवन करनेवाला, शराबी, नशेबाज, घमंडी, अहंकारी ।
નશાબાજ (वि.) पूर्ववत् ।
નશો (सं.) मद, मोह, मादक वस्तु, गर्व, मद्य, मत्तता, मतवालापन ।
નશિહત (वि.) उपदेश, हिदायत, शिक्षा, डाट, परामर्श, सुधार, झिड़की, मलामत, फटकार, नसीहत ।
નષા (सं.) देखो नेस ।
નષ્ટ (सं.) नाशप्राप्त, ध्वस्त, मृत, पलायित, अपचित, भ्रष्ट, दुष्ट, शठ, अदर्शन विशिष्ट, तिरोहित, नाशाश्रय, बुरा, पापी, नीच, कमीन ।
નસ (सं.) नाड़ी, रग, सिरा, आंत।
નસકોરું (सं.) नथुना, नथना ।
નસંતાન (सं.) संतानरहित, वंशहीन, जिस के संतान न हो ।
નસંદ્ (वि.) सब, संपूर्ण, तमाम, बिलकुल, समस्त, सारा ।
નસલ (सं.) जड़, मूल, वंशावळी, खान्दान, लक्षण, चिन्ह, जन्म, कुल, वंश, गोत्र ।
નસલી (वि.) गोत्री, वंशज, कुलोत्पन्न, सगोत्री ।
નસવાન (वि.) दुर्बल, कमजोर, बलहीन, असुखी व्याकुल, बेचैन ।
નસાખાનું (सं.) वह स्थान जहां पारसी लोगो की मुर्दा गाड़ी, या रथी रखी जाती है ।
નસાડવું (क्रि.) निकालना, हांकना, भगाना ।
નસીબ (सं.) भाग्य, किस्मत, तकदीर, प्रारब्ध, करम, कर्म ।
નસીબ જાગી ઉઠવું (क्रि.) भाग्य जगना, तकदीर खुलजाना।
નસીબના ભોગ (सं.) दुर्भाग्य, विरुद्धदशा, फूटी तकदीर, प्रारब्ध के भोग ।

નસીબદાર-વાન-વંત (वि.) भाग्यशाली, तकदीरवाला, प्रारब्धी

નસીબે (सं. दुर्भाग्य, बदकिस्मत, मन्दभाग्य, विधिवामता।

નસેસલો-લા લાર (सं) वह जो पारसी जाति के मृतक की रथी या अर्थी अपने कंधे पर ले जाता है ।

નસો (सं. , मैलापन, मन्दगी, अपवित्रता, मलिनता, अशुद्धता, नसें और आते, अंत्रावलि और नाडियें या रगें ।

નસ્તર (सं.) नश्तर, नश्तर चीरने का अस्त्र ।

નહાવું (सं.) प्रथम रजोदर्शन, आरंभिक रजस्नान, स्नान, नहान।

નહીં (क्रि. वि.) निषेध मना, मत, न, नकारना, ना ।

નહીંતર-તો (क्रि. वि.) यदिन, नोचेत्, अन्यथा, या अन्य।

નહીં સરખું (क्रि. वि.) व्यर्थ, बेफायदा, फजुल, बेकार, निरर्थक।

નહીંઉં (सं.) नाखूनों के निकट का चर्म, लौकी, कद्दू ।

નહીં (सं.) सफेद कद्दू, लौकी तुम्बी, फल विशेष ।

નહોર (सं.) पंजे, नाखून, पंजों या नाखूनों की खरोंचन ।

નળ (सं.) नल, नलिका, नली, आंतें, अंतड़ी, अंत्रावलि, मोरी, नाली ।

નળાકાર (वि.) नल की सूरत का सरीखा, नली जैसा ।

નળવાઈ જવું (क्रि.) कमजोर होजाना, दुर्बल होजाना, अशक्त होजाना ।

નળિકા (सं.) नली, नल, पाइप ।

નળિયું (सं.) नरिया, नलिया, नालि के सरीखा खपरैल।

નળી (सं.) देखो નળિકા ।

નળો (सं) पैरकी हड्डी, अस्थि विशेष, टाँगकी बड़ी हड्डी ।

નક્ષત્ર (सं.) २७ नक्षत्र, तारा-मडळ, ग्रह, तारा, सितारा।

નક્ષત્રનાથ (सं.) चन्द्रमा, चाँद, शशि मयंक, राकेश, निशानाथ ।

નક્ષત્રપાત (सं.) तारापतन, नक्षत्र निपात, तारोंका स्थानच्युत या किसी प्रकार के योगसे पतन ।

નક્ષત્રમંડળ (सं.) तारामंडल, तारा चक्र, वह गोलाई जिसमे तारे हों ।

નક્ષત્રમય-વ્યાપ્ત (वि.) तारागणों से पूर्ण, ताराओंसे भरा हुआ ।

ના (क्रि. वि.) नहीं, अभाव, निषेध, मत, निषेधार्थक अव्यय ।

નાઇ (सं.) नापिक, नापित, हज्जाम, नाऊ, क्षौरकार, जाति विशेष ।

નાઇકા (सं.) वेश्या, नाचनेवाली स्त्री, प्रेमासक्तायुवती, नायिका ।

નાઇલાજ (वि.) उपायहीन, जिसका कोई उपाय न हो, जिसरोग की औषधि नहो, बेवश ।

નાઉમેદ (वि.) आशारहित, हताश निराश, बे उम्मैद ।

નાઐક (सं) देखो નાયક

નાક (सं) नासिका, नासा, घ्राणें- प्रिय, यश, मान, इज्जत कीर्ति, लज्जा, शरम, हया ।

નાક ઉંચુ રહેવું (क्रि.) सम्मानितहोना, इज्जतदारहोना, दोष रहित रहना ।

નાખ ઉપર માખ નહી બેસવા દેવી (क्रि.) मानके लिये उत्सुक होना नाकपर मक्खी न बैठने देना, अपनी इज्जत का पूरा ध्यान रखना ।

નાક કાપવું (क्रि.) शर्मिन्दा करना लज्जित करना, मानहानि करना, नाक काटना, तौहीन करना ।

નાક ઘસવું-ઘસડી કરવી નમાવવું (क्रि.) नम्र होना, दीन होना, लाचार होना, विनीत होना, नाक रगड़ना, आजिज़ होना ।

નાકજવું (क्रि.) अपमानित होना, इज्जत जाना मान जाना ।

નાકની દાંડી (सं.) नाक का सिरा, नासाग्र भाग, नाकका उच्च भाग ।

નાકમાંથી બોલવું (क्रि.) नाकसे बोलना, मिन मिनाना, ङ, ञ, ण, न, म, अक्षरों का उच्चारण करना मिमियाना ।

નાક કટુ (वि.) कनटा, अपमानित, कमइज्जत, मान रहित ।

ના કબુલ (वि.) अस्वीकार, ना मंजूर ।

ના કબુલ જવું-થવું (क्रि.) इन्कार करना, नाहीं करना, अस्वीकार करना, नामंजूर करना, कहके बदलना ।

ના કબુલી (सं) अस्वीकृति, ना मंजूरी, नाहीं, निषेध, अस्वीकारी।

નાકલીસોટી-લીટી (सं.) नाकको भूमिपर रगड़ने की क्रिया या कार्य

નાકા બંદી (सं.) मोर्चाबन्दी, तैयारी घेरा, घेर, नगर परिवेष्टन, मुहासिरा ।

નાકું (सं.) हद, सीमा, चौक, सिरा, छिद्र, फाटक, द्वार, सुई का सुराख, मुकाम, सायर चबूतरा, कस्टम।

નાકેદાર (वि.) कर संग्रह करने वाला, सायर चौकीवाला।

નાકેબંદી (सं.)देखो નાકાબંદી।

નાકૂસ (वि.) अधूरा, कच्चा, न्यून दोषी, असम्पूर्ण, खराब।

નાકૌવત-વત (वि.) निर्बल, अशक्त, कमजोर, बलहीन, शक्तिरहित।

નાકૌવતી (सं.) निर्बलता, कमजोरी, अशक्तता, नाजुकता, सुकुमारता।

નાખવું (क्रि.) फेंकना, पटकना, फैलाना, दमन करना, क्षय करना, दे डालना, (दूसरेपर) डाल देना।

નાખુદા–ખોદા (सं.) जहाज का शासक, जहाज का कमाण्डर, जहाज का अधिकारी।

નાખુશ (मि.) नाराज, असंतुष्ट, रंजीदा, दुःखी, अप्रसन्न।

નાખુશી (सं.)अप्रसन्नता, अतुष्टता, नाराजी, दुःख, रंज, खेद।

નાગ (सं.) सर्प, सांप, अहि, पन्नग, उर्ग, विषधरकीट।

નાગકન્યા (सं.) नागोंकी कन्या, पातालवासी देवताओं की लड़की रूपवती कन्या।

નાગકેસર (सं) पुष्प विशेष, एक औषधि विशेष।

નાગડું (वि.) नागा, बेशरम, लज्जा रहित, दुबला, पतला, हीन, क्षीण, निर्बल,।

નાગણી–ણ–ગેણી (सं.) सर्पिणी, सांपिन, नागिन, नागन, नागनी।

નાગદવનો (सं.) पेचदार लकड़ी, काष्ट विशेष।

નાગનાથ (सं) शिव, महादेव।

ના પાંચેમ (सं) श्रावण शुक्ल पंचमी, नागपंचमी।

નાગપાશ (सं.) अस्त्रविशेष, वरुणास्त्र, फांस, फन्दा. फांसी।

નાગપૂજા (सं.) सर्पपूजन, नागों की वन्दना सेवा।

નાગફેણ (सं.) सांपका फन, सर्पका फन, अहिफन।

નાગમણી (सं.) सर्पमणि, एक प्रकारकी मणिजो पुराने विषधर सापोंके पास होती है, मूल्यवान् मणि।

નાગર (वि,) नगरवासी, नगरका रहनेवाला, नागर ब्राह्मणोंकी जाति, हल, लश्कर, (वि.) तेज, चालाक होशियार, चतुर, चपल, दक्ष,

નાંગર (सं.) देखो નાગર, ३ और ४

નાંગરનાર (सं.) हल चलाने वाला, खेत जोतने वाला हलवाही।

નાંગરભહી (सं.) हलोंपर कर लगानेकी रीति या प्रबंध।

નાગરવુ (क्रि.) हलचलाना, खेत जोतना, लङ्गर डालना।

નાગરવાડો (सं.) वह गली या मोहल्ला जहा नागर रहते हों।

નાગર વેલ-લી (सं.) पानकी बेल, ताम्बूल लता, पानका वृक्ष, नागरवल्ली।

નાગરી (वि.) नगर सम्बन्धी, नगरसे सम्बन्ध रखने वाली।

નાગરિક (सं.) नगर निवासी, पुरवासी सभ्य लोक, गावके रहने वाले।

નાગરી (ભાષા) (सं.) संस्कृत, देवनागरी भाषा, चतुरस्त्री, नागरकी पत्नी।

નાગલી [सं.) एक प्रकारका अन्न।

નાગલા (सं.) छोटे सांप, सपले।

નાગલોક (सं.) सर्पोंकी पृथ्वी, सर्प लोक, पाताल, अधोलोक।

નાગવલ્લી (सं.) देखो નાગરવેલ

નાગુ (वि.) वस्त्रहीन, नंगा, उघाड़ा, बिना ढंका, निर्लज्ज, बेशर्म, निर्धन, मानहीन, वस्त्रहीन रहित, दीन, कंगाल, दिवालिया।

નાંગુ ઉઘાડુ (वि.) अनुचित, बे, अदब, गुस्ताख, बेहया।

નાંગુ ભુખ્યુ (वि.) राहित, दीन, कंगाल, अधम, अतिदुखी, बीच।

નાંગો (सं.) नंगा, नागा, निर्लज्ज, निर्धन, निर्द्रव्य, दिवालिया, बेशर्म

નાંગો વરસાદ (सं.) धूपकेसमय, में वृष्टि, सूर्य प्रकाशमें वर्षा।

નાઘોરી (सं.) मुसलमानों की एक जाति जो पशु पालती है।

નાચ (सं) नृत्य, नाटय,

નાચ નચાવવો (क्रि.) नाचनचाना, अपनी कल्पनाओं और इच्छाओं के अनुसार काम कराना।

નાચઘર (सं.) देखो નાટકઘર નાટકશાળા

નાચણ ઘુઘરી (सं.) मनमोहिनी चोचला करने वाली, नाचने वाली।

નાચકો (सं.) छटा, गर्वयुक्त चाल नखरा।

નાંચણ-નારી (सं.) नर्तकी, नाच नेवाली, दुष्टाली, कुकर्मा नारी।

નાચણુવેડા (सं) नाचनेवाली की के हावभाव और कटाक्ष।

નાચનાર (सं.) नर्तक, नाचने वाला, नृत्य करनेवाला, नट।

નાચરંગ (सं.) उत्सव, शादी, आनन्द, खुशी, हंसी, हुल्लास, नाच नृत्य।

નાચવું (सं.) नृत्य, करना, नाच करना, उछलना कूदना, जोरसे और तेजी से बोलना।

નાચારી (सं.) गरीबी, दारिद्रता, बुरी दशा, असहायता।

નાચેણુ (सं.) देखो નાચણુ

નાજનીન [सं.) कुमारी, सुन्दरी।

નાજખદાર (सं.) खुशामदी, चाप लूस, दगाबाज।

નાજખદારી (स.) चापलूसी, खुसामद, लल्लाचापी, लल्लोपत्तो,

નાજર (सं.) हिजडा, क्लीब, नपुंसक, शहर वा कौन्टीका हाकिम, जिलेका हाकिम, नाजिर।

નાજવાબ (स.) निरुत्तर, बे जवाब, चुप, नहीं।

નાજ઼્‌ર (सं.) देखो નાર

નાજુક (वि.) मुलायम, कोमळ, सुकुमार, नरम, निर्बळ।

નાજુકકામ (सं.) कमजोर काम, बारीककाम, सावधानी का काम।

નાજુક જગા (सं.) निर्बलस्थान, कोमलस्थान, मुलायम जगह, मर्म स्थान।

નાજુકાઈ-ઈ-કપણું (वि.) कोमलता, मुलायमी, नम्रता, सुकुमारता, निर्बलता।

નાટક (सं.) गद्य पद्यमय काव्य विशेष, रूपक, अभिनय, खेल।

નાટક કવિ (सं.) देखो નાટકકાર

નાટકકાર (सं.) नाटक करने वाला, नाटक पुस्तक लिखने वाला।

નાટકગૃહ (सं.) देखो નાટકશાળા

નાટક શાળા (सं.) बहुभवन जहा नाटक खेलाजाता हो, रंगशाला, नृत्यशाला, नाटयमंदिर, नाटयशाळा, नृत्यस्थान, नाचघर।

નાટક મુંદર (सं.) रंगमंचपर नट या नाटकका खिलाड़ी।

નાટકી (सं.)नट, खिलाड़ी, नाटकका पात्र, नाटक सम्बन्धी।

નાટ્ય (પ્રયોગ) (स.) नृत्यगीत और वाद्य, नाटक विषयक बयान वर्णन अथवा खेल, अभिनय।

નાટારંગ (सं.) नाटक, नृत्य इत्यादिका आनन्द।

નાડ (सं.) नाडी, नस, आंत, अंतडी, रग, चमड़ेकी डोरी, प्राकृतिक आदत, नब्ज।

નાડ જોવી (क्रि.) नाडी देखना, नब्ज देखना।

નાડ દેખાડવી (क्रि.) नब्ज दिखाना, नाडी दिखाना, रोग परीक्षा कराना।

નાડ બંધ પડવી (क्रि.) मृत्यु के समीप होना, नाडियां छूटना या बन्द होजाना।

નાડ મળવી (क्रि.) पता प्राप्त करना खोजना,

નાડા છડી (सं.) कई रंगो के सूती धागे। अनेक रंगों के सूत के डोरे

નાડા છોડ કરવો (क्रि.) पेशाब करना, प्रस्राव करना, मूतना,

નાડાબંદી-ધી (सं) परहेजगारी अव्यभिचार, मिताहार व्यवहार

નાડી (सं.) नब्ज, चमडे की रस्सी, धमनी, हाथकी मुख्य नस, नली।

નાડી પરીક્ષા (सं.) नाड़ी की परख, नाड़ीद्वारा जाच, नब्जकी तहकीकात

નાડીમંડળ-ચક્ર (सं.) नाडियों-का समूह, नाड़ी समुदाय।

નાડીવૈદ (सं.) कच्चा वैद्य, ठग वैद्य, मिथ्याचिकत्सक, धूर्त वैद्य, नीम हकीम।

નાડીજ્ઞાન (सं.) नाडीविषयक ज्ञान, रोगपरीक्षा, निदान ज्ञान, नब्जकाइल्म।

નાડીવ્રણ (सं.) नसौंका घाव, नासूर।

નાડું (सं.) डोरी, फीता, नाड़ा, सुतली।

નાણ (सं.) रजोदर्शन, ऋतुकाल, न्हाव, कपड़ोंहोनेकीदशामें।

નાણવું (क्रि.) प्रयत्न करना, उद्योग करना, परीक्षा करना, जांचना, नहीलाना।

નાણાવટ (सं.) रुपयोंका बाजार, शराफा, चौक जहाँ व्यापारीगण एकत्र होते हैं।

નાણાવટી (सं.) खजानची, कोषाध्यक्ष, शराफ, सर्राफ।

નાણું (सं.) नकदी, रोकड़, सिक्का, रुपया, पैसा, नगदमाल, मूल्य।

નાત (सं) जाति, जात, ज्ञाति, कौम, मजहब, फिरका, जमाअत, अंश।

નાતબહાર (वि.) जातिच्युत, जाति से अलग, समाज से बहिष्कृत, हुक्का पानी से अलग।

નાતરસ (वि.) निर्दय, बेरहम, दयाहीन, निष्ठुर, कठोर, संगदिल।

નાતરિયા (सं.) वह कौम जिसमें नातरा होता हो वह जाति जिसमें के लोक बिना विवाह किये किसी स्त्रीको पत्नीके रूपमें घर में रख लेते हैं।

નાતરિયું (सं.) स्त्रीके साथका उस समय का बालक जबकि उसका पुनर्विवाह या नातरा हुवा हो। स्त्रीको पत्निके रूपमें ग्रहण करनेके पूर्व उस स्त्रीसे उत्पन्न बालक।

નાતરું (सं.) पुनर्विवाह, नातरा, मेल, जोड़, घरबासा।

નાતરું કરવું (क्रि.) पुनर्विवाह करना, घरबासा करना, नातरा करना।

નાતરે જવું (क्रि.) अपने पूर्व पतिके मरणोपरान्त अथवा जीवितावस्थामें दूसरे पुरुषको पतिरूपमें वरण करना, नर्कमें जाना।

નાતલગ (वि.) मिलाहुवा, जोड़ा हुवा, सम्बद्ध।

નાતવારો (सं.) जातीय भोजन, जातभोज, जातिभोज।

નાતવાન (वि.) निर्बल, कमजोर, असहाय, दुर्बल, दीन कंगाल।

નાતવાની (सं.) दीनता, कंगाली कमजोरी, निर्बलता।

નાતાલ (सं.) ईसामसीहका, जन्मदिन, बड़ादिन, २५ दिसंबर, क्रिसमस डे।

નાતિભેદ (सं.) वर्णभेद, जातीय अतर, जातिभेद।

નાતીલો (सं.) सगोत्री, जातिका, स्वजातीय, जातभाई, सजाती।

નાતું (सं.) नाता, सम्बन्ध, मेल, जोड, रिश्ता, रिश्तेदारी।

નાતો (सं.) पूर्ववत्।

નાથ (सं.) स्वामी, प्रभु, कर्ता, नियंता, प्रतिपालक, पति, खसम, सम्प्रदाय विशेष, नाक की रस्सी जो बैल आदिपशुके नाकमें डाली जाती है।

નાથ વિજોગ-યોગ (सं.) पतिसे पत्निका विछोह।

નાથવું (क्रि.) बैलके नाकमें रस्सी पिरोना, दमन करना।

નાદ (सं.) ध्वनि, शब्द, गर्जन, सुर, स्वर, आदत, स्वभाव, गर्व, वशीभूत, लिप्तता, हृदयगांभीर्य।

નાદર (सं.) पहिला निर्ख, प्रथम भाव, उत्तम, श्रेष्ठ, उम्दा।

નાદવું (क्रि.) ठहरना, बसना, वास करना, सर्वदाके लिये रहना।

નાદાન (वि.) नासमझ, विचारहीन, मूर्ख, असमझ, बालक।

નાદાનપણું-નીઅત-ની (सं.) बचपन, छछोरपन, मूर्खता, नासमझी, विचारहीनता, शठता, बेवकूफी।

નાદાર (वि.) दीन, गरीब, कंगाल, निर्धन, दरिद्र ।

નાદાર (सं.) दिवालिया, मुफलिस, दरिद्री, गरीब, दीन, भिखारी ।

નાદારી (सं.) दिवाला, मुफलिसी, दीनता, भिक्षुकता, कंगाली ।

નાદી (वि.) घमंडी, गर्वी, शेखीखोर ।

નાનકડું-ડુ (वि.) छोटा, थोड़ा, कम, न्यून, अल्प, ओछा ।

નાન (सं.) रोटी, चपाती ।

નાનક (सं.) सिक्खों के प्रथम गुरु ।

નાનકડું (वि.) देखो નાનડું

નાનકપંથી (वि.) नानकके अनुयायी, नानक सम्प्रदायी ।

. નાનખટાઈ (सं.) एक प्रकारकी मिठाई, मिष्टान्न विशेष ।

નાનમ (सं.) छोटाई, मानहती, दीनता, गरीबी ।

નાના (वि.) अनेक, विविध, अनेकार्थक (विस्म.) नहीं नहीं ना ।

નાનાપ્રકારનું-વિધનું (क्रि. वि.) अनेकभांतिका, विविध प्रकारका, बहुत तरहका, पृथक पृथक ।

નાનામત (सं.) अनेक सम्मतियां, विविध विचार, अनेक सम्प्रदाय ।

નાની (सं.) मातामही, माताकी माता ।

નાનાશી (सं.) छोटीसी, लघु ।

નાનો (सं.) मातामह, माताके पिता, छोटा, लघु, कुमार, बाल, बच्चा, शावक ।

નાંદ (सं.) एक बड़ाभारी मिट्टीका कूँडा जो जमीन में प्रायः गाड़ दिया जाता है, मृत्तिका पात्र ।

નાંદી (सं.) नाटक में सूत्रधार-कृत मंगलाचरण, नाटक के आदि में देवद्विजोंका दिया हुवा आशीर्वाद, नाटक का मंगलाचरण ।

નાન્યતર (सं.) नपुंसकलिंग, तृतीय लिंग (व्याकरण में)

નાપ (सं.) माप, तौल, परिमाण, अंदाजा, हद, युक्ति ।

નાપના (क्रि.) मापना, तौलना, अन्दाजना ।

નાપસંદ (वि.) बेपसंद, अस्वीकृत, अप्रिय, अयोग्य, अरुचिकर, घृणित, नामंजूर ।

નાપાક (वि.) अपवित्र, अशुद्ध, मैला, गन्दा, भ्रष्ट, पतित ।

નાપાકી (सं.) अपवित्रता, अशुद्धता, मैलापन, गन्दापन ।

નાપિક-ત (सं.) नाई, नाऊ, हजाम, क्षौरकार्य करनेवाला ।

નાપીક (वि.) बाँझ, ऊसर, बंजर, निष्फल, फलहीन ।

નાફરમાન (सं.) अवज्ञाकारी, आज्ञा न माननेवाला, जामुनी या बैजनी रंगका नाम ।

નાફરમાની (वि.) अवज्ञाकारी, ना फरमाबरदारी, अवज्ञा, जामुनी रंगका । [नष्टप्राय ।

નાબુદ (वि.) नष्ट, बुझाहुवा,

નાભ (सं.) नौका, नाव, किश्ती, पहियेकी नाह, पहियेका मध्य ।

નાભિ (सं.) पेटका मध्यस्थान, तौंदी, सूँडी, नाभ, पहियेकी नाह, धुरी ।

નાભિકમળ (सं.) नाभिका कमल ।

નાભિછેદન (सं.) नाड़ीछेदन, नाल छेदन, बालक की उत्पत्तिके समय पिताद्वारा नाभिसूत्रका छेदन ।

નાભિનાડી (सं.) नाभिसूत्र, वह नस या नाड़ी जो बालककी नाभिसे जुड़ी हुई गर्भ से बाहिर आती है, नाल ।

નાભિવર્દ્ધન (सं.) नाभिकी वर्द्धनक्रिया ।

નામ (सं.) नांव, संज्ञा, अभिधान, यश, ख्याति प्रसिद्ध ।

નામ કરવું (क्रि.) प्रसिद्ध होना, ख्याति पाना, अच्छी कीर्ति लाभ करना ।

નામ કઢાડવું (क्रि.) बुरा या भला नाम निकालना ।

નામપર પાણી રેડવું (क्रि.) नामपर पानी फेरना, कीर्ति नाश करना ।

નામ જાદું (वि.) विख्यात, प्रसिद्ध, प्रख्यात, मशहूर, प्रकट ।

નામજોગ (वि.) वह मनुष्य जिसका कि नाम लिखा हो (हुंडीमें) नाम जोग हुंडी ।

નામજોગ હુંડી (सं.) वह हुंडी जोकि खरीदनेवाले का संक्षिप्त विवरण और नाम प्रदर्शित करती हो ।

નામ ઠામ (सं.) संपूर्ण पता, पूरा पता, नाम और ठिकाणा ।

નામ તારવું (क्रि.) प्रतिष्ठापाना, कीर्ति प्रकाश करना ।

નામદાર (वि.) जगद्विख्यात, स्वनाम धन्य, प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, मशहूर, प्रख्यात ।

નામદારી (सं.) प्रतिष्ठा कीर्ति, ख्याति, मशहूरी, तारीफ ।

નામ દેવું (क्रि.) नाम रखना, नामधरना, नामदेना ।

नाम धरवुं (क्रि.) नाम लेना ।

नाम धातु (सं.) वह क्रिया जो संज्ञासे बनी हो (व्याकरणमें)

नाम धारवु (क्रि. वि.) किसीका नाम रखलेना, नाम इत्यादिनेसे ।

नामधरी (क्रि. वि.) प्रसिद्ध, विख्यात, कीर्ति सम्पन्न, आली या मूंछे नामका मनुष्य ।

नामंजुर (वि.) अस्वीकृत, ना पसंद अयोग्य ।

नामंजुरी (सं) अस्वीकृति ।

नाम न देवुं–न लेवुं–न बोलवुं (क्रि.) नाम नहीं बोलना, नाम नहीं लेना, नामसे दूर रखना ।

नामना (सं.) नाम, यश, कीर्ति, शुहरत, नामवरी, प्रसिद्धि ।

नामनिशान (सं.) नाम और विवरण, नाम और तफसील ।

नाम निशानी कांई नथी–नाम चिन्ह आदि कुछभी नही है ।

नामनुं (वि.) नाममात्र, बराय नाम ।

नामपर (क्रि बि.) नामपर, हिसाबमेंसे नामे, कारणपर, कारणसे ।

नामबुडावुं (वि.) अपमानित, नाम डुबानेवाला ।

नाम बोळवुं (क्रि.) अपमान लाना, अपमान कराना ।

नामराशी (वि.) एक नामका, मिलता हुवा नाम, नामकी राशि ।

नामर्द–र्दु (सं) नपुंसक, हिजड़ा, क्लाव, कमजोर, पुंसत्वहीन ।

नामर्दाई–र्दी–र्दाई (सं.) कमजोरी, बुज़दिली, नपुंसकता, क्लीवत्व ।

नामवर (वि.) नामवाला, ख्यात, प्रसिद्ध, यशस्वी, कीर्तिवान ।

नामवरी (सं.) नाम, यश, ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्ति ।

नामवाच्य (सं.) तृतिय पुरुष, (व्याकरणमें)

नामवुं (क्रि.) उडेलना, निकालना ।

नामस्मरण (सं.) हृदयमें अपने इष्टदेवका ध्यान, ईश्वरका नामस्मरण, हरिचिंतन ।

नामांकित (वि.) नामचिन्हित, नाममुद्रित, खुदाहुवा नाम, प्रसिद्ध, विख्यात, प्रतिष्ठित ।

नामावळी (सं.) नामश्रेणी, नामसूची नामोंकी फेहरिस्त ।

नामी–चुं (वि.) विख्यात, प्रसिद्ध यशस्वी, कीर्तिमान, ख्यातनामा, मशहूर, नामवाला ।

નામું (सं.) हिसाब, कहानी, बयान, इतिहास, काम, दास्तावेज, लेख प्रमाण, लिखावट, पत्र, चिठ्ठी ।

નામુકરજવું (क्रि.) इन्कारकर देना, नाहीं कर देना, अंगीकार न करना, अस्वीकार करना ।

નામુંઠામું (सं) पता, हिसाब, बयान ।

નામુનાસબ (वि.) अनुचित, गैरमुमकिन, असंभव ।

નામુબારક (वि.) बदकिस्मत, दुर्भाग्य, अभागा ।

નામુરાદ (वि.) अकृतार्थ. निष्फल, नाकामयाब, बदनसीब, हताश, आशा रहित, नाउम्मीद ।

નામુરાદગી (सं.) निराशा, निष्फलता, असफलता ।

નામે (वि.) देखो नामपर ।

નામેહરબાન (वि.) कृपाहीन, नाराज, नाखुश, दया रहित ।

નામેહરબાની (सं.) अवकृपा, असंतुष्टता, नाराजी, नाखुशी ।

નામોસી-શી (सं.) अपमान, अपकीर्ति, बदनामी, लज्जा ।

નાયક (सं.) मुख्य, मुखिया, अगुवा, प्रदर्शक, नेता, अग्र गामी, श्रेष्ठ, प्रधान, शृंगार साधक पुरुष, प्रेमाभिलाषी, प्रेमी ।

નાયકા-કણ (सं.) नृत्यकरनेवाली, सखी, प्रेमासक्तायुवती, नायक की स्त्री ।

નાયડી (स.) धुरी, पहियेकी नाह, चक्र के मध्य का भाग ।

નાયબ-બ (सं.) प्रतिनिधि, प्रतिपुरुष ।

નાયિકા (सं.) देखो नायका ।

નાર (सं.) स्त्री, लुगाई, नारी ।

નારકી (वि.) नर्क सम्बन्धी, नरकस्थ, नर्कवासी, नर्कभोगी, दुराचारी ।

નારંગી (सं.) फलविशेष, संतरा, एक प्रकारका खट्टा मीठा फळ ।

નારંગી રંગનું (वि.) नारंगी, नारंगी के रंगका, पीलालाल मिश्रित । [वृक्ष की वाटिका ।

નારંગી બાગ (सं.) नारंगियोंके

નારંગી વૃક્ષ (सं.) नारंगीका पेड़ ।

નારદ (सं.) देवर्षि, मुनि, एक ऋषि, जोकि विवाद खड़ा करे, लड़ादेने वाला, टंटेके लिये उस्कानेवाला ।

નારાજ-જી (वि.) असतुष्टता, अप्रसन्नता, कुढन, डाह ।

નારાયણ (सं.) ईश्वर, विष्णु, योगी, वैरागी, संन्यासी, ऐकान्त-सेवी, वानप्रस्थ, बनस्थ।

નારાયણબલિ (सं.) मृत पतितोंके उद्धारके लिये प्रायश्चित्त विशेष।

નારાસ્ત (वि.) गलत, अशुद्ध, झूठ, अनुचित, उलटा, अन्याय।

નાળિયળ (सं.) नारिकेलफल, श्रीफल, नरियल, फल विशेष।

નાળિયળી (सं.) नरियलका पेड़।

નારી (स.) धर्मयुक्ता स्त्री, अबला, महिला, ललना, कुटुम्बिनी।

નારીજાત (सं.) स्त्री जाति औरत, लुगाई। [रणमें]

નારીજાતિ (सं.) स्त्री लिंग (व्याक-

નારીદૂષણ-દોષ (सं.) स्त्रियों के मद्यपान कुसंगादि छःदोष, दुर्जन-संग, पतिसे विरह, घूमना।

નારૂ (सं) एक प्रकारका कीड़ा।

નારૂ (सं.) दलाली, किसी काम करनेका पुरस्कार या मजूरी।

નારોદ (सं.) राजपूतोंकी एक जाति विशेष, देखो खलासी।

નાલ (सं.) घोडे आदि के खुर में जड़ी जानेवाली वस्तु, नाली, नली, झाड़ी, नलके आकारकी बनी हुई वस्तु।

નાલખી (सं.) पालकी, शिबिका, यान विशेष, डोला।

નાલાયક (वि.) अनुपयुक्त, अ-योग्य, अनुचित, बेठीक।

નાલાસ-લેસ (सं.) निंदा, कलङ्क, गाली, दुर्वाच्य, अपवाद पत्र, बदनामी का लेख, अपयश।

નાલાસ કરવી (क्रि.) निंदा करनी, कलङ्क लगाना, दोष लगाना, बद नाम करना, अपवाद करना।

નાવ (सं.) नौ, नौका, तरणी, डोंगी, बोट, जहाज किश्ती।

નાવડી (सं.) छोटी नाव, डोंगी।

નાવડું (सं.) डोंगा, नाव।

નાવણ (सं.) स्नान नहान।

નાવલિયો-યા (सं.) खाविंद, पति, स्वामी, खसम, मालिक।

નાવાકેફ (वि.) अपरिचित, अन-जान, अनभिज्ञ, अजान, जड़।

નાવડિયો (सं.) नाववाला, मल्लाह, कवट, नाव चलानेवाला।

નાવારસ (वि.) स्वामिहीन, बेमा-लिक, अनाथ, पतिहीन।

નાવિક (सं.) केवट, नावखेनेवाला, मल्लाह, माझी, नाव चलानेवाला ।

નાવિકવિદ્યા (सं.) मल्लाहकीविद्या, नाव चलानेका इल्म, जहाज बनानेकी विद्या, नौका निर्माण ज्ञान ।

નાવિકશિલ્પ (सं.) मौझीके कार्य निपुण, नौविद्या प्रवीण, नौविद्या दक्ष ।

નાવી (सं.) नाई, नाऊ, हज्जाम, बाल बनानेवाला, जाति विशेष ।

નાવ્ય (वि.) जहाज या किश्ती खेने लायक, जिसमें होकर जहाज या नाव जा सके, सामुद्रिक, दरियाई ।

નાશ (सं.) क्षय, ध्वंश, लय, क्षति, हानि, अपचय, अदर्शन, नुकसान ।

નાશકરવો (क्रि.) ध्वंश करना, नष्ट करना, मटिया मेट करना, विनाश करना, बरबाद करना, खराब करना ।

નાશક (वि.) नाश कर्ता, ध्वशक, क्षयकारी, क्षतिकर, हानि कर्ता, विनाशक ।

નાશકારક (वि.) नाशकरनेवाला, हानिकारक, क्षतिकारक, बरबाद करनेवाला ।

નાશવંત (सं.) नाशमान, अस्थिर, नष्ट होनेवाला, नाशनीय, नाशवान ।

નાશી (वि.) नाशक, नाशकर्ता उजाड़ ।

નાશીત (वि.) ध्वंसित, हत उच्छेदित, नष्ट, नाश किया हुवा ।

નાસ (स.) नस्य, सूंघनी, हुलास, तमाखूका चूर्ण ।

નાસદાન (सं.) सूंघनी रखनेकी डिबिया, हुलास रखनेकी डिब्बी ।

નાસભર (वि.) बे सब्र, असंतोष, बेचैन, उतावला अधीर ।

નાસતો (सं.) प्रातःकालीन अल्पभोजन, कलेवा, नाश्ता ।

નાસમજ (सं.) असमझ, अनजान, बुद्धिहीन, विचारशून्य, मूर्ख ।

નાસરી (सं.) लगभग आधीपाई ।

નાસવાબ (वि.) पापमय, दोषगलत, अशुद्ध, अपवित्र ।

નાસવું (क्रि.) भागजाना, बचके भागजाना, दौड़जाना, निकल भागना, अलोप हो जाना ।

નાસા-સિકા (सं.) नासिका, नाक, नांकड़ा, घ्राणेन्द्रिय ।

નાસિપાએસ-સ (वि.) आशा रहित, नाउम्मेद, निराश ।

નાસીપાસી (वि.) निराशा, ना उम्मेदी, आशा हीनता।

નાસૂર (सं.) नसका व्रण, रगके ऊपरका घाव, नाक और आँखों के बीचकी गड़बड़ीया रोग।

નાસ્તિક (सं.) वेदनिंदक, अनीश्वरवादी, नास्तिलवादी, ईश्वरकी सत्ता न माननेवाला, पाखंड, चार्वाक, सत्यकी निन्दा करनेवाला।

નાહ (सं.) धधकता हुवा कोयला, जलता हुवा लकड़ीका कोयला।

નાહક (क्रि. वि.) व्यर्थ, अन्यायपूर्ण, बे फायदा, फुजूल, बे सबब, अकारण, अनुचित. बिना प्रयोजन, अयथार्थ।

નાહણુ (सं.) स्नान, नहान।

નાહતીધોતી (वि.) तरुणावस्था प्राप्त (युवती) जवानी पाई हुइ (स्त्री)

નાહર (स.) व्याघ्र, वाघ, शेर, शार्दूल, चीता, तेंदुवा, बघेरा।

નાહાનપણ (सं.) बचपन, लड़कपन, प्रारंभ, शुरू, छुटाई, लघुता।

નાહાનું (वि.) छोटा, लघु, बच्चा, बालक, शिशु, शावक।

નાહાવું (क्रि.) स्नान करना गुसल करना, नहाना, जलसे शरीर धोना, धोना।

નાહાસવું (क्रि.) देखो નાસવું

નાહીં (क्रि. वि.) देखो નહીં

નાળ (सं.) नाभिसे सम्बन्ध रखने वाली नस, घोड़के खुरमें जड़ीजानेवाली वस्तु, जूतेकी एड़ीमें जड़ी जानेवाला लोहेकी अर्द्ध चन्द्राकार वस्तु, बालकके पैदा होनेके समय नाभिसे जुड़ी हुई उत्पन्न नस, नली, पानीका नल, नलके आकारकी वस्तु।

નાળકું-ચું-વું (सं.) लम्बी, चोंगा, तेल आदि द्रव पदार्थ भरनेके लिए चौड़े मुह दार नली।

નાળબંદ-ધ (सं.) घोड़े बैल आदि पशुओंके खुरोंमें नाल जड़नेवाला, नाल बाधनेवाला।

નાળિયર (सं.) देखो નારિયળ

નાળું (सं.) नाळा, पानी का नाला, छोटी नदी, मोरी, पनाला।

નિઃશંક (क्रि. वि.) निडर अभय, भयशून्य, साहसी, बेशक।

નિઃશેષ (क्रि. वि) समाप्त, सम्पूर्ण, शेष रहित, बेबाक, बाकी न बचा हुवा।

નિઃસંગ (क्रि. वि.) अकेला, एक संगरहित, बेसाथी, संगच्युत।

નિશ્ચય (क्रि॰ वि.) बेशक, निःसन्देह, निश्चय, संशयरहित, अवश्य ।

નિકટ (क्रि॰ वि.) समीप, पास, नजाक, नजदीक, अदूर, सन्निकट आसन्न, उपान्त ।

નિકંદન (स॰) निर्मूलन, उखाड़न, उन्मूलन, नाशविनाश ।

નિકર (सं.) समूह, राशि, सार ढेर, निधि, कररहित, आगार, (क्रि. वि.) यातो, नहींतो।

નિકળવું (क्रि॰) निकलना, बाहिर आना, साबत करना, लौटना, छोटना, निकल आना ।

નિકળી જવું (क्रि.) भाग जाना, डेराउठाना, चलेजाना, गायब हो जाना, निकलजाना ।

નિકળ પડવું (क्रि.) बाहर होना, प्रकट होना, सामने आना, निकल पड़ना, आगेखिंचना, ।

નિકા (सं.) विवाह, शादी, विवाह संस्कार, निकाह ।

નિકાલ (सं.) सार, तत्व, न्याय, फैसला, तरतीब, निर्णय, विचार, रास्तेकी सफाई, प्रबन्ध ।

નિકાસ (सं)भरती, दूसरे देशों को भेजाहुआ माल, बाहर गमन अन्यत्र गमन, विदेश गमन, निकाल, निकलेका मार्ग,

નિકેતન (सं.) गृह, आलय, आगार, सदन, रहनेकास्थान ।

નિકોરી (सं.) मोरी, परनाला, नाला, तंगनाला, सकड़ी नाली ।

નિખરવું (क्रि॰) सफाईसे धुला होना, श्वेतहोना साफ होना, चमकना, उजला होना, निथराना

નિખર્વ (वि.) संख्याविशेष, दश खर्व संख्या, दश सहस्र कोटि ।

નિખાર (सं.) भाटा, उतार, घटती ज्वार भाटे का उतार ।

નિખારવું (क्रि॰) उजला करना साफ करना, प्रथम बार धोना,

નિખાલસ (वि.) सादा, सीधा, शुद्ध खुले दिलका, साफ दिलका, साफ, खरा, सच्चा, निष्कपट ।

નિગમ (सं.) शास्त्र विशेष, वेद की शाखा, ईश्वर, वेद,, सार, परिणाम, फल, तत्व, उत्पत्ति ।

નિગમવું (क्रि.) छुट्टी पाना, व्यतीत होना, बीतना, गिरना, टपकना ।

નિગર્વી (वि.) सुशील, लज्जावान, संकोची, लजीला ।

નિગળવું (क्रि.) झरना, टपकना वस्तु मेंसे बूंद बूंद पानी गिरना ।

નિગાહબાન (સં.) पहरुवा, निगाह रखनवाला, चोकीदार, चौकसी रखनेवाला, रक्षक, रखवाला।

નિગાહબાની (सं.) रखवाली, रक्षा हवालात, चौकसी, निगरानी।

નિગાળ (सं.) तलछट, गाद मैल।

નિગીન (सं.) नगीना, एक प्रकार का कीमती पत्थर, मूल्यवान पत्थर विशेष।

નિગ્રહ (सं.) दृढता, ताड़न, प्रहार यंत्रणा, चिकित्सा, क्लेश बंधन, रोक, अटकाव वन्धज, सीमा। [संग्रह, नामसंग्रह।

નિઘંટ (सं.) निघंटु, कोश, शब्द

નિધા (सं.) दृष्टि, देख विचार ध्यान, नेत्र, आख चक्षु, दृष्टि।

નિઘેબાની (सं) देखरेख, कृपा-दृष्टि, दयापूर्ण अवलोकन।

નિચલુ–ચેનું (वि.) नीचेका, नीचे वाला, छोटा, लघु, नीचा,

નિચાણ (सं.) ढाल, ढालूभूमि, निचाई, उतार ढलाव।

નિચિંત (वि.) बेफिक, चिंतारहित, निश्चित, चिंताशून्य, अशोच, अचिंत, शोक रहित।

નિચું (वि.) नीचा, निम्न, अधम।

નિચે (क्रि. वि.) तले, भूमीमे उतरा हुआ नीचे।

નિચોવવું–ચવવું (क्रि.) निचोड़ना, दबाना, मरोड़ना चूसना, गारना, कपडेसे पानी निकालना,

નિછારે (सं.) देखो निछोरी

નિજ (वि.) स्वीय, स्वकीय, आत्मीय, मुख्य खास, अपनी।

નિજધાન (सं.) अपना द्रव्य, खुदका धन।

નિજધામ (सं.) घर, अपना घर स्वर्गधाम, देवलोक।

નિજવાર્તા (सं) अपनाजीवन चारित्र, व्यक्तिगत बात, मुख्य बात, खानगी बातचीत।

નિઠવુ (क्रि) थकजाना, हार जाना, खिंचजाना।

નિડર (वि.) निर्भय, निश्शंक, भयशून्य, अशङ्क, धृष्ट, बेडर।

નિત–રોજ (क्रि. वि.) प्रतिदिन, सदा, नित्य, रोजमर्रह, हमेशा।

નિત નિત (क्रि वि.) दिन दिन प्रतिदिन, निरंतर, लगातार, अब और तब

નિતંબ (सं.) चूतड़, कूल्हा, पुठ्ठा ढोगा, स्त्रियोंके काटिके पीछे का भाग।

નિતરવું (क्रि.) निथरना, निखरना, साफ होना, बूंद बूंद टपकना, झरना, चूना, धीरेधीरे बहना।

નિતર્યું-રૂં (वि.) स्वच्छ, साफ, निथरा हुवा, चमकीला, निर्मळ ।

નિતરોજ (क्रि. वि.) नित्य, रोज़ रोज, दैनिक, सतत, प्रतिवासर, हमेशा ।

નિત્ય (क्रि. वि.) शाश्वत, ध्रुव, सनातन, सदैव, निरंतर, सतत, अश्रांत, अनिश, अनारत, स्थिर, निश्चित ।

નિત્યકર્મ (सं.) प्रतिदिनका कर्तव्य कर्म, आवश्यक्रिया, दैनिक कार्य ।

નિત્યજીવી (वि) अमर, सदा जीनेवाला, मत्यु रहित, स्थिर, अचळ ।

નિત્યદાન (सं.) प्रतिदिनका कर्तव्यदान, रोज मर्रहका धर्मपुण्य ।

નિત્યાનંદ (सं.) सदानंद, जिसका आनन्द सदा वर्तमान रहे, सच्चा आनद।

નિત્યનેમ (सं.) दैनिक नियम, रोज की क्रिया, दैनिक विधि, पूजापाठ ।

નિત્યશાંતિ (सं.) स्थाई शाति, सच्ची स्थिरता, चैन, आनन्द ।

નિત્યે (क्रि. वि,) देखो नित्य

નિંદણ (सं.) निराना, घासपात, बे काम के पौदे ।

નિંદવું (क्रि.) नींदना, निराना, गोड़ना, घासफूस छांटना, घासपात या निकम्मे पौधे निकालना ।

નિંદામણ (सं) हरीघास, घासपात ।

નિદાન (सं.) मूल कारण, रोग निर्णय, निष्कर्ष, सरांश, मूलानुसन्धान, कम मूल्य, (क्रि. वि.) पीछे, बादमें, अन्तमें ।

નિદ્રા (सं.) अवस्थाविशेष, मनुष्य की अवस्था, नींद, शयन सुषुप्ति की अवस्था, सोना, कर्मेन्द्रियों के विषयोसे जीवकी पृथक् होने की अवस्था, मेध्या नामक नाड़ी सेमनका संयोग ।

નિદ્રાતુર (स.) निद्राकुल, निद्रागस्त, निद्राकान्त, नीदके वश।

નિદ્રાભાવ (सं.) बे चैनी, व्याकुलता बेहोशी, निद्राबोध ।

નિદ્રાભંગ (सं.) प्रबोधन, जागरण निद्रात्याग, चेत, निद्रावसान ।

નિદ્રાવશ (वि.) निद्राग्रस्त, निद्रातुर, नींदकेवशीभूत ।

નિદ્રાહીન (वि.) निद्रारहित, व्याकुल बे चैन, बेनींद ।

નિદ્રાળુ (वि.) निद्रालु, निद्राशील, सोनेवाला, सुवैया ।

[illegible] (सं.) निर्भय, निडर, अधिक साहसी, उद्योगी, (क्रि. वि) बेफिकरीसे, अचानक, सहसा, एकाएक, अकस्मात ।

નિધણિયો (वि) बिनास्वामीका, बेमालिक, अनाथ ।

નિધન (सं.) मृत्यु, नाश, मरण, ध्वंस, मौत ।

નિધાન (सं.) निधि आधार, पात्र, स्थापन, खजाना, जगह, निवास ।

નિધિ (सं.) भाण्डार, सम्पत्ति रत्नावशेष, गड़ाहुवाकोश, समुद्र, भाण्ड ।

નિંદ (सं.) नींद, निद्रा, शयन, सोना।

નિંદક (वि.) निंदा करनेवाला, दूसरों का दोष ढूंढनेवाला, परदोषानुसंधान कर्ता, चुगलखोर ।

નિંદવું (क्रि.) कलङ्क लगाना, निंदा करना, अपवाद करना ।

નિંદા (सं.) अपवाद कुत्सा, गर्हा, कलंक, अयश दुर्नाम, बुराई ।

નિંદાખોર (सं. , निंदा करनेवाला कलंकित करनेवाला, निंदक, अपवाद कर्ता, बुराई करनेवाला।

નિંદ્ય वि.) निंदनीय, हेय, तुच्छ कुत्सित, गर्हित, कलंकनीय ।

નિપજ (सं.) उत्पत्ति, उपज, जन्म, प्रकाश, पैदा, लाभ, फायदा, उग, उद्गम, जड. निकास ।

નિપજવું (क्रि.) पैदा होना, [illegible] होना, उत्पन्न होना, लाभ होना ।

નિપજાવવું (क्रि) पैदा कराना, रचना, बनाना, उपजाना ।

નિપટ (क्रि. वि.) बहुत, अधिक, अत्यंत, अतिशय, सब, नितान्त, बिलकुल (वि.) लज्जारहित, बेशरम ।

નિપટનિરંજન (सं.) अत्यंत दुष्ट, महान दुर्जन बिलकुल पाजी ।

નિપાત (सं) मृत्यु, पतन, गिरना, मरण, नाश, निधन, अधः पतन, मौत, ।

નિપાણો (म.) देखो नेपाणो।

નિપુણ (वि.) कार्यक्षम, अभिज्ञ, पटु, योग्य, प्रवीण, कुशल, दक्ष, चतुर, हुनरमन्द, होशियार ।

નિપુણતા (सं.) प्रवीणता, दक्षता, योग्यता, होशियारी ।

નિબંધ (सं. मजमून, ग्रंथ, संदर्भ, ग्रंथोंकी वृत्ति रचना।

નિભવું (क्रि.) पार लगना। पार पड़ना, समाप्त होना, बन आना ।

નિભાઉ (वि.) थकने योग्य, टिकाऊ, चिरस्थायी, पार पड़ने योग्य

નિભાવ—વો (सं.) निर्वाह, गुजारा, गुजर, जीविका, भोजन, रोजी ।

નિભાવવું (क्रि.) निबाहना, पार करना, रक्षा करना, सहाग देना, निगाह रखना, आश्रय देना ।

નિર્ભ્રાંત (वि.) भ्रांत रहित, अवश्य, बेशक, निस्सन्देह ।

નિમ (सं.) देखो નિયમ

નિમક-ખ (सं.) नून, नोन, लोन, लवण, क्षार ।

નિમકદાની (सं.) नमक पात्र, लवण रखनेका पात्र, नोन रखनेका बर्तन ।

નિમકહરામ (वि.) अविश्वस्त, विश्वासघातक, धोकेबाज, कृतघ्न, अभक्त ।

નિમકહરામી (सं.) कृतघ्नता, नाशुकगुजारी. नेकीके बदले बदी, धोकेबाजी ।

નિમકહલાલ (वि.) विश्वस्त, भक्त, शुक्र गुजार, कृतज्ञ ।

નિમકહલાલી (सं.) कृतज्ञता, एहसानमन्दी, धन्यवाद, भक्ति ।

નિમગ્ન (वि.) डूबा हुवा, ग्रसित, दबा हुवा, बोरा हुवा, मग्न ।

નિમણૂક (सं.) देखो નેમણૂક

નિમંત્રણ (सं. आमंत्रण, आह्वान, आवाहन, न्यौता, बुलाहट, नेवता ।

નિમદાખાનું (सं.) तंगकोठरी, गुफा, तळघर, भूगर्भ में कंदरा ।

નિમવું (क्रि.) स्थित करना, नियुक्त करना, नाम लेना, नाम निर्देश करना ।

નિમાજ (सं.) वन्दना, प्रार्थना, ईश्वर भजन, नमाज, मुसलमानी पूजन । [पढनेवाला ।

નિમાજી (सं.) भक्त, नमाज

નિમાળા (सं.) रोवाँ, बाल, केश, लोम ।

નિમિત્ત (सं.) कारण, हेतु, निदान, प्रयोजन, वास्ते, लिये, मतलब, भूमि, सबब, गर्ज, उद्देश, जरिया, झूठा दलील, बहाना, झूंठा दिखावा ।

નિમિષ-મેષ (सं.) नेत्रोंके पलका स्पन्दनकाल, पलक, अति सूक्ष्म काल, विपल, क्षण, लव ।

નિમે (वि.) आधा, अर्द्ध, $\frac{1}{2}$ ।

નિમો (सं.) जामा, सभावस्त्र, कबा ।

નિયંતા (सं.) शास्ता, शासन कर्ता, प्रभु, नियामक शासन करनेवाला, रथवान ।

નિયમ (सं.) निश्चय, अवधारण, निर्बंध, निरूपण, प्रकार, धारा, दमन, निरोध, योगी, शौच, सन्तोष, तप, प्रतिज्ञा, अंगीकार, स्वीकार, कर्तव्यकर्म, कानून

कायदा, हुक्म, आज्ञा, ढंग, तौर, तर्ज़, विधि, तरीक़ा।

નિયમસર (क्रि. वि.) नियमानुकूल, बाकायदा, विधिपूर्वक, उचित रीतिसे।

નિયમિત (वि.) कृत नियम, नियमबद्ध, निश्चित, विधिबद्ध।

નિર (सं.) शब्द के पूर्व लग कर हीनता या अभाव सूचक अर्थ बतानेवाली प्रत्यय, (क्रि. वि.) नहीं, बिना निश्चय, बाह्य, बाहर, उचित।

નિરંકુશ (वि.) बाधाशून्य, अनिवार्य, स्वतंत्र, स्वेच्छाचारी, नियम निरादरपूर्वक कार्यकर्ता, स्वतंत्र।

નિરક્ત (वि.) रक्तहीन, खूनहीन, पीला धुधला, फीका, जर्द।

નિરખ (सं.) बाजारभाव, दर, भाव, वर्तमान मूल्य, जांच, परख, परीक्षा, देखभाल।

નિરખવું (क्रि.) निरखना, देखना, ताकना, निरीक्षण करना।

નિરંજન (वि.) निर्मल, तेजोमय, निष्कलंक, मूल या त्रुटि (देखताकी) सर्वज्ञानी, अनन्तज्ञानी।

નિરંતર (क्रि. वि.) निविड़, घन, अनवकाश, सर्वदा, अविच्छेद, अनवरत, असीम, अपरिणाम, अभेद, सदृश, सम्मान, सघन, सटाहुआ, अंतर रहित, पासपास।

નિરંતતા (सं.) सनातनत्व, निरन्तरता, समानता, साहृश्य।

નિરધાર (वि.) देखो નિર્ધાર

નિરધારવું (क्रि.) देखो નિર્ધારવું

નિરપકારી (वि.) निष्पापी, निर्दोषी, निरपराधी, बे कसूर,

નિરપરાધ (वि.) अपराध शून्य, दोष रहित, निष्पाप, निर्दोष।

નિરપરાધી (वि.) दोषहीन, निर्दोषी अपराध रहित, बे कुसूर।

નિરપરાધીપણું (सं.) निर्दोषता, पवित्रता, साधुता।

નિરપેક્ષ (वि.) स्वाधीन उदासीन लापरवाह अनपेक्ष, इच्छारहित।

નિરભિમાન-ની (वि.) गर्व रहित, बे घमण्ड, गर्व शून्य, अभिमानहीन।

નિરભ્ર (वि.) स्वच्छ आकाश, मेघ रहित, बादल रहित. साफ आस्मान।

નિરર્થ-ક (वि.) अनर्थक, अप्रयोजन, व्यर्थ, विफल, बे मतलब।

નિરબુધ (सं.) बुद्धिहीन, मूर्ख, शठ।

નિરણું (क्रि.) पशुओंके घास डालना, चरने के लिये पशुओं के आगे चारा रखना ।

નિરશન (सं) व्रत, उपवास, निराहार ।

નિરસ (वि.) रसहीन, बे स्वाद, रसाभाव, नीरस, शुष्क ।

નિરાંત (सं.) छुट्टी, फुर्सत, आराम, सुख, चैन, धीरज ढाढस ।

નિરાકરણ (सं.) निवारण, दूरीकरण, वहिष्करण, फैसला, न्याय, प्रबंध।

નિરાકાર (वि) आकार रहित अशरीर (सं.) आकाश, ईश्वर ।

નિરાચાર (वि) वेदविद्या रहित, आचार भ्रष्ट, धर्महीन, देवनिंदा, पाप, न्यायहीनता, आचरणहीनता जंगली, वहशी ।

નિરાધાર (वि) आधार शून्य, अनाश्रय आश्रयरहित शून्यस्थित।

નિરાભાસ (वि.) अशोच, समझ से बाहर, बुद्धिसे परे । [स्वस्थ ।

નિરામય (वि.) रोग रहित, निरोग,

નિરાલંબ (वि.) खाली, सूना, उजड़, लाचार, अनाश्रय, अनाथ मित्रहीन ।

નિરાશ (वि.) आशाहीन, बे भरोसे, हताश, नाउम्मेद ।

નિરાશા (सं.) आशा हीनता, बे भरोसा, नाउम्मेदी ।

નિરાશ્રય-શ્રિત (वि.) आश्रय शून्य निरास, निरालंब,

નિરાહાર (सं.) अभोजन अनशन भोजनाभाव, व्रत, उपवास ।

નિરાળું (वि.) निराळा, अलग एकान्त, निर्जनस्थान बेमेल, दूसरा, जुदा, पृथक् ।

નિરીક્ષણ (सं.) अवलोकन, देखन, देखना, दर्शन, ईक्षण, ताक, घूर इकटक दृष्टि ।

નિરુત્તર (वि.) उत्तरहीन, अवाक, लाजवाब उत्तर देनेमें असमर्थ ।

નિરુત્સાહ (वि.) उत्साह हीन, निश्चेष्ट, नाउम्मेद ।

નિરુદ્યમ-મી (वि.) उद्यम हीन, उद्यमाभाव विशिष्ट, निकम्मा, निकाम, निश्चेष्ट ।

નિરુપકારી (वि.) नाशुकगुज़ार, अधन्यवादी, जो कभी, किसी पर कृपा या उपकार न करे । अनुपकारी, अग्राह्य, अप्रिय ।

નિરુપદ્રવ (वि.) उत्पात रहित दौरात्म्य हीन, शांत, अचंचल ।

નિષ્પક્ષપાતપણું (सं.) निर्दोषता, पवित्रता, साधुता ।

निरपराधी (वि.) निरपराध निर्दोष, साधु, भला।

निरुपम-म्य (वि.) अतुल, उपमाशून्य, अनुपम, बे मिसाल।

निरुपयोगी-ग (वि.) अनुचित, उपयोगमें न आने योग्य, बे कामका निकम्मा, व्यर्थ, जिसके उत्तरकी आवश्यकता नहीं ऐसी बात।

निरुपाय (वि.) उपाय रहित, निराश्रित, बे तदबीर।

निरुपणु (सं.) निर्णय करना, वितर्क करना, स्थिर करना, अवधारण।

निरोगी (वि) स्वस्थ, तन्दुरुस्त, रोग रहित, आरोग्य चंगा।

निरोगीपणु (स.) स्वास्थ्य आरोग्यता, तन्दुरुस्ती, नीरोगता।

निरोध (स.) वेष्टन, अवरोध, घेरा, फांस, रोक, आड़।

निरोधन (वि.) रोक, अटकाव, अवरोधन, घेर, फांस।

निर्गत (वि.) विस्तृत, निकला हुवा, दुर्बल, क्षीण, कमजोर निर्बळ।

निर्गंध (वि.) बासरहित, गन्धशून्य, गन्ध हीन, बेबू।

निर्गम (क्रि.) बहिर्गमन, निःसरण, भाग्यवान, सौभाग्यशील, सुखी।

निर्गमन (पुं.) बहिर्गमन, बाहर की ओर गमन, निकास, अवसान।

निर्गुण-णी (वि.) त्रिगुणातीत, गुण रहित, गुणएहसानमाननें वाला, गुण स्वभावसे परे (देवताओंके लिये)

निर्घृण (वि.) निर्दय, पापी, घृणा रहित, बे रहम, पाषाण हृदयी, संगदिल,

निर्घोष (वि.)शब्द रहित, ध्वनि रहित, प्रत्येक प्रकारका शब्द शब्द मात्र।

निर्जन (वि) जनरहित स्थानादि, अकेला, विजन, एकान्त।

निर्जर (स.) अमर, देवता, देव, अजर (वि.) वृद्धावस्था से रहित, जो पुराना न हो।

निर्जळ (वि.) जळशून्य, मरुभूमि, जलरहित, बिनापानी।

निर्जळा अग्यारस (सं.) निर्जलैकादशी, जेष्ठ शुक्ल एकादशी, वह एकादशी जिसमें आचमन के अतिरिक्त जल को पीना वर्जित है।

निर्जीत (वि.) सर्वथाजीताहुवा, बिलकुल पराजित, सम्पूर्ण रूपसे वशवर्ती।

નિર્જિતેંદ્રિય (वि.) जिसने काम क्रोधादि को वश में न किया हो, विषयी, इन्द्रियदास ।

નિર્જીવ (वि.) जीवात्मा रहित, प्राणशून्य, मराहुवा, मृत, दुर्बल, श्रान्त, कमजोर, हीन ।

નિર્ઝર (वि.) पर्वत से झरनेवाला जल प्रवाह, पहाड़ का झरना, जलधारा, झरना जल प्रवाह ।

નિર્ણય (सं.) निश्चय, अवधारण, स्थिरी करण, विचार, तर्क, चर्चा, विरोध, परिहार, सिद्धान्त वाक्य, सार, विधान ।

નિર્ણાયક (वि.) निश्चित, स्थिर, संकल्पित ।

નિર્દય (वि.) निष्ठुर, काठिन, दयाशून्य, संगदिल, बेरहम, कृपाहीन बेदिल ।

નિર્દયતા (सं.) निष्ठुरता, दया-शून्यता बेरहमी, संगदली ।

નિર્દાતા (सं.) अनुदार, निर्दय, नीच । [कथन, निरूपण, निर्णय ।

નિર્દેશ (सं.) आज्ञा, आदेश, प्रस्ताव

નિર્દોષ-ષી (वि.) दोषरहित, अपराधशून्य, निष्कलंक निष्पाप।

નિર્ધન-ની (वि.) दरिद्री, कंगाल, दीन, गरीब, धनरहित, धनहीन ।

નિર્ધાતુ (वि.) दुर्बल, कमजोर, निर्बल ।

નિર્ધાર (क्रि. वि) निश्चय, निर्णय जातिगुण और क्रिया को लक्ष्य में रखकर जात्यादि की उत्कृष्टता से सजातीय से पृथक् करना, यथा मनुष्यों मे ब्राह्मण, गौओं में कालीगौ, पथिकों में शीघ्रगामी श्रेष्ठ है ।

નિર્ધારવું (क्रि.) चुनना, निर्णय करना, निश्चय करना, स्थिर करना ।

નિર્ધાસ્ત (वि.) असावधान, अचेत, गाफिल, बेहोश । [दुर्बल ।

નિર્બળ (वि.) अशक्त, कमजोर,

નિર્બળતા (सं.) कमजोरी, दुर्बलता ।

નિર્બુદ્ધ (वि.) मूर्ख, बुद्धिहीन, शठ, जड़, बेवकूफ ।

નિર્બુદ્ધિ (सं.) बेवकूफी, शठता, मूर्खता ।

નિર્બોધ (वि.) अशिक्षित बेसीखा बेतालीम, अनजान, बोधरहित ।

નિર્ભય (वि.) भयरहित, निडर, साहसी, धृष्ट, ढीठ ।

નિર્ભયતા (सं.) भयहीनता, निड-रता, साहस, धृष्टता ।

નિર્ભર (सं.) जिस में अधिक भार हो, अतिशय, अतिमात्र, जो अत्यधिक हो, पूर्ण, परिपूर्ण।

નિર્ભત્સના (सं.) डाट, निन्दा, तिरस्कार, त्याग, धिक्कार, झिड़की, गाली।

નિર્ભાગ્ય (वि.) बदकिस्मत, माग्यहीन, बेतकदीर।

નિર્ભ્રાંત (वि.) भ्रांति रहित, निश्चय, बेशक निधड़क।

નિર્ભેદ્ય (वि.) अगम बेगुजर, अभेद्य, जो वेधा न जा सके।

નિર્ભેદ્યતા (सं.) अगमता, अभेद्यता।

નિર્મવું (क्रि.) निर्माण करना, रचना, बनाना, पैदा करना, कारण होना, उत्पन्न करना।

નિર્મળ (वि.) मळ रहित, स्वच्छ परिष्कृत, शुद्ध, उजला, पवित्र।

નિર્મળતા (सं.) सफाई, शुद्धता, पवित्रता, उजलापन।

નિર્મળી (सं.) वृक्ष, पेड़।

નિર્માણ (वि.) निर्मित, गठन, रचना, प्रथन, सृष्टिकरण।

નિર્માણકરતા-ર્તા (सं.) निर्माता, रचक, रचयिता।

નિર્માયિક (वि.) मायारहित, छल कपटरहित।

નિર્માલ્ય (वि.) गुणहीन, अयोग्य, निकम्मा, विनीफूल, निरस पुष्प, बासीफूल।

નિર્માળ (सं.) वह पुष्प जो देवता को अर्पण कर दिया गया हो या बासी हो गया हो।

નિર્મિત (वि.) रचित, कृत, बनाया हुवा, गठित।

નિર્મુખ (वि.) निराश, विमुख, आशारहित, ना उम्मेद।

નિર્મૂળ (वि.) मूल रहित, उखड़ाहुवा, बेबुनियाद, बेजड़, बिना मूलका।

નિર્મોહ (वि.) मोह रहित, निर्दय, कठिन, मायारहित, प्रेमहीन।

નિર્યાસ (सं.) कषाय, क्काथ, वृक्षोंका रस, गोंद, काढा, अर्क, रस।

નિર્યુક્તિ (वि.) युक्तिरहित, अनुपयुक्त अनुचित।

નિર્લજ્જ (वि.) लज्जाहीन, नकटा, बे शर्म, बेहया, लाजरहित

નિર્લોભ-ભી (वि.) लोभ रहित लोभ हीन, अलोभी. बे लालच।

નિર્વચન (सं.) व्याख्या, टीका विवरण, अर्थ,

निर्वंश (वि.) वंश हीन, कुल-हीन, पुत्र रहित, संतान रहित, कुलारिष्ट, अनाथ कुल वा वंशका नाश। [नग्न।

निर्वस्त्र (वि.) वस्त्र रहित, नंगा

निर्वाण (वि.) आखिर, अतिम निश्चय, अवश्य, (सं) मोक्ष, मुक्ति परमपद।

निर्वाह (सं.) निष्पत्ति, समाप्ति जीविका रोजी, कार्यसाधन।

निर्विकल्प (वि.) वह ज्ञान जिससे ज्ञात और ज्ञेयका विभाग विशेष्य और विशेषण रूप सम्बन्ध वा नाम तथा गुणत्व का सम्बन्ध दूर हो गया हो, जीव और ब्रह्मकी अख-ण्डाकार एकत्व विषयक वृत्ति का यातकज्ञान, न्याय शास्त्र में वह ज्ञान जो प्रकारता आदिसे रहित सम्बन्धान वगाहि और इन्द्रियों के गोचर नहो। देवता।

निर्विकार (वि.) विकार शून्य घृणा रहित, एक रस, एक भाव क्रोध काम से रहित।

निर्विघ्न (वि.) अबाध, बाधार-हित अक्लेश, अनुद्वेग।

निर्विण्ण (वि.) आशाहीन, निराश, दबा हुवा, नीचा किया हुवा।

निर्विवाद (वि.) विवाद शून्य, आपत्ति रहित।

निर्विवेक (वि) निर्बोध, विचार रहित, ज्ञान हीन। [रहित,

निर्विष (वि.) बेजहर, विष

निर्वृत्ति (सं.) सिद्धि, निष्पत्ति, निष्पाद, वृत्ति रहित, आराम विश्राम, तसल्ली, शांति।

निर्वृत्त (वि.) प्राप्त, शात पहुंचाहुवा।

निर्वृति (सं.) सम्पूर्णता, परिपू-र्णता, योग्यता, कामयाबी।

निर्वेद (सं.) सासारिक बधनोंसे मुक्त, दृढ प्रमाणत्व, यथार्थता, घृणा अरुचि।

निर्वेध (वि.) आपत्ति रहित, बेरोक, स्वतंत्र,

निर्व्यसनी (वि.) कुटेव रहित, बुरी आदतोंसे दूर, व्यसन रहित।

निलय (स.) मकान, वास स्थान, रहने का मकान, घर, गृह, गेह।

निलवट (सं.) कपाळ, मस्तक, माथा,

निलाजरापण (सं.) बे अदबी निर्लज्जता, बे शरमी।

निलाजरू (वि) निर्लज्ज, बेशर्म।

નિવડવું (क्रि.) बाहर होना, लौटना, साबित करना, परीक्षा करना, तजरबा करना, होना, प्रत्यक्ष होना, स्पष्ट होना, प्रसिद्ध होना, नाम पाना प्रतिष्ठा पाना ।

નિવાડો (सं.) फैसला, तरतीब, निर्णय, विचार बन्दोबस्त, प्रबन्ध

નિવારણ (सं.) रोक रुकावट, अटकाव, उपशमन, प्रशमन, निराकरण ।

નિવારવું-ણ કરવું (क्रि.) बाधा दूर करना, निवारना, हटाना, प्रशमित करना, उपशमित करना, अलग करना ।

નિવાસ (सं.) गृह, घर, आश्रय, रहनेका स्थान, मकान, रहन ।

નિવાસી (वि) रहनेवाला, बसनेवाला, वास कर्त्ता, निवास करनेवाला ।

નિવૃત્ત (स) मुक्त, अवकाश प्राप्त, बन्धन रहित, विश्राम; निरत, लौटा हुवा, हटा हुवा, धीरज, ढाढस, सुख, चैन, सुगम ।

નિવૃત્તિ (स) परिश्रम से मुक्त, मिहनत से छुटकारा ।

નિવેડો (सं.) देखो નિવાડો

નિવેદન (सं.) प्रार्थना, विनम्ती, विनय, अभिलाष प्रकाश, मनोरथ कथन, दरख्वास्त, सद्भाव पूर्वक जतलाना ।

નિશ (सं.) रात्रि, रात, रजनी, शर्वरी, यामिनि, शब ।

નિશદિન (सं.) प्रतिदिन, रात-दिन, अहर्निशि, शबोरोज ।

નિશા (सं.) रात्रि, रात, रजनी नशा, मतवालापन, मस्ती ।

નિશાકર (सं. चन्द्रमा, विधु, इन्दु, चांद ।

નિશાખોર (सं.) नशेबाज, नशा-करनेवाला मादक द्रव्य सेवी ।

નિશાચર (सं) राक्षस, चोर, शृगाल, उलूक, उल्लू, सर्प, लुटेरा, चक्रवाक, चकवा, चमगीदड़ रातमें घूमने वाला ।

નિશાણ-ન (सं.) झंडा, ध्वजा, पताका, चिन्ह, पहिचान, लक्ष ।

નિશાની-ણી (सं.) चिन्हौनी, चिन्ह, पहिचान, लक्षण, संकेत स्मरण, यादगार ।

નિશાતરો (स) कूटने का पत्थर, पीसने का पत्थर, लोढी, मूसली ।

નિશાળ (स) पाठशाला, विद्यालय, मदरसा, मकतब, स्कूल, कालिज, गुरुगृह, पढ़नेका स्थान ।

નિશાળગરણું (सं) पाठशाला में प्रवेश करने के समय सरस्वती पूजन, पट्टी पूजन, विद्यारंभ संस्कार।

નિશાળીઓ (सं.) विद्यार्थी, छात्र, शिष्य, पढैया, पढनेवाला।

નિશોતર (सं.) जुल्लाबदायक एक बूटी विशेष, विरेचक बूटी विशेष निशोत नामक प्रसिद्ध औषधि।

નિશ્ચંચળ (वि.) दृढ, स्थिर, अचल, अटल एक रूप।

નિશ્ચય (सं.) स्थिर, अचचल, असंशय, निर्णय, सिद्धान्त, अवधारण, विश्वास, प्रतिज्ञा, प्रबन्ध, न्याय विचार, भरोसा, साहस, (क्रि. वि.) अवश्य, निस्सन्देह, जरूर, सचमुच, वास्तविक।

નિશ્ચયપૂર્વક (क्रि. वि.) दृढता युक्त, विश्वास पूर्वक, अवश्य।

નિશ્ચળ (वि.) अचल, स्थिर स्थावर।

નિશ્ચિત-શ્ચંત (वि.) निर्णीत, स्थिरीकृत, सिद्धान्तित, निश्चय किया हुवा।

નિશ્વાસ (सं.) बाहिः श्वास, प्राणवायु, निसांस, सिसकी।

નિશ્શંક (सं.) निडर, शंका रहित, अवश्य, निस्सन्देह, निधड़क।

નિષાદ (सं.) धीवर, मछवाहा, स्वर विशेष, सातवा स्वर "नी"

નિષિદ્ધ (वि.) वर्जित, निवारित, रोका, प्रतिषेधित, मनाकिया हुवा दोषयुक्त।

નિષેધ (सं.) प्रतिषेध, निवृत्ति, निवारण, बारण, मना, ना, इन्कार।

નિષેધક (वि.) निषेध कर्त्ता, रोकनेवाला, निवारण करनेवाला।

નિષેધવું (क्रि.) रोकना, वर्जित करना, मनाकरना, निवारण करना

નિષ્કંટક (वि.) काटों रहित, जिस मे काटे न हों, अकण्टक, कण्टक शून्य, निरुद्वेग, बेरोक टोक।

નિષ્કપટ-ટી अकपट, सीधा, सरस, कपट शून्य, बेदगा।

નિષ્કરુણ (वि.) निर्दय, दयाशून्य करुणा रहित बेरहम।

નિષ્કર્મી-ર્મ (वि.) क्रोधादि रहित, इच्छारहित, अकर्मा, कर्म्म रहित, अलस, निष्काम।

નિષ્કલંક (वि.) निर्दोष, अदोष, अपराधहीन, शुद्ध दीप्ति धवल, बे दाग, कलंक रहित, बे ऐब।

નિષ્કામ (सं.) देखो निष्कर्म

નિષ્કામું (वि.) व्यर्थ, बे फायदा, अकारण, फुजूल।

નિષ્કારણ (क्रि वि) कारण रहित बेसबब, निष्प्रयोजन।

નિષ્કાળજી (वि.) चिंतारहित, निश्चिंत, बे फिक्र।

નિષ્ઠ (सं.) स्थित, स्थिर, तत्पर, अभिनिविष्ट तत्रस्थ।

નિષ્ઠા (सं.) निष्पत्ति, नाश, अत, निर्वहण, यात्रा, दृढ विश्वास, पूर्ण भक्ति, धर्म विश्वास धर्म तत्परता, विश्वास, स्थिरता, धर्मादिका यकीन।

નિષ્ઠુર (वि) परुष, कठोर, निर्दय, कठिन, क्रूर, दुराचार, सख्त।

નિષ્પત્ર (वि.) बिनापत्तोंका, पत्र रहित, सूखा वृक्ष, पत्ररहित, करील वृक्ष।

નિષ્પક્ષપાત-તી (वि.) पक्ष रहित, पक्षपात शून्य, बे शिफारिश, न्यायी सच्चा, मुन्सिफ,

નિષ્પાપ (वि.) निरपराध, निर्दोष, पापहीन, बेकुसूर, शुद्ध, पवित्र।

નિષ્પ્રયોજન (वि.) निरर्थक, अहेतुक, अकारण प्रयोजनरहित, व्यर्थ बे सबब, बे मतलब।

નિષ્ફળ (वि.) फलरहित, विफल, निरर्थक, व्यर्थ, फुजूल।

નિઃસંતાન (वि.) सन्तान हीन, जिसके कोई बालक न हो, बांझ (स्त्री)

નિસરણી (वि) सोपान, नसैनी, काष्ठ सोपान, लकड़ी का बना हुवा उपर चढ़ने का चढाव।

નિસરવું (क्रि.) निकलना, बाहिर आना, फूट आना, प्रकट होना।

નિસાણી-શાણી (सं.) चिन्ह, पहिचान, चिन्हौती, सकेत, सबूत, निशान, मोहर, सिक्का, सैन, इशारा।

નિસાસો (सं.) आह, ठंडी साँस, निःश्वास, गहरी साँस, दीर्घ स्वांस, हाय, कराह, श्राप, धिक्कार।

નિસાસો નાખવો (क्रि.) लंबी साँस लेना, ठंडी साँस त्यागना, हाय मारना, आह भरना, श्राप देना, धिक्कारना।

નિસ્તરવું (क्रि.) बचना, उद्धार पाना, त्राण पाना, मुक्त होना, मोक्ष प्राप्त करना, छूटना, उबरना।

નિસ્તારો (सं.) मुक्ति, मोक्ष छुटकारा, बचाव, उद्धार, त्राण, रक्षा।

નિસ્તેજ (वि.) तेजहीन, प्रताप रहित, भोथा, पीला, फीका, धुंधला, जर्द ।

નિસ્પૃહ-હી (वि.) निरभिलाष, निर्लोभी, वांच्छारहित, स्पृहाशून्य, निष्पक्ष, बे गरज, अपक्षपाती ।

નિસ્બત (सं.) बाबत, सम्बन्धित

નિસ્સત્વ (वि) बदसूरत, बे डौल, सार हीन, रस रहित, बेजान, बे स्वाद, फीका, सीठा, कुस्वादु ।

નિસ્સંશય (वि.) बेशक, अवश्य, संशय रहित, निःसन्देह. शंका-शून्य, बे शुबहा ।

નિહંતા (सं.) नाश कर्ता, मारनेवाला नाशक, बर्बादी, नष्ट करने वाला ।

નિહારી (सं) कलेवा, प्रातःकालीन भोजन, जलपान, फलाहार ।

નિહાળવું (क्रि.) अच्छीतरह देख भालकरना, खूब जाच पड़तालना।

નીખ (सं.) सिर के बालों की छोटी जूँ, लीख, जूँ के अण्डे ।

નીખરવું (क्रि.) प्रकाशित होना, साफ होना, निथरना, उजला होना ।

નીખાયો (सं.) कंघा, कंघी, केश मार्जनी, बाल काढने का (कंघा)।

નીંદ (सं.) निद्रा, शयन, सोना, झपकी, उँघाई, आलस ।

નીઆસ (सं.) प्रशंसा, सराहना, तारीफ, स्तुति, कीर्ति, वाहवाही ।

નીક (सं.) नाली, मोरी, गटर,

નીકાહ (वि) मुसलमानोंका विवाह संस्कार, यावनी विवाह, निकाह ।

નીકું (वि.) शुद्ध, पवित्र, साफ, स्पष्ट, उत्तम, प्राह्य, उम्दा ।

નીઘા (सं.) दृष्टि, आँख, देख, ध्यान, विचार, समक्ष, निगाह ।

નીચ (वि) अधः निम्न, अपकृष्ट, अधम, इतर, जघन्य, कमीन ।

નીચ ઉચ (वि.) बुरा भला, छोटा बड़ा, लघु दीर्घ ।

નીચપણુ (सं) क्षुद्रता, नीचता, अधमाई, दुष्टता, कमीना पना ।

નીચલુ (सं) नीचा, धीमा, कमी, ना, छोटा ।

નીચાઇ-ચપણુ (सं.) कमीन पन, ओछापन, शूद्रता, अधमता, नीचता लघुता, छोटाई । [कान ।

નીચાણ (सं) उतार, ढाल, लुढ़-

નીચી મુંડી કરવી (क्रि) लज्जित होना, शर्मिंदा होना, नीचा सिर करना ।

નીચુ (वि.) निम्न, नीच, लघु, छोटा, कमीन, ओछा, क्षुद्र, शूद्र, कम, अधम ।

નીચુ લાગવુ (क्रि) तुच्छ मालुम होना, कमलगना, छोटा विदित होना ।

નીચે (क्रि. वि.) तले, पेंदेमें ।

નીચે ઉપર (क्रि. वि.) तळे उपर।

નીજ (सं.) देखो નિજ ।

નીજાત (सं.) पापोंसे छुटकारा, क्षमा, मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा, नजात ।

નીટ (सं नाकका बलगम, नासिका जनित कफादिमल, रींट, रेट ।

નીઠવુ (क्रि) फिसळजाना, खिसक जाना, सरकजाना, रपट जाना ।

નીત (क्रि. वि.) देखो નિત્ય

નીતર (क्रि. वि.) नहीं तो, और, भी, परतु, अथवा, शायद, किंचित क्या जाने, ऐसा न हो कि, कदाचित्, और प्रकार से, दूसरों बातोमे, या, किंवा ।

નીતાર (सं.) उतार, घटाव, कमी, धीरे धीरे कम होना ।

નીતિ (सं) न्याय्यव्यवहार, आचार, नीतिविद्या, शास्त्रविशेष, योग्यता ।

નીતિઉપદેશક (सं.) न्यायशास्त्रका उपदेष्टा, नीतिशास्त्रका उपदेशक ।

२४

નીતિકથા (सं.) हितोपदेश, क्षुद्र उपाख्यान, ग्रन्थ विशेष, न्यायकथा।

નીતિમય (वि.) वाजबी, ठीक, उचित, सदसदाचार सम्बन्धी, नीतियुक्त ।

નીતિમાન-વાન (वि.) नीतिज्ञ, नीतिशास्त्र विशारद, राजमंत्री, नीतिशास्त्र वेत्ता ।

નીતિવચન (सं.) हितवचन, शास्त्रवाक्य, उचित सूचना ।

નીતિશાસ્ત્ર (सं.) नीतिविद्या, हितोपदेश देने वाला शास्त्र ।

નીદણુ-દાણુ (सं) मोथा, घासफूस, निकम्मे पौधे ।

નીદર (सं.) नींद, आलस, झपकी, निद्रा । उघाई ।

નીધ (सं) आधार, समुद्र, भाण्ड, आगार, कोष, खजाना ।

નીભાડો (सं.) भट्टी, भठ्ठ, आवा, अवा, वडी भठ्ठी ।

નીમ (सं.) निश्चय, अवधारण, निर्णय, निरूपण, प्रकार, धारा, दमन, निरोध, नियम ।

નીમભાગ (सं.) आधा, अर्द्ध, है

નીમગોળો (सं.) गोलार्द्ध, गोलाई का अर्द्ध भाग ।

નીમહકીમ (सं.) अर्द्धवैद्य, मूर्ख हकीम, अधूरा वैद्य, मिथ्या चिकत्सक, ठगवैद्य, कच्चाहकीम।

नीमहकीमी (सं.) मिथ्या चिकित्सा, झूठी हिकमत ।

नीमार (सं.) एक प्रकार के लाल रंग के चावल, चावल विशेष ।

नीमाळा (सं.) बाल, रोवां. रोम, केश ।

नीमे (वि.) आधा, अर्द्ध, •॥, (क्रि. वि.) आधेद्वारा, आधेपर ।

नीमेनीम (वि.) आधोआध, आधा और आधा, आधों से, आधे आधे ।

नीमो (सं.) जामा, सभावस्त्र, झबा, गाउन, झंगा ।

नीર (सं.) पानी, जल, रस ।

नीरगुंडी (सं.) औषधि विशेष । पौधा विशेष, नीलशेफालिका पुष्प, एक। औषधि का नाम, पुष्प विशेष, संभालू ।

नीरथ (सं.) बांस जो नौका को सीधा रखने के लिये लगाया जाता है ।

नीरवुं (क्रि.) पशु को घास इत्यादि भक्ष्य पदार्थ डालना ।

नीरस (वि.) रसहीन, बे स्वाद, कुस्वादु, .शुष्क, सूखा, बेमजा, सीठा, फीका ।

नीरो (सं.) तार्डी, ताड़ का रस ।

नील-लु (वि.) हरा, रंग विशेष, कालावन्दर ।

नीलकंठ (सं.) शिव, महादेव, शंभु, मोर, मयूर, शिखी, पक्षी विशेष । [विशेष ।

नीलम (सं.) नीलकातमणि, रत्न

नीवार (सं.) एक प्रकार के लाल रंग के चावल, चावलों की एक जात विशेष ।

नीवी (सं.) स्त्री की नाभि के नीचे वस्त्र ठहराने के लिये गटान, पूंजी, जैनियों का व्रत जिसमें गुड़, घी तेल आदि वर्जित है ।

नीशा (सं.) नशा, बेहोशी, मतवालापन, मस्ती, गफलट, मद ।

नीशाબાજ (वि.) नशेबाज, मद्यपी, मादक वस्तु सेवन करने वाला ।

नीसा (सं.) मसाला, इत्यादि पीसने का चपटा पत्थर ।

नीसातरो (सं) पत्थर की मूसली, लोढी, मसाला आदि पीसने की लोढी ।

नीसारत (सं.) औषधि विशेष ।

नीलिका (स.) काला तिल या मसा ।

નુકતેચીન (सं.) छिद्रान्वेषी, जांचनेवाला, दोष ढूंढने वाला, कुतर्की, विदूषक।

નુકતેચીની (सं.) छिद्रान्वेषण, दोषानुसंधान, कुतर्कना, छेड़छाड़।

નુકતો-ષ્તો (सं.) बिन्दु, सिफर बिन्दी, बोली, भाषा, ढंग, विचार अहंकार, फारसी अक्षरों के ऊपर नीचे लगने वाले बिन्दु।

નુકસાન (स.) हानि, टोटा, घाटा क्षति, कमी, घटी, न्यूनता, हर्ज।

નુકસાનકારક (वि.) हानिप्रद, क्षतिकारक, अहितकर, दुखद।

નુકશાની (सं.) हर्जा, हानि।

નુગરૂં (वि.) अधन्यवादी, निर्लज्ज, बेशरम, बेहया, नमकहराम, गुरुहीन।

નુગ્રો (वि.) जिसके गुरु न हो, बेगुरु का, विश्वासघाती, अभक्त।

નુછવું (क्रि.) निर्मल करना, साफ करना, शुद्ध करना।

નુન્ય (वि.) असम्पूर्ण, किंचित, कम, थोड़ा, अल्प, न्यून।

નુર (सं.) चमक, दमक, ताजगी, नवीनता, (मुखकी) स्वस्थता। वीरता, ढिठाई, शूरता, बहादुरी आड़ा, रुपया, रूपयों का लेनदेन।

નુરત (सं.) उज्ज्वलता, चमक, दीप्ति, दमक, सुन्दरता।

નુરાણી (सं.) चमकीला, साफ, चमकदार, नवीनता, चैतन्यता।

નૂતન (वि.) नया, नवीन, अभिनव, ताजा, अमोला।

નૂન (वि.) कम, थोड़ा, अल्प, किंचित, असम्पूर्ण न्यून।

નૂર (वि.) नवीनता, उज्ज्वल, तजागी, मुखकी कांति, वीरता।

નૂરી (सं.) तोतेकी जाति का एक पक्षी विशेष, (वि.) चमकीला, दमकीला, चटकीला, भड़कीला।

નૂસખો (सं.) औषधिकी विधि, सेवन विधि, नुसखा।

નૃત્ય (सं.) नाच, नर्तन, नाचना।

નૃપતિ (सं.) नरपति, राजा, नृपाल, सम्राट, बादशाह, भूपति, भूपाल।

નૃપાસન (स.) राजगद्दी, राजा के बैठने का आसन, शार्दूलतख्त, सिंहासन।

નૃસિંહ (सं.) प्रधान मनुष्य, नरश्रेष्ठ, नरशार्दूल, विष्णुका चतुर्थ अवतार जिसने सत्याग्रही प्रह्लादकी रक्षा कर उसके पिता हिरण्यकशिपुको मारा था।

ने (अव्य.) और, तदनन्तर, (उप.) को ।

નેક (वि.) भला, अच्छा, ईमानदार, धार्मिक, बडा, श्रेष्ठ, उत्तम, सदाचारी, उच्च, उन्नत ।

નેક મિજાજ (वि.) अच्छे मिजाजका, सरल स्वभावका, धार्मिक विचारवाला, महत्पुरुष ।

નેકખ્વાહ (वि.) सदिच्छा, शुभचिंतन।

નેકજાત (वि.) सभ्य, शिक्षित, सुशील, दयावन्त, मिहरबान, देशी

નેકનજર (वि.) उत्तम निगाह कृपादृष्टि शुद्ध चितवन, पवित्रान्तःकरण, पावनविचार ।

નેકનામ (वि.) ईमानदार, यशस्वी, नामवर, धर्मात्मा, दयालु, कलंकरहित ।

નેકનામદાર (वि.) पूजनीय, आदर सत्कार के योग्य, माननीय ।

નેકબખ્ત (वि.) धार्मिक, सुकृति, चारु चरित्र, भलामानुस, सज्जन।

નેકબખ્તી (सं.) भलाई, साधुशीलता, धर्म, पुण्य, धार्मिकता, सच्चरित्रता ।

નેકબોલી (स.) धार्मिक वार्तालाप, अच्छी बातचीत, उत्तमभाषण, पवित्र बोली।

નેકસલાહ (सं.) सदुपदेश, अच्छी सलाह, अच्छी नसीहत, धार्मिक शिक्षा, उचित परामर्श ।

નેકી (सं.) भलाई, सज्जनता, अखंडित्व, सद्भावन, शुद्धता, सफाई, उन्नति, उच्चता, भलमनसी, धार्मिकता, सच्चरित्रता.

નેકી બદી (सं.) भलाबुरा, हानि, लाभ, भलाईबुराई ।

નેગ (स.) आज्ञा, हुक्म, शासन, उपदेश, इजाजत, आदेश.

નેગવું (क्रि) खाना, भक्षण करना, भोजन करना, खा लेना।

નેગાહ (स.) नजर, दृष्टि, आँख, नेत्र, चितवन, देख, परख ।

નેચા (सं) हुक्केकी नली, हुक्के की वह नली जिसपर चिलम रखी जाता है।

નેજારા (सं.) नजारा, तिरछी, चितवन, दृगबाण, कटाक्ष ।

નેજો (स.) बल्लम, भाला, बर्छी, शूल ।

નેટ (क्रि. वि.) निश्चयपूर्वक, अवश्य दृढ, पक्का, अवश्यंभावी ।

નેડે (वि.) पास, निकट, नजीक, समीप, नजदीक, कने ।

નેડો (सं.) स्नेह, प्रेम, प्रीति, मुहब्बत, छोह, मिहरबानी ।

નેશુ (सं.) आँख, नेत्र, चक्षु, दृष्टि, अक्षि, नयन।

નેતર (सं.) बेत, एक वृक्षविशेष जिसकी शाखा की छड़ी बनती है, नेत्र, आँख, चक्षु।

નેતરૂં (सं.) दही मथते समय रई को थामनेवाली रस्सी, मथानी की रस्सी।

નેતા (सं.) अग्रगामी, अगुवा, पथप्रदर्शक, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, व्यवस्थापक, महात्मा, सुपथगामी।

નેતિ (वि.) अनन्त, नहीं, ऐसा नहीं, जिसका पार न हो, अपार।

નેત્ર (सं) चक्षु, नयन, अक्षि, आँख।

નેત્રકટાક્ષ (सं.) इशारा, सैन, आँख की मार, नजारा, तिरछी चितवन।

નેત્રપલ્લવી (सं.) आँखों का इशारा, आँखों की झपकी का संकेत।

નેત્રસંકેત (सं.) आँखों द्वारा किया हुवा इशारा, नज़ाराबाजी।

નેન (सं.) देखो નેશુ

નેત્રવૈદ્ય (सं.) डाक्टर, जो आँखों का इलाज करता हो, नेत्र चिकित्सक, आँखों का हकीम।

નેપથ્ય (सं.) वेश, अलङ्कार, भूषण, रंगभूमि, वेशस्थान, परदा,

નેપાળો (सं) एक औषधी विशेष जो जुल्लाब के काममें आती है।

નેપુર-પુર (सं.) स्त्रियों के पैरोंमें पहिरने का शब्द युक्त आभूषण, नूपुर, पायजेब, पैरमें पहिनने का भूषण।

નેફો (सं.) घुंघट के पट्टी लगी हुई जिसमें नाडाडोरी या धागा डाला जाता है, जैसे घाघेर अर्थात् लहँगे आदिमें।

નેમ (सं.) नियम, वेळा, समय, रूळ, कायदा, निश्चय, एक तीर्थङ्कर।

નેમિ (स.) पानी भरने के लिये कुए पर जो लकड़ी का चौकठा लगाया जाता है।

નેમણૂક (सं.) देखो નિમણૂક।

નેમવું (क्रि.) देखो નિમવુ।

નેરૂં (वि.) न्यारा, अलग, जुदा, पृथक। [समीप, कने।

નેરૂ (वि.) नज़दीक, पास, निकट,

નેરૂં (सं.) वर्षाऋतु में वह छोटा गड्ढा जिस में से जळ बहता हो।

નેવ-વાં (सं.) छप्पर के ऊपर के खपरैलों के छिद्र, वह जल जो खपरैलों पर से गिरता हो, खपरैलों की वह नाळी जिस में से पानी बहकर नाव गिरता है।

નેવે મૂકવું (क्रि.) भूल जाना, बिसर जाना, विस्मरण होजाना ।

નેવર (सं.) पायजेब, नूपुर, आभूषण विशेष, पदाभूषण ।

નેવલ (सं.) बेड़ी, जंजीर, बंधन, पैरों में डाली जाने वाली लोहे की बेड़ी ।

નેવાંએ (क्रि. वि.) वह जल जो कि खपरेलों में से खूब गिरता है।

નેવાળી (सं.) वह स्थान जहां पर खपरेलों में से पानी गिरता है।

નેવાલો (सं.) कौर, टुकड़ा, ग्रास, लुकमा ।

નેવું (सं.) नब्बे, दसकमसौ, ९० ।

નેવ્યાસી (सं.) एक कम नव्वे, ८९ संख्या विशेष ८० और ९ ।

નેશ-સ (वि.) कम नसीबका, फूटे भाग्यका, दरिद्री, कंजूस, अपशकुनी ।

નેસ (सं.) ग्वालों की झोंपड़ी, वह झोंपड़ियां, जहां पशु चराते हैं वहां चर वाहे बांधते है जो, वे झोंपड़ी जो पशु चराने वाले जंगल में बांध लेते हैं।

નેસ્તી (सं.) बांकड़े का बनिया, गन्धी आदि धंधा करने वाला । गांव में परचूनी की दुकान करने वाला ।

નેષ્ઠા (सं.) आस्था, भरोसा, विश्वास, निष्ठा, पत्त, भरोसा ।

નેહ (सं.) स्नेह, प्रेम प्यार, प्रीति, चिकनाहट, चिकणता ।

નેહડો (सं.) पूर्ववत् ।

નેહારી (सं.) नाश्ता, कलेवा, ठुंगार, फलाहार, जलपान, प्रातः कालीन भोजन ।

નેહાવ (सं.) देखो નીરભ ।

નેહમી (क्रि. वि.) हमेशा, सदैव, सदा प्रतिदिन, सर्वदा, नियम पूर्वक ।

નેહેર (सं.) नहर, कृत्रिम नदी, खेतो मे जल पहुंचाने के लिये नदी से लिए हुए जल के लेजाने का मार्ग, कृत्रिम नाला ।

નેળ (सं.) तंग गली, तंग नाली, नल, सकरामार्ग, हुक्का की नली ।

નેળચો (सं.) नय, नैचा, हुक्का में लगाने की नलिका जिसपर चिलम रखते हैं ।

નૈઋત-ત્ય (सं.) कोण विशेष । उपादिशा, दक्षिण और पश्चिम के बीच । [शिश्न, उपस्थेन्द्रिय ।

નેઇ (सं.) पुरुषेन्द्रिय, लिंग,

નૈયત (वि.) चित्तवृत्ति, निष्ठा, नीयत, विचार, मनोकामना ।

નૈયાયિક (सं) न्यायशास्त्र विशारद, तर्कशास्त्रविशारद, न्याय पढ़ानेवाला ।

નૈચુ (सं) नाखून से लगते हुए चमड़े का एक आधा भाग ।

નૈવેદ (स.) देवता को चढाने की कुछ भक्ष्य सामग्री, प्रसाद, नैवेद्य भोग ।

નૈષ્ઠિક वि.) कर्म क्रिया करने मे तत्पर, निष्ठायुक्त, विश्वासवाला धर्मनिष्ठ, आमरण, ब्रह्मचर्यपूर्वक। गुरुकुल में रहनेवाला ब्रह्मचारी ।

નૈષ્ઠિક બ્રહ્મચર્ય (सं.) आजन्म ब्रह्मचारी, बालब्रह्मचारी, निष्ठापूर्वक ब्रह्मचर्य ।

નૈષધદેશ (स.) प्राचीन समयमें भारत के अग्निकोण का एक भाग वर्तमान में बंगाल देश का एक भाग।

નૈસર્ગિક (वि.) स्वाभाविक, स्वभाव निर्मित, कुदरती, दैवी ।

ના (क्रि. वि.) नहीं, ना, मत, निषेधार्थक, (उप०) षष्ठी का प्रत्यय, को ।

નોંક (सं.) नोंक, अणी, अग्रभाग, मुच्छा, आत्मसम्मान, गुंदर, शोभायमान ।

નોક્કાર (वि.) नुकीला, तेज, पैना, निशित, स्वयं सम्मानी, आत्मश्लाघी ।

નોકર (सं.) दास, सेवक, भृत्य, चाकर, किंकर, गुलाम, खिदमतगार ।

નોકરી (सं.) सेवा, चाकरी, दासता, गुलामी, नौकर का वेतन ।

નોકાર (सं.) प्रार्थना (जैनों में)

નોકારવળી (स.) प्रार्थना करने की माला, (जैन धर्म में) ।

નોકારશી (सं) जो जैन मतवालो को भोजन करावे ।

નાખ (स.) ढंग, बनावट, डौल, सूरत, शक्ल, ढांचा, रूपरेखा ।

નાખું (वि.) जुदा, अलग, निराला पृथक, अलाहिदा ।

નોઝણું (सं.) पशुओं का दूध निकालने के समय पिछले पैरों में बांधी जानेवाली रस्सी, न्याना, सेला ।

નોટ (सं) सूचना, टिप्पणी, विवरण, कैफियत, नोटबुक, कागज का सिक्का, कामकाज की चिठ्ठी, टीका, फुटनोट । [बुलावा ।

નોતરૂ (सं.) निमंत्रण, न्योता,

નોતરવું (क्रि.) निमंत्रणदेना, न्यौतादेना, बुलावादेना, आव्हान करना, बुलाना ।

નોતરિયો (सं.) बुलावा देनेवाला न्यौता देनेवाला, निमंत्रणदेनेवाला।

નોતરું (सं.) न्यौता, निमंत्रण, आमंत्रण, बुलावा, एजन ।

નોંધ (सं.) नोटबुक, स्मरणार्थ-लिखाहुवा, याददास्ती के लिये लिखित, स्मरणपुस्तक, टिप्पण, याददाश्त बीजक ।

નોધડિયો-ધડો (सं.) छोकरा, लड़का, छोरा, लौंडा बालक ।

નોધડી (सं.) छोकरी, छोरी, लडकी, कन्या, बालिका, लौंडिया।

નોંધવું (क्रि) नोट करना, स्मरण पुस्तक में लिखलेना, रजिस्टर में दर्जकरना । [अल्प ।

નોંધળું (वि.) छोटा, थोड़ा कम,

નોંધરૂં (वि.) आधाररहित, निराश्रित, बेसहारा, आश्रयहीन ।

નોધારૂં (वि.) पूर्ववत् ।

નોબત (सं.) नगारा, बड़ाढोल, नक्कारा, दुंदुभि, पणव ।

નોબતખાનું (सं.) जहांपर नौबत रखकर बजाई जाती हो, दुंदुभि बजाने का घर ।

નોમ (सं.) नवमी, तिथि विशेष, पक्ष का नवम दिन, चांद्र मास की नवीं तिथि । [नहीं ।

નોય (क्रि. वि.) नहोय, नहो.

નોર (सं.) रेल में बैठने तथा माल लेजाने का भाड़ा, किराया ।

નોરતાં (सं.) नवरात्रि, नवदुर्गा, आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक, चैत्र शुक्ला १ से ९ मी तक।

નોરપકડવું (क्रि.) चलते बनना, हारमानना, चलेजाना ।

નોરા-હરા (सं.) आजिज़ी, दीनिता, हाहा, निहोरा।

નોહોતરવું (क्रि.) न्यौतादेना, बुलावादेना, निमंत्रणदेना, एजन-देना । [निमंत्रण, बुलावा ।

નોહોતરૂં (सं.) आमंत्रण, न्यौता,

નોહોર-રિયાં (सं.) नाखूनो से उखड़ाहुवा चमड़ा, नखक्षत ।

નોળ (स.) भाड़ा, किराया ।

નોળ-ળિયો (सं.) नेवला, नकुल नेवले की जाति का एक जानवर ।

નોળવું (क्रि.) धोके साफ करना, मांज धो के स्वच्छ करना ।

નોળિયો (सं.) नेवला, नकुल, एक प्रकार का छोटा प्राणी जो सांप और चूहे आदि को खा जाता है ।

નોળીકરમ (सं.) योग मार्ग की एक किया (नाक से पानी भरना निकालना इत्यादि) बदमाशी, चालाकी।

નોળીનોમ (सं.) श्रावण, शुक्लौ नवमी, श्रावण मास के चांदने पक्ष की नवीं तिथि।

નૌકા (सं.) नाव, डोंगी, जलयान

નૌકાદંડ (सं.) नाव का डंडा, पतवार।

નૌકાગમન (वि.) समुद्रयात्रा, जलयात्रा, विदेश गमन।

નૌકાશાસ્ત્ર-નયન (सं.) नाविक, विद्या, समुद्रविद्या, नौकाविद्या, नाव विषयक ज्ञान, मल्लाही, मांझीगरी, जहाजरानी।

નૌકા સેનાપતિ (सं.) समुद्री सेना का स्वामी, दरियायी फौज का अफसर।

નૌકા સૈન્ય (सं) समुद्रीसेना, जलसेना, दरियाई फौज, जहाजी बेड़ा।

નૌતમ (वि.) नया, नवीन, नूतन, नव, उम्दा, सुन्दर, ताजा, उत्तम, शोभित। [कौम, ज्ञाति।

ન્યાત-તિ (सं.) जाति, जात,

ન્યાતિલું (वि.) देखो नातिलुं।

ન્યાય (सं.) इन्साफ, सच्चे झूठे का निर्णय, फ़ैसला, नीति, युक्ति, यथार्थ, उचित, तर्कशास्त्र, विचार, वितर्क, विवेचना।

ન્યાયસભા (सं.) न्यायाधीशों का समाज, न्यायालय, विचार सभा।

ન્યાયશાસ્ત્ર (सं.) तर्क शास्त्र, नीतिशास्त्र।

ન્યાયાગાર (सं.) अदालत, कचहरी, कोर्ट, न्यायालय, इन्साफ करने की जगह, धर्माधिकरण, विचारगृह।

ન્યાયાધિકારી (सं) न्याय करने वाला, मुन्सिफ, जज, न्यायक, न्यायकर्त्ता।

ન્યાયાધીશ (सं.) न्यायी, न्यायकारी, विचारक, जज्ज, न्यायकर्ता।

ન્યાયાસન (सं.) न्यायाधीश की बैठक, जज्ज के बैठने की जगह, विचारक का आसन।

ન્યાયી (वि.) मध्यस्थ, उचित करने वाला, न्यायकर्त्ता, वाजिबी मुनासिब। [प्रशस्त।

ન્યાય્ય (वि.) उचित, यथार्थ,

ન્યારૂં (वि.) अलग, पृथक्, भिन्न, अतीरिक्त, जुदा, निराला।

ન્યાલ (वि.) द्रव्य से भरपूर, पूर्ण, कृतार्थ, जिस के मनोरथ पूर्ण हो गये हों, निहाल।
ન્યાવડ (सं.) इन्साफ, न्याय, मार्ग, नीति, क्रिया, विधि, रीति।
ન્યાસ (सं.) रखने योग्य धन आदि, अर्पण त्याग, तान्त्रिक, क्रिया विशेष।
ન્યાસી (सं.) वैरागी, त्यागी।
ન્યાહાલ (वि.) देखो ન્યાલ।
ન્યાહાળવું (क्रि.) जी लगाकर देखना, मिहनत से देखना, विचारना, ध्यान करना, गौर से देखना
ન્યુસપેપર (स.) अखबार, समाचारपत्र, सवादपत्र, न्यूज़पेपर।
ન્યૂન (वि.) असम्पूर्ण, किंचित, थोड़ा, अल्प, कम, छोटा।
ન્યૂનતા (सं.) छुटाई, नीचतापन, कमी, ओछाई।
ન્યૂનાધિક (वि.) जियादा कम, थोड़ा बहुत, अल्पाधिक, कमीवेशी
ન્હેર (सं.) नहर, कृत्रिम नदी, कृषि आदि कार्य के लिये नदी में से लिया हुआ जल का मार्ग।

પ

પ= (सं.) इक्कीसवां व्यंजन, गुजराती वर्ण माला का ३२ वां अक्षर, पवर्ग का प्रथम अक्षर, पत्र, पत्ता, पवन, रक्षा करने वाला पालक, (शब्दान्त में आने पर) पीनेवाला, जैसे मधुप, मद्यप।
પા (सं.) ¼ पैसा, पाई पैसे का तीसरा भाग। [चका, गिर्री।
પઇડું (सं.) पहिया, चक्र, चाक,
પઇસા (सं.) द्रव्य, धन, सम्पत्ति, पूंजी, रुपया, पैसा, टका।
પઇસો (स.) पाव आना, ¼ आना, तीनपाई की कीमत का तांबे का सिक्का। [चर्खी, चकरी।
પકવાસી (सं.) खराद, चक्र यंत्र,
પકડ (स.) ग्रहण, धरन, रोक, कब्जा, पंजा, अवलबन, दाव, (भूलकी) पकड़ कोई वस्तु झालने का औजार, पकडने का यंत्र, जम्बूर, सनसी।
પકડવું (क्रि.) थामना, पकड़ना, सभालना, झालना, ढूढना, तलाश करना, प्राप्त करना। ग्रहण करना लेलेना, कब्जा करना।
પકડસમન (सं) सम्मन, वारंट, पकड़ने का आज्ञापत्र, गिरफ्तार करने का परवाना।
પકડાવું (क्रि.) पकड़ाना, बंधाना, गिरफ्तार कराना, कब्जे में करा देना।

પકડી લેવું (क्रि.) पकड़ लेना, ग्रहण करलेना, गिरफ्तार करलेना।

પહોળું (वि.) चौड़ा, विस्तीर्ण, विशाल, दीर्घ ।

પકવવું (क्रि.) रांधना, पकाना, सेकना, तपाना, गर्म करना ।

પકવતી (सं.) खेती, कृषि, जोत, बाग । [घी में बनी हुई सामग्री।

પકવાન (सं.) पकवान, मिठाई,

પકવાસો (सं.) चक्र यंत्र, खराद, छप्पर की धरन अथवा कड़ी के साथ जड़ी हुई तख्ते की खपच्ची या चीपें ।

પકડાઈ (वि.) भेद, प्रपंच की समझ, सामने से छुल्वाई, देखकर छुल्वाई करना ।

પાકું (वि.) पक्का, दृढ, मजबूत, पुख्ता, निश्चय, ठीक, सत्य खरा।

પક્વ (वि.) पका हुवा, परिपक्व, सिका हुवा भुना हुवा ।

પકાવવું (क्रि.) देखो પકવવું

પક્ષ (सं.) बाजू, पखवाड़ा, अर्द्ध मास, श्राद्ध पक्ष, तरफ और, पांख, सहाय, मत, विचार, अभिप्राय, टुकड़ी, वर्ग, समूह, वाद विषय बल, विरोध, मित्र, पर, कथन, डैना, मच्छली, दल, पार्श्व, पाखर, पक्षी, बगल, कृष्ण-पक्ष, शुक्ल पक्ष, राजहस्ती ।

પક્ષકાર (सं.) पक्ष करनेवाला, तरफदार, भीड़ बोलनेवाला, सहायक, पक्ष लेनेवाला ।

પક્ષ ધરવો-માં રહેવું (क्रि.) तरफदारी करना, और रहना, सहायता करना, पक्षमें रहना, सहाय्य देनेवाला।

પક્ષપાત (सं.) अनुचित सहायता, दान, एक ओर झुकाव, तरफदारी, स्नेह सम्बन्धादि के कारण अन्याययुक्त साहाय्य ।

પક્ષપાતી (वि.) पक्षपात कर्त्ता, अनुचित सहाय्यदाता, अन्याय से एक पक्षकी सहायता करनेवाला, तरफदार, પક્ષકાર

પક્ષવાદી (सं.) वकील तरफसे बोलनेवाला, भीड़ बोलनेवाला भीडू

પક્ષવાયુ (सं.) रोग विशेष, किसी अंग का अवश हो जाना, एक प्रकार का वात रोग।

પક્ષા (सं.) पक्ष, दल, टुकड़ी, पार्श्व, बाजू, तरफ, ओर ।

પક્ષઘાત (सं.) आधे अंग का वात रोग विशेष, एक प्रकार का वात रोग ।

પક્ષાપક્ષી (सं.) तरफा तरफी, पार्श्वता ।

પક્ષાલન (सं.) धोवन साफ करने की क्रिया धोनेका कार्य्य, पवित्रकरण ।

પક્ષિણી (सं.) मादापरिन्द, पक्षी (स्त्री लिंग) दो रात्री और एक दिन ।

પક્ષી (सं) पक्ष विशिष्ट, विहंगम, पखेरू चिड़िया, पखेरू, बाण, तीर उड़नेवाला जीव, पंछी, पंखी, साखी, समाजी ।

પક્ષીકળા (सं.) चिड़िया पकड़ने की विद्या, पक्षि विद्या पक्षी विषयक ज्ञान ।

પક્ષીશાળા (सं.) पक्षियों के रहने की जगह, घोंसला चिड़िया घर, कबूतरखाना ।

પક્ષે (क्रि. वि.) विकल्पतायुक्त, एक दृष्टि में, वह भी ठीक और यह भी ठीक ।

પખ (सं.) देखो पक्ष

પખવાજ (सं.) वाद्य विशेष, जिस के दोनों तरफ बजाने का होता है, मृदंग ।

પખવાજી (सं.) मृदंग बजानेवाला, तबलची, पखावज बजानेवाला ।

પખવાડિયું-ડું (सं.) पन्द्रह दिन, अर्द्ध मास, शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष, पक्ष।

પખવાની (सं.) वह सींक अथवा तिनका या पंख विशेष जिसे स्त्रियां अपने कानोंमे कानों के छेद बढ़ाने के लिये डालती हैं ।

પખાજ (सं.) देखो પખવાજ

પખાજી (सं.) देखो પખવાજી

પખાલ (सं.) मसक, बड़ी मसक चर्म निर्मित जलपात्र, पानी भरनेका चमड़ा ।

પખાલી-લચી (सं.) मसकवाला, भिश्ती, पानीवाला, बैल अथवा पाड़े पर या अपने कंधे पर मसक द्वारा पानी लेजानेवाला ।

પખું (सं.) पक्ष, तड़, दल, भाग, पार्श्व ।

પખે (क्रि. वि.) बिना, सिवाय ।

પખોડવું (क्रि.) पछाड़ना, झकोरलना, पटकना, देमारना, झंझोड़ना।

પગ (सं.) पद, पाँव, पैर, चरण, जोड़, पाया, टाँग, कदम ।

પગઆવવા-થવા (वि) तेजीसे चलना, शीघ्रतासे चलना, जल्दी चलना।

પગભોડા (सं.) कुल, वंश, संतान,

પગઢા (सं.) पाँसे पर बिन्दु या अन्य किसी प्रकारका चिन्ह ।
પગઢું (सं.) पांसे पर या ठप्पे पर किसी प्रकारका चिन्ह विशेष।
પગતું (वि.) बहुत, विशेष, अधिक, घना, विशाल, दीर्घ, विस्तृत ।
પગથાર (सं.) समान बैठक, सीधी बैठक, कम सीढियोंका बैठनेका स्थान ।
પગથારિયું (सं.) सीढी, नसेनी, पैड़े, चढाव, जीना, सोपान ।
પગાથયું (स) पैर रखकर चढने के लिये ईंटके के पत्थरके अथवा काष्ट निर्मित सोपान, नसेनी, जीना ।
પગથી (सं.) पगदण्डी, पगडण्डी, घास इत्यादि में एक मनुष्य के जाने योग्य बना हुवा मार्ग, पद-चिन्ह, लीक, गुप्त मार्ग, बिना बनाया हुवा मार्ग, पैरों द्वारा बना हुवा रास्ता ।
પગદંડો (स.) स्वतन्त्र मार्ग, आज़ाद रास्ता, बना हुवा रास्ता, आने जानेका मार्ग।
પગમોજો (सं.) पैरों में पहिरने का मोजा, जुराब । [मुद्दा।
પગર (स.) बाल, अङ्ग का सिरा
પગરખું (सं.) जूते, पदत्राण, पगरखी, पैर की रक्षा के लिये बनाया हुवा, जूती, एक तलीका जूता ।
પગરણ (सं.) उत्सव, खुशी, आनन्द, जनेऊ विवाह आदि उत्सव, शुभ अवसर ।
પગરણમાંડવું (क्रि.) आरंभ करना, शुरूआत करनी, प्रारंभ करना।
પગરવટો (सं.) पैरों का शब्द चलने की आवाज । [पाद ।
પગલી (सं.) मोरका पंजा, मयूर
પગલું (सं.) पैरका निशान, डग, कदम, सीढी, जीना, सोपान, पग, पैर ।
પગલુંભરવું (क्रि.) आगे कदम बढाना, पैर बढाना ।
પગલેપગલે (सं.) बारम्बार, पुनः-र्पुनः हरदम, सदैव, हमेशा ।
પગવાટ (सं.) पगडंडी, पैरों से बना हुवा मार्ग ।
પગવાટે (क्रि. वि) कच्चे रस्ते, खुश्की रास्ते, पैदल पगडण्डी द्वारा । [मासिक मजदूरी ।
પગાર (सं.) वेतन, तनख्वाह,
પગી (सं.) खोज निकालनेवाला, पाद चिन्हों द्वारा चोरी आदि ढूंढने वाला ।

પગી-આગળ (सं.) पैदा होते समय जिसके प्रथम पैर बाहिर आये हो पैरों की ओर से उत्पन्न ।

પગેરૂં (सं.) भागे हुए चोर के पाद चिन्हों की जांच ।

પઘળવું (क्रि) गळना, पिघलना, टिघलना, द्रवहोना, पतला होना ।

પંકાવું (क्रि.) जगह जगह प्रख्यात होना, मशहूर होना, नामपाना कीर्तिपाना ।

પંકાયલું (वि.) प्रसिद्ध, मशहूर, प्रख्यात, नामी, यशस्वी, कीर्तिमान।

પંક્તિ (सं.) सजातीय सस्थान विशेष एक समाज क मनुष्यों की बैठक, पांति, पात, पङ्गत, धारी, ककीर, श्रेणी, कतार, पद्य का छन्द विशेष, पृथ्वी, गौरव प्रतिष्ठा, जनसमूह, सभा ।

પંક્તિદોષ (सं.) सहकारिता का दोष, समाजदोष, जातीय अपराध, पंगत दोष ।

પંક્તિબહાર-ભ્રષ્ટ (वि.) जाति से बाहिर, जातिच्युत, समाज से पतित ।

પંક્તિભેદ (सं.) जातिभेद, पांति-भेद, जातीय अंतर, समाज भेद, थोक ।

પંક્તિપાવન (वि.) जाति में अथवा समाज में सम्मिलित होने योग्य, पांति में बैठने योग्य ।

પંક્તિવ્યવહાર-સંસર્ગ (सं.) जातीय वर्ताव, सामाजिक व्यवहार रोटी व्यवहार ।

પંખ (सं.) देखो પાંખ ।

પખવા (सं.) देखो પક્ષાધાન ।

પંખવાયુ (सं) रोग विशेष ।

પખાળિયું-ળી (सं.) एक प्रकार का चांवल शालि विशेष ।

પંખિયું (सं) पांखवाला, सपक्ष, पक्षी, वाण, तीर, परिन्द, पक्षयुक्त ।

પખી (सं.) पक्षी, चिड़िया, विहंग, परिन्द, पाखोंवाला, नभचर ।

પંગત-તી (सं.) देखो પંક્તિ ।

પંગ-ગુ (सं.) लंगडा, लूला, बेपैरका, धीरे चलने वाला, खञ्ज, खोडा, जंघाहीन, चलने में असमर्थ ।

પંચ (वि.) पांच, संख्या विशेष, पांच मनुष्यों की सभा, न्यायकर्त्ता।

પંચક (सं.) धनिष्ठा नक्षत्र से पाँच, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, रेवती, पाँचका समूह ।

પંચકર્મ-કર્મી (वि.) मनुष्य के पाँच कर्तव्य कर्म, अग्निहोत्र संध्या बलिवैश्य देवादि पांच काम। उत्क्षेपण, अवक्षेपण, प्रसारण और गमन, ये पांच न्याय प्रसिद्ध कर्म। वमन, रेचन नस्य, निरूहण और अनुवसन, ये पाँच वैद्यक शास्त्र के कर्म।

પંચકલ્યાણ (सं.) वह घोड़ा जिसमें पाच शुभ चिन्ह हों।

પંચકાર (सं.) औजार विशेष।

પંચકૂટી (सं.) खिचड़ी, गोल माल, गड़बड़, विजातीय मेल।

પંચકોશ-ષ (सं.) आत्माके रहने के शरीरस्थ पाच परदे, अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय।

પંચગવ્ય (सं.) गऊ से उत्पन्न पाँच पदार्थ, दहि दुग्ध, घृत, मूत्र, और गोबर, (प्रायश्चित्त विशेष में आत्माकी शुद्धि के निमित्त इनका सेवन किया जाता है)

પંચતત્ત્વ (सं.) पंचभूत, पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, और तेज, तन्त्र शास्त्रोक्त—मद्य, मांस, मत्स्य मुद्रा और मैथुन का वाचक।

પંચતન્માત્ર (सं.) पृथ्वी आदि सूक्ष्म पंच भूत, रूप, रस, गंध, स्पर्श, और शब्द।

પંચતંત્ર (सं.) विष्णुशर्मा संकलित इस नाम से प्रसिद्ध नीति ग्रंथ।

પંચતીર્થ (सं.) प्रयाग, पुष्कर, नैमिष, विश्रांति और शूकर।

પંચપાત્ર (सं.) पांच धातुओं के मिश्रण से निर्मित गिलास, द्विजातीयों के पूजामें पानी भरकर रखने का पात्र, इस में रखी हुई चमची को आचमनी कहते हैं।

પંચપાખંડી (सं.) बिलकुल कच्चे मतका, कच्चे मजहब का अत्यंत धूत।

પંચપ્રાણ (सं.) शरीरस्थ प्राणादि पंच वायु, प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान।

પંચબાણ (सं.) कामदेव के पांच तीर, कमल, अशोक, आम्रमंजरी, नव मल्लिका और नील कमल।

પંચભદ્ર (सं.) ह्रदय, मुहं, पीठ, कमर, बगल में भ्रमरयुक्त अश्व।

પંચભૂત (सं.) पंचतत्व, पृथ्वी, जल, आकाश, तेज, वायु।

પંચમેળ (वि.) पंचमेल, मिश्रण, गड़बड़ खिचड़ी ।

પંચમત (सं.) पंचोंकी आज्ञा, पंच फैसला ।

પંચમહાપાતક (सं) पांच बड़े पाप, ब्रह्महत्या, सुरापान, गुरु-निंदा, सोने की चोरी, पापी का संग ।

પંચમહાયજ્ઞ (सं.) गृहस्थियों के नित्य कर्तव्य पांच यज्ञ, ब्रह्म यज्ञ, पितृ यज्ञ, देव यज्ञ, भूत यज्ञ, और नृ यज्ञ ।

પંચમૂત્ર (सं.) पांच मूत, पांच पेशाब, गाय, भैंस, बकरी, मेढी आर गधी का मूत्र ।

પંચમૂળ (सं.) शालपर्णी, पृष्ट-पर्णि, रींगणी, गोखरु और डोरली पांच औषधियों की जड़ औषधि विशेष ।

પંચરત્ન (सं.) पांच प्रकार के रत्न सुवर्ण, रौप्य, मुक्ता, स्फाटिक, ताम्बा ।

પંચરસ-સિ-સિયું (वि.) नाना प्रकार के भिन्न भिन्न, पांच अथवा अधिक रस ।

પંચરાશી (सं.) पंचराशिक-(गणित में) हिसाब की क्रिया, इतर त्रैराशिक ।

પંચવક્ત્ર (सं.) पंचवदन, पांच मुंहवाला शिव, महादेव, शंकर ।

પંચવિષય (सं.) पंच ज्ञानेन्द्रिय, मन, आंख, कान, नाक जिव्हा और त्वचा ।

પંચાઈતદાર (सं.) पंच, पंचायत करनेवाला मुन्सिफ ।

પંચાગ્નેત (सं.) जातीय सभा, विचार करनेकी सभा, पंचोंकी सभा ।

પંચાગ્નિ (स.) पांच प्रकारकी अग्नि, जठराग्नि, क्रोधाग्नि, कामाग्नि, दावाग्नि, वडवाग्नि ।

પંચાંગ (स.) पत्रा, जंत्री, केलेंडर, पञ्चिका, पांचों अंग, तिथि, वार, नक्षत्र और कर्ण प्रदर्शक, वृक्षके त्वक् पत्र, पुष्प मूळ और फळका समाहार, पुरश्चरणमें जप, होम तर्पण, अभिषेक और विप्रभोजन ।

પંચાણું (सं.) ५ कम सौ, नब्बे और पांच, पिच्यानवे, ९५ ।

પંચાત (सं.) किसी विषय के निर्णयार्थ पांच या अधिक सदस्यों का समाज, जातीय सभा, तकरार, फ़साद, झगड़ा, उपद्रव, टंटा ।

પંચાતખોર (वि.) झगड़ालू, उपद्रवी, ऊधमी ।

પંચાતનામું (सं.) फैसला जो पंचोंने किया हो, पंचनामा, पंचोंकीलिपिबद्ध आज्ञा।

પંચાતિયું-તી (वि.) वह काम जो पांच मनुष्यों के विचार से हो, जातीय। [भाजगड।

પંચાતી (सं.) तकरार, फसाद,

પંચામૃત (सं.) शर्करा दुग्ध, दधि, घृत और मधु जिससे देवताओंको स्नान कराते हैं और पीते हैं।

પંચામૃત યોગ (सं.) गिलोय, गोखरू, मूशली, गोरखमुंडी और शतावरि इन पांच औषधियों का योग।

પંચાલ (वि.) लुचाई, ठगी,(सं.) ठग लुच्चा, गुण्डा, बदमाश।

પંચાવન (वि.) पचपन, ५५, पचास और पाच, संख्या विशेष।

પંચાસી-પંચાશી (वि.) अस्सी और पाच, ८५ पिच्यासी, पचासी

પંચાસી (सं.) खजूर के अवयवों द्वारा बनी हुई रस्सी।

પંચાળ (वि.) लुच्चा, ओछा, नीच, धूर्त मक्कार, कपटी।

પંચાળી (सं.) द्रौपदी, पांडवो की पत्नी, बक्की, गप्पी, वाचाल बातूनी अथवा बक्की (स्त्री)

પંચિયું (सं.) पंचा, धोती के स्थान पर बांधा जाने वाला पांच हाथ लम्बा वस्त्र, छोटी धोती।

પંચી-છી (सं.) मस्करी, ठट्ठा, मजाक, दिल्लगी, दुष्ट, गुण्डा, बदमाश।

પંચીકરણ (सं) पांचको एक जगह एकत्र करनेकी क्रिया, भिन्न भिन्न गुण वाले आकाशादि पंच तत्वों का देह, आदि सृष्टि के लिये ईश्वर शक्ति से जो अनुकूल संमिश्रण होता है।

પંચોતેર (सं.) पचहत्तर सत्तर और पांच, ७५, ५ कम अस्सी।

પંચોપાખ્યાન (सं.) इस नामकी एक प्रसिद्ध पुस्तक।

પંજભાગ (सं.) ब्राह्मण को यजमान के घर नित्य प्राप्त होने वाला पांच पकार का अन्न।

પંજર (सं.) शरीर की हड्डियों का समूह, पांजर, पसली, ठठरी, पिंजरा, पक्षियों को बंद करने का घर।

પંજરી (सं.) पंजीरी, एक प्रकार का देवता का प्रसाद, अजवायन खोपरा खसखस चिरौंजी और खांड के मिश्रण से बना हुआ पदार्थ।

પંજરી (सं.) देखो પંજરી

પંજો—જો (सं.) ताशमें पाँच चिन्ह युक्त, पांच अंगुलियों युक्त हाथ, किसी बड़े आदमी के हस्ताक्षरों के स्थान पर उस के हाथ का छापा। हिंसक अथवा बनैले जन्तुओं के नाखून, खिलाड़ी।

પંજામાં આવવું (सं.) हाथ आ जाना, चंगुल में फंस जाना, दाव में आना।

પંજામાપડવું (क्रि.) फँसना, अधिकार में हो जाना, हाथ पड़ना।

પંજામાં લેવું (क्रि.) अधिकार में ले लेना, दाव में लेना।

પંજો પડવો (क्रि.) जय होना, दाव पड़ना, अनुकूल समय आना।

પંજવવું (क्रि.) धुनना, खरोंचना, खिझाना, दुखदेना, पीड़ा देना।

પંજવો (सं.) भट्ठा, आवा भट्ठी

પંઝેટવું (क्रि.) मारना, पीटना

सहन, सहन करना। [પિચકારી

પચકડી-કારી (सं.) देखो

પચકણું (वि.) डरपोक, कायर, बुजदिल, भीरू, भयशील भयभीत।

પચપચ-ચું (वि.) नरम, रसदार, पानीदार, पसीजाहुआ, गीला।

પચવવું (क्रि.) हजमकरना, डकारना, पचाना, गलाना, खा-जाना।

પચવું (क्रि.) पिघलाना, गलना, पकना, हजमहोना जीर्णहोना, सड़ना, जठराग्निमें भस्महोना, मग्नहोना, लीनहोना, मिहनत-करना।

પચાવવું (क्रि.) पकाना, जीर्णकरना, हजमकरना, सड़ाना, गलाना।

પચાશ—સ (वि.) संख्याविशेष, पॉचदहाई, ५०, पचास।

પચુસણ (सं.) जैनियों के पवित्र-दिन, पर्यूषण, भाद्रपद मासमें होनेवाला जैनियोंका त्यौहार।

પચ્ચાવન (वि.) संख्या विशेष, ५५, पचपन, पचास और पाच।

પચ્ચીશ (वि.) संख्या विशेष, २५, बीस और पाच, पच्चीस।

પચ્ચોતેર (वि.) पचहत्तर, संख्या विशेष, ७५, सत्तर और पाँच।

પચુકડી (सं.) पिचकारी, पिचुक्का।

પચ્છમ (सं.) दिशा विशेष, पश्चिम, मगरिब, सूर्यास्त की दिशा, प्रतीची।

પચ્છબુદ્ધિ (सं.) पिछली अक्ल, मन्दबुद्धि, कुन्दजहनी, कमअक्ली।

પશ્ચાદબુદ્ધિયું (वि.) जिसे बहुत देर बाद विचार होताहो, मन्द-बुद्धि, करके पछताने वाला ।
પછડાવું (क्रि.) पिटना, कुटना, पटकाजाना, बीमारहोना, बीमारी-से कष्टपाना ।
પછવાડે લાગવું (क्रि.) पीछेपड़ना, चिढ़ाना, डराना, सताना, कष्टदेना ।
પછવાડું (सं.) पीछा, पृष्ठभाग, पीठ. पृष्ठ, पीछेकाहिस्सा, पुठ्ठा ।
પછાડવું (क्रि.) जोरसे देमारना, पटकमारना, गिराना, भूमिपर-पटकना, बीमार होना, हराना ।
પછાડા (सं.) परिश्रम, मिहनत, मिथ्याश्रम, हाफ ।
પછાડી (सं.) घोड़ेके पीछे पैरसे बांधीजानेवाली रस्सी, (उप०) पीछे, बाद, अनन्तर, पश्चात्, उपरान्त ।
પછાડું (सं.) देखो પછવાડું
પછાડો (सं.) पटक, उथला, पलटाव, आरामहो करपुनः बीमार ।
પછાત (उप.) पीछे, बाद, अनन्तर, पश्चात्, उपरान्त ।
પછી-છે (क्रि.) तदुपरान्त, तत्पश्चात, तदनंतर, बादमें ।
પછીત (सं.) घरके पीछेकी दीवार ।
પછીતિયું (सं.) गाड़ी के माच के पीछे बांधने का ।
પછેડીવા (वि.) बहुर मरीका ।
પછેડો (सं.) देखो પિછોડો ।
પજવવું (क्रि.) दुख देना, व्याकुल करना, घबरा देना, चिढ़ाना, खिझाना ।
પજાવો (सं.) ईंट खपरे पकाने की भट्टी, आवा, कुम्हार की भट्टी ।
પજુસણ (सं.) जैनियों के पर्व दिन, पर्यूषण नामक जैन त्योहार ।
પટ (स.) विविध रंगों से रंगा हुवा पटिया या वस्त्र, शतरंज का वस्त्र, सूची, नामावला, अनुक्रमणिका, नकशा, चित्रपट, स्मृति, याददाश्त, रजिस्टर, केटलाग, कपड़ा, वस्त्र, परदा, नदी की चौड़ाई, घड़ी, पाट, जमीन का लम्बा चीरा, तह, थर, रंग, यवनिका ।
પટ (वि.) विशेषता सूचक शब्द जैसे "દુપટ, ત્રિપટ" गुणा ।
પટ (अव्य०) तुरंत, फौरन, शीघ्र अवश्य, निश्चय, जरूर ।
પટકાવવું (क्रि.) ठगना, हरण करना, छलना धोखा देना, गड़बड़ करना ।

પટકાવું (क्रि.) छला जाना, ठगाना, धोका खाना । [कपड़ा ।
પટકુળ (सं.) सुंदर वस्त्र, अच्छा
પટંતર (सं.) वस्त्र यवनिका, कपड़े, कापर्दा, अन्तरपट, कपड़े की आड़ ।
પટંતરો (सं.) पर्दा, यवनिका, भेद, भेद दृष्टि, फासला अंतर ।
પટપટ (क्रि. वि.) तड़तड़, झटपट, पटापट ।
પટપટવું (क्रि.) जल्दी जल्दी बोलना, बोलने के लिये व्याकुल हो रहना ।
પટપટારો (सं.) लफंगा, लबार, गप्पी, निरर्थक, वाक्‌चतुर ।
પટપટાવવું (क्रि.) चमचमाना, टमटमाना भिचभिचाना ।
પટપટિયું (सं.) लकड़ी का खिलौना, गुड्डी, खिलौना (वि.) बकवादी, बातूनी, लफंगा ।
પટરાણી (सं.) पटरानी ।
પટરાણી (सं.) बड़ी रानी, राजमहिषी, महारानी, मुख्यरानी, राज्ञी ।
પટલ (सं.) आच्छादन, झुंड, टोली, जत्था, पटेल, सरपंच अगुवा ।
પટલાઈ (सं.) देखो પટેલાઈ ।
પટલાણી (सं) पटेल की भार्या, पटेलन, पटेल की औरत ।
પટલેણ (सं.) पूर्ववत् ।
પટવેકરી–વો (सं.) रेशम आदि गूंथने का काम करने वाला, जेवर में सूत और कलाबत्तु पिरोकर गांठने वाला, जाल बनाने वाला ।
પટાઉ (वि.) कपटी, छली, ठग, मोहोत्पादक ।
પટાકડી–કો (सं.) कड़कने की बड़ी अवाज, पटाखे का शब्द ।
પટાટ (सं.) घोड़े का तंग, काठी जीन आदि बांधने का घोड़े का कमरबन्द ।
પટાટા (सं.) आलू, बटाटा, एक प्रकार का खाने का कन्द ।
પટાદાર (वि.) धारीदार, रेखा युक्त, लकीर वाला ।
પટાબાજ (वि.) पटा खेलने वाला, धूर्त, ठग, वंचक, छली ।
પટામણું (वि.) बहलाव, फुसलाव, मिथ्या प्रशंसा, खुशामद ।
પટારો (सं.) पिटारा, टिपारा, बड़ा सन्दूक, बड़ी पेटी ।
પટારમવા (क्रि.) पटा खेलना, पटेबाजी खेलना ।
પટાવત (सं.) अधिकारी, गद्दी का मालिक, उत्तराधिकारी ।

પટાવવું (क्रि.) बने जिस तरह समझाना, दुष्ट सलाह देना, ठगना, धोका देना।

પટાહ (सं.) नगारा, ढोल, नौबत दुंदुभि, नगाड़ा, पणव।

પટાવાળો (सं.) सिपाही, हरकारा दूत, सम्वाद वाहक।

પટિયાં (सं.) बालो की पट्टियां, जुल्फे, कंधे से सुधारे हुए और जमाये हुए बाल।

પટી (स.) धारी, रेखा, धज्जी, पट्टी, फाड़ फाक, चीप, कतरन, कर, अस्तर, लपेटने की पट्टी।

પટુકાણી (सं.) बुद्धिमानी की बात अक़्लमन्दी का काम, सयानापन।

પટુડાવેડા (वि.) चतुराई, दक्षता, प्रवीणता, होशियारी, कुशलता।

પટો (सं.) पट्टा, कमरबंधन, पटका सनद, प्रमाण पत्र, हुक्म, दस्तावेज, बचाव के लिये लकड़ी या तलवार का इधर उधर घुमाव, पटेबाजी, युक्ति, पेच, दाव, दगा, छल, कपट, धोखा, घाव इत्यादि पर बांधने की बड़ी पट्टी, कपड़े की चिन्दी, सीधी कमचौड़ी दो धार की तलवार।

પટોધર (सं.) पटरानी, महिषी, महारानी, राज्ञी, सम्राज्ञी।

પટોપટ (अव्य०) झटपट, पटा-पट, चटपट, शीघ्र, तुरन्त।

પટોળ (सं.) एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल, परवर, परोरा, पलवल। [रेशमी वस्त्र।

પટોળુ (सं.) एक प्रकार का

પટ્ટ (क्रि. वि.) तुरंत, फौरन, शीघ्र तत्क्षण, झट, शीघ्रतापूर्वक।

પટ્ટણ-न (सं.) नगर, शहर।

પટ્ટાઈત (स.) हुनरमन्द, होशियार, प्रवीण गुणी, निपुण, दक्ष।

પટ્ટાભિષેક (सं.) राज्याभिषेक, राज गादी, राजा बनाते समय का संस्कार।

પટ્ટી (स.) चिन्दी, धज्जी, कपड़े की पट्टी, धारी, कतरन, लम्बी जमीन की धज्जी, नागर पान की कत्था चूना और सुपारी युक्त बीड़ी, पान बीड़ा।

પટ્ટુ (सं.) कम्बल, ऊनी वस्त्र।

પટ્ટાબાજ (सं.) पटेबाज, पटेबाजी जाननेवाला, लकड़ी तलवार इत्यादि को घुमाने फिराने वाला।

પટ્ટો (सं.) देखो પટો। पट्ठा हृष्ट पुष्ट, पुष्ट, तगड़ा, जवान, नवयुवा।

પણ્ય (सं.) ठहराई हुई कीमत, निश्चित मूल्य, सट्टा, वादा, शर्त, करार। [स्वाध्याय, वाचन।

પઠન (सं.) पाठ पढ़ना, अध्ययन,

પણવું (क्रि.) मोल लेने की वस्तु का मूल्य निश्चित करना, कीमत ठहराना, वादा करना, वचन करना, शर्त करना।

પઠે (क्रि. वि.) देखो પેઠે ।

પડંગ (सं.) पक्ष, पख, आश्रय, सहारा, शै, रीति, चाल।

પડ (सं.) तह, परत, घड़ी, पट, अस्तर, किसी एक वस्तुपर आया हुवा पड़दा, एक के ऊपर एक आई हुई पृथक पृथक वस्तु, थर, एक प्रकार का चितकबरा सर्प, कौडीला सांप, पर्दा, फासला, अन्तर, चक्की के ऊपर का पाट, पृथ्वी की तह।

પડકારવું (क्रि.) पहिरेवाले या चौकीदार द्वारा प्रश्न किया जाना जैसे "कौन है ?" सावधानी प्रदर्शित करने के लिये 'हां, कहना, उभाड़ना, उस्काना, साहस बढाना।

પડઉત્તર (सं.) जवाब, प्रत्युत्तर।

પડકી કરવી (क्रि.) थूथू करना, छीछी करना, घृणा प्रदर्शित करना।

પડખું (सं.) पसली, पार्श्व, बाजू, किसी वस्तु का बाहिरी भाग, पड़ोस, पक्ष, तरफ, तह, शरीर का दाहिना अथवा बायां भाग।

પડખે (उप.) निकट, पासमें, पड़ोसमें, समीप, नजदीक।

પડઘમ (सं) डंडेसे बजानेका एक वाद्य, विशेष. ढोल, पणव।

પડઘી (सं.) बरतन के पेंदेमें ठहरने के लिये बना हुवा गोल कुण्डल, पात्र के टिकने का पेंदा, जमीन पर चलनेका पाद शब्द।

પડઘો (सं.) प्रतिध्वनि, गूंज, जोर से शब्द होने के बाद जो एक प्रकार की आवाज होती है वह।

પડવો (क्रि.) डंका बजाना, दुनियामें नाम करना, आतंक जमाना।

પડછંગ (सं.) आकार, सूरत, शक्ल।

પડછંગ (वि.) भयंकर, डरावना, पुष्ट, बलवान, दीर्घकाय।

પડછંદો (सं.) देखो પડઘો।

પડછાયો (सं.) छाया, साया, प्रतिबिम्ब, बिम्ब, परछांही, प्रतिरूप।

પડછે મૂકવું (क्रि.) मिलान करना, मुकाबिला करना, तुलना करना।

પડઘો (सं.) दृष्टांत, हवाला, उल्लेख, उदाहरण, मुकाबिला, समानता, ऊंचा सीधा मनुष्य, शक्ति, बल ।

પડત–૨–૫ (सं.) बिना बोई जमीन, ऊसर भूमि, बेजोती भूमि, जिस भाव मिला उसी भाव खरीदा हुवा, असली कीमत, रखा हुवा, बिना बिका, पडती भूमि, बेबोया ।

પડતલી (सं.) तमाखू भरनेकी चमड़े की थैली ।

પડતાલવુ (क्रि) टालमटोल करना, उलटपलट करना (पृष्ट) मारके भाग जाना, घबराना ।

પડતી (सं.) गिरती, अवनति अपकर्ष, अस्त, उत्तरावस्था ।

પડતી દશા (सं.) उत्तरावस्था, निर्बल दशा, नाजुक हालत, दुर्दैव, कमनसीब, आपत्काल, खोटे दिन।

પડતી રાત (स.) गई रात, पिछली रात, व्यतीत रात्रि, खोटे दिन ।

પડતું (वि.) गिरता, पतन, गिरता हुवा ।

પડતું મુકવું–મેલવું (क्रि.) ठहराना, मुल्तबी रखना, स्थगित करना, विलम्ब करना, टालना ।

પડવો (सं.) बल, शक्ति ।

પડતો દહાડો (सं.) उतार, घटती, घटाव, आफत, विपत्ति ।

પડથાર (सं.) घर के बाहिरका चोक, बरामदा, बरण्डा, उसारा ।

પડદી (सं.) गठरिया, बंडल, पुड़-लिया, एक ईंट की चौड़ाईकी बनी हुई भीत ।

પડદો (सं.) गट्ठा, भारा, बंडल, पोट, अंतर, जिससे दो भाग हों ऐसी बीच में आई हुई दीवार, सूर्य तप निवारणार्थ गाड़ी पर लगाया हुवा वस्त्र, किसीकी दृष्टि न पडे इस वास्ते की हुई ओट, चिक, पर्दा, सितार का परदा, कानका परदा, ढकन, आवरण, आच्छा-दन, ओट, जनाना ।

પાછળ હોવું (क्रि.) गुप्तहोना, छुपना, માં રાખવું (क्रि.) बेमालूम रखना, गुप्त रखना, કાઢી નાખવો (क्रि) बेशरम होना, निर्लज्ज होना ખોલવો, ફોડવો (क्रि.) बात खोलना, छुपी बात प्रकट करना, भांडा फोडना ફુટી જવો (क्रि.) कपट कौतुक प्रकट होना, पोलखुलजाना, गुप्त रहस्य प्रकट हो जाना, રાખવો (क्रि.) इरादा छुपा कर रखना,

બોલને में लाज करना, इज्जत रखना પડદો (क्रि.) यवनिका पतन, नाटक इत्यादि खेलों में चित्रपटका गिरना, ઉઘડો (क्रि.) पड़दा उठना (नाटक में) गुप्त बात प्रकट होना, ઉઘાડો કરવો (क्रि.) गुप्त बात प्रकट कर देना।

પડપ (सं.) लज्जा, शर्म, हया,

પડછુ (सं.) दुर्बल अथवा अशक्त पुरुष।

પડપુછ (स.) पूछताछ, तलाश, जाँच, पुनम्पुनःप्रश्न, दरियाफ्त।

પડબીડિયુ (सं.) लिफाफा जिसमें लिखित पत्र रखकर और सरनामा करके भेजाजाता है।

પડભીતિયુ (सं.) दीवारको गिरने से बचानेके लिये पासमें दूसरी बुरज या दूसरी दिवार टैक, सहारा।

પડવાયો-પૈયે (सं.) चारपाई के सिरहाने की ओर पायों के नीचे रखनेके काठके टुकड़े, लकड़ी की आड़ यारोक, भोजन करते समय पैरों को सहारा देनेके लिये काष्ठ।

પડશી (सं.) ओसारा, सायबान, बरामदा, बराण्डा, दालिया।

પડતેઓ (सं.) लकड़ीका टेका, गिरते हुएका टेका या सहारा।

પડવો (सं.) पक्षका प्रथमदिन, शुक्ल पक्षका और कृष्ण पक्षका प्रथमदिन, पड़वा, प्रतिपदा, तिथिविशेष

પડશાળ-સાળ (सं.) देखो પરશાળ

પડશુદી-પરશુદી (सं.) उत्तम आटा, मैदा, गेहूओं को भिगोकर तय्यार किया हुवा आटा।

પડળ (सं.) पर्दा, झिल्ली (आंख-पर) पटल, आंख में का जाला।

પડા (सं.) हथेली और अँगुली दोनों से किया हुवा निशान, छापा।

પડાંઈ (सं.) पतंग, चंग, गुड्डी।

પડાઉ (सं.) लादने के लिये माल ले जानेका, नाव, (वि.) फुसला कर या बलात्कार पूर्वक लियाहुवा, हरामका, मुफ्तका, छीनकर लिया हुवा। [एकदम।

પડાક (अव्य.) झट, तुरत,

પડાંપડી (सं.) ऊपर नीचे गिरना, स्पर्धा, प्रतिद्वन्द्वता, धकाधकी दौड़,

પડાવ (सं.) ठहरनेका स्थान, मुकाम, छावनी, डेरा डालनेकी जगह, [जबरदस्ती से ले लेना,

પડાવવું (क्रि.) फुसलाकर अथवा

પડાપરખું (वि.) गावदुम, गोपुच्छ सदृश। [छप्पर का ढाल,

પડાળ (स.) छतका ढलाव,

પડાળી (सं.) छप्पर, ढलवां छत, साया, ओसारा।

પડિયું (सं.) एक प्रकारका सर्प।

પડિયો (सं.) देखो દડિયો।

પડી (सं.) औषधियों की पार्सल, चूर्ण, सूचित करने के लिये ढोलका शब्द, पुड़िया।

પડીકું (सं.) पतले कागज में लपेटी हुई वस्तुका बंडल, छोटा पेकेट।

પડીકમણું (सं.) श्रावक लोगों की प्रातः साय ईश्वर से क्षमा याचना।

પડીદાર (सं.) ढिंढोरा पीटने वाला, डौंडी पीटने वाला।

પડીમા (सं.) मूर्ति, प्रतिमा, मूरत।

પડો (सं.) लंबा वक्तव्य, ढिंढोरा, डुग्गी, मुनादी, इश्तिहार, वक्तका

પડો વજડાવવો (क्रि.) सबसामें प्रकट करना, जाहिर करना।

પડોશીણી (सं.) एक प्रकारका सुगंधित वृक्ष और उसके पत्ते।

પઢ (सं.) बड़ाभाई, अगुआ, मुखिया, माननीय, (देखो)

પઢવું (क्रि.) पढ़ना, अभ्यास करना, अभ्यास करना, सीखना, सीखना, रटना घोखना, पाठपढ़ना

પઢેલ-લું (वि.) पठित, शिक्षित, पढ़ा, पंडित, पढ़ाहुआ, सीखाहुआ।

પઢેલપણ ગણેલનહિ (वि) पढ़ा, किन्तु गुणा नहीं, पठित मूर्ख, अनभ्यस्त।

પઢેલ ગણેલ ને કરેલ (वि) पठित, अभ्यस्त, चौकस, ध्यानी, शिक्षित

પણ (सं.) वचन, शपथ, प्रण, प्रतिज्ञा, वादा, टेक, ममत्व, नियम, (अव्य.) किंतु, परन्तु, लेकिन, तोभी, तथापि, तादृश, तिसपर भी, भी, इसी तौरपर, औरभी, इसीरीतिसे, शब्दान्तमें 'पना', या, 'ता', सूचक प्रत्यय।

પણછ (सं.) बांसकी चीप, बांसकी धनुषकी प्रत्यंच्या, रोदा, चिल्ला, पनच।

પણતર (सं.) विवाह, कम विवाहिता स्त्री, विवाही, निकाही।

પણવું (क्रि.) देखो પરણવું

પણિયત (वि.) विवाहित, निकाही, विवाह की हुई, लग्न की हुई ।

પણિયારી (सं.) पानी भरनेवाली स्त्री, पनिहारिण. पानी लानेवाली ।

પણી (सं.) छोटा बंडल, भाजी इत्यादिका बण्डल, गड्डी, जुट्टी ।

પણીઆરું (सं.) पानी क पात्र रखनेकी जगह, परेंडा, घडौंची ।

પણું (अव्य.) गुण, स्थिति प्रदर्शक शब्दान्तमें लगनेवाला प्रत्यय।

પણે (कि. वि.) वहां उस जगह, तत्र, तहां ।

પણેલું (वि.) देखो પરણેલું

પણો (सं) रेत और धूलका मिश्रण, मिट्टीका ढेला, रेत ।

પણ્યસ્ત્રી (सं.) कस्बी, छिनाल, वेश्या, रंडी, गणिका, कुटनी ।

પંડ (सं.) शरीर, देह, बदन, पांडु रोग, कंवल रोग ।

પંડુ (सं.) रोग विशेष, पांडु रोग, कंवल रोग ।

પંડે (कि. वि.) स्वयं, खुद, आप, बिना किसी के द्वारा, अपने आप।

પંડેપંડ (अ.) खुदबखुद, आपोआप, स्वतः ।

પડોળું (सं.) एक प्रकारके भूरे सांप के आकारका फल, जिसका साग बनता है ।

પત (सं.) आबरू, विश्वास, यकीन, बड़ाई, प्रतिष्ठा, कीर्ति, यश ।

પન (सं.) पति, खाविंद, खसम (कवितामें) पाण्डु रोग ।

પતકરવું (कि.) मान करना, इज्जत करना, मानना, स्वीकार करना, विश्वास करना, किसीका काम करना सिर लेना ।

પતંગ (सं.) फतिङ्गा, टिड्डी, तितली, उड़नेवाला कीड़ा, कनकौवा, चंग, गुड्डी, सूर्य, पारा, एक प्रकारकी लकड़ी जिससे रंग निकाला जाता है ।

પતંગિયું-યો (सं.) तितली, टिड्डी, उडनेवाला कीड़ा, पतिंगा।

પતઝડી सं)शरद् ऋतु, वृक्षों के पत्ते झड़ने का मौसिम, पतझड़ होने के महीने ।

પતન (स.) नक्षत्र पात, पछाड़, पटकन, स्खलन, पड़न, पात ।

પતનકોણ (सं.) अक्षांस के साथ का कोना या नोक ।

પતરડી (सं.) आबरू, इज्जत, मान, पत्तर ।

પતરાજખોર (वि.) गर्विष्ठ, घमण्डी मानी, आत्मश्लाघी ।

પતરાજ-જી (सं.) प्रशंसा, शेखी, गर्व, घमण्ड, श्लाघा, बड़ाई ।

પતરાળુખોર (वि) देखो पतराळखोर

પતરાવળ-ળી (सं.) पत्तल पत्तर, पलाश आदि वृक्षों के पत्रों द्वारा सींकों के योग से बनाई हुई भोजन करने की पत्तल, ।

પતરૂં (स) धातु को पीट पीट कर बनाया हुवा पत्तर, पतरा, पत्र ।

પતવવું (क्रि) मांगत देना, चुकाना।

પતવાળ-ળી-ળું (सं. देखो પતરાવળ

પતવું (क्रि.) समाधान होना फैसला होना, परिणाम होना, जाना, रहना, छुटकारा पाना, स्वतंत्रता पाना ।

પતળવું (क्रि.) रूठना, गुस्से होना, क्रोध होना, वचन भंग करना, पिघलना, नरम होना, मुलायम होना ।

પતાવવું (क्रि.) समाधान करना, फैसला करना, परिणाम निकालना, छुटकारा पाना, तय करना, चुकाना

પતાસાં-સું (स) केवल शक्कर की गोल गोल फूली हुई टिकिया, बतासा, मिठाई विशेष, शक्कर का बिस्कुट तुल्य पदार्थ ।

પતાળ (सं.) देखो પાતાળ

પતિ (सं.) स्वामी, मालिक, प्रभु, अधिकारी, खसम, घर धनी, भर्ता ।

પતિપરાયણ (सं.) पतिव्रता स्त्री, कुलवती, पति सेवक भार्या ।

પતિબાર (सं.) आबरू, इज्जत, मान, विश्वास, यकीन, निश्चय ।

પતિયું (सं.) सफेद बकरी का बच्चा, सफेद रंग का मेमना ।

પતિવ્રતા (सं.) सुचरित्रा, साध्वी, सती, कुलवती, पतिदेवता स्त्री, वह स्त्री जो अपने ही पतिमें अनुराग रखती हो, पति सेवा करने वाली स्त्री ।

પતીજ (सं.) खातरी, विश्वास, दृढ निश्चय, भरोसा, धैर्य, गवाही।

પતુણો (वि. पौना, $\frac{3}{4}$ (संकेतार्थ)

પતેલી (सं) तपेली, तबेला, पात्र विशेष । [भरोसा ।

પત્ત (सं.) कोढ़, विश्वास, मान,

પત કરવું (क्रि.) विश्वास करना, भरोसा करना, मान करना, ध्यान देना, आज्ञा देना, होने देना ।

પત્તન (सं.) शहर, नगर, बड़ा गांव, कस्बा ।

પત્તર (सं.) नामवरी, यश, बुजुरग, इज्जत, विश्वास, आबरू, पात्र, बरतन ।

પથરો ઠોકવી-રગડવી (क्रि.) आवरू लेना, धूल निकालना, अतिशय परिश्रम कराना. कायर करना। [रवाडिया।

પથસ્વડિયાં (सं.) देखो પાત-

પથરવેલિયું (सं.) पूर्ववत्।

પતું (सं.) पत्र, पत्ता, ताश का पत्ता, पृष्ट, पन्ना, सफा, कार्ड, लिखा कागज़।

પત્તો (सं.) ठिकाना, नामानिशान, चिन्ह, शोध, खबर, समाचार, सरनामा, श्रीनामा, एड्रेस, पर्ण।

પત્રક (सं.) पुस्तक का पन्ना, लिखने का पत्र, हिसाब का कागज़ यददाश्त का कागज़।

પત્રાજ-ળુ (सं.) देखो પતરાજ।

પત્રાધિપતિ (सं.) समाचार पत्र का मालिक, अखबार का स्वामी।

પત્રાવળ-ળી-પત્રાળી (सं.) देखो પતરાવળ। [પત્રિકા।

પત્રી (सं.) जाविश्री, देखो

પત્રું (सं.) देखो પતરું।

પથ (सं.) मार्ग, रास्ता, वाट, गैंडा, डगर, सड़क, पंथ, तरीका।

પથરવું (क्रि.) फैलाना, बिछाना, विस्तृत करना, बिखेरना।

પથરી (सं.) छोटा पत्थर, नाई के औजार घिसने की सिल्ली, पत्थर समान गोल सख्त वस्तु जो मूत्र पिंड में बनजाती है और जिस से पेशाब करते समय वेदना होती है, चकमक पत्थर का टुकड़ा, खेलने के पत्थर के पचेटे, सिक्का, एक प्रकार का रोग।

પથરો (सं.) पत्थर, आलसी पुरुष, धीमा, जड़बुद्धि का पुरुष, वहम। अड़चन, कुछ नहीं, धूल, आड़, रोक।

પથાળવું (सं.) देखो પાથરણું।

પથાર-રો (सं.) विस्तार, फैलाव।

પથારી (सं.) बिछौना, बिछाने का, चटाई, साथरी, मुकाम, ठहरने की जगह, पड़ाव।

પથારી સેવવી (क्रि.) रोगग्रसित होकर बिछौने में पड़े रहना, बीमार होना, चारपाई सेना।

પથારીએ જવું (क्रि.) मरे हुए मनुष्य के यहां दस दिवसतक शोक सूचनार्थ सोने जाना।

પથારો (सं.) किसी भी चीज़ का मोटा बिछौना, प्रसार, फैलाव।

પથિરો (वि.) फैलाव, प्रस्तार, विस्तार।

પથ્થર (सं॰) देखो पथरो।

પથ્થર એટલા દેવ કરવા (क्रि.) पत्थर पत्थर को देवता मानना, अनेक यत्न करना, बन सके सो सब कुछ करना।

પથ્થર ખેંચવો (क्रि., बडी कठिनतासे गृहस्थ का निर्वाह करना, मिहनत मजदूरी करके जैसे तसे काम चलाना।

પથ્થરની છાતી (सं.) संगदिल, कठोर हृदय, पाषाण हृदय, साहसी हृदय।

પથ્થરનો ભમરડો (सं॰) मूढ, मूर्ख, शठ, अशिक्षित, बे पढा, देखा करे किंतु बोले नहीं, कम अक्ल।

પથ્થર આવ પગપર = अपने हाथों अपने पैर कुल्हाड़ी, आ बैल मुझे मार, अपने आप आपत्ति में जा फंसना।

પથ્થરમાંથી લોહી કાઢવું (क्रि.) असंभव कार्य करना, चलनी में दूध दुहना, पाड़े (भैंसे) से दूध निकालना।

પથ્થરિયો (सं.) पत्थर का प्याला, पत्थरकी कुण्डी।

પદ (सं.) पांव, पैर, चरण, पग, पैर का चिन्ह, पायदा, स्थान, प्रतिष्ठा, मान, आदर, अधिकार, महिमा, शब्द, स्वरूप, विभक्ति के साथ का शब्द, श्लोक का चतुर्थ भाग, दर्जा, ओहदा, भजन, दोहा, मृतक पुरुष के नाम पर ब्राह्मणको दिया गया बिछौना, चार पाई वस्त्र आदि दान। पति के घर जाते समय दुलहिन को दिया हुवा सामान, बारहखड़ी, वाक्य में कर्ता, कर्म, क्रियापद अव्यय इत्यादि, तुक, कड़ी, पाद।

પદડી (सं.) गुड़ाखू भर कर रखनेकी चमड़ेकी लम्बी थैली, तमाखू पोंच।

પદબંધ (सं.) कविता के चरणों का योग, छंदशास्त्र, पिंगल।

પદબંધન (सं.) शब्द विधा, शब्द रचना, वाक्य रचना।

પદમ (सं.) कमल, सरोज, पंकज।

પદમણી (सं.) पद्मिनी (स्त्री)

પદર (स.) वस्त्रका सिरा या नोक, कपडेका पल्लू, पल्लव।

પદર (वि.) अपना, निजका, खुदका, गांठका, पासका, शरण, आश्रय, आसरा, सहारा।

પદરખાતુ (सं.) रसोईघर, भोजन गृह, होटल, ढाबा, भटियारखाना।

પદરતું (वि.) अपना, निजी, पास-का, गाँठका, खुदका।

પદરેખું (सं.) देखो પદરજ

પદારથ-થ (सं.) संसारमें उत्पन्न जडरूप वस्तु, चीज, वस्तु, (तर्क-शास्त्रमें निम्न सात पदार्थ माने हैं द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव) वाक्यार्थ, स्वादिष्ट उत्तम भोज्य वस्तु, सोना, चांदी, हीरा इत्यादि, (चार पदार्थ धर्म अर्थ, काम, और मोक्ष) तत्व, सत्व।

પદાર્થવિજ્ઞાન (सं.) पदार्थ के गुण सामान्य धर्मकी शिक्षा देने-वाला शास्त्र, फिलासफी, तत्वविद्या

પદાવવું (क्रि.) डराना, घबराना, हराना, छकाना, कष्टदेना, पदाना, तग करना, दबाना। [पीढा।

પદાસન (सं.) पैररखने की चौकी

પદી (सं.) जिसमें पदहों, श्लोक, चरण (कविताके) जैसे अष्टपदी।

પદું (वि.) देखो પદ (सं.) काम, धंधा,

પદેડવું (क्रि.) भगाना, पदाना, घबराना, खदेड़ना, देखो પદાવવું

પદોડવું (क्रि.) खुबकाममें लाना, रगड़ना, मैलाकरना, बरबादकरना।

પદ્મરાગ (सं.) रक्तवर्णकी मणि विशेष, माणिक, लाल नामक प्रसिद्ध रत्न।

પદ્મરેખા (सं.) हस्त रेखा विशेष, धनसूचक हाथकी रेखा।

પદ્મહસ્ત (सं.) भाग्यवान, तकदीर, वाला, उन्नतिशील, कृतकृत्य।

પદ્મિની (सं.) शृंगार शास्त्र में चार प्रकारकी स्त्रियों में से एक, कमलि-नी, नलिनी, सुलक्षणा स्त्री, उत्तमा स्त्री, वर वर्णिनी, रंग रूप सुकुमा-रता इत्यादिमें सर्वश्रेष्ठा स्त्री।

પધરામણી (सं.) आदर पूर्वक निमंत्रण, महान पुरुषका आगमन, सम्मान पूर्वक बुलावा,

પધરાવવું (क्रि.) मानदेना, आदर पूर्वक स्थापना करना, आदरपूर्वक बुलाना, सम्मान पूर्वक विदा करना, बे बिकने वाले मालको झूठ मूठ समझाकर किसी के माथे मढदेना।

પધારવું (क्रि.) मानपूर्वक आना, मान सहित विदा होना, सिधा-रना।

પનઘટ (सं.) देखो પણઘટ

પનેડો (सं.) स्त्रियों के कानमें पहिनने का एक प्रकारका आभूषण । [संगति ।

પનારો (वि.) भाईबंधी, मैत्री,

પનાહ (सं.) संरक्षण, आड़, ओट, सहारा, आश्रय ।

પનિયાં (सं.) जूता, पदत्राण, जोड़ी, पगरखी ।

પનિયારી (सं.) देखो પણિયારી

પનીર (सं.) खाद्य विशेष, खानेकी एक वस्तुका नाम ।

પનું (सं.) गुड़ और अमलीका झोल मिश्रित पदार्थ, कच्चे आम (कैरी) को भूनकर बनाया हुवा पानी जिसमें मसाला इत्यादि पड़ाहो । [अरजा

પનો (सं.) कपड़ेकी चौड़ाई,

પનોતી (सं.) शनिकादशा, खोटी दशा, जिस समय तन मनको कष्ट हो, दुर्भाग्य, दुर्दैव, दुष्टग्रह, पूर्ण और शुभ सूचक ।

પનોતું (वि.) मंगळप्रद, लाभकारी सुखद, भाग्यशाली, मुबारक बधाई, बहुकुटुम्बी, भाग्यवान ।

પંતિયાળુ (सं.) हिस्सेदारी का काम, पांतीकाम, सहयोगिता, हाथ कियाहुवा व्यापार, कम्पनी,

પંતિયાળો (सं.) भागी, हिस्सेदार, सहयोगी, पातीदार ।

પંથી (सं) मार्गका, मतका, प्रवासी गामी, पथिक, पन्थाई, अनुयायी, यात्री, मुसाफिर, बटोही, पांथ ।

પંથીડ (सं.) पूर्ववत्

પંદર (वि.) पन्द्रह, संख्या विशेष, दस और पांच, १५,

પંદરવાડિયું (सं.) पक्ष, पखवाड़ा, १५ दिनकी अवधि । [इता।

પન્નાળિકા (स.) प्रणाली, सिल-

પપનસ–પપાઉં (सं.) एक प्रकार का फल ।

પપેટી (सं.) पारसियों की साल का प्रथम दिन, नयादिन, (पार्सियों का ।)

પપૈયો (सं.) पक्षी विशेष चातक पक्षी, पपीहा, जलने से अथवा अन्य किसी कारण से उत्पन्न छाला या फफोला, पपीहा (सितारमें) एक प्रकार का फल विशेष ।

પપૈયા (सं.) एक प्रकार का फल ।

પપૈડી (सं.) एक प्रकार का वृक्ष ।

પબ્લિક (सं.) प्रकट, वेश्या ।

પભરવું (क्रि.) सुगंधि फैलना, खुशबू फैलना, प्रसारित होना ।

પમરાટ (सं.) सुगन्ध, खुशबू, महक, सुवास, इत्र, गन्ध।

પમાડવું (कि.) देना, पहुंचाना, दिलाना, प्रदान करना।

પંભોયો (सं.) ईंटका टुकड़ा,

પંપાળવું (कि.) टटोलना, टोहना, धीरे धीरे हाथ फेरना, पपोलना, प्यार करना, प्रेम करना, छूना।

પંપેળવું (कि.) टटोलना, टोहना,

પર (वि.) शब्द के प्रथम लगने वाली प्रत्यय जो 'दूसरे का, अन्य का' इत्यादि अर्थ पैदा कर देती है, (उप.) पीछे, बादमे, उपरान्त, आगे, ऊपर, पिछला, पश्चाद्गामी, मोक्ष. (सं.) पंख, पर, पांख, पक्ष।

પરઅમલ (सं.) विदेशी राज्य, दूसरे की अमलदारी, पराधिकार।

પરઇ (सं.) मूसल, लोढ़ा, कूटने की मूसली (वि.) दूसरे की, पराई।

પરકમ્મા-મ્મા-મ્મા-મ્મા (सं) आसपास घूमना, चक्कर, परिक्रमा, प्रदक्षिणा, गोल घूमना।

પરકમ્મણું (सं.) पूर्ववत्

પરકર (सं.) स्त्रियों का एक भूषण विशेष, कमरपट्टा, कटिबंध।

પરકીયા (सं.) दूसरे की स्त्री (जिसकी पर पुरुष के साथ प्रीति हो) रसशास्त्र में तीन प्रकार की नायिका है स्वकीया, परकीया, सामान्या, नायिकाभेद, उपनायिका

પરખ (सं.) परीक्षा, जांच, खोज, अनुसन्धान, इम्तहान।

પરખનાર (सं.) परीक्षक, जांचने वाला, खोजी, अनुसन्धान कर्त्ता।

પરખવું (कि.) परीक्षा करना, जांच करना, पड़तालना, कसौटी कसना।

પરખામણી (सं.) परीक्षा करने की मजदूरी, जांच का मिहनताना।

પરખાવવું (कि.) परखाना, जंचवाना, असली नकली पहचनवाना।

પરખાવું (कि.) परखाना, समझाना, परीक्षा किया जाना, पहिचाना जाना।

પરખિયો (सं.) परीक्षक, जांचनेवाला, सत्यासत्य निर्णय करने वाला।

પરગજુ (सं.) दूसरे की आवश्यकताको पूर्ण करनेवाला, भला, परोपकारी।

પરગણુ (सं.) परगना, एक राज्य का छो । विभाग, जिला, प्रांत ।

પરગમન (सं.) जारकर्म, व्यभिचार, छिनाला. परस्त्री अथवा पुरुष गमन ।

પરગામ (सं.) दूसरा गांव, अन्य-गाव विदेश, परदेश, गैर मुल्क ।

પરગામી (सं) बाहिरी विदशी, दूसरा, दूसरे गांवका अन्य देशीय।

પરઘર (सं) पराय।घर, दूसरे-का घर, व्यभिचार, जिनाकारी, छिनाला ।

પરચુટણ-રણ (सं.) आटा, दाल, मसाला आदि फुटकर सामान ।

પરચો (सं.) चमत्कार, आश्चर्य, कौतुक. करामात, सम्बन्ध, परिचय ।

પરછતી (सं.) गारेकी दीवारपर छाइ हुई घास पात इत्यादि

પરછંદો (सं) देखो પડઘો

પરજ (सं.) हाथकी रक्षाके लिये तलवार के मूठके आगे का भाग, परज नामक एक प्रसिद्ध राग ।

પરજંગ (सं) सोने की चार पाई, खाट, पलंग. पर्य्यंङ्क, सेज, मंच ।

પરજાત (सं.) अद्भुत, अजीब, दूसरा व्यक्ति, पराया, अनदेखा।

परजाळवुं (क्रि.) जलाना, भभकाना, प्रज्वलित करना, जला देना।

પરજિયો (सं.) परज, परजराग के जिसमें कुछ में कुछ स्वर हों, शोक गीत, मरासिया, शोक सूचक गीत ।

પરઠણ (सं.) दशा, हालत, होड़, नियम, प्रतिज्ञा, शर्त, कौल, कराह।

પરઠવું (क्रि.) कीमत ठहराना, शर्त करना, होड़ बदना, पकड़ना, जाना विदा होना, देखो પઠવું

પરઠો (सं.) कौल करार, प्रतिज्ञा।

પરડ (सं.) ध्वनि सूचक शब्द, पादनेके समय का शब्द, अपना वायू के त्यागने के समय गुदा शब्द। परेद धूमधाम ।

પરણ (स) पति पत्नीका चुनाव, लग्न, विवाह, निकाह, पर्ण, पत्ता ।

પરણમું (क्रि.) प्रणामकरना, नमस्कारकरना, अभिवादन करना, नमनकरना ।

પરણવું (क्रि.) विवाह करना, लग्न करना, शादी करना, निकाह करना, स्त्री पुरुषका शास्त्रानुसार संबंध होना ।

પરણાવવું (क्रि.) लडका, लड़की का विवाह करदेना, बढानेके लिये पानी मिलाना, गले बांधना, माथे मँढना। [ब्याहा।
પરણિયત (वि.) विवाहित,
પરણેત (सं.) विवाह, लग्न।
પરણેતર (सं.) पूर्ववत्, (वि.) देखो પરણિયત [गृहस्थी।
પરણેલું (वि.) ब्याहा, विवाहा,
પરતો (सं.) गुण, बल, प्रभाव, प्रताप, कौतुक, करामात, आश्चर्य विलक्षणता. [धर्म से।
પરત્વે (उप.) लिये से, द्वारा,
પરદ (सं) मार्ग, रास्ता, पथ, राह।
પરદાદો (सं.) प्रपितामह, दादा का बाप, पिता के पिता का भी पिता।
પરનાતી (वि.) विजातीय, दूसरी कौम का, जाति बाहर, दूसरे वर्ण का।
પરનાળ (सं.) नल, नाला, नाळी,
પરનાળિકા (सं.) वंशपरंपरागत रीति प्रणाली, जल का नल, कुल, रीति, सनातन मार्ग।
પરંતુ (अ.) किन्तु, अधिकन्तु, किंवा, अपर, लेकिन, तौभी, पर।
પરંદું (सं.) पक्षी, चिड़िया, खग।
પરપંચ (सं.) प्रपंच, विपर्यास, अज्ञान, भ्रम, जगत।
પરંપરાગત (वि.) क्रमागत, वंशानुक्रम से आया हुवा, कुल रीति।
પરપુછ (सं.) पूछ, पूछताछ, जाँचपड़ताल, तलाश, खोज।
પરપુરુષ (सं.) दूसरा पुरुष, अपने पति के अतिरिक्त, अन्य पुरुष, दूसरा स्त्री का पति, अद्भुत पुरुष। [हुई हुण्डी।
પરઠ (सं.) तासरी बार लिखी
પરપોટો (सं.) फफोला, छाला, बुदबुदा, बुलबुला, पानीका बुद्बुदा।
પરબ (सं.) वहस्थान जहां प्यासे यात्रियों को मुफ्त पानी पिलाया जाता है, पर्व, उत्सव, त्यौहार, प्याऊ।
પરબડી (सं.) कबूतरोंके लिये ऊंचे खंभेके ऊपर अन्न आदि रखने के लिये बनाया हुवा।
પરબડીયું (सं.) लिफाफा, जिसमें लिखा हुवा पत्र रखकर ऊपर सरनामा किया जाता है, कवर।
પરબિયો—બિયો (सं.) वह मनुष्य जो रास्ते पर यात्रियोंको पानी पिलाता है, प्याऊवाला, पौसाला।

પરભવવું (क्रि.) कायरकरना, बकाना, डराना, परवाह न करना, तिरस्कार करना ।

પરભવ (सं) प्राचीन समयमें, पुराने वक्तोंमे, पहिली उम्रमें पूर्वजन्ममे ।

પરભા (सं) परवाह, दरकार, फिक, चिंता, ख्याल, ध्यान ।

પરભાત (स.) प्रभात, भिनुसारा, तड़का, सवेरा, सुबह, भोर ।

પરભાતિયું (स.) प्रभाती, सुबह के वक्त गाने का राग, परभाती ।

પરભાઈ થું (वि) अद्भुत, अजीब, दूसरा, अनजाना, अपरिचित ।

પરભુ (सं.) प्रभु ईश्वर, हिंदुओ की एक जाति विशेष ।

પરમ (वि.) उत्कृष्ट, प्रधान, आद्य, श्रेष्ठ, अग्रगामी, अग्रेसर, अद्भुत, बिलकुल, बहुत, परसो (दिन)

પરમદહાડે-દી (वि.) (गत) परसों के दिन (आगामी) परसों के दिन ।

પરમહંસ (सं.) योगी, सन्यासी, अवधूत, सन्यास विशेष, ब्रह्म ।

પરમાટી (सं.) मांस, गोश्त ।

પરમાણ (सं.) प्रमाण, उदाहरण, सुबूत, दृष्टांत ।

પરમાણવું (क्रि.) सत्यमानना, सत्य प्रमाणयुक्त समझकर स्वीकार करना ।

પરમાણપત્ર (स.) सार्टीफिकेट, प्रमाण पत्र, दस्तावेज ।

પરમાણુ (सं.) अत्यंत सूक्ष्मवस्तु, कणमात्र, कालविशेष, परिमाणु, माप, नाप, तौल, अन्दाज ।

પરમાણે (उप.) अनुसार, मुवाफिक, समान, प्रमाण से ।

પરમાર્થ (सं.) उत्कृष्ट पद, यथार्थ वस्तु, मोक्ष, सुख, दु खाभाव, पवित्रज्ञान ।

પરમિયો-મો (सं.) शुक्रदोष, प्रमेह, मूत्र के साथ वीर्य जानेकी बिमारी, शुक्रमेह ।

પરમુલક (सं.) विदेश, अन्य देश, इतर देश, परदेश ।

પરમેશ-શ્વર-સર (सं.) शिव, परब्रह्म, विष्णु, ईश्वर, भगवान् ।

પરમેશ્વરની ગાય (सं.) भोला, काहिल, आलसी, सुस्त ।

પરમેશ્વરપણું (वि.) ईश्वरता, प्रभुता, देवत्व ओदार्य ।

પરમેશ્વરી (सं.) देवी, आदिशक्ति, लक्ष्मी, भगवती, दुर्गा, सरस्वती ।

પરમોદવું (क्रि.) बहुत समझा कर कहना, खूबसमझाना।

પરમોદી (वि.) आनन्दित, मग्न, मुदित, खुश दिल, आनन्दी।

પર્યન્ત (अ.) शेषसीमा, अंतसीमा, तक, हद।

પર્યાય (सं.) पाला, क्रम, आनुपूर्वी परिवर्तप्रकार, अवसर, निर्माण, द्रव्य धर्म, सम्बन्ध विशेष, सम्पर्क।

પરમ્પરા (सं.) सनातन, अन्वय, वंश, कुल, संतान, परिपाटी, अनुक्रम, क्रमशः, उत्तरोत्तररिवाज।

પરરાજ્ય (सं.) दूसरेका राज, विदेशी राज्य, विदेशी शासन।

પરલી (सं.) छिपकली, बिसतुइया, बिसमरी, पल्ली।

પરલોકજવું (क्रि.) मरजाना, गुजरजाना, मृत्युहोना, नाशहोना।

પરવ (सं.) देखो पर्व अथवा પર્વ

પરવડવું (क्रि.) इच्छानुकूल होना अनुकूल होना, खोजना।

પરવડતું (वि.) अनुकूल।

પરવણી (स.) स्नान, दान इत्यादि पुण्य करने का शास्त्रोक्त दिवस। दखो पर्वणी

પરવતન (सं.) विदेश, परदेस अन्य देश, पराया देश।

પરવરતાવવું (क्रि.) प्रकाशित करना, उद्घाटन करना, ठीक करना, नया बनाकर चलाना, फैलाना।

પરવરદેગાર (सं. परमात्मा, ईश्वर, प्राणीमात्र को जीवन दाता, प्रभु।

પરવરવું (क्रि.) सिधारना, जाना, बिदा होना, रवाना होना, गमन करना।

પરવરથી (सं.) पालन पोषण, रोजी, निर्वाह, कृपा, रक्षा, पालन।

પરવસ્તુ (सं.) पराई चीज़, दूसरे की वस्तु, दूसरे का मालअसबाब।

પરવળ (सं.) एक प्रकार का शाक, फल विशेष, साँपसरीखी लौकी।

પરવા (सं.) परवाह, फिक्र, चिंता दरकार।

પરવાણ (सं.) डॉड, पतवार, नौका चलानेका दण्ड अथवा स्थान।

પરવાડ (सं.) गांवके पास का आसपास भाग।

પરવાનગી (सं.) हुकम, आज्ञा, छुट्टी, इज़ाज़त, रजा, अनुशासन।

પરવાનો (सं.) लायसेंस, वारंट, आज्ञापत्र, पास, हुक्म।

પરવાર (सं.) अवकाश, फ़ुरसत, छुट्टी, समय, वक्त, परिवार, कुटुम्ब, कुनबा, घर क लोग।

પરવારવુ (सं.) देखो परवारवु

પરવારવું (सं.) बे धन्दा, बे रोज गार, बे काम, निकम्मा, ठलवा ।

પરવારવું (क्रि.) कामकाज कर के फुरसत पाना, ठाले होना ।

પરવારી (स) इस नामकी एक नीच जाति, नीच कौम विशेष भंगी ।

પરવાળુ (सं.) मूंगा, प्रवाल, एक प्रकार के समुद्री जानवर के रक्तमें से उत्पन्न मैल जो लाल गुलाबी और कुक कुछ पीले रंग का होता है ।

પરશાળ-સાળ (स.) प्रवेश गृह, पटशाल, घर के चौंक के पास का एक मकान ।

પરશી (सं.) परशु, कुल्हाड़ी, छोटी कुल्हाडी, फरसी, कुठार ।

પરશુ (सं.) शस्त्र विशेष, परश्वध. कुल्हाड़ा, पर्शु, फरसा ।

પરશુદી-સુદી (सं.) मैदा, एक प्रकार का गेहूँ का उत्तम आटा ।

પરસ (सं.) ओस, सबनम, कुहर धुंध, पाला, जाड़ा ।

પરસવું (क्रि.) पहिचानना, परखना, जानना, चीन्हना, छूना, स्पर्श करना, मजना, याद करना ।

પરસંગ (सं.) खाट, पलंग, खटिया, पर्य्यंङ्क, चारपाई, प्रसंग, योग, संगतिविशेष ।

પરસાદ (सं.) नैवेद्य, भोग, देव, देवोंको चढाया हुवा भोजन, भोजन, आशिर्वाद, कृपा, गुरुदेवता प्रभृति द्वारादिया हुवा कृपाफल, (लड़ाई के समय) मार, पीट, कुटाई, पिटाई ।

પરસેવે-વો (सं.) पसेव, पसीना, स्वेद, श्रमजल, प्रस्वेद ।

પરસેવો ઉતારવો (क्रि.) पसीना छूट जावे इतनी मिहनत कराना, अत्यंत कठिन परिश्रम कराना ।

પરસ્તશ-સ્તી (सं.) पूजा, पूजन, यजन, नमन, प्रणाम, अभिवादन सेवा, देव सत्कार, आराधना ।

પરસ્તી (सं.) प्रशंसा, प्रशस्ति, वर्णन, तारीफ, खुशामद, चापलूसी, गाँडगुलामी ।

પરસાકડે (सं.) पाखाना, संडास, टट्टी, झाड़ा, दस्त, शौच ।

પરહેજ-જી (सं.) रोक, बंधी, पथ्य, देखो પરેજ ।

પરહેજ કરવું (क्रि.) कैद करना, बंद करना, पथ्य करना, परहेज करना ।

परहेजगार (वि.) खाने पीनेकी कई वस्तुओं का परहेज करनेवाला पथ्य करनेवाला, घृणा करनेवाला

परहेज (सं.) देखो परेज ।

परांत (सं.) शेष, बाकी, अवशिष्ट, बाकबाकी बचाहुवा, उपरान्त ।

परांतवुं (क्रि.) देखो परवारवुं ।

परा (सं) कंठमें से निकलतेहीं प्रारंभिक ध्वनि, शब्द का स्वरूप विशेष, नाद स्वरूपवर्ण, शब्दका आदि स्वरूप, योगाभ्यासद्वारा समस्त शब्दका प्राप्त बीजरूप, सबसे उच्च गति, गंगा, गायित्री (अ.) पीछे, तरफ, ओर, दूर ।

पराइ (सं.) मूसली, मूसल, लोढी ।

पराकाष्ठा (सं.) मर्य्यादा, हद्द, सीमा, अतिश्रम ।

परागंदा (वि.) डामाडोल, भ्रमणकारी, रमता ।

परांच (सं.) मचान, मंच, तमाशा गाह का ऊंचा चबूतरा, फासी देने का मचान ।

पराजत (सं.) बड़ी भारी थाली, बड़ा थाल, परात, थाल ।

पराणुं (सं.) तीस बीघे का माप काठी, भूमि का नाप विशेष ।

पराठ (सं.) गधे के ऊपर गुदड़ी रखकर बकरे के बालों की बनी जिस डोरी से बांधा जाता है वह रस्सी ।

पराणी-णो (सं.) बैल हांकने की आरवाली लकड़ी, वह लकड़ी जिस मे बैल चलाने के लिये कील ठोकी गई हो, आंकुस, अंकुश ।

पराणे (क्रि. वि) बलात्कार पूर्वक बल पूर्वक, जबरदस्ती से, बिना इच्छा के, जोराजोरी, बेमर्जी ।

पराणो (सं.) देखो पराणी ।

परात (सं.) छाछ का पानी, मठे का पानी, देखो पराज ।

परात्पर (वि.) श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ, उत्तम से उत्तम, सब से अच्छा, देव, ईश्वर ।

पराधीन (वि.) परतंत्र, ताबेदार, अन्याधीन, दूसरे के आधीन ।

परान्ह (सं.) दो पहर के बाद, मध्यान्ह के उपरान्त, दो पहरी ।

परापूर्व (वि.) असली, बपौती, बापदादों का, अगलापिछला ।

पराभूत (वि.) पराजित, परास्त, हाराहुवा, तिरस्कृत ।

पराय (सं) मूसल, लोढ़ा, बट्टा, मूसली, लोढी, बत्ता ।

પરાયું (सं.) पराया, दूसरे का अन्य का, अन्य देशीय, अद्भुत। अन्यदीय, अन्य सम्बन्धीय।

પરાર (क्रि वि.) (आगन्तुक अथवा गत) तीसरा वर्ष।

પરાર્ધ (वि.) लक्ष लक्ष कोटि, पिछली गिनती, अंतिम सख्या, ब्रह्मा की आयु का आधा भाग, १०००००००० ०००००००० वर्ष। केशर, चन्दन।

પરાળ-લ (स) चावल वृक्ष के डठल अनाज का घास भूसा।

પરાવર્તન (स) पुनरागमन लौट आना, प्रतिक्षेप, परछाही, प्रतिना प्रतिबिम्ब, छाया।

પરાહત (स.) लौटाया हुवा फिर स दिया हुवा, छाया पडा हुवा, घबरायाहुवा, न करी छोडकर अपने घर बैठा हुवा।

પરાશ્રય (स.) छाछकापानी, वृक्ष पेड, तरु, पादप।

પરાળ (स) देखो પરાલ

પરિ (स) चारों ओर, विशेष, बहुत ही शब्द के प्रथम उसके अर्थ में ' चारों ओर, प्रदर्शित करने वाली प्रत्यय।

પરિક્રમણ (क्रि.) गोल फिरना, चारों ओर घूमना, (स.) प्रदक्षिणा, परिक्रमा।

પરિગ્રહ (सं.) प्रतिग्रह, दान, स्वीकार, मंजूर, भृत्य, सेवक, परिवार, ग्रहण, शपथ, आह्वान, परिजन।

પરિઘ (स.) घेरा, गोलकलकीर, पानी भरनेका मिट्टीका बड़ापात्र। लाहाजडी लाठी, गदा, मुद्गर, शूल, लौहमय यष्टि।

પરિચ્છેદ (वि) ग्रन्थविच्छेद, ग्रन्थ के अध्याय, सीमा, अवधि, भाग, प्रकरण, व्यवधान, पर्व, विभाग।

પરિણય (स.) विवाह, दारपरिग्रह, लग्न, ब्याह।

પરિતોષ (स.) सन्तोष, खुश, सब प्रकारसे तुष्ट, आनन्द, आल्हाद।

પરિધાન (स) पहिराहुवा वस्त्र, परिधेयवस्त्र, अधोवस्त्र, वस्त्र।

પરિનિર્વાણ (स.) पाक्षि विद्या।

પરિપાક (स.) जीर्णता, पक्वता, परिणाम, नैपुण्य, फल, निष्कर्ष।

પરિપુષ્ટ (वि.) तगड़ा, मांसयुक्त, गूदेदार, मोटा, ताजा, अतिपुष्ट।

પરિભવ (सं.) पराजय, पराभव, परास्त, अवज्ञा, हेयबुद्धि।

પરિભાવ (सं.) पूर्ववत्,

પરિભાષા (सं.) कृत्रिम नाम, बनावटी संज्ञा, सूत्रकालक्षण विशेष, अवयवार्थ को छोड़ समूह का अर्थ, संक्षिप्त वाक्य, स्पष्ट व्याख्या, प्रस्तावना, परिष्कृत भाषा, प्रज्ञप्ति, ग्रंथ संक्षेप करने के लिये सांकेतिक नियम, शास्त्रीय विषयमे सूत्र। [बू, गन्ध ।

પરિમ (सं.) सुगन्ध, खुशबू बास

પરિમળ (सं.) सुगन्ध, खुशबू, सुबास, अच्छी महॅक, सौरभ।

પરિયંક (सं.) खाट, पलका, पलङ्ग, सेज शय्या, चारपाई, खटिया ।

પરિયટ-ચેટ (सं.) धोबी, वस्त्र-धोनेवाला, जाति विशेष, रजक ।

પરિયા (सं.) पूर्वज, पुरखा, बाप-दादे अग्रज, पूर्वपुरुष, पितामह-आदि, पुरखा, पुरखा।

પરિયાનું પાણીમોનું (क्रि.) बाप-दादाओं की कीर्ति को नाश करना।

પરિયાણ (सं.) गमन, प्रस्थान, कूच, यात्रा बिदाई, पयान।

પરિરંભ (सं.) आलिंगन, भेंट करना, हृदयालिंगन ।

પરિવાદ (सं.) गाली, उलहना, तिरस्कार, निन्दा, सत्य निन्दा, बुराई, अपकीर्ति।

પરિવેશ (सं.) चन्द्र सूर्य के आस-पास का गोल चक्कर।

પરિવેષ્ટન (सं.) आच्छादन, ढकन, चतुर्दिक से आच्छादन, लपेटन ।

પરિશેષ (सं.) अन्त, सीमा, विच्छेद, समाप्ति, शेष, बाकी. अवशेष ।

પરિષદ (सं.) पाठशाला, कालिज, मदरसा, स्कूल, गुरुकुल, सभा। समिति, चाकर, सेवक, नौकर ।

પરિસવું (क्रि.) देखो પિસરવું

પરિસાન-જ્ઞાન (सं.) निश्चय बोध, सब प्रकार से जाना हुआ, ज्ञात ।

પરિસંખ્યા (सं.) आश्रय, आसरा, हिसाब, गणना, सीमा कुल, योग, जोड, टोटल, गिनती लेखा ।

પરિહરણ (सं.) त्याग, विसर्जन, मोचन, निकाल, छोड़, छीन, हरण ।

પરિહાર (सं.) अवज्ञा, अनादर, मोचन, छोड़ना, त्याग, विसर्जन, एक जाति विशेष, रोक, आड़ ।

પરિસીમા (सं.) अवधि, हद ।

પરીક્ષા લેવી (क्रि.) जांचना, परखना, कसौटी कसना, इम्तहा-न लेना ।

परीक्षित (वि.) जिनका गुणविवेचित हुआ है, जांचा हुआ, अभिमन्युका पुत्र ।

પરીખ (सं.) शराफोंकी पदवी, सराफी धंधा करने वालों के नामके साथ लगाया जाता है ।

પરીજાત–જાદો (सं.) अत्यंत खूबसूरत, विशेष मनोहर, रूपसम्पन्न । [कियत ।

પરીધરો (सं.) मालमत्ता, मिल-

પરીસવું (क्रि.) भोजन करने वाले के आगे भोज्य पदार्थ रखना, परसना, परोसना, भोजन रखना ।

પરીસો–સૈ (सं.) पीडा, दुःख, कष्ट, अड़चन, तकलीफ, क्लेश ।

પરૂ (सं.) उपपुर; नगर प्रांत, बाहिरी भाग, पुरा, शहर या कस्बे के बाहर लगी हुई बस्ती, बिल्ली, खरहा, दूर, असमीप, अल, पीब, गुमड़ी, फुनसी के पक जानेपर निकला हुवा सफेद पीब (वि.) उलटा, आडा,

પરૂણો (सं.) देखो પરાણો

પરૂપવું (क्रि.) कहना, बोलना, कथन करना, वर्णन करना ।

પરુષ (वि.) निष्ठुर, कठोर, कठिन, कड़ा, निर्दय, क्रूर, रुक्ष, तीक्ष्ण, निष्ठुरोक्ति, कठोर वाक्य ।

પરે (सं.) प्रभात, अरुणोदय, सूर्योदय का समय, (वि.) प्रकारसे, रीतिसे ।

પરેજ (सं) परहेज, पथ्य, घृणा।

પરેજકરવું (क्रि.) पथ्य करना, बचना, परहेज करना, घृणाकरना।

પરેજગાર (वि.) अल्पभोगी, मिताहारी, अल्पाहारी, पथ्य करने वाला ।

પરેછ (सं.) देखो પરહેછ

પરેસ (स.) प्रेस, शिकंजा, यंत्रालय ।

પરેસાન (वि.) निर्लज्ज. तोफानी पहुंचवान, चतुर, धूर्त, अशुद्ध, व्यभिचारी, असाधु, दुष्ट, अवारा।

પરેસ્તાન (सं.) स्वर्ग, वैकुंठ. परियों के रहनेका स्थान, इन्द्रलोक ।

પરૈ (सं.) बोझउठाने की डण्डी ।

પરો (सं.) पर पंख, पक्ष, पांख ।

પરોગ (सं.) किनारा, अंत, सिरा ।

પરોડ-ઢ-ઢિયું (सं.) भिनुसारा, भोर, प्रभात, सुबह, सबेरा, तड़का, दिनोदय, सूर्योदय, प्रातःकाल ।

परीक्षागत (सं.) आगत स्वागत, आतिथ्य, अतिथि सत्कार, सेवा-शुश्रूषा, खातिर तवज्जोह ।
परीक्षाचाकरी (सं.) पूर्ववत्,
परीक्षाचा (सं.) पूर्ववत्,
परीणी (सं.) अंकुश, बैल चला. नेकी वहलकड़ी जिसमें नीचे कील लगी हो, अतिथि (स्त्री), सुईमे का डोरा ।
परीणो (सं.) पाहुना, मेहमान, अतिथि, अनजाना मनुष्य, अंकुश, आरदार डंडा ।
परीववुं (क्रि) सुईमें धागा डालना, धागे मे फूल या मालाके दाने अथवा गुरिये गूँथना, पिरोना, पोना ।
पर्णु (स) पत्ता, पत्र, पान, दल, पत्ता, पाती, पात, ताम्बूली दल ।
पर्म (सं.) परम ।
पर्यंक (सं.) खाट, पलका, पलङ्ग, सेज, शय्या, चार पाइ ।
पर्यवसान (सं.) सिरा, छोर, सीमा, अन्त, आखिर, परिणाम, पूर्ण । [दुश्मनी ।
पर्यवस्था (सं) रोक, बैर, द्वेष,
पर्या (सं.) नदी, नाला, छोटी नदी । [रवानगी, गमन ।
पर्याण (स) कूच, प्रस्थान, पयान,
पर्याप्ति (सं.) यथेष्ट, पूरा, तृप्ति, सन्तोष, प्राप्ति, संतुष्टि, काफी ।
पर्याय (सं) रीति, रस्ता, मार्ग, तरीका, युक्ति, उपाय, सिलसिला, क्रम प्राप्त वह शब्द जो समान अर्थ का बोधक हो, क्रम, आनुपूर्वी ।
पर्युसण (सं.) पचोसन, पजोसन पचूसन, जैनियोंका मतविशेष ।
पर्वणी (स.) पौर्णिमा, प्रतिपदा, पड़वा, पूनम ।
पल (सं.) क्षण, अत्यल्प काळ, घड़ी का साठवां अंश, निमेष, साठ विपल काल, घास, तृण, मास, पुल, सेतु, पुलिया ।
पलकवुं-कावुं (क्रि.) हँसना, खुशी होना, प्रसन्न होना, मुदित होना।
पलकारो (सं.) देखो पलक
पलको (सं.) चमका, दमका, प्रकाश, तेज ।
पलंगडी (सं.) छोटापलंग, छोटी-खाट, पीढ़ा, पलना, छोटा कोच ।
पलंगपोष (सं.) पलंग पर डालने का वस्त्र, पर्यङ्कवस्त्र, चद्दर ।
पलटवुं (क्रि.) उलटना, हेरफेर-करना, औंधा करना, चित्त बदलना, फरना, वचन भंग करना, पलोटना सुधारना ।

પલવટ (सं.) एक प्रकार का वस्त्र जिसे गुजराती भील और कुली पहिनते हैं, वस्त्र लपेटने के लिये दी हुई गठान ।

પલવટવું (क्रि.) बदलना, हेरफेर करना, लौट पलट करना, पलटना ।

પલવવું (क्रि.) रीझना, खुश होना प्रसन्न होना, आनन्दित होना ।

પલવાડ (सं.) आड़ बाड़, रोक, अटकाव ।

પલળવું (क्रि.) भीजना, तरहोना, गीला होना, पानीयुक्त होना, भीगना ।

પલાંખી (स.) अंकों का अनुक्रम पूर्वक गुणाकार, पहाड़ा, पट्टी ।

પલાંઠી (सं.) पर पर पर रखकर बैठक, पैर में आटी डाल कर बैठने की रीति ।

પલાંઠી વાળવી (क्रि.) पैर पर पैर रखकर बैठना, पैरों मे आटी डालकर बैठना । [विशेष ।

પલાંડુ (सं.) प्याज, कांदा, कंद

પલાણ (सं.) काठी, जीन, घोड़े पर चढ़ने के लिये डालने की गद्दी, खोगीर, आसन ।

પલાણવું કરવું (क्रि.) कूच करना घोड़े पर चढ़ कर प्रस्थान करना, लादना, काठी कसना, सवारी करना ।

પલાણો (सं.) छापने के टाइप को बराबर करने के लिये बढ़ का ठका टुकड़ा जिसे अक्षरोंपर रख कर ठेकते हैं ।

પલાવ (सं.) भात, मसाला, और मास के मिश्रण से पकाया हुआ भोजन पुलाव, मुसल्मानी भोजन, खाद्य पदार्थ । [जाति

પલાવટ (सं.) भीलों की एक

પલાશ (सं) किंशुक वृक्ष, टेसूका पेड़, खाखरा, छीला, वृक्ष विशेष, ढाक । [बीज ।

પલાશપાપડો (सं.) पलाश का

પલાળવું (क्रि.) गीला करना, नर करना, भिगोना, पानी से भिगोना, समझाना, अपने विचार दूसरे के दिल में जमाना, मोहित करना ।

પલિત (सं.) देखो પલીત, भूत, प्रेत, मैला, गंदा, दुष्ट, दुखदायी, वृद्ध, पिशाच, योनि विशेष, राक्षस ।

પલિતિ (सं.) गंदा, मैला ।

પલિતું-ત્તું (सं.) पतला, उम्दा टुकड़ा ।

પલિતો (सं.) बड़ी बत्ती, बड़ी बाती, मशाल, पटाखे या आतिशबाजी जलाने की सुलगती हुई बत्ती, रोटी का टुकडा, मोगी बत्ता।

પલીતો મુકવો (क्रि.) जगाना, प्रज्वलित करना, सुलगाना, तय्यार करना, भड़काना, उस्काना, उत्तेजना देना, सुरंग लगाना।

પલીત (सं.) भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस, योनिविशेष।

પલેવણુ (स.) जीव जंतुकी रक्षाके लिये वस्त्र।

પલોટવું (क्रि.) शिक्षादेना सिखाना, सिखाके तैयार करना, दाबना, दबाना (पैर)

પલ્લિ (सं.) छिपकली, बिसतुइया, बिसमरी, नवरात्रीके दिनोंमें दीपकों का समूह रखकर जिसके आसपास लोग गीत गाते हैं वह।

પલ્લું (सं.) तराजूके पलवे, तखड़ी के पलवे, विवाह के पूर्व वरकी ओर से कन्याको दीजाने वाली वस्तुएँ जेवर इ०, स्त्रीधन, जिसपर पुरुष का कोई अधिकार नहीं होता जबतकके स्त्रीजीवित रहती है।

પલ્લો (सं.) कपडेका छोर, आँचर, अम्चल, फासला, अंतर, दूरी, व्यवधान, आंगा, आंगिया।

પવઇ (सं.) क्लीब, नपुंसक, हिजड़ा, नामर्द, जनाना, पुसत्वहीन।

પવન (सं.) वायु, हवा, बतास, समीर, वायुके तीन प्रकार शीतळ मन्द और सुगन्ध।

પવનચડવું (क्रि.) उच्छृङ्खल विचारके होना, अविवेक पूर्वक व्यवहार करना।

પવનફુંકવો (क्रि.) बात फैलाना।

પવનભરાવો (क्रि.) गर्व होना, घमंडहोना, मिजाज होना, दर्प होना।

પવન લાગવો (क्रि.) अच्छी बुरी बात फलाना, गुणदोषलगना, सगतिका प्रभाव होना।

પવનમાં ઉડી જવું (क्रि.) व्यर्थ-जाना, निष्फळ होना, पार न पड़ना, मिथ्या होना, अलोप होना, खोजाना, बंदहोना।

પવનચક્કી (सं.) हवासे चलनेवाली चक्की, वायुद्वारा गमनशील यंत्र।

પવનચાલ (वि.) तेज, शीघ्रगति, द्रुत गति, तेजचाळ, पवनतुल्य-वेग।

પવનપાવડી (सं.) मन्त्रित खड़ाऊं जिनपर चढ़ने से पवनकी भांति-शीघ्र दौड़ने लगता है, पवन समान शीघ्र गति ।

પવનવાળું (वि) हवादार, वायुयुक्त, सस+ीर हवाई ।

પવનવેગી (वि.) पवनके समान वेगवाला, जल्दबाज, हवा जैसा वेगवान ।

પવાડવું (क्रि.) पिलाना, प्याना, जल इत्यादि तरल पदार्थ खिलाना।

પવાડી (सं.) ताख, आला, आलमारी वस्तु रखनेके लिय दीवार में किया हुवा छिद्र अथवा स्थान ।

પવાડો (सं) लावनी की चालकी कवितारचना जिसमें शूरवीर पुरुषोंका यश वर्णन होता है, वीर रस काव्य, निन्दा, आक्षेप, निन्दात्मक कविता, व्यर्थकी बकबक अपवाद, निन्दोपाख्यान ।

પવાલું (सं.) एक प्रकारका तांबा और पीतलके मिश्रणका गिलास जो पूजाके समय काम आता है, पंचपात्र, पानी पीनेका प्याला, एक प्रकारका माप, परिमाण विशेष ।

પવિત્રાબારસ (सं.) श्रावण सुदी द्वादशी, तिथिविशेष ठाकुरजी को पवित्रा चढ़ाने का दिन ।

પવિત્રી (सं.) कुश मुद्रिका, पैती, अंगूठी विशेष, दर्भो की अंगूठी, तर्पण आदि कर्म करते समय हाथ की अंगुलियों में पहिनने का छल्ला, कंठमें पहिनने का भूषण जिसपर "श्री नाथजी" लिखा हो,

પવિત્રું (सं) पवित्र सूत्र, वल्लभी संप्रदाय में रेशम का गुथा हुवा वह सूत्र जो पहिले ठाकुरजी को भेट कर बादमें स्वयम् धारण करते हैं ।

પશમ (सं.) ऊन, बाल, रुंआ, रोवां, रोम, मुलायम बाल, तिनका, तृण ।

પશમી (वि.) ऊनी बालयुक्त, रोमयुक्त, तृणयुक्त ।

પશમીના (सं.) ऊनी पौशाक, पहिननेके ऊनी वस्त्र ।

પશલી (सं.) हथेलीके गड्ढे में जितना समा सके, छल्ला, अंगूठी, मुद्रिका, वह भेट जो श्रावण मास में भाई की ओर से बहिनको दी जाती है ।

પશુપંખી (सं.) पशु और पक्षी, वे पशु जो तेजीसे चल सकते हों और उड़ भी सकते हों जैसे • शुतुर्मुर्ग।

પશુપલ (सं.) ढोर पालने वाला, ग्वाला, चरवाह, गडरिया, शिव, शंकर।

પશેમાન (सं.) पश्चात्तापयुक्त, व्याकुल, पछतावा करने वाला।

પશેમાની (सं.) पश्चात्ताप, पछतावा, व्याकुलता, परेशानी अनुशोचन।

પશ્ચાતકાળ (सं.) बादमे, समयोपरान्त, कालान्तर, पीछेका।

પશ્ચાતાપ (सं.) कर्मान्तर सन्ताप, पश्चात् शोक, अनुशोचन, पछतावा।

પશ્ચાતાપી (वि.) पछतावा करने वाला, कर के पछताने वाला।

પશ્ચિમ (सं.) अस्ताचल के समीप की दिशा, पछाह, प्रतीची, दिशा विशेष, सूर्यास्त की दिशा।

પશ્ચિમભણી (क्रि वि.) पश्चिम दिशा की ओर, पीठ पीछे।

પસતાગિયો (सं.) कुंजड़ा, शाकभाजी बेचने वाला, तरकारी बेचने वाला।

પસતાં (सं.) पिस्ता प्रसिद्ध मेवा। एक प्रकार का मेवा।

પસંદ (वि.) खुश, राजी, प्रसन्न, मान्य, स्वीकृत, चुना हुवा, इच्छित।

પસંદગી (सं.) अनुमत्, अनुमोदन, प्रशंसा, स्वीकृति।

પસંદ પડવું (क्रि.) स्वीकार होना, पसंद आना, ठीक होना, उचित होना।

પસર (सं.) वह स्थान जहा प्रातः ढोरों को चरने ले जाते हैं और ढार वहां चरते हैं। ढोरों का सुबह का चरना।

પસરવું (क्रि.) प्रसरित होना, फैलना विस्तृत होना, लंबा होना, बड़ा होना।

પસલી (सं.) देखो પશલી

પસવારવું (क्रि.) पपोलना, धीरे धीरे हाथ फेरना, पलोटना।

પસાય (सं.) प्रसाद, कृपा, द्रव्य, धन, दौलत, अनुकम्पा।

પસાયતું (सं.) नौकरी के बदले भरण पोषण के लिये दी हुई धर्मादा भूमि या गांव, इनाम में दी हुई भूमि।

પસાર (सं.) यहां से वहां और वहां से यहां व्यायाम के लिये चक्कर ।

પસાર (वि) पार उतराहुवा, परीक्षोत्तीर्ण, प्रविष्ट, दाखिल ।

પસારકરવું (क्रि) परीक्षा देना, व्यतीत करना, निर्गमन करना, विश्वासनकरना, कुछ न गिनना ।

પસારથવું (क्रि.) पासहोना, परीक्षामें उत्तीर्ण होना, दाखिल होना, भागजाना, मरजाना, लोपहोजाना ।

પસારવું (क्रि.) फैलाना, विस्तृत करना, बढाना, लम्बाकरना।

પસારો (सं. फैलाव, विस्तार, वृद्धि।

પસિયારૂ (सं.) कुलाव, कब्जा चूल, कील डालनेका नकूचा ।

પસ્તા (सं.) पिस्तानामक प्रसिद्ध मेवा ।

પસ્તાગિયો (सं.) फलबेचनेवाला कुंजडा, शाक तरकारी बेचनेवाला।

પસ્તાનું (सं) प्रस्थाना, मुहूर्त समय साधनार्थ अपने घरसे निकलकर कहीं अन्यत्र जा रहना, मुहूर्त के दिन डुपट्टा आंठा और जानेकी दिशामें किसीके यहां रख देना और जाते समय लेजाना ।

પસ્તાળ (सं.) ओरकी वृष्टि,

પસ્તાળપાડવી (क्रि.) किसी पर कोपमें उताऊ होजाना ।

પસ્તાવું (क्रि.) पछताना, पश्चात्तापकरना, अनुशोचन करना, अनुताप ।

પસ્તાવો (सं.) अनुशोचन, पश्चात्ताप, पछताना, शोच, खेद, अफसोस, कर्मान्तर सन्ताप, पश्चात् शोक ।

પસ્તી (सं.) रक्षा, दूसरी तरफ से लडने वाला, रद्दी कागज, सहायक।

પસ્તુ (सं. रक्षक, सहायक, पक्षलेने वाला, तरफदार, मिट्ठू ।

પહવે (क्रि.) वहा, तहा, उस जगह उधर । [की चराई ।

પહર (सं.) आधी रातमें ढोरों

પહાડજેવું-જેવડું (वि.) डलिडौलमें बडा, विस्तृत, पहाड़सा, जवान योद्धा, भारी,

પહાડી (सं.) छोटापहाड, डुंगरी, टेकडी, (वि.)पहाड़ सम्बन्धी, पार्वती, पर्वतका, बडा, विशाल, दीर्घ ।

પહાડીલોક (सं.) पर्वतवासी, पर्वतपर रहनेवाले, पहाडी देशके निवासी ।

પહાળવું (क्रि.) कोरा वस्त्र रंगने के लिये धोना, सफेद करना ।

પહુંઆ (सं.) देखो પૈઆ

પહાં-હીં (क्रि वि.) वहां, उधर तत्र, तहा, उस जगह ।

પહીં (सं) वह मिहमान जो दूसरे दिन ठहरे, दो दिन ठहरन वाला अतिथ ।

પહેરણ (स.) लम्बा नीचा ढीला गले मे पहिरने का वस्त्र, झगा, पहिरनेकीरीति ।

પહેરણું (स.) पहिरनेकी रीति पहिरने का, ओढने का ।

પહેરવુ (क्रि.) ओढना, पहिनना, डालना, धारण करना, वस्त्रादि पहिरना, आभूषण पहिरना।

પહેરવેશ (सं.) पहिरनेकी रीति, पहिराव, पहनाव, वेशभूषा, लिवास वस्त्र पहिरने का ढङ्ग, कपडा ।

પહેરામણી (सं.) स्त्री धन, विवाह पश्चात् कन्या के ससुर सास इत्यादि के लिये दी हुई भेट, पहरावनी, कपड़े का जोड़ जो विवाह में दिया जाता है ।

પહેરાવવું (क्रि.) पहिराना, उढाना सज्जित करना, श्रृंगार करना, वस्त्र सजना, वस्त्र भेट करना, गलेमें डालना, अपने लाभ के लिए दूसरेके गलेमें डालदेना ।

પહેરેગીર (सं.) चौकीदार, प्रहरी, पाहरू, रक्षक, रखवाला, गारद ।

પહેરે (सं.) चौकी, रक्षा, संभाल, सिपुर्द, निगाह, चौकसी, पहरा ।

પહેળ (सं.) आरंभ, शुरुआत, जो कुछ पहले पहिल आरंभ किया हो, प्रथम, प्रारंभ ।

પહેલ (वि.) पहिलेका, प्रथमका, आरंभ का, शुरुआतका, आदि का

પહેલવહેલું (क्रि.) तुरंत, प्रथम ही

પહેલવાન (सं.) लडाई में सब से आगे बढने वाला, बहादुर, वीर, शूर, भट, रणधीर, कुश्ती में प्रवीण, मल्ल । [भाषा ।

પહેલવી (सं) प्राचीन फारसी

પહેલા (वि) पहिले, पूर्व काल में प्राचीन काल में, आगे, इस से पहिले, पूर्व, आरंभ में शुरुआत में।

પહેલું (वि.) पहिला आरंभिक । शुरुआत का, बडा, मुख्य ।

પહેલાખોળાનું (वि.) सब से पहिले उत्पन्न बालक ।

પહેલે ધરથી (वि.) पहिले से, शुरू से ।

પહેલે પાટલે (क्रि.) आरंभमें, शुरूमें, पहिले पहिल, अव्वल।

પહોંચ (सं) समझशक्ति, पहुंचने की ताकत, अक्ल, ज्ञान, मति, गति, सामर्थ्य, पेसार, प्रवेश, पैठ, प्राप्ति सूचक पत्र रसीद बल, ताकत।

પહોંચવુ (क्रि.) प्राप्त होना, पहुँचजाना, चलाजाना, बढ़जाना, पूगना, पासआना, हाथमेंआना, मिलना, समझना।

પહોંચી (सं.) कलाई पर बाँधनेका चांदी अथवा सोनेका आभूषण, कङ्कण।

પહોંચેલુ (वि.) पहुंचाहुवा, पहुचवान पक्का, चतुर, प्रवीण, कुशल दक्ष।

પહોંચેલી બુદ્દી (वि.) जिसका युक्ति समझमें नही आवे, पहुंची माया, अति चतुर, बहुत होशियार मनुष्य। [कलाई।

પહોંચુ (सं.) पहुंचा, मणिबंध,

પહોંચો (सं.) पूर्ववत्।

પહોંચા કરડવા (क्रि.) अत्यन्त पश्चात्ताप करना, अनुताप करना, पछताना।

પહોર (सं.) प्रहर, रात दिनका ८ वां हिस्सा, आठघड़ी, तीनघंटे, काल परिमाण, समय विभाग।

પહોર (अ.) मस्त वा आनन्द पाये।

પહોરણીતવા (क्रि.) अधिक समय लगना, सुबह बीतजाना।

પહોરેગરી (सं) चौकीदारी, चौकसी, रखवाली, हिफाजत।

પહોરદાર (सं.) चौकीदार, प्रहरी सन्तरी, रक्षक पाहरु।

પહોરો (सं.) पहरा, रक्षा, चौकी।

પહોળાઈ (सं.) देखो પોળાઈ

પહોળુ (सं.) देखो પોળુ

પળ (सं.) घडीका साठवां भाग, पल, क्षण, एकघंटेका २४ वां भाग, ढाई मिनिटका काल।

પળકવું (क्रि.) निगलना, भक्षण करना, एक बार मिलजानेसे दुबारा खानेकी इच्छा करना, हड़पना।

પળવારમાં (क्रि. वि.) तुरंत, पलमे, क्षणभरमें, फौरन, तत्क्षण।

પળવુ (क्रि.) आना, आपना, कूचकरना, पयानकरना, बरदाश्त होना, पोषणहोना, (वचन) पालना, पोषण करना, बाल सफेद होना, बुढापा आना, प्रकटहोना, मिटजाना।

પળશી (सं.) खुशामद, लल्लो-पत्तो, काम निकालने के लिये सेवा।

પલાયન (सं.) देखो પલાયન

પલોટવું (क्रि.) पैरखवाना, पैर पलोटना, सेवाकरना, चाकरी करना, बेहद खुशामद करना ।

પળા (सं) चाकरी, नौकरी, सेवा खुशामद, गुलामी, अड़चन अथवा झंझट पैदा करने वाला कार्य ।

પળીયાં (सं.) पकेहुए बाल, सफेद बाल भूरेबाल, वृद्धावस्था ।

પળી (सं.) घी तेल इत्यादि निकालनेकी पली, चम्मच, कुड़छी। एक प्रकारका चम्मच, तरल पदार्थ निकालनेकी कर्छी, सफेद बाल ।

પળો (सं.) बड़ी पली, बडा चम्मच, बड़ी कर्छी, बड़ा चमचा।

પળોટવું (क्रि.) देखो પલોટવું

પાંઉ (सं.) रोटी, (इंग्रेजी रीतिसे पकाई हुई)

પાક (सं.) ताजा तुरंत के भूने हुए दाने अथवा अन्न ।

પાંકડ (वि.) ऊसर, अनुपजाऊ, वह भूमि जिसमें अन्नादि न उगते हों ।

પાક-યું (वि.) नियत किया हुवा, मनसूबा बांधा हुवा, इरादा किया हुवा ।

પાંકવું (क्रि.) इच्छा करना, विचारना, पहुंचना, इरादा करना ।

પાંકે (उप.) बिना, बगैर, अलावा, अतिरिक्त, रहित, बिन, छोड़ कर,

પાંકયું (वि.) इच्छित, चाहा हुवा विचारा हुवा ।

પાખ (स.) पक्ष, पंख, पर, डैना, उड़नेका साधन, छप्पर के किनारे किनारे का भाग, पंखा, व्यजन, बीजना ।

પાંખમાં ઘાલવું-લેવું (क्रि.) अपने हाथ मे रखना, अपनी शरण रखना, अपने आश्रय रखना, हिम्मत बंधाना ।

પાખમાં ભરાવું (क्रि.) आश्रय में जाना, शरण में जाना ।

પાંખો આવવી-ફુટવી (क्रि.) सामर्थ्य से विशेष पराक्रम करना, पुष्ट उम्र का होना, ब्रह्मलोक में उड़कर जाना ।

પાંખો કાપી નાખવી (क्रि.) बल कम कर देना, निराश्रय कर देना, शक्तिहीन करना, सत्ता हरण करना, चल न सके ऐसा निर्बल कर देना ।

પાખો વીંઝવી (क्रि.) यथाशक्ति सहायता करना, संकट में से छूटने के लिये प्रयत्न करना ।

પાંખડી (सं.) विकसित कुसुम के अवयव, पंखुरी, फूलकी पखरी, पुष्प भेद, छोटा सत्कार।

પાંખડું (सं.) शाखा, डाल डाली टहनी, वृक्ष का अवयव।

પાખરૂં (सं.) कवच, युद्ध में रक्षार्थ बाजू, वर्म, झिलम, सन्नाह, बखतर।

પાંખાળું (वि.) सपक्ष, पांख वाला उड़ सकने वाला।

પાંખિયું (सं.) पक्ष, तड़, डाली, शाखा, टहनी।

પાંખી (उप.) बिना, बगैर, वह दिन जो कि छुट्टी के बाद आवे।

પાંખું (सं) शाखा, डाली, डगाल, शाखा, टहनी, डारी, डाल।

પાંખોડું (सं.) स्कंध से कोहनीतक हाथ का भाग, कंधे से कुहनीतक।

પાંગત (सं.) पलंगका वह भाग जिधर पैर करके सोया जाता है। बिछौनों में सोनेवाले के जिस ओर पग होते है वह भाग।

પાંગરણું (सं.) छोटी धोती, पंचा, धोती का टुकड़ा, पोतड़ा, चोली।

પાંગરવું (क्रि.) खिलना, विकास होना, नये पत्ते आना, अंकुर आना, पुष्प का विकसित होना, कली का खुलना।

પાંગરો (सं.) मोफन के दोनों ओर लटकती हुई डोर, बालक को झुलाने अथवा झुलाने के लिये बांधी हुई डोर, पलंग की डोरी, तराजू के पल्लों की एकत्रित के सब डोरियां जो डंडी में पिरोई जाती हैं।

પાંગળાગાડી (सं.) बालकोंको पैर चलना सिखानेकी गाड़ी, ठेला गाड़ी चल न सकने वालोंकी गाड़ी।

પાંગળું (वि.) पंगु, पंगुला, लूला, लंगड़ा पांगा, रेंगनेवाला, स्थगित।

પાંગા (सं.) लूला पुरुष, पंगु।

પાંગુ (सं.) पूर्ववत्, ढोर (संकेतार्थ)

પાગોઠું (सं.) स्कंध, कांधा, कन्धा, कोहनीसे कंधे तकका भाग।

પાંચશેરી કુટવી (क्रि.) माथा कूटना, माथा फोड़ करना।

પાંચે આંગળીએ પુજવું (क्रि.) बड़ी श्रद्धा भक्तिसे पूजन करना।

પાંચત્યાં પરમેશ્વર (सं.) जहां पंच वहां परमेश्वर, अवाजए खल्क नक्कारए खुदा।

પાંચની પાંચ બુદ્ધી (सं.) जितने मनुष्य उतनीही बुद्धि, पृथक पृथक, विचार, अपनी अपनी डफली अपना अपना राग।

પાંચડો (सं०) पांचका अंक, ५,

પાંચમ-ચેમ (सं.) पंचमी, तिथि विशेष, शुक्ल और कृष्ण पक्षकी पांचवीं तिथि, पाचें ।

પાંચું (सं.) पांचका एक दो तीन इत्यादिसे गुणा, पांचका पहाड़ा ।

પાંચેમ (सं.) देखो પાંચમ ।

પાંચેઘુગડા વસ્ત્ર (स) पाचकपडे, पूरी पौशाक, शिरत्राण, अंगत्राण, पादत्राण, धोती और दुपट्टा ।

પાંછડા (सं.) घाव, व्रण, चोट, जख्म ।

પાંજણુ-ણી (सं.) लत, आदत अभ्यास, व्यसन, ताने में लगाने की लेही, कपडे में लगाने की माडी, माडी लगाने का साचा ।

પાંજર (सं.) गावकी सीमा, नगर प्राचीर, नगर कोट, शहर पनाह ।

પાંજરાપોળ (स.) अशक्त जानवरों को रखने का धर्मस्थान, पिंजरा पोळ ।

પાંજરી (सं.) गाड़ी में भरा हुवा माल निकल न पड़े इस वास्ते द्वार के रूप में लगाया हुवा काठ का तख्ता या टट्टी ।

પાંજરૂં (सं.) पिंजरा, पले हुए पक्षी रखने का घर, बलवान पशु जिसमें बन्द रखे जाते हों, अदालत में अपराधी को खड़ा करने का पिंजरा, अस्थि समूह, शरीर का पंजर, ठठरी ।

પાંછ (सं.) टेव, लत आदत, व्यसन ।

પાંત (सं.) पंक्ति, पांति, कतार, पंगत, देखो પાંગત

પાંતરી (सं.) ज्वार, बाजरा के पौधों का लम्बा पत्ता, छोटे पत्ते ।

પાંતરી-સ (सं.) संख्या विशेष, पैंतीस, तीस और पाच ३५ ।

પાંતી (स.) हिस्सा, भाग बटवार, शेअर, विभाग, किसी पूंजी के समान भागो में से एक, बाजू, पक्ष, गणित में एक प्रकार का हिसाब, रीति, दस्तूर ।

પાંતીદાર (सं.) साझीदार, बँटैती, बटाऊ, हिस्सेदार, शेअर होल्डर ।

પાંતીના હિસાબ (सं.) गणित में एक प्रकार का हिसाब ।

પાંદડી (सं.) फूलकी पखुरी, पत्ता, स्त्रियों के पहिनने का कान का जेवर ।

પાંદડું (सं) पत्ता, पर्ण, पत्र, पाना, पन्ना, पृष्ट, दल ।

પાંદડું ફરવું (क्रि.) भाग्योदय होना, भाग्य पलटना, सुख प्राप्ति होना, अटकाव रोक इत्यादि दूर होना ।

પાંદડે પાણી પાવું (क्रि.) बहुत दुःख देना, हैरान करना, संतापित करना, चिढ़ाना, पीड़ा देना ।

પાંપણ (सं.) आँखके पलक के ऊपर के बाल, मांफन, बांफन ।

પાંપળું (सं.) नामर्द, क्लीब, नपुंसक जनाना ।

પાંસરૂં (वि.) सीधा, ठीक, बे मुड़ा, सयाना, होशियार, लायक, योग्य, नियम पूर्वक, सच्चा सीधा ।

પાંસળી-ળું (सं.) पाँसु, पसलो, पॉजर की हड्डी ।

પાંસુ (सं.) धूल रेणु, रेणुका, रज ।

પાંસુલ (वि.) गंदा, अपवित्र, धूलि धूसरित, मैला, अपमान ।

પાંસુલા (सं.) लम्पट स्त्री, व्यभिचारिणी, बदकार औरत, छिनाल ।

પાંસેઠ (वि.) पैंसठ, ६५. साठ और पांच, संख्या विशेष ।

પા (वि.) चतुर्थांश, पाव, ¼ ।

પાઇ (सं.) पाई, पैसे का तीसरा भाग, आने का बारहवाँ भाग, अड़धी (बंबईमें) सुपारी, पूंगी-फल ।

પાઉંચો (सं.) तला, पाया, पग ।

પાઊં (सं.) एक प्रकार की बड़ी रोटी, डबल रोटी, योरोपियनों की खाने की रोटी ।

પાક (सं.) बनाई हुई रसाई, पैदा यश, निपज, उपज, समुद्र में मोतियों की उत्पत्ति, मसाला इत्यादि डाल कर बनाया हुवा पदार्थ, शकर की चाशनी में बनाया हुवा पदार्थ, खीर, घास फूस अथ आदि की गर्मी से फलों का पक्क होना, मैले पनसे जीवों की पैदा, फोड़ा फुन्सी का पकाव । (वि.) पवित्र, शुद्ध, ईमानदार, सच्चा, श्रेष्ठ ।

પાકચટ (वि.) अध पका, कम पका हुवा, अर्द्ध पक्व, गद्दर ।

પાકટ (वि.) पका हुवा (फल) पक्का, तय्यार, पूर्ण, पूरा ।

પાકડું-ગડું (सं.) पक्ष, तर्फ ओर ।

પાકણીદેહ (सं.) वह शरीर, जिसकी प्रकृति जरा चोट अथवा व्रणादि के हो जानेसे पक आवे ।

પાકદોસ્તી (सं.) पवित्र प्रेम, शुद्ध प्रेम, सत्य प्रेम, दिली प्रेम ।

પાકમહોબ્બત (सं.) जिसमें खराब इच्छा नहो ऐसा प्रेम (स्त्री पुरुष में) धार्मिक प्रेम, शुद्ध अंतःकरण का स्नेह ।

પાકવું (क्रि.) पकना, उपजना अन्न तयार होना, फल पकना, पोधा हो कर मीठा हो जाना, फोड़ा फुन्सी पकना, बहुत व्याकुल होना, दुःख होना, गरमी होना, निश्चित समय का आपहुँचना, तयार होना, पैदा होना, बुढापे मे बालों का पकना, हारकर आधीन होना।

પાખી (वि.) शुद्धता, पवित्रता, त्यौहार का दिन, जिसदिन बाजार का कारवार बंध रहे, बदी, प्रतिबंध, रोक। छुरा, अस्तुरा, (क्रि वि.) बिना, बगैर।

પાખી મુદત (सं.) नियत समय, मुकर्रेरा वक्त, मितकाल, परिमित सीमा।

પાકું (वि.) परिपक्व, पकाहुवा, पूर्ण, तय्यार, सिद्ध, पुख्ता, दृढ, पुष्ट, टिकाऊ, चालू, मजबूत, होशियार, काबिल, निपुण, अनुभवी, वाकिफ, वृद्धावस्थाद्वारा वर्धादृद्ध।

પાકે ઘડે કાંઠા ચઢાવવા (क्रि.) मिथ्या प्रयत्न करना, समय चूककर प्रयत्न करना।

પાકો ગુરૂ (वि.) उस्ताद, सीधा समझाकर काम निकाल लेने वाला।

પાકો મારવાડી (वि.) लुच्चा मारवाड़ी, ठग, वंचक, छली।

પાખ (सं.) पक्ष, तरफ, बाजू, दिशा।

પાખર (सं.) बिछौनीपर बिछाने की फूलदार चादर, हाथी अथवा घोड़ों पर डालने की सोने चांदी के फूलों की बनी हुई झूल, हाथी और घोड़ो पर डालने का लोहमय बख़्तर या कवच। [आति।

પાખરિયા (सं.) घोड़े की एक

પાખલ (क्रि. वि.) पीछे, पास, नज़दीक, समीप, निकट, अदूर।

પાખી-ખે (उप०) देखो પાકી।

પાખાણ (सं.) पत्थर, पाहन, उपल। [समीप।

પાખું (वि.) पास, निकट,

પાખે (अ०) बिना, बगैर, सिवाय।

પાગ (सं.) पग, पैर, पद, पाद, चरण।

પાગડું (सं.) रकाब, पावड़ा, घोड़े आदि पर सवारी के समय पैर रखनेका, सीढी, देहली।

પાગડું (सं.) पक्ष, पद, तरफदारी, रकाब, पावड़ा।

પાગર (સં.) हवा में बह जाने से जहाज को बचाने के लिये किनारे पर से रस्सीद्वारा खींचना ।

પાગરણ (सं) बिछौना, बिछाने का सामान, शोभा, अलंकार, शृंगार ।

પાગલદાણા (सं.) पैर में पहिरने का चांदी का एक प्रकार का जेवर।

પાગલાગણું (सं.) पदस्पर्श, पैर छूना, प्रणाम, नमस्कार, पैर छूने के बाद बहू की ओर से अपने से वयोवृद्धाको दी हुई भेट ।

પાગા (सं.) अश्वसेना, फौज के घोड़ों के बांधने का तबेला, अस्तबल ।

પાગીઆ (सं) परामर्शदाता, सलाहकार, मदद देने वाला, तरफदारी करनेवाला, पक्षग्राही, सहायक, उपदेशक ।

પાઘ-ડી (सं.) उष्णीष, शिरत्राण, फेंटा, साफा, सिरके बांधनेका लंबा वस्त्र ।

પાઘડી ઉતારવી (क्रि.) आजिजी करना, मतलब सिद्धकरनेके लिये नम्रता प्रदर्शित करना, प्रार्थना करना, देनेकी सी सूरत बनाकर प्रार्थना करना ।

પાઘડી ફુલાવવી (क्रि.) कीर्ति खोना, इज्जत खोना, ठगाना

પાઘડી નીચી કરવી (क्रि.) कलंकित करना, बदनाम करना ।

પાઘડી ફેરવવી (क्रि.) दिवाला निकालना लियाहुआ द्रव्य फिर न देना ।

પાઘડી બંધાવવી (क्रि) पगड़ी बंधाना, इनाम देना, सत्कार करना ।

પાઘડી મૂકવી (क्रि.) चूकाहुआ चाटना, दिवाला खोलना ।

પાઘડી બળ્યો (सं.) गाली प्रायः स्त्रियां पुरुषको यह गाली देती है।

પાઘડી રગદોળી નાંખવી (क्रि.) इज्जत ले डालना, अपमान कर देना ।

પાઘડી લેવી (क्रि.) हराना, ठगना, इज्जत लेना, कान काटना, निर्बल करना ।

પાઘડી સંભાળવી (क्रि.) खूब सावधान रहना, संभलकर चलना।

પાઘડી બંધણી (सं.) सतो पुरुष, इज्जतदार आदमी, भला मानस ।

પાઘડું (सं.) बड़ी पगड़ी, जल्दी जल्दी में लपेटीहुई पगड़ी ।

પાછડા (सं.) देखो પાછવાડ

પાછડાઉ (सं.) देखो પાછવાડી

પાછટવું (क्रि.) पछीटना, पछाड़ना, देमारना, पटक मारना ।

પાછલી રાત (सं) अर्धरात्रि पश्चात्, पिछली रात, रातके दो बजे बाद ।

પાછલું (वि.) पीछेका, बादका, अंतका, गत, भूत, पिछला, अंतिम, पृष्ठका, पीठका ।

પાછલી બારઘડી (सं.) अंतिम-दशा, अंतावस्था, पीछेकी चार घड़ी ।

પાછલો પહોર (सं.) पिछला प्रहर, दोपहरी बाद, मध्यान्हान्तर।

પાછળ (अप.) बादमें, उपरान्त, पीछे, अनन्तर, पश्चात् ।

પાછળ મુકવું (क्रि.) अंधेराकरना, आगे निकलना, बढजाना, पीछे छोड़ना, चमकमें बढकर होना ।

પાછળ હટવું (क्रि.) पीछे गिरना, पीछे हटना, पीछे खिंचना, पीठ देना ।

પાછું (क्रि. वि.) फिरसे, पुनः, दुबारा, जिधरसे आया हो उस ओर, पिछाड़ी, पृष्टे, पीछे ।

પાછાવવું (क्रि.) मरजाना, मृत्यु, होना, मिटना, नाशहोना ।

પાછા વળવું (क्रि.) पूर्ववत्

પાછી ધરતી (सं.) काठियावाड़, (इसलिये कहते हैं कि यह भाग समुद्रकी तरफ गया है)

પાછી પાની કરવી-કાઢવી (क्रि.) पीछे हटना, वापिस लौटना, हारजाना ।

પાછું નાખવું (क्रि.) उलटी करना, वमन करना, कय करना।

પાછું વળવું (क्रि.) बिगड़जाना, उतरजाना, स्वादरहित होजाना ।

પાછું વાળીને જોવું (क्रि.) आगे पीछे की सोचना, भविष्य का विचार करना, संकोच होना, दीर्घ दृष्टि से देखना ।

પાછોટિયું (सं.) पहिरे हुए कपड़े मे पीछे का जेब, पीछे का खीसा ।

પાછોતરું (वि.) पीछे का, बाद का, देर का, पछेता, ऋतु उपरान्त

પાજ (सं.) घाट, बांध, पुश्ता, पुल, सेतु, एक प्रकार का चीनी रेशमी वस्त्र ।

પાજણી (सं.) देखो પાંજણી

પાજીવનું-વવાળું (वि.) कंजूस अति कृपण, मक्खी चूस, सूम ।

પાટ (સં) पटा, जमीनसे ऊंचा बैठने का तख्ते का बना हुवा, पाटा, पट्टा, गादी, आसन, बैठक, तख्त, राज्यासन, बख, पट, अरज, चौड़ाई, पना, समूचा स्थान।

પાટડી (સં) चौखूंटा काठ का टुकड़ा, पट्टी, पटरी, देखो પાટલી

પાટડો (સં.) मोटा तख्ता, पट्टा, पाट, धरण, शहतीर, लट्ठा।

પાટણી (સં.) एक प्रकार की जाति।

પાટનગર (સં.) मुख्यशहर, राजधानी।

પાટલ (સ पाटली पुष्प, गुलाबका फूल, पुष्प विशेष, (वि.) गुलाबी रंग, श्वेत और लाल रंग का मिश्रण।

પાટલાઘો (સં.) जन्तु विशेष, पाटगो, गोहरेकी जातिका बड़ा जन्तु।

પાટલા સાસુ (સં.) साली, बड़ी साली, स्त्री (पत्नी) की बहिन।

પાટલી (સં.) बैठनेकी पटिया, पट्टा, पाटा, पटा, गाड़ीवानके बैठनेका तख्ता स्टूल,तिपाई, बेंच, एक प्रकारकी चूड़ियां, पटली, (धोती या वस्त्रकी) एक प्रकारका वृक्ष।

પાટલો (સં.) पृथ्वी से पांच छः अंगुल ऊंचा काष्ट निर्मित आसन।

પાટલો ફાડવો (ક્રિ.) नुकसान करना परन्तु पड़ना न लिखना।

પાટલો ભોડવો (ક્રિ.) चैन पड़ना, आराम होना, समाना।

પાટલે રહ્યો (ક્રિ.) काम पूरा पड़ना, कामहोना, काम बनाना,

પાટવી કુંવર (સં.) राज्यका उत्तराधिकारी, राजकुमार, युवराज, राजाका बड़ा लड़का, भावी राजा।

પાટલાં (સં.) गलेमें पहिननेका स्त्रियों के लिये स्वर्णाभूषण।

પાટિયું (સં.) लकड़ी का तख्ता, काठ का पटिया, पाठशाला का काला तख्ता, बोर्ड, ब्लैक बोर्ड।

પાટીઆં દેવાવાં (ક્રિ.) बैठजाना, भारी नुकसान होना, दुर्दशा में होना दिवाला निकालना, भाग पड़ना, काम रोकना।

પાટિયાં ભાંગવાં (ક્રિ.) खा पी कर जूठन निकाल कर निश्चिन्त होना।

પાટિયાં રંગાઇ જવાં (ક્રિ.) बहुत नुकसान में पड़जाना।

પાટિયું પાણી દેવું (क्रि.) काम बन्द करना, मामपड़ना।

પાટિયો (सं) तपेली की सूरत का मिट्टी का पात्र जिस में शाकभाजी इत्यादि बनाई जाती है, चौड़े मुंह का मिट्टी का पात्र, एक प्रकार का वार।

પાટી (सं.) चार पाई की पाटी, पट्टी, स्लेट, लिखने की काठ की पटिया, तख्ती, फौज के मनुष्यों का झुंड, नाड़ा, फीता, कुमार की डलिया।

પાટીવાળવી (क्रि,) बिगाड़ना, बे काम करना, धूलधानी करना।

પાટીપર ધૂળ નાંખવી (क्रि.) पढ़ना, विद्यारंभ करना।

પાટીદાર (सं) पटेल, बपौती, (मौरूसी) कृषक, पातीदार।

પાટુ (सं.) लात, ठोकर, पैर उठाकर मारना।

પાટુ મારવી (क्रि.) ठोकर मारना, लात मारना, किक देना।

પાટુડી (सं) एक प्रकार का भोजन, घी, तेल भरने का छोटा बरतन।

પાટુડું (सं.) पूर्ववत्।

પાટેડો (सं.) पूर्ववत्।

પાટો (पुं.) पट्टा, फीता, लोहे का लम्बा चपटा टुकड़ा, पहियों पर चढ़ाने का लोहे का धवा, कपड़े की पट्टी, पांधि, प्रकृति।

પાટો ગોઠવો (क्रि.) स्वभाव मिलता हुवा होना, बनना, मेल मिलना।

પાટો જામવો (क्रि.) रीति पड़ना रिवाज़ होना, चलन होना।

પાટોડી (सं.) एक प्रकार का भोजन, चने के आटे को मठे में उबालकर गाढा कर ठंडा कर के टुकड़े टुकड़े किया हुवा पदार्थ, पतोड़, पितोड़।

પાટોપાટ (क्रि. वि.) एक छोर से दूसरे छोर तक, मुकाम से मुकाम, एक दूसरे के सम्बन्ध में चला हुवा।

પાટોપાટ સળગવું (क्रि.) एक दूसरे के विषय में लड़ाई छिड़ना, आगलगाना।

પાઠે કરવું-રાખવું (क्रि.) कंठस्थ याद कर रखना, बिना पढ़े बतादेना। [करना।

પાડવવું (क्रि.) भेजना, रवाना,

પાઠી (सं.) जिसे पाठ कंठस्थ हो, जिसने किसी विद्या का अभ्यास किया हो, पाठ करने वाला, पढ़ने वाला ।

પાઠું (स.) कूप खोदते समय रस्सियों के द्वारा कसी हुई मिट्टी निकालने की टोकरी, पीठ पर अथवा शरीर के उस भाग पर जो खुद को दिखाई नहीं देता हो वहा पैदा हुआ फोड़ा इत्यादि दर्द ।

પાઠે કરવું (क्रि.) जबानी याद करना, कंठस्थ स्मरण करना, स्मरण रखना ।

પાડ (स) आभार, उपकार, अहसान, दया, अनुकम्पा ।

પાડ કરવો (क्रि.) अपने किये उपकार को प्रदर्शित करना ।

પાડ રાખવો (क्रि.) उपकार रखना, अहसान रखना, ऋणी बनाना ।

પાડ ચઢવો (क्रि.) अहसान होना ।

પાડ માનવો (क्रि.) उपकार मानना, आभार मानना, अहसान मानना ।

પાડ પડોશ (सं.) अड़ोस पड़ोस, घर के पास का अथवा थोड़ी दूर का निवास, निकटवर्ती निवास ।

પાડ વાળવો (क्रि.) उपकार के बदले उपकार करना ।

પાડવું (क्रि.) पटकना, गिराने देना, पृथ्वीपर पटकना, हराना सूराख बनाना । ખાતર પાડવું दीवार में रस्ता बना कर चोरी करना, રસ્તો પાડવો (क्रि.) नया रास्ता निकालना, ધાડ પાડવી (क्रि.) किसी गांव पर आक्रमण कर लूटना । સમજ પાડવી (क्रि.) समझाना, ભાવ પાડવો (क्रि.) भाव कम करना, दर ठहराना, ના પાડવો (क्रि.) इन्कार करना ।

પાડસી (स.) मिथ्या प्रशंसा, झूठी तारीफ ।

પાડા બાદ (सं.) बैर, शत्रुता, अंटस, कसर, बदला, प्रतिहिंसा ,

પાડા પડોસ (स.) देखो પાડપડોસ

પાડીલું (वि.) आभारी, ऋणी, उपकृत कृतज्ञ, अहसान मंद ।

પાડુ (सं.) भैंसका बच्चा, पाड़ा ।

પાડુવા (वि.) निर्बल, कमजोर, अशक्त, दुर्बल, दुष्ट, नीच, बुरा ।

પાડો (सं.) भैंसा, नर भैंस, मोहल्ला, पड़ाव, बड़े मकान, अंकका प्रकार सम्बन्धी एक हद का नाम, रूढ़ि, सम्प्रदाय, वास, मोहल्ली, मोहल्ला, मोहाल, मार ।

પાઢેમુઢે એવું (वि.) अनघड़, मूर्ख, शठ।

પાણ (सं.) पावके संकेतार्थ खड़ी लकीर, ०।, पत्थर, पाहन, हाथ, खेतमें पानी पिलाना, पाणि, हस्त।

પાણકો (सं.) पानी पिलाने वाला,

પાણકોર (सं.) मोटा कपड़ा, खुरदरा वस्त्र, रेखाके समान कपड़ा।

પાણતિ (सं) दूरसे आये हुए पानीको खेतमें देनेवाला।

પાણિયું (वि) जिसमें पानी हो, गीला, पानीवाला, रजा, छुट्टी, निकाला, डिसमिस।

પાણીયું આપવું (क्रि.) छुट्टीदेना, इज़ाज़तदेना, बिदा करना।

પાણિયું મળવું (क्रि.) छुट्टी मिलना घर बठना, बिदागी मिलना।

પાણીની (सं.) व्याकरण शास्त्र के सूत्रों के प्रणेता एक ऋषि।

પાણિયારૂં (सं.) पानीके बर्तन रखनेका स्थान।

પાણિયારાનો મુનશી (सं.) वह मनुष्य जोकि घरमें बैठकर तो लम्ब चौड़ी बातें मारे और बाहिर जाकर बोल न सके।

પાણી (सं.) जल, पानी, तोप, उदक, पांचतत्वोंमेंसे एक, आब, एक प्रकारका रंग, स्वाद, गन्धरहित कुदरती पदार्थ, शौर्य, दम, टेक आबरू, स्वर्ण चांदी इ० का रस, धार, बाढ, (हथियारोंकी) वीर्य, रेत, शुक्र, धातु, ओज।

પાણી કરવું (क्रि.) खोना, नाश करना, बर्बाद करना, खाली करना

પાણી ચઢાવવું (क्रि) दम्पट्टी देना, झांसादेना, उस्काना, उत्तेजनदेना,

પાણી ચઢવું (क्रि.) क्रोध चढ़ना, वीरता चढ़ना, बढ़ना।

પાણીછલ્લું આપવું (क्रि.) पानीदार कच्चा नारियल देना, बिदा करना, छुट्टी देना, निकाल देना।

પાણીછલ્લું કરી નાખવું (क्रि) मान भंग करना, शर्मिन्दा करना।

પાણી છાટવું (क्रि.) क्रोध वगैरः शांत करना, ठंडा करना।

પાણી છુટવું (क्रि.) किसीको कोई वस्तु खाते देखकर मुहंसे लार टपकना, खानेकी अतिशय इच्छा होना, कमजोर होजानेसे पसीना छूटना।

પાણી જવું (क्रि.) पानी भरने जाना, टेक जाना, आबरू जाना, शोभा जाना।

પાણી જોઈ લેવું (क्रि.) सामर्थ्य होने देखकर उस विषयमें हलका विचार करना, बल देख लेना ।

પાણી કરવું (क्रि.) नर्म करना, मुलायम करना, पसीना आना (घोड़ेको) बहुत प्यासे होना।

પાણી પાણી થઈ જવું (क्रि.)परिश्रमसे अधिक पसीना छूटना, अधिकारमें होजाना, नरम होजाना

પાણી પાય એટલે પીવું (क्रि.) कोई कहे उतनाही करना, किसीके समझाये अनुसार करना अधिक नहीं ।

પાણી પાના જવું (क्रि) किसी क पीछे उसकी सेवा करने के लिये मर जाना ।

પાણી પાવું (क्रि.) एक धातु पर रंग चढाना । धार करने के लिये लोहको गरम करके पानी में डुबोना, पानी चढ़ाना, उस्काना, पेड़ों में पानी देना ।

પાણી ફરવુ–ફરી વળવું (क्रि.) बरबाद जाना, उपयोगके अयोग्य होना, नुकसान होना, धूल होना।

પાણી ફેરવવું (क्रि) रद्द करना, धूल में मिलाना, मिट्टी में मिलाना।

પાણી ફેર કરવુ (क्रि.) जल वायु बदलना, आब हवा बदलना ।

પાણી બાળવું (क्रि.) जुल्म करना, औजलाना, खूब उबालना ।

પાણી ભરવું (क्रि.) तुच्छ दशा में होना, शर्मिन्दा होना, व्याकुल होना ।

પાણી ભરાઈ જવાં (क्रि.) आयु समय निकट आना, अंत आना ।

પાણી ભરાવવું (क्रि) हलका करना हराना, थकाना, नर्म करना

પાણી ભરવું (क्रि.) शान्त होना, पतिव्रत धर्म खोना ।

પાણી મૂકવું (क्रि.) किसी काम करने की प्रतिज्ञा लेना, संकल्प करना, किसी बात का प्रण करना।

પાણી લાગવું (क्रि.) कहीं का पाणी पी कर रोगी होना ।

પાણી લેવું (क्रि.) किसी की इज्जत लेना । [यत्न करना ।

પાણી વલોવવું (क्रि.) मिथ्या

પાણીને મૂલે (क्रि. वि.) सस्ते भाव, पानी के मोल, बिलकुल सस्ते दाम पर ।

પાણીથી પાતળો કરી નાંખવું (क्रि.) बिलकुल हलका करना, मान भंग करना,धमकी द्वारा शर्मिंदा करना ।

પાણીથી પાતળું થવું (क्रि.) बहुतही बे शरम होना ।

પાણીના રેલાની પેઠે (क्रि. वि.) जल्दी, तुरन्त, फौरन थोड़ी देर में ।

પાણીને પરપોટો (सं.) पानी का बबूला, पानी का बुदबुदा, क्षणिक,

પાણીમાં ચણો ઓગળે છે (कि.) दिन प्रतिदिन मोटा होता है फूलता है ।

પાણીમાં જવું (क्रि.) बरबाद जाना, छूट पड़ना, निष्फल होना, मिथ्या जाना ।

પાણીમા તરવું (क्रि.) टेक मे रहना, बात रखना ।

પાણીમાં પડવું (क्रि.) पाना में पड़ना, खुल जाना, छूट जाना ।

પાણીમાં બોળવું (कि.) नुकसान करना, खराब करना, बेकाम करना, व्यर्थ जाने देना, गमाना ।

પાણીમાં મૂઠિયો ભરવી (क्रि) मिथ्या प्रयास करना, व्यर्थ कोशिश करना, फुजूल मिहनत करना ।

પાણીછાણી (सं.) पानी भरने का घर का दूसरा कामधन्दा ।

પાણીપથો (सं.) शीघ्रग,मी घोड़ा तेज घोड़ा, द्रुत गामी अश्व।

પાણો (सं). पत्थर, पाहन, पाषाण, उपल शिला ।

પાંડુ (सं.) अधिक पीला और कुछ स्वेत रंग, शुक्ल और पीत मिश्रित वर्ण, रोग विशेष, कुरुवं-शीय एक राजा ।

પાતર (सं.) वेश्या, गणिका, वारांगना, पतुरिया, छिनाल, नाचनेवाली स्त्री, छोटा पर्वत, किरण, रश्मि ।

પાતરવડિયાં (सं.) एक प्रकारके पत्ते, पत्तोंपर बेसन लपेटकर बनाया हुवा खानेका पदार्थ, पकोड़ी, फलेरी ।

પાતરાં (सं.) पत्ते, पत्र, पर्ण ।

પાતરાં પાડવો (कि.) खुद मेह-नत करना. स्वयम् परिश्रम करना ।

પાતરી (सं.) फूलोंकी छोटी पुड़िया, फूलोंका दोना, पुष्प पत्र । [पर्ण।

પાતરું (सं.) पत्ता, पात, पत्र,

પાતરે પાણી પાવું (क्रि.) खिझाना, चिढ़ाना, कुढाना, जैन सम्प्रदाय के साधुओं का भोजन करनेका काष्ठ निर्मित रंगीन पात्र ।

પાતળ (सं.) स्त्रियोंकी निम्न दर्जेकी पोशाक, पत्तल, पातर, पत्रावली, हलका पतला स्त्रियोंका लूघड़ा ।

પાતળ પેટું (वि.) कृशोदर, पतले पेटका, अल्पभोजी, कमखानेवाला ।

પાતળિયો (सं.) दुबला पतला किन्तु नीरोगी पुरुष, कृश किन्तु स्वस्थ।

પાતળું (वि.) पतला, दुर्बल, कृश, सूक्ष्म, सूखाहुवा, क्षीण, बहजानेवाला, तरल, झीना, छीदा, बारीक।

પાતાળ પાણી (वि.) कुवा कुंडका बहपानी जो कभी न सूखताहो, अथाहजल, बहुत औंडा, खूब गाहिरा।

પાતાળ ફોડવું (क्रि.) खूबगहिरा खोदना, गहिरा खोदकर पानी निकालना।

પાતાળના પુતળા હલાવવાં (क्रि.) गजब करना, अतिशय उत्पात करना।

પાતાળમાં પગ છે (क्रि. वि.) जितना बाहिर है इतनाही भीतर है, जड़ दृढ है।

પાતાળમાંથી વાત લાવવી (क्रि.) बड़ी कठिनतासे गुप्त बात को ढूंढ खोजकर निकाललाना।

પાતાળમાં પેસી જવું (क्रि.) पृथ्वीमें घुसजाना, गायब होना, लुप्त होना।

પાતાળમાં- પેસાડવું (क्रि.) शर्मिन्दा करना, लज्जित करनीचा दिखाना।

પાતાળ જંત્રી-યંત્રી (वि.) जिसकी सलाह अथवा बहुत गहरी हो। बने जिस तरह काम पार पटकने वाला- चलता पुरजा- छटी रकम।

પાતેલી (सं) पतीली, भोजन राधने का पात्र, देगची, केतली, मिट्टी का पात्र, जिस में शाक भाजी राधी जाती हो।

પાતેલું (सं.) देग, ताम्बा या पीतल का बना हुवा चौड़े मुख का पात्र विशेष।

પાથરણ (सं.) बिछाने का वस्त्र, बिछौना, दरी, जाजम, शतरंजी, फर्श।

પાથરણું (सं) बिछौना, बिस्तर, जाजम वगैरः मृतक के लिये शोक प्रदर्शनार्थ आये हुए मनुष्यों के लिये बिछौना।

પાથરવું (क्रि) फैलाना, बिखेरना, बिछाना, विस्तृत करना, पटकना।

પાથરો (सं.) हरीघास, बढी हुई कड़बी, खेत में पड़ी हुई।

પાથેય (सं.) गुज़र, मार्ग, संगी, साथी, संगी, मार्ग, सहायक ।

પાદ (सं.) पद, पग, पैर, पांव, टांग, लात, चरण, चौथा भाग । कविता का एक चरण, मंत्र का चौथा भाग ।

પાદર (सं.) गांव के बाहिर की जगह, जहां ढोर इत्यादि चरते हैं, फाटक ।

પાદવું (क्रि) पादना, गुद मार्ग से दूषित वायु त्यागना, अपान वायु छोड़ना ।

પાદશાહ (सं.) मुसलमान राजा, बादशाह, राजा भूपति, भूपाल ।

પાદશાહજાદો (सं.) राजकुमार, युवराज, राजपुत्र, राजा का लड़का ।

પાદશાહી (सं.) राज, सत्ता, राज्यशासन, बादशाह का कार्य, बादशाही ।

પાદસ (सं.) पारसियों का क्रिया कर्म सम्बन्धी जुलूस ।

પાધરૂં (वि.) सीधा, सूधा, ठीक, ऊपर की ओर सीधा, सीधे मार्ग जाने वाला ।

પાધરૂં દોર (वि) सीधा, सच्चा, सयाना, सरल, सन्मुख ।

પાન (सं.) पत्ता, पर्ण, पत्ती, पत्र, नागरबेलका पत्ता, ताम्बूल. नागर पानकी शकलका स्त्रियोंके सिरमें घालनेका ज़ेवर. पीना, द्रव द्रव्य आदिको घूटजाना, उपभोग।

પાનખર-ઋતુ (सं.) बसन्त, वह ऋतु जिसमें वृक्ष पतझड़ होते है,

પાનડી (सं. लम्बा पतला पत्ता, स्त्रीके कानमे पहिननेका भूषण ।

પાનડું (सं) पत्ता, पर्ण, पत्र, पाती, पत्ती ।

પાન ચાળવણી (वि.) पानोंको फेरनेकी क्रिया होशियारी, चालाकी चतुरता ।

પાનપટ્ટી (सं.) पान बीड़ा, नागर पानकी लपेटन या पुड़िया ।

પાનાં (सं.) ताश, ताशके पत्ते, पन्ने, पुस्तकके पृष्ठ, चादी सोनेके वर्क । [तकक भाग ।

પાની (सं.) पैरके तलेका एड़ी

પાનું (सं.) पृष्ट, पन्ना पेज, सफा, वर्क, गंजफाका पत्ता, सोना अथवा चांदीका वर्क, फल (चाकूका), लोहेकी धारदार पत्ती जिसमें मूठ लगाहो, नीले रंगकी मणि, नवरत्नमेंसे एक, भाग्य, संबंध ।

પાનું પડવું (कि) पल्ले बंधना, सम्बन्ध होना, पाले पड़ना, भोगना, पड़ना ।

પાનું શોધવું (कि.) मृत्यु भेजना, मृत्यु ढूंढना, गिछला बात खोलना ।

પાનેતર (सं) वह लूगटा जिसे कन्या पाणिग्रहणके समय ओढती है, लड़की की ननसारसे मंगल के समय रेशमी सफेद रंगीन किनारोंका लवडा जिसे कन्या फेरोंके समय ओढती है ।

પનો (ग.) गाय भैंस इत्यादि पशुके थनोंमे दूधका उतरना, स्त्रीके स्तनोंमे दूधका भर आना, पानी, क्रोध । [पत्ती ।

પાનોઢ (सं.) ज्वार बाजरे की

પાપ ગયું (क्रि. वि.) पीड़ा नुकसान करनेवाला मनुष्य गया, कटक हटा ।

પાપ છૂટી બાત (वि.) पवित्र मनें से की हुई बात, कपट रहित कही हुई बात ।

પાપ ધોવું (क्रि.) निर्दोष होने पर भी कोई मनुष्य किसी की निन्दा करता हो तब यह कहा जाता है । [मिलना ।

પાપ ફૂટી વળવું (क्रि.) पापका फल

પાપ ફૂટી નીકળવું (क्रि.) दुष्ट पापोंसे उपदंशादि रोग होजाना, पाप का प्रतिफल मिलना, आफत आ पड़ना ।

પાપની દશુંદ (सं.) वह भाग जो जो पाप कर्म में सहायता करने से अथवा देखने से उसका दसवा हिस्सा मिलता है ।

પાપનું પોટલું બાંધવું (क्रि.) पाप का गठरिया बाधना, अधर्म संचय करना ।

પાપનો ઘડો ફૂટવો (कि) गुप्त पापका प्रकट होना, पाप पूरित पात्र का नाश होना ।

પાપડખાર-ખડિયોખાર (सं.) पापड़ में डालने का खार, सज्जी, सनचोरा, कार्बोनेट आफ् सोडा, केले की राख ।

પાપડી (स.) एक प्रकार की सेम, फली, चावल के आटे द्वारा बनाया हुवा एक प्रकार का खानेका पदार्थ, छोटी पतली रोटी ।

પાપણી-પાપણી (सं.) पापीयणी, अधर्मचारिणी, पापिन स्त्री ।

પાપા (सं.) रोटी, भोजन, ग्रास ।

પાભરી (सं.) ऊन, रेशम का बना हुवा कंधोंपर ओढने का वस्त्र,

पामीर नामक अफगानी स्थान में बना हुआ, रेशमी वस्त्र ।

પામવું (क्रि.) पाना, प्राप्त करना, सहना झेलना, उठाना जानना, समझना, अधिकार में होना ।

પાય (सं) पैर, पांव, पाद, चरण, टांग, टंगड़ी, कटि के नीचे का भाग ।

પાયક્ષિન (वि) ऊजड़, निर्जन, सुनसान, ऊसर, अनुपजाऊ ।

પાયખાનું (स) पाखाना, टट्टी, झाड़ा, सडास, शौचगृह, बपुलिस ।

પાયગા (स) एक सर्दार की सत्ता में जितने सवार और घोडे हों । अश्वारोही, सैनिकों का समुदाय ।

પાયજામો (स) सूसना, सूथना, पजामा, पतलून, टांगों में पहिन कर कमर में बांधने का वस्त्र ।

પાયતખ્ત (स.) राजधानी, मुख्य नगर, खास तख्त, राजा के रहने का नगर, राजनगर ।

પાયદળ (स.) पैदल फौज, पदाती सेना, पैदल सिपाहियों का दल ।

પાયપોસ (स) जूता, पदत्राण, पनही, जूती, बूट, खड़ाऊं, स्लीपर ।

પાયમાલ (वि.) नष्ट, विनाशित, दुर्दशाग्रसित, नष्ट भ्रष्ट ।

પાયમાલી (सं.) विनाश, दुर्दशा, नाश, लय, निकन्दन बुरा हाल ।

પાયરી (सं.) सीढी, सोपान, पैडा नसेनी, प्रतिष्ठा, गौरव, मान, दर्जा पदवी, वर्ग, जाति, पंक्ति ।

પાયલ (सं.) पैरों में पहिनने का एक आभूषण विशेष, नूपुर, घुघरू ।

પાયલી (स) चवन्नी ¼ रुपया, पावली, चार सेर का तौल या माप ।

પાયલુ (स) देखो પાવલુ ।

પાયસ્વાર (स.) देखो પાયદળ

પાયાદાર (स) सच्चा, ठीक, खरा, प्रामाणिक, मजबूत, पुख्ता ।

પાયારહિત (वि) निराधार, निराश्रय, बेसहारा, कमजोर, बेजारिया ।

પાયીકુકા (स.) एक प्रकार का खेल ।

પાયો (सं) खाट, कुर्सी, टेबल, इत्यादि का पैर, पग, खट्वाग, धोने के समय वस्त्र कूटने का डण्डा, नीव, जड़, बुनियाद, आधार, आश्रय, चौथा हिस्सा, पैंदा ।

પાયો ઉપડી જવો (क्रि) समूलनाश होना, बिलकुल बरबाद होना।

પાયો ટેરવો (क्रि.) उत्तेजना देना सहारा देना, आश्रय देना, सम्मत होना ।

પાયો નાખવો (क्रि.) प्रारंभ करना शुरूआत करना, नींव डालना ।

પાર (सं.) तीर, दूसरा तट, समाप्ति, शेष, पूर्णता, प्रांत, लंघन, तरण, उद्धरण, मोचन, हद, सीमा छोर सिरा, किनारा, अंत अन्न का सिरा या भुट्टा, बाल, गुप्त, मर्म भेद, (क्रि. वि.) द्वारा, बज़रिये ।

પાર પામવો—લેવો—કહાડવો (क्रि.) गुप्त रहस्य जानलेना, पारपड़ना ।

પાર મૂકવું (क्रि.) किनारे लगाना।

પારકું (वि.) अन्यका, पराया, दूसरे का परकीय ।

પારકું ધન (सं.) लड़की, बेटी, पुत्री, पराया घर बसानेवाली, पराये मनुष्यों के काम मे आने वाली वस्तु ।

પારખ (सं.) परीक्षा, परख, खोज, इम्तहान, खरे खोटे की जांच ।

પારખવું (क्रि.) परखना, परीक्षा करना, जांचना, इम्तहान करना । [जांच ।

પારખું (सं.) परीक्षा, कसौटी,

પારખું જોવું (क्रि) देखो परखना

પારજાતિક (सं.) पारिभद्र वृक्ष, देवतरु, सुरद्रुम, देवताओं का वृक्ष पुष्प विशेष, हरि-चन्दन वृक्ष ।

પારણાં (सं) व्रत के अंत में भोजन उपवास के दूसरे दिन भोजन करना, समाप्ति, तृप्ति ।

પારણું (सं.) पलना, बच्चों के झूलने के लिये काठ का झूला, देखो પારણાં ।

પારધ (सं.) शिकार, मृगया, पशु हिंसा, जीवहिंसा ।

પારધી (सं.) शिकारी, मृगयार्थी, भील, कोल, पारदी ।

પારંપાર-રા (सं.) पूर्ण, संपूर्ण, पूरा, पार से भी परले किनारे ।

પારવો (म.) जंगली कबूतर या फाख़ता, पक्षीविशेष । [अधिक ।

પારવનું (वि.) पुष्कल, बहुत,

પારવું (क्रि.) नींदना, गोड़ना, खेत आदि में से घास फूस निकालना ।

પારેસ પીપળો (सं.) एक प्रकारका पीपल वृक्ष, अश्वत्थ, बिना मित्रका ।

પારસણ (सं.) पारसी औरत ।

પારસનીસ (सं.) मंत्री, लेखक, सेक्रेटरी, अफसर जिसके ताल्लुक खासमोहकमा हो ।

પારસાત (क्रि. वि) पाससे ।

પારા (सं.) गोली ।

પારાયણ-યણુ (सं.) पुराणपाठ विशेष, नियम पूर्वक सप्ताह भर पठन या पाठन ।

પારાપાર (क्रि.) सम्पूर्ण, इस छोर से उस छोर तक, सब, समस्त ।

પારાવાર (सं.) समुद्र, उदधि, सागर, (वि.) अगाध, अगम्य, गहिरा ।

પારાવત (सं.) आस्मानी कबूतर, गृहकपोत, पक्षी विशेष ।

પારિપત-ત્ય (सं.) सजा, दंड, शिक्षा, नसीहत, ताड़ना।

પારી (सं.) देखो નરાજ, पथ्थर, खोदनेकी लोहेकी छेनी, हाथियार,

પારે (सं.) शकुन, सगुन, शुभसूचक चिन्ह, मंगलगान, शुभचिन्ह ।

પારેખ (सं.) देखो પરીખ

પારેઠ (सं.) बहुतदिनों की व्याई हुई भैंस ।

પારેવું-વો (सं.) आस्मानी कबूतर, फाखता, पक्षी विशेष, कपोत ।

પારો (सं.) छर्रा, बन्दूक में भरनेकी शीशेकी गोली, पारद, धातु विशेष, रसधातु, गलेमें पहिननेका एक प्रकारका आभूषण शरीरस्थ धातु ।

પારોઠ (सं.) बहुत दिनोंतक पड़ा रहने से बिगड़ा हुवा, खराब ।

પારોપાર (सं.) देखो પારંપાર

પાર્થની (सं) सीताका नाम, जानकी ।

પાર્થિવ (सं.) मृण्मय, पृथ्वी से उत्पन्न मिट्टीके बनाये हुए महादेव (लिंग) राजा, नृपति, पृथवी सम्बन्धी ।

પાલ (सं.) वह चिकना पदार्थ जो कई जगह पानी पर तैरता रहता है । चारों ओर पहाड़ों के बीचका मैदान, तंबूकी दीवार, कनात, रक्षक, प्रान्तका नाम, छिपकली, बिसतुइया, शाक विशेष ।

પાલક-માં-બાપ-છોકરું-બાઇ (सं.) रक्षक, सौतेलीमा, सौतेलापिता, पोष्य पुत्र, रखी हुई स्त्री ।

પાલખ (सं.) एक प्रकारकी भाखी, मचान, राजमज़दूर इत्यादि द्वारा मकान बनाने के लिये ऊंची लकड़ियों की बाँधी हुई मचान ।

પાલખી (सं.) पालकी, शिविका, डोला, मनुष्य वाहनयान विशेष, डौला।

પાલખી નશીન (सं.) अमीर, धनाढ्य, पालकी में बैठकर चलने वाला।

પાલટવું (कि.) बदलना, लौटना पलटना, फेरना, उलट पलट होना। [प्रतिफल।

પાલો (सं) पलटा, बदला,

પાલણ (सं.) भरण पोषण, प्रतिपालन, रक्षण, निर्वाह गुजर।

પાલણ પોષણ (सं.) पूर्ववत्।

પાલવ (स.) देखो પલ્લવ, गोट, मगजी, पत्तियोंका गुच्छा, पत्र-गुच्छ, आश्रय, शरण।

પાલવવું (कि.) अनुकूल होना, इच्छानुकूलहोना, खोजन, पालना, संभालना, पालन करना, रक्षा-करना।

પાલવું (कि.) पालना, परवरिश करना, मदद करना, पोषण-करना।

પાલાશ (सं.) ढाक, टेसूका वृक्ष, किंशुक वृक्ष, खाखरा, छीला।

પાલિમાં (सं.) जलकी एक जाति, (यह अति मीठा नहीं होता किंतु खारा भी नहीं होता)

પાલી (सं) (बंबई में) चार सेरका परिमाण, लताग्र, नवपल्लव, छोटाप्याला, प्याली, पंगत, हार।

પાલીઆ (सं.) पत्थरकी चट्टानका पानी, समाधिया कब्रका पत्थर।

પાલું (सं) घास फूस तिनकों लकड़ों इत्यादिकी टट्टी, चटाई इत्यादिकी बनाई हुई अन्न भर-नेकी टट्टी, बरसातके पानी से बचानेके लिये दीवारों पर लगाई जाने वाली टट्टी, प्याला, कटोरा,

પાલો (सं.) वृक्षादिके पत्ते, वर्फ, हिम, पैदल मनुष्य, पल्लव।

પાલો ખાનાર (वि) घास पात खानेवाला।

પાવ (सं.) ¼, चौथाई, पग, पैर चौथा भाग, ।, चतुर्थांश।

પાવડી (सं.) काष्ठ निर्मित पाद-त्राण, पादुका, खड़ाऊं, जूती।

પાવટડું (सं.) पैरका तलुवा।

પાવડું (सं.) देखो પાવડો

પાવડો (सं) घोड़ेपर आरोहण करते समय जिसमें पैर रखा जाता है, रकाब, पावड़ा, फावला, फावड़ा, कचरा मिट्टी खींचनेका औज़ार, लकड़का बांधा हुवा कच्चा पुल, गाड़ी तांगों बग्घी आदिमें बैठनेको चढ़नेका लोहेका पैडल।

પાવતી (सं.) रसीद, भरपाईकी चिट्ठी, प्राप्त होनेकी हस्तलिपि।

પાવરધું (वि.) भिज्ञ, होशियार, लायक, योग्य, झूठा. दगाबाज, बदमाश. लुच्चा, अज्ञान मनुष्य।

પાવરધોં (वि.) पूर्ववत्

પાવરો (सं.) तोबरा, घोडेके मुखपर दाना खिलानेको बांधा जानेवाला थैला, घोड़ेके मुहपर बांधनेकी थैली। [चरण,

પાવલિયો (सं.) पग, पैर, पद,

પાવલી-લું-લો (सं.) चवन्नी, ¼ रुपया, चार आना, पाव रुपया।

પાવલોપા (सं.) यह शब्द तब प्रयोग कियाजाताहै जब कि कोई बड़ा आदमी अपने पैरों पर छोटे बालकको बिठा कर झुलाता है, पैर पर बालकको झुलाना "पापा"

પાવસ (सं.) वर्षाऋतु, प्रविष्टकाल वर्षाकाल, बरसात।

પાવળિયો (सं.) इकतारा बजाने वाला एक प्रकारका वाद्य बजाने वाला।

પાવું (क्रि.) पिलाना, वृक्षोंको पानी पिलाना, सींचना, शक्करकी चाशनी चढाना, पाना, प्राप्तकरना।

પાવૈયો (सं.) न पुरुष न स्त्री ऐसा मनुष्य, जिसके लिंगेन्द्रियके स्थानपर केवल एक छिद्र होता है। षंढ, क्लीब, हिजड़ा, नपुंसक।

પાવૈને પાનો ન ચઢે=नामर्द को शूरता नहीं चढती।

પાવો (सं.) बांसरी, बन्सी, मुरली।

પાશલો (सं.) छोटा पाश

પાશાતણિયો (सं.) चांदीपर सोनेकी पतरी चढाकर तार खीचनेवाला।

પાશિયું (वि.) देखो પાશવી

પાશેર (वि.) चार छटांक, ¼ सेर, सेरका चतुर्थांश, २० तोला।

પાશેરી-રો (सं.) पौवा, चार छटाकके वजनका बाट, पोआ।

પાશો-સો (सं.) चांदीका टुकड़ा, चांदीकी डली, चांदीका पासा।

પાખંડ (सं.) पाखंड, ढोंग, ठगी।

પાષાણ ચતુર્દશી (सं.) जिस मासमें सूर्य वृश्चिक राशिपर हो उस महीनेकी शुक्ल चतुर्दशी तिथि जिसमें पाषाणकी आकृतिका भोजन कियाजाता है।

પાશાભુસેદ (पुं.) इन्द्रजवकी एक औषधि, पत्थर पर उगा हुआ खार।

પાસો કરવો (क्रि.) अनमें से पत्थर कंकर दूर होजावे इस लिये फटकना, पिछोरना, सूपंकिया, फटकना ।

પાસ (सं) आज्ञापत्र, प्रमाणपत्र, रंग, (वि.) दाखिल होना, प्रवेश करना, (क्रि. वि.) निकट, समीप, नजदीक । [र्णहोना ।

પાસથવું (क्रि.) पासहोना, उत्ती-

પાસવાન (स.) साथ साथ रहने वाला, आज्ञाकारी, हजूरिया ।

પાસું (स.) पासली, बाजू, करवट ।

પાસું વાળીને સુવું (क्रि) निश्चित होकर सोना, आराम लेना ।

પાસું સેવવું (क्रि.) तावेदारी करना, पक्ष ग्रहण करना, तरफदारी करना ।

પાસે (क्रि. बि.) पास, निकट, समीप अदूर, हाथमें, सत्तामें ।

પાસેનું (क्रि. वि) पासका, समीप वर्ती, कुटुम्बी, गोत्रका, गाठका, अपना ।

પાસેથી (उप.) पाससे, से, बिना,

પાસો (सं.) द्यूत विद्यामें पासा, जुआ खेलनेके लिये हाथी दांत अथवा अन्य किसी धातुका बनाया हुवा पासा ।

પાસો ચઢતો હોવો (क्रि.) भाग्यो दय होना, उन्नतिके दिन आना ।

પાસો નાખવો (क्रि.) साहस करके देखना, भाग्य परीक्षा करना ।

પાસો સવળો અવળો પડવો (क्रि.) भाग्य अनुकूल अथवा प्रतिकूल होना, की हुई युक्ति सफल होना या निश्फल होना । [याफसल ।

પાસ્તર (सं.) दूसरी खेती,

પાહાડજેવો (वि.) मजबूत, मोटा, ताजा, पुष्ट, हट्टा, कट्टा, स्थूल ।

પાહાણો (सं.) पत्थर, पाहन, पाषाण ।

પાછન (वि.) देरसे, पीछे, पश्चात् ।

પાહાની (स)एड़ी, एड़ ।

પાળ (सं.) सरोवरके चारों ओर बाधी हुई दीवार, आड़, हद बताने के लिये जमीन से ऊंची लम्बी बनाई हुई भीत या चबूतरा, शब्दान्त में लगनेवाली प्रत्यय जिससे अर्थमें ' कर्ता ', ' या ' 'वाला' और हो जाता है ।

પાળક (सं.) रक्षक, पालन पोषण करने वाला, पालनहारा ।

પાળણ (सं.) देखो પાલણ

પાળણ પોષણ (सं.) देखो પાલણ પોષણ

પાળનાર (सं.) देखो पाळक

પાળવું (क्रि.) भरणपोषण करना लालन पालन करना, बड़ा करना, आश्रयमें रखना, विधिपूर्वक आचरण करना, सांसारिक रूढिके अनुसार बर्ताव करना, मानना ।

પાળા (सं. दांत, दसन, दंत, दांते ।

પાળિયો (सं.) शूरवीरकी कब्रपर अथवा समाधि पर यादगार के रूपमें लगाया हुवा पत्थर ।

પાળી (सं) चाकू, छुरी, शाकभाजी सुधारनेका शस्त्र, मुकर्रर किया हुवा दिन, बारी, पारी ।

પાળું (सं.) पैरों चलता हुवा (मनुष्य) पैदल, पदाती ।

પાળો (सं.) पैदल सिपाही, पदाती, गोलरेखा, पल्लव ।

પિંખવું (क्रि.) इधर उधर पटकना, फेकना, नोंचना, चूँथना, चिढाना, गुस्से करना, जहां तहां पटकना ।

પિંગળ કરવું (क्रि.) अतिशयोक्ति पूर्वक बढ़ाना, बढाकर वर्णन करना ।

પિંગળ જોશી (सं.) अच्छी अच्छी कहने वाला भविष्य वक्ता ।

પિંગળા (सं.) विदेह देशमें रहने वाली एक वेश्या का नाम, नाड़ी, विशेष, दाहिने नथने से चलने वाला स्वर, मालकांगनी, गोरोचन, भरथरी की भार्या का नाम ।

પિંજણ (सं.) धुनकने का हथियार, धुनने पींजने की बड़ी लम्बी चौड़ी बात, पैर में पहिनने का भूषण विशेष, पजनो, माथाफोड़ सिरपच्ची ।

પિંજણિયો-પિંજણી (सं.) धुनकना, रुई उन आदि धुनने का यंत्र, रथ या गाड़ी का पहिया निकल न जावे इस लिये आड़ी लगाई हुई लकडी ।

પિંજર-રું (सं.) देखो પીંજરૂ, पाले रंग का, पीले और लाल रंग का ।

પિંજવું (क्रि.) धुनना, पींजना, रूईको अथवा ऊनको धुनना ।

પિંજારી (सं.) पिंजारेकी स्त्री, रुई धुनकनेवालेकी स्त्री, पक्षी विशेष ।

પિંજારો (सं.) रुई धुनकनेवाला,

પિંડો (सं.) गारेका अथवा गीली मिट्टीका गोला ।

પિંઢારો (सं.) ग्वाल, अहीर, गडरिया, एकजाति विशेष, डाकुओंका दल, लुटेरा, ठग, डकैत, गोप, चरवाहा ।

પિંઢોરિયું (वि.) केवळ मिट्टीके गोलोद्वारा बनाया हुवा घर, केवल मिट्टीका घर ।

પિક (सं.) काकिल, कोयल, एक जातिका पक्षी, पान सुपारी अथवा ज़रदेका थूक, पाक ।

પિકદાની (स.) थूकनेका पात्र, थूकनेका वह पात्र जिसका मुख ऊपरसे चाडा होता है, पीकदानी।

પિખવુ (क्रि.) फेकना, विखेरना, इधर उधर फेंक देना, नोच डालना।

પિગળવું (क्रि) पिघलना, टघलना, द्रव होना, पतला होना, पानी होना।

પિગળાવવું (क्रि.) टिघलाना, द्रव करना, पिघलाना, पानी करना

પિચકારી (सं.) पचूका, दमकला, वह यंत्र जिसके द्वारा पानी भरकर धार रूपमें छोड़ा जाता है, होली के दिनोंमें रंग डालनेके काम आता है, पान अथवा जर्देके बहुतसे थूकका पिचकारीकी तरह थूकना।

પિચદાની (सं.) देखो પીકદાની

પિચ્છ (सं.) मयूर पुच्छ, मोर पुच्छ, शिखण्ड, लाङ्गूल, पूंछ, पंख, पक्ष ।

પિછાડી (सं.) एक प्रकारकी रस्सी, पीछे, पश्चात्, पृष्ठभाग ।

પિછાન (सं) पहिचान, परिचय, मेल, जान पहिचान, ।

પિછાનવું (क्र) पहिचानना, जानना, परिचय प्राप्त करना, जानलेना ।

પિછો (सं.) पीछा पश्चाद्गमन।

પિછો લેવો (क्रि.) पीछे पड़ना, सताना, पीछा पकड़ा, कष्ट देना, खोज करना ।

પિછોડી (सं.) डुपट्टा, पिछोरी, कपड़ा, उपवस्त्र, कंधेपर डालनेका वस्त्र। लूघड़े पर ओढ़नेकी सफेद चादर। बिछौनों पर डालनेका वस्त्र।

પિછોડો (सं) बड़ी चादर, चद्दर।

પિંજન (क्रि. वि.) हरेक बातको खूब बढाना, और पिष्टपेषण करना।

પિટાપિટ (सं.) पटापट शब्द, कूटने अथवा पीटनेका शब्द ।

પિણ્ડરોગી (सं.) पाण्डुरोग युक्त, जिसे कमला हो गया हो, जन्म-रोगी, मुख फीका हाथपैर दुर्बल और पेट बड़ा ।

पिंडज्ञान (सं.) देहज्ञान, शरीरज्ञान
पिंडदायी (सं.) दर्दयुक्त, दुखदायी, कष्टकर्ता, दुखमय।
पिडित (वि.) दुःखित, दुखी, कष्ट पूर्ण, क्लेशित।
पिण्डी (सं.) महादेवजीकी मूर्ति (लिंग) शिवलिंग, पिंडली, पिण्डरी।
पिण्ड (सं.) धागे आदिका लपेटन द्वारा बनाहुवा गोला, पिंडा।
पितराइ-त्राइ (सं.) चचाके बेटे भाई, सहोदर भाईके अतिरिक्त संबंध।
पितराइ भाइ (सं.) चचात्रा पुत्र भाई, पिताके मामाका पुत्र, चचेरा भाई, चचा ज़ादभाई
पितराइ बेन (सं.) चचेरी बहिन पिताके मामाकी पुत्री।
पितकोणुं (सं.) कद्दू, लौकी फल विशेष।
पित्तणपान (स.) पीतलकी पतरी, पतिल धातु निर्मित पन्नी।
पित्तवाणुं (सं.) पित्तयुक्त, पित्त प्रकृतिका, [पांतलका
पित्तणी (वि.) बेशर्म, निर्लज्ज,
पित्तणाड (सं.) पतिलका प्याला।
पित्तळनुं (वि.) पतिलका बना, पीतल धातु द्वारा बनाहुवा।
पित्ताणुं (वि.) देखो पित्तवाणुं
पित्त (सं.) शरीरस्थ धातुविशेष, तिक्तधातु, पित्त (वात, कफ)
पित्तज्वर (सं.) पित्त जनितज्वर, पित्तके कारण शरीर दाह।
पित्तप्रकृति (सं.) जिसके शरीरमें पित्तनामक धातुकी प्रधानता हो, गरम मिज़ाज़, [मेल, वातपित्त।
पित्तवा (स.) पित्त और वायुका
पित्तळ (स. धातु विशेष, पीतल ताम्बे और जस्तेके मिश्रणसे बनी हुई एक पीली धातु। तेज मिज़ाजका, ओछा पात्र, तेज तर्रार।
पित्ताशय (सं.) हृदय, कलेजा, दिल।
पित्तो (सं.) क्रोध, गुस्सा, तेज मिज़ाज़, पित्ताधार, तीक्षास्वभाव।
पित्तो उछळवो (क्रि) क्रोध होजाना
पिधेल (वि.) मस्त, मद्यपान कियाहुवा, शराबी मदमाता।
पिधेलु (वि.) शराब पीया हुवा।
पिधेलो (वि) पूर्ववत्
पिपर-पेर (सं.) एक प्रकारके हलका फल जो आचारके काममें लाये जाते है

પિપળા મૂળ (સં.) पीपलामूल, पीपल वृक्षकी जड़ ।

પિપળો (સં.) पीपल नामसे प्रसिद्ध पवित्र वृक्ष, अश्वत्थ ।

પિપળે દીવો કરવો (क्रि.) संसारको गुप्तबात प्रकट करना, बात फैलाना,

પિપળો ઉગવો (क्रि.) निस्संतान होना, अपुत्र होना, निर्वंश होना ।

પિમળ (સં.) मन्द मन्द सुगन्ध, धीमी २ खुशबू, गन्ध, सुवास ।

પિમળવું (क्रि.) मंद मंद सुवास आना, धीमी धीमी खुशबु आना, मारभ आना ।

પિયર (સં.) खोरा पितृगृह, पीहर, मैका, मायका पीर ।

પિયરપનોતી-સબંધી (वि.) जिसके सुखी स्थित हो ।

પિયરિયું-યેરયું (સં.) स्त्री के बापकी ओरका सगा सम्बन्धी या कुटुम्बी (वि.) पीहर सम्बन्धी

પિયળ (સં.) देखो પીયળ

પિયુ-ડો (સં.) पति, खाविंद, स्वामी, खसम, धनी, प्यारा, प्रिय । [पीयूषा ।

પિયૂષ (સં.) अमृत, सुधा,

પિરસણ (સં.) पकाहुवा भोजन परोसना, परोसन ।

પિરસણિયો-નાર (સં.) परसने वाला, भोजन कराने वाला ।

પિરસવું (क्रि.) परोसना, पात्रमें भोजन रखना, जीमनेकी थालीमें भोज्य वस्तु रखना ।

પિરોજ-જો (સં.) आस्मानी रंग का मूल्यवान पत्थर ।

પિરોજી (वि.) आस्मानी रंग, नीला रंग, पिरोजेका रंग ।

પિલવણ (सं.) एक प्रकारका वृक्ष ।

પિલવું (क्रि) दबाना, निचोड़ना, यन्त्रमें कुचलना, दो वस्तुओंके बीचमें रखकर दबाना ।

પિલાવું (क्रि) दबवाना, कुचलाना।

પિલું (સં) પિલવણ वृक्षका फल, पीलु, फल विशेष, मुर्गीका बच्चा।

પિલેડિયું (સં.) ज्वार बाजरेकी डंठलमेंसे फूटा हुवा फुनगा।

પિલુડી (સં.) एक प्रकारका वृक्ष।

પિશની (સં.) थैली, कोथली, मुसलमानोंकी स्त्रियोंके पहिरनेका पज़ामा ।

પિસવી (સં.) कोथली, थैली ।

પિસવું (क्रि.) बकना, भौंकना, चूर्ण करना, [illegible] [illegible], [illegible],

પિસવો (સં.) मिट्टीकी बनाई हुई बंसरी या मुरली, सीटी ।

पिसुडी (सं.) एक प्रकारका बाद्य, मुरली, बांसरी, वेणु ।

पिस्ता (सं.) पिस्ता नामक प्रसिद्ध मेवा ।

पिस्तालीस (वि.) संख्या विशेष, चालीस और पांच, ४५, पैंतालीस ।

पिहुपिहु (सं.) कोयलका शब्द, पपीहा नामक पक्षीकी बोली ।

पिहेर (सं.) स्त्रीका पितृगृह पीहर, मायका, पीर बापके घर ।

पिळ-पीळ (सं.) शुभसमय पर स्त्रियोंके कपाळ पर लगाया हुवा कुमकुमका बिंदु, सौभाग्य बिन्दु ।

पिळचटुं (सं.) पीला रंग लिये हुए, पीत वर्णयुक्त, पीलाई ।

पिळवुं (क्रि.) कुमकुमके रंग में रगना, रगडना, मसलना, कुचलना।

पिळाट-स (सं.) पीलापन, दिखने में कुछकुछ पीत रंग युक्त, पिलाई ।

पिळियुं (सं.) पीला ओढना, पोले रंगकी लूघडी, हल्दी के रंग का रंगा हुवा, पीली ईंट, एक प्रकारका रोग। [रंग

पिळुं (सं.) पीला, पीत, हलदिया

पी (सं.) फजीहत, अपमान, अपकीर्ति ।

पीआज (सं.) काँदा, गंठी, प्याज, कस्तूरी ।

पीक (सं.) अन्न इत्यादिका पाक, पान तमाखूका थूक ।

पींगाणी (सं.) सुगन्धित तेल का प्याला, खुशबूदार पदार्थ युक्त कटोरा ।

पीछ (सं.) पीछा, पर, पक्ष, पिन्छ, पूंछ, देखो पीछुं

पीछी (सं.) मोरपख, मोरका पाखोंका बनाया हुवा, चमर, चँवर, चत्तरी, मक्खी भगानेका, ब्रश, बुरस ।

पीछुं (सं.) पांख, पख, पर, पक्ष

पीछानुं पारेवुं करवुं (क्रि.) राईका पहाड़ करना, अतिशयोक्ति पूर्वक कहना ।

पीछांनो कागडो (सं.) किसी थोड़ी बातको बढाकर कहना ।

पीछुं घालवुं (क्रि.) बाधा उपस्थित कर देना, आड़ करना, रोक करना ।

पीछो (सं.) पीछा, पश्चाद्गमन ।

पीछो करवो (क्रि.) पीछा करना, खदेरना, भगाना, दौड़ाना, पीछे जाना ।

पीटणी (सं.) पिटाई, कुटाई, मार, छातीकी पिटाई ।

પીટ્યો (वि.) अंति मरेके समान, दुखदायी पुरुषको गाली देनेके लिये स्त्रियां यह शब्द काममें लाती हैं ।

પીટવું (क्रि.) देखो પિટવું

પીઠ ઉઘાડી પડવી (क्रि.) कोई मददगार न होना, असहाय होना।

પીઠ ઠોકવી (क्रि.) शाबाशी देना, उत्तेजित करना, अभयदेना, साहस देना ।

પીઠ ઢાંકવી (क्रि.) मदद करना, आश्रय प्रदान करना, बात रखना । [પીઠ ઠોકવી

પીઠ થાબડવી (क्रि.) देखो

પીઠપર હાથ ફેરવવો (क्रि.) धैर्य-देना, साहसदेना, हिम्मत बंधाना।

પીઠ પાછળ મૂકવું (क्रि.) मुलतबी रखना, स्थगित करना, ठहराना ।

પીઠ પુરવું (क्रि.) आवश्यकता के समय सहायता करना ।

પીઠ ફેરવવી (क्रि.) त्याग देना, तज देना, तिरस्कार पूर्वक देखना आवश्यकता के समय छोड़कर चले जाना ।

પીઠ બતાવવી (क्रि.) हार मानकर भागजाना, पीछे हठना, भाग जाना ।

પીઠ લેવી (क्रि.) पीछे पड़ना, दुखदेना, आग्रह पूर्वक मांगना ।

પીઠનું જોર (सं.) सहायक का बल, जरिया, वसीला, पीछे का जोर ।

પીઠ (सं.) आटा, पिष्टी, भिगा हुवा गीला अन्न, अन्न की गीली लुब्दी । मंदिर, स्थळ, जगह, छोटा टेबल, स्टूल ।

પીઠિકા (सं.) वंशावली, आरंभ से विवरण पूर्वक बात ।

પીઠી (सं.) विवाह के समय वर अथवा कन्या के शरीर में कुछ दिन पूर्व से हल्दी मिश्रित लगाने का मसाला, उबटन, अभ्यंग, उबटना ।

પીઠું (सं.) शराब की दुकान, ताड़ी की दुकान, कलाली, अन्न का बाजार, जहां माल थोकबन्द मिलता हो ।

પીડ (सं.) देखो પીડા, पीड़ा, दुःख, व्यथा, उपद्रव, आपदा, व्याधी, रंगकी लुब्दी ।

પીડવું (क्रि.) पीड़ाकरना, दुःख-देना, कष्टदेना, तकलीफदेना ।

પીડાવું (क्रि.) पीड़ापाना, कष्ट-पाना, तकलीफ पाना, खिजाना ।

पीढ-हिंडी (सं.) छत पर शह-तीरों पर रखनेके पटिया ।
पींढारो (सं.) लुटेरा, ठग, वंचक ।
पीढियां (सं.) डाढ, दाढ, दांत ।
पीढियुं (सं.) आड़ी तख्ती, शहतीर । [चाह ।
पीथ (सं) इच्छा, ख्वाहिश,
पीत (सं.) पित्त, भाजी, पानी से उत्पन्न होनेवाला शाक, (वि.) चपटा, गूदेदार, मोटा, पीला ।
पीत कोडी (सं.) एकप्रकारका जानवर, जिसकी गुदा लाल होती है ।
पीतपापडो (सं;) एक प्रकारके बीज, पलाशवृक्षके बीज, खाखरे-का बीज ।
पीतवाडो (सं.) जिस खेतको कुएका पानी पिलाया गया हो ।
पीधुं (क्रि.) पीया, पिया ।
पीनस (सं.) नासिकारोग, रोग विशेष ।
पीनार (सं.) पीनेवाला, पानकर्ता।
पीप (सं) दारू, शराब, काष्ठका ढोल पीपा, काठका ढोल समान पीपा ।
पीपर (सं.) देखो पिपर
पीपा (सं)एक प्रकार का बाजा, वाद्य विशेष, फजीहत, खराबी ।
पीपी (सं.) बांसरी, मुखसे बजाने की सीटी, अपमान, हतक, बदनामी ।
पीपुडी (सं.) पूर्ववत्
पीपोडी (सं.) पूर्ववत् [सुगंध ।
पीमळाट (सं.) महक, खुशबू,
पीयळ (सं.) स्त्री के मस्तक पर हिंगलू अथवा सिंदूर से चित्रित सौभाग्य चिन्ह ।
पीयो (सं) आंखों के कोनों का एकत्रित मल, आंखों का गोड, नेत्रों का मल ।
पीर (सं.) मरेबाद, मुसलमान साधु की पदवी, वली, ओलिया, फकीर ।
पीलवुं (क्रि.) देखो पिलवुं
पीलुडां (सं.) पीलूड़ी के फल, एक प्रकारके फल ।
पीलुडी (सं.) वृक्ष विशेष, जिसके पीले बेर तुल्य फल लगते हैं, एक प्रकार का राग ।
पीलो (सं.) वृक्ष पौधे का वह भाग जो सर्व प्रथम जमीन से बाहिर होता है, अंकुर, फुनगा, तमाखू की कोमल शाखा ।

પીવું (क्रि.) पान करना, छोड़ या तरल पदार्थ कंठ के नीचे उतारना, चूसना, शराब पीना, समाना, अंदर प्रवेश होना, दम लेना, मुख में धुंआ भर लेना, सहन करना, गम खाना ।

પીજવું (क्रि.) सहन करना, बरदाश्त करना खा जाना, कुछ परवाह न करना, देखा अनदेखा करना, अवहेलना करना, सह जाना ।

પીસવું (क्रि.) पीसना, दलना, चूर्ण करना, कुचलना, आटा करना ।

પીળક (सं) पीलापन, फीकापन ।

પીળવું (क्रि.) देखो પિળવું

પીળાશ (वि.) देखो પિળાટ

પીળું (वि.) पीला, पीत, हल्दी के समान, सोने के रंग समान ।

પીળુ ધમ્મક वि) अतिशय पील, बिलकुल पीले रंग का ।

પીળો દેડકો (स.) जिस में रक्त नहीं रहा हो और फीका दिखाई देता हो ।

પીલતન (वि.) गजतुल्य, हाथी समान, मोटा, भारी, स्थूल ।

પીસું (स) पिस्सू नामक क्षुद्र जन्तु, तुच्छ प्राणी ।

પુંખ (सं.) देखो પૂંખ घर के छप्पर के दोनों ओर का ढालू भाग, पक्ष, घर के दोनों बाजू ।

પુંખડું (सं.) मंद हवा, धीमी वायु (वि.) थोड़ासा, अल्पसा, कम।

પુખવું (क्रि.) खेत में हाथ से अन्न आदि बखेरना,

પુંછ-ડી ડું (सं) दुम, पूंछ, पुच्छ, लाङ्गूल, पश्चाद्भाग ।

પુછવું (क्रि.) पोंछना, साफ करना, ओंछना, झाड़ना, पूंछना ।

પુંજવું (क्रि.) पूजना, पूजा करना, मान करना, सन्मान करना, जीव जंतु की रक्षा के लिये झाडू से झाड़ना (जैन सम्प्रदाय में)

પુંજણી (सं.) जैन साधुओं के पास झाडू जो जीवादि झाड़ने के काम में आती है ।

પુંજી (सं.) दौलत द्रव्य, धन अर्थ।

પુંજો (सं) उच्छिष्ट, कचरा, मैला, कूड़ा ।

પુજો કાઢવો (क्रि.) कचरा झाड़ना, मैला बुहारना, उच्छिष्ट दूर करना

પુંઠિયું (सं.) पुट्ठा, पूठ, पीठ, पिछला भाग, गाड़ी में से कुछ गिर न जाय इस लिये लगाया हुवा किवाड़ सा या आड़ ।

પુચિયું (सं.) बीच में से फटा हुआ धोती का ३।४ हाथ का टुकड़ा, बैल हांकने वाले की कम्मरकी पाछे की ओर बांधने का चमड़ा।

પુત્તરે (सं.) लड़का, पुत्र, छोकरा,

પુંખડું (सं) देखो પુમડું

પુભડી (सं.) खेत में से कपास बीनने के बाद जो थोड़ा थोड़ा कपास रह जाता है।

પુંવ (सं.) देखो પૈઆ

પુકારવું (क्रि.) गुहराना, हांक मारना, हांकना, आह्वान करना।

પુખરાજ (सं.) देखो પોખરાજ

પુખ્ત (सं) निश्चल बुद्धि का, दृढ बुद्धि का, दृढ़ मजबूत सुदृढ़।

પુગતું (वि.) वश चले जितना, हो सके उतना, देखो उतना, जितना संभव हो।

પુગવું (क्रि.) पहुंचना, जाना, चलना, प्राप्त होना, निभना, टिकना, मिलना।

પુગાડવું (क्रि.) पहुंचना, भेजना, स्वाधीन करना, पहुंचा देना।

પુચકારી (सं.) सान्त्वना वाक्य, ढाढस, शान्त करने के लिये ओंठों द्वारा शब्द।

પુચ્છ (सं.) लांगूल, पूंछ, दुम, पाछे का भाग, पशु चिन्ह, पश्चाद्भाग।

પુછડિયો (वि.) पूंछवाला, दुमदार

પુછડિયોતારો (सं) धूमकेतु, अशुभ सूचक तारा, पूंछल तारा।

પુછડી (सं) छोटी पूंछ, छोटी दुम,

પુછડું (सं.) पशु पक्षी के गुदा मार्ग के ऊपर, निकला हुवा अवयव, पूंछ, दुम।

પુછ-પરછ-પૃછ (सं.) तलाश, खोज, ढूंढ, जांच पड़ताल, अनुसन्धान, जिज्ञासा, टोह, पूछताछ।

પુછવું (क्रि.) पूछना, जिज्ञासा करना, अनुसन्धान करना, टोह लगाना।

પુછાપુછ (सं.) बारबार पूछताछ, पुनःपुनः अनुसन्धान, बारंबार प्रश्न।

પુછાવવું (क्रि.) पुछाना, निश्चय कराना, कहलाना, अनुसन्धान करा देना।

પુજ (सं.) देखो પુન્જ

પુજવું (क्रि.) अर्चन करना, आराधन करना, ध्यान करना, सम्मान करना।

પુજાપો (सं.) पूजा के उपकरण, पूजा की सामग्री, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, जल, इत्यादि सामग्री।

પુજારાધે (वि.) पूज्य, मान्य, पूजनीय, माननीय, पूजा करने योग्य।

પુટ (स.) युगल, युग्म, आच्छादन, पत्रादि रचित मध्य, अभ्यन्तर औषधि पकाने का पात्राविशष, वस्त्र पट, कपड़ा। [श्रीफळ।

પુટોદક (सं.) नारियल, नारेल,

પુઠ (सं.) देखो પુઠ।

પુઠળ (क्रि. वि. और अ) पीछे, बादमें, अनुपस्थिति में, गैरहाजिरी में, पीठ पीछे।

પુઠાં (सं.) पुस्तक की जिल्द, आवरण पृष्ट, दालमें के छिलके या कचरा।

પુઠિયાં (सं) पुठ्ठा, कूल्हा, चूतड़। गाड़ी क पहिये के आरे।

પુઠિયાં ફાટવાં (क्रि.) डरना, भय उत्पन्न होना, डर के मारे घबराना चेहरा फीका होना।

પુઠી (सं.) छोटा पुठ्ठा, गाड़ी के चक्र के आरे।

પુઠું (सं.) देखो પુઠું

પુડે (सं.) देखो પુડે।

પુડી (सं) पुड़िया, कागज की छोटी गांठ जिसमें औषधि इत्यादि बांधी जाती है।

પુડો (सं.) शहदका छत्ता, पूरी, एक प्रकार की घी या तेल में भूनी हुई आटे की रोटी, पूड़ी, शष्कुली, कचौरी।

પુણુચોટું (वि.) ओछा, अपूर्ण, बाका, टेड़ा, आड़ा, तिरछा।

પુણવું (क्रि.) कातना दुःख देना, पीटना।

પુણી (सं.) रूई की लगभग एक बालिश्त लंबी और अंगुली समान मोटी कम बल दी हुई बत्ती, पूनी, कातने के लिये तय्यार की हुई रूई की बाती।

પુણીનોવાધ(सं.) राईका पहाड़, रजका गज। मूर्ति।

પુતળ (सं.) पुतला, मूर्ति, प्रति

પુતળ વિધાન (सं.) मनुष्यका मृत शरीर हाथ न लगने के कारण उसका प्रतिनिधि रूप पुतला बना कर उसका संस्कार इत्यादि।

પુતળિયુ (वि.) जिसमें पुतला या मूर्ति हो, ऐसा गहना जिसमें मूर्ति बनीहो, सिक्का, गिन्नी, मोहर, मुहर।

पुतळी (सं.) आँखका तारा, काष्टादिनिर्मित छोटी, पुतळी, छोटी स्त्री प्रतिमा, सौन्दर्य सुन्दर औरत।

पुतळुं (सं.) गुड्डा, पुतळी, कठ पुतली, मूर्ति, प्रतिमा, तस्वीर।

पुत्रीज (सं.) लड़कीका लड़का, बेटीका बेटा, नाती, भानजा, बहिन का पुत्र। [पुत्रिका।

पुत्रीय (वि.) लड़कीका, बेटीका,

पुत्रेष्टि (सं) पुत्रकी इच्छा के लिये किया हुवा यज्ञ इत्यादि पूजापाठ, संतानार्थ यज्ञ, संतान, प्राप्तिका उपाय विशेष। [की चाह।

पुत्रेषणा (सं) पुत्रकी इच्छा, बेटे

पुद्‌गळ (सं.) आत्मा, देह, शरीर, जैनियोंके मतसे चैतन्य विशिष्ट, पदार्थ विशेष, सुन्दराकार, रूपादि विशिष्ट द्रव्य, अच्छे आकारवाला।

पुनम (सं.) पूनम, पूनों, पौर्णिमा, शुक्लपक्षका अंतिमदिन, तिथिविशेष

पुनरागमन (सं.) द्वितीयवार आगमन, फिरआना, लौट आना, लौटना। [स्त्री।

पुनर्भु (सं) द्विरूढा, दोबार व्याही

पुनर्विवाह (सं.) द्वितीयवार विवाह, दूसरा विवाह, स्त्री का द्वितीय विवाह, (पति का पता न लगने पर पति के मरजाने पर, संन्यासी हो जाने पर, नपुंसक प्रतीत होने पर, और पतित होने पर किया हुवा स्त्री का दूसरा विवाह।)

पुनित (वि.) पवित्र, पावन, सुन्दर, श्रेष्ठ, उत्तम, चारू पुनीत।

पुनेम (सं.) पौर्णिमा, पूनम, पूनों, शुक्लपक्ष की अंतिम तिथि।

पुप (सं.) पुरष, नरजाति, रूई में से उड़ती हुई बारीक रज वक्ष के ऊपर की रोमावली, वक्ष के रोम।

पुमतुं (सं.) देखो फुमतुं।

पुमडुं (सं.) कान के छिद्र में डालने की रुई, देवताओं के आगे जलाई जाने वाली रूई की फूलबत्ती, रूई की टुकड़ा, (वि.) थोड़ा, कुछ, सूक्ष्म।

पुरःसर (वि.) आगे जानेवाला अग्रगामी; अग्रेसर, अगुवानी।

पुर (सं.) शहर, ग्राम, कस्बा, अधिक व्यापार और दुकान युक्त गांव, घर, गेह, गृह, मकान, देह, शरीर। (वि.) समस्त, सारा,

संपूर्ण, (सं) पुष्कल जल, नदी की बाढ़, रेल देखो पूर।

પુરણે (सं.) टुकड़ा, छोटा हिस्सा, कागज का टुकड़ा, खण्ड।

પુરણ (सं.) अन्दर भरने का मावा, मसाला, कचौरी आदि में भरने का मसाला। पूर्ण, समस्त संपूर्ण।

પુરણપોળી (सं.) वेड़मी, वेड़ई, कचौरी, मसालेदार पूरी।

પુરણી (सं.) गड्ढे में पत्थर मिट्टी इत्यादि की भरती, भराई, पूर्णता।

પુરતલ (वि.) इच्छा पूरी करने वाला, दाता, पूरक, पूर्ण कर्त्ता।

પુરતું (वि.) पर्याप्त, काफी, उचित, मुनासिफ, ठीक, पूर्ण।

પુરબિયો (सं.) उत्तर भारत का रहनेवाला, पूर्व दिशा का वासी मनुष्य।

પુરવણી (सं.) उपसंहार, न्यून-तापूर्त्ति, भरती, सप्रमाणसिद्धि, पूर्ति।

પુરવાર (सं.) सप्रमाण सिद्ध, बाकला शहादत से साबित।

પુરવાર કરવું (क्रि.) सप्रमाण सिद्ध करना, साबित करना। सिद्ध करना। [गवाही।

પુરવારી (सं.) प्रमाण, साक्षी,

પુરવી (सं.) एक प्रकार की रागिनी जो संध्या समय गाई जाती है, पूर्वी।

પુરવું (क्रि.) पूरना, भरना, गड्ढे में मिट्टी पत्थर आदि डालना, किसी बर्तन को परिपूर्ण करना, जमीन लीप कर उस पर चित्र बनाना, बढ़ाना, चकचकित करना, उकसाना डाटना, कैद करना, बन्द करना, असंपूर्ण को पूर्ण करना, देना, सामने करना। पहचवान होना, पहुंचाना, पूर पटकना, पेश करना।

પુરપાતન (सं.) देखो પુરૂપાતન।

પુરૂષાતન (सं) पुरुषत्व, मरदाई, शौर्य, पुरुषत्व, वीरता।

પુરસીસ (सं.) पूछताछ, तलाश, अनुसंधान, प्रश्न।

પુરસ્સર (क्रि. वि.) आदि सहित, इत्यादि वगैरः प्रभृति, पूर्वक, साथ में, सहित।

પુરાત-ભાર્થી (स) सर्गकी, बही खातेमें जमा उधार करते हुए जो सिलक में बाकी रहे।

પુરાણ (सं.) व्यासादि मुनिप्रणीत ग्रंथ विशेष, इतिहास ग्रंथ, अठारह पुराण (पुराण तीन भागों में विभक्त हैं राजस, तामस और सात्विक, तामस पुराण, मत्स्य, कूर्म, लिंग, शिव, स्कद और अग्नि, राजसपुराण, ब्रह्मांड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, भविष्य, वामन और ब्रह्म, सात्विकपुराण विष्णु, नारद, भागवत, गरुड, वाराह और पद्म) । (वि.) प्राचीन, पुराना, जीर्ण ।

પુરાણ કાઢવું (क्रि.) किस्सा छेड़ना, बात कहना. वर्णन करना लम्बी बात कहना ।

પુરાણું-તન (वि.) प्राचीन, पूर्व कालीन, चिरन्तन, पुराना, अगले समय का, पहिले बर्खों का, जीर्ण ।

પુરાંત (सं.) कांटा, तुला, शेष भाग।

પુરાવું (क्रि.) भराना, पुराना, गड्ढे इत्यादि को बराबर कर देना ।

પુરાવો (सं.) प्रमाण, गवाही, साक्षी, सुबूत, संतोष, तसल्ली ।

પુરી (सं.) नगरी, शहर, कस्बा, गांव, पुरवा, जगन्नाथपुरी । पूरी, लुचई, सोहारी, पकवान, विशेष, घी में तली हुई रोटी ।

પુરીષ (सं.) विष्ठा, मल, गूह, नरक, पाखाना, गू, बीट ।

પુરૂં (वि.) पूर्ण, पूरा, भरापूरा, सम्पन्न, पर्याप्त, समाप्त, काफी, ठीक, (सं.) पुरा, मोहल्ला, गांव के पास का छोटा गांव ।

પુરૂં કરવું (क्रि.) पूरा करना, पूर्ण करना, संपूर्ण करना, समाप्त करना। [होना ।

પુરૂં થવું (क्रि.) पूर्ण होना, समाप्त

પુરૂં પાડવું (क्रि.) येनकेन प्रकारेण करना, पूरा पटकना, जुटाना, पूरा करना ।

પુરે પુરૂં (वि.) संपूर्ण, कुछभी शेष नहीं, सब, तमाम, बिलकुल ।

પુરોડાશ (सं.) यज्ञीयहवि विशेष, हवनका अवशेष, हविष, यज्ञप्रसाद।

પુરોહિત (सं.) ऋत्विक, पुरोधा, याजक, ब्राह्मण, उपाध्याय, ब्राह्मण।

પુર્ખ-રખ (सं.) पुरुष, मर्द, जन ।

પુલ (सं) देखो પૂલ

પુલક (सं) रोमांच, रामोद्भेद, शरीर के बाहिर और भीतर हर्ष जन्य विकार ।

પુલકિત (वि.) रोमाञ्चकारी ।

પુલાક (सं.) संक्षेप, बहादुरी, वीरता, चावलों का तुष, शस्य हीन धान्य।

પુલિન (सं.) द्वीप, पानी के बीच में घिरी हुई जमीन, नदीका मध्य तट, किनारा जलसे निकला हुवा भाग, तीर, तट।

પુળી (सं) घासकी पूली, घासका बंधा हुवा छोटा पूला, घास की पिंडी।

પુષ્કર (सं.) भूरा कमळ, सप्तद्वीपों में से एक, आकाश, अजमेरके पास एक तीर्थ, इसनामका तलाव, आकाश जल, कमल, असिकोष, तलवार की म्यान, सारस पक्षी, वरुण पुत्र, पर्वत विशेष, रोग विशेष। [धूल।

પુષ્ટ (सं.) पुष्ट, मोटा, ताजा,

પુષ્પ ગર્ભતંતુ (सं.) ऋतु धर्म स्रावक, नस, रजतंतु।

પુષ્પ આવવો (क्रि.) आशा बंधना उम्मीद होना, रजोदर्शन होना।

પુષ્પરાગ (सं.) पुखराज, पद्मराग मणि, गोमेद, मणि विशेष, एकरत्न।

પુષ્પરાજ (सं.) पूर्ववत्।

પુષ્પવતી (सं.) ऋतुमती स्त्री वह रजस्वला स्त्री जिसे रजस्राव होता हो, न छूनेकी।

પુસ્ત (सं.) उपज, औलाद, वंश, पीढी, खान्दान, कुल।

પુસ્તકશાળા (सं.) पुस्तकालय, लायब्रेरी, जहां बहुत सी पुस्तकें संग्रह हों।

પુસ્તદરપુસ્ત (क्रि. वि.) वंश परंपरा, पीढी दर पीढी। [यौग।

પુસ્તપના (सं.) आश्रय, सहारा,

પુસ્તી (सं) कागज़कादुकड़ा, दीवारपर किया हुवा चूनेका लेपन (दृढताके लिये)

પુસ્તો (सं.) घाट, पानीके ठहराने के लिये बांधा हुवा चूने आदिका बन्ध।

પુળી (सं.) देखो पुळी

પુળો (सं.) घासका पूला, घासका बण्डल, घासकी पिंडी

પુળો મુકવો (क्रि) खराब करना, दूर करना, सुलगाना, भड़काना।

પુળોઉઠવો (क्रि.) सुलगना, खराब होना, नाशहोना, निरर्थक होना, जलजाना, बुरी उत्पत्ति होना।

પૂળોમુકવો (क्रि.) नाशकरना, भड़काना सुलगाना, नाम बिगाड़ना।

પૂકરવું (क्रि.) मूतना, पेशाबकरना।

પૂંકાર (सं.) दोनो ओंठ बंद करके बीचमेंसे, तिरस्कार प्रदर्शनार्थ हवा निकालना, (तुच्छता प्रदर्शितार्थ)

પૂછડી (सं.) देखो પુછડી

પૂછડાં ભાચવાં (क्रि.) लम्बे लम्बे खिताब मिलना, लम्बी लम्बी उपाधि लगना, (दिल्लगीमें बोलाजाता है)

પૂછડામાં પેસવું (क्रि.) किसी श्रीमान् या बड़े आदमी के आश्रय रहना ।

પૂછડું એકજ બાકી છે = बिना पुच्छका पशु, एक दुमकी कसर ।

પૂછડું ફુટીજવું (क्रि.) दस्त लगना, भयसे घबरा जाना, डरना ।

પૂછડું પકડવું (क्रि.) पीछे लगना पीछे पीछे फिरना, आश्रय लेना ।

પૂછડું ફાટવું (क्रि.) हृदय फटना, डरना, घबराना, भयसे मुँह पीला होना ।

પૂછડું બળવું (क्रि.) मिर्चेलगना गुस्से होना, अप्रसन्न होना, गुस्से में व्याकुल होना, घबराना ।

પૂછડે તણાવું (क्रि.) विचार के अनुसार होना ।

પૂછવું (क्रि) पूछना ।

પૂછ્યાશિવાય પાણી પણ ન પીવું (क्रि) पानी भी पीना तो बिना सलाह के नहीं पीना, अपनी बुद्धि काममें नलाकर दूसरों से बिना पूछे कोई कार्य न करना ।

પૂજ (सं.) शून्य, बिन्दु, बोंट, पुकस्टाप, अनुस्वार, जैन साधु ।

પૂજક (सं.) पुजारी, देवलक, अर्चक, मंदिरों की पूजा करने वाला । [धन, सेवा, टहल ।

પૂજન (सं.) पूजा, अर्चन आरा-

પૂજવું (क्रि.) देखो પુજવું

પૂજભાઇ (वि.) गुणहीन, अयोग्य रहित, निकम्मा । [करना ।

પૂજા લેવી (स.) पूजन स्वीकार

પૂજા વાળવી (क्रि.) बहुत दिनों से चालू पूजन समाप्त करना ।

પૂજા કરવી क्रि.) पूजा करना, खूब पीटना कुटाई करना, છાજુના દેવને ખાસડાની પૂજા अर्थात् भ्रष्ट देवकी भ्रष्ट पूजा, बड़ाहो किंतु नालायक हो तबयह वाक्य प्रयोग किया जाता है।

પૂજારાધે (वि.) पूजने योग्य, पूज्य माननीय, पूजाई, पूजनीय ।

પૂજારી (सं.) पुजारिन, पूजक पूजा करने वाली, देवलक (औरत)

પૂજારો (सं.) पुजारी, पूजा करने वाला, देवलक, पूजक, अर्चक ।

પૂંજી (सं) मूल्य धन, स्टॉक, केपीटल ।

પૂંજીવાળું (सं) धनी, द्रव्यवान, ।

પૂજિત (वि.) अर्चित, पूजा किया हुवा ।

પૂંજો (सं.) कचरा, धूल, गर्द, मैल।

પુંજોપચાર (सं.) देव पूजा के लिये सामग्री जल, गंध पुष्प चाँवल इत्यादि। पूजा, पूजन।

પૂઠ (सं) पीठ, पृष्ठ, पिछला भाग, परोक्ष, अनुपस्थिति।

પૂઠ ફેરીને બેસવું (क्रि.) विरुद्ध होकर बैठना, मुंह छुपाकर बैठना।

પૂઠ પાછળ બોલવુ (क्रि.) पीठ पीछ कहना, परोक्ष में कहना।

પૂઠ બતાવવી (क्रि.) पीठ दिखाना हार जाना, लड़ाई मे से भाग जाना।

પૂઠ ઠેકાણું (सं) उलटा ठिकाणा, स्वसुर पक्ष, ससुराल।

પૂઠ પાછળ (क्रि. वि.) बाद में, पीठ पीछे।

પૂઠ પુરવી (क्रि.) मदद देना, सहायता देना।

પૂઠે વાળતું છોકરૂં (सं.) छोटेसे छोटा, उत्तरावस्था मे उत्पन्न (बालक)।

પૂઠ વાળીને ન જોવું (क्रि.) वहम न होना, विश्वास होना, यकीन होना।

પૂઠિયું (सं.) देखो पुઠિયાં

પૂઠિયાં દારવાં (क्रि.) साहस छूट जाना, हिम्मत छूट जाना।

પૂઠિયાંવ છુટી જવાં (क्रि.) डरजाना, घबराजाना, भयभीत होना।

પૂઠું (सं.) चूतड़, कूल्हा, पुट्ठा, किताब के दोनों ओर लगाया हुआ पुष्टि पत्र, पुठ्ठा (किताब का), जिल्द, आवरण पृष्ठ।

પૂઠે (क्रि. वि.) पृष्टे, पीछे, बादमें, पिछाड़ी, पश्चात्, पीठपर।

પૂઠેલાગવું (क्रि.) पीछे लगना, दुखदेनेका प्रयत्न करना।

પૂડો (सं) शहदकी मक्खी के छत्ते समान छिद्रयुक्त पदार्थ, पूवा, मालपूवा, एक प्रकारका पकवान, गुलगुला। [टेढा।

પૂણુઆદું (सं. वि.) ओछा, अपूर्ण

પૂત (सं.) पुत्र, बेटा, सुवन, तनय, आत्मज।

પૂનમ (सं.) पौर्णिमा, पूनो, शुक्ल पक्ष की अंतिम तिथि, पूर्ण चन्द्र तिथि। [गेहूं।

પૂનમિયા ઘઉં (स.) एक प्रकार के

પૂન (सं.) देखो પુણ્ય

પૂર (वि.) पूरण, परिपूर्ण, भरा हुवा बाढ, मोटाई, कद, पूर्ण।

પૂરણ (वि.) देखो पूर्ण

પૂરણપોળી (सं.) कचौरी, बेढई, मसालेदार पूरी, पकवान विशेष।

પૂરત (सं.) पल्ला, पहरावनी।
પૂરપાટ (क्रि. वि.) झपाटापूर्वक, अति शीघ्रता, बहुत जल्दी, उतावळ। [फाज़िल ।
પૂરવીણુ (सं.) गुणी, प्रवीण, दक्ष,
પૂરી (सं) देखो પુરી
પૂરૂ (वि.) देखो પુરૂં
પૂરું પડવું (क्रि.) चाहिये उतना प्राप्त होना, काफी होना, पूरा पड़ना।
પૂરું પાડવું (क्रि.) पूर पटकना, अधूरे को पूरा करना, ला देना। पालन करना।
પૂરું કરવું (क्रि.) मार डालना, अंत करना, समाप्त करना, पूरा करना।
પૂર્વક (उप.) साथ, सहित, युक्त।
પૂર્વજ (सं.) अग्रज, जेष्ठ भ्राता, बड़ा, अपनी उम्र मे बड़ा, पुरुषा, बाप दादे। [पहिले का जन्म।
પૂર્વજન્મ (सं.) इस जन्म के
પૂર્વજિયું (सं) कार्तिक मास में पूर्वजों के उद्धारार्थ की गई किया।
પૂર્વદત્ત (वि.) पहिले का दिया हुवा, पूर्व जन्म का दिया हुवा, गत जन्म में दिया हुवा।
પૂર્વ દિશા (सं.) प्राची दिशा, वह दिशा जिस में सूर्योदय होता है।
પૂર્વદ્વાર (सं.) पूर्व दिशा की ओर का द्वार, मुख, पूरब का दरवाजा। [तक।
પૂર્વપશ્ચિમ (वि.) पूर्व से पश्चिम
પૂર્વપદ (सं.) आज्ञा, हुक्म, विधि नियम, कायदा, प्रमाण, दस्तूर, कहावत, मसला, स्थिति।
પૂર્વપક્ષ (सं) पहिला पखवाड़ा. मास का पूर्वार्द्ध, शुक्लपक्ष, (गुजरात में) कृष्णपक्ष (भारत वर्ष के युक्त और मध्य प्रदेश में) चर्चा, शास्त्रीय संशय के निराकरण के लिये किया हुवा प्रश्न, सिद्धान्त विरुद्ध कोटि, वचन, प्रतिज्ञा शिकायत।
પૂર્વરંગ (सं.) नाटक में मगलाचरण, नांदी वगेरः का पाठ।
પૂર્વરાગ (सं.) नायक नायिका का वह प्रीतियुक्त भाव जो मिलाप के पश्चात् हृदय में उत्पन्न होता है, दर्शन-श्रवण जन्य पारस्परिक अनुराग।
પૂર્વરાત્ર (सं.) संध्याकाल से मध्य रात्रि तक के बीच का समय, पहली रात।
પૂર્વવત્ (क्रि. वि.) पहिले के समान, पूर्व तुल्य, पूर्वानुसार।

પૂર્વવય (सं) मनुष्य के जीवन का पूर्व प्रथम भाग । पहिली उम्र ।

પૂર્વવાદી (सं.)-मुद्दई, वादी ।

પૂર્વા (सं.) ग्यारहवां नक्षत्र, प्राचीदिक प्रथम, पूर्वज, पूर्व पुरुष पुरवा, पूर्वा फाल्गुणी, पूर्वाषाढ और पूर्वा भाद्रपद, प्रथम जात ।

પૂર્વાપર (वि.) अगला और दूसरा, अगला और पिछला ।

પૂર્વાર્દ્ધ (सं.) पहिला आधा, दोखंडों में का एक पहिला खंड ।

પૂર્વાવલોકન (वि.) दूर दृष्टि, दीर्घ दृष्टि दूरन्देशी । ...रबी ।

પૂર્વિ (सं.) एक प्रकार की रागिनी

પૂર્વે (क्रि. वि.) प्रथम, पहिले, उपरोक्त, ऊर्द्धकथित ।

પૂર્વે થી (क्रि. वि.) पहिले से, प्राचीनकाळ से, पहिले जमाने से ।

પૂર્વોક્ત (क्रि. वि) प्रथम कथित, पहिले कहा हुवा उपरोक्त ।

પૂર્વોત્તર (वि.) अगला पिछला, पूर्व से उत्तरतक ।

પૂલ (सं.) पुल, सेतु, बांध, नदीनाला, गड्ढा, झील इत्यादि को पार करनेके लिये लकड़ी पत्थर इत्यादि का बनाहुवा पुल ।

પૃચ્છક (वि.) शोधक, पूछने वाला, जांचनेवाला, पूछताछ करनेवाला ।

પૃચ્છા (सं.) पूछपाछ प्रश्न सवाल

પૃથા (सं.) रीति, रवाज, रस्म, प्रथा, चाल । [हाकिम ।

પૃથીનાથ (सं.) राजा, बादशाह,

પૃથી-થ્વી (सं.) भूमि, धरती, जमीन, धरणी, धरित्री, जिस पर समस्त प्राणी पर्वत इत्यादि और अन्दर अनेक प्रकारके पदार्थ भरे हैं वह गोलाकार जड़ पदार्थ, जिस पर हम लोग रहते हैं, आकाश में सूर्य के आसपास फिरनेवाला एक ग्रह, पांच तत्वों में से एक, पिंगळ शास्त्र में इस नामका एक मात्रिक छन्द जिस में १७ मात्राएं होती हैं ।

પેં (क्रि. वि.) से, होते ।

પેંગડું (सं.) घोड़े की ज़ीन का पावंडा, रकाब, पायड़ा ।

પેંગડામાં પગ ઘાલવો (क्रि.) जूती में पग देना, जूतियां पहिनना ।

પેંશું (वि.) निर्बल, अशक्त, कमजोर, दुर्बल, शक्तिहीन, बलहीन।

પેંચેપેંચે (क्रि. वि.) गुपचुप, गुपचुप, चुपचाप, चुपचुप ।

પેંડું (सं.) वह हुंडी जो असली के खोजाने पर दुबारा लिखी जाये।

પેંડો (सं.) मावा में शक्कर डाल कर बनाई हुई गोल गोल चपटी मिठाई, पेड़ा, मिठाई विशेष मिट्टी का गोंदा जो चाक पर रक्खा जाता है।

પેદાશ (वि.) कमाताहुवा, कमाऊ।

પેંધવું (क्रि.) एक बार प्राप्त हो जाने पर दुबारा फिर उसकी इच्छा करना। [व्यसन।

પેંધું (सं.) टेव, आदत, लत,

પેંપી (सं.) शेखी, गर्व, दर्प, घमण्ड। [आनलेना।

પેખવું (क्रि.) देखना, देखकर

પેખામખોર (वि.) बहानाखोर। फैल फितूर करनेवाला।

પેગંબર (सं.) ईश्वर प्रेरित ज्ञानवान पुरुष जो ईश्वराज्ञासे लोगोंको बोध देता है, अवतारी पुरुष, महात्मा।

પેગામ (सं.) सम्वाद, खबर, सन्देश, समाचार।

પેચ (सं.) घुमाव, मरोर, कील, आंटा, ऐंठ, कांटा, स्क्रू, छुपीयुक्ति करामात, कला, प्रपंच, उपाय, छल, फंदा, जाल, चालाकी।

પેચ ઢીલો થવો (क्रि.) नुकसान हो ऐसा काम होना, शरीरकी तन्दुरस्ती नष्ट होने पर यह वाक्य प्रयोग होता है, पागल होना, मस्तिष्क बिगड़ना, शक्ति कम होना, काममें शिथिलता आना।

પેચરમવા (क्रि.) ठगना, छलकरना, कपट करना, प्रपंच रचना,

પેચ લડાવવા (क्रि.) पतंगकी डोरी दूसरी पतंगकी दोरीमें उलझा देना, कपट व्यवहार करना। [निर्बल।

પેચક (वि.) पतला, दुर्बल,

પેચા (वि.) खटपटी, लुच्चा, लबार।

પેચોટી (सं.) नाभिके नीचेकी सबनसोंकी बंधनरूप रक्तकी गांठ, ढूंढी, नाभि।

પેજ (सं.) चांवलोंका मांड, चांवलोंका पानी, पृष्ट, पन्ना, सफा, वर्क।

પેજાર (सं.) जूता, पदत्राण, पयरखी।

પેટ (सं.) उदर, जठर, शरीरका छाती और पेडू के बीचका भाग, वह भाग जिस में खाया पीया पाचन होता है, कोठा, अमाशय,

होजरी, गर्भस्थान, (जिसके) गर्भ, हमल, गम, कूखी, सन्तान, बालक, लड़कालड़की, आजीविका, गुजर, निर्वाह, दस्त, टट्टी, पाखाना, मन, अंतःकरण, हृदय।

પેટ કરાવે વેઠ निर्वाह के लिये परिश्रम करना पड़ता है।

પેટ ચોળીને શૂળ ઉપજાવવી (क्रि.) अपने आप दुख कर लेना, अपने पैरों कुल्हाड़ी मारना, आ बैल मुझे मार करना।

પેટ અવતાર લઇએ એવું (वि.) सज्जन, बहुत भला, अच्छे स्वभाववाला।

પેટ આવવું (क्रि.) पैदा होना, उत्पन्न होना। [पाखाना होना।

પેટ આવવાં (क्रि.) दस्त लगना,

પેટ ઉચું આવવું (क्रि.) निहाल होना, फायदा होना, संतोष होना, फल प्राप्ति होना।

પેટ ખોલવું (क्रि.) मनकी बात कहना, जी की कहना, गुप्त बात प्रकट करना।

પેટ ધરાવી મુકવું (क्रि.) उदर पोषण न करना, पेटकी परवाह न करके भूखमरना।

પેટ બગડવું (क्रि.) कोष्ठबद्ध होना, अजीर्ण विकार होना, अपच होना।

પેટ ચાલવાં (क्रि.) अर्थ विरोध होना, दस्त बहुत लगना, बार बार पाखाने जाना।

પેટ છુટી જવાં (सं.) संग्रहणी या अतिसार हो जाना, बहुत दस्त लगना।

પેટ જુદાં થવાં (क्रि.) मित्रता छूटना, विचार बदलना मन अलग होना, अप्रीति होना, मन फटना।

પેટ ટાઢું-ઠંડું-થવું (क्रि.) सुखी होना, खुश होना, संतोष पाना।

પેટ દાબીને રેહેવું (क्रि.) सहन करना, शांत हो रहना, जी मारकर रहना।

પેટ તણાવું-ફાટવું (क्रि.) अधिक खालेने से व्याकुलता होना।

પેટ થવું (क्रि.) पैदा होना, जन्मना।

પેટ પડવું (क्रि.) गर्भ में आना, पेट में आना, पेट में पड़ना।

પેટ પથરો પડવો (क्रि.) (किसी शठ-मूर्ख, संतान के लिये यह वाक्य प्रयोग किया जाता है,) पेट में से पत्थर निकला।

પેટપર છરીમૂકવી (क्रि.) किसी के उदर पोषण के जरिये में बाधा डालना, पेट पर लात मारना।

પેટપર પગ-પાડું મુકવું (क्रि.) किसी की आजीविका को हानि पहुंचाना, निर्वाह करनेके मार्ग में अटकाव डालना।

પેટ પાકવું (क्रि) जन्म ग्रहण करना, हंसते हंसते) पेट दुखना।

પેટ પાણી પડવા ન દેવું (क्रि.) जमने न देना, हैरान करना, कष्ट देना, संतापित करना।

પેટ પેટલાદ જવું (क्रि.) अत्यंत भूख लगना, पूर्ववत्, पेटमें कौवे बोलना, भूखके मारे पेट पीठ की रीढके जा लगना।

પેટ પાતાળ જવું (क्रि.) पूर्ववत

પેટ ફુલવું (क्रि.) जलन्दर रोग होना, गर्भ रहना, पेट रहना।

પેટ ફોડવું (क्रि. गुप्त बात को प्रकट करना, मनकी बात कहना।

પેટ બળવું (क्रि.) डाह होना, ईर्ष्या होना, जलन होना, दूसरे को देख कर स्पर्द्धा करना।

પેટનો બળ્યો (वि.) निराश, क्रोधसे, व्याकुल, क्रोधातुर, आशाहीन।

પેટ બાળવું (क्रि.) पेट भरकर नहीं खाना, पूरा न खाना, अध पेट रहना, भूखा रहना।

પેટ ભરવું (क्रि.) जैसे तैसे कर के उदर पोषण करना, निर्वाह करना, गुजर लायक कमाना।

પેટ ભરીને ખાવું (क्रि.) खूब खाना ठस कर खाना।

પેટ મોટું હોવું (क्रि) मनकी गुप्त बात मनही में रखना, उदार होना, बड़े पेट का होना।

પેટ વાંસા સાથે ચોંટી જવું (क्रि.) भूख के मारे पेट पीठ की रीढ से जा लगना।

પેટ સરખું પાલું (वि.) स्वार्थी, मतलबी, खुद का फायदा देखने वाला।

પેટ સાંકડું છે कंजूस है, कृपण है, ओछे पेट का है, गुप्त बात दिल में नही रहती।

પેટની આગ (सं.) अंतःकरण की चिंता, गुप्त चिंता, मानसिक चिंता,

પેટની પત્રાળી થવી (क्रि.) भूख के मारे पेट लग जाना, पेट पाताल जाना।

પેટની પૂજા કરવી (क्रि.) भोजन करना, खाना, भक्षन करना, पेट भरना।

પેટની બાત પેટમાં રહી જવી (क्रि.) सोची हुई बात पूरी न पड़ना, अभीष्ट कार्य सफल न होना। मनकी मनमें रह जाना।

પેટને ભાડું આપવું (क्रि.) शरीर के निर्वाहार्थ कुछ भी खा लेना, पेट की ज्वाला को येन केन प्रकारेण शांत करना ।

પેટનો પડદો (सं.) गुप्त बात, गुप्त विचार, छुपा रहस्य, गुप्त भेद ।

પેટના ભેદ (सं.) भेद, मर्म, मनका पार, दिलके कलुषित विचार ।

પેટમાં આગ લાગવી (क्रि.) क्षुधा लगना, भूख लगना, ईर्ष्या होना, द्वेष होना ।

પેટમાં આમળો (सं.) दिल में आंट, बैर, द्वेष, ईर्ष्या, टेक, किसी को नुकसान पहुंचाने के लिये पेट में आट ।

પેટમાં કરમીઆ બોલવા (क्रि.) भूख लगना, पेट में बिल्ली लड़ना ।

પેટમાં કૂવા (सं.) भूख के कारण पेट का संकोचन ।

પેટમાં કોળ બોલે છે भूख के मारे पेट की आंते बोलती हैं, पेट में कौवे लड़ते हैं ।

પેટમાં તેલ રેડવું (क्रि) आतंक पड़ना, क्रोध में व्याकुल होना, भय से चौंकना, देख के कुढना, द्वेष करना । [शत्रुता है, दुस्मनी है ।

પેટમાં દાંત છે बैर है, द्वेष है,

પેટમાં દુખવું (क्रि.) किसी कार्य को करने के लिये आनाकानी करना । [-भूख लगना ।

પેટમાં ધાડ પાડવી (क्रि.) खूब-

પેટમાં પગ-ટાંટિયાં (सं.) हाथ सुमरनी बगल कतरनी, देखने के नम्र किंतु अव्वल नम्बर के हरामी, भेड़ मे भेड़िया ।

પેટમાં પાળી કાતી (सं.) कपट, बैर बुद्धि, दिली डाह, हार्दिक द्वेष ।

પેટમાં પેસવું (क्रि.) पेट में घुसना, विचारों में ऐक्यता करना, किसी के मन का पता लगाना, किसी किसी के विचारों को जान लेना ।

પેટમાં પેસી નીકળવું (क्रि) मन की बातें जानना, मर्म जान लेना, पार पाना ।

પેટમાં બાર વાગવા (क्रि.) खूब कड़ाके की भूख लगना खूब भूखे होना । [पूर्ववत ।

પેટમાં બિલાડા આળોટવા (क्रि.)

પેટમાં રાખવું-સમાવવું (क्रि) गुप्तरखना, अप्रकट रखना, सहनकरना, छुपारखना, गले उतारना, सामने उत्तर न देना, जो कहे सो सुनते जाना ।

પેટમાં ઉતારવું (क्रि.) सहन करना, पचे उतारना, समझा कर दिलमें जमाना।

પેટમાંથી ઓઝરી કાઢવું (क्रि.) सबकुछ कह देना, नकहने योग्य भी कहदेना, बिना विचारे मनकी बात कह देना।

પેટમાં હાથ હાથના ખાડા પડવા (क्रि.) खूबही भूख लगना, तड़ाकेकी भूख लगना,

પેટમાં શીખી નીકળ્યું' નથી पेटमेंसे कोई भी सीखकर नहीं आया है।

પેટે પાટા બાંધવા (क्रि.) भूखे रहना, मक्खीचूस, कंजूस, कृपणता, खानानपीना।

પેટે પોટલું બાંધવું (क्रि.) खूब पेट भरके खाना जो गठरीसी दिखाई पड़े।

પેટનું છોકરું (सं.) आत्मज, बेटा, पुत्र, तनय, खुदका बालक, अपनापुत्र।

પેટ ભરીને (क्रि. वि.) धापकर, खूब खाकर, तृप्तहोकर, पूर्ण होकर।

પેટ પર (क्रि. वि.) जितना चाहिये जितना दिखे, बहुत, पुष्कल।

પેટ બેઠા ખાને सुखी होना, तुष्ट होना। [बैठक, पाखानेखाना।

પેટ બેસણું (क्रि. वि.) पेटके बल

પેટ ભરું (वि.) स्वार्थी, पेटू पेटार्थी, अपने पेटकोही भरनेवाला।

પેટવવું (क्रि.) सुलगाना, जलाना, प्रज्ज्वलितकरना।

પેટવું (क्रि.) पूर्ववत, सुलगना, जलना, प्रज्ज्वलित होना।

પેટાખાતું (सं.) एक नामके खाते की विगतमें दूसरे नामका अलग डाला हुवा खाता।

પેટાભાગીયો (सं.) बड़े हिस्से दारका हिस्सेदार।

પેટા રકમ (सं.) जो छोटी छोटी रकमों के योगसे बनी हो वह रकम।

પેટારો (सं.) पिटारा, टिपारा, बड़ा बक्स, मंजूषा।

પેટિયું (सं) दैनिक वेतन, नित्य का पेटके खानेका खर्च, अन्नक्षेत्र, सदावर्त, सीधा, आटासमान।

પેટું (सं.) एकाधी बड़ी रकम-की विगत में आनेवाली छोटी रकमें, (हिसाबमें) बड़ी वस्तुमें आनेवाली छोटी छोटी वस्तुए,

म्यानके बीचका भाग, बदला, एवज। [स्थान में, जगहमें।
પેટે (क्रि. वि.) एवज में, बदलेमें
પેઠું (क्रि.) घुसा, प्रविष्टहुवा, दाखिल।
પેઠે-પેઠમ (क्रि. वि) इस प्रकार, से, तरह, रीतिसे, ऐसे, जैसे।
પેંડો (सं.) एक प्रकारकी मिठाई जो मावे और शक्कर के मेलसे गोल और चपटी तय्यार की जाती है, पेड़े।
પેંડો મળવો (क्रि.) रुख्सत होना, छुट्टी पाना, फुरसत होना।
પેઢી (सं.) शर्राफ की दुकान, पीढी, कुटुम्ब, गोत्र, वंश।
પેઢી દર પેઢી (क्रि. वि.) वंश परम्परा, प्रत्येक पीढी, पीढी दर पीढी।
પેઢીઓગત (वि.) वंश परंपरा।
પેઢીનામું (सं.) वंशावली, कुल वर्णन। [वंश नाशक।
પેઢી પંચક (सं.) वंश निकंदन,
પેઢું (सं.) गुह्येन्द्रियके ऊपरका और पेटके निचेका भाग।
પેણી (सं.) कढाई, लोहा तांबा पीतल का बना हुवा पात्र जिसमें पूरी इत्यादि बनती हैं।
પેણો (सं.) कड़ाह, बड़ी कढाई.
પેળડો (सं.) मिठाई विशेष, पेडा, घूंसा, मुक्का, मुष्टि, सन्दूक
પેંત (सं.) सातका संकेत।
પેંતાન (सं.) ढोंग, फरेब, कपट, छल।
પેદ (सं.) कच्चरघाण, कुचलन।
પેદરપે (क्रि. वि.) क्रमशः धीरे धीरे, शनैःशनैः, आहिस्ता, आहिस्ता।
પેદા (क्रि. वि.) उत्पन्न, जन्मा हुवा, नया आया हुवा, शोधित, बनाया हुवा, तय्यार किया हुवा, प्राप्त किया हुवा। [बनाना।
પેદા કરવું (क्रि.) उत्पन्न करना,
પેદા થવું (क्रि.) पैदाहोना, उत्पन्न होना।
પેદાશ-પસ (सं.) उत्पत्ति, जन्म, प्राप्ति, कमाई, उपज, फल।
પેદાસ કર (सं.) आमदनी पर कर, इनकमटेक्स।
પેધવું (क्रि.) आदत होना, अभ्यासी होना, आदीहोना, बानडालना।
પેન (सं) कलम, इंग्रेजी लिखनेकी कलम, पत्थरकी कलम।
પેનશીલ (सं.) कागजपर लिखनेकी सीसेको पेन्सील, पेन्सिल।

पैमाओश (सं.) नाप, माप।

पेर (सं.) प्रकार, रीति, तर्ज, ढंग, तजवीज, युक्ति, स्थिति, हकीकत, खबर, हद, अमरूद, आमफल, नाशपाती, फलविशेष।

पेरणु (सं.) कमीज़, शर्ट, कुरता। [वस्त्र।

पेणु (सं.) पोशाक, पहिरने के

पेरवी (सं.) तजवीज, युक्ति,यत्न।

पेरवुं (क्रि.) देखो पेरियु बोना (बीज) प्रेरणा करना, भेजना, पठाना।

पेरां (सं.) दो गांठोंके बीचका, सांठेके टुकडे, गन्नेके टुकड़े।

पेराध (सं.) देखो पेरियुं

पेरियुं (सं.) पेरी, गनेरी, पंगोली, गन्नेकी गठानों के बीचका भाग, लिंग, उपस्थेन्द्रिय (गंवारोंका प्रयोग)

पेरु (सं.) देखो पेर

पेरे (क्रि. वि.) मुवाफिक, अनुसार, रीतिसे, ऐसा इस प्रकार।

पेलवी (सं.) पुजारी, पादरी, पुरोहित, पहेलवी नाम्नी भाषा।

पेली (सर्व.) वह (स्त्री) वह

पेलीमेर-मेर-तरफ (क्रि. वि.) वहां, परली ओर, उस तरफ, उधर, परे उस ओर।

पेलीनुं (क्रि.) वह, उसका, (स्त्री)

पेलुं (सर्व.) वह, वो, वे।

पेलो (सर्व.) वह आदमी, वह व्यक्ति, वह एक।

पेले दहाडे (क्रि. वि.) उसदिन, चौथे दिन, दो दिन पूर्व दो दिन बाद।

पेले दिवसे (क्रि. वि.) पूर्ववत्

पेश (वि.) आगे, सामने, वजनदार मुख्य पूर पड़ाहुवा, उपस्थित, बल, प्रतापी पेशा, धन्धा उद्योग, रोजगार।

पेशकश-शी (सं.) संकट समय में सहायता के लिये आधीन राजा अथवा प्रजा की ओर से दिया हुवा द्रव्य, कर, दंड चौथाई हिस्सा भाग, लगान।

पेशकार-गार (सं.) कारबारी, काम धंधा करने वाला, नाई हजूरिया।

पेश जवुं (क्रि.) सफल होना, कृतकार्य होना, कामयाब होना।

पेशवा (सं.) मुख्य प्रधान, मराठोंका सरदार, सितारेके राजा जो ब्राह्मण प्रधान पूनेमें प्रबल प्रतापी सत्ताधारी हुए हैं।

पेशवाई (वि.) पेशवाओं का शासन, वैभव, ठाठबाठ, प्रभाव।

પેશ્વાઝ (सं.) वेश्याओंकी पौशाक, रंडियों के नृत्य समय पाहिरनेकी पौशाक ।

પેશી (सं.) फलका प्राकृतिक भाग, कली, फलका भाग, उर्दकी-दाल, गर्भको दवा रहने वाला चमड़ेका टुकड़ा ।

પેશો (सं.) धंदा, पेशा, रोजगार, उद्योग, काम, व्यवसाय, व्यापार।

પેસવું (क्रि.) प्रवेश करना, अंदर आना, दाखिल होना, घुसना, धसना, बिना कहे जबरदस्ती भीतर घुस आना ।

પેસ નિકળ (सं.) आवागमन, घुसना निकलना, बारम्बार आना जाना।

પેસ્તર (वि.) पहिले, पूर्व, आगे का, आनेवाला, प्रथम, पेश्तर ।

પેસાડવું (क्रि.) ठोंसना, घुसाना, छेदना, जमाना, घुसेड़ना, बिठाना।

પેહેરણ (सं॰) एक प्रकार का वस्त्र विशेष जोकि अंगरखे या कमीज के समान बना होता है । पौशाक विशेष ।

પેહેરવેસ-વેશ (सं.) पौशाक, पहिरावा, पहनावा, रीति, चाल, प्रथा, रस्म ।

પેહેરામણી (सं.) पहरावनी, विवाह के समय की एक प्रथा, वस्त्र और द्रव्य इत्यादि की भेट ।

પેહેરાવ (सं.) पहिराव, पहिनावा पौशाक, वस्त्र धारण का ढंग ।

પેહેરાવવું (क्रि.) पहिराना, पौशाक करना, पौशाक भेट करना, पोशाक देना, के लेना ।

પેહેરેગીર (सं.) देखो પેહેરેગીર

પેહેરેદાર (स.) चौकीदार, पहिरे वाला, संतरी, रक्षक, रखवाला ।

પેહેરો (सं.) देखो પેહેરો

પેહો (सं.) गन्ने की पेरी के गांठ दार दोनों भाग काटने पर फिर किये हुए भाग या टुकड़े ।

પેહેલ (सं.) पहिल, प्रथम, आरंभ आदि, शुरू, प्रारंभ ।

પેહેલ કરવી-કાઢવી (क्रि.) प्रथम करना, उदाहरण देना ।

પહેલવાન (सं॰) योद्धा, मल्ल, वीर, बहादुर, कसरती, व्यायाम करने वाला ।

પેહેલવાની (वि.) पहलवान का कार्य, वीरता, बहादुरी, शूरता, कुश्ती, कसरत ।

પેહેલવેહેલું (क्रि. वि.) पहिले पहिले का, सब से पूर्व का, आदि का, सदा का ।

पेहेलां (क्रि. वि.) पहिले, पूर्व, प्रथम, आगे, पेश्तर, पिछला।

पेहेलुं (वि.) पहला, प्रथम, मुख्य।

पेहेलो पोहोर (सं.) दोपहरी के पूर्व, मध्याह्न काळ के पूर्व का समय। पहिला प्रहर, पहिली आठ घडी।

पेळ–पो–ळियो (सं.) अंडकोष, वृषण, फोते, [ ]न्द्रिय के नीचे के अंड। [तीन।

पै (सं.) पाई, १/१२ आना, पैसे की

पैअण (सं.) प्रतिज्ञा, वचन, सट्टा।

पैडवुं (क्रि.) देखो पेडवुं।

पैडुं (सं.) पहिया, चक्र, चका, काम का रास्ता, कार्य का नियम। छोटा सांप, चाक (कुम्हार का)

पैडुं करवुं (क्रि.) काम चलना पार पडना।

पैतुं (स.) फल का गोल पतला टुकड़ा, बच्चों के खेल में लोह या मिट्टी का गोळ।

पैशाच (सं.) पिशाच, प्रेत, विधर्मी उपदेवता, अनाचारी (वि.) पिशाच का, पिशाच सम्बन्धी।

पैशुन (सं.) चुगलखोर निन्दक, श्रावकों का १४ वां पाप स्थान। परनिंदा।

पैसा (सं.) ताम्बे का सिक्का, हेयुक्त धन, रोकड़, सम्पत्ति।

पैसाखाउ (सं) वह जो पैसे ले किंतु काम ठीक नहीं करे, विश्वास घाती।

पैसादार–वाळो (वि.) धना, धनवान, धनिक, द्रव्यपात्र, दौलत मन्द, धन सम्पन्न, श्रीमंत, मातबेर।

पैसो (सं.) तांबा का सिक्का, विशेष, तीन पाई की कीमत का ताम्बो का सिक्का, पाव आना, रुपया, धन, दौलत, द्रव्य, सम्पदा।

पैसाखावा (क्रि.) अपने स्वार्थ के लिये कोई का पैसा बिना अधि- कार के ले लेना। अनधिकार ले लेना।

पैसाखावा लेवा (क्रि.) रुपये लेकर कन्या का विवाह करना।

पैसा खोटा थवा (क्रि.) पैसे डूबना।

पैसाना कांकरा करवां (क्रि.) पैसों को पत्थर की तरह बेफिक्री से खर्च करना, फजूल खर्ची करना।

पैसानुं पाणी करवुं (क्रि.) पूर्व- वत्, पैसा बर्बाद करना, हस्तमुक्त होकर खरच करना, पानी की तरह पैसा देना।

પૈસાને ભનાણીગો કરવી (क्रि.) धन संग्रह कर रखना, उचित खर्च न करना, कंजूसी करना, कृपणता करना।

પૈસાનું પુતળું (वि.) केवळ पैसा संग्रह कर के जाने वाला, भजकलदारं का पाठ करनेवाला, धन का उपासक पैसे को ही ईश्वर समझने वाला धनवान, धनिक, धनाढ्य।

પૈસોટકો (सं.) रुपया पैसा, धन दौलत, पैसा टका।

પો (सं.) चौपड़ के पासे का एका जलसत्र, पासे का इका।

પોક-ખ (सं.) ज्वार, बाजरा, गेहूं आदि अन्नों के सिके हुए गीले ताजा दाने। ताजा ज्वार, बाजरी के सिरों (भुट्टों) को भून कर उनमें से निकाला हुवा अन्न।

પોંકવું-ખવું (क्रि.) वर वधू के ऊपर से घर के बाहिर एक प्रकार की रीति रवाज करना। वर के लिये सास की ओर से किया हुवा न्योंछावर।

પોંકિયું (सं.) हरा भुट्टा, अन्न का ताजा गीला सिरा।

પોંખણાં (सं.) लकड़ी के बनाये हुए छोटे छोटे जूठी, मूसल, रई, लोढे का तावू या सकला और शलाका इत्यादि जो वर वधू के संस्कार के लिये होते हैं।

પોંચ (सं.) देखो પોહોંચ।

પોચી (सं.) देखो પોહોંચી।

પોંચેલું-લો (वि.) देखो પોહોંચેલું

પોંદવું (क्रि.) कुरेदना, कुचलना। खुतरना, मसलना।

પોંધો (सं.) कुचली हुई वस्तु।

પોહોંચ (सं.) आगमन, पैसार, प्रवेश, पैठ, रसीद, प्राप्ति सूचक पत्र, पहुंच।

પોહોંચવું (क्रि.) पहुंचना, प्राप्त होना, चलाजाना, पूगना, पास आना।

પોહોંચાડવું (क्रि.) पहुंचाना, भेजना, पुगाना, रवाना करना।

પોહોંચી (सं.) कड़ण, कड़ा, आभूषण विशेष कलाई पर पहिनने का जेवर।

પોહોંચેલું (वि.) पहुचा हुवा, चालाक, मक्कार, छली, जाननेवाला।

પોહોંચો (सं.) पहुंचा, मणिबंध, कलाई, हाथ का एक हिस्सा।

પોખ (सं.) एक प्रकार की वनस्पति, इसको पकौड़ी, में डालते हैं, (पत्ते) मेढ़ों की मेंगनी।

પોઇસ (सं.) गाड़ी हांकने का शब्द जिससे कि मार्ग लोग हट जावें। (विस्म०) हटो, दूर हटो, सावधान।

પોએણું (सं.) कमल का वृक्ष।

પોક (सं.) जोर का रुदन, उच्च स्वर से विलाप, हाय तोबा।

પોક મૂકવી (क्रि.) रुदन करना, विलाप करना, हाय हाय करना करुणा क्रन्दन करना।

પોકળ (वि) खोखला, खाली, शून्य, निरर्थक, झूंठा, असत्य।

પોકળ ભાડ કરવું (क्रि०) रोना. रुदन करना, विलाप करना, हाय हाय करना।

પોકળી (सं.) आकाश, अस्मान, नभ, खाली, शून्य, ख, पोल।

પોકાર (सं.) हांक, गुहार, डांक, दुःर निवेदन, लम्बी आवाज,चीख़।

પોકારવું (क्रि०) खूब जोर से शब्द करना, पुकारना, गला फाड़ कर चिल्लाना।

પોકેપોક (सं.) हाय तोबाह करुणा क्रदन, रुदन, विलाप, हाय हाय (क्रि. वि.) खूबरोने वाला।

પોખરાજ (सं.) पीले रंग का हीरा, पुखराज, रत्न विशेष।

પોખવું (क्रि०) उत्तेजना पूर्वक तृप्त करना, तसल्ली देना, संतोष बंधाना, पोषण करना।

પોગળ (सं.) देखो પોકળ

પોગણી (सं.) गांठ, गठरिया, पोटली। [आकाश, पोलापन।

પોગર (सं.) खाली, पोल, शून्यता।

પોચ (सं.) सत्वहीनता, सार-हीनता, बीजरहित।

પોચળું (वि.) पचकनेवाला, गूदा रहित, सारहीन, बदम, निर्जीव।

પોચું (सं.) पोचा, मुलायम, नर्म दाबने से जोसिकुड़े। नरम, कच्चे दिलका, अधीर, नम्र, गरीब, कम-जोर, निर्बळ अशक्त, डरपोक।

પોટકી (सं.) गठरी, पोटली, पुटरिया।

પોટલિયે જવું (क्रि.)जंगलजाना पाखानेजाना, टट्टीजाना।

પોટલિયો (सं.) जो घोड़े के सामान के साथ रह सके, चपटी चमड़ेकी मशक, घी भरनेका पात्र विशेष।

પોટલી (सं.) पुटलिया, गठरी, छोटी पोट, बंडल।

પોટલું (सं.) पोट, मोट, गट्ठड़, बड़ी पुटलिया, बड़ा बंडल।

પોટલો (सं.) पूर्ववत्

પોટીસ (सं.) पुलीटस, गेहूं अथवा अलसी के आटेको पकाकर जो गुमडे पर पकानेके लिये बांधा जाता है।

પોઠ (सं.) माल भरा हुवा बन आरेके बैलोंका टोला, बैलपर माल भरनेका बोरा या थैला, टोली, समुदाय, झुण्ड, काफ़ला, साथ, संग, संघ।

પોઠિયો (सं.) महादेवका बैल, वृषभ, सांड, लद्दूबैल।

પોઠી (सं.) बड़ाबैल, सांड, वृषभ। काफला, संघ, बनजारा।

પોઢવું-ઢવું (क्रि.) सोना, शयन करना, लेटना, पौढना, मरजाना।

પોડું (सं.) पपड़ी (लीपनकी)

પોઢું (वि.) प्रौढ, पुष्ट, बळवान, साहसी, उत्साही। [प्रतिज्ञा।

પોણ (सं.) प्रण, वचन, नियम

પોણિયું (वि.) पौन के तुल्य ¾ के बराबर।

પોણિયો (वि.) एक सौमें पाव कम, ९९।।।, नन्यानवे और पौन ९९¾

પોણું-ણો (वि.) एकमें से पावकम, तीनचतुर्थांश, ¾, ।।।

પોણુંશપિયો (वि.) तीन चवन्नी, बारह आने, ।।।)

પોણ્યાઆઠ (सं.) रँडवा, नामर्द, हिजड़ा, नपुंसक, षंढ, क्लीब।

પોણું ચોઠું (वि.) अधूरा, अपूर्ण, ओछा, बांका, टेढा।

પોણોસો (सं.) पौनसौ, ७५ पिचहत्तर, सत्तर और पांच।

પોત ઉઘાડું કરવું (क्रि.) बात प्रकट करना, छुपा रहस्य प्रकट करना [बिछौना।

પોતડી (सं) छोटी धोती, बच्चेका

પોતપોતાનુ (क्रि. वि.) अपना अपना निजनिजका, हमारा ही हमारा।

પોતપોતામાં (क्रि. वि.) अपनेमें उनमें, अपने बीचमें। [निज।

પોતાની મેળે (सर्व.) खुद, स्वयम्,

પોતાનુ (सर्व) अपना, खुदका, निजका।

પોતાનુ કરી રાખવું (क्रि) अपना बना रखना, स्वाधीन कर रखना।

પોતાપણું (वि.) स्वार्थ, मतलब, खुदी, स्वलाभ, स्वहित, स्वत्व।

પોતિયું (सं.) धोति, कटिवस्त्र, पंचा, कमरके नीचे पैरोंपर हिन्दुओंके पहिरनेका लज्जा निवारकवस्त्र

પોતિયાં ઢીલાં (क्रि) घबराना, व्याकुल होना, डरजाना, भयभीत होना।

પોતિયાં છૂટી જવાં (क्रि) हिम्मत जाती रहना, होश उड़जाना, बेचैन हो जाना।

પોતિયાં છૂટી જવાં (क्रि) डरना घबराना, कलेजा फटना व्याकुल होना। [होनी।

પોતિયાં ઢેવાનાં (क्रि) व्याकुलता

પોતી (सं) धोती, धौतवस्त्र।

પોતીકું (सर्व) निजका, अपना, खुदका।

પોતું (सं.) सरकारी खजाने में नाके वसूल करके भेजा हुआ द्रव्य, चिथड़ा पानीमें भिगोया हुआ पोतनेका चिथड़ा।

પોતું ફેરવવું (क्रि.) रद्द करना धूळ में मिलाना, व्यर्थ करना, पानी फेरना, धूलधानी करना, नष्ट करना।

પોતું-ત્યું (क्रि) पहुँचा, पूगा, प्राप्त। [बह।

પોતે (सर्व) आप, खुद, स्वयम्,

પોથો (सं.) बड़ा ग्रंथ, मोटी पुस्तक, बड़ी किताब, पोथा ;

પોદળો (सं.) गोबर, ढेर, गोबर, स्थूल और पोचा, गोबरगणेश, बैठे बहांसे उठ न सके ऐसा, औंद।

પોપડું (सं.) पळक, आँखोंके ऊपरकी खाल, जेवरोंमें लगाई जाने वाली घुंघरीका अर्द्ध भाग, रोटी कूटनेके बाद बचा हुवा अंश कंकर।

પોપટ (सं.) शुक, तोता, कीर।

પોપટ કરી નાંખવું (क्रि.) पढा के प्रवीण करना, तोतेकी तरह पढाना

પોપટજી કરી નાંખવું (क्रि) कब्जे में रखना, आधीन करना, अपनी इच्छा के अनुसार रखना, वशमें करना।

પોપટ બોલાવો (क्रि) निबटना, पूर्ण होना, चुकना, संपूर्ण हो जाना

પોપટ પાળવો (क्रि) प्यार करके बड़ा करना (छाला, फोड़ा फुन्सी आदि)

પોપટા (सं.) चना नामक अन्नका वह चने सहित भाग जिसमें चना होता है। छोला होला।

પોપટિયો (वि.) तोते के रंगका सुआ पंखी, हरा रंग।

પોપટિયું જ્ઞાન (सं.) विचार शक्ति रहित ज्ञान, तोते के समान ज्ञान, (तोता बोलता है किंतु वह

बूद उसका अर्थ बिलकुल नहीं समझता, उस लिये ऐसे मनुष्यको यह उपमा दीजाती है)

પોપટિઓ પંડિત (सं.) मूर्ख पंडित, पंडित बनकर ठगनेवाला, अरण्य पंडित, ठग, धूर्त, छली, वंचक ।

પોપટી सं.) मैना, सारिका, तोती, तितली, एक प्रकार का वृक्ष जिस में दाख के समान फल आते हैं, एरण्ड को होने वाला एक प्रकार का रोग ।

પોપટું (सं.) फल विशेष।

પોપટો (सं.) फली देखो પોપટા

પોપડી (सं.) पपड़ी, ऊसर, घासका खेत ।

પોપડું (सं) वह जमीन जिसपर केवलघास ही उग सके ।

પોપડો (सं.) किसी वस्तुके ऊपर का पतला थर, पपड़ी, लेव, घास उगे ऐसी जमीन ।

પોપનસ (सं) एक प्रकार का फल।

પોપલાં (सं.) बकबक, हायहाय, कोरी माया लिप्त ।

પોપયો (सं.) छाला, फोड़ा, खाज ।

પોપલું (सं.) बनस्पति इत्यादि का पोला भाग, पिलपिला, नर्म ।

પોપળગાળું (वि.) डरपोक, कायर ।

પોપાં (सं.) छोटे बालकों के काजल आंजने के बाद दृष्टीदोष से किये हुए काजल के चिन्ह ।

પોપાંબાઈનુંરાજ (सं.) अंधेर नगरी अबूझराजा, पोलपोल की हाकिमी के लिये यह वाक्य प्रयोग होता है।

પોપાગાળું (सं.) डरपोक कायर।

પોપૈયો (सं) एक प्रकार का वृक्ष एक प्रकार का फल, छाला, ईटका टुकड़ा ।

પોપો (सं) रोटी, चपाती ।

પોબાર (सं.) एक और बारह ऐसा तीन पांसों का दाव, सफलता ।

પોબારાગણવા (क्रि.) भाग जाना, निकल भागना, अदृश्य होना, सटक जाना, पलायन कर जाना ।

પોબારપડવા (क्रि.) फतह होना जीत होना, सीधे पांसे गिरना ।

પોબલો-પોબલી (सं.) दक्षिणी हिंदुओं मे एक जाति विशेष, डरपोक कायर । [गुजरात ।

પોબળું (वि.) पोचा, ओछा,

પોબાવું (क्रि.) प्रसन्न होना, खुश होना, प्रमुदित होना, मुसकुराना ।

પોયણી (सं.) पानी में पैदा होने वाली एक प्रकार की बेल, कुमोदिनी ।

પોયણું (सं.) एक प्रकार का कमल पुष्प, कुमुद पुष्प, रात्रि को खुलता है और सूर्योदय पर बन्द हो जाता है ऐसा जल में पैदा होने वाला पुष्प।

પોયું (सं.) हद, सीमा।

પોયો (सं.) देखो પોરિયું

પોર (सं.) पुर, नगर, शहर, ग्राम, कस्बा, पुरवा, गांव, (क्रि. वि.) गतवर्ष, आगामी वर्ष, (सं.) प्रहर तीन घंटों का परिमान, वृद्धावस्था, उत्तरावस्था, (પાછલો પોર)

પોરવવું (क्रि.) पिरोना, पोना, छेद में डोरी डालना, धागा पिरोना

પોરસ (सं.) अत्यंत हर्ष की बात सुन कर प्रमुदित होना।

પોરિયું (सं.) बालक, शिशु, बच्चा,

પોરિયો (सं.) लड़का, छोकरा छोरा लौंडा, बालक।

પોરી (सं.) छोकरी, लड़की, लौंडिया बालिका, कन्या।

પોરૂંકું (वि.) गये सालका, गत वर्ष का।

પોરેગીર (सं.) पहिरे वाला, पाहरू चौकीदार, रखवाला, रक्षक।

પોરો (सं.) एक प्रकार का जल तंतु, पाहिरा, चौकी देने का समय, कुए में से पानी निकालने का एक तरह का पात्र, समय।

પોર્યું (सं.) देखो પોર્યો।

પોલ (सं.) आकाश, आस्मान। नभ, शून्य, गप, अफवाह, नर्म बिछौना, गुदगुदा गद्दा, आंख के ऊपर रखने के लिये बनाये हुए रूई के फोवे।

પોલકાસ્થું (सं.) शून्यता, खोखला।

પોલકું (सं.) बदन, (छोटा)।

પોલમપોલા (सं.) ढीलमढीला, नरम।

પોલરૂં (वि.) पोला, असार सत्व-हीन, कच्चा, ढीला, स्खलित।

પોલાણ (सं.) रीतापन, शून्यता, रिक्तता, पोलापन, ढीलापन।

પોલાદ (सं.) फौलाद पक्का लोहा, स्टील।

પોલાદી (सं.) दृढ़, मजबूत, फौलाद का, स्टीलका, अच्छे लोहे का।

પોલારૂં (वि.) पोला, शून्य, ढीला।

પોલાળ (सं.) देखो પોલાણ

પોલી (वि.) देखो પોકળ।

પોલું (वि.) छूछा, शून्य, रीता, खाली, जिसके भीतर, कुछ नहो, रिक्त।

પોચુંમાં (सं.) कोमल गादी, मुलायम गद्दा, गुदगुदा, बिछौना।

પોઢેલ (सं.) वह भूमि जो सदा जोती और बोई जाती हो।

પોવડાવું-વાડવું (क्रि.) पिराना, धागा, बखवाना, डोरी पिराना।

પોવું (क्रि.) देखो પોરવવું

પોસ (सं.) शेष, बाकी, एक महीना विशेष, चैत्र से दसवां महीना, पौ, पौष, शिशिरमास। पूस।

પોસનો ડોડો (सं.) अफीमका डोडा, वह डोडा जिसमें से खस-खस निकलता है।

પોસા (सं.) पोषण।

પોસાળ-ળા (सं.) जैनों की सेवा पूजा करने का स्थान।

પોસાગીર (सं.) ठग, वंचक, डण्डी, बदमाश, उठाई गीरा, पहलवान।

પોસિન્દ (वि.) आश्रय दाता, सहायक, मुरब्बी, खरीददार, मान कर्ता।

પોસિંદો (सं.) रक्षक, मालिक।

પોસી (सं.) पौष महीने की, पूस महीने की पौर्णिमा।

પોષધ શાળા (सं.) श्रावक लोगों के रहने का स्थान, जहां रात को दीपक नहीं बलाते।

પોષવું (क्रि.) पोषण करना, पालन करना, रक्षा करना, रक्षण करना।

પોષાવું (सं.) पाले जाना, रक्षित होना, अनुकूल स्थिति में होना, कदर होना।

પોષિત (वि) पोषण करने वाला, पालक, पोषक, रक्षक।

પોસ્ત (सं.) पोस्त, अफीमका डोडा, खसखस, पूसकामहीना, शेष, थोड़ा मुठ्ठीभर, होली दिवाली की खुशी में नौकरों को दी हुई इनाम।

પોસ્તી (वि.) अफीमची, ढीला, शिथिल, नर्म, मुलायम, पोचा।

પોહ (सं.) सुबह, सवेरा, भोर, भिनुसारा, तड़का, भैंस बैल इत्यादि को पानी पिलाते समय बोला जाने वाला शब्द। [वाली।

પોહરો (सं.) पहिरा. चौकी, रख-

પોહ ફાટતે (क्रि वि) तड़के, सवेरे, भिनुसारे, दिन निकलते।

પોહાલાવ (सं.) नई जोती हुई भूमि।

પોહોર (सं.) तीन घंटे का परि-माण, रातदिन का आठवां भाग, आनेवाला वर्ष, गया हुवा वर्ष।

પોહોરેગીર (सं.) रखवाला, पहरे वाला, पाइक, चौकीदार, संतरी।

પોહેરો (સં.) रखवाली, चौकसी ।

પોહોળાઇ–ળુ (सं.) चौड़ाई, चौड़ापन ।

પોહોળિયું (सं.) कलदार रुपया,

પોહોળું (वि.) चौड़ा, लंबाई से कम । [रास्ता ।

પોળ (सं.) गली, सड़क, आम

પોળાઇ (सं.) देखो પોહોળાઇ

પોળિયું (सं.) सरकारी रुपया, कलदार ।

પોળિયો (सं.) दरबान, द्वारपाल, प्रतिहार, द्वारदूत, पौर पर बैठने वाला । [चपाती ।

પોળી (सं.) पतली रोटी, पतली

પોળું (सं.) देखो પોહોળું ढीला, पासपास नहीं बल्कि दूर दूर ।

પૌંઆ–વા (सं.) एक प्रकार के चावल, भुने हुए चपटे चांवल ।

પૌનર્ભવ (वि.) पुनर्विवाहिता स्त्री का पुत्र, विधवा का लड़का ।

પૌર (वि.) नगरनिवासी, शहर में रहनेवाले, पुरजन ।

પૌરક (सं) घर के पास का बगीचा, नजरबाग, गृह वाटिका ।

પૌરજન (सं.) नागरिक, शहर के बाशिन्दे, नगरवासी ।

પૌર્ણમાસ (सं.) पूनम के दिन करने का एक याग, याग विशेष ।

પૌર્ણમાસી (सं.) पूनम, पौर्णिमा, पूर्नो, शुक्ल पक्ष की १५ वीं तिथि ।

પૌષ (सं.) पूस, मास विशेष ।

પ્યાજ (सं.) कांदा, गंठी, कृष्णावली, मूळ विशेष, एक प्रकार का वस्त्र (रेशमी)

પ્યાછ (सं.) मिज़ाजी, साधारण बात में ओछापन दिखावे वह मनुष्य ।

પ્યાદીમાહાત (सं.) शतरंजके खेल में आखिर में बादशाह का प्यादे से हार खाना ।

પ્યાદું (सं.) शतरंज के खेल में प्यादा, पदाती, पैदल सैनिक, पैदल योद्धा ।

પ્યાદો (सं.) पूर्ववत्

પ્યાર (सं.) प्रीति, प्रेम, स्नेह ।

પ્યારી (सं.) प्रिया, पियारी, प्रियतमा, माशूक दुलारी ।

પ્યારું (वि.) प्यारा, प्रेमी। प्रिय सनेही, प्रियतम, स्नेही ।

પ્યાલી (सं) छोटा प्याला, कटोरी, बाटकी, कचोली ।

પ્યાલું (सं.) प्याला, कटोरा, कूल ।

પ્યાસ (सं.) पिपासा, तृषा, तृष्णा इच्छा, लालसा, चाह ।

પ્યાસું (वि.) पिपासित, तृष्णा-वन्त, तृष्णान्वित, पिपासा, प्यासा।

પ્ર (उ०) आगे, बाहिर, दूर इत्यादि सूचक उपसर्ग जो शब्द के आगे लगता है। आरंभ, उत्कर्ष, प्राधान्य, आद्य ख्याति, उत्पत्ति, व्यवहार, विशेष, अतिशय, अधिक।

પ્રકર (सं.) समूह, दल, ढेर, सहाय, मदद, अगर चन्दन।

પ્રકરણ (स.) प्रस्ताव, अभिनय करने की रीति, रूपक भेद, ग्रंथ संधि, ग्रंथ विच्छेद, निरूपणीय एक विषय की समाप्ति, प्रसङ्ग, काण्ड, अध्याय, सर्ग, बाब, काम, बात, उपोद्घात।

પ્રકામ (क्रि. वि.) यथेप्सित, यथेष्ट, इच्छापूर्वक, इच्छापूर्ति, मनमाना, मनभरके, खूब, (वि.) अत्यंत, बहुत।

પ્રકાશવું (क्रि०) प्रकाश करना, फैलाना, व्यक्त करना, जाहिर करना, प्रकट करना।

પ્રકૃતિ (सं०) स्वभाव, धर्म, चरित्र, योनि, उत्पत्ति, स्थान, उद्भवक्षेत्र, चिन्ह, अंक, स्वामी, अमात्य, सुहृत, कोष, राष्ट्र, राज्य, दुर्ग, पुरवासी, किला, समूह, शक्ति, परमात्मा, पंचभूत, इक्कीस अक्षर के छन्द विशेष, माता, धातु।

પ્રકૃતિસ્થ (वि.) स्वभाव प्राप्त, स्वभाव सिद्ध, स्वाभाविक।

પ્રક્રમણ (सं.) गमन, विधा।

પ્રક્રમા (सं.) प्रदक्षिणा, परिक्रमा, आसपास परिभ्रमण।

પ્રખદા (सं.) परिषद्, सभा, समाज, समिति, मण्डली।

પ્રખર (वि.) तीखा, तीक्ष्ण, निशित, अधिक गर्म, [illegible], कठोर।

પ્રખ્યાત (वि.) प्रसिद्ध, विख्यात यशस्वी, कीर्तिमान, मशहूर।

પ્રગટવું (क्रि.) प्रकट होना, व्यक्त होना, प्रसिद्ध होना, प्रकाश होना।

પ્રગણું (सं.) परगना, प्रान्त।

પ્રગમવું (क्रि.) खेलना, फैलना, प्रज्वलित होना।

પ્રફુલ્લ (वि.) प्रफुल्लित, परिपक्व, पूर्ण निश्चयात्मक, निर्विकार, खुला प्रसन्न, उदार (चित्त)।

પ્રાઘુર્ણ (सं.) पाहुना, मेहमान, अतिथि।

પ્રચારવું (क्रि.) फैलाना, प्रचार करना, चलाना, प्रसिद्ध करना ।

પ્રચ્છના (सं) पूछताछ ।

પ્રચ્છાદક (वि.) ढंकनेवाला, कष्टप्रद।

પ્રજનન (सं.) गर्भ, हमल, पुरखा, पूर्वज । [अम्मा ।

પ્રજનિકા (सं.) माता, मा, जननी,

પ્રજળવું (क्रि.) प्रज्वलित होना, जलना, प्रकाशित होना ।

પ્રજા (सं.) सन्तान, संतति, वशवर्ती मनुष्य अधिकारस्थित मनुष्य, रैयत । [प्रजाका कर्तव्य ।

પ્રજાધર્મ (सं.) रैयतका फर्ज,

પ્રજાપતિ (स.) ब्रह्मा, दक्ष, कश्यप, महीपाल, राजा, जामात, दिवाकर, वह्नि, त्वष्टा, दसप्रजापति पिता, कीट विशेष, विष्णु, देवताओंका बढ़ई, संवत्सरका नाम विशेष, कुम्हार, कुंभकार, मरीचि, पुलह, पुलस्त्य, अंगिरस, क्रतु, प्रचेतस्, वशिष्ठ, भृगु गौतम और नारद ये दस प्रजापति ।

પ્રજાસત્તાક (वि.) राज्य जिसमें सम्पूर्ण प्रभुता प्रजाके चुने हुए वर्गोंको मिलती है, लोकसत्ता ।

પ્રજાસત્તાક રાજ્ય (सं.) प्रजापालित राज्य, प्रजातन्त्रजमहूरी, लोकपालित राज्य, पंचायतद्वारा राज्य । [वृद्धि ।

પ્રજાવૃદ્ધિ (सं.) वंशवृद्धि, कुल-

પ્રજાહિત (वि.) प्रजाके लिये हितकारक, संतानके फायदेका ।

પ્રજાળવું (क्रि., प्रज्वलित करना, जलाना, प्रदीप्त करना, दग्ध करना।

પ્રજ્ઞા (सं.) बुद्धि, मति, धी, अक्ल, समझशक्ति, विचार ।

પ્રણતવત્ (वि.) नमित, विनीत, नम्र।

પ્રણમવું (क्रि.) प्रणाम करना, नमन करना, झुकना, नमस्कार करना ।

પ્રણવ (सं.) ब्रह्मकी उत्पत्ति, स्थिति लय इन तीनों शक्तियोंके ज्ञानका प्रदर्शक संकेत शब्द, ओंकार, ॐ, परमात्माका सर्वोत्तम नाम ।

પ્રણામ (सं.) भक्तिश्रद्धायुक्त नमस्कार, प्रणति, प्रणिपात, अभिवादन, वह प्रणाम जो दोनों भुजा दोनों चरण, वक्षःस्थल, शिर, दृष्टि, मन और वाणी इन आठ अंगोंद्वारा किया जाय ।

પ્રણાલિકા (सं.) जल निकलनेका मार्ग, नल, नाली, परनाला, नाला, गटर ।

પ્રણિપાત (सं.) प्रणाम, नमस्कार, आग्रह, आजिज़ी, तावेदारी ।

પ્રત (सं.) प्रति, वर्ग, जिल्द, नकल, कापी, जात, गुण, मुख्य, महश, लक्षण, चिन्ह, एक एक, सब, भाग अंश, श्लोक, अल्प, निश्चय, विरोध, समाप्ति, अभिमुखता, स्वभाव ।

પ્રતવાર (क्रि. वि.) कमशः ।

પ્રતિ (सं.) पन्द्रहवा उपसर्ग, पीछा, आगा, उलटा, अनुकूल और प्रतिकूल, प्रत्येक, विस्तृत होना, फैलना, व्याप्ति, निश्चय, भाग, पुनः, तरफ,ओर ।

પ્રતિઘોર (सं.) प्रतिध्वनी, गूंज, प्रतिनाद, निनाद ।

પ્રતિછાયા (सं.) प्रतिबिम्ब, प्रतिकृति, प्रतिमूर्ति, प्रतिमा, छाया, मूर्ति ।

પ્રતિજ્ઞા (सं.) पूर्ण, वचन, नियम, शपथ,पण, अंगीकार, साध्यानिर्देश

પ્રતિદાન (सं.) दान के बदले में दान, विनिमय, बदला, रखे हुए द्रव्य को लौटाना, वापिस देना ।

પ્રતિનિધિ (सं.) प्रतिमा, मुख्य के समान, मुख्य स्वरूप प्रधान के स्थानापन्न, પ્રતિભૂ, वकील, हामी जामिन, तस्वीर, चित्र, एवजी ।

પ્રતિપદ-દા (सं) चन्द्रमा की पहिली कला का किंवा काल, पक्ष की प्रथम तिथि, पड़वा, एकम ।

પ્રતિપક્ષ (सं.) वैरी, अरि, शत्रु, रिपु, विरुद्ध पक्ष, प्रतिवादी, दुश्मन, (क्रि. वि.) हर, पखवाडेमें।

પ્રતિપક્ષી (वि.) विरुद्ध पक्ष का ।

પ્રતિપાદક (वि.) प्रतिपत्तिजनक, बोधक, ज्ञापक, संस्थापक,प्रकाशक

પ્રતિબિંબ (सं.) प्रतिच्छाया, प्रतिमा, मूर्ति, अनुरूप ।

પ્રતિભા (सं) प्रत्युत्पन्नमतित्व, दीप्ति, प्रगल्भता, बुद्धि ज्ञान ।

પ્રતિભાન (सं.) तात्कालिकबुद्धि, समय सूचकता, सूझ, अह्न ।

પ્રતિભાવ (सं.) समभाव, तुल्य भाव ।

પ્રતિભાસ (सं.) प्रकाश. प्रतिबिम्ब, मनपर उत्पन्न प्रभाव ।

પ્રતિભૂ (सं.) विचारवान, जामिनदार, मनौतिया।

પ્રતિમા (सं.) मूर्ति, चित्र, नकल, तस्वीर, प्रतिरूप, प्रतिकृति, बुत ।

પ્રતિવચન (सं.) उत्तर, जवाब, प्रत्युत्तर ।

પ્રતિવાદી (सं.) विपक्षी, प्रति-पक्षी, आसामी, मुद्दाअलेह ।

પ્રતિવિધાન (सं.) इलाज, तजवीज, एक कार्य के स्थान में दूसरा कार्य रचना । [वारण ।

પ્રતિષેધ (सं.) निषेध, निवारण,

પ્રતિસ્પર્ધા (सं) ईर्ष्या, मत्सरता, गुप्त द्वेष, कीना, डाह, कुढन,

પ્રતિહાર (सं.) द्वार, ड्योढी डेवढी द्वारपाल दरबान, ड्योढीवान ।

પ્રતીપ (सं.) इस नाम का अलङ्कार जिसमें उल्टी उपमा दी जाती है । प्रतिकूल, विपरीत ।

પ્રતીક્ષા (सं,) प्रत्याशा, बाट जोहना, किसी के आने के लिये ठहरना ।

પ્રતોદ (सं.) चाबुक, हंटर ।

પ્રત્યક્ષ (सं.) साक्षात्, सम्मुख, सामने, प्रकाश, प्रकट, प्रसिद्धी ।

પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ (स.) स्वयंसिद्ध प्रमाण ।

પ્રત્યાઘાત (सं.) सम्मुखाघात, सामने का जोर ।

પ્રત્યે (उप०) प्रति, तर्फ, ओर, को।

પ્રત્યાખ્યાન (सं.) निराकरण, निरसन, खण्डन अस्वीकार, निन्दन

પ્રત્યવાય (सं.) दोष, अनिष्ट, विघ्न, व्याघात, पाप, दुरदृष्ट ।

પ્રત્યંચા (सं.) ज्या, डोरी, धनुषकी डोरी, रौंदा ।

પ્રત્યાહાર (सं.) अपने अपने विषयों से इन्द्रियों को हटाना ।

પ્રથમપુરુષ (सं.) आदि पुरुष, ईश्वर मैं, हम सर्वनाम (व्याकरण में)।

પ્રથમા (सं.) पहिली विभक्ति, श्रेष्ठा बड़ी, प्रधानता ।

પ્રથા (सं.) चलन, धारा, रीति, ख्याति, प्रकार, व्यवहार, रस्म, रवाज़ ।

પ્રદક્ષિણા (सं.) परिक्रमा, देवोद्देश्यसे, दाक्षिणा वर्त भ्रमण, चारों ओर भ्रमण ।

પ્રદર (स.) स्त्रियों को होने वाला एक योनि रोग विशेष ।

પ્રદર્શન (सं) ईक्षण, दर्शन, दिखाना नुमायश, अलग, कारीगरी का दिखावा ।

પ્રદોષ (सं.) रजनी मुख सायङ्काल, सूर्यास्त के पश्चात, दो मुहूर्त काल, रात्री के पहिले चार दण्ड, प्रत्यक्ष पक्ष में प्रति त्रयोदशी का संध्या कालीन शिवजी का व्रत, दोष ।

પ્રદોષકાળ (सं.) सायङ्काल ।

પ્રધાન (सं.) श्रेष्ठ, आद्य, मुख्य, अग्रिम मंत्री, सचिव, वज़ीर, परमेश्वर, सेनापति, राजाका मुख्य कारभारी, उत्तम, वरिष्ठ ।

પ્રધાનગિરી-ત્વ-પણું (सं.) श्रेष्ठता मुख्यता, प्रधानत्व, मंत्रित्व ।

પ્રધાનપદ (सं.) मंत्री का दरजा, वज़ीर का ओहदा, मुख्य पद ।

પ્રધ્વંસ (सं.) नाश, विनष्टि, क्षय, अपक्षय, बरबादी ।

પ્રપંચ (सं) संसार, दुनिया, भ्रम, विपर्यास, प्रतारण. सञ्चय, विस्तार माग, मिथ्या नाटक, कपट दगा ।

પ્રપંચી (वि.) ढोंगी, ठग, कपटी, मायावी, सांसारी, लुच्चा, धूर्त ।

પ્રપિતા (सं) दादा, बाप का बाप, दादा, पिता का पिता ।

પ્રપિતામહ (सं.) बाप का बाप और उसका भी बाप, दादा का बाप, पड दादा ।

પ્રપિતામહી (सं) बाप के बाप की मा दादा की मा, पड़ दादी ।

પ્રપૌત્ર (सं) पौत्र का पुत्र, पनाती, पोते का बेटा, बेटे के बेटे का बेटा।

પ્રપૌત્રી (स) पौत्र की कन्या, पनातिन, पोते की लडकी, बेटे के बेटे की लड़की ।

પ્રબોધ (सं.) ज्ञान, जागृति, सावधानी, विज्ञप्ति, जागृति, होशियारी ।

પ્રબોધની (सं.) देव दिवाली, कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी ।

પ્રભવ (सं.) जन्म, उत्पत्ति, पैदा, जहांसे जन्म होता है, स्थान, शक्ति।

પ્રભા (स.) दीप्ति, आलोक, प्रकाश, कान्ति, तेज, दरकार गरज, स्पृहा, बड़ाई प्रभुता ।

પ્રભાતિયું (सं.) कोई सा प्रातः कालीन राग, भैरव, भैरवी, इत्यादि, प्रभाती, दातुन दतौन ।

પ્રભુનું માણસ (सं) भोला, सीधा, देव ।

પ્રમા (स.) यथार्थज्ञान, प्रमिति, प्रमाण, भ्रमरहितज्ञान, सत्यज्ञान ।

પ્રમાણ (स.) मर्यादा, शास्त्रनिदर्शन, दृष्टान्त, उदाहरण, साक्षी, लख, श्रुति, प्रतिपत्ति, माननीय, सत्यवादी, नित्य, दाखला, पुरावा प्रत्यक्ष अनुमान उपमान और शब्द । भोग, लेख साक्ष्य और दिव्य । निश्चय, संख्या, माप विस्तार, आधार, सत्यता, सिद्धांतः (वि.) भरोसेवाला, सत्तावाला

પ્રમાણપત્ર (सं.) निर्णय पत्र, दृष्टान्तलिपि, सर्टिफिकेट, साक्षी टिकट ।

પ્રમાણવું (क्रि.) सिद्ध करना, साबित करना, प्रमाण द्वारा निश्चय कराना, मानना, गिनना, जानना ।

પ્રમાણિક (वि.) सच्चा, ईमानदारी, विश्वस्त, भरोसे का, टिकाऊ ।

પ્રમાણિકપણું (वि.) नेकी, ईमानदारी, सचाई, शुद्धता, पवित्रता।

પ્રમાણે (क्रि वि) अनुसार, मुवाफिक, तरह से, रीतिसे ।

પ્રમાતામહ (सं.) मा का बाप और उसका बाप, नाना का बाप, पड़नाना ।

પ્રમાતામહી (सं) प्रमातामह की पत्नी, मातामह की जननी, पड़नानी, परनानी ।

પ્રમાદી (वि.) असतर्क, भ्रान्त स्वभाव, बे परवाह, अनवधानतायुक्त ।

પ્રમુખ (सं.) प्रधान, श्रेष्ठ, प्रथम, माननीय, प्रेसिडेन्ट, मुख्य अगुवा ।

પ્રમોથી (सं.) महादेवजी के अनुचर, गण ।

પ્રમોહ (सं.) मूर्च्छा, बेहोशी, मस ।

પ્રયત્ન (सं.) प्रकृष्ट, यत्न, उपाय, चेष्टा, आदर, प्रयास, परिश्रम, तजवीज ।

પ્રયત્ની (वि.) उपाय करने वाला, चेष्टा करनेवाला, यत्न कर्ता ।

પ્રયાણ (सं.) गमण, कूच, मार्च, प्रस्थान, निर्याण, यात्रा ।

પ્રયુક્તિ (सं) प्रयोज, प्रयोजन, विशेष युक्ति, तजवीज । योग ।

પ્રયુત (वि.) दस लाख, संख्याविशेष ।

પ્રયોગાવધિ (सं.) रसम, रीति, विधि, शास्त्रोक्त कर्म, प्रयोग करने की तरकीब ।

પ્રયોજક (वि.) जिसका मुख्य कर्ता दूसरे की प्रेरणासे खुदी छोड़ कर वह दूसरा मुख्य कर्ता बन जाता है वह धातु । बहकाने वाला, भड़काने वाला, प्रथम कारण।

પ્રલેહ (सं) चटनी, अवलेह, चाटने योग्य पदार्थ; लेह्य पदार्थ ।

પ્રલય (सं.) प्रलय, कल्पांत, लय, नाश, कयामत, विलय ।

પ્રવર (सं.) संतान, वंश, श्रेष्ठ, प्रधान, गोत्र, गोत्र में उत्पन्न सबसे श्रेष्ठ पुरुष ।

પ્રવર્તક (वि.) प्रेरक, प्रयोजक, उत्साहदाता, सहायक, उठानेवाला फैलानेवाला, उत्तेजना देने वाला ।

પ્રવર્તમાન (वि.) प्रवर्तित, संसारमें फैला हुवा, प्रचरित, मौजूद।

પ્રવર્તવું (कि.) विद्या, धर्म, रीति, इत्यादि का संसारमें प्रचार होना, जमना।

પ્રવર્તાવવું (कि.) चलाना, फैलाना, प्रचार करना, विस्तार करना।

પ્રવાદ (सं.) चर्चा, निन्दावाद, किंवदन्ती, उड़ती खबर, अफवाह

પ્રવાળ (स.) मूंगा, रत्नविशेष कोमल पत्र।

પ્રવાળી (सं.) मूंगे के रंगका, लाल रंगका, गुलाबी, रक्तवर्ण।

પ્રવૃત્ત (वि.) उद्यत, तत्पर, प्रविष्ट, लगा हुवा, निरत, संलग्न।

પ્રવૃત્તિ (सं.) कार्य में लगने की इच्छा, यत्न, उपाय, इच्छा, सांसारिक वृत्ति।

પ્રવેશ (सं.) पैठ, पहुंच, दखल, वेश दिखाव (नाटक में)

પ્રવેશક (सं.) प्रवेश कर्ता, उपोद्घात, ग्रंथ प्रवेश में सूचना, या विज्ञप्ति, नाटक के आरंभ में उसका भावार्थ सूचक दिया हुवा भाषण।

પ્રશસ્ત (वि.) सुन्दर, स्वच्छ, विस्तृत, परिसर युक्त, प्रशंसनीय, अतिश्रेष्ठ, अति उत्तम, विशाल।

પ્રશસ્તિ (सं.) प्रशंसा, स्तुति, वर्णन, गुणस्तुति, अभिनन्दन।

પ્રશ્ન (सं.) जिज्ञासा, पूछ, पृच्छा, सवाल, शंका, सन्देह।

પ્રશ્નાર્થ સર્વનામ (सं.) कौन, क्यों क्या इत्यादि प्रश्न प्रदर्शक सर्वनाम (व्याकरण शास्त्र में)

પ્રશ્નાવળી (सं.) प्रश्नों की श्रेणी।

પ્રસક્ત (वि.) प्रसंग विशिष्ट, अतिशय, अनुरक्त, अनुरागी, प्राप्त।

પ્રસક્તિ (सं.) प्रार्थना, अनुराग, नमन, दरख्वास्त, प्रसंग।

પ્રસંગ (सं.) संगति विशेष, प्रसक्ति, प्रस्ताव, संधि, योग, सम्बन्ध, मेल, सङ्गम, घटती जगह, सहवास, मिलाप, व्यवहार, मैथुन।

પ્રસંગવસાત (कि. वि.) योगात्, कारणात, दैवात, प्रसंग के कारण।

પ્રસંગોપાત (कि. वि.) प्रसंग आनेपर।

પ્રસર (सं.) प्रकृष्ट रूपसे संचार, विस्तार, प्रणय, वेग, समूह।

પ્રસરવું (कि.) प्रसरण, फैलना, निकल बहना, विस्तार पाना, बिछना।

પ્રસવ (सं.) गर्भ मोचन, अपत्य जन्म, फल, कुसुम, फूल, जन्म, उत्पत्ति।

પ્રસવ વેદના (सं.) बालक पैदा होने के समय का दुःख, प्रसव कष्ट, जनते वक्त कष्ट ।

પ્રસવવું (क्रि.) पैदा होना, उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना ।

પ્રસાદ-દી (सं.) प्रसन्नता, नैर्मल्य, अनुग्रह, काव्य का गुण विशेष, स्वाथ्य, सुस्थता, देव निवेदित द्रव्य, गुरु की जूठन, आशिर्वाद, कृपा, मेहरबानी, देवताके आगे का धरा हुवा नैवेद्य, भोजन, तर्क वाकि । [फैलाव ।

પ્રસાર (सं.) प्रसरण, विस्तार

પ્રસારક (वि.) विस्तार कर्त्ता, फैलाने वाला, वृद्धि कर्ता, बिछाने वाला ।

પ્રસારવું (क्रि.) फैलाना, बढाना ।

પ્રસિદ્ધિ પત્ર (सं.) नोटिस, विज्ञापन, सर्क्यूलर, इश्तिहार, मुनादी आम ।

પ્રસૂત (वि.) उत्पन्न, जात, जन्मा-हुवा, पैदा हुवा, जनित ।

પ્રસૂતા (सं.) जातापत्या, पसव कारिणी, जिसने बच्चे उत्पन्न किये हों, जच्चा, जापेवाली ।

પ્રસૂતી (सं.) प्रसव, उत्पत्ति, उद्भव, जन्म, जन्माना, गर्भ मोचन ।

પ્રસૂતીકા (सं.) वह स्त्री जिसने तात्काल बालक उत्पन्न किया हो ।

પ્રસ્તાનું (सं.) किसी दिन बाहर जाने को यथार्थ मुहूर्त न हो तो, जिस दिन हो उस दिन अपना सामान इत्यादि मार्गपर के किसी दूसरे घर पर रख देना, प्रस्थान:, पर स्थाना ।

પ્રસ્તાવ (सं.) अवसर, प्रसङ्ग-स्तुति, प्रसङ्ग, प्रकरण, वृत्तान्त, कथा, कथानुष्ठान, कारण ।

પ્રસ્તાવના (सं.) आरंभ, वाक्यानुष्ठान, भूमिका, अवतरिका, दीबाचा, शुरूआत, ग्रंथ हेतु वर्णन ।

પ્રસ્તાવિક (वि.) समयानुसार, यथा समय, प्रसंगानुसार ।

પ્રસ્થાન (सं) कूच, प्रयाण, गमन ।

પ્રસ્ત્રવ-ણ (वि.) बहना, पर्वत का निर्झर, एक पर्वत का नाम, पेशाब ।

પ્રસ્વેદ (सं.) अधिक पसीना, पसेव।

પ્રહર્ષણ (सं.) खुशी, आनन्द, हर्ष, आह्लाद ।

પ્રહસન (सं.) परिहास, उपहास, आक्षेप, रूपक विशेष, नाटक का एक भेद । [प्रहार करना ।

પ્રહારવું (क्रि.) मारना, पीडना,

પ્રહાસ (सं.) उपहास; हँसी, ठठ्ठा, परिहास, ठठोली, खिल खिलाहट।

પ્રાકૃત (वि.) प्रकृत सम्बन्धी, अधम, लोक व्यवहार में आने वाला, संस्कृत भाषा के सिवा कोई दूसरी भाषा, नीच, हलका, पामर, अन्त्यज, भाषा विशेष। वास्तविक वस्तुतः।

પ્રાકૃત ભાષાન્તર (सं.) अनुवाद, देशी भाषा में अनुवाद ।

પ્રાક્તન (सं.) भाग्य, किस्मत, तकदीर।

પ્રાગડ (सं) सूर्योदय, प्रभात।

પ્રાગડવાસી (क्रि वि.) प्रातःकाल हुवा, सूर्योदय हुवा, भोर हुवा।

પ્રાગલ્ભ્ય (सं.) प्रगल्भता, अहङ्कार, अभिमान, दर्प, गर्व, घमण्ड अद्धत्य।

પ્રાછીત (सं) प्रायश्चित्त, पापनाशन कर्म, पाप क्षय करने वाले काम।

પ્રાજાપત્ય (सं.) एक प्रकार का विवाह, द्वादश दिन का व्रत, याग विशेष।

પ્રાજે (सं.) पराजय, हार।

પ્રાજ્ઞ (वि.) सयाना, चतुर, होशियार, कुशळ, प्रवीण, दक्ष।

પ્રાણ કાઢી નાંખવું (क्रि) बहुत आतुर रहना, कुरबान होना, सताना।

પ્રાણ પાથરવો (क्रि.) जीव देने को तय्यार होना, अत्यंत आदर सत्कार करना।

પ્રાણથી જવું (क्रि) जीवन जाना, प्राण खोना, जान देना।

પ્રાણજીવન (वि.) जीवनदाता, पोषण कर्ता, जीवन का आधार।

પ્રાણત્યાગ (सं) देखा પ્રાણઘાત।

પ્રાણદાન (सं.) जीवदान, आत्मदान।

પ્રાણપ્યારા-પ્રિય (सं.) प्रियतम, प्राणतुल्य, प्रिय।

પ્રાણમય કોષ-શ (सं.) कर्मेन्द्रिय सहित प्राण पंचक, पंच कोशों में से एक जिस में प्राण रहता है।

પ્રાણ રક્ષણ (सं) आत्म रक्षण, जीव रक्षण, प्राणों का बचाव।

પ્રાણાધાર (स) प्राणों का आश्रय जीवन का आधार।

પ્રાણાન્ત (सं.) प्राणवमान, मरण, मृत्यु, मौत, प्राण शेष।

પ્રાણાયામ (सं) योगाङ्ग, विशेष, व्यास विशेष प्राण वायु को वश में रखने के लिए की हुई क्रिया तीन प्रकार से, कुंभक पूरक और रेचक, वह कर्म जिसमें प्राणवायु की अवरोध हो।

પ્રાણાહુતિ (स.) पांच प्रकारकी आहुतियो में से एक प्रकार की आहुति, (प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा और व्यानाय स्वाहा इन पांच मंत्रोंसे दी हुई पाच आहुतियां)

પ્રાણિયા (स.) देखो પ્રાણી

પ્રાણી (सं) प्राणविशिष्ठ, सचतन जीव, अगम जीव, शरीरी, देही, जीवधारी, जळचर, नभचर, भूचर इ० चतन, जानवर जानदार, जन्तु।

પ્રાણી વર્ગ ગુણ વિદ્યા (स.) मानसिक विद्या, दामाग का इल्म।

પ્રાતીભ (वि.) बुद्धिका प्रकाश।

પ્રાદુર્ભાવ (स.) आविर्भाव, उदय, प्रकाश, महिमा, प्राकटय, जाहिर होना।

પ્રાદુર્ભૂત (वि.) उदित, प्रकाशित प्रकट, आविर्भूत, जाहिर,

પ્રાધાન્ય (सं.) प्रधानता, प्रधानत्व, श्रेष्ठता, मुख्यता।

પ્રાન્ત (सं.) अतभाग, शेष, सीमा, कगर, हद्द।

પ્રાબલ્ય (सं.) प्रबलता, आक्रम।

પ્રાયશ્ચિત્ત (सं.) पापनाशन कर्म, पापक्षय करनेवाला कर्म, तोबा।

પ્રાયે (क्रि. वि.) प्रायः, विशेषतर, बहुत करके, अक्सर।

પ્રારબ્ધ-લબ્ધ (सं.) पूर्वानुष्ठित कर्म, अदृष्ट, प्राक्तन कर्म, पूर्व कम, भाग्य, भाललेख, कर्मफल, नसीब. दैव, भविष्य, होनहार, आनच्छ, परेच्छ, और स्वेच्छ तीन प्रकारका प्रारब्ध।

પ્રારબ્ધનું ફુટેલું (वि.) कमहीन, भाग्यहीन, अभागी, बेनसीब।

પ્રારબ્ધવાદી (सं) अदृष्टवादी, भाग्य भरोसे रहनेवाला।

પ્રાર્થવું (क्रि.) प्रार्थना करना, निवेदन करना, याच्ञा करना, अर्ज करना।

પ્રાર્થના કરવી (क्रि.) पूर्ववत्

પ્રાર્થના મંદિર (सं.) धर्मस्थान, उपासना भवन, वह स्थान जहां बहुत से लोग ईश्वर प्रार्थना के लिये एकत्रित्तहों।

પ્રાલબ્ધ (सं.) देखो પ્રારબ્ધ

પ્રાશન (स) भोजन, पान, चाटना चूसना, पीना।

પ્રાશવું (क्रि.) खाना, भक्षण करना, पीना, चूसना, रसास्वादन करना।

પ્રાસ (सं.) अनुप्रास, यमक शब्द

પ્રાસાદ (सं.) मंदिर, मकान, देवताओं और राजाओंके रहने का भवन, महल।

પ્રાસ-છ (स.) भाला, बरछी साग, बल्लम, जख्म, व्रण, घाव, लूट।

પ્રાસંગિક (वि.) समयानुसार, प्रसंगानुसार, वक्त के मुआफिक,

પ્રાસાદિક કવિતા (सं.) ईश्वर कृपासे बनी हुई कविता, थोडे परिश्रमसे प्राप्त अति कवित्व, शक्ति।

પ્રાહણે (क्रि वि.) પરાણે देखो, जुल्मसे बलात्कारस, अप्रसन्न होने पर। [अतिथि।

પ્રાહુણો (सं.) पाहुना, मेहमान,

પ્રિછવું (क्रि.) समझना, जानना, पहिचानना चीन्हना। [गण।

પ્રિયજન (स.) प्यारे लोग, स्नेही

પ્રિયતમ (सं.) अत्यन्त प्रिय, पति, प्रीतम, धनी लाल उत्तम।

પ્રિયતમા (सं.) प्रिया, प्रेमास्पदानारी, प्रणयिनी, प्यारी, पत्नी, अच्छी।

પ્રિયંવદા (वि.) मिष्ट भाषण करनेवाली स्त्री, चार अक्षर के चरण का छंद।

પ્રિસવું (सं.) पीसना, पीसन, पीसने की वस्तु, परिवेषण।

પ્રીતડી (स) प्रेम, प्यार, मुहब्बत स्नेह, छोह, मिहरबानी।

પ્રીતિકર (वि.) प्रेम पैदा करने वाला, मनोहर, रमणीय, सुन्दर।

પ્રીતિપત્ર (स.) प्रेमपत्र, प्यारका पत्र, प्रेमपाती, प्यारेका पत्र।

પ્રીતિપાત્ર (सं.) प्रेमक योग्य, मुहब्बत करनेलायक, कृपापात्र, स्नेहपात्र।

પ્રીતિમંદિર (सं.) प्रियतमा, प्रिया, प्रेमास्पदानारी, सहृदय।

પ્રીતિવાળું (वि.) प्यार वाला, स्नेही, प्रिय, प्रेमयुक्त।

પ્રેમક્રીડા सं) हावभाव, रतिविलास।

પ્રેમપાશ (सं.) प्रेम का बन्धन, स्नेह का फन्दा, प्यार का फासा

પ્રેમ પત્રિકા (स.) आशिक माशूक का पत्र, स्नेह पूर्ण चिट्ठी, प्रेमी का पत्र। [सौरभ।

પ્રેમળ (सं.) सुगंध, खुशबू,

પ્રેમાશ્રુ (स.) प्रेमके कारण आये हुए आंसू।

પ્રેમાળ (वि.) प्रेम से भरा हुआ, मायावी, अनुरागी, आसक्त।

પ્રેરક (वि०) प्रेरण कर्ता, प्रेषक, पठाने वाला, भेजने वाला, प्रयोजक। [उद्दीपन, हुक्म, इच्छा।

પ્રેરણા (सं) विधि, आज्ञा, आदेश,

પ્રેરવું (क्रि.) भेजना, प्रेरणा करना, उस्काना, खड़ा करना, आज्ञा देना।

પ્રેરિત (सं.) प्रेषित, नियोजित, पठाया, भेजा हुवा, नियुक्त किया हुवा।

પ્રેસ (सं) छापाखाना, मुद्रण यंत्र मुद्रणालय, दाबने का यंत्र, प्रिंटिंग प्रेस। [उपाध्याय।

પ્રોત (सं.) क्षत्रियों का पुरोहित,

પ્રોવું (क्रि.) पिरोना, धागा डालना, पोना, सूत्र पिरोना।

પ્રૌઢ (वि,) प्रवृद्ध, प्रगल्भ, निपुण, यौवनावस्था के बादकी अवस्था, विवाहित।

પ્રૌઢા (सं) रस शास्त्र में तीन प्रकार की नायिका, तीस वर्ष से पचास वर्ष तक की स्त्री, नायिका विशेष।

પ્રૌઢિ (सं.) सामर्थ्य, उत्साह, प्रगल्भता, उद्यम, उत्कंठा, उत्सुकता, उद्योग, अध्यवसाय।

પ્લુત (सं.) स्वर विशेष, ह्रस्व स्वर से तिगुना, तीन मात्रा का स्वर, अतिशय दीर्घ स्वर।

પ્લીહા (सं०) रोग विशेष, पिल्ही ताप तिल्ली नामक रोग।

ફ

ફ=गुजराती वर्णमाला का ११ वां अक्षर, २२ वां व्यंजन, उच्चारण स्थान ओष्ठ है. (सं.) कुबेर के दूत कोपश करने का एक मंत्र, फुंकार।

ફઈ (सं) पिताभगिनी, बाप की बहिन, फूई, भूवा।

ફજેતી (सं.) फजीहत, हांसी, दिल्लगी, मस्करी, मज़ाक, मसखरी अपमान। [लुच्चा, गुण्डा।

ફટંગ (वि.) उच्छृंखल तबियतका

ફકર (सं.) चिंता, उपाय, कल्पना।

ફકર ચિંતા (सं.) पूर्ववत्।

ફકરો (सं.) फिकरा, वाक्य, किसी ग्रंथ का प्रमाण, हवाला, वाक्य खण्ड।

ફકાવવું (क्रि.) फंकी लगवाना, फंका लगवाना, निगलाना, खिलाना।

ફકીર (सं.) वह मुसलमान जो ससारी को छोड़ कर अल्लाह की बंदगी में लग जावे, मुहर्रम महीने में ताजियों के समय जो फकीर का बाना बनाते हैं, निर्धन अकेला मनुष्य, साधु, संन्यासी, यती ईश्वर भक्त।

ફકીરી (वि.) साधुता, फकीर की दशा, गरीबी, भिक्षावृत्ति, दरिद्रावस्था, फकीरका वेश,. भीख फकीरका। [स्वेत दृष्टि।

ફક્ક (वि) पीला, बीमारसा,

ફક્કડ (वि.) उच्छृंखल, हुड़, बखेडिया, झगडालू, लड़ाका, उड़ाऊ, बेफिक्र। [खलता।

ફક્કડાઈ (सं.) फक्कड़पना, उच्छृं-

ફકં ફકા (सं.) खापीकर उड़ा देना रीता।

ફગફગવું (क्रि.) फहराना, फरफराना, इधरउधर उड़ना।

ફગર (सं.) पुष्परज, पराग, पुष्परेणु। [लाना।

ફગવવું (क्रि॰) कुमलाना, बद-

ફગવું (क्रि.) पलटाना, बदलाना, टेढ़ा बोलना, लौटाना।

ફગવો (सं॰) होली का पुरष्कार, फाग की इनाम इत्यादि, होलिकी मिठाई।

ફગાવવું (क्रि.) देखो ફગવવું

ફજર (सं.) सुबह, कल सुबह, आने वाले दिन के प्रातःकाल।

ફજલ (सं.) कृपा, आशिर्वाद, गुण गान, यशवन्त, भरापूरा, सफल।

ફજેત (वि॰) फजीहत, अपमान, बदनामी, मानभंग. कलंक।

ફગોટવું (क्रि.) फेंक देना, पछाड़ना

ફચફચ (क्रि. वि) फचपच, गचपच कीचड़ या दलदल मे चलने का शब्द।

ફજેતખોર (वि.) फजीहत करावे वाला, निंद्य, अपमानकारक।

ફજેતી (सं.) फजीहत, अपमान, मानभंग, अपकीर्ति, बदनामी, नामोशी, बेआबरू, अपयश, अप्रतिष्ठा।

ફજેતીખોર (सं.) अधम, नीच, कमीना, कुत्सित, निकम्मा, चाण्डाल।

ફજેતીનો ફાળકો (सं) बेआबरू।

ફજેતો (सं.) वह काढ़ा या पानी जिसमें कच्चे आम के छिलके और गूदे का मिश्रण हो, एक प्रकार की चटनी, अपमान, अपकीर्ति, बदनामी।

ફટ (अ.) तंत्रोक्त योग, तंत्रोक्त अस्त्र नामक मंत्र, छिः, धुत, शर्म, घृणासूचक शब्द. तिरस्कार।

ફટક (सं.) स्वेत पत्थर, स्फटिक।

ફટકવું (क्रि.) बुद्धि भ्रष्ट होना, भटकना, चूकना, फिरना, रमना।

ફટકાર (सं॰) देखो ફિટકાર

ફટકારવું (क्रि.) देखो ફિટકારવું

ફટકારો (सं.) चाबुक का शब्द, फटकारने का शब्द, विभ्रम।

ફટકિયું બારણું (वि.) दोनहीं किंतु एकही बड़ा द्वार।

ફટકિ (सं.) देखो ફટકડી

ફટકિયા દલાલી (सं.) कम दर्जे की दलाली, छोटी दलाली।

ફટકિયો (वि.) ओछा, छोटा, कम दर्जे का, अदना फुटकर बेचने वाला, छोटा व्यापारी।

ફટકિયો દલાલ (सं.) कम दर्जे का दलाल, अदना दलाल।

ફટકિયો વેચનાર (सं.) फुटकर बेचनेवाला, अदना व्यापारी कम दर्जे का व्यापारी।

ફટકિયો સોમલ (सं.) बहुत सफेद संखिया, सफेद हरताल, विष विशेष।

ફટકેલ (वि.) केन्द्र से हटा हुवा, अव्यवस्थित, विपथगामी, कड़कदार। [प्रहार, फटकार का शब्द।

ફટકો (सं.) झपट, सपाटा, ठोक,

ફટકો લગાવવો (क्रि.) पतली छड़ी से पीटना, शिक्षा देना, नसीहत करना।

ફટકો ખાવો (क्रि.) नुकसान उठाना, मारखाना, पीटे जाना।

ફટ ફટ (क्रि वि.) पटाखे इत्यादि का शब्द, चिक् चिक्, झट झट, बिना विचारा।

ફટફટાવવું (क्रि.) छटपटाना, खटखटाना, तड़फड़ाना।

ફટાકડો (सं.) पटाखा, फटाका, धड़ाका, बन्दूक आदि का शब्द, आतिशबाजी।

ફટાકી (सं.) हल्कापन, निरम्रता, अहंकार, गर्व, अहंमन्यता।

ફટાકો (सं.) भीतर बारूद रखकर कपडे या कागज़ में बनाई हुई आतिसबाजा जिसे जलाने से या फेंकने से पट् की आवाज होती हो, पटाखा, फटाका, धड़ाका।

ફટાટોપ (सं.) फुंकार, फुनकार।

ફટાડવુ (क्रि.) फटाना, फड़वाना, हद से पार जाने देना।

ફટાણું (सं.) सीठने, गालीगान, भद्द और फोश गाने।

ફટાણું (सं.) स्त्री के मुख से निकले, दुर्वाक्य, गाली, गन्दे लफ्ज।

ફટાયો (सं.) युवा पुरुष जो सेना में पद प्राप्ति की आशा से काम करता हो, संपत्ति आदि का भाग लेकर भाई से अलग हुवा मनुष्य।

ફટાર (वि.) उघाड़ा, खुला, प्रगट, अनावृत्त, बेढांका अनाच्छादित ।

ફટારવું (क्रि.) आंखें निकालना, बड़ी बड़ी आंखें काढना।

ફટારી (सं.) मुटाई, बड़ाई, बड़प्पन, गर्व, दर्प, घमण्ड ।

ફટારેલું (वि.) खुला हुवा, उघड़ा हुवा, भय अथवा क्रोध से दिखाई हुई बड़ी बड़ी आखें ।

ફટાવવું (क्रि.) धोका देना, चालाकी करना, छलना, किसी काम में शामिल होकर उसे अनुचित बताकर विघ्न कर देना, कपट करना । फटवाना ।

ફટેયો (सं.) देखो ફટાયો ।

ફટોફટ (क्रि.) तुरंतही, झटपट ।

ફટોર-ળ (वि) मुलायम, और मीठा, पकी हुई पवन से गिरी हुई कैरी (आम) ।

ફડ (सं.) शराब की भट्ठी, फट फट, एक ओर की टोली, (लावनी मे) बाज़ार, मार्केट, गान नाचने वालों की टोली, (क्रि. वि.) शब्द विशेष, जल्दी से ।

ફડક (सं.) अंगरखे का नीचे का वह भाग जो हवा से फड़ फड़ शब्द करता हो ।

ફડકાવવું (क्रि.) खीर दाल, रायता, आदि खाने के तरल पदार्थों को भक्षण करने के समय का शब्द, सुड़कना, चबड़ना ।

ફડકિયું (सं.) अन्न इत्यादि पिछोरने के लिये चादर, सूर्प समान् वस्त्र, लटकता हुवा वस्त्र भाग।

ફડકો (सं) सुड़कन, शब्दपूर्वक चुमा, होठोंका चपचप शब्द, अंगुलियों में लिया हुवा खानेका तरल पदार्थ ।

ફડચ (सं.) कड़ाका, शब्द विशेष

ફડચો (सं.) फैसला, प्रबन्ध, परिणाम । [बोलना ।

ફડફાંભારવાં (क्रि.) निरर्थक शब्द

ફડનવીસ-નીસ (सं.) सरकारी आफिसर जिसके अधिकारमें सनद देने तथा हिसाब जाँचनेका काम होता है, डेप्युटी अकाउन्टन्ट।

ફડફડ (सं.) छटपटाने या फड़-फड़ानेका शब्द ।

ફડફડતું (वि.) छटपटाता हुवा, फरफराता हुवा, गर्म, तेज, उष्ण।

ફડફડવું (क्रि.) फटफटाना, छट-पटाना बड़बड़ाना, फरफराना ।

ફડફડાટ (सं.) फड़फड़ शब्द, बड़बड़ाहट, भय, नखरा, बनावट, अहंकार ।

ફડફડાવવું (क्रि.) फटफटाना, फटफट शब्द हो इस प्रकार हिलाना । [अनावृत्त ।
ફણખતર (वि.) लुला, बेढाँका,
ફડાકિ (सं.) मिथ्या बड़ाई, शेखी, असत्य प्रशंसा, व्यर्थबात, ढोंग ।
ફડાફડ (क्रि॰ वि॰) तड़ातड़, धड़ाधड़ । [गल्लेका व्यापारी ।
ફડિયો (सं.) अन्न बेचनेवाला,
ફડેકાલ (सं.) लकड़ी की फाँक या चीर । [भाग ।
ફડેતાલ (सं.) कमरेके ऊपर का
ફડેતાર-ળ (सं.) बाँस या तख्तों-की बनी हुई दीवार ।
ફણગી-ગો (सं.) पाणी अथवा ठंडसे मुलायम हुई वस्तुसे निकला हुवा अवयव, अंकुर, फुनगी । [फल ।
ફણસ-નસ (सं.) एक प्रकारका
ફણસપોળી (सं.) फणस वृक्षके फलके गूदेको पूरीमें रखकर तली हुई पूरी, फणसकी कचौरी ।
ફણસવૃક્ષ (सं.) वृक्षविशेष ।
ફણસી (सं.) एक प्रकारकी फली फणसवृक्षका पेड़ अथवा उसकी लकड़ी ।
ફણસો (सं.) पूर्ववत्
ફણા (सं.) साँपका फन, साँपकी गर्दनका वह भाग जो चौड़ा हो जाता है ।
ફણાધર (सं.) नाग, सर्प, साँप, कीड़ा, काला, भुजङ्ग, अहि ।
ફણી-ણો (सं.) कंघी, नरकट, तीर । [भुजंग, अहि, वासुकि ।
ફણીધર (सं.) सर्प, साँप, नाग,
ફણીન્દ્ર (सं.) सर्पराज, फणिपति, वासुकि, अनन्त, नाग ।
ફંટાવું (क्रि.) रस्ता बदलना, आडा निकलना, अलग होना, विभक्त होना, भटकना, आडा जाना, तिरछा होना, बदलना (विचार) [ण्ड, फैल ।
ફતવા (सं.) ढोंग, फितूर, पाख-
ફતવાખોર (सं.) पाखण्डी, ढोंगी, फितूरी, बहानाखोर, छली, धूर्त ।
ફતે (सं.) फतह, जीत, जय ।
ફતેમંદ (वि॰) विजयी, जयी, जीताहुवा । [सफलता ।
ફતેમંદી (सं.) जीत, जय,
ફતેમારી (सं.) एक प्रकारकी छोटी नौका, एक प्रकार का जहाज ।
ફતેહ (सं.) जय, जीत, फतह, यश, इज्जत, मान ।

ફતેહમંદ (वि.) जीताहुवा, जेता, जयशाली, विजयी।

ફતેહમંદી (सं.) जय, जीत, विजय, यश, सफलता।

ફડાફડ (क्रि. वि.) चारों पैरों दौड़ता हुवा, बहुत सपाटे में, चौकडी भरता हुवा ।

ફદફદ (क्रि वि) उफनने के समान हालत मे, फदफदी दशा में, फफुन्दी।

ફદફદવું (क्रि) उफनना, फुद-फुदाना गुदगुदा होना, फफोला होना, पक कर रस से भर आना, पक कर फूटने योग्य होना।

ફદિયું (सं.) चार पाई का तांबे का सिक्का, (बंबई में) तीन पाई, एक पैसा, फार्दिग, छोटी मोटी रोटी, एक प्रकार की पपड़ी।

ફનસ (सं) देखो ફણસ

ફના (वि.) नष्ट, बरबाद, पैमाल, संहार किया हवा, बुझाहुवा, नाश।

ફનાફાતિયા થઈ જવું (क्रि) समूल नाश होना, संहार होना, नष्ट होना।

ફંદ (वि.) फंदा चाल, दुर्गुण, अनीति, दुर्व्यसन, तदबीर, बन्दिश, कपट, प्रबन्ध, शिकंजा, दोष, माजिश।

ફંદી (वि.) कपटी, लंपट, धूर्त, फितूरी, विलासी, विषयी, तूफानी।

ફફડવું (क्रि) कांपना, थर्राना, धूजना, दांत कटकटना, क्रुद्ध होना, फड़फड़ाना।

ફફડાટ (सं) फड़फड़ाहट, स्फुरण, अव्यवस्था, गड़बड़, व्याकुलता, क्रोध।

ફફડાવવું (क्रि.) फड़फड़ाना, भड़-काना कुपित करना, उसकाना।

ફફોલો-ફોલો (सं.) फोला, छाला, फफोला, फुल्का, स्फोट फुल्का, फासका, स्फोटक।

ફફોલો (सं.) पूर्ववत्

ફંફોસવું (क्रि.) खोजना, और तलाश करना, शोध करना, ढूंढना।

ફરક (सं.) असमानता, अंतर, फेर, फासला, पृथकता, फर्क, फासला, छेटा, दूरी, भेद।

ફરક પડવો (क्रि.) अंतर होना, रूपान्तर, बदल होना, पलटना, प्रतिकूल होना, फर्क होना।

ફરકડી (सं.) फिरकनी, फिरकी, चकरी, डोर न आ सके किन्तु मनुष्य भासके ऐसी डार पर लगाई हुई चकरी, +, आजी

टेडी लकडियों को बनाकर तय्यार किया हुवा चक्र, पहिया ।

ફરકવું (कि.) कडकना, कांपना, स्फुरण होना, फुरफुराना, इधर उधर हिलना हाथमें खिसक पडना, वापिस आना, मुंह दिखाना. पीछी नजर से देखना पीछा लौट कर देखना, नाचना, हवा से कांपना ।

ફરકારો (सं.) हवा में फ़र फ़र उडने की क्रिया ध्वजा, पताका ।

ફરંગી (सं.) फिरंगी, पोर्च्यूगीज इंग्रेज, यूरोपियन ।

ફરજ (सं.) कर्तव्य, धर्म, ड्यूटी।

ફરજ પાડવી (कि.) विवश करना कृपा करना, प्रसन्न करना, मजबूर करना, कर्तव्यकार्य करना ।

ફરજન-ન્દ (सं.) बालक, लड़का छोकरा, सन्तान, सन्तति ।

ફરણી (सं.) ताकु के ऊपरकी चकरीया फिरकी ।

ફરતું (वि.) गोल, आसपास, वृत्त, परावर्तन शील, घूमने वाला, घूमता ।

ફરદ (सं.) जोड़े में से एक, एक खण्ड, एक भाग, कपड़े की फरद।

ફરંદુ (वि.) घूमनेवाला, भटकने वाला, फेरी वाला, लुच्चा ।

ફરફર (कि. वि.) पवन की धीमी गति में, फड़फड़ाहट के साथ, वर्षा, फुँहारें । [स्थूल ।

ફરબે (वि.) मोटा, ताजा, पुष्ट,

ફરમાન (सं.) बादशाह की दस्तखती मुहर युक्त हुक्म, बादशाही सनद, हुक्म, आज्ञा नृपाज्ञा ।

ફરમાન બરદાર (सं.) आज्ञा पालक, ताबेदार, सेवक, स्वामि भक्त ।

ફરમાન બરદારી (सं.) आज्ञा पालन, स्वामिभक्ति, ताबेदारी सेवा ।

ફરમાવવું (कि.) आज्ञा देना, हुकम करना, इच्छा प्रदर्शित करना, आदेश करना ।

ફરમાશ-સ (सं.) इच्छा प्रदर्शन, फरमायश, शिफारिश, सौंपाहुवा काम, आज्ञा, हुकम, सौंप ।

ફરમાસી-સુ (वि.) इच्छा प्रदर्शित करने पर दिया हुवा, उम्दा, उत्तम सरस, उद्भुत, प्रथम भाव ।

ફરમો (सं.) ढंग, शक्ल, सूरत, ढांचा, सांचा, नकशा, नमूना, फार्म ।

ફરવા જવું (कि.) टहलने के लिये बाहिर जाना, वायु सेवन के लिये जाना ।

ફરવુ (क्रि.) घूमना, लौटना, फिरना एक ओर से दूसरी ओर घूमना, वापिस लौटना, पीछे मुड़ना, सब जगह जाना, स्थान स्थान फिरना, गोल आकार में फिरना, वृत्ताकार, घूमना, सिर घूमना, चक्कर आना, बदलना, हवा खाने जाना, वायु सेवन करना, सामने होना दिशा बदलना, चक्कर खाना ।

ફરવું હરવું (क्रि.) चलना, हिलना, डुलना, टहलना, घूमना ।

ફરશી-સી (सं.) पर्शु, फरसा, परशु कुल्हाडी, शस्त्र विशेष, बढई का हथियार, कुल्हाडा,

ફરસ (स.) पत्थरकी शिला।

ફરસ-બંદી-ધી (सं.) जमीन पर पत्थर या ईंटका चुनाव, पत्थर से जडीहुई जमीन, फर्श,

ફરસાટ (सं.) चना आदि धान्य खानेके समान स्वाद।

ફરસીપુરી (सं) चना और गेहूके आटे में जीरा डाल कर घी में तली हुई रोटी, पूरी विशेष, पक्वान्न विशेष ।

ફરસીમ (सं.) आज्ञा, धारा, नियम, कानून, आज्ञापत्र, परवाना विधि, हुकम ।

ફરસું (वि.) कालिक और तीक्ष्ण वस्तु खाने का सा स्वाद वाला।

ફરસદ (सं.) अवकाश, छुट्टी, फुरसत, आराम, फुर्सत, विराम आराम, मुलहत, विश्राम, शिथिलता ।

ફરહંગ (सं.) शब्द तथा उसके पास ही अर्थ लिखा हो ऐसा संग्रह, कोष, शब्द कोष, डिक्शनेरी लुगत ।

ફરાશી (सं.) उचा किस्म का लोह, फौलाद, स्टील, उत्तम लोह ।

ફરાગત (वि.) फुर्सत में, अवकाश प्राप्त, ठलुवा, निवरा, बेकाम।

ફરામોશ કરવું (क्रि.) भूलजाना, भूलाना, बिसरना, गफलत करना।

ફરામોસ-શી (स.) विस्मृति, भूल, गफलत, चितसे पृथक ।

ફરાવી (सं.) गीदड के समान एक प्रकार का जानवर ।

ફરાસ (स.) जिसका काम बिछौने करना, सामान रखना दीवाबती करने का हो ऐसा नौकर, बैरा, सेवक, भृत्य, दास, ।

ફરાસખાનું (सं.) दीपिक तेल बिछौने आदि सामान रखने की जगह या घर ।

ફરાળ (सं.) फलाहार, फलका भोजन, व्रतमें अन्नातिरिक्त फल भोजन।

ફરિયાદ–દી (सं.) दावा, मुकदमा शिकायत, नुकसान, मरनेके लिये सजा कराने के लिये उसका बदला चुकाने के लिये अर्जी देना। दुःखोद्गार, बड़बड़ाहट, रोना, रुदन।

ફરિયાદી (सं.) दावा करने वाला, अर्जी देने वाला, वादी, अभियोक्ता अर्थी, फरियाद, दावा मुद्दई।

ફરિયાદ–દી કરવી (क्रि) नालिस करना, शिकायत करना, मुकदमा चलाना।

ફરી જવું (क्रि.) चारों ओर घूम जाना, वचन भंग करना, दौड़ जाना, फिर जाना, ऊपर होकर निकल जाना।

ફરીથી–ફરી–ફરીને (क्रि. वि.) फिर-से, दुबारा, पुनम्पुनः बार बार, एक बार पुनः पीछे, बहुरि।

ફરી વળવું (क्रि.) लौटजाना, फिर-जाना, सीधी चला जाना।

ફરૂકર ફુટી નીકળવું (क्रि) भाग पड़ना, खोखला–फूटा निकलना।

ફરેઠાળ (सं.) लकड़ी के तख्तों द्वारा बनी हुई दीवार।

ફરેડી (सं.) परेड़, फौजी तमाशा, सपच्छियों तथा वीरों द्वारा खिड़की और द्वार बने हुए। फौजकी कवायद होते समय बन्दूक के शब्द।

ફરે ભુકાભ થવું (क्रि.) नाश हो जाना, नष्ट हो जाना, दुर्दशा में आ गिरना।

ફરેબીથી (क्रि. वि.) चालाकी द्वारा, प्रपंचसे, ठगाईसे, धोकेसे।

ફરેલ (वि.) अनुभवी, तजुर्बेकार, घूमा हुवा, मिजाजी, हठीला जिद्दी।

ફરેસ્તો (सं.) देवदूत, देवताओं के सम्वाद लाने वाला, पार्षद, सुंदर, मनोहर पुरुष, कपट रहित मनुष्य।

ફરો (सं.) अन्न का एक माप विशेष, (बंबई में) १६ पाली= $\frac{1}{2}$ खण्डी।

ફલ (सं.) देखो फळ।

ફલ કુડી (सं.) पैसा, तीन पाई (संकेत)

ફલંગ (सं.) कूद, उछाल, ठेका, फलांग, कूदके उल्लंघनार्थ उछाल, फांद।

ફલાણું (सर्व.) नाम गुण वर्णन करके जिसे परिचित कराया हो, अमुक, फलां, ऐसा एक।

ફલાલીન—લીન (सं.) फ्लैनल, फलालैन एक प्रकार का ऊनी वस्त्र।

ફલાહાર (सं.) फलोंका भोजन व्रत में अन्न के अतिरिक्त फलों का आहार।

ફસુ (वि.) खुला, प्रकट, चौड़ा विस्तृत, फैला हुआ, वृद्धिगत।

ફજ (स) हार, पराजय, परास्त अयश, पराभव, तिरस्कार।

ફસ (सं) फस्द, रक्त मोक्षण श्राव, खूनके निकालनेकी क्रिया, फस्त।

ફસ ખોલવી (क्रि.) खून निकालना सींगी लगाना रोग निवारणार्थ रक्त मोचन, नसके द्वारा खून निकालना।

ફસકવું—કીજવું (क्रि.) खसकना सटकना, फिसकना, पार न पड़ना,

ફસલ ગામ (सं.) खेतीकी फसल।

ફસલી સાલ (सं.) खेतीका वर्ष।

ફસવવું—સાવવું (क्रि.) बुरा समझा कर फन्देमें फांसना, फंसाना, धोके में लेना, बन्धन में लेना।

ફસવું—સાવું (क्रि.) फंसना, उलझना बन्धमें आना, जालमें आना।

ફળ (सं.) शस्य, लाभ, फलक, चर्म, ढाल, अच्छा सिद्धि, अभिप्राय कर्म जन्य, शुभवाअशुभ फल, अनिष्ट इष्ट परिणाम, अंत, नतीजा सिद्धि लाभ, प्राप्ति, पैदायश, उत्पत्ति, उद्देश, प्रयोजन, कारण, संतान, सबब, सुपारी।

ફળ આવવાં (क्रि.) लाभ दायक फलीभूत होना, पार पड़ना, लाभ होना, फल प्राप्त होना।

ફળઝાડ-વૃક્ષ-(सं) फलवाला पेड़, मेवेका पेड़, फल वृक्ष।

ફળરૂપ (वि.) वह वृक्ष जिसमें फल लगें, रसाल, फल देने वाला।

ફળફલાદિ (सं.) फल इत्यादि, कन्दमूळ फलफूल, अन्नातिरिक्त।

ફળફળાવળ (सं.) पूर्ववत्।

ફળવત-વાન (वि.) सफल फलदा, रसाल, लाभ युक्त।

ફળવું (क्रि) फलना, उत्पत्ति होना, गर्भ रहना, लाभ दायक होना शुभप्रद होना, फूलना फलना।

ફળ શ્રુતિ (सं) नफा, फायदा, लाभ।

ફળાઉ (वि.) जिसमें फल आते हों, फलने फूलने योग्य।

ફળાધાર (सं.) फलाहारी, केवल फल खाने वाला, जिसका फल आधार हो ।

ફળ વેચનાર (सं,) फल बेचने वाला, माली, फल विक्रेता, कुंजड़ा।

ફલાર–ફરાર (सं.) फलसेवन, फल भोजन, फराल ।

ફળી (सं) गली, बाजार, राह, गलियारा, सड़क ।

ફળીઉં (सं.) मुहल्ला, पुरा, मोहाल, गली, बाज़ार, बाड़ा, पौल आंगन।

ફળીભુત (वि.) फलदायक, जिस से फल मिला हो, लाभदायक ।

ફળીયું (सं,) देखो ફળીઉં

ફાક (सं.) टुकड़ा, अंश, विभाग, हिस्सा, भाग, चीर, कतरण, फांट, फाड ।

ફાંકડાઈ (सं.) छैलापन, आडम्बर, नखरा अलबेलापन ।

ફાંકડું (वि.) छैल, रसिक, रंगीला, खुशमिजाजी, साहसी, फक्कड़, सुन्दर, आडम्बरी अलबेला, (सं.) लिखी हुई सतर, लिखितपंक्ति, वाक्य ।

ફાંકવુ (कि.) फंका मारना, फांकना, खाना, चबाना ।

ફાંકું (सं.) जादू, टोनाटामन, दृष्टिबंधन, लफीर ।

ફાંકો (सं.) अभिमान, गुमान, गर्व, घमण्ड, दर्प, शेखी ।

ફાંગો (वि.) एक आंख से तिरछा देखनेवाला, भैंड़ी आंखोंवाला, तिरपट दृष्टिवाला, ऐंचकतानी दृष्टिका ।

ફાંગળું (सं.) फन्दा, फांसा, पेचे, कठिनाई, जाल, दाव ।

ફાંગળમાં નાખવું (वि.) फन्देमें फंसाना, जालमें डालना, घेर लेना।

ફાંટ (सं.) अंगरखा वगैरःका पल्ला, उकाला हुवा पदार्थ, क्वाथ, कषाय, झोली, खोई, मनुष्य खेतमें बीनते समय कपड़ेकी बना लेते हैं वह झोली, थैली ।

ફાંટ ભરવા (कि.) डोरे डालना, बखिया करना, डोरे भरना ।

ફાંટો (सं.) नदीका आड़ा गया हुवा भाग, गुस्सा, शाखा, बाजू, कल्पना, डाली, तुरंग, शेखी, क्रोध।

ફાંદ (सं.) मोटा पेट, स्थूलोदर ।

ફાંદો सं.) कपट, चाल, ठगाई, फंद, फांसा, पाश, बन्धन ।

ફાંફરડવું (कि.) खैंच कर फाड़ना, खरोंच कर फाड़ डालना ।

ફાંફાં (कि.) इधर उधर व्यर्थ के चक्कर खाना, फुरूमरी, संभ्रमण।

ફાંફાં મારવાં (कि.) व्यर्थ परिश्रम करना, फुजूल मेहनत करना।

ફાંદું (सं.) बढ, बाजीगरी, भानमती, इन्द्रजाल, जादूगरी।

ફાંસ (सं.) लकड़ी की पतली किरच या टुकड़ा जो चमड़े में घुस जाती है, सूक्ष्म कांटा, सींक फांस, चुनाई का निकाल डालने वाला भाग, घबराहट, नुकसान करने के लिये बीच में पड़ना, हरकत करना, फन्दा, फांसा, गांठ पाश, फांक, चीरा।

ફાંસ કાઢવી (कि.) कठिनाई दूर करना, कष्ट से मुक्त करना।

ફાંસ મારવી (कि.) बाधा डालना, जिस से उद्धार न हो सके ऐसी कोई आड़ बीचमें कर देना, रेड़ मारना।

ફાંસ કાઢતાં પેસે સાલ भला करते बुरा हो, धरम करते करम फूटे, लेने गई पूत और खो आई खसम, चौबे गये छब्बे होने हो गये दुब्बे।

ફાંસવું (कि.) रस्सी द्वारा कुवे में लटकाना, उतारना, घड़ा लोटा इत्यादि पात्र का गला बांध कर पानी भरने के लिये कूवा आदि किसी जलाशय में डालना, झुके हुए किसी एकाध हिस्से को खींच डालना, बीच के अलग पटकना, तोड़ना (वृक्ष की शाखा पर्ण आदि) पड़त जमीन को खेती करने के लिये खोदना, बंजर भूमि जोतना, फांसना, फन्दे में लेना, जाल में लेना, लिपटाना।

ફાંસિયું (वि.) फन्दे में आने योग्य, ठगाई, दगाबाजी लुचाई।

ફાંસી (सं.) फांसा, कठिन डोरी से गला घोटने की क्रिया, खून करने वाले अपराधी को प्राण दंड के लिये गले में डाला हुआ रस्सी का फन्दा, सूली को रस्सी से गला घोट कर मारने का प्राण दंड, पाश, गले में डालने की रस्सी, प्राण बंधन द्वारा व्याकुल हों ऐसी युक्ति। [देने वाला।

ફાંસીઓ (सं.) दबाने वाला, फांसी

ફાંસી દેનાર (सं.) जल्लाद, फांसिआरा, फांसीपर चढाने वाला वधिक।

ફાંસુ (वि.) देखो ફાંસિયું (कि.वि.) कुरूप, बेडौल, विलक्षण, टेढा मेढा

[illegible] (सं.) फन्दा, फांसा पाश, [illegible], पाश, फांदा, फफूंदी जाल।
[illegible] (सं.) झोली, थंगुल।
[illegible] (सं.) देखो [illegible]
[illegible] (सं) धूल, चूर्ण, भूसा, फंकी।
[illegible] (सं.) फांकने वास्ते हथेली में या मुट्ठी में लिया हुवा अंश कड़ा, फांकने के लियेली हुई वस्तु।
[illegible] (क्रि) फक्का मारना, खाना, भक्षण करना, चूर्ण अथवा भुना हुवा धान्य फांकना, गफ्फा मारना।
-भूख [illegible] (क्रि.) पश्चाताप तथा अत्यंत दीनता प्रदर्शन के समय यह वाक्य प्रयोग होता है, भूख से मरना।
[illegible] (सं.) फंकी, फांकने योग्य चूर्ण, औषधि आदिका फांका, गफ्फा
[illegible] (सं.) फंका, फांकने योग्य वस्तु का परिणाम, व्रत, निराहार हलका घूंसा, हलचल, दावा, छल।
[illegible] (सं.) वसंत ऋतु, राग विशेष, होली का गान, होलिका खेल, होली में रंग आदि डालना। होरी, होली में गाली गलौज।
[illegible] (सं.) एक प्रकार का स्त्रियों का पहिरने का वस्त्र।

[illegible] (सं.) फच्चर, लकड़ी की लंबी वह फांक जो किसी लकड़ी बीच में ठोक कर तंग कर दी जाती है, फाड़, चीर, बीच में विघ्न उपस्थिति, एक प्रकार का बढ़ई का औजार।
[illegible] मारवी (क्रि.) अकस्मात् हानि पहुंचाने के इरादे से बीच में पड़ना, बीच में विघ्न उत्पन्न कर देना, पहिये में आरा या तान बिठाना।
[illegible] (वि.) छीदा, चपटा, जिसके बीच में बहुत अन्तर हो, टेढा मुड़ा।
[illegible] (सं.) लकड़ी का फाड़ा हुवा टुकड़ा, खपच्ची, चीप फच्चर।
[illegible] (वि.) बढाहुवा वृद्धिंगत, शेष, बाकी रहा हुवा, फालतू, निकम्मा काममें न आने योग्य, निरुपयोगी, बचा, अनुपयोगी बे कामका।
[illegible] (वि.) विद्वान्, पंडित, पठित, पढाहुवा, गुणी, चतुर, सुज्ञ, कोविद, धीमान, बुद्धिमान पटु, आलिम।
[illegible] (सं.) तड़कन फटनेसे जोतड़ हो जावे, फाड़, फांक, चीर, [illegible]

से पृथक, टूट, फूट, दरार, भेद, असम्मत, अमेल, अनैक्य, फूट, विरोध, भेद, फाटक, द्वार, दरवाजा, दरज ।

ફાટફૂટ (सं) विरोध, स्नेहभग, अनैक्य, फूट, विरोध भेद, ।

ફાટક (स.) द्वार, दरवाजा, बाहिर का दरवाजा, सदर द्वार ।

ફાટવું (क्रि) फटना, टूटना, दरार होना, दरज होना, चीर होना, फाक होना, टूक होना, खण्ड होना, मर्यादा के बाहिर जाना, अविवेकी होना, गाली देना जोशमें आना, नुकसान और मृत्यु से निडर होकर काम करना, भय चिंतासे व्याकुल होना, આંખ ફાટવી (क्रि.) गुस्सा चढ आना, मृत्यु होना ।

ફાટ્યામાં પગ ઘાલવો (क्रि.) निर्बल का सामना करना, दुखमें दुख देना, आ बैल मुझे मार करना, खुद फंसना ।

ફાટ્યામાં વાત છે बात जरा बडी है, मद चढा है । [जाना ।

ફાટી પડવું (क्रि.) अचानक मर

ફાટી જવું (क्रि.) अचानक मर जाना, मर्यादा के बाहिर जाना अविवेकी होना, ।

ફાટાફૂટ (सं.) देखो ફાટફૂટ

ફાટું (वि.) फटा हुआ, खण्डित, चिरा हुआ, दरज, दरार, फाँक, निर्लज्ज, अशालीन, फूहर ।

ફાટેલ (वि.) बेमर्याद, अविवेकी हदसे, बाहिर बोलने वाला, दिवाना, उन्मत्त, पागल बावला ।

ફાટેલું (वि) देखो ફાટું

ફાડ (सं.) चीर, फांक, दरार, दरज टुकडा, खण्ड, आधा रुपया (संकेतार्थ) એક ભગની બે ફાડ एक बापके दो लडके ।

ફાડવું (क्रि.) फाड़ना, चीरना, बिना हथियार भाग करना, टुकडे करना, જેમ ફાડવા (क्रि.) बारबार जाना, उगाही करना ।

ફાડિયું (सं.) आधा, आधा रुपया किसी पदार्थ के किये हुए दो भागोंमें से एक भाग ।

ફાડી ખાવું (क्रि.) चीर फाड़कर खा जाना, (पशुद्वारा)

ફાતડો (स.) हिजड़ा, नपुंसक, नामर्द, षढ, क्लीब, अनखा ।

ફાતિયા (सं.) नाश, विनाश, बर्बाद नष्ट, फना, [illegible] ।

ફાતિહો (सं.) कुरान के पहिले प्रकरण का पहिला भाग जो मृतक की आत्मा की शांति के निमित्त पढ़ा जाता है।

ફાતિહા પઢવા (क्रि.) मृतक की आत्मा की शांतिके लिये ईश्वरोपासना करना, अंत्येष्टी ईश्वर प्रार्थना।

ફાનસ (सं) कण्डील, लालटेन दीप मंदिर, दीपक रखने की चीज।

ફાની (वि.) नाशमान, क्षणभंगुर, नष्ट होने वाला, मिथ्या। [पापड़ा।

ફાફડો (सं.) एक प्रकार की फली,

ફામ (सं.) याद स्मरण, स्मृति।

ફાયદા કારક (वि.) उपयोगी काम में आने योग्य, लाभदायक, हितकर, लाभप्रद, किफायती, लाभकारी।

ફાયદેમંદ (वि.) पूर्ववत्

ફાયદો (सं.) लाभ, नफा, कमाई, आय, हित, किफायत, प्राप्ति, पैदा।

ફાયો (सं.) रुई का फोवा, खुशबूदार वस्तु तेल में इत्र आदि में डूबा हुवा रूई का टुकड़ा, रूई का पहला।

ફાર (क्रि. वि.) बहुतही, विशेष, अधिक, अत्यधिक, पात्र में न आवे इतना।

ફારેગ (वि.) फुर्सत प्राप्त, निवृत्त, साफ, शुद्ध, उजला, ठाला, अबारा निठल्ला।

ફારગ (वि.) अवकाश प्राप्त, छुट्टी पाया हुवा, ठलुवा, ठाला, निवृत्त, अवारा।

ફારગત (सं.) छुट्टी, मोचन, छुटकारा, अवकाश, फुर्सत, ठलुआई (वि.) फारिग, ठाला, निवृत्त, अवकाश प्राप्त।

ફારગતી (सं.) छुटकारा पाने का प्रमाण पत्र, बन्धन मुक्ति का लेख, खुलासा।

ફારગતી આપવી (क्रि.) छुट्टी देना, खुलासा करना, बन्धन रहित करना, सम्बन्ध तोड़ना, छुट्टी का लिखित पत्र देना, तलाक देना।

ફાલ (स.) अधिकता, बहुतायत, फोटा, खेती, शकुन, सुगन, पूर्वलक्षण, शुभाशुभ चिन्ह, भविष्य सूचना।

ફાલતું (वि.) अधिक, ज्यादः, आवश्यकता से अधिक, निरुपयोगी, अनावश्यक, फुजूल, व्यर्थ।

ફાલવું (क्रि.) मोटा होना, कद में बढ़ना, फैलना, फूलना, पुष्ट होना।

ફાલસાં (सं.) एक प्रकार का फल।

ફાળીઉં (सं.) एक प्रकार का वस्त्र जो माथे पर पहिना जाता है।

ફાલુદો (सं.) एक प्रकार की लपसी, एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

ફાલું (सं.) जंगली पशु विशेष, स्यार, गीदड़, जम्बुक, लोमड़ी।

ફાવતું (वि) अनुकूल, योग्य, उचित, मुनासिब, फबता हुआ।

ફાવવું (क्रि.) अनुकूल होना उचित होना, योग्य होना, मुआफिक होना, किसी कार्य में आगे बढ़ना, परिश्रम में सफल होना, चलना, कृतकार्य होना।

ફાસફૂસ (सं.) पोचा, दुर्बल, पोला, निकम्मा, निरर्थक, अनुपयोगी, फुजूल, कचरा कूड़ा, अगड़ बगड़, घासफूस, बकझक तुच्छ वस्तु।

ફાસફૂસિયું (वि.) निकम्मा, पोचा, पोला, नीरस, रसशून्य, कूड़ा-करकट।

ફાળ (सं.) सरपट दौड़, सरपटी, छलांग, कूद, फांद, उछाल. दौड़, शीघ्र गति।

ફાળ ભરવી (क्रि) कूदना, फांदना, छलांग मारना, भारी काम में झिझकना, चौंकना, घबराना, भय से व्याकुल होना।

ફાળ મારવી (क्रि.) बड़े बड़े विचार करना, हवाई किले बनाना, छलांग मारना, उछलना, कूदना, फांदना।

ફાળ પડવી (क्रि.) अकस्मात् चौंकना, डर लगना, चौकन्ना होना।

ફાળકું (सं.) सूत की आंटी, वेष्टित सूत्र, लपेटा हुआ सूत का गोला रील।

ફાળકો (सं) अटेरन पर लपेटा हुआ सूत, बांस के बने ढांचे पर लपेटा हुआ सूत्र।

ફાળવવું (क्रि.) हिस्सा करना, बटवारा करना, भाग करना, पृथक् करना।

ફાળવા (सं.) फाल, लोहेका औज़ार विशेष, कृषि सम्बन्धी औज़ार।

ફાળસા (सं.) एक प्रकार का मेवा जो ग्रीष्म ऋतु में उत्पन्न होता है, फल विशेष।

ફાળિયું (सं) फेंटा, साफा, छोटी पगड़ी, पाग, उष्णीष, पगिया, सिरबन्धा, छोटी पाग, कमरबन्द, धोवा।

ફાળી (सं.) एक प्रकार का स्त्रियों का वस्त्र, साड़ी, लूगड़ी, फरिया।

ફાળિયું (सं) देखो ફાળકું

ફાળો (सं.) हिस्सा, भाग, पांती, विभाग, शेयर, बांटा।

ફાળો નાખવો (क्रि) हिस्सा करना अमुक मनुष्य को अमुक वस्तु देना इत्यादि हिस्सा करना।

ફિકર (सं.) चिंता, सोच. फिक्र, उद्वेगता, व्यग्रता, चित्त की बेचैनी, खटका।

ફિકાસ सं.) फीकापन, हल्कापन, विवर्णता, उदासीनता, निस्तेजता, कान्तिहीनता, चैतन्यतारहित।

ફિક્કું (सं.) निस्तेज निःसार, विवर्ण, उदास, निरस, निःसत्व, रसहीन, पीलापन, क्षीणता, मन्द।

ફિટકાર (सं.) धिक्कार तिरस्कार, थुत्कार अनादर, अवज्ञा, थुतकार, अवगणना, उपेक्षा, श्राप, बद दुआ, शाप, अनिष्ट चिंतन, दुर्वाक्य कथन।

ફિટકારવું (क्रि.) धिक्कारना, तिरस्कार करना थुत्कारना, तुच्छ गिनना।

ફિટણ કાળ (सं.) प्रलय काल, मृत्यु समय, नाशकाल, अंतसमय, क़यामत।

ફિટ્‌ફિટ (आव्य.) छिह् छिह्, छिः छिः, थू थू, छी, छी, घृणा सूचक शब्द, लज्जा सूचक शब्द।

ફિટાવવું (क्रि.) दे देना, (ऋण) ललचाना, उस्काना, उभाड़ना, साफ करना, घूंस देना, रिश्वत देना, छुटकारा पाना।

ફિટવું (क्रि.) छूटना, सफाई होना, नहीं के समान होना, लय होना, मिटना, पड़ना, सरकना, मुक्त होना, शत्रु होना, सामने होना, मरना, हटना।

ફિટણ (वि.) नाशवंत, मृत्युयोग्य, मरनेका (समय)

ફિટણજ (सं.) नाशवंत शरीर, मिथ्या शरीर, मरने वाली देह। अनित्य शरीर।

ફીણ (सं.) फेन, झाग, बुदबुदों [का समूह।

ફીણવું (क्रि.) मथना मंथन करना, मथन करना, किसी गीले पदार्थ को फफेड़ना, फायदा निकालना, लाभ पाना।

ફીણાળવું (वि.) फेनयुक्त, झाग- [दार।

ફિતનો (सं.) रौला, बखेड़ा, झंझट, हलचल, हड़बड़ी, बगावत हुल्लड़।

ફિતુર (सं.) हुल्लड़, तोफान, दंगा, बलवा, राजद्रोह झगड़ा, टंटा, बखेड़ा उपद्रव, कपट, दगाबाजी।

ફિતુરખોરી-ર (वि.) विश्वासघाती, बेईमान, अधर्मी राजद्रोही उपद्रवी।

ફિતુરી (वि.) बलवा करने वाला, दगाई, तूफानी, दगाबाज, कपटी, हुल्लड़ी।

ફિદવી (सं.) चाकर, भक्त, सेवक दास नौकर, गुलाम, किंकर।

ફિદા (वि.) आसक्ति में उन्मत्त, प्राण देने के लिये तय्यार, अत्यंत प्रसन्न, खुश।

ફિયો (स.) तापातिल्ली, प्लीहा, यकृत और प्लीह ये दोनों शरीरके अग हैं, दाहिनी ओर यकृत, और बांई ओर हृदय के नीचे प्लीह रहता है ये दोनों रक्त से उत्पन्न होते हैं ज्वरसे जो निर्बल मनुष्य निर्बल हो गया हो उसे यह रोग हो जाता है।

ફિરકી (सं.) चकरी, फिरनेकी चीज सीनेके लिये जिस पर धागा लिपटा हुआ होता है वह काठकी गरी, रील।

ફિરકો (सं.) एक राज्य अथवा एक धर्म के लोग, कौम, फिरका पंथ, जाति, लोग, मत।

ફિરંગી (सं.) एक जाति विशेष, पोर्च्यू गीज, कोई भी टोपी वाला गोरा, पोर्च्यू गीजों का राज्य नहीं होने के बाद यहाँ रहेजो अथवा पतित हिन्दू मुसलमान, [illegible], योरोपियन गोरा।

ફિરવું (क्रि.) देखो ફરવું

ફિરકણી (सं.) लट्टू इत्यादि घुमाने का हथियार या औजार।

ફિરવવું (क्रि) फेरना, उलट-पुलट करना, हेर फेर करना,।

ફિરસ્તો (सं) दूत, देवदूत, पार्षद, फरिश्ता, देवसंवाद वाहक।

ફિર્યાદ (सं.) देखो ફરિયાદ

ફિશાવાન (वि.) दीमागी, मिजाज़ी, गर्वित, हठीला, जिद्दी, मनचक्कर।

ફિલસૂફ (सं.) तत्वज्ञानी, मन अथवा धर्म जानने वाला, पंडित, तत्वशोधक, रसायनी, किमि, [illegible]

ફિલસૂફી (सं.) तत्वज्ञान, विज्ञान तत्वशास्त्र, चतुरता, फिलासफी।

ફિસાદ (सं.) दंगा, हुल्लड़, तोफान, झगड़ा, टंटा, बखेड़ा।

ફિશાકભેર (वि.) दंगई उपद्रवी, झगड़ाली, तूफानी झगड़ालू।

ફિસિયારી (सं) आत्मश्लाघा, आत्म स्तुति, अहम्मति, मगरूरी, स्वाभिमान, स्वयंस्तुति, बड़ाई।

ફિસિયારી ખોર (वि.) आत्मश्लाघी, घमण्डी, गर्वित, अहंकारी अभिमानी, अपनी आप तारीफ करने वाला।

ફિસોટો (सं.) परिश्रम द्वारा अथवा रोगसे प्राणी मात्र के मुख से जो एक प्रकारका रससा निकलता है, मुखसे निकले झाग, लार।

ફિસોટા કઢાડીશ (,,) इतनी मार मारूंगा कि तेरे मुखसे झाग निकलेंगे, तू बे दम हो जावेगा।

ફીક (सं.) शुष्कमुख, तबियत खराब हो जानेसे मुंहमे फीकापन, बे स्वाद।

ફીકું (वि.) फीका, मन्दा, अच्छा (रंगमें) बे स्वाद, रोग, लज्जा अथवा भयसे उतरा हुआ मुंह, निस्तेज, उतरा हुआ।

ફીણ (सं.) फेन, झाग, किसी प्रवाही वस्तुपर मथन सूचक तैरता हुआ श्वेत पदार्थ।

ફીણ આવવું (क्रि.) थकजाना, मुखमें झाग आना, फेन आना।

ફીશવું (क्रि.) देखो ફિસવું।

ફીત (सं.) फीता, पतला किनार किनारी, गोटा, बेल, डोरी लैस, नाड़ा, नापने को फीता, साड़ीपर लगाने की किनारी।

ફીરસ્તો (सं.) देखो ફિરસ્તો।

ફીસી (सं.) आत्मश्लाघा, आत्म प्रशंसा, स्वयंस्तुति अहम्मन्यता, गर्व। [फीका।

ફીસું (वि.) तुरन्त टूटजाने वाला

ફું (क्रि. वि.) फुंकार, मुखसे एक दम छोड़ा हुआ स्वासका शब्द छि, हुश, हिस्, छिट, धत्,।

ફુંક (सं) फूंक, होठोंको संकोचन करके थोड़ा पोला रखके पेटमेंसे निकाली हुई थोड़ीसी हवा, स्वास, सौंस, दम, प्राण, फुंकार, फुत्कार, समझायश, सिखावन।

ફુંક નિક નિકળી જવી (क्रि.) अचानक मार डालना, मृत्युहोना, दम निकलना,।

ફુંક મારવી (क्रि.) (कानमें) गुप्त परामर्श करना, समझा देना सिखा देना, समझाकर इच्छानुसार कर लेना, गुरुमंत्र देना,

ફુગ્ગો (सं) गेंद के समान फूली हुई वस्तु, फुटबाल के भीतर का रबर, फफोला, पेशाब की थैली, मूत्राशय, फुग्गा ।

ફુગરાવું (क्रि.) फूलना, हवा भरना, विकसित होना, फैलना ।

ફુગવું (क्रि.) सूजना, फूलना, बढना

ફુગવવું (क्रि.) फुलाना, सुजाना, गर्भ स्थापन करना, गाभिन करना ।

ફુગવાણું (वि.) चिकना, उठा [हुवा ।

ફુગાઉ (वि.) शीतोष्ण, कम गरम ।

ફુગારો (क्रि.) फोला, उठाहुवा, गुमड़ा ।

ફુગાવવું (क्रि.) फुलाना, उस्काना, उत्तेजना देना, बढ़ाना ।

ફુગાવું (क्रि.) बहुत देर तक भीनी हवा में तथा भाफ में रहने से पोची वस्तु पर उत्पन्न हो-जाने वाले रुएं के समान मैल, फफूंदना, बफा आना ।

ફુટ (सं.) १२ इंच का माप, माप विशेष ।

ફુટકળ (वि.) निकम्मा, टूटा, फूटा, फुटकर, मिश्रित, कईएक, पृथक पृथक, कुछ, दोचार, किर-कोल ।

ફુટકિયું (वि) देखो ફુટકું,

ફુટડી (वि.) गाढी, मोटी, (दाल)

ફુટડી દાળ (सं.) गाढी दाल, मोटी दाल ।

ફુટડું (वि.) सुन्दर, शोभायुत, खूब सूरत, दर्शनीय, मनोहर, चित्ताकर्षक ।

ફુટવું (क्रि.) फूटना, टूटना, उगना, अंकुर आना, खिलना, विकसना, अंदरकी वस्तु बाहिर निकलने के लिये फटना, भाग जाना, जोरसे निकलना, फैलना, आरपार जाना, निकल पड़ना, दूसरी तरफ दिखाना, (अक्षर कागजपर) प्रगट करने में आना, पक्षमेंसे निकल आना, विपक्षी हो आना, रोग होना, फुन्सी इत्यादि चम रोगों का उत्पन्न होना, काम करनेसे बन्द होना, (इंद्रियां) कमअक्ल होना, मूर्ख होना, मन्द होना, (माम्य) आवाज होना, (पटाखे का) ।

ફુટવી બાદામ નથી=अखरोट इत्यादि कई जगहों में बदामोंसे लेनदेन होता है ये बदामें खाने योग्य नहीं होती है, अतएव अतिशय दरिद्री जिस के पास पैसा नहो

उसके लिये यह वाक्य प्रयोग किया जाता है, फूटी कौडी नहीं, कसम खाने के पैसा नहीं, ।

ફુટી બદામનું (क्रि. वि.) तुच्छ, हलका, पाजी, कम कीमत का, ओछा ।

ફુટેલા કપાળનું (क्रि. वि.) भाग्यहीन, फूटी किस्मत का, अभागा, दुर्दशा ग्रस्त ।

ફુટેલા કાળજાનું (क्रि वि.) स्मृतिहीन, बे समझ, असावधान, बार बार भूलने वाला।

ફુડાપુડ (सं) देखो ફડફુડ

ફુડીજવું (क्रि) खण्ड हो जाना, टूट जाना, फूट जाना, टुकड़े टुकडे हो जाना ।

ફુણગી (सं.) कली, कोंपल, मंजरी, कोमल पत्ते, फुनगी, फुन्सी, फोड़ा, ददोरा, छाला, बुल्बुला, बुदबुदा। [का शब्द ।

ફુત્કાર (सं.) फुंकार, श्वासत्याग

ફુત્કારવું (क्रि.) फुफकारना, फुंकारना ।

ફુદડી (सं.) गोल चक्कर में घूम कर खेलने का एक स्त्रियों का खेल, फुदी, नृत्य विशेष, लड़कियों का खेल, तारों के आकार का चिन्ह, क, फुदी ।

ફુદડો (सं.) गन्ध युक्त एक प्रकार का जीव, एक प्रकार का घास ।

ફુદડી ફરવી (क्रि.) खेलते समय गोल चक्कर में घूमना ।

ફુદનો-ફુદીનો (सं.) एक प्रकार का पौधा, पोदीना नामक सुगन्ध युक्त पौधा ।

ફુદરડો (सं.) एक प्रकार का कीड़ा, कीट विशेष, एक प्रकार का उड़ने वाला, जीव । [हुंकार ।

ફુંફાડા (सं) फुनकार, फुंकार,

ફુંફાં (सं.) फू फां, शब्द विशेष, श्वास परित्याग का शब्द, शीघ्र शीघ्र नाम का शब्द । [दार ।

ફુમતિયાળું (सं.) फुंदेदार, गुच्छे

ફુમતી (सं.) एक प्रकार का जेवर जो फुंदे के रूप में लटका रहता है । झुमका, गुच्छा ।

ફુમકું (सं.) देखो ફુમતું

ફુમતું (सं.) गुच्छा, झब्बा, फुन्दा फुंदा, झूमर, झुमका, रेशम कलाबत्तु आदि का टोपीपर लटकाने का गुच्छा, तुर्रा टोपीपर लगाने वाला गुच्छा, चांदी की घुघरियों का फुंदा ।

ફુરજો (सं.) सायर चौकी, कस्टम हाउस, नाका घर, चुंगीघर, नौका अथवा अन्य जलयान से सामान इत्यादि उतारने क लिये लकड़ी अथवा पत्थरों का बाधा हुवा पुल।

ફુરસદ (सं.) अवकाश, छुट्टी, मुक्ति' फुर्सत, विश्राम आराम।

ફુરવું (क्रि.) हिलना, चलना, स्फुरण, होना बहुत, आर स भड़कना।

ફુલ (सं.) पुष्प, पुष्य, कसुम, फूल, कलिका. कली, मलिनता, धुंध। आंख मे सफेद दाग, फूली, लिंगेन्द्रियकी गिल्टीया गाठ।

ફુલઝર (स.) एक प्रकार की आतिश बाजी जिसको जलते समय फूल समान प्रकाश होता है, फुलझड़ी।

ફુલઝરણી (सं.) फुलझरी, एक प्रकार की आतिशबाजी, चिनगारी।

ફુલડી (सं.) तारा, तारक, ग्रह नक्षत्र।

ફુલકું-લેકું (सं.) ब्याह होने वाले लड़के लड़की के खाने का थोड़ा छोटी पतली रोटी, चपाती।

ફુલડું (सं) सेकने से फूला हुवा अन्न, फूलीकाकण, धान्य जो फूल हो।

ફુલણજી (वि.) फुलाने से फूल जावे ऐसा व्यक्ति, (झूठी) प्रशंसा से फूलनेवाला, सत्य समझकर प्रसन्न होने वाला।

ફુલછડી (स.) वह छड़ी जिसके चारों ओर फूल गुँथे हों।

ફુલઝાડ (मं.) कुसुमित वृक्ष, फूलदार पेड़, वह पेड़ जिस में पुष्प लगते हों।

ફુલઝારી-દાન (स) फूल रखने का बरतन, वहपात्र जिस में फूल सजाये जाते हैं, गुल दस्ता रखने का पात्र।

ફુલતોડો (सं) स्त्रियों के पैरो में पहिरने का एक प्रकार का आभूषण। [मस्त।

ફુલ ફટાકિયો (वि.) फक्कड़, छैल,

ફુલધરૂ (स.) दारु का अर्क, शराब का अर्क, अलकोहल।

ફુલધાર (वि.) जो फूल समान करे अच्छा, स्वच्छ, साफ, पवित्र।

ફુલપરડો (स.) एक प्रकार की सुपारी।

ફુલવડી (सं.) एक प्रकार का पकवान, घी अथवा तेल में तला हुवा आटे का मसालेदार पदार्थ विशेष।

ફુલવવું (क्रि.) फुलाना, हवा भरना।

ફુલવું (क्रि.) ऊंचा होना, बढ़ना, फूलना, खिलना, यौवन में आना, विकसित होना, बौर फूल आना, सूजना, सोजा आना, झूठी बड़ाई दिखाना, बाहिर आना, पानी लगने से लकड़ी का फूलना, मोटा होना, ऊंचा होना, रोग से मोटा होना, बादी से फूलना, आनन्दी होना, गर्भ रहना, दिन रहना।

ફુલીને પોઉં થવું (क्रि.) मिथ्या डंबर रखना, बाह्य डम्बर करना।

ફુલીને ટટા થવો (क्रि.) आंखें दर्द से सूज आना, खूब सूज आना।

ફુલીને ફાળકો થવો (क्रि.) फूल के कुप्पा होना, आनन्द में मग्न होना बाग़ बाग़ होजाना, गद्गद होजाना

ફુલારો-શ (सं.) बड़ाई, प्रशंसा, बढ़ावा, उत्तेजना।

ફુલસાં કળાં (सं.) स्त्रियों के पैर में पहिनने का एक प्रकार का चादी का आभूषण। एक प्रकार का जेवर।

ફુલાવવું (क्रि.) फुलाना, ऊंचा करना, हवा भरना, मिथ्या प्रशंसा से बढ़ाना, बड़ी बड़ाई देना, प्रशंसा करना।

ફુલાવું (क्रि.) मिथ्या प्रशंसा से फूल जाना, अभिमान होना।

ફુલાસ (सं.) बड़ाई, प्रशंसा, डींग, शेखी, अभिमान।

ફુલિયું (सं.) एक जाति की वनस्पति, छोटा प्याला।

ફુલું (सं.) आंख में का रोग फूली, फूला, फुल्ली, फोला।

ફુલેકું (सं.) वे लड़के लड़की जिन का विवाह होने वाला हो उनकी बनोरी या निकासी निकालने के लिये घोड़ा, विवाह का जुलूस, बनोरी।

ફુલેલ (सं.) फूलों की सुगन्ध से बना हुआ तेल, सुगन्धित तेल खुशबूदार तेल।

ફુલેવર (स.) जिस में पुष्प हों, फूलोंदार, कुसुमित, ताश के खेल में फूल वाले पत्ते (चिड़िया)।

ફુલ્લસ (सं.) द्रव्य, रुपया, पैसा, धन, दौलत, टका, जर।

ફુશ્ય (सं.) बड़ाई, प्रशंसा, डींग, शेखी,

ફુવારો (सं.) देखो ફુઆરો

ફુવો (सं.) देखो ફુઓ।

ફુસફાસ (वि.) निर्जीव, बेदम, बेकाम व्यर्थका, निरर्थक, हलका, निकम्मा।

ફુસફુસું (वि.) पूर्ववत

ફુસફુસિયું (वि.) पूर्ववत

ફુસલાવવું (क्रि.) बहकाना, दम देना, पट्टी पढाना, भुलावा देना, झांसना, धोकादेना, पोटना, फुसलाना।

ફુસિયું (वि.) देखो ફુસફુસિયું बदनामी, तोहमत, बट्टा।

ફૂગ (सं.) फफूंदन, किसी वस्तु पर सड़ने अथवा गलने पर पैदा हुए फफूंदनकें रोएं, चिकनाहट।

ફૂગવાળું (वि.) चिकना, रुएंदार,

ફૂગી (वि.) पूर्ववत्

ફૂટ (सं.) बढईका आधागज, १२ इंच, परिमाण विशेष, एक प्रकारका खरबूजे के समान फल, अनैक्य, वैर, विरोध, टूट, अंतर, अनबन, अदावत।

ફૂલ (सं.) वृक्ष अथवा लताका सुगंधयुक्त पंखड़ियोंदार एक कोमल शोभायुक्त अवयव जो विशेषकर फलोत्पत्तिका कारण होता है। विकसित कलिका, खिली हुई कली, कुसुम, पुष्प, पुहुप, बहुतसे वृक्षोंकी फलीभी फूल कहलाती हैं. फूलके आकारका सोना, चांदी हाथीदांत कागज़ इत्यादि, आतिशबाजी चलाने पर उसमेंसे निकले हुये फूलके समान, फूलका चिह्न, आंखमें सफेददाग, फूला, फूली, नेत्ररोग विशेष। कुमारी पहले उतारा हुआ बारीक भूसा, बच्चेदान जिसमें गर्भ रहता है, गर्भाशय, कमल (स्त्रीका) पैरों की अंगुलियोंमें पहिननेका आभूषण, नाकमें पहिरनेका कांटा या लौंग, दही आदि मथनेकी रई के आंचेका फूल पुरुषकी लिंगेंद्रियका अग्रभाग, लिंगकासिर, लिंगकीसुपारी, ऋतु समय (स्त्रीका) औषधिको आगकी गर्मीसे तपाकर उसमेंका उड़ाया हुआ भाग, हलका, नाज़ुक, कोमल, कच्चा, सुकुमार, सुन्दर, मनमोहक।

ફૂલ આવવું (क्रि.) ऋतुकाल होना, (स्त्रीका) आशा बंधना.

ફૂલ ગુંથે છે—काम धंधा होने परभी बैठा रहे अथवा काम करने में आलस करता हो तब उसके लिये यहवाक्य प्रयोग किया जाता है कि "ઉઠને, શું ફૂલ ગુંથે છે? તે કામ કરતો નથી"

ફૂલની પાંખડી (सं.) तुच्छ भेट, यथाशक्ति सेवा, मानपूर्वक अल्प भेट।

ફૂમતી (स्त्री. देखो फुंदी

ફૂમકો (पुं.) फुंदना, पतली छोटी चोटी।

ફૂલણજી (सं.) वह मनुष्य जो चापलूसी खुशामद अथवा अपनी मिथ्या प्रशंसा सुनकर फूलकर कुप्पा हो जावे।

ફૂલબાજ (सं.) आतिशबाज, आतिशबाजीका काम करने वाला।

ફૂલું (सं.) आंखमें सफेद फुला, फुल्ली, नेत्र रोग विशेष।

ફૂસ (सं.) घास, तृण, चारा, सड़ा घास।

ફેં (वि) थका हुवा, हारा हुवा, थकित, जिसका सांस भर आया हो, व्यथित। [अर्थ में,

ફેંફેં-ફે (क्रि. वि.) थक जाने के

ફેંકવું (क्रि.) प्रक्षेपण करना, त्यागना, दूर कर देना, निकालना, अलग कर देना, घोड़े को सर्पट दौड़ाना, डालना, पटकना, छोड़ना, पात करना।

ફેંટ (सं.) कपड़े से कसी हुई कमर, कमरबन्धा, कमरपेटी, परिकर।

ફેંટો (सं.) मुरेठा, साफा, मुंड-बन्धा, एक प्रकारकी छोटी पगड़ी, उष्णीष विशेष, ताड़ खजूर आदि के बीच का वह भाग जिसकी रस्सी वगैरः बनती है। कमर, ठपाई, छल, भेद।

ફેંદવું (सं.) कुचलना, कूटना, नोंचना, खराब कर डालना, मसलना, पिचलना। [को गईना

ફેણ (सं.) सर्प का फन, सांप

ફેફરૂં (स.) मृगी, रोग विशेष, मूर्च्छा रोग, फेफड़े का रोग, उन्मद, बाई।

ફેફસું (सं.) फेफड़ा, यकृत, शरीरस्थ अंतरंग अवयव।

ફેફસાની ગરમી (सं.) रोग विशेष,

ફેફાટ (क्रि. वि.) चहुंधा, चारों-ओर चतुर्दिक्, द्रुत गति में, इच्छानुसार, चाहिये, वैसा भटकता हुवा। [थका हुवा, भ्रमित।

ફેં ફેં (क्रि वि) खूब गर्म, ढीला,

ફેંસલ (क्रि वि.) देखो ફેંસલ

ફેસલો (स.) फैसला, न्याय, निबटारा, परिणाम, सार, इन्साफ, जजमेंट।

ફેકું (वि.) तुरंत टूटने योग्य, (सं.) एक प्रकार के छोटे बाजरे का बनाया हुवा घर जो औषधि आदि के काम में आता है।

ફુસફુસ્યું (वि.) पूर्ववत्
ફુસફુસિયું वि.) पूर्ववत्
ફુસલાવવું (क्रि.) बहकाना, दम देना, पट्टी पढाना, भुलावा देना, झांसना, धोकादेना, पोटना, फुसलाना।
ફુસિયું (वि.) देखो ફુસફુસિયું बदनामी, तोहमत, बट्टा।
ફુગ (सं.) फफूदन, किसी वस्तु पर सड़ने अथवा गलने पर पैदा हुए फफूदनके रोएं, चिकनाहट।
ફુગવાળું (वि.) चिकना, रुएंदार,
ફૂગી (वि.) पूर्ववत्
ફૂટ (सं.) बढईका आधागज, १२ इंच, परिमाण विशेष, एक प्रकारका खरबूजे के समान फल, अनैक्य, वैर, विरोध, टूट, अंतर, अनबन, अदावत।
ફૂલ (सं.) वृक्ष अथवा लताका सुगंधयुक्त पंखडियोंदार एक कोमल शोभायुक्त अवयव जो विशेषकर फलोत्पत्तिका कारण होता है। विकसित कलिका, खिली हुई कली, कुसुम, पुष्प, पुहुप, बहुतसे वृक्षोंकी फलीभी फूल कहलाती हैं. फूलके आकारका सोना, चांदी हाथीदांत कागज इत्यदि, आतिष-बाजी चलाने पर उसमेंसे निकले हुवे फूलके समान, फूलका चित्र, आंखमें सफेददाग, फूला, फुली, नेत्ररोग विशेष। सुपारी परसे उतारा हुवा बारीक भूसा, बहस्थान जिसमें गर्भ रहता है, गर्भाशय, कमल (स्त्रीका) पैरों की अंगुलियोंमें पहिननेका आभूषण, नाकमें पहिरनेका कांटा या लौंग, दही आदि मथनेकी रई के नीचेका फूल पुरुषकी लिंगेंद्रियका अग्रभाग, लिंगकासिर, लिंगकीसुपारी, ऋतु समय (स्त्रीका) औषधिको आगकी गर्मीसे तपाकर उसमेका उड़ाया हुवा भाग, हलका, नाजुक, कोमल, कच्चा, सुकुमार, सुन्दर, मनमोहक।
ફૂલ આવવું (क्रि.) ऋतुस्राव होना, (स्त्रीको) आशा बंधना.
ફૂલ ગુંથે છે=काम धंधा होने परभी बैठा रहे अथवा काम करने में आलस करता हो तब उसके लिये यहवाक्य प्रयोग किया जाता है कि "ઉઠને, શું ફૂલ ગુંથે છે? તે કામ કરતો નથી"
ફૂલની પાંખડી (सं.) तुच्छ भेट, यथाशक्ति सेवा, मानपूर्वक अल्प भेट।

ફૂલણી (सं. देखो ફુલી

ફૂલકો (सं.) फूलका, पतली छोटी रोटी।

ફૂલણજી (सं.) वह मनुष्य जो चापलूसी खुशामद अथवा अपनी मिथ्या प्रशंसा सुनकर फूलकर कुप्पा हो जावे।

ફૂલબાજ (सं.) आतिशबाज, आतिशबाजीका काम करने वाला ।

ફૂલું (सं.) आंखमें सफेद फूला, फुल्ली, नेत्र रोग विशेष।

ફૂસ (सं.) घास, तृण, चारा, सड़ा घास।

ફેં (वि.) थका हुवा, हारा हुवा, थकित, जिसका सांस भर आया हो, व्यथित। [अर्थ में,

ફેંફેં–ફે (क्रि. वि.) थक जाने के

ફેંકવું (क्रि.) प्रक्षेपण करना, त्यागना, दूर कर देना, निकालना, अलग कर देना, घोड़े को सर्पट दौड़ाना, डालना, पटकना, छोड़ना, पात करना।

ફેંટ (सं.) कपड़े से कसी हुई कमर, कमरबन्धा, कमरपेटी, परिकद।

ફેંટો (सं.) मुरेठा, साफा, मुंडबन्धा, एक प्रकारकी छोटी पगड़ी, उष्णीष विशेष, ताड़ खुब आदि के बीच का वह भाग जिसकी रस्सी वगैरः बनती है। कपट, ठगाई, छल, भेद।

ફેંદવું (सं.) कुचलना, कूटना, नोंचना, खराब कर डालना, मसलना, पिचलना। [का गर्दन।

ફેણ (सं.) सर्प का फन, सांप

ફેફરૂં (सं.) मृगी, रोग विशेष, मूर्च्छा रोग, फेफड़े का रोग, उन्मद, बाई।

ફેફસાં (सं.) फेफड़ा, यकृत, शरीरस्थ अंतरंग अवयव।

ફેફસાની ગરમી (सं.) रोग विशेष,

ફેફાટ (क्रि. वि.) चहुंधा, चारों-ओर चतुर्दिक्, द्रुत गति में, इच्छानुसार, चाहिये, वैसा भटकता हुवा। [थका हुवा, श्रमित।

ફેં ફેં (क्रि वि) खुब गर्म, ढीला,

ફેંસલ (क्रि वि.) देखो ફેસલ

ફેંસલો (सं.) फैसला, न्याय, निबटारा, परिणाम, सार, इन्साफ, जजमेंट।

ફેંકું (वि.) तुरंत टूटने योग्य, (सं.) एक प्रकार के छोटे जानवर का बनाया हुवा घर जो औषधि आदि के काम में आता है।

ફેંડવું (क्रि.) दे देना, अदा करना, चुकाना, देना, उऋण होना, फोडना, तोड़ना, खण्डित करना, भंजन करना, ढालना, मिटाना।

ફેણુ (सं.) घी गरम रखने के लिये दीपक पर रखने की तांबे की चीप। झाग।

ફેન (वि.) उत्तम, उम्दा, श्रेष्ट, अच्छा, (अंग्रेजी शब्द) फाइन (का अपभ्रंश)

ફેંકરી (सं.) देखो ફેંકરૂ

ફેર (सं.) अंतर, भिन्नता, फर्क, अन्तर, पृथकता, हेरफेर, जुदाई, चक्कर आना, (रोग) घुमाव, घेर, वक्रता, बांकापन पलटाव, बदली बाकी, शेष, कपड़े के नीचे भाग का घेराव, (क्रि. वि.) पुनः बहुरि, बारबार।

ફેર પડવો (क्रि.) आराम होना, पूर्वापेक्षा अच्छी दशा होना।

ફેર પાડવો (क्रि.) अच्छा करना।

ફેર પાઘડી બાંધવી (क्रि.) वचन दे कर बदल जाना, वचन भंग करना, सामने बोलना, थूक कर चाटना सामने के पक्ष में हो जाना बुरी आदत में पड़ना।

ફેર આવવા (क्रि.) चक्कर आना, सिर घूमना, जी फिरना।

ફેર કુંડાળું (सं.) गड़बड़, गोळ मोळ, चक्कर, मंडल, भूलभुलैयां, घोटाला।

ફેરકુંડાળામાં પડવું (क्रि.) चक्कर में आना, गड़बड़ी में पड़ आना जिससे शीघ्र उद्धार न होवे ऐसे झगडे में फंसना।

ફેર ખાવા (क्रि.) चक्कर खाना, इधर उधर भटकना, मारे मारे फिरना।

ફેર પડવો (क्रि.) अंतर पड़ना, फर्क पड़ना, आराम होना, फायदा होना, प्रतिकूल होना, रूपान्तर होना, चक्कर पडना।

ફેર ફુદડ (वि) आड़ा तिर्छा, उलटा सीधा, आडा, उलटा विरुद्ध।

ફેર બદલી (वि.) उलटा पलटी, हेर फेर, परिवर्तन, स्थान परिवर्तन। [लौटना।

ફેરવણી (सं.) परिवर्तन, फेरफार

ફેરવવું (क्रि.) बदलना, जगह ब दलना चलना, इधर उधर ले जाना, गोळ चक्कर में घुमाना, चाक पर चढाना, घुमाना, परिभ्रमण करना, फेरफार करना,

दुरुस्त करना, रद्द करना, नामंजूर करना, बदलना, पुराने के स्थानपर नवीन करना, धीरे धीरे घिसना, पपोलना, पुचकारना, उलटना उथलना, एक वस्तु रख कर दूसरी वस्तु लेना, तर्फ ले आना, उतारना, पक्ष बदलना, औंधा करना, ऊपर नीचे करना, स्थानान्तर करना, प्रकट करना, फैलाना, फजीहत करना । મન ફેરવવો (क्रि.) निश्चय किया हुवा भंग करना, खोटा समझाना, ઘોડો ફેરવવો (क्रि.) घोड़ा टहलाना घोडा मस्तीपर न आवे अतः गर्म करना, ઘર ફેરવવું (क्रि.) घर बदलना, दूसरे घर में जा कर रहना, હાથ ફેરવવો (क्रि) चोरी होना, ठगे जाना, लूटे जाना, માથે હાથ ફેરવવો (क्रि.) आशिर्वाद देना, આંખ ફેરવવી (क्रि.) गुस्सा लाना, धमकाना, आखें बताना, घुड़कना, પૂઠ ફેરવવી (क्रि.) पाठ दिखाना, पीठ फेरना,

ફેરવી નાંખવું (क्रि) उलट देना,

ફેરાવો (वि.) वह जहां घूमकर आना पड़े, चक्कर, परिधि, घेर, फेर।

ફેરિયો (सं.) रास्तेपर घूम घूम कर बेचने वाला, फेरी वाला।

ફેરિસ્ત (सं.) याद, नोंध, सूची, लिस्ट, केटलॉग, फिहरिस्त।

ફેરી (सं.) चक्कर, वक्त, बार, प्रदक्षिण, भिक्षा मांगना।

ફેરીવાળો (सं.) बिसाती, पैकार, गली गली घूमकर बेचने वाला।

ફેરેજવું (क्रि.) पाखाने जाना, टट्टी जाना, जंगल जाना, झाड़े जाना, शौच जाना, मलोत्सर्ग करना।

ફેરો (सं.) प्रदक्षिण, घुमाव, आंटा, चक्कर, आवागमन, दूर जाना, दूर भटकना, टट्टी, पाखाना, वक्त, बार, समय।

ફેરા ફરવા (क्रि.) वरकन्या का विवाह संस्कार के समय यज्ञवेदी की प्रदक्षिणा करना, भांवरें फिरना।

ફેરા લાગવો (क्रि.) टट्टी लगना, दस्त लगना, पाखाना होना।

ફેલ (सं.) पाखण्ड, मिथ्या, ढोंग मिथ्या आचरण, छल, बहाना, मिस, अपराध, डोरोंसे लपेटीहुई गेंद।

ફેલભોર (वि.) पाखण्डी, ढोंगी, बहानाखोर, छली फैली, मिसक-रनेवाला ।

ફેલજામીન (सं.) जमानत, जिम्मा, जिम्मेदार, प्रतिभू, सदाचारी आमिन ।

ફેલવું (क्रि.) फैलना, पसरना, विस्तृत होना, औंधना, बढना, छुडकना ।

ફેલાઉજવું (क्रि.) पूर्ववत् ।

ફેલાવ (सं.) बढाव, प्रसार, वृद्धि चौड़ाई ।

ફેલાવવું (क्रि.) फैलाना, पसारना बिछाना, विस्तारयुक्त करना, चौड़ाना, प्रचार करना, प्रकाश करना लम्बा करना बढाना, प्रसिद्ध करना ।

ફેલાવું (क्रि.) फैलना, बढना, पसरना, बिखरना, बिथरना, चारों ओर फैल जाना, । [वृद्धि ।

ફેલાવો (सं.) प्रसार, विस्तार,

ફેલું (सं.) मुसीबत, कठिनता, उपाधि, पीड़ा, आपत्ति, संताप, अड़चन, विघ्न, बाधा, क्लेश,

ફેલું પેસવું (क्रि.) दुखहोना, क्लेश होना, मुसीबत पाना, विघ्न होना।

ફેસલ (क्रि. वि.) जिसका फैसला हो चुका, हो, अंतिम परिणाम प्राप्त ।

ફેસલો (सं.) ठहराव, फैसला, परिणाम, न्यायपत्र, निर्णय, समाधान, तय, निपटारा, अजमेंट, इन्साफ ।

ફેંસવું (क्रि.) तोड़ना, भंगकरना, मर्दन करना, खण्डन करना ।

ફૈ (सं.) फूफी, भूआ, बापकी बहिन । [पुनः भ्रमण ।

ફૈડકો (सं.) बारंबार चक्कर, पुनः

ફૈણું (सं.) आराम, रोगशमन, सेहत, रोगमें कमी । [बहिन ।

ફૈબ (सं.) फूफी, भूआ, बापकी

ફૈબજી (सं) पतिकी भूआ, पतिकी फूफी, पतिके बापकी बहिन ।

ફૈબયારૂં (सं.) फूफीको दी हुई भेट, भूआकी भेट ।

ફૈક (सं.) रद, खराब, व्यर्थ, निकाम, मिथ्या, बुरा फीका, निरस बेस्वाद ।

ફૈકટ-ગટ (क्रि. वि-) व्यर्थजाने योग्य, मुफ्तका, सेतमेत, बिना पैसोंका, निकम्मा । [मिथ्या ।

ફૈગટ કાંડું (सं) व्यर्थ, निकम्मा,

ફોગટ દમામી (सं.) शेखी, डींग, अहम्मन्यता, बकबबाजी ।

ફોગટનું (वि.) मुफ्तका, सेतमेतका, बिना प्रमाण, धर्मार्थक ।

ફોગટિયું (वि) मुफ्तखोर, हरामी, जो बिना पैसे खर्चे काम में आवे।

ફોગટીઓ (वि.) पूर्ववत ।

ફોજ (सं.) सेना, सैन्य, फौज सैनिकदल, लश्कर, टोला, जत्था, मनुष्योंकी भीड़, लड़ने वालोंकी मंडली ।

ફોજદાર (सं.) शहर–गावकी रक्षा संभाल करने वाला आफीसर, कोतवाल, पुलिस मजिस्ट्रेट ।

ફોજદારી (वि.) दोषी, अपराधी, (सं.) चोरी खून लड़ाई इत्यादि अपराधोंका न्यायालय, अथवा तत्सम्बन्धी समस्त कार्य ।

ફોજદારી અદાલત (सं) वह न्यायालय जहा लड़ाई झगड़ा खून चोरी इत्यादि अपराधोंका विचार होता हो।

ફોજદારી અમલદાર (स.) पुलिस आफीसर।

ફોડકો (सं.) देखो ફોલ્લો

ફોડવું (क्रि.) तोड़ना, फोड़ना, अंगकरना, खण्डन करना, चूर्ण करना, आगद्वारा शब्द करना (पटाखा इत्यादि) बाहिर करना, छोड़ना, चलना (बन्दूक) छूटना, (माथा) भार धुसेड कर उखाड़ना (फोड़ा फुन्सी इत्यादि) गुप्त बात प्रकट करना, सुरंग लगाना, शरीर के किसी अवयवका कार्य बन्द करना, कठिन शब्दद्वारा कानको कष्ट पहुंचाना ।

ફોડી લેવું (क्रि.) दैवयोगसे जिस समयजो आवने उसे भोग लेना, सिरपर आई आफत सहलेना ।

ફોલ્લા ફોડવા (क्रि.) छिद्रद्वारा तुच्छ करना, छिद्रान्वेषण कर लोगोंको दिखाना ।

ફોડી ફોડીને કહેવું (क्रि.) खुल्लम खुल्ला समझकर कहना, अपना गुप्त दुःख लोगोंकी कहकर प्रकट करना, गुप्त बात कहना ।

ફોડો (सं.) देखो ફોડલો

ફોત (वि.) कतलद्वारा बध किया हुवा, मृत्यु,

ફોતરું (स.) छिलका, भूसा, अन्नफल आदिके उपरका भाग,

ફોદું (सं.) छिलका, भूसा, पिंड, कागजका टुकड़ा, जमाहुवा (दही का थर) [(मनुष्य)

ફોદું (वि) ढीला, पोला निर्बल

ફોફળ (वि.) मुलायम, कोमल, नर्म, पिलपिला, ढीला, पिचपिचा। (सं.) सुपारी, पुंगीफल।
ફોફળી (सं.) सुपारीका पेड़.
ફોલ્લો (सं.) छाला, फोला, पानीसे भरा हुवा फोडा,
ફોમ (सं.) देखो ફ્રામ
ફોર (सं.) गंध, बास, महक, बू, सौरभ, यश, आबरू, इज्जत।
ફોરવું (क्रि.) बासदेना, गंधदेना, बूकरना, महक आना।
ફોરાષ (सं.) स्फूर्ति, होशियारी, सावधानी, चंचलता।
ફોરૂં (सं.) टपका, छींटा, बूंद, बिन्दु, फुहार, टपका (रंगका) (वि.) मोटा, गुच्छे सरीखा।
ફોરો (स.) बुलबुला, वर्षाकीबूंद।
ફોલ (सं.) टूटी हुई इमली बिना बीजकी इमली।
ફોલવું (क्रि.) छिलके निकालना, बीज निकालना, चूँटना, चुनना।
ફોલી ખાવું (क्रि.) उठाखाना, चूंटखाना, निन्दा करना, चरचा, करना, किसीका धन माल अथवा पैसा टका उड़ानाखाना, धन द्रव्य लेकर के कंगाल कर देना, भीतरका असली माल निकालकर खाजाना।
ફોલ્લી (सं.) छोटी फुनसी, छोटा फफोला, फुली, फूली।
ફોલ્લો (सं.) छाला, फोला, स्फोटक, फफोला, चर्मरोग विशेष।
ફોલ્લો ફુટી જવો (क्रि.) बला टलाना, पीडा हटना, आफत टलना, झगड़ा मिटना, संशय टलना वहम दूर होना, छुटकारा पाना।
ફોસલામણ (सं.) फरेब, लालच, फुसलाहट, पोटनेकी क्रिया।
ફોસલાવવું (क्रि) पोटना, ललचाना, बुरा समझाना, फुसलाना बहकाना।
ફોસલાવનાર (सं.) बहकानेवाला, फुसलानेवाला, बिगाड़ने वाला।

બ

બ=गुजराती वर्ण माला का ३४ वां अक्षर, प वर्ग का तीसरा अक्षर।
બઈરી (सं.) स्त्री, औरत, पत्नी, वधू।
બકધ્યાન (सं.) पाखण्ड, दंभ, मतलब, सिद्धि का ध्यान, बगुले का सा ध्यान।
બકધ્યાની (वि.) ढोंगी, दंभी, पाखंडी, बकभक्त, बगुला भगत।

બકબક (सं.) बकवाद, निरर्थक बहु वाद, बड़बड़ाहट, गुलगपाड़ा, व्यर्थ की बातें; बकझक ।

બકબકાટ-રો (सं.) पूर्ववत् ।

બકબકિયો (सं.) बकी, झक्की, बड़बड़ाने वाला, लबार, चिड़चिड़ा

બકબકવું (कि.) देखो બકવું ।

બકરકુદી (सं) बकरे की तरह खड़े होना और कूदना, कूद फांद, तूफान, एक प्रकार की कसरत, मस्ती ।

બકરકુદી કરવી (कि.) तागड़ धिन्ना करना, तूफान करना, मस्ती में आना । [क्षय गरीब होजाना ।

બકરી બેં થઈ જવું (कि.) अति-

બકરી ઈદ (सं.) मुसलमानों का एक त्यौहार· बकरीद ।

બકવા-વાદ (सं.) बकबक, मिथ्या भाषण, बकझक, वाद विवाद ।

બકવું (कि.) झकमारना, बकवाद करना, बिन विचारे बोलना, मिथ्या भाषण करना, गप्पें मारना, होठ बहना ।

બકવો (सं.) निरर्थक भाष, व्यर्थ लोकवाद, बकवाद ।

બકાઈ (सं.) जम्हाई, अँगड़ाई, जमुहाई, मुंह फाड़ने की क्रिया विशेष ।

બકાત (वि) बाकी, शेष, बचाहुवा ।

બકારી (सं.) कय, उलटी, छर्दि, उबाकी, उछांट ।

બકારો (सं.) चिल्लाहट, कोलाहल, शोर, गुलागपाड़ा हल्ला, बकबक ।

બકાલ (सं.) जैसे तैसे दुकान लगा बैठने वाला बनिया, वैश्य, बनिया ।

બકાલાપીઠ (सं.) भाजी बजार, शाक बाजार, कूंजड़ोंकी दुकानें, शाक मार्केट । [भाजी ।

બકાલું (सं.) हरीतरकारी, शाक

બકાલુ (सं.) पूर्ववत्

બકાવવું (कि.) बकबक कराना, चिढाना, उसकाना, बहकाना, खिझाना ।

બકુડી (सं.) प्यारा, प्रिय, लाड़ला (यह शब्द बालकको खिलाते समय लाड़ में बोलते हैं ।) कबूतर, पेंडुकी, भेड़का बच्चा ।

બકોર (सं.) कोलाहल, शोर, गुल, हल्ला, गुलगपाड़ा, होहल्ला, आवाज, शब्द ।

બકોરવું (कि.) चीक करना, हल्ला मचाना, आवाज देना, चिल्लाना ।

બક્ષવું (क्रि.) देना, प्रदान करना, बक्षीस करना प्रसादी देना, अर्पण करना, क्षमा करना, मुआफी देना।

બક્ષી (सं.) फौज का सरदार, फौजी आदमियों को वेतन देने वाला आफीसर, जनरल, कमाण्डर इन चीफ।

બક્ષીસ (सं) पुरष्कार, भेट, इनाम, प्रसन्नता पूर्वक दी गई वस्तु, बड़े की ओरसे छोटे को दी हुई चीज, भेट, नजर।

બખત (सं.) होनहार, कर्म, प्रारब्ध, किस्मत, भाग्य, तकदीर, भविष्य।

બખતર (सं.) उत्तम लोहेकी कड़ियों द्वारा जालीदार बनाहुवा बदन पर पहिरनेका वस्त्र विशेष जिसे योद्धा लोग संग्राम में पहिनकर आते हैं, कवच, वर्म्म, झिलम बाजु, सन्नाह।

બખતાવર (वि.) भाग्यशाली श्रीमंत, खुश किस्मत, सुखी, तकदीरवाला।

બખતાવરી (सं.) खुशकिस्मती, सौख्य, अच्छी तकदीर, भाग्यवानी।

બખર (सं.) इतिहास, तवारीख, पूर्ववृत्तांत, कथा, इतिवृत्त, वृत्तांत, हकीकत।

બખરવું (क्रि.) लगना, चुभना, खटकना, पचना, बिखरना, साकना।

બખસવું (क्रि.) देखो બક્ષવું

બખશીસ (सं.) देखो બક્ષીસ

બખાળવું (क्रि.) बकवाद करना, लम्बी चौड़ी हांकना, जोर जोर से हल्ला करना।

બખાબખી (सं.) विवाद, कलह, वाकयुद्ध, लड़ाई, झगड़ा, फिसाद।

બખાળ (सं.) हल्ला, गुलगपाड़ा।

બખિયો (सं.) एक प्रकार की सिलाई, बारीक उम्दा सिलाई।

બખિલાઈ (सं.) कंजूसपना, कृपणता, कगलीपन, कंगाली, सूमपन।

બખીલ (वि.) कंजूस, कृपण, सूम, कंगालहीन, मक्खीचूस।

બખેડાખોર (वि.) झगड़ालू, फिसादी, लड़ाका, विवादी, कलहकारी।

બખેડો (सं.) टंटा, फिसाद, मारामारी, झगड़ा, कलह, उत्पात।

બખોલ (सं.) पेड़की दरार, बिल, पेड़का खोखला, वृक्षका छिद्र।

બખ્ત (सं.) नसीब, प्रारब्ध, दैव, भाग्य, किस्मत, भविष्य, अदृश्य फल।

બખ્તાવર (वि.) भाग्यशील, तक-दीरवाला, खुशकिस्मत, प्राक्रमी।

બખ્તાવર કદમ (वि.) जिस के आगमन से काम हो।

બગ (सं) बक, पक्षी विशेष, बगुला, सारस, बगला।

બગડવું (क्रि.) खराब होना, भ्रष्ट होना, सड़ना गलना, बिगड़ना, नष्ट होना।

બગડો (सं.) दोका अंक, २।

બગડેલ થવું (क्रि.) खराब होना बिगड़ना। [कर्कट।

બગદો (सं.) धूल, कचरा, कूड़ा-

બગધ્યાન (सं.) एकाग्र ध्यान, स्तब्ध, बगुला भक्ति, चुपचाप, दृष्टि या विचार।

બગભગું (सं) धुंधला, अंधला, मन्द, प्रातःकाल, भिनुसारा, पौफटे भोर।

બગભગત (सं. , ढोंगी, कपटी, धूर्तसाधू, तिलकमालजटा आदिसे साधू किन्तु स्वार्थी, ठग, और मूर्ख, भक्तिका ढोंग रचने वाला पाखण्डी, छली, कपटी, बगुला भगत, देखने में सज्जन किंतु दुर्जन।

બગરૂં (स.; घीको तपाने पर ऊपर आया हुवा मैल, घृत अथवा तेलका कचरा।

બગલ (सं) कांख, कौख, स्कंध तथा हाथके नीचेका गढ़्ढा, आश्रय, शरण, बगलमें बगलमें लगने वाला त्रिकोण टुकड़ा, बाजु,

બગલમાં મારવું (क्रि.) बगलमें रखना, दबालेना, अधिकार में रखना।

બગલમાં ઘાલી ઉડીજવું (क्रि.) लेकर सटकजाना, तुच्छ समझना,

બગલમાં રાખવું (क्रि.) शरणमें लेना, आश्रय देना, अभय देना, आश्रय देना।

બગલમાંહેવું (क्रि.) अधिकारमें होना, वशवर्ती होना, देखरेखमें होना।

બગલમાંથી બાત કાઢવી (क्रि) अपने मनसे बात बनाकर गप्प हांकना।

બગલો ઉઘાડી જવી (क्रि.) द्रव्य-हानि होना, साफ होना, मालमत्ता उड़जाना, फुर्सत पाना, शांति होना।

બગલો ઉઘાડી મુકવી (क्रि.) सरजानना, अपनी तुच्छता

बगलमें रखना किसीके कलह अथवा उलाहिनेकी परवाह न करना, निर्लज्जता ग्रहण करना ।
બગલો ઊંચી કરવી (क्रि.) दिवाला निकालना, शंख फूकना, पास नहीं है ऐसा कहके छुट्टी पाना, गरीबी दिखाना ।
બગલો ફૂટવી (क्रि.) प्रसन्न होना, हर्षित होना ।
બગલો દેખાડવી (क्रि.) दिवाला निकालना, पासमें कुछ नहीं ऐसा प्रकट करना ।
બગલગીરી (सं.) हृदयालिंगन, छातीसे लगाना, चिपाना ।
બગલદાજ્ઞા (सं.) पैरमें पहिनने का एक प्रकार का आभूषण ।
બગલ ભાવાર્થી (वि.) दिखावे में साधुवृत्ति प्रदर्शित करने वाला किंतु भीतर से स्वार्थ साधन की वृत्ति रखने वाला, मौन होकर स्वार्थ साधनेवाला ।
બગલાભગત (सं.) देखो બગ ભગત । [बगुला ।
બગલું (सं.) बक, पक्षीविशेष,
બગલો (सं.) बक, बगुला, मौन मोची जलचर पक्षी, अरब के लोगोंका जैसागरी का बलभार ।
બગલો પાવસ બેઠો = ठग तथा दांभिक पुरुष के लिये यह वाक्य प्रयोग होता है, अर्थात् बगला भगत बनके बैठा ।
બગવા (सं) कानका मैल, वह मलजो कर्णेन्द्रिय में होता है ।
બગાઈ (सं.) कुत्ता गाय भैंस आदि पशुओंके चर्मपर रोमावली में छुपकर रहने वाला एक तुच्छ जीव, कलीली, चिंचड़ी, गोचडी, पिस्सू, कर्णरोग विशेष ।
બગાડ-ડો (सं.) नुकसान, खराबी, कसर, रोग, विकृति, अनबन, सड़ा, गला, मलिनता, भ्रष्टता, हानि असम्मत, फूट, विरोध, भेद, सड़न, बिगाड़ ।
બગાડવું (क्रि.) बिगाड़ना, खराब करना, बर्बाद करना, अनबन करना, मलिन करना, नुकसान करना, आचार भ्रष्ट करना, नापाक करना, दोषयुक्त करना, दूषित करना, सड़ाना ।
બગાડો (सं) देखो બગાડ
બગાસું (सं.) जंभाई, उबासी, अंगड़ाई, मुंह फाड़ना, आलसका चिन्ह ।

બગી (सं.) बग्घी, एक प्रकार की घोड़ा गाड़ी, दृष्टि, नज़र।

બગી ફાટવી (क्रि.) गुस्सा चढ़ना, क्रोध आना, मस्तीमें आना, आखे फटना।

બગો (सं.) स्त्रियों के पहिरने का वस्त्र विशेष। दीवार की बांक।

બધાર (वि.) सूने हृदय का, मस्तिष्कहीन, जिसकी याददास्त खराब हो।

બડેરાવ (सं.) छैल, बांका, आत्म श्लाघी, अकड़ू, अभिमानी।

બંખારવું (क्रि.) हल्ला मचाना, शोर गुल करना, चिल्लाना।

બંખારો (सं.) हल्ला, कोलाहल, शोर गुल, होहल्ला, गुल गपाड़ा। एक प्रकार का क्षार, बंग।

બગ (सं.) रीति, प्रकार, तर्क, कल्पना, युक्ति, एक प्रकार का क्षार, नमूना, बानगी।

બંગડી (सं.) चूड़ी, हाथ में पहिरनेकी कांचकी चूड़ी, आभूषण विशेष, चूड़ी की तर्ज का जेवर, गोल कंगन।

બંગલી (सं.) छोटा बंगला।

બંગલો (सं.) मैदान अथवा बागीचे में बनाया हुआ अच्छा मकान, बंगला।

બંગાળા ફૂંકવા (क्रि.) खाली हो जाना, अंतम होना, शंख बजना।

બંગાળી ઠગ (सं.) पक्का ठग, छली, सच्चा कपटी, ऊपर से सीधा किंतु छली पक्का धूर्त, लुटेरा।

બંગાળી તોલ (सं.) और वजनों से भारी, भारी तौल।

બંગાળુ (सं.) एक प्रकार का वस्त्र जो घाघरे (लहंगे) के लिये होता है।

બચબચ-બચાબચાટ (क्रि वि.) बालक के दूध पीने का शब्द, बालक जब कि दूध पीता है उस शब्द की नकल।

બચકવા (सं.) ऐसा वात रोग जिसमें चीसें और चबके होते हों।

બચકડું (सं.) देखो બચકું

બચકી (सं.) पुटकिया, छोटी गठरी।

બચકું (सं.) बटका, काटना, कुतरन, पोटला, गांठ, गठरी।

બચકો (सं.) मोट, पोट, बण्डल, गांठ, गठरी, पुटकिया, पोटली।

બચકોરવું (क्रि.) डुबोना, बोरना, जलमग्न करना। [डुबकी।

બચકોરું (सं.) डुबकी, गुचकी,

બચગી (सं.) बचपन, बालकपन, छोकरपन, शैशव, लड़कपन ।

બચ્ચાંવાળ—ઈયાળ (सं.) बाल-बच्चेवाला, कुटुम्बी, घरबारवाला, ।

બચપણ (सं.) देखो બચગી

બચવું (क्रि.) बचना, उबरना, सलामत रहना, रहना, शेषरहना, बाकी रहना ।

બચારવું (क्रि.) पशुको हांकने के लिये मुखसे एक प्रकारका शब्द करना टिचकारी देना । टिचटिच करना ।

બચાડું (वि.) अशक्त, गरीब, रक्षा करने योग्य, बेचारा, दीन, असहाय ।

બચાવ (सं.) रक्षण, रक्षा, हिफाजत, संभाल, बचत, संरक्षण, उद्धार ।

બચાવવું (क्रि.) उद्धार करना, रक्षा करना, बचाना, पालना, रखना, संचय करना, यत्न करना, तारना मोक्ष करना, संग्रह करना, अटकाना, प्रसंग टालना,

બચી (सं.) मुई (तिरस्कारमें) चूमा, चुम्बन, बोसा प्यार, जिव्हा, जीभ । [शक्ति होना ।

બચી ભરવી (क्रि., बोलनेकी

બચ્ચાં કચ્ચાં (सं.) बालबच्चे, लड़के लड़की, कुटुम्ब, गृहस्थ ।

બચ્ચાળ (सं) तिरस्कार सूचक सम्बोधन, मेरेसंगी, बच्चूजी ।

બચ્ચાબાળ-નો ખેલ (सं.) बचपन, छिछोरपन, लड़कपन ।

બચ્ચી (सं.) प्यार, चूमा, बोसा, चुम्बन, मुखद्वारा अंगस्पर्श, लड़की, बालिका, छोकरी ।

બચ્ચું (सं.) छोटा बालक, लड़का, छोकरा, बालक ।

બચ્ચો (सं.) लड़का, छोकरा, बालक, कुमार, किशोर, यह शब्द प्यार और तिरस्कारमें भी कहा जाता है । [रफ ।

બચ્છડ (वि.) खुरदरा, मोटा,

બજર (सं.) तमाखू, तम्बाकू ।

બજરબટ્ટું (सं.) एक प्रकारकी जड़, एक प्रकारका तालाबमें पैदा होनेवालाफल, रीछके मुखमें डालकर पुनः निकालाहुवा काला मनका, जिसे बच्चेके गलेमें धागे में डालते हैं.

બજવું (क्रि.) असर होना, प्रभाव पड़ना, पार पड़ना (काम) बजना (बाजा)

બજવૈયો (सं.) बजंत्री, बजाने वाला, वाद्यविद्याप्रवीण ।

બજાખ-ગ (सं.) मूर्ख, शठ, झिक्की, सिरफल्लू, खरदिमाग ।

બજાજ (सं.) कपड़ा बेचने वाला, कपड़ेका व्यापारी. वस्त्र विक्रेता,

બજાજી (सं.) कपड़े बेचनेका व्यापार, वस्त्र बेचनेका धंधा, कतरब्योंत, बॉजगड सौदागरी ।

બજાણિયા–યો (सं) मल्ल, नट, नर्तकी, रस्सीपरनाचनेवाला ।

બજારગપ (सं.) अफवाह, झूंठी खबर, किम्वदन्ती, बजारुबात ।

બજારભાવ (सं.) बजारका भाव, निर्ख, बिक्रीका भाव ।

બજારૂ (वि.) साधारण, मामूली, हलका, सादा, विशेषता हीन । खराब, [कलमबंधी,

બજાવણી (सं.) रोक, जब्ती,

બજાવનાર (सं.) वादिक, जल्लाद, बजानेवाला, बजंतरी, बजैया, ।

બજાવવું (क्रि.) कार्य में परिणत करना, पार पटकना (काम) पालना, (वचन) बजाना (वाद्य) हुकमनामुं બજાવવું (क्रि.) आज्ञापत्रमें लिखे अनुसार वसूल करने की तजवीज करना ।

—ઠોક બજાવવું (क्रि.) मारना, पीटना ।

બજીદ (वि.) जीता हुवा, आग्रह करने वाला, हठी, जिद्दी, चरैत अड़ियल ।

બજોટો (सं.) जोट्या, पात्रविशेष,

બજોઠ (सं.) एक प्रकारका पहिरनेका भूषण । [बाम,

બઝરંગબલી (सं.) हनुमानजीका

બઝાડવું (क्रि.) ठोंकना, भिड़ाना, बजाना,

બઝેડવું (क्रि.) शरीर पर दना-दन चोट मारना, पीटना, ठोकना, मारना ।

બઝોરવું (क्रि.) पूर्ववत्,

બટ (सं.) एक प्रकारका बड़ा और खूब सूरत घोड़ा, टट्टू, उम्दासे उम्दा लोहा, (वि.) ठोस, जड़, मस्त, घना ।

બટકણું (वि.) टट्टू घोड़ा, कुरकीला, भुरभुरा, कड़कनेवाला ।

બટકબોલું (सं.) विनोद, हास्य, मजाक (वि.) परिहासजनक, विनोदी, नकली ।

બટકી (सं.) ठिंगनी औरत, नीचे दर्जेकी वेश्या, दासी, लौंडी, रख रखी हुई औरत, लौंडकी ।

બટકું (सं.) टुकड़ा, छोटा टुकड़ा।

બટમોગરો (सं.) बड़मोगरा जिसमें बड़ा ओर बहुत पंखडियोंका बहुत गन्धवाला पुष्प लगता है। एक प्रकारका फूलदार वृक्ष, बेला वृक्ष, ।

બટવો (सं.) थैली, झोली, न्योली रुपया, पैसा रखनेकी छोटी थैली बटुआ ।

બટાઈ જવું (क्रि.) बटजाना ।

બટાઉ (वि.) उड़ाऊ, खाऊ छैल, रंडीबाज, व्यभिचारी, रंगीला।

બટાટા (सं.) आलू, एक प्रकारका कन्द, अरवी ।

બટાવ (सं. देखो બટાઉ. यात्री, पान्थ मुसाफिर, पथिक।

બટેરો (सं.) मिट्टीका प्याला ।

બટ્ટો (सं.) कलंक, तोहमत, दाग, लाञ्छन, बदनामी, शराब की बोतल ।

બટાકિયાં (सं.) कैरी (कच्चे आम) के टुकड़ों को उबालकर बनाया हुवा अथाना, आमका अचार ।

બંઠેલ (वि.) जोरसे ठाँस ठाँस कर-भरा हुवा, कोमला बैठा हुवा । ·

બડું (वि.) मोटा, बड़ा, दीर्घ, कठिन सख्त, मुश्किल ।

બડ્યા (स.) कपास इत्यादि के गत वर्षके पुराने पेड़ ।

બડછટ (वि.) सख्त, कठोर अस्थिवाला।

બડાં (सं.) गर्वयुक्त बोली, कुत्तेका गलाफु, मिजाज करके बोलना ।

બડાં હાંકવા (क्रि.) गप्प हाँकना,।

બડબડ (सं.) बकबक, लबालब टॉयटॉय, व्यर्थप्रलाप, निष्प्रयोजन बात ।

બડબડવું (क्रि.) बकबक करना, क्रोधमें कुछ मनहीमन बोलना, बड़बड़ाना ।

બડબડાટ (सं. , बकबक, (क्रोधमें) बोले ही करना, लगातार निष्प्रयोजन बातें ।

બડબડિયું (वि.) बकनेवाला, निष्प्रयोजन बोलते रहने वाला, बड़बड़ाने वाला ।

બડબડવું (क्रि.) मचरमा झीखना मारना कूटना, पीटना, जनकी बालोंको पादाक्रांत द्वारा कुचकुचल-ना, दबाना, ।

બડમુછો (सं.) जिस मनुष्यके मूछें न हों, बिना मूछोंका आदमी ।

બડવાં (सं) कुलाबे, कब्जे, चूल ।

બડવું (क्रि.) चरख में रुईका मोटा सूतकरना, (स) चूल, कब्जा, लोह के वे कुन्दे जो दरवाजेकी चौखट में और किवाडों मे लगाये जाते है ओर जिनपर किवाड़ फिरता है ।

બડવો (सं.) यज्ञोपवित संस्कार के बाद १२ वर्ष तक द्विजबालक का ब्रह्मचर्य पालन, बालकका यज्ञोपवीत संस्कार के बाद वह विद्याध्ययनार्थ घरसे बाहिर निकलता है और उसका मामा उसे पकड कर वापिस ले आता है वह कृत्य।

બડવો ધુણાવવો (क्रि.) पूर्व गुजरातमें कोल भील लोगों में मनुष्य बीमार पड जावे तब या छोकरे न होते हों अथवा संतान न जीती हो तब तब एक प्रकार की मानता की जाती है, लोग બડવા को जीवित डाकिन कहते है और वे उसको मानते हैं, यह मानता वे अपने मुख्य देव "बाबादेव" जिसको वे अपना मुख्य देव समझते हैं उसकी रखते हैं ।

બડવા (सं.) गांठे को छीलकर किये हुवे टुकडे. गन्ने की पेरी गन्ने के टुकडे ।

બડવો (वि.) जिसका सिर मुंडा हो, मुंडित मुंडाशेर, बदसूरत बेडौल ।

બડાઇખોર (स.) बडाई करने वाला शेखी खोर, डींग हाँकने वाला, आत्मश्लाघी ।

બડાબુટ (क्रि. वि.) जैसाका तैसा, अव्यवस्थित, उलटपलट ।

બડાબુડ (क्रि. वि) पूर्ववत्

બડેજાવ (वि.) उच्चकुलोत्पन्न, श्रीमान, प्रख्यात ।

બડેજાવ મહેરબાન (राजाके सामने ऐसा चोबदार बोलते हैं) महा राजकी दीर्घायुहो, प्रताप बडे, यश फैले ।

બડેમિયા (स.) वृद्ध मुसलमान के लिये सम्मान सूचक संबोधन शब्द, बडा आदमी ।

બડુ (वि.) बडा, दीर्घ, महान्, प्रधान, मुख्य, बृहत्, विशाल, मुख्य ।

બઢતી (सं.) अधिकता, वृद्धि, लाभ, प्राप्ति, उन्नति, चढती दशा, उत्कर्ष । [कौआहुक ।

બબુચ (सं.) हुक्का, हुक्का, सूखी,

બણગું ફુંકવું (क्रि) घरघर जगह जगह बात फैलाना, प्रकट करना, लोगों पर जाहिर करना, प्रशंसा करना, गुण गाते रहना।

બણબણવું (क्रि.) भिनभिनाना, गुन गुना, मक्खो आदि के उड़ने का शब्द होन।

બણબણાટ (सं.) भिन भिनाहट, गुंजार, निनाद, गुन गुनाहट।

બણિયો (सं.) एक प्रकार के दाने जो चांवलों के भीतर होते हैं।

બંટી (सं.) एक प्रकारका जंगल में पैदा होने वाला अन्न।

બંડ (सं.) हुल्लड़, फिसाद, बलवा, उत्पात, उपद्रव, कोलाहल, लुच्चाई।

બંડખોર (वि.) बागी, राजद्रोही, फिसादी, उपद्रवी, हुल्लड़ मचाने वाला।

બંડિયું (सं.) बदन, अंग, शरीर, बण्डी, कमर तक पहिरने का वस्त्र कुड़ता।

બતકી (सं.) छोटी कुल्हैया, मिट्टी का छोटा पात्र (घी इत्यादि भरने का)।

બતરીસ-ત્રીસી (सं.) बत्तीस, तीस और दो, ३२, संख्या विशेष।

બતરીસ લક્ષણું (सं.) मनुष्य में होने योग्य ३२ गुण, सिंह का एक गुण, (पराक्रम) बगुले का एक गुण, (एक लक्ष रखकर पकड़ लेना) मुर्गे के चार गुण (प्रातः काल उठना, मरना, किंतु युद्ध में पीछे न हटना, परिवार का पालन पोषण करना, स्त्री पर हेत) मोर के छ गुण (ऊंचे स्थानपर रहना, शत्रु को मारना, मधुर भाषण करना, अच्छा रूप होना, चतुराई रखना, युक्ति प्रयुक्ति जानना, नम्रता रखना,) कुत्ते के छः गुण (थोड़े मिलने पर भी संतोष, बहुत मिळे तो भी संतोष, निद्रा कम, तुरन्त समझ जाना, स्वामि भक्ति शौर्य प्रदर्शित करना) गधे के तीन (परिश्रम करना, दुःख की पर्वाह न करना, संतोषी रहना) कौवे के पांच गुण (किसी का विश्वास न करना, स्त्री प्रसंग गुप्त करना, नम्रता, समय जानना, और चंचलता) पुरुष के छः विपति में धैर्य, युद्ध में पराक्रम, चतुराई, सभा में वाक चातुरी, यश की चाह)

બત્રીસ કોઠે છુપ (સં.) सब ओर की संभाल खबरदारी, होशियारी सावधानी, चौकसी ।

બત્રીસ કોઠે દીવા (सं) अन्तः करण में प्रकाश, सन्देह अथवा भ्रांति की सफाई, आनन्द, विघ्नों का विनाश, घट घट में प्रकाश, तेजोमय आनन्द मय ।

બતરીસી–શી (सं.) सोलह दांत ऊपर के और १६ नीचे के; दन्तावली, जिव्हा, जीभ, मुख के समस्त दांत ।

બત્રીસી બતાવવી (क्रि॰) हंस देना, धमकी दिखाना, दात बताना ।

બત્રીસીઓ ચઢવું (क्रि.) दांत चढ़ना, डाढ में घुसना, निंदा होना, अपवाद होना ।

બતલાવવું (क्रि.) बताना दिखाना, समझाना प्रदर्शित करना बतलाना

બતાવવું (क्रि.) दरसाना, दृष्टिके आगे करना, आगे आगे चलना साबित करना, समझाना, स्पष्ट करना, प्रकट करना, कहना कह कर सावधान करना, प्रगट करना, सूचित करना, हाथसे इशारा करना, सैन करना, वर्णन करना, આંખ બતાવવી (क्रि॰) डराना, धमकाना હાથ બતાવવું (क्रि.) मारना, पीटना, ચાવડો બતાવવો (क्रि.) निशानी करना ।

બતેલો (सं.) एक प्रकारका देशी जहाज, जलयान विशेष ।

બત્તી (सं.) बाती, पलीता, बर्ती, दीपक, दिया, मोमबत्ती, दीवट, समद, उत्तेजन, दमपट्टी ।

બત્તી આપવી (क्रि.) प्रेरणा करना, उत्तेजना देना, उस्कारना नया पुराना हो ऐसा प्रयत्न करना जिव्हा, जीभ ।

બત્તી ફાટવી (क्रि.) बोलनेकी शक्ति कम होना. भाषण शक्तिका न्यून होना ।

બત્તી લાગે = आग लगे, चूल्हेमें जाय, अनावश्यकता, प्रदर्शक वाक्य ।

બત્તો (सं.) दस्ता, मूसली ।

બત્રીસ (वि॰) देखो બતરીસ ।

બત્રીસી (सं) जीभ, जिव्हा जबान ।

બથાવવું (क्रि॰) थकाना हंफाना, मथना, थका डालना ।

બથાવી પડવું (क्रि.) बलपूर्वक छीन लेना, पटका लेना, खिसका लेना ।

બદગોઈ (सं.) निंदा, अपवाद, बदनामी, अयश, अपकीर्ति ।

બદગોઈતાર (वि.) निंदक, बदनामी करनेवाला, विदूषक, अपवाद कर्त्ता ।

બદદવા (सं.) श्राप, अनिष्ट चिंतन, शाप, दुराशीष, बददुआ ।

બદદાનત (सं.) बेईमानी, दुष्कामना, कुधर्म, कुनिश्चय ।

બદનું (सं.) मिट्टीका पात्र विशेष,

બદફેલ (सं.) दुराचरण, दुर्व्यसन

બદફેલી (वि.) व्यसनी, दुराचारी (सं.) अनीति दुर्व्यसन ।

બદબખ્ત (वि.) अभागा, बदकिस्मत, बे नसीब, खराब चालवाला ।

બદબોઈ (सं.) दुर्गन्ध, बदबू, बुरी बास, कुबास, बदनामी निन्दा । [मगरूर, अहंकारी ।

બદમસ્ત (वि.) घमण्डी, गर्वित,

બદમસ્તી (सं.) गर्व, घमण्ड, अहङ्कार ।

બદલ (क्रि. वि.) अदल बदल, पलट, प्रतिकार, परिवर्तन हेरफेर,

બદલવું (क्रि.) एकके बदलेमें दूसरा लेना देना, अदला बदला करना, हेरफेर करना परिवर्तन करना, पलटना, उलटा करना, अन्यथा करना, एक स्थानसे दूसरे स्थान रखना ।

બદલી જવું (क्रि.) एक रखकर उसकी जगह दूसरी लेजाना ।

બદલામ (सं.) देखो બદનામ ।

બદલાવવું (क्रि.) फिराना, बदलाना, बदलवाना, लौटवाना,

બદલાવું (क्रि.) एकके स्थानपर दूसरा लाना, फिराना, बदलाना ।

બદલે (क्रि. वि.) एवजमें, बदलेमें एक के स्थानपर जगह ।

બદલો (सं.) एवज, उपकार, आभार, बैर, खार, प्रतिफल ।

બદવું (क्रि.) आज्ञानुसार, चलना हुकम मानना आज्ञा पालन करना,

બદસિકલ-શિકલ (वि.) बद सूरत बेडौल, कुरूप, खराब चेहरेका ।

બદામડી (सं.) बदामका वृक्ष ।

બદી (सं) दुराचरण, अनीति, अधर्म, पाप, निन्दा, चुगली बुराई गिल्ली डंडाका खेल खेलने के लिये जमीन में खोदा हुवा छोटासा गड्ढा ।

બદલ (क्रि. वि.) देखो બદલે

બધું-બધું (वि.) सब समस्त, तमाम, सारा, सम्पूर्ण समग्र ।

અધ્ધે (क्रि. वि.) सर्वत्र सब जगह, यहांवहां सब स्थानमें।

અનડી (सं.) वधू, दुलहिन बीदनी नव वधू, नईब्याही औरत ।

અનડો (सं.) बींद, दुलहा, बर, दूल्हा, बना, नव विवाहित पुरुष, एक प्रकार का गीत जो स्त्रियां गाती हैं ।

અનવું (क्रि.) बिना सोचा होना, जेसा चाहिये वैसा होना, अच्छा होना. अनुकूल होना, कर सकना, होना, निकलना निबंटना, स्नेह मिलाप होना, एक साथ रहना–बनना, हिल मिळ के रहना, साफ सुथरा हो कर सजना, दिल्लगी होना । [जैसे, बनाने योग्य

અનેતેવું (क्रि. वि.) बन सके

અનાં (सं.) लाज, शरम, आबरु, इज्जत ।

અનાવ (सं) होनहार, प्रसंग घटना वत्तान्त, एकाएक बेसोचा होना, स्नेह मिलाप, बनावट, मित्रता ।

અનાવવું (क्रि.) करना, घड़ना रचना, जोड़ना, बनाना, उत्पन्न करना, पैदा करना, कहना, चित्रित करना, मजाक करना, बे वकूफ बनाना, ढंग रचना ।

અનેતેવું (वि.) होसके वैसा, यथा संभव, संभव, मुमकिन, यथा शक्य । [शक्ति ।

અનેવી (सं) बाहिनोई, बहिन का

અંદ (सं.) जिस से कोई चीज बन्ध हो बन्धन, बन्ध, बांधा हुवा, बेड़ी, सीमा, कैद, कायदा नियम, बाण्ड, पानी रोकने के लिये आड़ पट्टा, बांधने वाला अर्थ सूचक प्रत्यय (वि.) अटकाया हुवा, रोका हुवा, बांधा हुवा, कैद किया हुवा ।

અંદબેસ્તું (वि.) योग्य, उचित, ठीक, मुनासिब, अनुकूल ।

અંદ બેસાડવું (क्रि.) फिटकरना, ठीक करना, योग्य करना ।

અંદ બેસવું (क्रि.) ठीक होना, योग्य होना, उचित होना, अनुकूल होना ।

અંદર (सं) जहाज इत्यादिके ठहरनेकी जगह, जहाजी मुकाम, पोर्ट, वह शहर जहां जल याम ठहरते हों जुंगीघर, कस्टम हाउस ।

અંદરી (सं.) एक प्रकारका कपड़ा जिसकी पगड़ी बाँधी जाती है, (क्योंकि वह कपड़ा बन्दरकी बन्दरगाह

प्रभृतिस्थानोंसे आता है,) बम्बर सम्बन्धी, कीमती। [बन्दी,

બંદવો (सं.) बँधुवा, कैदी,

બંદી (सं.) स्तुतिपाठक, चारण, बन्दीजन, भाट, कत्थक,प्रशंसक। अटकाव, आड, रोक, बन्धी, मना, जोड, दोस्ती, लौंडी, गुलाम (स्त्री) हठपूर्वक पकड कर लाई हुई स्त्री।

બંદીખાનું (सं.) जेल, बन्दी गृह, कारावास, कारागृह, कैदखाना।

બંદીખાનાવાળો (सं.) जेलर,

બંદેખોદા (सं.) ईश्वर का दास, हरिभक्त।

બંદો (सं.) नौकर, गुलाम, भक्त, दास, सेवक, भृत्य, किंकर, चाकर, फिदवी, घमण्ड में अपने लिये प्रयोग।

બંધ (सं.) अटकाव, रोक, नियम, कायदा, रचना, बांधा हुवा, बेडी, शरीर, डोर, रस्सी।

બંધકરવું (क्रि.) रोकना, बन्द करना, मूंदना, मीचना, संकोचन करना, प्रतिबंध करना, मना करना, भीतर करना, पूर्ण करना, समाप्त करना, ढंकना।

બંધકી (सं.) वेश्या, छिनाल, रण्डी।

બંધકુષ્ટ (सं.) बद्धकोष्ठ, कब्जियत, अपचलन,कुपथ, बदहज्मी।

બંધકોપ (सं.) पूर्ववत्

બંધબેસવું (क्रि.) माफिक होना, अनुकूल होना, ठीक होना, योग्य होना।

બંધવ (सं.) भाई, बन्धु, भ्राता।

બંધાણ (सं.) गांठ, पाश, जाल, रोक, प्रतिबन्ध, बंधन, बन्द।

બંધાણી (वि.) अभ्यास में लाई हुई, अभ्यस्त, (सं.) अफीम खाने वाला।

બંધામણ-મણી (सं.) बांधने की मजदूरी, बांधने का मूल्य, बंधाई।

બંધારણ (सं.) रचना, योजना प्रबन्ध, वशवर्तिता, लिप्त, कानून, कायदा, पेटपर दवाई इत्यादि का पलस्तर, रंगरेज की औरत, रंगरेजन।

બંધારણી (सं.) अफीम खाने वाला, अफीमची, व्यसनी।

બંધારો (सं.) रंगने का भाग अलग अलग बांध कर रंगने वाला, रेशमी कपड़ा धोने वाला।

બંધાવવું (क्रि.) बंधाना, पुस्तक पर पुष्टि पत्र लगवाना, जिल्द बंधाना।

બંધાવું (क्रि.) बंधना, बांधे जाना, बन्धन में पड़ना, फंसना, પગાર બંધાવો-वेतन निश्चयहोना, પગ બંધાઇજવા-पैर अकड़ जाना।
બંધિયાર (वि.) घेरा हुवा, बंधा हुवा, न बहने वाला पानी।
બંધી (सं.) मना, अटकाव, रोक, आड, निषिद्ध. वर्जित, करार, कौल, शर्त, वचन, बोली।
બંધી કરવી (क्रि.) करार करना, वर्जित करना, रोक करना, अमुक वस्तु न खाना, बन्द करना।
બંધીખાનું (सं.) कैदखाना, जेल खाना, कारागृह, बन्दीगृह।
બંધુ (सं.) बान्धव, भाई, साथी, संगी, सहचारी, मित्र, भाईबन्धु, दोस्त, स्नेही। [प्रत्युत दो।
બંધે (वि) दोनों, केवल एक नहीं
બન્નુસ (सं.) कम्बल, कामरी, कमरिया, ऊनी वस्त्र विशेष।
બન્ને (वि.) दोनों, दो मनुष्य।
બપઇ (सं.) काष्ठ का गोला खिलौना।
બપાનો (सं) दादा, नाना।
બપે (सं.) दादी, नानी।
બપૈયો (सं.) पपीहा, एक प्रकार का पक्षी, चातक, इस पक्षी के कण्ठ में छेद है जिसके कारण वह सदा पियासा मरता है किंतु वर्षा ऋतु में इसकी प्यास मिट जाती है, कहते हैं तब यह उलटा हो कर आकाश से गिरने वाली बूंद को पान करता है।
બપોર (सं.) दो पहर, मध्याह्न सूर्योदय के पश्चात् दूसरे प्रहर का अंत।
બપોરિયું (सं.) एक प्रकार की आतिशबाजी, एक प्रकार का पुष्प, मध्याह्न तक काम करने वाला मनुष्य, दो पहरिया।
બપોરિયો (सं.) एक प्रकार का वृक्ष, इस में दो पहरी के समय फूल खिलते हैं, इसके फूल लाल और सफेद होते हैं।
બપોરી બપત-રે (क्रि. वि.) मध्यान्हे, दिनके मध्य में, दुपहरी में।
બફ (सं.) घाम, बफारा, भाप।
બફાકરવું (क्रि.) गुण करना, फायदा करना, लाभ करना।
બફાણું (सं.) एक प्रकार का आम का आचार, उबाल कर राई के योग से बनाया हुवा आम का आचार, खिचड़ी वगैरः में उबाली हुई कैरी।

બફારો (सं.) भाप, बफारा, बाष्प, घाम, गर्मी का भपका, उष्ण जलकी गर्मी ।

બફાવું (क्रि.) बाष्प से गरम करना रांधना, सिजाना, उबालना, घाम, से व्याकुल होना, गर्मीसे घबराना।

બબડવું (क्रि.) बड़बड़ना ।

બબડાટ (सं.) देखो બડબડાટ

બબરચી (सं.) रसोइया, भोजन करने वाला, पाकी, रोटी बनाने वाला ।

બબરચીખાનું (सं.) पाकगृह, भोजनगृह, रसोई घर, रन्धन गृह ।

બબુક (सं.) मूर्ख, शठ, बेवकूफ ।

બબુચક (सं.) पूर्ववत्

બબ્બે (वि.) बहुत वस्तुओं में प्रत्येक दो, दो दो, प्रत्येक दो का समुदाय ।

બમ્ (क्रि. वि.) आवाज का सूचक शब्द, दन, (सं.) गोला, बम्म यह शब्द शिवजीके सामने भी बोला जाता है, जोगी भिक्षा मांगते समय भी इस शब्दको उच्चारण करते हैं ।

બમ્ઠસ (वि.) ठसाठस भराहुवा, बिलकुल भराहुवा ठसाहुवा ।

બમણવું (क्रि.) पंखका शब्द होना, एक जगह बारबार भटकना भिनभिनाना ।

બમણાટ (सं) भिन भिनाहट, मक्षिका आदिके उड़नेका शब्द, भिनभिन । [दुगुना, डबल ।

બમણું (वि.) दुहरा, दुपट,

બમણીબારસ (सं.) अतिपीड़ा, कठिनता, अत्यन्त माथाफोड़ी ।

બંબ (सं.) मृदंगमें षडजस्वर, लड़ाई का डंका, कोलाहल, होहल्ला, जलका नल, बड़ा, स्थूल भारी युद्धवाद्य । [मारमारना ।

બંબ બજાવવો (क्रि.) ठोकना,

બબાજરી આપવી (क्रि) पूर्ववत्,

બંબમહાદેવ (सं.) शिवजी के लिये सम्बोधन वाक्य. (शिवजीकी जटासे गंगा के प्रवाह के शब्दसे इसशब्दकी रचना है ।

બંબાઅવો (क्रि.) पैसा टका कुछ भी न होना, खाली होना, कुछभी न होना ।

બંબેબંબ (वि.) बाहिरसे भडक किंतु भीतर से कुछभी नहीं, पोला खाली, अंधेर, अव्यवस्था ।

બંબેબંબ ઠોકવું (क्रि.) अटकल पंजू कहना, गप्प मारना, अन्धेर चलाना ।

બંબો (सं.) पम्प, पानीका नल, कुएँसे पानी निकालनेका पंप, आग बुझानेका नल, कोई दीर्घ और स्थूल वस्तु । [दीर्घ ।

બંબ (वि.) मोटा, विशाल भारी

બંબો ચાંપવો (क्रि.) पिचकारी चलाना ।

બર (सं.) चौड़ाई, पना, अरज, जात, माल (वि.) पूरा पड़ा हुवा, अनुसार मूजिब, मुआफ़िक, योग्य, लायक ।

બરછ (सं.) ऊंटके बाल ।

બરકત (सं.) हित, लाभ, फायदा जिससे फायदा हो, फतह, शुभ, कल्याण, सिद्धि, अधिकता ।

બરકંદાજ (सं) बन्दूकवाला, बंदूकची । [पुकारना, आवाज लगाना।

બરકવું (क्रि.) चिल्लाकर बुलाना,

બરછી (सं.) रुईकी गांठ ।

બરડો (सं.) हल्ला, ध्वनि, शब्द, कोलाहल, आवाज, रव ।

બરખાસ્ત કરવું (क्रि.) छुट्टी देना छोड़ना, त्यागना, विसर्जन करना।

બરખાસ્ત થવી (क्रि.) छुट्टीहोना, समाप्त होना, इल्लत छूटना ।

બરખો—ખટ (वि.) खुरदरा और कठोर, दृढ़ शरीरका (मनुष्य),

બરજાત (वि.) निम्न कुलका, नीच वर्ण, बदजात, नीच, कमीन

બરડ (वि.) तुरंत टूटजाने वाला, चटकीला कड़कीला, (सं.) दांत पीसनका शब्द, करड़करड़ ।

બરડક બોળું (वि.) भोला, सीधा ।

બરડો (सं.) पृष्ट, पीठकी हड्डी, बांस, सुपारीकी एक जाति, अर्द्ध पकी हुई सुपारीको तोड़कर उसको उबालकर सुखाई हुई सुपारी ।

બરડો બેવડ વળી જવો (क्रि.) बहुत मारने पीटनेसे पीठकी हड्डी में हानि पहुँचना, सीधे खड़े न रह सकना ।

બરડો ભારે થવો (क्रि.) मार मारकर पीठकी हड्डी हल्की करने की जरुरत पड़ना। [का पात्र विशेष।

બરણી (स.) चीनी अथवा मिट्टी

બરતરફ (वि.) निकाला हुवा, आज्ञा दी हुई, दूर किया हुवा (नौकरीसे)

બરતરફી (सं.) पृथक्करण, निकाल।

બરદ (सं.) मानता, संकल्प, प्रतिज्ञा, वचन, भक्त को वरदान देने की प्रतिज्ञा ।

બરદાશ—સ્ત (सं.) संभाल, युक्ति पूर्वकपालन, खातिर, आदर, प्रबन्ध।

અરહિયો (सं.) राज्यका स्तुति पाठक, चारण बन्दी भाट प्रभृति।
અરબાદ (वि.) रद्द, निकम्मा, मिथ्या, खाली, नाश किया हुवा।
અરભાર (सं.) दया, सम्बन्ध।
અરડવું (क्रि.) नींदमें बडबडाना, बरबराना, निद्रा में बोलना।
અરહટ (वि.) झट टूट जानेवाला।
અરાગળ (सं.) तापकी झनझनी, हलका ज्वर, ज्वरका पूर्वरूप।
અરાડ (सं.) हल्ला, कोलाहल, जोरकी आवाज।
અરાડવું (क्रि.) चिल्लाना, जोर से हल्ला करना, डकारना।
અરાડો (सं.) जोरका शब्द, जोरका हल्ला, खूब कोलाहल।
અરાબર (वि.) समान, तुल्य ठीक, उचित, योग्य, वाजबी, घटित, लायक, अनुकूल, अनुसार, मुवाफिक, समतोल, सरीखा, सीधा सच्चा, एकरूप, समरूप, दुरुस्त, भूलचूक रहित, पूरा पूर्ण, समस्त, सब, सम्पूर्ण।
અરાબર થવું (क्रि.) होरहना, पारहोना, नाशपाना, मरजाना।
અરાબર (क्रि. वि.) चाहिये जैसा, जैसाका तैसाही, केवल।
અરાબરિયું (वि.) समान, बराबर का, हमउम्री, साथी, समवयस्क।
અરાબરી (सं.) समानता, स्पर्द्धा, डाह।
અરાસ (सं.) कपूर में मसाला डाल कर बनाया हुवा एक प्रकारका सुगन्धित तथा ठंढा मसाला। कूँची, ब्रश, बुरुस. पींछी, कलम, पत्थर नापनेका माप।
અરાસકપુર (सं.) एक प्रकारका कपूर। [रंजीदा गमगीन।
અરિયલ (वि.) उदास, शोकार्त.
અરિયલપણું (सं.) उदासी रंजिश, गम।
અરી (सं.) अंगरखेका एक भाग।
અરૂ (सं.) एक प्रकारकी घास, बरू, जिसकी कलम बनती हैं, नरकट, नरसल।
અરો (सं.) निर्बलताके कारण ओष्ठ पर उत्पन्न फुनसी, अभिमान, गर्व, घमण्ड।
અરોડું (सं.) जुवार बाजरी आदि का डंठल, बरू. एक प्रकारकी घासकी छडें।
અરોબર (सं.) देखो અરાબર
અરોબરીઓ } देखो અરાબરિયું
અરોબરીયું }

બલ (सं.) देखो બળદ या બળ
બલકે (क्रि. वि.) बल्कि, विशेष, प्रत्युत ।
બલિષ્ઠ (वि.) बलवान, शक्तिसम्पन्न, ताकदवर जोरावर, सशक्त।
બલખમ-ગમ (सं.) कफ, शरीरस्थ एक प्रकारकी धातु, कंखार, शरीरस्थ मैल ।
બલખો (सं.) पूर्ववत्
બલભરી (सं.) एक प्रकारका गले मे पहिरनेका स्त्रियोंका जेवर ।
બલદ-દીઓ (सं.) देखो બેલ
બલમ (सं) गरम पानी में डाले हुए तुषरहित चावल, इस प्रकार के दाने (चांवलके) टूटते नहीं हैं।
બલવણ (सं) एक प्रकारका क्षार, आंवले के पानी में उबाला हुवा नमक ।
બલવો (सं.) तूफान, फिसाद, उत्पात, झगड़ा, टंटा, ऊधम, उपद्रव ।
બલા (सं.) भूत, प्रेत, आफत, पीड़ा, दुख, रोग, कष्ट ।
બલા લેવી (क्रि.) किसीकी पीड़ा स्वयम अपने ऊपर ले लेना, भारी
બલા જાણે = मैं नहीं जानता मुझे जानने की आवश्यकता नहीं।
બલાક (सं.) बगुला, बक, पक्षी विशेष । [स्त्री ।
બલાકા (सं.) बगुली, बक की
બલાલ (वि.) हरामी, नीच कार्य कर्ता । [जाने ।
બલા રાત બલુ=ईश्वर जानें, हरि
બલા વળગવી (क्रि.) बला लगना, आपत्ति में घिरना ।
બલાડી (सं.) બિલાડી
બલૈ (सं.) बगल में का एक रोग विशेष जो गाठ के रूप में होता है।
બલૈયા (सं.) वारफेर, किसी मनुष्य के सिरपर हाथ घुमानेकी क्रिया जो यह प्रदर्शित करती है कि तेरी सारी बलाएं और आपदाएं दूर हों, चूड़ियां ।
બલૈયાં બે ચવા (क्रि.) हिसाब लगा कर दिखाना ।
બલૈયુ (सं.) चूड़ी वलय ।
બલોતિયું (सं.) बालकों के मल मूत्र करनेका कपड़ा, पोतड़ा ।
બલોહોર (सं.) कलेजे का दर्द, हृदय शूल ।
બલોયુ (सं.) पतली पतरी की चूड़ी, आगे पहिनने की पतली चूड़ी । [में बोलना, बर्राना ।
બલ્લવું (क्रि.) नींद में बैठना, निंद्रा

બવાડું (सं.) नई आबाद जमीन का द्वितीय वर्ष।

બશીર (सं.) अस्सी तोले।

બશેરી (सं.) अस्सी तोलों का बाट-वजन।

બસ (क्रि. वि.) पूर्ण, काफी, हुवा, इत्यादि अर्थों का सूचक शब्द।

બસેં-સો (वि.) दोसौ, द्विशत, २००।

બસ્તો (सं.) बण्डल, पोट, गठरी।

બહવવું (क्रि.) बोलना, भाषण करना।

બહાદર (वि.) साहसी, वीर, मर्द, छाती वाला, शूरवीर।

બહાનું (सं.) निमित्त, मिस, ढोंग, मिथ्या कारण, बहाना।

બહાર (सं.) शोभा, आनन्द, मजा, खुशी, वसन्तऋतु, (क्रि. वि.) बाहिर, पृथक्, अलग।

બહાર છે તેટલો ભોંમાં છે उसकी जड़ बड़ी गहिरी है, बहुत ही लुचा है, चलता पुरजा है।

બહાર જવું (क्रि.) पाखाना फिरने जाना, टट्टी जाना, शौच जाना, दस्त जाना, घर से बाहिर जाना।

બહાર મારવો (क्रि.) मजा मारना, आनन्द लूटना, खुबसूरती का आनन्द प्राप्त करना।

બહારવું (क्रि.) झाड़ू निकालना, बुहारी देना, बुहारना, कचरा झाड़ना, साफ करना, अलग करना।

બહાર (सं.) बन्दूक का शब्द।

બહારવટિયો (सं.) देखो બારવટિયો।

બહારવટું (सं.) देखो બારવટું

બહાલ (वि.) कायम रखा हुवा निकाल देने के बाद फिर से रखा हुवा।

બહાવું (क्रि.) बहाना, फैलाना।

બહાવરું (वि.) विह्वल, घबराया हुवा, व्याकुल, व्यथित।

બહુજ થઇ (क्रि.) बहुत दुःख बीता, बेहद हुवा, अति हुई।

બહુગંધા (सं.) पीली जुही, काला जीरा, चंपाकी कली, स्याहजीरा।

બહુરૂપી (सं.) नाटकी, बहुत वेश बनानेवाला, बहुरूपिया, स्वांगी।

બહુવેળા (क्रि. वि.) प्रायः, कई वार, कई प्रकार, अक्सर।

બહુસારૂં (क्रि. वि) बहुत ठीक, अच्छा, अत्युत्तम, अतिश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

બહેન (सं.) बहिन, भगिनि, बाई।

બહેરું (वि.) बधिर, बहिरा, जिसे कानसे नहीं सुने, जिस कान से नहीं सुने, श्रवण शक्तिहीन।

અહોળું (वि.) बड़ा, दीर्घ विस्तृत।

અહોળે હાથે (क्रि. वि.) मुक्त हस्तसे, उड़ाऊ रीतिसे, उदारता पूर्वक, बिना संकोचके, विस्तीर्ण हृदयसे।

બળ (सं.) बल, शक्ति, पौरुष, ताकत, वीर्य्य, सामर्थ्य कूवत, प्रभाव, प्रताप, पराक्रम, गौरव, सैन्य, दल, फौज, लश्कर, प्राण, जीव, जुल्म, जबरदस्ती, बलात्कार।

બળકટ (वि.) बलवान, बलवन्त, ताकतवर, सशक्त सामर्थ्य युक्त।

બળખો (सं.) कफ, कंखार, बल्गम।

બળજોરી (सं.) बरजोरी, जोर जुल्म, जबरन्, बलपूर्वक, बलात्।

બળતણ (सं.) ईंधन, इन्धन, जलाने की सामग्री, बळीता, राँधनेका पात्र, बरतन, पकानेका बरतन।

બળતરા (सं) रंज शोक अफसोस।

બળતું (सं.) ताप, अग्नि, गर्मी, झाल, शोहले, शोक, रंज अफसोस। (वि.) प्रज्वलित, जलता हुवा।

બળદ (सं.) बैल, वृषभ, सांड बिना बुद्धिका मनुष्य, बल देने वाला, पौष्टिक, जोर देने वाला।

બળદાર (वि.) बलवान, मजबूत, शक्ति सम्पन्न, ताकतवाला।

બળધારી (सं.) अत्यंत दृढ, बहुत मजबूत।

બળબળ (सं.) बरबरें चिंता, शोक।

બળુંબંબ (सं.) एक प्रकार का फळ। [औषधि।

બળબીજ (सं.) एक प्रकार की

બળવત્તર (वि.) बहुत ताकत वाला, अधिक शक्ति सम्पन्न।

બળવું (क्रि.) दग्ध होना, भस्म होना, जलना, दाजना, क्रोध में व्याकुल होना, कुढना, स्पर्द्धा करना।

બળીનેખાખથવું (क्रि.) ईर्ष्या तथा स्पर्द्धा से हृदय जलना, किसी का भला देख कर जलना, चिंता होना, जल भुन कर भस्म होना।

બળવો (सं.) देखो બખડો।

બળવો કરનાર (सं.) बखेड़ाई, बागी, बखेड़िया, उपद्रवी, दंगई।

બળવાખોર (सं.) पूर्ववत्

બળાપો (सं.) दुखकी जलन, हृदय दाह, शोक रंज संताप द्वेष, स्पर्द्धा। [वस्त्र।

બળિયું (वि.) शक्तिवान, बल-

બળિયેલ (वि.) ईर्ष्यालु, द्वेषी, स्पर्द्धी, देखकर कुढने वाला।

બલિ (सं.) बलि, भेट, भोग, पूजा ।

બળેવ (सं.) श्रावणकी पूनम, श्रावण मासकी पौर्णिमातिथि, इसदिन के बाद दरियामें जलयान चलना आरंभ हो जाता है। इसदिन ब्राह्मण लोग यजमानके हाथमें राखी रक्षासूत्र बांधते हैं, यजुर्वेदी ब्राह्मण इसदिन यज्ञोपवीत आदि बदलते हैं, उपाकर्म ।

બળેલું (सं.) देखो બળિયેલ

બળી (सं.) जमाहुवा, दूध ।

બળોતિયું (सं.) पोतड़ा, वहवस्त्र जो बालक के नीचे मलमूत्रादि के लिये बिछाया जाता है। बच्चे का बिछौना । [वेतन देनेवाला क्लर्क ।

બક્ષી (सं.) तनख्वाह देनेवाले

બક્ષીસ (सं.) इनाम, पुरस्कार, भेट दान, बकशीस ।

બાંક (सं.) बैठनेकी तख्ती, बेंच टिपाई, लम्बीतिपाई ।

બાંકવું (क्रि.) बकना, बोलना, कहना । [छैलापन, छैलाई ।

બાંકાઈ (सं.) टेढापन, बांक,

બાંકું (वि.) छैला. बांकुरा, खूबसूरत, हिम्मत, साहस, फक्कड़, टेढा, नाजुक, (काम) रणसींगा।

બાંકાફુંકવા (क्रि) खुशामद करना, गुणानुवाद करना, प्रशंसा करना ।

બાંકિરાવ (सं.) फक्कड़, बांका, शेखीबाज, अभिमानी, अकड़ू ।

બાંગ (सं.) चिल्लाकर नमाज पढना, नमाजका समय बताने के लिये " अल्लाहो अकबर " की प्रचण्डध्वनि, स्त्रियोंका एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।

બાંગડ (वि.) लुच्चा, चालाक, मक्कार, टेढा, बहादूर, वीर ।

બાંગરો (वि.) शिरपर चढाया हुवा, बहकाया हुवा, फुलाया हुवा।

બાંગેડવું (क्रि.) डकारना, अर्राकर रोना, चिल्लाना ।

બાંટ (सं.) स्त्रियोंके पहिरनेका एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।

બાંટવું (क्रि.) बांटना, हिस्सा करना, विभाग करना ।

બાંડાબીજ (सं.) वैशाख मासके शुक्ल पक्षकी द्वितीयातिथि ।

બાંડિયું (सं.) मुसल्मानों के लिये तिरस्कार सूचक शब्द।

બાંડિયો (सं.) पूर्ववत् ।

બાંડું (वि.) बे पूछ, पुछ कटा, पुच्छहीन, बदशकल, नग्न, उघाड़ा, नंगा । [दासी, लौंडी।

બાંડી (सं.) चाकरी, नौकरानी,

બાંધ (सं.) पानीका प्रवाह, रोकनेके लिये बांधा हुवा बांध, पुल, पाल, बन्ध।

બાંધ કામ (सं.) चुनाईका काम, बांध का काम, भवनादि निर्माण कार्य।

બાંધ છોડ (सं.) बांधने तथा खोलनेका कार्य, पकड़ना, और छोड़ना।

બાધ છોડની બાત = दावपेंचकी बात, ऐसी कठिन बात जिसमें होशियार मनुष्य की सलाह लेनी पड़े।

બાધણુ (सं.) वह कपड़ा जिसमें पुस्तकें तथा वस्त्र आदि बांध जाते हैं, बसना, बन्धन, गाठ लिफाफा।

બાધણુ છોડવું (क्रि.) झुक जाना, हार जाना, सामना करने की हिम्मत छोड़ना।

બાંધણી (सं.) बांधनेका ढंग, रचना, योजना, चुंदड़ी, (स्त्रियों की ओढ़नी.) ग्रंथ की विषय योजना, इबारत।

બાંધણું (सं.) श्मशान, मरघट, मुर्दा, घट, मसान, अंत्येष्टी की जगह।

બાંધવું (क्रि.) बांधना, कसना, गांठना, साधना, गूंथना, गांठ लगाना, जकड़ना, दृढ करना, बहुत सामग्री द्वारा नवीन रचना, नियमसे मर्यादा पूर्वक रखना, अंकुश मारना, विचार करना, बन्धन में लाना, एकत्र करना, जमाना।

બાંધી લેવું (क्रि.) जवाब देने में घबरावे ऐसा करना, अपना कहा हुवा वापिस लेना पड़े ऐसी स्थिति में पड़ना, यंत्र मंत्रादि प्रयोग से वश में करना, अधिकारमें कर लेना।

બાંધી દડીનું (वि.) बहुत नीचाना, बहुत ऊंचा, बहुत मोटा न बहुत पतला।

બાધી બીડી (सं.) दावदूब, मांडा फोड़ नहीं हुई हो ऐसी हालत।

બાંધેલી કમ્મરનું (वि.) तय्यार, चंचल, हाजर, तत्पर, हिम्मतवाला, कमर बांधे हुवे तय्यार।

બાંધ્યો પગ રહેવો (क्रि.) फुरसत से एक ही जगह बहुत देर तक बैठना।

બાંધી મુદત (सं.) नियमित समय, मुकर्रावक्त, निर्दिष्ट काल

બાંધી આરી (क्रि. वि.) संशय युक्त, संदेहपूर्वक, संदिग्धता युक्त, गोलमोल।

બાંધે આરે (क्रि. वि.) पूर्ववत्।

બાંધો (सं.) जन्मसे अथवा कसरतसे शरीर संगठन, दृढ, कठोर, रूप, शकल, ढांचा, सांचा।

બાંબૂ (सं.) बांस, बम्बू, वंश।

બાંબે (सं.) बंबई, मुंबई नगर।

બાંભેડો-રો (सं.) कोमल पत्थर, नरम पत्थर, (पोरबन्दर की तरफ)। [अस्तीन।

બાંય (सं.) बाहु, बाहं, बाजू,

બાંયડું (सं.) हाथ, हस्त, कर, बहु, भुजा। [गेरंटी।

બાંયધર-રી (सं.) जमानत,

બાંહ્ય (सं.) हाथ, बांह, अस्तीन, वस्त्र का वह भाग जो हाथको ढांकता है। कन्याके हाथकी चूड़ी सहाय, मदद।

બાંહ્યધર-રી (सं.) हाथ पकड़ने वाला, जामिन, हामीदार।

બાકું (सं.) लकड़ी के वे टुकड़े जो कि घर के द्वार में लगाये जाते हैं।

બા (सं.) बहिन, मा, बाई, बालक के लिये लाड़ में बोलने का शब्द।

બાઈ (सं.) घर में की बड़ी स्त्री के लिये सम्मान सूचक शब्द, सासू।

બાઈકલ્યાણી (सं.) याचना, निर्धनता, दारिद्र, गरीबी, आजिजी, नामर्दी।

બાઈ કલ્યાણી કરવુ (क्रि.) भीख मांग कर खाना, बे पुरुषार्थ होना।

બાઈજી (सं.) सासू, सास, स्वसुर पत्नी।

બાઈ માણસ (सं.) स्त्री जाति बैयर बानी, मस्तूरात, जनाना, अबला जाति। [के लिये)

બાઉ (सं.) लड्डू, हौवा, (बालकों

બાકભી (सं.) हठ, जिद्द, दुराग्रह।

બાકરી (सं.) ममता, टक्कर, हठ, जिद्द।

બાકરી બાંધવી (क्रि.) ममता करना, बैर करना, सामना करना, जिद्द बांधना।

બાકળા (सं.) रांधा हुवा अन्न, बिना पीसे या टुकड़े किये रांधा हुवा अन्न।

બાકીતાકી (वि.) मांगती हुई (रकम) लेने योग्य, बाकी।

બાકીસાકી (सं.) शेष, बचत।

બાકીનું (वि.) बाकीका बचाहुवा।

બાકું-કોરું (सं.) बड़ा भारी छेद।

બાખડવું (क्रि.) वाक युद्ध करना, झगड़ा करना, व्याकुल करना।

બાખરવું (क्रि.) पूर्ववत्

બાખડી (स.) बहुत दिनों की व्याईगाय भैंस, समर्था गाय अथवा भैंस जो दूध देती हो।

બાખાબોલું (वि.) खरा, सच्चा, निष्कपटी।

બાખું (वि.) बाका, रंगीला, छैली।

બાગનેટ (सं.) संगीन, बंदूक की नली के ऊपर भाला।

બાગબગીચો (स.) वाटिका उपवन इत्यादि, फुलवारी।

બાગબાન (सं.) माली, बागीचे के वृक्षों की हिफाजत करने वाला।

બાગાયત-તી (सं.) बागीचे की भूमि, कृषि विद्या, बागीचे का हुनर।

[डरावना, उद्धत।

બાઘડ-ડો (वि.) खौफनाक, भयंकर

બાઘેલ (वि.) मूढ़, शठ।

બાચકો (सं.) मुट्ठी भरने में जितना अंगुलियों पकड़ा जा सके उतना, औंधा हाथ कर के चमड़ी पकड़ कर खींचने की क्रिया, मुट्ठी।

બાજ (सं.) एक प्रकार का पक्षी, शिकरा, पत्तल, पत्तर, पावर, पत्रावलि, वाला, रखने वाला इत्यादि अर्थ सूचक फारसी का प्रत्यय, घोड़ा घोड़े की एक जाति विशेष।

[बेंच, चौकी।

બાજઠ-ઠ (सं.) स्टूल, तिपाई,

બાજઠું (सं.) पत्तल पत्रावलि, पत्तर।

બાજંદું (वि.) चंचल, चपल।

બાજંદાવેડા (सं.) चंचलता, चपलता, लुच्चाई, बदमाशी, ऊधम।

બાજરિયાં (सं.) गुच्छ, सिरा, बाल, (अन्नके) एक प्रकारकी, आतिशबाजी।

બાજરિયું (सं.) बाजरा नामक अन्नके सिरे-गुच्छे एक प्रकारका जेवर।

બાજરિયું વધવું (क्रि.) सिरपर बड़े बड़े बाल बढ़जाना (हंसीमें)

બાજરિયો (सं.) बाजरे के सिरों को पानी छींटकर उसको कूट कर और बाजरा निकालकर उसमें रांधा हुवा पदार्थ।

બાજરી (सं.) बाजरा नामक धान्य का पेड़, बाजरा नामक अन्न।

[करना।

બાજી બાંધવી (क्रि.) खेल आरंभ

બાજીજવી (क्रि.) सारी बात बिगड़ना ।

બાજીજીતવી (क्रि.) यशोदाता कार्य में सफलता पाना, विजय पाना ।

બાજી ધૂળ થવી-બગડવી (क्रि.) खेल बिगड़ना, बिचारी हुई बात बिगड़ना, उलटे पासे गिरना ।

બાજી હાથમાં આવવી (क्रि.) भाग्य परीक्षाका अवसर प्राप्त होना ।

બાજી હારવું (क्रि.) निष्फल होना, हारना, इच्छा पूर्ण न होना हिम्मत हारना ।

બાજીયાકાર (सं.) फजीहत, खराबी।

બાજુ (सं.) तरफ, पक्ष कोर, कोना, मदद, दिशा, ओर, बांह, भुजा । [पर ।

બાજુપર (क्रि. वि) अलग, पक्ष-

બાજે (वि.) कोई एक, कईएक अमुक प्रायः ।

બાજેલોક (सं.) कोई कोई मनुष्य, अमुक आदमी, कई लोग ।

બાજે બખત (क्रि. वि.) कभी, कभी, किसी समय, प्रसंगात्, बाजवक्त ।

બાઝુંડું-ડું (वि.) लुच्चा, हरामी धूर्त, नीच कार्योंमें योग्य (मनुष्य)

બાઝવું (क्रि.) चिपटाना, छातीसे लगाना, पकड़ना, लड़ना, होना ।

બાઝીપડવું (क्रि.) भिड़ पड़ना, लड़ मरना गुंथजाना ।

બાટ (सं) एक प्रकारका मिष्टान्न

બાટલી (सं.) शीशी, लम्बे आकारकी सकड़े मुंहकी काचकी सीशी बोतल, बॉटल

બાટલી ભગત (सं.) शराबी मनुष्य, मद्यपी, शराबी, मदिरा भक्त ।

બાટલો (सं.) मोटी बडी बोतल।

બાટી (सं.) कण्डोंकी आगपर सेकी हुई मोटी गोल गोल रोटी ।

બાટું (वि.) ऐस ज्वार बाजरे के ठंडल जिनमें भुट्टे-सिरे न आये हों।

બાડું (वि.) बांकी आंखों वाला ऐंचकतानी आंखोंवाला, कनखा ।

બાડીઆંખ-નજર (सं.) टेढी आंख, टेढी नजर, दूषित नेत्र ।

બાડીનજરે જોવું (क्रि.) तिरछी आंखों से देखना, चुपचाप देखना।

બાડુઆં-વાં-ડુવાં (वि.) बेचारा, गरीब, बापड़ा, निर्दोष, सीधा सधा, तुतलाकर बोलने वाला ।

બાહુડું (वि.) बालक के समान बे समझ और तोतरा।

બાઢમ્ (क्रि. वि.) ठीक, भला, बहुत, उत्तम।

બાણ (सं.) तीर, शर, निशानी, खेतो के लिये चिन्ह, लोहे की नली में बारूद भर के उसे लकड़ी से मजबूत किया हुवा शस्त्र, एक प्रकार की आतिशबाजी, नर्मदा नदी में कातवरा नामक गांव के पास का लम्बा और गोल पत्थर जिसे शिव मान कर पूजा करते हैं। खाड़ी के पास की विशाल जगह जहां बहुत जोर से पानी आता हो, । काम देव के पाँच बाण-" अरविंद मशोकंच, चूतंच नवमल्लि का। नीलोत्पलंच पंचैते पंच बाणस्य सायकाः- ॥" अरविंद=कमल अशोक, चूत (आम्रमंजरी) नवमल्लिका (मोगरा) और नीलोत्पल (काल कमल) य कामदेवके पाच तीर हैं। વાગ્બાણ (सं.) वाणी रूपी बाण, तीर समान तीक्ष्ण भाषण।

બાણ વાગવાં (सं.) शब्द शर चुभना, तीक्ष्ण भाषण से हृदय पर प्रभाव होना।

બાણવું (क्रि.) सहा करना।

બાણસુતા (सं.) ऊषा, अनिरुद्ध की स्त्री।

બાણાવળી (सं.) तीर चलाने में दक्ष, अर्जुन का दूसरा नाम, धनुर्वेदज्ञ।

બાણી (सं.) निर्दिष्ट समय, अवधि मुद्दत, शर्त, वचन, स्वीकृति, वचन बोली, उक्ति, भाषण।

બાણું (सं.) संख्या विशेष, बानवें, नब्बे और दो, ९२

બાતમી (सं.) खबर, सम्वाद, समाचार, सूचना, पता।

બાતમીદાર (सं.) खबर के जाने वाला, सम्वादवाहक, सूचक।

બાતલ (वि.) निरुपयोगी, रद्द, बे काम, निकम्मा, व्यर्थ।

બાતેન (वि.) खानगी, गुप्त, छुपा हुवा, प्राइव्हेट, परदे में।

બાથ (सं.) अंक, दोनों भुजाओं के बीच का स्थान, सामने टक्कर लेना, सामने होना, हृदयालिंगन, दोनों हाथों को ऊंचा कर के उस में किसी वस्तु को ले लेना।

બાથભીડવી (क्रि.) छाती से लगाना हृदय से चिपकाना, सामने होना।

બાઝોળી (क्रि.) पूर्ववत्

બાથોડિયું (सं.) प्रयत्न कोशिश,

બાદ (सं.) संख्या (जमा) में से कम किया हुवा, कमी, घटी, रही, (क्रि. वि.) पश्चात, उपरान्त, पीछे से ।

બાદકરવું (क्रि.) कम करना, रद्दी करना, निकाल डालना ।

બાદમા (सं.) शेष, बाकी, अवशिष्ट ।

બાદબાકી (सं.) शेष, बचा-हुवा, बाद करनेकी गणित रीति ।

બાદર (वि.) मोटा, स्थूल, जो दिखलाई पड़े, बड़ा, भारी ।

બાદલું (वि.) खोटा, नकली, बनावटी, कृत्रिम, चांदीसोनेका मुलम्मा किया हुवा, नाजुक, कोमल ।

બાદિઆન (सं.) एक प्रकारकी सुगंध, सुगन्धित धूप विशेष ।

બાદિયવાસીર (सं.) वातार्श बादी का बवासीर, रोग विशेष ।

બાદિહરસ (सं.) पूर्ववत् ।

બાધ (सं.) बाधा, कठिनता, अड़चन, हरकत, उपद्रव, दोष, पाप, प्रतिबंध, प्रतिरोध ।

બાધું (वि.) बांधा हुवा, प्रतिबंध किया हुवा, रोका हुवा ।

બાધુંભો (सं.) एकबार भोजन करने का व्रत (स्त्रियोंमें), पूरा, सिक्का ।

બાધેભારે (क्रि. वि.) संकेतमें, सन्देह युक्त रीतिसे, ऐसे और ऐसे । [एवज

બાન (सं.) बहाना, बदला,

બાનક (सं.) ढांचा, ढङ्ग; रचना,

બાનડી (सं.) नौकरनी, बांदी, दासी, टहलुई ।

બાની (सं.) ढंग, ढांचा, तर्ज, दासी, नौकरनी, वाणी, बोली, वस्तु, चीज ।

બાનું (सं,) सम्मानित स्त्री सेठानी, सभ्य स्त्री, धनाढय स्त्री, बहाना, रुपये पैसेका लेन देन ।

બાપજન્મારે (क्रि. वि.) जब से जन्म लिया तब से आज तक, कभी आज तक ।

બાપજી (सं.) अपने से वयोवृद्ध मनुष्य के लिये मान सूचक शब्द ।

બાપદીકરીનું હોવું (क्रि.) पुत्र और पिता के तुल्य प्रेम, वात्सल्य प्रेम । [बेठंगा, गरीब, निर्धन ।

બાપનાં સિતારિયાં (सं.) कंगाल,

બાપના કુવામાં ડુબીમરવું (क्रि.) परम्परागत, रीति के द्वारा हानि उठाना, लकीर के फकीर बने रहना।

બાપના બાપ પાસે ગયો=मर गया, स्वर्गवासी हुवा, मृत्यु पाई, बहुत दूर जाना, दृष्टि से बाहिर होना।

બાપના બાપ બોલાવવા (क्रि) दुःख के समय बापकी सहायता मांगना, बाप बाप चिल्लाना।

બાપની બાંય સાહીને (क्रि. वि.) बाप की अथवा किसी अन्य की सहायता ले कर, आश्रय ले कर।

બાપનું કરમ-કપાળ (सं) कुछ भी नहीं, नकुछ।

બાપનું બુઝારૂં (सं.) बिना ढंग के काम करने वाले के लिये यह वाक्य प्रयोग किया जाता है।

બાપનું કઠંકો=कुछ भी नहीं आता।

બાપનો બુધવાર (सं. , कुछ भी नहीं (ज्योतिष में बुधवार नपुंसक माना है)

બાપનો લાડવા (सं.) लाभ, फायदा, बापका रखा हुवा अधिकार।

બાપડિયું (वि.) गरीब, रंक, कंगाल दारदी, बे आबापका, दया योग्य।

બાપડી (सं.) दीन, बालिका अथवा स्त्री।

બાપડું (सं.) निर्धन, दीन, असहाय, गरीब, रंक, दरिद्री, कंगाल, अनाथ।

બાપદાદા (सं.) पूर्वज, पुरुखा, अग्रज, पुराने लोग, बड़े लोग।

બાપપણું (सं.) पितृत्व, जनकता।

બાપભાઈ કરવુ (क्रि.) कोसना, गाली गलौज करना, बहुत समझाना, विनती करना, मिन्नत करना। [सहायता करो, दइया।

બાપરે (विस्म.) अरे बाप, कोई

બાપવગરનું (वि.) पितृहीन, बिना बाप, पितारहित।

બાપસમાન (वि.) पितृ तुल्य, बाप के अनुसार, पितावत्।

બાપલા–લિયા (वि.) पिता, बाप, बेचारा, दीन, असहाय, निर्बल।

બાપા (सं.) बाप, पिता, जनक, माननीय पुरुष के लिये यह शब्द प्रयोग होता है।

બાપિકું (वि.) बापका, पैतृक।

બાપીકું વતન (सं.) पितृ भूमि, बाप का देश, वतन, देश।

બાપુ (सं.) बाप, पिता, जनक, शिक्षा देते समय सम्बोधन शब्द, बालकों के लिये भी प्रयोग होता है। सन्मान सूचक शब्द ।

બાપુડી (वि.) प्यारी, प्रिय, (सं) लड़की, बालिका, कन्या, दुलारी।

બાફ (सं.) बाष्प, बफारा, गर्म जल आदिका धुआं, घाम, पसीना।

બાફ દેવો-આપવો-છુટવો-નિકળવો (क्रि.) उबलना, खौलना।

બાફલેવો (क्रि.) बफारा लेना, बाष्प स्नान करना (पसीने के लिये)

બાફણું (वि.) रांधने का, उबालने का, कच्चापक्का रंधा हुवा, ढोरों के लिये उबाली हुई खुराक।

બાફવું (क्रि.) उबालना, औटाना, राधना, उकालना।

બાબ (सं.) प्रकरण, परिच्छेद, अध्याय, भाग, कांड, सर्ग, विषय काम, आभूषण, नग, कलम।

બાબત (सं.) विषय, प्रकरण, कारण, हकीकत, बनावट, तफसील, विवरण, विगत। (क्रि वि.) लिये, वास्ते, विषयमें, सम्बन्धी, कारण से।

બાબતવાર (वि.) क्रमशः विवरण युक्त, मयतफसील, ब्यौरेवार।

બાબતસર (सं.) अनुसार, योग्य।

બાબતનું (वि.) सम्बन्धी, विषयक।

બાબતી (सं.) कमीशन, फी कर लगान। खेत में अन्न, निकलने के बाद ब्राह्मण, भाट, नाई इत्यादि को दिया जाने वाला हक दलाली।

બાબદ (सं.) देखो બાબત।

બાબરાં (सं.) मस्तक के छोटे छोटे बिखरे हुए बाल, छोटे बिखरे केश।

બાબરિયાં-યો (वि.) बिखरे बालों वाला, जटिल (सं.) भक्त, योगी।

બાબરી (सं.) छोटे छोटे बिखरे हुए बाल टोपीके आसपासकी झालर।

બાબસ્તા (वि.) सगे संबंधी, नातेदार, रिश्तेदार। द्रव्य।

બાબા (सं.) एक प्रकारकी भील जाति, अंग्रेजोंके लड़कों के लिये प्यारका शब्द, रोटियां, ताता।

બાબા સાઈ (सं.) एक प्रकारका बड़ोदा राज्यका चलनी रुपया।

બાઞુ (सं.) संन्यासी, बैरागी बाबा, (बालक को समझाने के लिये) बंगाली लोगोंकी एक जाति विशेष, बंगाली ।

બાબે (क्रि वि.) बाबत, विषे, सम्बंधी कारण से, वास्ते, लिये ।

બાબો (सं.) ताता, रोटी ।

બામ (सं.) एक प्रकारकी वेलि, दोनों हाथ तथा छाती इतनी लम्बाईका परिणाम, फेदम, बाम, सर्पाकार मछली ।

બામણ (सं.) ब्राह्मण, विप्र, द्विज भूसुर, अग्रजन्मा, माहेसुर ।

બામણી (सं.) दो मुखका साप, दुमुहाँ, सांपकी बामनी, एक प्रकारका चार पैर वाला छिपकली के बराबर सांप के रंगका और उसी प्रकार मुड़कर चलने वाला जीव, ब्राह्मणी ।

બામદાદ (सं.) भोर, भिनुसारा, प्रभात, सवेरा, सुबह, तड़का, पौफटना, ऊषा, प्रत्यूष काल ।

બામલા (सं.) काख में होने वाला एक प्रकारका रोग, बगल मे होने वाली गांठ ।

બામળ (सं.) पूर्ववत् ।

બામળાઈ-ળી (सं.) पूर्ववत् ।

બામાશી (सं.) डाकिनी, डाकिन, डायन, चुड़ैल, प्रेतिनी, जन्तर मंतर जानने वाली स्त्री, योगिनी ।

બામિયાં (सं.) एक प्रकारकी तरकारी शाक विशेष ।

બાયડી (सं.) स्त्री, औरत, विवाहिता स्त्री, बहू, पत्नी ।

બાયલાપણું (सं.) डरपोकापना, कायरता, भीरुता ।

બાયલો (सं.) स्त्रियोंकी बातों से प्रसन्न होने वाला, स्त्रियों के झुंडमें बैठकर उनकी बातों में आनन्द मानने वाला, स्त्रीवश जिसको कुछ निजकी स्त्री के सामने बात न चलती हो, नामर्द, वीर्यहीन, नपुंसक, हिजड़ा कायर, डरपोक, शक्तिहीन ।

બાયું (सं.) तबलेमेंका एक तबला जिसको आटा लगाया जाता है, बाईं ओर रख कर बजने वाला तबला, डिग्गा, नर तबला ।

બાર (सं.) तोप या बंदूक का फायर, तड़ाका, आनन्द मजा, छोड़, त्याग, खोरु, द्वार, आंगन, चौक, (वि.) द्वादश, बारह, संख्या विशेष १२, सारा, सर्व, समस्त [आनन्द, मजा, धक्का ।

બારપાડશાલી (सं.) [illegible]

બારબાપની રેજ (सं). सबही हुकम करने बाले किंतु काम करने बाला कोई भी नहो तब यह वाक्य प्रयोग किया जाता है।

બારમણની બાજરી (वि.) निश्चिंतता, निरांत, सुख चैन, आनंद मजा। [छोटा हूं।

બાર બરસનો બેઠો છું = अभी

બાર વાગી જવા (क्रि.) आफत आना, दुखका अंत होना।

બારનું ચોથ = कुछनहीं, नकुछ।

બારમો ચંદ્રમા (सं.) विरुद्धता, अनबन।

બારે દરવાજા ખુલ્લા છે = जिसे जिस, ओर जाना हो वह जा सकता है, चाहे जहां जावो, जाने की इजाजत है, यह दही सा सधा रास्ता पडा है, स्वतंत्रता है।

બારે દહાડાને બત્રીસ ઘડી = सदैव, सदा, रातदिन, अहर्निशि, निरंतर।

બારે બાગેબા મોકળી = सब रस्ते खुले हुए, किसी भी रास्ते से जानेकी आज्ञा।

બારે મહીનાને તેરે કાળ-સારે बर्ष-भर, हमेशा, सदैव, निरन्तर।

બારે મેહ બરસવા (क्रि.) सब प्रकार की ऋद्धि सिद्धि प्राप्त होना (शास्त्रों में बारह प्रकारके मेघ कहे हैं।)

બાર કસ (सं.) बड़ जहाज, बड़ा भारी, समान लादने का जहाज, व्यापारी जलयान, भार लादने की गाडी।

બારખલી-ળી (वि.) माफी जमीन बिना लगानकी भूमि।

બારગીર (सं.) घोडे का सवार घुड़ चढा, सैनिक, अश्वारोही सवार।

બારડી (सं.) घी निकालने के लिये खई में लगने वाली रस्सी, नेती, नेता।

બારણિયો (सं.) सुनारके यहांका कूड़ा कचरा खरीद कर ले जाने वाला। धूल धोवा।

બારણું (सं.) द्वार, दरवाजा, कपाट, बारना, मार्ग, फाटक, आंगन,।

બારણાં તોડી પાડવાં (क्रि.) पीछे लगकर उगाही करना, सख्त तकाजा करना।

બારણે તાળાં દેવાવાં (क्रि.) सत्यानाश जाना, निस्सन्तान होना, निर्वंश होना, मटियामेट होना।

બારણે દીવો રહેવો (क्रि.) वंश चलना, सतान होना, पुत्र होना।

બારણે બેસવું (क्रि.) तकाजा करना, जबरन् मांगना, लांघना।

બારણે હાથી ઝુલવા (क्रि) अत्यंत धनवान होना, खूब ठाठ बाठ होना।

બારદાન (सं.) वह पेटा अथवा थैला जिसमें माल भराहो, बांधने की वेष्ठन, वेठन, बंधनका वजन, जितना वजन गाड़ीमें भरा हों, वृषण, अंडकोष, लिंगके नीचे के अंडे, आंड, पलड़े, रुईकी गांठका लपेटन बन्धन इत्यादि, लपेटन।

બારદાન ભારે થવાં (क्रि.) मिजाज बढना, गर्व होना, अहंकार होना।

બારનિસ (सं.) हुंडीपत्री, कागज हुक्म इत्यादि की नकल हुए बाद अथवा किताबमें चढाये बाद निशानी या नम्बर करने वाला सरकारी मनुष्य।

બારનિસી (सं.) आवक जावक फाइल, हुंडी पत्री कागज इत्यादि को पुस्तकमें लिखने मोहर करने तथा निशानी इत्यादि करनेका कार्य।

બારમું (सं.) मृतक का बारहवां दिन, द्वादशा, मृत्युके पश्चात् १२ वें दिन की क्रियाकर्म, (वि.) बारहवां।

બારવટિયો (सं.) बदला लेने वाला, सरकार फरियाद न सुने अथवा अन्याय करे उसके कारण दुखी होकर गांवों में बखेड़ा करने वाला तथा लूटने वाला।

બારવટું (सं.) बदला, वैरनसाफी, बैर, सज़ा, दंड, बखेडा लूट।

બારવાસિયો (सं.) भंगी, मेहतर, डोम, श्वपच, चाण्डाल, ढेड़।

બારવું (क्रि.) बुहारना, झाड़ना, झाडू निकालना, संभालना, इकट्ठा करना, पाखाना झाड़ना, कचरा हटाना।

બારસ નાંખવી (क्रि.) मरे हुए को श्रावणी के दिन सम्बन्धियों द्वारा दिया हुवा।

બારસો બેસવી (क्रि.) मृतक का शोक प्रदर्शित करना, मातम मनाना।

બારશાખ-સાખ (सं.) द्वार की चौखट, दर्वाजे का चौखटा, चौखट।

બારસેં-સેં (सं.) बारह बार सौ, १२००, एक हजार दो सौ।

બાર (वि.) बारह, १२, द्वादश, दस और दो, सख्याविशेष।

બારાખડી-ક્ષરી (सं.) द्वादश मात्राओं का व्यंजनों के साथ मिलान, पद, बारहखड़ी, द्वादशाक्षरी।

બારિક (वि.) सूक्ष्म, पतला, झीना, बहुत सावधानी से करने का (काम), नाजुक, कोमल, हलका, तीक्ष्ण, तीव्र।

બારીક નજરે (क्रि. वि.) गहरी निगाहसे, संपूर्ण रीतिसे।

બારીકપણે (क्रि. वि.) सूक्ष्म रीतिसे।

બારીકાઇ-ઈ (वि.) सुकुमारता, नाजुकपन, सूक्ष्मता, पेच, चातुरी।

બારીસ્ટર (सं.) कानून शास्त्र में परीक्षोत्तीर्ण प्रथम वर्ग का प्रमाण पत्र प्राप्त वकील. उच्च कोटि का वकील बालिस्टर।

બારી (सं,) खिड़की, छोटाद्वार, वातायन, गवाक्ष, उजाल दान।

બારું (सं.) द्वार, दर्वाजा, फाटक, रास्ता, आने जाने की युक्ति, जहां नदी समुद्र से मिलती हो वह स्थान। खाड़ी, (वि.) स्वरहीन, बेसुरा।

બારૂદ (सं.) बरूद, दारू, अग्नि से भभकने वाला चूर्ण।

બારૂદદાન (सं.) बारूद भरने का पात्र, बारूद भरने का सींग।

બારું રાખવું (क्रि.) स्थान करना, जगह करना।

બારેમાસ (क्रि. वि.) हमेशा, निरन्तर, सदा, वर्षभर, सदैव, स्थायी।

બારેવાટ (क्रि. वि.) बिखरा हुवा इधर उधर पड़ा हुवा, उथल पुथल, निकाम, निष्फल, बारह रास्ते।

બારેવાટ કરવું (क्रि.) इधर उधर उड़ा देना, फैला रखना, मुक्त हस्त हो कर खर्चना,

બારેવાટ થઇ જવું (क्रि.) उड़ जाना, खप जाना, बिगड़ जाना, नष्ट हो जाना।

બારૈયો (सं.) बारह हाथ लम्बा लठ्ठा (गाड़ीमें), जिसे कोई संभालने वाला न हो, जो बाहिर लुढकता फिरता हो, जिसने

कुल्याईसे संग्रह किया हो, कचरा कूडा झाडने वाला, भंगी मेहतर।

બારોટ-ડ (वि.) भाटकी एक जाति विशेष; कवि, भाट, कत्थक, प्रशंसक।

બારોત્રા (सं.) किसी भी रकम पर बारह टके व्याज, व्याजकी रकमका १२वां भाग, सूदका बारहवां हिस्सा।

બારોબાર (क्रि. वि.) सीधा, परभारा, घर गये बिना, सूधा योंकायों।

બાલદી (सं.) पानी निकालने का चमड़े का डोल, बालटी, एक प्रकारका चमड़ा।

બાલમ (सं.) प्रेमी, आशिक, आसक्त, वर, पति, धनी, मालिक।

બાલમપેચ (सं.) पगडी का बांका पेच अलबेला दिखानेके लिये।

બાલાજી (सं.) श्री कृष्ण चंद्रजी का बाल कालका नाम। बालकृष्ण।

બાલાતંગ (सं.) जीनको खैंचकर बांधने का तङ्ग। [बरदाश्त।

બાલાશ (सं.) संभाल, रक्षण,

બાલાશી-સી (सं.) पूर्ववत।

બાલેબાલ (क्रि. वि.) रोम रोम में, रुएं रुएंमें, बाल बालमें, बेहद, बहुत ही।

બાલેશરી (सं) एक प्रकारका फूल कापेड़, वृक्ष विशेष। [खिड़ु।

બાલુડો (सं.) बालक, बच्चा,

બાલ્યાવસ્થા (सं.) प्रथमावस्था, लड़कपन, बाल्यकाल, शैशवकाल लड़काई, बचपन, बालक दशा।

બાલ્લુ (सं.) चांदीकी वह वस्तु जिस पर सोने का मुलम्मा किया हुवा हो (कि.) कृत्रिम, खोटा, नकली, बनावटी।

બાવચી (सं.) एक प्रकारकी वनस्पति, वनतुलसी, बावची।

બાવટો (सं.) चिन्ह, ध्वजा, झंडा, एक प्रकारका बाजरे समान धान्य।

બાવડું (सं.) स्कंध और कुहनी के बीचका हाथका भाग। [५२।

બાવન (सं.) पचास और दो,

બાવનવીર (सं.) सबको सम्हाले ऐसा मनुष्य, महा बली, बहादुर। [की सुगन्ध, चन्दन विशेष।

બાવનાચંદન (सं.) एक प्रकार

બાવની (वि.) बावन संख्याका समुदाय युक्त। बावनका।

બાવરું (वि.) व्याकुल, घबराया हुवा, व्यथित, आकुल, जिसे कुछ भी न सूझता हो ।

બાવરું કરવુ (क्रि.) थकाना, व्याकुल करना, व्यथित करना ।

બાવલું (सं.) धातु अथवा मिट्टी की पुतली, मूर्ति, प्रतिमा. गुड्डी, गुडिया । [बंबूलोंका बन ।

બાવળ-ળિયો (सं.) बंबुलका वृक्ष

બાવળી (सं.) पूर्ववत् ।

બાવા (सं.) पिताबापभाई योगी (बहु वचन)

બાવી (सं.) जोगिन, बाबन, तपस्विनी (वि.) बाईस, २२, बीस और दो । [संख्या विशेष ।

બાવીસ (वि.) बाईस, २२,

બાવું (सं.) मकड़ी का जाला ।

બાવો (सं.) साधू. संत, योगी, बाबा, वैरागी, गृहत्यागी, तपस्वी पिता, बाप, जनक ।

બાહકળ (वि.) बेमर्याद, लम्पट, दुराचारी, बदकार, खुल्ला हुवा, निरंकुश, भटका हुवा, भूलाहुवा ।

બાસ (सं.) गन्ध, महंत, बो, बू, दुर्गन्ध, बदबो ।

બાસટી (सं.) देखो બાંક

બાસઠ-સેઠ (वि.) संख्या विशेष साठ ओर दो, ६२, बासठ ।

બાસ્તો (सं.) एक प्रकार का मोटा नादरपाट के समान कपड़ा । जिस समय विदेशी वस्त्रों का यहां प्रचार नहीं था तब इसी कपड़े के अंगगरखे इत्यादि बनते थे और यह "अहमदाबादी बास्तो" कहलाता था ।

બાસુદી (सं.) मसालेदार उबाल कर गाढा किया हुवा दूध, रबड़ी ।

બાસેટ-ઠ (वि.) देखो બાસઠ ।

બાહાર (सं.) त्याग, छोड़ देखो બહાર । [दुर्ग विशेष ।

બાહારકોટ (सं.) बाहेरी किला

બાહારગામ (सं.) दूसरा गांव, अन्य देशीय नगर ।

બાહારથી (क्रि. वि.) बाहिरसे ।

બહારનાર (सं.) मेहतर, भंगी, झाड़ लगाने वाला ।

બાહારનું (वि.) बाहिरी, ऊपरी, विदेशी ।[तरफ, बाहिरकी बाजू ।

બાહારનું પાસું (सं.) बाहिरकी

બહારવટિયો (सं.) लुटेरा, डाकू, चोर ।

બાહારવું (क्रि.) बुहारना, झाड़ना झाडू लगाना, साफ करना ।

બાહાવળું (सं.) देखो બાવળું ।

બાંહી (सं.) बांह, अस्तीन, भुजा, बाजु ।

બાંહીધર (सं.) मददगार, सहायक, आश्रय दाता, धीरज देने वाला । [आश्रय, सहारा, योग ।

બાંહીદારી (सं) सहायता, मदद,

બાંહીધરી (सं.) जमानत जिम्मा, प्रतिभू, गारण्टी ।

બાંહીબળ (सं.) भुज बल, बाहु, बल, शक्ति हाथोंकी ताकत ।

બાહુક (सं.) बेडौल बद शकल मनुष्य, समस्त अंगमें भस्म लगाये तथा आंखोंकी भौंहें पीली बनाये हुए औघड़ योगी । मूर्ख, मूढ, बन्दर, बानर, ऋतुपर्ण राजा के यहां साईस बनकर रहा हुवा राजा नल ।

બાહુલું (सं.) देखो બાવલું ।

બાહેર (क्रि. वि.) बाहर, भीतर नहीं, अन्दर नहीं, सीमा के परली ओर ।

બાહોશ (वि.) होशियार, चालाक चतुर, सावधान, सावचेत ।

બાળ (सं.) बालक, बच्चा, शिशु, छोटा बालक छोटा छोकरा ।

બાળકિ (सं.) बालिका, बच्ची, छोटी लड़की, बाला ।

બાળકુંવારી (सं.) अविवाहिता, बे व्याही लड़की, कन्या ।

બાળકો (सं.) लड़का, छोकरा ।

બાળગોપાળ (सं.) कुटुम्ब के, सब लोग छोटे बड़े घरके लोग ।

બાળપ (सं.) दया, कृपा, दृष्टि मिहरबानी, अनुकम्पा ।

બાળપણું-ણુ (वि.) बचपन, छुटपन, शैशवावस्था, बालवय ।

બાળદશાનું-પણાનું (क्रि. वि.) बचपन का, छुटपनका, शैशव ।

બાળબચ્ચાં (सं.) कुटुम्ब, कबीला घर गृहस्थ, खटला, बालबच्चे ।

બાળબોધ (सं.) बालकों को बोध प्रद, संस्कृत अथवा देव नागरी लिपि ।

બાળબ્રહ્મચારી (सं.) आजन्म ब्रह्मचारी, जिस पुरुष का विवाह नहीं हुवा होवा हो, जिस पुरुषने स्त्री प्रसंग न किया हो, जिसने जन्मसे अन्त तक वीर्य न गिराया हो ।

બાળભાષા (सं.) बालकों की बोली, समझमें न आवे ऐसी भाषा, तोतली वाणी, मातृ भाषा, मागधी भाषा, संस्कृत से अपभ्रंश होकर बनी हुई भाषा ।

બાળવું (क्रि.) जलाना, दग्ध करना, दहना, सुलगाना, लगाना, चिताना, भभकाना, खूब गर्म करना, पकाना, दाजना, डाम देना, सताना, खिझाना, खिझाना, दुख देना, જીવ બાળવો दुखी होना, दिल जलाना, कृपालु होना। હાથ– બાળવા, राँधना, स्वयम् करना।

બાળા (सं.) लड़की, कन्या, छोकरी, बालिका, १६ वर्षसे कम उम्रकी स्त्री।

બાળાપણ (सं.) बचपन, बाल्यकाल, अज्ञानता, कौमार्य, बाल्य, कन्याकाल।

બાળાબંધ (सं.) बालकके सिरपर बाँधनेका साफा या फेंटा।

બાળારાજા (सं.) वह बालक जो राजाकी समान माना जाता हो, जवान राजा, छोटी उम्रका राजा।

બાળી (सं.) पुत्री अथवा लड़की के लिये लाड़में प्रयोग होता है।

બાળિશ (वि.) मूर्ख, शठ, बुद्धिहीन। [अज्ञान।

બાળુંભોળું (वि.) बालक समान,

બાળુવાં (सं.) लड़के (कविताम़ें)

બાળેરૂં (वि.) जवान कमउम्र, युवक।

બાળોઢા (सं.) बचपनमें विवाही हुई लड़की, विवाहिता कन्या।

બિંદડી (सं.) लपेटनमें लपेट कर सीयी हुई छोटी गठरी, पार्सल।

બિહ્ડ (वि.) कठिन, कठोर, भयानक, भयङ्कर, खौफ़ज़द। [दिल।

બિકણ (सं.) डरपोक, भीरु, बुज़

બિગડવું (क्रि.) बिगड़ना, खराब होना, नाश होना, बर्बाद होना, नष्ट होना पायमाल होना, बुरा होना। [लड़ाई, झगड़ा हानि, क्षति।

બિગાડ (वि.) विरोध, तोड़, भंग,

બિગાનું (वि.) अद्भुत, अजीब, विचित्र, गैर, परदेशी, अजनबी, अन्य देशी।

બિગારી (सं.) बेगारी, मजदूर, मुफ्त का मज़दूर, सेंतमेंत का मजदूर, जबरदस्ती मजदूरी कराकर पैसे या उसका मेहनताना न देना, और देना तो केवल नाम मात्र का।

બિચવો (सं.) एक प्रकार की तलवार।

બિચારૂં (वि.) गरीब, दीन, दुर्बल, हीन, बेचारा, बेबश, रंक, बापड़ा, दुखी, मृदुभाषी, निराश्रय, दरिद्र, कंगाल।

બિછુવા (सं.) एक प्रकार का आभूषण स्त्री जिसे पैरों की अंगुलियों मे पहिनती है, बीछूड़ी, नूपुर, चुटकी । अनवट ।

બિછાનું (सं.) बिछौना, बिस्तर, चटाई, साथरी, बैठने सोने के लिये वस्त्रादि ।

બિછાયત (सं) बिछाई हुई जाजम, सतरंजी वगैर, बिछौना, बिछी हुई वस्तु ।

બિછાવવું (क्रि.) फैलाना, बिछाना, बिछौना करना, बिस्तर लगाना ।

બિજોરું (सं.) एक प्रकार का फल, फलविशेष, तुरञ्ज ।

બિડવું (क्रि.) बन्द करना, अटकना, पेक करना, सीलमुहर करना। सिकोड़ना, घड़ी करना मुहर करना।

બિડાવવું (क्रि.) बन्द कर के रवाना करना ।

બિન (क्रि. वि.) बिना, बगैर (सं) पुत्र, एक प्रकारका स्वरवाद्य, बीन,

બિનડી (सं.) दोनो भौंहों के बीच में की हुई सिन्दूरकी बिन्दी, टीको, बिन्दी ।

બિનગો (सं.) धातु का छोटा पात्र।

બિનરોજગાર-રી (वि.) बेकाम-धंधे, टलुवा, निठल्ला ।

બના (क्रि. वि.) बिना, बगैर ।

બિના (सं.) हकीकत, वर्णन, क्रमशः, बाबत, विवरण, तफसील, विषय, सार ।

બિંદ (सं.) बिन्दु, बूंद, टपका, दाग, चिन्ह, प्वाइन्ट ।

બિંદી (सं.) देखो બિનડી.

બિંદુનો સિંધુ કરવો (क्रि.) अतिशयोक्ति करना, रजका गज करना । बात का बतक्कड़ बनाना, पादकोपदमसिंह करना, राई को पहाड़ कर देना । हिस्सा ।

બિની (सं.) फौज का आगे का

બિનીવાળો (सं.) सेना के खाने पीने की खबर रखनेवाला ऊपरी।

બિભાસ (सं.) प्रातःकाल गाने का एक राग, राग भेद ।

બિભૂતિ-તી (सं.) भस्म, पवित्र भस्म, राख, ऐश्वर्य, धन ।

બિયાન (सं) बयान, वर्णन, ज़िक्र ।

બિયાબારું (सं.) द्वेष, अनबन, वैर ।

બિયાબાન (सं.) सुनसान, निर्जन, उजाड़, जंगल, वीरान ।

બિયામણું (वि.) भयानक, खौफनाक, विकराल, डरावना।

બિરુદ (सं) प्रण, प्रतिज्ञा, टेक, बचन, वादा, पण।

બિરુદાલ (वि.) टेकवाला, प्रणवाला, सत्यप्रतिज्ञ, वचन पालनेवाला। [यशोवर्णन, प्रसंशा, तारीफ।

બિરુદાવલી (सं.) वर्णन, बखान

બિરમાલા-મોલા (स.) एक प्रकार की जंगली वनस्पति।

બિરાજવું (क्रि) विराजना, शोभना सुन्दर मालूम होना, सुखभोग करना सुखपूर्वक रहना, आना, पधारना, मानपूर्वक बैठना।

બિરાદર (सं.) भाई, बन्धु।

બિરાદરી (स.) मित्रमंडली, भाईचारा, जतिमंडली, स्वजाति।

બિરાનું (वि.) दूसरेका, पराया, अन्यका।

બિલ (सं.) छिद्र, माँद, बाँमी, सेंध, गुफा, कन्दरा, छेद, दरार, बांबी, सूराख।

બિલકુલ (क्रि. वि) सब, समस्त, सारा, ज़रा ज़रा, समूचा, सगला, तमाम।

બિલ્લવર (वि.) बिलौरी काचका।

બિલંની (सं.) एक जातिका फल।

બિલાડી (सं.) बिल्ली, बिलाई, मार्जार, विडाल, मांजार, मिनकी, एक प्रकारका चौपगा पशु, लोहे का यंत्र जिसे कुए मे रस्सीद्वारा डाल कर पात्र इत्यादि निकाले जाते हैं, लोहे का कांटा जहाज़ को स्थिर रखने तथा ठहराने का लंगर।

બિલાડાં થવાં (क्रि.) आंखों में बहुत काजल लगाने से बिल्ली की सी सूरत दिखाई पड़ना।

બિલાડી જેવી આંખ (सं.) भूरी आंख, मांजरी आंख, अंग्रेजों की सी आंख।

બિલાડીનું બચોળિયું बिल्ली जिस प्रकार अपने बच्चे के मुंह में उठाये फिरती है उसी भांति किसी वस्तु को अपने साथ साथ लिये फिरने वाला।

બિલાડું તાણવું-ખેંચવું (क्रि.) बिना पढे अथवा बिना समझे बिल्ली की पूंछ जैसे गटर पटर जल्दी जल्दी हस्ताक्षर करना।

બિલાડીનો ટોપ (सं.) कुत्ते के कान समान बनस्पति, जो वर्षा ऋतु में उत्पन्न होती है और एकाध दिन में सूख जाती है, छत्रक, कूकरमूता, सांपकी छतरी।

બિલાડુ (सं.) बिल्ली अथवा बिल्ला ।

બિલાડો (सं.) बिलाव, बिटाल बिल्ला, बिलव, चालाकलुच्चाव्यक्ति।

બિલાવલ (सं.) बिलावल नामक राग, प्रातःकालीन एक राग ।

બિલિયાન (सं.) काटकर जिसे ठीक किया हो ऐसा हीरा ।

બિલોર (सं.) जिस काच में साफ स्वच्छ आरपार दीखे, बिल्लौरी काच ।

બિલ્લસ (सं.) बेत, वेत, मिहराव

બિલ્લા (सं.) तमगा, पदसूचक छाती पर लगनेवाला चिन्ह विशेष,

બિલ્લું (सं.) एक ईंटके आसार की दीवार, भीड़, दोस्त, सहायक, निपुण, सयाना, चालाक, धूर्त । ठग, लुच्चा, साथी, जोड़ीदार ।

બિલ્લો (सं.) देखो બિલાડો.

બિવડાવવું-રાવવું-વાડવું (वि.) डराना, चौंकाना, भयभीत करना।

બિસાત-દ (सं.) पूंजी, दौलत, कीमत, मूल्य, मूलधन ।

બિસ્કોટ (सं.) बिस्कुट, एक प्रकार की पाश्चात्य ढंग की मिठाई

બિસની (सं.) गर्वी, घमण्डी, लम्पट, भ्रष्टाचारी, व्यसनी, पिअक्कड़ ।

બિસતરો (सं.) बिछौना बिस्तर।

બિસ્તરો (सं.) फर्श, बिछौना, साथरी ।

બિહામણું-ણો (वि.) डरावना, खौफ जद, भयङ्कर, भयानक ।

બિહિક (सं.) भय, डर, खौफ ।

બિહિકણુ (सं.) डरपोक, भीरु, बुज दिल।

બિહિકણુપણું (सं.) भीरुता,कायरता, डरपोकापन, बुजदिली ।

બિહિને (क्रि. वि.) भयानकतासे,

બિહિવડાવવું (क्रि.) डराना, चौंकाना, भय देना, खौफ पैदा करना ।

બિહિવડાવેલું (वि.) भयभीत, डरा हुवा, चकित, भीत ।

બિહિવું (क्रि.) डरना, भयातुर होना ।

બી (सं.) बीज, बीजा, मूल, जड़, मुख्यपदार्थ, कारण ।

બી ઉગી નીકળવું (क्रि.) सब प्रकारसे लाभ दायक होना, मिहनत सफल होना, जय होना, सफलता पाना ।

બી ભોડવું (क्रि.) जड़ उखाड़ फेंकना, नाश करना, अन्त करना,

બી રોપવું (क्रि.) नींव डालना, पैर रसाना, प्रवेश होना, बीजबोना

બી (क्रि. वि.) भी, तौभी, अपि

બીઆમું (वि.) डरावना, भयङ्कर.

બીઓ (सं.) एक प्रकारका वृक्ष,

બીક (सं.) डर, भय, खौफ, दहसत।

બીકણ (वि.) डरावन, बे हिम्मत का, साहसहीन, भय, डरपोक।

બીકણ બીલાડી (सं.) डरपोक, बिल्ली के समान डरने वाला।

બીકણપણું (सं.) डरपोकापन, भीरुता कायरता, बुजदिली।

બીજ (सं.) द्वितिया, दोयज, चाँद्र मासके प्रत्येक पक्षकी दूसरी तिथि, वीर्य, धातु, रेत, ओज, मणि, मदन सार, बीज बीजा, लेसदार श्वेत रंग की विशेष प्रकार की गंध वाली वस्तु जो लिंगेंद्रिय से निकलती है और जिससे गर्भ स्थित होता है, जड़ मूल, कारण, पाया, नींव, भावार्थ, मतलब, सार, अक्षर तथा चिन्हें ने होने वाला गणित, मंत्र सिद्धि के हेतु सांकेतिक वर्ण, औलाद, सन्तान, संतति, अक्षर।

બીજક (सं.) वस्तुओं की सूची, चेक, लेबल, टिकट चालान, लिस्ट, बिल।

બીજ માર્ગ (सं.) एक प्रकारका धर्म। [अनुगामी।

બીજ માર્ગી (वि.) बीज मार्गका

બીજવર (सं.) एक स्त्री मरजाने-पर जिसका दूसरा विवाह हुवा हो वह पुरुष, दूजवर, पुनर्विवाहित पुरुष।

બીજી નકલ (सं.) प्रतिलिपि, दूसरी नकल, दूसरी प्रति, कापी।

બીજીવાર (क्रि. वि.) पुनर्वार, दुबारा, फिरसे, दूसरीबेर, पुनः।

બીજું (वि.) दूसरा, द्वितीय, पृथक जातिका, दूजा, दुसरा, । और, फिर।

બીટ (सं) पशुपक्षीकामल, जानवरों का गू, विष्ठा, बीठ,

બીડ (सं) घासका जंगल, चरागाह तृण, भूमि, कच्ची धातु।

બીડી (सं.) कत्था चूना सुपारी इत्यादि रखकर पुड़िया बनाया हुवा पान, पत्तेमें तम्बाकू रखकर लपेटी हुई शंकुके आकारकी बत्ती

चुरुट, सिगरेट, पानबीड़ी, ताम्बूलक बीड़ा ।

બીડું (सं.) पान बीड़ा, बड़ी पानकी बीड़ी ।

બીડું ઝડપવું (क्रि.) बीड़ा उठाना, कोई कठिन काम करनेकी प्रतिज्ञा करना ।

બીડો (सं.) बड़ा लिफ़ाफ़ा, कव्हर।

બીધું નું (क्रि.) डरा, चौंका,

બીન (सं) बीणा, एक प्रकारका तारवाला बाजा जिसके दोनों ओर तूँबे होते हैं । सितारकी शकलका वाद्य ।

બીના (सं.) बनाव, बना, हुवा, हकीकत, बात, वर्णन, विषय, बाबत।

બીબાં (सं.) धातुके अक्षर, टाइप, शीशेके अक्षर, छापेके अक्षर केढवा

બીબા ગોઠવવા (क्रि.) अक्षर, जोडना, कम्पोज करना, हुरुफ़ जोडना,

બીબી (सं.) गृहस्थ मुसलमान स्त्री ।

બીબું (सं.) धातुका अक्षर, टाइप, आकृत, सूरत, सांचा, ठप्पा, लुगड़े, वस्त्र इत्यादि छापनेका ठप्पा.

બીજું (सं.) बीज, बीआ, पेड़के फल फूलमें से निकला हुवा बीज पदार्थ जो उसी प्रकारके वृक्षोत्पादनका कारण होता है ।

બીરમંડી (सं.) एक प्रकारकी वनस्पतिकी जड़, ऊंट कटारीकी जड़ ।

બીલ (सं.) बिल, दर, सूराख, छिद्र, बांमी, बिल्ववृक्ष, बिल सूची, याद, रसीद, पहुँच ।

બીલી (सं.) बिल्व, बील, बील पत्र, इस, पेड़के पत्ते, महादेवजी को चडाते हैं ।

બીલું (सं.) बिल्व फल, बील वृक्षका फल, गूमड़ा, फोड़ा, गांठ।

બીવું (क्रि) डरना, डर लगना, भय खाना, चौंकना, घबराना, हिम्मत न करना, कायर होना, व्याकुल होना ।

બુંદ (सं.) ऐसा कुवा जो बे काम हो ।

બુંદું (सं.) किसी पात्रका पेंदी, नौकाका पेंदा ।

બુધી (सं.) बुद्धिहीन, मंदबुद्धि, मूर्ख. आलसी और ऐदी ।

બુધું (सं.) पात्रका पेंदा, बर्तनकी वह काली पेंदी जो आगपर रखनेसे काली हो गई हो, मोटा डंडा सोंटा, कद ।

બુંધીયો (सं.) आकस्मिक भयका, ढोल।

બુકણી (सं.) चूर्ण, भूसी, धूळ।

બુકડી (सं.) स्त्रियोंके कानमें पहिननेका एक प्रकारका आभूषण।

બુકડો (सं.) फांका, फंका, फक्का।

બુકવું (क्रि.) फांकना, फंका लगाना गपफा लगाना, बूकना।

બુકાની (सं.) मस्तकपर बांधनेका एक कपड़ेका टुकड़ा जो डाढी और गालपर भी रहता है, जाड़िया।

બુકો (सं.) ठांसा, फांसा, मुहमें समा सेक उतना गपफा।

બુગણુ (सं.) गाड़ीमें अन्न भरतेस मय अन्न न बिखरनेके लिये बिछा याहुवा मोटा कपड़ा पाल, चादर।

બુચ (सं.) देखो બુચ डाटा, ढकन काग, कार्क, रोध।

બુચકો (सं.) गुच्छा, झब्ब मुट्ठीभर।

બુચિયો (वि.) बूचा, बेकान, कानरहित, (सं.) नकटा, चिपटानाक।

બુચો કારભાર (सं.) बुरा धन्धा, ऐसा रोजगार जिसमें लाभ न हो।

બુજ (सं.) देखो બૂજ।

બુજરગ (वि.) बृद्ध, बुजुर्ग बूढा, पूर्वज, अग्रज, वयोवृद्ध, माननीय।

બુજવું (क्रि.) जानना, समझना, कदर करना, पहिचानना चिन्हना।

બુઝવવું (क्रि.) बुझाना, शांत करना, ठंडा करना, कम करना घटाना।

બુઝાવું (क्रि.) बुझना, मन्द होना कम होना, शांत होना, ठंडा होना।

બુઝાવેલું (वि.) बुझा हुआ, शांत।

બુટ (सं.) देखो બુંટ।

બુટાક (वि.) रंगमें काली और मोटी ताजा लठ औरत।

બુટ્ટો (सं.) सज्जित पुष्प, तरंग, कल्पना, कपड़ेपर छपे हुए पुष्प।

બુટ્ટાચોર (सं.) छोटे दर्जेका चोर, मुट्टेचोर, कम कीमती वस्तुओं का चोर।

બુટ્ટાદાર-ટ્ટેદાર (सं.) फूलदार, बूटे वाला, फूलोंके काम से सुसज्जित।

બુટ્ટી (सं.) छोटा बूंटा, भांति, तरह, बूटी, बहुत गुणवाली वनस्पति, जड़ीबुटी, वह मनुष्य को प्रसन्न करे, भंग, भाया, भांग।

બુટ્ટી સુંઘવવી (क्रि.) अद्भुत गुण दिखा कर अपने अपने आधीन करना, वशमें करना।

બુટ્ટેદાર (वि.) देखो બુટ્ટાદાર।
બુટ્ટો (सं.) कपड़ेपर छापा हुवा चित्र, छींट (वस्त्र) बनावट में बनाया हुवा चित्र, युक्ति, कल्पना तरङ्ग।
બુઠ્ઠું (वि.) भौंठा, घिसा हुवा, कुठित, बे धारका, जंगली, मोटी बुद्धिका। (सं) मक्का का सिरा, भुट्टा।
બુઠ્ઠાપણું (सं) भोंठापन कुंठितता।
બુડ (सं.) बूढा और मोटा बन्दर, वृद्ध कपि, मोटा बन्दर।
બુડકી (सं.) डुपकी, डुबकी, गोता।
બુડકી મારનાર (सं) गोताखोर, कामचोर।
બુડકી મારવી (क्रि.) गोता लगाना, डुबकी मारना, मुंह छुपाना।
બુડકી મારી જવી (क्रि.) काम के समय बीचर्दसे ही भाग जाना, गायब होना, मुहंन दिखाना, पार बोलना, अदृश्य होना।
બુડતો પાયો (सं.) अधः पतन का आरंभ, तनज्जुली की शुरुआत झुकती कमान। [हुवा।
બુડતું (वि.) डूबता हुवा, बूड़ता
બુડથલ (वि.) बेवकूफ, मूर्ख, पशु, शठ।
બુડવું (क्रि.) डूबना बूड़ना, पानी में नीचे बैठना, अन्दर उतर जाना, नष्ट होना, बरबाद होना।
બુડાડવું (क्रि.) डुबाना, डबोना, खुदाना, कुतराना, नष्ट करना।
બુડિયાળ (वि.) मूर्ख, शठ, बेवकूफ।
બુડિયો (सं.) लंगूर, काले मुंह का बन्दर, बन्दरों की सेना नायक बूढा बन्दर समान मनुष्य।
બુડેલું (वि.) नष्ट, भ्रष्ट, डूबा हुवा।
બુઢાપણું (सं.) बुढ़ापा।
બુઢિયો (सं.) देखो બુડિયો।
બુઢી (सं.) बूढा, बूढी, बुढ़िया डोकरी। [ग्रस्त।
બુઢું (वि.) बूडा, डोकरा जरा-
બુઢો (सं.) पूर्ववत्
બુતકો (सं.) देखो બુટાક
બુતાન (सं.) बटन, गोदाम।
બુતપરસ્ત (सं.) मूर्तिपूजक, काष्ठ, पाषाण मृत्तिकादि की प्रतिमा बनाकर पूजने वाला मनुष्य।
બુતાનું (सं.) मैली फटी पगड़ी, तोहमत, झंझट, कष्ट।
બુતાનો (सं.) पूर्ववत्
બુતારો (सं.) काष्ठ, झुहारी।

બુદ્ધિબળ (सं.) शतरंज का खेल, शतरंज क्रीड़ा ।

બુદબુદો (सं.) बुदबुदा, पानी का बुलबुला, बबूला ।

બુધ (सं.) विद्वान, चतुर मनुष्य, आमिल, चतुर्थ ग्रह, सौम्य, बुधवार ।

બુધવારિયું (वि.) बुधवार का, बुधवार को प्रकट होने वाला समाचार पत्र ।

બુઘું (सं.) मोटा डंडा, सोंठा, लठ्ठ, जल कर काला हुवा बर्तन का पेंदा ।

બુન (सं.) बहिन, भगिनी ।

બુનિયાદ–દિ (वि.) खान्दान, कुलीन, कुल, जाति, तुख्म, माननीय ।

બુનિયાદી (सं.) खान्दानी, सुशीलता, सभ्यता, उच्चता, भला मनसी ।

બુંદ (वि.) बिन्दु, बूंद, टपका, काफी के दाने (जो चायकी भांति पीए जाते हैं ।

બુનસ (सं.) ऊन का मोटा कपड़ा। कम्बल, बनूस ।

બુબક (वि.) मूर्ख, बेवकूफ, शठ, जड़भरत, बुद्धि विवेक रहित ।

બુભુક્ષા (सं.) भूख, क्षुधा, इच्छा।

બુમ (सं.) कोलाहल, आवाज, ध्वनि, शोरगुल, होहल्ला, गूंज ।

બુમાટ–ટો (सं.) किसी एकाधी बात का हल्ला, गड़बड़, तूफान, गप्प, गपोड़ा, अफवाह, किम्बदन्ती ।

બુમાબુમ–બુમેબુમ (सं.) लगातार हल्ला, जहां तहां होहल्ला, हल्लमहल्ला ।

બુમાસ્હોર (सं.) पूर्ववत्

બુમ્બારવ (सं.) पूर्ववत्

બુરખો (सं.) सिरसे पैर तक जिस में बदन छुपा रहे ऐसा स्त्रियों के ओढने का वस्त्र, जिस में आंखों के आगे देखने के लिये जाली दार कपड़ा लगा होता है मुंह ढांकने की जाली ।

બુરજ–રૂજ (सं.) गुम्बज, तोप वगैरे छोड़नेके लिये किले के बाहर तरफ अथवा, मैदान में बनाया हुवा गोल पोला स्तूप, दीवार को गिरने से रोकने के लिये बनायी हुई रोक । [विशेष।

બુરદ (सं.) शतरंजका खेल

બુરનુસ (सं.) देखो બુન્નસ

બુરાડવું (क्रि.) देखो બુરાવવું

બુરાવું (क्रि.) पुरना, भर जाना, पूर्ण होना, पूर हो जाना ।

બુરહાલ (सं.) दुर्दशा, बुरी हालत।

બુરૂં (वि.) खराब, बुरा, दुष्ट, नीच, अधम निकम्मा, शक्कर का बूरा। [भव्य।

બુલંદ (वि.) ऊंचा, दीर्घ, बड़ा,

બુલાખ (सं.) बुलाक, दोनों नथनों के बीचमें पहिरने की मोती की बाली, दोनों नथनों के बीच का पड़दा। [पुट्ठे।

બુલું (सं.) गांड चूतड. कूल्हा,

બુલુંછટકી જવું (क्रि.) डर के मारे घबरा जाना, डर जाना, डर से दस्त लगना।

બુસટ-ડ (सं.) प्रथम गर्भावस्था में अगरणी नामक संस्कार के दिन गर्भिणी के गाल पर उस के देवर द्वारा दिया हुवा कुमकुम का तमाचा।

બુસટિયો-ડિયો (सं) सीमंतोन्नयन संस्कार के दिन स्त्री की गोदी में बैठ कर उस के गालों पर दोनों हाथों से कुमकुम मर्दन करने वाला मनुष्य, देवर। [करना।

બુહારવું (क्रि.) झाड़ना, साफ

બૂક (सं.) ग्रास, कौर, डुकमा, नफका,(ई)किताब, पोथी, पुस्तक

બૂકડો (सं.) पूर्ववत्।

બૂચ (सं.) काट, बन्धक, रोक, कार्ड, ताशके खेल में हारे हुए मनुष्यसे दूसरी बाजी खेलने के पूर्व पत्ते लेना और फिर उसे देना इत्यादि।

બૂચટ (वि.) मूर्ख, छोकरापन।

બૂજ (सं.) परीक्षा, समझ, कदर, गुणज्ञता, देखो બુજ।

બૂટ (सं.) कानका सिरा, कर्णेन्द्रिय का अवयव, अंग्रेजी ढंग का जूता।

બૂત (सं.) प्रतिमा, मूर्ति, तस्वीर।

બૂઠું (सं.) लट्ठ, सोंटा, मोटा डंडा।

બૂન (सं.) एक प्रकार के बीज, जिन्हें उबालकर लोग पीते हैं, काफी।

બૂમ (सं.) हांक, हल्ला, आवाज शब्द, शोर गुल, जोरकी ध्वनि, एक बात के लिये एक स्वरसे बहुत से मनुष्योंकी बोली, पुकार, फरियाद, नाराजी, अफवाह।

બૂમરાણ (सं.) पूर्ववत्।

બૂમેબો ઢોલ (सं.) आपत्ति के समय चेतावनी के लिये बजता हुवा ढोल।

બૂરૂં (सं) शुद्ध खांड, बूरा शकर (वि.) बुरा, दुष्ट, नीच, निकम्मा, खराब ।

બૂસું (वि.) जिसे किसी बात का शौक न हो, अरसिक, जो मजा न समझे । [खुरदरा ।

બૂસો (वि.) मूर्ख, भोंठा, बोथरा

બૂહો (सं.) मूर्ख, शठ, बेवकूफ ।

બેં (सं.) बकरी अथवा मेंढे का शब्द ।

બેં આની (सं.) दुअन्नी, दो आने का सिक्का, $\frac{1}{8}$ रुपया ।

બેંગી (सं.) डाकद्वारा भेजी हुई पुटलिया, पार्सल ।

બેંતાળાં (सं.) वृद्धावस्था आ जानेसे दृष्टि कम होना और नेत्रों पर उप नेत्र (चश्मा) लगना, ४२ वर्षसे अपरकी उम्र ।

બેંતાળીસ (वि.) बयालीस, चालीस और दो, ४२, संख्या विशेष । बकरे अथवा भेड़की बोली ।

બેંબેં (सं.) मिमियाहट, मेंमें,

બે (वि.) १+१, दो, द्वि, उभय ।

બે આંગળ ચઢે એવું (क्रि. वि) जो मदमें ज्यादा हो । जो बढे सा बढे ।

બે આંગળ ભરીને કાપી લઇશ = नाक काटलूंगा, इज्जत लेलूंगा, जीभ काटलूंगा ।

બે આંગળ સ્વર્ગ બાકી છે = अतिशय गर्विष्ट है ।

બે કાન વચ્ચે માથું કરીશ = बालक को धमकी दी जाती है, दोनों कानों के बीच सिरकर दूंगा ।

બે ઘડીનો પરોણો कुछ देर का मेहमान, थोडीही देरमें मरने वाला ।

બેજીવવાળી (वि.) गर्भिणी, सगर्भा, ग्याभिन, गाभिन ।

બે તરફની ઢોલકી વગાડવી (क्रि.) दोनों तरफ का गाना । [अक्ल नहीं।

બે દાણા અક્કલ નથી–बिलकुल

બે ધારની તરવારે રમવું (क्रि.) दोनों पक्ष पर रहना, खतरनाक वस्तु अथवा मनुष्य के साथ रहना । [पेट खाना ।

બે પેટ કરવાં (क्रि.) खूब भर

બે બાપનું (क्रि. वि.) दो बापका, व्यभिचारिणी का पुत्र ।

બે મોઢાં છે કે શું ? क्या दो मुंह हैं ? मुंह है याकि गुदा ।

બે હાથે પાઘડી ઝાલીને હીંડવું (क्रि.) विचार एवम् सावधानी से चलना।

બે હાથ જોડવા (क्रि.) विनती करना, आजिजी करना, नम्रता करना।

બે હાથે જમવું (क्रि.) अच्छी तरह कमाना, खूब कमाना।

બે બેહાથે પેટ બતાવવું (क्रि.) भूख लगी है ऐसा सङ्केतद्वारा प्रदर्शित करना।

બે (उप.) गैर, कम, बद, हीन, रहित, नहीं, हीनता सूचक उपसर्ग, (क्रि. वि.) रे। अरे। ओ।

બેઉ (वि.) दोनों, उभय, दोनों ही।

બેએક (वि.) एक या दो, प्रायःदो

બેક (वि.) छका संकेत शब्द, थोडाक, जरासा, कुछेक।

બેકવું (क्रि.) बहक जाना, गलती करना, सुगन्ध फैलना अमर्याद होना, बह जाना, तृप्त हो जाना।

બેકાવવું (क्रि.) बहकाना, भुलाना

બેકી (वि.) पूरा, पूर्ण, जिसमें दोका भाग बराबर लग जावे और कुछ न बचे, लड़के पाखाने जाते समय जो दो अंगुलियां दिखा कर शौच की छुट्टी मांगते हैं वह। [टट्टी जाना, शौच जाना।

બેકીજવું (क्रि.) पाखाने जाना,

બેકેદ (वि.) जो कैदमें न हो, स्वतंत्र, खुला, मुक्त बन्धन रहित उद्धत, अमर्याद, न्यायरहित, अनियमित।

બેકેલું (वि.) बहका हुवा, मिजाजमें भरा हुवा। [पत्रा।

બેગડ (वि.) कलईसे रंगा हुवा

બેગમ (सं.) बड़े दरजे की मुसलमान स्त्री, अमीर अथवा बादशाह की औरत, राणी, महाराणी।

બે ગરજ (वि.) अनावश्यक जिसे कुछ मतलब न हो, निष्प्रयोजन, बेदरकार, अकारण।

બેગણિયું (वि.) एक प्रकार का काला एवम् पतला कपड़ा।

બેગાર (सं.)बिना पैसोंकी मजुरी, मुफ्तकी मजदूरी सख्त परिश्रम।

બેગારી (सं.) मुफ्त का मजदूर, कुली, भारवाही, मजूर।

બેઘાઘંડું (वि.) मिश्र, भेल, मिलावट, अविचारी, निर्विवेक।

બે ચારેક (वि.) दो चार, दो या चार, कुछ, थोड़ा, चन्द, लगभग २ या ४

બેભાન (वि.) देखो બેભાર।

બેભાનુ (वि.) व्याकुल, घबराया हुवा।

બેભાર (वि.) व्याकुल, हैरान, थका हुवा, घबराया हुवा, बेचैन।

બેટ (सं.) जज़ीरा, द्वीप, पानीसे चहुंओर घिरी हुई भूमि।

બેટો (सं) सुत, तात, वत्स, आत्मज तनय, पुत्र, लड़का, छोरा, छोकरा।

બેઠક (सं.) आसन, बैठनेका स्थान, बिछायत, साथरी, बैठनेका हक़, बैठनेकी मुख्य जगह, बैठनेका कक्ष, नाच इत्यादिकी जगह, मजलिस, सभा, समाज, परिषद्।

બેઠાબેઠ (क्रि. वि.) बिना परिश्रम के, बैठे बैठे, ठाले रहकर।

બેઠાગરૂ (वि.) जमकर बैठनेवाला

બેઠાબેઠ (वि.) बे रोजगार, निरुद्योग।

બેઠી બાંધણીનું (वि.) नीचा किंतु अच्छा बना हुवा (घर), बहुत शीघ्र और बहुत क्रोध पूर्वक नहीं किंतु धीरजसे और कम गुस्सेका (काम भाषण इत्यादि २)

બેઠું (वि.) बैठा हुवा, स्थित, नीचा, फैला हुवा, पसरा हुवा, बिखरा हुवा, जिसमें बहुत देरतक बैठना पड़े।

બેઠી હાંકવી (क्रि.) ठंडी दिल्लगी करना।

બેઠું પાણી ચલાવવું (क्रि.) बे आधार बेबुनियाद बात हांकना।

બેઠો હાથી (वि.) घर बैठे अपनी गुजर चलानेवाला, कुछ भी परिश्रम उद्यम किये बिना भरण पोषण करनेवाला।

બેઠું (क्रि) बैठनेका भूतकाल, (क्रि. वि.) तपेली में चांवल खिचड़ी इत्यादि उबालने के लिये ठीक अंदाजसे जल डाल कर उबलने रखना वह।

બેઠું બેઠું (क्रि. वि.) आराम से, बिना परिश्रम से, बैठे बैठेही।

બેઠેલ (वि.) बैठ रहनेवाला, जम कर खूब बैठनेवाला।

બેઠે પગે (क्रि वि.) पद्मासन लगाकर।

બેઠો પગાર (सं.) घर बैठे बिना काम किये मिलनेवाला वेतन, पन्शन मासिक यावार्षिक वृत्ति।

બેઠું ખાવું (क्रि.) बिना रोजगार होकर घर में बैठे खाना, किसी की सहायता से गुजर करना, आराम से खाना।

બેડ (सं.) चूल्हे के दोनों ओरकी दीवार, चूल्हे के पाखे।

બેડકું (સં.) अंगुलियों के जोड़, अंगुलियोंकी जड़ के पास गाई के ऊपर गड्ढे, अमलीका बीज युक्त भाग, वर्षा से मार्गमें हुवाकीचड़, वर्षा से भरे हुए छोटे छोटे गड्ढे ।

બેડવું (क्रि. वि.) बेडवुं देखो,

બેડશી–સાઇ (सं.) अभिमान, गर्व दर्प अहंकार, घमण्ड ।

બેડસી મારવી (क्रि.) बड़ाई मारना आत्मप्रशंसा करना, शेखी मारना ।

બેડિયાતો (सं.) खलासी, मल्लाह, केवट जहाजी, कर्णधार ।

બેડાચડ (वि.)वह भमरी या भंवरी जो (घोड़े के) मस्तक में पास पास ही दो एक ही जगह हों । मस्तक में दो भंवरोंवाला घोड़ा ।

બેડા ફેડ (वि.) पूर्ववत्

બેડિયું (सं.) आम परखे कैरी तोड़नेका यंत्र, बत्तीस मणका तौल दो बैलोंकी गड्ढी ।

બેડી (सं.) कैदीको पहिरानेकी लोहे की जंजीर, सांकल, शृंखला हथकड़ी, बन्धन, अटकाव, रोक, आड़ जंजाल, संकट, काष्ठघंटा, बाधा के लिये अंगुलियोंमें पहिनी हुई दो जुड़ी हुई अंगूठियां, पैरों में पहिननेका एक प्रकारका चांदी का जेवर ।

બેડું (सं.) ऊपर नीचे रखे हुए दो जलके पात्र, घड़ेला,(कलशिका) ।

બેડો (सं.) जहाज, दल, पार्टी, जूथ, संघका विभाग, हेतु, निर्दिष्ट कारण, पक्ष योजना, कंपनी ।

બેડોપાર (सं) विजय, फतह, सिद्धि, कृतकार्यता, जीत ।

બેડોળ (वि.) बेडौल, दोमस्तूल वाला (जहाज)।

બેડોળ (वि.) कुरूप, बदशकल, ।

બે ઢંગ–ગુ (वि.) अव्यवस्थित, विलक्षण, विपरीत, दुराचारी, बेकरतीब, बेढंगा, बेतर्ज ।

બેઢાળિયું (वि.) वह छप्पर, जिसमें दो ढालहों, दो ढलवका छप्पर ।

બેઢું (सं.) देखो બેડું

બેત (सं.) उर्दू में कविता करने की एक रीति, इसमें दो चरण अठारह मात्राओं के ५. ५. और ३ तीन मात्रापर यति होता है । दो दो समान अनुप्रास के चरण, दुपाई, कविता । मनसूबा, विचार इरादा, युक्ति, तजवीज, उपाय ।

બેતકસીર (वि.) बेगुनाह, निर्दोष, निरपराध, बेकुसूर ।

બેતમા (वि.) बे फिक, बेपरवाह ।

બેતરફી (वि.) दोनों तरफका, दुतरफी, दोनों ओरका ।

બેતાલ (वि.) बिनातालका (गायनमें) ताल रहित, युक्तिहीन, हाथ से गया हुवा, खराब हुवा ।

બેતાળાં (सं.) बयालीस वर्षकी उम्र।

બેતાળા આવવાં (क्रि.) दृष्टिमें न्यूनताआना, चश्मा लगना ।

બેતાળીસ (वि.) संख्या विशेष, बयालीस, ४२, चालीस और दो।

બેતાળું (सं.) बयालीस सेरका मन।

બેદરકાર (वि.) बेतमा।

બેદરદી (वि.) निरोगी, बेपीर, अरसिक ।

બેદાદ (वि.) गैरवाजिब, अन्धेर, अव्यवस्थित, अनुचित। [औषधि ।

બેદાંતલાકડી (सं.) एक प्रकार की

બેદાણા (सं.) पूर्ववत्, बीदाना ।

બેદાદી (वि.) गैर इन्साफी, अन्याय, अन्धेर, अंधाधुंधी, अव्यवस्था ।

બેદીલ (वि.) नाखुश, अप्रसन्न, नाराज़, निरुत्साह, निराश, उदास, अनिच्छुक ।

બેદીલી (सं.) अनबन, मित्रतामें बिगाड़, अप्रसन्नता, नाराजी ।

બેડું (सं.) अंड, अंडा ।

બેધારી (वि.) दुधारी, दोनों ओर जिसके बाढ हो, दोनों ओर पैनी ।

બેન (सं) बहिन, भगिनी, सहोदरा।

બેનડી (सं.) प्यार में बहिन के लिये शब्द ।

બેનપણું (सं.) स्त्रियों स्त्रियों की मैत्री, सखीत्व, सहेलीपना ।

બેનપણી (सं.) सखी, सहेली, सजनी।

બેનસીબ (वि.) अभागा, भाग्यहीन, बदकिस्मत, फूटे करमका ।

બેની (सं.) सजनी, सखी, प्यारी, बहिन ।

બેનાક (सं.) बदशकल, कुरूप ।

બેફાદ (क्रि. वि.) निर्लज्जतापूर्वक बेशर्मीसे, साफ साफ दुर्वाक्य ।

બેફાટ (क्रि. वि.) दो टूक, बेशर्म ।

બેભાવ (वि.) अनबन, द्वेष, अप्रसन्नता, नाराजी ।

બેબાક (वि.) बिना बाकी, बिलकुल, समाप्त, सम्पूर्ण, कुछ नहीं ।

બેબાપનું (वि.) छिनाल स्त्रीका पुत्र, वेश्यापुत्र, पिताहीन ।

બેબાકળું (वि.) घबराया हुवा, व्याकुल ।

બેબુનિયાત (वि.) नीच वीर्य का, हरामजादा, पतित कुलोत्पन्न ।

બેઆતુ-થુું (वि.) दो जातिका, दो प्रकारका, पृथक पृथक मिश्रणका।

બેભાન (वि.) बेसुधि, बेहोश, अचेत, चेष्टारहित मूर्च्छित।

બેમના (सं.) सङ्कल्प, विकल्प, दुविधा, पशोपेश।

બેમર્યાદ (वि.) असीम, बेशरम, मर्यादाके बाहिर।

બેમાર (वि.) बीमार, अस्वस्थ, रुग्ण

બેમાલમ (वि.) गुम, अप्रसिद्ध।

બેમુનાસબ (वि.) अनुचित, अयोग्य।

બેમુરવત (वि.) नमकहराम, कृतघ्नी, बेलिहाज, भोंडा।

બેરખ (सं.) देखो બેહેરખ।

બેરખી (सं.) स्त्रीके बांये हाथ में कोहनी के ऊपर पहिनने का आभूषण विशेष।

બેરખો (सं.) रुद्राक्ष के मोटे मोटे मणियोंकी माला।

બેરંગ-ગી (वि.) चित्रविचित्र, रंगबदला हुवा, ताल, बे मिसल, अधिक रंगोंका।

બેરહાઇ (सं.) हठता, चंचलता, लुचाई। [लुचा, जिद्दी।

બેરહું (वि.) हठीला, चंचल,

બેરંજે (सं.) एक प्रकारकी औषधि।

બેરત (वि.) देखो બેરહુ (सं.) कुसमय।

બેરબેર (क्रि. वि.) बारम्बार, पुनःपुनः, मुहुर्मुहुः, फेरफेर।

બેરંગુ (वि.) एक जातिका पक्षी।

બેરીજ (सं.) योग, जोड़, टोटल रकम। [ब्राह्मिहीन।

બેરૂ (वि.) बहिरा, बधिर, अश्रवण-

બેલ (सं.) साथी, जोड़ीदार, बैल, वृषभ।

બેલડી (सं.) दोका साथ।

બેલદાર (सं.) हमाल मजदूर, मजूर।

બેલાશક (क्रि. वि.) निस्संकोच, अलबत्त, निःसन्देह, अवश्य, बेशक।

બેલિયુ (सं.) निर्बलताके कारण हाथकी अंगुलियां अचानक खिंचना, बांयटा, एक प्रकारका फूल या इत्र।

બેલી (वि.) धनी, सहायक, हिमायती, पक्षग्राही, भिडु, तरफदार।

બેલુ (सं.) रुईकी पूनीका जोड़ा, सफेद रेतीला पत्थर, जोड़ा।

બેવકુફનો બાદશાહ (सं.) असंत मूर्ख, मूर्खराज, मूर्खानन्दन।

બેવડદર (वि.) बेढंगा।

બે વખત (वि.) कुसमय, असमय।

બેવખત વખત (वि.) चाहे जब, जब इच्छा हो तभी समय।

બેવચની (वि) अप्रमाणिक, विश्वासघाती, बेवफा, वचन तोड़नेवाला।
બેવડ (वि.) लपेटा हुआ, घड़ी किया हुआ दुहरा, दुहरता ।
બેવડવું-કરવું (क्रि.) दुहरता करना, घड़ी करना, लपेटना ।
બેવડિયું (सं.) एक तांबेका सिक्का, जिसका मूल्य लगभग आध आना होता है ।
બેવડું (वि.) दुपट, दुहरा, डबल एक से दुगना ।
બેવતની (वि.) जिसका कोई देश न हो, देशसे निर्वासित, परदेशी ।
બેવફા (वि) बेईमान, अपकारी, कृतघ्नी, अधर्मी, कपटी, छली ।
બેવારસી (वि.) अनाथ, जिसका कोई मालिक न हो, अवारा ।
બેવાર (क्रि वि.) दो बार, दो वक्त।
બેશ (वि.) देखो બેહેતર
બેસઉઠ (सं.) ऊठबैठ, ऊठक बैठक ।
બેસણી (सं.) आसन, बैठक, वह वस्तु जिस पर घर के देवता बैठाये जाते हों। बेन्च तिपाई, स्टूल ।
બેસણું (सं.) बैठक, बैठनेकी रीति मरने वाले के यहां शोक सूचक बैठक उठाना ।

બેસત (सं) लगी हुई कीमत, असली कीमत । [बहुत, पुष्कल ।
બેસતમ (वि.) अपार, अत्यंत,
બેસતું (वि.) लायक, योग्य, उचित, ठीक, फबता, आरंभ (वर्षका) नवीन । [सजो ।
બેસબૂરી (सं) असन्तोष, बे
બેસર જમીન (सं.) एक प्रकारकी भूमि ।
બેસરણ (सं.) खर्च, मूल्य, कीमत ।
બેસવું (क्रि.) बैठना, आसन लगाना, चूतड़ टेकना पग फैलाकर पेटके बल होना (पशु) पैर टेककर पक्ष सिकोड़ना (पक्षी) चलते चलते ठहर कर एक स्थानपर पड़ रहना, लगे रहना, घुसना, आरंभहोना, नवीन चालू होना, उघड़ना, युक्तिसमझ आना, भाव होना, कीमत ठहरना, ठहरना, ठालेहोना, आलसी हो रहना, नीचे जा ठहरना, मोटा खरखरा होना, पानीसे बर्तनमें नीचे चिपक जाना।
બેસવાં સીખવું (क्रि.) चिकनी जमीनपर पग न जमकर फिसल पड़ना । [उठता बैठता ।
બેસતું ઉઠતું (वि.) आता जाता,

બેઠતો પાયો (सं) मेल, बनाव,प्रेम।
બેસવા જવું (क्रि.) मृतक के घर शोकमें शामिल होने आना, मातम में आना शोक प्रदर्शनार्थ बैठने जाना। संभोग करना।
બેસવાની ડાળ તોડવી (क्रि.) अपने पैरों आप कुल्हाडी मारना, जिससे गुजर चलता हो उस धन्धे को अपनी मूर्खतासे गमा बैठना।
બેસી જવું (क्रि) बैठजाना, दिवाला निकालना, भूखसे (पेट) बैठना, निस्संतान होना, रुज्गार धन्धा न चलना, गालोंमें गढ्ढे पडना।
બેસીને સુવું (क्रि) सोच समझकर चलना। विचारकर चलना।
બેસાડવું (क्रि.) बिठाना, बैठाना, जड़ना, जमाना, ठहरना, रखना, बनाना, स्थापित करना, स्थिर करना।
બેસામણુ (सं.) रोगके कारण पशुका खड़ा न होना और बैठही रहना, बैठान, सठान।
બેસામણું *(सं.) मृतक के घर शोक प्रदर्शनार्थ बैठक, उठावना, बैठक, मातम। [पथिक।
બેસાડ (सं.) मुसाफिर, यात्री,
બેસુમાર (वि.) असंख्य, अगणित अतिशय, बेहद, असीम।
બેસુર-રું (वि) बेसुरा, कानोंको भद्दी लगने वाली आवाज (गायनमें) वाला, स्वरहीन।
બેસ્તી (सं.) भाइबन्दी, मित्रता, मेल, दोस्ती, बन्धुत्व।
બેહક (वि.) अनधिकार, नाजायज।
બેહક પડવું (क्रि.) रोगके कारण पशुसे खड़ा न हो सकना।
બેહક બેસવું (क्रि.) नुकसान उठाना, बहान रहा आसके इस तरह बैठना।
બેહજુર (क्रि. वि.) दो जने हाजिर रहें तब, दो की उपस्थितिमें, अनुपस्थिति। [लज्जाहीन।
બેહયા (वि.) बेशरम, निर्लज्ज,
બેહુ (वि.) दोनों, उभय।
બેહુરમત (वि.) अपमानित, तिरस्कृत। [सोरम।
બેહેક (सं.) गन्ध, बू, महक,
બેહેકવું-કીજવું (क्रि.) बहकना, भूलना, भटकना, बड़बड़ाना,
બેહેકાટ (सं.) सुगन्ध, खुशबू, सुवास, सौरभ, महक, अभिमान, गर्व।

બહેકાવવું(क्रि.)बहकाना, भुलाना।
બહેતર (वि.) अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ, बढिया, ठीक, भला, तोफा।
બહેન (सं.) देखो બેન।
બહેર (सं.)बधिरता, बहिरपना।
બહેરખ (सं.) नगारा तासा, और ढोलकी जोड,निशान, ध्वजा, झंडा, नगारा ढोल और झंडेवाली पार्टी।
બહેરૂં (वि.) देखो બેરૂ,
બહેસ્ત-સ્ત (सं.) स्वर्ग, कैलाश, वैकुण्ठ, (यावनी भाषा में)
બહેસ્તી (वि.) स्वर्गीय, गत, मृत मरा हुवा, कैलाशवासी।
બૈયર-યર (सं.) औरत, स्त्री।
બૈડકબોલું (वि.) बीच में बोलनेवाला, मजाक, करनेवाला।
બૈડવું (सं.) नरमादा, द्वार के कुन्दे नकूचे, चूल।
બૈડુકી (सं.) एक प्रकारका पौधा, जो गांठ दार होता, है और पशुको घी अधिक होने के लिये खिलाते हैं।
બૈયાબારૂં (सं.) अनबन, द्वेष।
બૈરકબુદ્ધિ (सं.) स्त्री बुद्धि, औरतों के समान अक्ल।
બૈરકહાણ (सं.) स्त्रियोंकी रीति रवाज, डुकरियापुराण।
બૈરી (सं.) स्त्री, भार्या, पत्नी, औरत बहू, वधू, लुगाई, नारी।
બૈરાં બેસવી(क्रि)रोने के लिये स्त्रियां आकर बैठें ऐसी दुर्दशा होना अतिशय हानि होना दुर्दशा होना।
બૈરૂં (सं.)स्त्री, औरत, नारी, पत्नी।
બો (सं.) गन्ध, बास, वास, अहंकार, ममत्व, पतंगकी डोरी।
બોઇ (सं.) एक प्रकारकी मछली,
બોકડું-ડો (सं.) अज, बकरा, छाग।
બોકડાને મોતે મરવું (क्रि.) बे मौत, मरना, अकाल मृत्यु, होना, असद्गति होना,कुत्तेकी मौत मरना।
બોકિલું (सं.) कुतियाका बच्चा, पिल्ला, छोटा कुत्ता।
બોકી (सं.) प्यार, चूमा, चुंबन, बोसा, दोनों ओठों से प्रेमपूर्वक, स्पर्श।
બોખ (सं.) कुए मेंसे पानी निकालने का चमडे का डोल। कोश, कोष।
બોખલું (वि.) देखो બોખું।
બોખાર (सं.) ताप, ताव, ज्वर, बुखार।

બોખું (वि.) बिना दांतका, दन्तहीन, बोड़ा, दन्तहीन, पोला।

બોગદો (वि.) काणा, एक चक्षु।

બોઘરણું-રણું-ણું (सं.) चौडे मुंहका पात्र।

બોધરો (सं.) रास्ते मेंसे कचरा झाडने की मजबूत झाडू।

બોઘલું (वि.) सीधा, सादा, भोला, अज्ञान असमझ, औलिया।

બોચ (वि.) सादा, ज्वारमें दाने आये बिना उसका रसदार सांठा।

બોચલો (सं.) टोप, टोपा, कान भी ढंक जावे ऐसी टोपी, बच्चों की टोपी।

બોચી (सं.) कंठका पिछला भाग गर्दन ग्रीवा गरदन।

બોચીપર ઢાંકરો (सं.) अत्यंत कठोर शासन में रहना, ग्राम्य पाठशालाओंमें विद्यार्थी को अंगूठा पकड़ा कर उसकी गर्दन पर कंकर रख देते है, यदि वह कंकर गिरजावे तो दंड दिया जाता है।

બોચીપર બેસવું (क्रि.) आग्रह पूर्वक मांगना, काम का तकाजा करना।

બોજ (सं.) बोझ, भार, वजन।

બોજદાર (सं.) वजनदार, भारी।

બોજવું (क्रि.) पालना, अनुकूल आना, देना, बेचना या खर्च कर सकना।

બોજો (सं.) भार, बोझा, वजन, जोखम, जवाबदारी।

બોટ (सं.) मछवा, जलयान, अगन बोट, पतला गोबर का लेप।

બોટણુ (सं.) अन्न प्राशन संस्कार, बालक के मुख में पहिलेपहिल अन्न देना।

બોટવું (क्रि.) खानेपीनेके पदार्थ में से थोड़ासा खा कर शेषको इस योग्य कर देना कि दूसरा काम में न ला सके। प्राप्त करना, संपादन करना, रोकना, अपवित्र करना, जूठा करना, खाना, बिगाड़ना, कलुषित करना।

બોટિયું (सं.) देखो અબોટિયું

બોડ (सं.) खन्दक, खोखला, गुफा, गार, कन्दरा, बिल, खोह।

બોડકી (सं.) सिर मुंडी औरत, जिस सिरपर बाल न हों, (स्त्री) रांड, विधवा।

બોડકું (वि.) मैला. सिरमुंडा, के बालोंका सिर मुंडा हुवा।

બોડવું (क्रि.) उस्तरे से बाल काटना, मूंडना, बाल काटना।

બોડાવવું (क्रि.) मुंडवाना, बाल कटवाना, हजामत कराना, क्षौर कार्य करना, बाल बनवाना, श्मश्रु कार्य करना, सिर और मुख के बाल कटाना।

બોડી (सं) देखो બોડકી

બોડું (सं.) नंगे सिर, नग्न सिर, उघाड़ा माथा।

બોડુંતડેડું (वि.) बिना बालका।

બોડાઅક્ષર (सं.) काना मात्राहीन, अक्षर, मुडिया अक्षर।

બોણુંવું (क्रि.) बौनी कराना, मिलाना, देना, गाली देना, लेना स्वीकार करना।

બોણી-હોણી (सं.) दुकानदार की दुकान खोलने पर सबसे पहिली बिक्री, वर्षारंभ में व्यापारी परस्पर दलालों को अथवा आश्रित को जो इनाम अथवा द्रव्य देते हैं वह, गाली।

બોત (वि.) अधिक, बहुत, विशेष ज्यादः विचारणीय, घनी विपुल,

બોત (वि.) मूढ, मूर्ख, बेवकूफ, शठ। [ओछा ऊंट।

બોતડો (सं.) छोटा ऊंट, वे

બોતાન-નું (सं.) पगड़ी के अन्दरका वस्त्र। [बो, ७२।

બોતેર (वि.) बहत्तर, सत्तर, और

બોથડ (वि.) भौंठा, जड़ ठेठ, मूर्ख, अशिक्षित, शठ, सुस्त, पागल।

બોદલો (सं.) एक प्रकार के खेल का समाप्ति।

બોદારસિંગ (सं.) मुरदारसिंग।

બોદાવું (क्रि.) पानी पी कर तर होना, पानी से फूलकर बाका हो जाना, गद्गद होना। [खोखला।

બોદું (सं.) अधकचरा पात्र, गद्गद,

બોધ (सं.) समझ, ज्ञानशक्ति, शिक्षा, अनुभव, उपदेश, विवेक, मति।

બોધન (वि.) सिखण, विज्ञापन, सूचन।

બોધલું (वि.) अनाड़ी, सीधा, भोला।

બોધવું (क्रि.) अर्थ समझाना, शिक्षा देना, खुलासा करना, सिखाना

બોધિત (वि.) शिक्षित, सूचित, ज्ञाता।

બોબડી (सं.) जिव्हा, जीभ, (वि.) तोतलापन, तुतलाहट।

બોબડી બંધાવી (ક્રિ.) बोली बंधना, जबान बंधना, बोलनेकी शक्ति बंद होना ।

બોબડું (વિ.) तुतला, तोतला, जिसकी जीभ बोलने के समय लड़खड़ाती हो । [अस्थिपंजर।

બીબું (સં) बीबा, सांचा, नमूना,

બોળ (સં.) एक प्रकार की धूप, एक प्रकारका सुगन्धित द्रव्य ।

બોયું (વિ.) सनके वृक्षकी लकड़ी झटपट जलनेवाली लकड़ी, बोया काठ जो लंगर में बंधा रहता है और पानी के ऊपर उतराया रहता है ।

બોર (સં.) बेर, बदरीफल, बेर के बराबर स्त्री के पैरोंकी अंगुली में पहिनने का अथवा सामने कपाल पर पहिरनेका एक आभूषण ।

બોર કુટો કરવો (ક્રિ.) खोखला करना अच्छी तरह मारकूट कर भरम करना, कूट डालना, संहार करना ।

બોરકુટે વાળવો (ક્રિ.) पूर्ववत्

બોરનુંડીંટ=अपरिमित के विषय में यह वाक्य प्रयोग होता है ।

બોરડી (સ) बेर नामक वृक्ष, एक प्रकार का कांटेदार वृक्ष,

બોરડી ઝંઝેડવી (ક્રિ.) झकझोरना झूलना खूब झोंकना । बलबलपूर्वक किसी से कुछ छिना लेना ।

બોરડી ઝુડવી (ક્રિ.) खूब बहुत मारना, खूब ठोंकना, खूब पीटना,

બારડું (સં.) तर्फ, ओर, बाजू, पक्ष, कोर, किनारा, पार्टी

બોરવું (ક્રિ) पाखाना साफ करना, टट्टी झाड़ना ।

બોરસલી (સં.) एक प्रकारका गंध युक्त पुष्पवाला वृक्ष ।

બોરિયું (સં.) एक प्रकार का वृक्ष और फूल, एक प्रकार का जेवर, बटन ।

બોરી (સં.) ज्वार बाजरे के भुट्टों की बारीक धूलि, रुई की कच्ची गांठ ।

બોરૂ (સં.) भुट्टे का वह भाग जिस में अन्न का दाना रहता है ।

બોરો (સં.) बिछाने का वस्त्र, कम्बल ।

બોલ (સં.) अक्षर, वचन, शब्द, वाक्य, कड़ी, तुक, चरण, पद, फिकरा, ताना ।

બોલ મારવો (ક્રિ.) ताना देना, वक्र वाक्य बोलना, उलाहना देना उपालंभ देना ।

બોલકણું (वि.) बोलने वाला, वाचाल, बातूनी, बहुभाषी, वक्ता।

બોલછા (सं.) भाषा, बोलने की रीति। [वचन।

બોલબંધ (सं.) कौल, करार,

બોલબોલા (सं.) तकरार, फिसाद, बोलचाल, जिदाजिदा, वाक्कलह।

બોલબાલા (सं.) सिद्धि, जय, वृद्धि, चढती, आबादी।

બોલવું (क्रि.) मुहं से कहना, उच्चारण करना, बोलना, भाषण करना, शब्द कहना, बात करना।

બોલતો ચાલતો (वि.) तन्दुरुस्त, स्वस्थ, नीरोग, राजी खुशी।

બોલમાં બોલ નથી=भाषण में कुछ सचाई नहीं है, बोलने में इमानदारी नहीं, कहने में प्रमाणिकता नहीं।

બોલ દે એવું-आवश्यकता के समय काम में आने योग्य।

બોલ્યા સામું જોવું (क्रि.) अयुक्त भाषण पर दुखी होना या क्रोध करना।

બોલે બંધ નથી = बोलने में दृढ निश्चय नहीं, संदेव वचन भंग करता है।

બોલેબોલે મોતી ખરવાં (क्रि.) मृदु भाषण करना, सुंदर मनमोहक बोली बोलना, प्रिय वाणी उच्चारण करना।

બોલાવવું (क्रि.) बुलाना, उच्चारण करना, आवाज लगाना, हांक मारना, याद करना, खबर पूछना निमंत्रण देना, पुकारना, आह्वान करना।

બોલું (वि.) बोलने वाला, वक्ता।

બોવું (क्रि.) बोना, बीज डालना, उगाना, उगने के लिये बिखेरना।

બોસ (सं.) हठ, जिद्द, बलात्कार।

બોસો (सं.) चूमा, चुम्बन, प्यार, दोनो ओष्ठों द्वारा प्रेमपूर्वक स्पर्श।

બોહડો (वि.) बदबूदार, दुर्गन्ध युक्त।

બોહણી (सं.) देखो બોણી

બોહોત (वि) बहुत, बहु, अधिक, ज्यादः विशेष, घना, अति।

બોહોતાળ (वि.) पुष्कल, अतिशय।

બોહોસ (सं.) आग्रह, अनुरोध।

બોહોળું (वि.) बडा, बहुत, दीर्घ, विस्तृत, विशेष अत्यत, अतिशय, असंख्य, अपरिमित।

બોળ (सं.) एक प्रकार का गोंद, अगर घीकुवार मुसब्बर, कचरा, (वि) नमकीन, एक प्रकार का वृक्ष।

બોલ ખાવવો (क्रि.) बोलमोल के थक रहना, बोल कर पेट दुखाना।
બોળઈરવવું (क्रि.) निकम्मा कर रखना, काम बिगाड़ डालना, रद्द करना। [लब,किनारेतक,पूरम्पूर।
બોળંબોળ (वि.) छलाछल, लबा-
બોળવાડો (सं.) भ्रष्टता, अपवित्रता।
બોળવું (वि.) डुबोना, मग्नकरना पैंदे बिठाना, नष्ट करना, बर्बाद करना, गमाना, खोना, रंगना।
બોળિયા (सं.) देखो બોળ।
બોળું (वि.) बुद्धिहीन, असमझ, मूर्ख, सीधा भोला, सादा।
બોબો (सं.) भिगाया हुवा आटा, पानीमें तर किया हुवाचून।
બૌધ (सं.) बुद्धका फैलाया हुवा धर्म, बौद्ध, बुद्ध सम्बन्धी। बौद्ध धर्मी। [हकीकत।
બ્યાન (सं.) बयान वर्णन, हाल,
બ્યાસી (वि.) बयासी, अस्सी और दो, ८२, संख्याविशेष।
બ્રહ્મયજ્ઞ (सं.) वेदपाठ, विधिपूर्वक वेदाध्ययन, वेदाध्ययनाध्यापन।
બ્રહ્મયોગ (सं.) ईश्वर प्रार्थना, भक्ति, उपासना, एक प्रकारकी समाधि।

બ્રહ્મરંધ્ર (सं.) मनुष्य के मस्तक का एक छिद्र, जहांयोगी मस्तक को वेध करके मुक्तिस्थापन करते हैं और ईश्वर का दर्शन करते हैं उत्तमांग, ब्रह्मतालु।
બ્રહ્મરાક્ષસ (सं.) भूत विशेष, योनिविशेष, वह भूतविशेष जो पहिले ब्राह्मण होकर फिर कुकर्मवश राक्षस योनि को प्राप्त हो गया हो, ब्राह्मण हो कर असत्कर्म करने वाला मनुष्य, पढ़े लिखे मनुष्य की आत्मा भूत बनी हुई।
બ્રહ્મવેળ (सं.) लुच्चे ब्राह्मणों का झुंड, बदमाश ब्राह्मणों का समूह।
બ્રહ્મસૂત્ર (सं.) जनेऊ, उपवीत।
બ્રહ્મસ્વરૂપ (सं.) आत्मरूप, ब्रह्मा का रूप।
બ્રહ્મા (सं.) विधाता, रचने वाला सृष्टि कर्ता, प्रजापति, विधना, रजोगुण प्रधान ईश्वर का रूप, ब्राह्मणों का मूल पुरुष।
બ્રહ્માંડ (सं)जगत्, विश्व, संसार चतुर्दश भुवन, गोलक।
બ્રાહ્મ (सं) एक प्रकार का विवाह नारद, पारा, रात्रिके पिछले पहर की अंतिम दो घडी का काल, ब्रह्मपुराण, (वि.) ब्रह्म विषयक।

બ્રાહ્મણિયા (वि.) ब्राह्मण सम्बन्धी, सादा, सुघड़, पवित्र शुद्ध।

બ્રાહ્મી (सं) एक बूटी का नाम, शाक विशेष, सरस्वती, वाचा, वाराहीकन्द, एक प्रकार की वनस्पति ।

વ્રીજ (सं.) ब्रज, वृन्दावन अथवा तत्सम्बन्धी, गोकुलनामक गांव, गोष्ठ ।

વ્રીજભાષા (सं.) ब्रजकी बोली, मथुरा वृन्दावन गोकुलके लोगोंकी भाषा, ब्रज भाषा, पड़ी बोली ।

ભ

ભ—गुजराती वर्णमालाका ३५ वां अक्षर, चौबीसवां व्यंजन, पवर्गका चतुर्थ अक्षर नक्षत्र, पर्वत ।

ભઉડો (सं.) शूद्रोंकी एक जाति विशेष, भीलोंसे मिलती जुलती पहाड़ोंमें रहने वाली एक जाति ।

ભકભક (वि.) जोरसे ।

ભક્ષ (सं.) भोजनीय पदार्थ, खाने योग्य वस्तु, भक्ष्य, खानेकी चीज। [नाशक, हजम करनेवाला ।

ભક્ષક (वि.) खानेवाला खादक,

ભક્ષણ (सं.) भोजन, आहार, भोजन करनेकी वस्तुएं ।

ભક્ષી (वि.) खानेवाला, भोगी, भक्षक, खादक, नाशक ।

ભખ (सं.) खानेका पदार्थ, शिकार, भोजन, वारवार गिनने से कुछ भी न बने ऐसी संख्या (क्रि. वि.) झट ।

ભખવું (क्रि.) खाना, शिकार करना, हड़पना, बकना ।

ભંખવું (क्रि) कहना ।

ભખળ (वि.) आचार विचारसे भ्रष्ट, नैतिक विचारोंसे पतित, च्युत ।

ભખળવું (क्रि.) आचार विचारोंसे पतित होना, भ्रष्ट होना।

ભખળેલ (वि.) खोया हुवा, गया हुवा, पतित, भ्रष्ट, बिगड़ा हुवा, अवारह ।

ભખ્ખડ (वि.) भ्रष्ट, पतित च्युत ।

ભખ્ખાબોલું (वि.) झटपट जो कुछ मुहंसे निकळ वही कह डालने वाला ।

ભગ (सं.) छेद, छिद्र, सूराख, योनि, स्त्रीका मूत्रद्वार, चूत, गुदा और अंड कोषों के बीचकी जगह, उत्कृष्टता, ऐश्वर्य्य, सौभाग्य, कीर्ति मान, सूर्य ।

ભગદાળું (सं.) छेद, छिद्र, काणा, बांका, सूराख, गुप्त अपयश ।

ભગંદર (सं.) रोग विशेष, एक रोगका नाम, गुदाके आसपासका नासूर। छेद, सूराख, छिद्र।

ભગભગ (क्रि. वि) जोरसे पानी बहनेके शब्दके अनुसार आवाज। भड़भड़। [भुरा।

ભગડું (सं) बे चिकना हट, भुर

ભગલ (स) धोका, कपट, छळ, चलाकी, पाखण्ड, बनावट।

ભગલ ભાપાર્થી (सं.) देखो ભગભગત।

ભગલી (वि.) धूर्त, कपटी, पाखण्डी, छलिया, चालाक, धोखेबाज।

ભગવતી (सं) देवी, पार्वती, दुर्गा पूज्या, राणो, (वि.) ठाकुरजी की सेवा करनेवाला, भक्तजन।

ભગવું (वि.) काषाय रंग, गेरूआ रंगका। [संन्यासी होना।

ભગવાં કરવાં (क्रि.) वैरागी होना

ભગવો ઝુંડો (सं.) गेरवा ओंकी ध्वजा।

ભગવો (वि.) देखो ભગવું

ભગળ (सं) पोला, खाली, रीता।

ભગળભાવાર્થી (वि.) ऐसा मनुष्य जिसके मनमे कुछ ही और दिखावे कुछ, बगुलाभक्त, दुरंगा।

ભગોડું (सं.) रेशमका कीड़ा।

ભંગ (सं.) नाश, (वि.) जिसके टुकडे किये हों, बांका हुआ हुवा।

ભંગ (सं) भाग, भेद, खण्डन, टूटा, तरङ्ग, ऊर्मि, लहर, पराजय एक प्रकारकी नशीली पत्ती।

ભંગડ (वि.) जिसे भाग पीनेका व्यसन हो, भंगी, मन्द, मूर्ख, सुस्त। [भंग घोटने पीने का स्थान।

ભંગડખાનું (सं.) भंगेडी भाइयों के

ભંગાણ (सं.) टूट, भनक, तेड।

ભંગાર-રો (सं.) फूटे टूटे पात्र, फल इत्यादिका गूदा।

ભંગિયો (सं.) मेहतर, भंगी, डोम, पखाना झाड़नेवाला, ढेड।

ભંગિયેણ (सं.) भंगिन, मेहतरानी।

ભંગી (वि.) भाग पीने वाला, भाग नामकी नशेली वस्तु सेवन करने वाला, सुस्त, गफलती (सं.) मेहतर, भंगी।

ભંગીજંગી (वि) भांग पीकर मस्त रहने वाला, शराबी, लहरी, मनमौजी।

ભંગુર (वि.) क्षणिक, नाशवंत, टूटने योग्य, अस्थायी।

ભગિ (सं.) देखो भगिनी,
ભચ (क्रि. वि.) भाला बर्छी या कटार के घुसने का शब्द।
ભચ્ચ (क्रि. वि.) पूर्ववत्।
ભચકવું (क्रि.) पछाड़ना तोड़ना।
ભચકાવવું (क्रि.) भच्च देकर मारना।
ભચક (सं.) नक्षत्र मंडल।
ભચડભચડ (सं.) दांतोंसे कुचल कर अथवा कुतर कर खानेका शब्द। [कुचल देना।
ભચડવું (क्रि.) दाब डालना
ભચડાવુ (क्रि.) दब जाना, पिस-जाना, कुचला जाना, दबी हालत में होना।
ભચોભચ (क्रि. वि.) तलवार छुरी. भाला इत्यादि के घुसने का बारंबार शब्द, खचाखच।
ભચ્ચોભચ્ચ (क्रि. वि.) पूर्ववत्।
ભજન (सं.) स्मरण, कीर्तन, निरंतर ध्यान, रटन, जप, गान, स्तुति, प्रार्थना, पद, ईश्वर सम्बन्धी गीत।
ભજનિક (वि.) भजन करने वाला। (सं.) भक्त, अर्चक, पूजक, भगत।
ભજનિયાં (सं.) मंजीरे, झांझ, करताल, बहुओ कि गीत गाकर पूजा करता हो, भजन, कीर्तन।
ભજનિયો (सं.) गाकर भजन करने वाला, गायक, गवैया।
ભજવવું-ભવવુ (क्रि.) हो वैसा करके दिखा देना, नाटक के समय वेश रखकर आरंभ से अन्त तकका वर्णन कह सुनाना।
ભજવું (क्रि.) भजन करना, ईश्वर का ध्यान करना, जपना, बड़े लोगोंका प्रेमसे पूजन करना, पहिरना, घालना, डालना, प्रकाशित होना, शोभित होना, प्रज्वलित होना।
ભજીયું (सं.) फलौरी, पकोड़ी, मंगोड़ा, बेसनका बनाया हुवा एक प्रकार का खाद्य पदार्थ, बेसनका गुलगुला कंद अथवा किसी फलको बेसनमें लपेट कर घृत या तेलमें तला हुवा पदार्थ।
ભજુ (वि.) भजने वाला (कविता में)
ભટકણ (सं.) भटक, विछोह।
ભટકબોલો (सं.) प्रलापी, वाचाल, तड़ाके से जवाब देने वाला।
ભટકભવાની (सं.) बिना काम घर घर घूमने वाली स्त्री।

ભટકવું (क्रि.) व्यर्थ ही इधर उधर घूमना, बहकना, भूलना, भ्रम में पड़ना, भ्रांत होना।

ભટકાં (सं.) देखो ભટકિયાં

ભટકાવવું (क्रि.) भुलाना, बहकाना, भ्रम में डालना, चक्कर में डालना, डराना।

ભટકિયાં (सं) भ्रमण, पर्य्यटन, धरम धक्के, भ्रम, भ्रांति, भूल।

ભટજી (कं.) ब्राह्मण के लिये मान सूचक शब्द। महाराजजी, देवताजी।

ભટાઈ (सं.) चापलूसी, खुशामद, अतिशयोक्ति प्रशंसा (भाट की तरह)

ભટાણી (सं.) ब्राह्मण की स्त्री, ब्राह्मणी, भाट की औरत, भाटन, भट्ट की स्त्री।

ભટિયો (सं) वह जो बिना विचारे बोला करे, गोसाईजी महाराज के मठ में रहने वाला आश्रित व्यक्ति, गोसाई जी महाराज का जंवाई।

ભટુરિયું (सं.) गाय भैंस के दूध बनाने के लिये बना कर तय्यार किया हुवा पदार्थ।

ભટો (सं) ब्राह्मण के लिये तुच्छता प्रदर्शक शब्द।

ભડવું (क्रि) चमकाना, डाटना, भला बुरा कहना, नुक्स निकालना बुड़कना, दोष निकालना।

ભડિયારખાનું (सं.) रसोई का घर, पाक शाला, बावरची खाना,

ભડિયારો (सं) पकाने वाला, रसोइया, पाक शास्त्री, एक जाति विशेष।

ભઠ્ઠી (सं.) भाड़, पजावा, बड़ा चूल्हा, शराब, अर्क निकालने की जगह, आवा, भट्ठा, ढंग।

ભડકિયું (सं) ताक, आला, गाड़ी या बग्वी में वस्तु रखने के लिये बनाई हुई सन्दूक।

ભડ (वि) अति बलवान, प्रतापी समृद्धिवान, (सं.) वीर, योद्धा, श्रीमान्, एक प्रकार का शब्द, धड़ाका।

ભડક (सं.) चमक, स्फुरण, कंपन।

ભડકણું (क्रि.) उज्ज्वल, भड़कीला, चमकीला।

ભડકવું (क्रि.) चौकना, भागना, चमकना, डर कर रुकना।

ભડકાવવું (क्रि.) डराना, चमकाना, चौंकाना, आश्चर्य में डालना एकदम उठाना, भगाना भगवा देना।

ભડકિયું (सं.) गंधक का टपका, घी और गंधक दोनों कपड़े पर लपेट कर जो आग लगाने पर टपके गिरते हैं।

ભડકી (सं.) ज्वारी या बाजरे में पानी डाल कर पकाया हुवा पदार्थ।

ભડકું (सं.) पूर्ववत्–, चकाचौंध चौंधियां, ताप, अत्यंत प्रकाश।

ભડકો (स.) चकाचौंध, चौंधिया, लपट (आग की) भभक, ताप, अत्यंत क्षुधाग्नि, दुःखाग्नि, अलार्म।

ભડકો ઉઠવો (क्रि.) दिलमें दुःखकी हूले उठना, व्यर्थ जाना, निरर्थक होना, प्रकाश होना, उजाला होना। [उचित।

ભડંગ (क्रि. वि.) बिलकुल, ठीक,

ભડતું (सं.) भुरता, भड़ीता, बैंगन आलू आदिको आगमें सेक कर और फिर उसे छील कर तथा कुचल कर दही इत्यादिके साथ मसाला डाल कर खानेका पदार्थ विशेष।

ભડકાવું (क्रि.) अग्निमें झुलसना, भुरता होजाना, आगमें दमपक होना।

ભડભડવું (क्रि.) इच्छा होना, मन होना, इरादा होना, भड़भड़ाना।

ભડભાડયો (वि.) वाचाल बक्की, बढ़ बढ़ानेवाला, बहुभाषी, भोला, निष्कपटी दिलकी बात एकदम कह देने वाला।

ભડભડી ઉઠવું (क्रि) एकदम क्रोध करना, भभक उठना, बकने लगना। [वाला, मानी।

ભડભાદર (वि.) बड़ा, इज्जत

ભડવાઈ (सं.) भड़वेका काम, भडवेकी कमाई।

ભડવું (क्रि.) दलना, मोटा पीसना, लडना, एकदम जोशमें भड़भड़ना, खांच निकालना, चित्रित करना।

ભડવો (सं.) पुरुषोंको परस्त्रीके साथ, और स्त्रियोंको परपुरुष के साथ मिला देने वाला व्यक्ति। वेश्याओंके यहां रहने वाला पुरुष, स्त्रीवश भर्तार, कुटना, बुरे कार्य की सिद्धि कराने वाला।

ભડસાળ (सं.) गरम राख, उष्ण भस्म, भूबल, जिस राखमें आगकी छोटी छोटी चिंगारियां हों।

ભડાકે (सं.) धड़ाके की आवाज।

ભડાકો (सं) भड़ाका, धड़ाका, तोप बन्दूक का शब्द, तड़ाका, किसी बड़ी वस्तुके ऊपरसे गिरनेका शब्द ।

ભડાકો મારવો (क्रि.) जोरसे (काम) करना, पहिले ही समयमें जीतजाना बिनाडरके बोलना सत्यको दूर रखकर खोटी जबान बोलना ।

ભડાભડ (अ.) धडाधड तड़ातड़ लगातार भड़भड़ शब्द ।

ભડાભૂટ (अ.) जहां तहां फैला हुवा, अव्यवस्थित, बे इन्तजाम,

ભડું (सं.) पतली दीवार, मकानके सामनेकी दीवार ।

ભડે બેસવું (क्रि.) पड़कर भागना, दिवाला निकालना, निस्संतान होना, हीन दशामें होना ।

ભડોભડ (वि.) देखो ભડાભડ ।

ભણ (सं.) सूरज, दिवाकर, रवि ।

ભણ ડુબવો (क्रि.) सूर्यास्त होना दिन छुपाना, संध्या होना ।

ભણકાર-રો (सं.) भ्रांति कारक शब्द, सूचनार्थ शब्द, भनक, शब्द ध्वनि ।

ભણકો (सं.) पूर्ववत् ।

ભણતર (सं.) विद्या, ज्ञान, अभ्यास, अध्ययन पढने का विषय ।

ભણતિયાલ (वि.) विद्वान, पंडित, साक्षर, बहुत पढाहुवा ।

ભણવું (क्रि.) पढना, सीखना, ज्ञानार्जन करना, जो बात मालूम न हो उसे जान लेना, अभ्यास करना, कहना, बोलना, सूक्ष्म दृष्टिपूर्वक ढूंढना ।

ભણવું ગણવું (क्रि.) पढना गुनना, पढकर उसका उपयोग करना ।

ભણીગણીને—पढ लिखकर, होशियार बनकर, विद्वान होकर ।

ભણુંજવું (क्रि.) लेकर भाग जाना, छू होना, दस पचीस होना ।

ભણતા પંડિતનીપજે લખતા લહિયો થાય-अभ्यासद्वारा मनुष्य होशियार होता है ।

ભણીભણીને શા પાટલા ફાડયા—पढ कर क्या किया ?

ભણભણ (सं) भिनभिन, भनक ।

ભણભણ કરવું (क्रि.)भिनभिनाना,

ભણભણવું (क्रि.) पूर्ववत् ।

ભણામણ (सं.) सिखाई, पढाई, फीस, शुल्क, फी, पढानेकी मजूरी ।

ભણાવવું (क्रि.) पढाना, शिक्षा देना। बोधकराना, ज्ञानदेना, उपदेश करना. समझाना सलाह देना आदत करना, अभ्यास कराना, विद्याध्ययन कराना ।

ભણાવી મુકવું (क्रि.) सिखा पढाकर पक्का करना, संकेत करना इशारा करना, सूचित करना, सावधान करना । [तर्फ ।

ભણી (उप.) तरफ, बाजु, ओर,

ભણેલ (वि.) शिक्षित, विद्वान, पठित ।

ભંડારિયું (सं.) ताक, आला, दीवार में बनाया हुवा वस्तु रखनेका स्थान, आलमारी ।

ભંડારો (सं.) जवनार, जातिभोज साधुओंका भोज, अपनी सारी जातिको बुलाकर,जिमानेका कार्य ।

ભંડોલ–ળ (सं.) मूल धन, फन्ड केपिटल, एकत्रित, द्रव्य, पूंजी ।

ભંડોળિયો (सं.) पूंजीवाला ।

ભતરીજી (सं.) भाई की बेटी, भतीजी । [भतीजा ।

ભતરીજો (सं.) भाईका पुत्र,

ભતું–થું (सं.) कच्चा खानेयोग्य उपहार, पुरुष्कार, भत्ता, लौंस,

ભત્રીજી (सं.) देखो भतरीजी ।

ભત્રીજો (सं.) देखो भतरीजो ।

ભથવારું (सं.) खेतमें काम करनेवालोंके लिये रोटी पहुंचानेवाला व्यक्ति ।

ભથવું (क्रि.)बढना, आगे जाना।

ભથાભણું (सं.) जिस पात्रमें खेत पर काम करनेवाले मनुष्यों के लिये खानेका पदार्थ ले जाया जाता है ।

ભથ્થું (सं.) भत्ता, अलाउंस, लौंस, जो जेल में के कैदियांको खाने के लिये पैसे दिये जाते हैं वेतनातिरिक्त वेतन ।

ભદ્રક (सं.) कल्याण, सुख, अबादी, इंद्र जौ, कमल, २२ अक्षर का छन्द विशेष, देवदार का वृक्ष ।

ભદ્રકંટ (सं.) बड़ा गोखरू ।

ભદ્રકાય (वि.) अच्छे शरीर वाला ।

ભદ્રા (सं.) द्वितीया, सप्तमी, और द्वादशी तिथि । कायफल, गौ, दुर्गा, पार्वती, गोकर्णी, वनस्पति विशेष, रास्ना, नीलवृक्ष, रूपवान स्त्री । [क्षौर ।

ભદ્રાકરણ (सं.) मुंडन, हजामत,

ભદ્રાક્ષ (सं.) कृत्रिम रुद्राक्ष, वृक्ष विशेष ।

ભદ્દલ (सं.) मुंडन, सारे सिर को अस्तुरे से मुंडन करना ।[कटाना ।
ભદ્દલ કરાવું (क्रि.) मुंडाना, बाल
ભપ (अ.) झपाटे से (पवन का वेग)
ભપકાદાર (वि.) दंभी, पाखण्डी, रौनकदार, आडम्बरी, दिखाऊ ।
ભપકાબંધ (वि.) पूर्ववत्
ભપકાવવું (क्रि.) भड़काना, भपकी देना, प्रज्वलित करना, जोर से पानी फैलाना, क्रुद्ध करना, जलाना । [भड़की, दहशत ।
ભપકી (सं.) घुडकी, धमकी,
ભપકો (सं.) धमकी, घुड़की, रोब, त्यौर, दिखावा, आडम्बर, स्वरूप, अग्नि, प्रज्वलन, ठाठ ।
ભપ્પલ (वि.) अत्यन्त स्थूल और निर्बल, भोंदू, पदर, पोला, कमजोर ।
ભપુડો (सं.) देखो ભપકો
ભભક (सं.) तेजी चमचमाहट, शोभा, कांति, लालित्य, खूबी, पानी।
ભભકાવવું (क्रि.) देखो ભપકાવવું ।
ભભકો (सं.) देखो ભપકો ।
ભભડવું (क्रि.) खाने के लिये जी चलाना, भोजन के लिये लार टपकना जोर से आवाज करना (युद्ध में) ।

ભભડો (सं.) भयंकर गर्जन, हींग मिर्च और संचोरा (क्षार विशेष) का काढ़ा । क्वाथ विशेष ।
ભભરાવવું (क्रि.) किसी के ऊपर थोड़ा थोड़ा चूर्ण इत्यादि डालना, छिड़कना ।
ભભરી (वि.) बिखरी, भुरभुरी ।
ભભુકો (सं.) भभका, एकदम जोश में प्रज्वलन ।
ભભુત-તી (सं) राख, भस्म, मंत्रित भस्म, देवता के सामने की धूप इत्यादि की भस्म, विभूति ।
ભભુતી ચોળવી (क्रि.) भीख मांगना ।
ભભુતી ચોળાવવી (क्रि.) किसी की अत्यन्त, दुर्दशा कर देना ।
ભમંડળ (सं.) कांतिवृत्त, आकाश की गोल रेखा जहां से सूर्य गति करता है ।
ભમતી (सं.) मक्खी, माक्षिक,
ભમર (सं.) भौंरा, भ्रमर, अलि, मधुप, भौं, भृकुटी घुमरी, भंवर, जलभ्रम ।
ભમરડી (सं.) छोटा भौंरा, छोटा लट्टू, चकरी, भौंरी, भ्रमरी ।
ભમરડો (सं.) लट्टू, भौंरा, काष्ठ, अथवा, धातु का बना हुआ गोल

गोल खेलने का खिलौना जिस को डोरी लपेट कर जमीन पर फेंकते हैं और वह भन्‌भन्‌ शब्द पूर्वक चक्कर खाता है ।

ભરમભોળું (वि.) भोले, सीधेसादे, पवित्र । [प्रकारका मिट्टीका बर्तन ।

ભમથી (सं.) पानी के लिए एक

ભમરિયું (सं.) एक प्रकारका स्त्रियों के पहिरनेका वस्त्र ।

ભમરી (सं.) भ्रमरी, भौंरी, भृंगी, चकरी, फिरकी, छोटा भौंरा ।

ભમરીઉં (सं.) देखो ભમરિયું

ભમરો (सं.) भौंरा, अलि, भ्रमर, भृंग, मधुप, पीले मुख तथा काले शरीरका लकड़ी में छेद करनेवाला जीव, एक प्रकारकी बड़ी काली मक्खी जो सुगन्धित पुष्पों पर मंडराया करती है, जलमें का भंवर, गोल चक्कर, वर्षाऋतु मे उड़नेवाला एक जीव जिसकी पूंछ लम्बी होती है । पशु अथवा मनुष्य के शरीरपर बालोंका चक्कर ।

ભમરો ભુસાઇ જવું (क्रि.) विधवा होना, रांड होना, वैधव्य प्राप्त होना ।

ભમવું (क्रि.) भटकना, घूमना, चक्कर खाना, भ्रमण करना, फिरना ।

ભમાવવું (क्रि.) भ्रम में डालना, चक्करमें पटकना, ठगना, घुमाना, धोका देना ।

ભમેલ (वि.) भ्रमित, घूमा हुवा, भटका हुवा, फिरा हुवा, फटा हुवा।

ભંપાડો (वि.) भैंसे सरीखा मोटा, मोटा, स्थूल, भोंदू ।

ભંપોલ (वि.) देखने में मोटा और भीतर से पोला ।

ભંભેરવું (वि.) कुछ उलटा सीधा समझाना, उस्काना, ठगना, छलना

ભંભેરણી (सं.) उत्तेजना ।

ભભેરાવું (क्रि.) अनुचित मार्ग पर ले जाना, भ्रम में डालना, धोका देना । [का पात्र ।

ભંભો (सं.) पानी भरनेका मिट्टी

ભંભોળવું (क्रि.) ढूंढना, तलाश करना, अनुसन्धान करना, खोजना, शोधना, ध्यानपूर्वक देखना ।

ભમ્મ (अ०) धम्म, ऊपरसे किसी बड़ी वस्तु के गिरनेका धमाका ।

ભમ્મર (सं.) भौं, भौंह, भृकुटी ।

ભયકંપ (सं.) डरकी थरथरी ।

ભયા (सं.) भाई, बन्धु, भैया ।

ભયાતુર (वि.) भयातक, डरपोक, भयभीत, भयविह्

ભયાન (वि.) भयङ्कर डरौना, भयप्रद, विकराळ ।

ભયો-યુ (क्रि.) हुवा, बना ।

ભયો (क्रि वि.) बहुत हुवा, बस हुवा ।

ભયો કરાવવો (क्रि.) मानता पूरी होने पर पुजारीकी साक्षी भराना ।

ભયો (सं.) भाई, बन्धू, पति, खाविन्द, उत्तर भारत का रहने-वाला विदेशी ।

ભય્યો (सं.) पूर्ववत्

'ભર્યું' ભાદર્યું' (वि) धन जन से पूर्ण, कुटुम्बी और श्रीमान, भरापूरा ।

ભર (सं.) अधिक से अधिक, होवे उतना, पूर्ण, बड़ा, नापा हुवा, तौला हुवा । [निद्रा,

ભરઉંઘ (सं.) गहिरी नींद, पूर्ण

ભરગત (सं.) भार वजन, बोझा ।

ભરકૂચ (सं.) निकम्मे मनुष्यों का समुदाय ।

ભરખ (सं.) भक्ष, अहार, भोजन ।

ભરખવું (क्रि) चबाना, खाना, डसना । [खूब, यथोचित, बेहद ।

ભરચક-ટ (सं.) पुष्कल, बहुत,

ભરચંદી (सं.) अधिक से अधिक चाहिये उतना थोड़े का दाना ।

ભર ચોમાસું (सं.) खूब वर्षा, वर्षाऋतु भर, खूब बरसात के दिन । [द्वार।

ભરજરી (सं.) जरीन, खूब जरी-

ભરજુવાની (सं.) भरी जवानी, पूर्ण यौवन, पुरुष को २१-२५ वर्ष की अवस्था में और स्त्री को १५-२२ की अवस्था में ।

ભરડવું (क्रि.) दलना, मोटा मोटा पीसना, बड़बड़ना, गुन-गुनाना, अशिष्ट बोलना, अधिक बोलना, जो जी चाहे सो लिख मारना ।

ભરડો (सं.) दलिया, मोटा मोटा चूर्ण चूरी, महादेव का पुजारी, तपोधन, छपर में बासों के बन्द, गले में का रोग विशेष ।

ભરણ (सं.) भरना, पूरना, पालना, पोषण करना, रक्षा, बचाव, गुजर, दुखती हुई आख में औ-षधि इत्यादि भरना ।

ભરણી (सं.) सत्ताईस नक्षत्रों में का दूसरा नक्षत्र, पूर्ति शाक बनाने का पात्र विशेष ।

ભરણું (सं.) संग्रह, सरकारी रुपया देना, पूर्ण करना, ढेर, लबालब ।

ભરત (सं.) माप, क्षेत्रफळ, नाप तोल के लिये बना हुवा पात्र, नकशीका काम, कसीदा, ढाली हुई धातु, राजा दशरथके पुत्रका नाम, शकुंतला के पुत्रका नाम, एक ऋषि का नाम।

ભરતખંડ (सं.) शकुंतला के पुत्र भरत के नामसे पड़ा हुवा हिंदुस्थान का नाम, भारतवर्ष, हिन्दुस्थान, आर्यावर्त, इण्डिया, ब्रह्मावर्त्त।

ભરતર (सं.) भरकर देने के लिये बनाया हुवा तौल परिमाण विशेष, सीसा जस्त, कांसा मिला हुवा पीतल, क्षेत्रफल, माप, जिस में तस्वीदार पात्र बनते हैं, सांचा।

ભરતલ-ળ (सं.) पूर्ववत्

ભરતરી (सं.) नाप, क्षेत्रफल, माप, भर्तृहरि, विक्रमादित्य राजा के भाई।

ભરતવર્ષ (सं.) देखो ભરતખંડ

ભરતિયો (सं.) भरतका काम करनेवाला।

ભરતી (सं.) ज्वार, समुद्र में अथवा उससें मिली हुई खाड़ी और नदी में छः छः घण्टे के अन्तर से आनेवाला पानीका चढ़ाव (२४ घंटे में २ बार ज्वार भाटा समुद्र में आता है) अधिक प्राप्ति, फौज में वृद्धि, नौकर रखना, वृद्धि। [करनेवाला।

ભરતીઓ (सं.) भरतका काम

ભરતીઓટ (सं.) ज्वार, भाटा चढाव उतार, घटा बढी, न्यूनाधिक।

ભરથાર (सं.) देखो ભરતાર।

ભરપટ (क्रि वि.) देखो ભરચટ

ભરપાઇ (सं.) रसीद, मालप्राप्ति या धन प्राप्ति की दस्तावेज।

ભરપૂરતા (सं.) बहुतायत, ज्यादती, इफरात, अधिकता।

ભરપૂરી (सं.) पूर्ति, सम्पूर्णता।

ભરપોષાક (सं.) पूरी पौशाक से फुल ड्रेस, कपडे लत्तों से सुसज्जित।

ભરભરૂં (वि.) कोरा, सूखा, चिकनाई रहित, बुकनी, भुरभुरा।

ભરભાંખળું (सं.) गोधूली, संध्या सूर्योदयके पहिलेका प्रकाश, उषा।

ભરમ (सं.) भ्रांति, शक, भ्रम, वहम, गुप्त रहस्य, गुप्त, भेद,।

ભરમકકમ (वि.) बहुत विपुल, विशेष, ज्यादा, अत्यधिक।

ભરમજલસ (सं.) भरीसभा सरेबाजार, भरे दरबार।

ભરમાંવવું (क्रि.) देखो ભંભેરવું
ભરમાંવું (क्रि.) धोका देना, चक्करमें डालना, ठगाना, छलना,
ભરમી (सं) एक प्रकारके पत्ते होते हैं जो पागल मनुष्य को अच्छा होने के लिये सेवन कराये जाते हैं। [ભજલસ।
ભર મિજલસ (सं.) देखो ભર-
ભરરસ્તો (सं.) आम रास्ता, स्वतंत्र और उत्तम मार्ग उच्च मार्ग।
ભરવસુલ (सं.)पूरी मालगुजारी।
ભરવાડ (सं.) बडरिया, भेड़ी बकरी पालने वाला मनुष्य।
ભરવાડણ (सं.) गडरियेकी स्त्री।
ભરવાડી તાણવી (क्रि.) सोजाना।
ભરવાડો (सं.) गडरिया, एक प्रकार का वृक्ष।
ભરવું (क्रि.) भरना, पूरा करना, ऋण चुकाना, बन्दूकमें गोळी डालना, सहना, पाना, खेंचना, नापना, कसीदा करना, चलाना, चन्दा देना, लादना, उंडेलना, छिड़कना, पानी भरना लाना, पानी खींचने इत्यादि की नौकरी करना, लोगोंको एकत्रित करना, रंग करना, सीना पूर्ण करना।

ભરાઈ આવવું—જવું (क्रि) थक जाना भारी होना, अकड़ जाना।
ભરાઈ જવું (क्रि) घबरा जाना, फंस जाना, उलझना, छुपना गुप्त रखना बिलकुल भरना, चिपकना।
ભરાઉ (सं.) भरा हुवा, गूदेदार, स्थूल, मोटा, पुष्ट, ठोस।
ભરાવ (सं.) झुंड, समूह, पूर्ति, भर्ती, जथा, भीड़, संघ।
ભરાવવું (क्रि.) उलटा सीधा सुझाना, कान भरना, मंत्र पढाना।
ભરાવું (क्रि.) भर जाना, पूर्ण होना, लिपट रहना, भीतर घुसना।
ભરિપીવું (क्रि.) मिलना, ऐक्य होना।
ભરી આપવું (क्रि.) नुकसान का बदला चुकाना, ठीक करना, सुरक्षित रखना, माप डालना।
ભરીપુરી પ ભવું (क्रि.) पूर्ण रूप में पाना, उचित रूपमें प्राप्त करना।
ભરી મૂકવું (क्रि.) संचित कर रखना, संग्रह करना, इकठ्ठा कर रखना।
ભરીલેવું (क्रि.) हानि का पूरा बदला ले लेना, नुकसान ले लेना।

ભરીપૂરી (क्रि. वि.) सब, समस्त परिपूर्ण ।

[घर ।

ભર્યુંઘર (सं.) धन जन से पूर्ण

ભરૂસો (सं.) विश्वास, यकीन, भरोसा, आशा, प्रतीति, प्रत्यय ।

ભરેડી (सं.) रंग, कान्ति, ढांचा, रूप, रेखा, रूप ।

ભરેભાણે (क्रि. वि.) एक ही बार लिया हो और पीछे से न लिया हो, लिया हुवा पदार्थ सब खा जाना और उच्छिष्ट न छोडना, भरी थाली पर ।

ભરેલું (वि.) पूर्ण, पूरा, भरा हुवा, परिपूर्ण ।

ભરેસપત (सं.) बृहस्पतिवार, गुरुवार, जुमेरात (यावनी भाषा)

ભરોસાદાર (वि) विश्वस्त, प्रामाणिकाविश्वासू, ईमानदार, धार्मिक ।

ભરોસો (सं.) भरोसा, विश्वास, आशा, प्रतीति, प्रत्यय । [विशेष ।

ભલકો (सं.) भाला, बल्लम, शस्त्र

ભલતાઈ (सं.) भलाई, भलापन, भलमंसी, सज्जनता । [कुछ भी ।

ભલતું (वि.) योंहीं, कोई भी,

ભલપણ (सं.) भलाई, अच्छापन, भलमनसाहत, सज्जनता ।

ભલભલા (सं.) बड़े लोग, पूज्य पाद, योग्य मनुष्य, योग्य, पूज्य।

ભલભલું (वि.) कईएक, बहुतेक, प्रायः अक्सर, अधिकांश ।

ભલમનસાઈ (सं.) भलाई, सभ्यता प्रमाणिकता, नम्रता, सिधाई । नेकी ।

[बड़े बड़े ।

ભલાભલા (वि.) अच्छे अच्छे,

ભલાભલી (वि.) बडे बडे यशस्वी पुरुष हों ऐसी (दुनिया) विस्तृत (सृष्टि)

ભલામણ (सं.) शिफारिश, अनुग्रह कारण, गुण वर्णन, लाभ पत्र ।

ભલીભાત (क्रि. वि) अच्छी तरह, भली प्रकार । अच्छी ।

ભલીવાર (सं.) साहस, हिम्मत, तत्व, पौरुष, शौर्य्य, होश, शान शौक़त ।

ભલું (वि.) अच्छा, सभ्य, सच्चा नर्म मिजाज का, भला, ईमानदार, दयालु, नम्र सुशील, सज्जन, साधु, शांत प्रकृति, कुशल, क्षेम, मंगळ, आनन्द, (क्रि. वि) अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम ।

ભલે (क्रि. वि.) अच्छा, बहुत उत्तम, अति श्रेष्ठ, शाबाश, धन्य, वाहवाह ।

ભલેરું (वि.) देखो ભલું [वान ।

ભલોધનેતર (वि.) अत्यन्त धन-

ભલો (सं.) भाला, बल्लम, शस्त्र विशेष ।
ભલ્લ (सं.) भाला, बल्लम, एक प्रकार का रोग, सन्निपात, (वि.) भला, अच्छा, श्रेष्ठ । [जंतु विशेष ।
ભલ્લુક (सं.) रीछ, ऋक्ष, बनैला
ભવ (सं.) संसार, जगत, जन्म, प्राप्ति, शिव, महादेव, मनोभव, अवतार ।
ભવન (सं.) घर, गृह, स्थान, वासस्थान, सदन, निकेत, ठाम, धाम, मकान, अस्तित्व, जगह, आश्रम । [झगड़ा ।
ભવતિ (सं.) तकरार, फसाद,
ભવર (सं.) देखो ભમ્મર
ભવવ્યથા (सं.) सांसारिक दुःख ।
ભવાં (सं.) देखो ભવર
ભવાઇ (सं.) चलते फिरते नाटक के खिलाडी का एक्ट, लज्जा, अपमान ।
ભવાઇ થવી (क्रि.) फजीहत का काम होना, व्यर्थ लोगों की हंसी का कारण होना, अपमान होना ।
ભવાં ચઢાવવાં (क्रि.) तेवरी चढाना घुड़कना, डाटना, आंखें दिखाना ।
ભવાડો (सं.) देखो ભવેડો ।
જગત ભવાડો=जगत में फजीहत, अपयश, नामोशी । નાગે ભવાડો लेना न देना और व्यर्थ का अपवाद ।
ભવાબ્ધી (सं.) संसार की मार्ग ।
ભવાયો (सं.) स्वांग रचने वाला, नाटकी बेशरम, निर्लज्ज, खिलाडी कत्थक ।
ભવિષ્ય થવું (क्रि.) मरजाना, मृत्यु होना, अन्त होना (काठियावाड में) [भौंहें भृकुटी ।
ભવું (सं.) देखो ભમ્મર । भौं,
ભવેડો (सं.) फजीहत, अपमान
ભવૈ (सं.) एक प्रकारका नाटक, नृत्यगीत, स्वांग रखकर किया हुआ खेल ।
ભવાભવ (क्रि. वि.) उत्तरोत्तर, जन्मान्तर, जन्मजन्म, सदासदा, हमेशा । [चाह, (खानेके लिये)
ભશકો (सं.) मन, इच्छा, मर्जी,
ભશકા થવા (क्रि.) खानेकी इच्छा करना ।
ભસ (सं.) राख भस्म, छार ।
ભસકું (सं.) वर्षाऋतुकी बौछारें।
ભસભસીત (वि.) बहुत सूखा, जल्दीसे टूट जाने वाला, भुरभुरा ।
ભસમ (सं.) भस्म, राख, छार, रक्षा ।

ભસવું (क्रि.) भौंकना, भूसना कुत्तेकी आवाज, व्यर्थकी निन्दा करना, बोलना। [सो बोल उठना।
ભસી ઉઠવું (क्रि.) मनमें आवे
ભસતાકુત્તા કાંટે નહિં=जो बोले वह करे नहीं, गरजे वह बरसे नहीं।
ભસતા કુતરાને રોટલીનો કડકો (આપવો) बोलते हुएको लोभ द्वारा बन्द करना। काम निकालना।
ભસ્તું-સ્તો (सं.) जठर, पेट, उदर, पारसी लोगोंका कबरस्तान।
ભસ્મક (सं.) चांदी, बायविडंग।
ભસ્મકુટ (सं.) इस नामका पर्वत।
ભસ્મગંધા (सं.) पित्त पापडा।
ભસ્મગધિકા-ની (सं.) पूर्ववत।
ભસ્મગર્ભા (सं.) पूर्ववत।
ભસ્મરંગી (वि.) राखके रंगका।
ભસ્માંગ (सं.) कपोत पक्षी, एक जातिकी मणि। [खौफ।
ભળ (सं.) सङ्कोच, डर, शर्म,
ભળકડું-ભાંખળું (सं.) संध्या, सूर्योदयके पहिलेका समय, ऊषा, थोडा प्रकाश, दिखे न दिखे ऐसा प्रकाश।
ભળકું (सं.) भाला, बल्लम।

ભળભાંખડું (सं.) देखो ભળકડું
ભળતું (वि.) मुवाफिक, पसंदीदा, दिल पसन्द, रोचक मानने योग्य।
ભળવું (क्रि.) मिलना, समान होना, सम्मिलित होना, शामिल होना, समान होना, जोड़ना, एक होना, जानकार होना।
ભળભાળિયું (वि.) देखो ભડભડિયો।
ભળાવવું (क्रि.) परिचय करना, पहिचान करना, सौंपना, पशुको ढोरोंमें हिलाना। [डांडां।
ભાં (अ०) गाय बैलका शब्द,
ભાંગ (सं.) एक प्रकारका विशैला पेड, मादकपत्ती, भंग, विजया, एक प्रकारकी पत्ती जिसे प्रायः अशिक्षित लोग घोटकर पानीमें छानकर पीते हैं और नशेमें उन्मत्त रहते हैं। तमाखू।
ભાંગ પીવી (क्रि.) भांगका पानी पीना, भांगके नशेमें कुछ का कुछ बकना बिना विचारे बोलना।
ભાંગ ચઢવી (क्रि.) भांगका नशा होना, बेसुद्धि होना, उन्मत्त होना अहंकार होना।

ભાંગણું (वि.) तोडते समय जिसका चूरा हो जावे, टूटनेवाला।
ભાંગર (वि.) चांवलोंका चूरा।
ભાંગરો (सं.) भंगरा, एक प्रकार का वृक्ष, जो वर्षाऋतुमें उत्पन्न होता है। [प्रकट करना।
ભાંગરો વાટવો (क्रि.) गुप्त बात
ભાંગવું (क्रि) तोड़ना, टुकड़े करना, अलग करना, भाग करना, कमदेना, न देना, रस्सी में बल देना, बटना।
ભાંગ્યું (वि.) टुकड़ हुवा, खंडित टूटा हुवा, फूटा हुवा, विभाजित।
ભાંજગડ (सं) तकरार, झगडा, होना, वाद विवाद, लडाई झंझट पंचायत, खटपट, समाधान, फैसला, न्याय।
ભાંજગડિયું (वि.) तकरारी, फसादी झगडेल, विषम, दुर्बोध, गूढ, गहन। [पक्ष, दलाल, टंटाखोर।
ભાંજગડિયો (सं.) लबार, अमीन
ભાંજગડિયાના છોકરા ભુખે મરે= दूसरों की पंचायत और अपना काम खराब।
ભાંજણી (सं.) संख्याका भाग करना, एक प्रकारका गणित विषय, रस्सीमें बलदेना, भाग, हिस्सा।

ભાંજવું (क्रि.) देखो ભાંગવું।
ભાંડ (वि.) उचक्का, नंगा, असभ्य भाषण, एक प्रकारकी जाति जो बहुत बीभत्स शब्द बोलती है गाती है मज़ाक करती है और पशुपक्षी की बोली बोलती है।
ભાંડબોલવું (क्रि.) अपशब्द बोलना, गाली बकना, गन्देलफज बोलना।
ભાંડણ (सं.) गाली, बकबक, अपशब्दोच्चारण।
ભાંડરુ-ભાંડરૂં (वि.) भाई बहिन, एक मा बापके पुत्र, कुटुम्बीजन।
ભાંડવું (क्रि.) गाली बकना, गन्दे शब्द बोलना, निन्दा करना अप शब्द बोलना, बुरे शब्द बोलना ओछा बोलना। [ભાંડરવું।
ભાંડું (सं.) पात्र, बर्तन, देखो
ભાંભળું (वि.) खारी, क्षारयुक्त, खारा।
ભાંભેર (सं.) सिर मुंडाते समय बाल जो रह गये हों उन्हें निकलाना।
ભાંભરું-ળું (वि.) क्षार युक्त, खारी, जिलबिला पानी।
ભાભળું-ભળું (वि.) पूर्ववत्।
ભા (सं.) बड़ों के लिये पूज्य शब्द, दादा, बाप, भाई, જ્યાં મારા ભા ખાસે=मर जा, जहां मेरे पूर्वज गये वहां जा।

ભાઇ (सं.) एक मा से उत्पन्न पुत्र, सहोदर, बन्धु, भ्रातृ, સાવકોભાઇ पिताकी दूसरी पत्नीका पुत्र, सौतेला भाई, । મસિયા ભાઇ (सं.) मौसीका पुत्र મોળાભાઇ (सं.) मामाका बेटा । પિત્રાઇભાઇ (सं.) चचेराभाई, काकाका बेटा । ફોઇ યાઇ (सं.) भूवाका पुत्र ।

ભાઇ (सं.) स्नेही, मित्र, बन्धु, दोस्त, सुहृद, जाति स्वभाव दरजा इत्यादि प्रदर्शित करनेके लिये दूसरे शब्दों के साथ जोडा जाता है, जैसे भटभाई, सिपाहीभाई इ०

ભાઇ ભાંડુ (सं.) भाई बहिन, भाई बन्धू, सगे सम्बन्धी ।

ભાઇ બાપા કરવા (क्रि.) आजिजी करना; निवेदन करना, नम्रता पूर्वक कहना हाहाखाना, निहोरे करना ।

ભાઇચારો (सं.) बन्धुत्व, मित्रता भ्रातृभाव, स्नेह,मैत्री, प्रेमसम्बन्ध।

ભાઇજી (सं.) पतिका बडा भाई, जेठ, ज्येष्ठ, पिता, बाप ।

ભાઇડા-ડો (सं.) वर, धनी, पति, पुरुष, खाविंद, खसम ।

ભાઇબન્ધ (सं.) स्नेही, बचपनका संगी, समाजका मेंबर, रिश्तेदार, आतीय ।

ભાઇબીજ-ભાબીજ (सं.) कार्तिक, मासके शुक्ल पक्षकी द्वितीया तिथि, इस दिन भाई बहिनके यहां भोजन करने जाता है । भैया दूज ।

ભાઇભાંડુ (सं.) भाई बहिन ।

ભાઇપણી (सं.) असली दोस्ती, यारी, मित्राचार, मित्रता, सुहृदता।

ભાગ્ય (सं.) भाग्य, तकदीर, किस्मत, अदृष्ट, प्रारब्ध, दैव ।

ભાગ્ય ઉઘડવું-ફળવું-ભળવું (क्रि) तकदीर खुलना, भाग्योदय होना, सुदिन आना, प्रारब्ध चेतना ।

ભાગ્ય ફુટવું (क्रि.) भाग्यफूटना

ભાગ્યવંતવાન-શાળી (वि.) किस्मती, प्रारब्धी, भाग्यशलि, खुश किस्मत, अच्छे तकदीरवाला।

ભાગ્યે (क्रि. वि.) पूर्ववत् ।

ભાગ્યેડો (वि.) देखो ભાયડો।

ભાકડ (सं.) जो दूध न देवे, बांझ, दूधसे हटा हुवा पशु ।

ભાકડકથા (सं.) गप्प महापुराण, झूंठी बातें, असत्य वर्णन, असंभव लम्बी लम्बी बातें ।

ભાખરી (सं.) बाटी, मोटी छोटी गेहूं की रोटी, गांकरी, रोटी ।

ભાકરો (सं.) रोट, मोटी रोटी ।

ભાખવું (क्रि.) बोलना, भाषण करना, कहना कथन करना, भविष्य कहना । हिन्दी, बोल चाल ।
ભાખા (सं.) भाषा, व्रज भाषा,
ભાંખોડિ (क्रि. वि.) घुटनेपर ।
ભાગલુ (वि.) टूटा हुवा, खंडित फटा हुवा, दरारवाला, तडाका हुवा, ટંટિયાનું ભાગલુ (वि.) जो चल न सके । હાથ પગનું ભાગલું-आलसी सुस्त, काहिल, काम चोर । [निराशा, निरुत्साह।
ભાગલા પગ (सं.) नाउम्मेदी,
ભાગલાં હાડકાં (सं.) आलसी, सुस्त । [हुए, निराश होकर ।
ભાગલે પગે ((क्रि. वि.) डरते
ભાગબો (सं.) माता के लिये परसा हुवा नैवेद्यका थाल ।
ભાગવુ (क्रि.) तोड़ना, फोड़ना चूराचूरा करना, टुकड़े टुकड़े करना हिस्से करना, बाँटना, वापिस न देना, अदा न करना।
ભાગવું (क्रि.) टुकड़े होना, चीर होना, दरार होना, छूट भागना, दौड़ जाना, तोड़ना, दिवाला निकालना, उतारना ।
ભાગી પડવું (क्रि.) ठेठ तक न पहुँच कर बीचमें ही अटक रहना।
ભાગી ભેળવવું (क्रि.) भागाकार गुणाकार इत्यादि जोड़ हिसाब करना ।
ભાગીરાત (वि.) पिछली रात. रात्रि के अंतिम प्रहर, आधी रात के पीछेका समय । [ओछा तोल.
ભાગતું તોલ (वि) कम वजन,
ભાગળ (सं.) देखो ભાગોળ ।
ભાગળિયો (सं.) बाजारमें दुकान लगाकर बैठनेवाला, दूकानदार, द्वारपाळ । [दौड़धूप ।
ભાગાભાગ (सं.) दौड़ादौड़,
ભાગિયું-યો-દાર (वि.) पांतीदार, हिस्सेदार, सहयोगी, संगी, साथी।
ભાગિયેણુ-ણો (वि.) पूर्ववत् ।
ભાગીદાર (वि.) पूर्ववत् । [पांती ।
ભાગીદારી (सं.) हिस्सा, भाग.
ભાગુ (वि) टुकड़े, टुकड़े टूटा, फटा, (पात्र) जिससे परिश्रम न हो, आलसी, प्रमादी ।
ભાગો (वि.) अजड़, रुक्ष, निरस ।
ભાગોળ-ગળ (वि.) नगरके कोटके पासका द्वार, नगरके बाहिरकी छूटी हुई जगह ।
ભાગોળે જવું (क्रि.) टट्टी जाना, पैखाने जाना, जंगल जाना, हगने जाना, मलोत्सर्ग करना, झाड़े जाना ।

ભાગોવડ (वि) मध्यम स्थितिका, बीचके वर्गका, मध्यम श्रेणीका।

ભાગ ફુટવું (क्रि.) इच्छा पूर्ण न होना, बुरा होना, दैवकोप होना।

ભાગ્યે (अ०) योगात्, दैवयोगे, कदाचित्, कदापि, क्वचित्, कोकाले, शायद, संभवतः।

ભાચરો (सं) मिट्टीका पात्र।

ભાજક (सं.) जिस संख्यासे भाग दिया जावे, बांटनेवाला गणित)।

ભાજવું (क्रि.) देखो ભાગવું।

ભાજી (क्रि.) साग, तरकारी, शाक, शाक बनाने योग्य कोमल पत्र पुष्प, फल अथवा मूल इत्यादि।

ભાજીખાઉ (वि.) पोचा, निर्बल, शौर्य्य हीन, कोमल, शक्तिहीन, डरपोक।

ભાજીપાલો (सं.) तरकारी, शाक।

ભાજીમૂળા (वि.) न कुछ, व्यर्थ, अयोग्य।

ભાટ (सं.) चारण, स्तुतिगायक, वन्दी, वरदैत, एकजातिविशेष, ब्राह्मणोंकी एक जाति, खुशामद करनेवाला, झूठी प्रशंसा करनेवाला

ભાટડી-ણ (सं.) भाटकी स्त्री, भाटनी। [मोहल्ला।

ભાટવાડો (सं.) भाटोंके रहनेका

ભાટવેડા (सं.) अतिशयोक्ति भाषण, भाटकी तरह स्तुतिगान।

ભાટાઈ (सं.) देखो ભાટવેડા। भाटकी पदवी, कहावत, मसल।

ભાટિયો (सं.) गोसाईंजी महाराजको माननेवाला यज्ञोपवीतयुक्त वैष्णवोंकी एक जाति विशेष, ये अस्ली रजपूत थे, दूधवाला, ग्वाला, घोसी।

ભાઠી (सं.) देखो भट्ठी।

ભાઠું (सं.) नदीके किनारे छिछले पानी वाली जगह, रेती, व्रण, क्षत, चांदी।

ભાઠેલા (सं.) ब्राह्मणोंकी जाति विशेष इनका अस्ली नाम अनावल है इनकी बस्ती सूरतके जिलेमें है जो कृषिकार्य करते हैं।

ભા(सं.) चूल्हा, भट्ठी, अन्न भूननेका बड़ासा चूल्हा।

ભાડભુંજો (सं.) भड़भूंजा, अन्न आदि सेकनेवाला, कांदू, भूंजा, भूंजनेवाला, एक जातिविशेष।

ભાડવાત (सं.) देखो ભાડુત।

ભાડાચિઠ્ઠી—નામું (सं.) किरायेका पट्टा, भाड़ेके लिये लिखितपत्र।

ભાડિયો (सं) अन्न सेकनेका मिट्टीका एक पात्र।

ભાડું (सं.) भाड़ा, किराया, महसूल, मिहनताना, लगान ।

ભાડાનું ઘર (सं.) किरायेका मकान, भाड़ेकी झोंपड़ी । [लेना।

ભાડે રાખવું (क्रि) किराये पर

ભાડાની વેહેલ ઉઘાડીભેગ-जहातक बनी वहातक बनी बादमें तू तेरे घर और मैं मेरे घर ।

ભાડુત (सं.) किरायेदार, भाड़ेती।

ભાડુતી (वि.) मजदूर. ठांकेदार, भाड़ेका घोड़ा या गाड़ी, किरायेका टट्टु, पैसे लेकर काम करनेवाला ।

ભાડે આપવું (क्रि) किराये पर देना, भाडे पर देना ।

ભાડે રાખવું (क्रि) भाड़े लेना, किराय पर लेना ।

ભાણ (सं) नाटकके दस रूपको मेंसे एक, सूर्य, भानु, रवि, भास्कर।

ભાણકી (सं.) भानजी, बहिनकी पुत्री ।

ભાણજી (सं.) पूर्ववत् ।

ભાણકો (सं.) भानजा, बहिनका पुत्र, भागिनेय । [पूर्ववत् ।

ભાણજો (सं.) ભાણજો ભાણિયો।

ભાણી (सं.) देखो ભાણજી ।

ભાણું (सं.) भोजन द्रव्ययुक्त थाली, भोजन, थाली, रसद ।

ભાણા ખડખડ (सं.) पेटको पूरा खानेके लिये नहीं मिलना ।

ભાણાઅંતર (सं.) खानेको रखने में फेरफार रखना ।

ભાણું માંડવું (क्रि.) भोजन परसना, खानेके लिये आगे रखना । खाने बैठना ।

ભાણામાં ધૂળ નાખવી (सं.) निर्वाहमें बाधा डालना, सुखमें लात मारना, भोजन बिगाडना ।

ભાણેજ-ણો (सं.) बहिनका पुत्र भानजा, भागिनेय ।

ભાણેજ ભામ નહીં ને જમાઈ લાગ નહી=हिन्दूशास्त्रानुसार भानजेका भाग नहीं गिनाजाता उसी तरह मिल्कियतमें जॅवाईका हिस्सा नहीं गिनाजाता । [भाजन ।

ભાપડ (सं.) पात्र, बर्तन, बासन,

ભાપડુ (सं.) भाई, बन्धु, सगपन, रिश्ता । सगा, प्रेमी, बहिनभाई ।

ભાત (सं.) छिलके युक्त चॉवल, धन, उबले हुए चावल, भाँति, तरह, तर्ज, ढँग, ढांचा, प्रकार, ढब, छटा, डौल, रीति, जाति, नमूना ।

ભાત પાડવી (क्रि.) अपमानित करना, निंदा करके मानहानि करना। [चित्र विचित्र, बहुरंगी।
ભાત ભાતનું (वि.) तरहतरहका,
ભાતિયું (सं.) उबले हुए चांवलोंका पानी (मांड) निकालनेका छिद्रयुक्त पात्र, रांधाहुवा भात निकालनेका बर्तन। [ભાતભાતનું
ભાતી-તીભર-તીલું (वि.) देखो
ભાતું-થું (सं.) मुसाफिरीमें खानेकी खुराक, राहखर्च, मार्गमें यात्राके समय खानेका पदार्थ, भत्ता, અળાઉંસ, लौंस, वेतनके अतिरिक्त वेतन।
ભાતો-થડો (सं.) देखो ભાથો.
ભાથી (सं.) वीर, भट, शूर, योद्धा,
ભાથો (सं.) तूण, तरकस, तीरों के रखनेका कोष, इषुधि, निषङ्ग, तुणीर, मुसाफिर या फौजी सिपाही का सामान रखनेका थैला।
ભાદરવાની ભેંસ (सं.) जीव विशेष (वि.) फूल के मोटा हुवा पुष्ट मनुष्य जिससे चलाफिराभी नहीं जाता हो।
ભાદરવો (सं.) भाद्रपद मास, वह हिन्दू मास जो उत्तरा भाद्रपद और पूर्वा भाद्रपद नक्षत्रोंके उदय के समय होता है, भादों, भादवा, वर्षका छठा महिना, विक्रम वर्षका ११ वां महीना, (गुजरातमें, क्योंकि कई जगह कार्तिक माससे वर्षारंभ होता है।)
ભાદ્રપદી (सं.) भादों मासकी पूनम भाद्र पौर्णिमा, तिथि विशेष।
ભાન (सं.) सुधि, होश, स्मरण, स्मृति, याद, ज्ञान, बोध, चेत, समझ, बुद्धि, अक्ल, कल्पना, त्रास, धारण, तर्क, छाया, नजर, लक्ष, सावधानी।
ભાભા (वि.) मोटी बुद्धिका, मूर्ख, बेवकूफ जड़, ठोठ, मूढ।
ભાભા ભૂત (सं.) वर्षाऋतुमें इस नाम के पैदा होनेवाले एक प्रकार के जीव, जड़, मूर्ख. शठ, मन्दबुद्धि।
ભાભુ (सं.) बापकी माता, दादी, भाभी, बाप के बड़े भाईकी स्त्री, ताई। हीनबुद्धि।
ભાભો (सं.) मूर्ख, कुन्दजहन।
ભામ (सं.) स्त्री, औरत, मरे हुए ढोर के चमड़ेका महसूल, चमड़ेका टेक्स, याद, स्मरण, भान।
ભામટો (सं.) नजर चुका कर चुरा ले जानेवाला चोर।

ભાભથું (सं.) वारीजांऊ—बलिहारी जाऊं ऐसा प्रदर्शित करने के लिये हाथों का चालन, बलिहारी।

ભાભળું (वि.) बे स्वाद, बे मज़ा फीका, सीठा, आनन्दरहित, बे ज़ायका।

ભામાં (सं.) व्यर्थ भ्रमण, व्यर्थ परिश्रम, वहम, अंधविश्वास।

ભામું (सं.) खोटा विचार, वहम, व्यर्थकी आतुरता, झूठा विश्वास।

ભામો (सं.) लोभ, लालच।

ભાયગ (सं.) देखो ભાગ્યેગ,

ભાયડો (सं.) पुरुष, मर्द, धनी, वर, पति, स्वामी, खसम, खाविंद।

ભાયાત (सं.) राजाका सगा, नातेदार रिश्तेदार, भाईपन।

ભાયાની (वि.) भाईके नातेदार, भाईका सगा, सम्बन्धी।

ભાયો (सं.) देखो ભાઇ।

ભાર (सं.) बोझा, वजन, बोझ, लदा हुवा अथवा रखाहुवा जड़ पदार्थका वजन, २०२०७४०००× १८ संख्या, अठारह भार वनस्पति (इसमें ४ भार फलते फूलते वृक्ष ८ भार फलफूलरहित, ४ भार कांटेवाले वृक्ष, और ६ भार बेलि) २० तोलेका वजन, कागज़ इत्यादि न उड़े इस लिये रखाहुवा वजन, पेपर वेट, तोला, एक रुपया भार वजन, अपच, अजीर्ण, मान, दरजा, बड़प्पन, चेहरे पर मानकी कांति। उपकार, अहसान, आभार, किसी वजन के बराबर, समूह, जत्था, झुंड, शक्ति, हिम्मत, दम, महत्व, गौरव, प्रभाव, असर, किसीभी चीज़ पर ज़ोर दे कर बतलाना।

ભાર વેહવો (क्रि.) वज़न उठाकर चलना।

ભાર મુકવો (क्रि.) अहसान करना, किया हुवा उपकार प्रदर्शित करना। [जाना, मान भंग होना।

ભાર ભાગવો (क्रि.) हलका हो

ભાર ખમું (वि.) जितना बोझा ले जाया जासके। जितना भार उठ सके उतना। [स्थान या वाहन, भारकस।

ભારખાનું (सं.) भार भरनेका

ભારજા (सं.) पत्नी, विवाहिता स्त्री, औरत।

ભારટિયે-ઢિયો (सं.) लट्ठा, शहतीर, घरमें म्याल, तीर, पाड़।

ભારણુ (सं.) दाबन, वजन, बोझ, किसी वस्तु को दबाने के लिये रखी हुई भारी वस्तु।

ભારત બધાવવું (क्रि) खूब लम्बी चौड़ी बना कर कहना, अतिशयोक्तिपूर्वक बढाना।

ભારતી (सं.) वाक्य, वचन, बोली, शारदा, शब्दपाण्डित्य, वाक्चातुर्य्य, सरस्वती देवी, दस प्रकार के गोसाइयों में से एक भेद। (वि.) भारतीय, भारतविषयक।

ભારથી (वि.) बहादुर, वीर, भट, योद्धा, शूर।

ભારદોરી (सं.) गर्भपात न हो जावे इसलिए मंत्रित धागा जो स्त्रीके कमरमें बाधा जाता है, डोरा के लिये भी काम में लाई जाती है।

ભારભરદારી (वि.) लादा हुवा रखा हुवा वजन खेंच कर या ले कर चलनेवाला मजदूर, बेगारी, ऊंट बैल इत्यादि।

ભારમોભો-વકકર (सं.) भार, वजन, मान, इज्जत, रुतबा। [माननीय।

ભારમોભાવાળું (वि.) वजनदार,

ભારવટિયો (सं.) देखो ભારઠિયો।

ભારવું (क्रि.) आग बुझ न जावे इस लिये राख में दाब कर रखना, मंत्रित करना, जादू वशीकरण करना, मोहित करना, अचेत करना।

ભારી (वि.) वजनदार, मूल्यवान, कीमती, महंगा, मुश्किल, मोटा, कठिन, सुस्त, जड़, ढीला। (क्रि वि.) बहुत, अतिशय, (सं.) दो चार लम्बी चीजों को एक जगह बाधी हुई, मोली, गठ्ठा।

ભારે (वि.) अधिक भारयुक्त, बहुत वजनदार, संगीन, बोझदार, सुस्त, काहिल, चपलतारहित, जड़, बहुत, जियादा, अतिशय, कठिन, मुश्किल, नाउम्मेद, चिन्ता, उदासी, कुपच, गुरुपाक, तोलमें अधिक, कड़क, सख्त, बहुतही।

ભારે કરવું (क्रि.) एक बात को बडी करना। [माना होना।

ભારે થવું (क्रि.) गर्व करना,

ભારે પડવું (क्रि.) महगा होना, अधिक मूल्य में प्राप्त होना। भारी मालम होना।

ભારેખમ (वि) आबरूदार, प्रतिष्ठित, वजनदार, रोबदार, वजनी।

ભારેવાઇ (वि.) गर्भवती, सगर्भा, न्याभन, गाभिन, पेटसे (स्त्री)

ભારેશલ (वि.) बहुतही वजनदार।

ભારો (सं.) मोटा गठ्ठा, बडा बण्डल, सिरपर उठानेका बोझ (लकडी घास इत्यादि) घना, विशेष, अतिशय।

ભારોઢિયો-ઢિયો--દેખો ભારવઢિયો।
ભારોટી (सं.) लकड़ियोंका गठ्ठा, भरोटा, छोटा गठ्ठा।
ભારોભાર (क्रि. वि.) समान बोझ, वजनके बराबर, समतोल।
ભાલ (सं.) कीचड़वाली जमीन, रेतीली भूमि, चिकनी जमीन, मस्तक, कपाळ, पता, ढूंढ, खोज, तलाश। [हलकारा नकीब, दूत।
ભાલદાર (सं.) चोबदार छड़ीदार
ભાલિયો (सं.) जलका पात्र, गगरा, घड़ा, घट।
ભાલું-લો (सं.) बर्छी, बास के डंडे में लगाया हुवा लोहका फल, शस्त्र विशेष। [वाला।
ભાલેદાર (सं.) बल्लमवाला, बछा-
ભાલો (सं) देखो ભાલું
ભાલોડું (स.) फर, तीरका मुख, बाणकी पत्ती, तीर पर लगनेवाला लोहेका पाता।
ભાવ (सं.) अभिप्राय, चेष्टा, मानस विकार, सत्ता, स्वभाव, जन्म, क्रिया, लीला पदार्थ, बिभूति, धात्वर्थ, योनि, उपदेश, नवग्रहोंकी द्वादश चेष्टा, वृत्ति, क्रोध, प्रकृति, (रसशास्त्रवर्णित पांच भाव) १ विभाव, २ अनु-भाव, ३ सात्विक भाव, ४ व्यभिचार भाव, और ५ स्थायी भाव, हाथ पैर आंख इत्यादिका सञ्चालन, निर्ख, दर, मूल्य, इरादा, धारणा, रुचि, इच्छा, हेत, माया, प्रेम, आस्था, विश्वास, हृदयका प्रेम, स्थिति, हालत, दशा, त्व, ता, पन, कार्य, फल, होना, उपस्थिति, सुज्ञजन! विद्वान! (नाटक में सम्बोधनार्थ प्रयोग) कीर्तिसूचक कविता, स्नेह, प्रीति।
ભાવ ભાવો (क्रि.) नफा लेना, खुशामद चाहना। [त्यागना।
ભાવ છોડવો (क्रि.) मरना, देह
ભાવ પૂછવો (क्रि.) परवाह करना, गिनना, मानना, विश्वास करना, गिनती में गिनना।
ભાવઠ-ઠ (सं.) उपाधि, जंजाळ, आपदा, विचार, मनोव्याधि, भाई, बन्धु।
ભાવઠ ભાગવી (क्रि) पीड़ा दूर करना, उपाधि शमन करना, कष्ट निवारण करना, सांसारिक माया-जालसे मुक्त होना।
ભાવતબીજ-ત્રીજ (सं.) कार्तिक शुक्ल द्वितीया। भाईदूज, इस दिन भाई बहिनके घर जीमने जाता है।

ભાવતું (वि.) अनुकूल, रुचिकर, मनपसन्द, पसन्दीदा, इच्छित, ठीक ।

ભાવન (सं.) उलाहिना, आक्षेप, उपालंभ, टोना, ताना, मर्मवचन, अनुकूल, (वि.) देखो ભાવતું

ભાવવું (क्रि.) रुचना, पसन्द आना, अच्छा लगना, स्वाद लगना।

ભાવસાર (वि.) कपडे छापनेका धन्धा करनेवाला, छीपा, एक जाति विशेष ।

ભાવી-વે પ્રયોગ (सं.) जिस में क्रियापद का अर्थ ही कर्ता हो (व्याकरण में) [कौल।

ભાષ (सं.) बचन, वादा, करार,

ભાષક (वि.) बोलने वाला, वक्ता, कहने वाला, कथन करने वाला, अधिपति ।

ભાષી (वि.) वक्ता, बोलने वाला ।

ભાસ (सं.) ज्ञान, छाया, असर, प्रभाव, प्रकाश, आभास ।

ભાસવું (क्रि.) दिखाना, दिखना, प्रकाशित होना, नजर आना, कल्पना में आना, स्फुरना ।

ભાળ (सं.) कपाल, मस्तक, ललाट, खबर, शोध, पता, ठिकाना, चिकनी मिट्टी, ढूंढ, खोज ।

ભાળવણ-ણી (सं.) सिफारिश, गुण प्रशंसा, अनुग्रह कारण, गुण वर्णन ।

ભાળવવું (क्रि.) पहिचान कराना, परिचय कराना, सौंपना, शिफारिश करना ।

ભાળવું (क्रि.) देखना, ताकना, अवलोकन करना, निगाह डालना।

ભાળિયો (क्रि.) घट, घड़ा, गगरा।

ભાળું (क्रि. वि.) अच्छा, उत्तम, ठीक, श्रेष्ठ, बहुत अच्छा ।

ભિખ (सं.) दान, भिक्षा, भीख।

ભિખારીવેડ (सं.) दरिद्रता, दीनता, कंगाली, रंकता, गरीबी ।

ભિંગ (सं.) समुद्री स्वेत रंगकी मछली का नाम, मच्छी का नाम विशेष । [लीका]

ભિંગડં (सं.) छिलका, (मछ-

ભિંગડું (सं.) चमड़े का कठिन टुकड़ा, मछली के ऊपर का चमकदार चमडी का टुकडा, छाला या फुन्सी के ऊपर की मरी हुई खाल का हिस्सा । छिलका, (दाल का) फोतरा ।

ભિંઆરી (सं.) एक प्रकार का पंख वाला जीव, भौंरी, भृंगी, भ्रमरी ।

ભિંઆરો (सं.) भौंरा, भृंग, मधुप, अलि, भ्रमर, षटपद, भंवरा ।

ભિજરૂ (वि.) अधिक रोमयुक्त, बहुत बालों वाला, जिस के बाल बिखरे हों, बिथुरे केश, जटिल ।

ભિંજવવું (क्रि.) भिगोना, ललचाना, समझकर अपनी मति के अनुसार करना ।

ભિંજવું (क्रि) भीगना, तर होना

ભિંજાવું (क्रि.) पूर्ववत् आर्द्र करना ।

ભિંડમાળ (सं.) गोफन, पत्थर फेंकने के लिये रस्सियों का बना॰ या हुवा । वर्तमान समय में अधिकांश खेतों पर पक्षी उडाने के लिये रखवाले इसे अपने पास रखते हैं, अश्म वर्षण यंत्र । भिन्दिपाल, ढेलवास गुफना, गोफणा, गोफिया, अस्त्र विशेष ।

ભિંડા–ડા (सं.) एक प्रकार का शाक, भिण्डी नामक प्रसिद्ध शाग ।

ભિંડી (सं.) एक प्रकार का वृक्ष, सन विशेष, पटुवा सन, इस की डंठलोंको कूटकर सन समान रेशे निकाले जाते हैं यह सन से अच्छा होता है ।

ભિંડીમાળ (सं.) देखो ભિંડમાળ छींका, झोली ।

ભિંડો (सं.) एक प्रकार का शाक

ભિંડોમારવો (क्रि.) गप्प मारना ।

ભિંતડી (सं.) छोटी भींत, छोटी दीवार ।

ભિંતરડી (सं.) पूर्ववत्

ભિંસવું (क्रि॰) दावना, निचोड़ना, लिपटना, जोर से आलिंगन करना ।

ભિક્ષાટન–વૃત્તિ (सं.) भीख मांगने का धन्धा, भीख से गुजर करना ।

ભિખવું (क्रि.) भीख मांगना, इनाम मांगना, पुरष्कार चाहना ।

ભિખવાળી (सं.) नाते, रिश्तेदारोंसे द्रव्य मांगकर बनाई हुई कानकी बाली (छोकरों के लिये)

ભિખારચોટ (वि.) भिक्षुक समान फायदेका (काम), भूखा, दरिद्री कंगाल,भिक्षुककी तरह देखनेवाला।

ભિખારણ (सं.) भीख मांगनेवाली स्त्री, मंगती, भिक्षुककी स्त्री ।

ભિખારી વેડા (सं.) मंगतापन, भिक्षुकी, भिख मंगे की रीति ।

ભિચકાવું (क्रि॰) दबना, सकरी, जगह में आजाना, बबदा जाना ।

ભિજવું (क्रि.) देखो भિંજવું
ભિડવું (क्रि.) भिड़ना, भिड़ना, सटना, लड़ना, मुठ भेड़ होना, सट जाना, आमना सामना करना चिपकना, साहसपूर्वक घुसना, आलिंगन करना, कसना, बांधना बन्द करना, लड़ाई करना ।
ભિડાભીડ (सं.) जनसमूह, अगणित लोगोंका ठठ्ठ, अधिक भीड़ ।
ભિડાવવું (क्रि.) घबराना, उलझन में डालना, निरुत्तर, करना, अंटस, उत्पन्न कराना, मनोमालिन्य कराना, धमकी देना, भय दिखाना, लिपटना ।
ભિડાવું (क्रि.) तंग हालतमें आना।
ભિતડી–રડી (सं.) देखो ભીત,
ભિતર (सं.) दिल, कालजा, हृदय यकृत, (क्रि. वि.) अन्दर, भीतर, में, मांही । [पानी डालना ।
ભિનાવું (क्रि.) भिगोना, तरकरना,
ભિનાશ (सं.) तरी, गीलापन, आर्द्रता, नमी, सर्दी, सील, ठंडाई।
ભિનું (वि.) भीगा, तर, आर्द्र, ठंडा।
ભિભઠ્ઠ (सं.) बाळककी, मुहं, बन्दुकके थूक उड़ानेकी क्रिया ।
ભિલડી (सं.) भीलनी, भिल्लनी, भीलकी स्त्री, किराती, म्लेच्छा ।
ભિલામું–મો (सं.) भिलावा, एकपेड़का बीज, औषधि विशेष, इसके रससे लिखा हुवा वस्त्रपरसे नहीं छूटता ।
ભિલામો ઉગાડવો (क्रि.) जगह जगह लड़ाईका बीज रोपण करना, लड़ाई खड़ी करना ।
ભિલામો ભરવો (क्रि.) तेल निकालना, भिलावा का तेल चोपड़ना
ભિલ્લું (सं.) साथी, जोड़ीदार, भिड़, मित्र, गोठिया, लंगोटिया मित्र, बराबरी का
ભીત (सं.) देखो ભીંત,
ભીંતને પણ કાન હોય છે=किसी को गुप्त बातकी चेतावनीके लिये इस वाक्यका प्रयोग होता है अर्थात् कोई सुन लेगा संभळ कर बोलो । [दोषोंकी प्रसिद्धि होना ।
ભીંતે ચડવું (क्रि.) किसीके गुण-
ભીંછરૂં (वि.) सुअर जैसे (बाल)।
ભીજ (सं.) सील, नमी, तरी, आर्द्रता ।
ભીડ (सं.) लोगोंका जमाव, ठठ्ठ, जनसमूह, संघ, जमावडा, समुदाय, दुःख, कष्ट, आपद, संकट ।
ભીડાભીડ (सं.) देखो ભિડાભીડ
ભીડી (सं.) देखो ભિંડી

ભીડો (सं.) देखो भिडो।
ભીડો ઘાલવો (क्रि.) रेड़ मारना बीचमें कठनाई पैदा कर देना।
ભીત (सं.) भित्ति, दीवार, भयभीत, डरा हुवा, कंपायमान, शंकित।
ભીતિ (सं.) भय, त्रास, डर, शंका।
ભીતી (सं.) पूर्ववत्
ભીતો (सं) दीवार के लगानेका खड़ा टेका।
ભીનું (वि.) सीला, ठंडा, भीगा, आला, गीला, आर्द्र नरम, हरा।
ભીનેવાને (क्रि. वि.) भीगे हुए शरीरसे।
ભીમઅગિયારસ (सं.) जेष्ट मास के शुक्ल पक्षकी एकादशी, निर्जला एकादशी।
ભીંમક (सं.) पार्वतीके रोमसे उत्पन्न एक गण, रुक्मिणी।
ભીમરથી (सं.) एक नदीका नाम, वह जिसे कि ७७ वे वर्ष के सातवें मासकी सातवीं रात्रि जिसे कठिन हो।
ભીર (सं.) सहायता, मदद।
ભીરૂ (सं.) मित्र, साथी, संगी, गोटिया, समवयस्क, प्रेमी, पक्षी, सिंह, व्याघ्र, स्यार, बघेरा, गीदड़, बकरी, ओरीमनी, (औषधि विशेष) छाया, (वि.) भयशील, डरनेवाला, भयानक।
ભીલ (सं.) एक पहाड़ी जातिका नाम, म्लेच्छ जाति विशेष, अनार्य जाति। [भीलनी स्त्री, भीलनी।
ભીલડી (सं.) भिल्लनि, किरातीं,
ભીલડીના બોર=किसी वस्तुको अर्पण कर उसकी तुच्छता प्रदर्शित करने के लिये यह वाक्य प्रयोग किया जाता है।
ભીલુક (सं.) रिक्ष, रींछ, भालु।
ભીષણ (वि.) भयंकर, भयानक, भैरव, घोर, भयजनक, भयावह।
ભુ (सं) जळ, पानी, तोय, नीर, सलिल, भूमि, पृथ्वी, जमीन, अवनि, भूर्वि।
ભુઆં (सं.) पानी, जळ, नीर, तोय, सलिल, रस।
ભુઆં ભાગઇ જવાં (क्रि.) पानी भरजाना, थक जाना, हार जाना।
ભુંઈ (सं.) भूमि, पृथ्वी, जमीन, भू, अवनि, मुर्वी, धरती।
ભુંકવું (क्रि.) भों भों करना, रेंकना, गधेकी बोली बकना।
ભુંખરો (वि.) राखके रंगके समान।
ભુંકો (सं.) औषधिका चूर्ण।
ભુંડો (सं.) चूर्ण, रोटीका गूदा,

ભુંગરા (सं.) सिके हुए गेहुं या चनें।

ભુંગળા (सं.) पूर्ववत्

ભુંગરેઠ (सं) गर्मराख, तातीराख, भूबळ, तप्त भस्म।

ભુંગળ (सं.) बिगुल, तुरम, तुरही, नफीरी, तूती, सहनाई, धतुरेके पुष्पके आकारका किसी-धातुका बनाहुवा फूंककर बजानेका बाजा। रणसिंगा, भेरी, द्वारको बंद करनेका लकड़ी का या लोहेका गज, शंख। [पंचांग।

ભુંગળ ભટિયું– मटजीका पत्रा

ભુંગળ ભટિયું મળવું (कि.) छुट्टी मिलना, घर बैठना, अलग होना।

ભુંગળિયો (सं.) बिगुल बजानेवाला तुरमचा, ट्रुम्पेटर भेरी सहनाई इत्यादि बजाने वाला।

ભુંગળી (सं) बांस अथवा किसी धातुकी बनीहुई अग्नि में फूंक मारनेकी नलिका। छातीपर लगा-नेसे जिसकेद्वारा हृदयकी गति जानी जाती है, कानकी नली, बहिरे आदमी जिसे कानमें लगा कर सुनते हैं। [नलिका।

ભુંગળું (सं.) भोंगला, नली,

ભુંગળું ફૂંકવું (कि.) प्रशंसा करना, तारीफ करना, गुणगान करना, दिवाला निकालना, बम बोलना।

ભુંભળો ભીડાવી (कि.) सत्यानाश जाना, वंशनाश होना, निस्संतान होना, वंश में नाम लेवा पानी देवा कोई न होना। [मंडली।

ભુંજરવાડો (सं.) छोटे बच्चोंकी

ભુંજવું (कि.) भूनना, सेकना।

ભુડું (बि.) देखो ભૂડું

ભુંડ પાડવું (कि.) शर्मिन्दा करना, लज्जित करना, क्षोभित करना।

ભુંડ (सं.) सूवर, सुवर, बराह, शूकर, कौल, क्रोड।

ભુંડણ (सं.) सुअरी, बराही, शूकरी, वह स्त्री जिस के बहुत संतानें हों।

ભુંડણીની ભુંજાર—एकही स्त्री के बहुतसे छोटे छोटे बाळकोंके लिये इस वाक्य का प्रायःप्रयोग किया जाता है।

ભુંડમ શોળિયું (कि.) द्वेषी जह-रीला, कपटी विषैला, ईर्ष्यालु, जलकुकड़ा।

ભુંડાઇ (सं.) खराबी, बदी, अन-बन, खटपट, नाराजी, झगड़ा।

ભુંડાર (सं.) खराब भाषा, अपशब्द, गाली, बीभत्स भाषा, गन्दी जबान।

ભુંડાઇ (सं.) देखो ભુંડાઈ

ભુંડું (वि.) खराब, दुष्ट, पापी, अनीतिवान, जहरी, कपटी, बीभत्स, बेशर्म, निर्लज्ज, असभ्य, निन्द्य, भांड।

ભુંડામાં ભુંડું (वि.) छटा हुवा, खराबमें खराब, अव्वल नंबरका असभ्य।

ભુંડાથી ભૂત નાસે (वि. वि.) बुरे से दूर रहनाही दूर अच्छा।

ભુંથું (सं.) जड़ विशेष, मूल विशेष, (वि.) बेडौल, बदशकल, कुरूप।

ભુંભું (सं) भेरी शंख बिगुल आदि वाद्यका शब्द।

ભુંસવું (क्रि.) नोचना, खुदेरना, मिटाना छिलना, घिसना, नष्टकरना ठीक करना। [भूसा।

ભુંસું (सं.) छिलके, कदंश, बूर,

ભુ (सं.) जळ, पानी, (बच्चेकी भाषामें)। [तोय, सलिल।

ભુઆ (सं.) जळ, पानी, नीर,

ભુઓ (सं.) प्रेत विद्या जाननेवाला भूत इत्यादि उतारनेवाला, एक प्रकारका जीव विशेष।

ભુકી (सं.) बारीक चूर्ण, चूरा, बुरादा।

ભુકેભુકા (क्रि. वि.) ऐसा जिसकाकी चूर्ण हो गया हो, छोटे छोट टुकडे।

ભુકો (सं.) (किसी वस्तुको काटने कूटने अथवा पीसनेसे हुवा) चूर्ण चून, आटा, पिष्ट, रोटीका गूदा।

ભુક્તાવવું (क्रि.) भोगना, काममें लाना, उपभोग करना।

ભુખ (सं.) खानेकी इच्छा, क्षुधा भूक, रुची, लोभ, इच्छा, तृष्णा, लालसा, आकांक्षा, चाह जरूरत।

ભુખડું (वि.) भूखा, कंगाळ, क्षुधित, गरजी, लोभी, इच्छुक, तंगीकी हालतसे दुखी।

ભુખડું બારસ (वि.) एकादशी द्वादशीको भोजनोकी जैसी लालसा होती है उसी समान आतुरतावाळा तङ्ग दशामें आया हुवा, कंगाल, दीन, गरजमन्द।

ભુખની બારસ (सं) अत्यन्त आतुरता, खानेकी जल्दी इच्छा।

ભુખર (सं.) नाव इत्यादि के लिये उत्तर दिशाकी पवन, तूफ़ान उत्तरो वायु।

ભુખડું (वि.) फीका, निस्तेज, कांति हीन मन्द, उदास, बेचमक।
ભુખાળવું (वि.) देखो ભુખડું
ભુખિયો (वि.) जो टूट जावे, फूटनेवाला, (थोडे घीका लड्डू) कमजोर।
ભુજ (सं.) भुजा, बाहु, कन्धे से कोहनी तक हाथका भाग, एक देशका नाम।
ભુજવું (क्रि.) देखो ભુંજવું,
ભુંજાર (सं.) पश्चाद्गामियों अथवा आश्रितोंकी जमात।
ભુટ્ટાચોર(सं.)हलकी चोरी करनेवाला कम कीमतकी वस्तु हरण करने वाला। [फल,
ભુટ્ટો (सं.) भुट्टा, सिरा, मकईका
ભુડકવું (क्रि.) मंत्र से वशमें करना, वशीकरण करना, मंत्रित करना, जादू करना, ठगना, छलना।
ભુડકસ (सं.) छोटे छोटे बालक, बच्चे।
ભુતખાનું (सं.) भूतों के रहने की जगह, भूतोंका डेरा जिन्दोंका निवासस्थान, म्लेच्छस्थान।
ભુતડું (सं.) कुगति प्राप्त जीव, योनिविशेष, भूत, पिशाचादि।
ભુતડો (सं.) चिकनी मिट्टी, मुळ तानी मिट्टी, स्त्रियोंके माथे में डाल कर धोनेकी मिट्टी।
ભુતાવળ (सं.) भूतोंकी जमात, पिशाचोंकी टोली, राक्षसोंका झुंड।
ભુદર (सं.) देखो ભૂધર।
ભુનાં (सं.) तूवर में से निकली हुई हरी सूखी तूवर, पीपल वृक्ष का फल।
ભુર (सं.) देखो ભુર।
ભુરકવું (क्रि.) देखो ભુડકવું।
ભુરકવું-કાવું (क्रि) चमकना, चौंकना, मंत्रित करना, ठगाना, छलना।
ભુરકસ (सं.) देखो ભુડકસ।
ભુરસી (सं.) दक्षिणा, दान, दक्षिणा विशेष, भूरसी, बख्शीश, पान सुपारी, रिशवत।
ભુરાટન્સ (सं.) भूरा रंग-वाला, बादामी रंगका, ब्राउन।
ભુરાટણુ (सं.) एक प्रकार की मिट्टी, पांडु मिट्टी, एक प्रकार की मिट्टी, जिससे ग्रामीण लोग अपने घरोंकी दिवारें सफेद करते हैं।
ભુરાડું (सं.) भूरा, बदामी, मट मैला।
ભુરાશ (सं.) देखो ભુરાટ।
ભુરૂં (सं.) देखो ભુરૂં
ભુરૂં કોહોળુ (सं.) भूराकद्दू, सफेद, कद्दू, पेठा, फलविशेष।
ભુરૂં કોળું (सं.) पूर्ववत।

ભુલકણું (वि.) बारम्बार भूलने वाल, विसर जानेवाला, भूलना।
ભુલચુક (सं.) गलती, भूल, चूक अपराध, दोष, पाप, विस्मृति, त्रुटि।
ભુલ થાય (सं.) भुलाकर मारना, छळ धोका, बहकाना, कपट।
ભુલભુલામણી (सं.) गली कूंचे वाला मार्ग, आड़ा टेढा मार्ग, अटपटा काम, चौरासीका फेर। झंझट।
ભુલભુલામણું (वि.) अटपटा, अतिगहन, आडा टेढा मार्गवाला।
ભુલવણ–ણી (सं.) देखो ભુલથાય
ભુલવુ (क्रि.) भूलना, विस्मरण होना, भूल जाना, चूकना, बिसरना, याद न रहना, गाफिल होना, ठोकर खाना।
ભુલવવું–લાવવું (क्रि.) भुलाना।
ભુલાવો (सं.) भुलवो, फुसलाना बहकाना, धोका। [भटकना।
ભુલું પડવું (क्रि.) भूल जाना,
ભુવન (स.) जगत, विश्व, लोक, ये १४ होते हैं (१) तल (२) अतल (३) वितळ, (४) सुतल (५) तलातल (६) रसातल (७) पाताळ (८) भूर्लोक, (९) भुवर्लोक, (१०) स्वर्ग लोक, (११) महर्लोक, (१२) जनलोक, (१३) तपर्लोक (१४) और सत्यलोक।
ભુવો (सं.) देखो ભુઅેા
ભુસો (वि.) बुरा, खराब।
ભુસકો (सं.) कूद, छलांग, ठेका, फलांग, फुदकी।
ભુસવું–સેડવું (क्रि.) काट देना, मिटा देना. छेक देना, रद्द कर देना, निकाल डालना. रबर से घिसना, घसीट डालना, रगड़ देना (लिखना)
ભુસાર (सं.) अन्न, अनाज, गल्ला।
ભુસારી (सं.) अन्न बेचनेवाला।
ભુકરવું (क्रि.) पेशाब करना, मूतना, (छोटे बच्चोंको लिये प्रयोग)
ભુપીતા જવું (क्रि.) मरना, देह त्याग करना, विना अर्थ सिद्धि लौटना।
ભુપીતું કરવું (क्रि.) तुरन्त के पैदा हुए बालकको पानीमें डुबो कर मार देना। दूधमें अफीम मिलाकर पिला कर मारना।
ભૂડું (वि.) देखो ભુંડું
ભૂકંપ (सं) भूडोल, भुंईडोल, भूचाल, धराणिकम्प, जलजला।
ભૂકી (सं.) बहुत बारीक चूर्ण, चूर्ण, भूसा, चूरी पावडर।

ભૂકો (सं.) पूर्ववत्, छोटे छोटे टुकडे । पिष्ट, चूरा, चून ।

ભૂખમરો (सं) भुखमरा, भुक्कड बुभुक्षित भूख से मृत्यु समान कष्ट पाने वाला ।

ભૂખ ભાગવી (क्रि.) चिर कालकी इच्छा पूर्ण होना, मनोरथ सिद्ध होना। [नीरस, फल रहित वृक्ष ।

ભૂખર (वि.) ऊजड, रूक्ष, रूखा,

ભૂખું-ખ્યુ (वि.) भूखा, जिसे भूख लगी हो, क्षुधार्त, क्षुधातुर ।

ભૂખ્યો બંગાળી (सं.) आधा भूखा रहनेवाला पुरुष, तंग हालत मनुष्य। [क्षुधातुर होना, भूखे होना।

ભૂખ લાગવી (क्रि.) भूख लगना

ભૂડું (वि.) लज्जित, शर्मिन्दा ।

ભૂત (सं.) तत्व विशेष, काल विशेष, अतीतकाळ, योनिविशेष, पिशाच, प्रेत, बैताल, असुर,शैतान राक्षस, शरिर,देह, भयंकर विचित्र मनुष्य ।

ભૂત (वि.) बीता हुवा, गुजरा हुवा, जो हो चुका हो, गुजरा हुवा, व्यतीत ।

ભૂતકાળ (सं.)अतीतकाळ, गुजरा हुवा जमाना, गत समय ।

ભૂત ભમવાં (क्रि.) स्वार्थ सिद्धि के पीछे पीछ फिरना ।

ભૂતભરાવું (क्रि.) पागल, होना, चित्त विभ्रम होना । [भूमण्डल ।

ભૂતળ (सं.) पृथ्वीतळ, धरती,

ભૂતાવળ (सं.) भूतोंका झुंड, भूत टोली ।

ભૂતિ (सं.) अस्तित्व, जन्म,उत्पत्ति उद्भव, पोशाक, कल्याण, उहित, विजय, सफलता, फतहमन्दी, यश, सिद्धि, धन, मालमत्ता, प्रभुता, बडप्पन, शोभा, गौरव, अमानुषिक-बल, दैवीबल, ऐश्वर्य शिवभस्म, जाति, औषधि विशेष।

ભૂપ (सं.) राजा, बादशाह, नृप, नरपति, नरपाळ, महिपाल, एक, प्रकारका राग ।

ભૂપ કલ્યાણ (सं.) कल्याण राग का एक भेद विशेष ।

ભૂભાર (सं.) पृथ्वी के ऊपरका बोझा, पापकर्म, जमीनके ऊपरका वजन ।

ભૂભા (सं.) जमीनकी छाया,भूछाया ।

ભૂમિકા (सं.) आभास, रचना, प्रस्तावना, उपक्रम, वेशान्तर, परिग्रह, अन्यरूप धारण, कथा मुख, दीबाचा, जमीन, को जगह नाट्यशाला, रंगभूमि,

ભૂર (सं.) देखो ભૂરસી (वि.) प्रचुर, यथेष्ट, अधिक, ढेर, बहु ।

ભૂરચના શાસ્ત્ર (सं.) देखो, ભૂસ્તરવિદ્યા ।
ભૂરિ (वि.) देखो भूर ।
ભૂરૂં (वि.) भूरा, एक प्रकारका रंग, लाल, काला और पीले रंगका मिश्रण, पिंगलवर्ण, कपिल, कपिश ।
ભૂરો (सं.) बाल, रोम केश ।
ભૂરોભટાક (वि.) सफेदझक, वहुत सफेद ।
ભૂલ (सं.) चूक, विस्मृति, अज्ञानसे अपराध, त्रुटि, गफलत, चूक ।
ભૂલચૂક (सं) गळती, अपराध, दोष।
ભૂસ્તરવિદ્યા (सं.) पृथ्वीरचना शास्त्र, भूगोळविद्या, जिआग्रफी ।
ભૂસૃષ્ટિવિદ્યા (सं.) पूर्ववत् ।
ભૃંગ (सं.) भ्रमर, अलि, भौंरा, षट्पद ।
ભ્રૂવ (सं.) आंखकी भौंह, पलक ।
ભેંકડો (सं.) बच्चा या बच्चेकी तरह खूब चिल्लाकर रोना ।
ભેંખવું (क्रि.) चिल्लाना रोना ।
ભેંચો (सं.) कुचलन, पोचा ।
ભેંચો ઉડાડવો (क्रि.) कुचल डालना, मटिया मेट कर डालना । रौंदना । [विशेष ।
ભેંસ (सं.) भैंस, महिषी, पशु-
ભેંસર (सं.) पाड़ा, झोटा, महिष ।
ભેંસલો (सं) गाड़ी चलनेसे पड़ी हुई गडारके बीचकी जमीन ।
ભેંસાસુર (सं.) भयंकर बदसूरत पुरुष, मोटा काला डरावना मनुष्य ।
ભેડું (सं.) भैंसका कच्चा चमड़ा ।
ભે (सं.) भय, डर, खौफ़, खतरा ।
ભેક (सं.) दादुर, मण्डूक, मेंढक, बेंग, जन्तु विशेष । [साधू ।
ભેખ (सं.) वेश, स्वांग, कृत्रिमवेष,
ભેખ લેવો (क्रि.) साधु होजाना ।
ભેખડ (सं.) मिट्टीका बड़ा ढेला, ढेला, लैंदा, करारा, ढाळू, जमीन ।
ભેખડાવું (क्रि.) मिलना, समागम करना, लड़ाई करना, गड्ढेमें गिरना । [मिलान ।
ભેગ (सं.) मेल, मेळ, मिश्रण,
ભેગધારી (सं.) साधु, स्वांगी ।
ભેગું (क्रि. वि.) इकठ्ठा, एकत्रित, साथ, मिला हुवा, मिश्रित सम्मिलित । [साथ साथ ।
ભેગા ભેગું (वि.) साथ लगा हुवा,
ભેગું કરવું (क्रि.) मिलाना, एकत्रित करना, इकठ्ठा करना ।
ભેગુ થવું (क्रि.) मिलना, इकठ्ठा होना । [आश्चर्यान्वित, भयभीत ।
ભેચક (वि.) चकित, डरा हुवा,
ભેચો (सं.) ज़ोर, शक्ति, ताकत ।

ભેજ (सं.) सर्दी, ठंड, आर्द्रता, वायु । [सीला, भीगा, आर्द्र, सर्द ।
ભેજવાળું (वि.) गीला, ओदा,
ભેજું (सं.) मगज़, दीमाग, मस्तिष्क, ज्ञानशक्ति, बुद्धि, अक्ल ।
ભેજું ફાટી જવું (क्रि.) पागल होना । [अक्ल है ।
ભેજું ઠેકાણે છે (क्रि.) बुद्ध है,
ભેજાનો ભુંજેલો (क्रि) चिंता-रहित, बेफिक्र । [घमण्डी होना ।
ભેજામાં બહેરભરાવો (क्रि.)
ભેજું ખસવું (क्रि.) पागल होना, बुद्धि जाना ।
ભેજું ખાઇ જાવું (क्रि.) दुःख देना, कष्ट पहुंचाना, सिर खाजाना।
ભેજું ઠેકાણે હોવું (क्रि.) खबर-दार होना, अक्ल टिकाने होना ।
ભેજું ફાટી જાવુ (क्रि.) दीवाना होना, पागल हो जाना, अविवेकी होना ।
ભેટભભેટા-ટ (सं.) हृदयालिंगन।
ભેટવું (क्रि.) मिलना, मुलाकात करना, आलिंगन करना, भेट देना, अर्पण करना ।
ભેટાડવું-વવું (क्रि.) मिलाना, मेळ कराना, मिलाप कराना ।
ભેટિયો (सं.) भेट करनेवाला, मंदिरका पुजारी ।
ભેટો (सं.) आलिंगन, भेट, मुलाकात ।
ભેડ (सं.) मेंढा, मेष, लड़ते समय कपड़े न उड़ें इस लिये कन्धे पर लपेटनेका एक वस्त्र विशेष ।
ભેડિયો (सं.) हिंस्रजंतु विशेष, हुंडार, बरगड़ा, भेड़िया ।
ભેડું (सं.) घी गरम करनेका मिट्टीका बर्तन जिसका मुंह चौड़ा होता है ।
ભેદ (सं.) भिन्नता, गुप्तकी बात, पृथक, द्वैध विशेष, बिदारण, विवेचन, विच्छेद, छुपी बात, विवेक, चार गुणोंमेंका एक (साम, दाम, दंड, भेद) तफावत, फरक, अन्तर, जुदाई, जाति, प्रकार, वर्ग, रीति, तरह, गुह्य, भ्रम, मर्म, कपट, छळ ।
ભેદ લેવો (क्रि.) गुप्त बातको तलाश करना, मनकी पूंछ लेना ।
ભેદ ફોડવો (क्रि.) छुपी बात प्रकट करना, भांडा फाड़ करना, पोल खोलना ।
ભેદક (वि.) विदारक, विरेचक, फोड़नेवाला, छेदनेवाला, तीखा, पैना ।
ભેદવું (क्रि.) छेदना, फोड़ना, आरपार छेद करना, बेधना, अंदर घुसना ।

ભેદિયો (सं.) जासूस, गुप्तचर, भेदू, जानकार, भेद रखनेवाला ।
ભેદુ (वि.) गुप्त रहस्यका ज्ञाता, जासूस, साथी, जानकार, मर्मज्ञ ।
ભેદ્ય (वि.) भाज्य, विभाज्य, भाग होनेलायक, जो वेधी जा सके ।
ભેભટ-ટ્ટ (सं.) गरम राख, भूमळ ।
ભેર (सं) देखो भेरी ।
ભૈરવ (सं.) राग विशेष, (जो प्रातःकाल गाया जाता है), महादेवजीका भयंकर रूप, देवविशेष भैरव, भयङ्कर, भीषण, कराल, शिवजीके गणोंका स्वामी ।
ભેરવજવ ખાવો (क्रि.) दुर्दशा ग्रस्त होना, अतिशय दुःखपाना ।
ભેરવી (सं) भैरव रागकी पांच स्त्रियों मेंसे एक, रागनी, अवधूतिनी ।
ભેરવવું (क्रि.) लगाना, जड़ना चस्पा करना, चिपकाना, लपेटना, ऐंठना, मरोड़ना, हिलाना, उलझाना, वस्त्र लपेटकर लटकता हुवा छोड देना ।
ભેરવાવું (क्रि.) लगे रहना, तंगी में आना, मुसीबतमें फंसना ।
ભેરુ (सं.) देखो भेरी ।
ભેલાડ (सं.) बिगाड, नुकसान, हानि ।
ભેલાડવું (क्रि.) नुकसान करना, बिगाड करना, उजाड़ना, नष्ट करना ।
ભેલાવવું (क्रि.) पूर्ववत् ।
ભેવ (सं.) भेद, मर्म, भीतरी बात ।
ભેસ્પતવાર (सं.) गुरुवार, बृहस्पति वार ।
ભેળ (सं.) मेळ, मिश्रण, संयोग, पके हुए खेतमें ढोरोंको हाक कर उसे चारा देना, लूट । [मिश्रण ।
ભેળવણી (सं.) मिळान, मेळ,
ભેળવવું (क्रि.) मिळाना, एकत्रित, करना, इकठ्ठा करना, शामिळ करना ।
ભેળવું (क्रि.) साथ रखना, पूर्ववत् ।
ભેળસેળ (सं.) मेळ, मिश्रण, संयोग ।
ભેળા (क्रि.) साथ, सहित, संगमें ।
ભેળાવું (क्रि.) मिळना, सम्बध करना ।
ભેળું (वि.) साथी, मुलाकाती, संगी, (क्रि. वि.) साथ संगमें ।
ભેળું કરવું (क्रि.) एकत्रित करना इकठ्ठा करना, संग्रह करना, जमा करना ।
ભેળેલું ('वि.') एकत्रित, संगृहीत ।
ભૈડકી-કું (सं.) देखो ભડકી और ભડકું ।

ભેડવું (क्रि) देखो ભરડવું ।
ભોં (सं.) भेरी, शख आदिका शब्द विशेष, भूं भूं शब्द । भूमि जमीन ।
ભોં કોઠી (सं.) जमीन में गड्ढा करके और उसमें बारूद भरके उसे चलाते है ।
ભોંય (सं.) जमीन, पृथ्वी, धरती माल, दरद या व्रण के ठीक होने पर आती हुई नई खाल ।
ભોંય આવવી (क्रि) नई खाल आना, घाव पूरना, दर्द रुकना ।
ભોંય ભગવી (क्रि.) दर्दसे खाल अधिक दर्द करना ।
ભોંય કુડાળી લખવી (क्रि.) मरण स्थान निर्माण करना, कहते हैं कि जहां ભોંય કુડાળી लिखी होगी वहीं मृत्यु होगी ।
ભોંય ખોતરવી (क्रि.) लज्जित होना, शर्मिंदा होना, नीचा देखना ।
ભોંય નંખાવું (क्रि.) भूखके मारे मर जाना ।
ભોંય નાંખ્યા (सं.) स्त्रियां क्रोधमें बाळकों को कहा करती हैं ।
ભોંય પર પગે ન મૂકવું (क्रि.) गर्व में उन्मत्त होना, बहुत ही घमण्डी होना ।
ભોંય બરાબર કરવું (क्रि.) जमीं दोस्त करना, मिट्टीमें मिलाना, नष्ट करना, मारते मारते जमीनमें लिटा देना ।
ભોંય ભરવી (क्रि.) फिरना, चक्कर खाना, धरमधक्के खाना ।
ભોંય ભારેખમ પડવી (क्रि) भय और घबराहट के कारण भागना कठिन हो जाना ।
ભોંય ભેળું ભેગું કરવું (क्रि.) जमीन के बराबर करना ।
ભોંય સુધવી (क्रि.) पृथ्वीपर सोने की तय्यारी होना, अन्तसमय का आना ।
ભોંયમાં ઉગવું (क्रि.) छोटी उम्र का मनुष्य हो उसकी चालाकी देखकर यह कहावत कही जाती है ।
ભોંયમાં પેસતો જાય છે (क्रि.) ठिगना होता जाता है, वामन स्वरूप है ।
ભોંયમાં ભુળાં છે (क्रि.) कपटी है, दूषित हृदयका है, दिलमें कुछ औरही है ।
ભોંયમાંથી ભભુકો નિકળવો (क्रि.) अघट घटना होना, अचानक अनिश्चित युद्धाग्नि भड़क उठना ।

ભોંયરામાં રાખવું (क्रि.) गुप्त रखना ।

ભોયે લેવું } (क्रि.) देखो ભોંયે ભોયે ઉતારવું } નાખવું.

ભોયે પડવું (क्रि.) मृत्युके समीप होना, मृत्युशय्यापर होना। मृत्यु दशामें होना ।

ભોંયે ઉતારવું (क्रि.) मृत्यू होती देखकर खाट अथवा पलंग परसे जमीनपर उतारलेना। [चंपा वृक्ष ।

ભોંય ચંપો (सं.) एक जातिका

ભોંય તળિયું (सं.) घरके बिलकुल नीचेका भाग ।

ભોંય રસો (सं) गायका मूत्र अथवा पानी जमीनपर फैलाकर उसे समेटते हैं और इसे गरम करके सूजनपर लेप करते हैं।

ભોંય રિંગણી (सं.) एक औषधी विशेष ।

ભોંયરૂં (सं) देखो ભાંયરૂં ।

ભોંયસીંગ (सं.) एक प्रकारका बनस्पति। [बदाम।

ભોયમગ (सं.) मुंगफली, चीनिया

ભોંયતરવડ (सं.) बनस्पति विशेष।

ભોંયકોળું (सं.) बिदारी कंद, औषधि विशेष।

ભોંયપાતરી (सं.) एक प्रकारकी बनस्पति जिसकी तरकारी बनती है।

ભોયો (सं) देखो ભોમિયો ज्ञाता

ભોરીંભોરો (सं) देखो, ભમરી ભમરો ।

ભોસવુ (क्रि.) देखो ભુંસવું।

ભો (सं.) भय, डर, खौफ ।

ભોઈ (सं) एक जाति विशेष जो पालखी इत्यादि ले जाते हैं, मछली इत्यादि मारकर बेचते हैं। कहार ।

ભોક (सं) छेद छिद्र, सूराख, बेज।

ભોકવું (क्रि.) तेज तीखी पैनी चीज अंदर घुसेडना, जोरसे घुसाना ।

ભોકારૂં (सं.) खोखळापन, रिक्तता ।

ભોગ (सं.) उपभोग दुःखसुखका अनुभव, स्त्री आदिका उपभोग, पाळन, भोजन, तिरस्कार, अपमान, नैवेद्य, बलिदान।

ભોગધરાવવો (क्रि.) ठाकुरजी या देवताको नैवेद्य लगाना।

ભોગફરીવળવા (क्रि.) दैव प्रतिकूल होना. दुर्भाग्य होना ।

ભોગ મળવા (क्रि,) खराबी होना बड़ीभारी हानिहोना, दुर्दैव होना ।

મ

મ—पचीसवाँ व्यंजन अक्षर, गुजराती वर्णमालाका ३६ वाँ अक्षर, (सं.) शिव, ब्रह्मा, चन्द्र, काल, समय, जहर, विष, (क्रि. वि.) नहीं, ना ।

મઉ (वि.) नरम, नम्र, कोमळ, मुलायम, मधुर, दीन, शान्त, सन्तोषी, गंभीर, गरीब, कंगाल, दरिद्र, दयालु ।

મઉ થવું (क्रि.) दबना, नम्र होना, दीन होना, गरीब होना ।

મકનો હાથી (सं.) एक प्रकारका शुण्ड हीन हाथी, जन्तुविशेष, गेंडा हाथी ।

મકર (सं.) ठगी, जाल, फरेब, छलभेद, माया, बकध्यान। मगर, ग्राह, एक भयानक जलजन्तु, मच्छ, राशि विशेष, कुबेरका भंडारी ।

મકરકેતન (सं.) देखो મકરધ્વજ।

મકરબાજ (वि.) चालाक, दगाखोर, कपटी, धूर्त, प्रपंची ।

મકરવા (सं.) शीशेके टुकडे (बहु वचन) ।

મકરકુંડલ (सं.) मछलीके आकारका बना हुवा कानोंका भूषण विशेष, मकराकृत कुण्डल ।

મકરસંક્રમણ—ક્રાંતિ (सं.) वहदिन जिसदिन कि सूर्य मकर राशिपर आते हैं । उत्तरायण । संक्रांति विशेष । [जलनिधि, अर्णव, सागर ।

મકરાકર (सं.) समुद्र, उदधि,

મકરાકાર (वि.) मगरकी शकलका ।

મલકાવું (क्रि.) मुस्कुराना, मन्दमन्द हसना, मुदित होना, प्रसन्न होना ।

મકસદ (सं.) मतलब, भावार्थ, हेतु, धारणा, उपदेशविचार, अर्थ, आशय, इच्छा, इरादा ।

મકસુદ (क्रि. वि.) खास, मुख्य, समझ बूझकर, इच्छानुसार ।

મકાઈ (सं.) अन्नविशेष, मका ।

મકાત (सं.) खुश्की रास्तेसे शहरमें आये हुए माल पर कर, एक प्रकारका टेक्स ।

મકે (सं.) देखो મકાઈ ।

મકોડી (सं.) चींटी, कीड़ी मकोड़ी, मकोड़ेकी स्त्रीलिंगशब्द ।

મકોડો (सं.) एक बड़ी चींटी, चींटा, मकोड़ा, कीड़ीकी आकृतिका बड़ा जंतु ।

મક્કમ (वि.) दृढ़, पुख़्ता, मज़बूत, पक्का, ढीठ, निडर, धैर्यवान, स्थिर ।

મક્કર (सं.) देखो મક્કર ।

મક્તબ (सं.) पाठशाला, विद्यामंदिर, गुरुगृह, मदरसा, स्कूल, कॉलिज ।

મક્તું (क्रि. वि.) चौड़ा, विस्तृत, विस्तीर्ण, फैलाहुवा, विशाल, बड़ा ।

મક્તેદાર (सं.) ठेकेदार, कंट्रेक्टर ।

મક્તો (सं.) कांट्रेक्ट, ठेका, इज़ारा, प्रतिज्ञापत्र, करारनामा ।

મખમલ-મલ (सं) एक प्रकारका गुदगुदा रूएँदार रेशमी वस्त्र ।

મખમલી (वि) मखमलका ।

મખ્ખીચુસ (वि.) कृपण, अतिशय कंजूस, बख़ील ।

મખાતર (सं.) कपट, बहाना, छळ, धोका, फरेब, दगा ।

મગ (सं) एक प्रकारकी मटर, दाल, मूंगविशेष, मार्ग, राह, (उप०) तरफ ।

મગને મરદ ભેગા=खीचड़ा, गपड़ सपड़, घसड़ पसड़ ।

મગફસાર બાફણાં (सं.) कण्डे लकड़ी, लकड़ी, पलीता, ईंधन ।

મગજ (सं.) खोपड़ी, भेजा, मस्तिष्क, गूदा, समझ, दीमाग, एक प्रकारकी मिठाई ।

મગજ ખસી જવું (क्रि.) पागल होना, दीवाना होना, सुधि भूल जाना, दीमाग बिगड़ जाना, चित्त स्थिर न रहना ।

મગજ પાકી જવું (क्रि.) बहुतही व्याकुलता होना, बेचैनी होना, सिर दुखना ।

મગજ ભમાવવું (क्रि.) बुद्धि ठिकाने न रहना, अक़्ल काम नहीं देना । [अक़्ल आना, सूझ पड़ना ।

મગજના બારણાં ઉઘાડવાં (क्रि.)

મગજનો ફાટેલો (सं.) मिजाजी, मगरूर, गर्विष्ठ, हठी, जिद्दी ।

મગજમાં આવવું (क्रि.) समझमें आना तरंग उठना, लक्ष्यमें आना ।

મગજમાં ઉતરવું (क्रि.) पूर्ववत् समझ जाना, ध्यानमें समाजाना ।

મગજમાં પવન ભરાવો (क्रि.) घमंडी होना, सिरजोरी करना, जिद करना, हठ करना, तकरार करना ।

મગજમાંથી ખસવું (क्रि.) भूलना, विस्मृत होना, याद न रहना ।

મગજી (सं.) संजाफ, पहिरनेके वस्त्रोंके बखिया, गोट ।

મગડો (सं.) गुलबांस नामक वृक्षका बीज, बाजविशेष ।

મગતરં (सं.) एक प्रकारका पांखवाला कीट, मच्छर, डांस, मच्छड़ ।

મગદળ (सं) मूंगके आटे के लड्डु । मुद्गर, डम्बल, कसरत के लिये घुमाने केवास्ते दो लकड़ी के सोटे ।

મગદળિયું (सं.) पूर्ववत् ।

મગધુ (सं.) छंद शास्त्र में वहगुण जिसमें तनिगुरु होते हैं

મગદૂર (सं.) शक्ति, बळ, ताकत, साहस, हिम्मत, सामर्थ्य, कूवत, जोर, छाती, शौर्य्य, मर्दुमी, पराक्रम, बहादुरी, जमामर्दी ।

મગન (वि.) राजी, खुशी प्रसन्न, प्रमुदित, हर्षित, प्रफुल्लित, मग्न ।

મગબારણું (सं.) देखो મગઠસાર

બાઈ્ણા, यह शब्द छोटे छोटे बालकोंको गाली के रूप के ग्रामीण लोग प्रायः कहा करते हैं ।

મગફળી (सं.) मूंगफळी, चीनिया बदाम, एक प्रकारका फळ जो भूमि के अन्दर से निकलता है ।

મગમગાટ (वि.) देखो મઘમઘાટ

મગરમચ્છ (सं.) ग्राह, मकर, मगर, एक भयानक जळजीव विशेष ।

મ... वि.) हृष्ट, पुष्ट, बलिष्ठ, ...री, दीर्घ, लठ्ठ, विस्तृत, ...र, बेफिक्र ।

મ... (वि.) अभिमानी, घ... वैष्ठ, मस्त, उन्मत्त ।

મગ... सं.) अभिमान, गर्व, मद, दीमाग, घमण्ड ।

મગાવ...) मंगवाना, बुलाना, पासल... ये कहना ।

મગિયું ... एक प्रकार का स्त्रियों के... का मूंगिया रंगका अच्छा व...दार, गन्धमय ।

મઘમઘતું (...ुगन्धित, खश-

મઘમઘવું (... ...हकना, सुगन्ध मयहोना, खुश...ाना ।

મઘમઘાટ (वि.) ...ं, खुशबू, सौरभ, सुगंध, सुव...

મઘાનીઓરણી (सं. ...नक्षत्र में अन्नबोने की क्रिया, ...नवरी फरवरी में)

મંકોડી-(सं.) देखो મકે ।

મંકોડો (सं.) देखो મકોડો

મંગણુ (सं.) भिक्षुक, यक, मंगता । [भूक ।

મંગરો (सं.) पहाड, पर्वत, टी...

મંગરીલું (सं) झरोखा, रोशनदान ।

મંગળ (सं.) कल्याण , शुभ, अच्छा, श्रेष्ठ, हित, अभिप्रेत , अर्थसिद्धि, क्षेम, कुशल, ग्रह विशेष, तृतीय ग्रह, वार विशेष (वि.) शुभप्रद, प्रशस्त ।

મંગળસૂત્ર (सं.) वैवाहिकसूत्र ।

મંગળકરો-ईश्वर भला करे ।

મંગળા (सं) मंदिरमें प्रातःकाल के समय पवित्र ले दर्शन, हल्दी, दूब, घृत । [प्रकारकी भांवरें ।

મંગળફેરા (सं.) विवाहमें एक

મંગાવવું (क्रि.) देखो મગાવવું ।

મંગાળો (सं.) पत्थर रखकर काम धर काऊ बनाया हुवा चूल्हा ।

મંગળિક (वि.) गुणकारक, शुभ ।

મંગુસ (सं.) न्योळा, नकुल, नेवला । [अपसरण ।

મંચક (सं.) पश्चाद्गमन, परावृत्ति

મંચો (सं.) पलंग, खाट, तख्त, पीढी ।

મચકણિયું (सं.) वहजेवर जिसे स्त्रियां कानके अगले भागमें पहिनती है ।

મચકુર (सं.) देखो મજકુર

મચકો (सं.) लचक, स्त्रियों के चलने के समय की अंगभंगी ।

મચકોડ (सं.) प्रतिघात, तिरस्कार, झटका । [मुखमोडना ।

મચકોડવું (क्रि.) मुंह फेरना,

મચડવું (क्रि.) दबाकर टेढा तिरछा करडालना ।

મચમચાવવું (क्रि.) चिढ़ना, खिझाना, छेड़ करना, चिढ़ाना ।

મચવું (क्रि.) समाना, कार्य में संलग्न होना, घूमना, युद्ध में किसी के सामने डटे रहना, जमाव होना, भीड़ होना, मस्ती में आना ।

મચાવવું (क्रि.) मचाना, हिलाना ।

મચિયેર (सं.) एक प्रकारका वृक्ष ।

મચ્છ (सं.) मछली, मच्छी, मीन, आकाशका, इन्द्र धनुष, विष्णु के दस अवतारों में से प्रथम-यथा-
" मत्स्य कूर्मोवाराहश्च नरसिंहोथ वामनः रामो रामश्च कृष्णश्च बौद्धकल्कीदतेदशः " ।

મચ્છર (सं.) मशक, मस, डांस, मत्सर, अनदेखाई, उन्माद, आवेश, क्रोध, अहंकार, गर्व, द्वेष, डाह ।

મચ્છુ (सं.) भोजन के पश्चात् मुँह धोने की क्रिया, कुल्ली, चुल्लू ।

મચ્છું (सं.) मच्छर या उसी प्रकारका कोई दूसरा जन्तु ।

મછવો-ડુબો (सं.) छोटी नौका, डोंगी, छोटीसी नाव डोंगा।
મછન્દર (सं.) चूहा, मूषक, ऊंदर।
મછા (सं.) इच्छा, चाह, ख्वाहिश, इरादा, मनशा।
મજ (सं.) देखो મુજ
મજક (सं.) देखो મચક
મજકુર (सं.) विषय, मतलब, बाबत, ज़िकर, उपरोक्त, हकीकत, हवाल, वर्णन।
મજનુ-ન (वि.) हालादिल, दीवाना, पागल, खफ़्त, मूर्ख।
મજમલ્લે (क्रि. वि.) सब, समस्त, संपूर्ण, तमाम, कुल एकदम।
મજમુ-મું (सं.) सहयोग, पांती, हिस्सेदारी।
મજમુદાર (सं.) परगनेका हिसाब, रखनेवालेका ओहदा, हिसाब किताब देखनेवाळा आडीटर, पांतीदार, हिस्सेदार, सहयोगी।
મજમુદારી (सं.) आडीटरका कामकाज करनेका कार्यालय, हिस्सेदारी। [मुजरे, पेटे।
મજરે (क्रि. वि.) मांगतमें बसूली,
મજમાં (सर्व) मुझमें, मेरेमें।
મજરે આપવું (क्रि.) मुजरे देना, हिसाबमें जमा करा देना।
મજરે લેવું (क्रि.) हिसाबमें जो कुछ अपने [illegible]ा था सो लेना।
મજરો (सं.) देखो મુજરો।
મજલ (सं.) मंजिळ, कूच, मुकाम, पड़ाव, अमुकस्थान, दो स्थानोंके बीचका फासला, मुसाफिरी, खेप, [illegible] पंथ, विश्रामस्थान, उतारा।
મજલસ (सं.) सतह, सभा, दरबार, मीटिंग, एक स्थानमें बहुत मनुष्योंका एकत्र का होना।
મજલો (सं.) मंदजिळ, मेड़ी, घरके ऊपरका घर।
મજા (सं.) देखो [illegible]। [चूळ।
મજાગરૂં (सं.) कुल[illegible]ावा, कब्जा,
મજાનું (क्रि. वि.) [illegible] મઝાનું देखो।
મજાલ (सं.) शक्ति, ताकत, वळ, पुरुषार्थ, हिम्मत, साह[illegible]स, छाती, योग्यता, कूवत, शौर्य।
મજિયારૂં-ઝિયારૂં (सं.) [illegible] पांतीवाळा, हिस्सेदारी, सह[illegible]ोगिता (वि.) संयुक्त, एकत्र, सम्मि[illegible]लित।
મજાગરું (सं.) देखो મિજાગરું।
મજીઠ (सं.) इस नामकी [illegible] एक बनस्पति, इसकी जड़ इत्यादि[illegible] से लाल रंग बनाते हैं। मांजिठ।
મજીઠિયા (वि.) लाल रंगका, [illegible] रक्त वर्णका, राता रंगका।

મજુર (सं.) मजदूर, भारवाहक, हमाल, बेलदार, बेगारी, रोज़ाना पैसे लेकर काम करनेवाला।

મજૂરણુ–રેણુ (सं.) मजदूरी करनेवालेकी पत्नी, मजदूरनी।

મજુસ–ષ (सं.) मोटी पेटी, बड़ा, पिटारा, बड़ी सन्दूक, मंजूषा।

મજ્જે (सं.) देखो મઝા।

મજ્જન (सं.) नहाना, स्नान करना पानी इत्यादि में डुबकी मारना, अभिषेक, नहान, धो धोकर नहान।

મઝા–ઝે·ઝો (सं.) आनन्द, रंग हर्ष, उल्लास, गम्मत, क्रीडा, दिल्लगी, तमाशा, स्वाद, रस, रुचि भाव, मजा, खेल, विलास।

મઝાનું–ઝેનું (वि.) आनन्दकारी सुखद, मनोहर, सुंदर, अच्छा, रम्य, रमणीय, मजेदार।

મંચ–ક (सं) तख्त, सिंहासन, पलंग, कोच, उच्चासन, खेतकी रक्षाके करनेको बैठने के लिये किसी वृक्षमें या लकड़ियों पर ऊंचा बनाई हुई झोंपडी ऊंचा मंडप, मचान, डोजा।

મંજાર (सं.) बिलाव, बिडाल, बिल्ला, मार्जार, बिल्ली।

મંજરી (सं.) पूर्ववत् (स्त्रीलिंग)

મંજીકા (सं.) वेश्या, रंडी, पातुर रामजनी, वारांगना, गणिका, वार वधु।

મંજીરા (सं.) कांस्य और पीतल धातु निर्मित एक प्रकारका ताल, वाद्य, झांझ, करताल, मंजीरा।

મંજીષ્ઠા (सं.) मजीठ, एक प्रकारकी औषधि।

મંજુર (वि.) स्वीकार, कबूल, ठहराव, बहाल, कायम।

મંજુ–લ (सं.) सुन्दर, मनोहर रमणीय, मनोज्ञ, अभीप्सित, इष्ट नरम, कोमल, मृदुळ, मधुर, प्रिय मंदमंद धीमा, (वायु)।

મંજે (सं.) बाळकोंके खेलनेका एक प्रकारका खिलौना, लखोटा।

મંજુરી (सं.) स्वीकृति, सम्मति अनुमति, आज्ञा, अनुमोदन।

મટ (सं.) आराम, भाव, चेष्टा, विश्राम, शान्ति, तसल्ली।

મટકા (सं.) चोंचला, झावली, नखरा, हावभाव, अंगभंगी।

મટક મટક (क्रि. वि.) उत्सुकतासे, अभिलाषासे, तीक्ष्णतासे।

મટકાવવું (क्रि.) मटकाना, आंख चमकाना, कटाक्षकरना।

મટકી (સં.) हांडी, मृत्तिकाका घडा, मृण्मय घट, मिट्टीका पात्र विशेष।

મટકું (સં.) पूर्ववत्।

મટકો (સં.) अंगचेष्टा, अंगभंगी, हावभाव, चेष्टा, अभिनय, कटाक्ष।

મટવું (ક્રિ.) मिटना, नष्टहोना, दूरहोना, टलना बरबादहोना।

મટમટાવવું (ક્રિ.) आंखे टमटमाना, आंख मारना, नेत्रोंको जलदी जलदी खोलने और मींचनेकी क्रिया।

મટાડવું (ક્રિ.) हटाना, सरकाना दूर करना, मिटाना, नष्टकरना।

મટીજવું (ક્રિ.) देखो મટવું।

મટુકી (સં.) देखो મટકી।

મટોડી (સં.) मिट्टी, चिकनी मिट्टी।

મટોડું (સં.) कीच, मिट्टी, कीचड।

મટોડાનું મગજ (સં.) बुद्धिहीन मस्तिष्क, मूर्ख, बेवकूफ दीमाग।

મટોડું ફરી વળવું (ક્રિ.) व्यर्थ जाना, निष्फळ, होना, निरर्थक, होना।

મઠ (સં.) एक प्रकारका अन्न, मौठ, मठ, गुरुद्वारा, कुटी, एकान्त वास, आश्रम, विहार बाबा गोसाईं, साधु संन्यासी विद्यार्थी आदि के रहनेका स्थान, मंदीर।

મઠ્ઠાકવા (ક્રિ.) निरुद्यमी रहना।

મઠને છાયડે મજા કરવી (ક્રિ.) (मौठकी छाया नहीं होती न उसका वृक्ष इतना बडा होता है कि उसकी छायामें कोई बैठ सके) एक व्यंग वाक्य, मृग तृष्णा से आनन्दित होना।

મઠારવું (ક્રિ.) देखो મઠેરવું।

મઠિયા (સં.) देखो મુઠીયા मौठके आटेकी बनी नमकीन तीखी पपडिया, खाद्य पदार्थ विशेष, चनेके आटेका बना हुवा पदार्थ विशेष।

મઠેરણી (સં.) बढईका रन्दा एक प्रकारका औज़ार।

મઠેરવું (ક્રિ.) साफ करना, छील कर घिसकर चिकना करना, टीप टाप करना। स्त्रीके साथ समागम होना, (ग्रामीण भाषामें)।

મઠો (સં.) छाछ, तक्र, मही, मठा।

મડ (સં.) हठ, जिद, आग्रह। धुन, दृढता, अड।

મડદું (સં.) लोथ, लाश, शव, प्रेत, मृतदेह, निर्जीव पिंड।

મઠ્ઠાના તાળવામાંથી કાઢી ખાનારો (સં.) बहुतही कंजूस,

अतिशय, कृपण, महानलोभी कफ न वसीट, मक्खीचूस, निर्दय, दुष्ट घाती ।

મડદાને મીંઢળ બાંધવાં (क्रि.) बूढे खूसटका विवाह करना, वृद्ध पुरुष को लड़की देना ।

મડધો (वि.) मोटा, पुष्ट, लठ्ठ ।

મડમ (सं.) एक प्रकारकी वनस्पति एक प्रकारकी तरकारी । शाक विशेष ।

મડમ (सं.) स्त्री, औरत, महाशया।

મડવું (क्रि.) देखो મરડવું

મડાગાંઠ (सं.) सख्त गांठ, कठोर ग्रंथि बहुत उलझन ।

મડિયો (सं.) एक प्रकारका कंकर जोघिसकर फोडा फुन्सीपर लेप किया जाता है । कंकड,रेत,पथरी ।

મડું (सं.) देखो મડદું

મઢવું (क्रि.) मढना, तोपना, आवरण करना, छिपा देना, तार कपडा चमडा आदि चढाना । चांदी सोनेका पत्तर चढाना ।

મઢી (सं.) कुटिया, झोपडी, कुटी मढैया, मंडप ।

મઢુડીલી (सं.) पूर्ववत्

મણ (सं.) तौलपरिमाण विशेष. मन, चालीससेर ।

મણકો (सं) गुरिया, दाना, मनका, लकडी, या कांचका माला का दाना ।

મણા (सं.) ओछा, थोड़ा कम, बाकी इच्छा. चाह, ख्वाहिश ।

મણિકંઠ (सं) चाषपक्षी, नील कण्ठ पक्षी विशेष ।

મણિકો (सं.) वहपात्र जिसमें एक मण वजन समाता हो । मणा, एक मणका वजन ।

મણિયો ઢીલો કરવો (क्रि.) अत्यंत परिश्रम कराके हाथ पैर ढीले करदेना ।

મણિબંધ (सं.) कलाई, पहुंचा ।

મણિઆર (सं.) हाथीदांतका काम करनेवाला ।

મણીઆરૂં (सं.) कांचका गुरिया, कांचका गोळ माळाका दाना ।

મંડપ (सं.) मंडवा, जन विश्राम गृह, तृणादिनिर्मित देवगृह,विवाह उत्सव के लिये बनाया हुवा घर, कुंज लतागृह ।

મંડવું (क्रि.) लगना, भिड़ना, पिलना, आरंभकरना, शुरुहोना ।

મંડયા રહેવું (क्रि.) भिडेरहना, लगेरहना, संलग्नरहना ।

મંડળિક (सं.) राज्यके एक छोटे भागका अधिपति, चक्रवर्ती राजा मांडलिक ।

મંડળી (सं) समूह, सभा, यूथ जथा, झुंड, भीड़ समाज, बैठक, मजलिस, टोली, कम्पनी ।

મંડાણ-ણુ-ણ્યુ (सं.) देखो મંડાણી ।

મંડાણ (सं.) आरंभ, शुरुआत, नींव, मूळ, कुवे परके वेह लकड इत्यादि जिनमें पानी खींचनेका चाक लगा होता है। कूवेका ढाणा, कूवेका थाला, ढंग, बादलोंका आच्छादन । [चलाना ।

મંડામણી (सं.) नवीन वहीखाता

મંડાવવું (क्रि.) लिखाना, आरंभ कराना, शुरु कराना, ढंग रचाना ।

મંડાવું (क्रि.) होना, विवाह होना, बंधना, ठिकाना होना, अच्छी दशामें होना ।

મંડત (वि.) भूषित, सज्जित, अलंकृत, वेष्टित, जडित, शृंगारित ।

મંડિલ (सं.) देखो મન્દિલ

મંડુર (सं.) लोहका मैल रसायन विशेष ।

મત (सं.) विचार, इरादा, अभिप्राय, पक्ष, धर्म, मजहब, सम्प्रदाय, रीति, ढब, सिद्धान्त, आशय, मन्तव्य, पंथ, सम्मति, अनुमोदन, फैसला, इच्छा ।

મતલબ (सं.) स्वार्थ, हेतु, मुराद आशय, कारण, इच्छा, अर्थ, तात्पर्य्य, भाव, सारांश ।

મતલબસર (क्रि. वि.) स्वार्थसे, हेतुसे, मरजमंदी ।

મતલબી (वि.) स्वार्थी, खुदगरजी कपटी, दगाबाज, स्वार्थनिष्ट ।

મતવાદ (सं.) अपने मतके लिये आग्रह जिद् हठ, आग्रह ।

મતવાદી (सं) स्वमताग्रही, हठवादी, जिद्दी मताग्रही ।

મતવાલી-લી-લું (वि.) सुन्दर, भड़कीला, आनन्दी, मौजी लहरी बहादुर, धैर्य्यवान, प्रतापी, व्यभिचारी. छिनाल, मदमत्त ।

મતવાળો (वि.) मजबूत, दृढ, पुष्ट ।

મતસરવણી (सं) एक प्रकारका व्रत विशेष जो आषाढ कृष्णपक्षमें होता है ।

મતા (सं.) माल, दौलत, पूंजी, द्रव्य, जीव, दम, मिलकियत, द्रव्य । [जिद् ।

મતાભિમાન (सं.) आत्माभिमान

મતાડું (सं.) लकडीका कट्ठा, सहतीर, कड़ा, सोटा, लट्ठ, दन्डा।

મતિયું (वि) हठी, जिद्दी, अभिमत।

મતિયેલ-લો (वि.) पूर्ववत्, मनचाही करनेवाला, स्वमत पुष्टी कर्ता। [फलविशेष, तरबूज।

મતિરૂ (स) छोटीककड़ी, तोरई,

મતું-તુ (सं.) हस्ताक्षर, दस्तखत।

મતુકરવું (क्रि.) हस्ताक्षर करना, दस्तखत करना, सही करना।

મતાદાર (सं.) सरकारी रुपयोंको जमा करनेका साक्षी।

મતિમાન (वि.) बुद्धिवान समझदार चतुर, कुशळ दक्ष।

મથક (सं, मुख्यस्थान, जहांपर बड़ा बाजार हो, बंदर, शहर इत्यादि, युद्धस्थळ विद्यालय, बड़ी छावनी।

મથન (सं) बिलोवन, लोढ़न, मंथन, सिरपच्ची, प्रयास, प्रयत्न कष्ट, उद्योग, व्यवसाय, श्रम।

મથની (सं.) महानी, मथनिया दधि इत्यादि मथन करनेका पात्र विशेष।

મથવું (क्रि.) महना, बिलोना, घी निकालना, मंथनकरना, मंथोड़ना घोलना, परिश्रमकरना। [इच्छाकरना।

મથાળી (सं) पगड़ी, पाग,

મથાળું (सं.) ऊपरका भाग, हेडिंग, शीर्षक, देने लेनेका निश्चय करना, पगड़ी, पाग, साफा, टोपी।

મથોટી (सं.) गाय भैंस इत्यादि पशु।

મથોડું (सं.) मस्तक पर्यन्त गाहरा, छः फुटक माप। (वि०) मस्तक की उंचाई के बराबर।

મદ (स) गर्व, मद्य, मत्तता, मोह, मादक द्रव्य, उन्माद, अतिगर्व, अभिमान, उन्मत्तता, काम, मदन, काम विकार, अभिलाष, रस, पुष्परस।

મદકલ (वि.) मदके कारण बड़बड़ाहट।

મગળ (सं०) हाथी, कुंजर, मदमत्त, वारण, करिवर, मातंग, गज।

મદદ-દ (सं.) सहाय, पुष्टि, सहारा, आश्रय, रक्षा, आधार, रक्षण, टेका, बचाव।

મદદનીશ (सं.) सहायक, आश्रय दाता, रक्षक, मददगार, असिस्टेण्ट।

મદદગાર (वि.) पूर्ववत्।

મદદનીશ (सं.) पूर्ववत्।

મદનમૂરતુ' (सं.) अत्यंत खूबसूरत, अत्यंत मनोहर।
મદન ફળ (सं.) देखो मिંઢળ।
મદમાતુ (वि.) मदोन्मत्त, अहंकारी, प्रफुल्लित, अभिमानी, कामातुर।
મદરેસા (सं.) पाठशाला, विद्यालय, कालेज, महाविद्यालय, युनीवर्सिटी।
મદવિકાર (सं.) मत्सर, उन्मत्तता। नशा, दान, मददोष, हाथी के गण्ड स्थलमें से टपकता हुवा पानी।
મદાર (सं.) खातरी, भरोसा, विश्वास, उद्देश, हेतु, मनोरथ, मतलब, इच्छाकारण, ध्यान, लक्ष्य रंडीबाज, आशिक, मदोन्मत्त हाथी।
મદારત (सं.) सुश्रूषा, खातिर, अतिथिसत्कार।
મદારી (सं.) बाजीगर, इंद्रजाली, सांपवाला, नटवर, तमाशा जादू बतानेवाला, इल्मी, ठग, दगाखोर, ढोंगी।
મદિરાક્ષી (सं.) खंजन पक्षी के नेत्र के रंगवाली, मृगनयनी, अच्छे नेत्रोंवाली। [उन्मत्त।
મદી (वि.) मदवाला क्रुद्ध,
મધ (सं.) पुष्पमद, फूलोंके भीतरका रस, मधु, शहद, पराग।
મધ મુકીને ચાટવુ' (क्रि) शहद लगा कर चाटना, (व्यंगोक्ति) निरर्थक रस छोड़ना।
મધવાળી જીભ (सं.) खुशामद करनेवाली वाणी, मिष्टभाषी जिव्हा।
મધમાં હાથ મેળાવવો (क्रि.) लालच दिखाना, मोहमें फंसाना।
મધપાક (सं.) एक प्रकारका जिह्वा रोग जो बालकको होता है।
મધપુડો (सं.) शहदकी मक्खियों का छत्ता, मधुमक्षिकाओंके रहने का घर। एक एक छत्ते में दस हजार से लगाकर ५० हजार तक मक्खियां रहती हैं।
મધમાખ–ખી (सं.) मधुमक्षिका शहदकी मक्खी। जन्तु विशेष।
મધભાગ (सं.) बीचका हिस्सा, मध्य का भाग।
મધરાત ત્રી (सं.) आधी रात, मध्य रात, रात्रिका १२॥१ बजेका समय।
મધલાલ (सं. अतिइच्छा, प्रबल इच्छा।
મધવો (वि.) पुष्ट, मोटा, स्थूल।
મધુ (सं.) शहद, पुष्परस, अमृत, मकरन्द, मद्य, दारू, शराब, वसन्तऋतु, (वि.) मीठा स्वादिष्ट।

મધુકર (सं.) भ्रमर, भंवरा, अलि, भौंरा, षटपद्, मधुप, मलिन्द, ।

મધુકોશ (सं.) देखो મધપુડો ।

મધુકરી (सं.) भिक्षाद्वारा प्राप्त अन्न ।

મધુપ (सं.) देखो મધુકર ।

મધુપર્ક (सं.) दधियुक्त मधु, शहद और दही, घी, दूध, दधि, मधु, और शक्करका मिश्रण । इनपांच वस्तुओंको कांस्यपात्र में दान देनेकी क्रिया । [पदार्थ सेवन ।

મધુપાન (सं.) मद्यपान, मिष्ट

મધુમક્ષિકાલય (सं.) वहस्थान जहां मधुमाक्षिकाए हों ।

મધુમતિ (सं) योगशास्त्रवर्णित योगी कां एक चित्तवृत्ति, काश्मीरीवृक्ष, इस नामकी एक देवी नायिका ।

મધુર-રું (वि.) मीठा, मिष्ट, मृदु, स्वादिष्ट, कर्णसुखद, प्रिय, रुचिकर, सुंदर, मनोहर, सुगंधित ।

મધુરા (सं.) फलविशेष ।

મધુલિહ-લેહ (स.) देखो મધુકર

મધોમધ (क्रि. वि.) बीचोंबीच, ठीक मध्यमें । [में ।

મધે (क्रि. वि.) भीतर, अन्दर,

મધ્ય (सं.) अन्तराल, बीच, मांझ । मंझार, कटिभाग ।

મધ્યમા (सं.) बीचकी अंगुली । जवानी प्राप्त स्त्री, शब्दोच्चारणकी तीसरीदशा, फूलों के गुच्छे में से बीच कापुष्प, दृष्टरजस्कानारी ।

મધ્યસ્થ (सं.) बीचवाला, साक्षी, निर्णयकर्त्ता, तटस्थ, पंच,

મધ્યસ્થળ (सं.) कटि, कमर ।

મધ્યસ્થી (सं.) देखो મધ્યસ્થ

મધ્યા (सं.) एक प्रकारकी ग्रह गति ।

મધ્યાન-હ્ન (सं.) दोपहर, मध्य दिवस, दिनके बारहबजेका काल ।

મધ્યે (क्रि. वि.) बीचमें भीतर, अंदर ।

મન (नं.) मन, चित्त, हृदय, समझशक्ति, ज्ञानेन्द्रिय, बुद्धि, दिल, हिया, इच्छा, मरजी, धारणा, विचार, स्मरणशक्ति, अंतःकरण ।

મનકરવું-થવું-મારવું (क्रि.) इच्छा होना, इरादा होना ।

મનમાનવું (क्रि.) स्वीकार करना, चित्त प्रसन्न होना ।

મનખાટું કરવું (क्रि.) नाराज अप्रसन्न करना ।

મનચોરવું (क्रि.) चुकड़ पुकड़ करना, पश्चात्ताप करना ।

મનમનાવવું (क्रि.) प्रसन्न करना, समझाना ।

મનમાં આવવું ઉતરવું (क्रि.) समझना इच्छा होना, इरादा होना।

મનવાળવું (क्रि.) आराम लेना, संतोष पूर्वक बैठना।

મન ઉઠવું (क्रि.) अप्रीति होना, इच्छा शक्ति नष्ट होना, वैराग्य उत्पन्न होना। [समझना।

મનજોવું (क्रि.) दूसरका इरादा

મન બેસવુ-લાગવું (क्रि.) प्रेमहोना अनुरागहोना, जी लगना।

મનઘાલવું-પરોવવું (क्रि) ध्यान देना।

મન ઉંચુંથવું (क्रि.) नाखुशहोना, अप्रसन्न होना, स्नेहटूटना, असंतोष होना। [यादरखना।

મનમાં લાવવું (क्रि.) जीमेंलाना

મનનું મનમાં (क्रि. वि.) जीकी जीमें।

મનમોકળું (वि.) उदार, फय्याजा

મનનું કપટી (सं.) जो ऊपरसे साफ और अंदरसे कपटहो।

મનનું પોચું (वि.) कमजोर दिलवाला।

મનમાંઘોળાયા કરવું (क्रि.) मन ही मनमें सोचा करना।

મનમુખરવુ (क्रि.) संतुष्ट करना पूर्ण होना।

મન મ્હાંળમું (वि.) कुछ सूझ न पड़े ऐसी स्थितिमें होना।

મનખાટું થવું (क्रि.) अप्रसन्न होना, दिल हटजाना, नाराज होना। [कहना।

મનખોલવું (क्रि.) जीकी बात

મનચોખ્ખુંરાખવું (क्रि.) निष्कपट मन रखना।

મનચોંટવુ (क्रि.) जी लगना, मोहमाया में पड़ना। [होना।

મનનીચુંથવું (क्रि.) नीच वृत्ति

મનમાનવું (क्रि) जी प्रसन्नहोना, संतोषहोना, इच्छा पूर्ण होना।

મનમારવું (क्रि) मन वशमें रखना इन्द्रिय दमन करना।

મનમૂકવું (क्रि.) भेद अथवा प्रपंच नहीं रखना छल कपट न रखना। [उठना।

મનવિખરાઈજવું (क्रि.) दिल

મનસાંકડુંથવું (क्रि) संकीर्ण हृदय होना।

મનમાંપેસીનિકળવું (सं.) दूसरेके मनकी सबबातें जान लेना।

મનકામના (सं.) मनकी इच्छा मुराद मरजी मनोरथ वाञ्छा, अभिलाश। [मानुष।

મનખ (सं.) मनुष्य इन्सान,

મનખાદેહ (सं.) मानव जीवन मनुष्य शरीर नरदेह।

મનખો (सं.) मनुष्य इन्सानियत।

મનભાવતું (सं.) रुचिकर, संतोषप्रद, मनोरंजक, प्रिय, रम्य।

મનડુ (सं.) मन, दिल, चित्त (काव्यमें)

મનફેર (वि.) वह मन जिसमें कुछ फेरफार हो गया हो।

મનભંગ (सं.) इच्छाभंगनिराशा

મનભાવતું (वि.) मनमाना, रुचिकर, पसन्दीद, दिल पसन्द।

મનમથ (सं) कामदेव, मदन।

મનમાનતું (वि.) देखो मनभावतुं

મનમાન્યું (वि.) बहुत, अधिक, पुष्कळ इच्छित, चाहे उतना।

મનમેળાપી (वि.) मनोहर, मनभावना।

મનવછિયું (वि) मन मनानेयोग्य।

મનવાર (सं) मनुहार, स्वागत, शुश्रुषा, अतिथिसत्कार, सेवा, आतिथ्य। [मन, चित।

મનવા (सं.) मनुष्य, मानव,

મનવાર (सं.) युद्धका बड़ा जहाज़, सैनिक जलयान, जंगी जहाज।

મનવેગી (वि.) बहुत जल्दी, मनके समान अत्यंत वेगवाला।

મનશા (सं.) एक प्रकारकी धातु, मैनसिल, मनः शिला।

મનસા (क्रि. वि.) मनद्वारा, चित्तसे, (सं.) इच्छा, अभिलाष, मनोरथ।

મનસૂબો (सं.) इरादा, इच्छा, विचार, युक्ति, तदबीर, उद्देश, मतलब, हेतु, सलाह, धारणा।

મનસબદાર (सं.) सेनाका अधिकारी विशेष।

મના (सं.) प्रतिबंध, रोक, निशेध, निरोध, अटकाव, इन्कार।

મનાઈ (सं.) पूर्ववत्।

મનાદી (सं.) पूर्ववत्।

મનામણાં (सं.) आराधना, समझौती, सांत्वना, ऐक्य, समाधान, सलाह।

મનારો (सं.) पत्थर चूनेका बना हुवा ऊंचा गोल स्तंभ, मीनारस्तंभ, मीनार, स्मरणस्तंभ।

મનાવણું (सं.) देखो મનામણું।

મનાવવું (क्रि) समझाना, मनाना, दिल मिलाना, मिलाप करना, स्वीकार कराना, सत्य सत्य कहलाना। [कोप उतरना।

મનાવું (क्रि.) भिन्नता होना,

મની (सं.) बिल्ली, बिड़ाल, बिलाव, मार्जार, मांजार।

મનીઓર્ડર (સં.) रुपये पैसे डाकघर द्वारा भेजनेका आज्ञापत्र, एक जगह डाखनेमें रुपया जमा कर देने पर दूसरे स्थान पर भेजनेकी हुंडी।

મનીઆર-ણીઆર (સં.) चूड़ा। चूड़ियां बेचनेवाला, लखेरा, मनिहारा। [करनेवाला।

મનીઆરું (સં.) मनिहारेका धन्धा

મનીષ (सं.) मनुष्य, मानव, मनुज।

મનુ (સં.) ब्रह्माका पुत्र और मनुष्योंका आदि पुरुष, मन्वंतरका मूळ पुरुष, प्रसिद्ध १४ ऋषियोंमेंसे प्रत्येक, (१) स्वयंभू (२) स्वारोचिष (३) उत्तम (४) तामस (५) रैवत (६) श्राद्धदेव (७) सावर्णि, (८) ऋक्ष सावर्णि (९) देव सावर्णि (१०) ब्रह्मसावर्णि (११) धर्मसावर्णि, (१२) देवसावर्णि (१३) इन्द्रसावर्णि और (१४) चाक्षुष। एक धर्मशास्त्रकर्त्ता ऋषि, चौदहकी संख्याका सूचक।

મનુજ (સં.) मानज, मनुष्य, मनुकी संतान, इन्सान, मर्द, आदमी।

મનુહાર (સં.) खातिर, प्रार्थना, आव भगत, आतिथ्य, शुश्रूषा, सेवा।

મને (સં.) देखो મના।

મને (सर्व.) मुझे, मुझको, मेरेको।

મનોગતિ (સં.) मनकी पहुंच, चित्त की शीघ्र गति।

મનોગમ (वि.) रुचिकर, सरस।

મનોજ્ઞ (સં.) सुंदर, मनोहर, दिल पसन्द, मनमोहक।

મનોજ્ઞા (સં.) मेनसिल, मनःशिला, जीरक, ज़ीरा, मदिरा, दारू, राजपुत्री। [चित्त धर्म।

મનોધર્મ (સં.) मनका धर्म,

મનોભાવ (સં.) मनकी इच्छा, इरादा, तात्पर्य्य, मतलब।

મનોભંગ (સં.) आनन्द, उल्लास, हर्ष, खुश मिजाज़, संतोष।

મનોમય (સં.) मानसिक, हार्दिक, मनसम्बन्धी।

મનોમયકોશ (સં.) पंचकोशोंमें से एककोश, अहं ब्रह्मास्मि पर्यंत ज्ञान

મનોભિરામ (वि.) मनोहर, रमणीय, आल्हादक, सुखद, आनंदजनक, रम्य, रुचिकर।

મનોશ્રમ (સં.) मनका परिश्रम, पाठ, अभ्यास, प्रयोग, शिक्षा, सबक।

मन्तर (सं.) देखो मंत्र।

मन्तरवुं (क्रि.) जादूकरना मंत्रित करना, मोहितकरना, वशीकरण करना, बुरकी डालना।

मंतराववुं (क्रि.) जादूकराना, गण्डा डोरा कराना, जादू कराना।

मंत्री (सं.) वज़ीर, दीवान, सलाहकार, परामर्शदाता, सेक्रेटरी, सिकत्तर।

मंत्रित (वि.) मंतराहुवा, मंत्रद्वारा संस्कृत, जादू किया हुवा।

मंथन (सं.) विलोडन, मथन, महना, रवई, मंथन दण्ड।

मंद (वि.) धीमा, धीरा, अल्प, थोडा, शिथिल, अतीक्षण, अधम, रोगी, सुस्त, ओछा, कम, मूर्ख, कोमल, मृदु।

मंदवाड (सं.) रोग, बीमारी, अस्वस्थता, प्रकृतिमें विकृतिउत्पत्ति।

मंदवार (सं.) शनिवार।

मंदहास्य (सं.) मुस्कुराहट, मुसक्यान, स्मितहास्य।

मंदाक्ष (सं.) लाज, शरम, लज्जा, हया, शर्म।

मंदाग्नि (सं.) कफद्वारा जठराग्नि का निर्बलहोना, अजीर्णता, कुपच कोष्ठबद्धता, बद्धकोष्टता।

मंदार (सं.) स्वर्गस्थित एक वृक्ष विशेष स्वर्गीय पांच वृक्षोंके अन्तर्गत एक वृक्षका नाम, पारिजात वृक्ष।

मंदिर (सं.) घर, भवन, मकान, देवालय, देवगृह, महल, देवरा।

मंदिल (सं.) जरीतारोंके कामवाली पघडी, ज़रीकी पगड़ी।

मंदी (सं.) गिराबाजार, कममूल्य (तेजी) मन्दी, व्यापारमें शिथिलता। [थोड़ा, शिथिल।

मंदुं (वि.) धीमा, सुस्त, अल्प,

मन्वन्तर (सं.) एक मनुका राज्य काल, एक मनुका समय, ३०६७२०००० वर्षोंका काल, कल्पका १४ वां भाग।

मपारो (सं) माल तौलने वाला, अन्नका व्यापारी।

मपाववुं (क्रि.) तुळवाना, भराना।

मपावुं (क्रि) तुलाना, भराना।

मफत (क्रि. वि.) मुफ्त, बे मूल्य, बिना कीमत, फोकट अल्प, मूल्य।

मफतियुं-तीउं (वि.) मुफ्तखोर, फोकटानन्द, हरामकी खानेवाला।

मफलस (सं.) दीन, गरीब, दरिद्र।

मबलख (वि.) अतिशय, बहुत, पुष्कळ, घना, जियादः।

મબાદા (क्रि. वि.) शायद, किंबहुना, संभवतः दैवात्, योगात्।
મબારખી (सं.) एक प्रकारका, रोग जो बालकोंको होता है।
મભમ (वि.) अस्पष्ट, संदेहात्मक, संदिग्ध, द्विअर्थी, अव्यक्त, संशयात्मक, शंकाजनक। [बच्चोंका।
મંમ (सं.) खानेका संकेत विशेष
મમત (सं.) हठ, ज़िद, दुराग्रह, अड़, आग्रह।
મમતા (सं.) मोह, माया, स्नेह, प्रेम, ममत्व, अहंकार, गर्व, हठ, जिद, आग्रह, अड़।
મમતી (वि.) जिद्दी, हठी, आग्रही।
મમતીળું (वि.) पूर्ववत्।
મમતા મમતી (सं.) चढ़ाबढ़ो, देखादेखी, ईर्ष्या, स्पर्द्धा, विरोध।
મમરા (सं.) सिके हुए चांवल, भुने हुए चावल, मुरमुरा।
મમરો મૂકવો (क्रि.) पानी चढ़ाना, उसकाना, रंजकदेना, दो आदमियोंको क्लेश हो ऐसा बोलना।
મમળાવવું (क्रि.) होठोंसे चपचप शब्द करना, स्वाद लेना, मुखमें रखकर इधर उधर हिलाना, मनन करना, स्मरण करना।
મમાઈ (सं.) माकी मा, नानी।
મમાનો (सं.) माका बाप।
મમાદેવી (सं.) देवीका नाम विशेष।
મમોળો एक प्रकारका जीव।
મમ્મો ચમ્મો (सं) गाली अपशब्द।
મય (वि.) युक्तवाले और भरपूर सूचक प्रत्यय, यथा--जळमय, आनंदमय।
મયણ (सं. देखो મનમથ।
મયત (वि.) मृत, मराहुआ, जीवहीन।
મયા (सं.) दया, माया, कृपा, इरशाद, अनुकम्पा, अनुग्रह।
મયાળ (सं.) एक प्रकारकी वनस्पति की बेलि।
મરે (क्रि.) मरजा, जाता रह (विस्म.) ऐसा ही हो, कुछ परवाह नहीं।
મરકત (सं.) मणिविशेष, हरे रंग का मणि, नीलम, पन्ना।
મરકલડું (वि.) मन्दहास्यवाला, मुसकानेवाला, हंसोकड़ा, हंसमुख।
મરકી (सं.) जिसमें बहुत मृत्युएं हों, हैजा, प्लेग, महामारी, मरी, वह रोग जिससे बहुत आदमी मरें, चेचक, इन्फ्ल्युएन्जा। ज्वर विशेष, एक प्रकारकी मिठाई।

મરગ (सं.) हरिण, मृग, कुरंग, सारंग, सांभर, कृष्णसार ।

મરઘી (सं.) मुर्गी, कुकड़ी, पक्षी विशेष । [अरुणशिख, पक्षीविशेष ।

મરઘો (सं.) मुर्गा, मुर्ग, कूकड़ा,

મરચી (सं.) मिरचका पेड़ ।

મરચું (सं.) मिर्च, मिरच, चिल्ली, एक प्रकारका चरपरा फल ।

મરચાં ઊઠવાં-લાગવાં (क्रि) क्रोध करना, दिल दुखना, व्याकुल होना, चिढ़ना ।

મરજ (सं.) रोग, दर्द, पीड़ा, व्याधि, विकार, आजार, बिमारी ।

મરજન (सं.) स्नान, नहान, मार्जन ।[सीमा, प्रतिष्ठा, मर्यादा

મરજાદ-દા (सं.) मान, पत, टेक,

મરજાદવેલ (सं.) पानी के किनारे पैदा होनेवाली एक प्रकारकी बेलि ।

મરજાદી (वि.) वल्लभ संप्रदाय में पुष्टि मार्ग, और इसके अनुसार कार्य करनेवाला वैष्णव ।

મરજી (सं.) इच्छा, खुशी, कामना, मनोरथ, स्पृहा, आकांक्षा, वाञ्छा, मनोकामना, वासना, मिजाज ।

મરજી રાખવી (क्रि) दिल रखना, इच्छानुसार बर्ताव करना ।

મરજી રાખુ (वि.) खुशामदी, चाटुकार । [निकालनेवाला ।

મરજીવો (सं.) समुद्रमें से मोती

મરડ (सं.) मरोड़, ऐंठ द्वेष, डाह ।

મરડવું (क्रि.) ऐंठना, मरोड़ना, टेढ़ा करना, उलटना, फेरना ।

મરડાટ (सं) (प्यारमें) नाराज होना, अन्योक्ति, उपरोध, चलते वक्त लटका, ऐंठ, मरोड़, द्वेष ।

મરડાવું (क्रि.) टेढ़ा होना, मुड़ना, झुकना, काम करने में उलटा होना, शरीर टेढ़ा करके नखरे करना ।

મરડાસિંગ (सं.) एक प्रकारका वृक्ष, इसकी फलियां ऐंठी हुई होती है; मरोड़ फली, औषधि विशेष ।

મરડો-મેડો (सं.) अतिसार, पेट में बारबार दर्द होना और शौच आना, पेट का दर्द, दस्त लगना ।

મરણકાળ (सं.), अन्तसमय, मृत्युसमय, आखिरी वक्त ।

મરણઘાત (सं.) ऐसाघात जिससे मृत्यु होजाना संभव हो [रक्षण ।

મરણતરણ (सं.) मृत्यु और

મરણતોલ (वि.) मृत्युतुल्य, मरने लायक ।

મરણપામવું (क्रि.) मरना, मर-जाना, मौत होना, देहावसान।

મરણપોક (सं.) मृत्युके समय पुकार। मरेके नामपर पुकार।

મરણલાકડાં (सं.) चिताकाष्ट, मुर्देको भस्म करनेके लिए लक-ड़ियां। [काळ।

મરણાંગત (सं.) मृत्युसमय, अंत-

મરણિયું (वि.) मरनेवाला, मृत्यु शय्याश्रित, मरनेसे नहीं डरनेवाला, साहसी जो प्राणकी पर्वाह न करे।

મરણું (सं.) मौत, मृत्यु, मीच, काळ।

મરતબો (सं.) पदवी, दर्जा, ओहदा, प्रभुता, गौरव, अधिकार रुतबा।

મરતબોસાચવવો (क्रि.) प्रभु-तास्थापितकरना, गौरवान्वित होना।

મરતાંજીવતાં (क्रि. वि.) क्वचित, कभी, किसीदिन, कोई समय।

મરદ (सं.) आदमी, पुरुष, नर, पुरुषार्थयुक्त, पहलवान, वीरमनुष्य।

મરદવું (क्रि.) दबाना, मसळना मर्दन करना।

મરદાઈ (सं.) पौरुष, पुंसत्व, शौर्य्य, पुरुषार्थ बहादुरी, साहस, मनुष्यता, वीरता।

મરદાનગી (सं.) पूर्ववत्।

મરદાની (वि.) मर्दकी, पुरुषके योग्य, आदमी योग्य (सं.) बहा-दुर, शूर, निडर, साहसी दृढ

મરદામી (सं.) देखो મરદાઈ।

મરદી (सं.) पुंसत्व, पौरुष, मानु षिकशक्ति, बहादुरी वीरता।

મરદુમી (सं) देखो મરદાઈ.

મરદેઆદમી (सं.) कुलीन, सद्गृ-हस्थ, सज्जन, उच्चकुलोत्पन्न, भलामानुस, जेण्टलमन, बहादुर।

મરનાર (वि.) मरनेवाला, मृत, परलोकप्राप्त, स्वर्गप्राप्त।

મરવત (सं.) मुरव्वत प्रेम, स्नेह मुहब्बत, छोह, सुशीलता।

મરવું (क्रि.) मरना, मृत्युपाना, अंतिम स्वास लेना, देहत्यागना, प्राणछोडना, गुजरना, शरीरान्त होना, परलोकवास करना, सूख-जाना, कुम्हलाजाना, कष्टसैना, दुःखपाना, कमीहोना, नष्टहोना, मरना, सडना, नुकसानसहना, परिश्रमकरना, स्थानच्युतहोना, भस्मकरना फूंकना, ताकतवढ करना, अधीरहोना व्याकुल होना

મરની (क्रि.) दूर हो, अलग हो।

મરવો (सं) छोटे नीबूके बराबर कच्ची आमकी कैरी, एक प्रकारका वृक्ष, दौना मरुआ, इसवृक्षके पत्ते अत्यंत सुगंधित होते हैं।

મરશીયા (सं.) किसीप्रसिद्ध मनुष्यके स्मरणमें गाया जानेवाला गीत। शोक सूचक गायन।

મરસીયો (सं) पूर्ववत्।

મરહુમ (वि.) मृत, मराहुवा, स्वर्गस्थ।

મરાઠા-ઠો (सं.) महाराष्ट्र में रहने वाला आदमी, दाक्षिणी, मरहट्टा।

મરાઠણ (सं.) मरहट्टेकी स्त्री, मरहटन, दक्षिणी स्त्री।

મરામત (सं.) मरम्मत, सुधार, जीर्णोद्धार, रिपेअरी दुरुस्ती।

મરાવવું (क्रि.) मराना, कुटाना, पिटाना। [मराना।

મરાવું (क्रि.) कुटना, पिटना,

મરાળ (सं) एक प्रकार का पक्षी, राजहंस, हंस।

મરાળી (सं.) हंसिनी, मराली।

મરાસ (सं.) बेपोती, मीरास, कबजा। [शिकारी।

મરાસગીર (सं.) वारिस, उत्तरा-

મરિ (सं.) कालीमीरच, सफेदमिर्च एक प्रकारकी औषधि विशेष।

મરીજવું (क्रि.) अधमरहोना, मृत्युसमान दुःखपाना, ठंडाहोना

મરીપડવું (क्रि) शुद्धमनसे अपना साराबळलगाना।

મરીફાડવું (क्रि.) घमण्ड, पूर्वक कुछ बकते रहना।

મરીને અંધભાળવો બેવાય गरीब रहकर जीवित रहना अच्छा किंतु धनवान होकर मरना ठीक नहीं।

મરી મસાલો (सं.) मिर्चमसाला, बढाकर कही हुई बात।

મરી મસાલો પૂરવો (क्रि.) अतिशयोक्तिपूर्वक कथन, बढाबढा कर कहना, नमक मिर्च मिलाना।

મરડિયો-ડીઓ (सं) चूडीवाला, चूडी बेचने और पहिरानेवाला, मणिहार।

મરડી-ઢી (सं.) पर्णकुटी, झोंपड़ी, मढैया, पर्णशाला, कुटिया।

મરેઠી (सं.) मरहटी भाषा, महाराष्ट्र देशकी लिपि और भाषा, एक प्रकारका वृक्ष, औषधि विशेष।

મરેઠો (सं.) मरहटा, महाराष्ट्रस्थ।

મરેલું (वि.) मृत, मराहुवा, बेमौत।

મરો (सं.) मृत्यु समान दुःख, बुरी हालत, दुर्दशा, अत्यंत क्लेश ।

મરોડ (सं.) ऐंठ, बल, स्वरूप, आकार, डौल, ढंग, ढांचा, अकड़ ।

મરોડવું (क्रि.) देखो મરડવું ।

મર્જન (सं.) मार्जन, स्नान, नहान ।

મર્ત્ય (वि.) नाशवन्त, काळवश, अनित्य, मरणाधीन, मरणधर्मा, (सं.) मनुष्य, आदमी, मानव ।

મર્દન (सं.) मलन, रगड़न, घिसन ।

મર્મ (सं.) रहस्य, भेद, अभिप्राय, आशय, सन्धिस्थान, जीवन-स्थान, गुह्य, अंतःकरण, तात्पर्य ।

મર્મજ્ઞ (वि.) मर्मवेत्ता, रहस्यज्ञ, तात्पर्य्य ज्ञाता । [अर्थ, गुह्यार्थ ।

મર્મભેદ (सं.) गूढ अर्थ, गुप्त

મર્મીળ–ળુ (वि.) महत्वपूर्ण, रहस्ययुक्त ।

મર્યાદશીલપત (सं.) सुशीलता, विनय, लज्जा, शर्म, शील ।

મલ (सं) देखो મલ

મલકટ (सं.) अंगिया या कंचुकी का छाती ऊपर का भाग विशेष ।

મલઇ (सं.) मलाई, दूधके ऊपर गरमी के कारण जमी हुई थर ।

મલકવું (क्रि.) हसना, मन्दमन्द हास्य करना, मुस्काना, प्रफुल्लित होना ।

મલકાવવું (क्रि.) हंसाना, खिलाना, प्रफुल्ल करना, प्रसन्न करना ।

મલકાવું (क्रि.) हंसना, मुस्कयाना, मन्दहास्यकरना, खुश होनां ।

મલકુડું (सं.) मटकी (छाछकी) ।

મલપતું (वि.) गर्व में और किसी हर्ष में चलता फिरता । ठाठमें किसी उमंग में चलता हुवा ।

મલમ (सं.) लेप, प्लास्टर, अवलेह, दरद पर लेपन करने की दवा, मरहम, मल्हम, मलम ।

મલમપટો (सं.) मल्हमपट्टी, मलम लगाकर पट्टी बांधना, खातिर तवज्जोह ।

મલયાગર (सं.) मालाबार देशका उत्तम चन्दन काष्ठ ।

મલયાગરું (सं.) चन्दन की सुगन्ध, उत्तम से उत्तम सुगंध ।

મલાઈ–ડે (सं.) दूध के ऊपर जमी हुई थर, सार, सत्व, तत्व ।

મલાજો (सं.) मुंलाजो देखो ।

મલાવડાં (सं.) मिष्ट भाषण, प्यारी लगे वैसा वार्तालाप, चाटुकारी ।

મલાવવું (क्रि.) पुकारना, पुच-

करना, प्रफुल्लित करना, अतिशयोक्ति करना।

मखावो-नडो (सं.) अतिशयोक्ति, हुंकार, पुचकार, पूर्ति।

मखिका (सं.) रानी, महारानी, साम्राज्ञी, मोगरा, पेड़विशेष।

मखीदो (सं.) मलीदा, चूरमा, एक प्रकारकी मिठाई, खूब घृत और शर्करायुक्त गेहूं के आटे का पदार्थ विशेष, तरमाल।

मलिन (वि.) मैला, धुंधला, अस्वच्छ, उदास, मलयुक्त वस्तु, मलदूषित, कृष्णवर्ण, पापग्रसित, गंदा, घृणित, साफ नहीं।

मलिनता (सं.) मालिन्य, विरस्ता अप्रफुल्लता।

मलीञाइ (सं.) देखो मलीयागर।

मलीञोट (सं.) घास लकड़, इत्यादि नदीमें बहना।

मलुक (सं.) उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा भला, आश्चर्यकारक, मुल्क, देश, वतन। [श्रीमान्, सज्जन पुरुष।

मलेक (सं.) अमीर, उमराव,

मलेे (सं.) देखो मलाउ।

मलेपवुं (सं.) चर्खेमें घुमाते समय माल न सरक आवे इस वास्ते लगाई हुई पोंची नलिकाएं जिन्हें घोड़ा भी कहते हैं।

मल्ल (सं.) पहलवान, कुश्तीबाज पुष्ट बलवान मनुष्य, पट्ठा, जवान। (वि.) मजबूत हृष्टपुष्ट, कसरती।

मवडां (सं.) छोटे बेर।

मवडावबुं (कि.) समाना, भरना, समाजानेका उद्योग करना।

मवरावबुं (कि.) पूर्ववत्।

मवाडवुं (कि.) पूर्ववत्।

मश (सं.) बहाना, मिस, निमित्त, मिथ्याकारण प्रदर्शन, छत्र, कैतव, कपट।

मशक-सक (सं.) पानी भरनेके लिये बनाई हुई बकरे बकरोंकी समूची खाल, चमड़ेका बड़पात्र जिसे भिश्ती कमरपर रखकर पानी ले जाता लाता है। मच्छर, डांस।

मशगुल (वि.) संलग्न, भिड़ाहुआ लगाहुवा, तल्लीन। [हंसी

मश्करी (सं.) दिल्लगी, मजाक,

मश्करो-री खोर (सं.) दिल्लगी-बाज़ हंसमुख, मजाकी, आनन्दी।

मशरू (सं.) रेशमी धारीदार रंगीन वस्त्र विशेष।

मशहूर (वि.) विख्यात, प्रख्यात, प्रसिद्ध, जाहिर, प्रकट।

મશાગત (सं.) मेहनत श्रम, परिश्रम, मजूरी, मजदूरी, रोज ।
મશાગતી (वि.) मेहनती, परिश्रमी ।
મશાણ (सं.) स्मशान, मुरदाघाट मुर्दे जलनेका स्थान, मरघट ।
મશાણિયા (सं) थोड़े घीके लड्डू, राखोडिया लड्डू ।
મશાણિયું (सं.) पूर्ववत् ।
મશાણિયા—ઓ (सं.) मुर्दा उठाकर स्मशानभूमिको लेजानेवाले, गंदा मनुष्य, म्लेच्छ मनुष्य ।
મશાલ-સાલ (सं) पलीता, कपड़े लपेटकर बनायाहुवा जलानेके लिये पलीता, उल्का ।
મશાલચી-છી (सं.) मसाल जलाकर प्रकाश बतानेवाला, पलीता उठानेका काम करनेवाला, हज़ाम
મશાલી (स.) पूर्ववत्
મશાલો (सं.) देखो મસાલો ।
મશી-શી (सं) काजळ, मिस्सी दांत साफ करनेकी दवा । जिसके रगड़नेसे काले दांत हो जाते हैं ।
મશીઆર (वि.) देखो મસિયાર ।
મશીએલું (वि.) देखो મસિયેલું ।
મસ (वि.) अधिक, विशेष, जियाद, आवश्यकतासे बहुत घना (सं.) मस्सा, द्वारा, मांसवृद्धि मिस, बहाना, छद्म, कैतव, कपट

મસકો (सं.) मक्खन, माखन, नवनीत । खुशामद, चापलूसी, । लल्लो पत्तो ।
મસકો લગાડવો (क्रि.) खुशामद करना, मिथ्या प्रशंसाद्वारा प्रसन्न करना, चापलूसी करना, लल्लोपत्तो करना ।
મસરકું (सं.) ताना, उपालंभ, उलाहिना, दूसरेको क्रोध हो ऐसी बात कहना ।
મસતાન (वि.) मोटा, निश्चिंत, पुष्ट, मस्त, बेपर्वाह ।
મસતી (सं.) घमण्ड, गर्व, चांचल्य, बदी, बुराई, नुकसान ।
મસતીખોર (वि.) हानिप्रद, बुरा दुष्ट ।
મસનદ (सं.) गादी, तख्त, सिंहासन
મસમસતું (वि.) अत्यंत सुगन्धयुक्त ।
મસમસવું (क्रि.) सुगन्ध फैलना, महकना, खुशबू उडना ।
મસરૂ (सं.) देखो મશરૂ ।
મસલત (सं.) सलाह, विचार, इरादा, मनसूबा, परामर्श ।
મસલતીઓ (सं.) मंत्री, सलाहकार, परामर्शदाता ।
મસવાડા (सं.) गर्भस्थिति, गर्भके दिन, मास, महीने ।
મસવાડી (सं) एक प्रकार का पशुओं परकर, म्यूनीसिपल टेक्स विशेष ।

મસવાડ઼ (सं.) पिछवाड़ा, घरका पीछेका भाग, घरका पृष्ठभाग ।
મસવાડો (सं.) गांवके पीछेका भाग।
મસળવું (वि.) रगड़ना, मसलना, दबाना, निचोड़ना, गोंदना, गूंदना, मार मारके अधमरा करना, मर्दन करना।[illegible], मर्दन कराना
મસળાવવું (क्रि.) रगड़ाना, मस
મસાણ (सं.) स्मशान, मरघट, मुर्दा जलाने का स्थान, मसान ।
મસાણ જગાવવું (क्रि.) कोई आश्चर्यकारक कार्य के लिये पिशाच बुलाना ।
મસાણમાં જવું (क्रि.) मरना समाप्त होना, अंत्येष्टी संस्कार में जाना ।
મસાણમાંથી ખેંચી કાઢેલો (वि.) मृत, बिलकुल अशक्त, मृतवत् ।
મસાણિયો (सं.) देखो મસાણિયો
મસાણી (सं.) स्मशानवासी, दुष्ट नीच, स्मशान सम्बन्धी वस्तु विक्रेता ।
મસાલો (सं.), मसाला, विविध वस्तुएं, किसी पदार्थ को उत्तम बनाने के लिये अन्य पदार्थ विशेष, नमक मिर्च इ० ।
મસાલો કાઢવો (क्रि.) कूटना, मारना, कुचलना, थकाना ।
મસાલો પૂરવો (क्रि.) हिलाना, उस्काना, उभाड़ना, चलाना । दम्पट्टी देना ।
મસાલો ભભરાવવો (क्रि.) पूर्ववत् ।
મસિઆઇ (वि.) मामाकी बहिनके, मौसीके (पुत्र पुत्री इ०)
મસિયેઇ (वि.) मौसीकी (पुत्री) मामाकी बहिन की (बेटी)।
મશી (सं.) वृक्षों पर रहनेवाला एक प्रकार का जीव, गन्नों में एक प्रकार का रोग जिससे उसके पत्ते काले हो जाते हैं । काजल, मिस्सी, काला दंतमंजन ।
મસીદ (सं.) मस्जिद, खुदाको सिज्दा करनेका मंदिर, मकबरा, दरगाह ।
મસો (सं.) मस, मस्सा, मसा, इझा, मासवृद्धि, रोगविशेष । इरक, अर्ष, पत्तोंपर उठी हुई छोटी गठानें।
મસોતું (सं.) चिथड़ा, कपड़े के टुकडे कपड़े के टुकड़े जो गरम वस्तु चूल्हे परसे नीचे उतारने के काम आते हैं ।
મસ્કતી (वि.) मस्कत बंदर गाह से संबंध रखनेवाला ।
મસ્ત (वि.) मदोन्मत्त, नशे में उन्मत्त, शरीर में पुष्ट, बलवान, कामी, दृढ़चक्ष, पागल ।

મસ્તક પૂજા કરવી (क्रि.) माथा-फोड़ करना, सिरपच्ची करना, सिर काटकर और देवताको भेट करके पूजन करना ।
મસ્તવાલ (वि.) घमण्डी. अहङ्कारी ।
મસ્તાઈ (सं.) देखो मस्ती ।
મસ્તીખોર (वि.) तूफानी, चंचल, मस्तान, उन्मत्त ।
મસનદ (सं) बैठक, तख्त, सिंहासन, तकिया, तोषक, मसंध, लोटन ।
મહકુબ (वि.) मुल्तवी, बन्द, ढील में डालना, थोड़ी देरको ठहराना ।
મહત (वि.) श्रेष्ठ, बड़ा, मान्य, पूज्य, माननीय, श्रद्धेय, भारी ।
મહતાબ (सं.) एक प्रकारकी आतिश बाजी, रुपलावण्ययुक्त स्त्री ।
મહત્વ (सं.) बड़ापन, श्रेष्ठता, उच्चता, प्रतिष्ठा, मानमर्य्यादा, महिमा, ऐश्वर्य्य, वैभव, प्रभाव, शोभा, गौरव ।
મહત્તા-ત્તાઈ (सं.) पूर्ववत् ।
મહમહવું (क्रि.) महंकना, सुगन्ध आना, खुशबू फलना ।
મહર (सं.) ताना, मर्मवचन, उपालंभ, उलाहिना ।
મહરૂં (सं.) पूर्ववत् ।
મહશૂર (वि.) मशहूर, प्रख्यात, प्रसिद्ध, नामांकित, विख्यात ।
મહસૂલી (वि.) महसूल विषयकी करसम्बन्धी । [किराया ।
મહસૂલ (सं.) टेक्स, कर,
મહા (वि.) बड़ा, उत्तम, श्रेष्ठ, महान् । माघनामक महीना ।
મહાઅનિયું (वि.) बेधनी, लावारिश, अवारा । [माद ।
મહાડ (सं.) एक प्रकारका राग,
મહાત (वि.) पराजित, हाराहुवा, जेलमें पड़हुवा, बंधाहुवा, रुकाहुवा ।
મહાતળ (सं.) सप्तपातालोंमें से एक चतुर्थ अधोलोक ।
મહાત્મ (सं.) उपकारिता, उपयोगिता, प्रसिद्धि, बड़ाई, तारीफ, गुण ।
મહાન્ (वि.) देखो મહત્
મહાનુભાવ (सं.) महाशय, प्रशस्तहृदय, विशालहृदय ।
મહાપદ્મ (सं.) संख्या विशेष, सफेद कमळ, स्वेत पद्म ।
મહાપ્રાણ (सं.) जो अक्षर कुछ ज़ोर लगानेसे बोले जावें, ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, श, ष, स, ह ।
મહાભારત (सं.) इस नामका एक बड़ा वीररस्य पूर्ण काव्य, पांडव

और कौरव के युद्धकी कथा का काव्यग्रंथ, (वि.) कठिन, दुस्तर अपार।

મહાભલા (सं.) एक वनस्पति विशेष, अति बला नामक एक औषधि।

મહાબીજ (सं.) पारद, पारा।

મહાભે (सं.) वज़न, बोझा, भार।

મહાભાગ (सं.) भाग्यशील, भागवान, सदाचारसम्पन्न, खुशकिस्मत।

મહાભૂત (सं.) पंचभूत, (१) पृथ्वी, (२) जळ, (३) तेज, (४) वायु और (५) आकाश। परमात्मा, ईश्वर।

મહામાટલું (सं.) वह पात्र जोत्रात बिदा होते समय पापड़ और बड़ी (मुंगोड़ी) से भरकर भेजा जाता है।

મહામારી (सं.) प्लेग, विशूचिका हैजा, चेचक, इन्फ्ल्युएंजा, मरी, वह रोग जिसमें लोग बहुत मरें।

મહારથી (सं.) महान् योद्धा, ११००० धनुर्धर योद्धाओंके साथ अकेला युद्ध करनेवाला वीर।

મહારાષ્ટ્ર (सं.) देश विशेष, मरहट्टोंके रहनेका देश, नर्मदाके दक्षिण तथा कर्नाटकका उपरी प्रदेश भाग।

મહાલ (सं.) परगना, जिल्हा प्रांत.

મહાલકારી-કરી (सं.) जिलेका अधिकारी, परगना आफिसर।

મહાલવું (क्रि.) देखो માણવું।

મહાલાનિહાય (क्रि. वि.) सारे प्रांतमें।

મહાવત (सं.) हाथी हांकनेवाला फीलवान, हस्तिपक, हाथीवान।

મહાવધ (सं.) पूर्ववत्।

મહાવરો (सं.) अभ्यास, टेव, आदत, सहवास, व्यवहार, प्रचार, रीति, परिचय, परंपरागत, प्राक्टीस

મહાવાક્ય (सं.) ब्रह्म प्रतिपादक वाक्य (उपनिषदमें)।

મહાવીર (सं.) हनुमान, वीरयोद्धा गरुड, जैनियोंका अंतिम २४ वाँ तीर्थंकर। एक जैनसाधु।

મહાશય (वि.) उदार अच्छेदिलका उदारचेता(सं.)दाता, महापुरुष महानुभाव, जनाब, श्रीमान्।

મહિના (सं.) गर्भ, हमल, गर्भस्थितिसे प्रसव होनेतकके दिन, दिन, बारह महीनोंका गीत, मास महीना।

મહિના રહેવા (क्रि.) गर्भरहना दिन चढना, महीने चढना।

મહિનાદાર (वि.) प्रतिमास वेतन लेकर नौकरी करनेवाला।
મહિનાવારી (सं.) हरमहीनेका आँक निकालनां तथा लिखना।
મહિનાવાળી (सं.) गर्भवती, सगर्भा, पेटसे, हमलवाली।
મહિનાવાળો (सं.)देखो મહિનાદાર
મહિનેમહિને (क्रि. वि.) प्रतिमास हरमहीने, मासे मासे।
મહિનો (सं.) ३० दिनोंका समय मास. १२ वांवर्ष, देखो મહિના।
મહિનોઠરાવવો (क्रि.) वेतन निश्चय करना।
મહિનારહેવા (क्रि.) गर्भ रहना, पेटरहना, सगर्भाहोना, ब्याभन होना।
મહિનો આવવો-થવો (क्रि.) ऋतुकाल प्राप्तहोनेकी अवधि पूर्ण होना ऋतुमतीहोना, रजोदर्शन होना, मासिक वेतन मिलना।
મહિમાવાન (वि.) यशस्वी, प्रतापी, तेजस्वी, प्रशंसनीय।
મહિયર (सं.) पीहर, स्त्रीके पिता का घर, मैका, काष्ठका जीव विशेष।
મહિયારી (सं.) दहीदूध बेचने वाला स्त्री, ग्वालिन, गोपी, घोसिन कुटुम्बकी पूजन करनेवाली स्त्री।
મહિયેર (सं.) देखो મહિયર।
મહી (सं.) पृथ्वी, भूमि, गऊ, गाय, एक नदीका नाम, छाछ, दही, (क्रि. वि.) भीतर, अन्दर में।
મહીમથનિયાં (सं.) दधि मथन करनेकी हांडी या मटकी।
મહુડી (सं.) महुवेका छोटा पेड़, शराब।
મહુડું (सं.) महु ए का फूल, इसकी शराब बनती है।
મહુડો (सं.) महुवा वृक्ष, एक वृक्ष विशेष।
મહુવર-મોવર (सं.) बाजीगरकी बांसरी, तुमड़ीका बाजा, सांप वालोंका पूंगी।
મહેરામણ (सं.) समुद्र, सिंधु।
મહોત્સાહ (सं.) बड़ाभारी उत्साह।
મહોલ્લો (सं.) टोला, पुरा, पाड़ा जत्था, बाजार, चकला, मोहाल।
મહોર (सं.) स्वर्णमुद्रा, गिनी, पाउण्ड, सावरिन, गिन्नी, १५ रु. का एक सिक्का विशेष।
મળ (सं.) कचरा, कूड़ाकर्कट, मैल, गंदीवस्तु, गू, विष्ठा, मल, पाखाना, इकड़ा।

મળી (સં.) बहावसे बची हुई कीच, मही रेती इत्यादि ।

મળુ (वि.) अत्यंत कीचडयुक्त, ज़रा मैला (पानी) ।

મળમળુ (वि.) मैला, गंदला, अस्वच्छ । [चूमले :

મળસ્યું (वि.) जो मळको

મળણ (सं.) सहवास, मिळाप, मुलाकात, स्नेहप्रीति ।

મળતર (सं.) पैदायश, आमदनी, लाभ, कमाई, प्राप्ति, नफा, फायदा ।

મળતાવડું (वि.) मेळ मिलापी, मिलनसार, सामाजिक, यारवाश, आनन्दी, हंसमुख ।

મળતિયો (सं.) संगी, साथी, सोहबती, मित्र, भाईबंधु, जोडीदार ।

મળતાવશેષ (सं.) एक दूसरेके मिळते हुएग्रह, (ज्योतिषशास्त्रे) ।

મળદ્વાર (सं.) गुदा, मूळद्वार, विष्ठाद्वार, गांड, पून, पोंद ।

મળમાસ(सं.)अधिकमास, पुरुषोत्तम मास, प्रत्येक ढाई वर्षके पश्चात् आनेवाला महिना, अधिमास, लौंद

મળવિકાર (सं.) दस्तसाफ न होनेका रोग, मलावरोध, बद्धकोष्ठता ।

મળવા આવવું (क्रि.) भेटने आना मिळने आना, दर्शनार्थ आना ।

મળવું (क्रि.) मिलना, प्राप्तहोना, आमदहोना, लभहोना, पैदाहोना, पाना, साथहोना, एकत्रहोना, जुडना, एकमतहोना, सम्बंधहोना, प्रेमहोना, स्वभावगुण और विद्यामें समान होना, अंतरमिटना, भेदभाव दूरहोना, अनुकूलहोना, आमनेसामनेहोना, हाथलगना, एकरस होना, तल्लीनहोना ।

મળયાભાઇનીપ્રીત (सं.) नाममात्रकाप्रेम, मुख देखेकी प्रीति ।

મળતાવશેષ (सं.) मेल, प्रेम, प्रीति ।

મળતીપાંતી (सं.) मिलाप, संघ, ऐक्य, मिळती जुळती प्रकृति ।

મળશુદ્ધિ (सं.) दस्तसाफ, मलरोग हीनता, पेट सफाई, मैळशुद्धि

મળસકું (सं.) भोर, प्रातःकाळ, भिनुसारा, सवेरा, तड़का ।

મળસણી (सं.) पेंच, चक्कर, फेर ।

મળસણી (सं.) पेचीदा, चक्करदार ।

મળાવરોધ(सं.) कब्ज, बद्धकोष्ठता, बदहज्मी, उदरमें मलविकार

મળાશય (सं.) वह पेटकाभाग जहां पर मल रहता है, मलाशय ।

મળિયાગરૂ (सं.) उत्तम प्रकारका चन्दनकापेड, या काष्ट । यह मळयाचळ पर्वतपर माळावार प्रांत में पैदाहोताहै ।

મળી (स) गाडीके पहियेमेंका कीट, ओंगन, हनुमान भैरव आदिकी मूर्तिपरका कीट, कपडे भरनेका थैला विशेष ।

મળીને (क्रि. वि.) साथ, इकठे, एक मत होकर, मिलकर ।

મળીઆવવું (क्रि.) मिळआना, भेट करके आना ।

મળીજવું (क्रि.) मिळजाना, इकठ्ठा होना, दर्शन करके लौटना, सम्मिळित होना, जुटना ।

મળેલ (वि.) पाने योग्य प्राप्त. हासिळ करने लायक ।

માં (अ.) भीतर, मांही, अन्दर, मे मध्ये, मंझार, सप्तमी विभक्तिका प्रत्यय, नहीं, ना, मत, न ।

માંકડ (सं.) खटमल, स्वेदज जन्तु विशेष, बन्दर, कपि, प्रायः चार पाई और सोने बिछानेके वस्त्रोंमें रहताहै ।

માંકડી(सं.)चूल, चाकीमे काठका लगाहुआ छिद्रयुक्त टुकड़ा,मान्नी, चक्कीमेंकी वह लकड़ी जिसमें कीला घूमता है, एक प्रकारकाजीव मकडी, बँदरिया, बाँदरी, मर्कटी, मूरीभैंस, एक प्रकारका चर्मरोग ।

માંકડી ફૂકડી (सं.) एक प्रकारका बड़ी पूंछवाला जीव जिसके मूत्रके लगजानेसे सफेद फफोले हो जाते हैं

માંકડું (सं.) लाल मुहं तथा छोटी पूंछवाळा बन्दर, मर्कट, कपि, कीश, वानर, शाखामृग, बूजना ।

માંકણ (सं) देखो માંકડ ।

માંકણીઉં (सं.) वहकाष्ट जिसमें खटमल घुस बैठते हैं ।

માખ (सं.) मक्खी, मक्षिका ।

માંગ (वि.) आठके लिये व्यापारियोंका सांकेतिक शब्द । बड़े बड़े नगरोंमे किसी अवसरपर कांसीकी थाळीमें दो बालक चित्र बनाते हैं वह । एक नीच जाति. जो गळेमें कौड़ियां बांधकर भीख मांगती है । बालोंको संवारना । पट्टी करना सिरके बालोंको बीचसे दो भागोंमें बांटना ।

માંગણ (सं.) भिक्षुक, भिखारिन, मंगती, देखो માગણ ।

માંગપડી (सं.) व्यापारियोंका अठारह संख्याका सांकेतिक शब्द।

માંગલ્ય (सं.) शुभकार्य, मंगल ।

માંગલિક (वि) शुभ अवसर, मंगलकारक, शुभप्रद ।

માંગું (सं.) विवाहकी मंगनी (लड़केवालेकी ओरसे ।)

માંછીરી (सं.) मछवा, मछली पकड़नेवाला

માંચ (सं.) खाट, पलंग, चारपाई पर्यंक, पीढा, खटोला, मंच, तख्त, तखत, चौकी ।

માચડો (सं.) देखो માંચો ।

માંચી (सं) छोटी खाट, पीढी, खटिया, खटोला ।

માંચો (सं.) देखो માંચ ।

માંજર (स.) मंजरी, बौर, मुकुल कली, कोंढी, जूतोंमें छुखतला, चमड़ोंके टुकड़े जो जूतेमें पैरों के आरामके लिये रखे जाते है। मुर्गेके सिरके ऊपरकी कलगी । जरा, बिल्ली, बिलाव, बिड़ाल ।

માંજરું (वि.) बिल्ली कीसी आंखों-वाला, कुछ पीली आंखोंवाला भूरी आंखोंवाला, लुचा ।

માંજવું (क्रि.) घिसकर साफ करना, मांजना, मार्ज्जन करना, शुद्ध करना ।

માંજેલું (वि.) उज्ज्वल किया हुवा, साफ कियाहुवा, मार्जित ।

માંટી (सं.) पति, स्वामी, धनी, वर, पुरुष, खाविंद, खसम ।

માંટીડો (सं.) पूर्ववत्, मनुष्य, पुरुषवर्ग, लोग ।

માંડ (सं.) शोभाके लिये रखेहुए, पात्र । (वि.) मिथ्या व्यर्थ, (क्रि. वि.) बड़ी कठिनतापूर्वक ।

માડણ (सं.) गांवके पासका पानी भराहुवा गढ्ढा जिसमें भैंस सुअर इत्यादि पशु पड़े रहते हैं ।

માંડણી (सं.) तजवीज, व्यवस्था ।

માંડમાંડ (क्रि. वि.) जैसेतैसे, बड़ी कठिनाईसे, सहज ही ।

માંડવા મહુરત (सं.) विवाह संस्कारके लिये मंडप बनानेका शुभ समय ।

માંડલિક (वि.) छोटे छोटे राजा, चक्रवर्ती राजाका अधिकार माननेवाले राजा, करद राज्य ।

માંડવી (सं.) जकात लेनेकी जगह, घरके आगे बनाई हुई ऊंची बैठक, नवरात्रिमें गरबा गानेके लिये दीपक रखनेकी लकड़ीकी रवीट । साबर-घर ।

માંડવીયો (सं.) नाकेदार, सायर वाला, जकातलेनेवाला, कन्या पक्षका मनुष्य (विवाहमे)मढैती ।

માંડવું (क्रि) आरंभ करना, शुरु करना, रखना, युक्तिपूर्वक करना, लिखना, स्थापित करना, नामानिकालना, शोक प्रदर्शनार्थ नातेरिस्तेदारोंको एकत्र करना, सुलगाना, भड़काना, करना ।

ભોંમાંડવું (क्रि.) ध्यानपूर्वक समझना, खाना પગમાંડવા (क्रि.) पैरों चलनाआना ગાંડમાંડવી(क्रि) बैठना, કાનમાંડવું (क्रि.) सुनना श्रवण करना, વાતમાંડવી (क्रि.) बात प्रारंभ करना નામું માંડવું (क्रि.) नामे लिखना. દુકાન માંડવી (क्रि.) नईदुकान खोलना, व्यापार आरंभ करना, वेश्यावृत्ति करना, (औरतोंको) મોઢેમાંડવું (क्रि.) मुहंलगाकर पीना. સંસાર માંડવુ (क्रि.) ग्रहस्थाश्रममें पड़ना।

માંડવો (सं.) मांडवा, मण्डप, मढ़वा, लतामवन, आच्छादित भवन, विवाह इत्यादि उत्सवोंपर बैठनेके लिये बनाईहुई बैठक ।

માંડવો ઉભે થવો (क्रि.) विवाह योग्य लड़की होना । [पदार्थ ।

માંડા (सं.) एक प्रकारका खानेका

માંડીવાળવું (क्रि.) बनाडालना करडालना, देडालना, रचना ।

માંણુ (सं) मोयण, मोवन, किसी पदार्थमें नरमाई पैदा करनेके लिये उसके बनानेके पूर्व उसके आटेमें तेल अथवा घृत मिलाना, ईख, जुवार इत्यादिका शिर, सांठेके ऊपरका भाग, अच्छी तरह रखे हुवे पात्र, पानी भरनेका घड़ेसे बड़ाबर्तन । [अस्वस्थता ।

માંદગી (सं) बीमारी, रोग, पीड़ा

માંદુ (वि.) बीमार, रोगी, अस्वस्थ ।

માનત (सं) देखो મહત

માંય (क्रि. वि.) भीतर, अंदरमें ।

માંસ (सं.) पलल, अमिष, गूदा, गोश्त, मास, मिट्टी ।

માંહિ-હે (क्रि. वि.) देखो માંય ।

માંહેલુ (वि.) अंदरका, भीतरका ।

માહેમાહે (क्रि. वि) भीतरही-भीतर, घरमें, अन्दर अन्दर ।

માંઝ (अ.) तुरंतही, तत्क्षण, फौरन ।

મા (सं.) माता, जन्मदातृ, जननी जनेता, बूढी स्त्रियोंके लिये मान

सूचक शब्द, बालिदा (क्रि. वि.) नहीं, ना, मत, न।

માઈ (सं.) देखो मा।

માઇલ (सं.) मील, आधीकोस, ५२८० फुटका माप, ८ फर्लांग।

માઆઝમા (वि. मोटी, बडी, महान् बृहत्, दीर्घ।

માઇને (सं.) मायना, अर्थ, अन्वय, सार, मतलब, टीका।

માએને (सं.) पूर्ववत्।

માઇકાંગલું (वि.) जनना, नामर्द, साहसहीन, रतिसूरत, नाजुक।

માઉ (सं.) देखो मव।

માકડમુખો (वि.) लालमुहंका, बंदर कीशक्का, लंगूरशक्क।

માકડમુછો (वि.) बांकी मूछोंवाळा, टेढी मूछोंवाला।

માખ-ખી (सं.) मख्खी, माक्षिका, पारदर्शक, पंखवाळा छ पैरोंका एक जीव। [होना।

માખકિંકવી (क्रि.) अपशकुन

માખબેસણું (सं.) हीन दशामें होना, कंगाली, निर्धनता, दारिद्रय

માખમારીને નીચોવવી (क्रि.) कंजूसीकरना, कृपणता करना, अति शय हरिद्री अथवा हीन दशामें होना।

માખોમારવી (क्रि.) बाले बैठना, निरुद्योगीहोबैठना, सुस्तहोना।

માખણ (सं.) मक्खन, माखन, नवनीत, ताजा घी, खुशामद,

માખણિઆ-યો (वि.) खुशामदी, चापलूस, नरम, पानमें लगानेका उम्दा बेकंकरोंका चूना, मक्खन बेचनेवाला।

માખણલગાડવું (क्रि.) खुशामद, करके प्रसन्न करना, स्वार्थके लिए बेहद चापलूसी करके स्वार्थ सिद्ध करना।

માખણિયો ભગત (सं.) मिष्टभाषण द्वारा स्वार्थ साधक, बगुलाभक्त, खुशामदी, मतलबके लिये हदसे अधिक प्रशंसा करनेवाला पुरुष।

માખળ (सं.) पकाहुवा धान्य खाळेयानमें लाकर अन्नका तोल होकर सरकारका भाग चुकाना।

માખીઘોડું (सं.) एकप्रकारका लड्डूका खेल, गाळबकरमें सब लड्डू रख दिये जाते हैं और जिसके लड्डूपर मक्खी बैठती है उसके लड्डूमें सब खेलनेवाले अपने अपने लड्डूओंकी आरोंसे चोट मारते हैं।

માખીનોવાઘ (सं.) एकप्रकारका जीव जो मक्खियोंकोही पकडताहै।

માખો (सं.) बड़ी हरेरंगकीमक्खी मक्ख, सांई ।

માગ (सं.) मार्ग, राह, पथ, पंथ सड़क, रस्ता, वाट, जगह, स्थान, अन्तर, फासला, पैरोंके चिन्होंको देखते हुवे चोरको ढूंढना, खोज ढूंढना ।

માગકાઢવો (क्रि.) पैरोंको देख कर चोरी निकालना, चोरके पैरोंके निशानमें चोर पकड़ना ।

માગણ (सं.) मंगता, भिक्षुक, भिखारी, याचक, भाटचारण ।

માગણી (सं.) मांग, उगाई, भावमें वृद्धि, लड़कीके विवाहके लिये पूछ, ताशके खेलमें मागलेना

માગણીઆટ (सं.) देखो માગણ

માગણું (स) कर्ज, ऋण, देन, उधार, ।

માગતું (सं.) पूर्ववत्

માગધ (सं.) चारण, भाट, कापडी कत्थक, नकीब, प्रसंशक ।

માગધી (सं.) मगध देशसम्बन्धी एक भाषाजो मगध देशकी है ।

માગણાર (सं.) लेनदार, अधिकारी, हकदार, मांगनेवाला, भिखारी ।

માગનાર (सं.) पूर्ववत्

માગવું (क्रि) दिया हुवा वापिस देने को कहना, याचना, यांचाकरना, चाहना, निवेदन करना, भीख मागना, दान चाहना ।

માગ્યમેહ્અરસવા (क्रि.) इच्छित वस्तुमिळना, मनोर्थपूर्ण होना ।

માગીલેવું (क्रि.) मँगलेना, ऋण लेना

માગુ (सं.) देखो માગણી

માગુ આવવું (क्रि.)कन्यापक्षवालों से विवाह करने के लिये पूछना ।

માગુ ઝીલવું (क्रि) विवाह करने की स्वीकृति देना ।

માગુ મોકળવું (क्रि.) विवाह करने का पुछाना । [कावत,माघस्नान,

માઘવટો (सं.) माघमास में करने

માચડો (सं.) देखो માચો

માચી (सं.) देखो માંચી

માચો (सं.) देखो માચડો

માછણ (सं.) मछुहेकी स्त्री, भोईकी स्त्री, मेयन, धीमरी,

માછલું (सं.) मच्छ, मोटी मछली,

માછલીઅડીગળ્યા જેવું (वि.) प्राण जाने योग्य ।

માછી (सं.) मछली पकड़ने का धन्धा करनेवाला, मछवाहा, धीमर ढीमर

માજન (सं.) सीमा, हद, अंकुश ।
માજમ (सं.) देखो માઝમ
માજર (सं.) देखो માંજર
માજરપાટ (सं.) एक प्रकारका सूतीवस्त्र, नादरपाट [चावल ।
માજરવેલ (सं.) एक प्रकार के
માજરું (सं.) देखो માંજર
માજવું (क्रि.) देखो માંજવું
માજી (वि.) पिछला, गत, भूत, विगत, गुजराहुवा, गया, पहिलेका, (सं.) बड़ीमा, दादी वृद्धास्त्री ।
માજુફળ (ग.) एकप्रकारकाफळ, औषधि विशेष ।
માજુમી (वि.) जिसे माजूनखाने की आदतहो, माजूम काव्यसनी,
માજુર (वि.) अन्धा, नेत्रहीन ।
માજો (सं.) लेही और काच मिलाकर उससे लपेटा हुवा धागाजो पतंगउड़ाने के काम आता है,
માઝમ (सं.) एक मादक पदार्थ, भांगको घीमें भूनकर मसाळा इत्यादि डाळकर शकर की चाशनी में बनाया हुवा पदार्थ विशेष जिसे खाकर लोग नशेमें उल्लू हो जाते हैं ।
માઝમરાત (सं.) घोर अंधेरी रात, तमाच्छन्न रजनी, डरावनी अंधेरी ।

માઝો (सं.) इज्जत, मान, अदब मुलाहिजा, मर्यादा, अन्तर ।
માટ (सं) छाछ, मठा. महीगोरस, एक प्रकारकी भाजी, हांडी, मृत्तिका, कळश, खुराकके लिये मांस (क्रि. वि) वास्ते, लिये ।
માટરિયો (सं.) चूने पत्थर इत्यादिसे नहीं बना हुवा कूवा, कच्चा कूवा ।
માટલી (सं.) मटुका, हंडी, हांडी, मिट्टीका घडा, आषाढ तृतीया के दिन दान विशेष ।
માટલું પૂરવું (क्रि.) पापड़बड़ी (मगोड़ी) लग्नका रुपया सुपारी और सवापांचसेर गेहूं जो विवाह के समय देते हैं ।
માટી (सं.) मिट्टी, मृत्तिका, रज, धूल, पति, स्वामी, बड़ा आदमी, जबर दस्त मनुष्य, मांस, आमिष, गोश्त । [राख होना, मरजाना ।
માટી થવી (क्रि.) नाश होजाना,
માટી ઢાંકવી (क्रि.) मिट्टी दबाना, छन गाड़ना, ऐब ढांकना, ढंकना, छुपाना । [दुर, मनुष्य, पुरुषार्थी ।
માટીડો (सं.) पुरुष, मर्द, बहा-

માટી ખાણ (सं.) वह खदान जहां से लीपने के लिये मिट्टी खोदी जाती है । मिट्टी की कान ।

માટે (क्रि. वि.) वास्ते, लिये, अर्थ, कारण, सबब, इसलिय ।

માઠ (सं.) एक प्रकारकी भाजी । तरकारो विशेष ।

માઠી ખબર (सं.) शोक सूचक बनाव, दुष्ट सम्वाद ।

માઠું (वि.) खराब, बुरा, निकम्मा, कुछ कम, कुछ खराब, शोकप्रद ।

માઠું લાગવું (क्रि) अप्रसन्न होना नाराज होना ।

માઠું કરવું (क्रि.) बुरा करना, अहित करना । [न्यून ।

માઠેરૂં (वि.) थोड़ा, कम, अल्प,

માડ (सं.) नारियलका वृक्ष, मोहला ।

માડણ (सं) व्रत उत्सवादिपर स्त्रियों के माथेपर तथा गालोंपर रंग इत्यादि का लेपन, देखो માંડણ ।

માડપુત્ર (सं.) गोद लिया हुवा लड़का, दत्तक पुत्र ।

માડમાડ (क्रि. वि.) कठिनाईसे, मुश्किलसे ।

માંડલિક (सं.) राजपुत्र, राज-कुमार, शाहजादा, राजा, समर्थ, बादशाह ।

માડવી (क्रि.) देखो માંડવી ।

માડવું (क्रि , देखो માંડવું ।

માંડવો (सं.) देखो માંડવો ।

માડા (सं.) ज्वार गेहूंके मिश्रित आटेकी एक प्रकारकी रोटी ।

માડી (सं.) मा, माता, अम्मा, जननी, माजी, जनेता, वालिदा ।

માડી વાળવું (क्रि) कर डालना, निश्चय करना, ठीकटाक करना ।

માડો (सं.) रोटीकी पपड़ी, बहुत बड़ी और पतली गेहूंकी रोटी ।

માણુઆં (सं.) प्यारेमनुष्य, प्रिय-जन ।

માણુઓ (सं.) प्रिय, प्यारा, अकला ।

માણ (सं.) धातुपात्र विशेष जो-बाजोंके रूपमें प्रयोग होताहै, खमीर खाई, देखो માણ । हद सीमा ।

માણકમાઉ (वि.) जो कुछ नहीं कमाता हो, आलसी. सुस्त काहिल

માણકી (सं.) एकप्रकारकी घोड़ी, घोड़ीकी जाति विशेष ।

માણભટ (सं.) एकप्रकारका बाद्य बजाकर कथा कहनेवाला व्यक्ति।

માણમાણ (क्रि. वि.) जैसे तैसे, येन केन, देखो માડમાડ ।

આણવું (क्रि.) अनुभव करना, प्रयोगकरके देखना, तजुर्बाकरना।

આણસ (सं.) मनुष्य, मानव, मनुज, आदमी, इन्सान, व्यक्ति.

આણસની વર્ણમાથી નિકળીજવું (क्रि.) विचित्र जीवन निर्वाह करना, नामर्दहोना, असमर्थहोना

આણસાઈ (सं.) मनुष्यता, मनुजता, इन्सानियत, भलमनसाहत, विवेकदया, मर्दाई।

આણસજાત (सं.) मानवजाति।

આણી (सं) १६ मणका माप, तौल विशेष।

આણીઓ (सं.) तेल, घी भरनेका मिट्टीका पात्र विशेष।

આણીગર (वि.) विलासी, भोगी, आनंदी, सुखभोगका चाहनेवाला।

આણીતલ (सं.) सुखस्थान, शांति भवन, आरामकी जगह।

આણેક (सं.) रत्न विशेष, माण, माणिक्य, रत्न, लाल, रक्तमणि।

આણેકઠારી (सं.) शरदपूनम, आश्विनसुदि १५, शरत्पौर्णिमा।

આણો (सं) मौज आनन्द।

માત (सं.) मा, माता, जननी, अम्बा, अम्मा, कालिका, देवी महात।

માતંગી (सं.) देवी जिसकी सवारी हाथी है, हथिनी।

માતબર (वि.) पूंजीवाला, धनवान, द्रव्यवान, श्रीमान, पैसावाला।

માતબરી (सं.) गौरव, आबरू. इज्जत, श्रीमानता, बड़प्पन।

માતમ (सं.) महात्म्य, उपकारिता, प्रसिद्धी बड़ाई। [मूत्र :

માતરૂ (सं.) पेशाब, लघुशंका

માતાંઆવવાં (क्रि.) शरीरमें माताआना, कॉपना, हिलना, धर्णना।

માતાવળાવવાં (क्रि) जिसे चौकीपर वस्त्रसे मंदिर सा बनाकर उसमें जवाहरे इ० पूजा सामग्री रखकर शुभअवसर पर गाते बजाते जाकर देवीके मंदिरमें स्त्रियां रख आतीहैं वह।

માતાવાવવાં (क्रि.) गेहूं जौ इत्यादि, एक पात्रमें बोकर, देवीकी पूजा आरंभ करना।

માતાનોફુકેદો (वि.) वाचाल बहुत बोलनेवाला।

માતામહ (सं.) माका बाप, नाना।

માતામહી (सं.); माताकी माता, नानी। [गर्वित।

માતું (वि.) मस्त, मदातुर, पुष्ट

માતુંતાજું (वि.) देखो માતું १

માતેલું (वि.) खानपान से पुष्ट, देखो માદુંતાદું। [मदमत्त।

માતેલો સાંઢ (सं.) तूफानी,

માત્રા (सं.) अक्षरोंपर लगाने की रेखायें, स्वर। धातुभस्म जो औषधि के रूपमें काममें लाई जाती है, मीनाद, परिमाण, रसायन।

માથાઓળ (सं.) वह हक जोकि साथ रहनेवाले देवर जेठके पाससे बड़ोंके संचित द्रव्यमेंसे खाने पहिरने के लिये विधवा स्त्री मांगती है।

માથાકૂટ (सं.) मांजगड़, सिरपची, व्यर्थ की बकझक।

માથાઝીક (सं.) पूर्ववत्।

માથાદીઠ (अ०) प्रत्येक मनुष्यको, हरेक आदमीको।

માથાફોડ (सं.) देखो માથાઝીક।

માથાફોડી-ડું (वि.) खड़े होने पर जिससे सिर फूटे। सिरदर्द।

માથાબોળ (क्रि. वि.) समस्त शरीर पर।

માથા બંધાણું (सं.) वह कपड़ा जिससे पारसी स्त्रियां सिरके बाल बांधती हैं, बाल बांधनेका पट्टा।

માથામેલી (वि.) रजस्वला, ऋतु प्राप्ता, मासिकधर्मयुक्त।

માથાવટી (सं.) सिरमें लगे तेल इ० से साड़ी न बिगड़े इस लिये साड़ी के नीचेकी ओर लगाया हुआ वस्त्र, इस वस्त्रपर तेलसे पड़े हुए धब्बे। आबरू इज्जत, मान।

માથું (सं.) सिर, मस्तक, ललाट, अग्रभाग, गर्दनसे ऊपरका भाग, कपाल, खोपड़ी, प्रत्येक मनुष्य, मुख्य सरदार, मुख्य स्थान, किसी भी वस्तुका ऊपरी भाग।

માથા ઉતાર (क्रि. वि.) सिरसे बोझा उतरने के तुल्य।

માથા વગરનું (वि.) जिसे अपने सिर की कुछ चिंता न हो, जिसे मृत्युका भी भय न हो। साहसी।

માથાના કકડા થવા (क्रि.) अतिशय शिरशूल होना, असह्य सिर दर्द होना।

માથાના વાળ ખરે એવું (क्रि. वि.) बहुत ही बुरा, जो बिलकुल असह्य हो। अत्यंत कड़वी (औषधि)।

માથાના વાળ ઘસાઈ જવા (क्रि.) बहुत दुःख सहन करना।

માથાની ચૂમડી રહી જવી (क्रि. वि.) सिरपर मार सहते सहते मजबूत होना,

માથાની ચામડી (सं.) अविचार अगवानी, अगुवा।

માથાનું છત્ર (सं.) आश्रयदाता, बड़ा, वृद्ध पुरुष, आश्रय, पूर्वज ।

માથાનું ભા (सं.) अंतःत त्रास दायक बात ।

માથાનો ફરેલો-ફાટેલો (सं.) मन-चाहा करनेवाला, किसीका कहा न माननेवाला घमण्डी और जिद्दी मनुष्य ।

માથાનો મુગટ-મણી (सं.) शोभा देनेवाला बड़ा अथवा वृद्ध पुरुष ।

માથાપર (वि. ` सिरपर, बहुत निकट ।

માથાપર ઠલેકું ઉગું પાક્યું છે— सिरपर हजामत बहुत बढी हुई है ।

માથાપર ચન ચન કરવું (कि.) सिरजोरी करना, बहकना, दुःख देना, [घूमना, लटकना ।

માથાપર ભમવું (कि) सिरपर

માથામાં ગજ ધાલ્યા છે ? (कि.) गर्व हो गया है, घमण्ड हो गया है ।

માથામાં ટપલા વાગવા (कि.) मार खाना, पिटपिटकर अक्ल ठीक होना ।

માથામાં ધુમાડો રાખવો (कि.) गर्व करना, घमण्ड करना, घमंडी बनना ।

માથામાં ધુળ ધાલવી (कि.) कीर्ति कलंकित करना, इज्जत बिगाड़ना

માથામાં પવન ભરાવો (कि) घमंडीहोना, मिज़ाज बढ़जाना ।

માથામાં મારવું (कि.) कोई तकाजा करके मांगता हो उसे क्रोधमें आकर देदेना, बेचनेवालेने चीज खराब देदिया होतो वापिस लौटा आना, बलात्कार करना, जुल्मकरना ।

માથામાં મહેર ભરાવવો (कि.) देखो માથામાં પવન ભરાવો

માથાવટી હલકી છે (कि.) प्रतिष्ठा अच्छी नहीं है ।

માથાવટી હલકી પડવી (कि) मान घटजाना, फीका पड़ना ।

માથાવાઢજેવું (वि.) बिलकुलही निकम्मा, व्याकुलता पैदा करनेवाला ।

માથાસરેસાજડ્યાછે (कि.) पक्के बंधे हैं, आमरण संबंध हुआ है ।

માથું (कि. वि.) कुछभी नहीं (क्रोधमें)

માથાનું (वि.) जहाँ पहुँच सके । તારે તે કેટલું માથું છે-जो आदमी बहुतदेर तक बोलेही जावे और थके नहीं उसे यह वाक्य कहते हैं जैसे तोमें भाषा छे-इसे घमण्डी

માથું ફેરવવું (क्रि.) गुस्साकरना

માથું બોલવું (क्रि.) बिना रोजगार बन्दे होजाना।

માથું ભાંગવું (क्रि.) गर्व दूरकरना नुकसान करना, दुःखदेना।

માથું ઊંચે થવું (क्रि.) मिज़ाज बढ़जाना, गर्वसे फूलजाना, सिरमें पीड़ा होना, पिटाई चाहना।

માથું ભોંયમાં ઘાલવું (क्रि.)शरमाजानेसे सिर नीचाकरना, नीचा देखना। [सिरमें खून निकालना।

માથું રંગવું (क्रि.) चोटमारकर

માથું બેગણું મૂકવું (क्रि) मरनेसे नहीं डरना, किसीकाममें प्राणोंकी पर्वाह नहीं करना। [जीव देना।

માથું સોંપવું (क्रि.) शरण आना

માથું હલાવવું (क्रि.) हाँ या नां कहना, स्वीकार करना, सम्मति देना।

માથે અંકુશ (सं.) दबाव, बन्धन।

માથે આવવું (क्रि) रजस्वलाहोना, जवाबदेही होना, उत्तरदायित्व होना, पतंगका आकाशमें उड़ते समय लगभग सिरपर होना, दोष आना।

માથે ગાળ ચડવી-બેસવી (क्रि) तोहमत लगना, कलंक लगना। लोगोंमें बुरी कहावत होना।

માથે આળ મૂકવી (क्रि.) कलंक लगाना, दोषारोपण करना।

માથે (क्रि. वि.) सिरपर, बराबर तुल्य।

માથે ધાબળી ઓઢી ઘુમવું (क्रि.) बुरी बातोंमें अगुवा होना, स्वार्थके कामोंमें पड़कर माँजगड़ अथवा पंचायत करना।

માથે ઘાલવું-નાખવું (क्रि) उत्तरदायित्वपर सौंपना।

માથે ચડાવવું (क्रि.) स्वीकार करना, मंजूर करना, पालना, प्रेमकरना।

માથે ચડી બેસવું-વાગવું (क्रि.) आज्ञा न मानना, दुःख देना, मर्यादा त्यागना।

માથે ઓંઘરું એ નરહેવું (क्रि.) अत्यंत गिरी दशामें पहुँच जाना।

માથે ચોટવું (क्रि.) कलंक लगना कालिमा-लांछन आना, शरण रहना, आश्रितहोना, पल्ले पड़ना।

માથે છાણાં થાપવાં (क्रि.) सिरपर चढ़जाना, सिरके बाल उखाड़ना, दुःखदेना।

માથે છાપરું વધવું (क्रि) सारे सिरपर बाल बढ़जाना, हजामत बढ़ना।

માથું ફૂટવું (क्रि.) [illegible]

માથું ઓળવું (क्रि.) बिना देखभार [illegible] ।

માથું ખાવું (क्रि.) गर्व दूरकरना नुकसान करना, दुःखदेना ।

માથું ભારે થવું (क्रि.) मिजाज बढ़जाना, गर्वसे फूलजाना, सिरमें पीड़ा होना, पिटाई चाहना ।

માથું ભોંયમાં ઘાલવું (क्रि.)शर-माजानेसे सिर नीचाकरना, नीचा देखना । [सिरमें खून निकालना ।

માથું રંગવું (क्रि.) चोटमारकर

માથું મેલણું મૂકવું (क्रि) मरनेसे नहीं डरना, किसीकाममें प्राणोंकी पर्वाह नहीं करना । [जीव देना ।

માથું સોંપવું (क्रि.) शरण आना

માથું હલાવવું (क्रि) हाँ या नां कहना, स्वीकार करना, सम्मति देना ।

માથે અંકુશ (सं.) दबाव, बन्धन।

માથે આવવું (क्रि) [illegible]होना, जवाबदेही होना, उत्तरदायित्व होना, पतंगका आकाशमें उड़ते समय लगभग सिरपर होना बोझ आना ।

માથે આળ ચડવી-મૂકવી (क्रि) तोहमत लगना, कलंक लगना। लोगोंमें बुरी अफवाह होना ।

માથે આળ મૂકવી (क्रि.) कलंक लगाना, दोषारोपण करना।

માથે (क्रि. वि.) सिरपर, [illegible] तुल्य ।

માથે ઘાઘરી ઓઢી ફરવું (क्रि.) बुरी बातोंमें अगुवा होना, [illegible] कामोंमें पड़कर मांजगड़ अथवा पंचायत करना ।

માથે ઘાલવું-નાખવું (क्रि) उत्तर दायित्वपर सौंपना ।

માથે ચડાવવું (क्रि.) स्वीकार करना, मंजूर करना, पालना, प्रेमकरना ।

માથે ચડી બેસવું-વાગવું (क्रि.) आज्ञा न मानना, दुःख देना, [illegible]-ता लागना ।

માથે ચીંથરૂં એ નરહેવું (क्रि.) अत्यंत गिरी दशामें पहुँच जाना ।

માથે ચોંટવું (क्रि.) कलंक लगना कालिमा-लांछन आना, शरण रहना, आश्रितहोना, पल्ले पड़ना ।

માથે છાણાં થાપવાં (क्रि) सिर-पर चढ़जाना, सिरके बाल उखाड़-ना, दुःखदेना ।

માથે ભાર્યું વધવું (क्रि) सारे सिरपर बाल बढ़जाना, दुःखपूर्ण बढ़ना ।

માથાભીડણી મુકવી (क्रि.) नुकसान करना, कराबी करना, बिगाड़ करना, नाशकरना।

માથે છેડા નાંખવા (क्रि.) मर्यादा नहीं रखना, शर्म न रखना।

માથે ભોગા મૂકે એવું (क्रि.) सुंदर, खूबसूरत, रूपवान, नयनाभिराम।

માથે ઝાડ ઉગવાં બાકી છે (क्रि.) अत्यंत दुःखीमनुष्य अनेक विपत्तियोंको सहतेहुए व्याकुल हो कर यह वाक्य कहाकरता है।

માથે તાણી લેવું (क्रि) कोई काम अपने उत्तरदायित्वपर ले लेना।

માથે તાળ પડવી (क्रि.) बोझाढो तेढोते सिरके बाल घिसजाना।

માથે થઇ છે=आफत आगई है।

માથે થવું (क्रि.) ऋतुमती होना, मासिक धर्म होना, रजोदर्शनहोना।

માથે દુશ્મન ગાજવો (क्रि.) शत्रु सबलहोना, दुश्मनका डर होना।

માથે નાંખવું (क्रि.) सौंपना सिपुर्द करना, अपने ऊपरसे जवाब देही दूसरेके सिर डालना।

માથેથી ઉતારી નાંખવું (क्रि.) भार दूर करना, जिम्मेदारी दूर करना, मुखपर वस्त्र डालना (लोकमें)

માથે પડવું (क्रि.) गिरजाना, जिम्मेदारीहोना, वैवाह होजाना।

માથેપડી નિવડેવા (सं.) मसिलन्य ओगेबिना छुटकारा नहीं।

માથે પાણી ફેરવવું (क्रि.) धूलमें मिलाना, बिगाड़ना, नुकसानकरना चढना, और सरस होना, मर्महोना कुछ न समझना। [होना।

માથે મોત હોવો (क्रि.) अगवानी

માથે મોત ભમે છે-मरने योग्यहुआ है, सिरपर मौत खेल रही है।

માથે હાથ (सं.) कृपा, दया, मिहरबानी, आश्रय, आधार, रहम।

માથે હાથ દેવો (क्रि) निराश होना, सिरपर हाथ धरकर बैठ जाना।

માથે હાથ મૂકવો-ફેરવવો (क्रि) आशीर्वाद देना, दुआ देना।

માથેથી ટપલો ઉતારવો (क्रि.) लांछन दूर करना, कलंक कालिमा हटाना।

માથેથી ટોપલો ઉતારવો (क्रि.) अपने सिरपरसे उत्तर दायित्व हटाना। [ज्यादा, गर्व।

માદ (सं.) मद, नशा, अहंकार

માદરપાટ (सं) एक प्रकारका मोटा कपड़ा, मादरपाट।

માદળપળ (વિ.) [illegible], एक प्रकारकी [illegible]।

માદળિયું-ળિયું (સં.) धातु इ॰ की गोल बत्तीके आकारका आभूषण विशेष, भुजबन्द, गोळतावीज।

માદા (સં.) पशुपक्षी इत्यादिमें स्त्रीजाति, जनाना, औरत।

માદું (સં.) बीमार, रोगी, अस्वस्थ, सुस्त, मन्द, शिथिल।

મધ્યાન (સં.) दोपहर, दिनके १२ बजेके लगभगका समय, मध्याह्न।

માધુકરી (સં.) ब्राह्मणको बनी बनाई रसोईका भोजनदान। बनी बनाई भिक्षापर गुजर करनेवाला।

માધ્યમિક (સં.) एक प्रकारके बौद्ध। [खिताब, ओहदा।

માનઅકરામ (સં.) आबरू, पदवी,

માનકરી-કારી (સં.) माननीय पुरुष, गण्यमान्य पुरुष।

માનતા (સં.) मानत, प्रण, प्रतिज्ञा, संकट निवारणार्थ अथवा मनोकामना पूरी करनेके लिये देव देवीको अर्पण करनेका प्रण अथवा व्रत। [औरत, लुगाई।

માનની (સં.) अभिमानयुक्त स्त्री,

માનવું (ક્રિ.) मानना, स्वीकार करना, कबूल करना, तावेमें होना, इजाजत देना, अपनाना, ठीक [illegible] तुष्ट होना, अनुकूल होना, मनमें समाना, कीमत गिनना, पूजना, भरोसा रखना।

માનશકુન (સં.) शुभाशुभ लक्षण, शुभचिन्ह, उत्तम शकुन। [चित्त।

માનસ (સં.) मन, हृदय, मनसा,

માનસેનેત્ર (સં.) सेनापति। [पूज्य।

માનિતું (વિ.) माननीय, मान्य,

માની (વિ.) अभिमानी, अहंकारी, गर्विष्ठ, मगरूर। [योग्य उत्तर।

માનીપાત (સં.) स्वीकार करने

માન્યતા (સં.) मान, पूजा, स्वीकार, इज्जत, आबरू।

માનુની (સં.) औरत, स्त्री, लुगाई।

માનુષી (સં.) स्त्री, औरत, लुगाई।

માપ (સં.) नाप, तौल, परिमाण, वजन, मान, भार, आबरू, हद, सीमा, शक्ति।

માપકરણ (સં.) नाप करनेका गणित, मेन्स्यूरेशन, रेखागणित।

માપણી (સં.) तौल, नाप, परिमाण।

માપણી કામદાર (સં.) जमीन नापनेवाला, भूमापक, सीमा स्थिर करनेवाला, सर्वेयर।

માપણી ખાતું (સં.) जमीनआदि नापनेवालोंका विभाग, सर्वे डिपार्टमेन्ट।

માપણું (सं.) गेहुं ओरनेवालेके लिये खानेको घरसे भेजा हुवा भोजन।

માપવું (क्रि.) नापना, भरना, तौलना, वजन करना, माप करना

જમીન માપવી—पैर फिसल जाने से पृथ्वीपर गिर पड़ना, भाग छूटना, सटक जाना।

માપુ (सं.) माप, अन्न इत्यादि नापने की जगह।

માફ (वि.) क्षमाकिया हुवा, छोड़ा हुवा, मुआफ, क्षमित।

માફક (वि.) योग्य, अनुसार, अनुकूळ, यथोचित, मूजिब, (क्रि. वि.) प्रमाणे।

માફકરો બાપજી—बस रहने दीजिये मुझे तो बचने दो बाबा।

માફકસર (क्रि. वि.) नियमानुसार, रीतिपूर्वक, परिमित।

માફ કરવું (क्रि.) क्षमा करना, मुआफ करना।

માફ માંગવી (क्रि.) क्षमा चाहना मुआफी मांगना, विनय करना।

માફી (सं.) क्षमा, दयादान, मुआफी, मोचन, मुक्ति, अपराधी कोदण्ड न देकर उसे दयापूर्वक छोड़ देना, छुट्टी।

માફી જમીન (सं.) जिस भूमिपर सरकारी लगान नहो, दान में या इनाम में दी हुई जमीन।

માફો (सं.) मन्दिरकी छतरी के शकलकी गाड़ी, गाड़ी विशेष, वाहन विशेष।

મામ (सं.) खानेका कुछ पदार्थ, (बालकों की भाषा में)। ममत[1] धैर्य, हठ, दृढता, आश्चर्य।

મામના વાંધા (सं.) खाने पीने को नहीं मिळना, अत्यंत दीनता।

મામ મામના વાંધા-સાંસા (सं.) पूर्ववत्। [सफेद जन्तु, जीव विशेष।

મામણમુડો (सं.) एक प्रकारका

મામફલ (सं) एक प्रकारका फळ।

મામલત (सं.) कीमत, मूल्य, दम जीव, सत्व, सार, मत्ता, धनमाल, साहस, नया काम, परगना अर्थात् जिलेकी माल गुजारी की वसूली, लोक रक्षण अथवा व्यवस्थाकार्य।

મામલતદાર (सं.) परगनेकी माळ गुजारी वसूळ करनेवाला सरकारी आदमी।

મામલતદારી (सं.) माळ गुजारी वसूळ करने वालेका काम।

મામલેદાર (સં.) देखो મામલતદાર ।

મામલો (સં.) कामकाज, प्रसंग, काम, फौजदारी धामधूम ।

મામલો ઘુંટાવો (क्रि.) भारी नुकसान होना, मालमिलकियतकी हानि होना ।

મામામાસીના (સં.) सम्बन्धियों का पक्षपात, रिश्तेदारोंकी मुहब्बत या तरफदारी, पक्षपात ।

મામુલ (સં.) रीति, चाल, रवैया, रस्म, रवाज. (वि.) साधारण, मामूली ।

મામુલવાર (सं.) देखो મામુલ ।

મામેરું (सं.) प्रथम प्रसवके समय पुत्री और बालकके लिये माता पिताकी ओरसे भेजी हुई वस्तुएँ ।

મામો (सं.) मामा, माताका भाई ।

મામો સસરો (सं.) वर अथवा वधूका मामा, सासूका भाई ।

માય (सं.) मा, माता, अम्मा, अम्बा, जननी, जनेतृ, (सर्व.) मेरा (क्रि. वि.) में, अन्दर, मांहि, भीतर ।

માયનો (सं.) अर्थ, टीका, मतलब, भाव, आशय, भावना ।

માયનોપુત (सं.) वीरपुरुष, साहसी ।

માયફળ-માયુ (सं.) मांजूफल, फलविशेष जो औषधीमें काम आता है ।

માયરું (सं.) स्त्रीकी माका घर, पीहर, पियर, मैका, मातृगृह, देखो માહેરું

માયા (सं.) कृपा, मोह, दया, स्नेह, करुणा, अनुकम्पा, छल, कपट, धोका सम्पत्ति, धन, योग ऐन्द्रजाल, ममता, आदिशक्ति, प्रपंच, छलभेद, जगतका रूपदर्शन नाटक, बुद्धदेवकी माता, लक्ष्मी, भांग, विजया, भंग, तमाखू, तम्बाकू, गुड़ाखू, पूंजी ।

માયાપાણી (सं.) भंग, भांग, मादक वनस्पतिसे तय्यार किया हुवा जल, जिसे ठंडाईभी कहते हैं।

માયામમતા (सं.) करुणा, दया ।

માયામોસો (सं.) कपटद्वारा मिथ्याभाषण, जैनियोंका १७ वां पाप । [माजूफळ, औषधी विशेष।

માયું (सं.) एक प्रकारका फळ

માયો (सं.) माया, धन, द्रव्य, पूंजी ।

માર (सं.) प्रहार लड़ाई, ताड़न, झपाटा, बहुतकामका बोझा, दुःख विपत्ति, आपदा, कामदेव, मन्मथ मदन ।

મારકણું (वि.) जिसकी मारनेकी टेव हो, मरखा, भयानक, दारुण हृदयभेदक, जो तुरंत प्रभाव दिखावे।

મારકો (क्रि.) निशान, चिन्ह, मार्क, बिपत्ति, आफत, संकट, दुःख। [ठुकना, मारखाना।

મારખાવો (क्रि.) पिटना, कुटना

મારખુ (सं.) मिसल, फाईल।

મારગ (सं.) मार्ग, मग, पंथ, पथ, राह, रस्ता, सड़क, बाट, न्याय, फैसला, निपटारा।

મારગો (स.) पूर्ववत्।

મારગી (वि.) इसनामका एक धर्म (काठियावाड़में) मुसाफिर, यात्री बटोहि, એકમાર્ગી सीधी राहका यात्री।

મારગુ (वि.) पथिक, राहगीर, यात्री, मुसाफिर, मार्ग संबंधी।

મારઝપટ (सं.) प्रस्तुता, फुर्ती, मुस्तैदी चालाकी, हुलस।

મારઝુડ (सं.) मारमार करना, (क्रि. वि.) जल्दीसे, सपाटेसे।

મારપછાડ (सं.) पूर्ववत्।

મારફત (सं.) द्वारा, मध्यस्थता, साधनद्वार, उपाय, दलाली, जरिया।

મારફતીઉં (सं.) मारफतसे हुवा हुवा, दलाल, एजन्ट।

મારફતિઓ (सं.) दलाल, आढ़-तिया, एजन्ट, मध्यस्थ कार्यकर्ता।

મારવાડીનીભાઉ (सं) कंगाल तथा दीन दरिद्र नग्न मनुष्य।

મારવું (क्रि.) पीटना, कूटना, बिगाड़ना, जोरसे पटककर दुखपहुं-चाना, वधकरना, प्राणलेना, किसी पदार्थके आघातसे किसी पदार्थको उगाना, धातु फूंकना छेदमें कोई वस्तु घुसेड़ना, " डाटा मारना " दौड़ना, बाजी जीतना, हराना, कोलाहल करके लूटना अथवा बहुमूल्य वस्तु चोरना, जीतना, दमनकरना, शमन करना, अन्दर घुसेड़ना, बंद करना, फिटकरना, जड़ना, वृक्षशाखोंके बीचका भाग जमीन में गाड़ना, आंखे मटकाना इशाराकरना, હાથમારવું=खूब कमाना, હાથમારવા=तैरना, पैरना (पानीमें) માથામાંમારવું=कोईतकाजाकरे उसे घमन्ड पूर्वक उसकी वस्तु देदेना, ધાડ મારવું=एकाधा बड़ाकाम करना, ઘણુમાં તરવાર મારવી=बातोंकी चोटी, जोर करना धरना कुछभी नहीं ઠારમારવું–ઠેરમારવું=स्थल

करना. ग्रसकरना, प्राण लेना. ०श्रमारवी=किसी बड़े अपराधपर खूब पश्चात्ताप करना।

મારનેવાતો હાથી ને લુટનેવાતો ભંડાર (सं.) मारनातो अपनेसे बलवान को निर्बलको मारनेसे क्या लाभ ?

મારીકાઢવું (क्रि.) मारकूटके भगादेना।

મારીખાવું (क्रि.) चोरीसे छुपकर रुपये पैसे मारलेना—हड़पजाना।

મારીને હાથ ન ધોવા (क्रि.) अतिशय निर्दय तथा क्रूरहोना।

મારી મૂકવું (क्रि.) जोरसे दौड़ाना, खूब प्राणान्त कष्ट देकर छोड़ना।

મારીષ (स.) नट। [स्वयमका।

મારૂં (सर्व.) मेरा, हमारा, खुदका,

મારૂં મારૂં કરવું (क्रि.) इस जगतमें जन्म लेकर तेरा मेरा करते रहना।

મારૂ (सं.) एक देशका नाम, मारवाड़, एक वीर रसात्मक राग।

મારે (सर्व) मुझे, मेरेको, हमको।

મારેલું (वि.) माराहुवा, दमन किया हुवा, जलाया हुवा, भस्मीभूत।

મારો (सर्व) मेरा, हमारा, मम, (सं.) मार, पीड़, सबेरे सायं वाला, वह विद्या जिसपरसे छोड़के गोले चलें, वो मंत्र प्रयोगसे मृत्यु पावे।

માર્ચ (सं.) अंग्रेजी वर्षका तीसरा महीना, आंग्ल मास विशेष।

માર્જન (सं.) परिष्कार करण, शोधन, प्रक्षालन, शुद्धिकरण।

માર્મિક (वि.) मर्मयुक्त, सांकेतिक तीक्ष्ण, मर्मभेदक, प्राणवेधक।

માલ (सं.) सामान, मालमत्ता, धन, वित्त, मिलकियत, वस्तु, द्रव्य, जीव, दम, गांभा।

માલણ (सं.) रानी, राजाकी भार्या।

માલકાંકણી (सं.) एकप्रकारके बीज जो औषधिमें काम आते हैं, मालकांगनी।

માલકી (सं.) प्रभुत्व, सत्ता, अधिकार, हक, मालिकपना।

માલકું (वि.) टेढा, तिरछा।

માલકું જોવું (क्रि.) तिरछा देखना।

માલખું (सं.) बाहिरसे आये हुए चिट्ठी पत्र इत्यादिको फाइल करने का धागा। एक प्रकारका धान्य का पूला।

માલપુઆઓ (सं.) कर अर्थात् लगान् के योग्य भूमि, गांवका पटेल।

માલજાદી (सं.) छिनाल, रण्डी, गुण्डी स्त्री, हरामजादी, वेश्या ।

માલજામીન (सं.) माळमत्तेकी जमानत देनेवाला व्यक्ति ।

માલજામીનકી (सं.) मालजामीनका दफ्तर, कार्य्यालय ।

માલજામીની (सं.) जमानत, अवद-जमानत, प्रतिभू ।

માલણ (सं.) मालिन, मालीकी पत्नी, फूल बेचनेवाली, एक प्रकारकी फुन्सी जो नाकके अन्दर होजाती है ।

માલદાર (सं.) धनी, दौलतमन्द, द्रव्यपात्र, धनाढ्य, सम्पन्न ।

માલધણી (सं.) स्वामी, प्रभु, मालिक, अधिपति, अधिष्ठाता ।

માલપૂડા (सं.) माळपूवा, पक्वान्न विशेष, आटेको मीठे पानीमें घोळकर फिर तेळ वा घी में तल लेते हैं ।

માલમ (सं.) नाव जहाज इत्यादिका माळ, उतरनेका हिसाब रखनेवाळा, मल्लाहोंका सर्दार, साथी संगी, (वि.) जानाहुवा, वाकिफ, ज्ञात ।

માલમતા (सं.) रोकड़, माळ, असबाब, वस्तु, द्रव्य, धन ।

માલમ થવું (क्रि.) मालूम होना, ज्ञात, होना, वाकिफ होना ।

માલમસ્ત (वि.) धनके गर्वसे गर्वित, धनोन्मत्त लक्ष्मीपात्र, कुबेर ।

માલમિલકત (सं.) देखो માલમતા ।

માલવનું (वि.) तुच्छ, हलका, हीन, मालवेका, मालवी, मालवीय ।

માલવની ભાષા (सं.) शब्दाडंबर हीन भाषा, मालव देशका। मालवी ।

માલવું (सं.) छाछकी हांडी या मटुकी, (मिट्टीका पात्र विशेष) (क्रि.) ठाठ बाठसे आनंदपूर्वक यत्रतत्र भटकना, बिलकुल चिंता न हो इस प्रकार सुख भोगना । निश्चित और आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करना ।

માલિક (सं.) स्वामी प्रभु, पति, धनी, सेठ, अधिपति, अधिष्ठाता, (वि.) धन सम्पन्न ।

માલિયાત (सं.) गन्ना, अदरख लहसुन इत्यादि ऊंचे दर्जेका बागबानी पदार्थ ।

માલીકવું (क्रि.), खपरे फेरना, मकानके कवेलू छाना ।

માલીશ-સ (सं.) मर्दन, रगड़, साहीस (घोड़ेका) साईस ।

માલુમ (वि.) देखो માલમ ।

માલુકાર (सं.) ढेड, कोली, जुलाहा ।

આવેઠ (सं.) देखो આવિઠો ।

આવેકપણું (सं.) देखो આવિઠો ।

આવેશ (सं.) देखो આવીશ ।

આવેસ (सं.) देखो આવીસ ।

આવ (सं.) धनी, स्वामी, पति, भर्तार, खाविन्द, खसम ।

આવજત (सं.) संभाळ, देखरेख ध्यान । [वर्षाऋतुके अतिरिक्त वर्षा

આવઠું (सं.) शीतऋतुमें जलवृष्टि

આવડિયો (सं.) माताकीही आज्ञामें रहेनेवाळा पुत्र ।

આવડી (सं.) मा, (प्यारमें) माता, माके समान प्रेम रखनेवाली स्त्री [महावत, पळिवान, हाथीवान

આવત-ધ (सं.) हाथी हांकनेवाळा

આવતર-વિતર (सं.) माबाप, मातापिता, वाल्दैन ।

આવાહાર (वि.) गूदादार, बळवान ।

આવું (क्रि.) भीतर घुस सकना, समाजाना, प्रवेश करना, सीमा में रहना, नदी उभराना ।

આવેતર (सं.) આવતર ।

આવો (सं.) दूधको आगपर गर्मी से उसका पानी उड़ाकर बनाया हुआ गाढ़ा पदार्थ, खोवा, खोया, मावा, सत्व, सार, गूदा ।

આવાના ઢુંઘરા (सं.) एक प्रकारकी मिठाई ।

આવેઠ (सं.) प्रीति, स्नेह, माया, ममता, थरोपा ।

આશુક (सं.) प्यारी स्त्री, प्रिया, वल्लभा, प्रिय, रमण, वल्लभ । (वि.) जिसके वास्ते जो अधिक प्रेममें निमग्न हो । [आमिष ।

આસ (सं.) महीना, माह, मांस,

આસમેદારી (वि.) जिम्मेदार, जवाबदेह, उत्तरदाता ।

આસણો (सं.) परीक्षा, इम्तहान, परख, उत्तरदायित्व, जवाबदेही ।

આસવો (सं.) नमूना, बानगी, आकार, तरह, डौळ, आकृति, रूप, कसौटी पर कसनेकी क्रिया ।

આસરૂપી પ્રાણી (सं) कठोर चालके प्राणी, मुलायम मांसयुक्त जीव ।

આસાજી (सं.) पतिकी माताकी बहिनका पति । मौसा .

આસિ-સ્ત્રી (सं.) माताकी बहिन ।

આસીસો (सं.) स्वर्गस्थ, मनुष्यकी आत्माकी तृप्तिके लिये एक वर्षपर्य्यन्त मासिक श्राद्धकर्म्म ।

આસેઆસ (वि.) प्रतिमास, हर-महीने, महीनेके महीने ।

આસો (सं.) मासी कापति, माता की बहिनका पति ।

આહ (सं.) मास, महीना, ३० दिनोंकी अवधि, मासमास, (क्रि. वि.) अक्सर ।

માહાતમ (सं.) महात्म्य, फल, तेज, शोक, प्रताप ।

માહાડ (सं.) नारेलका पेड़, राग विशेष, माड़ राग, माँड ।

માહાત (सं.) शहमात, शतरंजकी अंतिमचाल, घोड़ी ।

માહાતમ (सं.) देखो માહાતમ, शोक, रुदन, चिन्ता, दुःख ।

માહાવરો (सं.) अभ्यास, प्रेक्टिस, मुहाविरा, आदत ।

માહાશંકુ (सं.) संख्या, विशेष, दस करोड़, अरब, अर्ब ।

માહિત (वि.) भिज्ञ, विज्ञ, ज्ञाता, वाकिफ, जानकार, निपुण, दक्ष ।

માહિતગાર (वि.) जानकार, होशियार, चतुर, काबिल, योग्य ।

માહિતગાર થવું (क्रि) जानना, समझना, वाकिफकार होना ।

માહિતગાર કરવુ (क्रि.) सुझाना, समझाना, अभिज्ञ करना ।

માહિતગારી (सं.) परिचय, जानकारी, अनुभव, तजुर्बा, जान पहिचान, निपुणता, वाकिफकारी ।

માહિતી (सं.) पूर्ववत ।

માછી (सं.) मच्छी मछली, मीन ।

માછીખોર (सं.) मछली खानेवाला ।

માછીગીરી (सं.) मछलीवाला, मछुवा, मछवाहा धीवर, डीमर ।

માહુ (वि.) दुखी ।

માહે (क्रि. वि.) भीतर, अन्दर, माँहि, माँय, विवाह कार्यमें मृत्तिका के छोटे बड़े पात्र ।

માહેર (वि.) देखो માહિતગાર ।

માહેરું–માયરું (सं.) वह स्थान जो विवाहके लिये बन या गया हो । वर वधूके बैठनेका छोटासा मण्डप ।

માહોમાહિ–હે (क्रि वि.) एक दूसरेमें, भीतरही भीतर, आसपास, आपुस आपुसमें, छुपे छुपे ।

માળ (सं) मकानकी मंजिल, पुष्पहार, माला, श्रेणी ।

માળડા–ખો (सं.) सूत्र अथवा तारमें फाइल किये हुए कागज, फाइल ।

માળખુ (सं.) छप्परमें बल्लियाँ लकड़ी गेड़े इत्यादि । मालीकी स्त्री ।

માળવી (वि.) मालव देशका, मालवीय ।

માળવું (क्रि.) पासपास बल्लियाँ रखकर उन्हींके आधारपर छप्पर को रखना । છાપરું માળવું (क्रि) खपरे कवेलू फेरना, छप्पर छाना ।

માળા (सं.) माला, स्मरणी, जपमाला, तसबीह, सुमरनी, मोती अथवा रुद्राक्ष अथवा तुलसीके काठकी माला । श्रेणी ।

માળા ફેરવી (क्रि.) सांसारिक बन्ध-नोंसे मुंह फेर लेना। ईश्वर भजन करना। [करना।

માળા ફેરવવી (क्रि.) ईश्वर भजन

માળાનો મેર (सं.) अगुवा, लीडर अग्रेसर मनुष्य, मुखिया।

માળાના મણકા ગયા — चौबेजी गये छब्बेजी होने होगये दुब्बेजी। लेने गई बेटा और खो आई खसम।

માળિયો-યું (सं) डागला, मेडी, गेलरी, टांड, मचान, मांच, मंच।

માળી (सं.) माली, बागवान फूल हार बनानेवाला, एकजाति विशेष। [विशेष।

માળુ (सं.) मेरा साला (गाळी

માળો (सं.) पक्षीका घोंसला, ऊंचा मकान, डौंचा, खेतमें पक्षी आदि हानिप्रद जीवोंसे रक्षित रखनेके लिये एक खेतसे ऊंची अटारी। बड़े घर। [बोली।

મિઆઉં (सं.) म्याऊं, बिल्लीकी

મીંચવું (क्रि.) बन्द करना, मींचना।

મિજમાન (सं.) मेहमान, पाहुना अतिथि।

મિજમાની (सं.) पहुनाई, मेह-मानी, आतिथ्य, ज़ीआफत, जियाफत।

મિજલસ (सं.) मंडली, सभा, कचहरी, बैठक, मेला, मजलिस।

મિજાગરા (सं.) चूल, जिसपर किवाड़ घूमता है।

મિજાગરું (सं) पूर्ववत्।

મિજાજ (सं) स्वभाव, आदत, प्रकृति, मरजी, इच्छा, तबियत, रंग, आवेश क्रोध, तामस, गर्व, दर्प, घमण्ड।

મિજાજ જવો (क्रि.) क्रोध होना।

મિજાજ ઠેકાણે ન હોવો (क्रि.) रीस चढना, गुस्सा आना, घमण्ड-करना। [घमण्डी और गर्वित।

મિજાજનું ઓસડ (सं.) अलंत

મિજાજી (वि.) घमण्डी, चिड़-चिड़ा, नाजुक प्रकृतिवाला, मगरूर

મિઝાન (सं.) माप, आकार, अटकल, अन्दाज. जोड़, योग, शुमार।

મિજાસ (सं.) देखो મિજાજ।

મિજાસી (वि.) देखो મિજાજી।

મીટ (सं.) सब्र, संतोष, तसल्ली, शान्ति, धैर्य, सहनशीलता, आंख मिलन, आमने सामने एकटक दृष्टिसे अवलोकन।

મીટવું (क्रि.) मिटजाना, नष्ट-होना, जातारहना, हटजाना, दूर होना, फेरपड़ना, अच्छे होना, साफ होना।

મિટી દાણાદાણુ થવી (क्रि.) हैरान होना, इज्जत बिगड़ना, नाशहोना।

મિટીમાં મિટી મળી જવી (क्रि.) देह पंचतत्वको प्राप्त होजाना, मरजाना।

મિઠડાં (सं.) बलैयां, बलिहारी, आलिंगन, चुम्बन।

મિઠડું (वि.) मिष्ट, मीठा, मधुर, मिष्ट भाषी, प्रियभाषी। [झील।

મિઠાગર (सं.) नमककी खाई या

મિઠાબોલુ (वि.) मृदुभाषी, मिष्टभाषी।

મિઠું (सं.) नमक, लवण, (क्रि. वि.) मिष्ट, मीठा, मृदु, प्रिय।

મિઠું તેલ (सं.) तिलोंका तेल, देशीतेल।

મિઠોનિશો (सं.) ताड़ी, शरबत मिली हुई शराब, एक प्रकारका मद्य।

મિઠોભાત (सं.) मीठे चावल, केसरिया भात, गुड़ या शक्करमें पकाये हुवे चावल।

મિડ્ડો (वि) मोटा और मजबूत पुष्ट और दृढ, मोटा ताजा। (सं.) जासूस, गुप्तचर, हलकारा, कासिद।

મિડલો (सं.) कपाल के ऊपर गुंथीहुई बालोंके लट, कपालकी वेणी।

મિઢિયો (सं.) वहपशु जिसके सींग नीचेकी ओर झुक गये हों।

મિંઢળ મિંઢળ (सं) एक प्रकारका फल जो शुभ कार्यमें तथा दवामें काम आता है।

મિંઢીઆવળ } एक प्रकारका वृक्ष
મિંઢિઆવળ } जिसके पत्ते दवाके काममें आते हैं। स्वर्णमुखी।

મિણકપડ-ડું (सं.) वहकपड़ा जिसपर वार्निश रोगनतेल, इत्यादि लगाया गया हो, मोमकप्पड़, मोम पोताहुवा कपड़ा।

મિણબત્તી (सं.) मोमबत्ती, केन्डल एक प्रकारकी बत्ती जो सूतके धागेके चारों ओर मोमलपेट कर बनाई जाती है। मोमकी बनी हुईबत्ती।

મિણિયું (सं.) मोमपुता हुवा कपडा, मोमलप्पड़, मोमकप्पड़।

મિણદાઈ (सं.) छल, प्रपंच, गर्व, चालाकी, घमण्ड।

મિણ્ડું (वि.) धोका धोकादेनेवाला, धूर्त, कपटी, शठ, गर्विष्ट।

મિત (वि.) परिमित, नपाहुवा, तौला हुवा, नियमित, यथा प्रमाण।

મિતી (सं) तिथि, दिन, वार, वासर, महीनेका अमुकदिन, तारीख।

મિત્ર (सं.) बन्धु, सखा, सुहृद, मीत हितू स्नेही, प्रेमी, दोस्त यार, सोहबती, साथी, आशिक (ओका) [माशूक ।

મિત્રિણી (सं.) सखी, सजना,

મિથુન (सं.) मैथुन, स्त्रीपुरुषका विषय संभोग, दम्पति, स्त्रीपुरुषका जोड़ा, युग्म, द्वन्द, तीसरी राशि, युगल ।

મિથ્યા (सं.) असत्य, झूँठ, अयथार्थ, व्यर्थ, निकम्मा, रीता, खाली । [नहीं माननेवाला ।

મિથ્યાદૃષ્ટિ (सं.) जैन धर्मको

મિથ્યાપવાદ–રોપ (सं.) झूठा दोष, असत्य दोषारोपण, झूंठीनिन्दा।

મિથ્યાભિમાની (सं.) बड़ाईखोर, घमण्डी, गुमानी, अहंकारी, अभिमानी। [मार्जारी ।

મિનડી (सं.) बिलाई बिल्ली,

મિનડું (सं.) बिलाव, बिल्ला, मांजार ।

મિનડો (सं.) पूर्ववत् ।

મિનતજારી–વારી (सं. तकाजा, हठ, जिद्द, गौरव, बानगी, बिनती, मिन्नत ।

મિનમેખ (सं.) घटबढ, फेरफार।

મિનમેખ નથી (क्रि.) कुछफर्क नहीं है । ठीक है, निश्चित है ।

મિનાકશી (सं.) अनबन, बेदिली, अनबनाव, खटपट, विरोध, वैर, द्वेष, खार, अंटस, अदावत, कपट, कीना ।

મિનાકામ (सं.) रंग भरनेका कार्य, जड़नेका काम, कारीगरीका काम ।

મિનાકારી (वि.) रंग भरनेका काम करनेवाला, पच्चीकारी ।

મિનારો (सं.) मीनार, बुर्ज, कंगूरा, प्रसादशृंग, गुम्बज ।

મિનો (सं.) जड़ाऊ काम, मीना ।

મિયા–યાં (सं.) देखो मीयां ।

મિયાં મહાદેવ વગર રહ્યા છે (क्रि.) पैसे नहीं मिले तबतकही सीधा है ।

મિયાંમહાદેવનો મેળ (सं)अनबन ।

મિયાંની મિનડી (सं.) नामर्द, पस्त हिम्मत, डरपोक ।

મિયાન (सं.) देखो મ્યાન ।

મિયાનો (सं.) देखो મ્યાનો ।

મિરજા (सं.) मुसलमानोंमें एक उच्च खिताब ।

મિરાત (सं.) पूंजी, धन, दौलत ।

મિરાસ (सं.) दान, हिबा, बपौती जागीर ।

મિરાસગીર (सं.) वारिस, उत्तराधिकारी, मृत्युके अधिकारी ।

મિલકત (સં.) दौलत, धनमाल, जागीर, पूंजी, द्रव्य।

મિલનસાર (વિ.) मेली, मिलापी, मिलनेयोग्य, मिलताहुवा।

મિલનસારપણું-સારી (સં.) मेल, मिलाप, भलमनसाई, सुशीलता।

મિલાપ (સં.) मुलाकात, मेल, भेंट, प्रेम, मित्रता, मिताई, संघ।

મિલાપી (વિ.) देखो મિલનસાર।

મિલાવડો (સં.) समाज, सभा, मंडली, भीड़, मेला, टोली, झुण्ड।

મિશી (સં.) मंजन, दांतोंके लगानेका काला मंजन। दंतमंजन।

મિશ્ર-શ્રિત (વિ.) मिश्रित, मिला हुवा, घालमेल, खिचड़ी, ब्राह्मणोंकी एक पदवी विशेष।

મિષ (સં) बहाना, मिस, चाका, फरेब। निमित्त, सबब, ढाग।

મિષ્ટાપણું (સં.) मधुरता, मिष्टता।

મિસકિન (વિ.) पामर, दीनहीन, बेचारा, गरीब, निर्दोष।

મિસખોર (સં.) बहानाखोर, झूठा।

મિસરી (સં.) मिश्री, खांड, शक्कर।

મિસલ-સાલ (સં.) रीति, व्यवस्था, युक्ति, तरह, उपमा, दृष्टान्त उदाहरण।

મિસ્તરી (સં.) कारीगर, चतुर मनुष्य, शिल्पी, दस्तकार।

મિસ્સી (સં.) देखो મિશી।

મિસ્સી લગાડવી (ક્રિ.) गाने-बालेकी लड़कियोंको उमरमें पहुँच नेपर दांतोंमें मिस्सी लगाना अर्थात् उसे वेश्याके धन्धेमें प्रवेश कराना।

મીજ (સં) देखो મીંજ।

મીંડુ (સં.) देखो મીંડુ।

મીંદડી (સં.) बिल्ली, मार्जारी, लंगर जहाज, ठहरानेका मोटा रस्सा।

મીઆન (સં) देखो મ્યાન।

મીચ (સં.) बीचके भीतरकी गिरी, गर, माखा, मगज, गर्भ, गूदा, आशय।

મીચવું (ક્રિ) बन्द करना, सिकोड़ना, समेटना, सकोचन करना।

મીજ (સં) देखो મીચ।

મીટ (સં.) दृष्टि, नजर, आंख, नेत्र, त्यौर।

મીઠડાં લેવાં (ક્રિ.) बलिहारी जाना, न्यौछावर करना, वारना।

મીઠા બંદર (સં.) वह बन्दर गाह जहां नमक पकाया जाता हो।

મીઠી (સં.) अधरचुम्बन, आलिंगन, होंठचूमना। (वि.) प्रिय, मृदु, प्यारी, स्वादिष्ट, प्रेमयुक्त।

મીઠી ચૂમી (સં.) मृदुचुम्बन, पुचकार तथा थपथपी।

મીઠી લેવી (क्रि.) चूमना, चुम्बन करना।

મીઠી ભરવી (क्रि.) ओष्ठचूमना।

મીઠું (સં.) नमक (समुद्री) (वि.) एक प्रकारका स्वाद, अच्छा, खारा, कटु, मृदु, प्यारा, पसंद, सौम्य, कोमल, प्रसन्न, अव्यग्र।

મીઠું મરચું ભભરાવવું (क्रि.) नमक मिर्च मिलाना, सुंदर बनाना बुराभलाकरके प्रिय करदेना।

મીઠું લાગવું (क्रि.) क्रोध आना, नमक मिर्च लगाना। तेज होना।

મીઠું બોલી (वि.) सहवास योग्य प्रेम करने योग्य।

મીંડું (सं.) शून्य, बिन्दु, ०, अनुस्वार, कुछभी नहीं, रद्दी।

મીંડું ફેરવવું (क्रि.) रद्द करना।

મીંડું થવું (क्रि.) रद्द होना, व्यर्थ होना। [रद्द कर देना।

મીંડે મૂકવું (क्रि.) निकाल देना,

મીંઢું (वि.) मक्कार, चालाक, सिर्रा, धूर्त, चतुर, कपटी।

મીણ (सं.) मोम, मधु मक्खीके निर्मित छत्तेको तोड़कर मसलनेसे बनता है।

મીણનો માણસ (सं.) पोचा आदमी नपुंसक, निस्सार।

મીણ જેવું થવું (क्रि.) पिघलजाना, नम होना, वश पड़जाना।

મીણ કાઢવું (क्रि.) खूब कूटना, बेहद मारना, हड्डीपसली ढीली करना, खूब परिश्रम कराना, थकाना, तेल निकालना [करदेना।

મીણનેફરી નાખવું (क्रि) मुलायम

મીણકપડું-કાપડ (सं.) मोम कप्पड, वहकपड़ाजिसपर मोम पोता गयाहो। [केण्डल।

મીણબત્તી (सं.) मोम बत्ती, केन्डल

મીણાવું (क्रि.) उड़जाना, चुराना, क्रोध चढना, नशाचढना।

મીણીયું (स.) देखो મીણકપડ।

મીણો (सं.) मद, विष, जहर, नशा, मतवालापन, मस्ती।

મીન (सं.) मच्छी, मछली, मत्स्य, १२ वीं राशी, विष्णुका अवतार विशेष, कबजेकी भमिकी हद अथवा सीमा, पक्ष, बाजू, ओर तरफ।

મીનડા (सं.) मछली, झख, मच्छी।

મીનમેખ (सं.) ओछाबढ़ा, थोड़ा बहुत, [विचार।

મીનાક્ષી (सं.) बिल्ली, मार्जार,

મીની (સં.) मार्जारी, बिल्ली, बिलाई।

મીનો (સં.) मरकतमणि, काचके समान चमकदार वस्तु विशेष।

મીયાં (સં.) यवन पुरुष, मुसलमान पुरुषके लिये मानसूचक शब्द।

મીર (સં.) अमीर, सर्दार, राजा, ताशके पत्तोंमें, बादशाह, उत्तम, श्रेष्ठ, एक प्रकारके भिक्षुकोंकी जाति। [रक्षक, दूत, हरकारा।

મીરધો (સં.) राजाका मुख्य देह-

મીરજા (સં.) राजकुमार, युवराज।

મીરાસી (સં.) एक जातिके भिखारी।

મીલ (સં.) सूत कातने तथा कपड़े बुननेका कार्यालय, पक्ष, तड़, दल।

મીલ બાંધવી (ક્રિ.) पक्ष तय्यार करना, दल बांधना, मंडली बनाना।

મીસી (સં.) देखो મસી।

મુંઅણી (સં.) रांधे हुए चांवलोंमें नमक मिर्च मिलाकर बनाई हुई रोटी। एक प्रकारकी रोटी।

મુંગું (વિ.) मूक, गूंगा, अवाक्, चुप चाप, मौन, गुपचुप।

મુંગો (સં.) दो मूंछोंके बीचका ओठके ऊपरका भाग।

મુંછ (સં.) मूंछ, मुच्छ, ऊपरे ओंठके बाल।

મુંજ (સં.) एक प्रकारका घास मूंज, पवित्र घास इसकी डोरी बनाकर जनेऊके सबब पहिनी जाती है तथा संघाती पर इससे मृतकको भी बांधते हैं।

મુંએલું (વિ.) मृत, मराहुवा, गत स्वर्गलोकस्थ, प्राणहीन।

મુ[illegible]ગે काले और शरीरपर सफेद बाल हों ऐसा (बैल)

મુંડણ (સં.) देखो મુડણ।

મુંડવું (ક્રિ.) देखो મુડવું।

મુંડી (સં.) ढाईमनका तोल, परिमाणविशेष, एक प्रकारका तोल।

મુંડાવું (ક્રિ.) शिष्य होना, हजामत बनवाना, ठगे जाना।

મુકટો (સં.) देखो મુગટો।

મુકદમો (સં.) अभियोग, मुकद्दमा, केस, दावा, कामकाज।

મુકરર (વિ.) निश्चित, ठहराया हुवा।

મુકરર કરવું (ક્રિ.) स्थापित करना, कायम करना, स्थानापन्न करना। [लगाना, जड़ना।

મુકરી જવું (ક્રિ.) नट जाना, इन्कार कर देना, अस्वीकार करना, ना करना।

મુકવું (ક્રિ.) रखना, एक वस्तुपर दूसरी वस्तु रखना, डालना, छोड़ना, त्यागना, सौंपना, सिपुर्द करना,

भेजना, ध्यान न देना, बाकी रखना, कमी करना, क्रोध त्यागना ।

મુકાટી (सं.) ठेका, कन्ट्रैक्ट ।

મુકાદમ (सं.) मुखिया, नायक, अग्रेसर, जमादार, सरदार, दरोगा, ओव्हरसीयर, सुपरिण्टेण्डेण्ट, सुपर-वट, एजेण्ट (बन्दरगाहोंपर) ।

મુકાદમી (सं) जमादारी, सरदारी ।

મુકાબલ (वि) सादृश्य, समान ।

મુકાબલો (सं) तुलना, समानता, सामना, बराबरी, आमनासामना, दृष्टान्त, उपमा, उदाहरण ।

મુકાવવું (क्रि.) छुड़ाना, अलग करना, पृथक्करण, हटाना ।

મુકાવું (क्रि.) छूटना, छूट सकना, तुड़ाना, अलग होना, नम्र होना ।

મુકી દેવું (क्रि) देखाळना, छोड़ देना, त्यागदेना, रखदेना ।

મુકર્રર (क्रि. वि.) मुकर्रर, निश्चित, निश्चय, निरसन्देह, अवश्य ।

મુક્કી (सं.) मुठ्ठी, मूठी, मुक्का, घुस्सा घूँसा, मुष्टिका प्रहार ।

મુક્કો (सं.) घूंसा, चपेटा, खूब जोरका मुक्का, घूँसा ।

મુક્ત (वि.) खुला, छूटा, साफ, मुक्तिप्राप्त, मोक्षप्राप्त, बन्ध रहित ।

મુક્તા (सं.) मोती, मौक्तिक, रत्न ।

મુક્તાદ (सं.) मृतपुरुषका वार्षिक श्राद्ध या उत्सव (पारसी जाति में)

મુક્તિ (स) दुःखकी अत्यंत निवृत्ति, नित्यसुखकी प्राप्ति, श्रेय, कैवल्य, निर्वाण, निःश्रेयस, मोक्ष, अपवर्ग, परित्राण, मोचन, संगति, छुटकारा, स्वतंत्रता, ईश्वर प्राप्ति ।

મુખ (सं.) वदन, मुहं, मुखड़ा, खानेका अंग, चेहरा, सिरका सामनेका भाग । जहां नदी समुद्रमें गिरती हो, द्वार, दरवाजा ।

મુખક (सं.) चूहा, मूसा, ऊँदरा, मूषक ।

મુખકળા (सं.) मुहंका दिखावा ।

મુખજુબાની (क्रि वि.) मुहंसे, मौखिक, मुहंसे, जबानसे । [चेहरा ।

મુખડું (सं.) मुख, वदन, मुहं,

મુખનાદ (सं.) देखो મુક્તાદ

મુખતેસર (वि.) थोड़ा मुख्तसर, सूक्ष्म, संक्षिप्त, परिमित, सार, अल्प ।

મુખત્યાર (सं.) प्रतिनिधि, स्वतंत्र, समस्त अधिकारवाला । वकील ।

મુખત્યારનામું (सं.) अधिकारपत्र मुख्तार बनानेकी लिखी हुई दस्तावेज, वकालतनामा ।

મુખત્યારી (सं.) समस्त अधिकार, मुखत्यारकाधंधा, वकालत, स्वतंत्रता, स्वमतानुगमन, सत्ता छूट ।

મુખના મસીખાં કરવાં (क्रि.) मुहं देखी बातें करना, ऊपरी बातों से खुश करना ।

મુખપાઠ (वि.) कंठस्थ, कंठाग्र, मुखाग्र, जिव्हाग्र, मुखस्थ ।

મુખમાં રામ બગલમાં છુરી–हाथ सुमरनी बगल कतरनी ।

મુખપત્ર (सं.) टाइटलपत्र, आव· [रणपत्र ।

મુખપરીક્ષા (सं) जबानी इम्तहान, मुखाग्र परीक्षा ।

મુખવટો (सं.) मूर्तियां सिक्केका चेहरा, आधे शरीरका चित्र ।

મુખવાસ (सं.) भोजन करने के बाद पानसुपारी इलायचीद्वारा मुख शुद्धीकरण, खानेकी सुगन्धित वस्तु ।

મુખસંધિ (सं.) वस्तुके आरंभमें भिन्न भिन्न प्रकारके अर्थ और रस के सहारे जो दूसरेकी उत्पत्ति कही जावे । इसमें बारह अंग हैं १ उपन्यास, २ परि..र, ३ परिन्यास ४ विलोभन, ५ युक्ति, ६ प्राप्ति, ७ समाधान, ८ विधान, ९ परिभावना १० उद्भेद ११ भेद और १२ करण ।

મુખિયું (सं.) कोथलाका मुहं बन्द करनेकी रस्सी ।

મુખિયો (स.) ठाकुरजीकी सेवा करनेवाले सेवकोंका मुखिया ।

મુખી (सं,) नायक, पटेल, मुख्य, सर्दार ।

મુખીઓ (सं.) देखो મુખિયો

મુખ્ખાઈ (वि.) मोरवा शहरकी अनार या बेदाना इत्यादि ।

મુખ્ય (वि.) श्रेष्ठ, प्रधान, मुखिया, आगेवान, अगुआ, खास ।

મુખ્યત્વે–કરીને (क्रि. वि.) सबसे पहिले, खास करके, बहुत करके, विशेषतः ।

મુગટ (सं.) मुकुट, ताज, किरीट, सेहरा, मौर, मोरपक्ष, कलगी, सिरबन्ध, मुकुट, सिरमौर, पूज्य, मान्य ।

મુગટી (सं.) छोटा मुकुट ।

મુગટો (सं.) देखो મુકટો=सोला, पूजा तथा भोजनके समय पवित्र परिधानवस्त्र ।

મુગડી (सं.) एक प्रकारका आभूषण जो कानमें पहिना जाता है, तळी हुई पपडी विशेष, खाद्य पक्वान्न विशेष ।

મુગલ (वि.) मुसलमानोंकी एक मुख्य जाति ।

મુગલાઈ (सं.) मुगलबादशाहोंका शासन, भारतका वह समय जिसमें मुगलोंका राज्य रहा, ठाठ बाठ, शान शौकत, भपका, शोभा, ऐश्वर्य, अन्यायी तथा स्वेच्छाचारी राज्य, दगाबाजी, ठगी, धूर्त्तता, बदमाशी ।

મુગલાઈ ચલાવવી (क्रि.) स्वेच्छाचरण करना, अन्याय पूर्वक बर्ताव करना ।

મુગલાણી (सं.) मुगल मुसलमानकी स्त्री, मुसलमानी ।

મુગાસાડી (सं) एक प्रकारका रेशमी वस्त्र जिसे स्त्रियां पहिनती हैं।

મુગુ–ગો (सं.) मूक, गूंगा, अवाक् ।

મુગોમાર (वि.) दिखे नहीं परन्तु बहुत ।

મુગુટ (सं.) देखो મુગટ ।

મુચરકો–લકો (सं.) करारनामा, प्रतिज्ञापत्र, वचनपत्र ।

મુચવું (क्रि.) रखना, छोड़ना, त्यागना ।

મુછ (सं.) मूंछ, मुच्छ ।

મુછાળો (वि.) मूछोंवाला, बड़ीर मूछोंवाळा, भूरी मूछवाळा, मर्द, मनुष्य ।

મુજ (सर्व०) मेरा, मैं शब्दकी षष्ठी ।

મુજખુ (सं.) दमेका रोग, हृदयरोग, फेंफड़ेकी बीमारी, श्वास, कास ।

મુજને (क्रि. वि.) मुझे, मेरेको ।

મુજબ (वि.) अनुसार, तुल्य, समान, सरीखा, जैसा ।

મુજમુદાર (सं.) देखो મજમુદાર ।

મુજરે (क्रि वि) देखो મજરે ।

મુજરો(सं.) नमस्कार, प्रणाम, वन्दन, नमस्ते, सलाम, बन्दगी ।

મુજાહમત (सं.) टीका, टिप्पणी, विवरण, चर्चा, विवेचन, छिद्रान्वेषण, आपत्ति, व्याधि, कटकांट ।

મુજાક (सं.) पदार्थ, वस्तु, सत, मवाद, मतलब, पीब ।

મુજાખો (सं.) हिसाब, लेखा, हरकत, दरकार, प्रभाव, जरूरत, गौरव ।

મુજારત (सं.) नम्रता, सुशीलता, सभ्यता, साधुता, भलमन्सी ।

મુજાવર (सं.) कबरका पुजारी, मस्जिदका मेहतर ।

મુજાવરી (सं.) कार्यालय, दफ्तर धन सम्पत्ति इत्यादि મુજાવર को ।

મુજિયો (सं.) पवित्र घासका, मूंजका, वह ब्रह्मचारी, जिसका यज्ञोपवीत संस्कार हुवा हो ।

મુઝવણ (सं.) व्याकुलता, बेचैनी, घबराहट, व्यग्रता, क्षोभ, उच्चाट, उद्वेग ।

મુઝારો (सं.) एक प्रकारका रोग, एक प्रकारका भयंकर ज्वरविशेष ।

મુઝાવું (क्रि.) घबराना, व्याकुल होना, बेचैन होना, क्षुब्ध होना ।

મુઠ (सं.) देखो મૂઠ ।

મુઠિયું (सं.) आटेको पानीमें गूंधकर उसे मुठीमें दाबकर तेल या घृतमें भूना हुवा पदार्थ ।

મુઠી (सं.) देखो મૂઠી ।

મુઠી વાળવી (क्रि.) मुठ्ठी बन्द करना, अंगुलियोंको हथेलीके साथ बन्द करना, कुछभी नहीं देना निश्चय करना ।

મુઠીઓ વાળીને નાસવું क्रि.) जोरसे भागना । सपाटेसे दौड़ना ।

મુઠી આપવી (क्रि.) नित्य धर्मार्थ अन्न अथवा चून दान देना ।

મુઠીભર (क्रि. वि.) थोड़ा, मुठ्ठीमें समा सके उतना । [गोळा ।

મુઠો (सं.) बड़ी मुठ्ठी । रेशमका

મુણ્ડણ (सं.) हजामत, क्षौर, वपन, बालोंका मुंडवा देना । एक संस्कार जिसमे पहिलेपहिल बच्चेके बाल काटे जावे ।

મુડદાર-લ-ળ (वि.) सूखा, रूखा, असक्त, निर्बळ, निर्जीव, मरने योग्य, क्षीण, कृश, निरुत्साही ।

મુડદારસિંગ (सं.) मुर्दा सींगी, एक प्रकारका औषधि ।

મુડદું (सं.) मृत, मृक, प्रेत, शव, लाश, जीवरहित शरीर ।

મુડન (सं.) देखो મુણ્ડણ ।

મુડવું (क्रि.) मुंडना, छुरेया उस्तरेसे बाल साफ करना । ठगना । धोका देना, शिष्य करना, हजामत करना ।

મુડાવું (क्रि.) ठगाना, साधुका शिष्य होना । हजामत कराना ।

મુડિયો (सं.) सिर मुंडाया हुवा मनुष्य ।

મુડી (सं.) देखो મૂડી ।

મુડો (सं.) देखो મૂડો ।

મુણ્ડ (सं.) मस्तक, माथा, शिर ।

મુણ્ડન (सं.) देखो મુણ્ડણ ।

મુઢ (वि.) मूर्ख, अपढ, शठ ।
મુતર (सं.) देखो મૂતર ।
મુતરવું (क्रि.) मूतना, पेशाब करना, लिंगेन्द्रियद्वारा पानी बाहिर निकालना ।
મુતર કરવું (क्रि.) (पशुका) पेशाब करना ।
મુતર કાઢવું (क्रि.) पेशाब करनेका स्थान साफ करना ।
મુતરી દેવું (क्रि) मूत देना, डरना, कांपना । [योनि ।
મુતરાણી (सं.) मूत्रेन्द्रिय, लिंग,
મુતરાણું (वि.) जिसे मूतनेकी जरूरत हो, पेशाबकी हाजतवाळा ।
મુતરાવવું (क्रि.) मुताना, डराना, धमकाना, मूते ऐसा काम करना ।
મુતરિયું (सं.) पेशाब करनेका पात्र, मूत्रघर, मूतदानी ।
મુતલક-ખ (क्रि. वि.) बिलकुल, जरा, थोड़ा, अल्प, सर्वथा, तमाम ।
મુતલિક (सं.) एक ओहदेदार जो कि राजमंत्रीके नीचे होता है ।
મુતાલિક (सं.) नायबदीवान । सहायक मंत्री ।
મુત્સદ્દી (सं.) देखो મુસદ્દી ।
મુદ્દઈ (सं) वादी, मुद्दई, शत्रु, दुश्मन ।
મુદ્દત-દ્દત (सं.) ठहराया हुआ समय, मुकर्रर वक्त, नियततिथि, समय, वारा ।
મુદ્દતસર (सं.) नियत समयपर ।
મુદ્દલ, દ્દલ (सं. वि.) बिलकुल, तमाम मात्र, समस्त ।
મુદા (सं.) उल्लास, हर्ष, आनन्द, संतोष, विशेष ।
મુદ્દામ-દ્દામ (क्रि. वि.) खास, विशेष, साफ, स्पष्ट, प्रकट, निश्चय, निस्संदेह । सदा, हमेशा, बहुत समयका ।
મુદ્દો (सं.) सबूत, प्रमाण, साक्षी, पता, दाखला, मूल, जड़, चिन्ह, नामनिशान, अवशेष ।
મુદ્રા (सं.) चिन्ह, निशानी, मुहर छाप, सिक्का, अंगुठी, छल्ला, बींटी वहअंगूठी जिसमें मुहर हो, जोगियोंके कानोंमें छल्ले, गरम करके लगाये हुए हाथोंपर चिन्ह विशेष टाईप, देवता विशेषकी आराधना करनेके समय अंगुलियोंकी रचना विशेष । चेहेरेके भाव, आकार, नमूना, लक्षण, स्नानके बाद मस्तकमें गोपीचंदन आदिके चिन्ह, विशेष । समाधिके समय मुखकी

आकृति। गोचरी, अगोचरी चेचरी ज्ञान, खेचरी, भूचरी अगोचरी अलक्षी आदि। [छापाहुवा।

मुद्रांकित (वि.) टाइप जोड़कर

मुद्राधारी (वि.) जिसके अगपर गोपीचंदन आदिके तिलक छापे हों।

मुद्रालेख (सं.) मोटो, कहावत, मसला। [छल्ला, अंगूठी।

मुद्रिका (सं.) निशानी, छाप, सिक्का

मुनक्षा (वि.) मनुष्यका।

मुनशी (सं.) क्लर्क, मुहर्रिर, लेखक कारभारी, सेक्रेटरी, फारसी, अरबी उर्दू आदि यवन भाषाओंका ज्ञाता ग्रंथलेखक।

मुनसफ (सं.) दीवानी कामोंका इन्साफ करनेवाला, देशी ओहदेदार न्याय करनेवाला, इन्साफी।

मुनीम (सं.) सेठोंकी दुकानपर मुख्य कार्य कर्त्ता मनुष्य, मेनेजर व्यवस्थापक, आढतिया, कारभारी नायक, अधिकारी।

मुने (सर्व.) मुझे, मुझको, मेरेको।

मुन्य (सं.) मौन, मूकभावसंवृत्ति,

मुफलिस (वि.) गरीब, कंगाल, दीन, दरिद्री, दुखी, बेहाल।

मुफलसी (सं.) गरीबी, दीनता, दारिद्रय, कंगाली, लाचारी, दुर्दशा आपत्ति।

मुफलीस (सं.) देखो मुफलस।

मुफलीसी (सं.) देखो मुफलीसी।

मुफलेसी पूर्ववत्। [बाहिरगांव।

मुफसील (सं.) परदेश, विदेश,

मुबारक (वि..) भाग्यशाली, सुखी आबाद, मंगल, अनुग्रहकारी, अनुकूल, मांगलिक, कल्याणप्रद।

मुबारकगिरी–बादी–बी (सं.)धन्य, वाद, बधाई, अभिनन्दन।

मुमती (सं.) कपड़ेका, वह टुकड़ा जिसे जैन साधु अपने मुहपर बांधते हैं।

मुमना (सं.) मुसलमानोंकी एक जाति विशेष। मुसलमानोंकी वह जाति जो हिंदुजातिसे पतित होकर मुसलमान बने हों।

मुमैय (सं.) मनुष्यकी चर्बीद्वारा बनाहुआ मल्हम।

मुरख (वि.) देखो मूर्ख।

मुरग (सं.) देखो भृग।

मुरघाणी (सं.) जलमुर्गा, पानीमें रहनेवाला पक्षीविशेष।

मुरधी (सं.) मुर्गी, पक्षीविशेष।

મુરઘો (सं.) मुर्गी. मुर्ग, कुक्कुट

મુરજ (सं.) एक जातीका ढोल, नगारा विशेष ।

મુરત (सं.) प्रतिमा, मूर्ति, आदमी (साधु समाजमें) सीमंतोन्नयन संस्कार, तीसरा संस्कार, जो बाळकके गर्भ समयमेंही किया जाता है, अगरणा मुहूर्त, अच्छा समय ।

મુરતકરવું-માંડવું (क्रि.) किसी कार्यके आरंभ करनेके लिये शुभ कर्त्ता समय निश्चयहोना, आरंभ करना ।

મુરબ્બી (स.) कुटुंबमें बड़ाआदमी वयोवृद्ध, बड़ा, मानी पूज्य रक्षक, आश्रयदाता पोषक, मदद गार, हिमायती, पालक ।

મુરબ્બો (सं.) आमके कच्चेफळ, सेवनासपाती आंवळे आदिका उबाळकर शकरकी चासनीमें तय्यार किया हुवा पदार्थ विशेष मुरब्बा ।

મુરમુરા (सं.) देखो ममरा ।

મુરવત (सं.) अदब, मर्यादा, मान, पूज्यबुद्धि, वजन, भार ।

મુરશદ (सं.) धर्मगुरू, धर्मशिक्षक।

મુરશીદ (सं.) पूर्ववत् ।

મુરાતબ (सं.) गौरव, प्रतिष्ठा, मान, आबरू, बड़प्पन ।

મુરાદ (सं.) इच्छा, चाह, आशा, अभिळाष, वांछा, चाहना, उम्मेद।

મુરીદ (सं.) शिष्य, चेला, शागिर्द ।

મુલ (सं.) देखो मूल ।

મુલક-મુલ્ક-મુલ્ખ (सं.) देश, प्रदेश, राज्य, मुल्क, राष्ट्र ।

મુલકગિરી-ખગિરી (सं.) यात्रा, भ्रमण, देशपर्य्यटन, देशाटन, मुसाफरी ।

મુલકી (वि.) रेवेन्युसम्बंधी, महसूल विषयक, देशी, दिसावरी ।

મુલકી કામદાર (सं.) रेवेन्यू ऑफीसर, मामलतदार ।

મુલકી ખાતું (सं.) रेवेन्यूका हिसाब, महसूलका खाता । [पूरा ।

મુલગું (क्रि. वि.) बिलकुल, सब,

મુલતવી (क्रि. वि.) मौकूफ, स्थगित, रोका, ठहराया ।

મુલતવી રાખવું क्रि.) विचाराधीन रखना, स्थगित करना, ठहराना ।

મુલતાની (वि.) मुलतान देशका (सं.) रागविशेष ।

મુલહાર (वि.) कीमती मूल्यवान, बेशकीमती, अधिक मूल्यका ।

મુલ ખડી (वि.) व्यापारमें मूल्यके लिये सांकेतिक शब्द ।

મુલમ્મો (सं.) रोगन, लेपन, प्लास्टर, कलई ।

મુલવવું (क्रि.) कीमत करना, भाव निकालना, मूल्य करना ।

મુલવાન (वि.) देखो મૂલ્યવાન ।

મુલાઇમ (वि.) नरम, कोमल, मृदु।

મુલાકિત-કાત-ખાત (सं.) मेल, भेट, मिलन, समागम, बातचीत ।

મુલજો (सं.) मर्यादा, मान, प्रतिष्ठा, विवेक विचार, अदब ।

મુલામ (सं.) मुलम्मा, कलई, (वि.) उम्दा, उत्तम, श्रेष्ठ, मुलायम, कोमल ।

મુલામી (वि.) कोमलता, मुलायमी ।

મુલામો (सं.) देखो મુલમ્મો ।

મુલ્લાં (सं.) मुसलमानोंका धर्मोपदेशक, न्यायकर्त्ता। शिक्षक, पंडित

મુલ્વો (सं.) पूंजी, धरोहर, मूलधन ।

મુવાડો (सं.) छोटा, गांव, गांवडा।

મુવાળો (सं.) बाल, केश, कच, रोम ।

મુવાં પહેલાં ઘેર / મુવાં પહેલાં મહોકાણ — कुछ भी नहीं हुआ और तदनुसार कार्य करना ।

મુવાનહિનેપાછાથયા=जैसाका तैसा। ज्योंकात्यों, एकका एक ।

મુવું (वि.) मुर्दा, मरा, मृत, इस शब्दको स्त्रियां गालियोंमें प्रयोग करती हैं ।

મુવો વરને બળી જાન=मुझे किस बातकी चिन्ता, मुझे क्या दुख, मेरी बलासे, चूल्हेमें जाय भाड़में निकले ।

મુસ્કે બાંધવું (क्रि.) दोनों हाथोंको पीठके पीछे बांध देना ।

મુસ્કેલ (वि.) कठिन, क्लिष्ट, गहन गूढ, विकट, अशक्य, असंभावी ।

મુસ્કેલી-પત (सं.) मुसीबत, मिहनत, संकट. दुःख, कष्ट, कठिनता ।

મુશળ (सं.) देखो મુસલ ।

મુસદ્દી (सं.) लेखक, क्लर्क, मुहर्रिर

મુસદ્દો (सं.) मजमून, निबन्ध, नकशा, आलेखन, नमूना, रूपरेखा।

મુસલમાન (सं.) अपने ईमानपर दृढ रहनेवाला मनुष्य, यवन, मुहम्मद साहबका अनुयायी (वि.) उद्धत, बदमाश, अच्छृंखल, नीच, दुष्ट ।

મુસલ્લો (सं.) जिस दरी फर्श या कपड़ेपर मुसलमान, नमाज पढते हैं । (ओछी बोलीमें) मुसलमान ।

મુશળ (सं) देखो मुसळुं ।

મુસળખંડી (सं.) चांवल, तंदुल, धान्य विशेष, चोखा, अक्षत ।

મુસળધાર (वि.) भयंकर वृष्टि, मोटी मोटी धाराओंकी महान वर्षा ।

મુસળસ્નાન (सं.) शरीरपर थोड़ा बहुत पानी डालकर नहा लेना । ऐसा स्नान जिसमें आधा शरीर भीग जावे और आधा सूखा रह जावे । कौवा स्नान ।

મુસળી (सं.) एक प्रकारकी औषधि, यह दो जातिकी होती है । सफेदमूसळी और कालीमूसली ।

મુસળું (सं.) मूसल, वत्ता, पदार्थ कूटनेका लोहकाष्ट अथवा पत्थरका दंड ।

મુસાફર (सं.) पथिक, यात्री, बटोही, प्रवासी, पंथी, राहगीर ।

મુસાભાઇને વાપાગી=कोरमकोर छूछा धनमालहीन हालत ।

મુસાહેબ-હેદાર-हित (सं.) सेवक, नौकर, भृत्य, चाकर ।

મુસારો (सं.) वेतन, तनख्वाह, मजदूरी, मासिक या वार्षिकवेतन ।

મુસાહિબ (सं.) साथी, संगी, मित्र, सोहबती, सहवासी ।

મુસી (सं.) एक प्रकारकी मछली ।

મુસીબત (सं.) दुःख, तकलीफ, मेहनत, कठिनाई ।

મુસ્તકીન-મ (वि.) मजबूत, दृढ़, पुख्ता, स्थायी ।

મુહુર્ત (सं.) अनुकूल समय, द्वादशक्षण परिमितकाल, दोघड़ी का समय, ४८ मिनिटका समय । आरंभ, शुरूआत । सीमंत संस्कार।

મુળ (सं.) देखो મૂળ । [बरोबर ।

મુળગું (क्रि. वि.) बिलकुल, ठीक,

મુળચી-છી (सं.) बहुत भोजन करके तृप्त होना । कय करना, दुखना ।

મુળાપત્તી (सं.) मूलियोंकी गड्डी ।

મુળિયું (सं.) वृक्षकी छोटी जड़, मूल । [बाला ।

મૂકધારી (वि.) मौन धारण करने

મૂગું (वि.) मूक, गूंगा, वाणी हीन । [के बाल ।

મૂછ (सं.) श्मश्रु, मोंछ, ओंठपर

મૂછના આંકડા વાળવા (क्रि.) मूछोंपर ताव देना । [प्रिय ।

મૂછનોવાળ (सं.) अत्यंत प्यारा,

મૂછપરતાવ-તાળ દેવો (क्रि.) मूछोंपर हाथ फेरना धिक्कारना ।

મૂછપરલીંબુ રાખવાં (क्रि.) शेखी-
दिखाना, अकड़ना, गर्व करना ।

મૂછમાંહસવું (क्रि.) मुस्कुराना ।

મૂછેલીંબુ છે (क्रि.) जिद है,
हठ है, टेक है ।

મૂછ હાથે ફેરવે-ફેરવવો (क्रि)
अपनी बात ऊंची रखना ।

મૂઝવણ (सं.) बेचैनी, पीड़ा,
क्लेश, दुःख ।

મૂઢ (वि.) बिना अक्कका, मूम,
ठोठ, जड़, मूर्ख, मतिमन्द, जड़ ।

મૂઠ (स.) दस्ता, बेंट, हत्था,
हेंडल, हाथकी मुठ्ठीमें पकड़ने का
भाग । मारडालने के लिये एक
मंत्र प्रयोग । चोट, गिल्लीडंड के
खेलमें एक दाव विशेष ।

મૂઠવાળવી-ઉતારવી (क्रि.) मंत्र
प्रयोगकीशांतिकरना ।

મૂઠમારવી (क्रि.) मंत्र प्रयोग
अजमाना ।

મૂઠી (सं.) मुष्टि, पांचों अंगुलियों
को हथेलीसे मिलाने में जो वस्तु
उसके अन्दर हो, मुठ्ठी ।

મૂઠી દબાવી-ચાંપવી (क्रि.) संकेत
करना, इशारा करना ।

મૂઠી બંધ થવી (क्रि) लेनदेन
बन्द होना, देना बन्द करना ।

મૂઠીઓવાળી નાસવું (क्रि.)
प्राण लेकर भाग छूटना, भयातुर
हो भगना ।

મૂઠીમાં રાખવું (क्रि.) अपने
अधिकारमें रखना, सत्तामें रखना ।

મૂઠીમાં સમાય એટલાં=थोड़े बहुत ।

મૂડી (सं.) माथा, सिर, मस्तक,
चोटी पूंजी, । व्यपारमें लगाया,
हुआ धन ।

મૂડી નીચી થઇ જવી (क्रि.)
इज्जत कम हो जाना । अपमानसे
सिर झुक जाना ।

મૂડી મંતરવી (क्रि.) उलटासीधा
समझाना, फुसलाकर कुछ ले लेना ।

મૂડી મોચન કરવું (क्रि) अप-
मानित करना । मान भंग करना
सिर मूँडना । [आधीन होना ।

મૂડી હાથમાં હોવી (क्रि.) अपने

મૂડો (सं.) सौ मणका माप ।
बंबईमें पच्चीस सेर वजन भरनेका
पात्र विशेष, तौल परिमाण विशेष ।

મૂઢ (वि.) मूर्ख, अज्ञानी, अपढ,
अनभिज्ञ, अज्ञ, मतिमंद, बेवकूफ ।

મૂતખડો (सं.) पथरी नामक रोग ।

મૂતર (सं.) मूत, पेशाब, मूत्र,
लघुशंका, वह पानी जो पेटके
नीचेकी इन्द्रियमेंसे निकलता है ।

મુતરખાનુ (सं.) पेशाब करनेकी जगह, मूतघर, पेशाबघर ।

મુતરડી (सं.) पूर्ववत् ।

મુતરવું (क्रि.) पेशाब करना, मूतना, लघुशंका करना ।

મુતરાળું (वि.) मुताया, जिसे मूतनेकी इच्छा हो ।

મૂત્રપથ (सं.) पेशाब आनेकी नली ।

મૂત્રપિંડ (सं.) वह स्थान जहां रक्तसे अलग होकर पेशाब बनता है । यह पिण्ड पेटमें होता है । गुर्दा ।

મૂત્રાશય (सं.) वह थैली जो पेटके अंदर होती है और जिसमें मूत्र संचय होता है । [योनि ।

મૂત્રાળ (सं.) भैंस अथवा गऊकी

મૂર્ખ (वि.) मूढ, अज्ञान, अजान अनभिज्ञ, बेवकूफ, शठ, अबोध, मतिहीन ।

મૂર્છના-મૂર્ચ્છા (सं.) मोह, कश्मल, संम्मोह, अचेतता, बेहोशी बेसुधि ।

મૂર્ચ્છાગત-ચ્છિત (सं.) अचेत, बेहोश, बेसुध, भानरहित । मोहित ।

મૂર્છના (सं.) गीतका अंग विशेष, स्वरको एक बार चढ़ाने और उतारनेकी क्रिया विशेष ।

મૂર્છા (सं.) एक प्रकारका रोग विशेष ।

મૂર્તિ (सं.) पत्थर या लकड़ीमें खोदी हुई आकृति विशेष, धातु या मिट्टीका बनाया हुआ आकार विशेष । बनाया हुआ चित्र, प्रतिमा आकार, पुतली, तस्वीर, साधु-पुरुष, संत ।

મૂલ-લ્ય (सं.) मोल, भाव, दर, दाम, निरख, कीमत, मजदूरी, वेतन, रोजाना वेतन ।

મૂલ્યદાર वि.) कीमती, महंगा, बेश कीमती मूल्यवान ।

મૂલ્યવાન (वि.) पूर्ववत् ।

મૂશી (सं.) मजदूर, श्रमजीवी, मजूर ।

મૂસ (सं.) धातु गलानेके लिये बनाई हुई एक प्रकारकी मिट्टीकी-कटोरी, विशेष सांचा ।

મૂળ (म.) जड़, वृक्षकी वह शाखा जो पृथ्वीमें होती है । उन्नीसवां नक्षत्र, कारण, नींव, आरंभ, आधार, कुल, वंश, जिसपुरुष वीर्यसे वंश विस्तार हुआ हो । पुरुषा, पूर्वज, आदि पुरुष, आरंभ उत्पत्ति, शुरूआत, मूल (पुस्तक

बिना टीकाकी), पूंजी, नदीकी स्थान, पांचकी संख्याके लिये संकेत शब्द ।

भूळअक्षर (सं.) प्रथम अक्षर ।

भूळ ऊंडा छे=उस मनुष्यके लिये यह वाक्य प्रयोग किया जाता है जिसके मनकी और बाहिरकी जानना कठिन हो ।

भूळ कांपवुं (क्रि.) समूळ नष्ट करना, बिलकुल बरबाद करना ।

भूळपीठिका (सं.) आरंभिक कथन भूमिका मात्रा आदि रहित हो, स्वर, व्यंजन ।

भूळाडीउं (सं.) मूळ, जड़ ।

भूळी (सं.) कोमल जड़, पतली जड़ ।

भूळे (क्रि. बि.) आदिमें, आरंभमें ।

भूळो (सं.) एक प्रकारकी तरकारी भाजी मूळीकी भाजी, मूरी, मूरई ।

भूळांना पाणीक्षकमजोर, हिम्मतहीन

भूळाना पतीका जेवा ईपया-गोल गोल तथा सुन्दर ।

मृग (सं.) हरिण, कुरंग, सांभर; पांचवां नक्षत्र, मृगशिर, इसनक्षत्र में वर्षा होती है ।

मृगज (वि.) हरिणसे उत्पन्न (सं.)कस्तूरी, मृगमद, । मृगनाभि ।

मृगजळ (सं.) भ्रम, मृगमरीचिका, मृगतृष्णा, । वृक्षरहित जंगलोंमें और प्रायः रेतीले मैदानोंमें धूपकी लहरें जलके समान बोध होती है जिन्हें पानी समझ कर हरिण अपनी प्यास बुझानेके लिये वहां जाता है वहजळ हो मृगजळ कहाता है ।

मृगनाभि-मद (सं.) कस्तूर, मुश्क

मृगया (सं.) शिकार, हिंस्र पशुओंका जंगलमें जाकर वध करना, आखेट ।

मृगलांछन (सं) चन्द्रमाका काळा दाग, चांदमें काळा निशान ।

मृगशी (सं.) हरिणी, मृगी ।

मृगांक (सं.) चन्द्रमा, चांद, कपूर ।

मृगी (सं.) हरिणी, मादाहरिणी । सुन्दरस्त्री ।

मृणाल (सं.) कमलनाळ कमळकी जड़ ।

मृणालि (सं) कमलिनी ।

मृत (वि.) मुवा, मराहुवा, मुर्दा, प्राणरहित, परलोक गत ।

मृतक (सं.) शव, मुर्दा, लाश, जीव रहित शरीर, लोथ (वि.) मरने वालेसे संबंध रखनेवाला ।

મૃતપત્ર (सं.) वसीयतनामा, मृत लेख, अधिकार पत्र।

મૃતાશૌચ (सं.) मरजानेका सूतक मृत्युके बादकी १० दिनकी अपवित्रता।

મૃદંગ (सं.) एकप्रकारका बाजा, यहढोलककी शकलका होता है इसकी आवाज तबलेके समान होती है। पखावज। [मधुर।

મૃદુ (वि.) नरम, कोमल, मीठा,

મેં (सर्व.) मै सर्व, मुझसे।

મેંડક (सं.) दादुर, मेक, मण्डूक, मेंढक। [मेंढा।

મેંઢો (सं.) मेष, गाडर, मेड़ा,

મેંઢી (सं.) मेढ़ी, भेड़, मेषी।

મેંઢું (सं.) मेंढा या मेंढी, भेड़, मेढ़ी, मेष।

મેંદી (सं.) मेंहदी, एकप्रकारकी पत्तियां, जिन्हें पीसकरः हाथ पैर लगानेसे लाल होजाते हैं। प्रायः स्त्रियां लगाती हैं।

મેંદો (सं.) गेहुओंका सत्व, मैदा, गेहुओंका बारीक चूर्ण, निशास्ता।

મેંસ (सं.) कज्जल, काजल, स्याही।

મેંસના ગાઢા આંખ્યા ઉ॰ जब कोई अधिक काजळ आंखोमें लगालेता है तब यह हंसीके रूप कहते हैं

મેંસનો ચાલ્લો (सं.) अपकीर्ति, लांछन, कलंक, कालाटीका।

મે (सं.) मेघ, मेहं, वर्षा (काव्यमें) सत्ता, अमलदारी, अधिकार, अंग्रेजी पांचवां महीना मई।

મેક્ષણુ (सं.) खोंचा, चमचा, चाटू।

મેખ (सं.) खूंटी, कील, कीली,

મેખ (सं.) देखो મેષ।

મેખચું (सं.) मोगरी, हथोडा, छोटा बालक।

મેખ ઠોકવી (क्रि.) किसी प्रकारका अटकाव करना, बीचमें रोकना।

મેખડીવી (सं.) देखो મેખચું।

મેખ બેસવું (क्रि.) अटकना, देरी होना, बाधाउपस्थित होना।

મેખમારવી (क्रि.) अत्यंत दुखदेकर सताना।

મેખળ (सं.) लड़ाईका एक प्रकारका हथियार, कटिसूत्र, तागडी, कंदोरा मेखला, करधनी।

મેખળા (सं.) पूर्ववत्।

મેખવો (सं.) पूर्ववत्।

મેષાન્તર (सं.) बहाना, मिस, निमित्त, ढोंग ।
મેખિયું (सं.) अफीम, एकप्रकारका मादक द्रव्य, अमल ।
મેખી (सं.) अफीमची, अफीम खानेवाला व्यसनी, अफीमी ।
મેખું (सं.) अफीम, અમલ, पोस्त कसूंभा ।
મેગની (सं.) बकरी भेड़ीआदिकी विष्टा, गोलीके रूपमें विष्ठा । [गज
મેગળ (सं.) हाथी, कुंजर, करि,
મેઘ..લો (सं.) बादळ, मेघ, घन वर्षा, मेंह, बरसात, जळधर ।
મેચકું (सं.) छोटासा बच्चा ।
મેજ (सं.) टेबल, कुर्सीके आगे रखकर लिखने पढनेका तख्त, भोजनका पट्टा । [होना ।
મેજપર ચઢવું (क्रि.) काम जोरांसे
મેજમાન (सं.) जिसे भोजनके लिये बुलायाहो, पाहुना मेहमान, अतिथि ।
મેજમાની (सं.) मिहमानी, आतिथ्य, पहुनाई, रसोई खिलाना आगत स्वागत ।
મેજર (क्रि.) फौजमें कप्तानसे बड़ा ओहदेदार, कोतवाळ, हकीम बड़ी उमरका मनुष्य ।
મેજરનામું (सं.) बहुतसे मनुष्यों का हस्ताक्षर युक्त पत्र, अर्जी, प्रार्थना पत्र ।.
મેડક (सं.) देखोमेડક
મેડી (सं.) मकान के ऊपरका मकान, अट्टालिका, डागळा ।
મેડી કરવી (क्रि.) स्त्री पुरुषोंको योग्य अवस्था आनेपर एकान्तमें सुलाना । इसे ઓરડી કરવી भी कहते हैं ।
મેડો (सं.) बड़ी अट्टालिका ।
મેઠ (सं.) एक प्रकारका जीव जो लकड़ीमें पैदा होता है । घुन ।
મેળવવું (क्रि.) मिलाना, समानता करना, मुकाबिला कराना ।
મેઢી (सं.) मेषी, भेड़ी ।
મેઢું (स.) भेड़, गाडर, मेष ।
મેઢો (सं.) पूर्ववत् ।
મેથુ (सं) देखो મિથુ ।
મેળમેળું (वि.) अंधेरघुप्प, ऐसा अंधकार जहां कुछभी नहीं सूझे ।
મેણું (सं.) ताना, उलाहिना, उपालंभ,आक्षेप, कठोर वचन, टोक।
મેણું મારવું (क्रि.) ताना देना, उलाहिना देना, उपकारको कहना ।
મેતર (सं.) भंगी, श्वपच, मेहतर, डोम, हेड, झाड़ लगानेवाला ।

मेतरी (सं.) मेहतरकी स्त्री ।

मेथियुं–थीऊ (वि.) मेथी आदि मसाला भरकर बनाया हुआ आचार।

मेथी (सं.) एक सागका नाम । इसके बीजोंकाभी साग होता है ।

मेथीना छे=फायदा है, लाभ है ।

मेथीपाक (सं.) जाड़ेके मौसिममें घीशक्कर मेथीका आटा इत्यादि चीजोंका जो पदार्थ बनाया जाता है वह । मार, पीटनेकी ध्वनि ।

मेथीपाक जमाडवो (कि.) मारना, ठोंकना, पीटना, कूटना ।

मेद (सं.) मज्जा, बसा, चर्बी, सत्व, सार, मुटाई, गर्भ ।

मेदनी (सं.) संसार, लोक, दुनिया, पृथ्वी भीड़, ठठ्ठ, झुंड, जत्था, समूह, समुदाय ।

मेदान (सं.) सीधी वृक्ष पर्वत रहित भूमि । किलेकी आसपासकी खुली हुई जगह । लड़ाईकी खुली जगह, रणभूमि, खेत, फील्ड, क्षेत्र, घासका जंगल, बीहड़ ।

मेदान करी मूकवुं (कि.) तोड़ताड़ कर सपाट करना ।

मेदान मूकवुं (कि.) उखाड़ा करना, खुला छोड़ना, पूर्ण करना, खतम करना ।

मेदान पडवुं (कि.) बाहिर होना, प्रगट होना, खुदके गुण अवगुण लोगोंपर प्रगट करना, प्रकाशमें आना, आगे आना ।

मेदानमा आववुं–पेसवुं (कि.) लड़ाईमें सामने आना, शत्रुके सामने होकर युद्ध करना ।

मेदी (सं.) देखो मेंदी ।

मेदो (सं.) देखो मेंदो ।

मेन (सं.) कामदेव, मदन, कन्दर्प ।

मेना (सं.) एक जातिका सुन्दर पक्षी, मैना, सारिका, तोतेकी तरह बोलना सहजहीमें सीख लेती है ।

मेनो (सं.) देखो म्यानो ।

मेमण (सं.) काठियावाड़की तरफ मुसलमानोंकी एक जाति विशेष ।

मेमान (सं.) मेहमान, पाहुना, अतिथि, यात्री, मुसाफर ।

मेर (कि. वि.) भले, मुखमें, तरफ, ओर, बाजूपर, पक्षपर, (सं.) बाजू, कोर, तरफ, दिशा, एक प्रकारके लोग, जाति विशेष, मालाका मुख्य मनिया जहांसे मालाकी गणना होती है, मेरुनाम का पहाड़, हुक्केका नैचा, वह लकड़ी जिसपर हुक्केकी चिलम

रखी जाती है, एक प्रकारका जीव एक प्रकारका दाल बनानेका ताम्बेका पात्र ।

મેર બેઠો=सूर्यास्त हुआ ।

મેરાઈ (सं.) दरजी, कपडेसीने वाला, सूचीकार ।

મેરાયો (सं.) वह दावजो खेळके समय एक का दूसरे को फायदे मे पड़ता है ।

મેરિયું (स.) एक प्रकारका दीपक जो दीपावळी को जलाया जाता है

મેરી (सं.) स्त्री, औरत, पत्नी, नारी ।

મેરુ (सं.) मित्र, साथी, संगी, जोडीदार, एक पर्वतका नाम ।

મેલ (सं.) मळ, मैल, कचरा, कूडा, कांट, कानका मैळ शेष, उच्छिष्ठ ।

મેલ કાઢવો (क्रि.) मैल निकाळना, साफ करना, पवित्र करना ।

મેલ મુકવો (क्रि.) मनकी सफाई करना, दिळका कपट भाव छोड़ना।

મેલડી (सं.) इस नामकी एक देवी ।

મેલવું (क्रि.) रखना, स्थापित करना, पहुंचाना, भेजना, रोकना, रहने देना, जमा कराना, छोड़ना ।

મેલાણ (सं.) मुक्ति, छुटकारा (प्रहण) कदम, मुकाम, डग, स्थान ।

મેલાપ (सं.) देखो मिलाप ।

મેલાવવું (क्रि) मिळाना, अलग करना, पृथक करना, छुड़ाना ।

મેલીદેવું (क्रि.) धर देना, रखे देना, छोड़ देना, त्यागना ।

મેલી વિદ્યા (सं.) भूत पिशाच उतारने की तथा मारण जारण की विद्या, कपट भरी चतुराई ।

મેલું (सं.) भूत, प्रेत, राक्षस, पळीत, नर्क, (वि.) गन्दा, मैळा, कपटी, मैळा । [लगाना ।

મેલું વળગવું (क्रि.) भूत प्रेत

મેલું ઉપાડવું (क्रि) पाखाना उठाना, विष्ठा साफ करना ।

મેલ્કો (सं.) देखो મોલ્કો ।

મેવલો (सं.) वर्षा, मेह, बरसात। नहीं बरसता है तब भिक्षुक स्त्रियां जिस गीत को गाती हैं वह गीत, वे एक के सरपर बरसात का पुतला बनाकर पट्टे पर रखती हैं और मांगने निकलती हैं तब लोग उस पुतले पर पानी चढ़ाते हैं और अन्न देते हैं ।

મેવાટી (सं.) एक प्रकारकी मिठाई।

મેવાડા (सं.) गुजरातमें आये हुए मेवाड़ राज्यके मनुष्य।

મેવાડી (वि.) मेवाड़ देशकी, भाषा या कोई वस्तु जो मेवाड़ सम्बन्धी हो।

મેવાડો (सं.) મેવાડા का एक वचन, एक प्रकारका राग।

મેવાદાર (वि.) मेवासहित पदार्थ।

મેવાવાળો (सं.) फलवचनवाला, फलयुक्त, मेवासहित।

મેવાસ (सं.) ऐसी छुपनेकी जगह या झाड़ी जहां चोर या डाकुओं गांव। [तूफानी।

મેવાસી (सं.) चोर, लुटेरा,

મેવો (सं.) फल, मेवा, सूखेफल।

મેશી (सं.)कंजूस, कृपण, मक्खीचूस।

મેષરાસિયું (वि.) अफीम अमल पोस्त।

મેષોન્મેષ (क्रि वि आंख खोलना तथा बन्द करना, आंखकी पलक खोलना और मीचना, निमिष।

મેશ (सं.) काजल, मसि, स्याही, कज्जल। [माहेश्वरी बनिया।

મેસરી (सं.) वैश्योंमें एक जाति,

મેસુર (सं.) चनेके आटेमें घी और शक्कर डालकर बनाया हुआ पदार्थ।

મેહપુરુષ (सं.) ईश्वर, परमात्मा।

મેહ-મેહુલો (सं.) वर्षा, बरसात, पानी।

મેહક (सं.) सुगन्धि, खुशबू।

મેહકવું (क्रि.) सुगन्ध आना, खुशबू फैलाना, सुवास आना।

મેહેકાટ (सं.) देखो મેહક।

મેહેણું (सं.) किया हुआ उपकार कह सुनाना, किसीको गुप्त बातको प्रकट करके उसे दिलको चोट पहुंचाना। [प्रमत्त।

મેહેરબાન (वि.) राजा, खुशी

મેહેતર (सं.) भंगी, श्वपच, डाम।

મેહેતરાણી (स) भंगिन, महतर की स्त्री।

મેહેતલ (स.) अवधि, समय, वक्त, मुद्दत। मुअत्तिल, देरी, विलम्ब, मुल्तवी।

મેહેતા (सं.) गुरु, अध्यापक, शिक्षक, उपाध्याय, मास्टर साहेब आचार्य, टीचर।

મેહેતીજી (सं.) अध्यापिका, गुरुवानी, शिक्षिका, मिस्ट्रेस, स्त्री गुरु।

મેહેતાગિરી (सं.) मुहर्रिरका कार्य लेखकका कर्म, क्लर्कशिप।

મેહેતાબ (सं.) चन्द्रमा, चांद ।
મેહેતો (सं.) लेखक, मुनीम, गुमास्ता, नकल करनेवाला, क्लर्क, मुहर्रिर, अभिक्षुक ब्राह्मण ।
મેહેનત (सं.) परिश्रम, श्रम, शारीरिक परिश्रम, दुखकष्ट, कामका बदला । मजदूरी, मिहनताना । वेतन ।
મેહેનતુ (वि.) परिश्रमी, उद्योगी, उद्यमी, व्यवसायी, कार्यशील ।
મેહેમાન (सं.) देखो મેમાન ।
મેહેમાની (सं.) सेवा, सुश्रूषा, आतिथ्य, पहुनाई, मिजमानी ।
મેહેર (सं.) कृपा, दया, अनुकंपा ध्यान ।
મેહેરનજર (सं.) कृपादृष्टि, दयादृष्टि
મેહેરબાન (सं.) दयालु, कृपालु, दयावंत सहायक ।
મેહેરબાની (सं.) देखो મેહેર ।
મેહેરમ (वि.) अत्यंत प्रिय, सगा, प्यारा ।
મેહેરાબ (सं.) दो खंभोंके बीचमें उपरकी तरफ बनाया हुआ गोलाकार कारीगरी युक्तद्वार । कटाव, कमान, धनुषके आकारका ।
મેહેરામણ (सं.) समुद्र, उदधि ।
મેહેરો (सं.) डोला या पालकी आदि उठानेवाला, कहार, भोई ।
મેહેલ (सं) मकान, हवेली, राजभवन, प्रासाद, बँगला, बहुतबड़ा घर ।
મેહેસૂલ (सं.) कर, टेक्स, टिकस, भाड़ा, किराया, ज़कात ।
મેહેલ્લો (सं.) देखो મોહોલ્લો ।
મેળ (सं.) रोजनामा, जमाखरच, बराबर, उचित, लेखा, गणना, आश्रय, रोजनामचा ।
મેળ કાઢવો (क्रि.) जमाखर्च निकालना ।
મેળ મેળવો (क्रि) हिसाब मिलना, रोकड़ मिलना, मिलाप होना ।
મેળવણ (स.) मेळ, मिळान, मिक्स्चर, मिश्रण ।
મેળવણી (स.) पूर्ववत् । अत्युक्ति, अतिशयोक्ति, तुलना, मुकाबिला, योग, जोड़, सम्बन्ध, मेळ ।
મેળવવું (क्र.) जोड़ना, इकट्ठाकरना, संग्रह करना, मिलाना, कमाना, प्राप्तकरना, बढाकरबातकरना, तुलनाकरना, सुरमिलाना, मुकाबिलाकरना ।
મેળવી આપવું (क्रि.) मिलवाना, परिचयकराना, जान पहिचानकराना ।

મેળા (सं.) स्त्री, औरत, लुगाई ।
મેળાપ (सं.) देखो मिलाप ।
મેળાવડો (सं.) रंडियों काएक साथ मिळकर गान । मित्रोंकाएक साथ मिळकर रागरंगका काम । जमाव, झुंड, टोली, समुदाय, ठठ्ठ ।
મેળાવો (सं) आपसमें मिळना, पारस्परिक मिळन । मेला, जमाव ।
મેળે (क्रि. वि.) खुद, स्वयं, आपोआप, अपनीइच्छासे, स्वेच्छापूर्वक ।
મેળો (सं.) ठठ्ठ, जमाव, झुंड, मेला, समूह, जनसमुदाय, तमाशा भेट ।
મૈથુન (सं.) स्त्रीपुरुषकासंभोग, स्त्रीसंसर्ग, रतिक्रिया, संगम, प्रसंग, लिंगमर्दन, वीर्यपात ।
મૈયત (सं.) मौत, मरण, देहत्याग, मृत्यु, स्वर्गवास, (वि.) मृत, मरनेवाला, मर्त्य ।
મૈયતખરચ (सं.) मरेहुवेकेकफन तथा दाह कर्म आदि अन्त्येष्टी संस्कार का व्यय ।
મૈયર (सं.) मैका, मायका, पीहर, स्त्रीका मातृगृह ।
મૈયા (सं.) मां, माता, जननी, मातेश्वरी ।
મૈલ (सं.) आधाकोस, मील, ८ फर्लांग ।
મોં (सं.) मुहं, मुख, वदन ।
મોં ઉપર શાહી રેડવી (क्रि.) अपमानहोना ।
મોં ચઢાવવું (क्रि.) नीचमनुष्यको मान देना, सिरपर चढाना । गुस्मादिलाना । [बिगड़ाहुआ ।
મોંઝેયું (છોકરું) (सं.) लाडमें
મોં ધોઈ જવું (क्रि.) सरकजाना, रो उठना, मौका आनेपर खर्च न करना । [सबूत ।
મોં માથું (सं.) आधार, प्रमाण,
મોં મૂકીને (क्रि. वि.) मान अथवा लज्जा की कुछपरवाह न करके । [मशादाता ।
મોંતુંપાન (सं.) अत्यंत प्यारा,
મોંનો ઢાળો કરવો (क्रि.) मुखसामने न देखना, खूब अपव्यय करना ।
મોંમાં મગભોરવા (क्रि.) चुमहोकर मौनधारण करके चुपचाप बैठना ।
મોંમાંમાખસુઝોગજતું નથી—નિરપરાધી, दोषहीन, निर्मल पुरुष ।
મોંમાં માથ જેવું (મોઠું) (क्रि.) ज्ञान सर्वांग ... [illegible]

મોઘવારી (सं.) देखो મોઘવારી।

મોઘાઇ (सं.) मान, लाड, प्यार प्रेम।

મોંઘું (वि.) महंगा, अधिककीमतका, कीमती, बहुमूल्य, प्यारा लाडला।

મોંઘુંમોઘુંથવું (क्रि.) घमण्ड होना, गर्व आना, अकड़में रहेना।

મોંજોણું (सं.) मुहं दिखाई, मुंह देखकर कुछ देना, जबकि ससुराळमें पहिले पहिल बहू आती तब मुह देखकर उसे कुछ न देते हैं वह रीति। [प्रिय।

મોં મેળું (वि.) एकही अत्यंत

મોં માંગ્યું (वि.) इच्छित बहुत, जितना चाहे उतना।

મોંભાર (वि.) छातीवाळा साहसी हिम्मतवाळा, निर्लज्ज, उच्छृंखळ।

મોરખું (वि.) विनयी, लज्जाशीळ पक्षपाती, एकतरफी। [सामने।

મોંવડ (वि.) मुहं आगे, पास,

મોં (सर्व.) अन्दर, भीतर, मांही।

મો (क्रि. वि.) नहीं, मत, न, मा।

મોઇ (सं.) गिल्ली, हो, भळेही, परवाह नहीं।

મોકમ देखो મક્કમ।

મોકળવું (क्रि.) भेजना, रवाना करना, पठाना, प्रेषण।

મોકળાશ (सं.) विशाळता, बाहुल्यता, विशेषता, अधिकता, स्वतंत्रता, सरलता।

મોકળું (वि.) बहुतबड़ास्थान, उदार, सखी शुद्ध, प्रकट, बहुत, विपुल, स्वतंत्र, स्वाधीन, विस्तृत, पृथक।

મોકાણ–કાણ (सं.) किसीके मरनेका समाचार आता है तब स्त्रियां रोती हैं उसे मुंहपत्ता कहते हैं, शोक प्रदर्शनार्थ सम्मिलित होना, अशुभ समाचार।

મોકાણમાંડવી (क्रि.) बहुत नुकसान होना या होने कीसी दशा होना।

મોકાણનાસમાચાર (सं.) अशुभ समाचार, किसीके मरनेकी खबर।

મોકાસદાર (सं.) इनाम पाई हुई भूमिका मालिक। [स्थगित

મોકુફ (वि.) मुलतवी, बन्द,

મોકુબ (वि.) पूर्ववत्। [या डण्डा।

મોખ (सं.) सम्बूके अंदरका बांस

મોખરે (क्रि. वि.) सबके आगे, सर्व प्रथम, आगे, सामने, बाहिर।

મોખરો (सं.) बाहिरकी जगह, सामनेका स्थान, ऊंचा मार्ग ।

મોગ (सं.) देखो મગ ।

મોગરી (सं.) सैंगरी, सोगरी, मूलीकी फली, साग विशेष, धान आदि कूटनेकाडण्डा, मूसळ, लकड़ीकी हथौडी । [बनाया हुवा तेल ।

મોગરેલ (सं) मोगरेके फूलोंसे

મોગરો (सं.) पुष्प विशेष, बेला, मोगरा, यह कई प्रकारका होताहै मोगरे के पुष्पकी शकलका एक प्रकारका आभूषण, नास, हुलास, सुंघनी, दीपक के ऊपरकी जल के रही हुई बत्ती, घटाटोप, गोळ चक्कर ।

મોગલ (सं.) मुसलमान, यवन, मुगल जातिका मुसलमान ।

મોગલાઇ (वि.) देखो મુગલાઇ ।

મોઘમ (वि.) हो जैसा, सामान्य, अस्पष्ट, अनिर्णित, अनिश्चित ।

મોઘવારી-વાઇ (सं.) महँगी, महर्घता, दुर्भिक्ष, काल, दुष्काळ ।

મોઘું (वि.) महंगा, अधिक मूल्यवाळा, महर्घ, कीमती, दुर्लभ ।

મોચક (वि.) छोड़नेवाला, छुट्टी देनेवाळा ।

મોચણ (सं.) मोचीकी स्त्री, जूते बनानेवाले चमारकी औरत ।

મોચાઇજવું-વું (क्रि.) हाथ पैर मुड़कजाना ।

મોચી (सं.) जूतियां बनानेवाळा, चर्मकार, चमार, एक जाति विशेष ।

મોચેણ (सं.) देखो મોચણ ।

મોજ (सं.) आनन्द, हर्ष, खुशी, क्रीड़ा, मजा, हंसी खेळ, इच्छा, रुचि, मर्जी, राजी, उल्लास ।

મોજડી (सं.) बच्चोंकी नाजुक जूती जोड़ी ।

મોજડું (सं. देखो મોજું, घोड़ा ।

મોજણી (सं.) खेत या भूमिका माप, नाप, माप, सरवे ।

મોજણીદાર (वि.) नापनेवाळा, जमीन मापनेवाळा, सरवेयर ।

મોજમજા (सं.) आनन्द मंगळ, हर्षोल्लास, रागरंग ।

મોજમાણુ (वि.) रंगीळा, आनन्दी ।

મોજવું (क्रि.) नापना, मापना, सरवे करना, लेना, आनना ।

મોજું (सं.) हाथ या पैरोंमें अंगुली इत्यादि ढांकनेकी कपड़ोंकी थैळियां विशेष, मोज़े जुरांब, दस्ताने, ग्लोब्ज, सॉक्स ।

મોજ (સં.) लहर, तरंग, ऊर्म्मि
મોજાર-ઝાર (अ.) भीतर, अन्दर, में, माहीं।
મોજીલું-લો (वि.) मौज करने वाला, आनन्दी, विलासी, लंपट।
મોજું (सं.) एकमोज़ा, एक जुर्राब। [हाजिर, वर्तमान, समक्ष।
મોજૂદ (सं.) तय्यार, उपस्थित,
મોજે (सं.) ग्राम, गांव, गांवड़ा, खेड़ा। [तमाशा, करामात।
મોજેજો (सं.) आश्चर्य्य, कौतुक,
મોજો (सं.) लहर, हिलोर, तरंग।
મોઝોલું (सं) देखो મોઝોલું।
મોટ (वि.) देखो મોટું
મોટપ-મ (सं.) बड़प्पन, प्रतिष्ठा, शोभा, बड़ाई, अभिमान, अहङ्कार औदार्य।
મોટપણ (सं.) पूर्ववत्। वृद्ध।
મોટલું (सं.) पोट, गांठ, गठरी, पुटली।
મોટલીઓ (सं.) परिश्रमी, मजदूर, हम्माल, भारवाहक।
મોટાઈ (सं.) गर्व, महिमा, महत्ता, ऐश्वर्य्य, प्रभाव। [(बंबई में):
મોટિયું (सं.) अन्न भरनेका थैला,
મોટી બાઈ-બેન (सं.) पतिकी बहिन, पतिकी बड़ी बहिन, ननँद।
મોટું (वि.) विस्तीर्ण, बड़ा, दीर्घ, विस्तृत, विशाल, भारी, जबर, बहुत, अनेक, अतिशय, घना, पुष्कळ, विफल, ध्यान में आने योग्य, प्रभावोत्पादक, उच्च, वृद्ध, वयोवृद्ध, बुजुर्ग, ज़ईफ़, बूढ़ा, उदार, महाशय, महात्मा, प्रतिष्ठित, मानी।
મોટા થાવું (क्रि.) हरेकबात में आगेहोना, प्रत्येक, कार्य में अपने नाम शाबाशी लनेको आगे होना।
મોટા લોક (स.) छोटे होनेपर भी बडों के समान आचरण करने वाला व्यक्ति (मजाक में कहा जाता है)।
મોટી ખાટનું માંકણ (सं.) बड़े आदमी के आश्रय रहनेवाला। गर्विष्ठ मगरूर, तथा मस्त मनुष्य।
મોટું મન (सं.) उदार मन, परोपकार बुद्धिवाला आदमी।
મોટુ પેટ (सं.) सहन शील, गंभीर विचारवाला, विचारशील।
મોટું પેટ (वि.) लालची।
મોટુ શરવાનું મોં (वि.) नाराज मुहँ, फुलायाहुआ मुहँ, सूजकर मोटा हुआ मुख।

મોટે પાટયે બેસાડવું (क्रि.) मान देना, तारीफ करना, प्रशंसा करना, प्रशंसा करके फुलाना।
મોટું પરોઢિયું (सं.) भोर, प्रातःकाल, भिनुसारा, आरंभ, तड़का, पौफटना। [मानी, पूज्य।
મોટું માણસ (सं.) बड़ा आदमी,
મોટેથી (अ.) जोरकी आवाजसे, चिल्ला कर, डकारकर, हल्लामचाकर।
મોટે પરોઢિયે (अ.) सूर्योदय पा॰ ?, अलस्सुबह, बिल्कुल प्रातःकाल में।
મોટેરું (वि.) देखो મોટું।
મોટો પૈસો (सं.) डेढ पैसा, ४॥ पाई। [जीमन।
મોઠી (सं.) भोजन, आहार,
મોઠી દાસ (वि.) भोजनभट्ट, खाऊ, भागी, विलासी, विहारी, चटोरा।
મોડ (सं) एक प्रकार को घास के तिनकों से बनायी हुई वस्तुजिसे स्त्रियाँ शुभ कार्य में मस्तकपर बाँधती हैं। या उसपर कपड़ा मैंढकर मोती आदि लगाकर बनाती हैं। खेतमें टूटकर गिरी हुई बालें। मजमून, तर्ज, ढंग, हाथ पैरों तथा कमर में कसरत विशेष। हावभाव, नखरा, जिद, हठ, ढील, देर, विलम्ब।
મોડછી (सं.) कय और दस्त, वमन और अतिसार।
મોડવું (क्रि.) मरोड़ना, टेढा करना, तोड़ डालना, भंगकरना, अपमान करना। (सं.) कन्धोंकाडेर, घासकी गंजी।
મોડા (स.) गुजरात की ग्रामीण पाठशालाओंमे प्रातःकाल विद्यार्थियोंके आनेपर अनुक्रम पूर्वक नामलखन। रजिस्टर, पत्रक, नामावली, हाजरी।
મોડામોડ (अ.) तोड़ामरोड़ी, रूबरू, सन्मुख, समक्ष, आमे सामने। [भी वस्तुका ऊपरीभाग।
માડિયું (सं) मुखपरका, किसी
મોડી (सं) छोटा मुंह (तिरस्कार सूचक), मराठी भाषाकी मुख्य लिपि। [समयके बाद।
મોડું (वि.) देर, विलंब, पीछे,
મોડામોડ (अ.) रूबरू, सन्मुख समक्ष. आमने सामने।
મોઢું (सं.) मुंह, मुख, चेहेरा, बदन, मार्ग, राह, रास्ता, सिरा, नाका, द्वार।

મોઢું મળકાવવું (क्रि.) मुस्कुराना मृदुहास्य, ज़राहंसना।

મોઢાજેવું કર્યું–जब कुछ अच्छा न किया हो तब यह वाक्य प्रयोग करते हैं।

મોઢાંલાલથવાં (क्रि.) यश मिलना आनन्द होना, खुशबख़्ती होना।

મોઢાની મીઠાસ (वि.) ऊपरकी चिकनी चुपड़ी बात।

મોઢાનીવાતો (सं.) खाली बात-चीतका जमाखर्च करना कुछ नहीं।

મોઢાનુ છુટું (वि.) लबार, वाचाळ, बकवादी, स्पष्टवक्ता।

મોઢાંપરકહેવું (क्रि.) बिना किसी शंका और लाजके सामने कहना।

મોઢાપર થુકવું (क्रि.) धिक्कारना, फटकारना. दुतकारना।

મોઢાપરથી માંખતો ઉડતી નથી–होश नहीं, हिम्मतनहीं, शक्ति नहीं।

મોઢાબળી હાથ કરવા (क्रि.) खाना, जीमना, भोजन करना।

મોઢામાંઆંગળીઘાલવી (क्रि.) आश्चर्य करना, अचंभित होना, विस्मित होना।

મોઢાંમાં કીડા પડવા=इसवाक्यका प्रयोग बारम्बार थूकनेवाले मनुष्य के लिये किया जाता है।

મોઢાંમાં ખીલો ઠોકવો (क्रि.) जबान बन्द करना, बोलना रोक-देना।

મોઢામાં જીભ ચાલવી (क्रि.) बोलते समय अटकना, बन्द होना, चुप रहना।

મોઢામાં જીભ નથી (क्रि.) गुमसुम मूंगा बन बैठना।

મોઢાંમાં થૂંક જેવું तुच्छ, बेक़दर।

મોઢાંમાં દાંત નથી=आश्चर्य, कम, नहीं।

મોઢાંમાં ધૂળ નાંખવી (क्रि.) किसी के भाषण को बुरा बताकर बोलनेमें रोक देना, लज्जित करना।

મોઢાંમાં લીલું તરણું ઘાલવું (क्रि) अपनी दीनता प्रदर्शित करना।

મોઢાંમાં સાકર=ईश्वर करे तुम्हारा वाक्य सफल हो।

મોઢાંમાંથી દાંત પાડી નાખવા (क्रि) हराना, परास्त करना, बोली बन्द करना।

મોઢું અરળું કરી નાખવું (क्रि.) खूब बुरी तरह मारना, बहुत पीटना।

મોઢું આપવું (क्रि.) मुहँ दिखाना।

મોઢું આવડું થઇ જવું (क्रि) मुहँ उतर जाना, मुख फीका होजाना।

મોઢું આવવું (क्रि.) मुखमें छाले पड़ जाना, मुख रोग होना।

મોઢું ઉઘાડવું (क्रि.) बुलाना, कहाना। [कहना।
મોઢું ઊપડવું (क्रि.) बोलना,
મોઢું ઉતરી જવું (क्रि.) मुहं फीका हाेजाना। [बकना।
મોઢું ઉપડવું (क्रि.) बे हद
મોઢું ઉઘાડવવું (क्रि.) गालियाँ देना।
મોઢું કાળું કર–दूरहट, निकलजा।
મોઢું કાળું કરવું (क्रि.) बदनाम होना, कीर्तिको कलंकित करना।
મોઢું કાળું મેશ–ધબ થઈ જવું (क्रि.) मुहं काळा हो आना।
મોઢું ગંધાવું (क्रि.) गाळी देना, मनही मन कोसना।
મોઢું ચઢવું (क्रि.) गुस्सा होना।
મોઢું ચાલવું (क्रि.) दिनभर जब देखों तब कुछ न कुछ खाते रहना, हद से अधिक बड़बड़ाना।
મોઢું જોવું હોય તો (આવજો) मरणासन्न मनुष्य के विषय में किसीको बुलाने के लिये यह वाक्य प्रयोग होता है। [तो आना।
મોઢે થવું (क्रि.) मुहं देखना हो
મોઢું ઠેકાણે રાખવું (क्रि.) मुहं संभाळ कर बोलना।
મોઢું તપાસીને (अ.) विवेक पूर्वक, मर्यादासे,इज्जतका ध्यान रख के।
મોઢું ધોઈઆવ–मुहं धोकर आ, योग्यता सीखकर आ।
મોઢું પડવું (क्रि.) मुख फीका पड़ना. होंठ सूखजाना।
મોઢું ભરવું (क्रि.) कुछ देकर समझा देना,रिश्वतदेना,घूंसदेना।
મોઢું ફેરવું (क्रि.) नाराज होकर क्रोधमें पीठ फेरना, विमुख होना।
મોઢું મચાડવું (क्रि.) नाराजी दिखाना। [इच्छा होना।
મોઢું ભડભડવું (क्रि.) खानेकी
મોઢું ભરાઈજવું (क्रि.) तृप्तहोना, धापना। [समझा देना।
મોઢું માગવું (क्रि.) कुछ देकर
મોઢું લાંબમાંધાલવું (क्रि.) नीचा देखना।
મોઢું રહીજવું (क्रि.) बोलते बोलते थकजाना।
મોઢું રાખીને (अ.) शरम रखकर।
મોઢું લઈનેઆવવું (क्रि.) योग्यतासे आना।
મોઢું વાઘનું છે ને પૂઠ શિયાળની –देखनेमें बहादुर परन्तु महान डरपोक। [रोना।
મોઢું વાળવું (क्रि.) मुहं ढंककर

મોઢું સીવીલેવું (क्रि.) चुप रहना
મોઢું હલાવવું (क्रि.) बोलना कहना । [कहना ।
મોઢે અઢીને કહેવું (क्रि.) सामने
મોઢાનો છૂટો (वि.) बकवादी वक्की । [वाला ।
મોઢાનો સાંચો (वि.) सचबोलने
મોઢાનો ભુંડો (वि.) बुरे वचन बोलने वाला । [सन्मुख ।
મોઢામોઢ (अ.) रूबरू, समक्ष,
મોઢું બેવાવું (क्रि.) मुहं फीका पड़जाना ।
મોઢે કરવું (क्रि.) जबानी याद करना, कंठाग्रकरना ।
મોઢે ચઢાવવું (क्रि.) अत्यंत प्यार करना । [मौन होना ।
મોઢે તાળું દેવું (क्रि.) चुप रहना,
મોઢેમાંગ્યું (वि.) इच्छित, जो चाहा । [निकालना ।
મોઢેમાથે ઓઢવું (क्रि.) दिवाला
મોઢે માથે હાથ દઈને (क्रि. वि.) सिरपर हाथ रखकर, निराश हो· कर, थककर ।
મોઢે સાકર પીરસવી (क्रि.) मीठी वाणी बोलकर उसे अपने आधीन करलेना ।

મોઢ (सं.) ब्राह्मण तथा वैश्योंकी एक जातिविशेष,मोढेरके निवासी ।
મોઢિયું (सं.) दीपकपर चिमनी लगानेकामुहं जिसमें बत्ती रहती है मुहं बांधनेकी जाळी ।
મોણ (सं.) देखो માણ जिसमें दोचड़े पानी समासके इतना बडा मिट्टीका पात्र ।
મોણમોણ (अ.) धीरे धीरे शनैः शनैः जैसे तैसे करके, जबरदस्ती ।
મોણમોણ કરવું (क्रि.) ढीलपोल करना, घुसपुस करना ।
મોત (सं.) मृत्यु, काळ, मरण ।
મોતક્રિયા (सं.) अभिसंस्कार, प्रेतक्रिया ।
મોત ફરી વળવું (क्रि.) मौत घेरलेना, अचानक आबनना, अन्त होना ।
મોતમાથેઆવવું (क्रि.) बहुत थककर मरनेके तुल्य होना ।
મોતનેમારણે (अ.) काळके मुखमें यमका अतिथि, मौतका ग्रास ।
મોરાખ-દ (सं.) खुराक, मात्रा, परिमाण विशेष, जरिया, शक्ति ।
મોતાળા (सं.) गुजरातमें ब्राह्मणोंकी एक जाति विशेष [धैर्य ।
મોતિયું (सं.) बल, पौरुष, हिम्मत

મોતિયાં મરીજવાં (क्रि.) हिम्मत हारना, होश उड़जाना, बल कम होना ।

મોતિયું (सं.) ओलती, छपरे मेंका पाटिया विशेष ।

મોતિયો (सं.) एकप्रकारका मोगरा, आंखका मोती, फूला, शक्ति बळ, होश ।

મોતી (सं.) मुक्ता, मणि रत्न, मौक्तिक रत्न।विशेष,समुद्रीय रत्न !

મોતીચોકપુરવા (क्रि.) घरका आंगन सुसज्जित करना, मीठा बोलना, इच्छा पूरण करना ।

મોતીના પાણી ઉતર્યા તે ઉતર્યા= हुआसो हुआ, एकबार बिगड़ाकि बिगड़ा ।

મોતી પરોવવાં (क्रि.) कोई बारीक काम करना, कारीगरी करना ।

મોતીના ચોક પૂરવા(क्रि)बड़ी बड़ी इच्छाएं करना, हवाईकिले बनाना, बड़ेबड़े विचार बांधना ।

મોતીનાદાણાજેવા=गोळ और सुंदर (अक्षर)

મોતીનામેહવરસવા (क्रि.) आनन्दहोना, खुशीहोना, हर्षहोना ।

મોતીચુર (सं.) एकप्रकारकी मिठाई ।

મોતેયો (सं.) एक प्रकारका नेत्र रोग, मोतिया बिन्द ।

મોથ (सं.) एकप्रकारकी घासकी जड़,नागरमोथा, बलवान जानवर ।

મોદ (सं.) आनन्द, खुषी, हर्ष, प्रसन्नता, आल्हाद, अन्न आदि लानेके लिये वह कपड़ा जो गाड़ीमें अन्न न गिरनेके लिये बिछाया जाताहै । [होना ।

મોદવું (क्रि) प्रसन्न होना, खुश

મોદક (सं) लड्डू मिठाईका गोळा (वि) सुखद, रुचिकर, मनोहर, रम्य, मनोरंजक, आल्हादकारक ।

મોદકજમવા (क्रि.) लड्डूखाना, विजय प्राप्त करना, लाभ होना ।

મોદિક (सं.) लड्डु, एकप्रकारकी मिठाई ।

મોદિત (वि.) प्रसन्न, खुश, मुदित ।

મોદિયું (सं.) छोटा नागरमोथा (जड़विशेष ।)

મોદી (सं.) व्यापारी, बनिया, महाजन, कोठारी, कारभारी ।

મોદીખાનું (सं) जिस दुकानसे फौजके लिये खर्चा मिलता है, कोठार, भंडार ।

મોનિયું-ણી (वि.) संकीर्ण हृदय, घूना, घामड़ मनका ।

મોબેત-દ (सं.) पारसी जातिका धर्मोपदेशक, पारसी धर्माचार्य।

મોભ-મારો (सं.) घरका सबसे ऊंचा आड़ा और मोटा लकड़।

મોભાઅબુદ્ધી (सं.) मूर्ख, जड़, मंदमति।

મોભાદાર-વાળુ (वि.) वजनदार भारी, मुख्य, प्रतिष्ठित।

મોભારેમંગળ (क्रि.)अत्यंत दुःखद अवस्था।

મોભી (वि.) घरमें प्रबंध कर्ता, ब ., मान्य।

મોભ્ભો(सं.)वजन, मान, आबरू, दरजा, भार, बोझ प्रतिष्ठा।

મોમ (सं.) मधुमल, शहदमेंस निकलता है शहदकी मक्खीका छत्ता प्रायः सारा मोमकाही बना होता है।

મોમનો (सं.) मुसलमान जुलाहा, कपड़े बुननेवाले, मुसलमानोंकी जाति विशेष।

મોમબત્તી (सं.) मोम लपटकर बनाई हुई बत्ती (जलानेके लिये)

મોંમાગ્યું (वि.) इच्छित, मांगा-हुआ।

મોમડો (सं.) बैल घोड़े इत्यादिके मुखके लिये चमड़े या रस्सीका मोहरा।

મોયરૂં (सं.) मंडप, वितान, मढवा।

મોર (सं.) मयूर, शिखी केकी, पक्षी विशेष आम्रमंजरी. बौर, (अ.) पेस्तर, पहिले, पूर्व, सामने पास।

મોરકાંઠો-ખરી (सं.) समुद्रके किनारेकी भूमि, कोर्टलेण्ड।

મોરખું (वि.) गरम रखकर, बोल नेवाला।

મોરચંગ (सं.) एक प्रकारका वाद्य, मुहं चंग, फूंकसे बजनेवाला वाद्य विशेष। [उलटो।

મોરચી (सं) हैजा, दस्त और

મોરચો (सं.) शहरके कोटका द्वार, सेनाका अग्रभाग ध्वजा, निशान।

મોરચો મારવો (क्रि.) विजयप्राप्त करना, जीतना, परास्त करना।

મોરડ (सं.) एकप्रकारका खाद्य पदार्थ, मोरस, फलेरी पकौड़ी विशेष।

મોરથુથુ (सं.) नीला थोथा, तुत्थ, औषधि विशेष, एकप्रकारका क्षार।

મોરપગલું—પાઉ (सं.) भूलका चिन्ह, मोरपंजा मोरका पांव।

મોરદેર (वि.) अलग तरहका, भिन्न प्रकारका, बनावटी, कृत्रिम, जाली (सिक्का)

મોરલી (सं.) बंसी, बांसरी, मुरली
મોરવણ (सं.) आगसुलगानेके लिये कण्डेका टुकड़ा,गरसी, दूध जमानेके लिये किसी तरहका खट्टापदार्थ जामन, जमावन।
મોરવવું (क्रि.) दूध जमाना दहि बनाना, दूधमें जामन डालना।
મોરવું (क्रि.) मंजरी आना, बौर आना, फूल आना, लपेटना।
મોરવેલ (सं.) एकप्रकारकी बेलि जो दवाके काममें आती है।
મોરશ (सं.) समुद्रके किनारे पैदा होनेवाला एक पौधा, इसका साग होता है।
મોરાખી (सं.) देखो મોરાપી (वि.) मान रखकर बात कहने वाला, लज्जालु। [नायक।
મોરાણી (वि.) मुख्य, प्रधान,
મોરાદ (सं.) देखो મુરાદ।
મોરાપી (सं.) रानीकी गवाही, खबर लानेवाला, पता बतानेवाला।
મોરિયો(सं.) घड़ा, घट, गगरा।
મોરી (सं.) नाली पनाला, नाला, मकानकाजल निकलनेका मार्ग। गटर, नल, गाय भैंसआदि पशुओंको मुंहसे बांधने के लिये रस्सा मोहरा, मोहरी।

મોરે (अ.) पहिले, आरंभमें शुरूमें।
મોરો (सं.) सांपके मुहके अंदर तालुमें होनेवाली मणी विशेष, इसे जहर मोरा नामसे पुकारते हैं. इसे विष दंष्ट्रपर लगानेसे विष चूस लेता है, घिसकर चमक पैदाकर-देना, गायनमें अस्ताई की कड़ी, टेक, धुन, नगारा बजानेकी एक रीति विशेष कुश्तीके आरंभमें इधर उधर भ्रमण, तलवारका घाव।
મોલ (सं) पौटा, खेती, अन्नकी उत्पत्ति बहुतसे गांवोंका समूह, पाक उत्पन्न।
મોલદ (सं.) किसी अन्य वर्णकी स्त्रीसे उत्पन्न प्रजा, वर्ण संकर, खच्चर।
મોલવી (सं.) मुसलमान वैद्य या न्याय जाननेवाला, हकीम, यवन विद्वान। [नर्म।
મોલાયમ (वि.) कोमल, मृदु,
મોહરું (सं.) राक्षस या भूतको बकरानेके लिये जोरसे नगारेका शब्द।
મોહલેદાર (सं.) मोहल्लेकी हिफाजत रखनेवाला सिपाही,चौकीदार।

મોલ્લો (सं.) सिगरेट, वा बीडी, के ढंगका बनाहुवा पटाखा, अतिशबाजी विशेष सुर्रू, छुर्रू, छछूंदर, पैरि, मुहल्ला, पुरा, टोळा, स्ट्रीट, पाड़ा, गांवके जुदे जुदे भाग, मोहल्ला ।

મોવડ (सं.) अग्रभाग, पेशानी ।

મોવણ (सं.) मोयन, पक्वान्नको नर्म बनानेके लिये आटे में डाला हुआ घृत या तैल ।

મોવાસો (सं.) एक प्रकारका रोग यह पशुओंके मुखमें होता है ।

મોવાળ (सं.) घरोपा, मेल, प्रीति-सम्बंध, दोस्ती, मैत्री ।

મોવાળવું (क्रि.) नित्य सायंकाल को रोना ।

મોવાળો (सं.) बाल, रोम, लोम ।

મોવું (क्रि.) दाल इत्यादि पदार्थ को घुन या ईली आदि अन्न जन्तु खराब न करदें इस लिये घी या तेल आदि चिकनाई लगाना । आटेमें थोड़ा दूध या पानी मिलाना, मोहित करना । [समय ।

મોસમ (सं.) ऋतु, अनुकूल,

મોસંબી (सं.) एक जातिकी नारंगी

મોસલ (सं.) सरकारकी आज्ञासे बुलानेके लिये आया हुवा नाजिर, सम्मन, दरख्वास्त, आज्ञापत्र ।

મોસાળ (सं.) नानीका घर, ननसार, माताका पीहर । [मनुष्य ।

મોસાળિયાં (सं.) ननसारके संबंधी

મોસાળું (सं) बिवाह यज्ञोपवीत आदि संस्कारोंमें मामाकी ओरसे जो वस्त्र धन आदि दिया जाता है माभेरा, उसउत्सवके समय गाये जानेवाले गीत, अगरणी आदि उत्सवोंमें उस स्त्रीके पीहरसे आया हुआ धनवस्त्र आदि ।

મોહ (सं.) मूर्च्छा, अज्ञानता, अविद्या, माया, प्रेम, प्यार ।

મોહક (वि.) मोह पैदा करनेवाला मनोहर, जादुगर आकर्शक, चित्त चोर, मनको मोहित करनेवाला ।

મોહજાળ (सं.) अज्ञानताका पाश प्रेमबंधन, मायाजाळ ।

મોહન (सं.) वशीकरण, जादू, (वि.) मोहनेवाला, जादूगर ।

મોહનમાળા(सं.) मोटे मोटे [illegible]की माळा, गळेमें पहिरनेका हार विशेष ।

મોહનાસ્ત્ર (सं.) एक प्रकारका हथियार जिसके प्रयोगसे शत्रु मूर्च्छित हो जाता है ।

મોહપાશ (सं.) देखो મોહજાળ ।

મોહબ્બત (सं.) परिचय, पहिचान प्रेम, प्यार, जानकारी । [बाण ।

મોહબાણ (सं.) मोहके बाण, प्रेम

મોહરખાઈ (सं.) सम्वाद दाताको इनाम, पताजानने वालेके लिये पुरस्कार ।

મોહરખાઉયો (सं.) अपराधकी खबर देनेवाला, सम्वादवाहक ।

મોહરમ (सं.) मुसलमानी वर्षका पहीला महिना, मुहर्रम, (मुहर्रम सफर, रबीउलअव्वल, रबीउल अखीर, जमादिउलअव्वल, जमादि उल अखीर, रज्जब, साबान, रमजान, सवाल, ज़िल्काद और ज़िलहज) जिसमहीनेमें मुसलमानोंके ताजियोंका त्यौहार आता है। मुसलमानोंके पूज्य हसन और हुसैनकी यादगारीमें यह वार्षिक श्राद्ध उनके शोकरूपमें इस महीनेमें मनाते हैं ।

મોહરૂં (सं.) देखो મોહોરૂં ।

મોહવું-મોવું (क्रि.) मोहित करना, वशमें करना, अन्नको तेल आदि लगाना । [मूर्ख ।

મોહાંધ (वि.) अज्ञानांध, निर्बुद्धि

મોહિત (वि.) मूर्छित, अचेत, मुग्ध, मोह प्राप्त, आसक्त, आशिक

મોહિની (सं.) प्रेमपैदा करनेवाली, जादूगरनी, जादू (वि.) मनोरंजक मनोहारी, मोहक ।

મોહોટમ (वि.) बहुत, मोटा, अत्यंत ।

મોહોડિયું (सं.) सिर, नोक, छोर, अग्र भाग, चोली की अस्तीन का कफ, बन्दूक का मुभोका (मुंह) ।

મોહોર (सं.) मुहर, ठप्पा, छापा, अशर्फी, निष्क, स्वर्णमुद्रा, गिनी, नामकी मुहर, मुरली, बंसी, बांसरी, वेणी । (वि.) कीमती बहुमूल्य ।

મોહોરૂં (क्रि.) गुण, सौन्दर्य तथा बुद्धिमें विचक्षण पुरुष, सतरंज के खेलमें राजा, वजीर, पैदल, हाथी इत्यादि ।

મોહોલ (सं.) राजमंदिर, प्रासाद, महल, हवेली, रहनेका बड़ा तथा उत्तम घर ।

મોળ-ળપ (सं.) उबाकी, कय, वमन, छर्दि, पात्र आदि रखनेके लिये कपड़े या अन्य वस्तुका बनाया हुआ गोल आकार, इंडी, गूंडरी, मंदी बाजार में भावकी घटी ।

મોળવું (क्रि.) काटना, कमकरना, तराशना(भावभावीइत्यादि)शोधना ।

મોળાઈ (वि.) मामाके लड़के, मामाके यहांके, ननसार तरफके।
મોળાઈ-બેનુ-બ્હેન (सं.) मामाकी बेटी बहिन, मातुल पुत्री, भगिनी,
મોસાઈ ભાઈ (सं.) मामाका बेटा, भाई। [नारी, ज़रीका साफा।
મોળિયું (सं.) जरीदार कोर, कि-
મોળી (सं.) बेसन (चनेका आटा) का बना हुआ खानेका एक पदार्थ विशेष।
મોળું (वि.) स्वादहीन, जिलबिला, वह मनुष्य जो रसकी बात नहीं समझे, ठंडा अथवा ढीला पशु।
મોળેણુ (सं.) मामाकी लड़की, बहिन।
મૌંજ (सं.) मूंज नामका घासका तीन सूत्रों का बना हुआ कटिसूत्र।
મૌ (वि.) मृदुल, नरम, कोमल, मुलायम, बहुत दिनोंका भूखा, क्षुधित, दीन, अन्नका भिखारी, कंगाल, (सं.) जड, बुद्धिहीन।
મૌડું (वि.) बुभुक्षित। [महुए।
મૌડા (सं.) महुआवृक्ष, वृक्षविशेष,
મૌન (सं.) तूष्णीभाव, अभाषण, अकथन, चुपचाप, मूकभाव, अनालाप।
મૌક્તિક (सं.) मोती, मुक्ता, मौक्तिक।
મૌલિ (सं.) सिर, मस्तक, माथा, भाल।
મ્યાન (सं.) तलवारका घर, खड्ग-कोष। [नमें रखना।
મ્યાન કરવું (क्रि.) तलवार म्या-
મ્યાનમાં રાખવું (क्रि.) कब्जेमें रखना। [नरयान।
મ્યાનો (सं.) पालकी, डोला,
મ્યૂનીસિપાલિટી (सं.) नगर की सफाई आदिकी प्रबन्ध कारिणी सभा। [मलिन।
મ્લાન (वि.) खिन्न, उदास, दीन,
મ્લેચ્છ (वि.) अंत्यज, नीच, नास्तिक। विदेशी, अहिन्दू।

ય

ય=गुजराती वर्णमालाका ३७ वां अक्षर, तालुसे उच्चारण होनेवाला अन्तस्थ अक्षर (सं.) भी, विशेष तदुपरान्त, फिरसे (जबकिसी शब्दके साथ आता है तब यह अर्थ होता है। [प्रस्थान।
યઃપલાય (सं.) पलायान, कूच,
યઃકરામ (सं.) मान,इज्जत, प्रतिष्ठा।
યક્ષ (सं.) देवयोनि विशेष, इनके दर्जेका देवता,उपदेव विशेष ये देवता कुबेरके खजाने तथा वन उपवन आदिकी रक्षा करतेहैं कुबेरधनपति।

યક્ષણી (सं.) यक्षकी स्त्री ।

યકૃત (सं.) पेटकी दाहिनी ओर मांसखण्ड, जिगर, दिल, कलेजा प्लीहा, तापतिल्ली, उदररोग, पिल्ही ।

યગણ (सं.) पिंगलशास्त्र कथित आठगणोंमेंसे एक जिसका पहिला अक्षर लघु और शेष दो गुरू हों ऽ

યજન (सं.) होम, हवन, यज्ञ, मेध, याग, पूजन, यागकरण ।

યજમાન (सं.) यज्ञकर्ता, यज्ञानुष्ठानमें दीक्षित, व्रती, याजक, याज्ञिक ।

યજમાનિયો (सं.) वहब्राह्मण जिसका उदर पोषण यजमानद्वारा होताहो यजमानवृत्ति करनेवाला ब्राह्मण ।

યજમાનવૃત્તિ (सं.) यजमानके यहां क्रिया कर्म कराकर दान दक्षिणा लेनेका धन्दा ।

યજવું (क्रि.) पूजना, सेवा करना, सत्कार करना, भजन करना, हवन करना ।

યજુર્વેદ (सं.) स्वनाम प्रसिद्ध द्वितीयवेद । (ऋक्, यजु, साम, और अथर्व) ।

યજુર્વેદી (सं.) यजुर्वेद पढ़ा हुआ, या तदनुकूल आचरण करनेवाला ।

યજ્ઞ (सं.) वेदोक्त कर्म्म विशेष, याग, होम, हवन, मेध, मख, अध्वर, क्रतु ।

યજ્ઞકુંડ (सं.) यज्ञ करनेके लिये चौकोना बना हुआ गर्त, यज्ञके लिये निर्म्मित गड्ढा, दैनिक अग्निहोत्रके लिये बना हुआ १६ अंगुल चौड़ा औरउतना ही लम्बा जिसकी पेंदी केवल ४ अंगुल लम्बी चौड़ी रहे ऐसा धातु निर्मित पात्र ।

યજ્ઞનારાયણ (सं.) यज्ञपुरुष, विष्णु, अग्नि ।

યજ્ઞવૃક્ષ (सं.) कोई भी वृक्ष जो हवन में समिधा के लिये प्रयोग होता हो । [स्थान ।

યજ્ઞશાળા (सं.) हवन पूजन करनेका

યજ્ઞોપવીત (सं.) यज्ञसूत्र, ब्रह्मसूत्र, जनेऊ, उपवीत, द्विजचिन्ह, बिना इसे पहिने शूद्रवर्ण होता है सूत्रकी बनीहुई विधी पूर्वक तिगुनीकी हुई गले तथा दाहिने हाथ के नीचेसे पहिननेकी मालाको ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हवन करके धारण करते हैं ।

यति (सं.) कवितामें विरामका स्थान, वाक्यमें चिन्ह विशेष ।

यती (सं.) त्यागी, साधू, संन्यासी, परिव्राजक, जितेन्द्रिय पुरुष ।

यत्किंचित (अ०) थोड़ा, जरा, जो कुछभी, थोड़ाबहुत, लेश ।

यत्न (सं) उपाय, उद्योग, श्रम, कोशिश, चेष्टा, जतन ।

यथा (अ०) जैसे, जैसा, ज्यों, जिस प्रकार जिस रीति, मस्लन् ।

यथाक्रम (अ०) क्रमानुरूप, आनुपूर्विक, क्रमशः, ठीकठाक, क्रमबद्ध, व्यवस्थित, नियमानुसार, वाजिब ।

यथातथ्य (अ०) वास्तविक, उचित, सचमुच, जैसा चाहिये वैसा ।

यथान्याय (अ०) पक्षपातशून्य, न्याय, धर्मानुकूल, न्यायसंगत, नेक ।

यथानुरूप (अ०) वैसाही, उचित, वाजिबी, (सं.) न्यायपरायण ।

यथायोग्य (अ०) यथोचित, जैसा उचित, चाहिये वैसाही (सं.) प्रणाम, अभिवादन आशिर्वाद इत्यादि (वि.) यथार्थ, वास्तविक, सच्चा, खरा ।

यथाराजा तथाप्रजा-जैसा राजा वैसाही प्रजा,-

" राज्ञे धर्माणि धर्मिष्ठा, पापेपापा समेसमाः । प्रजा तदनुवर्तन्ते " यथाराजा तथा प्रजाः " ॥

यथारुचि (अ.) जिसतरह अच्छा लगे, इच्छानुसार, रुचि अनुकूल ।

यथार्थ (अ.) ठीक सत्य, उचित, वत्, विधिवत्, यथायोग्य, व्यवस्थाके अनुसार रीतिके अनुसार, बराबर ।

यथावकाश (अ.) समयानुसार, फुरसत होनेपर, समय मिलनेपर ।

यथाविध (अ.) यथायोग्य, विधिपूर्वक ।

यथाशक्ति (अ.) बलके अनुसार, अपनी ताकतके मुआफिक ।

यथास्थित (अ.) पहली स्थितिके अनुसार, पूर्व अवस्थानुसार ।

यथासांग (अ.) उचित रीतिसे ।

यथासंप्रदाय (अ.) रुढीके अनुसार, कुल मर्यादाके मुताबिक ।

यथाश्रुत (अ.) जैसा सुना वैसा ।

યથાજ્ઞાન (અ.) अपनी समझके अनुसार ।

યથેચ્છ-ચ્છા-ચ્છે (अ.) इच्छानुरूप, जैसी इच्छा हो वैसा, प्रचुर, अधिक बहुत ।

યથોક્ત (अ.) पूर्व कथित, पूर्वोक्त आज्ञानुसार, कहे मुआफिक ।

યદ્યપિ (सं.) जोभी, अगरच यदि, कदापि ।

યદાતદા (सं.) ऐसा, वैसा, भला बुरा, अनिश्चित, अनियमित, जैसे तैसे ।

યંત્ર (सं.) कलपुरजा, साचा, धातुका पत्रा, अथवा कागजपर जिनपर देवदेवीका चित्र या नाम लिखाहो, जिसकी पूजा होती है, अंतर वाद्य, देवताओंका अधिष्ठान, पात्र विशेष मेशीन ।

યંત્રરચના (सं.) यंत्रका बनाना, कलपुर्जोंका निम्मीण, कलकी बनावट ।

યંત્રવિદ્યા-શાસ્ત્ર (सं.) यंत्र विषयक विद्या, मेशीन आदिका ज्ञान।

યંત્રશાસ્ત્રી (सं.) कारीगर, शिल्पकार, शिल्पी, यंत्र विद्याका जाननेवाला ।

યમ (सं.) यमराज, काल, अंतक सूर्यका पुत्र, मनुष्यकी मृत्युके बाद पापपुण्योंके अनुसार स्वर्ग अथवा नर्कमें ले जानेवाला देवता, जम । (अ) जैसा, जैसे, पूर्ववत्

યમક (सं.) शब्दालंकार विशेष, अनुप्रास. (पिंगल शास्त्रमें)

યમદૂત (सं.) यमराजके नौकर, यमके गण, यमका संदेशा, मृत्युका लक्षण, यमके जासूस ।

યમદંડ (सं) यमराजकी दी हुई सजा, यमराजाका शस्त्र विशेष, काळदंड, यमयातना, यम शिक्षा, नर्क भोग ।

યમનોદૂત (वि.) निर्दय करुणा शून्य, निष्ठुर, कसाई, बेरहम ।

યમનોપડો (सं.) ऐसा पापी जिसके कार्योंको देख सुन कंप कंपी हो ।

યમપુરીનીયાતના (सं.) अत्यंत दुःख, सख्त बिमारी, महान कठोर दंड ।

યમપુરીમાંમોકલવુ (क्रि.) मार डालना, वधकरना, यमालयमें भेजना, कैदकरना, जेलमें डालना।

યમન (सं.) रागविशेष, ईमनराग, कल्याणरागका एक भेद ।

યમપાશ (सं.) यमराजकी फांसी, मृत्युका दुःख, काळपाश । [नर्क ।

યમપુરી (सं.) यमराजका नगर,

યમરૂપ-રૂપી-સ્વરૂપ (वि.)काळरूप, यम स्वभावका, निर्दय, घृणायोग्य पुरुष ।

યમલોક-સદન (सं.) देखो यमपुरी

યમુના (सं.) इसनामसे प्रसिद्ध एक बड़ी नदी ।

યવ (सं.) जौ अन्न विशेष।

યવન (सं.) ग्रीस अथवा यूनान देशका रहनेवाला पुरुष, मुसलमान यवन, अनार्य, अहिन्दु, इस्लाम धर्मका अनुयायी ।

યવાગુ (सं.) नर्म खिचड़ी ।

યશ (सं.) कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्धि नामवरी, फतह, जय, विजय, प्रतिष्ठा, नाम ।

યશસ્વી (वि.) कीर्तिमान, सुविख्यात लब्ध प्रतिष्ठ ।

યશોમતિ (वि.) जो बुद्धिद्वारा यश प्राप्त करे, कृष्णचंद्रकी माता, यशोदा ।

યાંચ્ઞા (सं.) याचना, मांग ।

યા (अ.) अथवा, वा, किंवा ।

યાકૂત (सं.) माणिक, मांग, भंग ।

યાકુતી-તી (सं.) याक, बलदायक पदार्थ विशेष, भांगको घी शक्कर तथा मसालेमें मिलाकर बनाया हुआ पदार्थ । [हवन, भजन ।

યાગ (सं.) यज्ञ, अध्वर, होम,

યાચક (वि.) जाचक, भिक्षुक, मंगता, भिखारी, भीख मांगनेवाला ।

યાચકવૃત્તિ (सं.) भिखारीपना, भिक्षा मांगनेका रोजगार ।

યાચના (सं.) भीख, प्रार्थना, अर्जी, विनती, निवेदन, दरख्वास्त, भीख मांगना ।

યાચવું (कि.) भीख मांगना, भिक्षा मांगना । इच्छाकरना, प्रार्थना करना ।

યાજક (सं.) याज्ञिक, ऋत्विक, पुरोहित । पूजा करानेवाला ।

યાજ્ઞિક (सं.) पूर्ववत् ।

યાતના (सं.) पीड़ा, दुःख, कष्ट, तीव्रवेदना, अधिक कष्ट ।

યાતુધાન (सं.) राक्षस, निशाचर, दैत्य असुर, दनुज दानव ।

યાત્રા (सं.) तीरथ, कूच, प्रस्थान, मुसाफिरी, गमन, जातरा ।

યાત્રાળુ (वि.) मुसाफिर, यात्री, बटोही ।

યાથાર્થ્ય (सं.) सत्यता, यथार्थता।
યાદ (सं.) स्मृति, स्मरण, नोट, मेमो, यादी, स्मरणसूची।
યાદગારી-ગિરી (सं.) निशानी, अभिज्ञान, नाम, वर्णन, याद।
યાદદાસ્ત (सं.) स्मरणशक्ति, स्मृति, नोटबुक, स्मृतिपत्र।
યાદી (सं.) पूर्ववत्।
યાદૃશ (अ०) जैसा, अनुसार, मुआफिक।
યાદોગણ (सं.) जीवजन्तुका समुदाय।
યાન (सं.) वाहन, गाड़ी, असवारी, पालकी, गमन, शत्रुसन्मुख सेना ले जाना, राजनीतिक छः वर्गमेंसे एक (संधि, विग्रह, आसन, यान, संश्रय और द्वैधी भाव)
યાને (अ०) अर्थात्, सारांशकि, तात्पर्यकि, या, अथवा, वा।
યાંત્રિક (वि.) यंत्रविषयक।
યામ (सं.) एक प्रहर, तीन घण्टे, ⅛ दिन, विराम, पहर, आठ घड़ी।
યામની (सं.) रात, रात्रि, रजनी, निशा। [दक्षिणी पार्श्व।
યામ્યગોળ (सं.) क्रांतिवृत्तका
યામ્યોત્તરવૃત્ત (सं.) दोपहर, मध्यान्ह, मध्यान्ह रेखा। [पथिक।
યાત્રી (सं.) मुसाफिर, यात्री,

યાર (फ़ा.) मित्र, दोस्त, सखा।
યારી (सं.) मैत्री, दोस्ती, साहाय्य, सखत्व, स्नेह, इश्क, प्यार, प्रेम।
યાલ-ળ (सं.) घोड़े आदि पशुके सिर तथा गर्दनपरके बाल, अयाल
યાવક (सं.) लाखका रंग, बनाकी हुई लाखका लाल रंग।
યાવચ્ચંદ્રદિવાકર (सं.) जबतक सूर्य्य और चन्द्र आकाशमें हैं। प्रलय पर्य्यंत। [जब ताईं।
યાવત્ (अ.) जबतक, जबलग,
યાવની (वि.) मुसलमानी, यवनसे सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु।
યાહુદી (वि.) जुडिया नामक देशके निवासी। [होकर, मृत्यु पर्य्यंत।
યાહોમ (अ०) गुस्सेमें, मरणतुल्य
યાહોમ કરવું (क्रि.) किसी आफतके समय पर मृत्युको हाथपर लेकर काम करना।
યુક્ત (वि.) विशिष्ट, सहित, समेत, साथ (सं.) उचित, योग्य, यथार्थ।
યુક્તિ (सं.) मिलना, मेल, योग्यता, प्रवीणता, चतुराई, चतुरता, हथौटी, विवेचन, कला, तदबीर, उपाय, योजना, रचना, करामात, हिकमत, इलाज, तजवीज, इल्म, चालाकी, हुनर, गुण।

युक्तिवान-मान-वंत-वाळुं (वि.) चतुर, होशियार, प्रवीण, सुदक्ष, करामाती, योग्य, काबिल ।

युग (सं.) आर्योंके बनाये हुए चार समय विभागमें से एक. । सतयुग या कृत युग, प्रथम युग, इसकी अवधि सत्रह लाख अट्ठाईस हजार वर्ष । त्रेतायुग बारह लाख छियानवे हज़ार वर्षका । द्वापर युगकी अवधि आठ लाख चौसठ हजार वर्ष । और कलियुग की अवधि चार लाख बत्तीस हज़ार वर्ष । समय, युग्म, जोड़ा ।

युगल (वि.) जोड़ जोड़ी, दो युग्म

युगानयुग (अ०) निरन्तर, सदा, आयु पर्य्यंत भवोभव ।

युगेयुग (अ.) पूर्ववत् ।

युगम-ग्म (सं.) द्वय, दो, जोड़ा युग, दंपति, वरवधू ।

युत (वि.) मिलित, अपृथग्भूत, एकत्र विशिष्ट, जड़ित, सहित, साथ।

युद्ध (सं.) लड़ाई, संग्राम, समर, विवाद, विग्रह, रण, जंग ।

युद्धा (सं.) योद्धा, वीर, लड़ाका, युद्धार्थी, शूर, जंगी ।

युनानी (वि.) यूनान देशका ।

युरोपियन-पीयन (वि.) योरोप खंडका, अंग्रेज, योरुपवासी ।

युवति-ती-वंती (सं.), यौवनवती, तरूणी, युवावस्थाकी स्त्री । १६ और ३० वर्ष के मध्य अवस्थावाली स्त्री ।

युवराज (सं.) राजका बड़ा लड़का, राज्यासनका उत्तराधिकारी ।

युवा-वान (सं.) जवान, तरूण, यौवन, अवस्थावाळा । १४ और ४० वर्षकी मध्यकी वयवाला पुरुष ।

युवावस्था (सं.) जवानी, यौवन, तरुणाई । [जातिविशेष ।

यूका (सं.) जूं, चिल्लर, स्वेदज

यूथ (सं.) सजातीय समूह, वृन्द, समूह, झुण्ड, टोळा, जत्था, समुदाय । [मेख ।

यूप (सं.) खूंटा वा खंभ, स्तंभ,

ये (अ०) भी, भारसूचक शब्द ।

योग (सं.) संगति, युक्ति, चित्तनिरोध, विषयान्तर से मनकी निवृत्ति, मेळ, संयोग, साधन, उपाय, इलाज, संधि, समागम, सांकळ जंजीर, शृंखला, श्रेणी, दवा, औषधि, दवाई । ज्योतिषशास्त्र वर्णित विष्कुंभादि २७ योग, जोग ।

યોગમાયા (सं.) योगनिद्रा, प्रलयके समय परमात्माका संहार कार्य, प्रगाढ समाधि, दुर्गा, शक्ति, देवी ।

યોગરૂઢ (सं.) जिस शब्दका उसकी धातु प्रत्ययके अनुसार अर्थ उसके व्यवहारिक अर्थके समान हो (व्याकरणशास्त्र में ।)

યોગાભ્યાસ (सं.) समाधि लगाकर ईश्वर चिंतन करनेका अभ्यास। योगविषयक अभ्यास ।

યોગાયોગ (वि.) अनुकूल तथा प्रतिकूल समय, उचित अनुचित्त ।

યોગાસન (सं.) योग साधन करते समय की बैठक । योगाभ्यास के समय बैठनेका ढंग विशेष । योग साधन के लिये २४ प्रकार के आसन होते हैं ।

યોગિની (सं) भूतिनी, पिशाचिनी, डाकिनी, दुर्गाद्वारा उत्पन्न उपदेवी, कहते हैं ये संख्यामें छियालीस हैं । बैरागिन, साध्वी, जोगिन ।

યોગી (वि.) योगसाधक, तपस्वी, संन्यासी, योगाभ्यासी । जोगी ।

યોગ્ય (वि.) उपयुक्त, उचित, यथार्थ, लायक, अनुकूल, मुआफिक, पात्र, प्रतिष्ठित ।

યોગ્યતા (वि.) निपुणता, प्रवीणता, लायकी, मान, प्रतिष्ठा, पदवी ।

યોજક (वि.) योजना करनेवाला, मिलानेवाला, जोड़नेवाला, कारीगर, व्यवस्थापक, प्रबन्धक ।

યોજન (सं.) चार कोसका माप, ५ माइलकी लम्बाई ।

યોજનગંધા (सं.) मृगमद, कस्तूरी, मुश्क ।

યોજના (सं.) व्यवस्था, प्रबन्ध, मिलाप, विन्यास, युक्ति, हिकमत, कल्पना ।

યોજવું (क्रि.) प्रबन्ध करना, व्यवस्था करना, तदबीर सोचना, जोड़ना, रखना, बिठाना, मिलाना ।

યોજિત (सं.) व्यवस्थित, योजना किया हुआ ।

યોદ્ધા (सं.) वीर, बहादुर, शूर, लड़ाका, पहिलवान, जंगी, सिपाही सैनिक ।

યોનિ (सं.) उत्पत्तिस्थान, भग, स्त्री चिन्ह, औरतकी मूत्रेन्द्रिय, अवतार, मूल, कारण, बीज, उत्पत्ति

યૌવન (सं.) जवानी, तारुण्य, यौवनावस्था, तरुणाई । [औरत ।

યૌવના (सं.) तरुण स्त्री, जवान

र

र=गुजराती वर्णमालाका ३८ वां मूर्द्धन्य अक्षर ।

રઈ (सं.) रति, कामदेवकी स्त्री, राई।

રકઝક (सं.) बकझक, कल, तकरार, वाक्युद्ध, विवाद, वाद, भांजगड़, पंचायत, हठ, जिद, लड़ाई ।

રકબા (सं.) खेतका क्षेत्रफल, जमीनका टुकड़ा, गांवके आसपासकी भूमि ।

રકમ (सं.) आंकड़ा, अंक, नोटकी हुई एकार्थी वस्तु, संख्या, (बही खातेमें) कलम, जोड़, योग, वस्तु, चीज़, पदार्थ ।

રકમ ઉપાડવી (क्रि.) रुपये लेना, दाम लेना ।

રકમ નામે લખવી (क्रि.) बेची हुई या खरीदी हुई वस्तु कीमत सहित बहीमें जिसने ली हो उसके नाम लिखना, ली हुई वस्तु खातेमें लिखना ।

રકમબંધ (अ०) इकट्ठी, क्रमसे, क्रमपूर्वक कलमकी कलम । एकके बाद एक । [ढंग, चलन ।

રકાન (सं.) रीति, रिवाज, रूढ़ि,

રકાબ (सं.) पायदा, घोड़ेपर बैठकर पैर जमाने के लिये बने हुए लोहे या पीतल के पाँवड़े, पैडा, पंडल ।

રકાબદાર (सं.) सेवक, टहलुआ, खिदमतगार, भृत्य, चाकर ।

રકાબી-કેબી (सं) तस्तरी, तसली, छोटीथाली, प्लेट, धातु अथवा काचनिर्मित कमगहिरी कटोरी ।

રકો (सं.) बन्दोबस्त, ठहराव, नियम, चिठ्ठी, पत्र, परवाना ।

રક્ત (सं.) खून, लोही, शोणित, (वि.) लाल, राता, रक्तवर्ण ।

રક્તકોઢ (सं.) एक प्रकारका रोग। कोढ रोग विशेष, रक्तकुष्ट ।

રક્તચંદન (सं.) लाल चन्दन, देवी चन्दन ।

રક્તપિત્ત (सं.) एक प्रकारका चर्म रोग, रक्तकोढ, गलत्कोढ, त्वचाकी बीमारी विशेष ।

રક્તપ્રમેહ (सं.) पेशाबमें खून आनेका रोग, प्रमेह, रोग विशेष ।

રક્તવાહિની (सं.) नस, नाड़ी, शिरा ।

રક્તવિકાર (सं.) लोहीकी खराबी ।

રક્તપીજ (सं.) खटमल, माकड, एक प्रकारका जीव विशेष जो मनुष्य रक्त चूस कर जीवित रहता है।

રક્તવૃદ્ધિ (सं.) खूनकी बढती, बेमारीके बाद आराम होनेका समय, धीरे धीरे होनेवाली स्वस्थता ।

રક્તસ્રાવ (सं.) रक्तका बहना, वह रोग जिससे गुदा माग द्वारा खून गिरे ।

રક્ષક (सं) रक्षा करनेवाळा, पालनेवाळा, पालक, उद्धारकर्त्ता, स्वामी, प्रभु, मालिक, हिफ़ाज़त करनेवाळा । [सभाळ, बचाव ।

રક્ષણ (सं.) रक्षा, पालन, पोषण,

રક્ષણકારી (वि.) देखो રક્ષક

રક્ષપાલ (सं.) चौकीदार. पहेरेवाळा, रखवाळा, रक्षक ।

રક્ષવું (कि) रक्षा करना, देखरेख-करना, सँभाळना हिफाजत करना, पालना ।

રક્ષા (सं.) बचाव, हिफ़ाज़त, रखवाली, चौकसी, सँभाल, रक्षण, राख, भस्म, क्षार, राखी, रक्षा सूत्र ।

રક્ષાબંધન (सं.) श्रावण मासकी पौर्णिमाके दिनका उत्सव, राखी, इसदिन लोग विशेष कर ब्राह्मण समुदाय आशीर्वाद तथा श्लोक उच्चारण कर किसीके राखीसूत्र हाथमें बाँधकर दक्षिणा लेते हैं ।

રક્ષિત (वि.) रखा हुआ, पाळा हुआ, सावधानीसे सँभाळ कर रखा हुआ, सँभाळकर रखा हुआ, रक्षा किया गया

રખ (त्रि.) तीनको संज्ञा । (सं.) रूख, भाव, घटाबढी ।

રખડ-પટ્ટી-પાટી (स.) भ्रमण, विहार, भटकना, घूमना, धरम धक्का, चक्कर ।

રખડવું (कि.) इधर उधर भटकते फिरना, धरम धक्के खाते फिरना रोजगार न मिलना, उद्यमहीन होना ।

રખડાઉ (वि.) भटकनेवाला, व्यर्थही इधर उधर फिरनेवाला स्वेच्छाचारी, विहारा, मनमौजी ।

રખડાટ (स.) देखो રખડપટી।

રખડાપણું (सं.) देखो રખડ ।

રખડાવવું (कि.) भटकाना, छोड़ देना, त्यागना ।

રખડેલ (वि.) देखो રખડાઉ।

રખવી (सं.) लज्जा शंख, मान ।

રખપત (सं.) मानप्राप्ति ।
રખરખ (सं .) छटपटाहट, तड़फड़ाहट । [पटाना, बेचैन होना ।
રખરખવું (क्रि.) तड़फना, छट-
રખરખાવટ (सं.) देखो રખાવટ ।
રખવાળ-ખેવાળ (सं.) रक्षक, पहिरेदार, चौकीदार, संभाळनेवाला पाळक ।
રખવાળી-ખેવાળી (सं.) रक्षा, रक्षण, चौकसी, हिफाजत, पहिरा
રખવાળું (सं.) रक्षक, पाळक, रखवालेका वेतन ।
રખાપત (सं.) देखो રખાવટ ।
રખાવટ (सं.) पक्ष, तरफदारी, किसीकी कान शर्म रखकर कुछ उच्चारण ।
રખી (सं.) भंगी, मेहेतर, श्वपच, डोम, ढेड, मळमूत्र उठानेवाली जाति । (वि.) रखनेवाला ।
રખુ (वि.) रखनेवाळा, धारण करनेवाळा ।
રખે-રખેને (अ.) कदापि, शायद, संभवतः नजाने, कदाचित् ।
રખેસર-હર (सं.) भंगी, मेहेतर, डोम, श्वपच, देखो રખી ।
રખેવું (क्रि.) रखवाला करना, हिफाजतके लिये मुकर्रर करना ।
રખો (सं.) चौकीदार, गांवकी रक्षा करनेवाला, भील, रखवाला ।
રખોટવું (क्रि.) देखो રખેળવું.
રખોપિયો-પી (सं.) देखो રખો ।
રખોપું (सं.) चौकी दारीका वेतन, रक्षण, रखवाला, चौकसी । [छार ।
રખ્યા (सं.) राख, धूळ भस्म,
રગ (सं.) नस, शिरा, नाड़ी, धमनी, रक्तवाहिनी, भेद, मर्म, भाव, वृत्ति, तबियत ।
રગડક (सं.) देखो રકઝક ।
રગડ (सं.) संघर्षण, घिसाव ।
રગડદગડ (अ.) जैसे तैसे, यथातथा।
રગડમલ્લ (सं.) कसरती जवान धृष्ट, लठापांडे, जंगली, गंवार बलवान ।
રગડવું (क्रि.) घिसना, घोटना, पीसना, बांटना, मसलना, मर्दन करना, निचोड़ना, खूब पीटना, अत्यंत परिश्रम लेना, सताना, हेरानकरना, कष्टदेना ।
રગડાઝગડી (सं.) कोलाहल, हो-हल्ला, शोरगुळ, ओछी बकबक ।
રગડાટ (सं.) सख्तमिहनत, माथाफोड़ अत्यंत परिश्रम ।
રગડાવવું (क्रि.) मसलाना, मर्दन करना, रगड़वाना, परिश्रमकराना ।

રગડાવીબેવું (क्रि.) पूर्ववत् ।

રગડાવું (क्रि.) पिसाना, कुचलाना, घँटाना, घुटाना, निचुड़ाना मारखाना, दुर्दशा होना हैरान होना परिश्रममें पड़ना ।

રગડો (सं.) गाढा तरळ पदार्थ, तलेटीमें जमा हुआ पदार्थ, तळछट, मैल, शेष, भीड़, खटपट ।

રગડોળવું-ઘોળવું (क्रि.) एक वस्तुके पास दूसरी वस्तु अड़ाकर सटाकर रखना, मिट्टीमें मथन करना, मिट्टीमें मिलाना, अत्यंत परिश्रम साध्यकार्यमें भिडाना ।

રગણ (सं.) ऐसा शब्द जिसका पहिला और तीसरा अक्षर लघु तथा बीचका अक्षर दीर्घ हो, (" जैसे प्रणाम ") ।ऽ।, (पिंगळशास्त्र वर्णित ।)

રગત (सं.) देखो રક્ત ।

રગત રોટી (सं.) लश्करी नौकरी सिपाईगिरी, सेनामें नौकरी, सेनामें नौकरी करनेपर मिला हुआ पुरस्कार ।

રગત રોયરો (सं.) एक प्रकारकी वनस्पति, यह हथियार के हुए घावपर काम देती है ।

રગરગવું (क्रि.) चापलूसी करना, निहोरा करना, हा हा खाना ।

રગરગાવવું (क्रि.) मुलतवी रखना, स्थगित करना, सताना, पीटना ।

રગવું (क्रि.) विनती करना, हाथ जोड़ना घिघियाना, हाहाकार करना । [वाळा, मंद ठण्डा, सुस्त ।

રગશિયું (वि.) धीरे धीरे चलने-

રગિયું (वि.) हठी, जिद्दी ।

રગ્ગડ (वि.) देखो રગડો ।

રઘવા-વાટ (सं.) जल्दी दौड़भाग, त्वरा, धूम, गड़बड़ ।

રઘવાયું (वि.) व्याकुल, घबराया हुआ । [गरीब ।

રંક (सं.) कंगाल, दरिद्र, कृपण,

રંગ (सं.) वर्ण, डौल, रीति, ढंग, रस, शोभा, आनन्द, खुशी, राग, पॅट, नशा, बेहोशी, चिन्ह, निशानी, दिखाव, बहाना, मिस, निमित्त, कसूंबेका पानी, जो होलीमें छिड़का जाता है । इज्जत, स्नेह, प्रीति, भाव, गंजीफा नामका खेल के पत्तोंका अलग अलग वर्ण, पाठशाला, अखाड़ा, नाटक, (अ०) धन्य, शाबाश, वाहवाह, । शाबाश ।

रंगई (वि.) विषयी, कामी, कामासक्त, विषयासक्त ।

रंगई (सं.) रंगाई, रंगसाजी, रंगनेका काम ।

रंगत (वि.) रंगाहुआ, सुन्दर, सुशोभित, शोभायमान, नकसीदार बेलबूटेवाला । [ताली बजाना ।

रंगताळी (सं.) आनन्दके समयमें

रंगदार (वि) रंगवाला, खूबसूरत ।

रंगदा (सं.) फिटकरी, औषधि विशेष ।

रंगपाणी (सं.) नशापानी, अमलपानी, नशापत्ता, नशा, अमल ।

रंगभाज (वि.) विलासी, विषयी, भोगी ।

रंगभाजी (सं.) मौजमजा, खुशाली, ताश के पत्तोंका एक प्रकारका खेल ।

रंगबेरंगी (वि.) चित्रविचित्र, रंग रंगीला ।

रंगभूमी (सं.) नाट्यशाला, भूमिका, नाटक भवन, रंगमंच नाटक खेलनेकी जगह, अखाड़ा, आनन्द करनेकी जगह ।

रंगभेर (अ०) खुशीसे, आनन्दपूर्वक, राग रंग सहित ।

रंगभोग (सं.) आनन्द प्रीतिका कार्य, विषयभोग । आनन्दभोग, मौज ।

रंगमंडप (सं.) रंगभूमि, जिसमें रंगोंका काम हुआ हो, नाटकशाला, सभामंडप, अखाड़ा, उत्सवके लिये निर्मित पटभवन ।

रंगमहेल–मेहल–मोल (सं.) सुसज्जित भवन, क्रीडाभवन, आनन्दमन्दिर ।

रंगरस (सं.) चमन, आनन्द ।

रंगराग (सं.) क्रीड़ा तथा खेल, आनन्द, हर्षोल्लास ।

रंगरातुं (वि.) रंगीला ।

रंगरूप (सं.) सूरतशकल, रंग और शकलकी प्राकृतिक बनावट ।

रंगरेखा (सं.) शरीरके ऊपरके चिन्ह ।

रंगरेज (सं.) रंगारा, वस्त्र रंगनेवाला, छीपा, रंगनेका धन्धा करनेवाला ।

रंगरोळ (सं.) बेहद खुशी, अपार हर्ष

रंगलो (सं.) मसखरा, रंगीला, विदूषक ।

रंगवुं (क्रि.) रंगना, रंगीनकरना, चित्रविचित्र करना । किसीको नशा कराके मस्ती में लाना, अतिशयोक्त करना, ढंकना, दोष छुपाना लज्जित होना. एक शकलसे दूसरी शकलमें बदलना ।

रंगाइ (सं.) रंगनेकी मजदूरी, धनके रूपमें रंगनेका बदला ।

રંગાટ-ટી (सं.) रंगसाजी, रंगरेज रंगनेवाला ।

રંગાડું (सं.) पानी भरनेका तांबेका एक बड़ा भारी पात्र ।

રંગામણુ-ણી (सं.) देखो રંગાઈ ।

રંગારો (सं.) देखो રંગરેજ ।

રંગાવવુ (क्रि.) रँगाना, रंगचढ़वाना । रंगवाना,

રંગાવું (क्रि.) रंग युक्त होना, रंगेजाना । नशा करके आनन्द करना, ठगाना ।

રંગી (सं.) आनन्दी, लहरी,

रंगीळा (सं.) एक प्रकार की लाल मिट्टी सेलागेरू । [किया हुआ ।

રંગીત (वि.) रंगाहुआ, रंग

રંગીન (वि.) रंगाहुआ, आनन्द, खुश मिजाज, लहरी ।

રંગીભંગી (वि.) पूर्ववत् ।

રંગીલુ (वि.) पूर्ववत, एक प्रकार का रोग, यह रोग मनुष्योंमें अचानक हो आता है सन १८७२ में यह रोग यहाँ हुआथा ।

રંગેચંગે (अ.) आनन्दसे, खुशीसे, सांगो पांग, बिना उपद्रव के ।

રંગેલ (वि.) રંગીત देखो

રંગોળિયું-ળીયું (सं.) एक प्रकार की डिब्बी सी जिसमें गुलाल और सफेदा भरकर जमीन पर खींचने से बेलबूटे दार लकीर बन जाती है ।

રંગોળી (सं.) भोजन करनेके आसनके चारों ओर बनाई हुई रंगकी रेखाएं । जमीनपर बनाया हुआ चित्र विशेष ।

રચના (सं.) बनावट, निर्म्माण, व्यवस्था, क्रम, शोभा, ठाठ, दिखावा ।

રચવું (क्रि.) निर्म्माण करना, बनाना, शोभित करना, कविता बनाना, अनुकूल होना, सजाना ।

રચામણી (सं.) रचना करनेकी मजदूरीके परिवर्तनमें दिया हुआ द्रव्य ।

રચાવવું (क्रि) रचाना, बनवाना ।

રચિત (वि.) रचा हुआ, निर्म्मित, ग्रंथित । [शय, अधिक ।

રચ્ચક (वि.) बहुत, पूर्ण, अति-

રજ (सं.) धूल, गर्द, पराग, रेणु, परिमाणु, कण, स्त्रीका वीर्य, रजस्वला, रजोगुण (अ०) जरा, अल्प, थोड़ा, किंचित् ।

રજઈ (सं.) ओढ़नेकी दोहर, गलेफ, गूदड़ी, सौर, रजाई ।

રજક (સં.) દानापानी, आहार, खुराक, धोबी, कपडे धोनेवाळा ।
રજકણ (सं.) धूळका छोटा परिमाणु, कंकरी । [वां महीना ।
રજબ (सं.) मुसलमानोंका ७
રજત (सं.) चांदी, रूपा, रौप्य, दुवंण ।
રજ નાંખવો-ભભરાવી (स.) लिखे हुए पर अक्षर सुखानेके लिये धूळ डालना । [यामिनि ।
રજની (सं.) रात्रि, रात, निशा,
રજનીચર (सं.) राक्षस, निशाचर, दैत्य, चोर, भूत, प्रेत ।
રજનું ગજ કરવું (क्रि.) तुच्छको अत्यंत करके दिखाना, छोटी बातको बड़ो बनाना । राईका पहाड़ बनाना, बातका बतंगड़ करना ।
રજપૂત (सं.) क्षत्रिय, जातिविशेष, राजपूतानेका रहनेवाला, वीर, बहादुर । [क्षत्राणी ।
રજપૂતાણી (सं.) राजपूत स्त्री ।
રજપૂતી (सं.) क्षात्र तजे, रजपूतपना, वीरता, बहादुरी ।
રજવાડો (सं.) राजपूतोंके रहनेकी जगह, राजस्थान । राजपूताना
રજસ્વલા (सं.) ऋतुमती स्त्री, मासिक धर्मयुक्त स्त्री ।
રજા (सं.) छुट्टी, आज्ञा, हुक्म, अनुमति, इज़ाजत, सम्मति ।
રજા લેવી (क्रि.) परवानगी लेना, हुक्म लेना, छुट्टी लेना ।
રજા આપવી (क्रि.) छुट्टी देना, सम्मति देना, निकाल देना ।
રજાકજા (सं.) बीमारी, अस्वस्थता, मृत्यु अचानक कष्ट ।
રજામંદી (सं.) सम्मति, राजी, प्रसन्नता ।
રજાળ (सं.) किरण, रश्मि ।
રજાળું (वि.) हलकी जातका कोयला । वह लकड़ी जो जलाने के बाद फौरन कजला जाता है, निर्लज्ज, बेशर्म, अनजान । नीच ।
રજીક (वि.) लकीरके बराबर, बहुतही छोटा ।
રજીયું (सं.) रेतदानी, गीले अक्षरोंपर डालनेके लिये जिस पात्र में रेत भरते हैं ।
રજ્જ (सं.) रेत, धूळ, रज, गर्द ।
રજુ (वि.) जो दृष्टिके सामने हो ।
રજુઆત (सं.) मुकाबिला, अनुसंधान, तजवीज़, जाँच, परिचय, मेळ, मुलाकात, समागम ।
રજુઆત કરવી (क्रि.) परिचय करना, मिलाना, समागम करना ।

રજુ કરવું (क्रि.) सामने लाना, पेश करना, मुकाबिला करना, उपस्थित करना ।

રજેરજ (अ.) जराज़रा, तमाम, बिल्कुल, समस्त, सब, सारा ।

રજૈ (सं.) देखो રજઈ

રજોગુણ (सं.) प्रकृतिके त्रिविध गुणों में से एक (सतोगुण, रजोगुण, और तमोगुण) इससे विषयवासना, लोभ, गर्व, क्रोध, असत्य, दुःख आदि होते हैं, स्वभाव, प्रवृत्ति [आनंदी ।

રજોગુણી (सं.) तामसी, क्रोधी,

રજોટી (सं.) बारीक धूळकण, रजकण ।

રજોઠિયું (सं.) देखो ક્ષાતરિયું

રજોદર્શન (सं.) प्रथम ऋतुधर्म, पहिला मासिकधर्म ।

રજોહરણો (सं.) यति (साधू) कीलकडीके साथ बांधा हुआ गुच्छा ।

રજ્જુ (सं) रस्सी, डोर, तंतु, सूतली, जेवरी

રઝળવું (सं.) देखो રખડવું

રઝળાવવું (क्रि.) भटकाना भुलाना, चक्करमें डालना, कष्ट देना ।

રંચ-ક (वि.) जरा, थोडा, अल्प, सूक्ष्म, हलका, तुच्छ ।

રંજ (सं.) शोक, चिंता । फिक्र, दुःख, खेद, श्रम, मेहनत ।

રંજક (सं.) जिससे कोई वस्तु सुलगउठे, बंदूक अथवा तोप के कानपर रखी हुई बारूद । उसकानेवाला, भडकानेवाला, तकरार करानेवाला भाषण, (वि.) मनोहर, मोहक, आकर्षक । जरा, थोडासा.

રંજક મૂકવો (क्रि.) बन्दूक या तोपके कान पर बारूद रखना, उकसाना, भडकाना ।

રંજક ખાઈ જવો (क्रि.) बन्दूक, या तोप का न चलना, भड़काना निष्फल होना । [मचना ।

રંજક ઉડવો (क्रि.) लड़ाई झगड़ा

રંજ ખેંચવી (क्रि.) परिश्रम करना, मेहनत करना ।

રંજન (सं प्रसन्न करना, खुश करना, प्रीति, प्रेम ।

રંજવું (क्रि.) खुशी करना, आनन्द देना, रुचिकर होना पसन्द आना ।

રંજાડ-ઝાડ (सं.) बिगाड़, नुकसान, मस्ती, तोफान ।

રંજાડવું (क्रि.) घबराना, तकलीफ देना, कष्ट पहुंचाना, पीड़ा पहुंचानां ।

રંજ્યા (वि.) चिढ़ा हुआ, घबराया हुआ, रिसाया हुआ, क्रुद्ध, गमगीन, शोकित, दुखी, मिज़ाजी।

રટણ (सं.) स्मरण, रातदिन भजन, निरन्तर अभ्यास, परिभ्रमण, घोषना, एक बातको कई कई बार कहना।

રટવું (क्रि.) स्मरण करना, जपना, भजना, बार बार बोलते रहना, कई बार कहना।

રઝળ (सं.) खूब भ्रमण, अत्यंत मुसाफिरी, (वि.) नीरस, निकम्मा, व्यर्थ। [आग्रह।

રડ (सं.) ध्यान, लय, दृढ़,

રડાળું (वि.) भटकनेवाला, घूमने फिरनेवाला, शोकातुर, खिन्न, दुखी, (सं.) शोक, विलाप, अश्रुपात। [उदासमुहँ।

રડતી સૂરત (सं.) रोती शकल,

રડયુંખડયું (वि.) भूलाभटका, भ्रमित। [लगाना।

રડવડવું (क्रि.) भटकना, चक्कर

રડવું (क्रि.) रूदन करना, शोक करना, विलाप करना, हायहाय करना, रोना, अश्रुपात करना, हुहूकरके रोना, निराश होना, हारना, ठगाना, आजिजी करना, विनती करना, गोताखाना। आवाज देना, पुकारना, बुलाना।

રડતા ધાડૂ (सं.) बहुतथोडाकि लघु।

રડતી રાધા (सं.) स्त्रियोंके लिये मजाकमें यह वाक्य उपयोग होता है अर्थात राधाके समान रोनेवाली स्त्री।

રડવું ગોત્ર હોવું (क्रि.) निर्बल हृदय होना, रात दिन निश्वास छोड़ना।

રડયો (सं.) यह शब्द स्त्रियाँ गाली में प्रयोग करती हैं।

રડ્યું ખડયું (वि.) छिन्नभिन्न, बिखरा हुआ, छूटा हुआ, पृथक पृथक्। भूला भटका, दुखी, भूला हुआ।

રડાકુટ પીટ (सं.) व्यर्थपरिश्रम, रोआपीटी। रोदन ताडन।

રડાકૂટો (सं.) रोआपीटी, रोते हुए छाती मूँड कूटना।

રડારડ-રોળ (सं.) चिल्ला चिल्ला कर रोना।

રડાવવું (क्रि.) रुलाना, निराश करना, ठगना, छलना, पीटना।

રડિયલ (वि.) रातदिन रोनेवाला, जरा जरासी बात पर रोनेवाला।

रडी ऊठवुं (क्रि.) स्वप्नमें चिल्ला उठना, रोदेना, हिम्मत हारजाना, निराश होजाना, थकजाना।

रडी पडवुं (क्रि.) दुखसे घबराकर रोदेना, विलाप करना। दुःख प्रदर्शन करना।

रडी रहेवुं (क्रि.) हानिको सहकर रहजाना, रोकर चुपहो बैठना।

रढ (सं.) लय, ध्यान, लक्ष्य, आग्रह, हठ, जिद्द।

रढियाळ (वि.) बिनाधनी, स्वामीहीन, बेदावा, लावारिश, (पशु) सूना। [सुरूप।

रढियाळुं (वि.) सुन्दर, खूबसूरत

रण (सं.) संग्राम, लड़ाई, युद्ध, समर, जंग। रेगिस्तानी जंगल, रेतीला, मैदान। कर्ज, ऋण, उधार। [शब्द।

रणकार-को (सं.) ठोकने का

रणकाळ (सं.) युद्धका समय, लड़ाईका वक्त।

रणको (सं.) देखो रणकार

रणक्षेत्र-भूमि (सं) लड़ाईका मैदान, युद्ध, क्षेत्र, मैदाने जंग, रणस्थली, रणांगण। [संग्राम।

रणजंग (सं.) युद्ध, लड़ाई, समर,

रणछोड (सं.) ऋणसे मुक्त करनेवाला, कृष्ण, यशोदाके पुत्र गोपाळ। (वि.) कायर, डरपोक, भीरु। [वन्त, लड़ाईमें जयश्रीप्राप्त।

रणजित (वि) विजयी, जयी, जय

रणझणवुं (क्रि.) एक प्रकारका शब्द होना, (नूपुर नामक आभूषणका।)

रणडेल (सं.) लड़ाईका नगारा, युद्ध के समय बजनेवाला बड़ा भारी ढोल।

रणतूर-भेरी (सं) युद्ध समय बजाने की भेरी, तूर्य, तुरही, रणसींगा।

रणथंभ (सं.) देखो रणस्तंभ

रणधीर (स.) वीर, बहादुर, योद्धा। [युद्धक्षेत्र।

रणभूमि (सं.) लड़ाईका मैदान,

रणवगडो (सं.) रतीला मैदान, ऊजड़ जंगल, रेगिस्तान।

रणवट (सं.) युद्ध धर्म्म, क्षात्र धर्म्म।

रणवाट (सं.) उत्पाती, लुटेरा, अन्यायी, राजाके विरुद्ध उत्पात करके वैरका बदला चुकानेवाला।

रणवास (सं.) महल, रानियोंके रहनेका महल, अंतःपुर।

રણશિંગું-ગડું (સં.) रणभेरी रणतूर्य ।

રણશિંગડું ફુંકવું (क्रि.) बात फैला देना, आत्मश्लाघा करना, गुणगान करना। [महायुद्ध भयंकर समर।

રણસંગ્રામ (सं.) भयानक युद्ध,

રણસ્તંભ (सं.) दो सेनाओंके बीचमें गाड़ा हुवा था बनाया हुआ खंभा, जीतकी निशानीके लिये निर्मित चिन्ह ।

રણહાક (सं.) समरस्थलीका कोलाहल, वीरोंकी हुंकार, युद्धकी ललकार ।

રણાનુબંધ (सं.) पूर्वजन्मका सम्बन्ध, पूर्वजन्मका संस्कार ।

રણિયું (वि.) देनेवाला, ऋर्जदार , ऋणी, आभारी, अनुग्रहीत, उपकृत।

રણી (सं.) सोनेका टुकड़ा, (आभूषण बनानेके लिये दिया हुआ।)

રણાંગણ (सं.) युद्धभूमि, समरक्षेत्र, मैदानेजंग, लड़ाईका मैदान, खेत ।

રંડવો (सं.) बिना स्त्रीका पुरुष, पत्नी रहित, कन्याराशी, नामर्द, विधुर, क्लीब ।

રંડા (सं.) विधवा, पतिहीना, रांड, बेवा, फूहड़ स्त्री, रण्डी, वेश्या।

રંડાપો (सं.) वैधव्य, पतिहीनदशा।

રંડાયલી (वि.) विधवा (स्त्री)।

રંડાયલો (वि.) विधुर, पत्नीहीन पुरुष । [मरना ।

રંડાવું (क्रि.) विधवा होना पति

રંડી (सं.) गणिका, वेश्या, पातर राम जनी, नगरनारी, पतुरिया, व्यभिचारिणी ।

રંડીબાજ (सं.) वेश्यागामी, व्यभिचारी, रंडीके साथ कामवासना पूर्ण करनेवाला ।

રંડીબાજી (सं.) वेश्या गमन व्यभिचार, परस्त्री गमन, जारकर्म ।

રંજાડ (सं.) तोफान, गड़बड़, धामधूम ।

રત (सं.) ऋतु, मौसिम, समय, वेळा, अनुकूळ समय, संभोग, मैथुन, स्त्रीसंभोग, रतिक्रिया (वि.) लीन, लवलीन। [मणी ।

રતન (सं.) देखो રત્ન आंखकी

રતનજોત-ધ (सं.) एक वृक्ष विशेष, यह आंखकी बीमारी पर काम आता है ।

રતનાગર (सं.) समुद्र, हिन्दमहासागर, महोदधि, सागर, रत्नोंकी खानि । [भड़कदार झलकदार ।

રતનાળુ (वि.) चमकीला, तेजस्वी

રતનાર્મજિયો (सं.) एक प्रकारका वृक्ष ।

રતલ (सं.) एक प्रकारका तौल सूरत नगरका एक सेर, एक पौण्ड ३९ तोला ।

રતવા (सं.) एक प्रकारका रोग इसरोगमें शरीरपर अलबक हो जाते हैं ।

રતાંજણું-ધણું (सं.) जिसे दिनको दिखे और रातको बिलकुल न दीखे ।

રતાંજળી-લી (सं.) लाल चन्दन रक्त चदन ।

રતાસ (स.) लाली, ललाई, अरुणता ।

રતાળુ (सं.) एक प्रकारका कन्द, लाल आलू ।

રતિ (सं.) कामदेवकी स्त्री, प्रीति प्रेम, स्नेह, क्रीड़ा, कामकेलि, स्त्री प्रसङ्ग ।

રતિકેલી (सं.) संभोग, मैथुन ।

રતિપતિ (सं.) कामदेव, मदन, अनंग, काम, मार, रतिनाथ, कन्दर्प्प ।

રતિપુર (वि.) रत्तिकाके समान, रत्ती-भर, थोड़ा, जरा, किंचित् । ⅛ माशा ।

રતિભાર (वि.) पूर्ववत् ।

રતિરસ-સુખ (सं.) काम सुख, संभोग, जनित आनन्द, स्त्रीप्रसंगका सुख ।

રતી (सं.) परिमाण विशेष, मूल्यवान वस्तु तौलनेके लिये वजन विशेष, रत्ती, आठ यवका तौल ⅛ माशा, घुंघची ।

રતીભાર (त्रि.) देखो રતિભાર ।

રતુ (सं.) ऋतु, मौसिम, अनुकूल समय, रजोधर्म, ऋतुधर्म ।

રતુમડું (वि.) कुछ लाली लिये हुए ।

રતોવાય-વે (अ.) रातके समय, रातकोही, रातोरात (दिनको नहीं)

રત્ન (स.) मणि, हीरक, जवाहिर मूल्यवान पत्थर, मुक्ता, मोती, प्रवाळ, मर्कत, पुखराज, नीलम, वैदुर्य्य । समुद्र मथनके समय, निकले हुए चौदह रत्न १ लक्ष्मी २ कौस्तुभ, ३ पारिजातक, ४ सुरा, ५ धन्वन्तरि, ६ चन्द्रमा, ७ कामधेनु, ८ ऐरावत, ९ रंभा, १० सप्तमुखी अश्व, ११ सुधा, १२ सार्ङ्गधनु, १३ शंख, और १४ हलाहल (विष) । अपनी अपनी जातिमें उत्तम ।

રત્નગર્ભા (सं.) वह जिसके उदरमेंसे रत्न निकलते हों, पृथ्वी, भारतवर्ष ।

રત્નજડિત (वि.) जिसमें रत्न जिड़ाये गये हों, रत्नोंसे जड़ाहुआ ।

રત્ન પાકવું (क्रि.) गुणवान मनुष्य होना ।

રત્નાકર (सं.) देखो રત્નાગર ।

રત્નાવલી (सं.) रत्नोंकी माळा ।

રથ (सं.) गाड़ी बहल, चार पहिये और दो गुम्दजकी गाड़ी, प्राचीन राजाओंके बैठनेकी गाड़ी ।

રથકાર (सं.) रथ बनानेवाळा, कारीगर ।

રથજાત્રા (सं.) आषाढ सुदी द्वितीया के दिन वैष्णव मंदिरोंमेंका उत्सव दिवस । उसदिन मूर्तिको रथमें बिठाकर सारे नगरमें घुमाते हैं । (वि.) अस्थिर मनवाळा ।

રથી (सं.) सवार, रथपर चलने वाला, रथका स्वामी, रथपर सवार होकर युद्ध करनेवाला, योद्धा, महावीर ।

રથ્થડ (सं.) दीवारोंपर मिट्टीका मोटा लेपन, छबाई, मोटी लिपाई ।

રદ (वि.) निकम्मा समझकर दूर किया हुआ, छेका हुआ, अस्वीकृत (सं.) दांत, दन्त, दसन, हृदय, अंतःकरण ।

રદ કરવું (क्रि.) अमान्य करना, निकाल डालना, अक्षम करना ।

રદ જવાબ (सं.) રદિયો देखो ।

રદન (सं) दांत, दसन, दन्त, रोदन, विलाप, अश्रुपात, हृदय, अंतःकरण । [दुःखवेदना ।

રદન શેકવું (क्रि.) दिल जलाना,

રદબદલી (सं.) हेरफेर, रद्दोबदल, निकम्मी वस्तुका बदलना ।

રદિયો (सं.) रद्द जवाब, खंडन, तरदीद, काट, बिनाप्रमाण ।

રદ્દી (वि.) निकम्मा किया हुआ, अनुपयोगी, खराब, बेकामका ।

રનવન (वि.) बिखरा हुआ, अव्यवस्थित, एक यहां तो एक वहां, दुखी ।

રનવન થવું (क्रि.) अस्तव्यस्त होना, बुरी दशामें होना, टूटफूट कर मैदान होना, बरबाद होना, हिम्मत छूट जाना । [शिखी, मयूर ।

રનાત પક્ષી (सं.) मोर, केकी,

રનોડી (वि.) जंगली, वनचर, वन्य, निर्जन, जनशून्य ।

રંદો-ધો (सं.) बढईका औजार विशेष, इसको लकड़ी पर रखकर घिसने से लकड़ी साफ हो जाती है, रुंदा ।

રંધવારો (सं.) रसोइया, पाकशास्त्री, बावर्ची, भोजन बनानेवाळा ।

રંધામણ-ણી (सं.) रसोई बनाने की मजूरी (धन) लकड़पर रन्दा फेर कर साफ करने का वेतन ।

રંધાવું (क्रि.) सीअना, पकना, लभ होना ।

રન્નાદેવ (सं.) उपनयन या विवाह संस्कार के समय डलिया में बोये हुए गेहूं या जौ, (जवारा) सूरजकी पत्नी, ब्रह्माकी पटरानी ।

રપાટી-પેટી (सं.) लम्बी दौड़, कबड्डी ।

રપાટો (सं.) छोटी दौड़, सपाटा, चपत, तमाचा, थप्पड़, धौल, धप्पा ।

રપેટીમાં લેવું (क्रि.) खूब परिश्रम कराना, थकाना, लबड़ धक्का लेना, खबर लेना । [लपेटा ।

રપેટો (सं.) चक्कर, आंटा, फेरा,

રપેટો મારવો (क्रि.) चक्कर खाना, फेरा खाना, आंटा खाना, लपेटा मारना ।

રપોટ (सं.) सूचना, किम्वदन्ती, अफवाह, उड़ती खबर, कैफियत, नालिश, फरियाद, रपट ।

રબત (सं.) मुहाविरा, अभ्यास, आदत ।

રફતે રફતે (अ०) धीरे धीरे, शनैः शनैः, आहिस्ता आहिस्ता, थोड़ा थोड़ा, क्रमशः ।

રફુ (सं.) बराबर, कपड़ेके फटे हुए भागमें धागे का जाल बनाकर उसे सुधारने का कार्य ।

રફુ કરવું (क्रि.) बराबर करना, फटे हुए कपड़े को इस सावधानी से सीना कि वहां एकाएकी मालुम ही न पड़े ।

રફુચક્કર-ચક (सं.) हानि, नुकसान, शत्रु का पेच या दांव, व्यूह, प्रपंच ।

રફુચક્કર કરી જવું (क्रि.) चुपचाप भाग जाना, सटक जाना, पलायन करना । [बर शांत ।

રફેદફે (अ०) नष्ट, बरबाद, बरा-

રબ (सं.) प्रभु, ईश्वर, परमात्मा, स्वामी ।

રબર (सं.) एक वृक्षका गोंद विशेष, रबड़, यह स्याही पेन्सिल आदिके लिखे अक्षर साफ करनेके काम में आता है । यह खींचने पर लम्बा और छोड़नेपर सिकुड़ता है, रब्बड़ । [परिश्रम ।

રબડ (सं.) थकान, मेहनत,

રબત (सं.) देखो રફત ।

રબારણ-રેણુ (सं.) गडरिये की स्त्री, बकरी भेड़ चरानेवाली स्त्री।

રબારી (सं.) गडरिया, भेड़ बकरी पालने या चरानेवाला।

રવી (सं.) शीत कालकी फसल, वह अन्नकी फसल जो फाल्गुण चैत्र के आसपास आती है।

રમ (सं.) पति, खाविंद, खसम, स्वामी। [वस्तु जीवित मनुष्य।

રમકડું (सं.) खिलौना, खेलनेकी

રમકડું થઈ રેહેવું (क्रि.) खिलौना हो रहना, बिलकुल आधीन हो रहना, जैसा नाच नचावें वैसा ही नाचना। [तूफान।

રમખાણ (सं.) नाश, तकरार,

રમચી (सं.) एक प्रकारकी लाल मिट्टी, सोना गेरू, हिडमची, हिरमच।

રમઝાન (सं.) मुसलमानी नवां महीना, इस सारे महीने भर मुसलमान दिनको भोजन करना पाप समझते हैं और रातको खाते हैं जिसे वे रोजा (व्रत) कहते हैं।

રમણ (सं.) चित्तविनोद, क्रीड़ा, खेल, विहार, साथियोंके साथ खेल। संभोग, स्वामी, पति, मालिक लीला।

રમણભમણ (अ०) अव्यवस्थित रीतिसे, शृंखलाहीन रूपमें।

રમણા (सं.) देखो રમણી (कवितामें)

રમણી (सं.) मनोहारिणी स्त्री, सुन्दर स्त्री, ललना, महिला, संभोगनीय।

રમણીક (वि.) मनभावन, मनोहर, सुन्दर, रम्य, रमणकरने योग्य।

રમણીય (वि.) पूर्ववत्। [मैदान।

રમણું (सं.) खुली हुई जगह,

રમણે ચઢવું (क्रि.) भड़कना, अस्थिर चित्त होना।

રમત (सं.) खेल, क्रीड़ा, लीला, मौज।

રમતરોળું (सं.) भ्रमण, भटकना, धरमधक्के।

રમતિયાળ (वि.) खिलाड़ी, जिसकाजी खेलमें लगा हो।

રમતું (वि.) खुला हुआ, घूमता हुआ। दृष्टि आने योग्य दशा।

રમતાં રમતાં (अ०) सुखपूर्वक, धीरे धीरे, बिना परिश्रमके।

રમતારામ (सं.) जहांतहां भटकनेवाला, एक जगह स्थिर नहीं रहनेवाला, घूमनेवाला साधू, सर्वव्यापक।

રમરમાવવું (क्रि.) दिलसे काम करना, जोर से चलना।

રમવું (क्रि.) मनोविनोद करना, बिना परिश्रमका कार्य करना, मनोरंजन करना, खेलना, केलि करना, प्यार करना, व्यर्थ का कार्य करना, भटकना, घूमना ।

રમસ્તાન (सं.) कोलाहल, तूफान, भय, डर, सर्वनाश, आक्रमण ।

રમસ્તાન મચાવવું (क्रि.) बहुत जोर से टूट पड़ना; उपद्रव करना ।

રમળ (सं.) पंचरस धातु के पांसे बना कर भविष्य जानने की विद्या, ज्योतिष शास्त्रका अंग विशेष, प्रश्न शास्त्र ।

રમળી (सं.) रमलका ज्ञाता, प्रश्न का उत्तर दाता, भविष्य वक्ता, ज्योतिषी। [विष्णु परिन, कमला ।

રમા (सं.) स्त्री, सुलक्षणास्त्री, लक्ष्मी,

રમાડવું (क्रि.) खिलाना, मनोरंजन करना, चलाना, उसकाना, मूर्ख बनाना । ठगना, भुलाना. फुसलाना । घुमाने ले जाना (बालकको)

રમાડીદેવું (क्रि.) मार डालना, वध, करना, जान ले लेना ।

રમાડો (सं.) खेल, क्रीड़ा, विनोद ।

રમીજવું (क्रि.) लीलाकर के चलते बनना, देह त्याग देना ।

રમુજ-ઝ (सं.) विनोद, विळास, खेल, तमाशा, मजाक, ठट्ठा ।

રમુજી-ઝી (वि.) दिलपसन्द, मनोरंजक, मज़ाकी, विनोदी, रसिक, नकली, हाज़िर जवाबी ।

રંનન (सं.) आलाप, (गायनमें) गर्जन, चुम्बन (चूमा) लेते समयका शब्द ।

રંભા (सं.) स्वर्गांगना विशेष, एक अप्सरा का नाम, परी, रूपवती, केला, कदली ।

રંભાફળ (सं.) केला ।

રંભોરૂ (सं.) जिसकी जंघा केले के वृक्ष के समान सुन्दर हो, रूप सुंदरी, परी ।

રમ્ય (वि.) आनन्द दायक, सुखद, मनोहर, रूचिकर, रमणीय ।

રયણ-ણી-ની (सं.) रात, रात्रि, रजनी, निशा, रैन ।

રવ (सं.) शब्द, ध्वनि, नाद, निनाद, आहट, आवाज, कीर्ति, प्रसिद्धि ।

રવઈ (सं.) रई, कांछ बनानेका ढंग, दही मथनेका काठ दण्ड ।

રવાજ્યો (सं.) रीति, चलन, प्रचलन, अभ्यास, मुहाविरा।
રવડતું (वि.) भटकाहुआ, भ्रमित।
રવડવું (क्रि.) भटकना, घूमना, भ्रमण करना, धरम धक्के खाना।
રવદ (सं.) शर्त, होड़।
રવરવ (सं.) अकरकरा या वैसी ही कुछ चरपरी वस्तु खाने पर जीभका चरपराहट।
રવસીપંચક (सं.) पागल, विवेक भ्रष्ट, जिसे पहिनने ओढने चलने आदिका शऊर न हो। व्यतीपात, उपद्रवी।
રવા (सं.) कण, सोने चांदी छोटा टुकड़ा, (वि.) ठीक, उचित, मुनासिब, ठहराव।
રવાજ (सं.) एक प्रकारका बाजा।
રવાદાર (वि.) दानेदार, कण सहित।
રવાદારી (सं.) दळाली, छुपी दलाली, पक्षपात, तरफदारी। कृपा। [विदागी, विदेशगमन, भेट।
રવાનગી (सं.) कूच, प्रस्थान,
રવાના કરવું (क्रि.) भेजना, बाहिर भेजना।
રવાના ચિઠ્ઠી (सं.) जबर चौकीके माल निकलजानेकी चिठ्ठी, पास।
રવાના થવું (क्रि.) प्रस्थान करना कूच करना, बाहिर निकल जाना।
રવાબ (सं.) धाक, डाट, अधिकार।
રવાયો (सं.) देखो રવાજ્યો।
રવાલ (सं.) घोड़े बैलआदिकी एक चाल विशेष, न विशेष दौड़ न विशेष मन्दगति, खदड़क खदड़क चाल।
રવિ (सं.) सूर्य, सूरज, भास्कर, मार्तण्ड आदित्य, दिवाकर, प्रभाकर दिनकर।
રવિમંડળ (सं.) सूर्यका गोळा।
રવિવાર-રવેઉ (सं.) सूर्यवार इतवार, ऐतवार, प्रथमवार।
રવી (सं.) सैनिकोंकी जाँच पड़ताळ, कवायद, सर्दीके दिनोंमें बोईजानेवाळी फसल, रबी।
રવેઉ (सं.) देखो રવિવાર।
રવેશ (सं.) छज्जा, झरोखा, मकानसे आगे निकलता भाग। रिवाज, चाल, रीति, रस्म, शिरस्ता, दस्तूर।
રવે (सं.) देखो રવજ।
રવૈયાં (सं.) बहुत छोटे तथा गोळ भटे (बैंगन)। जिसके बड़ेबड़े टुकडे जिनमें गरम मसाला भरके बनाते हैं।

રવૈયો (सं.) रीति, चाल, रस्म, रवाज, दस्तूर, बहुत दिनोंसे चला आनेवाला कार्य ।

રવો (सं) रवा, छोटा छोटा टुकड़ा, चूर, धूळ, वाळू, छोटा कण ।

રશ્મિ (सं.) किरण, तेज, कान्ति, मयूख, रास, घोड़ेकी बागडोर, मरीचि ।

રસ (सं.) स्वाद, सवाद, अर्क, खार, सत, सत्व, निष्कर्ष, द्रवपदार्थ, एक प्रकारका रोग, जिससे अंड जो लिंगके नीचे होते हैं बडे हो जाते हैं । छःके लिये सांकेतिक शब्द, पारा, गन्धक, षट्रस (मधुर, खट्टा, खारा, कडु, तीखा, कषाय,) मधुरता, लज्जत, नवरस, (श्रृंगार, हास्य, करूण, वीर, रौद्र, भयानक, अद्भुत, बीभत्स और शान्त,) कईलोग, दस रस भीमानते हैं वह दसवाँ वात्सल्य रस है । रक्त, पसीना, अश्रु, वीर्य, कफ, लाभ, उपज, नफा, कमाई, दम, कस, आनन्द, मज़ा, खूबी, ठाठ, गुण ।

રસઉતરવો । (क्रि.) रजका गज करना, अतिशयोक्ति करना, निगळना ।

રસઉતારવો (क्रि.) हाथसे पीट पीट कर ठंडा करना, धरमधक्के खाकर लौट आना, बहुत समय तक खड़े रहना, हदसे जियादः बोलना, श्राप देना ।

રસકપૂર (सं.) एक प्रकारकी औषधि (इसमें पारा गंधक और लवण होता है) ।

રસકસ (सं.) तेजाब, अर्क, सत्व, जिद, हठ तकरार, विरोध, फसाद

રસઘેલુ (वि) आवेशी, उत्सुक, व्यग्र क्रोधी, पागळ, सिर्री ।

રસ ચાખવો (क्रि.) स्वाद लेना, चाखना, जायका लेना ।

રસ જામવો (क्रि.) आनन्द होना, हर्ष होना, रंगत जमना । [नाटकका)।

રસજ્ઞ (सं.) रसोंका ज्ञाता (काव्य

રસળિયો (सं.) झोल चढानेवाळा, मुलम्मा करनेवाळा, कलई करनेवाळा ।

રસતો (सं.) देखो રસ્તો ।

રસદાર-ભરેલું (वि.) सरस, रसाळ, रसयुक्त, स्वादिष्ट, मिष्ट, रुचिकर, मनोहर, चित्ताकर्षक ।

રસધામ (सं.) आनन्द स्थळ, (वि.) मोहक, चित्ताकर्षक ।
રસના (सं.) जबान, जिव्हा, जीभ।
રસનેન્દ્રિય (सं.) पूर्ववत् ।
રસ પડવો (क्रि.) प्रसन्न होना, मुदित होना ।
રસ ભરાવું (क्रि.) उभाड़ना, उस्काना, दमपट्टी देना ।
રસભેર (अ.) आनन्दसे । [रसमय
રસભર્યું(वि.) सरस, रसाळ,
રસભંગ (सं.) किसी रसका नाश, रंगमें भंग, विघ्न, नैराश्य ।
રસમ (सं.) प्रथा, रीति, रिवाज, चाल, प्रणाली, परंपरागत कार्य।
રસમય (वि) आनंदरूप, मनोरंजक ।
રસરાજ (सं.) एक प्रकारकी औषधि, प्रेम, प्यार, स्नेह, मोहब्बत ।
રસવટ (सं.) बैर, अदावत, द्वेष ।
રસવંતી (सं.) एक प्रकारकी औषधि ।
રસવાદ (सं.) ईर्षा, द्वेष ।
રસવાળું (वि.) देखो रसदार ।
રસવિકાર (सं.) एक प्रकारकी बीमारी, अण्डवृद्धि रोग ।
રસવું (क्रि.) झोल चढाना, मुलम्मा करना, कलई करना ।
રસવૃત્તિ (सं.) प्रेमरोग, कामज्वर ।
રસસિંદૂર (सं.) एक प्रकारकी औषधि, जस्त, पारा, नीला थोथा और क्षारसे बना हुआ पदार्थ ।
રસળવું (क्रि.) देर लगाना, ढील करना, निकम्मे इधर उधर फिरना ।
રસાંજન (सं.) एक प्रकारकी औषधि, दारु हल्दीके क्वाथ और बकरीके मूत्रसे बनाया हुआ चूर्ण।
રસાતળ (सं.) पृथ्वीतल, अधोलोक विशेष, सातवां अधोलोक, बलिकालोक ।
રસાતળ ઘાલવું (क्रि.) मटियामेट करना, ध्वंश करना, बरबाद करना ।
રસાતળજવું-વળી જવું (क्रि.) टूट जाना, नाश होना, बरबाद होना, निर्वंश होना ।
રસાળોળ ઘાલવું (क्रि.) सत्यानाश करना, नष्ट करना, मिटा देना, बरबाद करना ।
રસાયન-ણ (सं.) कीमिया, रसविशेष, प्राण बचानेवाले रस, आग्रह पदार्थविज्ञान । [कीमिया ।
રસાયનવિદ્યા (सं.) रसशास्त्र,

રસાયણી (सं.) रसायनशास्त्रका पंडित।

રસાલદાર (सं.) घोड़ेकी फौजका आफीसर, अश्वारोहियोंका अधिपति।

રસાલો (सं.) अश्वारोही सेना, घुड़सवार फौज, फौज, सेना, निबंध।

રસાવવું (क्रि.) कळई करना, झोल चढाना, मुलम्मा करना।

રસાળ-ળું (वि.) जिसमें रस अधिक हो, सुस्वादु, अन्न पकने योग्य, (भूमि) (सं.) आम, आम्रफळ, कैरी।

રસિક (वि.) रसीला, रसिया, लम्पट, दुराचारी, गुण्डा, रसज्ञ।

રસિયું (वि.) पूर्ववत्।

રસિયો (सं.) स्त्री लम्पट, विलासी, भोगी, कामी, विषयी पुरुष।

રસિલું (वि.) देखो રસિક

રસી (सं.) पीव, रीम, मेवाद, राध, पीप, व्रण के भीतर पीवरक्तादि। रस्सी, डोरी, सुतली।

રસીદ (सं.) पावती, पहुंच, प्राप्ति स्वीकार, प्राप्तिपत्र।

રસેન્દ્રિય (सं.) देखो રસનેન્દ્રિય

રસેલું (वि.) कळई किया हुआ, मुळम्मा किया हुआ, कलई चढाया हुआ।

રસો (सं.) आचार, मुरब्बा साग भाजी इत्यादिका मसाला सहित रस, पतला शाक, पतली तरकारी, रस्सा। [खुराक।

રસોઈ (सं.) पाक, भोजन, खाना,

રસોઇયો (सं.) रसोई बनानेवाला, पाक, शास्त्री, भोजन तय्यार करनेवाला, बावर्ची।

રસોડું (सं.) पाक शाला, भोजनगृह, वह स्थान जहां भोजन बनता है।

રસોયો (सं.) देखो રસોઇયો।

રસોળી (सं.) रोग विशेष, गळगण्ड, गॉंठ।

રસ્તો (सं.) सड़क, मार्ग, पथ, पन्थ, राह, बाट, पगदण्डी, रीति, चाळ।

રસ્તો કાપવો (क्रि.) चलते रहना, मंजल करना, मार्ग क्रमण करना।

રસ્તો લેવો-પકડવો (क्रि.) जाना, चल देना, रस्ता नापना।

રહસ્ય (सं.) गुप्तभेद, गोपनीय, छुपीबात।

રહિત (वि.) वर्जित, हीन, शून्य बिना। [(वि.) ठिकानेवाला।

રહિશ (सं.) रहने वाला, निवासी

રહીજવું (क्रि.) ठहरजाना, पिछुड़जाना, किसी अंगको बादी या लकवा मारना ।

રહી રહીને (अ.) ठहर ठहर, कर, अन्तर, फासला, लम्बाई, आखिरकार । [शेष ।

રહ્યું સહ્યું (वि.) बचा बचाय,

રહેઠાણ (सं.) स्थान, मुकाम, रहनेकी जगह, निवासस्थान ।

રહેણી (सं.) रहनेकी रीति, आचार व्यवहार, रहन सहन ।

રહેમ (सं.) दया, कृपा, करुणा, महरबानी । [कृपादृष्टि ।

રહેમ નજર (सं.) दयादृष्टि,

રહેમિયત (सं.) देखो रहेम ।

રહેવાસ-શ (सं.) घर, गृह, *भवन, मकान, स्थान, वास, निवास ।* [रहनेवाला ।

રહેવાસી (वि) निवासी, वासी,

રહેવું (क्रि.) रहना बसना, ठहरना, मुकाम करना, निवास करना, वास करना, टिकना, समाना, रुकना, चैन होना, निभना, अटकना, अधूरा रहना, जीना, दूर होना । [करना, नाश करना ।

રહેંસવું (क्रि.) कतल करना, वध

રળતર (सं.) उत्पत्ति, कमाई, प्राप्ति, अर्जन, पैदा, आमद, लाभ, मुनाफा ।

રળવું (क्रि.) कमाना, पैदा करना, प्राप्त करना, उद्यम करना, पैसे पैदा करना ।

રળાઉ (वि.) पैदा करनेवाला, कमाऊ, लाभकारी, हितावह ।

રળિયાત (सं.) प्रसन्न, राजी, खुशी, तुष्ट । [प्रसन्न होना ।

રળિયાત થવું (क्रि) खुश होना,

રળિયામણું (वि.) सुशोभित, सुन्दर, रम्य, रमणीय ।

રળી (सं.) खुशी, आनन्द, हर्ष, उमंग, उछाह, प्रसन्नता ।

રળીરાશે (अ.) धीरेसे, शांतिपूर्वक, सुखचैनमें, खुशीसे, निरुपद्रव ।

રાંક-કડું (वि.) गरीब, निर्धन, दरिद्र । पामर, बेचारा, दीन, कंगाल, नम्र । [मंगता ।

રાંકું (सं.) भिक्षुक, भिखारी,

રાંગ (सं.) शहर पनाहकी भींत, नगर प्राचीर, दुर्गकी एक दिशा ।

રાંગડો (सं.) धीरे धीरे चलनेवाला ।

રંગોળી (सं.) पृथ्वीपर बनाये हुए रंगके चित्र, साथिया, भोजन करनेके स्थानमें भूमिपर रेखाएं खींचीं जाती हैं। [ग्रामीण।

રંચો (सं.) गांवडेका, गंवार,

રંઝણ (सं.) एक प्रकारका रोग जो पैरोंमें होता है।

રંટ (सं.) बांक, वक्रता, टेढाई, अनबन, द्वेष, विरोध, मनोमालिन्यता।

રાંઠું (वि.) टेढ़ा, तिरछा, बांका, वक्र, खोटा, असत्य, झूठा।

રાંડ (सं.) रंडा विधवा स्त्री पति हीना, वेश्या, रण्डी, छिनाल, पुंश्चली।

રાંડ જાત (सं.) स्त्रीजाति, नारी।

રાંડનાનખરા (सं.) चोंचला, स्त्रियोंका हाव भाव, स्त्रीचरित्र।

રાંડના પેટનો (सं.) वर्ण संकर दोगला, जिसके बापका पता नहो।

રાંડનું રાજ (सं.) घाघरेका राज, लहंगेकी अमलदारी, स्त्रीकाशासन।

રાંડબાજ (वि.) व्यभिचारी, परस्त्री गामी, स्त्रीलम्पट, रण्डीबाज।

રાંડબાજી (सं.) व्यभिचार, परस्त्री गमन, वेश्याप्रसंग, रन्डीबाजी।

રાંડવું (क्रि.) रांडहोना, विधवा होना, पति मरना, दयाहिखाना।

રાંડવો (सं.) जनाना, जनखा, नपुंसक, नामर्द, रांडुला, क्लीब।

રાંડ્યાપછી ડહાપણ આવે (क.) नुकसान होनेपरही बुद्धि आती है, ठगाए ठाकुर होता है।

રાંડીરાંડ (सं.) विधवा, रांड, निराश्रित स्त्री। [हुई स्त्री।

રાંડીછાંડી (सं.) छोडीहुई, त्यागी

રાંઢવું (सं.) पानी भरनेकी रस्सी, डोरी नेज, अबारा, दुष्टजन, अज्ञान मनुष्य।

રાંઢો (सं) देखो રેંઢો।

રાતેલ (सं.) जवार, देवी भैरव आदिके पूजामें बायेहुए जौ और गेहुं, भुजरियां।

રાંધણછઠ (सं.) श्रवण शुक्ला या कृष्णा षष्ठी, इसदिन शीतला पूजन करनेके लिये पदार्थ बनाते हैं।

રાંધણિયું (सं.) रसोई घर, भोजनशाला, पाकशाला, बावर्चीखाना, लंगर।

રાંધણિયો (सं.) रसोइया, भोजन बनानेवाला, बावर्ची, लांगरी।

રાંધણી (સં.) देखो रांधणियुं ।
રાંધણું (सं.) वहजो रांधनेके लिये हो ।
રાંધવું (सं.) पकाना, उबाळना, सिजाना, भोजनबनाना, रसोई करना । [किया हुआ काम ।
રાંધેલી રસોઈ (वि.) युक्ति, तय्यार
રાંધે કોઈ ને જમે કોઈ=चूहा खोदे और सांप निवास करे । परिश्रम कोई करे और आनन्द दूसरे भोगें ।
રાંધી રસોઈ રહેવી (क्रि.) बना बनाया कामका बीचमेंही रहजाना ।
રાંપ-ડી (सं.) एक प्रकारका औजार जो खेत नींदने तथा गोड़ने के काममें आता है, खुरपा खुरपी रँपी ।
રાંપવું (क्रि.) नींदना, गोड़ना, खेत में सें घासफूस कचरा आदि निकाळना ।
રાંપી (सं.) मोची या चमारका एक औजार जो प्राय; चमड़ा काटनेके काम में आता है ।
રાંભો-રાભો (सं.) गड्ढा खोदने का औजार, कुदाळ, गेंती, खनित्रा, गँवार, ग्रामीण, गंवडेल ।
-રા (सं.) लक्ष्मी, पैसा, सोना, प्रभु, ईश्वर ।
રાઈ (सं.) सर्षप, सरसों, राजिका, एक प्रकारका सरसों के बराबर तैल युक्तबीज, यह आचार, रायते आदि में डाळी जाती है, (वि.) अत्यंत छोटा । तुच्छ ।
રાઈચઢાવવી (क्रि.) उकसाना, उभारना, उत्तेजित करना ।
રાઈ મરચાં પાડવાં (क्रि.) बल कम होना, देख न सकना, आँख निकली पड़ना ।
રાઈ મરચાં લાગવા (क्रि.) बुरा लगना, अप्रिय मालुम होना ।
રાઈજગ (सं) भपका, ठाठ, शोभा, ऐश्वर्य्य ।
રાઈની કેરી-ચીરી (सं.) मसाला भरा हुआ आमका अचार ।
રાઈતું-યતુ (सं.) व्यंजन विशेष, दही में किसी चीजको डाळकर राई नमक मिर्ची आदि डालकर बनाया हुआ पदार्थ, रायता, किसी की हानि ।
રાઈતું કરવુ (क्रि.) किसी की खराबी करना, किसीको हानि पहुँचाना ।
રાઈ ભીડું (सं.) राईनौन, जब किसीको नजर लग जाती है तो उसके ऊपर राई नमक और मिर्ची उतार के आग में डाळते हैं । टुटका, टोटका, विघ्न, दोष, ।

રાઉત (सं.) बहादुर पुरुष, वीर।
રાકેશ (वि.) उचित, ठीक, मुनासिब।
રાગેશુ (सं.) देखो રાયણ
રાકા (सं.) कुछ प्रतिपदा युक्त पूर्णिमा, वह तिथि जिसदिन पूर्ण चन्द्र हो। [मयंक।
રાકેશ (सं.) विधु, चांद, चन्द्रमा,
રાકાપતિ (सं.) पूनमका चांद, पूर्ण चन्द्र।
રાક્ષસ (सं.) निशाचर, भयंकर, निर्दय, दैत्य, दानव, असुर, दनुज, भूत, पिशाच, शैतान, दाना, हिंसक मनुष्य, मांस भोजी, हत्यारा, नीच, दुष्ट।
રાક્ષસગણ (सं.) मनुष्योंके तीन गण होते हैं किसीका देव गण किसीका मनुष्य गण और किसीका राक्षस गण होता है, यह विषय ज्योतिष शास्त्रका है विवाह शादी के समय पुरुष और स्त्रीके गणोंकाभी ध्यान रखा जाता है।
રાક્ષસણી–રાક્ષણી (सं.) राक्षसकी स्त्री, डुड्ड औरत, मैली अपापसप अपरीणा स्त्री।
રાક્ષસી (वि.) कठोर, जंगली, राक्षसके सम्बन्ध युक्त कार्य या वस्तु, राक्षसके समान, भयंकर, विकराळ। [प्रेतविद्या।
રાક્ષસી વિદ્યા (सं.) भूतविद्या,
રાક્ષી (सं.) दोनों तरफके नोंकदार पैने दांत, राक्षसी, निशाचरी, भूतनी।
રાખ (सं.) किसी वस्तुके जळजाने उसकी धूल, खाक, भस्म, रक्षा, न कुछ, धूल, रखी हुई स्त्री, वेश्या, रंडी।
રાખ ચોળવી (क्रि.) वैरागी होना, भस्म रमाना, राखको बदनपर, मलना। खराबहोना, बरबाद होना, खाक छानना।
રાખ ચોળાવવી (क्रि.) बरबाद करना, दरिद्री करना।
રાખ ધુળ (अ०) कुछभी, न कुछ।
રાખ ધુળ થઈ જવું (क्रि) खराबहोना, बिगड़जाना, बरबाद होना।
રાખ આવે ધાવવી (क्रि.) किसीभी काममें आवे होजाना, खराब काम करना।

રાખડી (सं) विघ्न संकट दुःख क्लेश आदि न हो इस लिये हाथके पहुंचे पर मंत्र बोल कर बांधा हुआ डोरा, राखी, रक्षासूत्र, गर्भवती स्त्रीको वह सूत्र जो आशीर्वाद-रूपसे उसकी ननँद पांचवें या सातवें महीनें में बांधती है ।

રાખનાર (सं) संरक्षक, शरणमें, रखने वाला, हिफाजत करने वाला ।

રાખ રખાવટ (सं.) देखो રખાવટ

રાખપત (सं) अपमानसे मान रक्षा, जाती हुई इज्जतकी संभाळ ।

રાખવું (क्रि.) रखना धरना, पाळन, करना, पालना, संरक्षण करना, संभाळना, संग्रह करना, यत्न करना अधिकारमें करना, अन्दर रहने देना, बाहिर न निकालना । द्वेष रखना, रोकना, अटकाना, एकत्र करना, जमाना, प्रण पालना, काममें लाना ।

રાખસ (सं.) देखो રાક્ષસ ।

રાખસી (सं.) देखो રાક્ષસણી ।

રાખસી માયા (सं.) जादू, टोना, मिथ्या प्रपंच, नाचता पूर्वक छळ ।

રાખેલી (सं.) रखी हुई स्त्री, अविवाहितापत्नी, नातरेसे लाई हुई स्त्री ।

રાખેલીના પેટનો (सं.) वर्णसंकर संतान, दोगळी औलाद ।

રાખોડી (सं.) देखो રાખ ।

રાખોડો (सं.) पूर्ववत् ।

રાગ (सं.) रंग, लाल, क्रोध, अनुराग, प्रेम, स्नेह, गानकासुर, भैरव, मालकौस, मेघ, श्री दीपक और हिंडोळ, अच्छास्वाद, मधुर ध्वनि, (आवाज़) स्वर सुर रव, लालसा ।

રાગઆવવો (क्रि.) बनना ।

રાગગાવો (क्रि.) गाना ।

રાગડાઢવો (क्रि.) गाना ।

રાગડો (सं.) लम्बा गीत ।

રાગડાખેંચવો (क्रि.) गळाफाड़कर रोना (बाळकका)

રાગણી (सं) रागकी स्त्री, एक एक रागको पांच पांच स्त्रिया हैं, (भैरवकी रागिनी) भैरवी, विभाकरी, गूजरी, गुनकरी और बिलावळ (श्री रागकी) गौरी, गौरा, नीलावति, विहंगडा, विजयंती, और पूरिया (माळकौंसकी) भठ हारी, सरस्वती, रूपमंजरी, चतु-

रकदम्बी, और कौशिक नंदिनी, (दीपककी) कान्हडा, केदारा, अडाना, मारू, विहाग, (मेघकी) सारंग, गौड़गिरी, जै जै वन्ती, धूरिया और सभावती, (हिण्डोलकी) टोडी जयश्री, आसावरी बंगाल और सैंधवी।

રાગમાળા (सं.) काव्यमाला, जिसमें बहुतसे राग साथसाथ गाये जावें ऐसी रचना। [हर्ष।

રાગરંગ (सं.) गीतवाद्य, खेलकूद

રાગી (वि) जिसे फौरन क्रोध हो जावे, प्रेमी संसारमें तल्लीन, क्रुद्ध, कुपित। [रीतिमेंआना।

રાગેપડવું (क्रि.) ढंगमें आना,

રાગેભરાવું (क्रि.) क्रुद्ध होना, गुस्साआना।

રાગોટવું (क्रि.) गाते समय ऊंऊं करना, अलापना, स्वर भरना, सुरलेना।

રાગોટો (सं.) आलाप, देखो રાગડો

રાઘુ (सं.) एक प्रकारका लाल तोता।

રાચ (सं.) घरमें काम आनेवाला सामान, बर्तन भांडे, कपड़ेलत्ते टेबल, कुर्सी आदि घरका सामान

रાચરચીલું (सं.) पूर्ववत्।

રાચવું (क्रि.) प्रसन्न होना, खुशी होना, मुदित होना, अच्छा मालुम होना।

રાજ-જ્ય (सं.) देश, राजाका आधकृत देश, राष्ट्र, राजाका अधिकार। राजा, नरेश, राजन्! (सम्बोधन) (वि.) राजविषयक।

રાજઆવવું (क्रि.) रजस्राव होना, मासिक धर्म होना। [ईश्वरकाकोप।

રાજક દેવક (वि) राजाका अथवा

રાજકન્યા (सं.) राजाकी लड़की, राजपुत्री।

રાજકવિ (सं.) राजा का कवि।

રાજકાજ (सं.) राज्य सम्बन्धी कार्य, राज नीति, राजा के काम।

રાજકારભારી (सं.) प्रधान, दीवान बजीर, मुत्सद्दी, मंत्री। [सम्बन्धी।

રાજકીય (वि.) राजाका, राज्य

રાજકુંવર (सं.) राजाकापुत्र, राजकुमार।

રાજકુંવરી (सं.) देखो રાજકન્યા

રાજકુમાર (सं) देखो રાજપુત્ર

રાજગઢ (सं.) राजा के रहने का किला, दुर्ग।

રાજગરી (सं.) पहाड़ी, टेकड़ी जहांपर राजा रहताहो, कांदा, प्याज ।

રાજગરો (सं.) एक प्रकारका धान्य जो फळाहार के काम आता है, रजगिरह् ।

રાજગાદી (सं.) राजसिंहासन, राजा के बैठनेका आसन, राज्यासन । [राजाका कुळगुरु ।

રાજગોર (सं.) राजाका पुरोहित,

રાજચિન્હ (सं.) ऐसे निशान जिन्हें देखकर यह बोध हो कि अमुक राजा है, छत्र चंवर मुकट दण्ड आदि, कागज या धातु पर राजाका निशान । सिक्का ।

રાજત (सं.) चांदी, रजत, रूपा ।

રાજતંત્ર (सं.) राज्यका कारभार ।

રાજતિલક (सं.) टीका, राजगद्दी, गद्दीपर बिठाकर मस्तक में किया हुआ तिळक, राज्याधिकार ।

રાજવું (वि.) शोभित, राजित, प्रकाशित । [याऐश्वर्य ।

રાજતેજ (सं.) राजाका प्रताप

રાજથવો (क्रि.) चिराग, गुळ होना, दीपकका बुझना, दीप होना ।

રાજદંડ (सं.) राजा द्वारा दीहुई सजा, राजाके हाथका दण्डा ।

રાજદરબાર (सं.) राजसभा कचहरी, कोर्ट, न्यायाळय ।

રાજદરબારી (सं.) सरकारी, राजासे या राज्यसे सम्बन्ध रखनेवाळे ।

રાજદૂત (सं.) राजाकी तरफसे समाचार लानेवाळा, एलची ।

રાજદ્રોહ (सं.) बलवा, उपद्रव, राजा के विरुद्धाचरण, फितूर ।

રાજદ્રોહી (सं.) राजाया राज्यका विरोधी उपद्रवी, अराजक ।

રાજદ્વાર (सं.) जहां राजा न्याय करता है वह जगह । कचहरी कोर्ट, अदालत ।

રાજદ્વારી (वि.) राजनीति विषयक ।

રાજધર્મ (सं.) राजाका प्रजाके प्रति कर्तव्य कार्य, प्रजारक्षण ।

રાજધાની (सं.) राजाके रहनेका नगर, मुख्यनगर, पायेतख्त ।

રાજન (संबो.) राजा, हे राजा !

રાજનગર (सं.) राजधानी ।

રાજનીતિ (सं.) राज्यकरनेकी विद्या, राजाका प्रजाके साथ कर्तव्य धर्म, राजकाज,सरकारी रीतिरस्म ।

રાજપાટ (सं.) राजगद्दी, राज, सिंहासन ।

રાજપદ (सं.) राजाकी पदवी ।

રાજપત્ની (सं) रानी, राजमहिषी ।

રાજપાટિકા (सं.) स्वारी, सवारी ।

રાજપુત્ર (सं.) देखो રાજકુંવર ।

રાજપુત્રી (सं.) देखो રાજકુંવરી ।

રાજપુરૂષ (सं.) राजका नौकर, राजकर्मचारी, दिवान, प्रधान, वजीर ।

રાજપ્રતિનિધી (सं.)राजाकीतरफसे कार्य करनेवाला, व्हाइसराय, बड़ालाट । [उत्पन्न ।

રાજબીજ (सं.) राजा के कुलमें

રાજભક્તિ (सं.) राजाकी भक्ति, प्रजाका कर्तव्य, राजप्रेम, राजाका शुभचिंतन ।

રાજભોગ (सं.) बड़ाभोग, ठाकुरजीको दोपहरका नैवेद्य, देवताका प्रसाद ।

રાજભ્રષ્ટ (वि.) राजच्युत, राजगद्दीसे उताराहुआ राजा ।

રાજમંડળ (सं.) दरबारी लोग, हजूरिये, राजसमाज, खुशामदीलोग

રાજમંદિર-ભવન (सं.) महल, प्रासाद, राजा के रहनेके मकान, राजवाड़ा ।

રાજમદ-જયમદ (सं.) राजाका गर्व, अपने राज्य (शासन) का घमण्ड ।

રાજમહેલ (सं.) देखो રાજમંદિર ।

રાજમાતા (सं.) राजाकी माता, राज्यमें ।

રાજમાન્ય (वि.) राजाके द्वारा प्रतिष्ठा प्राप्त, नरेशद्वारापूजित, प्रसिद्ध, राज्यमें मुख्य अधिकारी चिठ्ठियोंमें यह वाक्य शोभा प्रदर्शनार्थ लिखते हैं । [आनेका रस्ता है

રાજમાર્ગ (सं.) राजाके आने-

રાજમુદ્રા (सं.) राजाकी छाप, राजाके हस्ताक्षरोंकी मुहर ।

રાજયોગ (सं.) योगसाधन, विशेष, राजहोनेका ग्रहयोग ।

રાજરિદ્ધિ (सं.) राज्यकी उन्नति, राष्ट्र वृद्धि, शासनवृद्धि ।

રાજરેખ (सं.) हाथमें राजा होनेकी रेखाएं, शंख, गदा, धनु, चक्र, ध्वज इत्यादि चिन्ह (सामुद्रिक शास्त्र)

રાજર્ષિ (सं.) वह ऋषि जो राज त्यागकर तप करता है, क्षत्रिय ऋषि ।

રાજલક્ષ્મી (सं.) राज्य वैभव, राज्यश्री । वृद्धि, बधती, राजकोष ।

રાજલેખ (सं.) राजाके हस्ताक्षर, राजाकी आज्ञा, ढिंढोराआज्ञापत्र ।

રાજવટ-ટું (सं.) राजदरबारी रीति रिवाज ।
રાજવટો (सं.) देखो રાજમાર્ગ ।
રાજવહિવટ (सं.) राज्य कार्य वाही । [क्षत्रिय ।
રાજવંશી (सं.) राजाके कुलका,
રાજવણું (सं.) दरबारी, हजूरिया, दरबार ।
રાજવી (सं.) किसीके मरनेके बाद छाती कूटकर रोनेकी एक रीति (औरतोंमें) रोनेका एक प्रकारका गीत । राजा, महाराज, भाग्य शाली पुरुष । श्रीमंत ।
રાજવું (सं.) शोभित होना, सुंदर दृष्टि आना ।
રાજવૈદ્ય (सं) राजाका या राजासे मान प्राप्त वैद्य, राजाका हकीम । [राजाकी शोभा, ठाठ ।
રાજવૈભવ (सं.) राजाका प्रताप,
રાજશ્રિયાવિરાજિત (वि.) राज शोभासे शोभित, बड़ेपदसे सम्मानित ।
રાજશ્રી-જેશ્રી (सं.) राज्यलक्ष्मी ।
રાજશી (वि.) देखो રાજસ ।
રાજસ (वि.) रजोगुण प्रधान, अहंकार, गर्व ।
રાજસત્તા (सं.) राजाका अधिकार बादशाही अमलदारी, हुकूमत ।
રાજસભા (सं.) राजदरबार, कचहरी, कोर्ट, न्यायालय, राजाकी सभा ।
રાજસોધ (सं.) यज्ञविशेष राजाके करनेका यज्ञ, राजसूयज्ञ, ऐसे अनेकों यज्ञ करके प्राचीन कालमें राजा सम्राटपद पाते थे ।
રાજસ્તાન-સ્થાન (सं.) राजपूताना भारतके देशी राज्य, देशी रियासतें ।
રાજહંસ (सं.) पक्षी विशेष उत्तम हंस । [मारडालना ।
રાજહત્યા (सं.) राजवध, राजाको
રાજા (सं.) नरेश, भूपाल, नृपति, भुआल, अधिपति, नाथ, स्वामी, मालिक, संरक्षक, अधिकारी बादशाह, अधिराज, श्रेष्ठता प्रदर्शनार्थ शब्दके साथसाथ गायाजाता है जैसे " वैद्यराज, मुनिराज, गजराज। " स्वतंत्र पुरुष, शतरंजके खेलमें मुख्य गोट, ताशके खेलमें राजाका पत्ता । [मोटे मनका ।
રાજાજેવો (आ.) उदारविचारवाला,
રાજાસાથે લઢવો (क्रि.) सरस माळखाना ।

રાજાને ગમતી રાણી ને છાણાં વીણતી આણી सफेद किन्तु दूध नहीं।

રાજભાઇસ (सं.) जो राजाके समान गुणमें विद्यामें खर्चमें ऐश्वर्य आदिमें हो।

રાજાધિરાજ (सं.) शाहंशाह, राजाओंका भी राजा, सम्राट, चक्रवर्ती नरेश।

રાજા ભોજ (सं.) उदार पुरुष, हितैषी, परमार्थी, विद्याप्रेमी, न्यायी श्रेष्ठपुरुष। [पेश।

રાજીયો (सं.) शोकका गीत वि-

રાજીવ (वि.) शोभित, सुन्दर।

રાજી (वि.) खुश, प्रसन्न, स्वीकार, तैयार।

રાજીકરવું (क्रि.) प्रसन्न करना।

રાજીથવું (क्रि.) खुश होना।

રાજીખુશીથી (अ०) प्रसन्नतासे, स्वेच्छासे।

રાજીનામું (सं.) स्वेच्छा पूर्वक लिखाहुवा पत्र, प्रसन्नता प्रदर्शक लेख, इस्तिफा।

રાજીરજામંદીથી (अ.) राजी खुशीसे, बिनाजबरदस्तीसे, इच्छापूर्वक।

રાજીપો (सं.) प्रसन्नता।

રાજીવ (सं.) कमळ, पंकज, पद्म।

રાજીવલોચન (सं.) कमळ नयन, पुंडरीकाक्ष, ईश्वर, परमात्मा, राम, कृष्ण।

રાજેન્દ્ર (सं) राजाओंकाभी राजा, महाराजाधिराज, सम्राट, राजराजेश्वर।

રાજેશ્રી (सं.) देखो રાજશ્રી।

રાજ્ય (सं.) राज, देश, राष्ट्र, राजाका अधिकृतदेश, शासन, हुकूमत।

રાજ્યપ્રકરણ (सं.) राजनीति, राज्य सम्बन्धी कामकाज।

રાજ્યતંત્ર (सं.) राज्यकारबार।

રાજ્યધામ (सं) राजधानी, राजाके रहेनेका नगर, राजनगर।

રાજ્યલેખ (सं.) सनद, राज्यकी ओरसे दस्तावेज, सरकारी कागज।

રાજ્યાભિષેક (सं.) राजगादी राजातिलक, राज्याधिकार, समस्त नदियों का जळ, वृक्षपल्लव, समस्तरत्न आदि मंगाकर वैदिक विधिसे किया हुआ राजतिलक, तख्तनशीनी।

રાજ્યાસન (सं.) राजाके बैठनेका आसन, गादी, तख्त, सिंहासन।

રાઠોડ (सं.) राजपूत क्षत्रियोंकी एक जाति विशेष, राठौड़नामक जाति ।

રાડ (सं.) युद्ध, संग्राम, लड़ाई, झगड़ा, हल्ला, शोरगुळ, होहल्ला ।

રાડું (सं) ज्वारका डण्डा, ठठारा, राड़ा, ज्वार मक्काका सूखा हुआ वृक्षदण्ड ।

રાઢ (सं.) वाकयुद्ध, कलह, झगड़ा बकबक, तकरार, फरियाद जुदाई, तळाक ।

રાણી (सं.) राज्ञी, राजपत्नी, राजमहिषी, राजकरनेवाळी स्त्री, राजरानी ।

રાણીને। જાયો (सं.) शेखीखोर, अकड़बाज, घमंडी, अहंकारी ।

રાણીને ખટમલ (सं.) पूर्ववत् ।

રાણીવાસ (सं.) अन्तःपुर, रनवास, रानियोंका रहनेका महल ।

રાણીજાયો (सं.) राणीके गर्भसे उत्पन्न पुत्र, राजपुत्र, युवराज, राज्याधिकारी ।

રાણીપ (सं.) सलाह, परामर्श, ऐक्य, राजीखुशी, प्रसन्नता ।

રાણો (सं.) राजा, राजपूत, क्षत्रिय विशेष, रापूतराजा, चाकरीमें रहनेके कारण यह शब्द ' गोला ' के लियेभी प्रयोग करते हैं जैसे " गोलाराणा "

રાણો કરવો (क्रि.) चिराग बुझाना, दीपक ठंडा करना ।

રાણોથવો (क्रि.) चिराग़ गुलहोना, दीपक बुझना, नष्टहोना ।

રાત (सं.) नाई, हज्जाम, नापित, नापिक रात्रि, निशा, रजनी, रैन ।

રાતઆપણુઆપની છે = अगर दिनमें काम न होसकाता सारी रात जागकर करेंगे ।

રાતકહેતો રાત ને દહાડો કહેતો દહાડો = जो जैसा कहावे वैसाही बोळना ।

રાતદહાડાના ખબર (सं.) सुधि, होश, खबर, दुनियादारीकी खबर ।

રાતનોરાજા–ણો (सं.) उल्लू घुग्घु, चोर, राक्षस, निशाचर ।

રાતડા (सं.) लालिमा, ललाई अरुणता, लालज्वार, गाजर ।

રાતડાં (सं.) सुहाली, पपडी, गेहूंचने आदिके आटेकी बनी हुई ।

રાતડિયાં (सं.) गाजर ।

રાતડિયો (सं.) ज्वार, जुवारी (लाल) धान्य विशेष ।

રાતડી (सं.) देखो રાત ।
રાત દહાડો (सं.) अहर्निशि, नित्य, रातदिन, सदा, हमेशा, शबोरोज ।
રાતબ (सं.) बंधानी, रोज किसी वस्तुके आनेका नियम, बंधी, सीधा (आटा दाल घी नमक मिर्च आदि) । [(कवितामें)
રાતલડી (सं.) रात्रि, रात
રાતબ (सं.) नित्यका आहार, खोराक, पेट खर्ची, भत्ता वजीफा ।
રાતવરત (अ.) चाहे जिस समय ।
રાતવાસો (सं.) यात्रामें किसी स्थानपर रातभर निवास । रात काटना । [पतिके साथ रहना ।
રાતવું (क्रि.) अपने पति या
રાતાશ (सं.) देखो રતાસ ।
રાતું (वि.) लाल, रक्तवर्ण, खूनका-रंग, मग्न ।
રાતીરાયણજેવું (क्रि.) सुदृढ, पुष्ट, मजबूत । [कोप करना ।
રાતુંપીળું થવું (क्रि.) क्रुद्ध होना,
રાતે (अ.) रात्रिमें, रातके समय ।
રાતોરાત (सं.) रातही रातमें सूर्योदयके पूर्व ।
રાત્ર-ત્રી (सं.) देखो રાત ।
રાધા-ધિકા (सं.) कृष्णचन्द्रकी स्त्री, छिनाल औरत, बांझ स्त्री, भली स्त्री ।
રાન (सं.) झाडी, सघन बन, जं-गल, वृक्ष झाड़ी आदिसे आच्छन्न बन आरण्य, बिना वृक्षोंका मैदान ।
રાનરાન ને પાનપાન થઇજવું (क्रि.) बरबाद होना धूलधानी होना, दुर्दशामेंहोना ।
રાનવું (वि.) असभ्य, जंगली, व्यर्थही घूमनेवाला, गँवार ।
રાની (वि.) जंगली, बनी, मूर्ख, पशु, निर्बुद्धि, अशिष्ट, बेढंग
રાનીકુકડો-મરઘો (सं.) तीतर, पक्षीविशेष । [मधु ।
રાનીમધ (सं.) शहद, जंगली
રાનેરાન-રાનોરાન (अ.) जंगल जंगल, एक बनसे दूसरे बन ।
રાપતો (सं.) रीति, रिवाज रस्म
રાફ-ડો (सं.) दीमकका घर, सांपके रहनेका बिल, बमई, बांबी ।
રાબ (सं.) पात, गुडियानी, आटा घीमें सेक कर और मीठे पानीमें औटाकर तय्यर कियाहुआ पतला पदार्थ ।
રાબડી (सं.) रबड़ी, किसी वस्तु-को उबालकर खानेके लिये बनाया हुआ द्रव पदार्थ, बसौंधी ।

રામડું (सं.) रावडी (बेपरवाहीसे बनाई हुई)

રામ (सं) सर्वव्यापक ईश्वर, दशरथका बेटा रामचन्द्र, दम, बळ, शक्ति, पौरुष, जमदग्नीका पुत्र परशुराम, कृष्णचन्द्रका बडाभाई बळराम, व्यापारी लोग व्याजके आनोंकोभी संकेतार्थ यह शब्द प्रयोग करते हैं । [मकी कसम ।

રામઆણ (सं.) रामदुहाई ,रा-

રામકહાણી (सं.) बड़ालम्बा, चौड़ा, किस्सा, लंबीबात, रामायणकी कथा ।

રામકળી (सं.) प्रातःकाळ गानेकी एक रागिनी विशेष ।

રામકી (सं.) साधुन, बाबी, सैन्यासिन, योगिनी, जोगन, फकीरनी ।

રામ ગોવાળિયે (सं.) इधरउधर फिरते हुवे छोटे छोटे नंगे बच्चोंके लिये यह शब्द प्रयोग होता है, बाळगोपाळ ।

રામગ્રી (सं.) एकराग विशेष ।

રામચંદ્ર (सं.) दुष्टोंका संहारक, सातवां अवतार, कँई लोग इन्हें ईश्वर कहते हैं ।

રામજણી (सं.) वेश्या, रंडी, नर्तकी, गणिका, वारनारी ।

રામજયંતિ (सं.) चैत्र शुक्ला नवमी तिथि ।

રામ ઠાડિયું (वि.) टूटाहुवा, खंडित, भग्न, फूटाहुआ, खोखला ।

રામડોળી (सं.) मुर्देको लेजानेकी टट्टी, संगाती, रथी (मृतककी)

રામઢોલ (सं) बड़ाभारी ढोल, नगारा ।

રામણદીવો (सं.) किसी शुभ अवसरपर सिरपरमौर धारणकर हाथमें लटकताहुवा दीपक रखतीहैं ।

રામદુવાઈ–દવાઇ–દુવાઇ (सं.) राम दुहाई, रामचन्द्रकी सौगंध ।

રામદૂત (सं.) हनुमान, बन्दर, वानर ।

રામદાસ (सं) रामका भक्त ।

રામદાસિયું (वि.) गरीब, कंगाळ भिखारी, विपद्ग्रस्त ।

રામનવમી–નોમી (सं.) देखो રામજયંતિ । [चिंतन ।

રામનામ (सं.) भजन, ईश्वर

રામનામી (सं.) एक अंगूठी जिस पर रामका नाम अंकित हो ।

રામનું રાજ (सं.) ऐसा राज्य जिसमें प्रजा सबतरह स्वतंत्र और सुखी हो। ("हृष्ट प्रमुदितो लोक तुष्टपुष्टः सुधार्मिकः निरामयोह्य रोगश्च दुर्भिक्ष भयवार्जितः। नचाग्निजमयं किंचित्नाप्सु ज्वरकृतं तथा, नचापि क्षुधभयंतत्र न तस्कर नभयंतथा। नगराणिच राष्ट्रानि धनधान्य युता निच, नित्यप्रमुदिता सर्वे यथाकृत युगे तथा"। रामराज्यकी प्रशंसामें उक्त श्लोक महर्षि वाल्मीकिने लिखे हैं) स्वराज्य, सुराज।

રામનું રામાયણ (सं.) मिट्टीकाढेर।

રામપત્રિ (सं.) एकप्रकारकी औषधि

રામપાત્ર (सं.) एक प्रकारका मिट्टीका जळपीनेके लिये बर्तन, सकोरा।

રામફળ (सं.) एक प्रकारका फळ।

રામબાણ (वि.) अचूक गुणदायक अव्यर्थ, निष्फळ, गुणदायक।

રામબુઝાઈ (सं.) मिट्टीका मोटा भारी ढकना। [पाठ रामकी कृपा।

રામરક્ષા (सं.) रामकी स्तुतिका

રામરસ (सं.) नमक, लवण, क्षार।

રામરાજ (सं.) देखो રામનું રાજ।

રામરામ (सं.) सलाम, प्रणाम, अभिवादनके लिये यह शब्द प्रयोग होता है।

રામરોટી (सं.) साधुओंका भोजन, मोटी मोटी रोटी, रोट, टिकड़।

રામશરણથવું (क्रि.) मरजाना, समाप्त होजाना, स्वर्गवास करना।

રામરમીજવા (क्रि.) पूर्ववत्।

રામનું નામ દો-यह बात छोड़दो, किसीकीभी निन्दा न करना।

રામવગરનું (अ.) बेजान, बिनादमका।

રામનામ જપના ને પરાય માલ अपना धर्मकी आड़में नीच कार्य करना।

રામ રાખે તેને કોણ મારે=जिसपर ईश्वर अनुकूल हो उसे कौन मार सकता है?

રામ નામે પત્થર તરે=ईश्वरकी कृपासे असंभव बात संभव हो जाती है।

રામને રળવું નહિ ને સીતાને દળવું નહિ-निर्धन दशामें होना।

રામનું સપનું ભરતને આવ્યો=(सं.) बिलतो खोदे चूहा और वास करे सांप।

રામઝરૂખેબેઠકર સબકા મુજરા લેત। જૈસી જાકી ચાકરી વેસા ઉનકું દેત–जैसा करना वैसा भरना, कर्मानुसार फळ।

રામ આશરે (अ०) परमात्माके भरोसे, आश्रयहीन, दैव इच्छासे।

રામ કહાણી થવી–(क्रि.) रामचन्द्र के समान संकट या विपत्ति आपड़ना।

રામકૃષ્ણના વારાની (वि.) अत्यंत प्राचीन, बहुत पुरानी।

રામ કુંડાળું (वि.) गोळ चक्कर।

રામગલોલાજેવો (क्रि.) खूब मोटा ताजा, खा पी कर मस्त, अगड़बंब।

રામગાંડિયું (वि) बेडब, बेढंगा, पागल।

રામગેડીઓકરવો (क्रि.) गोल गेंदके समान लपेटना। [रेट।

રામચકકર (सं.) मोटी रोटी,

રામનામની (सं.) देखो રામડોળી।

રામનામતાળીઆપવી (क्रि.) मारमारकर अधमरा करदेना, मरणतुल्य पीटना।

રામબોલોથવો (क्रि) मरजाना, अन्त होना, स्वर्गवासी होना, इन्तकालहोना।

રામલક્ષમનનીજોડ = उम्दा जोडी, समाज रूपगुण लक्षण सम्पन्न पुरुष।

રામશરણકરવું–પહોંચાડવું (क्रि.) मारना, वध करना, मार डालना।

રામરખવાળું (वि.) जिसका केवल ईश्वरही रक्षकहो और आगेपीछे कोईभी नहो।

રામા (सं.) सुन्दर स्त्री, मनोहर स्त्री, वनिता, मानिनी, वामा, महिला।

રામાનુજ (सं.) हिन्दुओंका एक मत, इस नामका एक अवैदिक मतका प्रचारक मनुष्य दक्षिण भारतमें आजसे लगभग ७०० वर्ष पूर्व होगया है। इस मतके अनुयायिओंका चिन्ह मस्तकमें दो सफेद लकीरोंके बीचमें एक खडी लाल लकरिका तिलक है।

રામાયણ (सं.) त्रेतायुगमें उराजा दशरथके लड़के महात्मा रामचंद्रके जीवन चरित्र बताने वाली पुस्तक, रामचंद्रका इतिहास, वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, तुलसीकृत रामायण, अदभुत रामायण आदि। बड़ी विचित्र तथा असंभव बात।

રામણવેરીનાખવી (क्रि.) नुकसान करना, अतिशय दुख पहुचाना।

રામી (सं.) माळी, बागवान, फूलमाळी।

રામૈયો (वि.) बिना सूंडका चरस (पानी खीचनेका) चड़स, चरसा।

રામોસી (सं.) एक जंगली जाति विशेष, लुटेरोंकी जाति विशेष, चौकीदार, पहिरेवाला, रखवाला।

રાય (सं.) राजा, धनाढ्य पुरुष

રાયઆમળાં (सं.) आंवरा, आंवला, इस नामसे प्रसिद्ध फल।

રાયકવાળ (सं.) ब्राह्मणोंकी एक जाति विशेष।

રાયકો (सं.) ग्वाल, चरवाहा, अहीर।

રાયણ (सं.) एक वृक्ष विशेष, एक प्रकारका फल। [वृक्षका फल।

રાયણ કુકડી-કોકડી (सं.) रायण

રાયત (सं.) किफायत, कमी, न्यूनता, कृपा दया, मिहरबानी, अनुकम्पा, आराम, विश्राम।

રાયરંક (सं) धनी दरिद्री, किसी पटेल या गाँव के नम्बरदारका लड़का।

રાયણું (वि.) प्रतिष्ठित पुरुष सम्बन्धी।

રાવ (सं.) फरियाद, नालिश, चुगली, राजा, नरेश, भाट, राज कवि. बन्दी।

રાવજી (सं.) भाट तथा स्तुति गायक

રાવખાવી (क्रि) फरियाद करना, चुगली करना, झूंठी बातें पीछे से कहना।

રાવટી (सं.) छोटा तम्बू, छोटी छोलदारी पट भवन (छोटा)

રાવણ सं.) रावण नामक प्रसिद्ध लंका का राजाजो अनार्य्यथा और जिसे दशरथ के लड़के रामने माराथा। कहते हैं उसके दस सिर तथा बीस हाथथे।

રાવણ જેવું માં (सं.) चढा हुआ मुहँ, फूला हुआ मुहँ। क्रुद्ध मुख।

રાવણ થવું (क्रि.) मोटा होना, फूलना।

રાવણ રૂપ કરવું (क्रि.) मुहँ चढाना, मुहँ फूलाना, क्रुद्ध होना।

રાવણિયો (सं) गाँवका चौकीदार छोटेसे गांवड़े का पहिरेवाला।

રાવણું (सं.) राजपूत ठाकुरोंकी सभा। क्षत्रियों की खानगी सभा, चौकीदार अथवा सिपाहियों के रहने की जगह।

રાવળું (सं.) पूर्ववत्

રાવળું કરવું-ળું કરવું (क्रि.) राजपूतों का एक जगह इकट्ठ हो कर अमलपानी नशा करना, भाट इत्यादिको कसूंमा नामक नशेदार चीज देना।

રાવત (सं.) घुड़ सवार, अश्वारोही, अश्वरक्षक, अश्वपाल, साईस, सईस।

રાવતા (सं.) राजाकी रीति, राज कुल की रिवाज, राजत्व।

રાવલું (सं.) देखो રાવળું।

રાવળિયો (सं.) एक प्रकारकी शूद्र जाति जो प्रायः कपड़े बुनने तथा दातुन बेचने का धन्धा करते हैं।

રાશ (सं.) राशि, सरासर, हिस्से दारी, पांती, सहकार, ढेर, समूह, गधा, गर्दभ, गदहा, रासभ, समान गुण, लगामकी डोरी, रास।

રાશિ (सं.) नक्षत्रों के द्वादशचक्र (मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ औरमीन,) समूह, पुंज, ढेर। [रस्सी चांदीकीकण्ठी।

રાશડી (सं.) डोरी, सुतली,

રાશવા (वि.) डोरीकी लंबाईके बराबर फासला, १६ फुटका माप।

રાશી (वि.) खराब, हलकी जा-तिका।

રાષ્ણી (सं.) औषधि।

રાષ્ટ્ર (सं) देश, प्रांत, प्रजा, रैयत।

રાસ (सं.) घोड़ोंके या रथमें जुते हुए किसीभी पशु के चलाने रोकने की रस्सी, गोळ चक्करकी नृत्य क्रीड़ा, बारह राशियां (मेष, वृष-भ इ०) समानता साझा, पांती सहयोग, ढेर, पुंज, लगाम, मूल-धन, पूंजी।

રાસક્રીડા (सं.) वृन्दावनमें कृष्णका गोपियोंके साथ खेलाहुआ खेल, कृष्णके समान खेल।

રાસખાતુ (सं.) साझेदारी, हिस्से-दारी, सहयोगिता, सहकारिता।

રાસડી (सं.) डोरी, रस्सी, सुतळी चांदीकी कंटी।

રાસડો (सं.) एक प्रकारका राग, एक प्रकारका गरबा, नाच गान, खेल इत्यादि।

રાસધારી (सं.) कृष्णकी लीलाओंको खेळकर दिखानेवाळे, राधाकृष्ण बनकर नाचने वाले लोग।

રાસભ (सं.) खर, गधा, गर्दभ, गदर्हा । [खेळनेवाले पुरुष ।

રાળમંડળ–ળી (सं.) रासक्रीड़ा

રાસલીલા (सं.) देखो રાસક્રીડા ।

રાસી (वि.) खराब, गड़बड़युक्त, निरस ।

રાસો (सं.) झूठा किस्सा, अपूर्व कहानी, कहावत, परंपरागतगाथा ।

રાસ્ત (सं.) खरा, सत्य, उचित, सच्चा, वाजिब, मुनासिब योग्य ।

રાસ્તી (वि.) न्याय्य, ईमानदारी, औचित्य, सत्यता, वफादारी ।

રાસુંદો (सं.) अन्धा नेत्रहीन, अंध, जिसे रातको नहीं सूझे, रतौंधका रोगी, रात्रांध रोगवाला ।

રાહ (सं.) मार्ग, रास्ता, पथ, सड़क, रीति, तरह, ढंग, चाल, तर्ज, ढलि, राहू, ग्रह विशेष ।

રાહદારી (सं.) एकस्थानसे दूसरे स्थान जाने या सामान ले जानेका आज्ञापत्र, मार्ग, रास्ता ।

રાહજોવી (क्रि.) इंतज़ार करना, मार्ग निरीक्षण करना, बाटजोहना ।

રાહમારવો (क्रि.) धूळधानी करना, बरबाद करना, विनष्टकरना

રાહુ (सं.) एकग्रह विशेष, क्रूरग्रह हानि पहुंचानेवाला नीच पुरुष ।

રાળ एक प्रकारकी औषधि, यह अग्नि संयोगसे फौरन जल जाती है । धूनी, एक प्रकारका गोंद । एक प्रकारका सिक्का, डालर, इसका मूल्य लगभग ढाई रुपये के होता है, अमेरिका जापान आदि देशोंमें अब प्रचलित है । [करना ।

રાળવું (क्रि) साफकरना, शुद्ध

રિકઝીક (सं.) वादानुवाद, झिक झिक, बकबक, शास्त्रार्थ, विवाद ।

રિખવું (क्रि.) घूमना फिरना, भटकना । [का वृक्ष, ।

રિંગણી (सं.) भटेकापेड़, बैंगन

રિંગણું (सं) भटे, बैंगन राजकुष्माण्ड, वृंताक फल, सागके लिये फल विशेष ।

રિઝવું–ઝાવું (क्रि.) प्रसन्न होना, खुश होना, मुग्ध होना ।

રિઝવણુ (सं.) प्रसन्न होनेका कार्य ।

રિણાવટ (सं) समुद्र, सागर, सिंधु, उदधि ।

રિદ્ધિ (सं.) ऋद्धि, सम्पत्ति, वृद्धि, लक्ष्मी, दौलत, विभूति, ऐश्वर्य उदय उत्कर्ष समृद्धि, शुभ, क्षेम, कल्याण ।

રિદ્ધિસિદ્ધિ (सं.) सुख संपत्ति, वैभव, गणेशजीकी स्त्रियां ।

રિપ (सं.) तख्तेकी पट्टी या धज्जी
રિપુ (सं.) शत्रु, वैरी, द्वेषी, वि-रोधी, दुश्मन, अरि, जासूस, भेदू, गुप्तचर। [कष्ट देना।
રિબવું (क्रि.) पीड़ा पहुंचाना,
રિબાવું (क्रि.) दुखपाते रहना, बहुत समयतक तकलीफें उठाना।
રિવાજ (सं.) चाल, रीति, रस्म, मार्ग, आचार, अभ्यास, पद्धति, आदत, टेव मुहाविरा। [दुखद।
રિષ્ટ (वि.) खोटा, बुरा, अशुभ,
રિસામણ (सं.) रीस, कोप, नाराजी, खफगी, अप्रसन्नता, असंतुष्टता।
રિસામણું (वि.) जो जराजरासी-बातमें नाराजी प्रदर्शित करनेवाला।
રિસાવું (सं.) नाराज होना, कुपित होना, रूठना, चिढना, गुस्से होना।
રિસામણી (सं.) एक प्रकारका वृक्ष, लाजवतीका वृक्ष, लज्जावंतीका पेड़।
રિસાળ (वि.) देखो रिसामणुं
રીંછ (सं.) भालु, ऋक्ष, भल्लुक। एकवन्य मांसाहारी जीव विशेष, जंगली आदमी।
રીબવું (क्रि.) दुखी होना कष्टमें होना।
રીઝ-ઝ (सं.) खुशी, आनन्द, हर्ष, सन्तोष, प्रसन्नता, उपहार, भेंट।
રીઠ (सं.) देखो रिष्ट।
રીડ-ડ (सं) आवाज पुकार, चिल्लाहट, होहल्ला, शोर गुल,।
રીઢું (वि.) अत्यंत प्रयोगद्वारा मजबूत (मिट्टीका पात्र) कठिन, टिकाऊ, कठोर, दृढ।
રીત-તી (सं.) चाल, चलन, प्रकार, व्यवहार, मार्ग, राह, ढंग, तरीका।
રીતમાંરહેવું (क्रि.) लोकाचारसे विरुद्ध कार्य न करना, चलनके अनुसार वर्ताव करना।
રીતમાંઆવવું (क्रि.) समझ-जाना, ठोकरें खाकर योग्य कार्य करना।
રીતપડવી (क्रि.) रिवाज होना, आदत पड़ना, टेव होना।
રીતકરવી (क्रि.) जोकुछ कुलरीति हो उसे करना।
રીતરાખવી (क्रि.) रिवाजके अनुसार काम करना, मर्याद रखना।

रीतसर (अ.) रीत्यानुसार, रिवाजके मुआफिक, यथा विधि ।
रीतभात (सं.) रस्मरिवाज, रीति, चालचलन, वर्ताव, चालचलन ।
रीतरसम (सं.) तर्ज, ढंग, फेशन, तरीका मुहाविरा, सभ्यता। ।
रीति (सं.) देखो रीत ।
रीध (सं.) देखो रिद्धि ।
रीपोर्ट (सं.) बयान, हाल, वर्णन नोट, अफवाह, गप्प, जनवाद, लोकचर्चा, किम्वदन्ती ।
रीम (सं.) कागजोंके बीस दस्ते, ४८० कागज (के शीट)।[पुकार ।
रीर (सं.) लड़ाई, फसाद, हल्ला,
रीस (सं.) क्रोध, कोप, रोष, गुस्सा । [होना ।
रीस ઉતરવી (क्रि.) क्रोध शांत
रीस કરવી–ચઢાવી–ભરાવું (क्रि.) क्रोध आना,कोप करना,गुस्सा होना।
रुंआटी (सं.) रोम, छोटे छोटे, बाल, पश्म ।
रुंछ–रुंवुं (सं.) रोंवां, रूँआँ, रोम, लोम ।
रुंझुं (सं.) रोमावली, रोना,विलाप।
रुंढो (सं.) दोपहर का भोजन ।
रुंढमाळ (सं.) नरशिरमाला, मनुष्यकी खोपड़ियोंका हार, मुंडमाला ।
रुंढमाળ (सं.) पूर्ववत् । [वकल ।
रुंछां (सं.) नरियल के ऊपर का
रुंढमुंढ (सं.) गोल मटोल ।
रुंढो (सं.) दो पहरोंका भोजन, उपहार । [स्तंभन ।
रुंधणु (सं.) निरोध अवरोध,
रुंधवुं (क्रि.) रोकना, अवरोध करना, घेरना, स्तंभन करना, थामना ।
रुंवाडुं (सं.) रोम, लोम, रूआं, पशम।
रुंढलुं (सं.) रीस, रिस, रोष, क्रोध, कोप ।
रुआब (सं.) रवाब, मुखाकृति, ढंग,
रुएअे (सं.) देखो रुअे ।
रुएदार (वि.) जिसके भीतर रूई भरी हो, रूई सहित, रूई युक्त ।
रुआटी (सं.) देखो रुंआटी ।
रुकम (सं.) रोग, बीमारी ।
रुकवुं (क्रि.) अटकाना, रोकना, ठहराना । [लिखा हुआ पत्र ।
रुकको (सं.) छोटी चिट्ठी, संक्षेपमें
रुचि (सं.) भाव, मनोवृत्ति, इच्छा रुख ।

रूक्षत (सं.) छुट्टी, इजाजत, रजा ।
રૂક્ષત આપવી (क्रि.) निकाल देना पृथक कर देना, अलग करना ।
રૂખ-ડું (सं.) पेड़, वृक्ष, तरु, पादप, रुख, झाड़, गाछ ।
રૂખસત (सं.) देखो रूक्षत
રૂચવું (क्रि.) भाना, अच्छा लगना मनोहर मालुम होना, रुचिकर होना।
રૂચી (सं.) इच्छा, अभिलाष, मरजी, प्रसन्नता, आसक्ति, भाव, स्पृहा, मजा, हर्ष, आनन्द ।
રૂચિકર (वि.) सुन्दर, मनोहर, रुचिकर रुचिर मधुर ।
રૂચિર आल्हाद कारक, सुखद, मनोरंजक, रम्य, हर्षजनक ।
રૂજઆત (सं.) देखो रजुआत
રૂઝઆવવી-ઝવું-ઝાવું (क्रि.) बंदहोना, छिद्र रुकना, नई चमड़ी आना, दर्द मिटना, कान या नाक का छिद्र पुरना ।
રૂઠવું (क्रि.) नाराज होना, रूसना, मचल जाना, रूठना, खफाहोना, अप्रसन्न होना । [रीतिरिवाज ।
રૂડીઆલ (सं.) अच्छे आचरण,
રૂડું (वि.) उत्तम, उम्दा, उत्कृष्ट, सुंदर, योग्य, लायक, उचित, प्राह्य, रुचिर ।
રૂડું જીવવું (क्रि.) सुखमय जीवन काटना ।
રૂડું માણસ (सं.) भला आदमी, चतुर मनुष्य, सद्गुणी, गुणवान पुरुष । [रुलाई, आंसू डालना ।
રૂદન (सं.) रोदन, विलाप, रोना,
રૂદય (सं.) हृदय, दिल, अंतःकरण, छाती ।
રૂદ્ર (सं.) महादेवका नाम, परमात्माका नाम, द्वादशरुद्र कहाते हैं १ सोमनाथ, २ मल्लिकार्जुन, ३ महाकाळ, ४ ओंकार, ५ वैजनाथ, ६ भीमशंकर ७ रामेश्वर, ८ नागेश्वर, ९ विश्वेश्वर, १० त्र्यंबक, ११ केदार और १२ घुसृणेश (वि.) ग्यारहकी संख्याका संकेत ।
રૂદ્રતાલ (सं.) रागशास्त्रमें ताल विशेष।
રૂદ્રાક્ષ (सं.) एक प्रकारके वृक्षका बीज जिसमें छिद्र करके माला बनाकर पहिनते हैं, शिवभक्त इस मालाको प्रायः पहिनते हैं ।
રૂદ્રી (सं.) रुद्रका स्तुतिपाठ, कुछ वेद मंत्रोंका संग्रह करके शिवमूर्तिके सामने पढते हैं वह रुद्री, रुद्राष्टाध्यायी । पुस्तक विशेष ।

रुधिर (सं.) रक्त, खून, लोहू, लोही, शोणित, शरीरस्थ लाल वर्णका रस। [बंधन।

रुन्धन (सं.) रोक, आड़, अटकाव।

रुपाळुं (वि.) खूबसूरत, सुन्दर, रूप सम्पन्न।

रुपियो-पैयो (सं.) चांदीका प्रसिद्ध सिक्का, १६ आनेका सिक्का, रौप्य मुद्रा विशेष, कलदार। [रुपया।

रुपियो रोडो-भाग्य में ही एक

रुपेरी (वि.) रूपहरी, चाँदी के वर्णका चांदी के मुलम्मावाला, चांदी समान।

रुमक (स.) दांतकी हड्डी।

रुमझुम (वि.) मन्दमन्द जल वृष्टि, छुमक छुमक, रुमक झुमक, आ भूषण विशेष।

रुमढुं (सं.) देखो रुमांटी

रुमटी (सं.) शरीर में से खून खींच निकालने की नली। सींगी, सिंघी।

रुमडी (सं.) पूर्ववत्। [फिरना।

रुमवुं (कि.) घूमना, इधर उधर

रुमाडो (सं.) शोरकोलाहल, होहल्ला।

रुमाल (सं.) रेशमी या सूत अथवा ऊन के कपड़े का चौकोर टुकड़ा।

रुमी मस्तकी (सं.) एक प्रकारका गोंद, औषधि विशेष, रूमी मस्तंगी।

रुवांटी (सं.) देखो रुमढुं

रुवाब (सं.) मुर्दा, शव, मृतदेह, प्रेत, लाश। [रूईदार।

रुवेल (वि.) रूई से भरा हुआ,

रुवो (सं.) वह लोहेका गड्डे युक्त टुकड़ाजो द्वार के नीचे लगाते हैं। [लिखने की स्याही।

रुशनाइ (सं.) स्याही, मसि,

रुशवत (सं.) रिश्वत, घूंस, आलच किसी से काम निकालने के लिये दिया हुआ पदार्थ।

रुशवतखोर (वि.) घूंसलेनेवाला, रिश्वत लेनेवाला, लोभी, लालची।

रुसणुं (सं.) रूसना, मचलना, रूठना, लाड़ में नाराज होना।

रु(सं) रूई, कपास, तन्तु विशेष, तूस।

रुनाभाभला जेवुं (वि.) निर्दोष, साफ तथा कोमलसा।

रुओ (अ.) द्वारा, मार्फत, जरिये, से।

रुकार (सं.) मानलेना, सम्मति, हां, स्वीकृति, हां कहना।

रुडो (सं.) देखो रुकडो।

રૂખ (सं.) वृक्ष, तरु, पेड़, झाड़, मूळ, जड़, तर्क, अटकल, अन्दाज, अनुमान, कल्पना, कयास, अजमायश, विचार, अच्छा समय, अभिप्राय, इच्छा, हेतु, गाळ, चेहरा, मुख, शकळ, ढब, तर्ज, रुख, मुखमुद्रा।

રૂખી (सं.) ऋषि, मुनि, संत, साधु, महात्मा, तपस्वी, सिद्ध, मुमुक्षु।

રૂઝ (सं.) देखो રૂઝવું । [सम्मत।

રૂડું (वि.) लोकप्रसिद्ध, लोक

રૂઢિ (सं.) उत्पत्ति, प्रसिद्धि, सृष्टिक्रम, रीति, विधि, मार्ग, नियम व्यवहार, लोकाचार, जनरीति, शिरस्ता, पद्धति।

રૂણ (सं.) कर्ज, देना, ऋण।

રૂત (सं.) मौसम, अनुकूल समय ऋतु, अवकाश, अवसर, प्रसंग, हवा, जलवायु, आबोहवा, देशप्रकृति।

રૂતઆવવો (क्रि.) ऋतुमतिहोना, (स्त्री) छूनेकीहोना, कपड़ोंसेहोना चौकेबाहिर होना; मासिक धर्म होना।

રૂતુરાજ (सं.) वसन्त, उत्तमऋतु।

રૂદયા-દે (सं.) हृदयदिल (काव्यमें)

રૂપ (सं.) चेहरा, दिखावा, शकळ सूरत, ढंग, डौल, सांचा, मुहं, मुख, आकृति, रूप रेषा, आकार, सुंदरता, क्रम, मर्यादा, नियम, रीति, प्रकार, विधि, सौंदर्य, खूबसूरती, कांति, शोभा, स्वभाव, धर्म, प्रकृति, भाव।

રૂપરૂપનીભભૂકી (सं.) अतिशय तेजस्वी, तथा सुंदर।

રૂપનીગોળી (सं.) रुपया, कलदार चांदीका सिक्का।

રૂપેવસીજવું(क्रि.) अतिरूपवान होना।

રૂપ (वि.) समान, मिलताजुळता अनुरूप।

રૂપક (सं.) उपमा लक्षण, रूपवर्णन उपमान, काव्यालंकार, अभिनयका प्रदर्शक दृश्य काव्यविशेष, नाटक।

રૂપરંગ (सं.) आकृति, औररंग।

રૂપવતી-વંતી (सं.) रूपवाळी, सुरूपा, सुन्दरी, रूप लावण्य युक्तस्त्री।

રૂપવાન-વંતી (सं.) खूबसूरत सुन्दर।

રૂપાખ્યાને (सं.) संज्ञा, क्रिया, और अव्ययका वर्णन (व्याकरण शास्त्र)।

રૂપાવળી (सं.) एक संस्कृत पुस्तक जिसमें संज्ञा शब्दोंके रूप का वर्णन है, शब्द रूपावळी, (व्याकरणशास्त्र)

રૂપાળું (वि.) खूबसूरत, सुंदर मनोहर।

રૂપી (वि.) समान, सरीखा, जैसा एक से मिलताहुआ, सम्बंधी।

રૂપું (सं.) चांदी, रौप्य, धातु विशेष।

રૂપેરી (वि.) चांदीके रंगका, रौप्यवर्ण।

રૂપેરીઅંધછૂટવા (क्रि.) मृत्युके निकट पहुंचना, नाड़ियें छूटना, हाथपर ठंडे होना।

રૂબરૂ (अ.) सन्मुख, समक्ष, सामने, आमने सामनें, दृष्टि सामने।

રૂમાલ (सं.) मुहं पोंछनेका चौके-ना कपडेका टुकड़ा।

રૂલ-ર (सं.) कागजपर सतरें खींचनेका सीधा गोल डण्डा वगैरः।

રૂવું (सं.) रोंआं, रोम, लोम, मुलायमबाल।

રૂંવાડું બદલાવું (क्रि.) स्वभाव बदलना, आदत बदलना, प्रकृति बदलना।

રૂંવાડાંઊભાંથવાં (क्रि.) प्रेम अथवा भयसे रोमांच होना। रोंगटे खड़े होना।

રૂવેરૂવેજીવરાખવો (क्रि.) अत्यन्त फिक रखना, बहुत संभाल सावधानी रखना।

રુસવા (वि.) अपमानित।

રુસવાઈ (सं.) अपमान, मानभंग, फजीहत, बदनामी, तोहीन, धिक्कार, निंदा।

રુહ (सं.) आत्मा, जीव, प्राण।

રેંકળો-ડો (सं.) एक प्रकारकी बैल-गाडी, खूब चिल्लाकर रोना, रेंकना।

રેંગણુ (सं.) बैंगन, भटे, राज-कूष्मांड, वृंताक।

રેંજીપેંજી-જી (सं.) मुर्दा, निर्बल अशक्त, ढीला, सिटल्लू, निर्जीव।

રેંચિયોપેંચિયો (वि.) पूर्ववत्।

રેંજીપેંજી (वि.) पूर्ववत्।

રેંટ (सं) रहंट, कुएमेंसे पानी निकालनेका घट मालिका यंत्र, (वि.) देखो રેંજીપેંજી।

રેંટમાળ (सं.) वह घट मालाजो रहंटके गोल चक्कर पर पानी निकालनेके लिये पड़ी रहती है। अस्तोदय, घटा बढ़ी, धूप छांह, खाली और भरा।

રેંટિયો (सं) सूत कातनेका चरखा, रहंटा, चर्खा।

રૈલ (वि.) वाहुल्यता, पूर, बाढ, लोहकी सडक का मार्ग, रेलवे, लोहाँकी पटरी ।

રેલછેલ (सं.) वाहुल्यता, अनापसनाप, अनचाहा समृद्धि ।

રેલવે (सं.) लोहकी सड़क; लोहे की पटरी ।

રેલવું (सं.) पानीमें रहनेवाला सर्प, डींडु, पनियर सांप । (क्रि.) फैलाना, बिखेरना, उंडेलना, ढुलाना, दूरकरना, निकालना । [जाना ।

રેલાવું (सं.) पानीकी तरह फैल

રેલિયું (वि.) रेल विषयक ।

રેલો (सं.) किसी तरल पदार्थका दूरतक बहना, रेला, प्रवाह, बहाव, सोता, धावा, आक्रमण ।

રેવંચી (सं.) एक प्रकारकी वनस्पतिका रस । [रका हलुवा ।

રેવંચીનોસીરો (सं.) एक प्रका-

રેવડી (सं.) तिल और शक्कर तथा गुड़की चासनीसे बनाया हुवा पदार्थ, फजीहत, बरबादी ।

રેવડીકઢાવવી-કરવી (सं.) फजीहत करना, इज्जत बिगाड़ना ।

રેવડીદાનાદાનથવી (क्रि.) अपमान होना, कम इज्जती होना ।

રેવડીનાપેંચમાંલેવું (क्रि.) फाँसना, पंजेमें लेना, चक्करमें लेना ।

રેવતી (सं.) सत्ताईसवाँ नक्षत्र ।

રેવંતી (सं.) अश्व, तुरग, घोड़ा ।

રેવન્યુ (सं.) उपज, वसूलात, आय ।

રેવવું (क्रि.) टाँकालगाना, जोड़ना, मरम्मत करना ।

રેહેમદીલ-નજર (सं.) कृपादृष्टि, दया, स्हेनभाव, प्रीति, कृपा ।

રેશ (सं.) रज, कण, अणु, सबसे छोटा, जरा, थोड़ा ।

રેશમ (सं) एक कीड़ेके बनाये हुए तंतु जिन्हे वह अपने ऊपर लपेटता रहता है, जब उसका लपेटना बंद हो जाता है तब लोग उस रेशमको पानेके लिये उस कीड़ेको उबलते हुए पानीमें छोड़कर मार डालते हैं, उसपरसे जो तन्तु प्राप्त होते हैं वह रेशम कहाता है । सिल्क । [गाढमैत्री ।

રેશમનીગાંઠ (सं.) अत्यंत प्रेम,

રેશમનોકીડો (सं.) वह कीट जिससे रेशम मिलता है । [मळ ।

રેશમી (वि.) रेशमका, नर्म, कोरેષ (सं.) देखो रेखा ।

રેસ (सं.) एक रुपयेका चार सौ-वां भाग, १/४०० रुपया, आधी पाईसे कुछ कम, इस समय जैसे रुपये आने और पैसे चलते हैं उसी तरह कुछ वर्ष पूर्व यहां रुपये पावला और रेस चलते थे । देखो રેશ ।

રેસા (सं.) तंतु, तार, नस, धागा ।

રેસાદાર (वि.) तन्तुयुक्त, डोरी-दार ।

રેહેણ (सं.) जोड, टांका, सॉंधन ।

રેહેણી (सं.) देखो રેણી ।

રેહેણાક (सं.) रहनेका स्थान, देश वतन ।

રેહેમ-ત (सं.) दया, कृपा, अनु-कम्पा, छोह, माया, महरबानी ।

રેહેમદિલ-નજર (सं.) दयालु, कृपालु महरबान, कृपा, अनुकम्पा ।

રેહેવાદેવું (क्रि.) पड़े रहने देना, ठहराना, रखछोड़ना, रहनेदेना ।

રેહેવાસી (सं.) रहनेवाला, वासी ।

રેહેવું (क्रि.) रहना, बसना, ठह-रना, टिकना, मुकाम करना, आ-श्रित होना, छोड़ना, त्यागना, पड़ावकरना, वासकरना, निवास करना।

રેહેસવું (क्रि.) काटना, अलगक-रना, पृथककरना, भिन्नकरना ।

રૈઅત-યત (सं.) प्रजा, लोग, निवासी, मनुष्य, राजाकी सत्ता-माननेवाले ।

રોંઢવું-ધવું (क्रि.) चिकना करना साफ, करना, रन्दा करना ।

રોંધણું (सं.) बढईका औजार, विशेष जिससे वह काठको साफ करता है । रन्दा, रहा रंधा, रूखा ।

રોંધવું (क्रि.) रन्दा फेरना, चि-कना करना ।

રોંચું (वि.) जंगली, ग्रामीण, गंवडैल, विवेक चातुर्य्यहीन ।

રોટો (सं) तीसरे पहरका भोजन, अपराह्न काळका भोजन, ब्यालू, टिफन ।

રોક (वि.) नगद, कैश, रोकड़ा, (सं.) अट्टक, छेंक, आड़, रुकाव ।

રોકકળ (सं.) हायहाय, रोआपी, टी, विलाप, करुण, क्रंदन । [कैश ।

રોકડ (सं.) नगद, हाजिर रुपया,

રોકડમેળ (सं.) हिसाब किताब, क्यैश बुक, हिसाब लिखनेकी कि-ताब, जिसमें आयव्ययका लेखा रहता है ।

રોકડિયું (वि.) जो उधार नहो, जो तुरत जवाब दे,हाजिर जवाब । [सूखा जवाब ।

રોકડું (वि.) नक्द, नगद, सिक्कों के रूपमें धन ।

રોકડોજવાબ (सं.) तुरत जवाब,

રોકથી (सं.) रोक, आड़, अटक, प्रतिबंध, प्रतिकार, बन्दी ।

રોકવું (क्रि.) ठहराना, रोकना, अटकाना, उलझाना, आड़करना, अवरोध करना, विघ्नकरना काममें लगाना, नौकर रखना। [अटकाव ।

રોકાણ (सं.) आड़, रोक, बन्धन

રોકાવું (क्रि.) रुकना, अटकना, फंसना, उलझना, ठहरना ।

રોકાઇરેહવું (क्रि.) पूर्ववत् ।

રોકડ (सं.) पूंजी, मूलधन, नकद, नगद, रुपया पैसा ।

રોખ (वि.) देखो રોક (सं.) इच्छा, आकांक्षा, मरजी, रुख, (अ.) अहंकारमें, अभिमानमें ।

રોખળું (सं.) बखेड़ा, फिसाद, झगड़ा ।

રોખું (वि.) अनुसार, मुआफिक, जितने मूल्यका । (सं.) लक्कड़, ईंधन, जलानेका काष्ठ, बलीता ।

રોગ (सं.) व्याधि, पीड़ा, दुःख, शारीरिक अस्वस्थता, बीमारी, दर्द, आजार, विकार, मांदगी, क्रोध, गुस्सा, स्पर्द्धा । [बोलना ।

રોગમાંબોલવું (क्रि.) क्रोधमें

રોગકાઢીનાંખવું (क्रि.) ठिकाने लाना, क्रोध शान्त करना ।

રોગચાળો (सं)संक्राम रोग, छूतकी बीमारी, हवाके साथ फैलने वाला रोग । [प्रेतादि जनित पीड़ा ।

રોગરાઇ (सं.) रोग और भूत

રોગાન (सं.) रोगन, वार्निश, मोम तेल राल आदिसे बना हुआ पदार्थ ।

રોગાનચઢાવો (क्रि.) रंगना, टीपटाप करना, मरम्मत करना, ऐब ढांकना, दोष छुपाना ।

રોગાનફરવું (क्रि.) बिगड़ना, नुकसान जाना, खराब होना ।

રોગિયું (वि.) बिमार, रोगी, अस्वस्थ ।

રોગિલું (वि.) पूर्ववत् ।

રોગિષ્ટ (वि.) पूर्ववत् ।

રોગી (वि.) पूर्ववत् ।

રોચક (वि.) स्वादिष्ट, पाचक, रुचिकारक, मन भावन, मजेदार ।

રોગડી (सं.) व्याधिग्रस्त, रोगी, मिथ्या, बदमाशी, लुच्चाई ।

રોજ (सं) दिन, वार, दिवस, आठ प्रहर, २४ घंटोंका समय । मजदूरी, मजदूरीके एक दिनकी मेहनत । (अ.) सदा, नित्य, हमेश, प्रतिदिन ।

રોજઆરવું (क्रि.) रोना आना, दुःखसे छाती फटना, आंसू आना ।

રોજઉઠીને (अ.) दैनिक नित्य, हररोज ।

રોજગાર (सं.) उद्यम, धन्धा, पेशा, काम, व्यवहार, वृत्ति । [भरना ।

રોજભરવા (क्रि.) मजूरीके दिन

રોજગારસર (अ.) उद्यमसे, धन्देसे ।

રોજગારી (वि.) उद्यमी, जिसे अपने उदर पोषणकेलिये काम हो।

રોજનામું (सं.) दैनिक हिसाबकी किताब, डायरी, दैनिक पुस्तक (जिसमें हिसाब लिखा जाता हो ।)

રોજનિશી (सं.) डायरी, दैनिक कुल पुस्तक रोजनामचा ।

રોજમેળ (सं.) देखो રોજનામું ।

રોજરોજ (अ.) दिनप्रति दिन, नित्य हमेश, सदा ।

રોજનદાર (सं.) नित्य कामपर आने वाला मजदूर, वाहक्या ।

રોજી (सं.) धन्धा रोजगार, उदर पोषणका ढंग, आजीविका, गुजर, पैदायश, आय, आमद ।

રોજેજવું (क्रि.) मजूरी जाना, रोजाना मजदूरीपर जाना ।

રોજેરાખવું (क्रि.) दैनिक मजदूरी पर रखना । [दिन ।

રોજેકયામત (सं.) प्रलयका

રોજો (सं.) मुसलमानोंका उपवास व्रत, मकबरा, कबर ।

રોઝ (स.) एक प्रकारका जंगली तृण भोजी पशु, नीलगऊभी कहते हैं ।[रत, जो कुछभी न समझे ।

રોઝભેરો (वि.) जंगली, जड़भ-

રોટલી (सं) रोटी, फुल्का, चपाती, खानेका पदार्थ, गुजर, निर्वाह ।

રોટલો (सं.) मोटी रोटी रोट, टिक्कड़, ज्वारया बाजरेकी रोटी ।

રોટલોબાળવો (क्रि.) काम बिगाड़ डालना, गड़बड़ कर डालना ।

રોટલાબવા=दीपतंगोंके लड़ाते समय जब पेंच होजाते हैं तब यह वाक्य प्रयोग करते हैं । [कुछ भिड़ना ।

રોટલાબોગાળવું (क्रि.) आपसमें

રોટલાસ્નાનકરવું (क्रि.) भोजन-के लिये स्नान करना ।

રોટલેરડતી (अ) भूकों मरती ।

રોટલોકરવો (क्रि.) खूब पीटना, चूरा करदेना, संहार करना । [रोना ।

રોટલોધડવો (क्रि.) नाम पर-

રોટલોજવો (क्रि.) रोजगार जाना, उद्यम रहित होना, गुजारा बंद होना ।

રોટલો ટાળવો (क्रि.) चलता रोजगार बन्द होना, पेटपर लात मारना ।

રોટલો તુટવું (क्रि.) रोजगार बन्द होना, चलता धन्धा रुक जाना ।

રોટલો બગાડવું (क्रि.) चलता रोजगार खराब करना, हानि पहुंचाना ।

રોડી (सं.) हल्के दर्जेकी सुपारी ।

રોડું (सं.) ईंटका टुकड़ा, मिट्टी काढेला ।

રોડું (सं.) एक बड़ाकण्डेकी टुकड़ा, मोटा कण्डा, छाणा, ऊपळा।

રોડો (सं.) पूर्ववत् ।

રોળુ (सं.) फिसाद, तूफान, झगड़ा, विवाद, टण्टा, वाक्‌युद्ध ।

રોદડાં-ણાં (सं.) दुख की बात, शोक भरी बातें ।

રોદડાં રોવાં (क्रि.) रोते हुए अ-पनी दुःख कथा को वर्णन करना ।

રોદન (सं.) देखो રૂદન ।

રોધ (सं.) रोक, रुकावट, विरोध ।

રોધવું (क्रि.) रोकना, अटकाना, बन्द करना, विरोध करना ।

રોન (सं.) दोचार सिपाहियोंके साथ रात्रिके समय जांचके लिये निकळना रातका पहिरा । [भपका ।

રોનક (सं.) तेज, कांति, शोभा ।

રોપ (सं.) पौधा, छोटा वृक्ष, जड़, मूळ, मिथ्याडंबर, ठाठ, ढोंग, रोब, तेज । [मूळ लेना ।

રોપમાઝવો (क्रि.) जड़ेलेना,

રોપણી (सं.) बोवनी, पेड़ोंको लगाना, पौधोंको बोना या जमाना ।

રોપવું (क्रि.) भूमि में अन्न बोना, पौधे की जड़ जमीन में गाड़ना, बीज बोना, नीव डालना, शुरू-आत करना, बुनियाद डालना ।

રોપો (सं.) देखो રોપ ।

રોફ (सं.) देखो રોભ ।

રોફી (वि.) भड़कदार, आडम्ब-री, दिखाऊ, शेषी, गर्विष्ठ, दां-भिक ढोंगी ।

રોભ (सं.) भड़क, आडम्बर, ढोंग, दबदबा, गर्व शेखी ।

રોભડ (वि.) मूर्ख, बुद्धिहीन, गंवार अरसिक, निरानन्द ।

રોખડી (सं.) एक प्रकारका आभूषण जिसे स्त्रियां धारण करती हैं ।

રોમ (सं) लोम, रुआं, बाला । केश, पश्म मुलायम छोटेछोटे बाल।

રોમકૂપ (सं) रोमकी जड़कासरीरस्थ छिद्र, रुएंकी जड़का, रोमका छिद्र ।

રોમક્ષુ (सं.) नाई, नौआ, नापिक, नापित, हज्जाम

રોમહર્ષ (सं) पुलक, रोंगटें खड़े होना ।

રોમાંચ (सं.) रोमोंका खड़ा होना, भय आश्चर्य तथा हर्षसे रोंगटे खड़े होना ।

રોમાંચિત (वि.) पुलकित, रोमांच युक्त, भयभीत, प्रसन्न ।

રોમાવલી (सं.) रोमश्रेणी ।

રોવણ (सं.) रोदन, विलाप, रोना ।

રોવણી (सं) लंगर, (जहाज ठहरानेका) ।

રોયો (वि.) पिटा, कुटा, रोयाहुआ ।

રોલ (सं.) समुद्रीबीमारी, चक्कर, सिरघूमना, चिंता, गोता, रजिस्टर, केटलाग, एक प्रकारका रेशमी, वस्त्र।

રોંચું (वि.) मूर्ख, मूढ, मतिमन्द, शठ ।

રોવડાવવું (क्रि.) रुलाना, विलपाना।

રોવું (क्रि.) रोना, विलाप करना, ठगाना, ठगे जाना ।

રોશન (वि.) जाहिर, प्रकट, प्रकाशित, खुला, प्रत्यक्ष ।

રોશન વાળવું (क्रि.) बहुत हानि करना, धूलधानी करना, नष्ट करना ।

રોશન થવું (क्रि.) प्रकट होना, जाहिर होना, प्रकाशित होना ।

રોશનાઈ (सं.) मसि, स्याही, श्याही, चमक, दमक, प्रकाश, कांति ।

રોશની (सं.) प्रकाश, उजाला, तेज दीप्ति, द्युति, दमक, चमक, स्याही ।

રોષ (सं.) क्रोध, गुस्सा, कोप, रिस, अप्रसन्नता, नाराजी ।

રોહિણી (सं.) चतुर्थ नक्षत्र, शकटाकारमें पांच तारोंका समूह ।

રોહિતાશ્વ (सं.) अग्नि, आग, हुताशन ।

રોળ (सं.) घबराहट, हैजा, प्लेग, शोर, हल्ला, गुल्लापाड़ा, अव्यवस्था, गड़बड़, भयप्रदका कार्य ।

रोळचाळवो (क्रि.) महामारी फैलना, हैजा चलना, प्लेग आना ।

रोळवाळवी (क्रि.) आफत फैलाना रुलाना, अत्यंत हानि पहुंचाना।

रोळवावुं (क्रि,) चिढ़ना, गुस्से होना, खिझना ।

रोळावुं (क्रि.) मसलना, निचोडना दबाना, कुचलना, मथना, साफ करना ।

रोळावुं (क्रि.) खदडना, नीचे बबकर खूबमारखाना, थकना ।

रोळीडोळीवेळा (सं.) संधिप्रकाश संध्याकाळ, मन्दप्रकाश. मुखदीख सकने योग्य, प्रकाश, ब्रह्ममुहूर्त ।

रोळो (सं.) हल्ला, बकबक झकझक भांजगड, पंचायत, कमाई पैदा ।

रौद्र (वि.) भयानक, भयंकर, (सं.) रस विशेष ।

रौद्ररस (सं.) नवरसमेंसे एक विशेष (नाटक तथा काव्यमें क्रोधोत्पन्न रस । [कष्टदायकनर्क।

रौरव (सं.) नरकविशेष, असंत

ल

ल—गुजराती वर्णमालाका ३९ वां अक्षर, २८ वां व्यंजन अक्षर, अंतस्थ अक्षरोंमें का एक ।

लई आववुं (क्रि.) ले आना, लाना, प्राप्त करलाना । [करना ।

लई जवुं (क्रि.) लेजाना, सहन

लई पडवुं (क्रि.) लेपड़ना, लपेटना, उलझाना, फंसाना, पकड़ना, गिर पड़ना, ऊपर आना ।

लई बेसवुं (क्रि.) लेबैठना, कब्जा करना, अधिकारमें करलेना, आरंभ करना ।

लई मुकवुं (क्रि.) पकड़ना, ले रखना, रखछोड़ना, तय्यार रखना ।

लई लेवुं (क्रि.) लेलेना, वापिस लेना, पकड़ना ।

लखोओ (सं.) देखो लोओ ।

लकवो (सं.) एक प्रकारका रोग, वात रोग विशेष, पक्षाघात, जिस रोगमें कोई अंग बांका होजाता है और जीभको भी तुतलापन आजाता है, अर्धांगवात ।

लकार (सं.) 'ळ' अक्षर "ल" का उच्चारण ।

लकीर (सं.) रेखा, धारी, चिन्ह, पंक्ति, पांति, लाइन, सतर, रूल ।

लखुंदरो (सं.) रंडीबाज, इश्की, व्यभिचारी, छुच्चा ।[नफा, फायदा ।

लखुंभो (सं.) लाभ, मुनाफा,

લકુટિ (सं.) लकुट, छड़ी, लाठी, यष्टि ।

લક્કડ (सं.) काष्ठ, काठ, लकड़ी, कुन्दा, म्याल, शहतीर, धरण, इमारती, लकड़ी ।

લક્કડકામ (सं.) लकड़ीका काम, सुतारका काम, बढ़ईका धन्धा ।

લક્કડકોટ (सं.) लकड़ीका बनाया हुआ किला । वह बंदर जहां जहाजमेंसे लक्कड़ उतरते हों । लकड़ियोंसे बनाया हुआ बाड़ा ।

લક્કડખોદ (सं.) इस नामका एक पक्षी होता है, जो अपनी चोंचसे लकड़को छेद कर अपने खानेको कीड़ा निकाल लेता है । कठफोड़ा पक्षी, खाती चिड़ा ।

લક્કડધક્કડ (क्रि. वि.) सपाटे बंद, घन घोर, अगड़बंब ।[लिना ।

લક્કડધક્કડલેવું (क्रि.) सपाटेमें

લક્કડશી (सं.) एक प्रकारके लड्डू, बिना घीके लड्डू, (वि.) कठोर कठिन, सख्त ।

લક્કડિયું (सं.) वह काठकी सन्दूक जिसमें रोज रसोई खर्चेका मसाला पड़ा रहता है । काठका वह पात्र जिसमें गुड़ाखू इत्यादि तमाखू पड़ी रहती है । (वि.) कठोर, सख्त । [क्षी एक जाति ।

લક્કી (सं.) कबूतर नामका प-

લક્ષ (सं.) ध्यान, एकाग्र दृष्टि, चित्त, निशान, दृष्टि, निगाह, (वि.) संख्या विशेष, लाख, सौहज़ार ।

લક્ષણ (सं.) चिन्ह, पहिचान, स्वभाव, प्रकार, रीति, भांत, छाया, रूपक, चाल चलन, आचरण, वर्ताव, गुण, दिखाव, शील, रूप, आदत, व्यसन ।

લક્ષણવંતું (वि.) शुभ चिन्हयुक्त, सुलक्षणयुक्त, गुणी योग्य, कार्यपटु, चतुर, प्रवीण, विचक्षण, क़ाबिल ।

લક્ષણા (सं.) शब्दकी शक्ति विशेष, शब्दार्थसे सम्बन्ध रखने वाले, अध्याहार, पदन्यूनता । [अवश्य ।

લક્ષવસા (अ.) जरूर, निश्चय,

લક્ષવું (क्रि.) धारना, निश्चय करना, ताकना, निशाना बाँधना, इरादा करना, आशा रखना, राह देखना, अंदाज लगाना, ढूँढना, जानना ।

લક્ષાધિપતિ (सं.) लाख रुपयों की सम्पत्ति सम्पन्न पुरुष ।

લક્ષાધિશ (सं.) पूर्ववत्

લક્ષાવધિ (अं०) लाखों, बहुत, जिनकी संख्या लाखों की हो।

લક્ષી (वि.) ध्यान रखनेवाला, सावधान, चौकस, एकाग्र, एकचित्त

લક્ષ્મી (सं.) विष्णुप्रिया, इन्दिरा, कमला, हरिवल्लभा, ऐश्वर्य्य, धन, सम्पत्ति, दौलत, धनकी अधिष्ठात्री देवी, शोभा, भाग्यशीला स्त्री, यह लक्ष्मी दस प्रकारकी कहाती है (१) नकदद्रव्य, (२) स्त्री, (३) पुत्र (४) बरतन भांडे (५) रहने का घर (६) गाय भैंस आदि (७) वाहन, (८) सुख (९) जागीर और, (१०) यश। अथवा धन, धान्य, पशु, पुत्र, गृह, आरोग्यता, उद्यम, यश, सन्तोष और ज्ञान।

-લક્ષ્મી ચાંલ્લો કરવા આવે ત્યારે -મોં ધોવા આવવું=जब लाभ होनेकी आशाकी जावे तब निरुद्यमी बनकर बैठ जाना।

-લક્ષ્મીપૂજન (सं.) आश्विन कृष्णा १३ को धनकी पूजा लोग करते हैं। गुजरातमें आश्विन और अन्यत्र उस महीनेको कार्तिक लिखते हैं। गुजरात और अन्यप्रांतीय मासमें १५ दिनका अंतर होता है अतएव, दीपमालिका, धनतेरस, दिवाली।

લક્ષ્મીવંત-વાન (सं.) धनाढ्य, धनिक, धनी, दौलत मन्द, श्रीमंत, धनपात्र।

લક્ષ્ય (वि.) ध्यान देने योग्य, निशाना, ताकने लायक, देखने योग्य।

લખ (वि.) लाख, लक्ष (सं.) लत, छंद, लक्ष्मी, सौ हजार।

લખણ (सं.) लिखाहुआ, लक्षण, चिन्ह।

લખણી (सं.) लिखनेकी क्रिया। सूची। देखो लखाणु।

લખત (सं.) सनद, लेख, पट्टा।

લખતંગ-ખિતંગ (वि.) लिखनेवाला। लिखावट।

લખપતી (वि.) देखो लक्षाधीश।

લખલખ (अ.) तीक्ष्ण, स्वच्छ, साफ।

લખલખ અજવાળું (सं.) अलौत प्रकाश, बीचबीचमें, चमटकर बोलना।

લખલખવું (क्रि.) किरणों के साथ प्रकाश होना, जगमगाना, कांपना, थर्राना, धूजना। [होना।

લખલખવું (क्रि.) फटना, पीड़ा

લખલખાટ (सं.) जगमगाहट, डर, भय, तेज।

લખલખિત (वि.) चमकदार, जगमगाता हुआ, प्रकाशित, भपकेदार।

લખલૂટ (सं.) अधिकता, बहुतायत, विपुलता।

લખવું (क्रि.) लिखना, रचना, जोड़ना चित्र बनाना, खोदना, अंकित करना, ध्यानपूर्वक देखना। नकल करना।

લખવો (क्रि.) देखो લકવો

લખાઇ-મણ-ણી (सं.) लिखने का मेहनताना, लिखाई, लिखनेकी मजदूरी, लेखकका वेतन।

લખાણ-વટ (सं.) लिखावट, लिखनेकाढंग, इबारत, श्रुतलिपि, दाखिला, दस्तावेज, प्रार्थना पत्र, अर्जी, सनद। [की झिक झिक।

લખારો (सं.) बकबक, व्यर्थ-

લખાવટ (सं.) देखो લખાણ।

લખાવવું (सं) लिखना, कूदपड़वा, (कार्यमें) उतरवाना। [होना।

લખાવું (क्रि.) पड़ना, कमजोर

લખિત (सं.) भाग्य, भावी, लिखालेख, लिखा हुआ, दस्तावेज, ठहरा हुआ। [लेखक।

લખિવંત (वि.) लिखनेवाला,

લખીઆપવું (क्रि.) लिखकर देना, सनद देना, सर्टीफाय करना।

લખું પતરું (सं.) लिखित, लेख, दस्तावेज। [લખપતી।

લખેશ્રી-શરી-સરી (वि.) देखो

લખોટવું (क्रि.) मुलम्मा करना, पालिश करना, कलई करना।

લખોટી (सं.) लाखकी बनी हुई छोटीगोली।

લખોટો (सं.) लाखकी बड़ी गोली, प्रायः बच्चे और लड़कियां इससे खेला करते हैं। बन्द कियाहुआ या मुहर चपड़ी किया हुआ कागज।

લખ્યાં (देखो) દૈવોલખત।

લખ્ખણ (सं.) देखो લક્ષણ।

લગ (सं.) सीधी पतली लकड़ी जो छप्पर बनाते समय काममें लाई जाती है। (अ.) तक, लौं, तलक।

લગડી (सं.) सोनेकी छड़, स्वर्णका पासा ।

લગડું (सं.) गधेके ऊपर बोझा लादनेका थैला, गधे परका बोरा, गदहेके पीठपर चौखूंटा लकड़ीका वजन भरनेका । गधा, गदहा, गर्दभ, रासभ, ख, बोझा, वज़न ।

લગણ (अ.) सीमा, मर्यादा, हद्द, सूचक शब्द, तक, तलक, लौं ।

લગત (सं.) सम्बन्ध, मेळ, जान पहिचान, समीपता, घरोपा, (वि.) देखो લગતું । (अ.) पासही, निकटमें नजदीक ।

લગતી (सं.) पक्ष, तरफ, शर्म, (अ.) अड़कर, सटकर, पाससेही ।

લગતું (वि.) सम्बंधी नाते रिश्तेदार, समीपी, प्रेमी, निकट सम्बन्धी ।

લગદી (सं.) लुगदी. लुबदी ।

લગન (सं.) विवाह, शादी, लड़के लड़कियोंका गार्हस्थ सम्बन्ध, प्रेम संबंध, पांच घड़ीका काल, लगभग दोघंटोंका समय, रातदिनमें १२ मुहूर्त होते हैं, प्रेम, पाणिग्रहण, परिणय ।

લગનલેવું (क्रि.) विवाहका दिवस निश्चय करना । विवाहका मुहूर्त ठहराना । [तय्यारी करना ।

લગનમાંડવું (क्रि.) विवाहकी

લગનકરવું (क्रि,) विवाह करना शादी करना ।

લગનજોવું (क्रि) वरकन्याकी जन्म पत्री देखकर विवाहका दिन और समय निश्चित करना ।

લગનઘડીયાલેવા (क्रि.) जैसे बने तैसे जल्दीसे विवाह करना ।

લગનનાગીત લગનમાં ગવાય = हरेक वस्तु मौसिममेंही मिलती है ।

લગન કરી જુવો ને ઘર ઉકેલી જુવો = कहनेसे करना कठिन है ।

લગને લગનેકુંઆરા = हरेक बातमें तय्यार ।

લગનગાળો (सं.) वह समय जिसमें कुछ अंतरसे बहुतसे विवाह हों ।

લગનચોઘડિયું-ઘડી (सं.) विवाह के समय की घडी (चार घडीका एक चौघडिया होता है) लग्नघटी।

લગનપડો (सं.) रोली, कुंकुम हरिद्रा या अन्यमांगलिक वस्तुका पुडा जो वरकी तरफसे विवाहके दिनों में कन्या के यहां भेजा जाता है ।

લગનસરા–સારા (सं.) देखो लगनगाळो ।

લગનિયો (सं.) कन्याका कोई सम्बन्धी जो वर को बुलाने जावे, मामा इ० । [युक्ति, प्रबन्ध ।

લગની (सं.) लय, ध्यान, लगन,

લગભગ (अ०) आसपास, निकटही, प्रायः, करीब, अन्दाजन ।

લગરીએક–રીક (वि.) थोडा, कुछ, जराक, कुछेक, तनिक ।

લગવાડ (सं.) सम्बंध, प्रेम, आशिक माशूकोंका प्रेम, प्रीति, आसक्ति ।

લગાડવું (क्रि.) लगाना, छुआना, टिकाना, नौकरी पर करना, सुलगाना, चुपड़ना, अर्थ करना, भाषांतर करना, सीना, चिपकाना, ध्यान देना, मानना, मारना, ठोकना ।

લગામ (सं.) घोड़ेको वशमें रखने के लिये उसके मुहमें लगाने के लिये कड़ियोदार लोहेका टुकड़ा जिन कड़ियोंमें चमड़ेकी रस्सी या सूत सन आदिकी रस्सी डालते हैं और जिसे थामकर घोड़े को काबुमें रखते हैं, अंकुश, मर्यादा, सत्ता, अधिकार, बंधन, रोक, अटकाव । [ढीलदेना ।

લગામઆપવી (क्रि.) छोड़ना,

લગામ છૂટી મૂકવી (क्रि.) वशमें नहीं रखना, स्वेच्छानुसार फिरने देना, स्वतंत्रता देना ।

લગામ હાથમાં આવવી (क्रि.) अधिकारमें आना, हाथआना ।

લગામમાં રાખવું (क्रि.) अधिकारमें रखना, मर्य्यादामें रखना ।

લગાર–રેક (अ.) थोड़ासा, ज़रा, कुछेक, कुछदूर, तनिक, अल्प ।

લગાવવું (क्रि.) चुपड़ना (दवाई), मारना, भिड़ाना स्त्री संभोग करना, मैथुन करना ।

લગી (अ.) तक, समय पर्य्यंत ।

લગે (अ.) पूर्ववत् (विस्मया.) यह शब्द साहस बढानेके लिये बोला जाता है जैसे लगे लगे । छू लगे छू लगे ।

લગોલગ (अ.) नजदीक, पासही निकट, सटकर, एक दूसरेके समीप ।

લગ્ગુ (अ.) जो पांछे लगाहो पास, समीप, निकट । [न्तर ।

લગ્ગું (अ.) बाद, पश्चात, अन-

લગ્ન (सं.) देखो લગન ।

લગ્નકાર્ય (सं.) विवाह कार्य ।

લગ્ન કુંડળી (सं.) जन्मपत्री, जन्मके समयपर गणित करके द्वादश गृहोंमें यथा स्थान गृहोंको रखकर एक पत्री बनाना (ज्योतिष विषय) ।

લગ્ન ઘટિકા (सं.) वह घड़ी जिसमें वर कन्याका पाणिग्रहण होता है ।

લગ્નતથ-તથી-તિથી (सं) विवाह दिवस, पाणिग्रहणका दिन ।

લગ્નપત્રિકા (सं. जिस कागज पर विवाह करनेका शुभ समय लिखा हो । पोली चिठ्ठी, लग्नचिठ्ठी ।

લગ્નમંડપ (सं.) एक अस्थायी मंडवा जो विवाह संस्कार के समय बना लिया जाता है । वैवाहिक वितान ।

લગ્નમૂહુર્ત (सं.) विवाहकी घड़ी, फेरोंका समय, पाणिग्रहणका वक्त ।

લધિમા (सं) लघुता, छोटाई, छोटापन, लाघव, अष्ट सिद्धियोंमें से एक ।

લઘુ (वि.) छोटा, हलका, ह्रस्व-वर्ण, अल्प, तुच्छ, सरल, सुगम, सहल, एक मात्रिक स्वर । ठिंगना, नाटा ।

લઘુકોણ (सं.) छोटाकोना ।

લઘુતા-ઈ (सं.) छोटापन, छुटाई, नीचता, निचाई, ओछापन ।

લઘુત્વ (सं.) पूर्ववत् ।

લઘુનીતિ (सं.) लघुशंका, कमलाज युक्त कार्य ।

લઘુલાઘવી (सं.) पेचीदा तदबीर, प्रपंच, पेच, दांव, युक्ति, छलछंद ।

લઘુવૃત્ત (सं.) छोटा गोलचक्कर ।

લઘુશંકા (सं.) जिस काम में कुछ शरम आती है, पेशाब करना, मूतना, प्रस्राव करना, नाड़ाछोड़ करना ।

લટકવું (क्रि.) झूलना, टंगना, हिलना, भूमि से ऊपर किसी वस्तुको पकडकर रहना, गले में फांसी डालकर मरना, गिरने के योग्य होना, नीचा झुकना, निराधार होना, भटकना । लटकना ।

લટકાવવું (क्रि.) हिलाना, झुलाना, टांगना, लटकाना, फांसी देना या चढ़ाना ।

લટકાળુ (वि.) हावभावयुक्त, नाज नखरेवाला, लटका करनेवाला ।

લટકું (સં.) हावभाव, अंगभंगी, नाज़, नखरा, अदा, बनावटी चाल, लचक।

લંક (वि.) धनाढ्य, धनी, श्रीमंत, तर, पतली कमर।

લંક લાગવું क्रि.) धनवान होना, पैसा होना।

લંક લગાડવું (क्रि.) धनवान बनाना।

લંકા (सं.) इतिहासप्रासिद्ध राक्षसेन्द्र रावणकी राजधानी, सीलोन, वृक्ष, घर बन्दर राक्षस इत्यादि बारूदके बनाकर जिसमें एकदम आग लगा देते हैं वह आतिशबाजी।

લંકા કરવી (। क्रि.) सुलगाना, भड़काना, आग लगाना।

લંકા લૂટવી (क्रि.) बहुत धन प्राप्त कर लेना।

લંકાની લાડી(=)बहुत दूरकी कन्या।

લંગડ (वि.) लंगड़ा, लूला, पंगु, पंगुला।

લંગડાવું (क्रि.) लंगड़ाकर चलना।

લંગડું (वि.) देखो લંગડ।

લંગર (सं.) जहाज़ या नाव ठहराने के लिये लोहेका बना हुआ भारी कांटा, पैरों में पहिनने का एक आभूषण विशेष। वह रस्सीया डोरी जिसके एक सिरे पर कुछ वज़न बंधा हो। लड़के प्रायः ऐसी डोरियां बनाकर आपस में फेंककर, उलझाकर खेलते हैं।

લંગરવું (क्रि.) लंगर डालना, जहाज़ अथवा नाव ठहराना।

લંગરી (सं.) बच्चों के पैरों में पहिनाने का घुघरूदार आभूषण विशेष। [डेकी चाल।

લંગાવું (क्रि.) लंगड़ाना, लंग-

લંગૂર (सं.) वानर विशेष, बड़ी पूंछवाला बन्दर, लखुआबन्दर, काले मुख और हाथपांवका बन्दर, पूंछ, पुच्छ, लांगूल, दुम।

લંગૂરિયું (सं.) पूंछ, पुच्छ, दुम, बन्दर, बड़ी पूंछवाला बन्दर, मर्कट, कपि बानर।

લંગુલ (सं.) पुच्छ, पूंछ, दुम, लांगूल, कपि, बन्दर, वानर, मर्कट, लंगुर कीश।

લંગોટ (सं.) कछोटा, लंगोटी, रुमाली, जांघिया, लिंग, और गुदा इंद्रियोंके गोपनार्थ वस्त्र विशेष।

લંગોટબંધ (वि.) जिसने स्त्री प्रसंग कभीभी नहीं कियाहो, ब्रह्मचारी, यती, जितेन्द्रिय, पवित्र, निर्दोष, जती।

લંગોટિયો (सं.) बालसखा, बालमित्र, बाल्य कालका मित्र, बाबा, फक्कड़, वैरागी, तपस्वी, साधू, फकीर, जोड़ीदार, साथी, यार बाश, समवयस्क। [दोस्त।

લંગોટિયોમિત્ર (सं.) बचपनका

લંગોટી-ટો (सं.) कमरमें बंधे कटिसूत्रमें अटकाकर लिंगन्द्रिय ढंके उतनी चौड़ी लम्बी कपड़ेकी चिन्धी। कौपीन, कछनी, करधनी।

લંગોટીમારવી (क्रि.) वैरागी। होना, अपने पासका सब मालमत्ताखो बैठना। खाली हाथों होना।

લંઘન (सं.) लांघना, पार करना, उछाल, कूद, उपवास, अनाहार, फांका संयमन, निवृत्ति परहेज।

લંઘવું (क्रि.) लांघना, फांका, करना, उपवास करना, अनाहार करना, व्रत करना पार करना।

લંધી (सं.) रोनेको आनेवाली स्त्रियाँ (कई जातियोंमें रोनेको किराये पर स्त्रियां बुलाई जाती हैं।)

લંધો (सं.) सहनाई बजानेका धन्धा करने वाला मुसलमान।

લંબોરૂં (वि.) रूप संपन्न (स्त्री)।

લચક (सं.) नवन, झुकाव, लचीला।

લચકવું (क्रि.) लचकना, नमना, झुकना लचना, अंग भंगी करना।

લચક લચક (अ.) बड़ेबड़े ग्रास खाकर जल्दी जल्दी (खाना)।

લચકો (सं.) पोचा और ढीला पदार्थ, (वि.) गाढा, ढीला, पोचा, नर्म। [लगाना, लपेटना, पोतना।

લચડવું (क्रि.) चुपड़ना, रगड़ना,

લચ્ંડ-લચાંડ (सं) सिर फुटौवल कराने वाला (मनुष्य अथवा कार्य इ०)।

લચપચ (वि.) चिकना, गीला, तर।

લચલચવું (क्रि.) देखो लचवुं।

લચવું (क्रि.) बीचमेंसे थोड़ासा झुक जाना, नमना, टेढा होना, लचकना शरण होना, अधिकारमें होना, झुकना।

લંછન (सं.) देखो લાંછન।

લછ (सं.) मांजा, काच पीसकर सरेस या लही इत्यादिमें मिलाकर धागेपर चुपड़ा हुआ धागा, जो पतंग उड़ानेके लिये विशेषतया बनाया जाता है।

લજવવું (क्रि) लज्जित करना, शरमिंदा करना लजाना, शरमाना।

લજવાવું (क्रि.) लज्जित होना, शरमिंदा होना। सिर झुकाना।

લજામણી (सं.) एक प्रकारका वृक्ष जिसे पुरुष अथवा वेश्या स्त्रीका स्पर्श होतेही सारे पत्ते सिमिट जाते हैं, लाजवंती, लजवंती, लज्जावंती। जिससे लज्जा उत्पन्न हो।

લજામણું (वि.) जिससे लाज पैदा हो, लजानेवाला।

લજાવવું (क्रि.) शरमाना, लज्जित करना, नीचा दिखाना।

લજ્જા (सं.) शर्म, व्रीड़ा, त्रप, लाज, संकोच, शील, मर्यादा, विनय, नम्रता, अपकीर्ति, कलंक, अपमान।

લજ્જાયમાન-વાન (वि.) मर्यादशील, निरभिमानी, विनयी, शरमदार।

લજ્જાળુ (वि.) लज्जावाला, संकोची, लजवंतीका पौदा।

લજ્જાશીળ (वि.) देखो લજ્જાયમાન। [माया हुआ।

લજ્જિત (वि.) व्रीडित, शर-

લટ (सं.) लहरी केश, सिरकेबालोंकी एक गुच्छली, मस्तकके बालोंका उलझा हुआ एक गुच्छ। फंदा, पाश, जाळ, पेच उलझन। मोतियोंकी लड़ी।

લટક (सं.) ढंग, रीति, भांति, प्रकार।

લટકણ-ણિયું (सं.) झूमर, झूमका, लटकनेवाली कोई वस्तु, लटकन।

લટકતીચાલ (सं.) अलबेली चाल, अदापूर्ण चाल, लचकदार चाल।

લટકતું (वि.) लटकता हुआ, निराधार, निराश्रय, अधबीचका, निरुद्यमी।

લટકતું મૂકવું (क्रि.) निराधार छोड़ना, मंझधार छोड़ना, उद्यमहीन करना।

લટકાવવું (क्रि.) फांसी चढ़ाना, लटका देना, मुअत्तिल करना।

લટકો (सं.) नखरा, अदा, हावभाव, अंग भंगी, टुटका, टोना, जन्तर मंतर।

લટકોઝટકો (अ.) अचानक, अकस्मात् दैवयोगसे, योगात, दैवात, प्रसंगात्।

લટખટ (वि.) हुनरी, गुणी, चालाक, मक्कार, नटखट, चंचल।

લટખટાઇ (सं.) गुण, चालाकी, चांचल्य, मक्कारी, नटखटपन।

લટપટ (अं.) यह शब्द तोते के साथ बातचीत करते समय "लट. पट पंछी" कहके प्रयोग करते हैं। झटपट। जल्दी।

લટપટ કરવી (क्रि) भूल छुपाने के लिये जल्दी करना, घसड पसड़ करना।

લટપટિયું (सं.) उस्तरा तेज करने के लिये चमड़ेका टुकडा। कोथली, पेटी। (वि.) चंचल, उतावला, जल्दबाज।

લટપટિયાંકર–नाईका कामकर।

લટર (सं.) पुष्पकी रेखाएँ, फूल में की लकीरें, भटकना।

લટવું (क्रि.) लगना, भिड़ना, जुटना, हटना, सरकना, समझ जाना, सकुचाना।

લટિયાં (सं.) बहुतसी बालोंकी गुछलियाँ, लटें, उलझे हुए बालों की बत्तियाँ।

લટિયાં પિંખવાં–પીંખવાં (क्रि.) मार डालना, कुचल डालना।

લટિયાં ગુંથવાં (क्रि.) भीतरही भीतर खूब घनिष्ठ सम्बन्ध होना।

લટુરી (वि.) लटकती, झूलती, आनंद में नाचती हुई।

લટ્ટુ (वि.) मोहित, आसक्त, जो एक ही विषय में फँस रहा हो, तल्लीन, तन्मय, विषयान्ध, पागल, मुग्ध, (सं.) भौंरा, भ्रमर. एक प्रकारका खिलौना। यह गोल काठका होता है नीचे एक छोटी सी नोंकदारकील लगी होती है, इसको रस्सी लपेट कर घुमाते हैं। शांत, चुप. स्तब्ध, शिथिल।

લટ્ટુ થઈ જવું (क्रि.) मुग्ध हो जाना, तल्लीन हो जाना।

લઠ–ઠ્ઠ (सं.) लाठी, सोंटा, डण्डा, यांग्र, डाँग, लठ्ठँगी। (वि.)मोटा, स्थूल, पुष्ट, बलवान हृष्टपुष्ट।

લઠિંગો (सं.)लठ्ठ,लुच्चा,बदमाश,

લઠો (सं.) लाठी, सोंटा, लम्बा डण्डा, एक प्रकारका कपड़ा, (मोटा नादरपाट) (वि.) बलवान, भारी, पुष्ट, फिसादी।

લડકણું (वि.) टंटाखोर, झगड़ालू, फिसादी, तकरारी, लड़ाका।

લડત (सं.) तकरार, फिसाद, झगड़ा, विवाद, मुकद्दमा, लड़ाई।

લડથડવું (क्रि.) ठोकर खाना, भूलना, चूकना, आपड़ना, तुतलाना, हकलाना, लड़ खड़ाना, डगमगाना, हिच किचाना।

લડથડિયું (सं.) ठोकर, चूक, भूल, ठेस ।

લડધું (वि.) बड़ा (सं.) तोफानी, आवेशी, मोटाताजा ।

લડથડવું (क्रि.) ठोकर खाकर गिर पडना झूलना, लटकना ।

લડથડિયું (वि.) ठोकर खाकरभी दौड पडनेवाला, हडबडिया ।

લડવાડ (सं.) लड़ाई, तकरार, झगड़ा ।

લડવું-ઢવું (क्रि.)लड़ना, झगड़ना, फिसादकरना, कलहकरना, विवाद करना, टंटा करना, युद्ध करना, रण करना, संग्राम करना, समर करना, मुकद्दमा लड़ना ।

લડવૈયો (सं.) भट, वीर, योद्धा, अच्छा लड़ाका, बहादुर, मल्ल, पहलवान ।

લડસડવું (क्रि.) झूलना, लटकना ।

લડાઈ-ઢાઈ (सं.) युद्ध, संग्राम, संगर, रण, अनबन, फिसाद, झगड़ा, टंटा, विवाद, संघर्ष, मुकद्दमा, मुठभेड़ ।

લડાઈ વેચાતી લેવી (क्रि.) दूसरे की लड़ाई में फँसकर स्वयम् लड़ने लगना ।

લડાઈ-ખોર-રી (वि.) झगड़ालू, फिसादी, विवादी, लड़नेवाला, तकरारी ।

લડાઉ-યક (वि.) लड़ने योग्य, रणधीर, रणशूर, योद्धा, रणदुर्मद ।

લડાબડ-ડી (सं.) देखो લડાઈ

લડાવવું (क्रि.) लड़ाना, भिड़ाना, जुझाना, लड़ाई कराना ।

લડું (सं.) सुनारके कामका एक प्रकारका ताम्बेका औज़ार ।

લડુ (सं.) देखो લાડું ।

લઢણ (सं.) रीति, ढंग, तर्ज़, ढब, ढांचा, आदत, टेव ।

લઢવું (क्रि.) देखो લડવું ।

લઢાઈ (सं.) देखो લડાઈ ।

લણવું (क्रि.) कतरना, काटना, तोड़ना, छुनना, बालेंबीनना नीचे पड़ा हुआ उठाना, बीनना, फसल काटना, गुणग्रहण करना, फल भोगना, जान लेना, समझना ।

લણનાર (वि.) काटनेवाला, फसल काटनेवाला, भोगनेवाला, मजदूर ।

લંડ (सं.) पुरुषकी मूत्रेंद्रिय, लुच्चा मनुष्य, ठग, धूर्त, शठ, खल, वंचक, लबार, हरामखोर ।

લંઢાર (सं.) धूर्त, कपटी, ठग, लुच्चा, बदमाश, दुराचारी, व्यसनी ।

લત (सं.) बान, अभ्यास, बुरी आदत, टेव, चाल, ध्यान, लय, लगन ।

લતા (सं.) बेलि, बेल, बल्ली, बल्लरी।

લતાકુંજ
લતાગૃહ (सं) कुटीर, मंडवा, कुंज, बितान, पर्णकुटी, पर्ण
લતામંડપ शाला, लता भवन ।

લતાડ (सं.) फटकार, धिक्कार, बहाना, छल, लात, पादप्रहार ।

લતાડમારવી (क्रि.) बुरे रास्ते करना, हानि करना ।

લતાડખાવી (क्रि.) पछाड़ खाना नुकसान उठाना ।

લતાડખાઈજવું (क्रि.) युक्ति पूर्वक बदल जाना, कुपरिणाम होता देखकर संभळजाना ।

લતાડવું (क्रि.) खराब करना, बुरी दशा करना, बिगाड़ना, हानि करना ।

લત્તાં (सं.) चिरकुट, चिथड़ा, फटा पुराना कपड़ा, कपड़े ।

લત્તાંલેવાઈજવાં (क्रि.) लुटे जाना, लुटना, नुकसानमें पड़ना, खबर लेनी ।

લત્તો (सं.) गांवकी सीमाका भाग, मुहल्ला, पुरा, बिल्ला, वाड़ा ।

લથડવું (क्रि.) લડથડવું देखो ।

લથડાવવું (क्रि.) देखो લડથડાવવું ।

લથડીઉં (सं.) अचानक अथवा रोगसे चक्करआना, मूर्च्छा, चक्कर ।

લથબથ (अ.) लदफद, पासपास, निकट भेटाभेट, ऊपर नीचे ।

લથરપથર (सं.) खूब लिपटा हुआ।

લદબદ (सं.) ढीला पदार्थ, किसी तरल पदार्थमें लिपटना, (जैसा कीचड़) तल्लीन, मग्न ।

લપકારો (सं.) लपलपकी क्रिया, झटबाहिर आना और अन्दर जाना (जैसी सांपकी जीभ) ।

લપ (सं.) उपाधि, पीड़ा, संताप, आपत्ति, पाप, जंजाल बारबार कहकर सिरपचाने वाला मनुष्य, विघ्न (अ०) जल्दीसे, शीघ्रतापूर्वक ।

લપલપને (अ०) पूर्ववत् ।

લપકો (सं.) सबड़का, सुरड़का, उलाहिना, उपालम्भ, ताना, टूना मर्म वचन । चिकना और गाढ़ा पदार्थका भाग ।

લપકો ઝપકો (सं.) जो झटपट और सहजहीमें बन जावे ।

લપેટવ (सं.) चालमेल, गड़बड़ सड़बड़ चंचल, फुर्तीला, सावधान ।

લપટ (સં.) लौ, सुगन्ध, महक, लपकी, लपट, पेंच. दाव, सपाटा (अ०) तल्लीन मग्न।

લપટઝપટ (સં.) खींचातानी, पेच युक्त बातचीत।

લપટવું (क्रि.) सटना, मिलना, लगना, लिपटना, चिपकना, पेचमें लेना। [चाना, फंसाना।

લપટાવું (क्रि.) लपेटाजाना, लल-

લપટું (वि.) ढीला, नरम, बि- खरा हुआ, लालची (मनुष्य)।

લપડવું (क्रि) लपेटना, चुपड़ना लेसना, लीपना, लेपन करना।

લપડાક (सं.) थप्पड़, तमाचा, चपत, चपेटीका, धौल, धप, धप्पा।

લપડાક મારવી (क्रि.) थप्पड़ मारना, तमाचा मारना, धप्पा मारना।

લપડાક ખાવી (क्रि.) थप्पड़ खाना, ठगेजाना, छलेजाना, हानि उठाना।

લપેડો (सं.) लेपन, पोतना, थे- पड़ना।

લપલપ (सं.) बाहिर आना और अन्दर जाना, सपाटाबन्द, झटझट, शीघ्र, लपरलपर, बकबक, झिक- झिक, वाचालता, जबानी बात- चीत। [भाम, बकवाद।

લપલપાટ (सं.) गड़बड़, घूम-

લપલપિયું (वि.) व्यर्थही अधिक बोलनेवाला, झक्की, जल्दबाज, अविचारी।

લપવું-પાવું (क्रि.) लुकाना, छु- पाना, दबकाना, दुबाना।

લપસણું (सं.) रपटन, फिसलन, चिकना, लुआबदार।

લપસવું (क्रि.) फिसलना, रपटना गोता खाना, घिसट पड़ना, कूच करना।

લપાવું (क्रि.) छुपाना, लुकाना।

લપાઈ બેસવું (क्रि.) छुप बैठना, दबक जाना, चुपचाप हो रहना।

લપુક (सं.) लपलप, फैलना तथा सिकुड़ना।

લપુંડ (वि.) ऐसा मनुष्य जिसके पेटमें बात न रहती हो और बिना पूछे ही बक देता हो। बकवादी, वाचाल, बहुत भाषण करनेवाला, बातूनी।

લપેટવું (क्रि.) बेठनियाना, लपे- टना, पलेटना, वेष्ठन करना, ढकना, सम्मिलित करना, फांदेमें लेना, पकड़ना। [ढके जाना, वेष्ठित होना

લપેટાવું (क्रि.) मिलना, लिपटाना

લપેટો (सं) आच्छादन, आंटा, ढांकन, आवरण।

લપેડવું (क्रि.) गाढ़ा चुपड़ना, लीपना, थथेड़ना, पोतना, लेसना।

લપેડાવું (क्रि.) थिबड़ना, पुतना, लथेड़े जाना, लिपना।

લપોડ (सं.) शठ, मूर्ख, एक प्रकारकी गाली।

લપોડશંખ (सं.) डपोलशंख, गप्पी, दांन मूर्ख, दम्भी, आडम्बरी।

લપોડો (सं.) बड़ी लिंगेन्द्रिय, बड़ी उम्रके पुरुषकी मूत्रेंद्रिय, लंड।

લપ્પડ (सं.) थप्पड़, तमाचा, चपत, धप।

લપ્પનછપ્પન (सं.) बढाबढाकर वर्णन, अतिशयोक्तिपूर्वक कथन।

લપ્પનછપ્પન કરવી (क्रि.) डंडी पना करना, मिथ्या प्रशंसा करना, कच्चो पत्ती करना, तीनपांच करना, खुशामद करना। चापलूसी करना।

લપ્પનછપ્પનિયું (वि.) खुशामदी, चापलूस, मिथ्या प्रशंसक।

લપ્પનછપ્પન (अ.) चुपकेसे, छुपकर, चोरीसे आंखें बचाकर।

લપ્પાદાર (वि.) चौड़े गोटेकी किनारी वाला, लप्पीदार, गोटेयुक्त।

લપ્પો (सं.) लप्पा, पट्टा, गोटा किनारी।

લફંગાઈ (सं.) धूर्तता, लुच्चापन, गप्पाष्टक, लबारपन, निर्लज्जता।

લફંગુ (सं.) धूर्त, ठग. गप्पी दगाबाज, झूंठा, उद्धत, लबार।

લફડતું (वि.) लटकता हुआ, बिखरा, खुला, घिसटता (वस्त्र)।

લફડવું (क्रि.) घिसटना, लटकना।

લફરૂં (सं.) संकट, मुसीबत, पीड़ा, कष्ट, दुःख, साथ लगे हुए मनुष्य, अपने काममें दूसरेका काम आजाना, उळझन, झंझट, बाधा, विघ्न, संकट, रोक, आड़, उपाधि, जंजाळ।

લબ (सं.) होठ, ओंठ, ओष्ठ, लार, मुखका चिकना थूक।

લબડધક્કે (अ०) परवाह न करके अच्छी तरह, उच्छृंखल रीतिसे, जौ रजुलमसे, बळ पूर्वक, यथाशक्य।

લબડધક્કેલેવું (क्रि.) खूब खबर लेना, बुरी तरहपीपड़ना, लत्ते लेना, खूब डाटना, धमकाना, थप्पड़ और धक्के मारना।

લબડતું (वि.) लटकता हुआ झूलता हुआ।

લબડવું (क्रि.) लटकना, टंगना, झूलना। [काना, झुलाना।

લબડાવવું (क्रि.) टांकना, लट-

લપતડું (वि.) पतला, मुर्दार, निर्बल, कृश, क्षीण। [वाला।
લપાચિયો (वि.) फटे चिथरों
લપાચો (सं.) फटावस्त्र, चिथड़ा, जीर्णवस्त्र, कथरा।
લપાડ-ડી (वि.) मिथ्या भाषी, झूट बोलनेवाला, लबार, गप्पी, (सं.) अनृत, अतथ्य, झूंठ, असत्य।
લબોચું (सं) मुख, मुहं आनन, वदन, जीभ, जिव्हा, बोली, वाणी, वाचा। [संपादित।
લબ્ધ (वि.) प्राप्त, उपार्जित,
લબ્ધા (सं.) बालबच्चे, परिजन, कुटुम्बके लोग, कुटुम्बी।
લબ્ધિ (सं.) प्राप्ति, लाभ, हाथ लगाना, हाथमें आना।
લભ્ય (वि.) प्राप्त करने योग्य, प्राप्तव्य, प्राप्य, प्राप्तिके योग्य।
લમણું (सं.) कनपटी।
લમણાઝીકવા (कि,) माठा फोड़ करना सिरपच्ची करना।
લમણોહાથદેવા (कि.) हिम्मत हारना, आशा भंग होना, साहस छोड़ना।
લંપટ (वि.) दुराचारी, दुष्कृत, झूठा, असत्यवादी, विषयी, रंडीबाज, कामी।
લંબ (वि.) लम्बा, दीर्घ, विस्तीर्ण, ऊंचा, बड़ा लंबा, (सं.) समुद्रका पानी नापनेका डोरीमें बांधा हुआ शीशेका वजन। साबल, पानी नापनेका यंत्र, दीवारको सूधी देखुनेके लिये डोरीमें बांधा हुआ पत्थर या किसी धातुका गोला।
લંબકર્ણ (सं.) गधेडा, गधा, गर्दभ, रासभ, खर, (वि.) लम्बे कानवाला। [कृति।
લંબગોળ (सं.) अंडाकार, अंडा-
લંબવર્તુલ (सं.) दीर्घ वर्तुल, अंडाकृति। [ऊंचान।
લંબાઈ (सं.) लम्बाई, लम्बान,
લંબાણ (सं.) विस्तार, फैलाव, लंबाई। [करना, पहुंचाना।
લંબાવવું (कि.) बढाना, लम्बा
લંબાવું (कि.) सोना, शयन करना, लेटना, लम्बीतानना, वृद्धिहोना, बहुत चलना।
લંબૂસ-સિયો (वि.) आवश्यकतासे अधिकलम्बा, बहुत ऊंचा, लम्बड़।
લંબોચાઈ (सं.) सीधी ऊंचाई।
લંબોદર (सं.) गणपति, गणेश, महादेवका लड़का (वि.) मोटे पेटका।

લય (सं.) नाश, ध्वंश, प्रलय, विनाश, ताल, स्वर, लीन, मग्न, लवलीन, संहार, अच्छेद, ळय, लगन, एकाग्रचित्त, समाजाना ।

લયાનત (वि.) शरम, लानत, नामोशी, बदनामी । [टँकतीं ।

લલકામમાન (वि.) झूलता, ल-

લલકાર (सं.) हांक, पुकार, डांक, बढ़ावा, प्रोत्साहन वाक्य, हुंकार ।

લલકારવું (कि.) आह्वान करना, ललकारना, युद्धार्थ पुकारना ।

લલચાવવું (क्रि.) लुभाना, ललकाना, तरसाना, ललचाना, लोभमें डालना, आकर्षित करना, मोहित करना ।

લલચાવું (कि.) लुभना, मोहित होना, ललचाना, लालयित होना ।

લલના (सं.) महिला, नारी, कामकला, स्त्री, प्रवीणाङ्गी, वामा, कामिनी ।

લલાટ (सं.) मस्तक, सिर, कपाळ, भाग्य, प्रारब्ध, नसीब, तकदीर ।

લલાટરેખા–લેખ (सं.) विधाताके अंक, कर्मरेख, भाग्यरेखा ।

લલિત (वि.) सुन्दर, नाजुक, कोमळ, सरस, मनोहर, चंचळ, मनभावन । रागविशेष जो प्रातः कालके समय गाया जाता है । मौजी, लहरी ।

લલિતા (सं.) जवान, मनोहरस्त्री।

લલુતા (सं.) चाह, इच्छा, इरादा, आकांक्षा ।

લલુપતા (सं.) तृष्णा, लोभ, लालच, लल्लोपत्तो, चाटुकारी ।

લવ (सं.) अंश, भाग, क्षण, निमेष, पल, (अ०) लेश, जराक, अल्प, थोड़ा, न्यून, कम, कुछेक ।

લવંગ (सं.) वृक्षविशेषका फूल, इस नामसे प्रसिद्ध, लौंग, लौंगकी आकृतिका कानोंमें पहिननेका आभूषण विशेष ।

લવંગિયું (वि.) लौंगकी आकृतिका कानमें पहिननेका जेवर विशेष ।

લવંગિયું મરચું (सं.) गरम खनका तेजमिजाज़, चपळ, तीक्ष्ण मिरच।

લવણ (सं.) नमक, नोंन, नून, खारा, क्षार, तेज, कांति (वि.) खारा । [की बातें ।

લવરી (सं.) बकवाद, गप्प, व्यर्थ-

લવલવ (सं.) पूर्ववत् ।

લવલવવું (क्रि.) गप्पें मारना बडबडाना ।
લવલવાટ (सं.) देखो લવલવ।
લવલેશ (अ०) ज़राक, थोड़ा, अल्प, लेशमात्र, कुछेक ।
લવવું (क्रि.) अकारण खूब, बोलते रहेना, बकना बडबडाना ।
લવાજણ (सं.) लावण्यता, बोलनेकी मिठास ।
લવાજમ (सं.) फांस, वेतन, हक़, अलाउंस, लौंस, आधिकार, दस्तूरी । [अमीन ।
લવાદ (सं) पंच, न्यायी, मध्यस्थ
લવાદી (सं.) पंचायत, निर्णय, न्याय ।
લવાર (सं.) लुहार, लोहकार, लोहेकाधंदा करेनेवाली एक जाति विशेष। [नेका मुहल्ला ।
લવારવાડો (सं) लोहारोंके रह-
લવારી (सं.) देखो लवरी ।
લવારૂ (सं.) नवजातबालक, दूध पीताबच्चा, छोटा बछडा या बछिया
લવિંગ (सं.) देखो લવંગ ।
લવેંગ (सं.) पूर्ववत् ।
લવ્વો (सं.) मश्करा, दिल्लगीबाज ।
લબ્જ (सं.) शब्द, लफ्ज़, अक्षर समूह ।
લશ્કર (सं.) सेना, फौज, अनी, पलटन, रिजमट, जत्था, समुदाय टोली ।
લશ્કરના વાળા (अ०) अनियामित ।
લશ્કરી (वि.) फौजी, सैनिक, फौज विषयक (मनुष्यवस्तु इ०)
લસડતું (वि.) चंचल, अधीर, अस्थिर । [लशुन, लस्सन ।
લસણ (सं.) लहसुन, कंदविशेष
લસણિયું (वि.) लहसन मिलाहुवा ।
લસણિયો (सं.) एक प्रकारका बहुमूल्य पत्थर ।
લસતું (वि.) शोभित, लासित, प्रकाशित, ढीला, नरम, लचलचा ।
લસરકો (सं.) घिस्सा, रगडा ।
લસરિયું (वि.) देखो લાસરિયું
લસલસતું (सं.) गाढा, चिकना और चमकदार ।
લસલસવું (क्रि.) गाढा होना, चिकना और चमकदार होना ।
લસલસાટ (वि.) पुष्कळ, खूब, बहुत ।
લસવું (क्रि.) शोभित होना, शोभना, खेलना, फिसलना, रपटना ।
લસોટવું (क्रि.) घोटना, बारीक पीसकर मिलादेना रगडना ।
લહેકો (सं.) स्वाद, जायका ।

લહરી (सं.) लहर, तरंग, बीचि, ऊर्म्मि।

લહવુ (क्रि.) जानना, मालूमकरना।

લહાવ઼ુ (सं.) नफा, लाभ, मुनाफा, प्राप्ति, आय, उत्पति, आमद।

લહાણી (सं.) अच्छे शुभ कार्यके समय उपस्थित रहने वालोंको एकही प्रकारका इनाम देना।

લહાવું (क्रि.) हिस्सा करदेना, बांट देना, भाग करदेना।

લહિયો (सं.) लेखक, नकलनवीस, अनुवादक, पुस्तक लिखनेवाला।

લહી (सं.) लेही, लाई, (आटे या मैदाकी बनी हुई चिपकानेके काम आती है)।

લહે (सं.) स्वाद, मज़ा, लज्जत।

લહેકવું (क्रि.) लटकमें चलना, लचकना। [लटक।

લહેકો (सं.) लचक, अंगभंगी,

લહેર (अं.) झोंका (पवनका), लहर प्रदर्शक कपड़ेपर आड़ी टेढी रेखाओंका चित्र, निशानी, प्रभाव, तर्क, वितर्क, आलस्य, नशा, ऊंघ, तरंग, ऊर्म्मि, बीचि, हिलोर, विषचढनेका पर्व, कपड़े रंगनेकी प्रक्रिया।

લહેરિયાં (ळं.) झोंकें, तरंगें, हिलोरें, वस्त्र पृथ्वीकागज इत्यादि पर लहर समान रेखाएं।

લહેરિયું (सं.) स्त्रियोंके पहिननेका एक प्रकारका आभूषण।

લહેરી (वि.) मनमौजी, आनन्दी, तरंगी, मदमस्त, नशेबाज, इश्की, विषयी, अस्थिर, संदिग्ध।

લક્ષવું (क्रि.) ध्यान पूर्वक सुनना, ध्यानदेना, एकाग्र चित्त करना।

લળકવું (क्रि.) उत्कंठित होना, लालायित होना, उमंगसे घूमते घूमते आना।

લળવું (क्रि.) झुकना, नमना, नीचा होना, हारना स्वाद लगाना, भाना। [मोड़।

લાંક (सं.) लचक, बळ, टेढापन,

લાંગ (सं.) एक प्रकारकी दाल।

લાંઘણ (सं.) उपवास, व्रत, लड्डन, निराहार काळक्षेप।

લાંઘણી (सं.) गाड़ीको समान खड़ी रखनेके लिये दोडदण्ड, टेकी, यह धुरीके पास बंधे होते हैं जहां गाडीको सीधी खडी करनी हो वहां इन्हें लगादेते हैं। टेमी।

લાંધવું (सं.) बिना अन्नजल ग्रहण किये। [वास करना।

લાંધવું (क्रि.) व्रत करना, उप-

લાંધો (सं.) लंघन, उपवास, व्रत, रोज़ा।

લાંચ (सं.) घूंस, पच्चर, रिश्वत।

લાંચ આપવી (क्रि.) घूंस देना, रिश्वत देना, मुट्ठी गरम करना, मुठ्ठी भरना।

લાંચખવાડવી (क्रि.) पूर्ववत्।

લાંચખાવી (क्रि.) घूंस पच्चर लेना, रिश्वत लेना, हाथ मारना, जेब गरम करना।

લાંચ ખવરાવવી (क्रि.) रिश्वत देना, घूंस देना, दाबना।

લાંચ (सं.) दबाव, नमन, भार।

લાંચખાઉ-ખોર (वि.) दुष्ट, नमक हराम, रिश्वतखोर घूंस लेने वाला।

લાંચવું (क्रि.) दबना, झुकना, नमना, रिश्वत देना, घूंस देना।

લાંચિયું-ચીઉં (वि.) रिश्वत लेने वाला घूस लेना वाला।

લાંચું (वि.) कम, थोड़ा, न्यून।

લાંછું (सं) लांछन, धब्बा, दाग, कलंक निशानी, चिन्ह, ऐब खोट।

લાંજો-ઝો (सं.) हरकत, आड़, रोक।

લાંઠ-ઠિયું (वि.) लुच्चा, ढोंगी, धूर्त, शठ, तुफानी, मस्त।

લાંઠાઈ (सं.) धूर्तता, शठता, छल, कपट, लुच्चाई।

લાંઠો (सं.) रखा हुआ खसम, यार, आशिक।

લાંણુ (सं.) लाभ, फायदा।

લાદો (सं.) देखो લોદો।

લાંપ (सं.) लेम्प, चिराग, दीवा, दीपक, कन्दील, लालटेन, दीप, दीया।

લાંપડું (सं.) लंबू, घासका कांटा, सूखाघास, हरा छोटा गला हुआ घास।

લાંપી-ખી (सं.) काच जमानेका चिकना पदार्थ, सफेदा और बेल तेलका मिश्रण।

લાંબડાંગિયું (वि.) जिसकी टांगे बडी हों, लम्बी टांगों वाला।

લાંબી (सं.) स्मृति, स्मरण, याद, स्मरण शक्ति, याददाश्त।

લાંબાટુંપી (सं.) अमर्याद भाषण, गाली गुफ्ता, गाली गलौज़।

લાંબીનજર (सं.) दीर्घ दृष्टि, दूर दृष्टि।

लांबुं (सं.) लम्बा, दीर्घ, ऊंचा, दूरका विस्तृत, बडा ।

लांबोविचार (सं.) भविष्यका विचार, दूरदृष्टि, भविष्य दृष्टि ।

લાંબુકાઢવું (क्रि.) बहुतजीना, बहुत वर्ष जीना ।

લાંબું થઈજવું (क्रि.) मरजाना, जमीनपर सोजाना, ऊंची वस्तु लेनेके लिये पैरोंकी अंगुलियोंके बल ऊंचे हाथ करके खडे होना, व्यापारमें बहुत हानि होना ।

લાંબીસેખણે લખવું (क्रि.) शक्तिसे अधिक कार्य्य करना ।

લાંબાજોડે ટુંકોજાય-મરેનહી તો માંદોથાય=देखा देखी साधे जोग, मरेनही तो व्यापे रोग, बडेकी बराबरी नहीं करना ।

લાંબીખેચવી (क्रि.) मरजाना ।

લાંબીછેલ્લાઉંઘ (सं.) मौत, मृत्यु, कज़ा । [करना ।

લાંબીફાળ ભરવી (क्रि.) हिम्मत

લાંબીસોડે સુંવું (क्रि.) मरना ।

લાંબીખેંચવુ (क्रि.) ढील करना, अधिक जीना ।

લાંબું પિંગળ કરવું (क्रि.) बढा-बढाकर कहना, आतिशयोक्ति कथन ।

લાંબેપાટે સુંવું (क्रि.) दिवाला निकालना, मरण तुल्य होना, अत्यंत दुर्दशामें होना, अत्यंत हानिमें आना ।

લાંબે સાથરે સુંવું (क्रि.) दूर-दृष्टि रखकर इस तरहका कार्य करना जिससे ठोकर भी न खाना पड़े । मृत्यु होना ।

લાંબો હાથ કરવું (क्रि.) रिश्वत लेना, मदद करना, हाथ डालना, हस्त क्षेप करना, बाधा डालना ।

લાંબુકરવુ (क्रि.) लंबा करना, पीटना, धुनना, ठोकना । [नसीब ।

લાંભવું (क्रि.) किस्मत, प्रारब्ध,

લાણું (स.) पूर्ववत् ।

લા० (सं.) " लिखतम् लिखी " का छोटारूप ।

લાઈ-હી (सं.) लेही, गेहूंके आटे या मैदाका बनायाहुवा चिपकानेका पदार्थ, ल्याही, अवलेही ।

લાઈલાજ वि.) निरुपाय, लाचार उपायशून्य ।

લાઉલશ્કર (सं.) फौजफांटा,सैन्य ।

લાઓલાદ (वि.) पुत्रहीन,निपुत्र, बांझ (स्त्री), निस्संतान ।

લાએક (वि.) योग्य लायक ।

લાકડ (सं.) लक्कड, काष्ट, काठ, बळीता, काठी, जळानेका काठ,

ईंधन (वि.) लकड़ीका, लकड़-
काबना ।

લાકડકુકડ (सं.) लकड़ीके टुकड़े
इत्यादि फरनीचर, काठकबाड़ ।

લાકડસાઈ-ડી (सं.) एकप्रकारकी
मिठाई, एकप्रकार के बेसनके
लड्डू (कठोर)

લાકડાંવાળો (सं.) लकड़ीबेचने-
वाला, कठियारा, ईंधनबेचनेवाला ।

લાકડી (सं.) लकड़ी, छड़ी, सोटी,
कमड़ी, कमची, आधार, आश्रय,
टेका ।

લાકડીલેવી (क्रि) लकड़ी उठाना,
मारनेके लिये लकड़ी लेना,
बुढापाआना । [कष्ट देना ।

લાકડીકરવી (कि.) तंग करना,

લાકડું (सं.) लकड़, शहतीर,
म्याल, तीर, ईंधर, काठ, इमा-
रतीलकड़ी । [परवाह न करना ।

લાકડઅકાપવા (क्रि.) नागिनना,

લાકડા લડાવવા (क्रि.) झूंटीसची
भिडाकर लड़ाई कराना ।

લાકડાં સંકોરવાં (क्रि.) उत्तेजना
देना, उसकान, उकसाना, पुण्य
कार्य् करना । [नेका तरीका ।

લાકડાનીતરવાર (सं.) काम धका-

લાકડાંમાં પૈસા મળવાના નથી
खोजानेपर मिलना कठिन है ।

લાકડીએ પાણી સિંચવું (क्रि.)
असंभव कार्य करना, जो जिसका
काम हो उसे न देकर किसी दूसरे
को देना ।

લાકડું ઘાલવું (क्रि.) बाधा डालना,
चलते हुए कार्यमें अपना स्वार्थ
साधन करना ।

લાકડું પેસવું (क्रि.) खलल होना
रोकहोना, बाधाउपस्थित होना ।

લાકડે માકડું વળગાડવું (क्रि.)
दोनोंमें जूता चलवाना, दोजनोंको
लड़ाना ।

લાક્ષણિક (वि.) लक्षणयुक्त, लक्षण-
वृत्तिसे कथित अर्थ अलंकारिक,
स्वभाव दर्शक, सांकेतिक, बोधक
व्यंजक, सूचक, ज्ञापक ।

લાક્ષા (सं.) लाह, जतु, लाख,
एक प्रकारका पेड़का गोंद जो
आग लगानेसे पिघलकर जल
उठता है इसकी चूड़ियांभी बनती
हैं, जिन्हें स्त्रियां धारण करती हैं ।

લાખ (सं.) पूर्ववत्, चपड़ी (वि.)
संख्या विशेष, सौ हजार, (सं.)
एक प्रकारका जीव जिसके सूखने
पर उसमेंसे लालरंग निकाला
जाता है पहिले समयकी स्त्रियां
मेंहदीकी जगह उसीसे अपने
हाथ पैर रंगा करतीथीं ।

લાખરૂપિયાનું માણસ (सं) भला आदमी, सज्जन, विश्वस्त पुरुष, भद्रजन ।

લાખરૂપિયાનીવાત (सं.) बडीही अच्छीबात, नेकसलाह, लाभप्रद कार्य ।

લાખાવણજારો (सं.) लाखों रुपयोंका लेनदेन करने वाला मनुष्य।

લાખજાજો પણ શાખનજાશો=इज्जत जानेकी अपेक्षा धनका चलाजाना अच्छा अपमानसे मरण उत्तम है ।

લાખના તુટયા કોડીએ સંધાયનહીં= समुद्रको एक बूंदसे नहीं भराजा सकता ।

લાખટકાનું-રૂપિયાનું (वि.) उत्तम बहुमूल्य, लाभप्रद, अलभ्य ।

લાખ પંચોતરી (सं.) मिथ्या कथन, अति-शयवर्णन, ऊपरी भड़क, आडंबर ।

લાખનો પાલન હાર (सं.) राजा अमीर, दानी परमात्म देव ।

લાખ વાતની એક વાત (अ.) सारांशकि, तात्पर्यकि, गरज़ेकि, संक्षिप्तमें, सौबातोंकी एक बात, थोड़े शब्दोंमें ।

લાખ સેંવાના કરવા (क्रि.) शर मिंदा करके अनेक तरहसे समझाना ।

લાખવું (क्रि.) डालना, गेरना, पटकना, मिट्टीके पात्रपर चपड़ी करना ।

લાખિયું (सं.) लाखकी चूड़ी, स्त्रियां चूड़ियोंके आगे इसे पहिनती हैं । (वि.) लाखका, लाहयुक्त, चपड़ीदार ।

લાખું (सं.) शरीरके किसी भागपर जन्मका काला चिन्ह, दोष, लांछन, दाग ।

લાખેણું (वि.) प्रतिष्ठित, मानी, इज्जतदार, आबरूवाला, न्यायी, नेक, सज्जन, कीमती, बहुमूल्य, अमूल्य ।

લાખે લેખાં (सं.) लाख रुपयोंका जमाखर्च, असंख्यता, लाखोंसे गणना ।

લાખોટું (वि.) लाख लगाकर चमकदार किया हुआ बरतन, चपड़ी कियाहुवा बरतन ।

લાખોટો (सं.) मुहर चपड़ी किया हुआ पत्र, बन्दलिफाफा ।

લાગ (सं.) योग, दैवी घटना, युक्ति, दांव, चोट प्रसंग, पकड़, दस्ता, बेंटा, हत्था, नक्कू, आंकड़ा, आधार, पाया, मूल ।

લાગઆવવો (सं.) मौका आना, योग आना ।

લાગમાં આવવું (क्रि.) दांवमें आना, पेंचमें आना ।

લાગજવો (क्रि.) अवसर खोना, मौका गंवाना । [सर आना ।

લાગફાવવો (क्रि.) अनुकूल अव-

લાગજોવો (क्रि.) मौका ताकना, योग ढूंढना ।

લાગતફાવવો (क्रि.) निर्धारित कार्यके लिये अवसर साधना ।

લાગ મેળવવો (क्रि.) अनुकूल पड़े बैसाड़ी करना, अनुकूल समय प्राप्त करना ।

લાગલેવો (क्रि.) समयका सदुपयोग करना, आये समयको हाथसे नहीं जाने देना ।

લાગમાંથી ખસવું (क्रि.) किसीके अधिकारमेंसे निकलना ।

લાગટ (अ.) सतत, निरन्तर, अविच्छिन्न, अविश्रान्त, एक मरीखा जारी, चालू ।

લાગટું (सं.) खराब व्यवहार, अनुचित, सम्बन्ध, बुराबर्ताव ।

લાગણી (सं.) दया, करुणा, अनुकंपा, मनोधर्म, चित्तवृत्ति, भाव, ज्ञान, विचार, बोध ।

લાગત (सं.) लगी हुई कल्पित, असली मूल्य, मोल, दाम, मूल्य, महसूल टेक्स, जकात कर ।

લાગતું (वि.) लागू, सम्बन्धी, विषयक ;

લાગતુંવળગતું (वि.) नाते रिश्तेदार, सगा सम्बंधी, बंधुजन, परिजन, कुटुम्बी, नातेदार, बांधव, समीपी (नातेमें) (वि.) देखो લાગતું ।

લાગભાગ(सं.) बांटा, साझा, हिस्सा, सम्बन्धसे हक अथवा हिस्सा ।

લાગલગટ-લાગટ (अ०) फौरन, उसी समय, तुरन्त, जल्दी, ताबड़तोड़ तत्क्षण, तत्काल, साथही साथ ।

લાગલું (अं.) पूर्ववत ।

લાગવું (क्रि.) लगना, स्पर्श होना, छूना, भासना, जानना, मालूम होना, सहना, बीतना, जरूरत होना, बहुत होना, जारी रहना, सुलगना, धधकना ज्ञात होना ।

લાગ્યુ કોડી લેવું (क्रि) सिरपर आई हुई आफत सहन करना, उठाना, सहना ।

લાગેભાગે દીવાળી=लाभ हो या हानि हो मैं तो अपनी मनमानी करूंगा ।

લાગુ (वि.) लगाहुआ, लगने योग्य, जिसका सम्पर्क हो, मिलताहुआ प्रभाव होना, असर होना, (सं.) हक, कर, संबंध।

લાગુ રહેવું (क्रि.) अनुकूल होना, ठीक बैठना, लगा रहना। अनुयायी रहना।

લાગુ થવું-પડવું (क्रि.) पीछा करना, सम्मिलित होना, उचित होना, ठीक बैठना, योग्य ठहरना।

લાગે લાકડાં દાટે युक्तियुक्त कामको करनेसे कठिनभी सहल बन जाता है।

લાગેલું (वि.) लगाहुआ, शरीरके लगाहुआ, इसकसे पुरुष स्त्रीसे या स्त्री पुरुषसे लगी हुई।

લાગો (सं.) अख़्तयार, अधिकार, सत्ता, दावा, हक, प्रभुत्व, सम्बन्ध, कर, टेक्स, पैंठ, जकात, लगान, नाता।

લાગોલાગ (अ.) बराबर, ठीक, चाहिये उतनाही।

લાચાર (वि) विवश, अशक्त, निरुपाय, निराश, गरीब, पामर, हीन। [दीनता।

લાચારી (सं.) विवशता, नैराश्य,

લાછ્ (सं.) रोग विशेषमें (अजीर्णमें) नींमके पत्तोंको छाछमें मिलाकर हथेली और तलुए पर फेरी जानेवाली औषधि विशेष।

લાછો (सं.) रेशमकी बड़ी आंटी, लच्छा, गुच्छा, रेशमका सूत्र समूह।

લાજ (सं.) लज्जा, शरम, संकोच, व्रीड़ा, त्रपा शर्म, हया, अदब, मर्यादा, इज्जत, टेक, मान, आबरू।

લાજ લાગવી (क्रि.) लज्जा आना, संकोच होना, शर्म आना।

લાજ રાખવી (क्रि.) अदब करना, मान रखना, संकोच रखना।

લાજમ (वि.) उचित, योग्य, मुनासिब, उपयुक्त, लायक।

લાજ મર્યાદા (सं.) संकोच और विनय, मर्यादा और शील, मान और लज्जा।

લાજવાળું (वि.) नम्र, सुशील, विनयी, लज्जाशील, शरमदार, लज्जालु।

લાજવું (क्रि.) शरमाना, लजाना, संकोच करना, नीचा देखना, झेंपना।

લાજ (सं.) चावलोंकी खीली, सेककर फुलाये हुए चावल, चावलोंकी धानी, लावा, खीला, खोई, चावलका लावा।

લાજાળી (सं.) देखो લજામણી।

લાજિમ (वि.) देखो લાજમ।

લાજણી (सं.) देखो લજામણી।

લાજાળું (सं.) पूर्ववत् (वि.) देखो લાજવાળું।

લાજુલાડી (सं.) देखो લજામણી।

લાટ-ઠ (सं.) प्राचीन कालमें एक प्रदेश विशेष सूत कातनेकी मशीनका धुरा विशेष, गाडीका धुरा, तेल निकालनेकी घानीका ऊंचा खड़ा हुआ लकड़, लकडी डण्डा, सोटा, लठ, लहर, तरंग, हिस्सा, भाग्य।

લાટબંધ (अ.) अधिक परिमाणमें विशेष रूपमें, जत्थेमें।

લાટાનુપ્રાસ (सं.) एक प्रकारका शब्दालंकार, वाक्यमें बारबार उसी शब्द या अक्षरकी वही अथवा दूसरा अर्थ बताते हुए पुनरुक्ति, यमक।

લાટી (सं.) जहां जलानेका काष्ट बिकताहै, लकड़ियोंको टाल, कबाड़ा।

લાઠી (सं.) देखो લાકડી, मोटी लकडी बडा डण्डा, लठिया, लकडी।

લાડ (सं.) प्यार, प्रेम, दुलार, मोद।

લાડકોડાવવાં (क्रि.) खिलाना, मनोरंजन करना, प्रेम प्रदर्शन करना, दुलारना। [विशेष।

લાડ (वि.) वैश्योंकी एक जाति,

લાડકડું-કું-વાયું (वि.) प्यारा, दुलारा, लाड़ला, प्रिय।

લાડકાલાડુ (सं.) यज्ञोपवीत अथवा विवाह संस्कार आदिमें नातेरिस्तेदारोंकी तरफसे जो मिठाई के लिये नकद दाम जो वर कन्या को भेट होते हैं।

લાડકું (वि.) देखो લાડકડું।

લાડઘેલું (वि.) लाडके कारण उन्मत्त, लाड़प्यारसे बिगड़ाहुआ।

લાડસઘેલું (वि) पूर्ववत्।

લાડલડાવવું (क्रि.) प्रेम करना, दुलारना, प्रीति पूर्वक खिलाना।

લાડલી (सं.) लाड़में रखीहुई, प्यारी, दुलारी।

લાડવાયું (वि.) देखो લાડકું।

લાડવું (क्रि.) प्यारकरना दुलारना।

લાડવો (सं.) लड्डू; मोदक, मिष्टान्न विशेष।

લાડી (सं.) प्यारी, लाडली, दुलहिन, नववधू, बहू, कन्या ।
લાડીલે-ડીલો (वि.) प्यारमें बिगड़ाहुआ लडका या पुरुष ।
લાડુ (सं.) लड्डू, मिठाई विशेष मोदक, लाभ, फायदा, अंगियापर रेशमु किनारीकी गोलाकृति ।
લાડો (सं.) वर, बींद, दुलहा, लाड़ा, प्यारा, नौसा, अनेक प्रकारके सांसारिक सुखभोगनेवाला पुरुष ।
લાણી (सं.) काटनी (फसल), गीत गानेवाली स्त्रियोंको पुरस्कार विशेष ।
લાત (सं.) पदाघात, पैरकामार, ठोकर, चोट, किक ।
લાતખાવી (क्रि.) ठोकर सहना, सहन करना ।
લાતમારવી (क्रि.) ठोकर मारना, ठगना, हानी पहुंचाना, धिक्करना
લાતી (सं.) कोठी, फेक्टरी, गोदाम स्टोर, भंडार कोशागार ।
લાદ (सं. लीद, हाथी घोडे और, गदंभ आदि पशुओंकी विष्टा ।
લાદવું (क्रि.) भरना, बोझना, भारभरना, लादना ।
લાદી (सं.) फर्शबंधी, भूमिपर जमाये हुए समान पत्थर ।
લાધવું (क्रि.) भार लादना, बजन रखना, होना, उत्पन्न होना, तैरते हुए जलयानका पानी थोड़ा होनेकी जगह भूमिमें लगजाना, टकराना, ठहराना, हाथ लगना ।
લાનત (सं.) धिक्कार, शर्म अपमान, गैरत । [धौल, तमाचा ।
લાપટ (सं.) थप्पड़, चपत,
લાપડું (वि.) ढीला, लचपचा ।
લાપન (सं.) रचनाका पदच्छेद करके समझाना, अर्थका ज्ञान करना, रचना ।
લાપસી-ખસી (सं.) सिका हुआ आटा जिसमें घी और शक्कर मिला हुआ हो, मिष्टान्न विशेष, कसार, लापसी, कम घीका पतला हलुवा, थूली ।
લાપી (सं) काच जमानेका मसाला विशेष, तेल और सफेदेका मिश्रण ।
લાપોટ (सं) देखो લાપટ ।
લાફિયું (सं) ऐसा गुमड़ा (फोड़ा) जिससे गाल सूज आवे ।
લાફાલાફ (सं.) फुजूल खर्ची, बरबादी, अपरिमित व्यय, उड़ाऊपना ।

લાહાવેદ્ય (સં.) पूर्ववत्।
લાડો (સં) अतिव्ययी, फुजूल खर्च करने वाला व्यक्ति, द्वारया खिड़की बन्द रखनेके लिये आड़ी लकड़ी, रोक, आड़ आगल।
લાખડી (સં.) देखो लावरी।
લાખરૂં (वि.) नाजुक, सुकुमार, कोमल।
લાબુ (સં.) पत्ता विशेष।
લાભ (સં.) प्राप्ति, नफा, मुनाफा, फायदा, पाना मिलना, सूद।
લાભ આપવો (क्रि.) बदला देना, लाभ देना।
લાભ લેવો (क्रि.) मुनाफा, उठाना, फायदा उठाना। [लाभप्रद।
લાભકારી (वि.) फायदे मन्द,
લાભપાચમ (સં) कार्तिक शुक्ला पंचमी, सौभाग्य पंचमी।
લાભવું (क्रि) फायदा होना, मिलना, लाभ होना, प्राप्त होना।
લાભાલાભ (સં) हानिलाभ, नफा नुकसान, फिजूल खर्चा, अपव्ययता।
લાભેઊલાભ (સં.) गणना करते समय शुभवाक्य रूपमें एकके लिये यह वचन प्रयोग कहते हैं। रामा हैजी रामा है। बरकतकी बरकत।
લાભણુ દીવો (સં.) एक प्रकारका दीपक जिसे विवाह समय लड़केकी माता अपने हाथमें लेकर सब स्त्रियोंके आगे आगे चलती है।
લાય (સં.) आगकी लपट, ज्वाला, लौ, एक प्रकारका रेशमी वस्त्र, चादना।
લાયક (वि.) योग्य उचित, मुनासिब, पात्र, काबिल, उपयुक्त। घटित, तदनुसार। शक्ति संपन्न।
લાયકી (સં.) योग्यता, काब्लियत, औचित्य, शक्ति, गुण।
લાયકી વાળું (वि.) विनयी, नम्र, सुशील, सुपात्र सुयोग्य।
લાયરી (સં.) शेखी, गर्व, दंभ, घमण्ड, अकड़, अहंकार, आत्मश्लाघा, हेकड़ी, बड़ाई।
લાયબેપા (સં.) कठिनाई, दिक्कत। [कठिनतासे।
લાય લેપાઈથી (अ.) मुश्किलसे,
લાર (સં.) कतार पंक्ति, लाईन।
લારી(સં.) टक्का गाड़ी, ठेला गाड़ी।
લાડું (સં.) कंटीली झाड़ी, झांखड़, जंजाल, झोला, जाला. समुदाय, झुंड।

લારે (અ.) पीछे, साथ, संग, लगाहुआ।

લારો–આ (सं.) धधकता हुआ अंगारा, अंगारा (आगका)।

લાલ (सं.) रंगीला, बांका, इश्की, छैल, लाल रंगका पक्षी विशेष, गोसाईंजीका लड़का। रत्नविशेष, मूल्यवान लाल पत्थर, लालमणि, (वि.) रक्तवर्ण, लाल रंगका।

લાલચ (सं.) लोभ, तृष्णा, चाह, इच्छा, अभिलाष, कांक्षा, आकर्षण।

લાલચ કરવી (क्रि.) इच्छा करना, आशा करना, लोभ करना।

લાલચ આપવી (क्रि.) लोभ देना, लुभाना।

લાલચટક (वि.) अत्यंत लाल, खूबसुर्ख, कसूंमेके वर्णका।

લાલચુ (वि.) लोभी, लालची, पेटू।

લાલચોળ (वि.) देखो લાલચટક।

લાલજી (सं.) कृष्णके बाल रूपकी धातु निर्मित मूर्ति, बालकृष्णकी प्रतिमा।

લાલન (सं.) प्रेमपूर्वक पालना, पोसना, पालन करना, पोषण करना।

લાલઆઈ લગાડવી (क्रि.) जलाना, आग लगाना, धिक्कारना।

લાલમલાલ (वि.) गाढ़ेलाल, रक्तवर्णका, चित्त तथा नेत्ररंजक।

લાલસા (सं.) इच्छा, मनोरथ, अभिलाष, तृष्णा, हविस, लोभ।

લાલા (सं.) एक प्रकारका पौधा, पुष्प विशेष, बांका, छैला, अलबेला।

લાલાઈ (सं.) छैलापन, शेखी।

લાલાજી (सं.) देखो લાલા।

લાલાશ (सं.) ललाई, अरुणता।

લાલિત્ય (सं.) सुंदरता, मनोहरता, रमणीयता।

લાલિયો (सं.) भंगी, नीच, शूद्र।

લાલી (सं.) ललाई, सुर्खी, रक्तिमा, घंटीके बीचका लटकन।

લાવ (सं.) देखो લાવો। [લાવણ્ય।

લાવણ્યતા–તાઈ (सं.) नम्रता देखो

લાવણી (सं.) एक प्रकारकी काव्य रचना, छन्दविशेष।

લાવણીપત્રક (सं.) चालू वर्षका आसामीवार लेनेकी सूची।

લાવણ્ય (सं.) सुन्दरता, शरीरकी स्वाभाविक प्रभा जिससे सुन्दरता पैदा होती है, वाणीका माधुर्य्य सफाई।

લાવરી (सं.) एक प्रकारका पक्षी।

લાવરું (सं.) कुत्तेका भूंसना, क्रोधयुक्त शब्दोंका उच्चारण, कुत्तेका गर्जन।

લાવલશ્કર (सं.) फौजफांटा, सैन्य।

લાવવું (क्रि.) लाना, पाससेआना। बन्द करना। [लेना।

લાવી મૂકવું (क्रि.) उचितस्थानसे

લાવું (सं.) अच्छे अवसरपर अपनी जातिके समस्त लोगोंको समान कीमतकी और एकसी वस्तु भेट करना। हर्ष उपलक्षमें सबोंके एकसी वस्तु देना।

લાવો (सं.) इच्छा, वांछा, मनोरथ इच्छित आनंदकारी भोग।

લાસ-શ (सं.) मुर्दा, शव, लोथ, प्रेत, प्राणहीन शरीर।

લાસજવું (क्रि.) खराब होना, नष्ट होना, पैमाल होना, ध्वंश होना।

લાસ (वि.) पहिला, अव्वल, नुकसानमें पड़ा हुआ।

લાસરિયું (वि.) जो अपना कहा पूरा नहीं करे, चंचल, अधीर, बेठिकाना।

લાહ-ય (सं.) आग, अग्नि, शोला, अंगार, चिंगारी। भूख, क्षुधा, कड़ाकेकी भूख रेशमी वस्त्र विशेष।

લાહાણી-ણું (सं.) वस्तुओंका बंटवारा, बायना, लायना।

લાહર (सं.) ठीक, विकल्प।

લાહરિયો (वि.) ढीला आलस्य करने वाला, सुस्त।

લાહાર (सं.) कतार, पांति, पंक्ति।

લાહારો-ઓ (सं.)धधकता अंगार।

લાહી (सं.) लेही, ल्पाई, आटे अथवा मैदाको पानी में पकाकर बनाया हुआ, चिपकना पदार्थ।

લાહે-ય (सं.) देखो લાહ।

લાહેરી (सं.) शेखी, ढोंग, दंभ, पाखंड।

લાળ (सं.) लार, लाळ, राल, मुखका चिकना थूक।

લાળગળવી-પાડવી (क्रि.) लार पड़ना, लार टपकना, मुँह में पानी भरना।

લાળિયું (वि.) जिस के मुखसे लार टपका करती हो। एक प्रकार का कीड़ा। पहिने हुए कपड़े लार सेन बिगड़ने पावें इस लिये बालक के गले में बाँधा हुआ एक कपड़े का टुकड़ा। [कान की लोल।

લાળી (सं.) कानका नीचेका भाग,

લાળો (सं.) आगका धधकता हुआ अंगारा।

લિંડી (सं.) लेंड़ी, चूहा बकरी आदिकी विष्ठा, मेंगन, मेंगनी, कठोरमल।

લિંબડો (सं.) नीम, नीमका पेड़, यह दो प्रकार का होता है कड़वा और मीठा, मीठे नीम के पत्ते कढ़ी में डाले जाते है ।

લિંબુ (सं) निब्बू, नींबू एक प्रकारका खट्टा गुणदायक फळ ।

લિંબુડી (सं.) नींबूका पेड़ ।

લિંબોઇ (सं.) पूर्ववत् ।

લિંબોડી-ળી (सं.) निमोळी, नीमवृक्ष का फळ, एक प्रकार का तांबे का पात्र, स्वर्णाभूषण विशेष।

લિંખિયું (वि.) लीखें निकालने का छोटा कंघा विशेष, जू के अंडों को सिरके बालों में से खींच निकालने का एक प्रकारका कंघा ।

લિંગ (सं.) चिन्ह, निशान, व्याकरण शास्त्र वर्णित पुल्लिंग स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग, महादेवकी गोळ मूर्ति, सूक्ष्मता, सूक्ष्मदेहत्व, पुरुष की मूत्रेंद्रिय, लंड, लौड़ा ।

લિંગદેહ (सं.) जीवात्माका सूक्ष्म शरीर, इस पार्थिव स्थूल शरीर से निकलकर जीव जिस शरीर में प्रविष्ट होता है वह शरीर, दश इंद्रिय पाँच प्राण मन और बुद्धि इनतत्वों से कल्पित जीव का सूक्ष्म शरीर ।

લિંગવાસના (सं.) सैमोगकी इच्छा, मैथुन करने की चाह ।

લિંગાયત-यती (सं.) एक धार्मिक पंथ विशेष, शिवलिंग चिन्ह धारी सम्प्रदाय विशेष ।

લિંટિયું (वि.) जिस के नाक से रात दिन रेंट बहता हो ।

લિથોગ્રાફ (सं.) शिलाछापखाना ।

લિથોગ્રાફી (सं.) शिलापर लिख कर मुद्रण करने की विद्या ।

લિપણ (सं.) लीपने की रीति, वह जो कि लीपा हुआ हो । [पुता ।

લિપ્ત (वि.) लीपा हुआ, लिपा,

લિપ્સા(स)इच्छा, चाह, ख्वाहिश ।

લિપવું (क्रि.) लेपन करना, पोतना, लीपकर बिगाड़ देना ।

લિપિ (स.) लेख, हस्त लेख, हस्ताक्षर, अक्षर, मूळाक्षर, हस्त खत, वर्ण चिन्ह, हुरुफ ।

લિપિધારા (सं.) लिपिका ज्ञान करानें वाळी पुस्तक, स्पेलिंग बुक ।

લિબાસ (सं) देखो લેબાસ

લિમડી-ડો (सं.) नीम, निम्बवृक्ष, नीमकी एक जाति विशेष ।

લિમોચ્છવ (सं.) चैत्र शुक्ला प्रतिपदा के दिन शालिवाहन शक के नये वर्ष के प्रथम दिन नीमका रस पीना महात्म्य में गिना जाता है ।

લિયાકત (सं.) योग्यता, काबलियत, तर्मज, हौसिला, बुद्धि।

લીલછોયું (वि.) नीलता लिये, हरित वर्ण।

લિલઝાંમું (सं.) देखो લિલામું

લિલમ (सं) नीलम, कीमती पत्थर विशेष। [कपाल, पेशानी, मस्तक।

લિલવટ (सं.) ललाट, भाल,

લિલવા (सं.) बीज विशेष।

લિલનેળુ (सं.) एक प्रकारका घास जिसकी डलियाँ (टोकनी) बनती हैं।

લિલવો (सं) स्त्रीकी योनि में अग्र बाहर दिखता हुआ लम्बा गोल चमड़ी का भाग, टना, बीज विशेष। [का पानी, माया।

લિલાંપાણી (स.) हरापानी, भंग

લિલાણુ (सं.) ऐसा मैदान जहाँ हरीघास उगीरहती हो, हरामैदान।

લિલામ (सं) नीलाम, जो अधिक मूल्य दे वहीं मोळले सके ऐसा बेचने का ढंग विशेष।

લિલામું (सं) चकत्ता, चिन्ह, चावकी निशानी, दाग, हराचिन्ह।

લિલાલહેર-લહેર (सं.) पूर्णसुख, पूर्ण आनन्द, महान समृद्धि, परमानन्द।

લિલાવતી (सं.) गणित विशेष, कामातुरा स्त्री, छिनाळ औरत, मस्त स्त्री, चित्त खुली औरत।

લિલારસ્તાર (वि.) मृत, मुर्दा, निर्जीव, अस्वस्थ, रुग्ण।

લિલીઘોડી (सं.) भंग, भाँग, बूटी (पानेकी)

લિલીચાહ-હે (सं.) एक प्रकारकी घास, हरीचाह (पेयपदार्थ)

લિલુંછમ (वि.) गहराहरा, अत्यंत हरा, अतिशय हरितवर्ण।

લિલુંસુકું (सं.) अवनति और उन्नति, (वि.) हरी, (सूखी हुई) कठोरवस्तु, बुरे भले होनेका।

લિલોકાળ (सं.) अति वृष्टि के कारण दुर्भिक्ष, पनिया काळ।

લિલોતરી-ત્રી (सं.) पृथ्वीपर हरे पौदे, वृक्ष आदि, साक भाजी। हरी तरकारी।

લિલોમેવો (सं.) हरा मेवा, ऐसे फलजो सूखे नहीं, हरेफल।

લિસોટી (सं.) छोटीलकीर, छेकने कीलकीर, टिक मार्क।

લિસોટો (सं.) बड़ी लकीर, छेका।

લિસ્ટ (सं.) सूची, अनुक्रमणिका, टीप, याद।

લીંટ (सं.) रेंट, रींट, नाकका बहाव ।

લીંપણ (सं.) देखो લિંપ

લીંપવું (क्रि.) देखो લિંપવું

લીક (सं.) रेखा, चिन्ह, पगडण्डी, लकीर, हद ।

લીખ (सं.) सिर के बालों की छोटी जूँ, जूँ नामक जीव के अण्डे ।

લીટ (सं.) देखो લીંટ

લીટી (सं.) लाइन, सतर, रेखा, लकीर पंक्ति, पंगत, पाँति, चरण (काव्य) चवन्नी का सांकेतिक शब्द, पाव रुपया ।

લીટી ખેંચવી (क्रि.) लकीर खींचना, रद्द करना, हद ठहरना, निश्चय करना ।

લીટીદોરવી (क्रि.) पूर्ववत् ।

લીટો (सं.) बड़ी लकीर, लम्बी मोटी रेखा ।

લીંડી–લીંડી (सं.) मेंगन, मेंगनी, शुष्क विष्टा, बकरी चूहे आदिकी विष्टा ।

લીંડીપીંપર (सं.) लम्बी पीपल, औषधि विशेष, छोटी पीपल ।

લીંડું–લીંડું (सं.) विष्टा, कठोर मल, कुत्ता गधे इ० का गू ।

લીદ (सं.) देखो લાદ

લીધું (वि.) किया, प्राप्त किया, हासिल ।

લીધે (अ०) लिये, अतः, अतएव, एतदर्थ, इस लिये, इसवास्ते, इस कारण ।

લીન (वि.) तन्मय, तत्पर, आसक्त, डूबा हुआ, मग्न । [विशेष ।

લીંબુ (सं.) निम्बू, नीबू, फल

લીમ–ડો (सं.) देखो લિંબડો

લીમડે લટકવું (क्रि.) अधर गति पाना ।

લીલ (सं.) काई, सिवार, पानी की हरी हरी रपटनी कीचड़, कर्दम ।

લીલપરણવી (क्रि.) पहिली लड़की को मरे एक वर्षभी नहीं हुआ हो और इसी बीच दूसरा विवाह करना ।

લીલવાળવી (क्रि.) धूलधानी करना, बिगाड़ डालना, खराब करना ।

લીલકંઠ (सं.) चाष पक्षी, नील कंठ नामक पक्षी, पक्षी विशेष, शिव, महादेव । [बेहया ।

લીલજ (वि.) निर्लज्ज, बेशर्म,

લીલજેવો (सं.) निर्लज्जता, बेशर्मी । [इत्यादि ।

લીલવણ (सं.) हरीशाक तरकारी

લીલપણ (सं.) बचपन, लड़कपन, बाल्यावस्था, शैशवकाल।

લીલા (सं.) क्रीड़ा, विहार, खेल, कौतुक, विनोद, तमाशा, ठाठ, सूर्यो, अवतार, अवतारों के कार्य, विलास बुद्धि. अनुकरण।

લીલાવસ્તારી (सं.) मरगये, काल-महो गये, लीला संवरण।

લીલાલ્હેર (सं.) देखो લિલાલહેર

લીલીપીઠ (सं.) शाक बजार, भाजी बाजार, वह बाजार जहाँ शाक भाजी बिकता है।

લીલુ (वि.) हरा हरित, भीगा, गीला, तर, ताजा, सरस, रसीला।

લીલુ કરવું (क्रि.) नयाकरना, उबालना। [हरा।

લીલુંછમ (वि.) हराकच, बहुत

લીલાઆડતબેણુંબેઅરે એવું आळसी, सुस्त, काहिल, परमुखापेक्षो।

લીલાંપાણી (सं.) भग, भँाग, माया।

લીલા સુકાનો વિચાર (सं.) जिसे लाभालाभ, धर्माधर्म मान मर्य्यादा आदिका ध्यान न हो।

લીલીઘોડી (सं.) हरीभंग, भांग, माया, मादक पदार्थ, नशेदार वनस्पति।

લીલી લેખણ (सं.) कलाकरना, लाभ कारबार।

લીલીવાડી (सं.) जवानी, यौवना-वस्था, तारुण्य।[लाभ करना।

લીલુ કરવું (क्रि.) अच्छा करना,

લીલુંપડપણું (सं.)शौकीन बुढापा।

લીલું પીળું થઇ જવું (क्रि.) क्रुद्ध होना, बड़ा भारी गुस्सा करना।

લીલું વાળવું (क्रि.) फायदाकरना

લીલે તોરણે (अं०) आये वैसे ही, निष्फलता युक्त।

લીલો દુકાળ (सं.) अति वृष्टिज-नित दुर्भिक्ष, पनियाकाल

લીસુ (वि.) चिकना, स्वच्छ, साफ, .चेपदार, कोमळ, मीठा, मधुर, गप्पी, अविश्वस्त।

લીહ–ડી (सं.) लाइन, रेखा, लकीर, सीमा, हद्द, हद।

લુંગી (सं.) वह वस्त्र जिसे नापित क्षौर कारके समय गोदीमें बिछाता है। हजामत बनवाते समय, वह कपड़ा जिसे नाई गोद में बिछाता है।

લુંચી (सं.) पीछे लौटना।

લુંટ (सं.) लूट, अपहरण, अप-हार, डकैती, डाका, चोरी।

લુંટવું (क्रि.) देखो लुटवुं ।
લુંટણિયો (स.) डाकू, ठग, चोर लुटेरा ।
લુંડ (स) पति, स्वामी, धनी, खसम (वि.) भारी, जबर बलवान ।
લુંઠો (स.) पूर्ववत् ।
લુંડી (सं.) लौंडा, दासी, बांदी, सेवक (स्त्री) गृहकार्य के लिये मोलली हुई (स्त्री) [पिण्ड ।
લુંદો (स.) लौंदा, लला, घोघा,
લુંબ (स.) झब्बा, गुच्छा, झुमका लूम ।
લુપ્ (स) आटेका गोला विशेष, लू।
લુઓ (सं.) गेहू या बाजरा के आटे का बनाया हुआ गोला विशष, लोआ, और की छाती ।
લુક–બ (सं.) गरम हवाका झोंका ल, लूलगजाने की बीमारी ।
લુખરી લુખસ (सं.) खुजली,खाज, रोग, विशेष । [ह्रांका हुक्का ।
લુખિયું (सं.) एक प्रकारका मि-
લુખ્ખુ–લુખું (वि.) बिना चुपड़ा हुआ, रूखा, शुष्क, रुक्ष, चिकनाई रहित, शाक भाजी बिना भोजन, तेज कांतिहीन मुख, धनहीन, द्रव्य शून्य ।

લુગડાં (सं.) वस्त्र, पोशाक, कपड़े ।
લુગડાલત્તાં (सं.) कपड़ेलत्ते ।
લુગડું (सं.) कपड़ा, वस्त्र, बसन, लूघड़ा, ओढनी, फरिया, चीर, साड़ी, (स्त्रियाका) आच्छादनवस्त्र ।
લુગદી (सं.) गोलागोली, लुग्दी ।
લુગન (सं.) कोष, भण्डार, कि-कशानेी ।
લુચ્ચાઈ (सं.) बदमाशी, कुकर्म, अन्याय, दुराचार दुष्टना ।
લુચ્ચુ (सं.) कुकर्मी, लुच्चा, पाजी, उच्छृखल दुष्ट, चालाक, ठग, छली ।
લુછણિયુ (स.) दुवाल, टावेल तौलिया, साफा, अंगोछा, अग इत्यादि पोंछनेका वस्त्र ।
લુછવું (क्रि.) कपड़ेसे रगड़ मसल कर साफ करना । ठगना, छिपना निकाल देना ।
લુટાટ (सं) तोड़ फोड़ करके लू-टना छीनाझपटी, लूट खसोट । भामधूमकी लूट ।
લુટવું (क्रि.) बलात्कार पूर्वक छीनना, बळ से अपहरण करना, जबरदस्ती से ले लेना । लूटना, ठगना, डाँका मारना, चोरी करना आनंद लेना ।

લુટાઉ (वि.) लूटा हुआ, लूटने योग्य, बिना मालिकका माल।

લુટારો (सं.) लूटनेवाला, लुटेरा ठग।

લુટાલુટ (सं.) इधरउधर लूटमार, निर्भयता पूर्वक लूट खसोट।

લુટાવવું (क्रि.) लुटाना, गँवाना, खोना, उड़ाना, दे देना, बरबाद करना। [के मालमत्ता छीन लेना।

લુટવું લગાડવવું (क्रि.) लूटमार

લુણ (सं.) नमक, लवण, नोन, निमक, खारा, क्षार, खार, उपकार, अहसान, अनुकम्पा।

લુણઉતારવું (क्रि.) राईनोन करना नज़र इत्यादि उतारने के लिये चौराहे की मिट्टी, राई, नमक और मिर्चा रोगी व्यक्ति के सिर पर से उतार के अग्निमें डालना। ककड़ी का अग्र भाग जरा काटकर उस में गड्ढे करके उस काटे हुए भाग से घिसकर झाग पैदा करके उस का पित्त निकालना।

લુણચાં (सं.) ककड़ी में नमक इत्यादि मिलाकर बनाया हुआ पदार्थ विशेष।

લુણ હરામ (वि.) नमक हराम, कृतघ्न, अनुपकारी, नीच, दुष्टात्मा।

લુણ હરામી (सं.) कृतघ्नता, नमक हरामी।

લુણી (सं.) एक प्रकार की हरी भाजी, तरकारी विशेष। शाक विशेष। [से फूट निकलता है।

લુણો (सं.) वह क्षार जो दीवारों

લુણો લાગવો (क्रि.) दीवारों पर क्षार दृष्टि आना।

લુપ્ત (वि.) नष्ट, विध्वस्त, आँखों की ओट, अदर्शन, बीचमें से काटा हुआ (अक्षर, शब्द इत्यादि)

લુપ્તોપમ (सं.) अलंकार विशेष

લુબ્ધ (वि.) लोभी, स्वार्थी, सतृष्ण, तृष्णायुक्त, अभिलाषी, लोलुप, धनार्थी, इच्छु, लंपट।

લુબ્ધક (सं.) शिकारी, व्याध, बहेलिया, मृगयार्थी।

લુબ્ધાવું (क्रि.) लुभाना, मोहित होना, लालचमें पड़ना, तृषित होना। [झुमका।

લુમ-લૂમ (सं.) झब्बा, गुच्छा,

લુમો-ભો (सं.) पूर्ववत्, लाभ। फायदा, मुनाफा। [लौंडी, बाँदी।

લુલરી (सं.) दासी, टहलनी।

લુલી (सं.) जीभ, जिव्हा, जबान।

લુવાણી (सं.) राजपूत जाति विशेष की स्त्री।

लुवाणो। (सं.) राजपूतों की एक जाति विशेष। [निर्बल।

लुलुं (वि.) लंगड़ा, लूला, पंगु,

लुवार (सं.) लोहेका काम करने वाले लोग, लोहकार, लुहार, लोहार, जाति विशेष, पक्षीविशेष।

लुवो (सं.) देखो लुओ। [खाना।

लुस लुस (अ०) जल्दी जल्दी में

लुस (वि.) थका, श्रमित, श्रान्त, ढीला।

लू (सं.) गरम वायुका झोंका, ग्रीष्म ऋतुकी तप्त हवा। लू से आया हुआ ज्वर।

लूट (सं.) चोरी, अपहरण, अपहार, डकैती, डांका,।

लूटवुं (क्रि.) उलट पुलट करना, गड़बड़ करना।

लूण (सं.) देखो लुण।

लूली (सं.) देखो लुली।

लूलुं (वि.) देखो लुलुं।[पत्तो।

लूलुपता (सं.) खुशामद, लल्लो-

लेंकवुं (क्रि.) लटकना, टंगना, झूलना। [लाना।

लेंकावबुं (क्रि.) (स्वर) मि-

लेंको (सं.) लटक, लचकनेकी रीति।

लेघावुं (क्रि-) कुछ लंगड़ाना, लचककर चलना, लंगड़ाकर चलना। [लचेका।

लेंघी (सं.) छोटा पजामा (ब-

लेंघो (सं.) बड़ा पायजामा, सूथन सूथना, पजामा।

लेंची (सं.) गेहूं की पतली रोटी, चपाती, फुलका, एक प्रकार की अच्छी रोटी।

ले (सं.) देखो लेह [मगर।

लेकीन (अ०) परन्तु, पर, किंतु,.

लेख (सं.) लिखन, लिखित, प्रबंध लिखतंग, रचना, लिखावट, करार भाग्य, किस्मत, हस्ताक्षर।

लेखक (सं.) लिखनेवाला मनुष्य, लिपिकर, ग्रंथकर्ता, नकल नवीस।

लेखणु-णी (सं.) कलम, लिखने का साधन।[लिखावट, लिखना।

लेखन (सं.) लिपि, लिखाई,

लेखनकळा (सं.) लिखनेकी विद्या, लिपि विद्या।

लेखन पद्धति (सं.) लिखनेका ढंग, लिखनेकी रीति।

लेखपत्र (सं.) इकरारनामा, दस्तावेज, पतिज्ञापत्र, हस्तलेख।

લેખ પ્રમાણ (सं.) लिखा हुआ सुबूत, लिपिबद्ध प्रमाण ।

લેખવવું-વું (क्रि.) गिनना, मानना समझना, परवाह करना, हिसाब में लेना, लेखा करना । [पंक्ति ।

લેખા (सं.) रेखा, सतर, लकीर,

લેખા વઠિયો (सं.) गणित, वेत्ता, गणक, हिसाबी, गणितज्ञ ।

લેખિની (सं.) कलम, पेन ।

લેખું (सं.) गिनती, हिसाब, लेखा प्रमाण, लेख, लिखित ।

લેખે (अ०) हिसाबसे, रीति से, प्रमाणपूर्वक, अनुसार, में, पर, से, ओर ।

લેખે લાગવું (क्रि.) हिसाब में आना, गिनती में आना, काम में आना ।

લેજત-ઝત (सं.) देखो લેહેજત

લેજે (सं) देखो લેહેજે

લેજમ (सं.) एक प्रकारका जंजीर युक्त धनुष जो कसरतियों की कसरत के काम में आता है ।

લેટવું (क्रि.) लेटना, सोना, शयन करना, आराम करना, विश्राम लेना, सूतना, सीधे सोजाना ।

લેણ (सं.) लेना, लेने योग्य, उधार कर्ज (दिया हुआ लेना) गिल्ली डण्डे के खेलमें एक प्रकारका दाव । (वि.) लेनेवाला ।

લેણદેણ (अ०) व्यवहार, व्यापार ।

લેણદાર (सं.) लेनेवाला, ऋणदिया हुआ वापिस लेनेवाला, देने लेनेका व्यापार करनेवाला ।

લેણદેણી (सं.) लेनदेन, व्यवहार, व्यापार, ऋणानुबंध, प्रीतिभाव ।

લેણિયાત (सं.) मांगनेवाला, कर्ज देनेवाला, साहूकार ।

લેણું (सं.) लेना, ऋणदिया हुआ द्रव्य पीछा लौटाना, सुख कारक सम्बन्ध प्रीति, गणना ।

લેપ (सं. पोतनेकी वस्तु, मरहम, मल्हम, बोपड, पलस्तर ।

લેપડી (सं.) दरदपर बांधनेकी किसी वस्तुकी लुगदी, पुल्टिस ।

લેપન (सं.) लेप करना, पोतना, चुपड़न पलस्तर करना ।

લેપવું (क्रि.) लेपना, पोतना, चुपड़ना, लेपन करना, ढांकना ।

લેદી (सं.) लथाहुआ कीचड़, लिपटी हुई कीच, (पैरों या जूतो इ. का)

લેબાસ (सं.) पहिरावा, पोशाक, लिबास, पहिनने ओढनेका ढंग ।

લેભાગુ (वि.) इधरउधरसे छुटा-कर अपना कहकर बताने वाला, दौड़ धूप करनेवाला, लेकर भाग जानेवाला ।

લેમેલ (सं.) मृत्युकी तय्यारी, पृथ्वीपर उतार लेना, जिसके प्राण निकलनेकी तय्यारी होती है उसे चारपाई परसे भूमिपर उतारना, जल्दी तय्यारी । [फलोंका गुच्छा ।

લેરખું (सं.) वृक्षपर लटकते हुए

લેલાટ-વટ (सं.) कपाल, खोपड़ी, माथा, भाळ, ललाट ।

લેલાડ (सं.) पूर्ववत् ।

લેલાર (वि.) बहुत, अधिक, अ-तिशय, विशेष, अत्यंत । [पक्षी ।

લેલા (सं.) एक जातका नीळा

લેલુટ (वि.) बहुत, पुष्कळ, घना ।

લેલુચ (सं.) जल्दी, उतावळ, शीघ्रता ।

લેલૂર (सं.) देखो लेलार ।

લેલે ભજનું (वि.) दुर्बल, निर्बल, बेहाल । [विशेष ।

લેલો (सं.) एक प्रकारका औज़ार

લેવટા-ટી (सं.) छोटी मछलियां ।

લેવડ (सं.) व्यवहार, सम्बन्ध, लेन देन, दिया हुआ ऋण वसूल करना ।

લેવડદેવડ (सं.) देखो लेणदेण ।

લેવડાઉ (वि.) छिनाल, व्यभि-चारी, लंपट, परपुरुषगामिनी ।

લેવાઈજવું-લેવાવું (क्रि.) शर-माना, झुकजाना नमना ।

લેવાદેવા (सं.) लेन देन, व्यापार, व्यवहार, सम्बन्ध ।

લેવાવું (क्रि.) झेंपना, शरमाना लज्जित होना, अपमान होना, दुर्बल होना, अधिकार में आना ।

લેવું (क्रि.) लेना, ग्रहणकरना, अधिकारमें करना, पकड़ना, प्राप्त करना, स्वीकारना, अन्दरलेना, मिलाना, खाना, पीना, प्राशन करना, खेंचना, भाव ठहराना, गिनना, गणना करना, धारण क-रना, आना, बुलाजाना, हरना, रहित करना, नाश करना, खरी-दना, पास लाना, धमकाना, लि-खना, नोट करना, लेजाना, बो-लना, उच्चारण करना, आरंभ करना, मिलाना । [राना ।

લેઈ બેસવું (क्रि.) लेगड़ना, घब-

લેઈ લેવું (क्रि.) अपनेपास रखना, संग्रह करना ।

લોભાવવુ (क्रि.) लो भायना मुला-लेजाना।
લોને ગઈ પૂતને ખોઈ આવી ખસમ— चौबेजी गये छब्बेजी होने रह गये दुब्बेजी, बेटा लेने गई परंतु खसमको दे आई।
લોનેકુ હકડકડ ને દેનેકુ ધડધડ—लेनेको हां हां और देनेको इतिश्री।
લેવુંદેવું (सं.) લેણદેણ देखो।
લેશ (सं.) अल्प, लघु, थोड़ा, स्वल्प, अत्यल्प, लव, मात्रा, कुछ, (अ.) थोड़ाक, बिलकुलही।
લેશમાત્ર (अ०) थोड़ाही, जरासाही।
લેહ (सं.) चाटना, चटनी प्रीति, लय, ध्यान।
લેહેકાવવું (सं.) बढ़ाना, चढाना, (स्वर)। [हवा, मंद, मंदवायु।
લેહેરી (सं.) हल्की या धीमी
લેહેકો (सं.) चाल, ढंग, हरकत, गति।
લેહેજત (सं.) रस, मज़ा, आनन्द।
લેહેજો (सं.) लव, पल, क्षण, निमेष, लहमा, सेकण्ड।
લેહેણું (सं.) उचित, चाही, ऋण, देय।
લેહેર (वि.) धीमा, मंदवायु।
લેહેલીન (वि.) तल्लीन, तन्मय।
લેહેવાવું (क्रि.) बताना, समझाना।
લેહેવું (क्रि.) मनमें धारना, समझना, जानना, मालूम करना।
લોઈ (सं.) देखो લહિયો।
લોંકડી (सं.) लोमड़ी, लोमा, एक जंगली जानवर विशेष।
લોંઠું (वि.) धनवान, पैसेवाला।
લોંઠો (सं.) हट्टाकट्टा, बलवान, तगड़ा, मजबूत, धनवान, यार, पति, खसम, स्वामी, होसियार, चालाक।
લોંડી (सं) दासी, चाकरी, नौकरनी।
લોંડો (सं.) दास, सेवक, गुलाम, मोल लिया हुआ पुरुष।
લોંડીજાયો (सं.) लौंडीसे उत्पन्न पुत्र, दासीपुत्र।
લોંદો (सं.) पिण्डा, मिट्टी आदिका पिंड़ा, ढेला, लुगदा, लोंधा, पिंडोळा, गोळा, गीले पदार्थकी बड़ी लुगदी। (वि.) ढीला, नर्म।
લોંબરી (सं.) ऊनका बहुमूल्य वस्त्र।
લોક (सं.) भुवन, द्वीप, मनुष्योंका वास स्थान, कौम, प्रजा, जाति, लोग, जन, मनुष्य, खलकत वर्ग, मंडली, जगत, दुनिया।
લોકકથા (सं.) दन्तकथा, गप्पपुराण, जबानी बातचीत, बे प्रमाण बात।

લોકચર્ચા (सं.) बाजारु गप्प, साधारण बात, अफवाह, किम्वदन्ति । [वर्ग (कवितामें) ।
લોકડિયાં (सं.) साधारण लोगोंका
લોકપ્રસિદ્ધ (वि.) विख्यात, मशहूर, प्रगट, जगत् प्रसिद्ध । [प्रिय ।
લોકપ્રિય (वि.) सर्व प्रिय, जगत
લોકપરંપરા (सं.) रूढि, रीति, रस्म, लोकपरंपरा ।
લોકમત-વાણી (सं.) लोगोंके विचार, कहावत, मिसाल ।
લોકરૂઢિ (सं.) लोक व्यवहार, सासारिक बर्ताव, प्रख्यात रीते ।
લોકલાજ (सं.) जनतामें शर्म, संसारकी शर्म, आबरू । [कथा ।
લોકવાયકા (सं.) जनकथा, दंत-
લોક વ્યવહાર (सं.) लोकरूढि, लोकाचार, रीति रिवाज ।
લોકાઈ (सं.) अंतर, वैचित्र्य, भेद, परायापना, अन्यत्व ।
લોકાચાર (सं.) देखो લોકવ્યવહાર।
લોકાપવાદ (सं.) निंदा, बुराई, अपवाद ।
લોકિક (सं.) किसीके मृत्यु समयपर उसके कुटुम्बियोंके साथ शोक प्रदर्शित करनेके लिये जाना ।
લોકાલાકી (अ.) मुंहसे, अफवाही । [वादी ।
લોકાયત (वि.) नास्तिक, अनीश्वर
લોકોત્તર (वि.) साधारण लोगोंके विचारोंसेभी परे, बहुत ऊंच, बहुत सरस, परलोक ।
લોકોપકાર (सं.) कल्याण, दूसरोंकी भलाई, परकल्याण, दूसरोंका उपकार । [विशेष ।
લોખંડ (सं.) लोह, लोहा, धातु
લોખંડી (सं.) लोह निर्म्मित, लोहेका बनाहुआ । [बोबे ।
લોચક (सं.) स्तन, थन, कुच,
લોચ (सं.) अपने हाथों अपने बाल उखाड़ना (जैनधर्म) ।
લોચન (स.) मोचन, उखाड़ना, दूरकरना, नोंचना, छूट, छूटना, आंख, नेत्र, नयन, चक्षु, ज्ञान ।
લોચના (सं.) बेचैनी, व्याकुलता, चांचल्य, निद्रा, तकलीफ, कष्ट, क्लेश । [चाहना, भटकना ।
લોચવું (क्रि.) आतुरता पूर्वक
લોચો (सं.) लुगदा, लुगदा, ढेर, उलटासीधा, गड़बड़, हकलाना, तुतलाना । तकरार ।

લોચાવું (क्रि॰) चिपटना, घबराना।

લોટ (सं.) आटा, चून, चूर्ण, (वि) आटेके समान बारीक।

લોટકો (सं.) मट्टीका बर्तन विशेष।

લોટણ (सं.) एक प्रकारका कबूतर पक्षी, कपोत विशेष, एक पक्षीकी एक जाति। [उलटा सीधा

લોટપોટ (वि.) तळफन, पटकर,

લોટવું (क्रि) लोटना, लुढकना, तड़फना, छटपटाना, पटकना, पटकन खाना, गुलांचखाना, सोना, दुर्व्यसनमें लिप्त होना, नम्रहोना, आधीन होना।

લોટિયો (सं.) बोहरा, मुसलमानोंकी एक जाति विशेष, (वि.) सिरमुंडा हुआ।

લોટી (सं.) पानी पीनेका छोटा पात्र विशेष, छोटा लोटा, लुटिया, चम्बी, गड़वी। [गडवा।

લોટો (सं.) लोटा, पात्र विशेष,

લોઢ (सं.) झुला, हिंडोला, तरंग, लहर, तकरार।

લોઢવું (क्रि.) ओटना (कपास) कपासमेंसे रूई और बिनोले किसी यंत्र विशेष द्वारा निकालना।

લોઢાં (सं.) लोह धातुके औजार।

લોઢાની સડક (सं.) लोहकी पटरी दार सड़क, रेलवे।

લોઢી (सं.) कढ़ाई, लोहका तवा।

લોઢું (सं.) लोह, लोहा, धातु विशेष, उस्तरा, क्षुर, छुरा।

લોથ (वि.) निर्जीव, निस्तेज, खराब, सुस्त, मुर्दा, मूर्ख, शठ, अशक्त, थका, निर्बल, रसहीन, शव, लाश, मृतदेह, ऐसा मनुष्य जिसे उठाना कठिनहो, चार पाई, रथी ठठरी, संगाती। शवयान।

લોથપોથ (वि.) थक करके ढीला पड़ा हुआ।

લોથડી (सं.) भूभळ अर्थात् गर्म राखमें सेककर बनाई हुई रोटी।

લોથવું (क्रि.) छटपटाना, तड़फना।

લોથારી (सं.) लंगर, नाव या जहाजको ठहरानेके लिये वजन युक्त जंजीर।

લોથિયું (वि.) निकम्मा, व्यर्थ, खराब, गयाबीता, निर्जीव, निर्बल

લોદવું (क्रि॰) गूंधना, मोड़ना, सानना, गूंदना।

લોધર (सं.) लोद नामक औषधि, एक वृक्ष विशेष और उसकी छाल, तेल इत्यादि डालकर सेंका हुआ गेहूंका आटा ।

લોપ (सं.) अदृश्य, अदर्शन, नाश, विध्वंश, अगोचर, गुप्त ।

લોપવું (क्रि.) उल्लंघन करना, नमानना, अवज्ञा करना, मिटाना, गायब करना । [दाश्त ।

લોબ (सं.) स्मरणशक्ति, याद॰

લોંબરી (स.) कामली, कम्बल, लोही ।

લોબાન (सं.) सुगन्ध युक्त द्रव्य विशेष जो धूपके लिये जलाया जाता है । एक वृक्षका गोंद विशेष, औषधि विशेष ।

લોભ (सं.) तृष्णा, लालच, इच्छा, ईप्सा, चाह, कांक्षा ।

લોભાવવું (क्रि.) लुभाना, सतृष्ण होना, ललचाना ।

લોભિયુ-ભિષ્ટ, ભી (वि.) लोभी, लालची इच्छुक ।

લોમ (सं.) रोम, रोंआं, रूंगटा, रोंगटा, पश्म, लोम ।

લોમ વિલોમ (वि.) पसद् पसद् युक्त, संकल्प विकल्प वाला ।

લોલ (सं.) गोल चक्करमें दोनों हाथ फैलाकर घूमना, गोल गति ।

લોલક (सं.) झूमका, करन फूल, लटकन । [इप्सु ।

લોલપી (वि.) लालची, लोभी,

લોલણી (सं.) मनोहर बालबाली स्त्री ।

લોલા (सं.) जीभ, जिव्हा, जबान ।

લોલિયું-ળિયું (सं.) बाल, कंघी, गेहुके सर्जकी बालें सिरेया भुट्टे ।

લોલુપ (वि.) मग्न, डूबा हुआ ।

લોવું (क्रि.) देखो लुछवुं ।

લોહ (सं.) लोहा, धातु विशेष, लोंह, लोष्ट सार ।

લોહ કાંત (सं.) लोहके मेळसे बनी हुई औषधि, औषधि विशेष ।

લોહચુંબક (सं.) लोहको आकर्षण करनेवाली धातु विशेष, अयस्कांत । [लोह चूर ।

લોહ ચૂર્ણ (सं.) लोहका चूरा,

લોહ ભસ્મ (सं.) लोहेकी खाक, औषधि विशेष, वंगभस्म ।

લોહર-રિયો (वि.) बहुत मोटा और बलवान मनुष्य, ग्रामीण ।

લોહવું (क्रि.) निर्मल करना, स्वच्छ करना, पोंछना झाड़ना ।

લોહિ ખાણ-ણું (वि.) रक्त सिंचित, खून से लतपत, लोहुलुहान।

લોઢિયું (सं) कड़ाई, लोहेका बना हुआ पात्र विशेष।

લોહિ લોહાણુ (वि.) खूनमें तरोतर, खूनमखून।

લોહી (सं.) रुधिर, शोणित, रक्त, लहू, लोहू, खून, कुळ, सम्बन्ध, वंश, नाता, रिश्ता।

લોહી પડવું (क्रि.) शरीरस्थ किसी इन्द्रियसे, रक्त प्रवाह होना।

લોહી આવવું (क्रि.) शरीरमें नया रक्त उत्पन्न होना।

લોહીનું તરસ્યું (वि.) खूनका प्यासा, रक्तपात करनेके लिये आतुर शत्रु।

લોહી ઉકળવું (क्रि.) क्रोध आना, क्रोधमें जल उठना।

લોહી ઉકળો કરવો (क्रि.) क्रोधमें होना, गरम होना, आवेशमें आना।

લોહી ઉડી જવું (क्रि.) सुर्खी जाती रहना, फीका पड़ना, निस्तेज होना। [जन करना।

લોહી ખાવું (क्रि.) शोकमें भो-

લોહી ઓછું થવું (क्रि.) क्रोध कम होना, सन्तोष होना, गरमी उतारना। [चढ़ना।

લોહી ગરમ થવું (क्रि.) क्रोध

લોહી પીવું (क्रि.) चूसना, कलेजा खाजाना, चित्त हरण करना, सताना। [शक्ति घटना।

લોહી બળવું (क्रि.) चिंतासे

લોહી બાળવું (क्रि.) अति संतापित करना।

લોહીનુ પાણી થવું (क्रि.) खून बिगाड़ना, कम जोरी आना, पसीना बहाकर जीतोड़ मिहनत करना।

લોહીને માંસ એક થવું (क्रि.) अत्यंत कठिन परिश्रम करके शरीरको क्लान्त करडालना।

લોહીનો કોળિયો (सं.) मृत्युके दिनोंमें भोजन करना, शोकके दिनोंमें भोजन करना।

લોળિયું (सं.) स्त्रियोंके कानोंमें पहिननेका एक आभूषण विशेष।

લોળો (सं.) जबान, जिव्हा, जीभ।

લોલ (सं.) देखो **લોઢિયું**।

લોંઠો (सं.) राजाकी खानगी कचहरीमें पहाड़िया दिल्लगीबाज आदमी। विदूषक, मसखरा, हास्यरसवान, भांड, नक्काल, वैहासिक।

લૌકિક (वि.) लोक सम्बन्धी, लोक विषयक, सांसारिक, इस लोकका, इस लोकमें रहने वाला। (सं) कीर्ति. यश, नामवरी, दुनिया दारी, सांसारिक काम काज।

લૌકિકરીતે (अ.) वंश परंपरा रूढिके अनुसार, लोग दिखाऊ ढंगसे, दिखला वटी, जगत रीतिसे।

લ્યાનત (सं.) लानत, धिक्कार।

વ

વ = वर्ण मालाका ४० वां अक्षर, २९ वां व्यंजन। (अ.) और, तथा।

વંશ (सं.) कुळ, परिवार, कुटुम्ब, सन्तति, सन्तान, प्रजा, औलाद, बांस, वृक्ष विशेष।

વંશચરિત્ર (सं.) वंशावली, कुळ, पीढ़ी, पुश्त, वंशपरंपरा। [क्षय।

વંશચ્છેદ (सं.) कुळनाश, प्रजा-

વંશજ (सं.) वंशमें उत्पन्न हुआ, संतान, औलाद, अपत्य।

વંશપત (सं.) कुळ कीर्ति, जिससे कुळ पहिचाना जावे।

વંશપરંપરા (सं.) कुळ क्रमानुगत, कुळ परंपरा, पीढी उतार।

વંશાવલી (सं.) पीढी, वंशोत्पन्न मनुष्योंकी नामावली।

વંશવૃક્ષ (सं.) वंश विस्तार सूचक वृक्षाकार रचना।

વંશી (सं.) वंश सम्बन्धी, कुळ विषयक, मुरली, बांसरी, वेणु वाद्य विशेष, बसरी।

વકર (सं.) भार, वजन, बोझा।

વકરવું-કરીજવું (क्रि.) बांकाहोना तिरछाहोना, छिटकना, फिरजाना, हाथसेजाना, सामनेहोना, फटना, हद्दसे बाहिर होना।

વકરો (सं) बिकरी, बिक्री, रोकड़ वस्तुके विकजानेका मूल्य।

વકારવું (क्रि.) उस्काना, उभारना, दम्पट्टी देना, भड़काना, बढाना।

વકાલત (सं.) वकीलका धन्धा।

વકાલતનામું (सं.) वकीलपत्र, मुख्त्यारनामा, वकीलको अपना मुकद्दमा सौंपनेका अधिकारपत्र।

વકાસ (सं.) प्रकाश उद्भेद, स्फुटरहः, अवकाश, खिलना।

વકાસવું (क्रि.) जंभाई लेना, अंगड़ाईतोड़ना, अमुहाई लेना, मुखफाड़ना, छटपटाना, खिलना, खुलना, प्रकाशितहोना।

વકિલાત (सं.) देखो વકાલત।

વકી (सं.) आशा, उम्मेद, आस।

વકીલ (सं.) एलची, प्रतिनिधि, दूत, अपनी ओरसे जिसे काम करनेका अधिकार दिया गया हो प्रोक्टर, पंच, गुमास्ता, एजण्ट, मुख्त्यार ।

વકીલાત (सं.) देखो વકાલત आढत, एजन्टी, दलाली।

વકુફ-ન (सं.) समझ, अक्ल, ज्ञान, वाकफ़ियत, सावधानी, मति।

વકુફો (सं.) पूर्ववत् ।

વકુફદાર (वि.) बुद्धिमान, चतुर, दक्ष, प्रवीण, सावधान, होशियार ।

વક્કર (वि.) जोरावर, बलवान, तोफानी, वजन, भार, बोझ ढंग, योग्यता ।

વકતા (वि.) बोलनेवाला, कहनेवाला, व्याख्याता, लेक्चरार, कथक्कड़ । [नेका ढंग, भाषण ।

વકતૃત્વ (सं.) वाक्चातुर्य्य, बोल-

વક્ત્ર (सं.) मुख, वदन, मुहं, मोंढ़ा, आनन ।

વક્ત્રારવિંદ (सं.) मुखकमल, कमलके तुल्य मुहं ।

વક્ર (वि.) टेढा, आढ़ा, तिरछा, बांका, क्रूर, (ग्रहादि)

વક્રગતિ (सं.) टेढ़ीचाल, उलटीगति

વક્રચંચુ (सं.) तोता, पक्षी विशेष।

વક્રતા (सं.) टिढाई, बांक, क्रूरता ।

વક્રતુંડ-મુખ (सं.) टेढ़ेमुहंवाला, गणेश, गणपति, तोता पक्षी ।

વક્રદ્રષ્ટિ (सं.) टेढ़ी नजर, तिरछी, निगाह, द्वेषीविचार, कुढ़न ।

વક્રી (वि.) बांकी गतिवाला, ग्रह विशेषकी गति विशेष, वक्रदृष्टिसे देखनेवाला ।

વક્રોક્તિ (सं.) अलंकार विशेष, कुटिलोक्ति, काकूक्ति, टेढावचन, शब्दालंकार भेद ।

વક્ષસ્થલ (सं.) सीना, छाती, हृदय, उरस्थल, कलेजा ।

વક્ષ્યમાણ (वि.) जो कहाजावेगा, कथन योग्य, भविष्यमें जो कहा जावे, कथनीय विषय ।[हलाहल ।

વખ (सं.) विष, जहर, गरल,

વખવખ (स.) अत्यंत भूख, क्षुधा ।

વખણાવું (क्रि.) प्रशंसितहोना, स्तुत्त बनना, कहाना ।

વખત (सं.) समय, काल, अवसर ऋतु, इतिष्मक, मौका, वेला, प्रसंग, योग, अवतार, वद किस्मती, संकट, विपत्ति, फुरसत, गिल्ली डण्डेके खेलमें एक दाव, देर ।

વખતોવખત (अ.) किसीभी समय, अनिश्चित समयपर ।

વખતસર (वि.) समयपर, निर्दिष्ट समयमें, उचित प्रसंगपर, ऋतुमें, कदाचित् ।

વખતે-વખતે (अ.) मौकेव मौके, समय समयपर, यथा समये, बार बार ।

વખતોવખત (अ.) पूर्ववत् ।

વખવખવું (क्रि.) प्यासे होना, छटपटाना, तड़फड़ाना ।

વખવાદ (सं.) झगड़ा, विवाद, बकबक, टण्टा, बोल चाल ।

વખાણ (सं.) तारीफ, स्तुति, गुण गाथा, प्रशंसा, शाबासी ।

વખાણવું (क्रि.) तारीफ करना, यशोगान करना, स्तुति करना, गुण गाना ।

વખાણેલું (वि.) प्रशंसित, स्तुत्य ।

વખાર (सं.) कोठार, भंडार, गोदाम, कोठी, दुकान, जहां बेचनेका माल भरा हो ।

વખારદાર (सं.) कोठारी, भंडारी, गोदामका स्वामी, स्टोरकीपर ।

વખારિયો (सं.) पूर्ववत् ।

વખારી (सं.) पूर्ववत् ।

વખારેનાખવું (क्रि.) दूरकरना ।

વખુ (सं.) पक्ष, आश्रय, सहारा, (अ०) चाहनेवाला, पक्षी, गरज इच्छुक ।

વખુટું (वि.) साथसे अलग हुआ जो संगसे पृथक होगयाहो ।

વખેરવું (क्रि.) बिखेरना, फैलाना जुदाजुदा करना ।

વખેરાવું (क्रि.) फैलना, बिखरना ।

વખો (सं.) दुर्भिक्ष, पृथकता, जुदाई, दुःख, आपत्ति दुर्दिन ।

વખોડવું (क्रि.) दोष निकालना, भूलबताना, निंदा करना, धिक्कारना चुगली करना ।

વખોરો (सं.) बुखारी, पेटी, कन, घर, ढूवर, पानसुपारी इत्यादि रखनेकी छोटीसी संदूक ।

વગ (सं.) जगह, ठिकाना, परिचय, पहिचान, जानपहिचान, मेलमुलाकात, अनुकूल समय, मौका अवसर, पक्ष, तरफ, सत्ता, आश्रय ।

વગઘડતું (वि.) युक्तिपूर्वक रखाहुआ

વગલાગવું (क्रि.) सिफारिश होना काम बनना । [समय आना ।

વગઆવવો (क्रि.) अवसरआना,

વગડવું (क्रि.) बजना, शब्दहोना ।

વગડાઉ (वि.) जंगली वन्य ।

वगाडवावुं (क्रि.) बजाना, शब्द करना ; [कुश भैराम, बौराम ।

वगडो (सं.) जंगल वन, आरण्य,

वगदार (सं.) आश्रयदाता, सहायक, पक्षपाती, तरफदार ।

वगर (अ०) बिना, सिवाय, अतिरिक्त ।

वगरपाणीओनावचलाववुं (क्रि.) बिना साधनके काम करना, अद्भुत रीतिसे काम करना ।

वगरभाडानी कोटडी (सं.) जेलखाना, करावास, बन्दीगृह ।

वगवसीलो (सं.) जरिया, वसीला, बड़े मनुष्योंकी संरक्षा व सहायता ।

वगवाळु (सं.) प्रभावोत्पादक, असर करनेवाला ।

वगसग (सं.) समावेश होने योग्य स्थान, जरिया, वसीला, कारण ।

वगण (सं.) मेल, मिश्रण, वर्ण संकर, भ्रष्ट, पतित, कपट, छळ ।

वगाडवुं (क्रि.) बजाना, शब्द करना, ठोकना, पीटना, ध्वनित करना ।

वगिंर–नुं (वि.) परिचित, जानकार, पहिचानवाला (सं.) पक्षपात, तरफदारी, ।

वगीलां करवां (क्रि.) पक्षपात करना, तरफदारी करना ।

वगुती (वि.) फूहड़ (स्त्री), कुलटा, व्यभिचारिणी ।

वगुतवुं (क्रि.) घुसना, संलग्न होना, जुटना, लगना, प्रवेश करना ।

वगू–गे (सं.) तर्फ़, और ।

वगेरे (अ.) प्रभृति, आदि, इत्यादि, और, वगैरह ।

वगो (सं.) किसी एक ओरकी हद, नगर वा गांवके एक ओरकी सीम । [बुराई, फजीहत ।

वगोणुं (सं.) निन्दा, अपकीर्ति,

वगोववुं (क्रि.) निन्दा करना, फजीहत करना ।

वगोळवुं (क्रि.) विचारना, पागुर करना, जुगाली करना, जुगाल करना । [खलल ।

वघरणुं (सं.) विग्रह, विघ्न, हानि ।

वघरो (सं.) झगड़ा, अनबन, फिसाद, खराब होनेकी तय्यारी होना ।

वघार (सं.) बघार, छौंक, घी वा तेलमें जीरा हींग राई इत्यादि मसाला डालकर पकाकर उसमें किसी वस्तुको डालकर पकाना । मथनी, बघार, बघारा ।

વધાર મૂકવો (क्रि.) भपकी देना, उसकाना, उकसाना, बढ़ावा देना ।

વધારી ખાવું (क्रि.) शाक बनाना, तल्कर खाजाना ।

વધારણી (सं.) हींग, हिंगु, औषधि विशेष । [देना ।

વધારવું (क्रि.) छौंकना, बघार

વધારિયાં (वि.) बघारा हुआ ।

વંધેડું (वि.) लाल रंगके छिलका युक्त धान, चावल (छिलके सहित) ।

વંકાવું (क्रि.) बांके होना, टेढे होना, तिरछे होना, मन मुटाना ।

વંકાઈ (सं.) बांक, टेढापन ।

વચ (सं.) वाक्य, वचन ।

વચક-કો (सं.) भय, डर, खौफ़ ।

વચકણું-ચું (सं.) बांका आड़ा, तिरछा ।

વચકવું (क्रि.) गुस्सा होना, सरकना, खसकना, गिर पड़ना ।

વચકળવું (क्रि) छूटना नरम होना, कमहोना ।

વચકાવું (क्रि.) देखो વચકવું ।

વચકેલ (वि.) आड़ा, क्रुद्ध, कुपित, टेढा । [बेदिली होना ।

વચકો (सं.) तकरार, फिसाद,

વચમાંહે (अ.) बीचमें, मध्यमें, दरमियानमें ।

વચગાળો (सं.) मध्य, वहम, भ्रांति, शक, झगड़ा, फसाद, उपद्रव । [लेना ।

વચટવું (क्रि) झपट लेना, छीन-

વચન (सं.) उक्ति, कथन, वाक्य शब्द, वाणी बोल, प्रतिज्ञा, कौल, इक़रार, भाषण, कथित शब्द ।

વચનઆપવું (क्रि.) वचन देना, प्रतिज्ञा करना, क़रार करना ।

વચનકાઢવું (क्रि.) बोलना, खराब शब्दबोलना ।

વચનતોડવું (क्रि.) वचनभंग, करना प्रतिज्ञा पूर्ण न करना वादा खिळाफी करना ।

વચનલેવું (क्रि.) प्रतिज्ञा करना, प्रण करना, कौल करना ।

વચનઆપવું (क्रि.) वचन देना प्रणकरना । कौल करना प्रतिज्ञा करना ।

વચનિકા (सं.) प्रमाण, (ग्रंथसे) ।

વચની (वि.) अपने कहेको पूरा करनेवाला, वचन पाळनेवाला, सत्यवादी, विश्वस्त ।

વચમાં (अ.) बीचमें, मध्यमें ।

વચરભાવું (क्रि.) देखो वચળવું
વચલાવાંધાનું-વાધેનું (वि.) बीचके दर्जेका, मध्यम श्रेणीका, न अधिक उत्तमही और न खराबही।
વચલું (वि.) बीचका, मंझला, मध्यका। [बड़बड़।
વચવચ-ચાટ (सं.) बकबक,
વચળવું (क्रि.) भंगहोना, विघ्न आपड़ना, पागल होना, विचलितहोना।
વચળેલ (वि.) व्यभिचारी, लंपट विषयी, भ्रमित, पागल, सिरी, बिचलित। [केसरी।
વંઘારા (सं.) शेर, सिंह, शार्दूल
વંચાયએવું (वि.) पढाजाने योग्य, साफ जो पढासके, पाठ्य।
વચાળું (वि.) बांका, तेढा, तिरछा, बीचका, मध्यका। [मंझला।
વચેટ (वि.) बीचका, मध्यका,
વચ્ચે (अ०) बीचमें, मध्यमें, मध्यभागमें, दरमियानमें, किसी चालुकाममें, मैदानमें।
વચ્ચેપડવું (क्रि.) हस्तक्षेप करना बीचमें पड़ना। [ठीक मध्यमें।
વચ્ચોવચ્ચ (अ०) बीचोंबीच,
વચ્છ (सं.) बछड़ा, वत्स (गौका) केरड़ा, बच्छा, बाछा।
વચ્છનાગ-છનાગ (सं.) एक प्रकारकी विषैली औषधि।
વછિયાત (सं.) किसी स्थानसे कुछदिन रहनेके लिये आयाहुआ अकेला व्यक्ति, किसीकी तरफसे माल लेने या बेचनेको आयाहुआ मनुष्य, आढ़तिया।
વછુટવું (क्रि.) बिछुड़ना, वियोग होना, अलगहोना, छूटना।
વછુટું (वि.) भिन्न, निराळा, जुदा, बिछुड़ाहुआ, वियोगी, छूटाहुआ।
વછેરી (सं.) छोटीघोड़ी, घोड़ीकी बच्ची, छोटी लड़की।
વછેરો (सं.) छोटा घोड़ा, घोड़ेका बच्चा, बैल, जवान नादान पुरुष।
વછોઈ (सं.) विछोह, जुदाई, पृथकता, फूट, भेद, वियोग।
વછોડવું (क्रि.) अलग करना, पृथक करना, विछोह करना, छुड़ाना। [विछुड़ाहुआ।
વછોયું (वि.) वियोगी, भिन्न,
વજન (सं.) भार, बोझ, तौल, जोख, मान, गौरव, प्रभव, रौब, कदर।
વજનકરવું (क्रि.) तौलना, देखना, आंकना, जोखना।

વજનદાર (वि.) भारी, बोझवाला, प्रतिष्ठित, प्रभाव शाली । [बाजा ।

વજન્તર—વાજન્તર (सं.) बाद्य,

વજનસર (वि.) बोझके अनुसार, कुछ हलका, थोड़ा , मध्यम ।

વજર કંઠી (वि.) कुछ सफेद (गेंहूं) ।

વજરબટ્ટુ (सं.) एक वृक्ष तथा उसका फळ विशेष, यह बच्चोंको गलेमें पहिनाया जाता है ।

વજહના (सं.) अत्यंत चाहना, महान इच्छा ।

વજા (सं.) बुद्धि, विचार शक्ति, समझ शक्ति, रुख, इच्छा, लक्ष्य, झुकाव, ढ़लाव, अभिप्राय, प्रवृत्ति, तात्पर्य ।

વજાડવું (क्रि.) देखो વગાડવું ।

વજીફદાર (सं.) जागीरदार, नम्बरदार, पेन्शनर, जिसे सरकारकी ओरसे कुछ वृत्ति मिलती हो ।

વજીફો (सं.) जागीर, पेन्शन, अलाउंस, इनाममें सरकारकी ओरसे मिली हुई जमीन इत्यादि ।

વજીર (सं.) मंत्री, प्रधान, राजाको उचित सलाह देने वाला । शतरंजके खेलमें एक गोट विशेष ।

વજીરાત (सं.) मंत्रिपद ।

વજીરી (सं.) पूर्ववत् ।

વજુ (सं.) नमाज पढनेके पूर्व हाथ मुहं पैर इत्यादि धोनेकी क्रिया विशेष । [वजू ।

વજુદ (सं.) आदि, निकास, उद्गम,

વજે (सं.) चुकौता, भुगतान, माल गुजारी, रेवेन्यु ।

વજ્જર (वि.) कठोर, कठिन, कड़ा, सख्त, (सं) वज्र, कुलिश ।

વજ્જરમાથું (वि.) ऐसा मूर्ख जिसपर कुछभी प्रभाव न पड़े ।

વજ્ર (सं.) कुलिश, इन्द्रका आयुध विशेष, बिजली, । हीरा हरिक, रत्न विशेष ।

વજ્રનીછાતી (सं.) कठोर हृदय, पाषाण हृदय, दया और भयशुन्य हृदय । [मूष्क ।

વજ્રદંત (सं.) मजबूत दांत, चूहा,

વજ્રદેહ (सं.) बालिष्ठ और दृढ देह, बलवान और कठोर अंग ।

વજ્રઘાત (सं.) कड़क, (बिजलीकी) ।

વજ્રચર્મ (सं.) गेंडा, एक हाथीके समान छोटी सूंडवाला पशु ।

વજ્રછાતી (सं.) कठोर हृदय, पाषाण दिल (वि.) निर्दय, निर्भय, करोर ।

वज्रतुंड (सं.) गणेश, गणपति ।
वज्रपिंजर (सं.) कठोर पिंजरा ।
वज्रबाहु (सं.) वीर, बहादुर, शूर, मल्ल, पहलवान ।
वज्राग्नि (सं.) विद्युत्, बिजली ।
वंचक (सं.) ठग, छलिया, बांधनेकी शक्तिवाला, पढनेवाला ।
वंचवुं (क्रि.) बचना, अलग रहना, रक्षापाना । [बचाना ।
वंचाववुं (क्रि.) पढवाना, ब-
वंचावुं (क्रि.) पढाजाना, बांचजाना, सर्वत्र फजीहती होना ।
वंचाणो (सं.) खाली जगह, रिक्त स्थान ।
वंझा (सं.) बांझ औरत, संतान हीना स्त्री, वंध्या, बांझड़ी ।
वड (सं.) बरगद, बड़का वृक्ष, टेक, प्रण, आत्म सम्मान, धैर्य ।
वटक (सं.) एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु लेनेके लिये कुछ विशेष दिया हुआ द्रव्यया पदार्थ, बट्टा, बदला, खोट, नुकसानी ।
वटक वाळवी (क्रि.) बदला करना, खोट फेर करना । बदल देना ।
वटकवुं (क्रि.) खसकना, सटक जाना, दूरजाना ।
वटकीजवुं (क्रि) बछड़ा मरजाना और दूध न निकालने देना, सूख जाना, (गाय भैंस इत्यादि दुधारू पशु) ।
वटलवुं-वावुं (क्रि.) पतित होना, भ्रष्ट होना, धर्मच्युत होना ।
वटलाववुं (क्रि.) पतित करना, भ्रष्ट करना, एक वर्ण या धर्मसे किसी दूसरे वर्ण या धर्ममें सम्मिलित करना ।
वटलेल (वि.) भ्रष्ट, पतित, च्युत ।
वटलोई (सं.) तांबेका पानीका पात्र विशेष, एक प्रकारके बर्तनका नाम ।
वटवुं (क्रि.) हो चुकना, निकल जाना, दूर चलेजाना, भागछूटना, पीछे हठना, आगेपीछे होकर सताना । [लिखाहुआ आज्ञापत्र ।
वटकुटुंब (सं.) सभी संबंधियोंको
वटाणा (सं.) मटर, अन्न विशेष ।
वटाणावाववा (क्रि.) भागछूटना, निकलभागना रफूचक्करहोना ।
वटाखुं (सं.) धूळ डालकर लिखनेकी पट्टीपर लिखनेकी कलम ।
वडाणो (सं.) अन्न विशेष ।

વટાવ (सं.) छूट, बट्टा किसी कारणसे निश्चित वस्तुमेंसे कुछ कम देना, खोटे रुपये या वस्तु आदिके लिये कुछ विशेष द्रव्य लेकर उसकी पूर्ति करना, लाभ, मुनाफा नफा ।

વટાવવું (क्रि.) तुड़ाना, भुनाना (रुपया प्रभृति सिक्का) फैलाना, छोड़ना, पीछे रखना, सरसहोना, बढना, बेचना, चूर्ण कराना, पिसवाना । [देना, छलना ।

વટાઈખાવું (क्रि.) ठगना, त्रास-

વટાવું (क्रि.) चूर्णहोना, पिसना, कुचलेजाना ।

વટાળ(सं.)भ्रष्टता, जिससे पतितहो ।

વટાળવું (क्रि.) पतित करना, अपने धर्म या वर्णमें मिलाना, भ्रष्टकरना ।

વટાળો (सं.) भ्रष्टता ।

વટીક (अ०) भी ।

વટી (वि.) प्रणवाला मनुष्य, अपनी टेक निवाहनेवाला, हटी, जिद्दी, धंधा करनेवाला ।

વટીજવું (क्रि.) निकलजाना, गुजरना ।

વટું (सं.) काम, धन्धा, कार्य ।

વટુકાર (सं.) बुद्धि, ढंग, हौसिला तमीज ।

વટેવું (सं.) देखो વટોવું ।

વટેમારગુ- ગું (वि.) बटोही पथिक पांथ, मुसाफिर, राहगीर, प्रवासी

વડ (सं.) बट, बरगद, वृक्ष विशेष, बर, महानता और वयोवृद्धता सूचक प्रत्यय विशेष ।

વડકણું (वि.) लड़ाका झगड़ालू, फसादी, टंटाखोर, बकवादी,

વડકારૂં (वि.) पूर्ववत् ।

વડકાવવું (क्रि.) चिढ़ाना, खिझाना झिड़काना, डांटना, मलामत करना, घुड़कना, धमकाना ।

વડખીરૂ (सं.) टोलीया झुंडकानेता (खेलमें) बड़ा भोंडू ।

વડવઈ-વાય (सं.) बरगद वृक्षकी जटा, बड़के पेटकी वे पत्रहीन डालियां, जो भूमिकी तरफ लटकती हैं :

વડવા (सं.) दादा, बापकाबाप बाबा पितामह, मामाके पिता, नाना, घोड़ी, अश्व स्त्री ।

વડવાગોળ (सं.) चमगिधड़, एक पक्षी, विशेष जो टांगोंके बल नीचे सिरकी डालियोंमें लटका करता है और सायंकालको सूर्यास्तके बाद उड़ा करता है बागल, चामचिड़ी चामचिड़, बड़ी चमगादर ।

વડવાગ્નિ (सं.) समुद्रस्थ अग्नि, प्रचंड आग, समुद्रकी आग ।

વડવાડ (सं.) झगड़ा, विवाद,फिसाद

વડવાડિયો (सं.) पक्षी विशेष ।

વડવાનલ (सं.) देखो વડવાગ્નિ ।

વડવું (क्रि.) बिड़ना, नाराज होना, लांछनआना, बट्टाआना ।

વડવો (सं.) दादा, बाबा, नाना, पितामह, माताका बाप, बापका बाप, मातामह ।

વડસસરો (सं.) सासूका पिता, नानी सुसरा, श्वशुरका पिता ।

વડસાવિત્રી (सं.) जेठसुदी पूर्णिमाके दिनका वह त्यौहार जिसे नव विवाहित वधू पूजा करते है ।

વડસાસુ (सं.) नानीसासू, सासूकी माता या श्वशुकी माता ।

વડહથ (वि.) मजबूत, दृढ, पुष्ट ।

વડાઈ (सं.) कीर्ति, बड़प्पन, ख्याति प्रशंसा, मान, इज्जत, आबरू, महत्व, प्रशंसा, उच्चता, विशालता अभिमान, गर्व, शेखी, घमण्ड, महत्ता ।

વડાઈકરવી (क्रि.) प्रशंसा करना, शेखीमारना, आत्मश्लाघाकरना ।

વડાગરું-મીઠું (सं.) एकप्रकारका नमक, क्षार विशेष ।

વડાવડ-ડી (सं.) लड़ालड़ी, आमने सामनेका युद्ध, जिदाजिदी ।

વડારણ (सं.) दासपुत्री, रानीकी टहलनी, दासी ।

વડાવા (सं.) कुलमें वयोवृद्ध, अतिवृद्ध पुरुष, वृद्धकुटुम्ब ।

વડિયાઈ (सं) नानी मातामही, माकीमा, बापकी मा, दादी ।

વડિયો (सं.) प्रतिस्पर्द्धी, प्रतिपक्षी, प्रतिद्वंदी, सामना करनेवाला

વડિલોપાર્જીત (वि.) पूर्वजोंका संगृहीत, बड़े लोगोंका कमायाहुवा ।

વડી (सं.) मंगोड़ी, मुंगोड़ी, दाल कोपीसकर और सुखाकर बनाई हुई डलियां । [बिगड़जाना ।

વડીપાપડવડીજવાં (क्रि.) काम

વડીનીતિ (सं.) टट्टी, पखाना शौच मलत्यागन, मलोत्सर्गन, जंगल, दिशा, (श्रावक धर्ममें)

વડીલ (वि.) पूज्य, मान्य, वयोवृद्ध, ज्येष्ठ, मुख्य, उन्नमें पदमें उच्च, (सं.) अग्रज, पूर्वज, पुरुष, बापदादा ।

વડીલપરંપરાગત (अ०) कुलरीति, वंशव्यवहार, बापदादोंकी रीति ।

વડીલોપાર્જીત (वि.) देखो વડિલોપાર્જીત

વડું (वि.) बड़ा, भारी, दीर्घ, विस्तृत, अग्रज, बहुत, अति, वयोवृद्ध, (सं.) उड़द या मूंगकी दालको भिगोकर पीसकर तेल या घृतमें तलकर बनाया हुआ पदार्थ, मंगोड़ा, भजिया, पकौड़ा फलौरी ।

વડું કરવું (क्रि.) रद्द करना, बुझाना (दपिक) दीवा करना ।

વડે (अ.) द्वारा, मारफतसे साधन ।

વડો (वि.) बड़ा, दीर्घ, मुख्य, प्रधान, उमरमें पदमें बड़ा, महान ।

વડો કરવો (क्रि.) चिराग़ गुल करना, दीपक बुताना, निन्दोड़ना ।

વડો નિશાળીયો (सं.) दर्जेमें सबसे प्रथम या मुखिया विद्यार्थी ।

વડવા (सं.) बापके बापके बाप, प्रपितामह, पड़दादा ।

વઢકણું (वि.) झगड़ालू, बकवादी, फसादी, विवादी, बड़बड़ाने वाला ।

વઢકારું (वि.) पूर्ववत् ।

વઢવાડ-ડ (सं.) झगड़ा, विवाद, बकवाद, झगड़ा, मारा मारी, बोला बोली ।

વઢવું (क्रि.) लड़ना, झगड़ना, विवाद करना, बोलचाल करना ।

વઢાડવું (क्रि.) उकसाना, व्याकुल करना ।

વણ (सं.) कपासका पेड़, रूईका वृक्ष, बिनौलेका दरख्त । (अ.) बिना, बग़ैर, सिवा, अतिरिक्त, सिवाय, अलावह ।

વણઓથ (वि.) निराश्रय, बेमदद, बेसहारा (सं.) जुलाहा, कपड़ा बिनने वाला । [जुलाहा ।

વણકર (सं.) वस्त्र बनाने वाला,

વણકરી (सं.) जुलाहेका वेतन, वस्त्र बनाने वालेका मेहनताना ।

વણખૂટે (अ.) समाप्त होनेके पहिले, बिना कमती हुए ।

વણછો (सं.) वृक्षकी छाया रहे उतनी जगह, वृक्षकी छायादार जगह ।

વણજ (सं.) धंधा, व्यापार, रोजगार, लेन देन, तिजारत, वाणिज्य ।

વણજાર (सं.) व्यापारियोंका झुंड, वनजारोंका माल भरा हुआ टांडा, क़ाफ़िला ।

વણજારું (वि.) वनजारोंसे संबंध रखनेवाला, जंगली, नीच जातिका ।

વણજારો (सं.) एक घूमता फिरता व्यापारी जो बैलों आदि अन्य पशुओंपर अन्न लादकर घूमता है । राम विशेष । जाति विशेष ।

વણતર (सं.) बुनावट, बिननेकी रीति, पोत ।

વણવું (क्रि.) बटना, बिनना, बुनना, गुथना, खराब हिस्सा निकाल देना, बेलना, चुनना, तोड़ना, उठाना, बीनना, सबसे उत्तम छांटलेना, बड़ा कर कहना ।

વણસવું (क्रि.) नाशहोना, नष्टहोना, ध्वंसहोना, बरबाद होना, पैमाल होना, बिगड़ना, खराबहोना । [बैठना,मग्नहोना ।

વણસાઈજવું (क्रि.) डूबना, पैंदे

વણસાડ (सं.) नाश, बिगाड़, क्षय, बरबादी, लय, विनाश ।

વણસાડવું (क्रि.) बिगड़ना खराब करना, बरबाद करना, नाश करना । [बनेका मिहनताना ।

વણાઈ (सं.) बुननेका वेतन, गूं-

વણાટ (सं.) देखो વણતર ।

વણાવવું (क्रि.) दूसरेसे नध्थार कराना ।

વણિક (सं.) वाणिज्य व्यापार करने वाले मनुष्य, बनिया, व्यापारी, वैश्य ।

વણિયર-યેર (सं.) चूहे जैसे मुंहवाला बिल्लीसे कुछ बड़ा चौपाया जानवर (इसे गुड़ अच्छा लगता है) बिज्जू ।

વણીનાંખવું (क्रि.) नाश करना, तोड़ मरोड़ डालना, विध्वंस करना । [हिंसा, मुराद, इरादा ।

વંછના (सं.) इच्छा, चाह, ख्वा-

વંજી (सं.) बांसकी कपचियोंका समूह । [(स्त्री) ।

વંઝા (सं.) बंध्या, बांझ, बांझकी

વંટોળ-ળીઓ (सं.) बगूला, पवनका गोल चक्कर, वायु चक्र ।

વંટોળ ચડવું (क्रि.) अस्थिर चित्त होना, पागल होना, लहरमें आना ।

વંઠ (सं.) शरीरमें वायुगोळा आना ।

વંઠવું (क्रि.) हदमे बहिर होना, हाथसे जाना, बिगड़ना, फटना, बहना । [खराबहोना ।

વંઠીજવું (क्रि.) बिगड़जाना,

વંઠેલ (वि.) बिगड़ाहुआ, लंपट दुराचारी, बिगड़ाहुआ ।

વંઢલ (सं.) नपुंसक, हिजड़ा, नामर्द, जनखा, क्लीब ।

વંડી-ડો (सं.) अहाता, खुलीहुई जमीन के आसपास मिट्टीकी भीतका घेरा, कम्पाउन्ड ।

વંડી છાપી (क्रि.) वर्षाऋतुमें भींगनेसे बचने के लिये दीवारोंपर रखाहुआ घासफूस जो मिट्टीसे दबाहुआ होता है।

વત (अ.) जैसे, मसलन, समान मानिन्द, अनुरूप, मानो।

વતડવું (क्रि.) नोंचना, खुतरना, कुरेदना।

વતન (सं.) देश, मातृभूमि, स्वदेश जन्मभूमि, बापदादाके रहनेका स्थान, जागीर, जायदाद।

વતનદાર (सं.) जागीरदार, देशी।

વતનવાડી (सं.) स्थाई पूंजी, स्थाई जागीर, जायदाद।

વતની (वि.) देशी, स्वदेशी, एकदेशीय, हमवतनी।

વતરણું (सं.) बरतना, स्लेट-पेंसिल, पट्टीपर लिखनेकी लेखनी।

વતરેક (अ०) बिना, बगैर, सिवाय अतिरिक्त, अलावह।

વતરોક-ગે (अ०) पूर्ववत।

વતાગરો (सं.) मजदूर, मेहनती।

વતાડવું (क्रि.) सताना, कष्टदेना दुख पहुंचाना।

વતાવવું (क्रि.) देखो વિતાડવુ खिझाना, सताना।

વતિપાત (सं.) (ज्योतिषशास्त्रमें) सत्रहवांयोग।

વતીપાત-તિયું (वि.) बदमाश, नठखट, उच्छृंखल, दुखदायी।

વતી (अ०) बजाय, लिये, वास्ते स्थानमें, बदलेमें, जगहमें।

વતું (सं.) सफाई, क्षौर, हजामत।

વંતુકરવું (क्रि.) हजामत बनाना मुंडना, क्षौर कार्य करना।

વતે (अ०) मार्फत, द्वारा, ज़रियेसे।

વતેસર (सं.) बहुतही बढ़ाया हुआ। [जकी।

વતેક (सं.) खाज, खुजाल, खु-

વત્તુ (अ.) अधिक, ज्यादः, बढती। [घना।

વત્તુંઓછું (वि.) कमज्यादः थोड़ा

વત્સ (सं) बालक, छोकरा, बच्चा, बछड़ा, बच्छा।

વત્સરસ (सं.) वात्सल्य प्रेम, माता पिता और पुत्रका स्नेह।

વત્સર (सं.) वर्ष, साल, संवत्।

વત્સલ (वि.) स्निग्ध, स्नेहयुक्त, प्रेमी।

વત્સલતા (सं.) ममता, स्नेह, प्रेम।

વદ (सं.) कृष्णपक्ष, वदी, बुदी, अंधेरीरात्रिके पन्द्रहदिन।

वदंती (सं.) वाणी, बात, कहावत
वदन (सं.) मुख, मुहं, वक्त्र, आनन, चेहरा, मुखड़ा, ।
वदन कमळ (सं.) कमलमुख, मुखपंकज, मुखारविन्द ।
वदवुं (क्रि.) बोलना, कहना, उच्चारण करना, कथन करना, स्वीकार करना, अंगीकार करना ।
वदा (वि) विदा, रवाना, कूच ।
वदाई (सं.) विदाई, रवानगी, आज्ञा प्राप्त करके गमन ।
वदाईगीरी-गिरी (सं.) बिदाहोते समय दियाहुआधन, भेट ।
वदाड (सं.) वादा, वचन, वायदा प्रण, प्रतिज्ञा, करार, कौल, नियत समय, अवधि, मुद्दत ।
वदाय (वि.) देखो वदाई ।
वदाय करवुं (क्रि.) आज्ञादेना, रवाना करना, निकाळ देना, चलते करना ।
वदायथवुं (क्रि.) जाना, बिदाहोना ।
वदार (सं.) देखो वदाड ।
वदिता (सं.) आवाज, ध्वनि ।
वदी (सं.) देखो वद ।
वधान (सं.) पाखंड, कपट, ढोंग ।
वध (सं.) हिंसा, हनन, विनाश, कतल, भेट, बलि, प्राण हरण, वृद्धि, बढती, बढाव ।
वधघट (सं.) घटाबढी, कमअधिक ।
वधतुं (वि) अधिक, ज्यादः बहुत । [करना ।
वधराववुं (क्रि) बढाना, वृद्धि-
वधरावळ (सं.) अंडवृद्धि, फोते बढना, आंडबढना ।
वधवुं (क्रि.) बढना वृद्धिपाना । अधिकहोना, आगेहोना, बड़ाहोना, ऊपर होना, बाकी रहना, शेष रहना, नीलाममें दूसरेसे अधिक बोली बोलना, चढना, उगना, लाभ होना ।
वधाई (सं.) देखो वधामणी ।
वधामणां (सं.) बधावा, वृद्धि, तथा मंगलसूचक गान अथवा देवी पूजा ।
वधामणी (सं.) मुबारकबादी, बधाइ धन्यवाद, अभिनन्दन, वृद्धिस्वागत, शुभसंवाद लानेवाले-को पुरस्कार ।
वधारवुं (क्रि.) बढ़ाना, वृद्धि करना, बड़ाकरना, अधिक करना चढाना । [ज्यादा, बहुत, विपुल ।
वधारे (वि.) विशेष, अधिक,
वधारो (सं) बढावा, वृद्धि, योग, पैदायश, लाभ, नफा बाकी शेष, फालतू, चढती ।

वधाववुं–वीलेवुं (क्रि.) स्वागत करना, सत्कार करना, आतिथ्य करना, भक्ति अथवा प्रेमके कारण पुष्प या अक्षत फेंकना ।

वधावो (सं.) दुलहा अथवा दुलहिनके लिये भेट ।

वधु (वि.) अधिक बड़ा, ज्यादः भारी, (सं.) दुलहिन, पत्नी, विवाहित स्त्री, बहू, बेटेकी भार्या

वधेरवुं (क्रि.) भोगदेना, बलि-दान देना, तोड़फोड़कर या काटकर किसी देवताको भेट करना, काट-ना, तोड़ना, कुचलना ।

वध्य (वि.) वधाई, वधकरने योग्य, मारने योग्य ।

वन (सं.) कानन, विपिन, आर-ण्य, जंगल, कुंज, झाडी जल ।

वनकदली (सं.) जंगली केलेका वृक्ष ।

वनकुळ (सं.) वल्कल वसन, वृक्ष के पत्तों और छालके कपड़े ।

वनकेळी (सं.) जंगली बेर (वृक्ष)

वनक्रीडा (सं.) वनविहार, जंगली खेल ।

वनचर (सं.) बनैला पशु, जंगली जानवर, जंगली लोग, बनमानुष।

वनदेवता (सं.) जंगलका अधि-ष्ठाता, देव वनदेव।

वनप्रिय (सं.) कोयल, कोकिळ, पक्षी विशेष ।

वनपति (सं.) वनका स्वामी ।

वनपाल (सं.) जंगलका रखवाला

वनमल्ली (सं.) जंगली मोगरा ।

वनमाला (सं.) घुटनोंतक लटकने वाली पुष्पमाला ।

वनमाली (सं.) श्रीकृष्ण, वसुदेव के पुत्र जो द्वापरमें पैदा हुएथे ।

वनराज (सं.) जंगलमेंका कोई एक मुख्यवृक्ष, सिंह, शेर ।

वनवागळु–गोळ (सं.) चमगादड़ (बडी) वागल, पंजोंके बळनीचेसर लटकायेहुए लटकनेवाला एक पक्षी विशेष । [जंगलमें रहना ।

वनवास (सं.) जंगलमें निवास,

वनवासी (सं) जंगलमे रहनेवाला अरण्य वासी (वि.) त्यागी ।

वनविहार (सं.) देखो वनक्रिडा ।

वनस्पति (सं.) ऐसी बूटियां अथवा पौदेजो औषधिके काम आवें । वह वृक्ष जिसपर बिना फूलके फल आते हो । [वृक्षविद्या ।

वनस्पतिविद्या (सं.) उद्भिजविद्या,

वना (अ०) सिवाय, बिना, बगैर ।

वनिता (सं.) स्त्री, प्रेम करने वाली स्त्री ।

વનેચર (वि.) देखो वनचर ।
વનેખા (सं.) पीड़ा, दुःख, त्रास, कष्ट । [बेचैनी, झंझट ।
વનેડા (सं.) घबराहट, व्याकुलता,
વનો (सं.) विनय, विवेक ।
વન્ત (वि.) युक्त, वाला या वान् इत्यादि अर्थ सूचक प्रत्यय ।
વન્તરી (सं.) राक्षसी, भूतनी, डाकिनी ।
વન્તાક-ત્યાક (सं.) बैंगन, भटा, रींगणा, शाकविशेष ।
વંદક (वि.) पूजक, उपासक ।
વંદન—ના (सं.) नमन, प्रणाम, स्तुति ।
વંદવું (क्रि.) प्रणाम करना, स्तुति करना, नमन करना ।
વંદનિય (वि.) पूज्य, मान्य, प्रणामार्ह, तारीफके योग्य ।
વંદિત (वि.) पूजित, प्रशंसित ।
વંદો (सं.) एक प्रकारका उड़नेवाला प्राणीविशेष ।
વન્ધ્યા (सं.) बांझ स्त्री, ऐसी स्त्री जिसके सन्तान न होती हो ।
વપત (सं.) आपद, विपदा, दुःख दुर्गति, विपत्ति । [क्षौरकार्य ।
વપન (सं.) मुंडन, हजामत,
વપની (सं.) उस्तरा, क्षुर, क्षुरा, मुंडनशाला, क्षौरगृह ।
વપરાવું (क्रि.) काममें आना, प्रयोग करना, खर्च होना, कम पड़ना ।
વપરાશ (सं.) प्रयोग, उपयोग ।
વપસો (सं.) आश्चर्य, विस्मय, तआज्जुब ।
વપુ (सं.) शरीर, देह, काया, बदन ।
વફા—દારી (सं.) कृतज्ञता, नमकहलाली, फायदा, ईमानदारी ।
વફાદાર (वि.) विश्वस्त, विश्वसनीय, कृतज्ञ, नमकहलाल, अनुरक्त, ईमानदार, सत्यवादी ।
વફાદારી (सं.) ईमान, वचन, अनुराग, प्रभुभक्ति।
વબુટ્ટલ (सं.) दुःख, पीड़ा, आपत्ति ।
વભો (सं.) वैभव, ठाठ, साहिबी, ऐश्वर्य, सम्पत्ति, धन, सम्पदा ।
વમન (सं.) कय, उलटी, छर्दि, रद, कै, मुंहके द्वारा पेटकी वस्तु का बाहिर होना, रोगविशेष ।
વમળ (सं.) (जलमें) भंवर, आवर्त, व्यातुरता, भौर ।

વમાસવું (क्रि.) सोच विचारमें पड़ना, विचारना, निर्धारित करना, दूरकी सोचना, पछताना, शोक करना, मनन करना, चिन्तन करना ।

વમેલું (वि.) छादा हुआ, उगला हुआ, उलटी किया हुआ, पतित ।

વય (सं.) जन्मसे वर्त्तमान समय तकका काळ, उम्र, गतआयु, पक्षीगण । यौवन, युवाकाल ।

વયણ (सं.) बचन, बैन, बोळी, वाणी ।

વયધર (वि.) उम्रवाळा, जीवित ।

વયસ્યા (सं.) सखी, सहेली ।

વયી (वि.) उम्रका, समवयस्क ।

વયોવસ્થા (सं.) उम्रकी प्रतिष्ठा, जीवनलीला ।

વર (सं.) दूल्हा, बींद, दुलहा, पति, भरतार, स्वामी, आशीर्वाद, बरदान, (वि.) श्रेष्ठ, उत्तम, उमदा ।

વરક (सं.) सोने या चांदीके पतळे पत्र, वर्क, पृष्ठ, पन्ना, सफा, पेज ।

વરકન્યા (सं) दूल्हा दुलहिन, बरवधू, विवाहित स्त्रीपुरुष ।

વરખ (सं.) देखो વરક–वृषराशि, वृषभ, बारह राशियोंमेंसे दूसरी राशि, (ज्योतिष शास्त्र) वृक्ष, पादप, गुल्म, पेड़, दरख्त ।

વરખાસન (सं.) देखो वर्षाशन ।

વરખે (अ.) वर्षमें, सालमें, संवतमें ।

વરગ (सं.) देखो વરગ–वर्ग, समान जातिका समूह ।

વરગણી (सं.) चन्दा, अरगनी विलगनी, कपड़े रखने या सुखाने के लिये बांधी हुई डोरी ।

વરઘેટ–ર (सं.) कन्या पक्षके थोड़ेसे लोग जो वरको बुलाने जावें, बरातको रोक रखनेवाला ।

વરઘોડો (सं.) दूल्हाके बैठनेका घोड़ा, निकासी, सरकस, सवारी, बनोरी, बिंदोरी, फजीहत ।

વરઘોડાની વાડી (सं.) व्यर्थ, मिथ्या, आडम्बर, चार दिनकी चांदनी ।

વરઘોડે ચઢવું (क्रि.) फजीहत होना, दुर्दशा होना, खराबी होना ।

વરચવું (क्रि.) घबराना, परेशान करना ।

વરચાવું (क्रि.) बोलना, कहना ।

વરચસ (सं.) गुस्सेमें सिर कूटना इत्यादि कार्य ।

વરજંગ (सं.) बड़ीभारी लड़ाई, महान युद्ध ।

વરજવું (क्रि.) देखो, वर्जवुं ।

વરજોગ (वि.) विवाह योग्य ।

વરજોણ (सं.) फिक, चिंता, फजीहत, देखो वरवोडो ।

વરડવું (क्रि.) नोचना, खुजाळना कुरेदना, खुजळाना ।

વરડું (सं.) ह्रस्व तथा दीर्घ उ ऊ की मात्रा, ु, ू, अंकुर, बीजमेंसे तरुनाळका फूटाहुवा अंकुर ।

વરણ (सं.) जाति, वर्ण, ज्ञाति, जात, पदवी, गणना, लेखा, अक्षर, रंग, प्रथमअक्षर, पानी, जळ ।

વરણસંકર (वि.) दोगळा, अलग, अलगवर्णोंका मिश्रण, मा किसीकी अन्य जातिकी और बाप किसी अन्य जातिका उनसे उत्पन्न संतान, जार कर्मसे उत्पन्न, असवर्ण स्त्री या पुरुषकी औलाद, हरामजादा ।

વરણાગિયું (वि.) दंभी, छळी, कपटी, ढोंगी, ऐयाश, छैला, इस्की ।

વરણાગી (सं.) टीपटाप, ऊपरी भड़क, छैलापन, आडम्बर भपका ।

વરણાવરણી (सं.) जातिपांत ।

વરત (सं.) उपवास, अनाहार, व्रत, संकल्प, प्रतिज्ञा, नियम, प्रण मानता, चमड़ेकी रस्सी ।

વરતડી (सं.) छोटी डोरी ।

વરતણિયો-તીઓ (सं.) नगररक्षक, चौकीदार, रखवाळा, पहिरेदार, मुसाफिरको एक जगहसे दूसरी जगह पहुंचानेवाळा ।

વરતવું (क्रि) आचरण करना, चलना, रहना, बर्ताव करना, बनना, होना, जानना, परखना, पहिचानना, मिलना, प्राप्त होना ।

વરતારો (सं.) ज्योतिषी, ग्रहनक्षत्र, आदि बनानेवाळा, ग्रहचन्द्रसूर्य इत्यादिका गणित, भविष्यकथन ।

વરતાવવું (क्रि.) फैलाना, प्रख्यात करना, रोज़गार धन्धे लगाना । बरताना ।

વરતાવું (क्रि.) खरना, परखाना, वपराना, होना, फैलना ।

વરતાણો (सं.) ग्रहगणित ।

વરતિઓ (सं.) देखो वरतारो ।

વરતિક-યો (सं.) सरावगियोंका जती । [पीछेसे । (सं.) वृत्ति ।

વરતી (अ०) पीछे, होजानेके बाद,

વરદ-દાઈ-દાયી (वि.) वर देनेवाला, आशीर्वाद देनेवाला,कृपालु ।
વરદાન (सं.) अभीष्ट, वचन, प्रसाद, आशीर्वाद, शुभवचन ।
વરદી (सं.) कहावत, खबर, सन्देसा, आज्ञा, छुट्टी, हुक्म ।
વરધ (सं.) विवाहोत्सवमें मंडप मुहूर्त और लग्न इनके बीचके दिन ।
વરધ ભરવી (कि.) विवाहोत्सवमे पूजाके लिये लाया हुआ पानी, एक घड़ेमें पानी होता है और उस पर नारियळ रखा हुआ होता है ।
વરધસુતાણું (सं.) वृद्धिसूतक, जननअशौच, बच्चेके उत्पन्न होनेका सूतक ।
વરધ સાંકળી (सं.) वह गंडा या डोरा जो कि स्त्रियाँ बच्चे न जीवें तब ऐसी एक स्त्री के हाथ से जिस का कि एक भी बाळक नहीं मरा हो बनवाकर (सोना या चाँदीका) अपने नव जात बाळकको पहिनाती हैं ।
વરમ (सं.) सूजन, सोजा, चोट या बादी इत्यादि रोग के कारण शरीरके किसी भाग का फूळ आना
વરમાળ-ળા (सं.) स्वयंवर में कन्या जिसे अपना पति स्वीकार करती है उस के गळे में तब वह माला पहिना देती है उसे वरमाळ कहते हैं ।
વરરાજા (सं.) राजा के समान ठाठ बाठ बनाकर विवाह करने के लिये आनेवाला पुरुष, दुलहा, बींद । [स्त्री पुरुष ।
વરવહુ (सं.) वरवधू, वरकन्या,
વરવું (कि.) निमंत्रित करना, वरण करना, नियोजित करना, पसन्द करना, अनुष्ठान के लिये ब्राह्मणोंको बिठाना । (अ.) विवाह करना, शादी करना, काम में आना, पूर्ण होना (वि.) बदसूरत, कुरूप, बे डौल, निकम्मा हलका । [धनाढ्य, मातबिर ।
વરવો (वि.) भारी, उत्तम,
વરસ-સ (सं.) साल, वर्ष, संवत, वार्षिक वेतन, सालाना तनखाह ।
વરસગાંઠ (सं.) जन्मतिथि, जन्म गाँठ, जन्म दिवस, वार्षिक दिवस।
વરસદહાડો (सं.) पूरा वर्ष, ३६० या ३६५ दिन की अवधि ।
વરસદહાડાનોદહાડો (सं.) ऐसा दुर्लभ दिन जो साळमें एकही बार आता हो ।

वरसनां वरस (सं.) बहुतसे वर्ष, मुद्दत, बर्षों, बहुत साल ।

वरसफ़ल (सं.) वर्षके आरंभमें ज्योतिषीद्वारा कहा गया सारे वर्षका वर्णन, किसी व्यक्तिके वर्ष कैसा गुजरेगा इसके लिये ज्योतिषशास्त्रसे तय्यार की हुई एक वर्षकी जन्मपत्री ।

वरसवुं (कि.) वर्षा होना, पानी बरसना, वृष्टि होना, ऊपरसे गिरना, अचानक अच्छी तरहसे आकर मिलजाना, कुरबान होना, प्रसन्न होना, अच्छी तरह देना ।

वरस सुंवाणुं (सं.) देखो वरष सुंवाणुं । [वेतन इत्यादि ।

वरसाळु (सं.) वार्षिक, सालाना

वरसाद (सं.) वृष्टि, मेघ, बौछार, वर्षा, बरसात, ऊपरसे पतन ।

वरसाद वरसाववो (कि.) खूब देना या खूब बिखेरना, वृष्टि करना ।

वरसादनी पेठे वाट जोवी (कि.) अत्यंत आतुरतापूर्वक मार्गप्रतीक्षा करना, राह देखना ।

वरसाववुं (कि.) वृष्टि करना, अच्छी तरह देना ।

वरसी (सं.) वार्षिक श्राद्ध, मृत पुरुषके मृत्यु तिथिके बाद ठीक एक वर्ष पर कुछ श्राद्ध इत्यादि, मुसलमानोंमें मरे हुएके नाम पर प्रथम वर्ष कुछ दान पुण्य इत्यादि ।

वरसुंडी (सं.) कंठमाल नामक रोग, यह कंठमें चारों ओर गठानोंके रूपमें होता है गलगंड रोग ।

वरसेवरस (अ०) प्रतिवर्ष, हरसाल, सदैव, सालकीसाल ।

वरसोंत-ध (सं.) वार्षिक भेट, प्रतिवर्ष प्राप्त होनेवाला हक़ ।

वरसोडी (सं.) वार्षिक कर, सालाना टेक्स, वार्षिक चंदा ।

वरसोवरस (अ०) देखो वरसे वरस ।

वरसोळी (सं.) एक प्रकारका रोग जो गांठके रूपमें शरीरके बाहिर फोड़े के रूपमें रहता है, रसोळी ।

वरां (सं.) वक्त, समय, काळ, वेळा, वार, टाइम ।

वरांगना (सं.) सुन्दर स्त्री, वेश्या रण्डी, वारनारी ।

वरांगी (वि.) सुन्दर अंगवाळी, खूबसूरत (स्त्री)

वरांसवु (कि.) पछताना, अफ़सोस करना, पश्चात्ताप करना, ठगाना ।

वरांसे (सं.) भरोसे निश्चयकरके निर्धारित करके, समझमें ।

વશ્વાસ (अ०) भरोसा, विश्वास ।

વરાક (वि.) अधम, नीच, दीन, नम्र ।

વરાખડું (सं.) देखो વઢાખડું ।

વરાટી (सं.) कौड़ी, छोटा शंख ।

વરાડ-ઠ (सं.) भाग, हिस्सा, शेअर, बांटा, लड़ाई झगड़ा ।

વરાઢવું (क्रि.) लड़ाना, झगड़ पैदा कराना, तकरार कराना ।

વરાઢા (सं.) लड़ाका, फ़सादी, झगडालू, योद्धा ।

વરાઢિયો (सं.) एक प्रकारका वृक्ष और उसकाफूल ।

વરાણિએ (अ०) से द्वारा, जरिये ।

વરાધ (सं.) एकप्रकारका उदर सम्बन्धी रोग, (बच्चोंको)

વરાધે (अ.) बहानेसे, मिससे छलसे, कपटसे, मिषसे ।

વરાપ (सं.) इच्छा, आतुरता, चाह, लालसा, लिप्सा, अभिलाषा अवकाश, फुरसत ।

વરાવવું (क्रि.) विवाहना, पसन्द कराना, वरणकरना, प्रदान देना, खर्च करना ।

વરાવું (क्रि.) निमंत्रित होना, किसी अनुष्ठान के लिये नियोजित होकर आना ।

વરાહ (सं.) सुअर, शूकर, सूवर, कोल, विष्णुका तीसरा अवतार भी वराहअवतार हुआथा (पुराणोंमें)

વરાળ (सं.) भाप, वाष्प, गैस । उच्चारण, बोल, दिलकी जलन ।

વરાળયંત્ર (स.) वाष्पयंत्र, भाप के द्वारा चलनेवाली कल ।

વરાળ કાઢવી (क्रि.) दिलकी निकालना, दुःखोद्गार प्रकट करना ।

વરાળિયું (वि.) वाष्प युक्त, भाप (वाफ) निकलने की जगह ।

વરિયાળી (सं.) सौंफ, सुगन्धित बीज विशेष ।

વરિયાળીદાણા (सं.) सौंफ पर शक्कर की चाशनी चढाकर बनाये हुए गोल गोल दाने ।

વરિષ્ઠ (वि.) श्रेष्ठ, उत्तम, सर्वोत्तम, प्रधान, मुख्य ।

વરી (सं.) दो महीनों में पकने वाला एक प्रकार का धान्य (अ०) फिरसे, दुबारा । [हुआ कूआ ।

વરીડા (सं.) तालाबमें खोदा

વરુ (सं.) भेड़िया, एक कुत्तेके बराबर मांसभोजी भयानक जंगली जानवर ।

વરુણ (सं.) जलका अधिपति देव, पश्चिम दिशाका स्वामी, जलदेव ।

વરણી (सं.) वरण करनेकी क्रिया, ब्राह्मणको किसी अनुष्ठान पर नियोजन करना। शिक्षा, दंड, मार, फंसना, रुकना, पसंदगी।

વરે (अ०) साथ, संग, सहित।

વરેડી–અરેડી (सं.) उपनयन अथवा विवाह संस्कारके उपलक्ष्य में जातिभोजन।

વરેડું (सं.) सुतली, रस्सी, डोरा।

વરે પડવું (क्रि.) काममें आना, प्रयोग होना।

વરો (सं.) भोजन, जातिभोजन, जेवनार, शुभ अशुभ कार्यमे जाति भोज, खर्च, खरच।

વરોટો (सं.) गोल आकारका पत्थर, पत्थरका बेलन, पत्थरका रूठ। [रस्सी।

વરોત (सं.) बड़ा रस्सा, भारी

વરોલ (सं.) भ्रमर, भौंरा, अलि, मलिन्द जन्तुविशेष।

વરોલી (सं.) मक्खी, मक्षिका, भ्रमरी, भौंरी, कीटविशेष।

વરોળ (सं.) वंध्यापना, बांझपन, तिल्ली, तापतिल्ली।

વરોળવું (क्रि.) देखो વલોવવું।

વર્ગ (सं.) जाति, ज्ञाति, मंडल, जत्था, समुदाय, भाग, विभाग, प्रकरण, दर्जा, क्लास।

વર્ગમૂળ (सं.) वह अंक जिसका वर्ग किया गया हो (जैसे ६४ वर्ग और मूळ ८ होता है(८×८=६४ गणितविषय)।

વર્ગસમીકરણ (सं.) एक प्रकार का गणित, (बीजगणितमें)।

વર્ગીય (वि.) जातिका, वर्गका, वर्ग सम्बन्धी।

વર્જ્ય (वि.) छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, वर्जित, रद्द कियाहुवा, मना किया हुआ।

વર્જવું (क्रि.) तजना, रोकना, मना करना, छोड़ना।

વર્જિત (वि) देखो વર્જ્ય, त्याग करनेयोग्य, त्याज्य।

વર્ણ (सं.) जाति, ब्राह्मण आदि चार वर्ण, रंग, अक्षरमाला, मूलाक्षर, हुरूफ़, अक्षर, भेद, यश, वर्णन। [बखान।

વર્ણન (सं.) शोभन, गुणकथन,

વર્ણનીય (वि.) कथनीय, प्रशस्य, कहने योग्य काबिलतारीफ़।

વર્ણસંકર (सं.) विभिन्न जातिके माता पिताओंसे उत्पन्न। दोगला, असवर्ण, तूफानी, उच्छृंखल।

वर्णसमार्थ (सं.) अनुप्रास, ऐसा वाक्य जिसमें एकही अक्षर लौट लौट कर आया हो । (अक्षरमाला।

वर्णमाळा (सं.) मूळाक्षर, भाषाकी

वर्णविचार (सं.) अक्षरविचार । (व्याकरणमें प्रथम पाठ) ।

वर्णविपर्यय (सं.) अक्षरका आधा पीछे होजाना ।

वर्णवुं (क्रि.) वर्णन करना, कहना, बयान करना, कथन करना

वर्णवृत्त (सं.) वह पद्य जिस के प्रत्येक चरण में लघु गुरु का क्रम एक समान रहता हो, गणवृत्त ।

वर्णसंधि (सं.) अक्षर सन्धि ।

वर्णवर्ण (वि.) वर्ण और अवर्ण का मिश्रण, उच्च नीच का मेल ।

वर्णानुक्रमणिका (सं.) अकारादि वर्णक्रम पूर्वक सूची ।

वर्णानुप्रास (सं.) यमक, यति, वर्ण का अनुप्रास (छन्द शास्त्र में)

वर्णाश्रम (सं.) ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र वर्ण तथा, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ वानप्रस्थ और संन्यास आदि आश्रम ।

वर्णित (वि.) कथित, बयान किया हुआ । कहा हुआ ।

वर्णोच्चार (सं.) अक्षरका उच्चारण।

वर्तणूक (सं.) चाल, रस्म, आचरण बर्ताव करने की रीति । चालचलन, व्यवहार, चरित्र ।

वर्तन (सं.) आचार, रीति, बर्ताव अखबार, चालढाल ।

वर्तमान (स.) समाचार, खबर, समाचार पत्र, अखबार, (वि.) आधुनिक मौजूदा, विद्यमान ।

वर्तमानकाळ (सं.) जो समय चल रहा हो, मौजूदावक्त ।

वर्तमानपत्र (सं.) समाचारपत्र, गजट, अखबार, न्यूज पेपर ।

वर्तवुं (क्रि.) आचरण करना, चलना, रहना, बनना, होना, जाना, परखना, देखना ।

वर्तारो (सं.) देखो वरतारो

वर्ताववुं (क्रि.) देखो वरताववुं

वर्तिक (सं.) जैन साम्प्रदायिक यति, श्रावक धर्मानुयायी साधु ।

वर्ती (वि.) रहनेवाला, होनेवाला।

वर्तुळ-ल (वि.) गोलाकार, गोल वस्तु, मण्डल, गोल ।

वर्धक (वि.) वृद्धिकर्ता, बढाने वाला, अधिकता देनेवाला ।

वर्धमान (वि.) वर्धित, बढता हुआ, वृद्धप्राप्त, उदित, सुख सम्पत्ति में वृद्धिगत ।

વર્મ (सं.) कवच, शरीर त्राण, लोहमयवस्त्र, बख्तर ।

વર્ય (वि.) श्रेष्ठ, मुख्य, खास, पसन्द किया हुआ, प्रवर, वर, शिरोमणि ।

વર્ષ (सं.) साल, संवत, बारह महीने अथवा ३६० या ३६५ दिनों का अवधिकाल, वत्सर ।

વર્ષફલ (सं.) संवत का हाल एक वर्षभरका भविष्य कथन, (ज्योतिष शास्त्रद्वारा) ग्रह गणित द्वारा वर्ष भर के सुख दुख की जन्मपत्रिका ।

વર્ષા-કાળ-ઋતુ (सं.) वृष्टि, बारिश, बरसात, प्रावृट्काल, पानी बरसना, ऊपर से गिरना ।

વર્ષાસન (सं.) वार्षिक वेतन, सालाना तनख्वाह या पुरस्कार ।

વર્ષોવર્ષ (सं.) प्रतिवर्ष, हरसाल, प्रति संवत्सर, वार्षिक ।

વલખાં (सं.) व्यर्थ उद्योग, व्यर्थ परिश्रम, मिथ्या प्रयत्न ।

વલખાઝુખી (सं.) भटका झली, झूमाझटकी, छीना झपटी ।

વલણ (सं.) इच्छा, रुख, भावना, रुचि, मति, आकार, बलीता (जुआरके बैठक) खाकी, मोच, लचक, झोल, ढंग, मरोड़, टेढ़ापन, ब्यौहारमें टोटेनफेका बट्टा, बेलन । [में रखी हुई जमीन ।

વલદાણિયાં (सं) रुपयोंके बदले

વલદે-દો (सं.) वल्द, पुत्र, लड़का ।

વલંદો (सं.) यूरोप खंडके हालेण्ड देशकानिवासी, डच, हालेंडर्स ।

વલંબાવું (क्रि.) लगरहना, संलग्न होना । [हाथकी चूड़ी ।

વલય (सं.) हाथका कंकण, कंगन,

વલવલ (सं.) चाहिये उससे अधिक चंचलता, बेचैनी चुलबुलाहट । [पटी, चंचल ।

વલવલતું (वि.) बेचैन, छट-

વલવલવું (क्रि.) चंचलता करना, चुलबुलाहट करना. बेचैनी करना ।

વલવલાટ (सं.) देखो वलोपात ।

વલવલિયું (वि.) चंचल, चुलबुला. चपल, उद्दंड, उच्छृंखल ।

વલી (सं.) फकीर, (मुसलमान) साधु, ईश्वरभक्त ।

વલુ (सं.) पुट, तह, बर ।

વલૂંડું-લૂંડું (वि.) लगा हुआ, छिका हुआ, लालचमें फंसाहुआ ।

વસ ઘવું (क्रि.) हिलना, लगना, पकना, लालचमें एकबार सफलता पाकर बार बार उसकी इच्छा करना । [खुजाल ।
વલુર-ળ (सं.) खुजली, खाज,
વલુરવું (क्रि.) नोंचना, खुजलाना, खोरना, कुरेदना, खुरचना ।
વલે (सं.) स्थिति, दशा, हालत, अवस्था, दुर्दशा, उपाय । [दिन ।
વલોત્રાવાર (अ०) तीसरे चौथे
વલોણું (सं.) मथनी, बिलोनेका बरतन, बिलोवनी, मंथनदण्ड, रवई, रई, दही आदि मथनेका दण्ड अथवा पात्र ।
વલોપાત (सं.) बेचैनी, व्याकुलता, तोफान, गड़बड, हायहाय, रुदन, विलाप ।
વલોપાતિયું (वि.) तूफानी, उपद्रवी, बेचैन, व्याकुल, व्यथित ।
વલોવવું (क्रि.) इधर उधर हिलाना, मथना, दूध दही आदि पदार्थोंका मंथनदण्ड द्वारा मथना । बिलौना ।
વલ્કલ (सं.) छाल, त्वक्, बकला, वृक्षोंकी छाल, वृक्षकी भीतरी छाल, वृक्षकी छालके वस्त्र ।
વલ્લભ (सं.) पति, स्वामी, नाथ, कंत, खसम, आशिक, परकीय प्रीतम, (वि.) प्रिय, प्यारा, दुलारा । [प्रिया, माशूक, प्रियतमा ।
વલ્લભા (सं.) स्त्री, भार्या, पत्नी,
વલ્લભાચાર્ય (सं.) वल्लभ संप्रदायका आदि प्रवर्तक, वल्लभ भट्ट ।
વલ્લભી (वि.) वल्लभाचार्य सम्बन्धी
વલ્લરી (सं.) बेल, लता, बेलि ।
વલ્મીક-કિ (सं) दीमक, बिम्बोट, दीमकका बनाया हुआ मिट्टीका घर ।
વલ્લવ (सं.) ग्वाला, ग्वाल, गऊ पालक मनुष्य ।
વલ્લિકા (सं.) देखो वल्लरी ।
વલ્લા (सं.) पूर्ववत्
વલ્લી (सं.) पूर्ववत्
વલ્લું (वि.) ढीला, चौड़ा खुला हुआ, जुदाजुदा ।
વલ્લું ચાલવું (क्रि.) टेढ़ा चलना तिरछा चलना । [थामा ।
વવરાયું (क्रि) ठहराया, रोका,
વવરાવું (क्रि.) काम में, आना, खर्च होना, प्रयोग होना ।
વવળવું (अ०) खुजाल आना, खुज लाना । [खुल, खुजाल ।
વવળાટ (सं.) खाज, खुजलाहट,

વશાવું (क्रि.) ठगाना, छलेजाना।
વશો (सं.) विवेक, ज्ञान, समझ शक्ति।
વશ (अ०) स्वाधीन, तावे, मोहित, आधीन, अधिकृत, अधिकार युक्त, अधिकार प्रभुत्व। (वि.) तावेदार, वश वर्ती।
વશા (सं.) वंध्या, बाँझ औरत, पुत्री, ननँद (पति की बहिन) हथिनी, हस्तिनी, हाथी की मादा।
વશાત્ (अ०) कारसे, योगसे, अधीनता पूर्वक।
વશાત (सं.) कीमत, मूल्य, पूँजी।
વશિયર (सं.) सर्प, साँप, भुजंग, अहि, पन्नग, उरग, विषधर, विष, जहर, हलाहल।
વશીકરણ (सं.) आधीन करने की प्रक्रिया, वश करने के लिये तंत्र, मंत्र अथवा यंत्र आदि, वश में करनेका मन्त्र-प्रयोग-आदि।
વશેક (अ०) विशेष, अधिक, ज्यादः।
વશ્ય (वि.) वशीभूत, अधीनी भूत।
વસટાણું (सं.) मनोरथ विचार, प्रस्ताव, भेद, तजवीज, रूठे हुए को मनाना, वेश्यावृत्ति, छिनाला।
વસટાળો (सं.) छिनाला करने वाला। [कोठा।
વસણાયલું (वि.) बिगड़ा हुआ,
વસતિ-સ્તી (सं.) बस्ती, वास, रहनेवाले लोगोंकी संख्या। बसी हुई जगह।
વસતીવાડી (सं.) बाल बच्चे।
વસતેવ (सं.) अग्नि, आग, अनल।
વસન (सं.) देखो વ્યસન पहिरने के वस्त्र, पौशाक, कपड़े लत्ते, वास, निवास।
વસની (वि.) देखो વ્યસની
વસંત (सं.) ऋतु विशेष, ऋतुराज फाल्गुण और चैत्र का महिना, मीन और मेष राशिपर जब तक सूर्य रहता है तब तकका काल, राग विशेष।
વસન્તતિલકા (सं.) वार्णिक वृत्त विशेष। यह छन्द तगण, भगण, दो जगण और दो गुरुका होता है (पिंगळ शास्त्र) [पंचमी।
વસંતપંચમી (सं.) माघ शुक्ला
વસંતપૂજા (सं.) ब्राह्मणों को बुलाकर वसन्तका पूजन करने की प्रक्रिया।

वसंतियुं (सं.) बसंती, सफेद वस्त्रपर कसूँभे के रंग के छींटे डाल कर स्त्रियों के ओढने का वस्त्र बना या जाता है इसे स्त्रियाँ वसन्त ऋतु में ओढती हैं।

वसन्ती (वि.) पीला वसन्तसम्बन्धी।

वसन्तोत्सव (सं.) वसंत ऋतुका उत्सव, होलिकोत्सव।

वसमुं (वि.) सख्त, कठिन, कठोर, कर्रा मुश्किल, खराब, खोटा, बांका, आड़ाटेढा।

वसल (सं.) सम्बन्ध, मेळ, मिलाप।

वसले (सं.) टुकड़ा, खण्ड, भाग, युक्ति, प्रबन्ध, तदबीर।

वसल्लो (सं.) बारदाना, टाट, बोरी, बोरा, थैला, जाळा।

वसवसो (सं.) अन्देशा, खतरा, भय, सन्देह, वहम, शक।

वसवा (सं.) भाग, जमीनका टुकड़ा।

वसवायुं (सं.) शिल्पकारियोंकी जाति, जैसे बढई, लुहार, मोची, कुँभार, सुनार, नाई, धोबी बस्ती का काम करनेवाले।

वसवास (सं.) बराबरी, चढा-बढी, स्पर्धा।

वसवुं (क्रि.) रहना, वास करना, निवास करना, बसना, मनमें आना, दिलमें बैठना, निश्चय होना, ठसना, मुकाम करना।

वसती करवी (क्रि.) बन्द करना, रोकना, ठहराना, अटकाना।

वसाणुं (सं.) पसारके यहां मिलनेवाली वस्तु, औषधि, दवा, जड़ी बूटी।

वसात (सं.) कीमत, मूल्य, पूंजी।

वसाववुं (क्रि.) बसाना, बस्ती करना, लाकर बसाना, खरीद करना, नये स्थानपर बसाना।

वसाथुं (सं.) कोळ भीलों द्वारा ग्राम रक्षा।

वसावो (सं.) चौकीदार, रक्षक, पहिरेवाला, नगर रखवाला।

वसियत (सं.) जागीर, जायदाद, उत्तराधिकारपत्र।

वसियतनामुं (सं.) मृत्युके बाद अपनी जायदाद जागिरका अधिकारपत्र, वसीयतनामा।

वसिया (सं.) वास, निवासस्थान, रहनेका स्थान।

वसिलो—सीलो (सं.) जरिया, मदद, मारफत, द्वार, योग।

વસુ (सं.) गण, देवताविशेष, धर, ध्रुव, सोम, विष्णु, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास ये अष्ट वसु नामसे प्रसिद्ध देवता हैं। पैसा, धन, द्रव्य, वृक्ष, सूर्य, अग्नि।

વસુકવું-ડીજવું (क्रि.) दूध देने से बंद होना, गाय भैंस इत्यादिका दूध देने से हट जाना।

વસુધા (सं.) पृथ्वी, भूमि।

વસુમતિ (सं.) पूर्ववत्।

વસુલ-સૂલ (सं.) प्राप्त, जमा, आमदनी, आय।

વસુલ કરવી (क्रि.) प्राप्त करना, आमदनी संग्रह करना।

વસુલ થવું (क्रि.) प्राप्त होना, आमदनी मिलना, ऋण आदि प्राप्त होना।

વસુલદાર (सं.) वसूल करनेवाला, वसूली करनेवाला, उघानेवाला।

વસુલબાકી (सं.) आमदनी देकर जो धनबाकी रहे, गणितविशेष।

વસુલાત (सं.) महसूल, जमाबंदी, वसूली भरना, प्राप्ति।

વસો (सं.) हठे बीघा, बिस्वा, बीस बिस्वांकी, सवा पांच हाथ, साढ़े तीन गज, भूमि नापनेका परिमाणविशेष, अन्दाज, अटकल, आबरू।

વસ્ત (सं.) देखो વસ્તુ।

વસ્તાર (सं.) देखो વિસ્તાર।

વસ્તારવુ (वि.) बड़े कुटुम्बवाली।

વસ્તારી (वि.) बड़े कुनबेवाला, बड़ा गृहस्थ, कुटुम्बयुक्त।

વસ્તીપત્રક (सं.) ग्राम शहर इत्यादिकी मनुष्यगणना। जन-संख्या।

વસ્તીવાળું (वि.) बड़े कुटुम्बवाला

વસ્તી (सं.) बस्ती, लोग, जन, मनुष्य, आबादी।

વસ્તુ (सं.) पदार्थ, द्रव्य, सामग्री, चीज़, मूल स्वभाव, गुण, धर्म। मूल उद्देश, भाव, तात्पर्य, अर्थ, नाटक इत्यादिका विषय।

વસ્તુગત્યા (अ०) वास्तविक, दर असल, सच्ची दृष्टिसे देखनेपर।

વસ્તુતઃ (अ०) सचमुच, दर असल, निश्चयरूप।

વસ્તેવ (सं.) अग्नि, आग, अनल।

વસ્ત્ર (सं.) वसन, कपड़ा, चीर, पट, पोशाक।

વસ્ત્રાલોચન (सं.) चीरहरण, वस्त्रोंकी लूट, खसोट।

વસ્ત્રાલંકાર (सं.) कपड़े लत्ते और जेवर, वसनाभूषण, ज़ेवर तथा कपड़े ।

વસ્ર્યું (वि.) देखो वसमुं ।

વહન (सं.) अग्नि, वह्नि, आग, अनल,; (सं.) वाहन, सवारी (क्रि.) लेजाना, वहन करना ।

વહવાવું (क्रि.) ठगाना, छलेजाना ।

વહાઠ (सं.) बाढ, धार, काट-डालनेकी शक्तिवाली धार, घाव, जखम, गन्नेके खेतकी कटती, कटनी (फसल या खेतकी)

વહાઠકામ (सं.) काटातराशीका धंदा, (डाक्टरका)

વહડ કુટિયો (सं.) झगड़ालू, मांजगड़ करनेवाला, तकरारी ।

વહાઠવું (क्रि.) देखो वाढवुं ।

વહાહિયું (सं.) खजूरका कोथला पिंडखजूरका थैला, बरिया ।

વહાડી (सं.) घीभरनेका पात्र विशेष ।

વહાડીઓ (सं.) देखो वाडियो ।

વહાણ (सं.) नाव, नौका, जलयान, पोत, जहाज ।

વહાણઈ (सं.) खड़ाऊं, पादुका, पावड़ी ।

વહાણવટી (सं.) नाविक, मल्लाह, खलासी, जहाजोंमें माल भरकर जलमार्ग द्वारा व्यापार करनेवाला बड़ा व्यापारी ।

વહાણવટું (सं.) समुद्रयात्रा, जल-यात्रा, सफर, समुद्रगमन, नाव, अथवा जहाज़ चलानेका धन्धा ।

વહાણું (सं.) प्रभात, भिनुसारा, भोर, सुबह, प्रातःकाळ ।

વહાણેલું (सं.) पूर्ववत् (छंदमें)

વહાર (सं.) किसीकी सहायता, हुकम, मदद, फरियाद, सहायताके लिये प्रार्थना, किसीकी रक्षाके लिये भेजीहुई सेना। [प्रेम,लाड,प्यार ।

વહાલ (सं.) हेत, प्रीति, स्नेह

વહાલપણ (सं.) हेत, प्रेम, आसक्ति, माया, प्यार ।

વહાલું (वि.) प्रिय, प्यारा, दुलारा, लाड़ला, योग्य, उचित, रुचिकर, जिससे प्रेम उत्पन्न हो ।

વહાલેસરી (सं.) हितेच्छु, शुभ-चिंतक, शुभेच्छु ।

વહાવું (क्रि.) ठगाना, छलेजाना छलना, फुसलाना, बहकाना, पोसना, ठगाना ।

વહિતરશ્ર (सं.) मजदूरकी ।

વહિવટ-ત્ર (सं) श्रम, मिहनत, परिश्रम, आयास, मजदूरी, मज-दूरका काम, मजूरी, मेहनताना, मेहनतकरनेवाला, बेलदार, बदलेमें कुछ लेकर कियाहुवा काम ।

વહિતરો (सं.) मजदूर, मजूर, बेलदार ।

વહિવટ (सं.) प्रथा, चाल, रिवाज, व्यवहार, शिरस्ता, व्यवस्था, प्रबंध लेन, देन, संबंध, प्रसंग ।

વહી (सं.) हिसाब लिखनेकी किताब, वंशावलीकी पुस्तक ।

વહીપુજા (सं.) दिवाळीके दिन हिसाबकी नई किताबें चालूकी जाती हैं और उनका पूजन होता है ।

વહીવટી (सं.) प्रथा चलानेवाला, रीति चालनेवाला । [वाळा भाट ।

વહીવંચો (सं.) वंशावळी पढ़ने

વહિવટદાર (सं.) व्यवस्थापक, प्रबन्धक, कारभारी ।

વહુ (सं.) वधू, बहू, पत्नी, भार्या, औरत, लुगाई, दारा, प्रिया, कान्ता, गृहिणी, अर्धांगी, कलत्र, पुत्रवधू. स्नुषा, स्रीके नामकेसाथ ससुरालमें इसशब्दको प्रयोग करते हैं । [स्री पुरुष ।

વહુવર (सं.) पतिपत्नी, वरवधू,

વહુવારૂ (वि.) जवान विवाहितस्त्री

વહેંચણ (सं.) बँटवारा, बाँटा, विभाग, वर्गीकरण, हिस्सा भाग ।

વહેંચવું (क्रि.) हिस्सेकरना, भागकरना, विभागकरना, अलग अलगकरना, मतभेद होना, फूट होना ।

વહેંચીલેવું (क्रि.) लड़ाईकरना ।

વહેંચાવું (क्रि.) भागहोना, हिस्सा होना, पृथक २ रहना, भिन्नता छूटना, फूटहोना । [चालु ।

વહેતું (वि.) प्रवाहित, बहताहुआ,

વહેંતીનીકે પગદેવો (क्रि.) चालु कार्यमें विघ्न उपस्थित करना, खलल करना ।

વહેતીગંગા-સેર (सं.) चालुकाम दनी या रोजगार धन्धा ।

વહેતુમૂંકવું (क्रि) दूरकरना, अलग रखदेना, भटकाना, ध्यानमें नलेना, कुछ परवाह न करना ।

વહેમ (सं.) शक, सन्देह, शुबहा भ्रम, भ्रांति, संशय, अन्देशा, अविश्वास, वितर्क, दुष्टभाव, कुक-ल्पना, अन्ध विश्वास ।

વહેમી (वि.) शंकित, अविश्वासी शक्की, तरंगी, लहरी, कच्चे कानोंका सैसयी ।

वहेमीलुं माणुं (सं.) असंतसंशयी, बहुत संदेह करनेवाला व्यक्ति ।

वहेर (सं.) तराशने अथवा छेद करनेसे निकलाहुवा भूसा, बुरादा चूर ।

वहेरवुं (क्रि) काटना तराशना, छेदना, चीरना (लकड़ी इत्यादि)

वहेरण (सं.) आरी, करवत, आरा, करौत, तराशने अथवा चीरनेका वेतन ।

वहेरणीओ (सं.) चीरनेवाला, तराशनेवाला, आराकश, बढ़ई ।

वहेराई-मण (सं.) तराशने या चीरनेका वेतन । [फासला ।

वहेरो (सं.) अन्तर, भेद, फर्क,

वहेल (सं.) गाड़ी, वाहन, सवारी ।

वहेलुं (वि.) उतावला, जल्दबाज (अ०) जल्दीसे, शीघ्रतासे, तेजीसे, थोड़ीही देरमें, तुरन्त, सरलतासे, बिना परिश्रम, खुशीसे ।

वहेवडावबुं-रावबुं (क्रि.) बहकाना, बहार निकालना, ठगाना, निकालना, फुसलाना । [कमाना ।

वहेवरावबुं (क्रि.) नफापाना

वहेवाई-वाण (सं.) लड़के या लड़कीकी सासू, व्यायन ।

वहेवाई (सं.) वरकन्याका बाप, (आपसमें)

वहेवार (सं.) व्यवहार, सम्बन्ध, नाता, घरोपा, परिचय, समागम, व्यापार ।

वहेवारियो (सं.)साहूकार व्यापारी ।

वहेवारिक (वि.) साधारण, मध्यम जिससे व्यवहार चले ।

वहेवारु (वि.) साधारण, मध्यम ।

वहेवुं (क्रि.) बहना, प्रवाहहोना चूना, टपकना, द्रवना, पूराहोना, हद्दबाहिरजाना, बहकना, फटना, उद्भवहोना, निकलना, अमर्याद होना, उठाना, तानना, सहन करना निभाना ।

वह्नि (सं.) अग्नि, आग, पावक ।

वहींजवुं (क्रि.) चलेजाना, जाते रहना, बहजाना, निकलजाना ।

वहोजा (अ०) चलजा, निकलजा ।

वहेलो (सं.) देखो वेहलो ।

वहोणुं (सं.) बिना, बगैर ।

वहोन (सं.) देखो वहन ।

वहोरत (सं.) देखो वोरत ।

वहोरतीओ (सं.) देखो वोरतीओ ।

वहोरो (सं.) बौहरा, मुसलमान व्यापारी जाति विशेष ।

વળ (सं.) बल, बट, ऐंठन, मोड़ मरोड़, सामर्थ्य, शक्ति, ताकत, आंटा, बनावट, रचना, युक्ति, कला, करामात, पेच, लाग, फांदा दाव, अनुकूलता, द्वेषकीना, डाह, अंटस, जलन ।

વળાકવળ (सं.) अनुकूलता और प्रतिकूलता, हानिलाभ ।

વળકો (सं.) मनकीशांति, सहानुभूतीकमहोना ।

વળગણ (सं.) सम्बन्ध, निस्बत, प्यार, भूतप्रेतसे कष्टपाना, परकीय स्त्री पुरुषकाप्यार, कब्जा मालिक, भूत प्रेत इत्यादि ।

વળગણી (सं.) अरगनी, बिलगनी, बंधा हुआ रस्सीका टुकड़ा जिस पर कपड़े लत्ते रखे जाते हैं।

વળગવું (क्रि.) लगना, चिपटना । पकड़ना, रख छोड़ना, जबरदस्तीसे लेना, मिलना, आलिंगन करना, लड़ाई करना, झगड़ा करना, टंटा फसाद करना । शंकको लोहवत होना ।

વળગાડ (सं.) भूत इत्यादिसे व्यथित होना, भूतप्रेत इत्या० ।

વળગાડવું (क्रि.) लगाना, चिपटाना, मिलाना, भेट कराना ।

વળગી પડવું (क्रि.) आलिंगन देना, चिपट जाना । [करना ।

વળગીને બોલવું (क्रि.) आग्रह

વળ ચડાવવું (क्रि.) उसकाना, दम्पट्टी देना, बढाना, बल देना ।

વળણ (सं.) देखो વલણ ।

વળતર (सं.) बदला, एवज़ ।

વળતાં (अ.) पीछे लौटते, वापिस होते ।

વળતાં પાણી (सं.) शांति, गुस्से में नरम होता हुआ क्रोध, जोरकी कमी, वर्षा होनेका चिन्ह ।

વળતી કળા (सं.) बीमार मनुष्य को धीरे धीरे नीरोगता प्राप्त होना ।

વળતી દશા-દહાડા (सं.) भाग्योदय, अच्छी दशाका आगमन ।

વળતી (अ.) पीछे, पीछेसे, बादमें ।

વળદાર (वि.) ऐंठा हुआ, आंटेदार, पेचदार, बटा हुआ ।

વળ આપવો (क्रि.) बल देना, बटना, मरोड़ना, ऐंठना ।

વળવળ (सं.) बटपट, बेचैनी, अस्वस्थता । व्यग्रता ।

વળવું (क्रि) बांका होना, टेढा होना, तिरछा होना, ऐंठना, बदलना, फिरना, मुड़ना, लौटना, गोळ फिरना, दूर जाना, लाभ होना, पक्ष लेना, सीधी राह छोड़कर दूसरी राह जाना, कटाना, कम होना, शरीरकी जुदी जुदी स्थिति करना।

વળ શીખવો (क्रि.) दिलमें डाह रखना, चिपट रहना।

વળાવવું (क्रि.) विदा करना, कुछ दूर तक जाकर पहुंचाना, साफ कराना, लड़कीको ससुराळ में पहुंचाना, वापिस लौटाना, समझाना।

વળાવું (क्रि.) यात्रामें भयानक स्थानोंमें किसी रक्षकको साथ रखना, रक्षकको पैसे देना, साथ साथ जाकर मार्ग दिखाना।

વળાવો (सं.) रक्षक, रखवाळा, रास्तेमें संभाल रखनेवाळा।

વળી (अ.) फिरसे, पुनर्वार, दुबारा, तदुपरान्त, भी, (सं.) लकड़ीके मुहं पर मजबूती के लिये लगाया हुआ किसी धातुका छल्ला, खाम।

વળી જવું (क्रि.) मुड़ना, झुकना, लौटना, छूटना, वापिस होना।

વળું (सं.) टोली, मंडली, जमात, बसीका, अरिया, कुआ खोदते समय पृथ्वीसे निकलनेवाले अलग अलग पड़-तह। वह झरना जो भूमिके खोदनेसे निकले लोहेके पतरेका खोल, जमीनका थोड़ासा हिस्सा, कपड़ेपर पसीनेका दाग, गेहूंकी रोटी।

વળુઢવું (क्रि.) लगना, प्रेम करना।

વળુંદું (अ.) से लिये, वास्ते, कारण। [एज्यूकेशन।

વળુંકો (सं.) शिक्षा, शिक्षण,

વળોટ (सं.) मरोड़, ढंग, ढांचा, सूरत।

વળોટ (सं.) देखो વળુંકો।

વળોટવું (क्रि.) श्रेष्ठ होना, उत्तम होना, बढिया होना।

વાંક (सं.) टेढापन, टेढाई, बक्रता, तिरछापन, स्त्रियोंके हाथमें पहिरनेका सोना या चांदीका आभूषणविशेष, गुनाह, अपराध, भूलचूक, दोष, बल, मरोड़, ऐंठन।

વાંકડેલું (वि.) आड़ाटेढा, बांका टेढा, आड़ातिरछा।

વાંક કાઢવો (क्रि.) दोष निकालना, अपराध ढूंढना, बांक बताना।

वांकडी (वि.) उत्तम आतिका अच्छी किस्मका, फांक, चोर।

वांकडुं (सं.) बकता, टेढापन, आभूषणविशेष, अंगुलियोंमें पहिननेका एक जेवर विशेष, घोडा, अश्व, (वि.) बांका, टेढा, तिरछा, आड़ा।

वांकडे (सं.) वरको देनेका दहेज।

वांकलडुं (वि.) देखो वांकडुं।

वांकाई-श (सं.) टेढापन, तिरछापन, बकता, बांक।

वांका बोलु (वि.) टेढा बोलनेवाला।

वांकी चाल (सं.) कुचाल, बदचलनी। [नाराजी, असन्तुष्टता।

वांकी नजर (सं.) अवकृपा,

वांकी पावडी मुकवी (कि.) दिवाला निकालना, दरिद्रता दिखाना।

वांकुं (वि.) बक्र, आड़ा अवळा, तिरछा, टेढा, बांका, बुरे रास्ते जानेवाला, कुटिल, खोटा, ऐंठा, युक्तियुक्त, छैला, रंगीला, छुपा, अकड़ैत, अनबन, बकता, नाराजी।

वांकुंचुकुं (वि.) आड़ाटेढ़ा, उलटा सीधा। [बुराबर्ताव करना।

वांकुंआववुं (कि.) झूटकरना,

वांकुंटेक (वि.) बिलकुल टेढा, बहुतही बांका।

वांकाडाका (सं.) दुर्दैन, दुर्दैव।

वांकीनजरेजोवुं (कि.) चुपचाप देखना; कोपपूर्वक देखना, प्रेमदृष्टिसे देखना, कुदृष्टि।

वांकुं पडवु (कि) बुरा लगना, दुःख होना। [वाला निकालना।

वांकी पांघडी मूकवी (कि,) दि-

वांकुं बोलवुं (कि.) झूठ बोलना, निन्दा करना, कटु भाषण करना।

वांकुं मो करवुं (कि.) मुख मोड़ना, तिरछा देखना, गुस्से होना, मुंह बनाना, अप्रसन्न होना।

वांकुंवळवुं (कि.) नीचा झुकना, नमना, झुकना नम्रहोना।

वांकुं वराणुंजीउ (सं.) छैला फक्कड।

वांकुंवाळवुं (कि) नीचाकरना औंधा करना, उंढेलना, नरम करना, अधिकारमें लेना।

वांकुंवसमुं (वि.) अनबन, नाराज विपरीत विचार।

वांको (वि.) टेढा, आड़ा, बक्र तिरछा। [बिनाअक्लके कद।

वागआ-थथा (सं.) प्याकाली,

वांघुं-धु (सं) कन्दरा, गुफा, गार, मांद, बिळ, दर, गुहा,

वाचि (सं.) पूर्ववत्, वर्ग पंक्ति. स्थिति, बात, किस्मत ।
वाचन (सं.) पठन, अध्ययन विद्याभ्यास ।
वाचनपाठ (सं.) सबक, पाठ ।
वाचनमाळा (सं.) पुस्तकमाला । प्रंथमाला ।
वाचवुं (क्रि.) पढना, लिखेहुएका उच्चारणकरना, समझना, जानना अध्ययन करना, लक्षमें रखना, पारंगतहोना, अभ्यास करना, बचना, इच्छाकरना, चाहना ।
वांचीकाढवुं क्रि.) शीघ्रतासे पढ़-जाना, किंवाहुआपूर्णतरहसे पढ़-डालना । [पढ़ना।
वांचीजवुं (क्रि) ध्यान पूर्वक
वांच्युं (वि.) ठगाहुवा, छलाहुवा ।
वांछना (सं.) इच्छा, मनोरथ, अभिलाश, वाञ्छा । [बुराई ।
वांछियान (सं.) निन्दा, अपकीर्ति ।
वांझ (वि.) वन्ध्या, अप्रसूता, निस्संतान स्त्री ।
वांझणी (सं) बांझ औरत, वन्ध्या स्त्री, एकप्रकारकी गाली ।
वांझियाणाउं (सं.) एकका एक पुत्र, निस्सन्तान गृह, (वि.) अत्यंत प्यारा, अकेलाही ।
वांझियुं (वि.) जिसके संतान न होती हो, जिस कुटुंबमें बाल बच्चे न होते हों, फलरहित, बेफायदा.
वांझियाणाउखडवुं (क्रि.) वंश चलनेके लिये पुत्रकी प्राप्ति, वंश तन्तुरूपमें पुत्रोत्पन्न होना ।
वांझियानापाडवुं (वि.) एकमात्र बहुत अधिकमूल्यका । [प्रसाद ।
वांट (सं.) भाग, अंश, हिस्सा,
वांटवुं (क्रि.) बाटना, भागकरना, प्रसाद देना,बेचना,हिस्से करना ।
वांटो (सं.) बांटा, हिस्सा, भाग, बटवारा ।
वांढो (सं.) कुंवारा, बेव्याहा, अविवाहित (पुरुष) रंडुआ ।
वांतरवुं (क्रि) काढना, कतरना ।
वातर (सं.) खेतमें हलसेल कीर करना, सीता, खेतमें हलद्वाराकी हुई रेखा ।
वातरवुं (क्रि.) गन्नेके बीजके वास्ते सांठेके टुकड़े करना ।
वांतरी (सं) अजका एक प्रकारका जंतु विशेष, ईली, घुन, वह कीड़े जो रेशम तथा ऊनमें उत्पन्न होकर उन्हें खा जाते हैं ।
वांदर (सं.) बन्दर, कपि, मर्कट, वानर, लंगूर, नीळ बंदर (वि.) तुफानी, बुरा, दुष्ट ।

વાંદરનું મુતરીનું પડેછે (क्रि.) न करने योग्य, काम करना पड़ता है, दुख सहना ।

વાંદરાને સળી કરે એવું (क्रि.) चंचल, बदमाश, उद्दण्ड, उच्छृंखल । [विशेष ।

વાંદરું (सं.) बंदरकी एक जाति

વાંદરચેષ્ટા (सं.) उद्दण्डता, बदमाशी, चांचल्य, तोफान ।

વાંદરી (सं.) बंदरिया, बंदरकी मादा बंदरी बानरी ।

વાંદરો (सं.) बन्दर, कपि, मर्कट बानर, वजन उठानेका यंत्र विशेष क्रेन ।

વાંધે (सं.) एक ठालरंगका पंखवाला जंतु विशेष, हवा आनेके लिये छिद्र, अथवा खिडकी, बड़पीपल आदि वृक्षोंपर दूसरा वृक्ष (यह किसी पक्षीके बिष्टासे जांदि पुराने या खोकले वृक्षमें करदेता है उत्पन्न होता है ।)

વાંધર (वि.) बैलको बदिया करते समय एकाध नस रहजानेसे जिसके अंडकोष बढ़ गयेहों (बैल)

વાંધો (सं.) मतभेद, तकरार, शक, वहम, सन्देह, बन्धन, रुकावट, आड़ ।

વાંધીલેવો (क्रि.) विवाद करना, झगड़ा करना, तकरार करना, बांधा डालना, रोकना, अस्वीकार करना ।

વાન (सं.) रंग, वर्ण ।

વાંફળ (वि.) मुफ्त, खाली, व्यर्थ, तत्वहीन, मूर्खतायुक्त ।

વાંફળાઈ (सं.) उड़ाऊपन, मूर्खता, निस्सारता, असारता ।

વાંસ (सं.) वृक्षविशेष, वंशवृक्ष, दसफुटका माप विशेष, ईंटे वगैरः तराशनेका औजार विशेष ।

વાંસકપુર (सं.) वंशलोचन, औषधि विशेष (यह नरम पदार्थ बांसमेंसे निकलता है)

વાંસછે (क्रि.) कुछनहीं, नहीं ।

વાંસન્ળ (सं.) देखो વાંસકપૂર

વાંસડો (सं.) बांस, वंश, वृक्ष विशेष ।

વાંસળી (सं.) रुपये भरनेकी लम्बी थैली (इसेलोगप्रायःकमरमें बांधते हैं) न्यौली ।

વાંસ ફરવો (क्रि.) बांस, घूमने योग्य जगह होना, ऊबड़होना ।

વાંસફોડો (सं.) बांसको चीरकर उससे डलिया पंखे चटाई इत्यादि बनानेवाली जाति ।

वांसणधाय ( ) यह एक गाळीके रूपमें प्रयोग होता है जिसका अर्थ यह होता है कि "ईश्वर करे तू मरजावे ।

वांसळडी (सं.) वंशी, मुरली, वेणु, बांसरी, बसुरी, बंसरी ।

वांसलो (सं) बसूला, बढईका लकडी छीलने के काममें आने-वाला एक औजार विशेष ।

वांसळी (सं.) देखो वांसळडी । और वांसणी ।

वांसी (सं.) हथियार विशेष, (बांसपर लोहेका, फळजड़ा होता है)

वांसे (अ०) बादमें, पीछे, पश्चात अनुपस्थितिमें, गैर हाजिरीमें ।

वांसो (सं.) शरीरका पीछेका भाग, पीठ, पृष्ठ वंश, पीठकी खडी हड्डी ।

वांसोआरेववो (क्रि.) घमण्ड होना गर्व होना, मारमारकर दुरुस्त करनेकी आवश्यकता पड़ना, मिजाज बढना ।

वा (अ०) शाबाश, ठीक, वाहवाह धन्य, उचित, अथवा, वा, किंवा

वा (सं.) बजन, हवा, वायु, समीर, वात, रोग, तरंग, इच्छा ।

वाआववो (क्रि.) तरंगआना, लहरआना, इच्छाहोना ।

वाई (स.) बादी, वातरोग, बाई, एकरोग विशेष जिसमे दांतबन्द होजातेहैं मुहंसे फेन गिरने लगती है और शरीर ठंडा पड़जाता है ।

वाळी (सं.) बिवाई, पैरोंके तलुओं में एड़ियोंमें, सर्दीके कारण दरारें होजाना, रोगविशेष (वि०) उद्दंड, बेठौर ठिकानेका, विकृत मस्तिष्कका, बेवकूफ, मूर्ख ।

वाએક (सं.) देखो वायક ।

वाએउडवुं (क्रि.) फैलना एक कानसे दूसरेकानपर जाना ।

वाએचडवुं (क्रि.) प्रकट होना, लहरमें आना, दीवानाहोना।

वाએजवुं (क्रि.) अभाव होना, (लोगोंका) यह वाक्य विशेष असभ्य लोंगो के लिये काममें लाते है ।

वाકાढीनाખवुं (क्रि.) मारना,मारते मारते खूब दुरुस्त करदेना, उतार डालना, मानभंग करना ।

वाખાतु કરવું (क्रि.) परवाह न करना, नगिनना, पतन करना ।

वाખાतोरवो (क्रि.) इधर उधर भटकते रहना, हावा खाता रहा ।

વાઝાવો (क्रि.) निरुद्यमी रहना, ठलुए रहना ।

વાઝુંઠવું (क्रि.) घबराजाना ।

વાનીઆણીજવો (क्रि.) मरजाना मरनेके समान कष्ट होना ।

વાતુડાઉં (वि.) बादीसे फूलाहुवा शरीर ।

વાપરજવું (क्रि.) इतराजाना, मनमौजी होना ।

વામાઆવવું (क्रि.) तरंगमेंआना मनमोदकबनाना ।

વાવાપરોવાવો (क्रि.) अच्छी बुरी, बात फैलना, गुणदोष लगना प्रभावहोना,(संगतिका)

વાસાથે વઢે એવું (क्रि.) जो जरासी बातोंमें तकरार करता हो

વાક (सं.) वाणी, वचन, भाषा, बोल, आकार, दम, जीव, सार, बल, पानी ।

વાક-ખ (सं.) तालवृक्षके डण्डे के रेशे, जिसकी रस्सियां बनती है

વાકડવું (वि.) कुछकटुतायुक्त, कडुआ, पवन लगनेसे कडुआ विशेष ।

વાકચાતુરી (सं.) वाचन पटुता बोलनेका तरीका, वाक्पटुता, भाषणमें चातुर्य ।

વાકેફ-ફે (वि.) जानकार, विज्ञ, अभिज्ञ, प्रवीण ।

વાકેફગાર (वि.) जाननेवाला भिज्ञ प्रवीण अभिज्ञ ।

વાકેફગારી (सं.) प्रवीणता, नै-पुण्य, जानकारी, दक्षता ।

વાકળો (सं.) नाला ।

વાક્ય (सं.) वाणी, शब्द, क्रि-करा, कथन, बोली, शब्दरचना, वचन, बोल, सूत्र, ग्रंथप्रमाण, कहावत, मसला । [उत्तर ।

વાક્યખંડન (सं.) वाक्यका

વાક્યદોષ (सं.) शब्दरचना में भूल, वाक्य में किसी प्रकारका अवगुण ।

વાક્ય પદ્ધતિ-રચના-વિચાર (सं.) जिसमें वाक्य रचना अथवा वा-क्योंका विचार हो ।

વાક્યભાગ (सं.) वाक्यका भाग ।

વાક્યાર્થ (सं.) वाक्यका मतलब, वाक्यका अर्थ ।

વાક્યાલંકાર (सं.) पादपूरणार्थ शब्द, वाक्यकी शोभा बढ़ानेके लिये अच्छे अच्छे शब्दों का प्रयोग ।

વાગ્વિદગ્ધા (सं.) सांकेतिक भाषा बोलनेवाली एक स्त्री, नायि-काविशेष ।

વાખરો (सं.) परचूनी सामान, आटा, दाळ घी शक्कर गुड़ नमक इत्यादि सामान, फुटकर सामान ।

વાખા (सं.) आपत्ति, आपदा, कमबख्ती, दुःख, भूखों मरना, दुर्दिन, उलटी, कयदस्त, हैजा, कालरा ।

વાખડ (सं.) एक प्रकारका नेत्र रोग, जिससे बाळ खिर जाते हैं ।

વાખાડું (वि.) उघाड़ा, बिना ढंका, हवा लगता हुआ ।

વાખો (सं.) देखो વાખા ।

વાગ્ (सं.) वाणी, भाषा, जबान,

વાગ્દાન (सं.) वचन, प्रदान, वादा, वचन देना ।

વાગ્દેવતા (सं.) सरस्वती, शारदा ।

વાગ્બાણ (सं.) ताना, उलाहिना, उपालंभ, कटुवाक्य, बाणकी तरह चुभनेवाले वाक्य ।

વાગ્યુદ્ધ (सं.) कलह, जबानी लड़ाई, गाली गलौज, तूतू मैंमैं ।

વાગ (सं.) लगाम, बागडोर ।

વાગતાં (अ०) ठीक समयपर, बराबर वक्तपर । [करता हुआ ।

વાગતું (वि.) बजता हुआ, शब्द

વાગતો ઘંટ (सं.), आत्मश्लाघी, शेखीखोर, बातूनी, लफंगा, गप्पी ।

વાગડિયું (वि.) बागड़ देशका, बागड़ी, स्त्रियोंके पहिननेकी पोशाक विशेष ।

વાગણું (सं.) देखो વાગોળ ।

વાગવું (क्रि.) आवाज होना, शब्द होना, ध्वनि होना, बजना, जख्म करना, लगना ।

વાગીશ (सं.) बृहस्पति, देवगुरु ।

વાગેશ્વરી (सं.) सरस्वती देवी, गुरु पत्नि, देवी विशेष ।

વાગો (सं.) झंगा, जामा, गलेसे घुटनोंतक पहिरनेका कपड़ा, चोगा, तेल सिन्दूरका लेपन । चोला, पौशाक ।

વાગોલ-ળ (सं.) चमगादड़, पक्षी विशेष, बागल, उगाल, पागुर, चबाकर फिर निकाला हुआ

વાગોળવું (क्रि.) उगालना, पागुर करना, खाया हुआ उगलकर फिर कुचलकर (चबाकर) खाना । मनन करना, चिन्तन करना ।

વાઘ (सं.) व्याघ्र, शेर, नाहर, सिंह, वीरमनुष्य, खूनख्वार, भयंकर, भेड़ बकरियोंका झुंड, व्याघ्र प्रकृति का मनुष्य, गहिने रखना, गिरवी ।

વાઘ કરવો (क्रि.) प्रथम वर्गों बालकों सुसज्जित करना।

વાઘ જેટલી આળસ (सं.) अत्यंत आलस्य।

વાઘણ (सं.) बाघिन, व्याघ्री, चीती, सिंहनी, शेरनी, भयंकर स्त्री, वीर स्त्री।

વાઘબારસ (सं.) आश्विन मासके कृष्ण पक्षकी द्वादशी तिथि, (इस दिन द्वार पर व्याघ्रका चित्र बनाते हैं)

વાઘ બકરી (सं.) एक प्रकारका खेल (यह कंकरोंसे खेला जाता है)

વાઘની માસી (सं.) बिल्ली, मार्जार, बिलाई, पशुविशेष, बिड़ाल।

વાઘનું માથું લાવવું (क्रि.) अत्यंत कठिन कार्य करना।

વાઘ મારવો (क्रि.) बड़ा भारी काम करना, पराक्रम दिखाना।

વાઘમાર (वि.) शूर, वीर, साहसी, बहादुर, शेरमार।

વાઘરણ (सं.) बागड़ी जातिकी स्त्री, फूहड़ स्त्री, ऐसी स्त्री जिसके सिरके बाल बिखरे रहते हों।

વાઘરી (सं.) एक जंगली जाति विशेष, व्याधा, पारधी, पशु पक्षियोंको पकड़नेका धन्धा करनेवाली एक जंगली जाति।

વાઘા (सं.) देखो વાઘો।

વાઘામ્બર (सं.) शेरकी खाल, व्याघ्राम्बर, सिंहका चमड़ा।

વાઘેર (सं.) एक जातिका लुटेरा लुटेरोंकी जाति विशेष।

વાઘેલો (सं.) राजपूतोंकी एक जातिविशेष।

વાઘેશ્વરી (सं.) देवी, सिंहवाहिनी देवी, दुर्गा, भवानी, अम्बिका।

વાચ (सं.) वाचा, वाणी, बोली, भाषा।

વાચક (वि.) बोलता हुआ, बाचनेवाला, बोधदाता, कहनेवाला, बोलनेवाला। [नेकी रीति।

વાચન (सं.) पठन, कथन, बांच.

વાચનશક્તિ (सं.) पढ़नेकी ताकत, कहनेकी शक्ति, बांचनेका ढब।

વાચસ્પતિ (सं.) बृहस्पति, देवाचार्य, पुष्य नक्षत्र।

વાચા (सं.) वाणी, बोली, भाषा, वाक्, वचन, बच, शब्द, जबान, भाषण, बोलनेकी शक्ति, वाचा।

વાચાસન (सं.) वक्ता, भाषण करनेवाला।

વાચાળ (वि.) स्पष्ट, सरल और सुंदर बोलनेवाला, बहु भाषी, बक्की, जल्द बोलनेवाला, बहुत बोलनेवाला ।

વાચાળપણું (सं.) बहु भाषण, अधिक भाषण, वाचाळता, मुखरता,

વાચિક (वि.) जिव्हा सम्बन्धी, वाणी विषयक, जबान ।

વાચ્ય (वि,) वक्तव्य, बोलने योग्य, बोध्य, बोला हुआ, कहा हुआ ।

વાચ્યાર્થ (सं.) बोलनेका खुलासा मतलब ।

વાછટ-છંટ (सं.) पवनसे उड़ेहुए वर्षाके छींटे, बौछार, फुंहार ।

વાછંટિયું (वि.) बौछार रोकने के लिये छार अथवा खिड़कीपर झुंकवा लगाया हुवा तख्ता पतरा या शिला, छज्जा ।

વાછરડી (सं.) बछड़ी, बछिया, बच्छी, बाछी, गऊ (एकबार ब्याईहूई)

વાછરડું (सं.) बच्छा, बछड़ा, वत्स, गायका बचा ।

વાછરડો (सं.) छोटा बैल, कमउमरका बैल वृषभ ।

વાછરૂં (सं.) वत्स, बच्छा, दूध पीताहुवाबचा ।

વાછલ્ય (सं.) करुणा, अनुकम्पा । स्नेह ।

વાછૂટ (सं.) ऊधोवायु, पाद, गुदा मार्गद्वारा, हवाका निकलना ।

વાજ (सं.) व्याधि पीड़ा, तोबाह उपदेश, धर्मसम्बन्धी चर्चा ।

વાજઆવવું) क्रि.) कायर होना थकना, कष्टमें फंसना ।

વાજતેગાજતે (अ०) अच्छीदशामें

વાજબી (वि.) ठीक, उचितमुनासिब, लायक, योग्य खरा, अनुकूल, बराबर, शोभित ।

વાજબીપણું (सं.) औचित्य ।

વાજવું (क्रि.) बजना, शब्दहोना ध्वनिहोना ।

વાજાવાળો (सं.) बाजे बजानेवाला, ढोल नगारे ताशे आदि बाद्योंको बजाकर उदर भरनेवाला ।

વાજિત્ર (सं.) वाद्य, बाजा ।

વાજિયા (सं.) पानी पिलाकर उगायेहुए गेहूं, सींचके गेहूं ।

વાજી (सं.) तुरग, घोड़ा, अश्व, हय, बाण, तीर, शर, अडूसेकावृक्ष वृक्ष विशेष ।

વાજીકરણ (सं.) बलवर्धक, पुष्टिकारक, वीर्य वर्धक, आदि ।

વાજીંત્રિકા (सं.) जादू, मंतर, हुनर । [संघ, मंडली, जमाव ।

વાજું (सं.) बाजा, वाद्य, बाजा,

વાઝડું-ઝાડું (सं.) तुफान । [हिस ।

વાંછના (सं.) इच्छा, चाह, ख्वा-

વાંછવું (क्रि.) इच्छाकरना, चाहना

વાંછિત (वि.) इच्छित, चाहाहुआ अभीप्सित ।

વાટ (सं.) सड़क, राह, पथ, पंथ मार्ग, रास्ता, बत्ती, दीवट, बघारी हुईछाछ, चने इत्यादिका पानीमें घोलाहुवा चून, पाहियों के ऊपर लोहेका गोळ चक्कर, पटा, पाट, धर्रा ।

વાટઉઠવી (क्रि.) बिगड़जाना, खराबहोना, बरबादहोना, विनाश होना । [विशेष ।

વાટકી (सं.) कटोरी, कौल, पात्र,

વાટખર્ચી (सं.) मार्गव्यय, रास्ता खर्च, परलोकके लिये इसलोकमें कियाहुवा दानपुण्य ।

વાટજોવી (क्रि.) राह देखना, मार्ग प्रतीक्षा करना, इंतजारकरना।

વાટણિઓ (सं.) पीसनेवाला, लोढी, बाटने पीसने घोटनेका पत्थर ।

વાંટણી (सं.) भाग, बांट, हिस्सा, विभाग ।

વાટનોવાટસરૂ(वि.) रास्ते चलने वाला, अनजान, अपरिचित ।

વાટપડવી (क्रि.) सायंकालहोना, सन्ध्याकालहोना, मार्ग होना ।

વાટપાડવી (क्रि.) लूटना, रास्ता करना ।

વાટપાડુ (वि.) रस्तेमें रोककर लूटनेवाला, नयारस्ता खोजनेवाला अग्रेसर ।

વાટમાંવહેવું (क्रि.) व्यर्थहो बरबाद होजाना, भागजाना, चम्पत होना ।

વાટમારૂ (वि) मार्ग जातेहुवे लोगोंको मारकूटकर उनका माल मत्ता छीननेवाला, मुसाफिरोंका लुटेरा । [हटाना, रास्ता करना ।

વાટભૂલાવવી (क्रि.) हराना पीछे

વાટવું (क्रि.) कूटना । कुचलना बाटना, पीसना, हिस्सेकरना, भागकरना, निंदाकरना, खराब करना ।

વાટવો (सं.) बटुआ, पानसुपारी इत्यादि रखनेकी गोळ आकार-वाली थैली ।

વાટસરૂ (सं.) यात्री, मुसाफिर, पथिक, पांथ, बटोही, प्रवासी ।

• વાઝિંત્ર फुलवाड़ी, बगीचा, आराम, छोटाउपवन। [गोलेका आधाभाग।
વાઢી (सं.) मरिचक्षमेंसे निकलेहुए
વાઢું (सं.) पात्रविशेष ।
વાઢેશ (सं.) देखो વઢસઇ।
વાઢો (सं.) छुरी, सिकुड़न, पाडा पटा, घया, पहियेपरका लोहेका गोळपट्टा, चूनेका थर, पेटकेबळ, (रेखाएँ)
વાડ (सं.) मुहला, बाड़ा, घेरा हाता, बोगद, गली, गन्नेका खेता गन्ना पेल्नेका प्रेस, धार, घाव, जखम, कद्द, कोळा, कुमड़ा, फलाविशेष ।
વાડતેવોવેલે (क) " महाराजा तथा प्रजा," जैसा राजा वैसी प्रजा ।
વાડવગર વેલે ન ચઢે (क) बिना सहायताके कार्य नहीं हो सकता, बेवसीला आदमी तरकी नहीं करसकता ।
વાડ સાંભળે વાડનો કાંટો સાંભળે (क) दीवारकोभी कान होते हैं।
વાડ વેલાને ખાય ત્યારે ફરીયાદ કોને ? (क) रक्षकही भक्षक बन- जावे तो कैसे बचे ! रक्षक खुदही हरामखोरी करे तो रक्षा कैसे हो?

વાડવાંખવી (कि.) बिरवाना, चारों तरफ भीड़होना ।
વાડકી (सं.) कटोरी, कचोळी, प्याली, पात्र विशेष, छोटाकटोरा ।
વાડકું (सं.) बड़ी कटोरी, प्याला, कटोरा, पात्र विशेष । [प्याला ।
વાડકો (सं.) बड़ाकटोरा, बड़ा-
વાડવ (सं.) ब्राह्मण, विप्र, द्विज ।
વાડિયું (सं.) छुहारे-पिंडखजूर भरनेका थेला । [लालसा ।
વાડિયો (सं.) अतिशय इच्छा
વાડી (सं.) वाटिका, बाग, पुष्प, गस्तकमें गुथेहुए फूल, गुंथेहुए फूल, बीचमें घर और आसपास वृक्षलतायुक्तभूमि । [गूंथना ।
વાડીભરવી (कि.) बालोंमें फूल
વાડીચુંટાઈજવી (कि.) बिगड़ना बिखरजाना, धूळधाणीहोना ।
વાડીએ ફુલવી (कि.) अच्छी निपज होना ।
વાડીનોવરઘોડો (सं.) ऊजरीठाठ बाठ, भड़कीलामनुष्य ।
વાડીપડું (सं.) वाटिकाके आस- पासकी भूमि ।

વાડો (સં.) बाड़ा, घरके पीछेका खुला हुआस्थान, कम्पाउण्ड, जिसमें पशु बांधे आते हों, खुलीहुई जगहवाला बड़ाभारी मकान, मोहल्ला, ग्वाड़ा, ग्वाड़ी, पाखाना, शौचागार, टट्टी, संडास, पक्ष, तरफदारी. વાડામાંજવું (क्रि.) शौच जाना, पाखाने जाना, झाड़ेजाना ।

વાડોલિયું (सं.) वह थोड़ी जगह जोकि कांटे आदि आड़ लगाकर बनाई गईहो वृक्ष आदिके चारों ओरलगाईहुई आड़ (रक्षाकेलिये) ।

વાઢ (सं) देखो વઢાડ घाव, धार. जख्म ।

વાઢ ચઢાવવો (क्रि.) धार चढ़ाना, शान चढ़ाना, तेज करना ।

વાઢ મૂકવો (क्रि.) काटनेके लिये निशान करना ।

વાઢકાપનો ધંધો (स.) डाक्टरी काम, चीर फाड़का धन्धा ।

વાઢકુટિયો (सं.) चीरफाड़ करने-वाला, डाक्टर, सर्जन ।

વાઢવું (क्रि.) काटना, चीरना, हिस्सा करना, फाड़ना । [विशेष ।

વાઢી (सं.) घी भरनेका पात्र

વાઢો (सं.) सुतार, बढ़ई, तक्षक ।

વાણ (सं.) बाणी, बोली, कथन, वचन, बबूरके पत्तोंको बटकर बनाई हुई रस्सी । मिट्टीके ढ्ठ-लोंको कूटकर रेशे निकाल कर उसको बटकर बनाई हुई रस्सी ।

(अ०) बिना, बगैर, (कवितामें)

(सं.) तंगी, आवश्यकता ।

વાણિજ્ય (सं.) व्यापार, लेनदेन ।

વાણિયણ-વણ (सं.) वैश्यकी स्त्री, बनियानी, बैनेनी, वैश्या ।

વાણિયાશાહી (सं.) उलट पुलट, घिसघिस, पुसड पसड, ढीलपोल ।

વાણિયો (सं.) बनिया, अग्रक्षत्रिय अथवा वैश्यकी संकरजाति । व्या-पारी, वैश्य, तृतीयवर्ण, एक प्रका-रका जीव । (वि.) बाणीयुक्त ।

વાણિયા થઈ જવું (क्रि.) बखत देखकर नम्रता करने लगना, गरीब बन जाना ।

વાણિયા વિદ્યા કરવી (क्रि.) क-पट पूर्वक आड़ाटेढ़ा समझाना । समय देखकर अपना काम बना लेना ।

વાણિયાના કાળજા જેવો (वि.) धधकती हुई आग, कठोरहृदय ।

વાણી (सं.) बात, बोली, शब्द, वचन, जबान, आवाज़, राग, वाक् शक्ति, देवी सरस्वती, प्रकट-विचार। [भोर, भिनुसारा, प्रात।
વાણું-વહાણું (सं.) प्रभात, सवेरा,
વાણો (सं.) बुनते समय आडे डोरोंको बाना कहते हैं (और खडे डोरोंको ताना कहते हैं)।
વાણોતાણો (सं.) कपड़ा बुननेके लिये आडे-टेढे फैलाये हुए धागे। ताना बाना।
વણોતર (सं.) गुमास्ता, बही-खाता लिखनेवाला, क्लर्क नौकर।
વાણુંવું જમાડવું (क्रि.) प्रथम गर्भा स्त्रीको भोजन कराना, अग-रणीकी रात्रिको रखड़ी बांधनेके बाद नातेरिश्तेदार तथा इष्टमित्रों को जिमाना।
વાત (सं.) पवन, हवा, समीर, वायु। रोगविशेष, अर्धांगवात, लकुआ, हकीकत, बात, वार्ता, इतिहास, तवारीख़, आख्यान, गाथा, किस्सा, कहानी, समाचार, खबर, लोकवार्ता, किम्वदन्ती, गप्प, अफवाह, विषय, सूचना, स्थिति, रीति, व्यवहार।
વાત ઉડાવવી (क्रि.) चलते हुए जिक्रको हटाना, बात भुलाना।
વાત ઉડાડવી (क्रि.) सची झूठी बात लोगोंमें फैलाना, गप्प उड़ाना।
વાત કરવી (क्रि.) बोलना, कहना।
વાત કરવાનું ઠેકાણું (सं.) मनके अच्छे अथवा बुरे विचार निका-लनेका स्थान।
વાત ચાલવી (क्रि.) जिक्र होना, गप्प छूटना, अफवाह, फैलना।
વાત પામવી (क्रि.) भेद समझ जाना। मतलब जान लेना।
વાત ફાટવી (क्रि.) बात फैलना, गुप्त रहस्य प्रकट होना।
વાત બનાવવી (क्रि.) बात बनाना, नई बात घड़कर तय्यार करना, गढंत करना।
વાત ભારે કરવી (क्रि.) छोटी बा-तको बढा कर बड़ी करना।
વાતે ભારે થવી (क्रि.) घमंड होना, गर्व होना, पद्विसे अधिक होना। [कबूल करना।
વાત ભળવી (क्रि.) स्वीकार करना,
વાતમાં લાગવું (क्रि.) किसीके साथ बातें करते समय उसमें तल्लीन हो जाना।

વાત મારી જવી (क्रि.) बात बिगड़ना, काम व्यर्थ होना, बात निष्फल होना ।
વાતનું વતેસર—વર્તી બણુ કરી મૂકવું (क्रि.) बातका बतंगड़ करना, रजका गज करना । राईका पहाड़ करना । [करनेवाला, गप्पी ।
વાતભરું (वि.) बातूनी, खूब बातें
વાતચિત (सं.) वार्तालाप, संभाषण।
વાતડ (सं.) लंबी और बुरी बात।
વાતાયન (सं.) खिड़की, बारी, द्वार।
વાતી (सं.) अगरबत्ती, बत्ती।
વાતુંડું–તોડું (वि.) वाचाल, गप्पी, बातूनी, लफंगा।
વાતૂલ (सं.) वायुका समूह (वि.) बादी, वातप्रकृति (शरीर)।
વાતોડું (वि.) देखो वાતુંડું ।
વાત્સલ્ય (सं.) प्रेम, स्नेह, पुत्रवत्, स्नेह।
વાદ (सं.) विवाद वाककलह, शास्त्रार्थ, संभाषण, आलाप, तकरार, झगड़ा, चर्चा, थोड़ा, बहुत जानकर उसपरसे अन्दाजलगाना
વાદવિવાદ (सं.) तकरार संभाषण, झगड़ा, जबानी बकबक।
વાદળ (सं.) बादल, मेघ, घन आंधी, झंखड़, आकाश छाया।
વાદળચઢીઆવવું (क्रि.) तूफान उठना, आंधीआना, बादलघुमड़ना।
વાદળ તૂટીપડવું (क्रि.) दुःख आजाना, आफत आना, अचानक कोई आपत्ति आगिरना।
વાદળચડવું (क्रि.) अत्यंत दुःखआना, सेनाचढ़ना, बादल चढ़ना।
વાદળી (सं.) छोटाबादल, पानी चूसलेनेवाला एक पदार्थ, स्पंज समुद्र सोख (वि.) बादलके रंगका आस्मानी भूरा। [हुवा, अशान्त।
વાદળીઓ (वि.) भ्रमित, भटकता
વાદળું (सं.) बादल, मेघ, घन।
વાદી (सं.) सरकारमें नालिशकरनेवाला, मुद्दई, बाजीगर, मंत्रतंत्रद्वारा खेलकरनेवाला, झगड़ाकामनुष्य झगड़ालू, किसीमत अथवा ज्ञानका अनुयायी।
વાદીગર (सं.) बाजीगर, मदारी सपेरा, सांपवाला, ऐंद्रजालिक, कार्य करनेवाला।
વાદીલું (वि.) फसादी, तकरारी झगड़ालू, घृणित, गंदा।
વાદોવાદી (सं.) स्पर्द्धा, बराबरी, देखादेखी, होड़ाहोड़।
વાદ્ય (सं.) बाजा, वाद्ययन्त्र।

વાધણુ-ણી (સં.) रोके हुए स्वास को ठहर ठहर कर आवाजके साथ बाहिर निकालना। हिचकी।

વાધર-રી (સં) ताजे चमड़ेकी पट्टी, बद्धी, तस्मा।

વાધવું (क्रि.) आगे होना बढ़ना, वृद्धि पाना, उन्नत होना।

વાન્ (स.) वाला और गुणसूचक प्रत्यय। जिस शब्दके आगे यह होता है उसका अर्थ वाला होजाता है जैसे गुण+वान्=गुणवान।

વાન (सं.) रंग, शरीर, देह, वर्ण, ठबसे उखड़ा हुआ चमड़ा।

વાનગી (सं.) नमूना, आदर्श, दृष्टान्त, थोड़ीसी कोई उत्तम अथवा नई चीज़।

વાનપ્રસ્થ (सं.) तीसरा आश्रम, तीसरे आश्रममें रहनेवाला, तपस्वी। एकान्तवासी, बनवासी।

વાનર (सं.) बन्दर, कपि, लंगूर, मर्कट, बांदरा, काले मुंहका बन्दर।

વાનરચેષ્ટા (सं.) बन्दर समान हरकत।

વાનરદષ્ટિ (सं.) बन्दर कीसी निगाह। देखरेख, जांच, पड़ताल।

વાનવું (कि.) जंगली, बनैला।

વાના (सं.) जाति, प्रकार, चीज़। वस्तु। [समझाना।

વાનાં કરવાં (कि.) बहुत तरहसे

વાની (सं.) एक प्रकारकी ज्वार, धान्यविशेष, जाति प्रकार, अन्नविशेष, मुरदेकी राख, भस्म, मृतक भस्म।

વાનું (सं.) शब्द, सामग्री, अंग, शकल, ढंग, रीति, रूप, रीति-प्रकार, बात। [न्धित पदार्थ।

વાનો (सं.) एक प्रकारका सुग-

વાનો ધાલવું (कि.) उबटन लगानेका मुहूर्त। [छर्दि, छादना।

વાન્તિ (सं.) कय, उलटी, वमन,

વાપર (सं.) उपयोग, प्रयोग, व्यवहारमे लाना, काममें लाना, उपभोग, सेवन, खर्च।

વાપરવું (कि.) काममें लेना, प्रयोग करना, खर्च करना, सेवन करना, रोकना, कब्जा करना, उपभोग करना। [बदलेमें।

વાપસ (अ.) पीछा, वापिस,

વાપી (सं.) बावली, बावड़ी, सीढ़ियोंदार कुआ।

વાફો (सं.) बाफीका बरतन।

વાભરૂં (वि.) सम्बन्धी, सगा।

વાળાઇં (सं) हवा आनेका बड़ा छेद । झरोखा, वातायन, बारी, खिड़की ।

વામ (सं.) छः फुटका माप, फेदम, (वि.) बायां, वाम, अधम, आड़ा, उलटा, बांका, विरोध (सं.) वामा, स्त्री, औरत ।

વામકુક્ષિ (सं.) बांईबगल ।

વામણું (वि) ठिगना, नाटा, छोटे कदका, बौना, छोटे शरीरका ।

વામતા-વામતાઈ (सं.) अधमता, हठ ज़िद ।

વામન (वि.) ठिगना, नाटा, बौना, खर्व, छोटे कदका (सं.) ठग, लुच्चा, छली, विष्णुका पांचवां अवतार इसने राजा बलिको ठगा था ।

વામન દ્વાદશી (सं) भाद्रपद मासके शुक्ल पक्षकी द्वादशी तिथि। यह वही दिन है, जिस दिन कि वामनने राजा बलीको ठगा था।

વામમાર્ગી (वि.) मद्यमांसादि सेवी, एक मतावलम्बी जो शक्ति की उपासना करता हो, नास्तिक, अवैदिक, उल्टे मार्गपर चलनेवाला, मंत्रशास्त्र विधिसे देवीकी पूजा करनेवाला, ये पांच प्रकारकी अपना जीवनोद्देश मानते हैं वे ये हैं। " १ मद्य २ मांसंच ३ मीनंच ४ मुद्रा ५ मैथुन मेवच "

વામવું (कि.) अम्दरका वमन कम करनेके लिये बाहिर निकालना, कम करना, मिटाना, दूर करना, कहना, विचार प्रकट करना । ओछा होना, घटना, जाना ।

વામાંટામાં (सं.) टालटूल, आनाकानी, पशोपेश, शक, संदेह ।

વામા (सं.) स्त्री, गौरी, लक्ष्मी, सरस्वती, स्त्रीमात्र ।

વામી (वि.) देखो वाममार्गी ।

વામોરુ (वि.) सुन्दर, जंघावाली स्त्री । [(अ०) हाय !; हा !

વાય (सं.) जीत, जय, विजय,

વાયક (सं.) वाणी, शब्द, वच , बोली ।

વાયજ-જો (सं.) धर्मसम्बंधी व्याख्यान, उपदेश, बोध ।

વાયડું (वि.) जिसके खानेसे पेटमें गड़बड़हो, बादी करनेवाला, गुरुपाक, हठी, जिद्दी ।

વાયડું થવું (कि.) हठीहोना, ज़िद्दीहोना, जो समझानेसे न समझे ऐसा होना ।

વાયડું પડવું (क्रि.) बादीहोना, बाबहोना, बुरालगना।

વાયદાસર (अ०) नियत समयपर, करारपर, प्रतिज्ञात समयपर।

વાયદો (सं.) प्रतिज्ञा, करार, मुद्दत, कौल, वजन बोली, संकेत वादा। [करारकरना, वादाकरना।

વાયદો કરવો (क्रि.) प्रतिज्ञाकरना

વાયદોઆળવો (क्रि.) प्रतिज्ञाभंग करना, करार पूरा न करना, અગસ્તનાવાયદા (सं.) झूठी प्रतिज्ञा, अतिशय लंबावादा।

વાયન (सं.) रोळी फळ, इत्यादि एकपात्रमें रखकर ब्राह्मणको देनेकी क्रियां, बायना, लायना, लैना।

વાયનદાન (सं.) बायनेकादान, लायनादेना। [कमी हो।

વાયરું (सं) वहवर्ष जिसमें वर्षाकी

વાયરો (सं.) हवा, पवन, वायु।

વાયલ્લી (सं.) बेवकूफ, मूर्ख, जिसका ठौर ठिकाना न हो, हवा पवन, वायु। [विशेष।

વાયવડંગ (सं.) वायविडंग, औषधि

વાયવ્ય—વાવ્ય (सं.) उत्तर और पश्चिम दिशा के बीचका कोना (वि.) वायव्य कोण संबंधी।

વાયસ (सं.) कौआ, काग, कागा, काक।

વાયું (सं.) हवाके झोंकेसे दीपक न बुझे इसलिये मिट्टीका घर विशेष लालटेन, (पुराने समयमें) दीप मंदिर।

વાયુ (सं.) हवा, पवन, समीर, प्राण, वायुदेव, (शरीरमेंके पांच वायुं) १ प्राण, २ व्यान, ३ अपान, ४ उदान और ५ समान, पांच भूतोंमेंसे एक, बादी, एक प्रकारका रोग।

વાયુચક્ર (सं.) वातावरण, वायुमंडळ

વાયુચક્રશાસ્ત્ર (सं.) नभोविद्या, मिटीओरोलोजी, आकाशोद्भव वस्तुविद्या।

વાયુચર (सं.) पक्षी, परिंद, चिड़िया, आकाशगामी, पंछी।

વાયુપુત્ર (सं.) हनुमान, भीमसेन।

વાયુપ્રતિબંધક (सं.) हवाकोभी रोकनेवाळा। [हवाका सपाटा।

વાયુપ્રવાહ (सं.) पवनका झोंका,

વાયુમય (वि.) हवादार, बादीवाळा।

વાયુમાપકયંત્ર (सं.) हवाका वजन और दबावना नापनेका यंत्र, बेरोमीटर।

વાયુરૂપ (वि.) हवासरीखा, पवन-तुल्य ।

વાર (सं.) गज, तीन फुटका माप, १६ गिरहका माप, दिन, दिवस, वक्त, समय, देरी, काल, पानी, जल, वारि, मदद, सहायता, उपालंभ, उलाहिना, फरियाद, (अ०) अनुसार, मुआफिक, बमूजिब, प्रमाणे ।

વાર લગાડવી (क्रि०) देरी करना, बहुत वक्त लेना ।

વારણ (स) हाथी, हस्ती, मातंग, रोकना, निषेध करना, धारण करना, विघ्न निवारण करके सुख प्राप्त करना ।

વારણું (सं.) बलिजाना, न्योछावर होना, वारी जाना ।

વારંટ (सं.) अपराधीको पकड़ने के लिये सरकारी लिखित आज्ञा पत्र, वारंट।

વારતા (सं.) बात, वार्ता, कहना, समाचार, बातचीत (पर्व दिवस ।

વારતેહવાર (सं.) त्यौहारका दिन,

વારમવાર (अ०) बारबार, फिर फिर बारम्बार, पुनःपुनः, सदैव, हरघड़ी ।

વારવું (क्रि.) रोकना, अटकाना, मना करना, निवारण करना, बलि जाना, वारी जाना, न्यौछावर होना, दूसरेका दुःख स्वयं अपने ऊपर झेलना, सिरपरसे घुमाकर फेंक देना ।

વારસ (सं.) वारिश, अधिकारी, उत्तराधिकारी, स्वामी, मालिक ।

વારસનામું (सं.) वसीयतनामा, अधिकारपत्र ।

વારસો (सं.) मरनेके पश्चात् उस मृत व्यक्ति की जागीर जायदाद उसके उत्तराधिकारीको मिलना, वतन, जागीर, जायदाद, पूंजी, मिलकियत ।

વારાંગના (सं.) वेश्या, रंडी, छिनाल, बारनारी, तवायफ़।

વારાણસી (सं.) काशीनगरी, बनारस, यह नगर युक्त प्रदेश भारतमें है, सप्त पुरियोंमेंसे एक।

વારાફરતી (अ०) एकके बाद एक, क्रमशः, नम्बरसे, क्रमानुसार, बारी बारीसे ।

વારિ (सं.) जल, पानी, तोय ।

વારિજાઉં (क्रि.) बलिजाऊं, बलिहारी जाऊं, कुरबान होऊं, न्यौछावर हो जाऊं ।

વારિધિ-વારિનિધિ (सं.) समुद्र, सागर, दरिया । [विशेष, समुद्र ।

વારિવહ (सं.) घट, घड़ा, पात्र

વારી (सं.) देखो વારો । पाली, खेप, नम्बर, अवसर, समय, बदला, घोड़ा, अश्व, तुरंग, हय ।

વારૂ (वि.) ठीक, उचित, मुनासिब, अच्छा, योग्य, हां, स्वीकार।

વારૂણી (सं.) शराब, मदिरा, दारू, पश्चिमदिशा । [पुनः पुनः ।

વારેઘડીએ (अ०) बारम्बार,

વારેદાર (सं.) नम्बरवाळा, जिसकी पारी हो, कर संग्रह करनेवाळा ।

વારે વારે (अ०) देखो વારમવાર ।

વારો (सं.) पारी, खेप, नम्बर, पाळी, अवसर, समय, फायदा, दांव, निश्चितसमय, लाभ, कमगत होना । [फायदाहोना ।

વારોપડવો (क्रि.) लाभहोना,

વાર્તા (सं.) देखो वार्ता ।

વાર્તિક (सं.) टीका संबंधी नियम विशेष, टीका, गुमचर, वृत्त सम्वाद लेआनेवाळा । [बारमासी ।

વાર્ષિક (वि.) प्रतिवर्षका, सालाना

વાસુદેવ (सं.) वसुदेवका पुत्र श्रीकृष्ण ।

વાલ (सं.) एकप्रकारकी दाळ, तोल विशेष, एकतोलेका ३ वां भाग, ३ रत्ति । [नापिक ।

વાલંદ (सं.) नाई, नापित, हज्जाम

વાલપાપડી (सं.) फली विशेष ।

વાલમ (सं.) स्वामी, पति, कंत, मालिक, धनी, खसम, प्यारापुरुष ।

વાલિયા (सं.) घोड़ेपर खोगीर, जीन, इत्यादि बांधनेकी डोरी ।

વાલી (सं.) रक्षक, आश्रयदाता, सहायक, पक्षकर्ता, हिमायती, स्वामी, मालिक, सेठ, साहेब ।

વાલીવારસ (सं.) रक्षक सखा, अधिकारी, उत्तराधिकारी ।

વાલીઘોડો (सं.) मजबूत घोड़ा, वहघोड़ा जो घोड़ीपर छोड़ने के लिये रखागयाहो ।

વાલુકા (सं.) रेती, बालू, धूलिकण ।

વાલુકાયંત્ર (सं.) रेतघड़ी, रेतीका बनाहुआ वह यंत्र जिससे समय मालूम किया जाता हो ।

વાલોળ (सं. एक प्रकारकी फली, (इसकी भाजी तरकारी बनतीहै)

વાળો (સં.) सोने अथवा चांदी को पतले तारकी बाली (देवी के चढानेके लिये ।

વાવ (સં.) बावड़ी, बावळी, सीढियोंदारकुआ, बिवाई, प्याऊ रोग विशेष, सर्दीके दिनोंमे हाथ पैरोंका चमड़ा फटजाता है जिससे बड़ाही दर्द होता है ।

વાવટાદાંડી–વાવટાકાઠી (સં.) ध्वजा-लगानेकी लकड़ी, ध्वजदण्ड ।

વાવટો (સં.) झंडा, ध्वजा, निशान फरहरा, पताका ।[विजयी होना।

વાવટો ચઢવો (ક્રિ.) जीत होना

વાવટો ઉડવો (ક્રિ.) जयप्राप्त करना, यश फैलना, फतहयाब होना ।

વાવડ (સં.) सम्वाद, खबर, पता समाचार, रोग, मर्ज एकही तरहका रोग बहुतोंको ।

વાવડી (સં.) सीढियोंदार छोटा कूवा, बावड़ी, बावळी, कूपविशेष ।

વાવણિયો (સં.) खेतमें अन्नबोने की नली, बोना ओरना, वरना ।

વાવણી (સં.) खेतमें अन्न आदि बोनेकी किया, बोनी, बोवनी, ओरनी, (वि.) आरंभ, शुरू ।

વાવંટોળ (સં.) हवाका झोंका ।

વાવર (સં.) प्रयोग, खर्च, खपत, रोग, मर्ज़ । देखो વાવડ ।

વાવરવું (ક્રિ) खर्च करना, प्रयोग करना, काममे लाना, खरचना ।

વાવરી નાખવું (ક્રિ.) खरच कर डालना, उड़ा देना ।

વાવલાં (સં.) नौकरीके बदले मेंदी हुई जमीन, मुआफी जमीन ।

વાવલું (સં.) आंखमेंकी फूली ।

વાવલવું (ક્રિ.) पिछोड़ना, झटकना, पछड़ना, सूप इत्यादिसे फटकना ।

વાવવું (ક્રિ.) बोना, बीज डालना, रोपना, लगाना, बीज बखेरना । [मजेका, वाह वाह ।

વાહ (અ०) अच्छा, सरस,

વાવાઝોડું–વાઝરડું (સં.) तूफान, आंधी, उद्दण्डवायु, झंझावात ।

વાવાદળ (સં.) हवा, और बादल, संकट, आफत ।

વાવું (ક્રિ.) आंधी चलना, जोर से हवा चलना, शरीरको हवा लगना, डलवाना, समझाना, ठगना, छलना, धोकादेना, खिंचना, ब्याना, प्रसव करना, हवाके बजाना, फूंकसे बजाना ।

વાવેતર (सं.) बोई हुई जमीन, वह जमीन जिसमें बीज बो दिया हो बोया हुआ।

વાશૂલ (सं.) वायुगोळा, पेटमें वादीका रोग विशेष।

વાસ (सं.) रहनेका स्थान, निवास, आश्रम, मकान, घर, मोहल्ला, बस्ती, स्थिति, ठिकानां, जगह, पौशाक, वस्त्र, गंध, बू, महक, सौरभ, सुवास, बास, निशानी, अंश, चिन्ह, श्राद्धके दिनोंमें बनायेहुए पदार्थकी काकबली। [अडूसा नामक वृक्ष।

વાસક (सं.) एकपौधा विशेष

વાસકુટ (सं.) वेस्टकोट, कब्जा, फतूही, बंडी, जाकट।

વાસકસજ્જા (सं.) अष्टनायिकाओंमेंसे एक, १ प्रोषित पतिका, २ खंडिता, ३ कलहांतरिता, ४ विप्र लब्धा, ५ उत्कंठिता, ६ वासिकसज्जा, ७ स्वाधीनपतिका और अभिसारिका।

વાસકસજ્જિતા (सं.) अष्ट नायिकाओंमेंसे एक, भोगविलासकी सामग्री तय्यार करके जो स्त्री अपने पतिकी राह देखती हो।

વાસણ (सं.) पात्र, भाण्ड, बासन, बरतन।

વાસણકુસણ (सं.)) बरतन, भांडे, विविध भांतिके पात्र, भाण्ड।

વાસના (सं.) इच्छा, चाह, भावना, रुचि, बास, गंध, प्रकृति।

વાસપૂજા (सं.) नये, घरमें वास करनेके पूर्व उस घरमें पूजह हवन इत्यादि क्रिया, गृहप्रवेश।

વાસમુરત (सं.) पूर्ववत्।

વાસર (सं.) दिन, दिवस, वार, दिवा, तिथि, तारीख।

વાસમુહૂર્ત (सं.) देखो વાસમુરત।

વાસરમણિ (सं.) सूर्य, सूरज, मार्तंड।

વાસવ (सं.) इन्द्र, सुरपति, देवराज।

વાસવું (क्रि.) बन्द करना, ढांकना, देना, अटकाना, मुर्गेका बोलना, बिगाड़ना, बसाना, देना, रहना, दुर्गन्ध आना, बदबू आना, सड़ना, खराब होना।

વાસિત (वि.) सुगन्धित, खुशबूदार, सुवासित।

વાસીદું (सं.) घरका कचरा कूड़ा, ढोर डंगरका मलमूत्र। कूड़ा करकट।

વાસિદું કહાડવું=વાળવું (क्रि.) झाड़ना, बुहारना, साफ करना।

વાસી (वि.) रहनेवाला, निवासी, वास करनेवाला, सड़ा हुआ, जो ताजा न हो, कुम्हलाया हुआ।

વાસુ (सं.) खेतका रखवाला, खेतीका पहिरेदार।

વાસુકિ (सं.) नागराज, सर्पराज।

વાસુદેવ (सं.) श्रीकृष्णचन्द्र, वसुदेवका पुत्र, श्रवण नक्षत्र।

વાસુપિયો (सं.) देखो वासु।

વાસુપી-શોપી (सं.) पूर्ववत्।

વાસુલ (सं.) आंकड़ा, कील, हुक।

વાસેલ (सं.) एकाद वर्ष खेतको बिना बोये इसलिये रखनाकि उसकी मिट्टीमें ताकत आ जावे।

વાસો (सं.) वास, निवास, दिन, दिवस, मुकाम।

વાસોતી (सं.) सीमामें रातभर रहनेवाला, खेतमें रातको रहनेवाला

વાસ્તવિક (वि.) यथार्थ, निश्चय, ठीक, सत्य, वाजिबी, खरा, शुद्ध।

વાસ્તવ્ય (वि.) रहनेलायक, वास करनेयोग्य, रहनेयोग्य।

વાસ્તુ (सं.) नये घरमें रहनेके पूर्व हवन पाठ इत्यादि, नूतन गृह प्रवेश, घर, वासस्थल।

વાસ્તુદેવતા (सं.) घरकी रक्षा करनेवाला, गृहपति, गृहस्वामी।

વાસ્તુપૂજન-શાન્તિ (सं.) नये घरमें प्रवेश करते समय हवन पूजन शांतिपाठ इत्यादि कार्य।

વાસ્તુવિદ્યા (सं.) शिल्प, मकान बनानेका हुनर।

વાસ્તે (अ०) लिये, कारण, अर्थ।

વાહ (अ०) वाहवा!, ओ हो।

વાહક (वि.) ले आनेवाला, उठाकर लेजानेवाला, वहन करनेवाला।

વાહન (सं.) सवारी, असवारी, जिसमें या जिसपर चढ़कर कहीं जावे। [वायु।

વાહર (सं.) हवा, पवन, बयार,

વાહરવું (क्रि.) पादना, गुदामार्गसे हवा निकालना, अधोवायु छोड़ना, हवादार। [धोका देना, पोटना।

વાહવું (क्रि.) ठगना, छलना,

વાહાણ (सं.) नौका, जहाज, जलयान, किस्ती, नाव, जलपोत।

વાહાણના દોરડાં (सं.) जहाज, या नावकी रस्सी।

વાહાણવટી (सं.) मल्लाह, खलासी, नाव चलानेवाला, जहाजका स्वामी।

વાહાણું (सं.) भोर, सबेरा, पौफट, प्रातःकाल, सुबह।

વાહાર (सं.) सहायता, मदद, साहाय्य, योग।

વાહાર કરવી (क्रि.) मदद करना, सहायता देना, साथ देना योग देना।

વાહારે ચઢવું (क्रि.) पूर्ववत्।

વાહાલ (सं.) प्रेम, प्यार, स्नेह, मुहब्बत, प्रीति।

વાહાલભગી (सं.) प्रेमी पुरुष, स्नेही प्यारा, दुलारा, बालम, स्वामी।

વાહાલું (सं.) प्यारा, दुलारा, प्रेमी, स्नेही, हितैषी।

વાહાલેસરી (सं) शुभचिंतक, हितवादी, शुभेच्छु।

વાહાવું (क्रि.) देखो વાહવું।

વાહિની (वि.) बहनेवाली, प्रवाहित

વાંહી (वि) देखो વાહક। [प्रकट।

વાહ્ય (वि.) बाहिरी, बाहिरका

વાળ (सं.) बाल, केश, रोम, लोम

વાળત્યુ (सं.) एक प्रकारकी विष नाशक औषधि.

વાળંદ (सं.) नाई, नापिक, हज्जाम

વાળવું (क्रि.) साफकरना, कचरा निकालना, झाड़ना, बुहारना, बिखरे हुये बालोंको बांधना, संवारना, बलपूर्वक गांठ बांधना, मरोड़ना, ऐंठना, बल लगाना, बंद करना, नीचा करना, लपेटना, चढ़ी करना, ढंकना, छुपाना, पानी आनेके लिये मार्ग करना, बाहिर आता हुआ रोककर नलके द्वारा भीतर लेना, मुख ढांककर रोना, वापिस लौटाना, समाप्त करना, उतारना, कमजोर करना, टुटका करना, टोना-जादू-मंत्र करना, दे देना, बिगाड़ना, खराब करना, उलटा करना, बलवान तथा पुष्ट करना, शान्त करना, धैर्य देना, गोलाकार लपेटना, जवाब देना।

વાળા (अ०) कानमें पहिरनेकी बड़ी बालियां, मोती, आभूषण विशेष।

વાળાકુંચી (स.) जेवर इत्यादि साफ करनेके लिये बालोंकी कूंची, ब्रश, बुरुस, बुरस।

વાળી (अ०) फिरसे, पुनः (सं.) बाली कानमें पहिरनेकी बाली, रिंग, नाकमें पहिननेकी बली। आभूषण विशेष।

વાળું-ળુ (वि.) युक्त, सहित, पूर्ण, सम्बंधी आदि अर्थ प्रदर्शित करनेवाला प्रत्यय, (सं.) संध्याकालीन भोजन, ब्यालू, बयारू, रेती, रेत, धूलिकण, कंकरी।

વાળુ કરવું (क्रि.) सायंकालका भोजन करना, ब्यालू करना ।

વાળો (सं.) एक प्रकारकी सुगंधित घास, खस, एक प्रकारका कीड़ा, छोड़े हुए मंत्रको निष्फळ करनेका उपाय, उतार ।

વિઘું (सं.) बीस बिस्वा, बीघा, २८४३ गज, भूमिका माप विशेष।

વિઘોટી (सं.) प्रति बीघेपर सरकारी कर ।

વિંછી (सं.) बिच्छू, विषधर जन्तु विशेष वृश्चिक । [बिजना।

વિંજણો (सं.) पंखा, व्यजन,

વિંજણો નાંખવો (क्रि.) पंखा करना,, हवा करना, चंवर डुलाना ।

વિંજવું (क्रि.) पूर्ववत् ।

વિંટવું (क्रि.) लपेटना, घेरना ।

વિંટી (सं.) देखो વીંટી ।

વીંટો (सं.) गोल बण्डल, किसी चीजको लपेट कर बनाया हुआ गोल पुलिन्दा । [बिल ।

વિંધ (सं.) छिद्र, छेद, सूराख,

વિંધણું (सं.) छेद करनेका औजार. बढ़ईका औजार विशेष जिससे छेद किया जाता है ।

વિંધવું (क्रि.) छेद करना, सूराख करना, छेदना, बेधना, छिद्र करना । चुभेड़ना, घाव करना, असर करना ।

વિંધારો (सं.) छेदनेवाला, मोतियोंमें सूराख करनेवाला, कान छेदनेवाला, बेधक ।

વિંધાવું (क्रि.) छेदे जाना, छिदना छिद्रहोना, सूराखपड़ना ।

વિંધું (सं.) देखो વિંધ ।

વિ (अ०) उपसर्ग विशेष जो शब्दके पहिले लगाया जाता है, वियोग, विषय, निश्चय, ईषत, थोड़ा अवलंबन, ज्ञान, गति; पालन, निग्रह, न सहना, हेतु, शुद्धि, परिभव, आलस्य, विज्ञान, अव्याप्ति, आलभ, (विशेषकर यह यह, धातु और संज्ञावाचक शब्दोंके पूर्व प्रयुक्त होता है और उसके अर्थमें व्यत्यय करा देता है जैसे क्रय=खरीदना, और वि× क्रय=बेचना इ०)

વિઆજ (सं.) ब्याज, सूद, कैतव।

વિઆજુ (वि.) ब्याजविषयक, सूदी ।

વિઆવું (क्रि.) जनना, प्रसवकरना पैदा होना, जन्म देना, ब्याना ।

વિકટ (वि.) भयानक, भयंकर, क्रूर, मुश्किल, कठिन।

વિકરાળ (वि) अतिशय भयानक घोर भयंकर, डरावना, भयजनक भयप्रद।

વિકલ્પ (सं.) शकसन्देह, शुभा, संशय, भ्रांति, अनिश्चय, वितर्क वहम।

વિકસવું (क्रि.) खिलना, फूलना, फैलना; विकासित होना, प्रफुल्लित होना।

વિકળ (वि.) विह्वल, उद्विग्न, व्याकुल, अधूरा, असम्पूर्ण, बेचैन घबरायाहुआ।

વિ:ળા (सं) कलाका साठवांभाग $\frac{1}{60}$ वका सेकण्ड $\frac{?}{80}$ घड़ी, क्षण पळ, रजस्वला,

વિકસિત (वि.) प्रफुल्लित, खिला, हुआ, फूलाहुआ, खुलाहुआ।

વિકસ્વર (वि.) चमकताहुवा, प्रकाशित, प्रकटित, विकसित।

વિકાર (सं.) विकृति, परिवर्तन, परिभ्रान्ति, उलटफेर, वदलाव रोग, व्याधि, बीमारी आवेश, जोश, आकुलता, स्वभावका अन्यथा होजाना।

વિકાસ (सं.) प्रकाश, उद्भेद, विकास, रहः, विजन, स्फुट।

વિકાસવું (क्रि.) खिलना, फूलना, प्रफुल्लितहोना, विकासितहोना, एक टक दृष्टिसे देखते रहना, चौकला मुहंकरना, मुहंफाड़ना।

વિકાસી (वि.) खिलताहुआ फूलताहुआ वा, प्रफुल्लित।

વિકીર્ણ (वि.) फेंकाहुआ, विक्षिप्त फैलाहुवा, बिखराहुआ।

વિકૃત (वि.) विकारयुक्त, विरूप, अस्वच्छ, मलिन, रोगी, परिवर्तित, विचित्र (सं.) विकार, रोग, बिगाड़, परिवर्तन।

વિકૃતિ (सं.) अन्यथाभाव, विकार, परिवर्तन, गति।

વિક્રમ (सं.) कदम, पैर, पांव, बल, पराक्रम, शक्ति, सामर्थ्य, शूरता, वीरता, प्रभुता वीर्य, शौर्य, इस नामका उज्जैन, नगरीका एक राजा आजसे लगभग दो हजार वर्ष पूर्व हो गया है।

વિક્રમસંવત (सं.) उज्जैनके राजा विक्रमके नामसे चला हुआ संवत्। इसवी सन् से ५६ वर्ष पूर्व। विक्रमीय संवत्।

વિક્રય (सं.) विक्रय, बिकरी, बेचना, माल खपाना ।

વિક્રિયા (सं.) विकार, विकृति ।

વિક્ષેપ (सं.) व्याघात, बाधा, व्याकुळता, फेंकना, दूर करना, छोड़ना, त्यागना ।

વિખ (सं.) विष, ज़हर, गरल, हलाहल, कालकूट, माहुर ।

વિખડું (सं.) पूर्ववत् (कवितामें)

વિખમ (वि.) अयुग्म, अनमेळ, असमान, अतुल्य, बराबर नहीं ।

વિખરવું (क्रि.) बिखरना, फैलना, इधर उधर होना ।

વિખરાવું (क्रि.) फैलाना, बिछाना, बिखेरना ।

વિખવાણુ (सं.) कटु भाषण, जहरके समान भाषण ।

વિખવાદ (सं.) झगड़ा, लड़ाई, वाक् युद्ध, कलह, जबानी लड़ाई ।

વિખવું (क्रि.) क्रोधके आवेशमें आकर फाड़तोड़ डालना ।

વિખિયા (सं.) स्त्री, औरत, रांड

વિખે (अ०) बाबत, लिये, विषयमें, बाबत, कारण ।

વિખેરવું (क्रि.) फैलाना, बिखेरना, अलग करना, बिछाना ।

વિખ્યાત (वि.) प्रसिद्ध, ख्यातिप्राप्त, कीर्तिमान, यशस्वी, मशहूर ।

વિખ્યાતિ (सं.) कीर्ति, यश, प्रसिद्धि ।

વિગત (सं.) तफसील, विस्तार, हकीकत, वर्णन । (वि.) मृत, गया हुआ, बीता हुआ, व्यतीत ;

વિગતવાર (अ०) तफसीलके मुआफिक, विस्तारपूर्वक । पूर्णतासे ।

વિગતે-તેથી (अ०) पूर्ववत् ।

વિગેરે (अ०) इत्यादि, आदि, प्रभृति वगैरह, आदि लेकर ।

વિગ્રહ (सं०) विरोध, लड़ाई, युद्ध, संग्राम, संगर, द्वेष, देह, अंग, शरीर, फैलाव, समास तथा उनके शब्दोंको अलग अलग करके समझाना (व्याकरणशास्त्र)

વિઘરવું (क्रि.) पिघलना, पानी होना, द्रवीभूत होना, रस होना, अलग होना, नरम होना, मुलायम होना, पोचा होना, घबराना. व्याकुल होना, नाउम्मेद होना, फीका पड़ना, उड़ जाना (रंग)

વિઘરાવું-ઘળવું (क्रि.) पिघलना, टिघलना, द्रवीभूत होना ।

વિઘરો (सं.) विग्रह, द्वेष, लड़ाई टंटा, झगड़ा, युद्ध ।

વિઘાત (सं.) नाश, संहार, विघ्न अड़चन, रुकावट, बिगाड़।

વિઘું (सं.) बीघा, भूमि का माप विशेष, बीसबिस्वा=एक बीघा।

વિઘ્ન (सं.) बीघा, अटकाव, रुकावट, संकट।

વિઘ્નનાશક (सं.) गणेशजी, गणपति, संकटका नाश करनेवाला।

વિઘ્નહારી (सं.) पूर्ववत्।

વિચ (अ०) बीचमें, मध्ये, (कविताओंमें)

વિચક્ષણ (वि.) बुद्धिमान, चतुर, प्रवीण, निपुण, होशियार।

વિચરવું (क्रि.) घूमना, भ्रमण करना, प्रवासकरना, यात्राकरना, पर्यटन करना, बाहिरजाना, प्रवेश होना, घुसना।

વિચાર (सं.) ध्यान, सोच, अनुमान, तत्व निर्णय, मानासिक अभिप्राय, समझ मनन, ज्ञानशक्तिद्वारा अनुभव, निश्चय, अभिप्राय, मत, मन, आशय, हेतु, मनोरथ उद्देश विवेक, कल्पना, संकल्प, मनसूबा तरंग, तर्क, लक्ष्य, फिक्र, पछतावा पश्चात्ताप।

વિચાર ચલાવવો-દોડાવવો-કરવો-પહોંચાડવવો (क्रि.) सोचना, विचारना, ध्यान देना, खयाल दौड़ाना।

વિચારપૂર્વક (अ०) ध्यानसे, विचारसे, सोच समझकर।

વિચારવંત-વાન-શીલ વિચારી (सं.) विचार करनेवाला, विवेकी, सयाना, गंभीर सोचने समझनेवाला।

વિચારવું (क्रि.) सोचना, विचारना, निश्चय करना, सार असार समझना, पूछना, मननकरना, ध्यानदेना।

વિચારશ્રેણી (सं.) विचारमाला, विचारोंकातांता, खयालोंका सिलसिला।

વિચિત્ર (वि.) रंगबरंगा, अनेक रंगका, अदभुत, अजीब, अपूर्व, नवीन, जो देखा नहो।

વિચી (सं.) मौज, आनंद, कल्लोल।

વિચે (अ०) बीचमें, मध्यमें, मध्ये।

વિચેતન (वि.) चेतनाशून्य, मूर्छित।

વિચ્છેદ (सं.) वियोग, पार्थक्य, भेद, अन्तर, विभाग, भाग, जुदाई।

વિછરવું (क्रि.) वियोगहोना, बिछुड़ना, जुदा होना।

વિછળવું (क्रि.) धोना, पानीसे साफ करना शुद्धकरना।

વિછવા-છુવા (सं.) नूपुर, बीछूवी पैरोंकी अंगुलियोंपर पहिरनेका चांदीका आभूषण विशेष (स्त्रियोंके लिए ।)
વિછેદવું (क्रि.) नाशहोना, नष्ट होना, (श्रावक धर्ममें)
વિછોહ (सं.) जुदाई, वियोग ।
વિજણવાશ (सं.) पंखेसे हवा करना, हवाकरना ।
વિજણો-ણો (सं.) पंखा, व्यजन बीजना, हवा करनेका साधन ।
વિજન (वि.) निर्जन, शून्य, वीरान, एकान्त, जनहीन ।
વિજય (सं.) जय, जीत, फतह, इसनामसे प्रसिद्ध विष्णुका एक द्वारपाल ।
વિજયા (सं.) भंग, भांग, माया, मादक पत्तीविशेष, पार्वति, दुर्गा ।
વિજયાદશમી (सं.) दशहरा, आश्विन शुक्लाकी दशमी तिथि ।
વિજયાનંદ (सं.) विजयोल्लास, जीतकाहर्ष, फतहकी खुशी ।
વિજયી (वि.) विजेता, जयशील यशस्वी, जयी, फतहमंद ।
વિજળી (सं.) आकाशमें बादलों के घर्षणद्वारा उत्पन्न प्रकाश विद्युत, चपला, चंचला, तडित सौदामिनी, शक्ति, गर्मी, ताप ।
વિજળીકોઠો (सं.) बालकोंका खेल विशेष ।
વિજાતિય, (वि.) दूसरी कौमका, अन्य जातिका, नीच वर्ण भिन्न जाति । [अलग ।
વિજાતી (सं.) पूर्ववत् नवीन,
વિજાપરો (सं.) छुटकारा मुक्ति ।
વિજારી (सं.) व्याभिचार, छिनाळा, जादू, हाथसफाई ।
વિજીત (वि.) जीताहुवा, जयी, जयप्राप्त, फतहयाब । [विरह ।
વિજોગ (सं.) जुदाई, वियोग,
વિજોગી (वि.) बिरही, निराळा, पृथक, वियोगी, बिछुडाहुवा ।
વિજ્ઞાપ્તિ (सं.) अर्ज, प्रार्थना, विनय ।
વિજ્ઞાન (सं.) शिल्प और शास्त्र विषयक ज्ञान, संयात्मकज्ञान, अनुभवज्ञान, केवळज्ञान ।
વિજ્ઞાપના देखो विज्ञप्ति ।[चारिणि ।
વિટંબા (सं.) छिनाळ, व्यभि-
વિટ (सं.) बीट, विष्ठा, मळ, हगार, गू, लेंडी । [ढोंग फैल ।
વિટંડ (सं.) पाखण्ड, फरेब, छळ
વિટંડા(सं.) सिरपची, वाद विवाद, (वि.) पाखंडी, ढोंगी, फैली ।

विटंबणा (सं.) सिरबणी, दुःख, संताप, कशोहत।

विटप (वि.) सुशोभित, सुन्दर ।

विठल (सं.) मूर्ख, बुद्धिभ्रष्ट, बेवकूफ, [एक प्रकारका आभूषण।

विटला (सं.) कानोंमें पहिरनेका

विटवुं (क्रि.) गोळलपेटना, घेरलेना।

विटावुं (क्रि.) घिरजाना, लपैटे जाना, कैदहोना, बन्दहोना ।

विटाळवुं (क्रि.) घेरना, लपेटना

विटाळो (सं.) देखो विंटो।

विडंबना (सं.) दुखदायक, दुःख तिरस्कार, अपमान, अनुकरण।

विठ्ठल (सं.) प्रभु, परमेश्वर, देव (दक्षिण भारतमें विठ्ठल नामक अवतार हुवा हैं)

विडारवुं (क्रि.) मारना, वध करना विदीर्णकरेना, काटना, फाडना ।

विणु (अ०) विना, वगैर, सिवा।

विणवुं (क्रि.) निकालडालना, साफकरना, ढूंढना, चुनना, पसंद करना, उठाना, बीनना, बहुतमेंसे थोडा अलग निकालना ।

विणाचुंटा (सं.) व्याकुलता, आकुलता, अशांति, बेचैनी, व्यग्रता ।

विणामणु (सं.) शोधन अन्नमेंसे कंकर इत्यादि निकालना, बीननेकी मजदूरी, शोधनका मिहनताना, चुनना, छांटना ।

वितक-वित (वि.) अनुभूत, बीता हुवा, गुजराहुआ, (सं.) विपत्ति संकट, दुःख ।

वितकवार्ता (सं) संकटावस्था ।

वितण्डवाद (सं.) मिथ्यावाद, वाक्प्रपंच, व्यर्थका झगड़ा ।

वितण्डा (सं.) देखो विंटंडा ।

वितथ (वि.) व्यर्थ, तथ्यहीन, निस्सार, मुफ्त, फिजूल, ।

वितनु (सं) अनंग, कामदेव, कंदर्प नाजुक, सुन्दर, सुकुमार ।

वितर्क (सं.) अनुमान, विचार, तर्क, व्यर्थ कल्पना, अटकल, कयास, वहम, शक, सन्देह ।

वितवुं (क्रि.) बीतना, गुजरना, जाना, व्यतीतहोना, अनुभवहोना आपडना ।

वितळ-ळ (सं.) सात अधोलोकों-मेंसे एक, पाताळ विशेष ।

वितावुं (क्रि.) दुःख देना, हैरान करना, खिझाना ।

वित्त (सं.) शक्ति, बल, कुवत, धन, ऐश्वर्य, विभव, रस, कस, सार, जीव, माळ, पैसा ।

वित्तधाज (सं.) कुबेर इद्रका ख-जानची, धनपति ।

विदग्ध (वि.) होशियार, चतुर, दक्ष, काबिल, बुद्धिमान, (वि.) बहुत जलाहुआ, बहुत सिकाहुआ जोजळभुनके भस्महोगयाहो, अ-धजळा, कच्चा पक्का ।

विदग्धा (स) होशियार स्त्री, चतुर नायिका, बुद्धिमान औरत ।

विदग (सं.) ऐसामूळ जिसके अलग अलगरेशेहों ।

विदाय (स.) देखो विदा ।

विदायकरवु (क्रि.) रवाना करना, विदाकरना, सन्मानपूर्वक वापिस भेजना, निकालना ।

विदायगिरी (सं.) देखो वदाय ।

विदारण (स.) फाड़ना, चीरना, काटना छेदना । [छेदना ।

विदारवु (क्रि.) फाड़ना, चीरना,

विदित (वि.) ज्ञात, जानाहुआ, बूझाहुआ, मालूम, प्रकट ।

विदुर (वि.) बुद्धिमान, समझदार, सयाना, चतुर, कृष्णद्वैपायन, व्यासके औरससे और विचित्र वीर्यकी स्त्री अम्बिकाकी दासीके गर्भसे इसनामका एकमहान ज्ञानी पुरुष भरतवंशमें द्वापरके अंतमें था ।

विदूषक (सं.) मसखरा, दिल्लगीबाज भांड, रंगीला, राजाकेसाथ रहने-वाला हंसमुख और वाकचतुर व्यक्ति ।

विदेश (सं.) परदेश, अन्यदेश, भिन्नदेश, अपने देशसे पराया देश, वळायत ।

विदेशी (वि.) परदेशी, अन्यदे-शका विलायती, प्रवासी ।

विदेही (वि.) मायापाशसे मुक्त, सासारिक होकरभी ब्रह्मज्ञानी, जीवन्मुक्त, कैवल्य मुक्तिप्राप्त ।

विद्ध (वि.) छिदाहुआ, छिद्रयुक्त वेधाहुआ क्षिप्त, छिद्रित ।

विद्धयोनि (सं) पतिसाथ स्त्री, स-सुराळमें रहनेवाली स्त्री ।

विद्यमान (वि.) वर्तमान, मौजूद जीवित, स्थित, सन्निहित, उप-स्थित, हाजिर, समक्ष ।

विद्या (सं.) ज्ञान, यथार्थज्ञान, शिक्षा, सिखापढी, हुनर, इल्म, शास्त्र मोक्षविषयक बुद्धि, वेद चौ-दह अंग, १ शिक्षा, २ कल्प, ३ व्याकरण, ४ निरुक्त, ५ छंद,

६ ज्योतिष, ७ मीमांसा, ८ न्याय ९ धर्म, १० पुराण, ११-१४ चारोंवेद,] चौदह विद्या [१ ब्रह्मज्ञान, २ रसायण, ३ श्रुतिकथा, ४ वैद्यक, ५ ज्योतिष, ६ व्याकरण ७ धनुर्विद्या, ८ जलमें तैरना, ९ संगीत, १० नाटक, ११ घोड़ेकी सवारी, १२ कोकशास्त्र, १३ चोरी और १३ चातुर्य ।

વિદ્યા કોઈના બાપની નથી(क) पढे उसकी विद्या ।

વિદ્યાગુરૂ (सं.) विद्या पढानेवाला आचार्य, शिक्षागुरु, अध्यापक, उपाध्याय, शिक्षक, पाठक, उस्ताद मास्तर साहेब, टीचर, आचार्य ।

વિદ્યાધન (सं.) विद्यारूपी महान द्रव्य । [किंवाआनंद ।

વિદ્યાનંદ (सं.) विद्याद्वारा प्राप्तसुख,

વિદ્યાભ્યાસ (सं.) अध्ययन, शिक्षण, पठन, विद्या प्राप्तीकेलिये अभ्यास ।

વિદ્યાલય (सं.)पाठशाळा, पढनेका स्थान, विद्यामंदिर, स्कूल, कालिज ।

વિદ્યાર્થી (सं.) तालिबइल्म, जो विद्या प्राप्तिके लिये यत्नवान हो, छात्र, पाठी, पढनेवाला, अध्ययन कर्ता, सीखनेवाला, स्वाध्यायी, शिष्ट, स्टुडेन्ट ।

વિદ્યાવંત-વાન (वि.) पंडित, विद्वान, गुणी, शिक्षित, पठित ।

વિદ્યાશાળા (सं.) देखो विद्यालय

વિદ્યુત (सं.) बिजली, तड़ित, सौदामिनी, चपला, दामिनी, शक्ति, ताप, गर्मी, विजुली।

વિદ્યુત્પ્રકાશ (सं.) बिजलीका प्रकाश।

વિદ્રુમ (सं.) मूंगा, प्रवाळ, रत्नविशेष वृक्ष विशेष मूंगेका वृक्ष, रत्नवृक्ष ।

વિદ્વજ્જન (सं.) पंडित, विद्वान, ज्ञानी, साक्षर, दार्शनिक, फिलासफर । [इल्मियत, योग्यता ।

વિદ્વત્તા (सं.) पांडित्य, विद्वानपन

વિદ્વાન (वि.) विद्यावान, पंडित पढा, प्राज्ञ, आत्मज्ञान युक्त ।

વિધ (सं.) विधि, रीति, प्रकार, ढब, ढांचा, जाति. तरह ।

વિધણું (सं.) देखो विंधणुं ।

વિધવા (सं) रण्डा, रांड, पतिहीना ।

વિધવિધ (वि.) विविध भांतिके, बहुत प्रकारके, तरह तरहके ।

વિધાતા-ત્રી (सं.) भाग्यनिर्माण करनेवाली ईश्वरीय शक्ति । छठीके दिन भाग्यमें लेख लिखानेवाली

देवी (ऐसा लोगोंका अनुमान है) गजपीपल, औषधि विशेष, ब्रह्मा, सृष्टि रचनेवाला.

विधान (सं.) विधि, रीति, शास्त्रोक्त रीति, उपाय, जोड़ना, काम, हाथीके वास्ते बनाया हुआ लड्डू ।

विधि (सं.) व्यवस्था विधान, भाग्य, प्रारब्ध, क्रम, सिलसिला, काळ, समय, नियम, विधान, विधिवाक्य, नियोग, विष्णु, ब्रह्मा, हस्तीका भक्ष्याम्न, वैद्य, व्याकरणमें सूत्रविशेष, नीति, कानून, आज्ञा ।

विधिपूर्वक (अ.) शास्त्रानुमोदित, शास्त्रके अनुसार, विधिके अनुसार ।

विधियुक्त-वत (अ.) पूर्ववत् ।

विधु (सं.) चन्द्रमा, चांद ब्रह्मा, शंकर, कपूर, काफूर, पवन ।

विधुभंडल (सं.) चन्द्रमण्डल, नक्षत्र ।

विधुर (वि.) रंडवा, स्त्रीहीन पुरुष, (वि.) वियोगी, विरही, विकळ ।

विधुरा (वि.) वियोगी, विरही ।

विधुरं (वि.) व्याकुल, व्यथित, घबराया हुआ, आकुल ।

विधुमुखी (वि.) चन्द्रवदनी (स्त्री) चन्द्राननी, चन्द्रमुखी ।

विध्यर्थ (सं.) आज्ञार्थसूचक क्रियापदका रूप (व्याकरण शास्त्र)

विधुक्षय (सं) अमावस्या, जिस दिन चन्द्रमाका क्षय हो । [तबाही

विध्वंश (सं.) नाश, आपत्ति,

विनत (वि.) नम्र, विनयी, सुशील ।

विनता (सं.) वनिता, स्त्री ।

विनति-नंति (सं.) अर्ज, प्रार्थना आजिजी, नम्रता, विनय, निवेदन, विनती, अनुनय ।

विनय (सं.) विनती, शिष्टता, सभ्यता, नम्रता, शिष्टाचार, विवेक

विनववुं (कि,) प्रार्थना करना, अर्जकरना, प्रार्थना करना, आजिजी करना, समझाना, उसकाना ।

विना (अ.) सिवाय, बिना, वगैर ।

विनायक (सं.) गणेशजी, देवविशेष।

विनाश (वि.) ध्वंश, नाश, संहार, मरण, अदर्शन, खराबी, बिगाड़ ।

विनाशक (वि.) नाशकारक, संहार करनेवाला, विनाशकर्त्ता ।

विनाशी (वि.) पूर्ववत् ।

विनिपात (सं.) पतन देवादिसे प्राप्तहुआ व्यसन, अपमान, तिरस्कार, नाश, आफत ।

विनिमय (सं.) प्रतिदान, बदलेका दान. अदलाबदली, अमानत, एक वस्तुको देकर तरश दूसरी वस्तुलेना, परिवर्तन, लेनदेन।

विनियोग (सं.) आयोग, प्रतिबंध।

विनीत (वि.) नम्र, सुशील, शांत ठंडेस्वभावका, विनयान्वित।

विने (सं.) देखो विनय।

विनोद (सं.) कौतूहल, तमाशा, क्रीडा, उत्सव, प्रमोद, हर्ष, आनन्द, खेल।

विनोदी (वि.) आनन्दी, हंसमुख, ठठ्ठाबाज, रंगीला, मजाकी, हास्यजनक।

विन्यास (सं.) स्थापन, रचना, रखना, विचारयुक्त, समूह, निश्चय।

विपत (सं.) दुःख, आपदा, दुर्दशा।

विपत्ति (सं.) संकट, दुःख, आपत्ति, विपदा, कष्ट, मुसीबत।

विपरित (वि.) उलटा, वाम, विरोधी, शत्रु, विरुद्ध, प्रतिकूल, गलत, झूठ, असुविधाजनक, अशुभ।

विपर्यय (सं.) विरोध, विरुद्ध घटना, अभाव, नाश, प्रलय, तबादला, गलती, मुसीबत।

विपर्यास (सं.) विपरीत, विरोधिता, बदकिस्मती, भ्रांति।

विपळ (वि.) पळका ६० वां भाग, विपळ, काळ परिमाणविशेष। ⅙ सेकण्ड।

विपाक (सं.) पाचन, परिपक्वता, फळ, परिणाम, रसान्तर, जायका, कठिनता। [वृक्षसमूह, विरान।

विपिन (सं.) वन, जंगल, अरण्य,

विपुल–ळ (वि.) बहुत, अधिक, अतिशय, विस्तृत, गहन, विशाळ, अगाध, ऊंडा।

विपुथा (सं.) हाथी, हस्ती, मातंग।

विप्र (सं.) ब्राह्मण, विद्वान, द्विज।

विप्रयोग (सं.) अलहदगी, जुदाई, वियोग, विरह।

विप्रलब्धा (सं.) वह नायक जो नायिकाके संकेत न जाय सका हो।

विप्रलंभ (सं.) ठगाई, धोका, भुलावा, झगड़ा, वियोग।

विप्रलाप (सं.) व्यर्थ बातचीत, झगड़ा, प्रतिज्ञा भंग।

विप्लव (सं.) उपद्रव, घबराहट, बळवा, बिगाड़, क्लेश, दूसरे राजाके राज आदिसे भय। [मिजाज खोना।

विहरवुं (क्रि.) घबराना होना

વિફળ (वि.) निष्फल, निकम्मा, निरर्थक, मिथ्या।

વિબુધ (सं.) देव, सुर, अमर, पंडित।

વિબોધ (सं.) ज्ञान, विचार।

વિભક્ત (वि.) बंटाहुआ, अंशीकृत, जुदा, पृथक्कृत।

વિભક્તિ (सं.) व्याकरणमें सुप्तिङादि प्रत्यय, कारकोंके चिन्ह।

વિભવ (सं.) ऐश्वर्य, धन, मोक्ष, वैभव, साठ संवत्सरोंमेंसे एक का नाम।

વિભા (सं.) किरण, शोभा, प्रकाश।

વિભાકર (सं.) सूर्य, भास्कर, रवि।

વિભાગ (सं.) हिस्सा, टुकड़ा, अंश, अध्याय, भाग, बांट।

વિભાવ (सं.) प्रकाश, उजेला। रसको उत्पन्न करनेवाला कारण रूप मूल वस्तु तथा उद्दीपन साहित्य (रस शास्त्रमें), परिचय।

વિભાવના (सं.) अर्थालंकार विशेष, धारणा, मानो......,शायद.. ..., यदि...,(ऐसा संशयार्थक भाव)।

વિભાવું (क्रि.) प्रकाशित होना, शोभित होना, मशहूर होना।

વિભુ (सं.) स्वामि, प्रभु, (वि.) सर्वव्यापक, नित्य, सर्वत्रव्यापी।

[illegible] (सं.) दुख, विपत्ति, आफत।

વિભુતા (सं.) सामर्थ्य, सर्वव्यापकता, नित्यता, स्वामित्व।

વિભૂત-તિ (सं.) राख, भस्म, खाक, यज्ञभस्म, पवित्र राख, ऐश्वर्य, प्रसाद, वैभव, धन, शक्ति, बडप्पन, अभ्युदय, शोभा।

વિભૂષણ (सं.) आभूषण, जेवर, भूषण, शृंगार, अलंकार, शोभा।

વિભૂષિત (वि.) अलंकृत, सुसज्जित, आभूषण युक्त।

વિભોગી (वि.) गृहस्थी, भोगी।

વિભ્રમ (सं.) वहम, भ्रांति, भ्रम घबराहट, व्याकुलता, सन्देह।

વિભ્રાન્ત (वि.) संशयान्वित, अशुद्ध

વિમળ (वि.) निर्मल, शुद्ध, पवित्र, साफ, सुथरा, मलरहित।

વિમાચિઠ્ઠી (सं.) बीमा कराई हुई चिठ्ठी, बीमाकी दस्तावेज।

વિમાન (सं.) यान, वायुयान, आकाशयान, वाहन, रथ, बेलून। देवयानविशेष। (वि.) अपमान, मानभंग। [वाला।

વિમારાણો (सं.) बीमा उतारने

વિમાસણ (सं.) पछतावा, पश्चात्ताप।

વિમાસવું (क्रि.) पछताना, विचारना, पश्चात्ताप करना।

વિમુખ (वि.) पराङ्मुख, फिराहुआ उल्टा, विरोधी ।

વિમો (सं.) बीमा, इन्स्यूरन्स ।

વિયડો (सं.) पानीसूखजाने पर तालाब या नदीमें खोदा हुआ कूप, कुआ ।

વિયત (सं.) व्यानेवाळी, प्रसवकरने वाळी, उत्पन्नकरने वाळी ।

વિયાણ (सं.) आकाश, नभ, अस्मान ।

વિયાવું (क्रि.) उत्पन्न करना, व्याना, प्रसव करना, जनना ।

વિયોગ (सं.) विच्छेद, विरह, बिछोह, बिछुडना, जुदाई ।

વિયોગી (सं.) विरही, बिछड़ा हुआ

વિરક્ત (वि.) जुदा, हटाहुआ, बेमुहब्बत, वैराग्य, वीतराग, वासनाशून्य । [विधि ।

વિરંચી (सं.) ब्रह्मा, ब्रह्मदेव,

વિરણ (सं.) सुगंधियुक्त, खुशबूदार

વિરત (सं.) विराम, निवृत्ति, शान्ति, त्याग, निस्पृहता ।

વિરમવું (क्रि.) अटकाना, रोकना, विराम, करना ।

વિરલ (वि.) कोमळ, नाजुक, कोई, एकाधा, विरला ।

વિરલું (वि,) असाधारण, बहुतों में थोडाक, दुर्लभ, क्वचित ।

વિરવણ (सं.) एक प्रकारका घास ।

વિરસ (वि.) रसहीन, नीरस ।

વિરહ (सं.) विच्छेद, वियोग, जुदाई, बिछुडन ।

વિરહ જ્વર (सं.) किसी प्रेमीकी जुदाई के कारण बुखारका होना ।

વિરહાક (सं.) युद्ध करते समययोद्धा-ओंका शब्द । हुंकार (वीरोंकी)

વિરહાગ્નિ (सं.) वियोगाग्नि, बिछुड़नेका संताप, विरहानळ ।

વિરહાનળ (सं.) पूर्ववत् ।

વિરહિણી (सं.) पतिप्रेमसे वंचिता, बियोगिनि, दुखी (स्त्री) ।

વિરહી (सं.) वियोगी पुरुष, अपनी प्रेमिणं से बिछुड़ा हुआ । (वि.) बियोगी, विरह युक्त ।

વિરાગ (सं.) रागका अभाव, मुहब्बतकानहोना, विरक्ति,संसारमें आसक्तिका त्याग, ममता त्याग

વિરાગી (सं.) त्यागी, वैराग्य युक्त, राग शून्य, ममता रहित ।

વિરાજમાન (वि.) शोभित, प्रकाशित, सोहता हुआ, शोभायमान ।

વિરાજવું (क्रि.) शोभापाना, प्रकाशमान होना, बैठना (सन्मान सूचक वाक्य) । [शित ।

વિરાજિત (वि.) शोभित, प्रका-

વિરાટ (सं.) ब्रह्माण्ड, चतुर्दश भुवन रूप ईश्वरका आकार । (वि.) विशाळ, विस्तार, विकराळ, बड़ा, भारी (सं.) इसनामसे प्रसिद्ध एक प्राचीन नगर ।

વિરામ (सं.) निवृत्ति, विश्राम, शान्ति, अन्त, अवसान, समाप्ति, फुरसत, वाक्य पूरा होने के लिये लगाया हुआ एक चिन्ह विशेष (, ;) प्रकरण, भाग, सर्ग, अध्याय ।

વિરામવું (क्रि.) अटकाना, ठहराना, रोकना, बन्द करना ।

વિરુદ્ધ (वि.) विपरीत, वाम, प्रतिकूळ, खिळाफ, उलटा ।

વિરૂપ (वि.) बद सूरत, कुरूप, सौन्दर्य हीन, बद शकळ, परिलक्त रूप, । [होनेकी औषधि ।

વિરેચન (सं.) जुळाब, दस्त

વિરોધ (सं.) वैर, शत्रुता, दुश्मनी, द्वेष, विरुद्धभाव, अंटस, अनबन, प्रतिकार, वारण, अवरोध, विपरीतता, विपर्यय, लड़ाई ।

વિરોધી (वि.) विरोध करने वाळा, ईर्ष्याळु, द्वेषी, शत्रु ।

વિલક્ષણ (वि.) अजीब, विशेष लक्षण युक्त, अद्भुत, अनूप, आश्चर्यमय, अलौकिक ।

વિલપવું (क्रि.) रोना, विलाप करना, रुदन करना, बिलखना, चिल्लाना ।

વિલંબ (सं.) देरी, ढीळ, अधिक समय ।

વિલય (सं.) नाश, क्षय, बरबादी, प्रळय, विनाश, लय ।

વિલુબ્ધ (वि.) इन्द्रियप्रिय, चंचळ, ढीठ, अवारा, लम्पट, कामातुर ।

વિલાત (सं.) देश, जन्मभूमि, इंगलेण्ड, विदेश, परदेश, दूरदेश ।

વિલાતી (वि.) अंग्रेजोंके देशका, दूरदेशीय, विदेशी, शेखीखोर ।

વિલાપ (सं.) रुदन, रोना, करुण, क्रन्दन, चिल्लाना, दुःख करना ।

વિલાયતી મીઠું (सं.) विलायती औषधि विशेष, क्षार विशेष, सल्फेट आफ मेगनेशिया ।

વિલાવું (क्रि.) गळना, पिघळना, टिघळना, नाश होना ।

વિલાસ (सं.) खेळ, क्रीड़ा, कौतुक, भोग, सुख, आनन्द, उपभोग क्रीड़ा, रंगबाजी ।

વિલાસી (वि.) विषयी, लंपट, दुराचारी, भोगी, आनन्दी ।

વિશ્વું (सं.) आठ आनेका संकेत, आधे रुपयेका संकेत शब्द ।

વિક્ષુબ્ધ (वि.) आसक्त, मोहित, लुभाया हुआ, आकर्षित ।

વિલોકણી (सं.) अवलोकन, देखनेका ढंग । [दृष्टि ।

વિલોકન (सं.) अवलोकन, नजर ।

વિલોકવું (क्रि.) देखना, जानना, पहिचानना, निहारना, घूरना ।

વિલોચન (सं.) आंख, नेत्र, चक्षु, नयन । [रना, दृष्टि डालना ।

વિલોચવું (क्रि..) देखना, निहा-

વિલોવાલ-વિલ (अ०) आधों-आध, ठीक आधा, (संकेतार्थ)

વિવક્ષા (सं.) बोलनेकी इच्छा, अभिप्राय, इच्छा, अर्थ, इरादा ।

વિવક્ષિત (वि.) इच्छित, अभिप्रेत, ईप्सित, अमुक ।

વિવર (सं.) गुफा, कन्दरा, गुदा, पोली जगह, छिद्र, छेद, बिल ।

વિવરણ (सं.) व्याख्यान, स्पष्टीकरण, ब्यौरा, बयान, टीका, व्याख्या । [रंगका, भद्दा ।

વિવર્ણ (वि.) देखो વિરૂપ, बुरे

વિવર્તન (सं.) फिरना, लौटना ।

વિવર્દ્ધિત (वि.) बढ़ाहुआ, शृद्धिगत, उन्नत, समृद्ध ।

વિવશ (वि.) परतंत्र, पराधीन, परावलम्बी, अवश, अस्थिर ।

વિવાદ (सं.) झगड़ा, तकरार, फिसाद, अनबनी, लड़ाई, वाक्युद्ध ।

વિવાદી (सं.) झगड़ालू, फिसादी, प्रतिवादी, वादी, मुद्दई ।

વિવાહ (सं.) ब्याह, शादी, पाणिग्रहण, सगाई, लग्न, परिणय, मांडा, बिवाह ।

વિવાહ કરવો (क्रि.) सगाई करना, सम्बन्ध जोड़ना (लड़का लड़कीका) मंगनी करना ।

વિવાહ માંડવો (क्रि.) बिवाहो पलक्ष्यमें तय्यारियां करना ।

વિવાહ તોડવો-ફોક કરવો (क्रि.) बिवाह करनेसे इन्कार करना, सगाई छोड़ना, सम्बन्ध त्यागना ।

વિવાહના ગીત વિવાહે ગવાય(क) हरेक बात समयपर ही प्यारी मालूम होती है ।

વિવાહ પહેલાં માંડવો (क्रि.) मरनेके पहिलेही कब्र खोदना ।

વિવાહ માંડી જુઓને ઘેર કરેલી જુઓ।-बिवाहमें और घर बनानेमें सोचे हुए धनसे अधिक खर्च हो जाता है ।

વિવાહ વિત્યો ને માંડ આવ્યો (क) फोड़ा फूटा और वैद्य वैरी बना " तुलसी भांवरके परे नदी सिरा इस मौर " ।

विवाह विल्यो नेभेंवाभलो विवाह हुआवो फिर नेगचार लेने वाळे के लिये मुहँ चढा ।

विवाह वाजन (सं.) विवाह शादी के वक्तके बाजे वगैरह ।

विविध (वि.) नाना प्रकार, भाँति भाँतिका, अनेक तरहका ।

विवेक (स.) ज्ञान, समझ शक्ति, विचार, निर्णयात्मिका, बुद्धि ।

विवेक बुद्धि (सं.) सद्विचार, श्रेष्ठ बुद्धि, सयानापने, चातुर्य ।

विवेक युक्त (वि.) विवेक, युक्ति युक्त, ठीक, उचित, मुनासिब ।

विवेकी वि.) तत्ववेत्ता, जज, मुंसिफ, ज्ञानी, विचार शीळ, सभ्य, न्याय कर्त्ता, विचार कर्त्ता ।

विवेचन (सं.) विचार, जाच, पड़ताळ, बहस, टीका, भाष्य ।

विशद (वि.) विस्तृत, विस्तार युक्त, विशाळ, निर्मळ ।

विशाख (सं.) निशाना ताकते समय धनुष धारी की खड़े रहने की एक स्थिति विशेष, शिव, भिक्षुक ।

विशाखा (सं.) सोळहवां नक्षत्र ।

विशाल (सं.) विस्तृत, बड़ा, चौड़ा, वृहत विस्तीर्ण, तेजस्वी ।

विशुद्धि (सं.) पवित्रता, सफाई, अशुद्धि राहित्य, निर्मळता ।

विशे-षे (अ०) में, बाबतमें, सम्बंधमें, विषयपर, बारेमें ।

विशेक-विशेष (वि.) खास, बहुत, मुख्य, अधिक, ज्यादः प्रधान, अमुक, फळाना, किसी खासगुण के कारण अन्योंसे अधिक ।

विशेषनाम (सं.) नामका एक प्रकार (व्याकरण शास्त्रमें) ।

विशेषणु (सं.) ऐसा शब्द जो किसा संज्ञा [विशेष] की विशेषता गुण अथवा लक्षणका द्योतक हो (व्याकरण शास्त्र) ।

विशेष करीने (अ०) मुख्यतया, प्रधानतः खासकर, अधिकांशमें ।

विशेषतः (अ०) पूर्ववत् ।

विशेष्य (सं.) वह संज्ञा जिसकी किसी विशेषण द्वारा विशेषता दिखाई जावे, (व्याकरण शास्त्र) ।

विश्रब्ध (सं.) विश्वस्त, शान्त, मजबूत, निश्चिन्त, काबिल ऐतबार ।

विश्रांति (सं.) आराम, विश्राम ।

विश्राम (सं.) पूर्ववत् ।

विश्रामवुं (क्रि.) आराम करना, विश्राम करना, रहना ।

विश्व (सं.) सृष्टि, जगत, दुनिया, ब्रह्माण्ड, संसार, खलक (वि.) सब, समस्त, तमाम, कुल, समग्र ।
विश्वकर्मा (सं.) देवताओंका शिल्पी ।
विश्वजनक (सं.) ईश्वर, परमात्मा, जगतपिता, परमपिता ।
विश्वनाथ (सं.) ईश्वर, जगन्नाथ, जगत स्वामी ।
विश्वंभर (सं.) विश्वका भरण-पोषणकर्त्ता, सर्वशक्तिमान ईश्वर । इंद्र, विष्णु, सुरपति ।
विश्वंभरा (सं.) पृथ्वी, भूमि ।
विश्वरूप (सं.) ईश्वर, परमात्मा ।
विश्वव्यापक (सं.) सर्वव्यापी, ईश्वर ।
विश्वव्यापक (सं.) सर्वव्यापक, ईश्वर । [रूप, ईश्वर, परमात्मा ।
विश्वाधार (सं.) संसारका आधार
विश्वात्मा (सं.) विश्वकी आत्मा, ब्रह्म ।
विश्वास (सं.) यकीन, भरोसा, पत, एतबार, श्रद्धा, आस्तिक्य ।
विश्वासघात (सं.) कपट, धोका, ठगी, धूर्तता, भरोसा बंधाकर पूरा न करना । दगाबाजी ।
विश्वासघाती (सं.) कपटी, दगाबाज, धूर्त, ठग, नमकहराम ।
विश्वासी-सु (वि.) विश्वास योग्य, भरोसेपर रहनेवाला, विश्वस्त, भोला, श्रद्धालु, कचे कानका ।
विश्वेश्व-श्वर (सं.) जगन्नाथ, ईश्वर । द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमेंसे एक जो काशी में है, द्वेष, ईर्षा, बैर ।
विष (सं.) जहर, हलाहल, माहुर, गरळ, कालकूट ।
विषधर (सं.) सर्प, सांप, भुजंग ।
विषम (वि.) असुगम, अनमेळ, असमान, अतुल्य, बराबर नहीं, कठिन, कठोर, भयंकर, ऊंचा नीचा, अनियमित अद्वितीय, अलंकार विशेष । दारुण ।
विषमज्वर (सं.) एक प्रकारका बुखार, तेजबुखार ।
विषय (सं.) इन्द्रियादिकसे जाने गये शब्दादि, इन्द्रियार्थ वस्तु, भोग विलास, लिये, निमित्त, अर्थ, देश, काम, कार्य, व्यापार, इश्कबाजी, प्रकरण, बाबत, प्रस्ताव, उद्देशकारण, प्रयोजन, हेतु, माळ, सामान ।
विषयानंद (सं.) विषयभोगका आनंद, इन्द्रियोंद्वारा प्राप्त आनंद ।
विषयान्तर (सं.) अलही बात, चालु कार्यसे निराळाही ।

વિષયાંધ (સં.) कामान्ध, कामोन्मत्त, भोगेच्छामें तल्लीन ।

વિષયી (वि.) विलासी, भोगी, संसारी, कामी, लंपट, कामाभिलाषी । [विषयपर ।

વિષયે (अ.) संबन्धमें, बारमें,

વિષાદ (सं.) शोक, दुःख, क्लेश, खेद, उदासी, बैर, द्वेष, नाउम्मेदी

વિષુવ (सं.) वह समय जबकि रातदिन बराबर होते हैं ।

વિષુવવૃત્ત (सं.) पृथ्वीके गोलेके ऊपर ठीक बीचोंबीच कल्पित रेखा, वह जहां रातदिन बराबर होते हैं, भूमध्य रेखा, विषुवत् ।

વિષૂચિકા (सं.) रोगविशेष, हैजा, शीतळा, चेचक, महामारी ।

વિષ્ટિ (सं.) अशुभ समय, भद्रा, (ज्योतिषशास्त्रे) शिष्टता ।

વિષ્ઠા (सं.) मल, गुदामार्गद्वारा निकलनेवाला शारीरिक मळ, गू, पाखाना, बीट, नर्क ।

વિષ્ણુ (सं.) व्यापक ईश्वर, पौराणिकोंके त्रिदेव मेंसे दूसरे नम्बर का देव जिसका काम संसार को पाळनेका है, सत्वगुण स्वरूप ।

વિષ્ણુ પુરાણ (सं.) अठारह पुराणों मेंसे एक पुराणका नाम ।

વિષમવું (क्रि.) ठंढाहोजाना, प्रथम गर्भाबोंके अमरणों उत्सवके दिन उसकी झोळीकी समस्त वस्तुएं उसकी माताका अपनी झोळीमें लेनेकी क्रिया ।

વિસર ભોળું (सं.) भूलने स्वभावका, भोळा, गाफिल, स्मरण शक्ति हीन ।

વિસરવું (क्रि.) भूलना, यादन रखना, विस्मरण होना ।

વિસર્ગ (सं.) स्वरके पीछे दो बिन्दु (:) त्याग, छोड़ना, मोक्ष ।

વિસર્જન (सं.) त्याग, देना, छोड़ना, बिदाकरना, बरखास्त ।

વિસવાસી (सं.) विस्वेका बीसवां हिस्सा $\frac{1}{400}$ बीघा बिस्वासी, ईसाई, क्रिश्चियन, ईसू ख्रीस्ट के मतका अनुयायी, (वि.) विश्वस्त, विश्वासी ।

વિસાત (सं.) जीव, दम, दौलत, माल, मूल्य, कीमत ।

વિસામો (सं.) पड़ाव, ठहराव, ठहरने की जगह, आराम गाह, निम्नसे मुर्दे को जलाने अथवा गाड़ने के लिये लेजाते समय जिस जगह रास्ते में उतारते हैं वह जगह । विश्वास, भरोसा, यकीन ।

વિસાર–રો (સં.) भूल, चूक,
વિસારવું (क्रि.) भूलना, याद न रखना ध्यान में न रखना ।
વિસારે મુકવું (क्रि.) पूर्ववत् ।
વિસ્તરવું (क्रि.) बढना, वृद्धि पाना, फैलाना, विस्तारपाना, बढाना, फैलाना, विस्तार करना ।
વિસ્તાર (सं.) फैलाव, वृद्धि, चौड़ाई, विशालता, भूमिका क्षेत्रफल ।
વિસ્તારવું (क्रि.) बढाना, फैलाना लंबाकरना, अधिक करना, विस्तृत करना ।
વિસ્તીર્ણ (वि.) बढाहुआ, फैला हुआ, प्रसारित, विपुल, विशाळ ।
વિસ્તૃત (वि.) फैलाहुआ, चौड़ा, बहुत, प्रफुल्ल ।
વિસ્ફોટક (सं.) शीतला, नामक रोग, चेचक, रक्तविकार विशेष ।
વિસ્મય (सं.) आश्चर्य, अचंभा, तआज्जुब, अद्भुत, अजीब ।
વિસ્મરણ (सं.) भूल, याद न रहना, बिसरना, [न्वित, अचंभित ।
વિસ્મિત (वि.) चकित, आश्चर्या-
વિસ્મૃતિ (सं.) बिस्मरण, भूल,
વિહંગ (सं.) पक्षी, चिड़िया, परिन्द, नभचर, राग विशेष, पखेरू ।
વિહંગમ (सं.) पूर्ववत् ।
વિહરવું (क्रि.) विचरण करना, घूमना, इधर उधर आना, आनंद करना ।
વિહાણવું (क्रि.) समाप्त होना, पूर्ण होना, गुजरना, बीतना ।
વિહાર (सं.) क्रीडा, खेल, आनन्द के लिये इधर उधर घूमना, मठ, संन्यासी के रहने का एकांत स्थान बौद्धोंका उपासना स्थान, बौद्ध मन्दिर, विशेष ।
વિહારી (सं.) आनंदी, विहार करनेवाला, खिलाडी, श्रीकृष्ण ।
વિહીન (वि.) बिना, रहित, शून्य, बगैर ।
વિહીત (वि.) ढांका हुआ, आच्छादित, कथित, निर्णीत, उचित ।
વિહોણું (वि.) अकेला, पीला, कम, हलका ।
વિહોણું પડવું (क्रि.) अकेले रहना ।
વિહુણું (वि) बिना, बगैर, रहित ।
વિહોણું (वि.) देखो વિહુણું ।
વિહ્‌વળ (वि.) व्याकुल, घबराया हुआ, उद्विग्न, चंचल ।
વિહ્‌વળતા (सं.) घबराहट, व्याकुलता, उद्विग्नता ।

વિળાયો (सं.) मूर्ख, बेवकूफ, बावला ।

વી० (वि.) विद्यमानका संक्षिप्त रूप ।

વીખ (सं.) जहर, विष, कालकूट, माहुर, गरल ।

વીઘુ (सं.) बीघा, २० बिस्वा, भूमि मापनेका परिमाणविशेष ।

વીગ્ર (वि.) व्यग्र, बावला ।

વીચાવું (कि.) बंद होना, मुंदना, मिचना ।

વીછળામણ (सं.) बरतनको साफ किया हुआ पानी, धोवन ।[विशेष ।

વીછી (सं.) विच्छू, जहरीलाजन्तु

વીજ (सं.) बिजली, विद्युत, तड़ित ।

વીટી (सं) अगूठी, मुद्रिका, छल्ला ।

વીટીમા જડવા જેવું (कि.) नग, नगीना, रत्न, गुणवान ।

વીટો (सं.) बंडल, गोल पुलिन्दा, लपेटा हुई गोल गठरी ।

વીઢાળવું (कि.) साथ लिये फिरना, निभाना, चलाना, थकाना ।

વીજન (वि.) जनशून्य, निर्जन, वीरान, उजड़, जंगल, (सं.) पंखा, बीजना, व्यजन ।

વીણ (अ.) बिना, बगैर, सिवाय, अतिरिक्त, अलावह ।

વીણા (सं.) तंतुवाद्यविशेष, सितार, तम्बूरा, तानपूरा, बीन ।

વીણાપાણી (सं.) वह मनुष्य जो वीणा का प्रेमी हो, नारद, सरस्वती । [हुई बात ।

વીતક (सं. पड़ा हुआ दुःख, बनी

વીતવું (कि.) व्यतीत होना, गुजरना, जाना, होना, पूरा होना, खर्च होना, दुःख पड़ना ।

વીતરાગ (वि.) शान्त, रागशून्य, (सं.) जैन तीर्थंकर, जैनअर्हत ।

વીતાડવું (कि.) व्यतीत करना, खोना, गुमाना, खर्च करना, नष्ट करना, व्यर्थ खोना, दुःख देना ।

વીધ (म.) विधि, प्रकार, रीति, तरह, जाति ।

વીમાવાળો (सं.) जो बीमा करावे ।

વીમો (सं.) जोखिम, हुण्डी, एक प्रकारकी राजकीय व्यवस्था । अमुक समयमें अमुक प्रकारकी आफतसे नुकसान होतो इतना अधिक दाम देनेसे उसकी जिम्मेदारी लेना, जिम्मेदारी खरीदना । इन्स्यूरेन्स ।

વીમો ઉતારવો (कि.) बीमा करना, जोखिम लेना, हुण्डी करना ।

वीर (सं.) बलवान, योद्धा, लड़ाका, शूर, पहलवान, बहादुर, भाईबन्धु, देव भूत पिशाच आदि ।

वीर मूकवा (क्रि.) मंत्रसे भूत इत्यादि किसी को किसीके शरीरमें बुलाना ।

वीररस (सं.) नवरसों मेंसे एक रस, जिसमें वीरताका वर्णन हो ।

वीरविद्या (सं.) भूत प्रेत इत्यादि को वश करने की विद्या ।

वीरश्री (सं.) वीर पुरुषका यश ।

वीर साधवो (क्रि.) भूत इत्यादि वश करना ।

वीरहाक (सं.) वीरोंकी हुंकार, सिंह गर्जन, युद्धमें भयंकर चीत्कार ।

वीरुध (सं) एक प्रकारकी बेलि, लताविशेष, फैली हुई बेल ।

वीरा (सं.) भाई, बन्धु, सहोदर ।

वीर्य (सं.) शुक्र, धातु, धात, बीज, रज, बल, शक्ति, कूवत, पुरुष शरीरका सत्व ।

वीस (सं.) आधे रुपये का संकेत वसीयत, वारिसनामा । भरती, चढ़ाव, मृतलेख, जढाव उतार ।

वीह्या (सं.) पक्षी विशेष ।

वीलुं-व्हीलुं (वि.) अकेला, एकाकी, ढीला, फीका, शर्मिंदा । शब्दका एक वचन ।

वीश-स (वि.) बीस, २०, विंश ।

वीशवसा (वि.) पूर्ण, पूरा, बीसोंबिस्वा ।

वीशी (सं) बीसबीसकी गणना, होटल, ढाबा, मेस, पैसे देने पर जहाँ भोजन इत्यादि सुखसामग्री प्राप्त होती हो, सराय, धर्मशाला. ।

वीसी माणुस (सं.) विश्वस्त पुरुष, काबिल ऐतबार व्यक्ति ।

वीसी आवीसी (वि.) फेरफार, सुखदुःख, हेरफेर ।

वुजु (सं.) प्रार्थना-नमाज के पहिले हाथ मुहं कान इत्यादिके धोनेकी क्रिया, वज़ू ।

वुजुद (सं.) अर्क, स्वत्व, सत्व, सत तत्व, सार, स्थिति, जीवन ।

वुठवुं (क्रि.) बरसना, दया करना झड़ी लगाना, प्रसन्न होना ।

वुठवुं (क्रि.) जाना ।

वृक (सं.) भेड़िया, मांसभोजी खूंख्वार, जंतुविशेष ।

वृकोदर (सं.) भीमसेन, द्वितीय पांडव ।

वृक्ष (सं.) पेड़, तरु, पादप, दरख्त, रूख, तरवर, झाड़ ।

वृषभ (सं.) बैल, सांड, वृषभ, बळद, नाटा, बछड़ा ।

वृत्त (सं.) घेरा, मंडळ, मण्डलाकार, गोळ, चालचलन, रीति, बनाव, छन्द, काव्य रचना विशेष ।

वृत्तान्त (सं.) समाचार, हाळ, खबर, सम्वाद, बात, वार्ता, वर्णन, हकीकत, इतिहास ।

वृत्ति (सं.) अंतःकरणका परिणाम विशेष, व्यवहार, वर्त्ताव, चाल चलन, स्वभावका आचरण, धंधा, रोजगार, आजीविका ।

वृत्यनुप्रास (सं.) एक प्रकारका अलंकार विशेष, वाक्य अथवा चरणमें एक अक्षरकी बहुतवार आवृत्ति होना, (पिंगळ)

वृथा (अ०) व्यर्थ, बेकाम, निष्फळ निकम्मा, बेफायदा, निरर्थक ।

वृद्ध (वि.) बूढा, पुराना, प्राचीन, जीर्ण, जईफ, चतुर, निपुण, (स.) बापदादा, पूज्य पुरुष ।

वृद्धपरंपरा (अ०) बापदादोंके वक्तसे चलाआताहुआ, पीढीदरपीढी ।

वृद्धा (सं.) बूढी, दादो, बजुर्ग (स्त्री)

वृद्धावस्था (सं.) बुढापा, जरा, जईफी, चौथी अवस्था। [रवांश ।

वृद्धाचार (सं.) बड़ेबूढोंकी रीति

वृद्धि (सं.) बढती, अभ्युदय, तरक्की विस्तार, आबादी, बढोतरी ।

वृद्धिंगत (वि.) बढाहुआ, उन्नत विस्तृत, आबाद ।

वृंद (सं.) समूह, समुदाय, झुंड, टोला, दल, यूथ, जथा ।

वृंदा (सं) तुलसीका वृक्ष, राधिका ।

वृंदारक (वि.) मनोहर, सरस, (सं) मुखिया, नायक, अगुआ ।

वृंदावन (सं.) तुळसीकावन, अपने नामसे प्रसिद्ध मथुराके समीप तीर्थ विशेष, व्रज, नगर विशेष ।

वृश्चिक (सं.) बिच्छू, बीछू, कीट विशेष ।

वृषण (सं.) फोते, अण्डकोष, पेळड़े

वृषभ (सं.) सांड, बैल, बळद, इसनामसे प्रसिद्ध एक जैनसाधु, राशिविशेष, वृष ।

वृषलि (वि.) धर्मभ्रष्ट, शूद्र ।

वेंगण (सं.) भटे, रींगने, फल विशेष ।

वेंगणी (सं.) बैंगनका पौधा

वेंचवुं (क्रि.) वेचना, विकय करना, सबको थोड़ा अथवा हिस्से के अनुसार अलग करदेना।
वेंचणी (सं.) भाग, हिस्सा, बांटा।
वेंत (सं.) बालिश्त, नापनेका परिमाण विशेष, बिलस्त ½ हाथ, नौ अंगुल।
वेंत भोंय सुझती नथी=बिलकुल न दिखाना, कठिनतामें फंसजाना।
वेंतयुं (वि.) वालिश्तभर, बहुतही छोटा, ठिंगना।
वे (सं.) वय, उम्र, अवस्था, वह, रो, छेद, छिद्र, सूराख, वध।
वेष (सं.) वेष, भेष, बेस। [बांध
वेषपट (सं.) एक प्रकारकी औ-
वेषधारी (वि.) वेषधारी, स्वांगी।
वेषती (सं.) अट्टहासकरके हंसने वाला, तुरंत हंसदेनेवाला।
वेग (सं.) गति, चालका जोश, दौड़, धक्का, जोर, ताप, त्रास, तेजी प्रवाह, शीघ्रत, जड़, मूर्ख।
वेगरवुं (क्रि.) भुगतना, सहना, भोगना, स्वीकारना। [फासल।
वेगळाई (सं.) छेटी, अंतर,
वेगळुं (अ०) दूर, पृथक, जुदा।
वेगळुंथवुं (क्रि) अदृश्यहोना व यव होना, दूरजाना, ऋतुमती होना।
वेगळुंरहेवुं (क्रि.) दूररहना।
वेगळुंबेसवुं (क्रि.) अलग बैठना ऋतुस्नाता होना, मासिक धर्मसे होना।
वेणी (सं.) चोटी, स्त्रियोंकी चोटी, किवाड़ में लगाया हुआ लकड़ी का खड़ा तख्ता।
वेणुं (सं.) पानी भरनेकी गाड़ी।
वेणुं-का (सं.) वंशी, बांसरी, मुरली। [होना।
वेणु फवावुं (क्रि.) प्रातःकाल
वेत (सं.) तजवीज, ढंग, सांचा।
वेतन (सं.) तनखाह, मजूरी, भाड़ा।
वेतर (सं.) ब्योंत, उत्पन्न करना, जन्म देना, एक एक वक्तका बच्चा उत्पन्न करना, (ढोर)
वेतरण (सं.) युक्ति, तजवीज, ढंग, उपाय, स्कीम।
वेतरवुं (क्रि.) ब्योंतना, नापकर कपड़े को काटना, नापना(कपड़ा) कुछभी काम निश्चय करना।
वेतरी आववुं (क्रि.) बनेजो कर आना।
वेता (सं.) समझ, होशियारी, ज्ञान।
वेत्ता (वि.) ज्ञाता, जाननेवाला।

वेताळ (सं.) भूतोंकी जातिविशेष।

वेत्र (सं) वेत, छडी, राजदंड चोब।

वेत्रवती (सं.) छडीदार चोपदार वेतवाला, नकीब, हलकारा।

वेत्रलता (सं.) बेंतका वृक्ष, वेतका पेड़, वेत्रवृक्ष, छड़ी, प्रतिहारीके हाथका दण्ड।

वेत्रासन (सं.) वेतका बनाहुवा आसन, वेतकी बनीहुई कुर्सी।

वेद (सं.) ज्ञान, ईश्वरीयज्ञान, आर्य लोगोंका मूल धर्मग्रंथ, हिंदुओंका आदिग्रंथ, ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद, अथर्ववेद, (वि.) समझ परिचय, ज्ञान।

वेदना (सं.) पीड़ा, दुख, मिहनत कष्ट, यातना, क्लेश।

वेदमूर्ति (वि) वेदोंकाज्ञान, ब्राह्मण ब्रह्मज्ञ ब्राह्मण।

वेदांत (सं.) ब्रह्मका प्रतिपादन करनेवाला शास्त्रविशेष, वेदका ज्ञानकाण्ड, उपनिषद विशेष।

वेदी (सं.) वेदिका, स्थण्डिल, हवन स्थान विशेष।

वेदीय (वि.) वेदज, वदिक।

वेदोक्त (वि.) वेदमें कहाहुआ, वेदविहित, वैदिक।

वेध (सं.) छिद्र, छेद, सूराख बल, सूर्यचन्द्रका ग्रहण, राहु, बाधा, दुःख, कष्ट।

वेधणी (सं.) कानमें पहिरनेका अलंकार विशेष।

वेधणें (क्रि.) छेदना, भोंकना, घसेड़ना, छेदकरना, सूराखकरना, मनमें प्रभाव करना।

वेधशाळा (सं.) खगोल विषयक बातें जाननेके लिये बनायाहुआ मकान

वेधी (वि.) छेदनेवाला, छिद्रित।

वेन (सं.) वाहन, गाडी, यान, पंक्ति, द्वार, विभव, वैभव।

वेपथु (सं.) थर्राहट, कम्प।

वेपार (सं.) व्यापार, लेनदेन, धंधा रोजगार, व्यापार, माल बेचकर बदलेंमें लेनादेना।

वेपारी (सं.) व्यापार करनेवाला।

वेभार्थ (सं.) पैसा, धन, नकद द्रव्य। [लिया हुआ, बिकनेवाला।

वेचतु—चाउ (वि.) मूल्य देकर

वेचणें (क्रि.) बेचना, मोलदेना, विक्रयकरना, मूल्यलेकरदेना।

वेचाऊ (वि) विकाऊ, बिकनेवाला बेचनेके लिये रक्खा हुआ।

વેચાણ (सं.) बिक्री, बिकरी, बिकना, विक्रय ।

વેચાણખત (सं.) बेनामा, बेचने-की दस्तावेज, वाहन, दुवाई ।

વેચાણિયું (वि.) बिक्रीत, बेचा हुआ, इनाममें प्राप्त भूमि । [होना ।

વેચાવું (कि.) बिकना, विक्रय

વેજાં (सं.) धरमधका, इधर उधर, व्यर्थही भटकना ।

વેજ (सं.) निशान, दुख, दरकन ।

વેજણું (सं.) आड, रोक, बाँध, पानी रोकनेके लिये बांधी हुई आड ।

વેઠ (सं.) बेगार, बलात् परिश्रम, ऐसी मिहनत जिसके बदलेमें कुछ भी नहीं मिले । व्यर्थ ही कष्ट सहना सिरपची, परिश्रम ।

વેઠવું (कि.) सिरआई आपत्ति झेलना, सहनकरना ।

વેઠિયાવાડ (सं.) अल्पपूर्ण ... हुआ, बेढंग, व्यर्थ ।

વેઠિયો (सं.) बेगारी, बेगार करने वाला, बिना टके कौडी कामकर ।

વેઢ-ઢ (सं.) अंगुलियोंमें पहि-ननेकी सोने या चाँदीकी अंगूठा, जोट, मुद्रिका विशेष, छल्ला, अंगुलीका पोरवा, आरीके दांते, करौत के दांते ।

વેડફવું (कि.) उडावेना, गमाना व्यर्थही खर्च करडालना ।

વેડવું (कि.) तोड़ना, चुनना, डालना, उंडेळना (पानी)

વેડી (सं.) आम इत्यादि फळ तोडनेका बांस (जिसके अग्रभाग पर जाळी या कपड़ा इस लिये बांधा होता है कि फळ, आदि पृथ्वी पर गिरकर खराब न हों और उस जालीमेंही गिरते रहें)

વેડાંગ (सं.) घोडा, अश्व, हय तुरग.

વેંધુર (वि.) सुन्दर, शोभित ।

વેડો (सं.) तोड़नेवाला (आम इत्यादि फळोंका)

વેઢમી (सं.) सांठी रोटी, कचोरी, गुचई, पूरनपूरी ।

વેઢવવું (कि.) सामना करना मुकाबिलाकरना, मिलना ।

વેઢો (सं.) अंगुलीका तीसरा खंड अंगुलीका पोर, लकडीका मोटा गोल टुकड़ा, (गन्नेकी) गनेरी ।

વેણ (सं.) प्रवाह, बहाव, वेग-युक्त, वचन, बयन, बांसरी, वंशी मुरली, वेणु, पानीकी छोटी नाली धोरा, छोटी नहर कपासका वृक्ष, दो. पूर्ण, सम, जो दोसे भाग देने पर पूरा हो । युग्म, पूरा, जोडी ।

વેણુ (सं.) वाद्यविशेष, तम्बूरा, तानपूरा, बीन । [दुःख ।
વેણુયુંટા (सं.) भूलसे होनेवाला
વેર (सं.) वैर, द्वेष, शत्रुता, अदावट ।
વેરણ (स.) शत्रु, दुश्मन, वैरी ।
વેરણછેરણ (वि.) इधर उधर, पड़ाहुवा, बिखराहुआ ।
વેરછિયો (सं.) छेदनेवाला, छिद्र करनेवाला । [वैर ।
વેરભાવ (स.) शत्रुता, दुश्मनी,
વેરવું (क्रि.) इधरउधर पटकना बिखेरना, फैलाना, बिछाना, उ-ड़ाना, काममेंलाना ।
વેરાઇજવું (क्रि.) बिखरना, खिलखिलाकर हंसना ।
વેરાગ (स.) विषयत्याग, विषय उदासीनता, निस्पृहता, वैराग्य ।
વેરાગણ (सं.) बावी, साध्वी, वैरागी, (स्त्री) साधुन ।
વેરાગી (सं.) साधु, सन्त, त्यागी, जोगी, निर्लोभी ।
વેરાડી (सं.) एकप्रकारका राग ।
વેરાણ (वि.) जंगल, वन, निर्जन, अरण्य, वीरान, ऊजड़ । [हुआ ।
વેરાતું (वि.) बिखराहुवा, फैला
વેરી (सं.) शत्रु, दुश्मन, प्रतिद्वंदी ।
વેરે (अ०) साथमें, संगमें ।
વેરો (सं.) सरकारी कर विशेष, महसूल, जकात, अंतर, भेद, फर्क ।
વેલ (सं.) बेलि, बेल, लता, कपड़ेपर बेलके ढंगकी छापा वल्लरी वाहन, सवारी, रथ, वंश, परिवार कुलोंके लिये एक गांवसे दूसरे गांव अन्योन्य लड्डू रोटी इ० भेजते हैं एकलड़की दूसरेके यहां दूसरेकी तीसरेके यहां और तीस-रेकी पहिलेके यहां इसतरहका देनेलेनेका सम्बन्ध ।
વેલણ (सं.) रोटी पूरी इत्यादि बेलनेका बेलन, बिल्ना, रोटी बेल-नेके लिये लकड़ीका साधन ।
વેલણિયું (वि.) बेलन सरीखा, (सं.) बेलन, बिलना, रोलर ।
વેલબુટ્ટી (सं.) बेलबूटा, फूलपत्ती ।
વેલા (सं.) आपत्ति, विपत्ति, आफत, दुःख, वक्त, घड़ी, समय, वाणी, बोली ।
વેલાતોઽભ્રસ્ત્રાદ (सं.) उत्तर दिशाकी पवनके साथ पानीकी वृष्टि (जिससे बेली सूखजाती है)
વેમિયું (सं.) आधा रुपया आठआने ।

वेली (सं.) छोटी बेल, लता, बेली।
वेलो (सं.) वनस्पतिकी एक जाति यह जमीनपर पर फैलता है और आश्रयसे बढ़ता है।
वेव (सं.) एक प्रकारकी वनस्पति।
वेवण (सं.) ब्यायन, लड़केकी या लड़कीकी सासू।
वेवशामण (सं.) नफा, लाभ, सस्ता, मिलना, ठगाई।
वेवशवुं (क्रि.) ठगेजाना, छले जाना, भुलाना, पोटेजाना।
वेवडावुं (क्रि.) बहकाना।
वेवलां (सं.) इधरउधर भटकना, धरमधक्का।
वेवलुं (वि.) जंगली, बदतमीज मूर्ख, सिरीं, जिसे ओढने पहिरने बोलने चालनेका ढंग न हो।
वेवशाळ, वे (सं.) विवाह, लग्न, शादी। [वाळा।
वेवीशाळीओ (सं.) विवाह करने
वेश-ष (सं.) आकार, परिच्छेद, सजावट, सांग, रूप, लिबास, परिधान, अलंकार, आभरण, सुहागिन स्त्रीका कपड़े उसे पहिरनेका ढंग, नाटकका पात्र।
वेशकाढवो (क्रि.) सांगलेना रूप बना, वेष बदलना, बचन भंग करना।
वेशजाळववो (क्रि.) जैसा भेष होना चाहिये वैसा ठीक ठीक बनाकर करके बतादेना।
वेशउतारवो (क्रि.) बनावटी रूप उतारदेना, शृंगार त्यागना।
वेश्या (सं.) पतुरिया, गणिका, रंडी, वारनारी, वारांगना, छिनाल।
वेश्याचारज (सं.) रंडीका भड़ुवा, उस्तादजी (रंडीके)
वेश्यावाडो (सं.) वेश्यालय, रंडियोंके रहनेका घर, वेश्याओंके रहनेका मुहल्ला, चकला (रंडियोंका)
वेषधारी (वि.) सांग धारण करने वाला, नकली, शकलबदलनेवाला ढोंगी, ठग, लुच्चा।
वेष्टन (सं.) लपेटन, वेटन, ढांकन।
वेसण (सं.) चनेकी दालका चूर्ण।
वेसर (सं.) नथ, नाकमें पहिरने का स्त्रियोंका आभूषण विशेष। घोडा, खच्चर, खिचर।
वेसरी (सं.) नाककीबाळी, नथ।
वेसवाळ (सं.) वाग्दान, सगाई, विवाह, कन्यादानके लिये वचन।
वेहेचवुं (क्रि.) बेचना, बांटना, देना।
वेहेलुंक (सं.) प्रातकाल, सवेरा, सुबह, प्रभात, भिनुसारा, भोर।

वेहेरो (सं.) अंतर, जुदाई, फासला ।

वेहेलु (अ.) जल्दीसे शीघ्रतासे ।

वेहेवरावुं (क्रि.) नफामिलना, कमाना, कामप्राप्त करना ।

वेहेवारियो (सं.) साहूकार, व्यापारी । [मामूली.

वेहेवारिकुं (वि.) साधारण, मध्यम

वेहेवुं (क्रि.) सहनकरना, निभाना, भारउठाना, बोझाझेलना, बहना, प्रवाह चलना, हद बाहिर होना, फटना । [प्रवाह, बहाव ।

वेहेळो (सं.) छोटी नदी, झरना,

वेळ (सं.) आग्रह, खेंच, हठ,

वेळा (सं.) समय, वक्त, घड़ी, टखना, सन्धि ।

वेळाओ भळे तो कुंठ्यां=समयपर मिले वही स्वर्ण ।

वेळासर (अ.) वक्तपर, समयपर, ऐन मौकेपर, ठीकवक्तपर ।

वेळियुं (सं.) सोनेके पतळे तारका छल्ला–अंगूठी ।

वेणु (सं.) रेती, कण, धूळिकण ।

वै (सं.) वायु, पवन, हवा, वादी खींच। चूहे अथवा चूंस पकडनेका फन्दा (अ.) निश्चय पुख्ता दृढ ।

वैकल (वि.) पागल, मूर्ख, बुरा, दुष्ट, निर्बळ, बेअकलकीका ।

वैकुंठ (सं.) लोक विशेष, विष्णुका धाम । वैकुंठवास (सं.) पूर्ववत्,

वैकुंठवासी (वि.) मृत, मराहुआ, स्वर्गीय, स्वर्गस्थ ।

वैठो (सं.) अमीरकी एकपदवी ।

वैखरी (सं.) शब्दोच्चारण, वाणी की चौथी स्थिति, स्पष्ट उच्चारण ।

वैचित्र्य (सं.)विचित्रता,विलक्षणता ।

वैजयंत (सं.) इन्द्रकी ध्वजा ।

वैजयंतिक (सं.) झंडेवाला ।

वैजयंती (सं.) काली तुलसीका वृक्ष, माळा, श्रेणी ।

वैजयंतीमाळ (सं.) नीलम, मोती, माणिक पुखराज और हीरेंकीमाळा।

वैदूर्य (सं.) एकप्रकारका हीरा, लाल, मूंगा, वैदूर्य ।

वैणुव (सं.) बांसकावन । [वाला।

वैतनिक (सं.) मजदूर तनख्वाह

वैतरणी (सं.) यमपुरी के मार्गमें एकनदी इसनामकी है ऐसा लोग कहते हैं और पुराणोंमें भी लिखा है ।

वैद (सं.) वैद्य, हकीम, चिकित्सक रोगको पहिचानकर औषधि देने वाला, दुःखमिटानेवाला डाक्टर ।

વૈદક (सं.) वैद्यक, हिकमत, डाक्टरी, आयुर्वेदशास्त्र ।

વૈદવાઈ (सं.) औषधोपचार इलाज ।

વૈદાણી (सं.) वैद्य (स्त्री), हकीमन, वैद्यकी स्त्री ।

વૈદિક (वि.) वेदसम्बन्धी, वेदज्ञ ।

વૈધૃત (सं.) वैधृति, २७ वां योग (ज्योतिष शास्त्र)

વૈધવ્ય (सं.) रंडापा, पतिवियोग ।

વૈનીતક (सं.) पालकी, डोली, यान विशेष (इसे मनुष्य उठातेहै)

વૈભવ (सं.) ऐश्वर्य, सम्पत्ति, विभूति, अतिशय, प्रताप, कीर्ति ।

વૈભવી (सं.) ऐश्वर्ययुक्त, प्रतापी, कीर्तिमान, अमीर ।

વૈમાનઆવવું (क्रि.) ईश्वर भक्तका मृत्युसमय आना । [अमीरी ।

વૈભોગ (सं.) साहिबी, ठाठ,

વૈયાકરણ (वि.) व्याकरण संबंधी (सं.) व्याकरण शास्त्रका ज्ञाता ।

વૈયાવત્ય (सं.) सेवा, टहल, बन्दगी । [द्वेषबुद्धि ।

વૈરભાવ (सं.) लड़ाई, झगड़ा,

વૈરસ્ય (वि.) फीका, नीरस, रुखा रुक्ष, बेस्वाद, बदजायका ।

વૈરાગ-ગ્ય (सं.) विषयत्याग, विषयउदासीनता, निस्पृहता ।

વૈરાટ (वि.) विराट संबंधी, बड़ा (ब्रह्माण्ड)

વૈવર્ણ્ય (सं.) फीकापन, कालुष्य, बदसूरती, विवर्णता ।

વૈશાખ (सं.) मासविशेष, चैत्रके बादका महिना ।

વૈશંપાયન (सं.) व्यासदेवका शिष्य एक मुनि, द्वापरयुगके अंतमें कृष्णद्वैपायन नामसे प्रसिद्ध २८ वें व्यासके चार शिष्योंमेंसे दूसरे, इन्होंने जन्मेजयको "महाभारत" ग्रंथ सुनायाथा ।

વૈશાખનંદન (सं.) गदहा, गधा, गर्दभ, खर, (वि.) मूर्ख, शठ ।

વૈશ્ય (सं.) वर्ण विशेष, तीसरा वर्ण, व्यापार धंधा करनेवाली एक एक जाति विशेष ।

વૈશ્વદેવ (सं.) नित्यके पंच महायज्ञोमेंसे एक यज्ञ विशेष, भोजनके पूर्व अग्निमें अन्नकी कुछआहुतियां ।

વૈશ્વદેવિયું (सं.) वैश्वदेव यज्ञ करनेका कुंड विशेष ।

વૈશ્વાનર (सं.) अग्नि, आग, पावक ।

વૈષ્ણવ (वि.) विष्णुसंबंधी, वैष्णव धर्मका अनुयायी, विष्णुभक्त संप्रदाय विशेष ।

વૈષ્ણવી (सं.) लक्ष्मी, रमा, कमला ।

વે। (सं.) पानीका बहाव, प्रवाह, (सर्व.) वह, अन्यपुरुष।
વેઢડી (सं.) छोटी भैंस।
વેણ (सं.) पानीका भराहुआ छोटासा गड्ढा।
વેશરાવવું (कि) छोड़ना, त्यागना, तजना, (जैनिशेमें)
વેહેણું (वि.) बिनाका, बगैरका।
વેહોર૧ (सं.) खरीद, बेच, लेन देन, क्रयविक्रय, जोखिम।
વેહોરનિયા (सं.) खरीदनेवाला, ग्राहक, खरीददार, मोललेनेवाला
વેહોરવું (कि.) खरीदना, मूल्य देकर लेना, बिकताहुवालेना, संग्रह करना, एकत्र करना, अपने सिरलेना, घरघरसे भिक्षा मांगना (श्रावक धर्ममें)
વેહોરે (सं.) मतभेदमें मुसलमानोंसे अलग किन्तु मुसलमानके धर्मको माननेवाली एक जाति विशेष।
વેહોલિયા (सं.) धरमधक्के, इधर उधर व्यर्थही भटकना।
વેહોલિયાં વાહવાં=इधरउधर मारे मारे फिरना, धरमधक्केखाना।
વ્યક્ત (वि.) प्रकटित, जाहिर, साफ देखने योग्य, खुला, उघाड़ा (सं.) विष्णु, त्रिदेवमेंका दूसरा देव। [एकवस्तु, जन, मनुष्य।
વ્યક્તિ (सं.) मनुष्य, एकाकी,
વ્યગ્ર (वि.) व्याकुल, घबराया हुआ, संभ्रम, उद्विग्न, विकल।
વ્યંગ (सं.) वाक्यके अर्थमें छुपाहुआ दूसराभाव, ध्वनि, वक्रोक्ति ताना, मजाक, कटाक्ष, (वि.) अंगहीन, विकलांग।
વ્યંજન (सं.) अर्द्ध मात्रिक अक्षर, स्वरहीन अक्षर, स्वरहीन वर्ण 'क' से 'ह' तक, चिन्ह, निशान, तरकारी, शाक, अवयव, लिंगेन्द्रिय, गुप्तअंग।
વ્યંઢળ (सं.) नपुंसक, हिजड़ा, क्लीब, पुरुषार्थ हीन।
વ્યજન (सं) बीजना, पंखा, बेना, बेनिया, हवा करनेका साधन।
વ્યતિરેક (वि.) अभाव, सिवाय, बिना, बगैर अलग। [क्लेश।
વ્યથા (सं.) दुःख, पीड़ा, कष्ट,
વ્યભિચાર (सं) भ्रष्टाचार, दुराचार, न्यायमें हेतुका दोष विशेष। परस्त्री या परपुरुष संगम, निन्दित कार्य।
વ્યભિચારિણી (वि.) छिनाल, वेश्या, परपुरुष गामिणी स्त्री।

વ્યભિચારી (सं.) कुमार्गगामी पुरुष, विषयासक्त, लंपट, कुमार्गी।

વ્યભિચારી ભાવ (सं.) रसको सहाय्य करनेवाला भाव, (अलंकार शास्त्रमें ३३ प्रकारके भाव माने है आलस्य, असूया, हर्ष, अमर्ष, विषाद, गर्व, स्मृति, धृति, मति, सुप्ति, ग्लानि, निर्वेद, श्रम, शंका, निद्रा, व्याधि, विबोध, वितर्क, व्रीड़ा, आवेग, मरण, मोह, मद, उन्माद, अविहत्थ, अपस्मार, उग्रता, औत्सुक्य, त्रास, दैन्य, चिन्ता, चपलता और जड़ता)

વ્યય (सं.) धनत्याग, खर्च, गमन, विनाश, क्षय, उपभोग।

વ્યર્થ (अ०) वृथा, निरर्थक, निकम्मा, बिना कामका, निष्फल, फिजूल।

વ્યતીપાત (सं.) इस नामका योग विशेष. (ज्योतिष शास्त्र)

વ્યવસાય (सं.) व्यवहार, लेन-देन, उद्योग, रोजगार, आजीविका।

વ્યવસ્થા (सं.) उपाय, प्रक्रिया, रीति, धर्मनिर्णय, प्रबन्ध, बन्दोबस्त। [मेनेजर।

વ્યવસ્થાપક (सं.) प्रबन्धकर्ता,

વ્યવસ્થિત (वि.) अचल, अटल, निश्चय, व्यवस्थापित।

વ્યવહાર (सं.) देखो વેહેવાર।

વ્યવહારિક (वि.) व्यवहारविषयक, सांसारिक, व्यवहारके योग्य।

વ્યસન (सं.) आसक्ति, अभ्यास, खोटी आदत, लत, टेव मुहाविरा।

વ્યસની (वि.) व्यसनवाला (दुराचार), अभ्यासी, आदी।

વ્યસ્ત (वि.) उलटा, विपरीत, बांटा हुआ, व्याकुल, घबराया हुआ, अस्त होना, छुपा हुआ।

વ્યાકરણ (सं.) वेदका वह अंग विशेष जिसके द्वारा अर्थस्वरूपसे शब्दोंकी सिद्धि की जाती है। पाणिनि मुनिप्रणीत अष्टाध्यायी प्रभृति शास्त्र, भाषाके नियम बांधने और उसीके अनुसार बोलने तथा लिखनेकी रीति।

વ્યાકરણી (सं.) व्याकरणका ज्ञाता।

વ્યાકુલ (वि.) घबराया हुआ, किंकर्तव्यके ज्ञानमें शून्य, उद्विग्न, व्यग्र

વ્યાખ્યા (सं.) वर्णन, टीका, विवृत्ति, अधिक बयान, विवरण, सविस्तर वर्णन।

વ્યાખ્યાન (સં.) वर्णन, भाषण, उपदेश, वक्तृता,लेक्चर। [चीता।
વ્યાઘ્ર (સં.) बाघ, शेर, नाहर,
વ્યાજ (સં.) बहाना, मिष, छल, कपट, कैतव, सूद, लाभ।
વ્યાજખાઉ-ખોર-ખેરૈ (સં.) व्याजपर रुपया ऋणदेनेवाला, सुदखोर, सूदलेनेवाला।
વ્યાજખાઇ (સં.) रुपये पड़े रहनेसे व्याज न आनेका नुकसान।
વ્યાજવટંતર (સં.) व्याजबट्टा, शर्राफका धन्धा। [करनेवाला।
વ્યાજવરૈ (સં.) व्याजसेही गुजर
વ્યાજવટું (સં.) अधिकव्याज, अन्याय व्याज, व्याज और बट्टा।
વ્યાજવહી (સં.) साहुकारकी तरह व्याज निकालनेकी पोथी।
વ્યાજુ (વિ.) व्याजपर लिये हुए, सूदपरदिये हुए।
વ્યાજુચિઠ્ઠી (સં.) व्याजू रुपये लेनेकी शर्तोंका लिखितपत्र।
વ્યાધ (સં.) पारधी, बहेलिया शिकारी, अहेरिया।
વ્યાધિ (સં.) रोग, मरज, दर्द, बीमारी, दुःख क्लेश,
વ્યાપક (વિ.) विज्ञ, सर्वत्र, विस्तृत, व्याप्त, सर्वत्रमें रहनेवाला।
વ્યાપવું (ક્રિ.) फैलना, सर्वत्र पारजाना, व्यापना, व्याप्तहोना।
વ્યાપાર (સં.) रोजगार, कामधन्धा, व्यवसाय, व्यवहार, लेनदेन, श्रम, मेहनत, काम।
વ્યાપ્ત (વિ.) सम्पूर्ण, छन्न, व्याप्त, भराहुआ, फैलाहुआ। पूर्ण।
વ્યાયામ (સં.) परिश्रम, कसरत, शारीरिक काम, एक्सरसाइज।
વ્યાલ (સં.) साँप, सर्प, नाग, भुजंग, व्याघ्र, शेर, चीता, सिंह।
વ્યાવું (ક્રિ.) वियाना, प्रसव करना, जनना, संतान पैदा करना।
વ્યાસ (સં.) विस्तार, गोळके मध्यकी रेखा, पाराशर पुत्र, वेदव्यास, पुराण पाठक, ब्राह्मण।
વ્યુત્પત્તિ (સં.) शास्त्रीय ज्ञानमें अभिनिवेष, बोध, शक्तिज्ञान, संस्कार, छापन, शब्दविन्यास।
વ્યુત્પન્ન (વિ.) व्युत्पत्तियुक्त, पंडित, विज्ञ, जानकार, समझदार।
વ્યૂહ (સં.) सेनाकी रचना विशेष।
વ્યોમ (સં.) नभ, आकाश, आस्मान। [नभचर।
વ્યોમચર (સં.) पक्षी, पखेरू,
વ્રજ (સં.) मथुराके चारों ओरका देश, केवल ग्वालोंके रहनेका नगर।

વ્રજવું (क्रि.) जाना, गमन करना।
વ્રત (सं.) पुण्यतिथिका उपवास, नियम, अनुष्ठान, निराहारका प्रण।
વ્રતાળ (वि.) व्रतवाला, उपवास-वाला।
વ્રણ (सं.) घाव, फोड़ा, क्षत, जख्म। [लज्जा।
વ્રીડા (सं.) लाज, शर्म, हया।
વ્રીહિ (सं.) चाँवल, धान्यमात्र।
વ્રેહ (स.) विरह, वियोग, बिछुड़नेका शोक।
વ્હાર (सं.) मदद, सहायता।
વ્હેલ (सं.) व्हेल नामसे प्रसिद्ध एक बड़ी भारी समुद्री मछली। गाड़ी, वाहन।

શ

શ=गुजराती वर्णमालाका इकतीसवाँ अक्षर, तीसवाँ व्यंजनवर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु होनेके कारण इसे तालव्य कहते हैं।
શ (सं.) कल्याण, मंगल, शुभ।
શક (सं.) संशय, सन्देह, वहम, भ्रांति, विकल्प, अस्थिर विचार।
શક લેવો (क्रि.) भ्रांतहोना, संशयापन्न होजाना। [वहमहोना।
શક પાડવો (क्रि.) भ्रांतिहोना,
શક (सं.) जयकी छाप, प्रभाव, किसीविजयके स्मरणार्थ विजयी पुरुषके जन्म अथवा विजय काल से प्रत्येक वर्षकी गणना। एक जंगली लड़ाकू जाति विशेष।
શકટ (सं.) रथ, गाड़ी, छकड़ा, बैल गाड़ी, भारकस।
શકંચો-જો (सं.) दबानेका यंत्र।
શકન (सं.) सगुन, शुभ सूचक चिन्ह, मंगलगान, पक्षी विशेष,
શકરો (सं.) एक प्रकारका पक्षी, बाज़, चंचलबुद्धिका मनुष्य, शिकरा। [पक्षी, (वि.) चंचल।
શકરોબાજ (सं.) बाज नामक
શકવું (क्रि.) होना, सकना, शक्तिमान होना, यह सकर्मकक्रिया-पदके साथ सहायक रूपमें लगाया जाता है।
શકુન (सं.) देखो શકન।
શકુંત (सं.) मोर।
શકુનિ (सं.) गिद्ध, गीध, शकुनि नामक पक्षीविशेष।
શકે (अ०) शक शाके, शालिवाहनका सम्वत। जाने न जाने।
શકોરું (सं.) मिट्टीका पात्रविशेष, मृत्तिकाका बड़ा दीपक, मटका।

શત્રુ (सं.) दुश्मन, बैरी, अरि ।

શત્રુપણું (सं.) बैर, शत्रुता, रिपुता ।

શનિ (सं.) सातवां ग्रह, सूर्य पुत्र, रत्न विशेष, नीलम (वि.) मन्द, धीमा, धीरा ।

શનિવાર (सं.) सातवां दिन, वार विशेष, दिनका नाम विशेष ।

[illegible] कृत, सत्ता, प्रभाव, असर, कस, सत्व, सार, जीव, दम, देवी, माता, जोगिनी, योगिनी, आधार, आश्रय, सहारा, टेका, मजबूती, योग्यता, अस्त्रविशेष, भाला, बर्छी, त्रिशूल, इन्द्राणीवैष्णवी आदि आठ शक्तियां, वशिष्ठ ऋषिका बड़ा लड़का ।

શક્તિમાન (वि.) पुरुषार्थी, पराक्रमी, समर्थ, जोरावर, धनवान ।

શક્ય (वि.) संभव, होसकनेलायक, सम्पादन होने योग्य ।

શક્યક્રિયાર્થ (वि.) क्रियापद का एक रूपभेद जिसमें होनेका अर्थ हो, (व्याकरण शास्त्र)

શક્ર (सं.) इन्द्र, सुरपति ।

શખસ-ખ્સ (सं.) व्यक्ति, एक मनुष्य, अमुक आदमी ।

શબ્દાલંકાર (सं.) शब्दोंकी ऐसी रचना जो प्रिय मालूम हो ।

શમ (सं.) शान्ति, निग्रह, इन्द्रिय वशीकार, इन्द्रिय दमन ।

શમતા-તાઈ (सं.) स्थिर शान्ति, धैर्य, क्षमा । (वि.)

શમન (सं.) शान्ति क्रोध, मोचन, [illegible] विशेष ।

શકવું (क्रि.) सन्देहमें पड़ना, संकोच करना, शरमाना ।

શંકા (सं.) शक, सन्देह, वहम, अंदेशा, अविश्वास, भ्रम, संशय, त्रास, डर, भय ।

શંકા થવી (क्रि.) संशय होना, मलया मूत्रकी हाजत होना

શંકાવું (क्रि.) सन्देहमें होना, शंकित होना ।

શંકુ (सं.) नोकदारवस्तु, दीपकको लौके आकारकी वस्तु, छाया देखकर समय जाननेका बारह अंगुलका लम्बा हाथी दांत, पीतल, लकड़ी आदिका सुकीली यंत्र विशेष । सूर्य यंत्र, जमीन मापनेका साधन, सूईकी नोक, शिखर, चोटी, अग्रभाग, दस महापद्म, संख्याविशेष ।

ગ્નવું (क्रि.) जाना, गमन करना।
વ્રત (सं.) पुण्यतिथिका उपवास, नियम, अनुष्ठान, निराहारका प्रण।
વ્રતાળ (वि.) व्रतवाला, उपवास- ह।
શરમ) घाव, फोड़ा, क्षत, होना, [लज्जा। रहना। ... शर्म, हया।
શરમાવવું (क्रि.) दिवाला
શરમાળ (वि.) मूर्ख, बुद्धिशून्य निरक्षर, जंगली।
શ'ખેવાય (वि) कुछभी नहीं।
શ'ખનારાયણ (वि.) जिसके पास कुछभी नहीं हो।
શ'ખડું કવે (क्रि.) दिवाला निकालना, घबराकर कामको अधूरा छोड़ना। [शठ, बेढंगा।
શ'ખભારથી (वि.) मूर्ख, बेवकूफ
શ'ખજીરૂ (सं.) औषध विशेष।
શ'ખણી (सं.) एक प्रकारकी स्त्री, कामशास्त्र वर्णित चार प्रकारकी स्त्रियोंमेंसे एक प्रकारकी स्त्री, ऊंची लम्बेवाळवाली काम पीडिता और चिड़चिड़े स्वभावकी स्त्री, लड़ाका स्त्री, झगड़ालू, कर कशा स्त्री, निर्लज्जा स्त्री।
શક (सं.) समकी छाप, प्रभाव, किसीविजयके स्मरणार्थ विजयी पुरुषके जन्म अथवा विजय काळ से प्रत्येक वर्षकी गणना। एक जंगली लड़ाकू जाति विशेष।
શકટ (सं.) रथ, गाड़ी, छकड़ा, बैल गाड़ी, मारकस।
શકંજો–જો (सं.) दबानेका यंत्र। न पड़े इस रीतिसे गुप्त भेद प्रपंच करनेवाला (नायक)।
શણ (सं.) सन, पाट, तृण, विशेष, जिसके छाळकी रस्सी बोरे आदि बनते हैं।
શણગઠ (सं.) सख्त गांठ, मजबूत गांठ।
શણગો (सं.) देखो સણગો।
શણભિંડી (सं.) एक प्रकारका वृक्ष, (इसकी छालके कपड़े भी बनते हैं)।
શણવું (क्रि.) सुनाना, समझाना।
શણિયું (सं.) सनका (वस्त्रादि)।
શણ્ડલી (सं.) साठी।
શત (वि.) सौ, १००, एकसौ।
શતક (सं.) जिसमें सौ हों।
શતાબી (सं.) जल्दी, शीघ्रता, त्वरा।
શતાવરી (सं.) औषधि विशेष।

શત્રુ (सं.) दुश्मन, बैरी, अरि ।

શત્રુવટ (सं.) बैर, शत्रुता, रिपुता ।

શનિ (सं.) सातवां ग्रह, सूर्य पुत्र, रत्न विशेष, नीलम (वि.) मन्द, धीमा, धीरा ।

શનિવાર (सं.) सातवां दिन, वार विशेष, दिनका नाम विशेष ।

શનિશ્ચર (स.) ग्रह विशेष, शनि द्वेष, जहरीला आदमी रत्नविशेष ।

શપથ (सं.) कसम, सौगन्ध, सौंह, प्रतिज्ञा प्रण वचन ।

શફરી (सं.) मछली, मच्छी, मीन ।

શબ (सं.) मुर्दा, मृतक, प्रेत, लाश, मृत शरीर ।

શબ્દ (सं.) ध्वनि, निनाद, बोली, आवाज, घोष, स्वर, वचन, वाणी, अक्षरसमूह ।

શબ્દ કોશ (सं.) अर्थ सहित शब्दोंका भंडार, डिक्सनरी ।

શબ્દયોગી+અવ્યય (सं.) अव्यय रूप शब्द, दूसरे शब्दके सम्बन्धमें अर्थका निश्चय करनेवाला ।

શબ્દરચના (सं.) शब्द योजना, लेखन पद्धति ।

શબ્દવિચાર (सं.) वर्णन्यास, ध्वनि विषयक विचार, शुद्ध लेखन विद्या ।

શબ્દાલંકાર (सं.) शब्दोंकी ऐसी रचना जो प्रिय मालूम हो ।

શમ (सं.) शान्ति, निग्रह, इन्द्रिय वशीकार, इन्द्रिय दमन ।

શમતા—તાઇ (सं.) स्थिरता, शान्ति, धैर्य, क्षमा ।

શમન (सं.) शान्ति, सांत्वन क्रोध, मोचन ।

શયનલાડુ (सं.) मरने वालेको मरते समय जो लड्डू दिये जाते हैं । पिंड ।

શમવું (क्रि.) मरना, शान्तहोना, स्थिर होना, चुपहोना, मन्दहोना, बुझना, अदृश्यहोना ।

શમશમાકર (वि.) स्थिर, शांत ।

શમશેર (सं.) एक प्रकारका ह-थियार जो सिंहके नख सरीखा होता है ; तलवार, खड्ग, असि, कृपाण, गंजफा खेलका रंग विशेष ।

શમશેર બહાદુર (सं.) खिताब विशेष, होशियार, वीर, बहादुर, खड्ग धारी ।

શમી (सं.) वृक्ष विशेष ।

શંભુમેળો (सं.) मिश्रित, खिचड़ा ।

શયન (सं.) नींद, निद्रा, पलंग, खाट ।

શય્યા (सं.) सेज, बिछौना, चारपाई

શર (सं.) बाण, तीर, सायक, विशिख ।

શરણ (सं.) रक्षा, उद्धार, घर, मकान, आश्रय, बचाव, छत्र ।

શરણાગત (वि.) आश्रित, शरणार्थी ।

શરણું (सं.) मदद, आश्रय ।

શરત (सं.) शर्त, ठहराव, वचन ।

શરદ (सं.) ऋतु विशेष, कुँआर और कार्तिकका महीना ।

શરદી (सं.) ठंढ, सर्दी, रोग विशेष जिससे शरीर ठंडा हो जावे ।

શરધિ (सं.) तरकस, तूण, भाथा ।

શરબત (सं.) मीठा और सुगन्धितपानी, बनाया हुआ पेय पदार्थ विशेष । [एक पशु विशेष ।

શરભ (सं.) सिंहसेभी बलवान

શરમ (सं.) संकोच, लाज, ह्या, आबरू टेक । सुख, खुशी, आनन्द ।

શરમાળ (वि.) नम्र, लज्जाशील, शर्मवाला, अदबरखनेवाला ।

શરમાવવું (क्रि.) लज्जित करना, झेंपना ।

શરમિંદગી (सं.) लाज, शर्म, गैरत ।

શરમો (सं.) सांठेका टुकड़ा, गन्नेकी पेरी ।

શરવડું (वि.) थोड़ासा फटकारा

શરવું (क्रि.) स्वादिष्ट, अच्छी श्रवणशक्तिवाला ।

શરાધિયાં (सं.) श्राद्ध दिवस, पितृपक्ष, कनागत ।

શરાપ (सं.) आक्रोश, बुरा वाक्य कहना, बद दुआ । [मद्य, वारुणि ।

શરાબ (सं.) मद्य, मदिरा, दारू,

શરાવણું (सं.) मिट्टीका पात्र विशेष ।

શરાસન (सं.) धनुष, कोदण्ड, चाप ।

શરી (सं.) मिठास, स्वाद, लज्जत ।

શરીક (वि.) साथी, भागी, हिस्सेदार । [अंग,गात्र,डौल,जिस्म ।

શરીર (सं.) देह, बदन, काय,

શરીર ભરાવું (क्रि.) ज्वर आना बुखार के चिन्ह होना ।

શરીરગાળવું (क्रि.) शरीरका संगठन करना ।

શરીરમારેલવું-ભરાવું-ભરાઈજવું (क्रि.) अकड़ होजाना ।

શરીરસમ્પત્તિ (सं.) आरोग्यता, स्वास्थ्य, तन्दुरस्ती । [चालू ।

શરૂ (वि.) आरंभ, प्रारंभ, जारी

શરૂઓ (सं.) तेजकानका, जल्दी सुननेवाला ।

શમ્યા (सं.) यज्ञके समय अग्निमें घृताहुति देनेका पात्र विशेष श्रुव, याज्ञियचमस पात्र ।

શરે (सं.) मुसलमानी कायदा ।

શરેહ (सं.) मुसलमानी कानूनोंकी व्याख्या ।

શર્કરા (सं.) शक्कर, खांड, चीनी ।

શર્મ (सं.) सुख, आनंद, खुशी, शान्ति ।

શર્વરી (सं.) रात, रात्री, निशा ।

શર્વો (वि.) तांम, चंचळ । [साधु ।

શલાકાપુરુષ (सं.) जैनियोंके ६३

શલ્ય (सं.) बाण, कांटा, कण्टक ।

શલ્યા (सं.) शिळा, पत्थरकी पट्टी ।

શવયાન (सं.) ठठरी, सँघाती, मुर्दा लेजानेकी टट्टी ।

શવલ (वि.) विचित्र, बहुरंगी ।

શમસાન (सं.) मरघट, श्मशान, मुर्दा जलाने या गाड़नेकी जगह, यात्री, मुसाफिर ।

શશ (सं.) खरगोश, खरहा, चांदमेंका काळा दाग (मृगरूप)

શશિ (सं.) चांद, चन्द्रमा, मयंक ।

શસ્ત્ર (सं.) हथियार, आयुध, तलवार, प्रभृति, लोहा, वह हथियार जो फेंका न जावें और हाथसे पकड़े हुए ही काममें लाया जावे (जो फेंका जाता है उसे अस्त्र कहते हैं ।

શસ્ત્રવૈદ (सं.) शस्त्रचिकित्सक, चीराफाड़ी फोड़े फुन्सी, घाव आदिका इलाज करनेवाला, सर्जन जर्राह ।

શસ્ત્રવૈદું (सं.) शल्यचिकित्सा, चीरफाड़ द्वारा आरामकरनेकी क्रिया, सर्जरी, जर्राही, शस्त्र वैद्यक ।

શહેર (सं.) नगर, बड़ा गांव, ग्राम, पुर, पत्तन ।

શળ (सं.) शिळा, पत्थरकी पट्टी, सल, सलवट, रेखा चिन्ह ।

શળી (सं.) शलाका, घास, बांस आदिका पतला और लम्बा भाग ५। रु० का संकेत, नाईकी सिल्ली ।

શાંકરી (वि.) शंकर मतके, शैव ।

શાંઢવું (क्रि.) जाना, पाळना रखना ।

શા (सं.) शाहका अपभ्रंश शब्द ।

શા (सर्व.) क्यों, किस ।

શાક (सं.) भाजी, तरकारी, साग, भोजन करनेके समय फलपत्र आदिको नमक मिर्चादि मसाला मिलाकर पकाया हुवा पदार्थ ।

શાકભાજી (वि.) नित्यका, नकुछ ।

શાકણ-ણી (सं.) शाकिनी निम्नवर्णकी देवी पिशाचिनी। [विषमें।
શાકે (अ०) शालिवाहन के शक
શાકત (वि.) देवीके उपासक, शक्तिकी उपासना करनेवाले।
શાક્ય (सं.) बौद्धधर्मका संस्थापक, बुद्ध शाक्यमुनि।
શાખ (सं.) कुलनाम, पदवी गवाही, स्वीकृति, सम्मति, आबरू, उचित व्यवहार, पत, गार कैरी, वृक्षपर पकाहुआ आमका फल।
શાખા (सं.) डाली, कुमाछ, प्रकरण, ग्रंथका परिच्छेद, वेदमंत्र पढने और पढानेकी रीति, (ऋग्वेदकी आठ शाखाएं हैं) टहनी प्रथभेद, समीप, प्रकार, रहह।
શાખિયું (सं.) पकने योग्य कैरी (आम) [चिला सीखनेवाला।
શાગિર્દ (सं.) शिष्य, शागिर्द,
શાણ (सं.) चार माशेके बराबर वजन, हथियार और औजारोंको धार करनेका यंत्र।
શાણકું (सं.) मिट्टीका पात्र विशेष शिकोरा, माळसा।
શાણકું ઝાલવું (क्रि.) भीखमंगाना।
શાણપણ (सं.) होशियारी, सावधानी, सभ्यता, शिष्टाचार, अक्ल मन्दी।
શાણું (वि.) सयाना, विवेकी, समझदार, શાણીસ્ત્રિયાળ=देखनेमें सीधी किन्तु बदमाश औरत, શાણાને શાન ને ગધેડાને ડફણું= चतुर मनुष्यको इशारा और मूर्खको मार, (सं.) स्वप्न सपना।
શાણુંભગલું (वि.) स्वार्थ साधक
શાતા (सं.) शांति, सुखवृत्ति, आनंद।
શાતાઓરહેવું(=)राजीखुशी रहना।
શાદી (सं.) लग्न, विवाह, परिणय।
શાન (सं.) देखाव, शृंगारकीछटा।
શાનદાર (वि.) शोभित, छटायुक्त।
શાનશોખ (सं.) छैलाई, फकड़पण भपकेदार पोशाक। [किसलिये।
શાને (अ०) किसवास्ते, क्यों,
શાંત (वि.) स्थिर अक्षुब्ध, अचंचल, चुपचाप।
શાતફીડળ (सं.) फळ विशेष, मिलकी तुरईकी एक जाति विशेष।
શાંતિ (सं.) स्थिरता, चैन, ठण्डाई आराम, दुर्गा। [रहनेवाला ठग।
શાંતિથબ્બા (सं.) चुपचाप बैठ

શાબાન (सं.) मुसलमानी वर्षका आठवां महीना ।[वाहवाह, धन्य ।
શાબાશ (अ०) भले, ठीककिया,
શાબાશી (सं.) प्रशंसा, तारीफ, श्लाघा, वाहवाही ।
શાબિત–બેત–તી (वि.) मजबूत पक्का, दृढ़, प्रमाणसिद्ध कियाहुआ स्थापित, खरा नक्की । [सुबूत ।
શાબિતી–બેતી (सं.) प्रमाण
શાબુતી (सं.) मजबूती, पुख्तगी दृढता, टिकाऊ ।
શામ (वि.) काला, गहरा, आस्मानी, रंगवाला, (सं.) मेघ बादल, धतूरा, प्रयागतीर्थस्थवट, कोयल, (पक्षी विशेष) [वर्णहो ।
શામળાવાન (वि.) जिसका श्याम
શામળું (वि.) काला, श्याम, गहरा, खाकीरंग, घननील ।
શામળાજી (सं.) श्रीकृष्ण चंद्र ।
શામિલ–મેલ (वि,) जुड़ाहुवा, मिलाहुआ, मिश्रित, साथी, जोड़-दार, लगाहुआ । `
શામો (सं.) विनाकूटाहुआ एक मांतिका अन्न (जिसे उपवास विशेष के दिन खाते हैं)
શાયડી (सं.) एकप्रकारका औजार जिससे लकडी या लोहेमें छेद किया जाता है ।
શાયડીથીસાલવું (क्रि.) तानेदेना, कठोर वचन बोलकर दिल दुखाना तकलीफ पहुंचाना ।
શાયર (सं.) कवि, भाट ।
શાયી (वि.) सोनेवाला, शयन करनेवाला । [बेज ।
શાર (सं.) छिद्र, छेद, सूराख,
શારવું (क्रि.) छिद्रकरना, छेदना
શારીર (वि) शरीर विषयक, रोग सम्बन्धी, (सं.) वैद्यकशास्त्र ।
શારીરિક (वि) शरीरसम्बन्धी, वैद्यक सम्बन्धी,जिस्मानी, दैहिक ।
શાર્દૂલ (सं.) व्याघ्र, बाघ बघेरा ।
શાર્દૂલવિક્રીડિત (सं) वार्णिकवृत्त विशेष (पिंगलशास्त्रमें)
શાલ (सं.) ऊनका बनाहुआ कीमती वस्त्र जो ओढा जाताहै (दोशाल मिलनेके कारण दुशाला कहाता है) [सिरोपाव ।
શાલદુશાલો (सं.) पगड़ी, दुपट्टा,
શાલા (सं.) घर, भवन, स्थान ।
શાલિગ્રામ (सं.) गोलमोल एक नदी विशेषका काला पत्थर जो विष्णु नामसे पूजा जाताहै । विष्णुकी मूर्ति विशेष ।

શાલિવાહન (स.) एक राजा जो विक्रमादित्यका शत्रु और शक सम्वतका प्रवर्त्तक कहा जाताहै ।

શાવક (सं.) श्रावक, जैनमतानुयायी, बच्चा, बालक' छौना ।

શાવરી (सं.) एक प्रकारकी विद्या, कौंचका वृक्ष ।

શાશ્વત (वि.) नित्य, हमेशा, सतत, निरन्तर, प्रमाण, निश्चय, विश्वास ।

શાસન (सं.) सजा, दंड, आज्ञा, हुक्म, बोध, शास्त्र, शिक्षा ।

શાસ્ત્ર (सं.) हितोपदेशक ग्रंथ, पुस्तक, निदेश, धर्मग्रंथ ।

શાસ્ત્રાર્થ (सं.) शास्त्रोंमेंसे लिखा हुआ प्रमाण, शास्त्रानुमोदित वाद-विवाद, धर्मशास्त्रके वचनका अर्थ ।

શાસ્ત્રી (सं.) एकाध शास्त्रका ज्ञाता, शास्त्रज्ञ, शास्त्रोंका मनन करनेवाला, संस्कृतकी एक परीक्षा विशेष (वर्त्तमानकालमें)

શાસ્ત્રીય (वि.) शास्त्रविषयक, शास्त्र प्रतिपादित, शास्त्रवर्णित ।

શાસ્ત્રોક્ત (वि.) शास्त्रमें कहा हुआ ।

શાહ (सं.) मुसलमान राजा, बादशाह, शराफ, विश्वस्त पुरुष, व्यवहारमें ईमानदार, चोर (दिल्लगीमें)।

શાહજાદી (सं.) राजपुत्री, राजकुमारी, बादशाहकी लड़की, कुंवरी ।

શાહજાદો (सं.) राजपुत्र, राजकुमार ।

શાહજીરું (सं.) कालाजीरा, औषधि विशेष ।

શાહજોગ (वि.) लानेवालेको रुपये दिलानेवाली (हुंडी), नियमानुसार ।

શાહણપણ (सं.) बुद्धिमानी, होशियारी, चतुरता, अक्लमंदी ।[चतुर ।

શાહણું (वि.) सयाना, होशियार,

શાહવટ (सं.) प्रमाणिकता, साहूकारी ।

શાહી (सं.) स्याही, रोशनाई ।

શાહુકાર (सं)अच्छा व्यवहार करनेवाला, अधिकरूपमें लेनदेनकरनेवाला

શાહુકારી (सं.) साहूकारका कार्य, सचाई, विश्वस्तता, प्रमाणिकता ।

શાહેદ (सं.) गवाह, साक्षी ।

શાહેદી (सं.) गवाही, साक्षी, जबानी

શાહેદી આપવી (क्रि.) प्रमाणदेना, गवाही देना, साक्षी देना ।

શાહેર (सं.) कवि, शायर, भाट ।

શાહેરી (सं.) कविता, कविका कार्य, शायरी ।

શાળ(सं.)चावल आदि धान्य विशेष ।

શાળિવું (सं.) एक जातिके चांवळ ।

શાળોપયોગી (वि.) पाठशालाके योग्य, विद्यालयके उपयुक्त ।

શિંગ (सं.) सींग, शृंग, विषाण, रणसिंघा, शृंगवाद्यविशेष । फली, फलविशेष, सेम ।

શિંગડી (सं.) छोटा सींग नया निकला हुआ सींग । बंदूकका बारूद भरनेकी शृंगाकार नलिकाविशेष ।

શિંગડું (सं.) सींग, गोशृंगवाद्यविशेष, रणसींगा, बारूद भरनेकी नली ।

શિંગડાં ઉગવાં આવી છે (=) मूर्ख बतानेके लिये उपालम्भ रूपमें यह वाक्य प्रयोग किया जाता है ।

શિંગડાં માંડવાં (क्रि.) सिरजोरी करना, जबरदस्ती सिर देना, आ-बैल मुझेमार करना ।

શિંગિયો વછનાગ (सं.) औषधि विशेष यह बड़ी जहरीली वस्तु होती है ।

શિંગી (सं.) देखो શિંગડી ।

શિંગોટી (सं.) सींग निकलनेका स्थान, सींगमें पहिनानेका जेवर ।

શિંગોડું (सं.) शृंगाटक, सिंघाड़ा, पुरुष या स्त्रीके मस्तक पर हिंगळू या रोळीका सिंघाड़ेकी शकलका चिन्ह ।

શિંગોડીનો વેલો (सं.) बहुकुटुम्बी ।

શિંગોડું તાણવું (क्रि.) खींचातानी करना । (मजाकमें)

શિંડું (सं.) नकुछ तुच्छ ।

શિઆળવું (सं.) भूरा । शैसिम ।

શિઆળો (सं.) शीतकाळ, ठंडका

શિકસ્ત (वि.) हारखानाहुवा, पराजित, परास्त (सं.) हार पराजय ।

શિંકા (सं.) वह मोतियोंका झुमका, जिसे स्त्रियां मस्तकपर धारण करती हैं, आभूषणविशेष ।

શિકલ (सं.) मुहं, सूरत, चेहरा, दिखावा, बनावट ।

શિકાકાઈ (सं.) शिर धोनेके काममें आनेवाली, एकवनस्पति विशेष ।

શિકાર (सं) मृगया, आखेट, खुराक, भक्ष्य, हरण करना, दगेसे वस्तुका लेना (वि.) सरस, उत्तम श्रेष्ठ ।

શિકારવું (क्रि.) देना, (रुपया वगैरेः) परवाना ।

શિકારી (सं.) शिकार करनेवाला, व्याधा, पार्धी, मृगयार्थी, (वि.) शिकार संबंधी, बहादुर ।

શિકે (अ०) सहित, साथ, युक्तभी ।

શિકોતર (सं.) नीच जातिकी भूतनी ।

શિકોતરું (सं.) निम्न जातिका भूत ।
શિકોરું (सं.) मिट्टीका पात्र विशेष ।
શિક્ષક (सं.) शिक्षादेनेवाला, सिखानेवाला, मास्टर, गुरु, टीचर, पाठक । [सिखानेका ढंग ।
શિક્ષણ (सं.) शिक्षा, सीख,
શિક્ષા (सं.) बोध, नसीहत, विद्या ज्ञान, अभ्यास, सीखना, सज़ा, दण्ड, सीख, सखाई। [सीखना ।
શિક્ષાલેવી (कि.) नसीहतलेना
શિક્ષાકરવી (कि.) मारना, सजा देना, पीटना, दण्डविधान करना।
શિક્ષિત (वि.) सीखाहुआ, पठित सुधराहुवा, निपुण, अभिज्ञ ।
શિખ (सं) छुट्टी, विदागी, शिक्षा, रजा, जाते समय किसीको कुछ देना ।
શિખંડ (सं.) एक मिष्ट अवलेह विशेष, (दहीको मोटे कपड़ेमें कई घंटों बांधकर पानी निकालाहुआ, और उसमें शक्कर मेवा आदि डालकर मथन कियाहुवा पदार्थ) श्रीखंड
શિખંડી (सं.) मोर, मयूर, नीलकंठ, पक्षी विशेष, द्रुपदराजाकापुत्र।
શિખર (सं.) सिर, सिरा, अन्त, नोक, चोटी, अन्तिम भाग (उंचाई)
શિખરિણી (सं.) छन्दोभेद, पिंगळ शास्त्र वर्णित छन्द विशेष ।
શિખવણી (सं.) चेतावनी, सलाह, सम्मति, उत्तेजना, मंत्रणा ।
શિખવવું (कि.) सिखाना, ज्ञान देना, पढाना, चेताना, उत्तेजित करना ।
શિખવું (कि)सीखना, पढना, ज्ञान लेना, समझना, अनुभव करना ।
શિખા (सं.) चोटी, सिरपरके सबसे लम्बेबाळ, चोंटी, टेम, फन, कलगी, दीपककी लौ ।
શિખાઉ (कि) अनजान, अज्ञानी, नया सीखनेवाला, अबोध ।
શિખાડવું (कि.) पढ़ाना, सिखाना समझाना ।
શિખામણ (सं.) सलाह, सम्मति, शिक्षा, बोध, उपदेश, चेतावनी, सूचना ।
શિખી (सं.) मोर, मयूर, पक्षीविशेष (वि.) चोटीवाळा, कलगीवाला ।
શિજડો (सं.) शमीवृक्ष, खेजड़ाका वृक्ष, वृक्षविशेष ।
શિતળા (सं) देवीविशेष, विस्फोटक रोग को शांत करनेवाली देवी, रोगविशेष ।
શિતલાના વાહને ચઢવું (कि.) अपयश मिलना, बदनामी उठाना, फजीहत होना ।

શિતાબ (वि.) जल्दी, शीघ्रता, उतावळ, (सं.) वृक्षविशेष ।

શિથિલ (वि.) ढीला, आळसी, मन्द ।

શિથો (सं.) मांग सिरके बीचमें बालोंको दो भागोंसें विभक्त करनेपर बीचमें बनी हुई रेखा ।

શિપારસ (सं.) शिफारिश, गुणप्रशंसा, अनुग्रह कारण, गुणवर्णन ।

શિબિકા (सं) खुली पालकी डोली ।

શિબિર (सं.) छावनी, पड़ाव, सेना सन्निवेश, सेनाके रहनेका स्थान । तम्बू, केम्प ।

શિયળ (सं) पातिव्रत धर्म, अपने पतिपर पूज्यबुद्धि युक्त महान भक्ति ।

શિયાવિયા (वि.) शरमिंदा, घबराया हुआ, व्याकुळ, लज्जित ।

શિયાળ (सं.) गीदड़, शृगाळ, जम्बुक, लड़ैया, स्यार ।

શિયાળ તાણે સીમ ભણીને કુતરો તાણે ગામ ભણી (क) अपना फायदा सब कोई देखो ।

શિયાળુ (सं.) ठंडके मौसिनमें पकनेवाला धान्य । [काळ ।

શિયાળો (सं.) ठंड, जाड़ा, शीत-

શિર (सं.) माथा, सिर, मस्तक, मूंड मुंड, अग्रभाग ।

શિર આપવું (क्रि.) चाहे जैसा कठिन काम करनेका वचन दे देना ।

શિર કાપવું (क्रि.) नमकहराम होना, धोका करना, बदमाशी करना ।

શિર ઉપર લેવું (क्रि) अपनी जिम्मेवारी करना, भार ग्रहण करना ।

શિરસલામતતો પગડિયાં બહોતેરી (क) जियेंगे नरतो बसायेंगे घर ।

શિરછેદ (सं.) सिरका काटना ।

શિરછત્ર (सं.) पूज्य तथा वृद्ध पुरुष ।

શિરજોર (सं.) माथापची, करनेवाला व्यक्ति, जबरदस्त ।

શિરજોરી (सं.) माथापची, जबरदस्ती ।

શિરતાજ (सं.) सिरमौर, पूज्य मान्य ।

શિરનામું (सं.) पता, (कार्ड लिफाफे वगैरःपर) सरनामा ।

શિરપાવ (सं.) इनाम पुरस्कार भेट, पगड़ी, दुपट्टा इत्यादि ।

શિરબંદી (सं.) किला अथवा नगरकी रक्षाकेलिये नियुक्त सेना ।

શિરસ્તેદાર (सं.) अदालतके एक मुख्य कार्य कर्ता, (मुहर्रिर) पद विशेष ।

શિરસ્તો (सं.) रीति, रस्म, रिवाज

શિરા (सं.) रग, नस, रक्तवाहिनी नाड़ी, धमनी, नब्ज, नाड़ी ।

શિરાણું (सं.) तकिया, सिरके नीचे लगानेका, उपधान ।

શિરામણ (सं.) कलेवा, प्रातःकालका भोजन, नास्ता।

શિરાવવું (क्रि.) कलेवा करना।

શિરી (सं.) मिठास, मधुरता।

શિરીન (सं.) मीठा, मधुर, मिष्ट।

શિરો (सं.) शीरा, हलुआ, मोहन भोग, मिठाई विशेष, गुड़ कोपतला करके उबालकर तम्बाकूमें मिलानेके लिये बनायाहुवा पदार्थ।

શિરોમણિ (सं.) एकप्रकारका ज़ेवर, शिरकाआभूषण, उत्तम, श्रेष्ठ, पूज्य, मान्य, सिरताज, सर्वोत्तम।

શિલા (सं.) सिल, चट्टान, पत्थर।

શિલાછાપ (सं.) पत्थरकी छाप, लेथोग्राफ, लिखाहुवा पत्थरपर उतारकर फिर कागजपर उतारलेनेकी क्रिया।

શિલાજિત (सं.) शिलारस, शैलज शिलाजीत नामसे प्रसिद्ध पर्वतका गोंद विशेष।

શિલારસ (सं.) एकप्रकारका गोंद जो लेप और धूपके काम आताहै।

શિલાલેખ (सं.) पत्थरपर खुदा हुवा लेख। [शर।

શિલિમુખ (सं.) बाण, तीर, विशिख

શિલેખાનું (सं.) शस्त्रागार, तोपखाना

શિલ્પ (सं.) हाथ अथवा यंत्रद्वाराकी हुई कारीगरी, हुन्नर, विद्या गुन, वास्तुकार्य, दस्तकारी। [गुनी।

શિલ્પકાર (सं.) कारीगर, हुनरी,

શિલ્પશાસ્ત્ર (सं.) कारीगरी सिखानेका ग्रंथ।

શિલ્પશાસ્ત્રી (सं.) शिल्पकार, शिल्प विद्याका पारदर्शी, दस्तकार।

શિલ્પશાલા (सं.) कलाभवन, कारीगरीका घर, कारखाना।

શિલ્પી (सं.) कारीगर, शिल्पकार।

શિવ (सं.) महादेव, शंकर, कल्याण करनेवाला, मंगल कर्ता।

શિવનિર્માલ્ય (सं.) शिवमूर्तिको अर्पित द्रव्य, किसीके काममें न आने योग्य। [सिक्का(तांबेका)

શિવરાઈ (सं.) शिवाजीके समयका

શિવરાત-ત્રિ (सं.) प्रत्येक महीनेके चतुर्दशी तिथिकी रात्रि, फागुन महिनेके कृष्णपक्षकी चौदस।

શિવા (सं.) पार्वती, गौरी, गिरिजा
चौघाड़िया पौनेचार घड़ी, गविड़।
શિવાએ-ય (अ०) बिना, बगैर,
अतिरिक्त, अलावह।
શિવાલય (सं.) शिवमन्दिर,
शिवका स्थान।
શિશિર (सं.) ऋतुविशेष, जाड़ा,
पाळा, हिम, सर्दी, माघ और
पौषका महिना, शीतकाळ।
શિશુ (सं.) बालक, बच्चा, सद्यो-
जातबालक, बाल।
શિશ્ન-શ્નુ (सं.) पुरुषकी इन्द्रिय,
लिंग, मूत्रेन्द्रिय, उपस्थेन्द्रिय।
શિષ્યો (सं.) शिष्य, शागिर्द, चेला।
શિષ્ટ (वि.) सदाचारी, प्रतिष्ठित,
शिक्षित, पठित, शरीफ़, बुद्धिमान।
શિષ્ટાઈ (सं.) शिष्टता, सुव्यवहार।
શિષ્ટાચાર (सं.) आदर, सत्कार,
सुव्यवहार। [उचित।
શિસ્ત (वि.) योग्य, लायक, ठीक,
શિળિસાતમ (सं.) शीतला सप्तमी,
सावन महिनेकी सुधी या बुदी
सप्तमीको जिसदिन लोग ठंडा
भोजन करते हैं।
શી (सर्व०) क्या, कैसी।
શીકર (सं.) सीकार, पानीकी
बारीक धार या फुहारा।
શીકું-શીંકું (सं.) छींका, रस्सी
या तारका बनाहुआ फन्दासा,
(जिसपर बर्तन वगैरः रखते हैं)
શીખ (सं.) शिक्षा, नसीहत, सज़ा,
नोकदार लोहेका सरिया, बोरेमेंसे
अन्न निकालनेका पोला लोहेका
टुकड़ा, परखी, सिक्ख, धर्मविशेष
खालसा पंथ।
શીઘ્રામ (सं.) गाड़ी।
શીઘ્ર (वि.) तेज, तीव्र, जल्द,
(अ०) जल्दीसे, शीघ्रता पूर्वक।
શીઘ્રકવિતા (सं.) तुरंत बनाया काव्य।
શીઘ્રકવિ (सं.) आशुकवि, जल्दी
छन्दबनानेवाला।
શીઘ્રબોધ (सं.) गांजा, गांजेकीदम
શીડવું (क्रि.) पूरना, मूंदना, बंद
करना, डाटना।
શીત (वि.) ठंडा, सर्द, शीतळ,
(सं.) रांधेहुएचावलोंके पृथ्वीपर
गिरेहुए दाने, ठंड, सर्दी।
શીતકટિબંધ (सं.) पृथ्वीकी वह
रेखा जहांपर बहुत सर्दी पड़तीहो।
શીતકાલ (सं.) हेमन्तऋतु, जाड़ा,
सर्दीका मौसिम।
શીતળ (वि.) ठंडा, सर्द।
શીકળો (सं.) कांटे वगैरः लानेका
साधन।

શીદ (क्रि. वि) कहां ?
શીદને (अ०) क्यों, किसवास्ते।
શીફળ (सं.) नरियल, श्रीफळ।
શીર્ષ (सं.) सिर, माथा, मस्तक।
શીલ (सं.) स्वभाव, आदत, प्रकृति, चालचलन, आचरण, अच्छी आदत, खुशमिज़ाज़।
શીશી-સી (सं.) छोटीबोतल, तेल, अर्क वगैरःभरनेका काचका पात्र।
શીશીનેઢાંક (=) तुरंतही परिणाम।
શીશો-સો (सं.) बोतल, दवा इत्यादि भरनेका काचकापात्र विशेष।
શીળી (सं.) शीतला, रोग विशेष चेचक, विस्फोटक।
શીળું-ળો (सं.) छांह, साया, छांयां, ठंढक, (वि.) ठंडा, बासी शीतळतायुक्त, शिथिल, सुस्त, मन्द
શું (सर्व०) क्या, क्यों, किसलिये, (वि.) समानता सूचक प्रत्यय, (अ०) साथ, से। [अदरक।
શુંઠ (सं.) सौंठ, शुंठी, सूखी
શુંઢ (सं.) सूंड, हाथीकाकर।
શુંઢમુંઢ (अ०) चुपचाप, गुमसुम।
શુંઢવું (क्रि) जाना, चलना।
શુક (सं.) तोता, सुग्गा, पक्षी विशेष, व्यासजीका पुत्र शुकदेव।
શુકરાના (सं.) जय, कल्याण।
શુકલ (सं.) ब्राह्मणोंकी जाति विशेष, (वि.) सफेद, श्वेत।
શુક્ર (सं.) इसनामसे प्रसिद्ध एक ग्रह, दैत्याचार्य, प्रताप ।[जुम्मा।
શુક્રવાર (सं.) सप्ताहका छटा दिन
શુક્રવારથવો-વળવો (क्रि.) लाभ होना, भाग्योदयहोना, (शुक्रवार मुसलमान लोगोंका पवित्र दिन माना जाता है, कहते हैं इसीदिन आदमका जन्महुवाथा, ज्योतिष॰ शास्त्रमेंभी शुक्रको शुभमानाहै, अमेरिकादेशमेंभी शुक्रवार भाग्यशालीदिन माना जाताहै, स्काटलैंडमें भी यहदिन अत्यंत शुभमाना गया है, इन्हींकारणोंसे उक्तवाक्य की रचना हुई है।
શુક્રાચાર્ય (सं.) दैत्योंके गुरु, काणा आदमी, एकाक्ष (के लिये व्यंगोक्ति) [विशेष।
શુડો (सं.) तोता, सुग्गा, पक्षी
શુદ (सं.) शुक्लपक्ष, चांदनी रात।
શુચિ (वि.) पवित्र, शुद्ध, निर्मळ

शुद्ध (सं.) खबर, समाचार सुधि (वि.) साफ, सुथरा, पवित्र, स्वच्छ खरा, निर्दोष भान, सुधि, होश, चेत।

शुद्धांत (सं.) जनानखाना।

शुद्धि (सं.) पवित्रता, शोधन, सफाई शुचिता, सुधि, चेत, भान, होश।

शुद्धिआववी (क्रि.) होशआना, चेत होना, मूर्च्छाभंग होना।

शुद्धिपत्र (सं.) ग्रंथकी गलतियोंका सूचक पत्र, शोधन पत्र।

शुधबुध (सं.) होश हवास, खबर सुरत, चैतन्यता और ज्ञान।

शुनकार (सं.) सुनसान, जहां कुछभी नहो और कुछभी शब्द न हो ऐसी जगह, शून्य स्थान, सूना

शुनी (सं.) कुत्ती, कुतिया।

शुबरात (सं.) मुसलमानोंके आठवें महिनेकी अठारहवीं तारीखके दिनका उत्सव। [निर्मल।

शुभ्र (वि.) सफेद, श्वेत, साफ,

शुभ (वि.) मंगल, कल्याण, अच्छा भला, श्रेष्ठ, सुन्दर।

शुभेच्छु (वि.) कल्याणकर्ता, अच्छी इच्छा करनेवाला, हितवादी।

शुमार (सं.) संख्या, गिनती, गणना, अंदाज, अनुमान, अटकल विचार, कूत। [सहारे।

शुमारे (अ०) आसरे, भरोसे,

शुरु (वि.) प्रारंभ, आरंभ।

शुष्क (वि.) सूखा, रसहीन, नीरस थकाहुआ, निरर्थक, बेबुनियाद।

शूकर (सं.) सुअर, बाराह, वराह, उपकारमानना, आभार मानना, शुकर, अच्छा, भाग्य।

शूद्र (सं.) चतुर्थवर्ण, अन्तिमवर्ण पादज, निम्नजाति।

शून्य-न (सं.) खाली, रिक्त, असम्पूर्ण, असमस्त, बिन्दु, सिफर (वि.) रीता, शरीरके किसीभाग, को लकवा मारजानेपर निर्जीव अंगकी दशा।

शून्यवादी (सं.) बौद्ध विशेष, नास्तिक, अनीश्वर वादी, जैनी।

शून्यहृदय (वि.) शठ, मूर्ख. निर्दय घातकी, प्रभावशून्य।

शूर-रो (स.) योद्धा, लड़ाका, वीर, उत्साही, बलवान; बहादुर। (वि.) हिम्मतवाला, साहसिक गुस्सेवाला, (सं.) गुस्सा, आवेश, बहादुरी, हिम्मत। [बहादुरी।

शूरपणुं (सं.) वीरता, शूरता,

शूरवीर (वि.) बहादुर, हिम्मतवाला।

શૂરાવીરપણું (सं.) बहादुरी, हिम्मत।
શૂરાતન (सं.) पूर्ववत्।
શૂલ-ળી (सं.) बड़ाकांटा, लोहेका एक प्रकारका कांटा, अस्त्र विशेष, कील, वह रोग जिससे पेटमें सुई के चुभनेकासा दर्द होता है, दर्द।
શૂળી (सं.) देहांत दण्ड देने लिये लोहेके बड़े कीलेवाला तख्ता, फांसी
શૂળીએ ચઢાવવું (क्रि.) मृत्यु दंड देना, फांसी लटकाना।
શૃંખલા (सं.) जंजीर, सांकल, बेड़ी, सिकरी, लौह रज्जु।
શૃંગ (सं.) सींग, विषाण, शिखर चोटी।
શૃંગાર (सं.) सजावट, शोभा, पोशाक, जेवर, अलंकार, स्त्रीपुरुषका प्रेम, प्यार, प्रथमरस।
શૃંગારરસ (सं.) काव्य के नौ रसों मेंसे एक रस विशेष, प्रथमरस।
શૃંગારી (वि.) शृंगार प्रेमी, इश्क बाजीमें निमग्न, शृंगारशास्त्रमें कुशल।
શૃગાલ (सं.) गीदड़, जम्बुक, स्यार, लईया।
શે (अ०) किसलिये, क्यों?
શેંકડો (सं.) सौ, सौकी संख्या, शताब्दि, सदी। [आली।
શેંડી (सं) बैलके मुखपर बांधनेकी
શે (अ.) किसवास्ते, किस लिये, क्यों।
શેક (सं.) सिकाई, सेक, सिकताव, अग्निद्वारा अंगके किसी भागको सेकना।
શેકવું (क्रि.) सेकना, पकाना, आगपर सेकना, भूनना, आग देना, सताना।
શેક્યો પાપડ પણ ભંગાતો નથી (=) बिलकुल निर्बल, बेहद कमजोर।
શેકી નાખવું (क्रि.) सताना, दिल जलाना, दुःख देते रहना।
શેખ (सं.) मुसलमानोंका फिरका विशेष, अर्बी लोगोंका सरदार।
શેખઈ (सं.) शेखी, घमण्ड, गर्व, दंभ।
શેખચલ્લી-સલ્લી (सं.) ऊटपटांग, तर्क करनेवाला, मनके लड्डू बनानेवाला, पागल सा।
શેખસલ્લિના વિચાર (सं.) कभी न हो सकें ऐसे बड़े बड़े इरादे।
શેખદાર (सं.) क्लार्कविशेष, मुहर्रिर (कमासदारका)।
શેખર (सं.) फूलोंकी माला जो मुकुट पर धारण की जाती है, भूषणविशेष, सिरपर पहिननेका हार।

શેખી (सं.) ठठबाठ, ढोंग, पाखंड, घमण्ड, गर्व, दंभ, भड़क ।

શેખીખોર (वि.) घमण्डी, गर्वी, ढोंगी, आत्मश्लाघी, ढोंगी ।

શેજ (सं.) शय्या, सोनेका बिछौना, पलंग, चारपाई, खाट, पर्य्यङ्क ।

શેઠ (सं.) स्वामी, मालिक, पति, महाशय, धनिक, रुपये पैसेवाला, गृहस्थ, श्रीमन्त, साहूकार, धनाढ्य ।

શેઠાઈ (सं.) सेठजीका पद, सत्ता, सेठपना, बड़प्पन ।

શેઠિયો (सं.) पैसेवाला साहूकार। गृहस्थ, अगुआ, नेता, लीडर, बहुबैल जिसका सिर सफेदहो ।

શેઢો (सं.) खेतके पास छोड़ीहुई थोड़ीसी जगह, सीमा, मार्ग, रस्ता

શેણુ (वि.) सयाना, चतुर, समझदार

શેણે (अ०) किसकारण, किससे ?

શેતરંજ (सं.) शतरंज, खेल विशेष, बत्तीस गोटी, बादशाह वजीर, ऊंट घोड़ा, हाथी पैदल नामसे पुकारीजाती हैं और उनसे खेला जानेवाला खेल विशेष ।

શેતરંજી (सं) दरी, कई रंगोंमें रंगाहुआ बिछानेका मोटा वस्त्र विशेष, सतरंजी, शतरंजी ।

શેતરંજીરંગીનાખવી (क्रि.) खूब निकालदेना, (मोंचकर बाकुरेदकर)

શેતાન (सं.) अघोर दुष्ट कर्म करनेवाला ईश्वरकादूत (मुसलमानोंके धर्ममें) राक्षस, भयंकर पुरुष, भूत, जिन्द, पिशाच, दुष्ट पुरुष, (वि.) बदमाश, अधर्मी, लुच्चा ।

શેતુર (सं.) वृक्ष विशेष और उसके फल, शहतूत, (इसवृक्षके पत्तोंको खाकर रेशमके कीड़े रेशम बनाते हैं)

શેન (सं.) शयन, निद्रा, सोना ।

શેનવાટવી (क्रि.) सोजाना, नींद लेना ।

શેર (सं.) सिंह, व्याघ्र, बघेरा, बाघ, तौल विशेष, मणका चालीसवां भाग, (इसका कोई निश्चित परिमाण नहीं कहीं ४० तोळेका, कहीं २८ तोलेका कहीं ८० तोलेका, और कहीं कहीं १०० तोले तककाभी शेर होता है)

શેરથવું (क्रि.) सिरजोरी करना ।

શેરલોહીચઢવું (क्रि.) आनन्दमें मग्नहोना, खुशीमें होना ।

શેરસુંઃખાડીહોયતો (म) यदी बल होता, यदि हिम्मत होती ।

શેરડી (सं.) गन्ना, ईख, सांठा, इक्षुदण्ड, मीठागन्ना, पौंढ़ा ।

શેરડો (सं.) मार्ग, रास्ता, पथ, पगडण्डी, पैरोंसे बनाहुवा मार्ग ।

શેરીયું (सं.) एकशेर वजनका ।

શેરી (सं.) सकड़ीगली, मोहल्ला, ग्वाड़ी । [सुगंधित गोंद ।

શેરીલોબાન (सं.) एक प्रकारका

શેરો (सं.) अर्जी, प्रार्थनापत्र, हुण्डीकी सकार ।

શેલી (सं.) चकमक पत्थर द्वारा, आग पैदा करनेकी डोरी—सुतली ।

શેલું (सं.) वस्त्र विशेष ।

શેલો (सं.) गायको दुहते समय उसके पिछले पैरोंको बांधी जानेवाली रस्सी ।

શેલોત (सं.) जमींदारकी तरफसे गांवोंकी वसूली लेनेवाला व्यक्ति ।

શેવટ (सं.) अन्त, आखिर, फल, परिणाम, नतीजा ।

શેવડી (सं.) स्रीसाधु जैनधर्ममें, ढूंढियां पंथकी, स्त्री ।

શેવડો (सं.) जैनसाधु, मुहंबन्धे साधु एक प्रकारका गोसाईं, सेवड़ा ।

શેવાલ (सं.) कंजी, पानीमेंकी काई, शैवाल, जलोत्पन्नद्रव्य विशेष जम्बाळ, सिवार, अलमल ।

શેષ (वि.) अवशिष्ट, बाकी, बचा हुवा सर्पोंका राजा अनन्त, नाग

શેષકાળ (सं.) मृत्युसमय, अन्त समय । [(विष्णु)

શેષશાયી (सं.) सर्पपर सोनेवाले

શેહ (सं.) रोक, अटकाव, बन्धेज ।

શેહરેવર (सं.) पारसियोंका छठा महीना, (१ फवरदीन, २ अरदी बे हश्त, ३ खुरदाद, ४ तीर, ५ अमरदाद, ६ शहेरवर, ७ मेहर, ८ आवां, ९ आदर, १० दे, ११ बेहमन और १२ सफदारमंद ।

શેહુ (सं.) गुप्त सलाह करनेवाला ।

શેહેનેર (सं.) जबरदस्त, बळवान ।

શેહેનેરી (सं.) जबरदस्ती, शक्ति ताकत, बळ, पुरुषार्थ ।

શેહેનશાહ (सं.) सम्राट, चक्रवर्ती राजा, राजाधिराज, राजराजेश्वर ।

શેહેર (सं.) नगर, बड़ागांव, पत्तन पुर, बड़ीबस्ती । [सम्बन्धी ।

શેહેરી (वि.) नागरिक, शहर

શૈ (सं.) अन्नकापरिमाण, माप विशेष, (काठियावाड़में) सिकड़ा ।

શૈકો (सं.) सदी, शताब्दि, सैंका

શૈલ (सं.) पर्वत, पहाड़, गिरी, शिलाजीत, शैलज ।

શૈલધર (सं.) श्रीकृष्ण, गिरिधर ।

शेवी (सं.) संकेत, नियम, रीति, परिपाटी, रिवाज, ढंग, तरह, व्याकरण सूत्रका, संक्षिप्त वर्णन।

शैव-वी (सं.) शिवभक्त, शिव-सम्बन्धी।

शेंडवु (क्रि.) जाना, मरजाना।

शो (वि.) सौ, शतक १०० एक सौ, (स.) सूई, सुई, सूची, शूची, (अ०) कैसा, किसप्रकारका

शोक (सं.) दुःख, कष्ट, मानसिक वेदना, सोच, चिन्ता, खेद, पश्चा-त्ताप, पछतावा, क्लेश, संताप, मनोव्यथा, विलाप।

शोककारक (वि.) दुःखदायी, कष्ट-प्रद, खिन्न, शोकातुर।

शोकियु (सं.) शोकसमय पहिनने के वस्त्र, शोकसूचक वस्त्र (वि.) शोचनीय, शोकातुर. शोकविषयक।

शोकय (सं.) अपने पतिकी दूसरी पत्नी, सौत, सौतन, सौक।

शोख (सं.) इच्छा, चाह, शौक, आनन्द, ख्वाहिश।

शोखी-खीनु (वि.) शौकीन, आनन्दी, इच्छुक, मौजी।

शोच (सं.) खेद, दुःख, फिक्र, चिंता, पछतावा, विचार।

शोचनीय (वि.) विचारणीय, चिंत-नीय, काबिल अफसोस। [लोहू।

शोणित (सं.) रक्त, खून, रुधिर,

शोध (सं.) खोज, अनुसंधान, शुद्धि, ऋण परिष्कार, सफाई, अन्वेषण, तजवीज, तलाश, निरीक्षण, ढूंढभाळ।

शोधक (वि.) खोजी, अन्वेषक, पता लगानेवाला, शुद्ध करनेवाला।

शोधको (सं.) दूत, चर, संदेश-वाहक, अनुसन्धान कर्ता।

शोधन (सं.) सफाई, गलतियोंका शुद्ध करना, फ़र्जकी अदायगी। परीक्षा, खोज, ढूंढ, तलाश।

शोधवुं (क्रि.) शुद्ध करना, ढूंढना, तळाश करना, खोजना, परीक्षा करना, अनुसन्धान करना। मैल कचरा साफ करना, जांचना।

शोधाशोध (सं.) ढूंढभाळ, जांच पड़ताळ।

शोधित (वि.) शुद्ध, पवित्र, ढूंढा हुआ, सुधारा हुआ, साफ।

शोफ (सं.) एक प्रकारकी औषधि।

शोभन (वि.) सुन्दर, अच्छा, मनोहर, शुभ, मंगळ, नयना-भिराम, भद्र।

શોભવું (क्रि.) शोभा पाना, अच्छा मालूम होना, मनोहर लगना।

શોભતું (वि.) लायक, योग्य, उचित, अनुकूल, ठीक।

શોભા (सं.) सुन्दरता, प्रभा, चमक, कान्ति, दीप्ति, छवि, मनोहरता। मान, लाज, प्रतिष्ठा, खूबी, ठाठ, गुण, लावण्यता, खूबसूरती। [चारु, शोभित, मनोहर।

શોભાયમાન (वि.) सुन्दर, भव्य,

શોર (सं.) हल्ला, गुल गपाड़ा। कोलाहल, होहल्ला।

શોરબકોર (सं.) गड़बड़, धांधल, कचकच, हायतोबा, कोलाहल।

શોષ (सं.) तृषा, प्यास, पिपासा, मुरझाना, सूखापन, रुक्षता।

શોષણ (सं.) सोखना, चूसना, सुखाव।

શોષવું (क्रि.) चूसना, भीतर खींचना, शोषण करना, रस खींचना। [जाना, सूखना, शुष्क होना।

શોષાવું (क्रि.) सूखना, सार चला

શૌચ (सं.) शुचिता, पवित्रता, स्वच्छता, शुद्धता, सफाई, पाखाना, विष्ठा।

શૌચજવું (क्रि.) पाखाने जाना, मलोत्सर्ग करना, मलपरित्याग करना।

શૌરિ (सं.) ब्रह्म, ईश्वर।

શૌર્ય (सं.) बहादुरी, पराक्रम, शूरता, छाती, प्रताप, साहस, धैर्य्य, सामर्थ्य, शक्ति, वीरता।

શૌર્યવાન (वि.) साहसी, हिम्मतवाला, बहादुर, धृष्ट, वीर, शूरतायुक्त।

શ્મશાન (सं.) मुर्दघाट, मरघट, मसान, मुर्दा जलानेकी जगह, कबरस्तान, मुर्दा दफनानेकी जगह।

શ્મશાનવૈરાગ્ય (सं.) कुछ देरके लिये संसारसे विरक्तता, क्षणिक वैराग्य।

શ્યામ (सं.) कृष्ण, पति, वर (वि.) काला, कृष्णवर्ण, गहरा आस्मानी रंगवाला।

શ્યામકર્ણ (सं.) सारा सफेद और पूँछ तथा काले कानवाला, घोड़ा, सुन्दर घोड़ा।

શ્યામકલ્યાણ (सं.) कल्याण नामक रागका एक भेद विशेष।

શ્યામવર્ણું (वि.) काले रंगका, काला, कृष्ण वर्ण।

શ્યામા (सं.) सोलह वर्षके कम उमरकी स्त्री, षोडश वयस्का स्त्री।

શ્યાલક (सं) साला, पत्नीका भाई।

શ્યાવટ (सं.) साहूकारी।

શ્યેની (सं.) बादाबाज़, पक्षीविशेष।

શ્રદ્ધા (सं.) भरोसा, विश्वास, यकीन, आदरपूर्वक प्रेम, सम्मान, आस्तिक्य बुद्धि, आस्था, भक्ति, ऐतबार। [श्रद्धावान, भावनायुक्त।

શ્રદ્ધાળુ (वि.) श्रद्धायुक्त, विश्वस्त,

શ્રમ (सं.) परिश्रम, मेहनत, उद्योग, यत्न, थकान, दुःख, तप कष्ट, वेदना, तकलीफ़, प्रयास।

શ્રમિત (वि.) थकाहुआ, व्यथित, श्रान्त, थका मांदा।

શ્રવણ (स.) कान, कर्ण, कर्णेन्द्रिय, सुनना, बाईसवां नक्षत्र।

શ્રવવું (क्रि.) चूना, टपकना, झरना, बूंद बूंद-धीरे धीरे निकलना।

શ્રવ્ય (वि.) सुननेयोग्य, कर्णप्रिय।

શ્રાદ્ધ (सं.) श्रद्धापूर्वक किया हुआ कर्म, श्रद्धापूर्वक पितरोंकी सेवा, सुश्रूषा तथा भोजनादि द्वारा उनकी तृप्ति।

શ્રાદ્ધ સરાવડે બાપ દેખાડ=दोनोंमेंसे एक बात कर। कुछभी कर।

શ્રાપ (सं) शाप, बददुआ, गाली, अशुभ चिंतन, अनिष्ट चिंतन।

શ્રાપવું (क्रि.) शाप देना, बद दुआ देना, कोसना, बुरा चीतना।

શ્રાવક (सं.) बौद्धसाधु, जैनी सरावगी, जैन धर्मानुयायी, कौआ, काक, कागा, पक्षीविशेष।

શ્રાવણ (सं.) हिन्दसम्वत्का दसवा महीना (जो कार्तिकसे वर्ष मानते है) हिन्दू सम्वत्का ५ वा महीना। जो चैत्रसे वर्ष गणना करते हैं।

શ્રાવણ ભાદરવો વહેવો (क्रि.) खूब आंसू गिरते हुए रोना।

શ્રાવણી (स.) श्रावण मासकी एकादशी, पौर्णिमा अथवा जिस-दिन श्रवण नक्षत्र हो उसदिन किया जानेवाला एक वैदिक कृत्य।

શ્રાવિકા (स.) जैनधर्म पालने वाली स्त्री, सरावगिन।

શ્રી (स.) सम्पत्ति, धन, दौलत, शोभा, सुन्दरता, लक्ष्मी, शृंगार, प्रतिभा, धर्म, अर्थकाम और मोक्ष समुच्चय, कमळ, सरस्वती, लवंग, वाणी, यश, प्रतिष्ठावाचक शब्द, महिमा, कीर्ति, वित्त।

શ્રીકાર (वि.) उत्तम, श्रेष्ठ ।
શ્રીખંડ (सं.) चन्दन, गन्ध, शिखंड ।
શ્રીગણેશાયનમઃ કરવા (कि.) आरंभ करना, शुरुआत करना, चालु करना, आगे बढना ।
શ્રીધર, શ્રીપતિ (सं.) विष्णु ।
શ્રીપાત (सं.) संन्यासी, त्यागी, वानप्रस्थी, यति, जितेन्द्रिय ।
શ્રીદ્રુમ (सं.) वृक्षविशेष, पारिजातक ।
શ્રીફળ (सं.) नारियळ, नारिकेळ ।
શ્રીફળ આપવું (कि.) छुट्टी देना, बिदा करना, रवाना करना ।
શ્રીમંત (सं) देखो સીમંત (वि) पैसेवाला, धनी, मालदार, मान्य ।
શ્રીમંતાઈ (सं.) बडाई, कीर्ति, वैभव्पन । [भाग्यशाळी ।
શ્રીમાન (वि.) यशस्वी, धनसम्पन्न
શ્રીસુખ (सं.) कीर्तिवान-यशस्वी सुख ।
શ્રીરંગ (सं.) विष्णु ।
શ્રીરાગ (सं.) रागविशेष ।
શ્રીરામ શ્રીરામ (सं.) मुर्देको लेजाते समय लोग इसे मिलकर बोलते हैं । रामनाम सत्य है ।
શ્રીવત્સ (सं.) विष्णु, विष्णुकी छातीपरका चिन्ह विशेष ।
શ્રીહસ્તે (अ०) खुदके हाथों, स्वयम् ।
શ્રુત (वि.) सुनाहुआ, कर्णगत, कर्णगोचर, अधीत, सीखाहुआ ।
શ્રુતિ (सं.) कान, कर्ण, कर्णेन्द्रिय, वेद । [कठोर ।
શ્રુતિકટુ (वि.) कर्णकटु, सुननेमें
શ્રેણી (सं.) पंक्ति, पांति, कतार, लकीर, हार, समूह, आइन ।
શ્રેઢી (सं.) आगे बढना ।
શ્રેય (सं.) मंगळ, कल्याण, शुभ, सौभाग्य, मुक्ति ।
શ્રેયસ્કર (वि.) शुभ, मंगलकर ।
શ્રેષ્ઠ (वि.) उत्तम, प्रधान, बड़ा, माननीय, सर्वोत्तम, अत्युत्तम ।
શ્રેષ્ઠી (सं.) बड़ा, प्रसिद्ध व्यापारी ।
શ્રોણિ-ણી (सं.) नितंब, चूतड़, कमर, कूल्हा ।
શ્રોતા (सं.) सुननेवाला, समझनेवाला । ध्यान देनेवाला ।
શ્રોત્ર (सं.) कान, कर्ण, कर्णेन्द्रिय ।
શ્રોત્રી (सं.) वेदोक्त धर्म पालनेवाला ब्राह्मण, वेदज्ञ, वेदपाठी ब्राह्मण ।
શ્રૌત (सं.) वेदोक्तकर्म, वेदविहित कार्य, (वि.) वैदार्थ सम्बन्धी ।
શ્લિષ્ટ (वि.) द्विअर्थी, मिलाहुआ, जुड़ हुआ ।

શ્લેષ (सं.) ऐसाशब्द जिसके दो या इससे अधिक अर्थ हो ऐसी रचना, अलंकार, विशेष ।

શ્લોક (सं.) पद्य, कावेनिर्मित चार पदोंवाला वाक्य विशेष, छन्द, अनुष्टुपछन्द, यश। [बंधाहुना ।

શ્લોકબદ્ધ (वि.) छन्दोबद्ध, पद्यमें

શ્વપચ (सं.)चांडाल, डोम, भंगी, अछेहतर नीच पुरुष ।

શ્વશુર (सं.) पत्नी. पिता, ससुर, सासुरा, पतिका पिता ।

શ્વશુરપક્ષ (सं.) सासरा, ससुराल ।

શ્વશ્રૂ (सं.) सासू, पति या पत्नीकी माता, सास ।

શ્વાન (सं.) कुत्ता, कुक्कर कूकरा।

શ્વાનનિદ્રા (सं.) अल्प निद्रा, कुत्तेकीसी चमक नींद ।

શ્વાસ (सं.) सांस, प्राण, वायु, दम, सांसकारोग, दमा।

શ્વાસચાલવો (कि॰) मृत्युके निकट पहुंचना।

શ્વાસકાઢીનાંખવો (कि.) थकाना अधमरा करना, मरणतुल्य करना

શ્વાસઘૂંટનાંખવો (कि.) दुःखदेना प्राणखाना, बिलटुखाना ।

શ્વાસોચ્છ્વાસ (सं.) सांसलेना, और छोड़ना, दम।

શ્વેત (वि.) सफेद, शुक्लवर्ण, धवल गौरा, पकाहुआ, पक्व ।

શ્વેતાંબર (सं.) जैनसाधुओंकी एक जाति-(ये लोगश्वेत=सफेद अम्बर=वस्त्र पहिनते हैं)

ષ

ષ= व्यंजनका इकतीसवां वर्ण, यह वर्ण मूर्धन्य है, गुजराती वर्णमालाका बयालीसवां अक्षर ।

ષટ્ (वि.) छः, ६, संख्या विशेष

ષટ્કર્મ (सं) तंत्रशास्त्र प्रसिद्ध छः कार्य, शान्ति, वशीकरण, स्तंभन, विद्वेष उच्चाटण और मारण, ब्राह्मणोंके छः कर्म, पढना, पढाना, यजन, याजन, दान, और प्रतिग्रह, हठयोगके छः कर्म धौति, बस्ति, नेति, नोलि, त्राटक, और आसन ।

ષટ્કોણ (सं.) छकोन, एकजातिका तंत्र, वज्र, छःकोनेकी आकृति ।

ષટ્ત્રિંશત (वि.) छत्तीस ३६ ।

ષટ્પદ (वि.) छःपैरवाला, (सं.) जुंमकड़ी, टीडी, मच्छर, भ्रमर, छप्पय, (पिंगलशास्त्र वर्णित छन्द विशेष)

ષટ્પદી (सं.) छन्दविशेष, भ्रमरी ।

षट्शास्त्र (सं.) छःशास्त्र, आर्योंके छः शास्त्र यथा, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त।

षट् (वि.) छ, छः, संख्या विशेष।

षड्गुण (सं.) छ गुण-यथाधर्म, ऐश्वर्य, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य। राजनीतिके छ गुण, यथा-संधि, विग्रह, यान, आसनद्विधाभाव और समाश्रय।

षड्ऋतु (सं.) छ ऋतुएँ, छ तरह के मौसिम, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरत, हिम और शिशिर।

षडंग (सं.) छ, अंग, दो हाथ दो पैर मस्तक और कटि। वेदोंके छ अंग, शिक्षा, कल्प, व्याकरण निरुक्त और छन्द शास्त्र। (वि.) छ भागवाला।

षड्दर्शन (सं.) देखो षट्शास्त्र

षडानन (सं.) कार्तिक स्वामी, कार्तिकेय, (वि.) वक्तवदन, छ मुखवाला।

षड्रस (सं.) छः प्रकारके रस, मीठा, खारा, खट्टा, कडवा, तीखा और तूरा।

षड्रिपु (सं.) छः शत्रु, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर।

षड्भुजा (सं.) तरबूज, फल विशेष, मतीरा। [ऐश्वर्य।

षडैश्वर्य (सं.) छः प्रकारका

षड्विकृति (सं.) छः तरहकी विकृति,(जैनग्रंथोंमें) दही, दूध, घी, तेल, गुड़ और शक्कर ये छः बिकृतियां जैनी मानते हैं। छः विकार।

षंड-ढ (पुं.) हिजडा, नामर्द, पुंसत्वहीन, नपुंसक, बैल।

षंडतिल (वि.) पूर्ववत्

षष्ठमास (सं.) छः महिना।

षष्ठांश (सं.) छठा भाग, ६, छवा हिस्सा।

षष्ठि (वि.) साठ, ६०, संख्याविशेष।

षोडश (वि.) सोलह, १६ संख्या विशेष,न्यायशास्त्रवर्णित १६ पदार्थ, यथा, प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धांत, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितंडा, हेत्वाभास, छल, जाति और निग्रहस्थान।

षोडशोपचार (सं) पूजाके सोलह, उपचार, आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, दक्षिणा, प्रदक्षिणा, और मंत्रपुष्पांजलि।

षोडशसंस्कार (सं.) सोळह संस्कार गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन चूडाकर्म, कर्ण वेध, उपनयन, वेदारंभ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ संन्यास, और अंत्येष्टि।

स

स व्यञ्जनवर्ण, इसका उच्चारण स्थान दन्त है। गुजराती वर्णमाळाका ४३ वां अक्षर।

संक्षिप्त (वि.) न्यून, अल्प, थोड़ा, घटायाहुआ, कम किया हुआ। [सारभीग।

संक्षेप (सं.) न्यूनता, अल्पता,

संज्ञा (सं.) नाम, आख्या, अभिधान धेय, बुद्धिचेतनता

संधारवुं (क्रि.) संहरण करना, नाश करना, संहार करना, नष्ट करना।

संयम (सं.) बंधन, इन्द्रियादि निग्रह, रोक, अवरोध, नियम।

संयमन (सं.) संयम, नेम, नियम व्रत, इंद्रिय निग्रह।

संयुक्त (वि.) सम्बन्धयुक्त, मिला हुआ, सटाहुआ, जुड़ा हुआ, संयोगाश्रय।

संयुत (वि.) संयोगप्राप्त, मिलाहुआ।

संयोग (सं.) मेळ, मिलाप, सम्बन्ध विशेष, अप्राप्तकी प्राप्ति, मेळन, जोड़ना, सन्धि, स्त्रीपुरुषों का विलास संयोग, ऐक्य, मेळ।

संयोगीकरण (सं.) मिलाना, मिश्रण करना, जोड़ना।

संयोगीजळ (सं.) वह खाड़ी जो दो समुद्रोंको मिलाती हो।

संयोगीभूमी (सं.) वह सकडी जमीन जो दोबड़े प्रदेशोंको मिलाती हो। [संयुक्त।

संयोजित (वि.) जोड़ा हुआ,

संरक्षण (सं.) पाळन, रक्षा, बचाव, आश्रय, आधार, ओट, छांह। [हुआ।

संरक्षित (वि.) रक्षित, बचाया

संलग्न (वि) संयुक्त, योगप्राप्त, घटित, मिळाहुआ, लगाहुआ।

संवत (सं.) साळ, वर्ष, सन्, विक्रमीय वर्ष।

संवत्सर (सं.) वर्ष, संवत् बरस ये ६० हैं, प्रभव, विभव, शुक्ल, प्रमोद, प्रजापति अंगिर, श्रीमुख, भाव, धातृ, ईश्वर, बहु धान्य, प्रमाथी, विक्रम, वृष, चित्रभानु, सुभानु, तारण, पार्थिव, अव्यय,

सर्वजित, सर्वधारि, विरोधी, विकृति, खर, नन्दन, विजय, जय मन्मथ, दुर्मुख, हेमलम्ब, विलम्ब विकारी, शार्वरी, प्लव, शुभकृत, शोभन, क्रोधी, विश्वावसु, पराभव प्लवंग, किलक, सौम्य, साधारण, विरोधकृत, परिधावी, प्रमादी, आनन्द, राक्षस, नल, पिंगल, कालयुक्त, सिद्धार्थ, रौद्र, दुर्मति, दुंदुभि, रुधिरोद्गारी, रक्ताक्ष, क्रोधन, और क्षय ।

સંવરવું (क्रि.) ढकना, आच्छादित करना, समेटना, आवरण करना । [वृद्धिंगत ।

સંવર્ધિત (वि.) बढाहुआ, वर्द्धित

સંવૃદ્ધિ (सं.) बाहुल्यता, पुष्कलता, आबादी । [चीत, संभाषण ।

સંવાદ (सं.) सन्देश, चर्चा, बात-

સંશય (सं.) सन्देह, चिन्ता, भय, शक, अनिर्णय, वहम, अन्देशा ।

સંશયાત્મક (वि.) वहमी, शक्की ।

સંશુદ્ધિ (वि.) स्वच्छता, पवित्रता।

સંશ્રય (सं.) आश्रय, सहारा, आधार, टेका । [आधारयुक्त ।

સંશ્રિત-શ્રુત (वि.) पुष्टिवाला,

સંશોધન (सं.) परिमार्जन, प्रक्षालन, शुद्धिकरण, सफाई ।

સંસર્ગ (सं.) स्पर्श, संयोग, जुड़ना, निकट सम्बन्ध, संगत, मैत्री ।

સંસર્ગી (वि.) व्यवहार रखनेवाला, मित्र, साथी, सम्बन्धी ।

સંસાર (सं.) जगत्, जग, गमनागमनस्थान, मिथ्यासे उत्पन्न वासना, वह अदृष्ट जो देहको आरंभ करनेमें हेतु है, विश्व, दुनिया, पृथ्वी, आलम, मनुष्यसृष्टि, दुनियादारी, स्त्रीपुत्रादि, जन्ममरणादि, गृहस्थ, आवागमन ।

સંસાર માંડવો (क्रि.) विवाह करना, माया जालमें फंसना ।

સંસાર તરવો (क्रि.) सांसारिक कार्योंको अच्छी तरह चलाना और ईश्वरको जानना ।

સંસારસાગરમાં ડુબવું (क्रि.) पापी होना, भवसागरमें डूबना, सांसारिक, भ्रमजालमें फंसे रहना ।

સંસાર તરવો (क्रि.) सुखदुःखका अनुभव होना ।

સાંસારિક (वि.) लौकिक, ऐहिक, सांसारिक, संसार सम्बन्धी ।

સંસારી (वि.) घरबारी, गृहस्थी, संसार सम्बन्धी, संसारका ।

સંસ્કાર (सं.) वह ' क्रियाकर्म जिसके करनेसे मनुष्य शुद्ध होकर उन्नत पाता है, धर्मविधि, अनुभव जन्य आत्माकागुण विशेष, शास्त्रा भ्याससे उत्पन्न ज्ञान, गर्भाधानादि क्रिया समूह, प्रतियत्न विनियोग उत्सर्ग अभिषेक, संकट, दुःख, कष्ट, शुद्धता ।

સંસ્કારી (वि.) पवित्र, पावन, श्रेष्ठ ।

સંસ્કૃત (सं.) आदिभाषा, व्याकरणादि संस्कार प्राप्त आर्यभाषा, गिर्वाण भाषा, पाणिन्यादिकृत व्याकरण के सूत्रद्वारा निष्पन्न शुद्धशब्द (वि.) संस्कारप्राप्त, पकाहुवा, शोधित, साफ कियाहुवा।

સંસ્થા (सं.) मंडळ, समाज, व्यक्ति, अंत, आखिर ।

સંસ્થાન (सं.) पासका प्रदेश, राज्य, मुल्क, राजधानी ।

સંસ્થાપક (वि.) स्थापित करनेवाला कायम करनेवाला ।

સંસ્થાપન (सं.) स्थापन, कायम करना, जमाना, बैठाना ।

સંસ્થાપિત (वि.) बैठायाहुवा, कायम कियाहुवा स्थापित ।

સંહાર (सं.) नाश, प्रलय, विनाश अन्त, क्षय, उच्छेद, अभाव, संघार, वधा, कतल ।

સંહારવું (क्रि.) नाशकरना, कतल करना, बर्बाद करना, मिटाना ।

સંહિતા (सं.) सामीप्य, निकटता, संसर्ग, कर्मकाण्ड प्रतिपादक वेद का एक भाग विशेष, सूत्रवा श्लोक का क्रमपूर्वक एकी करण, वेदकी ऋचाओंके शब्दोंको सन्धि के नियमानुसार मिलानेका नाम, वेदकीशाखा, वैदिक प्रकरण, किसी विषयका संग्रह ।

સંહૃત (वि.) खेंचा हुआ, ताना हुआ, आक्रान्त, एकत्रित ।

સ (अ.) साथ, सह, (वि.) अच्छा, उत्तम, ठीक, (सं.) स्व, खुदका, अपना ।

સઈ (सं.) दरजी, दर्जी, कपड़ा सीनेवाला, कबूल, मंजुर, स्वीकार, (वि.) तरहका, ढंगका, तर्जका, अनुरूप । [मित्र ।

સઈયર (सं.) सखी, (स्त्री)

સઉ (वि.) सभी, सब, सारा, समस्त, सर्व, सम्पूर्ण, तमाम ।

સકડવું (क्रि.) खींचके बांधना, जकड़ना, कसना ।

સકન (सं.) कालविशेष, (गाडीमें) शकुन, बोली, शब्द, वाणी।
સકરકન્દરીયાં (सं.) कन्दविशेष, मीठा जमीकन्दविशेष, शकरकंदी।
સકરણ (वि.) अवयवयुक्त।
સકરુણ (वि.) दयालु, करुणायुक्त।
સકરાઈ (सं.) हुंडी स्वीकार की उसके दामोंका ठहराव, सिकराई।
સકરમી (वि.) भाग्यवान, भाग्यशाली, सुकर्मा। [हो, क्रियायुक्त।
સકર્મક (वि.) जिस क्रियाके कर्म
સકલ (वि.) सारा, समस्त, समूचा, पूरा, सब, सम्पूर्ण।
સકલાન (सं.) एक प्रकारका ऊनी पतला कपड़ा।
સકળગુણસમ્પન્ન (वि.) सर्वगुणागार गुणराशि, गुणनिधि।
સકામ (वि.) इच्छायुक्त, कामना सहित, फलदान। [रस्म।
સકાર (सं.) ढंग, रीति, तर्ज,
સકાર પડવા (क्रि.) मान रहना, टेक रहना, इज्ज़त रहना।
સકાર બળવા (क्रि.) विवेक होना, ज्ञान होना, चतुराई आना।
સકારી (सं.) तारको सीधा रखने के लिये तानेके अन्दर डाली हुई लकड़ीकी चीपट।
સકારણ (वि.) कारणयुक्त, कामना सहित।
સકાળ (सं.) बहुतही सवेरे, तड़के, जल्दी, अत्यन्त भिनुसारे, सुकाल, अच्छा समय।
સકૃત (अ.) एकवार।
સકોમળ (वि.) बहुतही नाजुक, सुकुमार, अत्यंत कोमळ।
સકોરણું (सं.) उत्तेजना, उस्काना।
સકોરું (सं.) मिट्टीका पात्र विशेष।
સકોપ (सं.) गुस्सेवाला, क्रोधी।
સક્કડ (वि.) नया, और उम्दा, सरस, मजेदार, अच्छे सिक्केका, लोहेकी एक जाति।
સક્કર (सं.) खांड, चीनी, शर्करा।
સક્કરખોર (सं.) शक्कर खानेवाला।
સક્કરટેટી (सं.) खरबूज़ा, फळ विशेष खरबूज़।
સક્કરપારો (सं.) आटेकी मीठी चौखूंटी जो घी या तेळमें पकतीहै।
સક્કસ (वि.) दृढ, कठिन, कठोर मजबूत। [चेहरा, शक्ल।
સક્કો (सं.) सिक्का, मुहर, छाप,
સખ (सं.) सुख, आनंद।
સખણું (वि.) सयाना, समझदार।
સખત (वि,) कठिन, कठोर, दृढ, मजबूत, मुश्किल, मराहुवा, निर्दय जालिम, करा।

સખતી (सं.) कठिनाई, कठोरता, जुल्म, दृढता।
સખા (सं.) स्नेही, साथी, दोस्त, मित्र, बन्धु, संगी।
સખાવત (सं.) उदारता।
સખી (सं.) सहेली, संगिनी, वयस्या, आली, मित्र, (स्त्री) (वि.) उदार दानशील।
સખીદિલ (सं.) उदार पुरुष, भलाआदमी।
સખીભાવ (सं.) स्त्री रूपसे कृष्ण उपासना; औरतपना।
સખુન(सं.) वाणी, भाषण, शकुन विजय, अर्ज, स्वीकृति। [दोस्ती।
સખ્ય (सं.) भाईबंदी, मित्रता,
સખો (सं.) भाईबन्द, मित्र, दोस्त, स्नेही।
સગટો (सं.) स्त्रियोंके बगलमें खोसनेका साडी या लुघडेका पल्ला।
સગ (सं.) दीपककी गर्मी, अग्नि।
સગડ (सं.) पता, खबर, चिन्ह, पैर, खोज, गंध।
સગડી (सं.) सिघडी, बरोसी, आग रखनेका पात्र विशेष।
સગડીસળગાવવી (कि.) आग सुलगाना।
સગઉં (सं.) गेहूंका आटा चूर्ण।
સગણ (सं.) छन्दशास्त्र वर्णित गण विशेष, दो लघु और एक गुरु अक्षर, ।।ऽ, पीछा, पीठ। [नाता।
સગપણ (सं.) सगाई, सम्बन्ध,
સગન (सं.) हलमें लगी हुई कील विशेष।
સગરામ (सं.) दो बैल या दो घोडों की छायादार गाडी विशेष।
સગભગઅગિયારસ (सं.) देवोत्थापिनी एकादशी, भादवा सुदी ११ डौल ग्यारस, रथयात्रा एकादशी, जलझूलनी एकादशी।
સગવડ (सं.) अनुकूलता, अवकाश, समय, फुरसत, जगह, स्थान।
સગર (वि.) जहरयुक्त, जहरीला, (सं.) इसनामका सूर्यवंशी राजा।
સગરથ (सं.) मौका, अवसर।
સગર્ભ (वि.) गर्भयुक्त, गाभिन। पेटसे, (सं.) सहोदर भाईबहिन विगेरः एकमाजाये।
સગા (वि.) सम्बन्धी, नातेदार।
સગાઈ (सं.) सम्बन्ध, प्रतिसम्बन्ध, विवाह, विवाहका पूर्व सम्बन्ध।
સગીર (सं.) अल्प वयस्क, बालक, कमउम्रका आदमी, नादान।

સગું (वि.) सहोदर, एक उदरसे पैदाहुए कुटुंबी, नातेरिश्तेदार। (सं.) एक खूनके सम्बन्धमेंसे कोईभी। [नातेरिश्तेदार।

સગુંસાગવું (क्रि.) मित्र संबंधी

સગુણ (वि.) गुणसहित, गुणविशिष्ट

સગુણભક્તિ (सं.) आकार वगैरे गुणवाले ईश्वरकी भक्ति।

સગુણોપાસના (सं.) ईश्वरको साकार मानकर उसकी उपासना।

સગોત્ર (वि.) एकही गोत्रका, सम्बन्धी, कुटुंबी, एकही वंशमें उत्पन्न।

સઘન (वि.) घना, सान्द्र, निविड़ मिलाहुआ, खूबसटाहुआ।

સઘળું (वि.) सारा, समस्त, संपूर्ण

સંકટ (सं.) कष्ट, विघ्न, दुःख, खींच, विपत्ति. आपद, भीड़।

સંકડામણ (वि.) जगहकी कोताई।

સંકડાવવું (क्रि.) भिंचना, दबना जगहकी तंगीमें होना।

સંકર (सं.) वर्णोंका नियम विरुद्ध मिलान, मिश्रण, इसनामसे प्रसिद्ध एक अर्थालंकार।

સંકર્ષણ (सं.) खींच, तान, बलराम शेषनाग।

સંકરી (सं.) नई बिगड़ीहुई कन्या दूषिता लड़की।

સંકલન-ના (सं.) एकीकरण, संग्रहण, इकट्ठा करना, जोड़ना, जोड़।

સંકલ્પ (सं.) इच्छा, इरादा, ख्याल, मानसिक कर्म, चाह, अभिलाष, मनसूबा, इरादा, मनका उद्देश।

સંકલ્પવિકલ્પ (सं.) मनकी अस्थिर दशा, चितका डांवा डोलपण

સંકાશ (वि.) सरीखा, समान, तुल्य, तद्रूप, समीप।

સંકીર્ણ (वि.) मिलाहुआ, मिश्रित सकड़ा, तंग. सकेत, निविड़, घन।

સંકીર્તન (सं.) स्तुति, बखान, प्रशंसा देवगुण वर्णन।

સંકુચિત (वि.) संक्षिप्त, पीछे हटाहुआ, सिकुड़ाहुआ, मुर्झाया-हुआ, लज्जित, सुप्त, ओछा ओटा।

સંકેત (वि.) इशारा, चिन्ह, द्योतन, वायदा, सैन, इङ्गित।

સંકેતરૂપ—તાત્મ (वि.) इशारेके लिये, चिन्हरूप।

સંકેતસ્થાન (वि.) निर्दिष्टस्थान, इशाराकी हुई जगह, गुप्तस्थान।

સંકેલવુ (क्रि.) ढाकना, बंदकरना, रोकना, एकत्र करना।

સંકોચ (सं.) लाज, लज्जा, सिमट सहम, हिचक, भय, पांछे हटना, ओछाई, भीड़, सकराई ।

સંકોચન (सं.) सिकुड़ानेकी क्रिया, कमकरनेकी क्रिया ।

સંકોચાવું (क्रि.) सकुचाना ,कम होना, घिरजाना, शरमाना, चढजाना । [करना ।

સંકોચવું (क्रि.) मूंदना, इकठ्ठा-

સંકોરવું (क्रि.) जागृत करना, भड़काना, उकसाना, उत्तेजित करना ।

સંકોરીનેવેગળારહેવું (क्रि.) लड़ाई करके खुद अलग होजाना। आग लगाके दूर भागजाना ।

સંકોરણી (सं.) उत्तेजना ।

સંક્રમણ (सं.) ग्रहोंका एक राशिसे दूसरी राशिमें गमन, परिवर्तन ।

સંક્રાંત (सं.) उत्तरायण, सूर्य जिसदिन मकर राशिमें प्रवेश करता है, उच्छिष्ट, साहुकारी ।

સંક્રાંતિ (सं) मेळ, ग्रहोंका एक राशिसे दूसरी राशिपर जाना ।

સખારો (सं) पानी छानने के बाद कपडेमें रहाहुआ कचराकूड़ा जीव इत्यादि ।

સંખાવું (क्रि.) शंकित होना, करना । [शर्म, लाज, शंका ।

સંખાવો (सं.) जरूरत, हाजत,

સંખ્ય (वि.) जोगिना जासके ।

સંક્ષિપ્ત (वि.) कमकियाहुवा, मुख्तसर गृहीत, कम, थोड़ा ।

સંક્ષેપ (सं.) थोड़ा, अल्प, छोटाई ।

સંખ્યા (स.) गिनती, गणना, अंक, जोड़, परिणाम, (वि.) अंक सूचक, (सं.) घृणा नफ़रत ।

સંખ્યાવાચક (वि.) सख्या सूचक, संख्यागिनतीबतानेवाला।[विशेषण ।

સંખ્યાવિશેષણ (सं.) संख्यारूप

સંગ (सं.) साथ, संयोग, मेल, स्पर्श, मित्रता, प्रेम, लगाव, संसर्ग समागम, चेप, संभोग, (स्त्रीसे) योग, भेट । [भोग करना ।

સંગકરવો (क्रि.) मेळकरना, सं-

સંગમૂકવો (क्रि.) दोस्तीछोड़ना, साथ छोड़ना ।

સંગરો (सं) मिश्रण, मेळ, मेळ ।

સંગત (सं.) दोस्ती, सोहबत, संगति, प्रेम, मिलाप, मेल, मैथुन मुलाकात, (वि.) साहृती ।

સંગદિલ (सं.) वज्रहृदय, पाहन हृदय, पत्थर के समान कठोर दिल, कठोर, निर्दय ।

સંગમ (सं.) दो या इससे अधिक का मेळ मिलाप, सन्धि, भीड़, ठट्ठ, भेंट, प्रेमपूर्वक मिलन ।

સંગાત-થ (सं.) साथ, संग, सोहबत, मेळ, मार्गमें एक दूसरेका साथ ।

સંગાતી (सं.) सोहबती, साथी, मित्र, संगकरनेवाला, स्नेही ।

સંગીત (सं.) बहुतसे मनुष्योंका मिलकर गायन, गानाबजाना और नाचना, " गीतंवाद्यं तथानृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते " (वि.) पत्थर समान कठोर, मजबूत, लठ्ठ, जोरावर ।

સંગે (अ०) साथमें, संगमें ।

સંગેમરમર (सं.) पत्थर विशेष, सफेद जातिका पत्थर विशेष ।

સંગ્રહ (सं.) इक्ट्ठा करना, संचय, समूह, समुदाय, एकत्रित ।

સંગ્રહણી-ધરણી (सं.) अतिसार नामक रोग, दस्तोंका रोग ।

સંગ્રહસ્થાન (सं.) जिस जगह देश देशके पदार्थोंका संग्रह हो, संग्रहालय, प्रदर्शनीका स्थान, कोष स्टोर ।

સંગ્રામ (सं.) युद्ध, लडाई ।

સંઘ (सं.) जथ्था, टोळा. समुदाय जमाव, समूह, यात्रा करनेवालोंका टोळा, काफिला ।

સંઘકાઢવો (कि.) आगे होकर लोगोंको यात्राके लिये लेजाना ।

સંઘટ (वि.) भीड़में आयाहुवा, मिलाहुवा, मजबूत, दृढ ।

સંઘરવું (कि.) इकठ्ठाकरना, संग्रह करना, यत्न पूर्वक रखना, दाखिल करना, आदर पूर्वक रखना ।

સંઘરા (सं.) फस्त खुलवाना, खून निकलवाना, (रोग विनाशार्थ)

સંઘવી (सं.) संघका मुखिया, संघ निकालने वाला ।

સંઘાડો (सं.) चर्ख, खराद, यंत्र, जैन मतानुसार साधुकी आज्ञा के मुताबिक जलनेवाला साधु तथा साध्वीका समुदाय ।

સંઘાત (सं.) समूह, जत्था, साथ ।

સંઘાતજેવો (कि.) अच्छी संगति करना ।

સંઘાતનીમારી સાસરેગઇ ને ટેલી આવી ઉબીરડી (=) व्यर्थका परिभ्रम करना ।

સંઘાથી(वि.)साथी, संगी, सोहबती।

સંઘાથે-તે (अ०) साथमें, संगमें ।

સચરાચર (वि.) सर्वत्र, स्थावर, और जंगम सहित।

સચરાચરેઉતરવું (क्रि.) बिनाकिसी विघ्नबाधाके काम पूरा पड़ना।

સચરાચરવ્યાપવું (क्रि.) आरपार उतर जाना, प्रवेश होना, सर्वत्र फैलजाना।

સચિ (सं.) इंद्राणी, इन्द्रकी स्त्री।

સચિવ (सं.) प्रधान, मंत्री, वजीर अमात्य, सलाहकार।

સચેતન (वि.) चेतना युक्त, सावधान, जागृत, ज्ञानवान (सं.) जीव।

સચૈલ (सं.) वस्त्रसहित, कपड़ोंके साथ। [नहाना।

સચૈલસ્નાન (सं.) वस्त्र सहित

સચોટ (अ०) आवाद, प्रमाणिकता पक्का, दृढ़।

સચોડું (वि.) समस्त, सारा, पूरा, सब, तमाम, सम्पूर्ण (अ०) बिलकुल। [चलनवाला।

સચ્ચરિત-ત્ર (वि.) अच्छे चाल

સચ્ચિદાનંદ (सं. नित्य ज्ञान स्वरूप और सुखमय ब्रह्म। [दृढ़, सत्य।

સચ્ચું (वि.) सच्चा, खरा, पक्का,

સજ (वि.) तैयार, कटिबद्ध; उद्यत।

સજાગ (वि.) सावधान, जागृत; होशियार, सचेत।

સજ્જડ (वि.) मजबूत, दृढ़, भारी, पासपास, निकट, उठबैठ न सके ऐसा, मरीहुआ, पक्का, पारपड़ने लायक।

સજ્જડમાર (सं.) सख्तमार।

સજ્જડઝાલવું (क्रि.) मजबूत पकड़ना।

સજ્જડથઈજવું (क्रि.) मर जाना, दबजाना।

સજ્જડવેવું (क्रि.) धमकाना।

સજ્જનતા (सं.) भलमंसा, सज्जनता सुजनता।

સજ્જનાઈ (सं.) पूर्ववत्।

સજની (सं.) सखी, आली, प्यारी, प्रिया, कान्ता, भायली।

સજવું (क्रि.) सजना; हथियार बन्द होना, शृंगार करना, धार करना, शान पर चढ़ाना, तैयार होना।

સજળ (वि.) जलयुक्त, गीला, आला

સજલનેત્ર (सं.) अश्रुयुक्त नेत्र, पानीसे डबडबाई हुई आँखें।

સજા (सं.) शिक्षा, शासन, दण्ड, नसीहत।

સજાઈ (सं.) तय्यारी। [कुलोत्पन्न।

સજાત (वि.) कुलीन, उच्च

સજાત-તીય (वि.) अपनी जाति-वाला, समान जातिकी।
સજાપો (सं.) तन्दुरुस्ती, आरोग्यता। [हत, हिदायत।
સજાય-ઝાય (सं.) शिक्षा, नसी-
સજાયો (सं.) अस्तुरा, उस्तरा, छुरा।
સજાવવું (क्रि.) सज्जित करना, शृंगार करना, अलंकृत करना, धार करना। [काबिल।
સજાવાર (वि.) योग्य, लायक,
સજિત (वि.) सज्जित, सजा हुआ, अलंकृत, सज्जन।
સજીવ (वि.) जीवित जीवयुक्त, प्राणी।
સજીવન (सं.) पुनर्जीवन, (वि.) जीववाला, पुनर्जीवित।
સજીવનપાણી (सं.) ऐसा जल जिसका कभी अंत न आवे।
સજીવન કરવું (क्रि.) जीवित करना, जिन्दा करना।
સજીવન ઔષધી (सं.) ऐसी बूटी जो काटने परभी जीवित रहे।
સજીવારોપણ (सं.) निर्जीव वस्तुमे सजीव वस्तुके गुणोंकी कल्पना करना, चैतन्यत्व रूपक।
સજીવની (सं.) संजीवनी विद्याविशेष।
સજુતા (वि.) संयुक्त मिला हुआ।
સજોડ (वि.) जोड़ासहित, (स्त्री पुरुष)।
સજોડું (सं.) पतिपत्नी, स्त्रीपुरुष।
સજ્જ-જ્જિત (वि.) सजा हुआ, कटिबद्ध, उद्यत।
સજ્જન (वि.) सभ्य, कुलीन, खानदानी, सुघड़, सदाचारी (सं.) कुलवान पुरुष, सदाचारी पुरुष, प्रियजन। शृंगार।
સજ્જનતા-ઈ (सं.) साधुता, कुलीनता, शिष्टता, सभ्यता।
સજ્જા (सं.) सेज, पलंग, पर्यंक, शय्या, मृत पुरुषके नामपर उसकी मृत्युके तेरहवें दिन खाट बिछौने आदिका दान विशेष।
સંચ (सं.) प्रबन्ध, युक्ति, तज-वीज, सांचा, डिज़ाइन।
સંચય (सं.) संग्रह, ढेर, इकट्ठा, एकत्रित, स्टॉक, बड़ी संख्या।
સંચરવું (क्रि.) भीतर प्रवेश होना, रस छोड़ना, ऊपर रखना, सींचना, मकानके कबेलु-खपरे ठीक करना, भ्रमण करना।
સંચળ (सं.) एक प्रकारका खार।

સંચાર (सं.) रास्ता, तंगमार्ग, इधर उधर फिरना, घुसकर फैलना, प्रवेश, गमन, भ्रमण, पर्यटन ।

સંચારવું (क्रि.) डालना, उँडेलना, घरके कवेलू खपरे ठीक करना ।

સંચારિકા (सं.) दूती, दलालिन, कुटनी, सन्देश हरण करनेवाली ।

સંચારી (वि.) चंचळ, क्षणिक, क्षणभंगुर, अस्थिर, भ्रामक, गतिशील ।

સંચિત (वि.) संगृहीत, एकत्रित इकठ्ठा कियाहुआ, बटोराहुवा (सं.) पूर्वजन्ममें भोगनेसे बचाहुआ कर्म ।

સંચો (सं.) सांचा, यंत्र ।

સંચોરો (सं.) क्षार विशेष, यह पापड़ोंमें और दाळ वगैरःमें डाला जाता है ।

સંજમ (सं.) दीक्षा, वैराग्य, बोध ।

સંજા-જ્યા (सं.) सांझ, संध्याकाल, सायंकाळ । [मगजी (बड़ी)।

સંજાપ-ખ (सं.) संजाफ़, झूल,

સંજમી (सं.) एक जातिका साधु।

સંજીવની (सं.) एक प्रकारकी औषधि ।

સંજોગ (सं.) संधि, देवयोग, दैवी घटना, होनहार, भावी, इत्तिफाक, मेळ, मिलाप, योग, संयोग ।

સંજોગી (सं) घरबारी साधु, गृहस्थ साधु, साधुओंकी जातिविशेष ।

સંજોરી (सं.) एक प्रकारका गेहूंका मिष्ट पदार्थ, मीठी मठड़ी ।

સટ (सं.) सेट, गंज, समूह, एक वस्तुमें एक समाजःवे ऐसा समूह । (अ०) झटपट, देखतेही देखते ।

સટકવું (क्रि.) चल देना, टरक जाना, अदृश्य होना, निकल जाना ।

સટકી જવું (क्रि.) भाग जाना, निकल जाना ।

સટકાવવું (क्रि.) मारना, ठोकना, पीटना, (सूईसे) डोरे डालना, चोरना । [ऐसी गांठ, छोटी चुहिया

સટકિયું (सं.) झट खुल जावे

સટકો (सं.) लकड़ीविशेष ।

સટરપટર (अ०) गड़बड़ सड़बड़, उलट पुलट, इधरउधर, जहां तहां, गड़बड़ घोटाला ।

સટ્ટ (वि.) निश्चित, ठीक ।

સટવું (क्रि.) भिड़ना, भागना ।

સટાક (સં.) कोड़े, हंटर वगैरः की मारका शब्द ।

સટાકબંધ (अ०) झट, एकदम ।

સટીક (वि.) टीकासहित, व्याख्यायुक्त, अर्थसहित ।

સટોડિયો (सं.) सट्टा करनेवाला ।

સટોસટ (अ०) फौरन, तुरन्त, एकके बाद एक, नीचे ऊपरी ।

સટ્ટો (सं.) धायदेका धन्धा, एक प्रकारका जुआ । चोरी, बदमाशी द्वारा हरण । [शिथिल ।

સઠપ (वि.) ढीला, नरम, पोचा,

સડ (अ०) झड़पसे, (वि.) स्थिर, अचल ठहरा हुआ, बन्द (सं.) देखो સઢ ।

સડક (सं.) मार्ग रास्ता, सीधा बनाया हुआ पथ, रोड । (वि.) स्थिर, स्तंभित, निस्तब्ध ।

સડકો (सं.) पतले पदार्थको खाते वक्तका शब्द, सुरड़का, सबड़का ।

સડબોડ (वि.) ढाई, ढाईका संकेत, (व्यापारियोंमें)

સડજોડ (सं.) अपनी बातको दुराग्रह पूर्वक न छोड़नेवाला ।

સડવું (क्रि.) गलना, सड़जाना, खराब होना, गीली वस्तुका क्षय होना ।

સડસડવું (क्रि.) उबलना, उफनना ।

સડસડાટ (अ०) जल्दीसे, सपाटेसे ।

સડસઠ-ઠ (वि.) सड़सठ, ६७, संख्याविशेष । [झट, शीघ्र ।

સડાક (अ०) जल्दीसे, फौरन,

સડાકબેદ (अ०) झटपट लेकर ।

સડાકો (सं.) चाबुककी आवाज, पवन के चलनेका शब्द ।

સડો (सं.) बिगाड़ा, बिगड़नेका कारण, अड़ोसी पड़ौसी, परोस ।

સઢ (सं.) पाल, बादबान, (जहाज़का) (वि.) जड़, स्थिर, चुप । [गति विशेष, दुःख ।

સણકો (सं.) नाकके श्वासकी

સણગટ (सं.) घूंघट, पटओट, छेड़ा, औरतोंके मुखकी ओट उनकी ही साड़ीसे ।

સણગારવું (क्रि.) शृंगारकरना, अलंकार पहिनना, शोभितहोना ।

સણગાર (सं.) शृंगार, गहना, शृंगार सोलह है, मज्जन, सिन्दूर, अंगशुचि, दिव्यवस्त्र, महावर, केशविन्यास, ठोड़ीपर तिल, माथे पर बिन्दी, मेंहदी अरगजालेपन, भूषण, सुगन्ध, मुखराग, दंतराग, अधरराग और काजल ।

સણુભારવું (क्रि) सजाना, शोभित करना, जेवर कपड़े पहिनना
સણુગો (सं.) बीजांकुर, अंकुर।
સણુંગ (सं.) सुरंग, विवर, (वि.) अंकुरयुक्त। [सन सनाहट।
સણુસણુ (सं.) सनसन शब्द,
સણુસણવું (क्रि.) सनसनाना, सन सन शब्द करना।
સણુસણાટ (सं.) सनसनाहट, तेजी कीगतिका सूचक शब्द।
સણુસારવું (क्रि.) घोड़ा या बैल को चलानेके लिये रस्सीको खींचना ढीलीदेना प्रभृति। इशारा करना, संकेतकरना, सैनकरना।
સણુસારો (सं.) इंगित, इशारा, सैन, संकेत, चिन्ह।
સણિયું (वि.) सनकाबनाहुआ वस्त्र, पाटवस्त्र, सनका कपड़ा। (वि.) सावधान, चतुर, होशियार।
સણીજી (सं) माता, मा, जननी।
સણીજો (सं.) पिता, बाप, जनक।
સંડાસ (सं.) पाखाना, शौच कूप, टट्टी, शौचगृह।
સત (वि.) खरा, असली, वास्तविक, अच्छा, पूज्य, श्रेष्ठ, उत्तम, शुद्ध। (सं.) सत्य, सचाईसार, रस।
સતચઢવું (क्रि.) सती होनेके लिये स्त्रीको सतचढना।
સતજુગ (सं) कृतयुग, प्रथमयुग।
સતત (अ०) निरन्तर, हमेशा, सदाकाल, सदैव, सर्वदा।
સતમ (सं.) जुल्म, त्रास, पराकाष्ठा, सितम।
સતમગુજારવી (क्रि.) जुल्मकरना
સતમી (सं.) बीजक, चालान, इनव्हाइस।
સતર (सं.) लकीर, रेखा, लाइन।
સતાર (सं.) सितार, बीन बाद्यविशेष, तारबाद्य।
સતારો (सं.) ग्रह, नमीव भाग्य।
સતાવવું (क्रि.) सताना, कष्ट देना, चिडाना, खिझाना।
સતિયો (सं.) सत्यवादी, प्रमाणिक।
સતી (सं.) पतिव्रता, साध्वी, पतिको देवसमान माननेवाली स्त्री, गायत्री, पार्वती, दक्षप्रजापतिकी पुत्री।
સતીથવું (क्रि.) सती होना, अपने पतिके मरनेपर उसके साथही एक चितामें जीवितही जलना।

सदुं (वि.) सच्चा, सत्य, प्रकट, जाहिर, मौजूद । [वे पहिचान ।
सतोसतीउ (वि.) बे ठौर ठिकानेका
सत्कर्म (सं.) अच्छा काम, उत्तम काम, पुण्यकार्य ।
सत्कार (सं.) पूजा, सम्मान, आदर आगत-स्वागत विवेक ।
सत्कारवुं (क्रि.) मानकरना, इज्जत करना, स्वागतकरना ।
सत्कालक्षेप (सं.) अच्छे कामके करनेमें अपना समय गंवाना ।
सत्क्रिया (सं.) अच्छे काम, सदाचरण, आदर, सम्मान, आतिथ्य ।
सत्तम (वि.) अतिउत्तम, अतिशय श्रेष्ठ, उम्दा ।
सत्तर (वि.) सत्रह, १७ संख्या विशेष, उत्तम, ठीक, उचित, इच्छानुसार, सर्वोत्तम ।
सत्तरागणुवा (क्रि.) भागजाना, छूटजाना, छू होना ।
सत्ता (सं.) अस्तित्व, पराक्रम, विद्यमानता, बळ, हकीमी अधिकार, अमल, धन, पैसा ।
सत्ताआववी (क्रि.) ताकतआना अधिकार मिलना ।
सत्ताआपवी (क्रि.) अधिकारदेना ।
सत्तामळवी (क्रि.) अधिकार मिलना ।
सत्ताचलावदी (क्रि.) हुकम चलाना ।
सत्ताणुं (वि.) सत्तानवे, ९७, संख्याविशेष, तीनका संकेत, बीचमेंसे ढीला न हो ऐसा, सख्त, तनाहुवा, तंग ।
सत्ताणुंपाया (वि.) बेढंगा ।
सत्ताधारी-धीश (वि.) अधिकारी राजा, बलवान । [५७ सत्तावन ।
सत्तावन (सं.) संख्या विशेष,
सत्तावीस (वि.) सत्ताईस, २७ ।
सत्ते (अ.) सातवें दिन ।
सत्तो (सं.) ताशके पत्तोंमेंसे ७ चिन्ह युक्त किसीभी रंगका पत्ता ।
सत्व (सं.) मायाके तीन गुणोंमेंसे एक गुण विशेष, वह गुण विशेष, जिससे शान्ति, क्षमा, दया, सत्यज्ञान और नीतिकी वृद्धि होतीहै सुखका हेतु प्रकाशक ज्ञान ।
सत्वगुण (सं) सात्विक गुण, प्रकृतिका एक गुण विशेष ।
सत्य (सं.) सच्चा, यथार्थ, ठीक, निश्चय, मिथ्यानहीं, अस्ल खरा, ईश्वर, सतयुग ।
सत्यता (सं.) सचाई, सच्चापन ।
सत्ययुग (सं.) प्रथम युग; कृतयुग, सत्रह लाख अठाइ हजार वर्षका प्रथम काळ (सृष्टि आरंभसे) ;

સત્યલોક (સં.) ऊपरी सातलो- कोमें सबसे ऊपरका लोक, ब्रह्म लोक । [ईमानदार, विश्वासू ।
સત્યવાદી (वि.) सचबोलने वाला,
સત્યશીલ (वि.) जिसकी आदत ही हमेशा सत्य भाषण करनेकी हो ।
સત્યસ્વરૂપ (सं.) ईश्वर, परमात्मा ।
સત્યાનાશ (म.) नाश, विनाश, बरबाद । [बादी, दुर्दिन ।
સત્યાનાશનીપાટી (सं.) बर-
સત્યાર્થ (वि.) खरा, सच्चा, ठीक ।
સત્યાશી (वि.) संख्या विशेष, सतासी ८७ ।
સત્યાશીયું (वि.) सत्तासीके मा- लसे सम्बन्ध रखनेवाला ।
સત્ર (सं.) यज्ञ, देव, स्तुतिगान, दान, सदादान, सदाव्रत्त । [सूबा ।
સત્રપ (सं.) बडे राज्यका कोई
સત્રશાળા (सं) अन्न दान कर- नेका स्थान, सदाव्रत बटनेकी जगह ।
સત્વર (अ०) जल्दीसे, शीघ्रतासे।
સત્સંગ (सं.) साधु समागम, अच्छी संगति, सुसंगति ।
સત્સંગતિ (सं.) अच्छी सोहबत ।
સત્સંગી (वि.) अच्छे संगवाला ।

સથરપથર (अ०) इधरउधर बिखराहुआ, उलटपुलट, तितर बितर ।
સથરાળ (सं.) इधर उधर फैल- नेकी स्थिति, सेनाका बध ।
સથશમણ (सं.) शान्ति, अमन ।
સથશમથું ઍશારી (क्रि.) घब- राहट होना ।[नाकी टोळी,काफला ।
સથવારો (सं.) साथ, संग, या-
સદ (वि) " सत " का रूप विशेष । दूसरे शब्दो के साथ प्रायः मिलने पर त–द् हो जाता है=जैसे सत्+गति=सद्गति ।
સદગરવું (क्रि.) मानना, स्वीकार करना, कबूलकरना ।
સદન (सं.) गृह, घर, मकान, मंदिर, वासस्थान, धाम, भवन, केतन ।
સદય (वि.) दयायुक्त, कृपालु, मृदुक, कारुणिक । [बड़ा, खास ।
સદર (वि) मुख्य, ऊंचा, सबसे
સદર અમીન (सं) पहिली श्रे- णीका देशी अमलदार ।
સદર પરવાનગી (सं.) आम मुख्तारी, आम इजाजत, छूट ।
સદર બજાર (सं.) छावनीका बाजार, फौजी बाजार ।

સદરહુ (वि.) पूर्वोक्त, उक्त, अर्ध लिखित, मजकूर । [वृक्ष विशेष ।
સદરો (सं.) छोटी बाहोंका एक
સદવું (क्रि.) अनुकूल आना, सहना, माफक आना ।
સદળ (वि.) मोटा, बळदार, दळ सहित, सेनासहित ।
સદા (अ०) हमेशा, निरन्तर, नित्य, रोज, सतत, सर्वदा ।
સદાકાળ (अ०) पूर्ववत ।
સદાચરણ (सं.) शुद्ध आचरण, नेक चालचलन । [ईश्वर ।
સદાનંદ (सं.) सर्वदा आनन्द,
સદાનર્ત (सं.) खंजन नाम्नी चिड़िया, पक्षी विशेष ।
સદાબ્રૂ (अ०) सारस्न, परा, सब ।
સદારદા (अ०) महजहीमें, अकारण, यूंही ।
સદાવડું (अ०) सब, सारा, सम्पूर्ण, हमेशा, नित्य, रोज ।
સદાવરત (सं.) अनाथालय, भूखोंको अन्नदान-स्थान ।
સદાશિવ (सं.) शंकर, महादेव ।
સદા સર્વદા (वि.) हमेशा, नित्य, रोजमर्रह, जबतब ।
સદી (सं.) सौ वर्षका समय, शताब्दि, सैकड़ा, शतसंवत्सरी ।
સદીસા (अ०) समयपर, वक्तपर, जितने समयमें होना चाहिये उतनेही समयमें ।
સદૈવ (अ०) सदा, सर्वदा, हमेशा, निरंतर, नित्य, रोज ।
સદોદિત (वि.) देखो सदैव ।
સદ્ગતિ (सं.) मोक्ष, उद्धार, निस्तार, त्राण, उत्तमगति, छुटकारा ।
સદ્ગુણ (सं.) अच्छागुण ।
સદ્ગુણસમ્પન્ન (वि.) सद्गुणी ।
સદ્ગુણી (वि.) अच्छे गुणोंसे युक्त ।
સદ્ધર્મ (सं.) श्रेष्ठ धर्म, सत्य धर्म नीतियुक्त मार्ग, सदाचार ।
સદ્બુદ્ધિ (सं.) सुन्दर बुद्धि, अच्छी अक्ल ।
સદ્ભાવ (सं.) अच्छी इच्छा, अच्छा भाव । [मकान, जगह ।
સદ્મ (सं.) घर, गृह, निवासस्थान,
સદ્ય (अ०) झट, तत्क्षण, सपदि, फौरन, तुरन्त उसी वक्त ।
સદ્વર્તન (सं.) अच्छा बर्त्ताव ।
સદ્વસ્તુ (सं.) अच्छी चीज़ ।
સદ્વાસના (सं) अच्छी, इच्छा ।
સધર (वि.) बळवान, शक्तिसम्पन्न, धनाढ्य । [होना, ठीकहोना ।
સધરવું (क्रि.) सुधरना, बनना,

સધામ (सं.) जीवात्माका मूल-स्थान, स्वर्गलोक ।

સધર્મિણી (वि.) एक धर्म पालने वाली (सं.) पत्नी, भार्या, औरत ।

સધર્મી (वि.) एक धर्मका, अपने धर्मका माननेवाला ।

સધવા (सं.) सुहागिन, सुभगा, पतियुक्त (स्त्री)।

સધારવું (क्रि) जाना, बिदा होना, रवाना होना, सुधारना ।

સધાવવું (क्रि.) जाना, कूच करना, सटकना, बिदाहोना ।

સન (सं.) वर्ष, साल. संवत्, (यह हिजरी और ईस्वी संवतके लिये लगाया जात है)

સનદ (सं.) फरमान, पट्टा, हुकम, परवाना, अख्तियारनामा । अधिकारपत्र ।

સનદી (वि.) जिसे सनद मिली हो सनदवाला, या सनद संबंधी ।

સનમના (स.) शोक, चिंता, उदासी, व्याकुलता, बे चैनी ।

સનસ (सं.) इच्छा, लोभ, लालच चाह, स्पृहा ।

સનમાર્જની (सं.) बुहारी, झाडू ।

સનાતન (वि.) नित्य अनादि, सदाका, प्राचीन, निश्चल ।

સનાથ (सं.) स्वामियुक्त, जिसका मालिकहो, आश्रय युक्त ।

સનાદ (वि.) नादयुक्त, शब्दवाला ।

સનાદે (अ.) पासमें, नजदीक ।

સનાન (सं.) स्नान, मरनेवालेके नामपर नहाना, नहान ।

સનાન માંડવા (क्रि.) बुरी हालत होना ।

સનાન સુતક આવવું (क्रि.) सम्बन्ध होना, लेनदेन होना ।

સનાન પાણી આવવું (क्रि.) भारी हानिमें आजाना ।

સનાનના સમાચાર (सं.) अशुभ, समाचार, बुरी खबर ।

સનાનિયું (वि.) किसीके मरनेकी खबर लानेवाला ।

સનિપાત (सं) मिलना, नीचे गिरना, एक ज्वर जिसमें वातपित्त और कफात्मक तीनों दोष बिगड़ कर एकत्र होजाते हैं, त्रिदोष, नाश ।

સની (सं.) शनि, ग्रहविशेष ।

સનેઉ (अ०) शनिवारके दिन ।

સનેડો (सं.) स्नेह, प्यार, प्रेम, प्रीति ।

સંત (सं.) साधु, सज्जन, उत्तम मनुष्य, धार्मिक, धर्मी, त्यागी।

સંતત (અ०) हमेशा, नित्य, सर्वदा।

સંતતિ (सं.) विस्तार, औलाद, गोत्रवृद्धि, बाल बच्चे।

સંતરું (सं.) नारंगीकी जातिका एक फलविशेष, सन्तरा।

સંતલસ (सं.) नीच कार्य करनेका विचार, परामर्श, सलाह।

સંતાકૂકડી–કૂકડું–કૂકડો (सं.) बालकोंका खेल विशेष।

સંતાથો (क्रि.) दूर्ववन्।

સંતાડવું (क्रि.) छुपाना, ढाकना, गुप्त रखना, लुकाना।

સંતાન (सं.) वंश, संतति, अपत्य, विस्तार, बालबच्चे।

સંતાનિકા (सं.) मलाई, दूधकी थर।

સંતાપ (सं.) कष्ट, पीड़ा, दुःख, तकलीफ, क्लेश, गुस्सा, पछतावा।

સંતાપવું (क्रि.) दुःख देना, चिढाना, खिझाना, व्याकुल करना।

સંતાવું (क्रि.) छुपना, लुकना, दबना, घुसना, चुप रहना।

સંતુષ્ટ (वि.) प्रसन्न, तृप्त, शांत, संतोषप्राप्त, खुश।

સંતોખ (सं.) संतोष, तृप्ति, खुशी।

સંતોખવું (क्रि.) प्रसन्नकरना, तृप्त करना, तसल्ली करना।

સંતોલો (सं) बारदाने सहित वजन या तौल।

સંતોષકારક (वि.) संतोष देनेवाला, संभ्रम हटानेवाला, मनमाना

સંતોષપૂર્વક (अ०) संतोषसहित, प्रसन्नतापूर्वक, राजीखुशीसे।

સંતોષવૃત્તિ (सं.) तृप्ति, चित्त समाधान।

સંતોષવું (क्रि.) राजी करना, प्रसन्न करना, खुश करना।

સંથારો (सं.) मृत्यु समय निकट जानकर शरीर इन्द्रिय आदिपरसे ममता त्यागनेके संकल्पपूर्वक, शयन करना, संस्तार व्रत।

સંધાવું (क्रि.) दकमाना, घिरजाना, विवाह होना, फंस जाना।

સંદર્ભ (सं.) रचना, ग्रन्थन, गूंथना, प्रबन्ध, गूढार्थ प्रकाशन, सारवचन। [खबर, वृत्तान्त।

સંદેશો (सं.) समाचार, सम्वाद,

સંદીપન (सं.) उत्तेजन, प्रज्वलन, सुलगना, वृद्धि।

સંદૂક (सं.) पेटी, तिजोरी, मंजूषा, डब्बा, पिटारा, टिपारा।

સંદેહ (सं.) शक, संशय, शंका, भ्रम, दुविधा, अनिश्चित ज्ञान।

સંધાન (सं.) मेळ, अन्वेषण, ढूंढ, खोज, पताळगाना, अनुसंधान योग, समय, मौका, निशाना, लक्ष ताकना, अनुकूळ ।

-સંધાની (सं.) मौका देखनेवाला, ढूंढनेवाळा, खोजी । [जोड़नेवाळा ।

સંધારો (सं.) फूटेहुवे पात्रको

સંધિ(सं) मेळ, संयोग, मिळाप, दरार, अक्षरोंका मेळ, (व्याकरण शास्त्र) अनुकूळ समय, अवसर ।

-સંધિવા (सं.) सन्धिवात, रोग विशेष शरीरके जोड़ोंमें वादीकी बिमारी ।

સંધિવિગ્રહ (सं.) लड़ाई और सलाह, युद्ध और शांति ।

-સંધિવિગ્રહિક (सं) जिसका लड़ाई और सन्धिकरानेका काम हो वह, एलची, प्रतिनिधि, दरबार वकील । [संपूर्ण ।

-સંધુ (वि.) सब, सारा, समूचा

સંધુકણ (सं.) चुगळी, यहांकी बात वहां, और वहांकी यहां करना ।

-સંધે (सं.) सर्वत्र, सब जगहोंपर (सं.) सन्देह, संशय, शक ।

-સંધ્યા (सं.) सूर्यास्तका समय सूर्योदयका वक्त, सायंकाळ, दिनका अंत, रात दिनका अंत, रात दिनके संधिसमय, सन्ध्या वंदन, सन्ध्या समय की जानेवाली द्विजोंकी ईश्वरोपासना ।

સંધ્યાકાળ (सं.) सायंकाळ, चिराग, बत्तीका समय ।

સંધ્યાવન્દન (सं.) सन्धिसमयकी प्रभुवन्दना, सन्ध्योपासना ।

સન્નાહ (सं.) फौजी पोषाक, सैनिक वस्त्र, कवच, बखतर, बख्तर जिरह । [सामने, निकट ।

સન્નિધ (अ०) पास, नजदीक,

સન્નિધાન (सं.) सामीप्य, निकटता, (अ.) पूर्ववत् ।

સન્યસ્ત (सं.) संन्यासी होना, संन्यास आश्रमस्थित, संसार त्याग, काम्यकर्मोंका त्याग, चतुर्थाश्रम ।

સંન્યાસ (सं.) पूर्ववत् ।

સંન્યાસી (सं.) संन्यासयुक्त, चौथे आश्रमवाळा पुरुष, परिब्राट ।

સન્માન (सं.) आदर, सत्कार, इज्जत, सम्मान ।

સન્માર્ગ (सं.) अच्छामार्ग, सुपथ सत्यमार्ग, न्यायानुमोदित पथ ।

સન્મિત્ર (सं.) सच्चादोस्त, पक्का साथी, उत्तम मित्र ।

સન્મુખ (अ०) मुहं ब मुहं रूबरू, मुहं आगे, सामने, पासमें, समक्ष, प्रत्युत्तरमें, जवाबमें ।

સન્મુખ થવું (क्रि.) सामनेआना।
સપકણ (सं.) सम्बन्ध, सगाई, सगपन, नाता। [महीना।
સપટેંબર (सं.) अंग्रेजी नवां
સપડાવવું (क्रि.) बन्दकरना, रोकना, अटकाना।
સપડાવવું (क्रि.) फंसाना, पकडना, फन्देमें लेना, दांवमें लेना धमकाना, घबराना।
સપડાવું (क्रि) दांवमे आना, फंसना, हैरान होना, पिटना।
સપત (सं.) सौगंध, कसम, सौंह, सौगन, शपथ।
સપનું (सं.) स्वप्न, निद्राके समय विचारमें आई हुई बातें, सपना।
સપરમો (वि) हर्षका, खुशीका, प्रसन्नताका (दिन)।
સપરાણુવું (क्रि.) तय्यार होना।
સપન્તિ (सं.) सौक, सौत, पति की दूसरी स्त्री, सपत्नी।
સપરાણું (वि.) सब, सारा, सम्पूर्ण, सर्वस्व, अनुकूल।
સપરિવાર (वि.) परिवारसहित, सहकुटुम्ब, बालबच्चोंसहित।
સપસપ (अ०) झटपट।
સપાટ (वि.) सीधा, चपटे आकारका (जिसमें ऊंचाई निचाई न हो) भरपूर, ठीक, सारा। (सं.) बिना एड़ीके जूते, स्लीपर, चप्पल।
સપાટાબંધ (अ०) जोरसे, वेगपूर्वक, झपाटेदार।
સપાટિયું (वि.) बांस या वृक्षकी चीप—खपच्ची।
સપાટી (सं.) किसी वस्तुके ऊपरका चपटा भाग।
સપાટો (सं.) सपाटा, झपाटा, झड़प, फटकार, मार, जोश, दौड़, चालाकी। [रना, धमकाना।
સપાટો કાઢી નાખવો (क्रि.) मा-
સપાડું (सं.) अहसान, अनुग्रह, कृपा, उपकार, आभार।
સપારે (अ०) ठीक, दुरुस्त, बराबर।
સપુચું (अ०) सारा, समस्त, पूरा, तमाम, सब, सम्पूर्ण।
સપુરત (सं.) सिपुर्द सौंपना, हवाले करना, अधिकारमें देना।
સપુત (सं.) अच्छा पुत्र, सुपुत्र।
સપેત (वि.) धवल, श्वेत, सफेद।
સપ્ત (वि.) सातकी संख्या, ७।
સપ્તઋષિ (सं.) सात वैदिक महात्मा पुरुष—कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम जमदग्नि और वसिष्ठ। आकाशस्थ सात तारे

સપ્તદ્વીપ (सं.) सातद्वीप-जम्बु, कुश, लक्ष, शाल्मली, क्रौंच, शाक और पुष्कर । [आकृति, (गोळ)

સપ્તકોણ (सं.) सातकोने दार

સપ્તધાતુ (सं.) शरीरस्थ सात धातु यथा-रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, और शुक्र । पार्थिव धातु-यथा, सोना, चांदी, शीशा, तांबा, कासी, लोहा और रांगा ।

સપ્તમી (सं.) (व्याकरणमें विभक्ति) सप्तमी, तिथिविशेष, सातें, सातम, सातवीं ।

સપ્તરાશી (सं.) (गणितमें) सप्तराशिक ।

સપ્તસ્વર (सं.) सातस्वर, यथा,-षड्ज, ऋषभ, गन्धार, मध्यम, पंचम, धैवत, और निषाद इनके आद्य अक्षर सा री,ग,म,प,ध,नी ।

સપ્તાહ (सं.) हफ्ता, समस्त वारोंकी एक गणना, सात दिनकी अवधि, भागवत नाम्नी पुस्तकका सात दिनमें पठन ।

સપ્પટ (वि.) चंपता, फबता, तंग लगा हुआ ।

સપ્રેમ (अ०) प्रेमपूर्वक, प्यारसे ।

સફ (सं.) लकीर, सतर, पांत, पंक्ति, कॉलम ।

સફર (सं.) यात्रा, प्रवास, मुसाफिरी, नाव चलानेका धंधा । मुसल्मानोंका दूसरा महीना ।

સફર મારવી (क्रि.) समुद्र किनारे फिरने, टहलने जाना ।

સફરે જવું (क्रि.) (समुद्र) यात्रा करना ।

સફરજન (सं.) एकप्रकारका फळ ।

સફરી (वि.) प्रवासी, यात्री (जलका) (सं.) खलासी, नाव चलानेवाळा, (वि.) बड़ा, उदार, खर्चीला, मुक्त हस्त । [प्रमाणरूप ।

સફલ (वि.) फलयुक्त, सिद्ध,

સફા (त्रि.) साफ, स्वच्छ ।

સફાઈ (सं.) स्वच्छता, पवित्रता, उत्तमता, सुघड़ता, चालाकी, छटा ।

સફાઈ મારવી (क्रि.) बड़ाई हांकना, तारीफ मारना, सफाईकी बातें मारना ।

સફાઈદાર (वि.) साफाईवाला, साफ ।

સફાળું (वि.) एकदम, अचानक ।

સરીત (सं.) बालकोंका खेलविशेष, खोभिदुनामक खेल ।

સરીયો (सं.) घरकी हदके पासकी आसपासकी जमीन, दो घरोंको अलग अलग दिखानेवाली ऊंची दीवार ।

સરીયદાર (सं.) एक घरसे लगी हुई दूसरी ज़मीन या दावारका मालिक । [पेज़ ।

સર્ફુ (सं.) पृष्ठ, वर्क़, सफ़ा, पत्र,

સફેત (वि.) धवल, श्वेत, उज्ज्वल ।

સફેતી (सं.) चपलता, सफ़ेदी, निर्मळता, श्वेतता । [चूर्णविशेष ।

સફેતો (सं.) सफेदा, सफेद रंगका

સબ (सं.) मुर्दा, लाश, शव, मृत-शरीर, (वि.) सारा, समस्त, तमाम, कुल ।

સબક (सं.) पाठ, शिक्षा, अध्याय ।

સબજી (सं.) हरापानी, भंग भगका पानी। [बूदार वृक्ष ।

સબજો (सं.) एक प्रकारका खुश-

સબડકો (सं.) तरल पदार्थके चूसनेका शब्द ।

સબડકો મારવો (क्रि.) खूब खाना ।

સબડવું (क्रि.) पतले पदार्थको पांचों अंगुलियोंमें लेकर चूसना ।

સબડાક (सं.) पतले पदार्थको खानेका शब्दविशेष ।

સબડાવવું (क्रि.) पतले खाद्य पदार्थको मुखमें रखकर चूसना ।

સબધું (वि.) मजबूत, दृढ़ ।

સબબ (सं.) हेतु, कारण, उद्देश । (अ०) इस वास्ते, इसलिये, अतएव । [निकालना ।

સબબ કાઢવો (क्रि.) बहाना,

સબર (सं.) सब्र, संतोष, तसल्ली ।

સબરસ (सं.) नमक, लवण, नोन, रामरस, क्षारविशेष ।

સબળ-સબળું (वि.) बळवान, ताकतवर, मजबूत, सगुण ।

સબી (सं.) छवि, कान्ति, शोभा, चित्र, तस्वीर ।

સબુદ્ધ (सं.) सुबुद्धि, उत्तम बुद्धि, (अ०) बुद्धिद्वारा, अक़्लसे ।

સબુર-રી (सं.) सब्र, धैर्य, संतोष ।

સબુર (अ०) आड, रोक, अटक ।

સબુરી પકડવી (क्रि) संतोष करना ।

સબુરીનો બદલો ઈશ્વર આપશે (क)

धैर्यका फळ सदा उत्तम होत है ।

સભર (वि.) भरपूर ।

સભરે (अ०) भरपूर, सब, बिलकुल ।

સભા (सं.) मंडली, समाज, बहुतसे लोगोंका जमाव, विद्वत्समुदाय, सम्मेलन, मीटिंग, पंचायत ।

સભાસદ (સં.) मंडलीका एक मनुष्य, सभ्य, सभामें बैठनेवाला, समाका मेम्बर ।
સભાગ્ય (वि.) भाग्यशाली, प्रारब्धी ।
સભાધ્યક્ષ–પતિ (सं.) सभाका मुख्य, सभाका स्वामी, प्रेसीडेन्ट ।
સભ્ભર (वि.) भरपूर, पैसेवाला, ताकतवाला, गर्भवती घोड़ी ।
સભ્ય (वि.) सभ्यकेयोग्य, नागरिक, भद्र, भला, सभाका मेम्बर, शिष्ट, नम्र, विनयी ।
સભ્યતા (सं.) विवेक, ज्ञान, नागरिकता, शिष्टता, नम्रता, भलमंसी, शराफत, कुलीनता, योग्यता ।
સમ (सं.) संग साथ सूचक उपसर्ग, सुंदर, अच्छा, अत्यंत, ज्यादः (वि.) सरीखा, समान, अनुसार, बराबर, चौरस, सपाट, पूर्ण संख्यावाला, निष्पक्षपाती (सं.) कसम, सौगंध, शपथ ।
સમઆપવા (कि.) कसम देना ।
સમદેવા (कि.) पूर्ववत् । [नहीं ।
સમખાવાનથી (कि.) बिलकुल
સમઅપૂર્ણાંક (सं.) अपूर्णांक की एक जाति, (गणितमें)
સમઈ (सं.) पीतलका दीपक, पीलसोत, पीतलकी दीवट ।
સમકાલી (वि.) एकही समयका, समकालीन ।
સમક્ષ (अ०) रूबरू, सामने, पास नजदीक, मुहं सामने ।
સમગ્ર (वि.) तमाम, सारा, सब ।
સમચોરસ (वि.) जिसके चारों कोने समान हों ।
સમછેદ (वि.) समान छिद्रवाला ।
સમધિત (सं.) धर्मका सच्चा मार्ग ।
સમજ (सं.) अक्ल, बुद्धि, समझ, टीका, व्याख्या, कारण, ज्ञान, शोधक बुद्धि ।
સમજનાઘરમાઆવવું (कि.) उम्र पाना, बालिग होना, (सं.) सलाह सयानापन ।
સમજણું (वि.) समझदार, स्याना होशियार, चतुर, बालिग ।
સમજદાર (वि.) पूर्ववत् ।
સમજવું (कि.) समझना, वाकिफ होना, मनमें तुलना, विचारकरना, सलाह होना, मिलना, अंदरही अंदर समाधान होना ।
સમજાવવું(कि.)समझाना, बुझाना, सुलाह करना, ठंडाकरना शान्त करना, ठगना, पोटना, मनमें उतारना ।
સમજુ–ૢ (वि.) समझदार, सयाना, होशियार, चतुर ।

સમજુત-તી (સં.) समझौता, सलाह, संधि, ऐक्य, सुलह, समाधान, निपटारा, विरोधशांति, टीका, व्याख्या ।

સમડી (સં.) एक जातिका पक्षी ।

સમડો (સં.) समडीका नर पक्षी शमी वृक्ष ।

સમણુ (સં.) जितना समासके उतना, अधिक गर्म जलको कुछ ठण्डा जल डालकर आवश्यकतानुसार ठंडा करनेके लिये शीतळ जळ ।

સમણું (સં.) सपना, स्वप्न ।

સમણી-માણી (સં.) सुनारका एक औजार विशेष । [समान ।

સમતલ (સં.) चौरस, सपाट,

સમતલપૃષ્ઠ (સં.) पूर्ववत् ।

સમતા (સં.) बराबरी, समानता, शांति, मनपर अंकुश ।

સમતોલ (વિ.) समान वजनदार, बराबर, वजनमें समान ।

સમદર્શી (વિ.) बेलाग, पक्षपात-शून्य, समान दृष्टिवाला ।

સમદુઃખી (વિ.) समान दुःखवाला,

સમદૃષ્ટિ (સં.) समान दृष्टि, एक नज़र । [रंगका चमड़ा ।

સમદો (સં.) ताजा और बिना

સમધાત (વિ.) ऐसी औषधि जो न गर्म हो और न ठंडी हो, माफ़िक ।

સમન (સં.) सम्मन, सरकारकी ओरसे हाज़िर होनेके लिये बुलानेका कागज । [लता विशेष ।

સમંદરસોખ (સં.) एक प्रकारकी

સમંધ (સં.) सम्बन्ध, नाता, योग । [सगा, (अ०) विषयक, लिये ।

સબંધી (સં.) सम्बंधी, रिश्तेदार,

સમબાજુ-ચોખુણ (સં.) चौरस ।

સમબાજુ-ત્રિકોણ (સં.) ऐसा त्रिकोण जो तीनों ओरसे समानहै ।

સમભાગ (સં.) बराबर हिस्सा, समान भाग ।

સમભાવ (સં.) समान प्रेम, एकसी भावना, समता, साम्य, तुल्यता, समानताबुद्धि ।

સમય (સં.) वक्त, काळ, बेळा, अवसर, ऋतु, मौसिम, योग, प्रसंग, अवकाश ।

સમય વર્તવો (ક્રિ.) समय देखना, बात समझना ।

સમય વર્તે સાવધાન (ક્રિ.) समयानुसार बर्ताव करना ।

સમય ભરાઈ જવો (ક્રિ.) वक्त पूरा होजाना ।

સમયસૂચકતા (સં.) समयचातुरी, समयानुसार बर्ताव तथा भाषण ।

સમયાનુસાર (अ०) प्रसंगानुसार, वक्तके मुआफ़िक ।

સમર (सं.) युद्ध, लड़ाई, रण, कामदेव पंचशर, सात संख्याका सूचक संकेत, (क्रि.) यादकर, स्मरणकर । [स्तुतिवाद ।

સમરણ (सं.) स्मरण, सुधि, चेत,

સમરણી (सं.) माला, तसबीह ।

સમરથ (वि.) समर्थ, सामर्थ्य-युक्त, बलवान ।

સમરપણ (सं.) समर्पण, सौंप, त्याग, अर्पण, दान ।

સમરપણી (वि.) स्नान करके अपने हाथसेही भोजन बनाकर खानेवाला ।

સમરવું (क्रि.) स्मर्ण करना, याद करना, सुधि लेना, सुधरना ठीक होना, दुरुस्त होना ।

સમરાંગણ (सं.) युद्धक्षेत्र, लड़ाईका मैदान, रण-भूमि, मैदानेजंग ।

સમરાવવું (क्रि.) ठीक कराना, दुरुस्त कराना, सुधराना ।

સમરાવું (क्रि.) ठीक होना, सुधरना । [छोटा, अल्प, थोड़ा ।

સમરી (सं.) संक्षेप, सार, (वि.)

સમર્થ (वि.) शक्तिमान, योग्य, शक्तिसम्पन्न, धनाढ्य, बलवान ।

સમર્પણિયા (वि.) समर्पणदीक्षा लेनेवाला, जिसने वल्लभ मतके पुष्टि मार्गके अनुसार समर्पणकी दीक्षा ली हो ।

સમર્પવું (क्रि.) अर्पण करना, भक्तिपूर्वक भेट करना, देना, पूजन करना, समर्पण करना ।

સમલો (सं.) मुसलमानी ढंगकी टोपी विशेष ।

સમવયી (वि.) समान उम्रवाला, समवयस्क, जोड़ीदार, बराबरीका ।

સમવાય (सं.) संग्रह, समूह, सम्बंध ।

સમવિત (वि.) समान जाननेवाला ।

સમવિષમ (वि.) कमज्यादः ऊंचानीचा । [ऊंच नीच ।

સમવિષમતા (सं.) न्यूनाधिक्य,

સમવું (क्रि.) समाया, बराबर भराना, ठीक बैठना, समाजाना ।

સમશેર (सं.) तलवार, खड्ग, कृपाण ।

સમશેર બહાદુર (सं.) योद्धा, वीर, इस नामसे एक पदविशेष ।

સમષ્ટિ (सं.) विराट, समूह, सम्मेलन, सम्यग्व्याप्ति, समस्तपन ।

સમસમાહાર(सं.) शून्य, निर्जन ।

સમસાનિયું (वि.) मुर्देके साथ श्मशानतक जानेवाला, अग्निसंस्कार में शामिल होनेवाला, श्मशान सम्बन्धी, मसानका ।

સમસ્ત (वि.) सारा, सब, तमाम, कुल, सम्पूर्ण, बिलकुल ।

સમસ્યા (सं.) संकेत, इशारा, निशानीचिन्ह, श्लोकके एक पादसे शेष तीन पादोंकी पूर्ति, किसी छन्दका एक अन्तिम पाद । संकेत कथन ।

સમાગમ (सं.) संगति, मिलाप, सोहबत, साथ, पहिचान, सम्मिलन, आगमन, संभाषण ।

સમાચાર (सं.) खबर, संवाद, संदेश, वृत्त ।

સમાજ (सं.) मंडली, सभा, जातीय संख्या, समूह, समुदाय, मीटिंग ।

સમાણુ (सं.) जितना समावे उतना (वि.) समान, बराबरीका ।

સમાણું (वि.) पूर्ववत् ।

સમાણી (सं.) सुनारका एक औज़ारविशेष, सुहानी (औज़ार)

સમાણો (सं.) पूर्ववत् ।

સમાધ (सं.) साधुसंतके अग्निदाह संस्कारके स्थानपर बना हुआ चबूतरा या छत्री । मठ ।

સમાધાન (सं.) उत्तर, शंकाका निराकरण, निपटारा, शांति ।

સમાધાની (सं.) शान्ति, निवृत्ति, शंकाकी निराकृति, चैन, तसल्ली, खुशी ।

સમાધિ (सं.) ध्यान, योगकी क्रियाविशेष, मनःसंयोग । योगका आठवां अंग । [ध्यानकास्थित ।

સમાધિસ્થ (वि.) समाधिकी दशामें,

સમાન (वि.) तुल्य, एकसा, सरीखा, बराबर, सम, सीधा, सपाट, जैसा ।

સમાનતા (सं.) बराबरी, तुल्यता ।

સમાનપ્રકૃતિ (सं.) जिसकी सदा एक सरीखी हालत रहती हो ।

સમાનવૃત્તિ (सं.) पूर्ववत् । [(शब्द;

સમાનાર્થ (वि.) एकही अर्थके

સમાન્તર (वि.) समान दूरीपर ।

સમાપ્ત (वि.) होचुका, पूर्ण, सिद्ध, आखीर, अन्त, खतम, अच्छे प्रकार प्राप्तहुवा ।

સમાપઠ (सं.) अपने इष्ट देवका स्मर्ण (जैनी लोगोंमें दो घड़ी तक भजन करते बैठते हैं वह)

સમાયક (सं.) अपने इष्टदेवका स्मरण (जैनी लोगोंमें दोघड़ीतक भजन करने बैठते हैं) वह ।
સમારંભ (सं.) शुरूआत, ठाठबाठ से कार्यारंभ, धूमधाम ।
સમાર (सं.) पटेला, (खेतीमें) आसरा, आश्रय, सहारा ।
સમારવું (क्रि.) सुधारना, दुरुस्त करना, संभालना, काटछाँटकर तय्यार करना (रसोईकेलिये) ठीकठाक करना, अवश्यकतानुसार हेरफेर करना, शृंगार करना, काटना, तराशना, मारना ।
સમાળવું (क्रि.) सभालना, बचाना रक्षाकरना, अनुसन्धान करना, जांचना, देखभाल करना ।
સમાવે (सं.) जगह, खालीस्थान, समान लायक स्थान ।
સમાવવું (क्रि.) समाना, घुसाना, जगह करना, प्रवेश कराना, दबाना नरम करना, शांत करना, शमन करना, मनकी मनमें रखना ।
સમાવું (क्रि.) माना, जगहहोना, घुसना, प्रविष्ट होना, गुस्सा नरम होना, हिलमेलके रहना ।
સમાવેશ (सं.) पैसार, मिलाप, प्रवेश, जगह, स्थान, द्वार ।
સમાસ (सं.) समानेकी जगह, खाली स्थान, ससुराळमें रहती हुई स्त्रीके कष्टोंको दूर करके उसका वास करना, व्याकरणकी एक प्रक्रिया, पदोंका योग, अलग अलग अर्थ के दो शब्दोंका मिलकर एक अर्थवाची शब्दका बनना ।
સમાસ-ત (वि) प्यारसे रहना,संयुक्त मिलित, मिलाहुआ, फंसा हुआ ।
સમાહાર (सं.) समुचय, इकट्ठा करना, पक्षेप । [पेड़ ।
સમી (सं) शमीवृक्ष, खेजड़ेका
સમીકરણ (सं) जो बराबर न हो उसे बराबर करना बीज गणितकी वह क्रिया जिसकेद्वारा अज्ञात संख्या जानी जाती है ।
સમીપ (अ०) पास, निकट, नजदीक, नगीच । [हवा ।
સમીર (स.) पवन, वायु, मरुत,
સમીરણ (सं) पूर्ववत् ।
સમીશીળે (अ०) बिना हरकत के बिना आंच या गर्मीके ।
સમીસંધ્યા-સાંજ(सं.)सध्यासमय, दीपक जलनेके समय, दिनान्त ।
સમું (वि.) सारा, पूरा, अक्षत खरा, बरोबर, ठीक, दुरुस्त, सम्पूर्ण, तन्दुरुस्त, स्वस्थ, सरीखा समान, बरोबरका ।

સમુંદરવું (क्रि.) दुरुस्त करना, सुधारना, साबित करना, पूर्ण करना ।

સમુચ્ચય (सं) जत्था, एक चित्त, समुदाय, समाहार, परस्पर निरपेक्ष बहुतसे शब्दोंका एकत्र होना

સમુદાય (सं.) समूह, झुंड, सब, इकट्ठा. भीड़ समू., ढेर ।

સમુદ્ર (सं) सागर, उदधि, पयोधि

સમુદ્રકાંઠો (सं.) समुद्रतट, दरियाका किनारा ।

સમુદ્રધુની (स.) दो बड़े समुद्रोंको मिलानेवाला छोटा और पतला जलभाग ।

સમુદ્રફળ (सं.) एक प्रकारकी बनस्पति, फल विशेष, यह औषधियों में काम आता है [झाग समुद्रफेन

સમુદ્રીયુ (स.) समुद्रके जलके

સમુંરત (सं.) सुमुहूर्त, अच्छा समय

સમુળગું-ળું (वि.) सारा, सब, तमाम, (अ०) कुछभी, जरा, थोड़ाभी नहीं ।

સમૂહ (सं.) दल, यूथ, समुदाय ढेर, थोक भीड़, संग्रह ।

સમૃદ્ધ (वि.) बर्द्धित, अभ्युदयित, अमीर, धनवाला, सौभाग्यवान् ।

સમૃદ્ધિ (सं.) अभ्युदय, मंगल, संपत्ति, शक्ति, उत्कर्ष ।

સમે (अ०) वक्तपर, मौसिमपर, समयपर ।

સમેટવું (क्रि.) एकत्रित करना, समेटना, इकट्ठा करना, बटोरना, संकलन करना, संग्रह करना ।

સમેત (अ०) सहित, युक्त, साथ

સમેદાની-(सं.) देखो समई ।

સમૈયો (सं.) किसीभी धर्मके मनुष्यों का सम्मेलन, धर्म के मनुष्योंके इकट्ठे होनेका दिन, पर्वदिन

સમો (सं.) समय, वक्त, काळ, ऋतु,-मौसिम, दाव, लाग, संधि ।

સમો ખારાબ છે (क्रि.) दिननाजुक हैं, वक्त खराब है । [प्रसंग आना ।

સમો આવવો (क्रि.) मौकाआना

સમો જોવો (क्रि.) अवसर देखना, मौका ताकना ।

સમો કામ લાગ્યું તેમ ખરૂં (ક) जो वक्तपर बनजावे, वही ठीक ।

સમોતી (सं.) साथ रहनेसे मिलने योग्य सुख और शान्ति । [साथही ।

સમોનું (वि.) एकही नार, सब

સમોવડ-ડી (सं.) समानता,

समोवड-डियो (वि.) सरीखा, समान, तुल्य, बराबरीका ।
समोवडाई (सं.) समानता, बराबरी, तुल्यता ।
समोर (अ०) सामने, सन्मुख, समक्ष, आगे, दृष्टिके सामने ।
समोल (सं.) सामळ, सेल, बैल के कंधेपरके जुएके दोनों छेदोंमें को दोनों सिरोंपर होते हैं, डालने की दो मेखें ।
संप (सं.) ऐक्य, एका, संघ, हिलमिलकर कामका करना ।
संपत (सं.) सम्पत्ति, धन, दौलत, वैभव, सुभाग, समृद्धि, वैभव ।
संपति (सं.) पूर्ववत् ।
संपन्न (वि.) परिपूर्ण, धनाढ्य, पूरा, सिद्ध, युक्त, सहित ।
संपसम्पी (अ०) मिलजुलकर, हिलमिलकर ।
संपर्क (सं.) साथ, सम्बन्ध, लगाव, संसर्ग, मिलाव, संयोग ।
संपादन (सं.) निरूपण, कथन, समाप्ति, निष्पादन, संगठन, प्राप्ति, लाभ, निर्माण ।
संपादवुं (क्रि.) संपादन करना, निर्माण करना, बनाना, काम निकालना ।
संपीलुं (वि.) एकमत, एकदिल ।
संपुट (सं.) डब्बा, डबिया, गर्त, ग्रहारस्थान, टोकरी, बकस, जैसा एक नीचे वैसाही एक ऊपर जिनके रखनेसे बीचमें पोल रहती हो । (वि.) जोड़ा हुआ । [पूरा ।
संपूर्ण (वि.) समस्त, परिपूर्ण,
संप्रदान (सं) चतुर्थीकारक, (व्याकरणमें) सम्यक रूपसे दान ।
संप्रदाय (सं) रस्म, रीति, रवाज, चलन, धर्मपंथ, मत, पंथ, वर्ण, जाति ।
संबंध (सं) लगाव, नाता, संयुक्त, रिश्ता, बंधुत्व, सगाई ।
संबंधी (वि) विषयक, सम्बन्ध रखनेवाला, नातेदार, नैतत ।
संबंधीसर्वनाम (सं.) परस्पर संबंध रखनेवाले (व्याकरणमें)
संबोधन (सं.) कारक विशेष, सन्मुखीकरण, हाक, पुकार, ओ, अरे, हे, रे आदिशब्द संबोधन शब्द ।
संबोधवुं (क्रि.) कहना, बुलाना, पुकारना, आवाज देना, मेळ, जन्म प्रमाण ।
संभव (सं.) योग्यता, होने योग्य होनाहार, अस्तित्व, संभावना ।

સંભવવું (क्रि.) होना, बनना, शुरूआत होना ।

સંભવિત (वि.) शक्य बननेयोग्य ।

સંભળાવવું (क्रि.) संभालना, जताना, ज़ाहिर करना ।

સંભાર (सं.) मसाला, सामान, सामग्री, रसद ।

સંભારણું (सं.) नाम रखनेके उपलक्ष्यमें दिया हुआ पुरस्कार, जिससे स्मरण रहे ।

સંભારવું (क्रि.) याद करना स्मरण करना, याद कराना, कहना ।

સંભારવું (वि.) मसालेदार, सामग्री सहित ।

સંભાવના (सं.) संभव, दुविधा, संदेह, अनिश्चित, इस नामका एक अलंकार, (साहित्यमें) ।

સંભાવિત (वि.) प्रतिष्ठित, लायक, योग्य, इज्जतदार ।

સંભાષણ (सं.) बातचीत, परस्पर भाषण, बोलचाल ।

સંભાળ (सं.) देखरेख, रक्षा, चौकसी, तलाश, अनुसंधान, आश्रय, सहारा, आसरा ।

સંભાળવું (क्रि.) रक्षा करना, लालनपालन करना ।

સંભે (वि.) सब, सारा, तमाम ।

સંભોગ (सं.) स्त्रीप्रसंग, मैथुन, आनन्द, इस्तेमाल ।

સંભોગી (वि) भोगनेवाला, विलासी, इस्तेमाल करनेवाला ।

સંભ્રમ (सं.) आदर, सन्मान, घबराहट, भय, डर, त्रास, भ्रांति, व्याकुलता ।

સંમત (वि.) अनुमत, स्वीकृत, ईप्सित, अभिमत, अनुमोदित, संमति, सलाह, राजीनामा, इच्छा, स्वीकार । [परामर्श, स्वीकृति ।

સમ્મતિ (सं) सलाह, मन्त्रणा,

સમ્મર્દ (सं.) लड़ाई, झगड़ा, टंटा, फ़साद, घमसान लड़ाई, मारकाट ।

સમ્માર્જની (सं.) झाड़ू, कूंची, बुहारी । [रूबरू, मुखके सामने ।

સમ્મુખ (वि.) सामने, सम्मुख,

સમ્યક્ (अ०) अच्छी प्रकारसे, बराबर । (वि) अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ ।

સંયમ (सं.) निग्रह, प्रत्याख्यान ।

સય (वि.) सौ, शत, १०० ।

સર (सं.) ताल, तालाब, तड़ाग, डोरा, धागा, मस्तक, सिर, माथा, शेअर, हिस्सा, भाग, आंक (वि.) ऊपरी, मुख्य, (अ०) अनुसार, प्रमाणसे ।

સરનાયક (वि.) नायकका ऊपरी पद, नायकसे उच्च कर्मचारी ।

સરસુબો (सं.) सूबासे ऊपर काम करनेवाला, कलेक्टर ।

સર કરવું (क्रि.) जीतना, फतह, करना, अधिकारमें करना, कब्जेमें करना ।

સરધો (सं.) सुगन्धित द्रव्य बेचनेवाला, गन्धी, इत्रफरोश ।

સરકટ (सं.) वृक्षविशेष, लकड़ियोंका गट्ठा, माली ।

સરકજ (सं.) नाथ, लगाम, नकेल।

સરકણું (वि.) सरकनेवाला, फिसलनेवाला, रपटनेवाला ।

સરકલ (सं.) गोल, कुंडल, वृत्त ।

સરકવું (क्रि) सरकना, हिलना, हटना, खसकना, जाना, घुसना ।

સ રકસ (सं.) बनोरी, बाना, जुलूस, घुड़दौड़का खेल ।

સરકાણું (वि.) देखो સરકણું ।

સરકાર (सं.) राजा, शासक, पति, स्वामी, मालिक रखी हुई स्त्री ।

સરકારી (वि.) सरकारसे संबंधयि, राज्य सम्बंधी, प्रकट ।

સરકારી રસ્તો (सं.) आमरस्ता, सब लोगोंके आने जानेका मार्ग ।

સરકારી માણસ (सं.) अमलदार, राज्यसे सम्बन्ध रखनेवाला व्यक्ति ।

સરકાર દરબારે ચઢવું (क्रि.) दावा करना, नालिश करना, कचहरी दरबारमें आना जाना ।

સુરકાવવું (क्रि.) सरकाना, थोड़ा सा आगे बढाना, धीरेसे हिलना ।

સરકો (सं.) सिरका, अत्यंत खट्टा पदार्थ जो फल आदिको सड़ाकर बनाया जाता है ।

સરક્યુલર (सं.) सर्वत्र फैलनेके लिये निकाली हुई सरकारी आज्ञा ।

સ ખાવવું (क्रि.) मिलान करना, मुकाबिला करना ।

સરખામણી (सं.) मुकाबिला, मिलान ।

સરખું (वि.) समान, बराबर, सरीखा, मिलताजुलता, एकसा, एकरूप, सदृश्य, योग्य लायकी ।

સરખેસરખું (वि.) बिलकुल, मिलताजुलता, बराबरीका ।

સરગ (सं) स्वर्ग, वैकुंठ, ऊर्ध्वलोक ।

સરગવો (सं.) एक प्रकारका वृक्ष ।

સરઘસ–ઘસ (सं.) बनोरी, बाना, जलूस, प्रोसेसन ।

સરઘસે ચઢવું (क्रि.) फजीहत होना, चर्चा होना, जलूस निकलना ।

સરંશ (सं.) मुख्य नाविक, बड़ा खलासी, जहाजका कप्तान । अंकुरित दाल तथा अन्न । [रचना ।
સરજણુ—ન (सं.) सृजन, निर्माण,
સરજણહાર (सं.) पैदा करनेवाला, निर्माता, सृष्टिकर्त्ता, विधाता ।
સરજવુ (क्रि.) उत्पन्न करना, पैदा करना, जन्मदेना ।
સરજાવુ—વુ (क्रि.) पैदाकरना, बनाना, उत्पन्नकरना ।
સરજોરી (सं.) जबरदस्ती, बलात्कार, जुल्म, जोर, तोफान, मिरचाी, सामने होना ।
સરંજામ (सं.) सामग्री, सामान, सरकारकी ओरसे दी गई इनाम, जमीन, वाहन, वस्त्रादि ।
સરડવુ (कि.) डोरीसे बांसका खपची, वा कमची वगैरः बांधना
સરડો (सं.) जंतु विशेष गिरगट ।
સરણાઈ (सं.) सहनाई, मुखसे बजानेका वाद्य ।
સરત (सं.) देखो शरत याद, स्मरण, ध्यान, नजर, चित्त, दृष्टि, होड़, बोली, करार, कौल ।
સરતા (सं.) सुरति, ध्यान, स्मर्ण ।
સરદાર (सं.) अगुआ, लीडर, नेता, मुख्य, सेनानायक, जागीरदार अमीर, धनिक ।
સરદારી (सं.) अगुआपन, लीडरशिप, अमीरी, मुख्यता, नेतृत्व ।
સરદે (वि.) कृपालु, दयालु, कारुणिक ।
સરનશીન (वि.) मुख्य, सरताज, शिरोमणि, (सं.) मुखिया, स्वामी।
સરનામુ (सं.) चिठ्ठीपरपता, श्रीनामा । [ईंधन ।
સરપણ (सं.) जलानेकी लकड़ी,
સરપંખો (सं.) एक प्रकारकी औषधि ।
સરપાવ (सं.) इनाम, बख्शीस, पुरस्कार, उपहार, सिरोपाव ।
સરપંચ (सं.) मुख्यपंच, पंचोंमें मान्य व्यक्ति।
સરફરાજી (सं.) स्तुति, प्रशंसा, कीर्तिस्तवन पदया वेतनवृद्धि ।
સરફરાજ (वि.) नामांकित, प्रसिद्ध पदवी प्राप्त।
સરભર (वि.) सामान, बराबर, सदृश, तुल्य, पूरम्पूर ।
સરભરા (सं.) आदर, सत्कार, मान, सेवा बन्दगी ।
સરભિયો (सं.) छोटाकीड़ा, क्षुद्र कृमि, चुरने, गुदामार्गसे निकलनेवाला छोटासा कीड़ा ।

सरव (सं.) वृक्ष विशेष, यह वृक्ष सोधा ऊंचा जाता है।

सरवडियो (सं.) थोड़ी थोड़ी जल वृष्टि, फुहार, फुहार।

सरवडा (सं.) पूर्ववत्—सारस के समान पक्षी विशेष, कुंज।

सरवण (सं) इक्कीसवा, नक्षत्र, श्रवण नक्षत्र विशेष, इस नामसे प्रसिद्ध ब्राह्मण बालक जो अपने अंधे माता पिताका भक्त था और अंतमें महाराजा दशरथके बाण-द्वारा भूलसे मारागया, कावाड्या ब्राह्मण, साधु, गुरु हैं, जलजन्तु विशेष। [श्रमित।

सरवुळु (वि.) भटकता हुआ

सरवस (सं) सर्वस्व, सबकुछ, सब, समस्त, तमाम, कुल।

सरवा (सं.) वर्षाऋतुकी फुंहार।

सरवायु (सं.) हानिलाभका हिसाब, बचत का हिसाब, जमा खर्चका कागज, वार्षिक हिसाब।

सरवाळे (अ०) अन्तमें, आखिरकार।

सरवाळो (सं.) जोड़ योग, बहुतसी रकमोंका एकी करण।

सरवु (क्रि.) खसना, सरकना, गिरना, टपकना, सफल होना, खीजना, (वि.) जो अच्छी तरह समझ सके, तीव्र, उच्चस्वरसे भाषण।

सरवे (वि.) सब, समस्त, सारे, तमाम, (सं.) भूमिका माप, खेतोंका माप, सर्वे [करनेवाला।

सरवेयर (सं.) नापनेवाला, सर्वे-

सरवो (सं.) श्रुव, हवनमें घी छोड़नेका चम्मच, यज्ञीय चमस, खूब सुननेवाला, तेज कानवाला, व्यक्ति, उदार, पात्रविशेष, सराई, मालसा।

सरस (वि.) उत्तम, श्रेष्ठ, उम्दा, असल, रसयुक्त, सुन्दर। (सं.) सरेस, एक चिपकनेवाला द्रव्य। एक प्रकारका वृक्षविशेष।

सरस देशी सं.) मुख्य समाचार।

सरसर (अ०) झटसे निकल जानेवाला, (सं.) बच्चोंका एक खेल विशेष। [सरसों।

सरसव (सं.) एक प्रकारका धान्य,

सरसाई (सं.) चढाचढी, बराबरी। खींचातानी।

सरसामान (सं.) अटर सटर घरका सामान।

सरसासरसी (सं.) देखो सरसाई।

सरसिधु (सं.) सरसोंका तेल, केंचुआ, गिंडोला, वर्षा ऋतुमें मिट्टीमें उत्पन्न होनेवाले सांप सरीखे जानवर।

સરસીધું (सं.) खाने पीनेके लिये आटा दाल घी नमक बगैरः सामान । सीधा, रसद ।

સરસું (अ०) नजदीक, पासमें, (वि.) इच्छित, मनचाहा, (वि) सरस, बढ़िया ।

સરસુબો (सं) सूबासे बड़ा, एक सरकारी उच्च कर्मचारी ।

સરસ્વતી (सं.) वाणी, भारती, वाग्‌देवता, शारदा, वागीश्वरी, भाषा, ब्रह्माकी पुत्री ।

સરસ્વતીપૂજન (सं.) ग्रंथपूजन, पुस्तकपूजन, शारदापूजन ।

સરસ્વતીસદન (सं.) पाठशाला, विद्यालय, स्कूल मदरसा ।

સરળ (वि.) सीधा सादा, सहज, उदार, सच्चा, ईमानदार, निष्कपट, छलशून्य, द्रवित, पतला ।

સરળરીતે (अ०) सहजहीमें, साधारणतया, सरळ रीतिसे ।

સરળસ્વભાવ (सं. अच्छा स्वभाव, खुश मिज़ाज़, सीधे स्वभाववाला ।

સરળ રસ્તો (सं.) सुगम मार्ग, सीधी राह । [उतारता ।

સરળતા (सं.) सिधाई, सादगी,

સરહદ (सं.) अतिमसीमा, राज्यकी, हद, सीमा ।

સરાંઠી (सं.) कपास वृक्षके डंठल, खाजर ।

સરા (सं.) मोहल्ला, पौर, धर्मशाला, गाम, घर, सराय, मोहाल । ऋतु, समयकाल, प्रवाह, जलकी धारा ।

સરાકડુ(सं)फांस,(लकड़ी या बांसकी)

સરાટ—સ (सं.) किसी पदार्थके सूंघने या खानेसे ओंभ या नाकमें होनेवाला असर ।

સરાડે (अ०) सीधे रास्ते ।

સરાડે પાડવું —ચઢાવવું (क्रि.) रास्ते लगाना, चलता करना ।

સરાડે ચઢવું (क्रि.) रास्ते लगना, चलत बनना ।

સરાણ (सं.) शाण, सान, अस्त्र शस्त्रोंपर बाढ करनेका गोल पत्थरका यंत्रविशेष, सिकल ।

સરાણ ઉપર ધસવું (क्रि.) धार चढाना, बाढ करना ।

સરાણે ચઢાવવું (क्रि.) खूबअत कर देना, पार पड़ना । [सिकलीगर ।

સરાણિયો (सं.) धार चढानेवाला

સરાધરા (अ०) आदिसे अततक, अथइति, आद्यंत ।

સરાધિયાં (सं.) श्राद्धके दिन ।

સરાફ (सं.) साहूकार, सर्राफ, हुंडी रुपया पैसा बगैरःका व्यापारी ।

સરાફી (सं.) साहूकारी, सराफी। (वि.) व्यापार सम्बन्धी, बराबर, ठीक।

સરાબ (सं.) दारू, मदिरा, वारुणि।

સરામણું (सं.) ञाव।

સરાર (अ०) ठेठ।

સરાવડું (सं.) सराई, मिट्टीका दीपक मृण्मय पात्रविशेष।

સરાવવું (क्रि.) श्राद्ध कराना। बर्मासे छिद्र करना, बींधनेसे बेधना। अंजना, आंखमें लगवाना। डालना, पड़ना (अश्रु)।

સરાવું (क्रि.) अंजाना, खुशी होना, आनन्द पाना।

સરાસર-રી (अ०) अंदाजन, लगभग, प्रायः। (सं.) एवरेज, औसत, अन्दाज़, अनुमान।

સરાહ(सं.) प्रशंसा, तारीफ, सराहना।

સરાહવું (क्रि.) प्रशंसा करना, तारीफ करना, चलना, फुलाना।

સરાહી (वि.) प्रशंसाके योग्य, स्तुत्य, श्लाघ्य, मनोहर, सुशोभित।

સરિભત (सं.) साथी, मददगार, सहायक।

સરિતા (सं.) नदी, सोता, स्रोता।

સરિયત (सं.) देखो शरत।

સરિયાણ (वि.) सीधा, अच्छा, सब लोगोंके योग्य, प्रगट।

સરિઆમ (सं.) प्रगट, जाहिर, सरेआम, सब लोगोंके लिये। सीधा जाना हुआ, खुला।

સરિયો (सं.) शलाका, ज्वारबाजरेके सिरे-भुट्टे।

સરીઠાર (वि.) श्रीकार।

સરૂ (वि.) सराहिटवाला, (सं.) थंभेपर रखाजानेवाला गोल चित्रित लकड़ीका टुकड़ा।

સરૂ (सं.) वृक्ष विशेष, (अ०) शुरू आरंभ, प्रारंभ।

સરૂપ (सं.) सुरूप, सुन्दरवेश, स्वरूप, शकल, सूरत, (वि.) एकही सूरतका, मिलती जुलती शकलका, समान, सरीखा।

સરૂપતા (सं.) समानता, सादृश्य बराबरी, चारप्रकारकी मुक्तिमेंसे एक मुक्ति विशेष।

સરેઆરે (अ.) खुल्लमखुल्ला, प्रकट रीतिसे, सरे मैदान। [सूचाही।

સરેરાશ (अ०) एक सरीखा

સરેશ (अं०) देखो સરસ।

સરૈયા (सं.) सुगन्धित द्रव्य बेचनेवाला, गन्धी।

સરોજ (सं) कमल, पद्म, पंकज।

सरोडवुं (क्रि.) पशु भाग न जावें इसवास्ते दो पशुओंको एक दूसरे के गळेसे एकही रस्सेसे बांधना।
सरोडुं (सं.) ज्वार बाजरेके पौधे का डंठल-नरकट।
सरोतरी (वि.) वाजिबी, उचित, न्यायानुमोदित।
सरोदो (सं.) स्वरोदय, नाकके श्वासकी गतिको देखकर भूत भविष्य जाननेकी विद्या, दोनो नथनोंमें समान सांस रखनेकी साधना, एक प्रकारका तार वाद्य विशेष, सारंगी, सरोता, सुपारी काटनेका औज़ार विशेष।
सरोरुह (सं.) देखो सरोज (तड़ाग।
सरोवर (सं.) ताल, सर, तलाब,
सरोष (वि.) क्रुद्ध, कुपित, गुस्से वाला, क्रोधी। [प्रंथभाग, रचना।
सर्ग (सं.) सृष्टि उत्पत्ति, अध्याय,
सर्प (सं.) सांप, भुजंग, अहि, (अ०) जल्दीसे, शीघ्रतापूर्वक।
सर्पवुं (क्रि.) दौड़जाना, सांपकी तरह झटपट निकल जाना।
सर्व (वि.) सब, सारा, समस्त, संपूर्ण।
सर्वज्ञ (वि.) सर्ववेत्ता, (सं.) ईश्वर ज्ञानी।
सर्वज्ञता (सं.) सबकुछज्ञान, ईश्वरत्व, ज्ञानीपन।
सर्वश्री (सं.) श्राद्धकी किया विशेष।
सर्वतोभद्र (सं.) यज्ञकी प्रधान वेदी, मण्डल विशेष, एक प्रकारकी सैन्य रचना।
सर्वत्र (अ०) सबजगह, चारोओर।
सर्वथा (अ०) सबप्रकार, सबतरहसे।
सर्वदा (अ०) हमेशा, नित्य, रोज।
सर्वनाम (सं.) कुछशब्द जिनका प्रयोग अन्यशब्दोंके अर्थोंमें किया जासके।
सर्वप्रिय (वि.) सबकाप्यारा।
सर्वभक्ष (वि.) सबकुछ खाजानेवाळा, (सं.) कौआ, बकरा, अग्नि।
सर्वमान्य (वि.) सबोंका मानाहुआ।
सर्वरी (सं.) रात्रि, रात, निशा, शब।
सर्वव्यापक (वि.) सब जगहका रहनेवाला, घटघट वासी।
सर्वस्व (सं.) अपना सबकुछ।
सर्वशक्तिमान (सं.) ईश्वर, प्रभु, परमात्मा।
सर्वांग (सं.) सारा अंग, सबशरीर।
सर्वातीत (वि.) सबसे अलग, न्यारा।

सर्वानुमते (अ०) सर्व सम्मतिसे सबोंकी अनुमतिद्वारा ।

सर्वेश (सं.) जगदीश ईश्वर ।

सर्वो (सं.) यज्ञीयचमस, हवनमें घृत छोड़नेका पात्र विशेष श्रुवा ।

सर्वोत्कृष्ट (वि.) सबसे अच्छा, सर्वोत्तम ।

सल (सं.) शिला, चौरस पत्थर ।

सलक्षणुं-ण्णुं (वि.) सुलक्षण युक्त, सयाना, अच्छे लक्षणवाला, चतुर ।

सलंग (वि.) साथहीसाथ, सब ।

सलज्ज (वि.) लज्जायुक्त, मर्यादा युक्त, शर्मवाला ।

सल्तनत (सं.) राज्य, शासन ।

सलपी (सं.) एकजातिकी मछली।

सलपो-पो (सं.) दम, मादक पदार्थ, गांजा, फेरा, चक्कर, समय।

सलाट (सं.) शिल्पवट, पत्थर घड़नेवाला, शिल्पी (पत्थरका)

सलाटी (सं.) मोची और चमारोंका वह पत्थर जिसपर वे जूतोंको रखकर छीलते हैं, धार करनेका पत्थर ।

सलाडुं (सं.) शिला, पत्थर, पाषाण, चमारोंके औजारोंपर धार करनेका पत्थर ।

सलाम (सं.) इज्जत, मान, प्रणाम अभिवादन ।

सलामत (वि.) क्षेम, आरोग्य, कुशल कायम, बरकरार, दृढ़मत ।

सलामती (सं.) शांति, सलामी आदर सरकार सूचक तोप या बन्दूकोंका शब्द ।

सलामी (सं.) तोप या बन्दूक चलाकर नंगी तलवारसे अथवा ध्वजा वगैरःसे सत्कार सूचक संकेत, जागीरकी आमदनीमेंसे थोड़ासा हिस्सा सरकारको देना ।

सलाह (सं.) मंत्रणा, सम्मति, शांत, मेळ, मत, दोस्ती, सम्बन्ध शिक्षा, मसलहत।

सलिता (सं.) देखो सरिता ।

सलिल (सं.) पानी, जल, तोय ।

सलुक (सं.) सलाह, मेळ, संघ, दोस्ती, चाल, आचरण, भलमन्सी व्यवहार ।

सलुकाई (सं.) अच्छी रीति, रिवाज।

सलुणुं (वि.) सलौना, रसयुक्त, मनोरंजक, मनोहर, कांतिमय, सुकुमार ।

सलुडुं (वि.) एकको दूसरेको कह कर लड़ाई झगड़ा करानेवाला ।

सलोणुं (सं.) देखो सलुणुं ।

સલેટ (सं.) स्लेट, पट्टी, पत्थरकी पटी (लिखनेकी) प्रस्तर पट्टिका

સલોકતા (सं.) एक प्रकारकी मुक्ति ।

સલોકો (सं.) श्लोक, विवाह के समय वरक'याका आपसमें बोलनेके श्लोक बद्धवचन ।

સલ્લ (सं.) वहम, शक, सन्देह, अंदेशा, अधैर्य ।

સવ (वि.) देखो સવ્ય बामकंधेपर यज्ञोपवीत धारण ।

સવઈ (सं.) देखो સવે, पुलिसका बिना काउनका साफा ।

સવડ (सं.) सगाई, सम्बन्ध, नातेदारी । [सहित ।

સવત્સ—ત્સા(वि.)बच्चावाली, बच्चे

સવર્ણ (वि.) एकवर्णका, एकरंगका, सरीखा, एकजाति ।

સવળવું (कि.) कुछकुछ हिलना, पासपासके पौधोंको उखड़ना ।

સવળું वि.) सीधा, सूधा, सुलटा, उचित, चाहिये जैसा, मनमाना ।

સવળાપાસાપડવા (कि.) सफलता मिलना, मनचाहाकाम होना ।

સવળે હાથે પૂજ્યા હશે (कि.) विधिपूर्वक पूजन किया होना ।

સવા (वि.) ठीक, अनुकूल ।

સવાકવા (सं.) एक प्रकारके जीव जो आचारमें या पापडोंमें होता है (वि.) अकस्मात्, एक और चतुर्थांश, १।, १¼ ।

સવાગજની છરી (सं.)कपट, प्रपंच ।

સવાઈ (सं.) सवाया, अधिक :

સવાઈયો (सं.) तांबेका सिक्काविशेष ।

સવાકો સવાયો (सं.) पूर्व त ।

સવાજ (सं.) अच्छा, आरोग्यता, तन्दुरुस्ती, जानवरोंकी मस्ती ।

સવજે આવવું (कि.) मस्तीमें आना, काम पीड़ित होना ।

સવાદ (सं.) स्वाद, मज़ा, ज़ायक', लज्जत ।

સવાદદાર (वि.) स्वादु, मज़ेदार, ज़ायकेमन्द, लज्जतदार ।

સવાદિયું (वि.) रसवाला, स्वादयुक्त ।

સાવાબ (सं.) परोपकार, धर्म, पुण्य ।

સવાયા (सं.) सवैया (पट्टीपहाड़ा)

સવાયું (वि.) सवाया, अधिक ज्यादः।

સવાર (सं.) सवेरा, प्रातःकाल, भोर, (सं.) घुड़सवार, सवारी करनेवाला, चढ़ैया, घुड़चढ़ा ।

સવારી (सं.) यान, वाहन, कूच, मुकाम, प्रोसेसन, जुलूस, आना जाना (किसी मान्य पुरुषका)

સવારૂં (अ०) जल्दी, सवेरेही समयानुकूल, समयपर ।

સવાલ (सं.) प्रश्न, जबाबकी मांग, अर्ज प्रार्थना ।
સવાલ કરવો-નાંખવો (क्रि.) मांगना, अर्ज करना । [बातचीत ।
સવાલજવાબ (सं.) प्रश्नोत्तर
સવાલખી-ખું (वि.) मूल्यवान, कीमती, बेशकीमती, अधिक मूल्यवाला ।
સવાલચિન્હ (सं.) प्रश्नचिन्ह,? ।
સવવું (क्रि.) गाभिन होना, गर्भ युक्त होना, पकड़ाना, चैन होना ।
સવાસણું-ણું (सं.) शुभेच्छा, आशीर्वाद, मिष्टभाषण, आजिज़ी नम्रता ।
સવાસો (सं.) सौ और पच्चीस एकसौ पच्चीस १२५ ।
સવિ (वि.) सब, सारा, तमाम ।
સવિતા (सं.) सूर्य, सूरज, रवि, उत्पन्न करनेवाला ।
સવિતાઈ (सं.) प्रकाश, तेज, शौर्य ।
સવિસ્તર (वि.) विस्तार पूर्वक ।
સવે (अ०) जगहपर, स्थानमें, लाभप्रद, (वि.) अच्छा, उत्तम श्रेष्ठ ।
સવેપડવું (क्रि.) उचित जगहपर होना, चुप बैठना, चाहे जैसा होना
સવેરા (अ०) समयपर जल्दी ।
સવેલી (वि.) विस्तारवाला ।
સવૈની ચિઠ્ઠી (सं.) एकका सवा दूंगा इस प्रकारका प्रतिज्ञा पत्र ।
સવૈનો ધંધો (सं.) एक देकर सवा लेनेका धंधा । [उलटा ।
સવ્ય (वि.) बांया, वाम, विरुद्ध,
સવ્યસાચી (सं.) बांये हाथसे बाण मारनेवाला, अर्जुन ।
સવ્યઅપસવ્યકરવું (क्रि.) तकलीफ देना, सताना ।
સશક્ત (वि.) मजबूत, ताकतवर ।
સસડવું (क्रि) उबलना, खोलना ।
સસણી (सं.) एक रोग, जिसके कारण गलेमें सांसका आने जानेका रोग होता है (बच्चोंको) अधिक मिठाई खानेसे होता है ।
સસતું (वि) सस्ता, अल्प मूल्यका, स्वल्प मूल्य ।
સસરો (सं.) श्वसुर, ससुरा, पतिया पत्निका पिता । [घातक ।
સસલું (सं.) खरगोश, खरहा,
સસવું (क्रि.) सूखना, पचकना ।
સસુમાર (सं.) एक प्रकारका जलचर प्राणी । [समेत ।
સહ (अ०) साथ, सहित, संग,
સહકાર (सं.) आम्र, आम, रसाल ।

સહાકાર-રી (वि.) मददगार, सहायक, सहयोगी, आसिस्टेन्ट ।
સહગમન (सं.) साथजाना, सती-होना । [मित्र, संगी, साथी ।
સહચર (सं.) साथसाथ चलनेवाला,
સહચરી (सं.) दासी, सखी, भार्या स्त्री ।
સહજ (वि.) साथ पैदाहुआ, जो जन्मसे साथ रहाहो, स्वाभाविक, कुदरती, सहल, सरळ, आसान, (अ०) थोड़ा, बिनाकारण, झट, थोड़ीसी देरमें, स्वाभाविक रीतिसे
સહજસાજમાં (अ०) सहजहीमें ज़राज़रासी बातमें ।
સહજાનંદ (सं.) स्वामीनारायण मत के आदि प्रवर्तक, ब्रह्म, स्वाभाविक आनंद । [धैर्य्य ।
સહન (सं.) क्षमा सहिष्णुता,
સહનતા (सं.) धैर्य्य, धरिज ।
સહનશીલ (वि.) सहनेवाला, सहिष्णु, शांत, धीर ।
સહપાઠી (सं.) साथ पढनेवाला, एक जमातमें पढनेवाला ।[होना ।
સહરાવું (क्रि.) आनन्दपाना, खुशी
સહવર્ત્તમાન (अ०) साथमें, संगमें ।
સહવાસ (सं.) एकत्रस्थिति, स्नेह, परिचय, अभ्यास, मुहाविरा ।
સહસા (अ०) विचारकियेबिना, अकस्मात्, झटपट, अकाण्ड, अतर्कित, अधीरतापूर्वक ।
સહસ્ર (वि.) हज़ार, संख्याविशेष ।
સહસ્રાક્ષ (सं.) इन्द्र, सुरपति ।
સહસ્રાંશુ (सं.) अंशुमाली, सूर्य्य ।
સહસ્રાનન (सं.) शेष, नागविशेष ।
સહાધ્યાયી (सं.)सहपाठी ।
સહાય (सं.) मदद, सहारा, आश्रय, कृपा, महरबानी, सहायक, साथी, मददगार ।
સહાયતા (सं.)मदद,सहाय,आश्रय।
સહાયી (वि.) सहायक, मददगार ।
સહારો (सं.) मदद, सहरा, आश्रय ।
સહિત (अ०) साथ, युक्त, समेत, संग ।
સહિયર (सं.) सखी, आली, संगिनी ।
સહિયારું (सं.) भागीपना, साथीपन ।
સહિષ્ઠ (वि.) बहुतही मन्द, सहनशील ।
સહિષ્ણુ (वि.) सहन करनेवाला, क्षमावान, सहनशील, शांत ।
સહી (अ०) स्वीकार, मंजूर, ठीक, सिद्ध, शुद्ध, निश्चय (सं.) स्याही, रोशनाई, अवधि, सखी, आली, मित्र (स्त्री)

સહીસલામત (अ०) बिना नुक-
सान के, जैसाका तैसा, ज्यों
का त्यों ।

સહુ (अ०) सब, सभी, प्रत्येक ।

સહેરો (सं.) सेहरा, पगड़ी,
मंदील मौर ।

સહેલ (सं.) मौज, मजा, सैल-
सपाटे, पर्यटन, भ्रमन, वायुसेवन।

સહેલ મારવી (क्रि.) मनमाना
घूमना, फिरना ।

સહેલગાહ (सं.) मौज, आनन्दका
स्थळ, घूमने फिरनेकी जगह ।

સહેલાણી (वि.) सैलानी, आनन्दी,
मौजी ।

સહેલું (वि.) सरळ, सीधा, सुगम।

સહેવું (क्रि.) सहना, भुगतना,
भोगना, सहन करना ।

સહોદર (वि.) सहज, सगा, एक
मातासे उत्पन्न (सं.) भाई, बहिन।

સહ્ય (वि.) सहनेयोग्य, सह्याऊ।
जो सहा जा सके। सहनीय ।

સળ (स.) चाबुक या बेंत के
मारका चिन्ह, कागजपर मोड़
करकी हुई निशानी । बळ, सळ,
सळवट । [रेखा होना ।

સળ પડવો (क्रि.) निशानी होना,

સળ પાડવો (क्रि.) हाशिया
छोड़ना, मार्जिन छोड़ना ।[दर्द ।

સળક (सं.) शूल, दर्द, पसुलीका

સળકડી (सं.) छोटी शलाका, सलाई।

સળકડી કરવી (क्रि.) उसकाना,
उत्तेजना देना, छेड़ना, मज़ाक
करना । [इच्छा होना ।

સળકવી (क्रि.) खानेके लिये

સળકવું (क्रि.) इधर उधर हिलना ।

સળકાવવું (क्रि.) जल्दी चलाना,
दौड़ाना । [औजार, जेरी जेली ।

સળકું (सं.) कांटे वगैरः उठानेका

સળકો (सं.) दुःख, चीस, चबक,
दर्द, इच्छा, मन ।

સળગવું (क्रि.) जलना, सुलगना,
भड़कना, लड़ाई शुरू होना।

સળગાવવું (क्रि.) सुलगाना, भड़-
काना, जलाना, प्रज्ज्वलित करना,
आग लगाना, मनमुटाव कराना ।

સલંગ (वि.) पास, मिलाहुआ,
सटाहुआ, नगीच, भिड़ाहुआ ।

સળવસળ (वि.) समविषम ।

સળવળ (अ०) बेचैन ।

સળવળવું (क्रि.) बेचैन होना,
व्याकुल होना, घबराना ।

સળવું (क्रि.) सड़ना, सुळना, खराब होना) घुनना, दुधारू पशुओंको बहुत दिनतक नहीं दुहनेसे थनों में गांठ बंधजाना।

સળિયો (सं.) छड़, शलाका डंका, दण्डा, बन्दूकका गज़।

સળી (सं.) छोटीशळाका, सळाई

સળી આપવી (क्रि.) उत्तेजना देना, उकसाना।

સળી કરવી (क्रि,) अंगुली करना, छेड़ छाड़ करना, उसकाना।

સળી સંચો (सं.) युक्ति प्रयुक्ति

સળી સંચો કરવો (क्रि.) प्रेरणा करना, उकसाकर ऊंचा करना।

સળેખમ-ખમ (सं.) ज़ुकाम के कारण नाक टपकना, ज़ुकाम.

સળેકડું (सं.) देखो सळी।

સળેકડું: કરવું (क्रि.) छेड़छाड़ करना।

સળો (सं.) सुळनेका रोग, घुनने बीधने अथवा सडनेका आरंभ, अव्यवस्था, फूट, अनबन।

સાંઈ (सं.) प्रभु, भगवान, स्वामी, मुसलमानोंका फ़क़ीर।

સાંઈમોલા (सं.) ताज़ियांके दिनोंमें पागल फकीर का वेश।

સાંઈડું (सं.) कुशल, कल्याण, क्षेम, भेट, आलिंगन।

સાંઈ કહેજે (क्रि.) खबर पूछना, राजी खुशी पूछना।

સાંકડ (सं.) मुसबित, संकट, कष्ट।

સાંકડું (वि.) सकड़ा, कमचौड़ा, सकरा, संकीर्ण, ओछा, थोड़ा।

સાંકડે આવવું (क्रि.) संकटमें फंसना, मुसीबतमें मुब्तिला होना।

સાંકડે માંકડે સમાસ કરવો (क्रि) थोड़ेसेस्थानमें गुज़र करना।

સાંકડો સંબંધ (सं) निकटका सम्बन्ध, पासका नाता [देखना।

સાંકવું (क्रि.) नपना, मापना,

સાંકળ (सं) शृंखला, सिकली, संकळ, नापनेका १०० फुटका परिमाण विशेष जंजीर।

સાંકળ ઘાલવી (क्रि.) बीचमें गड़बड़ पैदा करना, खरकशा पैदा करना। [संकलन करना।

સાંકળવું (क्रि.) जोड़ना, मिलाना

સાંકળિયું (सं.) अनुक्रमणिका, सूची पत्र।

સાંકળી (सं.) पतली और बारीक सांकल, जंजीर, घड़ीकी चेन।

સાંકળું (सं.) सोने या चांदीका आभूषण विशेष, सांकला । [अंदाज ।

સાંકો (सं.) तौल या माप का

સાંખવું (क्रि.) सहन करना, क्षमा करना, नापना, मापना ।

સાંખું (सं.) नाप तौल।

સાંખો (सं.) एकका संकेत (व्यापारमें)

સાંગ (सं.) बर्छी, सेल, भाला, एक प्रकारका अस्त्र, शक्ति, एकका सांकेतिक शब्द, (वि.) सारा सब, पूरम्पूर ।

સાંગરી (सं.) सेंगरी, मोगरी, एक वृक्ष विशेष की फलियां ।

સાંગલું (सं.) बच्चोंको पहिराने का ज़ेवर विशेष । [साथ लगा रहे।

સાંગળવું (क्रि.) ऐसा बांधना जो

સાંગામાંચી (सं.) मोढा, पीढा, छोटीसी खटिया ।

સાંગી (सं.) मंदिरमें ठाकुरजी के आगे पूरा हुआ रंग मंडप, रथकी धुरी के पासका भाग विशेष ।

સાંગોપાંગ (वि.) पूर्ण सब, सारा ।

સાંઘરવું (क्रि.) लाना, विदाहोना संचित करना, इकट्ठा करना ।

સાંચવું (क्रि.) संचय करना, इकट्ठा होना, एकत्र करना ।

સાંચો (सं.) यंत्र, सांचा, किसी चीज़ के डालनेकी वस्तु ।

સાંજ (सं.) सांझ, संध्याकाल, सूर्यास्त का समय ।

સાંજપડવી (क्रि.) रात होना, चिराग़ बत्तीका समय होना ।

સાંજપાડવી (क्रि.) जानबूझकर देर करना । समय बिताना ।

સાંઝપડે (अ०) दीपक जलने के वक्त, सूर्यास्त समये ।

સાંઝી (सं.) सांझ समय गाने के गीत विशेष ।

સાંજે (सं.) खाद्य पदार्थ विशेष ।

સાંઠો (सं.) ईक्षु दंड, ईख, गन्ना, सांठा, ज्वार मक्का आदिका डंठल ।

સાંઢ-ઢ (सं.) दागाहुवा बैल, बिना बाधिया कियाहुआ बैल, मस्त बैल, आंकेक, ऊंट, निरंकुश व्यक्ति ।

સાંઢણી (सं.) ऊंटिनी, ऊंची जाति का ऊंट । [आना, तेज़ आना ।

સાંઢવું (क्रि.) जल्दीआना, शीघ्र

સાંઢિયો (सं.) देखो સાંઢ ।

સાંણસી–સો (सं.) संसी, संडासी, किसी गरम वस्तु को उठानेका यंत्र विशेष ।

સાંતરૂં (सं.) रसोईका सामान, सीधा रसद, (वि.) शरीरसे नाजुक, तैयार, तत्पर, उद्यत ।

સાંતવું (कि.) सताना, कष्टदेना, छुपाना, ऊपर रखना, पूरे होना ।

સાંતળવું (कि.) घी या तेलमें सेकना, तळना, भूनना ।

સાંતી-તીડું (सं.) हळ, एक हळसे जुत सकनेवाली जमीन । [टॅक्स ।

સાંતીવેરા (वि.) हळोंपर कर

સાંતેથી (सं.) लड़कोंका एक खेल विशेष। [जर्मनका ठेका ।

સાંથ (सं.) जमीनका भाड़ा,

સાંથવું (कि) भाड़ेपर जमीन जोतने के लिये देना ।

સાંથવો (सं.) बाजरे के आटे से बनाई हुई एक प्रकारकी मिठाई ।

સાંથીડો (सं.) बारह महीनेके लिये रखा हुआ नौकर। [कड़कन ।

સાંધ (सं.) संधि, चीर, फांट,

સાંધણ (सं.) जोड़, सीवन ।

સાંધવું (कि.) जोड़ना, सीना, चिपकाना, सामिल करना, पैवन्द लगाना, थेगली लगाना ।

સાંધો (सं.) चीर, फाड़, सान्ध, शरीरका जोड़ । [झूठा ।

સાંધે સાંધે જુઠો (=) बिलकुलही

સાંધો આવવો (कि.) इच्छा पूर्ण होना ।

સાંપડ (सं.) सम्पुट ।

સાંપડવું (कि.) प्राप्त होना, मिलना, हाथ आना, जन्म देना ।

સાંપ્રત (वि.) तैयार, उद्यत, मौजूद ।

સાંબેલ (सं.) जुएके दोनों ओरके छिद्रोंमें लगनेवाले वड़े सेल ।

સાંબેલું (सं.) मूसल, मूसळी, मूसर, (धान्य वगैरः कूटने का)।

સાંભરવું (कि.) बिखरे हुएको इकट्ठा करना, सभाळना ।

સાંભળવું (कि.) सुनना, श्रवण करना, ध्यान देना, मानना, कथनानुसार करना ।

સાંસણી (सं.) गुप्त सलाह, उलझना ।

સાંસત (सं.) ढीला, मन्थ ।

સાંસતું (अ०) मन्द, ढीला, शान्त ।

સાંસતા (सं.) धैर्य्य, धीरज, शांति ।

સાંસા (सं) फिक्र, चिंता, तंगी, संशय, शक ।

સાંસા પડવાં (कि.) तंग हालत होना, दुर्दशामें पड़ना ।

સાંસારિક (वि.)संसारका, दुनियादारीका, संसार व्यवहार संबंधी ।

સાંસો (सं.) देखो સાંસા संशय ।

સાંસોટ (अ०) सीधा, सूधा ।

સા (अ०) वह, उसको ।

સાકડી-ઠી (सं.) शाखोंकी पतली शाखाएं, पतली बल्लियां । [चीनी ।

સાકર (सं.) शक्कर, शर्करा, खांड

સાકર પીરસવી (क्रि.) मीठा बोलकर मन प्रसन्न करना, मिष्ट भाषण खुशामद करना । [करना ।

સાકર વાટવી (क्रि.) खुशामद

સાકરનું સાલ કાઢવું (क्रि.) बिलकुल अन्यायी होना, सख्त होना, बारीक परीक्षा करना ।

સાકરવું (क्रि) बुलाना, आवाज देना, हल्लामचाना । [मृदु मधुर ।

સાકરીયા (वि.) सक्कर, सरीखा,

સાક્ષર (वि.) पठित विद्वान, शिक्षित । [आंखों के आगे, प्रकट ।

સાક્ષાત (अ०) प्रत्यक्ष, सामने,

સાક્ષી (पं.) आंखों देखनेवाला, गवाह, गवाही, शहादत ।

સાક્ષીકરવી (क्रि.) गवाह के रूपमें अपने हस्ताक्षर करना ।

સાક્ષીઆપવી-પુરવી (क्रि.) शहादत देना, गवाही देना, गवाही देना, स्वीकार करना ।

સાક્ષીદાર (पं.) गवाह, साक्षी ।

સાખ (सं.) साक्षी, गवाही, साख, टेक, इज्जत ।

સાખ-ખિયું (सं.) शाखा, डाळ, डगाळ, वृक्षपर पकाहुआ फळ, आमपर या घरमें पकी हुई कठोर कैरी ।

સાખી (सं.) प्रमाणरूप छोटीसी कविता, गज़ल या पद्यके बीचमेंके दोहे ।

સાખો (सं.) लड़ाई, झगड़ा, फसाद

સાખો કરવો (क्रि.) चिल्ला चिल्लाकर लड़ाई करना ।

સાગ (स.) एक प्रकारका वृक्ष, विशेष जिसकी लकड़ियां घर बनानेके काममें आती है, फांस वीरं।

સાગર (सं.) समुद्र, उदधि, दरिया ।

સાગરજા (सं.) लक्ष्मी, विष्णुप्रिया ।

સાગવાન (सं.) सागौन वृक्ष विशेष

સાગવું (सं.) सम्बन्ध, नाता, रिश्ता, सगाई ।

સાગોળ (सं.) छानाहुवा चूना ।

સાંકેતિક (वि.) इशारेवाला, संकेत सूचक। [दर्शन शास्त्र ।

સાંખ્ય (सं.) कपिलमुनि प्रणीत

સાચ (सं.) सत्य, खरा, सच्चा ।

સાચમાચ (वि.) सचमुच, सत्य सत्य ।

સાચવટ (सं) सत्यता, सचाई, प्रमाणिकता । [सञ्चय करना ।
સાચવણુ–ણી (सं.) संभाळ, यत्न
સાચવવું (क्रि.) रक्षाकरना, संचय करना, संभाळना, बन्दकरना(द्वार)
સાચાઇ (सं.) देखो સાચવટ ।
સાચું (वि.) खरा, सच्चा, सत्य, ईमानदार, विश्वस्त, प्रामाणिक, वफादार, हक (सं.) सत्य ।
સાચે (अ०) ठीक, सच, वाजिबी रीतिसे । [ठीक ।
સાચેસાચું (अ०) जैसा हो तैसा
સાચાં જુઠાં (सं.) खरा खोटा, उचित अनुचित ।
સાચાંજુઠાં કરવા (क्रि.) इधरकी उधर कहना, कानभरना, सचको झूठ और झूटको सत्य बनाना।
સાચાબોલું (वि.) सत्यवादी, सच बोलनेवाला, खरी कहनेवाला ।
સાજ (सं.) सामग्री, सजानेका सामान, शृंगार, वस्त्राभूषण, साहित्य
સાજરૂં (वि.) शृंगार कियाहुआ, सज्जित ।
સાજન (सं.) प्रतिष्ठित तथा सभ्य मनुष्योंका समुदाय जो जुलूस के आगे आगे चलता है ।
સાજણું (सं.) पंचायती, जातीय लोगोंका किसी बातका निपटारा करने के लिये सम्मेलन ।
સાજવું (क्रि.) घिसकर साफ करना, मांजना, साफकरना, शोभा देना ।
સાજસરંજામ (सं.) सामान, सामग्री, साजबाज, तैयारी ।
સાજિન્દો (सं.) नाचनेवाले के पीछे बजानेवाला, सारंगी तबले आदि वाद्यका बजंत्री ।
સાજીખાર (सं.) क्षार विशेष ।
સાજું (वि.) सारा, संपूर्ण, अक्षत अखंडित, स्वस्थ, तंदुरुस्त ।
સાજુંતાજું સમું (वि.) निरोगी और पुष्ट, हट्टाकट्टा, पट्ठा, पूरा, सब ।
સાજ્ય (सं.) सहायता, मदद, आश्रय ।
સાટ (सं.) पीठकी हड्डी, रीढ ।
સાટકો (सं.) चाबुक, हंटर, लकड़ीया चाबुककी मार ।
સાટમાર (सं.) वह मल्ल जो हाथी से कुस्ती लड़ते समय हाथी को भाला मारकर चिढाता है ।
સાઠમારી (सं.) हाथीकी लड़ाई, हाथी और मल्लकीकुस्ती ।

સાટવું (क्रि.) कीमत करना, मूल्य ठहराना।

સાટી (सं.) सवारी गाड़ी का वह भाग जिसमें मनुष्य बैठते हैं।

સાટીઆંખરાં-ડીઆંખરાં (सं.) कान भरना, उलटा सीधा समझाना।

સાટીન (सं.) एक प्रकारका रेशमी वस्त्र।

સાટું (सं.) बदला, मालकी कीमतमें रुपया न देकर कोई वस्तु देना, परिवर्तन, कन्याके बदले में कन्या लेना, मूल्य ठहराना, ऐवज एक्सचेंज, करार, वादा, बोली, वचन।

સાટુંતેખડું (सं.) जिसकी कन्या ली हो उसे कन्या देना या अपने सम्बंधी अथवा मित्रकी कन्या दिलाना—इसविषयका करार।

સાટે (अ.) बदलेमें, एवज़में।

સાટાખત (सं.) बदला, या करारकी दस्तावेज।

સાટુક (सं.) वंचक, ठग, लुचा।

સાટો (सं.) गाड़ीका वह भाग जिसमें बोझ—वज़न भरा जाता है। धोया हुआ घी, घी मिलाहुआ आटा।

સાઠ (वि.) साठ ६० संख्या विशेष, (सं.) बड़ापुर्दन।

સાઠી (सं.) साठ वर्षकी वय, बुढापा, साठ दिनमें पैदा होनेवाली एक प्रकारकी ज्वार (अन्न)

સાઠી બાકડા લગાડવા (क्रि.) लड़ाई पैदा करनेका ढंग रचना।

સાડતીસ-ત્રીસ (वि.) ३७, सैंतीस, संख्या विशेष।

સાડલો (सं.) औरतोंके पहिरने का लुगड़ा, वस्त्र विशेष।

સાડા (वि.) आधा आधिक बताने वाला प्रत्यय शब्द, साढ़े साढ़े।

સાડાત્રણ ઘડીનું રાજ (सं.) क्षणिक सुख।

સાડાત્રણપાય (क्रि.) [illegible] का, बेडंगा, अशिष्ट [illegible]।

સાડાબાર એવડી જવું (क्रि.) भागजाना, छूहोना, रफूहोना, सटकजाना।

સાડાસાતનો ફેરો (सं.) बड़ीभारी आपत्ति, कठिन दुःख।

સાડાસાત ભવની સંભળાવવી (क्रि.) बहुतही भद्दी गाली देना।

સાડાસાતવાર (वि.) बहुत बेर कई समय, बारम्बार।

સાડાસાતી આવવી (क्रि.) बड़ी भारी आफत आना, आपत्तिआना।

સાડી (स.) सारी, स्त्रियों के पहिरनेकी धोती, लुगड़ा, फरिया ।

સાડીગપતાળીસ (वि.) अनिश्चित संख्या हो तब यह वाक्य कह देते हैं।

સાડી ચુવોતેરનો અંક (सं.) पत्र पत्र साढे चौहत्तर (७४॥) का अंक उन्हीं पत्रोंपर लिखा जाता है जिन्हें उसका प्राप्त करनेवालाही पढे, चित्तौड के युद्धमें जबकि हिन्दु मुसलमानोंका युद्ध हुवाथा तब मृत वीरों के यज्ञोपवीतका वजन ७४॥ मण उतराथा तबसे यह संख्या लिखी जाती है, कुछ विद्वानोंका कथनहै कि यह ७४॥ का अंक "श्री" का बिगड़ा रूप है।

સાડીત્રણુપાસળીનું (वि.) अस्थिर चित्तवाला, आधापागल सिरी।

સાડીભાર (सं.) पर्वाह, चिंता, दरकार।

સાડીસાતી (सं.) साढे सात वर्ष रहनेवाली शनि (ग्रह) की दशा।

સાડુ-ડુ(सं.) पत्नीकी बहिनका पति।

સાણુકું (सं.) खप्पर, मिट्टीका पात्र विशेष।

સાણુપણુ (सं.) सयानपना, स्यानापन, विवेक, ज्ञान, समझ, चतुरता।

સાણસો (स.) चिमटा, चमीटा, मुश्किल, कठिनाई, दिक्कत।

સાણસામાં આવવું (क्रि.) आफत में आना।

સાણું (सं.) स्वप्न, सपना, निद्रावस्थाके विचार, ख्वाब, ठद, छेद काठनाई, मोठा (वि.) चतुर, सयाना, स्याना, समझदार।

સાત (वि.) सात संख्या विशेष ७।

સાત નાગાનોનાગો (वि.) बहुतही बदमाश, उद्दण्ड।

સાતગળણેગાળવું (क्रि.) खूब सोचना, तुलना करके अच्छा ग्रहण करना, और बुरा त्याग देना।

સાત ગાઉથી નમસ્કાર કરવા (क्रि.) दूर रहना, अलग रहना।

સાતઘર ગણુવાં (क्रि.) घरघर भटकते हुए फिरना, व्यर्थ घूमना।

સાતતાડ ઉંચો (वि.) अधिक लम्बा, ऊचाईमें बड़ा।

સાતપાથમવી (क्रि.) किंकर्तव्य विमूढहोना, आपत्तिमें पड़ना, असमञ्जसमें फंसना।

સાત પાસની ચિંતા છે (क्रि.) बहुत तरहकी चिंता है।

સાત પેઢીના ચોપડા ઉઘડાવવા (क्रि.) सात पीढीकी निंदा करना।

સાત સાંધતાં તેર તૂટવા (क्रि.) आमदनीसे खर्च अधिक होना, आय व्ययका मेल नहीं मिलना।

સાતમણુ ને સવાસેરનું (वि.) बहुतही कठोर छाती, बज्रतुल्य हृदय, बहुतही होशियार।

સાતમે આસમાને ચઢવું-જવું-પ્હોચવું (क्रि.) बहुतही घमंड करना, अति पर पहुंचना।

સાતમે ચોકે (अ०) एक कोनेमें, कोई न जान सके या देख सके ऐसे स्थानमें।

સાતમે પડદે (अ०) बिलकुल एकान्तमें, अत्यन्त गुप्त जगहमें।

સાતમે પાતાળે (अ०) बहुतही नीचे, ऐसी जगहमें जहां पताही न लगे।

સાતે ઘોડે સાથે ચઢાય (ऊ) ये सब काम एकही साथ हो।

સાતે પાડે વસજો (क्रि.) ईश्वर करे और कुटुम्ब बढे, वृद्धि हो।

સાતડે-સાત (सं.) सातका अंक, ७, कुछभी नहीं, भूलचाली, मूर्ख, असफलता। [सात भाग हो।

સાતપટ્ટી (सं.) ऐसी खाट जिसके

સાતપડી (सं.) जिसकी सात तहें हों, सात पड़वाली (रोटी)

સાતપડો (सं.) पैरकी या हाथकी अंगुलीपरका सूजन, लैरो, घिनही।

સાતમ-તેમ (सं.) सप्तमी, तिथि विशेष, पक्षका सातवां दिन।

સાતમું (वि.) सातवां, सप्तम।

સાતરા (वि.) शृंगार करके तय्यार किया हुआ। (सं.) पृथ्वीपर बिछौना।

સાતરા પાડવા (क्रि.) पतंगको आस्मानसे नीचे उतारते समय धागेको दूर दूर इस लिये फैलाना कि वह चरखी पर लपेटते समय उलझ न जांय।

સાતવો (सं.) सत्तू, सिके हुए अन्नका आटा। सतुआ।

સાતા (सं.) आराम, करार, सुख, संतोष, शान्ति।

સાતાવળવી (क्रि.) आराम होना, शान्ति होना, सुख होना।

સાત્વિક (वि.) सत्वगुणयुक्त, सत्व गुणविशिष्ट, साधु, विवेकी।

સાથ (सं.) संग, संगति, मैत्री, लोहबत (अ०) साथमें, संगमें ।
સાથરિયો (स.) चाहे जिस समय चाहे जहां बैठकर परचूरण सामान बेचनेवाला ।
સાથરી (सं.) नदी किनारे खप- चियोंके टट्टेपर वस्त्र डालकर रखा हुआ ग्रहणका सामान ।
સાથરો (सं.) सोनेके लिये बि- छायी हुई घास । मृत शरीरको सुलानेके लिये लीपी हुई जमीन । चौका । कुशासन, डाभकी चटाई ।
સાથરે સુવાડવું (कि.) मार डालना ।
સાથરો કરવો (क्रि.) संहार करना, मुर्दा करना ।
સાથિયો (सं.) साथिया, शुभ- सूचक चिन्हविशेष ।
સાથી (सं.) संगी, दोस्त, सहा- यक । गाड़ीवान, सारथी, नौकर, हाली, बारह महीनेके लिये रखा हुआ नौकर । (अ०) किस कारण, किस लिये, क्यों ।
સાથે (अ०) साथमें, संगमें, संगतिमें ।
સાથેસાથુ (अ०) इकट्ठा, साथही थ ।

સાદ(सं.)आवाज,शब्द, ध्वनि, स्वर ।
સાદ કરવો (कि.) बिलाना, जोरसे आवाज मारना, हांक करना ।
સાદ કાઢવો (कि.)जोरसे बोलना।
સાદ દેવો (कि.) जवाब देना ।
સાદ પાડવો (कि.) ढिंढोरा फि- राना, डुग्गी पिटाना, मुनादी कराना, डौंडी पिटाना ।
સાદ બેસવો (कि.) आवाज मन्द होना, गला बैठ जाना, स्वर भंग होना ।
સાદડ (सं.) एक प्रकारका वृक्ष ।
સાદડખરચ (सं.) धर्मादा खर्च के लिये वह धन जो ग्राम के लोग इकट्ठा करके सरकारी देखरेख द्वारा खर्च करने को दे देते हैं ।
સાદડી (सं.) देखो साद(कवितामें) (सं.) चटाई साथरी, घास अथवा खजूरके पत्तोंका बनाहुआ आसन–बिछौना ।
સાદડું (सं.) फटी टूटी चटाई ।
સાદડો (सं.) एक प्रकारका वृक्ष ।
સાદર (वि.) आदर सहित, मान- पूर्वक, सम्मान युक्त, प्रकट, पूज्य आपहुंचाहुआ, गर्भवती की की इच्छा पूर्ति ।
સાદાઈ (सं.) सादगी, सादापन ।

सादु (वि.) सादा, अकृत्रिम, प्राकृतिक, सरल, साधारण ।

सादृश्य (सं.) समानता, बराबरी ।

साध (वि.) साधु, सज्जन, संत, (सं.) स्वाधीन, स्वतंत्र ।

साधक (वि.) साधन करनेवाला अनुष्ठान करनेवाला, अभ्यासी, (सं.) सहायक, मददगार भक्त ।

साधन (सं.) उपाय, यत्न, उद्योग चेष्टा, अभ्यास, अनुष्ठान, युक्ति, औजार विशेष ।

साधनी (सं.) औजार, विशेष ।

साधना (सं.) साधन अनुष्ठान, तपस्या, सिद्ध करना, अभ्यास करना, आदत डालना, साधन करना ।

साधनिका (सं.) पदच्छेद (व्याकरण)

साधर्म्य (सं.) समानता, एक सरीखा । [वती स्त्री ।

साधवी (सं.) साध्वी, सौभाग्य-

साधवुं (क्रि.) साधन करना, मनमें सोचाहुआ काम करना, मतलब निकालना, वशमें करना ।

साधारण (वि.) सामान्य, सहज सरल, आम, मामूली, जनसमाज ।

साधारणधातु (सं.) धर्मोवाखाता ।

साधारणधर्म (सं.) ऐसा धर्म जो बहुतसे मनुष्योंके अनुकूल हो ।

साधारणपक्ष (सं.) मध्यम पक्ष ।

साधित (वि.) साधाहुआ साधन किया हुआ, सिद्ध, बनाहुआ ।

साधुं (सं.) संत, सज्जन, परोप-कारी व्यक्ति, महाजन, जितेन्द्रिय रहकर ईश्वर स्मरण करनेवाला ज्ञानी विरागी, सत्यवादी, (वि.) धर्मी, विश्वस्त, शुद्ध निर्मळ ।

साधुसमागम (सं.) सज्जन पुरुषों की, संगति, संतोंका मेळमिळाप ।

साधुसन्त (सं.) भक्त तथा ज्ञानी व्यक्ति ।

साध्य (वि.) जो साधन किया जा सके, साधन करने योग्य, वशमें करने लायक, पारपड़ने लायक ।

साध्वी (सं.) साधुवृत्तिवाळी स्त्री, पतिव्रता सती ।

सान (सं.) संकेत, इशारा, चिन्ह एवज, छटा, गहने रखना, सैन, समस्या, आंकका इशारा, समझ, बुद्धि, अक्ल, धरोहर ।

सानआववी (क्रि.) अक्लआना ।

सानक (सं.) छोटी रकाबी, मिट्टी की थाली-पात्र विशेष ।

આનંદ (वि.) आनन्द सहित, अल्हादयुक्त, हर्षान्वित, हृष्ट (अ.) आनन्दमें हर्षमें ।
આનંદાશ્ચર્ય (स.) खुशीके साथ तहाज्जुब, हर्षके साथ अचंभा ।
આનશુન (सं.) चेत, भान, दोष।
આની (सं.) कोल्हू धानी में तेल निकालते समय उसका कचरा या भूसी, खली, खळ, खर।
આનુકુલ (वि.) मददगार, अनुकूळ प्रसन्न, खुश ।
આનુનય (वि.) गरीब ; [अक्षर
આનુસ્વાર (वि.) अनुस्वार युक्त
આન્ત્વન (सं.) ढाढस, धैर्य, समझाना, बुझाना । [(व्याकरण)
આન્વય (वि.) सान्वय सहित
આનિધ્ય (सं.) समक्ष समीप, पास, निकटता, सामीप्य, उपस्थित।
સાપ (सं.) सर्प, अहि, भुजंग, व्याल, नाग, सांप, (वि.) नमक हराम, दुष्ट, जहरीला, क्रोधी, काला ।
સાપની કાચળી (सं.) सर्पकी केंचुल, सांपके शरीरकी खोली।
સાપછે કે ઘો છે? (=) बिना जाने किसी कठिन काममें हाथ नहीं डालना चाहिये अर्थ द्योतक वाक्य ।
સાપના ઘોના આણાવવા (क्रि.) बहुत प्रकार से समझाना, शिक्षा देना ।
સાપનોભારો (सं.) भयप्रद, स्थान, या पात्र, अविश्वस्त, रांड अथवा कन्या काळ बीती हुई तरुण स्त्री, अत्यंत जहरीला, द्वेषी ।
સાપકે ઘો જે નિકળે તે ખરૂ (क्रि.) भाग्य परीक्षा करना।
સાપના પગ સાપ જાણે (अ०) चोरकी गति चोरही जाने, " खग जाने खगहीकी भाषा "
સાપનેઘેર સાપ પરેણા (वि.) सांपके सांप मेहमान, दोनों एक सरीखे ।
સાપને કરડેલો દોરડીથી બીએ (अ०) दूधकाजला छाछकोभी फूकदेकर पीता है ।
સાપણ (सं.) सर्पिणी, नागिन।
સાપબાભણી (सं.) एक जीवधारी विशेष ।
સાપેગળ્યુ છછુંદર (=) " भई गति सांप छछूंदर केरी " सांप जब छछूंदरको खा लेता है तो उसकी बड़ीही दुर्दशा है क्योंकि खाता है तो मरता है और वापस निकालता है तो अंधा होजाता है, इधर गड्ढा और उधर खाव तो कुआ।

સાપેલુ (सं.) सांपिन, नागिन, सर्पिणी, पशु अथवा मनुष्यके शरीर पर चिन्ह विशेष। [अत्यंत दुष्टा।

સાપેલુજેવી (वि.) बहुतही चालाक

સાપોલિયું (सं.) सांपका बच्चा, सपला, छोटा सांप।

સાફ (वि.) स्वच्छ, पवित्र, निर्मळ शुद्ध, ठीक, सूधा, सीधा, सपाट निष्कपट, प्रगट, स्पष्ट (अ०) बिलकुल, रगड़कर।

સાફી (सं.) भांग वगैरः छाननेका वस्त्र चिलम के नीचे लगानेका कपड़ा (पीते समय)

સાફીમારવી (क्रि.) तारीफ मारना, शेखी करना, घमंडी बनना !

સાબદું (वि.) सारा, समस्त, सम्पूर्ण, ज़राजरा, बिलकुल, तमाम।

સાબર (सं.) सांभर, पशु विशेष।

સાબરસિંગડું–સિંગું (सं.) बारह सिंगा नामक पशुका श्रृंग।

સાબરી (सं.) बारा सिंगा (मादा) पशु विशेष। [वस्त्र विशेष।

સાબલિયો (सं.) अत्यंत महीन

સાબિત (वि.) प्रमाणित, सबूत दिया हुआ।

સાબુ (सं.) साबुन, साबू, चिकनाहट तथा मैल साफ करनेका पदार्थ विशेष।

સાબુનોસભાગપો (वि.) साफ झक, सौंदर्य दिखानेवाला।

સાબુગોળો (सं.) साबुनका गोला एक प्रकारकी मिठाई, ठिंगने कदका मोटा ताज़ा आदमी।

સાબુચોખા (सं.) साबूदाना, सागूदाना, वृक्षका रस, विशेष जिसे चलनियों में छानकर गोळ गोळ दाने बना लिये जाते हैं।

સાબુત (वि.) पूरा पूर्ण, अक्षत।

સાભેલો (सं.) (वैवाहिक) वर के जुलूस में सुसज्जित बालक।

સામ (सं.) वेद विशेष, सामवेद, पति, स्वामि (काव्य में) किसी काठको वस्तुको फटनेसे बचाने के लिये लोह वगैरः धातुकी बनाकर लगाई हुई बंगड़ी स्वाम।

સામગ્રી (सं.) सामान, चीज, वस्तु, उपकरण, असबाब, साहित्य।

સામટું (अ०) एकही बार, सब, सारा, साथही, इकट्ठा।

સામંતઅ(सं.) करद राजा, मंडराजा, अत्यंत बलवान योद्धा, सरदार, सेनानी।

સામન (सं.) सामान, सामग्री, खटपट, माल, रखीहुई स्त्री। [सामना।
સામનો (सं.) लड़ाई, विरुद्धता।
સામંત (सं.) देखो સામદ (वि.) पासका, पड़ोसका, निकटस्थ।
સામર (सं.) एक प्रकारका वृक्ष।
સામર્થ (सं.) शक्ति, बळ, पराक्रम योग्यता, ताकत, कूव्वत।
સામવેદી (वि.) सामवेदका ज्ञाता।
સામસામુ (वि.) आमने सामने, एक दूसरे के मुखके आगे।
સામળુ (वि.) श्यामळ, काळेरंगका
સામળિયો (सं.) कृष्ण। [रसीद।
સામાદસ્સ્કત (सं.) पहूंच, चिठ्ठी
સામાન (सं.) चीज वस्तु, सामान, सामग्री, साहित्य, अविवाहिता, पत्नी, माशूका।
સામાનનાંખવો (क्रि.) घोड़ेपर काठी वगैरे कसना।
સામાત (सं.) साधारण।
સામાન્યનામ (सं.) विशेष नामसे उलटानाम, (व्याकरणमें) [गणिका।
સામાન્યા (सं.) वेश्या, रंडी,
સામાપંચમ (सं.) ऋषिपंचमी, उत्सव दिवस विशेष, भाद्रपद शुक्ला ५।
સામાવળિયો (सं.) शत्रु, दुस्मन,
સામાવાળો (वि.) विरुद्ध पक्षका, (सं.) शत्रु, दुस्मन अरि।
સામાસામી (अ०) आमने सामने रूबरू, (सं.) शत्रुता, दुस्मनी।
સામાસામીઆવવું (क्रि.) लड़ना।
સામીલ (वि.) शामिळ, मिलाहुवा, जुड़ाहुआ, मिश्रित, अभिन्न।
સામું–મે (अ०) सामने, दृष्टि आगे, मुहंके आगे, रूबरू, उलटा, प्रत्युतरमें, जवाब में, (वि.) उलटा।
સામુંથવું (क्रि.) मारनेके लिये तैयार होना, जवाब देना। [होना।
સામુપડવુ (क्रि.) विरुद्ध पक्षमें
સામુંજવું (क्रि.) बुलानेजाना।
સામુંઆવવું (क्रि.) बुलानेके लिये सामने आना, स्वागतार्थ आना।
સામુદ્ર (वि.) समुद्र सम्बन्धी, समुद्री, दरीयाई।
સામુદ્રધુની (सं.) दो बड़े समुद्रोंके जोड़नेवाली खाड़ी।
સામુદ્રિક (सं.) हाथ देखनेकी विद्या, शरीरके चिन्ह अथवा रेखा देखकर जीवन के भूत भविष्य कार्योंको कहनेकी विद्या, (वि.) समुद्र सम्बंधी।

સામે (અ०) सामने, रूबरू, विरुद्ध पक्षमें, आंखों आगे।

સામેલ (वि.) देखो સામીલ (सं.) सेल, दोमेखें को बैलोंके जुएके दोनों सिरोंपर छिद्रोंमें लगती हैं)

સામેલુ (सं.) मूसर, अनादि कूटनेका साधनविशेष।

સામૈયુ (सं.) अगवानी, किसी को गाते बजाते जाकर आगेसे ले आना, आतिथ्य, स्वागत।

સામો (सं.) धान्यविशेष।

સામોપચાર (सं.) मिष्ट भाषण-द्वारा शांति।

સામ્રાજ્ય (सं.) राज्य, चक्रवर्ती राज्य, सल्तनत।

સાંપ્રત (अ०) आधुनिक, वर्तमान समयका, मौजूद, तय्यार।

સાંબ (सं.) पार्वतीसहित शंकर।

સામ્ય (सं.) समानता, समावस्था, सादृश्य, यकसांपन।

સાયંપ્રાતર (सं.) सांझ, सुबह।

સાયક (सं.) बाण, खड्ग, (वि.) सहायक, मददगार।

સાયંકાળ (सं.) संध्यासमय, सांझका वक्त।[मिहरबान, मेहरबान।

સાયબાન (सं.) साहिब, साहेब,

સાયર (सं.) शराब वगैरःका कर, टेक्स, कवि, शायर, समुद्र, सिंधु, दरिया।

સાયરી (सं.) कविता, काव्यविद्या।

સાયુજ્ય (सं.) मुक्तिका भेद विशेष।

સાયો (सं.) मदद, आश्रय, सहारा।

સાર (सं.) रस, कस, सत्व, अंश, तत्व, वस्तुका उत्तम भाग। मूळ, उद्देश, मुख्य शिक्षा, सारांश, लाभ, फळ, कृपा, मदद, छिद्र (वि.) अच्छा (कवितामें) (सं.) सार संभाळ।

સારક (वि.) रेचक।

સારંગ (सं.) रागविशेष, हरिण, मृग, हाथी, सिंह, हंस, चातक, मोर, कोकिल, बिच्छू, भ्रमर, कमळ, पुष्प, धनुष, शंख, सारंगी, मेघ, केश, चदन, कपूर, स्वर्ण, रत्न, पृथ्वी, प्रकाश, रात्रि विविध रंग, कामदेव, सांप, वृक्ष, जळ।

સારંગપાણી (सं) विष्णु।

સારંગી (सं.) एक प्रकारका तंतुवाद्य। इस नामसे प्रसिद्ध स्वरवाद्य।

સારંગીવાળો (सं.) सारंगी बजानेवाला।

સારડી (सं.) छिद्र करनेका बढ़ईका औजार, बरमा, सार।

સારણુ (सं.) नदीके बहनेकी तरह बहनेवाला कुआ । कुएमेंसे आई हुई नहर ।

સારણગાંઠ (सं.) अंत्रवृद्धिका रोग।

સારણગાંઠનો પટો (सं.) अंत्रवृद्धिरोगको दबानेके लिये कमरमें बांधा हुआ पट्टा ।

સારથી (सं) रथ हांकनेवाला, गाड़ीवान, कोचवान रथवाह ।

સારમંડળ (सं.) एक प्रकारका बत्तीस तारवाला बाजा ।

સારમેય (सं) धनधान्य वगैरः, शिकारी कुत्ता ।

સારવા (सं.) अच्छी जमीन, उत्तम भूमि । [हांकनेवाला ।

સારવાન (सं.) ऊंटवाला, ऊंट

સારવું (क्रि.) श्राद्धकरना, तर्पण करना, डोरीसे बरमाको घुमाकर छेद करना, छिद्रकरना, दुःखदेना, घागापिरोना, पहिरना, शृंगार करना, टपकाना, डालना, पूर्ण करना, काम बजाना, आंजना, लगाना, चुपड़ना ।

સારસ (सं.) जलचर पक्षी विशेष।

સારાં (सं.) एकप्रकारके शूद्र जातिके लोग ।

સારાંવાનાં (सं.) शुभ, मांगल्य, श्रेष्ठ, उत्तम ।

સારાંશ (सं.) तात्पर्य, अभिप्राय, भावार्थ, मतलब, नतीजा, परिणाम सारभाग ।

સારાશ (सं.) भलाई, सज्जनता,

સારાસાર (सं.) भलाबुरा, खे टा, खरा ।

સારાસારી (सं.) मैत्री, दोस्ती ।

સારિકા (सं.) मैना पक्षी विशेष ।

સારીગમ (सं.) सरगम ।

સારીપઠે-પેઠે (अ०) स्वस्थ, तन्दुरुस्त, आरोग्य बहुत, विफल, ध्यानसे । [सम्पूर्ण, तमाम ।

સારી-રૂ-રા (वि.) सब, समस्त,

સારીવા (सं) औषधि, दवा, भेषज ।

સારૂ (वि.) सुन्दर, अच्छा, शोभित, उत्तम, मनोहर, लाभदायक, सुखदायक जैसाका तैसा । सुघड़, शुभचिंतक, उदार, पक्का, टिकाऊ, ईमानदार, भला, सूधा, शान्त, साधारण । (अ०)लिये,वास्ते,कारण।

સારૂ કરવું (क्रि.) रोग मिटाना, भला करना, चंगा करना ।

સારૂં થવું (क्रि.) निरोगी होना, स्वस्थ होना ।

સારેવડું (સં.) चांवलके आटेके पापड़।

સારો (સં.) वार्षिक रिपोर्ट। साल भरका सिंहावलोकन।

સાર્થ (वि.) अर्थसहित, टीकासहित।

સાર્થક (સં.) अर्थसहित, अर्थयुक्त, सफल, कृतार्थ।[सब लोगोंका।

સાર્વજનિક (वि.) लोकोपयोगी,

સાર્વભૌમ (સં.) राजा, महाराजा, चक्रवर्तीराजा, शहनशाह।

સાર્દૂલ (સં.) व्याघ्र, बाग, बघेर।

સાલ (સં.) वर्ष, बत्सर, बरस।(સં.) हरकत, फिट बैठनेवाला जोड़, गिल्लीडंडका खेल। देखो શાલ।

સાલગિરી (સં) सालगिरह, वर्षगांठ, जन्मदिवस।

સાલગુદસ્ત (સં.) गतवर्ष, गुज़रा हुआ वर्ष, पिछलावर्ष।

સાલમ (સં.) एक प्रकारका पुष्टिकारक कन्द, सालममिश्री।

સાલમપાક આપવો (क्रि.) मारना, कूटना, ठोकनापीटना।

સાલમ્મિશ્રી (સં.) देखो સાલમ।

સાલવવું (क्रि.) खटकना, छेदना, सुराखकरना, संभोग करना।

સાલવાર (अ०) वर्षानुकूल, सालके बाद साल। [प्रतिवर्ष, वार्षिक।

સાલવારી (સં.) हर सालका,

સાલવી (સં.) बढ़ई, तक्षक, खाती।

સાલવું (क्रि.) खटकना, चुभना, दुःख होना।

સાલસ (वि.) भला, सीधा, निष्कपट, शान्त, विवेकी, विश्वस्त।

સાલસદસ્ત (સં) गुप्त परामर्श, पोशीदा-सलाह।

સાલસાઈ (સં.) भलमनसाई, विवेक, विश्वस्तता।

સાલાતાલા (સં) आजिज़ी, खुशामद।

સાલાતુંબું (वि.) बेढंगडैल, लंबा, भला, अनसमझ, भोळा।

સાલિયા (સં.) बैलगाडीके दोनों ओर गाड़ीमें रखी हुई वस्तुएं न गिरनेके लिये खड़े किये हुए डंडे।

સાલિયાણું-ણું (સં.) वार्षिकवेतन, कर या चन्दा।

સાલોક્ય (સં.)मुक्ति विशेष, सलोकता।

સાલ્લો (સં.) स्त्रियोंके वस्त्रविशेष, सारी, साड़ी।

સાલ્લો પહેરાવવો (क्रि.) नामर्द होना, ज़नाना होना, नपुंसक बनना।

સાવ (अ०) सब, बिलकुल, संपूर्ण।

સાવક (સં.)श्रावक, सरावगी, जती।

સાવકું (वि.) एक पितासे किन्तु अलग अलग मातासे उत्पन्न भाई बोहन। [धान, जागृत, संचत।
સાવચેત (वि.) होशियार, साव-
સાવચેતી (सं.) होशियारी, सावधानी जागृति, चेतावनी।
સાવજ (स.) बाघ, मूर्ख, बुद्धिहीन, (वि.) जंगली, वन्य।
સાવધ (वि.) सावधान, होशियार।
સાવધાન (वि.) पूर्ववत् (स.) विवाह संस्कारमें समय पाणिग्रहण के समय यह शब्द बोलते हैं।
સાવરણી (सं.) झाड़, बुहारी, ब्रश।
સાવરણી ફેરવવી (क्रि.) धूलधानी करना, बरबाद करना।
સાવરણો (सं.) बड़ी झाड़ू बड़ी बुहारी, बुहारा।
સાવરિયું (सं.) सासरा, श्वसुरालय।
સાવલું (सं.) मिट्टीका पात्रविशेष।
સાવિત્રી (सं.) सूर्यकी किरणें, ब्रह्माकी स्त्री, गायित्री।
સાહું (क्रि.) पकड़ना, ग्रहण करना।
સાશ્ચર્ય (अ०) अचंभेसे तथा-ज्जुबसे।
સાષ્ટાંગ (सं.) प्रणाम, आठ अंगों द्वारा प्रणाम। (वि.) आठों अंगोंद्वारा।
સાસ (सं.) श्वास, सांस, दम, जीव, प्राण, हवा।
સાસરવાસો (सं.) लड़कीको ससुराळ भेजनेके समय वस्त्राभूषण की भेंट। [मनुष्य, श्वसुरपक्ष।
સાસરવેડુ-ઢ (सं.) ससुरालके
સાસરિયાં (सं.) पूर्ववत्।
સાસરી-રું (सं.) ससुराळ, पतिया पत्नीके मातापिताका स्थान।
સાસુ (सं.) पतिया पत्नीकी माता।
સાસુડી (सं.) पूर्ववत्।
સાસોટ (अ०) हांफता हुआ, जिसका दम भरा हुआ हो, सपाटेबंद दौड़ता हुआ। दम फूका हुआ।
સાહજિક (वि.) स्वाभाविक, प्राकृतिक, कुदरती, नेचरल। जो बिना प्रयासके प्राप्त हो सके।
સાહસ (सं.) उद्योग, उत्साह, वीरता, कार्य-तत्परता, साहस।
સાહસિક (वि.) साहसी, साहस करनेवाला, बहादुर, हिम्मतवाला, अविचारी, उद्योगी, निर्भीक, निडर।
સાહાય-ય્ય (सं.) सहायता, उपकार, सहारा, मदद, पुष्टि।
સાહાવું (क्रि.) पकड़ना, ग्रहण करना।

સાહિત-ત્ય (सं.) उपकरण, सामान, सामग्री, विद्याविशेष, काव्य अलंकार आदि ।

સાહી (सं.) स्याही, रोशनाई, मसि, पानीमें घुला हुआ काला रंग ।

સાહુ (वि.) साधु, प्रामाणिक, सीधा, (व्यवहारमें) ।

સાહુકાર (सं.) व्यवहारी, साधु पुरुष, रुपये पैसेकी लेनदेन करनेवाला, शर्राफ ।

સાહુકારી (स.) सचाई, प्रामाणिकता, साहूकारका धंधा, शर्राफी, (वि.) साहूकार सम्बन्धी, वाजिबा, खरा ।

સાહૂડી (सं.) एक प्रकारका पशु ।

સાહેત (अ.) तुरंतही, उसीबीचमें,

સાહેદ-દી(सं.) गवाही, साक्षी ।

સાહેબ (स.) स्वामी, मालिक धनी, पति, महाशय, सद्गृहस्थ, पद्वीसूचक प्रत्यय, आजकल अंग्रेज जातिके लोगोंके लिये भी यह शब्द प्रयोग होता है, महेरबान ।

સાહેબી (सं.) वैभव, प्रभुता, सज्जनता, दयालुता । [बढिया ।

સાહેબખાની (वि.) अच्छा और

સાહેબો (सं.) धनी, स्वामी, मालिक ।

સાહેર (सं.) कवि, शायर, शाभर ।

સાહેલી (सं.) सखी, आली, मायली, चमेली की जातिका एक पौधा ।

સાહ્ય (सं.) सहायता, मदद, पुष्टि ।

સાહ્ય (वि.) मददगार ।

સાહ્યતા (सं.) मदद, सहायता, पुष्टि ।

સાળ (सं.) कपड़ा बुनने का हाथसे या पैर से चलाने का यंत्र, लूम, हेन्डलूम । जुलाहोंके बिनने का यन्त्र । [जुलाहा, कोरी ।

સાળવી (सं.) कपड़ा बुनने वाला

સાળવેળી (सं.) सालेकी औरत ।

સાળિયુ (स) छिलके युक्त चांवल ।

સાળી (सं.) पत्नीकी बहिन, साली ।

સાળું (सं) साला, पत्निकाभाई इसशब्दको गाळी गलौज के समय में काममें लाते हैं ।

સાળો (सं) पत्नीका भाई, साला ।

સિંગ (सं.) फली, दानेदार लम्बे पतले फळ । [सींग ।

સિંગડી (सं.) छोटा सींग, भूंगा,

સિંગડું (सं.) पूर्ववत्, बड़ासींग ।

સિંગારા (सं.)एक प्रकारकी मछली ।

સિંગોટી (सं.) सींगपीछे कर देखो શિંગોટી । [निकालनेका रस्सी ।

સિંચણિયુ (सं.) कुएमेंसे पानी

સિંચવું (क्रि.) पानी छींटना, सींचना, सिंचनकरना, पानी देना ।

સિંચાણો (सं.) एक प्रकारका पक्षी, बाज, श्येन।

સિંદરી (सं.) गुच्छा।

સિંદેલોણ (सं.) सेंधानमक, सेंधव क्षार, लवण विशेष।

સિંહ (सं.) शेर, शार्दूल, सिंघ, योद्धा, लड़ाका, शूर, बहादुर, राशि विशेष। [जीत।

સિંહ કે સિયાળ (क्र) हारहुई या

સિંહકટી (वि.) सिंह सरीखी पतली कमर, कृषोदर।

સિંહણી (सं.) शेरनी, सिंहकीमादा।

સિંહસ્થ (सं.) सिंह राशिका बृहस्पति, यह योग बारह वर्षमें एक बार आता है। [समान ध्वनि।

સિંહનાદ (सं.) सिंह गर्जना, शेरके

સિંહાવલોકી (वि.) पहिले चरण के अंतिम अक्षरोंसे आरंभ होने-वाला दूसरा चरणहो ऐसा श्लोक।

સિંહાસન (सं.) ऐसा आसन जिसके आसपास दोनों ओरसिंहकी मूर्त्तियां बनी हों, राज गद्दी।

સિંહિકા (सं.) शेरनी, सिंहनी।

સિંહિકાસુત (सं.) शेर सिंह, राहु।

સિકતા (सं.) रेती, धूली।

સિકંદર (वि.) विजयी, जयी फतह मंद, आबाद, (सं.) इस नामका एक मुसलमान राजा हो गया है, (वि.) लुच्चा, बदमाश।

સિકલ (सं.) चेहरा, सूरत, शक्ल, मुहँ, दिखाव, डौल, रौनक, तेज।

સિકલીગર (सं.) हथियार साफ करनेवाला, औज़ार और हथि-यारोंपर धार चढानेवाला।

સિકારવું (क्रि.) स्वीकार करना, मंजूर करना, कबूल करना।

સિક્કાદાર (वि.) सुन्दर, दिख-नेमें खूबसूरत, मनोहर।

સિક્કાબંધ (वि.) कोई वस्तु जि-सको बन्द करके ऊपर छाप लगाई गई हो, अमानत, बराबर काममें नहीं लाया हुआ। अछूता।

સિક્કેકટાર (सं.) राजाके खड्गका चिन्ह, छाप।

સિક્કો (सं) छाप, मुहर, रुपया पैसा, शकल, सूरत, चेहरा, जय-चिन्ह, डंका, धौंसा, खेलनेका पत्थरका पासा विशेष।

સિચાણો (सं.) बाज, श्येन, एक जातिका पक्षी।

સિજવું-ઝવું (क्रि.) सीजना, गर्मीसे ढीला होना, बफाना, रंधना, उबळना, पारपड़ना, सिद्ध-होना, दुखी होना ।

સિજવવું-ઝવવું (क्रि.) सिजाना, उबाळना, रांधना, पारपटकना, शान्तकरना, ठंडाकरना ।

સિટી-ટ્ટી (सं.), सीटी, चीत्कार शब्द विशेष गांजेकी दम ।

સિડી (सं.) सीढी, नसेनी, निश्रेणी पैड़े, सीढियां । [ठंडा, शीतळ ।

સિત (वि.) सफेत, धवळ, श्वेत.

સિતાફળ (सं.) सीताफळ, शरीफा फळविशेष । [वृक्षविशेष ।

સિતાફળી (सं.) सीताफलका पेड़

સિતારો (सं.) ग्रह, तारा, योग, नसीब भाग्य ।

સિતારો પાંસરો (क्रि.) भाग्य, अनुकूल ह. दिन अच्छे हैं, योग उत्तम है ।

સિત્તાશી (वि.) सतासी, ८७, संख्या विशेष, (संवत १६८७ में बड़ा भारी दुर्भिक्ष पड़ाथा, उस-परसे) भूखे मरते हुवेको जब अन्न मिलजावे तब कहते है ।

સિત્તેર (वि.) सत्तर, ७०, संख्या विशेष ।

સિત્તોતેર (वि.) सतत्तर, सतह-त्तर, ७७, संख्या विशेष ।

સિદાવુ (क्रि.) दुखी होना ।

સિદ્ધ (वि.) सिद्धिप्राप्त, पूरा, साबित कियाहुआ, पक्व, बनाहुआ तैय्यार, निश्चित, साधु विशेष, अनुभव प्राप्त पुरुष, मंत्र इत्यादिका साधक, योगी, जादुगर, बोलका २१ वां भाग ।

સિદ્ધકરવું (क्रि.) साबितकरना ।

સિદ્ધતા (सं.) साबिती, प्रमाण ।

સિદ્ધસાધક (सं.) कपट से किसी कामको करनेवाले दो मनुष्य, एक सिद्ध और दूसरा साधन करनेवाला ।

સિદ્ધાઈ (सं.) बड़प्पन, सिद्धता, प्रामाणिकता ।

સિદ્ધાંત (सं.) दृढानिश्चय, निष्पन्न अर्थ, ठहराव, प्रमेय, अनुमान ।

સિદ્ધાંતી (वि.) मीमांसक, विचा-रक, वाद विवादसे सिद्ध किया हुआ मत ।

સિદ્ધિ (सं.) मंत्र प्रभावादि, जय, फतह, अद्भुत सामर्थ्य, दुर्गा, योग विशेष, निष्पत्ति, मोक्ष, वृद्धि, सिद्धि आठ हैं यथा " अणिमा, महिमा चैव लघिमा प्राप्तिरेव च । प्राकाम्यंच तथेशित्वं वशित्वंच तथापरम् । छुटकारा ।

સિંહાવરણ (सं.) प्रारंभिक पाठ, अक्षराभ्यास, प्रथमपाठ। [होना।
સિધવું (क्रि.) पूरा होना, सिद्ध-
સિધવો (सं.) बैलगाड़ी के पीछे लगानेका टेका। [जाना,बिदा होना।
સિધારવું-ધાવું (क्रि.) जाना, दूर,
સિધી (सं.) हबशी, नीगरो, ऐबीसीनियन।
સિંદરી (सं.) रस्सी, गुच्छ, झुमका।
સિંદુરિયા (वि.) सिन्दूरके रंगवाला, सिन्दूरवाला।
સિંદુરી (सं) विधवा स्त्रियों के पहिननेका सिन्दूरी रंगका वस्त्र (वि.) सिन्दूरी रंगका।
સિંદૂર (सं.) उपधातु विशेष, सिन्दूर नामसे प्रसिद्ध एक रंग, एक जातिका राग।
સિંદૂરઈરવું (क्रि.) धूलमें मिलना नष्ट करना, बरबाद करना।
સિંધભૈરવી (सं.) भैरवी नामक रागिनीका एक भेद विशेष।
સિંધવ (सं.) नमक विशेष, सैंधानोन, सेंधवक्षार।
સિન્ધુ (सं.) समुद्र, सागर, दरिया; इस नामसे प्रसिद्ध नदी, एक राग विशेष जो युद्ध के समय गाया जाता है।
સિન્ધુઉ (वि.) समुद्री, दरियाई, समुद्र सम्बन्धी।
સિન્ધુડો (सं.) राग विशेष।
સિંચવું (क्रि.) सींचना, पानी उँडेलना, पानी देना। [सिंचाई।
સિંચણી (सं.) पानी सींचनेका कार्य
સિપાઈ (सं.) सिपाही, सैनिक, रक्षाके लिये नियुक्त किया हुआ व्यक्ति, चौकीदार, योद्धा।
સિપાઈગીરી (सं.) सैनिक कार्य, फौजी धंधा, सिपाहीका काम।
સિપાત (सं.) संन्यासी, श्रीपाद।
સિફત (सं.) गुण, युक्ति, हिकमत, करामात, स्तुति, तारीफ, छटा, आदत। [विचित्र।
સિફ્લુ (वि.) ढंग ढौल रहित,
સિફ્તબહાદુર (वि.) छातीवाला, हिम्मतवाला, बहादुर, सीनाजोर।
સિફારસ (सं.) गुणवर्णन, प्रशंसा, अनुग्रहकारण, शिफारिश।
સિબન્દી (सं.) मुख्य राजाको आवश्यकता आपड़नेपर करद राजाओंका सेना वगैरः देना, करद राज्योंमें उन्हीं सामन्तों के खर्च से रखीहुई सेना।

સિમાળો (सं.) वृक्षविशेष, सेमल नामसे प्रसिद्ध वृक्ष ।

સિમાડો (सं.) गांवसे लगीहुई भूमिका अंत, ग्राम सीमा, अंत, आखीर, हद, सीम ।

સિમિટ (सं.) एक प्रकारकी बहुत ही चिकनी कृत्रिम मिट्टी ।[जम्बुक ।

સિયાળ (सं.) गीदड़, स्यार लड़ैया

સિર (सं.) मस्तक, माथा, नोक, शिखर, शृंग, सिरा ।

સિરજોરી (सं.) जबरदस्ती, नाथा फोड़, सिरपच्ची, बलात्कार ।

સિરતાજ (सं.) मुकुट, मस्तक धारण करनेका आभूषण ।

સિરપેચ (सं.) पघड़ीऊपर बांधनेका मोतीआदि बहुमूल्य पदार्थोंसे जड़ाहुआ पटका ।

સિરબંદી (सं.) देखो સિબંદી

સિરસ (सं.) एक प्रकारका चर्म्मरोग ।

સિરસ્તેદાર (सं.) कचहरीका मुख्य क्लर्क, कोर्टका हेड क्लर्क । [धन्धा ।

સિરસ્તેદારી (सं.) शिरस्तेदारका

સિરસ્તો(सं.)रिवाज़,चाल चलाआता काम, रस्म, नियम, सदाकी रीति ।

સિરોઈ(सं.) लम्बे गले तथा मोटे पेटका पात्रविशेष ।

સિલક (सं.) शेष, रकम, बाकी ।

સિલાજ (सं.) बत्ती, चिराग़, दीपक ।

સિલકી (वि.) बाकी रहा हुआ, शेष, बचा हुआ, अवशिष्ट ।

સિલસિલાબંદ (अ०) सिलसिलेवार, अनुक्रमपूर्वक, क्रमानुसार ।

સિલાઈ (सं) सीनेकी मजदूरी ।

સિલાજિત (सं.) शिलाजीत, पत्थरका मद या सार । [सैनिक ।

સિલેદાર (सं.) घुड़सवार, अश्वारोही

સિવડામણ–ણી (सं.) देखो સિલાઈ ।

સિવડાવવું (क्रि) सीना, सूई और धागेसे कपड़े के टुकड़े जोड़ना ।

સિવણ–ણી (सं.) सीनेकी रीति, सिलाइ, सियाहुआ ।

સિવવું (क्रि.) सीना, टांकामारना, डोरेडालना, सीमना, (वस्त्र)

સિવાએ–ય (अ०) अतिरिक्त, अलावह, बिना, बगैर ।

સિસમ (सं.) शीशम, काष्ठविशेष ।

સિસમજેવું (वि.) पक्का मजबूत और वजनदार । [काले रंगकी ।

સિસમનીપુતળી (वि.) बिलकुल

સિસોટા (सं) एक प्रकारका वृक्ष ।

સિસોટી (सं.) सीटी, ध्वनिविशेष ।

સિસોટીઆપવી (क्रि.) चिताना, इशारा करना सावधानकरना ।

સિસોળીયું (सं.) एक जानवर के शरीरपर के कांटे, लके शूळ ।

સિહાવિહા (वि.) शर्मिन्दा, लाज्जत ।

સીક (सं.) सींक, शलाका, जिनका मांस सेकनेकी लोहेकी छड़, (वि.) बीमार, अस्वस्थ, रुग्ण ।

સીકું (स.) छींका, बरतन, इत्यादि लटकानेका साधन । [चुकाना ।

સીડવું (क्रि.) बन्दकरना, देहालना,

સીડી (सं.) पैड सीढी, नसेनी ।

સીડી છેલ્લે પગથીએથી (अ०) शुरूसे आखारतक, आदिसे अततक ।

સીત (सं.) हलकी फाळ, (वि.) देखो शीत ।

સીતકાર (स.) ठंडसे कंप होनेका शब्द, कप कंपकं आवाज ।

સીદાવું (क्रि,) दुखी होना ।

સીદી-ધી (सं.) हबशी, शिद्दी, नीग्रो ।

સીધું (वि) सीधी, सुधा, प्रमाणिक रांधकर खानेके लिये अन्न ।

સીધુંજોખવું (क्रि.) मारना, कूटना पीटना, ठोकना ।

સીધુસામાન (सं.) भोजन बनानेका सामान, सामग्री (भोजनकी)

સીનો (सं.) छाती, सीना ।

સીપ (सं.) सीप, जिसमें मोती होते हैं सीपी ।

સીપનુંમોતી (सं.) बढिया मोती, बहुमूल्य मोती ।

સીમા (सं.) हद, सीमा, अंत ।

સીમટોટ (अ०) बिलकुल, तमाम सब ।

સીમંત (सं.) संस्कार विशेष, अगरणी, गर्भावस्थाका संस्कार विशेष ।

સીમાડો (सं.) देखो सीम । [चिन्ह ।

સીમાસુત્ર (स.) ग्राम, सीमाका

સીયમ (वि.) हलकी जातिका, निम्न दर्जेका, हलका नीमरे दर्जेका

સીરી (सं.) मिठास, मधुरता, लज्जत । [पात्र विशेष ।

સીસી (सं.) छोटी बातल, काच

સીસું (स.) धातु विशेष, सीसा ।

સીસો (सं.) बड़ी शीशी, बोतल ।

સીસામાં ઉતારવું (क्रि.) बशमें करना, अधिकारमें करना, आधीन करना ।

સીળી (सं.) शीतला, देवी विशेष ।

સીળું (वि.) ठंडा, (सं.) छांह, साया ।

સું (अ०) " अच्छा " अर्थकी वृद्धि करनेवाला प्रत्यय, उत्तमता बोधक । [में बाल बनवाना ।

સુંઆળું-વાળું (सं.) मृत्युसूतक

સુંઘણ—ણા (सं.) घास अथवा गेहूं के डंठलका पतला भाग ।

સુંઘવું (क्रि.) बासलेना, गंधलेना सुंघना, श्वास लेना । [अदरक ।

સુંઠ (सं.) सौंठ, शुंठी, सूखीहुई

સુંદડુંકવી (कि.) कान मग्ना, भड़काना, उकसाना, उत्तेजित करना ।

સુંઠનો સ્વાદ ચખાડવો (क्रि.) आटे दालका भाव बताना, मारना ।

સુંઢ—ઢ (सं) सूंड, हाथीका नाक शुंड, हाथीका हाथ । [सी टोकरी ।

સુંડલી (सं) छोटी डलिया, छोटी

સુંડવો (सं.) टला, छाबड़ा, बड़ो भारी डालिया, डाल ।

સુંથિયું (सं.) कपड़े या घासका गोल कुंडल ।

સુંઢિયું (सं.) हलकी जातिकी ज्वार, खराब किस्मकी ज्वारी (अन्न)

સુંઢિયોકોશ (सं.) सूंडदार चडस पानी खींचनेका चमड़े वगैरःका सूंडदार साधन ।

સુંદર (वि.) खूबसूरत मनोहर ।

સુંદરરીતે (अ०) अच्छी प्रकार से भली भांतिसे ।

સુંદરિ (सं.) खूबसूरत स्त्री, पत्नि ।

સુંબળી (सं.) एक प्रकारकी सूखी टिकड़ियां (खाद्य पदार्थ)

સુંવાળી (सं.) गेहूंके आटेकी तली हुई शुष्क पूरी (खाद्य पदार्थ) ।

સુંવાળું (वि.) नरम, मुलायम, कोमल, (सं.) जन्म सूतक, वृद्धि सूतक, स्थावर ।

સુ (अ०) उत्तमता सूचक प्रत्यय ।

સુયાણી (सं.) दाई, बच्चोंके उत्पन्न होते समय जाकर उसके पैदा करनेमे सहायता करनेवाली स्त्री ।

સુકન (सं.) शकुन, शुभचिन्ह ।

સુકલકડા (वि) लम्बा और दुबला ।

સુકવણી (सं.) सूकना, शुष्कहोना ।

સુકવણું (सं.) सारी बर्षा ऋतुमें जळ न बरसने पर सूखा सूखा ।

સુકવવું (क्रि.) सुखाना, शुष्क करना, गर्मी पहुंचाना ।

સુકવું (कि.) सूखना, शुष्कहोना,

સુકાન (सं.) पतवार, डांड, नाव चलानेका दण्ड, चाबी, कुंजी ।

સુકાની (ं.)पतवार चलानेवाला डांड खेनवाला व्यक्ति ।

સુકાવું (कि.) सूखना, शुष्कहोना, कुम्हलाना, गीलापन हटना, दुर्बल होना, कृशशरीर होना, मुरझाना, कुम्हलाना ।

સુકાળ (सं.) सुभिक्ष, अन्नजल की विपुलता, अधिकता ।

સુકીર્તિ (सं.) अच्छी, ख्याति, इज्जत ।

સુકુમાર (वि.) अत्यंत नाजुक, अतिशय कोमल ।

સુકોમળ (वि) अत्यंत कोमल ।

સુકૃત (सं) पुण्य, उत्तम कार्य, धर्म, सद्धर्म, (वि) पुण्यजनक, अच्छा, उत्तम ।

સુક્કર (सं.) शुक्रवार, जुम्मा ।

સુક્કો (सं) तमाखु, तम्बाकू । (वि.) खाली, खोटा निकम्मा, व्यर्थ, जिसके पास पैसा न हो ।

સુખ (सं.) आराम, कल, शांति, इन्द्रियोंकी तृप्ति, स्वस्थता, चैन, सन्तोष, हर्ष, आनंद, मौज, शौक ।

સુખકર–કારક–રી (वि.) सुख देनेवाला, आनंदप्रद, सुखद ।

સુખચેન (सं.) शांति, चैन ।

સુખડ (सं) चन्दन, श्रीखंड ।

સુખડિયો (सं.) हलवाई, मिठाई बनानेवाला ।

સુખડી (सं.) मिठाई, बिना रांधा [हुआ अन्न ।

સુખડી જમાડવી (क्रि.) पिटाई करना ।

સુખતળી (सं.) जूतोंमें डालनेकी तलियां चमड़े आदिकी ।

સુખદ–દાઈ–દાયક (वि.) सुख देनेवाला ।

સુખધાની (सं.) शय्या, सेज, पलंग ।

સુખન (सं.) शब्द, उच्चारण, वचन ।

સુખપાલ (सं.) एक प्रकारकी पालखी यानविशेष । [एक, सुषुम्ण ।

સુખમણા (सं.) तीन नाड़ियोंमेंसे

સુખમા (स.) शोभा ।

સુખરાશ–શિ (वि) बहुतही सुखका देनेवाला, अत्यंत सुखी ।

સુખરૂપ (वि.) आरोग्य, तन्दुरुस्त, क्षेम, सुखी, (अ०) सुखमें ।

સુખલા (सं.) गेहूंका मोटा आटा ।

સુખવેલ (सं.) बढिया चांवल ।

સુખસજ્યા (सं.) ऐसा शय्या जिसपर सोनेसे सुख हो । भोगविलासके लिये पलंग ।

સુખસાતા (सं.) शांति, चैन, सुख, सन्तोष, धैर्य ।

સુખાકારી (सं.) तन्दुरुस्ती, आरोग्यता, सुखकी दशा ।

સુખાસ્વાદ (सं.) सुखका भोग, आनन्द भोग ।

સુખાવું (वि.) सुखी, सुख प्राप्त ।

સુખાળુ થવું (क्रि.) सोना, पौढना, शयन करना ।

સુખિયું (वि.) सुखी, आनन्दयुक्त ।

સુખી (वि.) सुख करनेवाला, आनंदी, अच्छी दशामें ।

સુગંધ (सं) खुशबू, अच्छी गंध, महेंके, सुवास, शोभन ।

સુગંધિદાર (वि.) खुशबूवाला, अच्छी वासवाला ।

સુગમ (वि.) सहज, सरल, सुकर, अल्प परिश्रमसे करनेयोग्य, सहल, अनुकूल । [बया नामक पक्षी ।

સુગરી (सं.) एक प्रकारका पक्षी ।

સુગરીનો ભાળો (सं.) उलझा हुआ, तंतु पदार्थ या बाल वगैरः ।

સુગરું (सं.) बयाका घोंसला, (वि) चालाक, चतुर ।

સુગરો (सं.) बया, पक्षी (नर) ।

સુગામણું (वि.) घिनौना, घृणा पैदा करनेवाला, सूगला ।

સુગાવું (क्रि.) नफरत पैदा होना, घृणा होना, सूग आना ।

સુગાળ (वि.) जिसे झट घृणा पैदा होती हो ।

સુઘડ (वि.) सुन्दर, मनोहर, सुडौल, स्वच्छ, चतुर, विवेकी । चतुर, सभ्य ।

સુઘડતા(सं.)स्वच्छता,सफाई,चातुर्य, मनोहरता । [दुर्ग्का वर्णन ।

સુચરિત(सं.) अच्छा चरित्र, बड़ा-

સુચવવું (क्रि.) बतलाना, सूचित करना, इशारा करना ।

સુજન (सं.) साधुजन, भला मानस, सदाचारी, परोपकारी ।

સુજનતા (सं.) भलाई, साधुता, परोपकारिता, भलमंसी ।

સુજની (सं.) रजाई, सौर, रूई भरकर ओढनेके लिये बनाया हुआ वस्त्र । [सूजन आना ।

સુજવું (क्रि.) सूजना, फूलना,

સુજશ (सं.) यश, सुन्दरयश, कीर्ति ।

સુજાણ (वि.) चतुर, होशियार, प्रवीण, दक्ष जानकार ।

સુજાત (वि.) अच्छी जातिका,कुलीन, भला, वरवर्ण । [तहीं सूजना ।

સુજીને થાંભલો થવું (क्रि.) बहु-

સુઝવું–સૂઝવું (क्रि.) दिखाई, पड़ना, दिखना, नजर आना, दृष्टि आना । मनमें भास होना ।

સુઝાડવું (क्रि.) दिखाना, सुझाना ।

સુડતાળીસ (वि.) सैंतालीस, ४७, संख्याविशेष ।

સુડતાળો (सं.) संवत् १८४७ में घोर दुर्भिक्ष पड़ा था इस लिये महंगीके समय सूचनार्थ यह शब्दका प्रयोग करते हैं । दुर्भिक्ष-समय, दुष्काल ।

સુડવું (क्रि.) ज्वारके खेतमेंसे ज्वारके वृक्षको जड़से काटना।

સુડી-સૂડી (सं.) सरौता, सरौती, सुपारी काटनेका यंत्र विशेष।

સુડો-સૂડો (सं.) तोता, सुग्गा शुक, पक्षीविशेष। (सं.) बड़ा सरौता, कैरी कट्टा।

સુણવું (क्रि.) सुनना, श्रवण करना फूलना, सूजना, सोजन आना।

સુણાવણી (सं.) सुनाई, सुनवाई, पेशी।

સુણાવવું (क्रि.) जतलाना, सुनाना।

સુત (स.) बेटा, पुत्र, लड़का, तनय। सारथी, गाड़ीवान, कोच-वान। क्षत्रियद्वारा ब्राह्मणीके गर्भमे उत्पन्न बालक।

સુતનું (वि.) नाजुक, कोमल, सुंदर शरीरवाला, पतला। (सं.) सुन्दर स्त्री।

સુતક-સુતર (सं.) प्रसव और मर-णकी अशुद्धि, अशौच।

સુતર (सं.) डोरा, सूत्र, सूत, धागा, तागा।

સુતરને તાંતણે બંધાયેલું (वि.) निरंतर स्नेहका भूखा, तावेदार, शरण गया हुआ।

સુતર-રૂ (वि.) सहज, सरल, सुगम।

સુતરઉ-રાઉ (वि.) रूईका बना हुआ, कपासका बना हुआ, सूती।

સુતરફેણી (स.) एक प्रकारकी मिठाई।

સુતરસાળ (सं.) एक तरहके चांवल

સુતરિયો (सं.) सूतका व्यापारी।

સુતળ (वि.) सप्त पातालोंमेंसे तीसरा पाताळ। संकलन करना।

સુતળવું (क्रि.) जोड़ना, बांधना,

સુતળી (सं.) सुतली, डोरी, सूत्र या सनका रस्सा (पतली) जूतोंमें लगनेके सुतली।

સુતા (सं.) बेटी, पुत्री, तनया, दुहिता, लड़की, आत्मजा।

સુતાર (स) बढ़ई, तक्षक, खाती।

સુતારકામ (सं.) लकड़ी घड़नेका काम, काष्ठशिल्प। [सम्बन्धी।

સુતારી (वि.) बढ़ईका खातीका, तक्षक।

સુત્રામા (सं.) इन्द्र, सुरपति।

સુથાડિયો (सं.) एक प्रकारका मोटा घास।

સુદર્શન (सं.) विष्णुका चक्रायुध, सुन्दरदर्शन, अच्छा दिखावा: खूबसूरती।

સુદામત (अ०) सलामत, क्षेम, अच्छी परिस्थितिमें।

સુદામા (सं.) कृष्णका एक दरिद्र ब्राह्मण सहपाठी मित्र ।

સુદામાપુરી (वि) गरीबग्राम, जहां कुछभी नहीं मिलसके ऐसा नगर।

સુદામાની ઝુંપડી (सं.) गरीब आदमीका मकान, टूटाफूटा घर।

સુદામાના તાંદુલ (सं.) तुच्छभट, न कुछ नजराना ।

સુદિન (सं.) अच्छादिन, त्योहार, पर्वदिवस, उत्तमदिन, उत्सवदिन ।

સુદી (वि.) शुक्लपक्ष, चांदनीरात ।

સુદૃઢ (वि.) मजबूत, कठोर सख्त, कड़ा, अटल ।[वृक्ष, होशहवास ।

સુધબુધ (सं.) समझ, चेत, ज्ञान.

સુધબુધ ઊડી જવી (कि.) होश नहीं रहना, बेसुध होना, हतचेत होना ।

સુધરવું (कि.) शुद्धहोना ठीकहोना, सुधरना, दुरुस्तहोना ।

સુધરાઈ (सं.) सुधार, अच्छीदशा ।

સુધા (सं.) अमृत, अमी, पीयूष, रस, गंगा, हरें, मधु, हरीतकी ।

સુધાકર (सं.) चन्द्रमा, चांद ।

સુધારક (सं.) सुधार करनेवाला, रिफार्मर, सुधारनेवाला ।

સુધારવું (कि.) सुधारना, ठीक करना, ज्ञान देना, तराशना, (शाकभाजी) ।

સુધારસ (सं.) अमृत, सुधा, पीयूष ।

સુધારાવાળું (वि.)सुधारा हुआ, नई रोशनीके अनुसार चलनेवाला ।

સુધીર (सं.) सुधीर ।

સુધી (सं) पंडित, अच्छी बुद्धिवाला व्यक्ति, (वि.) सीधा, सूधा, खरा, ठीक ।

સુધીર (वि.) दृढ, बड़ाही, बहादुर ।

સુદ્ધાં (अ०) साथमें, संगमें, सहित ।

સુનકાર (सं.) देखो શુનકાર ।

સુનત–તા (सं.) सुन्नत, मुसलमान बननेका एक संस्कार लिंगेन्द्रियके अग्र भागकी थोड़ी मोच ।

સુનમુન (अ०) दिग्मूढ, बेसुध, मूर्च्छित, सुनसान ।

સુની–ન્ની (सं.) मुसलमानोंके दो धर्मोंमेंसे एक, यावनी पंथविशेष ।

સુનેરી (वि.) सुनहरी, सोनेके रंगकी ।

સુંદર (वि.) खूबसूरत, अच्छा, सुरूप, रूपवान मनहर ।

સુંદરી (सं.) सुरूपा, रूपवती स्त्री ।

સુપડી (सं.) छोटासूप, छोटाछाज । सूर्प, रूप, गाड़ीके पहियेपरका तख्ता, वा लोहेका पतरा, महरार्ब ।

સુપડો (सं.) सूप, सूर्प, छाज, अन्न फटकनेका साधन, पानी उंडेलनेका सूप सरीखा पात्रविशेष ।

સુપડે આવવું (क्रि.) ऋतुमती होना, रजस्राव होना, कपड़ो होना।

સુપડે ને ટોપલે ઉભરાવું (क्रि.) जमाव होना, भीड़ होना ।

સુપતી (सं.)पत्थर फोड़नेका हथौड़ा

સુપન (सं.)स्वप्न, सपना, ख्वाब ।

સુપાત્ર (वि.) योग्य, लायक, कुलीन, सज्ञान, उत्तमजन, खानदानी।

સુપુત્ર (स.) अच्छापुत्र, सुपूत, सपूत । [हवाले करना, दना ।

સુપુરત (सं.) सिपुर्द, सौंपना,

સુપ્ત (वि.) सूताहुआ, सोताहुआ, ऊंघताहुआ । [इच्छा, प्रवीणता ।

સુબુદ્ધિ (सं.) अच्छी बुद्धि, अच्छी

સુબેદાર (सं.) परगनेका हाकिम, फौजमेंका एक पद ।

સુબેદારી (सं.) सूबेदारीका काम ।

સુબો (सं.) परगनेका हाकिम, सूबा ।

સુબોધ (सं.) सद्ज्ञान, अच्छी सलाह, सहजहीमें समझा सके ऐसा ज्ञान ।

સુભગ (वि.) भाग्यशाळी, खुशकिस्मत।

સુભગા (वि.) सौभाग्यवती, सधवा ।

સુભટ (सं.) योद्धा, लड़ाका, वीर ।

સુભાગ્ય (सं.) अच्छा भाग, अच्छी तकदीर अच्छा नसीब ।

સુભાષિત (वि.) अच्छी वाणीका सुन्दर भाषामें वर्णित ।

સુમતિ (सं.) सुबुद्धि, भलमन्सी, अच्छी बुद्धि, अच्छी अक्ल ।[प्रसून ।

સુમન (सं.) पुष्प, फूल, कुसुम,

સુમનશૈયા (सं.) फूलोंकी सेज ।

સુમસામ (वि.) चुपचाप, मौन, गुमसुम, सुनसान ।

સુમાર (सं.) आसरा, अड़सट्टा, अटकळ, अन्दाज, अनुमान गणना रंग, नशा, माप, तौल ।

સુમારે (अ०) अन्दाजसे, अनुमानतः ।

સુંમ (वि.) कदर्य, कंजूस, चुप, गूंगा, मूक, कृपण ।

સુયાણી (सं.) दाई, दायन, बच्चा पैदा करानेवाली स्त्री ।

સુર (सं) देव, देवता, अजर, स्वर, आवाज़, राग, ध्वनि ।

સુરખી (सं.) लाली, रक्तिमा, तेज़ चमक, शोभा, प्रभाव, तेज़ी ।

સુરંગ (सं.) पत्थर फोड़ने के लिये अथवा शत्रुविनाश के लिये पृथ्वीके भीतर गड्ढा खोदकर बारुद भरके उड़ा देनेकी क्रिया जमीनके भीतर का मार्ग, सेंध ।

સુરાવટ (सं.) आवाज निकालनेकी रीति, स्वरको टीपमें जानेका ढंग।

સુરીનર देव, और मनुष्य [मोहक।

સુરેખ (वि.) सुन्दर, मनोहर,

સુરૂપ (वि.) खूबसूरत, रूपवान।

સુરેશ(सं.)देवराज, इन्द्र, सुरपति।

સુરોખાર (सं.) एक प्रकारका क्षार।

સુલટાવવું (कि.) सूधाकरा, चितकरना, सुलझाना।

સુલટું (वि.) सूधा, सीधा, चित, ठीक चाहिये जैसा।

સુલતાન (सं.) बादशाह।

સુલતાની (वि.) बादशाही।

સુલભ (वि.) सहज, सुगम, आसान सहल, जो बिना कष्टके प्राप्त हो सके।

સુલક્ષિત (वि.) मनोहर, बहुतही सुंदर।

સુલાખ (सं.) सुराख, छिद्र, सिक्के मे अथवा आभूषणमें परीक्षार्थ कियाहुआ छिद्र।

સુલક્ષણુ (सं.)शुभलक्षण, शुभचिन्ह।

સુલુહ-ખ (सं.) समझौता, सुलह, मेळ मिलाप, प्रेम, मिलनसारी।

સુલેહ (सं.) शांति. सुलह, सन्धि।

સુલેહાધિકારી (सं.) सन्धिकराने के लिये मध्यस्त पंच, जस्टिस आफ धोपीस।

સુવર (सं.) सुअर, शूकर, सूवर, बाराह, पशुविशेष।

સુવર્ણ(सं.)सोना, कनक, हेमकंगन, स्वर्ण, धातु विशेष (वि) वरवर्ण, अच्छे रंगका।

સુવાણુ (सं.) आराम, चैन, तबियतका परिवर्तन, तबियत सुधरना।

સુવા (सं.) एक प्रकारकी फलियां ये औषधि के काममें आती हैं। सुगन्धित वनस्पति विशेष, सूआ।

સુવાંગ (सं.) वेश, सांग, स्वांग, पोशाक, पहिनावा। (वि.) निजका, खुदका।

સુવાક્ય (सं.) उत्तम भाषण, अच्छी, बोली, सुवचन।

સુવારોગ (सं.) स्त्रीको प्रसवके दिनोंमें होजानेवाला एक रोग विशेष।

સુવાવડ (सं.) बालक उत्पन्न होने के सवामहीने बादका समय।

*સુવાવડી (सं.) जच्चा, ऐसी स्त्री जिसने कुछ दिन पूर्वही बालक प्रसव किया हो।

સુવાસ (सं.) सुगन्धि, उत्तम बास।

સુવાસિત (वि.) अच्छी गन्धवाला, खुशबूदार, सुगन्धयुक्त।

સુરંગ (સં.) अच्छे रंगका घोड़ा।
સુરંગી (वि) शोभित, उत्तम रंगका, विविध रंगका ।
સુરજ (सं.) सूर्य, सूरज, रवि, भानु।
સુરજ ચડતી કળાએ હોવો (क्रि.) अच्छे दिनोंका आगमन । भाग्य चेतना ।
સુરજ ચઢતો છે (क्रि.) दिन अच्छे हैं, भाग्य चमकता हुआ है।
સુરજ તપે છે (क्रि.) बड़े भाग्य है। दिन अच्छे हैं ।
સુરજ માથે આવવો (क्रि.) अच्छी दशाको प्राप्त होना ।
સુરજફુલ (सं.) एक पुष्प विशेष जो प्रातःकाल खुलता है और जिस ओर सूर्य होता है उसी तरफ मुहं किये रहता हैं।
સુરજમુખી (सं.) पुष्पविशेष, जिसमें सूर्यका चिन्ह हो।
સુરજ વંશિ (वि.) सूर्यके वंशका राज्य, (सूर्यवंश और चंद्रवंशके किसी प्राचीन समय में बड़े भारी प्रतापी राजा हो गये हैं।)
સુરણ (सं.) एक प्रकारका कंद ।
સુરણનારગાદથવા (क्रि.) अच्छा अच्छा खानेका मन होना ।
સુરત (सं.) सूरत, शुक्ल, चेहेरा, मुखाकृति, स्मृति, याद, मैथुन, स्त्री पुरूषका संभोग, शुभऋतु, अच्छी मौसिम ।
સુરતરૂ (सं.) कल्पवृक्ष, देववृक्ष ।
સુરતા (सं.) स्मृति, याद, ध्यान, ख़याल । [मोह ।
સુરતિ (सं.) प्यार, स्नेह, प्रेम, प्रीति ।
સુરતી (वि.) सूरत शुक्लका, दिखावटी ।
સુરતીસગાઈ (सं.) मुख देखेकी
સુરતીભાઈછે (क्रि.) नाममात्रका भाई है ।
સુરદાસ (सं.) अंधा, नेत्रहीन,अंध।
સુરદ્રુમ (सं.) सुरतरु, कल्पवृक्ष ।
સુરધન (स.) पूर्वज, अग्रज, पुरखा।
સુરપતિ (सं.) इन्द्र, देवराज ।
સુરધેનુ (सं.) देवताओंकी गऊ, कामधेनु, कामदुघा।
સુરફાક (सं.) एक प्रकारका ताल, विशेष (गायनमें)
સુરભી (सं.) देखो सुरधेनु ।
સુરમો (सं.) सुरमा एक प्रकारकी धातु, नेत्रांजन, आंखोंका अंजन ।
સુરવાલ-ળ (सं.) पजामा सूथना । खूसना,पायजामा,पतलून ।

સુરસુરી (सं.) गंगा नामसे प्रसिद्ध नदी।

સુરલોક (सं.) स्वर्ग, देवलोक।

સુરા (सं.) दारू मदिरा, शराब।

સુરાખ (स.) छिद्र, छेज, बेज, सूराख।

સુરાંગના (सं.) अप्सरा, देवांगना, देवताओंकी स्त्री, परी।

સુરપાત્ર (सं.) मद्यपात्र, शराब पानेका बर्तन। [खोरी।

સુરાપાન (सं.) मद्यपान, शराब

સુરારિ (सं.) राक्षस, दानव, दैत्य।

સુવાસિની (सं.) सुहागिन, सधवा पतियुक्ता।

સૂવું (क्रि.) सोना पड़रहना, ऊंघना लेटना, निद्रा लेना।

સુશિક્ષિત (वि.) अच्छी शिक्षा पायाहुवा, पठित, साक्षर।

સુશીલ (वि.) उत्तम स्वभाववाळा, साधु, सुस्वभाव।

સુશોભિત (वि.) सुन्दर, बहुतही शोभा युक्त, अच्छे दिखावका।

સુશ્રુષા (सं.) सेवा, चाकरी, आदर, सत्कार।

સુષુપ્તિ (सं.) अवस्था विशेष, घोरनिद्रा,खर्राटेकीनींद,गहरीनींद।

સુષુમ્ના (सं.) देखो सुષમણા।

સુસવાટ-ટો (सं.) सूसूशब्द, फुंकार, फुत्कार।

સુસવાડ-ળ (सं.) एक प्रकारका मगर, जळजन्तु विशेष।

સુસ્ત (वि.) आळसी, धीमा, मंदा काहिल, ठंडा। [आळस्य।

સુસ્તી (सं.) आळस, काहिली,

સુસ્નાતુ (वि.) नहाधोकर, स्नान करके।

સુસ્વર (वि.) अच्छी अवाज, मीठा स्वर, मीठी ध्वनि।

સુહાગણ(वि.)प्यारी,लाड़िली,मान्य, सधवा। [पाना, चैन होना।

સુહાવું (क्रि.) सुहाना, शोभा

સુહૃદ (सं.) दोस्त, मित्र, सखा, भाईबन्धु (वि.) परमप्रिय, परम स्नेही।

સુહૃદજન (वि.) भावयुक्त, अच्छे हृदयवाळा (सं.)शुभचिंतकामित्र।

સુળ (सं.) शूळ, दर्द।

સુળદંત (सं.) लम्बे पैने दांत।

સૂકર (सं.) शूकर, सूअर, बाराह।

સૂકું (वि.) जलहीन, शुष्क, सूखा दुबला, कृष, पतला।

સૂકો (सं.) पीनेकी तम्बाकू, तमाखू, सूको फूंकवो।

સૂકો ફૂંકવો (क्रि.) तमाखूपीना, चिलमपीना।

સૂક્ત (सं.) सुन्दरकथन, वेदमें यथास्थाप्र मंत्रोंका समुदाय।

(वि.) अच्छी तरह कहा हुआ, अच्छा ।

સૂક્ત (सं.) उत्तम भाषण ।

સૂક્ષ્મ (वि.) थोडा, अल्प, बारीक, तीक्ष्ण । पतला, छोटा ।

સૂક્ષ્મદર્શક (वि.) छोटी वस्तु जिससे बडी दृष्टि आवे ऐसा यंत्र-साधन ।

સૂક્ષ્મદર્શી (वि.) बहुतही बारीकीसे देखनेवाला, तेज़ नजरका ।

સૂક્ષ્મદેહ (सं.) जीवात्माका दूसरा शरीर (वेदान्तमें जीवात्माके चार देह माने हैं १ स्थूल, २ सूक्ष्म, ३ कारण, ४ महाकारण ।

સૂગ (सं.) घृणा, नफ़रत, कंपकपी ।

સૂચક (वि.) बोधक बतानेवाला. जतानेवाला ।

સૂચના (सं.) जनाना, चेतावनी, विज्ञापन, इत्तला, इशारा, चिन्ह, संकेत, खबर देना ।

સૂચિત (वि.) जताया गया, विज्ञापन दिया हुआ, विदित, कहा हुआ ।

સૂચી (सं.) फेहरिस्त, (वि.) सूचना करनेवाला, दर्शक बनानेवाला

સૂચીપત્ર (सं.) फेहरिस्त, प्रस्तावना, यादके लिखा हुआ कागज़ ।

સૂઝ (सं.) समझ, दृष्टि, निरख, परख । [अशुद्धि, अशौच ।

સૂતક (सं.) प्रसव, और मरणकी

સૂતકી (वि.) जिसे सूतककी अशुद्धि हो, अपवित्र । [ब्याई हुई स्त्री ।

સૂતિકા (सं.) जच्चा, प्रसूतिस्त्री,

સૂત્ર (सं.) डोरा, सूत, धागा, तंतु, नियम, पद्धति, मत, कळा, (वि.) सूधा, सीधा, ठीक ।

સૂત્રધાર (सं.) नाटकका मुख्य कार्यकर्ता, बढ़ई, तक्षक, खाती ।

સૂદ-દી (सं.) सुदी, शुक्ल पक्ष, उजियाला पखवाड़ा ।

સૂધ (सं.) सुधि, सुध, खबर, होश, संज्ञा, चेत ।

સૂધ આવવી (क्रि.) चेतहोना, होश आना, सुधि आना ।

સૂધી (सं.) तक, पर्यंत, तलक ।

સૂધું (वि.) सीधा, सूधा, फैला हुआ, बिछा हुआ ।

સૂનમૂઢ (वि.) मूर्छित, बेहोश, बेखबर, अचेत ।

સૂનું (वि.) शून्य, निर्जन, एकान्त, जहां कोईभी नहो, सुनसान ।

સૂફ (सं.) ऊनके बस्त्र ।

સૂમ (वि.) कृपण, कंजूस ।

સૂર (સં.) स्वर, गवनिधियोंके सात स्वर, आवाज़, ध्वनि, शब्द। शौर्य, शूर, सूरज, सूर्य।

સૂરિ (સં.) विद्वान, पंडित, धर्मगुरु, जैनसाधु। [(गति)।

સૂરિલું (वि.) शौर्य्य चढानेवाला,

સૂરી (સં.) सती, साध्वी, पतिके साथ प्राणकी बली देनेवाली स्त्री।

સૂરો (अ.) बहादुर, शूर, वीरपुरुष।

સૂર્ય (सं) सूरज, भानु, आफताब।

સૂર્યકાંત (सं.) एक प्रकारका चमकताहुआ पत्थर, स्फटिकमणि।

સૂર્યગ્રહણ (सं.) सूरजका ग्रहण, सूर्य और पृथ्वीके मध्यमें चंद्रमाके आजाने से सूर्य बिम्बका जितना भाग छाया पड़कर काला होजाता है वह।

સૂર્યપુટ (सं.) ऐसी औषधि जो सूर्यकी धूपमें रखकर तैयार की जाती हो।

સૂર્યમણિ (सं.) एक प्रकारका पत्थर।

સૂર્યમંડળ (सं.) सूर्यबिम्ब, सूरज के आसपास फिरनेवाले ग्रह।

સૂર્યવંશ (सं.) सूर्यसे चलाहुआ कुल, इक्ष्वाकु वंश।

સૂર્યાસ્ત (सं.) सूर्यका अस्ताचल गमन, सूरजका छुपना।

સૂર્યોદય (सं.) सूरजका उदय।

સૂસવું (क्रि.) सूसूकरना।

સૃજવું (क्रि.) उत्पन्न करना, पैदा करना, जन्म देना।

સૃષ્ટિ (सं.) उत्पत्ति, जन्म, उद्भव, संसारकी रचना।

સૃષ્ટિક્રમ (सं.) प्रकृतिकाक्रम, कुदरतकी चाल, दुनियाका रीति रिवाज़।

સૃષ્ટિનિયંતા (सं.) ईश्वर, परमात्मा।

સૃષ્ટિરચના (सं.) जगरचना।

સૃષ્ટિસૌન્દર્ય (सं.) सृष्टिलीला, प्रकृतिकी शोभा।

સેં (वि.) सौ, शत, (अ०) क्यों, किसलिये, किसकारण?

સેંકડે (अ०) सौ ऊपर, शताधिक।

સેકડો (सं.) सैकड़ा।

સેંતક (वि.) पुष्कळ, घना, अधिक।

સેંતલો (सं.) कांटेउठाने के लिये दुफंकी लकड़ी विशेष, जेळी, जेरी।

સેંતી–થી (सं.) मांग, बालोंमें बनाई हुई रेखा विशेष।

સેંતો–થો (सं.) पूर्ववत्।

સે (सं.) सहनशक्ति, आदत, अभ्यास, रिवाज, चाल।

સેકટો (સં.) एक किस्मका वृक्ष ।

સેચન (સં.) सिंचाई पानी देना, सिंचन, सींचना ।

સેજ (સં.) बिछौना, शय्या, सोने के लिये पलंग वगैरह, रुदन, रोना, बिलाप, (अ०) सहज में, साधारण नया (वि.) थोड़ासा जरासा । [अंश, थोड़ासा भाग ।

સેજાર (સં.) भाप, वाष्प, बाफ,

સેજારત (अ०) सहजमें ।

સેજિયું (वि.) किनारी रहित धोती, पंचा, बिना कोरकी धोती ।

સેજું (સં.) असर, प्रभाव, हाड, गात्र, बदन ।

સેજે (अ०)सहजमें बिनापरिश्रमके ।

સેટુકી (वि.) जो चोरीकरे ।

સેડ (સં.) पक्ष, जोर, बळ ।

સેડો–ઢો (સં.) सीमा, हद, सींव, पगदण्डी, रास्ता ।

સેણ (સં.) सन, जूट, (वि.) सज्जन, सद्‌गुणी, सयाना, चतुर।

સેણી (સં.) सहनता ।

સેત (સં.) पुल, सेतु ।

સેતરંજ (સં.) देखो शेतरंज ।

સેતુ (સં.) बांध, पुल, पाळ ।

સેતાન (સં.) शैतान, बदमाश, दुष्ट ।

સેતાન ખોળિયું (वि.) तोफानी, उद्दंड ।

સેતુર (સં.) देखो શેતુર ।

સેન (સં.) फौज़, सैन्य, स्थान ।

સેના (સં.) फौज़, सैन्य ।

સેનાખાસખેલ (સં.) गायकवाड़ राजाओंका एक खिताब ।

સેનાની (સં.) सेनापति, सेनाध्यक्ष।

સેનાપતિ (સં.) पूर्ववत् ।

સેનું (अ०) किसलिये, किस कारणसे, कैसा किस तरहका ।

સેનો (સં.) एक प्रकारका सूती वस्त्र।

સેવ–બ (સં)सेब नामसे प्रसिद्ध फल।

સેર (સ.) सैर, हवाखोरी, चहलकदमी, मौजमज़ा । वजनविशेष, ४० मण, शिरा, नस, नाड़ी, वह डोरा जिसमें मोती वगैरः पिरोये गये हों ।

સેરડી (સં.) देखो શેરડી ।

સેરડો (સં.) आनेजानेसे बना हुआ मार्ग, पगदण्डी, बहुतठंडा या बहुत गर्म पीनेसे कलेजेमें कंठसे जो मालूम होता है वह ।

સેરભાઈ (સં.) एक प्रकारकी तूंबी ।

સેરવવું (क्रि.) सरकाना, खोंसना ।

સેરવો (સં.) शोरवा, मांसको उबालकर बनाया हुआ रस ।

सेलियुं (सं.) सेर भर समाने ऐसा माप ।

सेली (सं.) सबकी नली, मोहरा ।

सेलीखाभान (सं.) एक जातिका गोंद । एक प्रकारका खुशबूदार गोंद ।

सेल (सं.) मौज़ मजा, आनन्द । शिला, चपटा पत्थर । (अ०) सहल, आसान, सहज ।

सेलडघेली (सं.) न तो पागलही और न चतुरही ऐसी स्त्री ।

सेलडुं-ड़ुं (स.) पुष्पविशेष ।

सेलाणी (सं.) छैल, सैलानी ।

सेलारी (सं.) स्त्रियोंके पहिननेका वस्त्रविशेष ।

सेलासाडी (सं.) स्त्रियोंके पहिननेका लालपीली धारियोंका वस्त्रविशेष ।

सेली (सं.) राख, भस्म, (मुर्देकी)

सेलो सं.) दूध निकालते समय गऊके पिछले पैरोंमें बांधनेकी रस्सी, न्याना ।

सेव (सं.) देखो शेव और सेवा ।

सेवक (सं.) नौकर, चाकर, भक्त, दास, सेवा करनेवाला मनुष्य ।

सेवकाई (सं.) सेवा करनेकी रीति ।

सेवट (सं.) देखो शेवट ।

सेवडी (सं.) जैन धर्मावलम्बिनी स्त्री (मुंडपंथ साधु) ।

सेवडो (सं.) जैन मतानुयायी साधु जो सिरपर बाल बढाते हैं । जादूगर, बाजीगर ।

सेवती (सं.) एक प्रकारका पुष्प ।

सेवन (सं.) उपयोगमें लेना, काममें लाना, प्रयोग, उपयोग । सेवा, चाकरी, अंडोंपर पंख फैलाकर बैठना (पक्षियोंमें)

सेवतड़ुं (सं.) सुपारीकी एक किस्म ।

सेवर्धन (सं)ऊंची जातिकी सुपारी ।

सेवना (सं.) स्वामिभक्तियुक्त सेवा, ईमानदारीसे टहलचाकरी ।

सेववुं (क्रि.) सेवा करना, टहल करना, सेवन करना, काममें लेना, अंडोंपर पंख फैलाकर बैठकर गर्मी पहुंचाना ।

सेवा (सं.) नौकरी, चाकरी, टहल । खातिर, स्नेहके लिये काम करना ।

सेवाळ (सं.) देखो शेवाळ ।

सेवुं (क्रि.) सहन करना, सेवन करना, पचाना, बहुत देरतक ठहरना, अनुकूल होना ।

सेवै-वो (सं.) सिमई, सिवई, मैदाके बनाये हुए लम्बे लम्बे तारसे । एक प्रकारका खाद्य पदार्थ । सेव, बेसनका बना हुआ सेव या घीमें तला हुआ पदार्थ ।

સેવ્ય (વિ.) सेवा करनेयोग्य।

સેઠસેવક (સં.) सेठ और गुमास्ता।

સેસફૂલ (સં.) एक प्रकारका आभूषण जिसे स्त्रियां सिरमें पहिनती हैं।

સેસવા (સં.) भिगोकर तेल या घीमें भूने हुए नमक मिर्च मिले चने।

સેહ (સં.) सहनशक्ति, आदत, रीति, नियम, रिवाज, अटकाव, रोक।

સેહેજ (વિ.) सरळ, सहल, थोड़ा, अच्छा, जरा, सुगम। खून, रक्त, सेज, शय्या।

સેહેનશાહ (સં.) बादशाह, सम्राट, चक्रवर्ती राजा, बड़ा राजा।

સેહેલ (સં.) मौज़, आनन्द, सैल, (वि.) आसान, सुगम, सरळ।

સેહેલાણી (સં.) सैलानी, मौजी, आनन्दी, घुमक्कड़।

સેંભાલા (સં.) मुसलमान, फ़कीर।

સૈ (સં.) दर्जी, सिंह, मण, सहेली सखी, आळी।

સૈકો (સં.) सैकड़ा, सदी, शताब्दि।

સૈકડિયું (સં.) बालकोंका एक खेल विशेष, ज्यों ज्यों खिंचे त्यों त्यों उलझती जानेवाली गांठ।

સૈડકો (સં.) छप्परके बल्लियोंके साथ खपचियां बांधनेकी, डोरी, बंध।

સૈડવું (ક્રિ.) छप्परकी खपच्चियां बांधना।

સૈનિક (વિ.) सेना सम्बन्धी, फौज़ी, (સં.) सिपाही, योद्धा, फौजका आदमी। [लश्कर।

સૈન્ય (સં.) सेना, फ़ौज, दळ,

સૈન્યદળ (સં.) बड़ी भारी फौज।

સૈન્યાધિપતિ (સં.) देखो सेनापति

સૈન્ધવ (સં.) एक प्रकारका क्षार, सेंधानमक, घोड़ा, अश्व, हय।

સૈવડ (સં.) शीतलारोग, चेचककी बिमारी, विस्फोटक।

સૈયદ (સં.) मोहम्मद नामके प्रसिद्ध पैगम्बर के वंशज, मुसलमानों के चार फिरकों मेंसे एक।

સૈયર (સં.) सखी, सहेली, आळी।

સૈયારું (સં.) भागी, हिस्सेदार, पांतीदार, (वि.) मिलाहुआ, मिश्रित आम, साधारण।

સોંગ (સં.) स्वांग, नकरूप धारण, खाली भपका, वेश, सांग।

સોંઘવારી (સં.) सुकाल, ऐसा समय जिसमें वस्तुएं सस्ती मिलें।

સોંઘું (વિ.) सस्ता, थोड़े मूल्यकी अधिकमाल, सहंगा।

સોસું ભોસું થવું (क्रि.) जुलाबसे आहना, आग्रहकी इच्छा करना।

સોહવું (क्रि.) तय्यार होना, विदा होना, जाना।

સોંતાળવું (क्रि.) थोडा बहुत तळना भूनना (घी या तेलमें)।

સોંધા (सं.) एक सुगन्धित पदार्थ।

સોંપડવું (क्रि.) मिलना, हाथआना पैदा होना, जन्महोना।

સોંપણ (सं.) सिपुर्दगी, हवाले करना, समर्पण करना।

સોંપવું (क्रि.) सिपुर्दकरना, हवाले करना, देना, सौंपना, समर्पण करना।

સોંસરૂં (अ०) आरपार, इधरसे उधर, एक सिरेसे दूसरे सिरेतक।

સોંસરૂં નીકળવું (क्रि) आरपार निकलजाना।

સોહ (सं.) चेत, होश, भान, सुधि, बुद्धि, समझ, अक्ल।

સો (वि.) शत, सौ, एकसौ।

સોનાસાંઠકરવા (क्रि.) नुकसान उठाना, हानि उठाना।

સોભણ રેની તણાઇ ઓસવું (क्रि.) निश्चिंत होकर ताम तूंटी सोना, सुखचैनसे रहना।

સોવર્ષ પુરાંથવાં (क्रि) हद आजाना, अंतआना, आखिरी आना।

સોવછઠ્ઠાઆપેઓવે (वि.) बड़ाही बदमाश, अतिशय लुच्चा।

સોવખત ગાળીને પાણીપીવું (क्रि.) बहुतही सम्हालकर सावधानीसे वर्ताव करना।

સોસગાનું સગુ (स.) अत्यंत प्यारा नातेदार। [अंधेर, अंधाधुंध।

સોમણુતેલે અંધારૂ (वि.) बहुतही

સોદહાડા સાસુના તો એકહાડો બહુનો (—) सौ सुनारकी एक लोहारकी, चलती फिरती छाह, आज तुम्हारा तो कल हमारा।

સોતારા રામદુહાઇને એકમારૂં ઉંહું (—) तुम्हारा सारोहा और मेरी एक नाहीं।

સો દવાને એક હવા (—) स्वच्छ हवा सब औषधियोंसे श्रेष्ठ है।

સોઇ (स.) दरजी, दर्जी, कपड़े सीनेवाला, प्रबन्ध, बंदोबस्त।

સોઇઆણી (सं.)दाई वह स्त्री जो बच्चे पैदा करानेवाली होती है, दायन।

સોઇયો (सं.) मोटी सुई, बडीसुई, सुआ, सूजा सुइया।

સોક (अ—ऋडी सं.) सौत, एक पतिकी दो स्त्रीयोंका आपसमें नाता, पति की दूसरी स्त्री।

સોકટી–ટ્ટી (સં.) देखो सोकठुं
સોકઠું–ટ્ઠું (સં.) पासा, सार, खेलनेके लिये काठका या हाथीदांतका चौपहलू रंगबिरंगा सांचा, चकमक पत्थरसे आग बनाकर सुलगाई जानेवाली डोरी।
સોગટીભરવી (क्रि.) फायदाउठाना, जयप्राप्त करना।
સોગટીમારવી (क्रि.)पूर्ववत्।
સોગટીવાગવી (क्रि.) निशान लगना, जय होना, इच्छा पूर्ण होना।
સોગન (सं.) कसम, सपथ,सौगन्ध।
સોગાત (सं.) भेट, इनाम, पुरस्कार बख्शीस।
સોચ (सं.) शोक चिंता, फिक्र, दुःख, तपास, शोध, जांच, अनुसंधान।
સોજ (सं.) लक्षण, चाल,वर्त्ताव।
સોજિયું (वि.) अच्छे लक्षणयुक्त।
સોજું (वि.) अच्छा, साफ, स्वच्छ।
સોજો (सं.) सोजन, अंगका फूलना। [शाखा, छडी।
સોટી (सं.) बेत, वृक्षकी पतली
સોટેકુપટ્ટે (अ०) अकेला, छडा, एकाकी।
સોટો (सं.) डंडा, दण्ड, मोटी लकड़ी, लाठी।
સોડ (सं.) तरफ, बाजू, बगल, रूईकी रजाई, सौड, सौर, घूंघट, छेड़ा, लाजके लिये स्त्रियोंके मुंहपर साड़ी, सुगन्ध, सुवास, खुशबो।
સોડતાણીનેસુવું (क्रि.) अंग तानकर सोना, आळसी होकर पडे रहना। [ढांककर सोना।
સોડવાળીનેસુવું (क्रि.) मुख
સોડમાં ભરાવું (क्रि.) आश्रयमें जाना, शरणजाना।
સોડ પ્રમાણે સાથરો (सं.) सौडके अनुसार बिछौना। [महक।
સોડમ (सं.) सुगन्ध, सुवास,
સોડવણ (सं.) सौड–रजाईके नीचे लगानेका मुलायम कपडा।
સોડવું (क्रि.) सुगन्धआना, खुशबूआना।
સોડિયું (सं.) स्त्रियों के पहिननेकी साड़ी, लटकताहुवा भाग।
સોડે (अ०) पास, नजदीक, समीप अनुसार, मुआफिक।
સોડો (सं.) सहायक मददगार।
સોણ (सं.) कील, मेख, फाचर।
સોણું (सं.) स्वप्न, सपना, सुपना
સોત–તું (अ०) साथ, सहित, समेत।

સોદાઈ (સં.) दुराचरण, बदचलन बदमाशी ।

સોદાગર (सं.) सौदा करनेवाला, व्यापारी, खरीद फरोक्त करनेवाला, ऊंचे समानका बेपारी ।

સોદાગિરી (सं.) ऊंचेमालका व्यापार, सौदागरका धन्धा, व्यापार (वि.) सौदागर सम्बंधी, व्यापार विषयक ।

સોદું (वि.) बदमाश, लुच्चा, दुराची ।

સોદો (सं.) व्यापार, लेनदेन, सौदा, व्यवहार, सामान ।

સોધાસોધ (सं.) ढूंढभाळ, खोज, तलाश, अनुसन्धान ।

સોનાપાણી (सं.) जिसको छूलनेसे स्नान करना पड़े उस पर स्वर्णसे छुवाकर शुद्धिके लिये दिये हुए पानीके छींटे ।

સોનાગેરૂ (सं.) एक प्रकारका गेरू, एक तरहकी लाल मिट्टी ।

સોનામુખી–મુખી (सं.) एक वृक्षके पत्ते विशेष जिन्हें खानेसे जुलाब लग जाती है ।

સોનાર (सं.) सुनार, स्वर्णकार, सोने चांदीका जेवर बनानेवाला ।

સોનારણ (सं.) सुनारकी भार्या ।

સોની (सं.) देखो સોનાર ।

સોનું (सं.) कांचन, स्वर्ण, सुवर्ण, सोना, बहुमूल्य धातु विशेष ।

સોનામોહરજેવું (क्रि.) अच्छा, खासा ।

સોનાનાનળિયાકરવા (क्रि.) खूब धन पैदाकरना ।

સોનાનીજાળ પાણીમાંનાંખવી (क्रि.) अपकृत्यद्वारा प्राणत्यागना, आत्म हत्या करना । [समझ ।

સોનાનીતક–પળ (सं.) बहुमूल्य

સોનેરીકાયદો (सं.) बहुतही ध्यानमें रखने योग्य नियम ।

સોનાનીલંકાલુટાવી (क्रि.) बहुमूल्य वस्तुका चलाजाना ।

સોનાનોકોળીઓ (वि.) बहुतही महंगा और उत्तम ।

સોનાનોવરસાદવરસવો (क्रि.) असंख्य धनका आगमन ।

સોનાનોસુરજઉગવો (क्रि.) बहुमूल्य सुख दिवस प्राप्त होना ।

સોનાથી દાંત ઘસવા (क्रि.) धन दौलतका खूब उपभोग करना ।

સોનું દેખી મુનિવરચળે (–) द्रव्यको देखकर सबका मन चलायमान होता है ।

સોનાકસતાવઠામાંમૂંખુ (–) ठगको मुसीबत और उसकी मुँहमुलाईका रुपया।

સોનાને શ્યામતાવળજે નહિ (–) सांचको आंचनहीं,सत्यतो सत्यही है।

સોનેરી (वि.) सुनहरी, सुनहल, सोने के रंगका।

સોનેરીકેળાં (सं.) एक प्रकार के केले—(फल विशेष)

સોનૈયા (सं.) सोनेका सिक्का,निष्क।

સોપાન (सं.) सीढी, निसेनी, नसैनी निश्रेणी, पैडी, चढाव।

સોપારી (सं.) सुपारी, पूगी फल।

સોક (सं.) सांस, दम, हाफनी, शरीरका फूलना।

સોફવા (सं.) शोथवायु, रोगविशेष, जिससे शरीर फूल आता है।

સોબત (सं.) सोहबत, संगति, संग, सहवास, स्त्रीपुरुषका मेळ।

સોબતી (सं.) साथी, दोस्त, जोडीदार।

સોભ (सं.) विवाह हो चुकने बाद बरवधूके देवताओंके आगे बिठाकर गाये जानेवाले गीत।

સોભાગ (सं.) सुहाग, अहिवात।

સોભાગવતી–વંતી (सं.) सुहागिन, सधवा, पतियुक्ता स्त्री।

સોભાગ્યપંચમી (सं.) ज्ञानपंचमी, कार्तिक शुक्लपंचमी।

સોમ (सं.) चन्द्र, सोमवार, चंद्रवार, सोमलता। (वि.) शांत, शीतल।

સોમનાથ (अ०) सोमयागमें पूर्णाहुतिका स्नान। शांति हुई। झगड़ा निपटा।

સોમયાગ–યજ્ઞ (सं.) यज्ञविशेष जिसमें सोमरस होमा जाता है।

સોમરાજ (सं.) ऐसा राजा जिसने राजसूययज्ञ किया हो।

સોમલ (सं.) एक जातिका क्षार।

સોમવતી (सं.) वह अमावस्या तिथि जिस दिन सोमवार हो।

સોમવતી ને શુક્રવાર (अ०) कुछनहीं।

સોમવલ્લી (सं.) लताविशेष, सोमलता।

સોમવાર (सं.) चन्द्रवार, वारविशेष।

સોય (सं.) सुई, सूई, सूची, वह, (कवितामें) सब, सारा, समस्त।

સોયણી (सं.) रागिणी विशेष, सोहिनी।

સોયમ (वि.) तीसरा, तृतीय श्रेणी।

સોયલું (वि.) सहजका सहाहुआ।

સોયો (सं.) बडी सुई, सुजा, सुइया।

સોરંગી (सं.) एक प्रकारकी वनस्पति, जिसके रंगसे साधूलोग अपने वस्त्र रंगते हैं।

સોરઠ (સં.) काठियावाड़का एक प्रांत, रागिनी विशेष।

સોરઠો (સં.) छन्द विशेष, दोहेको उलटा करने से सोरठा बन जाता है, काठियावाड़में गानेकी रागिनी विशेष।

સોરટી-તી(સં.)कोठरी,चिट्ठी डालना।

સોરભ (સં.) गन्ध, वास, सौरभ। खशबू।

સોરંભ (સં.) पूर्ववत्।[शान्ति होना।

સોરવવું (ક્રિ.) चैन पड़ना।

સોરવું (ક્રિ.) दांतसे फाड़ खाना, ऊपर ऊपरसे मोटा छिलका हटाना। साफ करना, समेटना।

સોરાડવું(ક્રિ.)गालियां देना,कोसना।

સોરાડવું (ક્રિ.) पूर्ववत्।

સોરાવું (ક્રિ.) चमड़ी छुल जावे ऐसा करना, खसोटना।

સોરાસોર (સં.) हल्ला, गुलगपाड़ा, शोरगुल, देखभाल, ढूंढभाल।

સોરવ (સં.) याद आनेसे चिंतातुर होना, घबराहट, व्याकुलता।

સોવણવું (ક્રિ.) शोभित करना।

સોરો (સં.) छोकरा, लड़का, पुत्र, छोरा, बेटा।

સોરી (સં.) सुधि, होश, चेत, भान। ज्वारके वृक्षोंको सुखानेके लिये खड़ेही रहने देना। छोकरी, लड़की, बेटी, पुत्री।

સોરે (અ०) समयमें, वक्तमें।

સોવસા (અ०) जैसे हो तैसे, अधिकतया, विशेषतर।

સોવાસણ (સં) सुहागिन, सधवा, सौभाग्यवती, पतियुक्ता स्त्री।

સોવું (ક્રિ.) सूपमें अन्न डालकर हिलाना, फटकना, पिछोरना।

સોસ (સં.) तृषा, प्यास, पिपास।

સોસવાટ-ળ (સ.) मगर, मच्छ, ग्राह, मकर।

સોસાવું (ક્રિ.) सूखना, शुष्क होना, कृष होना, दुबला होना।

સોસવું (ક્રિ.) चूसना, सोखना, जज्बलेना, सुखाना।

સોહણી(સં.)शोभा,कांति,[सौन्दर्य।

સોહવું (વિ.) स्वप्न, सपना, ख्वाब।

સોહમ્ (સં.) वेदान्ती पुरुषोंद्वारा श्वासके लेने और छोड़नेकी क्रियाका नाम।

સોહલું (વિ.) अच्छा, स्वच्छ, साफ, आनन्द, मौज, मौजबहार।

સોહવું (क्रि.) शोभापाना, शोभित होना।
સોહાગ (सं.) अच्छा भाग्य, शोभित।
સોહાગણ (वि.) सौभाग्यवती स्त्री, सधवा, सुहागिन, जिसका पति जीवित हो। [रंगीला।
સોહાગી (वि.) मौजी, आनन्दी,
સોહામણું (वि.) सुहावना, सुन्दर।
સોહાવું (क्रि.) शोभित होना।
સોહાસણ (सं.) देखो સોહાગણ।
સોહિની (सं.) रूपवती स्त्री।
સોહેણી (सं.) इस नामकी एक रागिणी, सोहिनी (रातके समय गाई जाती है) । [कार्य का समारंभ
સોહોળો (सं.) उत्सव, शुभ
સોહોવું (क्रि.) भाना, पसन्द आना, रुचि कर होना।
સોળ (सं.) देखो સળ (वि.) सोलह संख्याविशेष, १६।
સોળ વાલ ને એક રતી (वि.) बिलकुल, ठीक, पूरम्पूर, उत्तम, अच्छा।
સોળમી ઘડી જવી (क्रि.) घबरा जाना, आफत आजाना।
સોળશને મઠ્ઠર વારે (अ०) कभी भी नहीं, उमर हुवी पूजन।
સોળ સંસ્કાર થઈ ચુકવા (क्रि.) भली बुरी अवस्था भोगना।
સોળ સોળઠી કામી છે (अ०) बाकी तो बहुत काम बाकी है।
સોળ સોપારા (अ०) सब बातमें ?
સોળું (सं.) अस्पर्शके समय पहिननेका रेशमी या सूती वस्त्र विशेष।
સોળે સોળ આની (वि.) पूरम्पूर, चाहिये जितना।
સોળે સણગાર સજીને (अ०) वस्त्राभूषणसे अलंकृत।
સોળોયો (सं.) सोलह हाथ लम्बी बल्ली (लकड़ी)।
સો (वि.) सब समस्त, तमाम।
સો સોના ગીત ગાય (-) सब अपनी अपना कहें। [नज़ाकत।
સૌકુમાર્ય (वि.) सुकुमारता,
સૌખ્ય (सं.) सुख, आनन्द, प्रसन्नता।
સૌજન્ય (सं.) सुजनता, भलाई।
સૌદામિની (सं.) बिजली, विद्युत्, तड़ित्, चपल। [सौ न्द, खूबसूरती।
સૌન્દર્ય (सं. सुन्दरता, कान्ति,
સૌભાગ્ય (सं.) अच्छा भाग, किस्मत, नसीब।
સૌભાગ્યવતી (वि.) देखो સોહાગણ।
સૌભાગ્યવર્ધક (वि.) अच्छा भाग्य बढानेवाला।
સૌમ્ય (वि.) शांत, भला, आनंदी।

સ્કંધ (सं.) कांध, कंधा, ग्रंथका खंड, बड़ा अध्याय, बड़ा प्रकरण।

સ્ટેશન (सं.) मुकाम, रेलगाड़ी ठहरा कर चढाने उतारनेकी जगह।

સ્તન (सं.) पयोधर, चूंची, थन, बोबा, मादाकी छातियां। आंचळ, बोबे। [लेकर, चूसनेकी क्रिया।

સ્તનપાન (सं.) मुखमें थन-चूंची

સ્તબ્ધ (वि.) कुंठित, हक्काबक्का, रुका हुआ, चुप, शांत।

સ્તંભસ્થંભ (सं.) खंभा, थम्भा, अटकाव, रुकाव।

સ્તંભન (सं.) रोक, आड, रोकना, दबादेना, कामशास्त्रकी क्रिया विशेष। [गुणपाठ, स्तोत्र।

સ્તવન (सं.) गुणवर्णन, स्तुति,

સ્તવવું (क्रि.) स्तुति करना प्रशंसा करना, गुण गाना, तारीफ करना। [सराहना, भजन, तारीफ।

સ્તુતિ (सं.) बखान, स्तव, प्रशंसा

સ્તુતિપાઠક (सं.) भाट, चारण, मागध, बन्दी, सूत, कापडी, करथक। [तारीफ के लायक।

સ્તુતિપાત્ર (वि.) स्तुतिकरनेयोग्य

સ્તુત્ય (वि.) प्रशंसाके योग्य, प्रशंसित, काबिल तारीफ, स्तवनीय।

સ્તોત્ર (सं.) स्तव, स्तुति, सराहना, देवकी प्रशंसाका ग्रंथ।

સ્તોમ (सं.) स्तुति मंत्रोंका समुदाय, प्रशंसा, स्तुति।

સ્ત્રી (सं.) नारी, लुगाई, औरत, भार्या, पत्नी, मादा।

સ્ત્રીકેસર (सं.) फूलमेंके तंतु विशेष।

સ્ત્રીચરિત્ર (सं.) स्त्री जातिकी चतुराई, स्त्रियोंका छलकपट।

સ્ત્રીધન (सं.) ऐसा धन जिसपर स्त्री का ही अधिकार हो। [औरत।

સ્ત્રીજાતિ-ત (सं.) नारी, जाति,

સ્ત્રીપુરુષ (सं.) नरनारी, पतिपत्नी, वरवधु, मर्द औरत, लोगलुगाई।

સ્ત્રીધર્મ (सं.) स्त्रीका धर्म, पतिसेवा ऋतुधर्म, मासिकधर्म, रजोदर्शन।

સ્ત્રીજીત (वि.) स्त्रीके वशीभूत।

સ્ત્રીપુરૂષનોધર્મ (सं.) पतिपत्नीका फर्ज। [तिका भक्त, विलासी, कामी।

સ્ત્રીલંપટ (सं.) विषयी, स्त्रीजा-

સ્ત્રીલિંગ (सं.) नारी जाति (व्याकरणमें) [दोष।

સ્ત્રીહત્યા (सं.) स्त्रीवधका भारी

સ્ત્રીહરણ (सं.) जबरदस्ती औरत को भगालेजाना, बलपूर्वक स्त्रीको लेजाना।

સ્થ (वि) थामनेवाला, रखनेवाला ठहरनेवाला, रहनेवाला।

સ્થળ (सं.) जगह, स्थान, थळ।

સ્થળાંતર (सं.) दूसरी जगह अन्यस्थान। [खुश्की रास्ता, भूमार्ग।

સ્થળમાર્ગ (सं.) जमीनका रस्ता.

સ્થવિર (सं.) योगी बाबा, भिखारी।

સ્થાણુ (सं.) थंभा, स्तंभ, थाम, टेका। (वि.) स्थिर, निश्चळ, अचळ।

સ્થાન (सं.) ठौर, ठाम. ठिकाना, घर, जगह, अधिकार, पद, दरजा, प्रसंग, अवसर, निवासस्थान, बैटक।

સ્થાનક (सं.) देखो સ્થાન।

સ્થાનભ્રષ્ટ (सं.) पदभ्रष्ट, जगहसे नीचा। [स्थानीय।

સ્થાનિક (सं.) घरका, जगहका,

સ્થાપક (वि.) स्थापना करनेवाला, नियुक्त करनेवाला, मुकर्रर करनेवाला, बिठानेवाला, थिर करनेवाला।

સ્થાપના (सं.) प्रतिष्ठा, स्थिति।

સ્થાપવું (क्रि.) मुकर्रर करना, स्थापित करना, साबित करना।

સ્થાપિત (वि.) प्रतिष्ठा किया हुआ, रखा गया।

સ્થાયી (वि.) बहुत समयतक ठहरनेवाला, टिकाऊ, पुख्ता, मजबूत।

સ્થાવર (वि.) अचल, नहीं चलनेवाला। [ठहराव।

સ્થિતિ (सं.) स्थान, टिकाव,

સ્થિતિસ્થાપક (वि.) अपनी पहिली स्थितिको कायम रखनेवाला।

સ્થિર (वि.) देखो સ્થાવર।

સ્થિરતા (सं.) अचलना, ठहरी हुई हालत, शांति, धैर्य।

સ્થૂલ (वि.) मोटा, पीवर, तौंदेल, बड़ा, फूला हुआ, बड़ा।

સ્થૂળદેહ (सं.) दीर्घशरीर, स्थूलकाय, यह नाशमानशरीर, मोटा बदन। [मोटे विचार।

સ્થૂળદૃષ્ટિ (सं.) साधारण विचार,

સ્નાત (सं.) स्नान किया हुआ, नहाया हुआ। [अवगाहन।

સ્નાન (सं.) नहाना, नहान,

સ્નાયુ (सं.) रग, रक्तवाहिनी नाड़ी, नस। [औरत।

સ્નુષા (सं.) बहू, पुत्रवधू बेटेकी

સ્નેહ (सं.) सनेह, प्रेम, प्यार, अनुराग, वात्सल्य, चिकनाई, चिकनाहट।

સ્નેહપાત્ર (सं.) विश्वासका भाजन.

સ્નેહાર્પણ (સં.) प्रेमके कारण निछावर ।　　[कृपालु ।
સ્નેહાર્દ્ર (સં.) प्रेममें भीगा हुआ,
સ્નેહાળ (વિ.) प्रेमी, कृपालु, दयालु, स्नेह युक्त ।
સ્નેહી (સં.) मित्र, दोस्त, भाईबन्धु ।
સ્પર્ધા (સં.) रश्क, बराबरी, हिर्स, डाह, जलन, दूसरेकी उन्नतिसे दुखी होना ।　　[आलिंगन ।
સ્પર્શ (સં.) छूना, छुहावट, ग्रहण,
સ્પર્શકાળ (સં.) ग्रहणकी शरुआत ।
સ્પર્શકરવો (ક્રિ.) छूना ।
સ્પર્શેન્દ્રિય (સં.) चमड़ा, त्वगिन्द्रिय, त्वचा, चाम, खाल ।
સ્પષ્ટ (વિ.) साफ, प्रकाश, सहज, व्यक्त, जाहिर, प्रकट ।
સ્પષ્ટવક્તા (સં.) बे लाग लपेटकी कहनेवाला, साफ साफ कहनेवाला
સ્પષ્ટીકરણ (સં.) खुलासा, वर्णन ।
સ્પૃહા (સં.) इच्छा, अभिलाषा, ख्वाहिश, तृष्णा, गरज, दरकार ।
સ્ફટિક (સં.) बिल्लौरपत्थर, स्वच्छ पाषाण विशेष, कांच, मणि विशेष ।
સ્ફાટિક (વિ.) स्फटिक सम्बन्धी ।
સ્ફુટ (વિ.) खिला, फूलाहुआ, प्रकट, सूचक, अलग, खुलाहुआ ।
સ્ફુરણ (સં.) आन्दोलन, कम्प, फड़कना, हृदयचलन, अंकुरफूटना, अचानक याद आना ।
સ્ફુરવું (ક્રિ.) अंकुरफूटना, प्रकट होना, स्मरण आना, फुरना ।
સ્મર (સં.) कामदेव, अंग ।
સ્મરણ (સં.) सुध, चेत, स्मृति, याद, मनन, यादगीरी ।
સ્મરણી (સં.) छोटीसी माला, ईश्वरभजन करनेकी काष्ठादिमाला ।
સ્મરણીય (વિ.) यादकरनेके लिये बातें लिखलेनेकी किताब, नोटबूक यादी, डायरी ।[स्मरण रखने योग्य ।
સ્મરણપોથી (સં) यादकरने योग्य
સ્મરવુ (ક્રિ.) स्मरण करना, याद करना ।
શ્મશ્રુ (સ) दाढ़ी, डाढी ।
સ્મારક (વિ.) यादकरानेवाला, सूचित करनेवाला, बतानेवाला ।
સ્માર્ત (વિ.) स्मृतियोंकी आज्ञाके अनुसार चलनेवाला, स्मृति-सम्बन्धी ।
સ્મિત (વિ.) आश्चर्ययुक्त, हैरान, खिलाहुआ, मुसुकान, मदहास ।
સ્મૃતિ (સં.) स्मरण, याद, मनु आदि रचित धर्मग्रंथ ।

સ્પન્દન (सं.) रज, नाम विशेष।

સ્રાવ (सं.) टपकना, चूना, ऋतु-स्राव, मासिकधर्म, रजो दर्शन।

સ્લેટ (सं.) पट्टी, पत्थरकी पट्टी।

સ્વ (वि.) आत्मीय, अपना, खुद।

સ્વકલ્પિત (वि.) अपनी कल्पनाका।

સ્વકીય (वि.) खुदका, निजका, अपना। [स्त्री, पत्नी, भार्या।

સ્વકીયા (सं.) अपनी विवाहिता

સ્વચ્છ (वि.) साफ, शुद्ध, पवित्र, निर्मळ, उज्ज्वल, निष्कलंक।

સ્વચ્છતા (सं.) सफाई, पवित्रता, शुद्धि।

સ્વચ્છન્દ (सं.) स्वेच्छानुसार, स्वाधीन, मनमौजी, यथेच्छाचारी।

સ્વચ્છન્દી (वि.) हठीला, जिद्दी, स्वतंत्र। [बन्धु, मित्र, कुटुम्बी।

સ્વજન (सं.) अपनेलोग, नतैत,

સ્વજાતિ (सं.) अपनी जाति, निजजातिका।

સ્વતઃ (अ०) अपनेसे, स्वभावतः, स्वाभाविक, खुद, जन्मसेही।

સ્વતઃસિદ્ધ (वि.) स्वयंभू, अकृत्रिम स्वतंत्र, स्ववश, जन्मसिद्ध।

સ્વતંત્ર (वि.) स्वाधीन, निरंकुश। स्ववश, खुदमुख्तार।

સ્વદેશ (सं.) जन्मभूमि, अपना देश।

સ્વદેશહિતેચ્છુ (वि.) देशाभिमान, अपने देशका भला चाहनेवाला।

સ્વદેશાભિમાની (सं.) देशभक्त।

સ્વદેશાભિમાન (सं.) अपने देशका गर्व। [देशीय।

સ્વદેશી (वि.) अपने देशका निज

સ્વધર્મ (सं.) अपना धर्म, कुल-रीति, अपनाफर्ज, खासियत।

સ્વધા (सं.) माया, पितृगणकी पत्नी, आगकी स्त्री। [ठिकाना।

સ્વધામ (सं.) स्वर्ग, अपना

સ્વધામપહોચવું (क्रि.) मरना।

સ્વપ્ન (सं.) सपना, ख्वाब, नींदमें विचार। [स्वप्नावस्थामें दिखता है।

સ્વપ્નદર્શન (सं.) जो कुछभी दृश्य

સ્વપ્નવત (वि.) मिथ्या, स्वप्नसमान, कम टिकाऊ।

સ્વપ્નાંતર (सं.) वहस्थिति जिसमें स्वप्न आरहाहो।

સ્વભાવ (सं.) प्रकृति, टेव, बान, आदत, धर्म, गुण प्रकृति, खासियत।

સ્વભાવિક (वि.) स्वाभाविक, स्वभावसिद्ध, स्वतःसिद्ध, कुदरती।

સ્વભાષા (सं.) मातृभाषा, अपनी भाषा।

स्वबुद्धि (सं.) स्वदेश, वतन।
स्वमेळे (अ०) खुद, अपनी इच्छासे आप, आपसेआई। [उत्पन्न।
स्वयंजात (सं.) स्वयम्भू, स्वतः
स्वयंपाक (सं.) अपनेवास्ते अपने हाथों बनाईहुई रसोई।
स्वयंप्रकाश (सं.) अपने तेजसे प्रकाशित, खुदप्रकाश।
स्वयंभू (सं) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अयोनिज, स्वयम् जात, (वि.) स्वयम् उत्पन्न, स्वतःसिद्ध।
स्वयंवर (सं.) सभामें कन्याका अपने लिये वरचुनना, आपही वरना, एक प्रकारका विवाह. जो स्वेच्छानुसार किया जाता है।
स्वयंवह (सं.) जो खुद आपही आप चल सके (यंत्र)।
स्वर (सं.) अवाज, ध्वनी, शब्द, घोष, वाणी, बोली, नाद, अकारादी १६ अक्षर, सांस, श्वास, कंठ, गला, आकाश, गगन, स्वर्ग, देवलोक। [हिफाजत, बचाव।
स्वरक्षण (सं.) आत्मरक्षा, खुदकी
स्वराज्य—ज्य (सं.) खुदमुख्तारी, सेल्फगवर्नमेन्ट, होमरूल, स्वतंत्र शासन, अपने हाथों अपना प्रबंध।
स्वरित (वि.) उच्चारण विशेष, अधिक उच्च स्वर, उदात्तादित्रय।
स्वरूप (सं.) प्रकृतिरूप, आकार आकृति, शील, शक्ल, चेहरा, मुंह।
स्वरूपवान (वि.) खूबसूरत, रूपवान सुशोभित।
स्वरोदय (सं.) नाकद्वारा सांसलेकर शुभाशुभ जाननेकी विद्या।
स्वर्ग (स.) देवलोक, इंद्रलोक, अंतरिक्ष, दिव्य लोक, पुण्यलोक, सुखधाम।
स्वर्गएआंगळआंलीछे (क्रि.) स्वर्ग सुखभोगनेका समय नजदीकहीहै।
स्वर्गनीरस्तोलेवो। (क्रि) मरजाना।
स्वर्गआंधळारोपवी (क्रि.) अखण्ड कीर्ति प्राप्तकरना।
स्वर्गगंगा (सं.) आकाशगंगा, सुरनदी, देवपथ, स्वच्छ आकाशके बीचकी सफेदी।
स्वर्गवास (सं.) मरण, मृत्यु, मौत।
स्वर्गवास थवो (क्रि) मरना, देहान्त होना।
स्वर्गवासी (वि.) स्वर्गमें रहनेवाला, परलोकवासी।
स्वर्गीय (वि.) पारलौकिक, आकाशीय, स्वर्गसम्बन्धी।

સ્વલ્પ (वि.) अत्यंत छोटा, थोड़ा, न्यून, बहुतही कम ।

સ્વવશ (वि.) अपने आधीन, स्वतंत्र, स्वाधीन, निरंकुश ।

સ્વશુર (सं.) ससुर, पतिया, पत्नीका पिता । सुसरा, श्वशुर ।

સ્વસા (सं.) बहिन, भगिनी ।

સ્વસ્તિ (स.) कल्याण मंगळ, भलाई, तथास्तु, क्षेम, आशीष, अंगीकार, वचन ।

સ્વસ્તિક (स.) साथी, संगी ।

સ્વસ્તિક્ષેમ (स.) आनन्दमंगळ, क्षेमकुशल, खैरियत । आबादी (अ०) सुखपूर्वक, सुखीदशामें, सहीसलामतीसे ।

સ્વસ્તિવચન (सं.) किसी यज्ञ अथवा संस्कारके पहिले मंगलदायक वेद मन्त्रोंका पाठ, शुभ वचन । आशिर्वचन ।

સ્વસ્તિશ્રી (वि.) पत्रोंके आरंभमें शुभ वाक्य (बराबरवालेको)

સ્વસ્થ (वि.) अपने आपेमें स्थित, सावधान, तन्दुरुस्त, नीरोग ।

સ્વસ્થતા (सं.) शांति, स्थिरता, सावधानी, तन्दुरुस्ती, नैरोग्य।

સ્વસ્થાન (सं.) अपनी जगह, अपना घर, खास मुकाम ।

સ્વાંગ (सं.) नकल, अनुकरण, भांडैती, सांग ।

સ્વાગત-તા (सं.) आदर, सत्कार, सम्मान, हावभाव, मान, अभिनन्दन, इज्जत । छन्दविशेष ।

સ્વાતિ (स.) इस नामसे प्रसिद्ध नक्षत्र, सूर्यपत्नि ।

સ્વાત્માનુભવ (सं) अपना अनुभव, खुदका तजुरबा। आत्मदर्शन।

સ્વાદ (सं.) मज़ा, सवाद, रस, चाट, लज्जत, ज़ायका, अभिरुचि।

સ્વાદલેવો (क्रि.) चखना, समझना, अनुभवकरना।

સ્વાદચાખવો (क्रि.) मजाचखना ।

સ્વાદ ચખાડવો (क्रि.) मारना, पीटना । [दार, रोचकर ।

સ્વાદિષ્ટ (वि.) स्वादयुक्त, लज्जत-

સ્વાદીલુ (वि.) स्वादी, स्वाद करनेवाला, अच्छा अच्छा खाने वाला ।

સ્વાધીન (वि.) स्वतंत्र, स्वच्छन्द, अपराधीन, आत्मवश ।

સ્વાધીન કરવું (क्रि.) सौंपना, देडालना ।

સ્વાધિન લેવું (क्रि.) अपने अधिकारमें करना ।

स्वाधीनपतिका (सं.) वह स्त्री जो अपने पतिको अपने अधिकारमें रखती है।

स्वाभिमान (वि.) आत्माभिमान, अपने गुण गौरवका ध्यान। [वर।

स्वाम (सं.) स्वामि, पति, मालिक,

स्वामनी (सं.) सेठानी, मालकिन।

स्वामिता-ई-त्व (सं.) प्रभुत्व, स्वामित्व। [बेइमानी, राजद्रोह।

स्वामिद्रोह (सं.) नमक हरामी,

स्वामी (सं.) पति, वर, मालिक, राजा, देव, गुरु, साधु, मुनि।

स्वार (सं.) सवार चढैया।

स्वारथ-र्थ (सं.) अपना अर्थ, अभिलाष, अपनाकाम, मतलब, आत्महित, लोभ।

स्वारी (सं.) देखो सवारी।

स्वारथियुं-स्वार्थी (वि.) मतलबी, स्वार्थी, आपापंथी, खुदगर्जी।

स्वाहा (सं.) देवताओंको हॉव देनेका मंत्र, भस्म, खाक, राख, जल जाना, अग्निकी स्त्री। वौषट्।

स्वाहा करवुं (क्रि.) खाजाना, हजम करजाना, डकारजाना, नष्ट करना। [बरबादहोना।

स्वाहा थई जवुं (क्रि) जलजाना।

स्वीकार (सं.) मंजूर, कबूल, अंगीकार, इकरार, मानना।

स्वीकारवुं (क्रि.) मंजूर करना, कबूल करना, मानना, अंगीकार करना।

स्वीय (वि.) खुदका, निजका, अपना, निजी, निज सम्बन्धी।

स्वीया (सं.) अपनी स्त्री, भार्या, पत्नि।

स्वेच्छ (अ०) अपने इरादेके मुआफिक, अपनी इच्छानुसार। (वि.) जो अपना इच्छाके अनुसार हो। (सं.) अपनी इच्छा, खुदकी मर्जी।

स्वेच्छाचार (सं.) जिद्द, हठ, अपनी इच्छाके अनुसार आचरण।

स्वेच्छाचारी (वि.) हठीला, जिद्दी, स्वच्छन्दी, बिना किसीकी सलाहके काम करनेवाला।

स्वेच्छाप्रारब्ध (सं.) जो इच्छाके अनुसार होजावे।

स्वेद (सं.) पसीना, पसेव, उष्णताके कारण शरीरसे जो पानी निकलता है, श्रमबिन्दु।

स्वेदज (वि.) पसीनेसे उत्पन्न हुआ, जूं, पसीनेसे उत्पन्न कीड़।

સ્વૈર (वि.) निरंकुश, उच्छृंखल, उद्दण्ड, भटकाहुआ । लम्पट, दुराचारी । [व्यभिचारिणी ।

સ્વૈરણી (स.) स्वेच्छाचारिणी स्त्री,

સ્વોપાર્જિત (वि.) खुदका कमाया हुआ, अपने हाथों पैदा किया हुआ।

હ.

હ— तेतीसवां व्यंजन, गुजराती वर्ण मालाका चवालीसवां अक्षर, कण्ठ-स्थानसे उच्चारण होनेके कारण इसको कण्ठ्य कहते हैं।

હં (अ०) हां, अर्थसूचक, आश्चर्य सूचक अव्यय ।

હંસ (सं.) अपने नामसे प्रसिद्ध एक पक्षी, (कहते हैं यह पक्षी केवल मान सरोवरमेंही रहता है.) बगुलकी जातिका पक्षीविशेष, जीव, आत्मा, प्राण ।

હંસગામિની (सं.) हंसकी तरह सुंदर चाल चलनेवाली स्त्री, ब्रह्माणी ।

હંસણી-હંસી (सं.) हंस पक्षीकी मादा ।

હંહં (अ०) आश्चर्यसूचक अव्यय ।

હક (सं.)अधिकार, दावा, सत्ता, मांग, आज्ञा, फीस, दस्तूरी,(अ०) वाजिबी, खरा, सच्चा ।

હકથવું (क्रि)मरजाना ।

હકતાલા (सं.) परमात्मा, खुदा, इस विश्वका स्वामी ।

હકદાર (वि.) अधिकारी, दावा-दार, वाजिबी, खरा, सच्चा ।

હકનાહક (अ०) बिनाकारण, अकारण, नाहक, बेपरवाहीसे खामोख्वाह ।

હકસઈ-સાઈ (सं.) दस्तूरी, दलाली, कमीशन, फीस ।

હકાર (सं.) "ह", ह अक्षरका उच्चारण, अच्छापन ।

હકારવું (क्रि.) चलाना, शुरूकरना, हांकना ।

હકારો (सं.) निमंत्रण देनेवाला, न्यौता देनेवाला, हेड़ा देनवाला ।

હકાલવું (क्रि.) भगाना, निकालना, हांकना ।

હકીકત-ગત (सं.) समाचार, प्रसंग, खबर, बात, हाल, बखान ।

હકીમ (सं.) वैद्य, औषधोपचार, करनेवाला, चिकत्सक, वैद, डाक्टर मुसल्मान वैद्य ।

હકીમી (सं.) वैद्यका धंधा, चिकत्स-का, डाक्टरी, दवा, औषधि ।

હકુમત-હુમત (सं.) राज्य, हाकिमी अमल, सत्ता, अधिकार ।

હુકમતચલાવવી (क्रि.) हुकमचलाना, आज्ञा करना ।

હખળડખળ (अ०) डीलमडला, भंभोड़ाहुआ, डगमग ।

હગઓક (सं.) दस्त और कय, उलटी, और दस्त, कालरेकी बीमारी, हैजा ।

હગળમ (सं.) अपना स्वार्थ साधन के लिये कटिबद्ध रहना ।

હગળગવું (क्रि.) ध्यानधरना, ताकना, धैर्य छूटना ।

હગભરટપર (सं.) बिनामात्रा के अक्षर, मोड़ी अक्षर ।

હગવું (क्रि.) मलोत्सर्ग करना, दस्तजाना, टट्टीफिरना, पाखाना जाना, पुरीष त्यागना ।

હગામણ (सं.) घबराहट, व्याकुलता ।

હગામણપદામણ (सं.) बहुतही व्याकुलता, बड़ी बेचैनी (भयसे)

હગાર (सं.) विष्ठा, मळ, पुरीष, पाखाना, गू, बीट, गोबर ।

હગીદેવું-પડવું (क्रि.) भयसे अत्यंत भयभीत होजाना, गुप्तबात कहदेना ।

હંકાઈ-મણ-મણી (सं.) हांकनेकी मजदूरी, हांकनेके बदलेकी मजूरी ।

હંકાર (सं.) अहंकार, गर्व, घमण्ड ।

હંકારવું (क्रि.) हांकना, नाव चलाना, चलता करना ।

હંકાવું (क्रि) चालू होना, चलतू होना, घेरना, निकालदेना ।

હંખારવું (क्रि.) स्वच्छ करना, साफ करना ।

હંખારો (सं.) कचरा, मळ, मैल ।

હંગામ (सं.) मौका, अवसर, वक्त, समय, ऋतु, मौसिम, धूमधाम गड़बड़, तूफान ।

હંગામી (सं.) ऐसानौकर जो काम तकके लिये रखागया हो, मौसिमी ।

હંગામો (सं.) धूमधाम, गड़बड़, मस्ती, तूफान, हुल्लड़, दंगा, ऋतु, मौसिम, अवसर, मौका ।[हिलना ।

હચમચવું (क्रि.) डगमगाना,

હચમચાટ (सं.) डगमग, डांवाडोल, अस्थिर, डचरपचर ।

હચમચાવવું (क्रि.) इधर उधर, हिलाना, डुलाना, अव्यवस्थित करना, हिलाना ।

હચહચાવવું (क्रि.) पूर्ववत् ।

હજ (सं.) मक्काकी यात्रा, (मक्का मुसलमानोंका तीर्थस्थान है ।)

હજમ (वि.) पचाहुआ, मराहुआ ।

હજમકરવું (क्रि.) पचाना, हज्म करना सहन करना, सहना, सहना।

હજમથવું (क्रि.) पचना, जीर्ण होना, गळना।

હજમિયત (सं.) पाचन क्रिया, हाज़मा, भोजनका पचना।

હજરત (सं.) उच्चपद संबोधक शब्द श्रीमंत, श्रीमान।

હજરતભરવી (क्रि.) बड़े आदमियोंकी मंडळी बुलाना। एक योगविद्या विशेष।

હજામ (सं.) नाई, नापिक, खवास, हजामत बनानेवाला।

હજામતું કરવું (क्रि.) सिर मूंडनेका धंधा करना।

હજામપટ્ટીકરવી (क्रि.) पूर्ववत्।

હજામડી (सं.) नाइन, नाईकी औरत। [हज्जाम।

હજામડો (सं.) नाई, नापिक,

હજામત (सं.) मुंडन, क्षौरकार्य, क्षौर, केशवपन, नाईका कार्य।

હજામતકરવી (क्रि.) ठोकपीटकर दुरस्त करना, मद उतारना।

હજાર (सं.) दससौ, १०००, सहस्र, संख्या विशेष। [घना।

હજારઆડાં (वि.) बहुत, अधिक,

હજારહાથનોધણી (सं.) सर्व शक्तिमान, ईश्वर।

હજારી (वि.) हजारवाळा, बहुतसी पखुरियोंका फूल।

હજી (अ०) आजतक, अभीतक, अबतक। [मकबरा।

હજીરો (सं.) कबर, रोज़ा, मनार,

હજુ (अ०) अद्यावधि, अभीतक अबतक, अभीतलक।

હજુર (सं.) नजर आगे रूबरू होना खुद स्वयम्। [पासके नौकर।

હજુરિયો-રી (सं.) हजूरमें रहने-

હટ (अ०) सरक, दूर, अलगहो।

હટપટ (सं.) खटका, डर, भय, दुःख। [करना, हठकरना।

હઠલેવી (क्रि.) दुराग्रहकरना, जिद्

હઠપકડવી (क्रि.) जिद्द करना, हठ करना।

હઠેચઢવું (क्रि.) पूर्ववत,

હઠમાંઆવવું (सं.) जिद्दी होना, हठी होना।

હઠયોગ (सं.) देह कष्टके योगकी एक क्रिया, ध्यान धारणाद्वारा योग साधन, चित्तवृत्ति निरोधार्थ प्राणायामादियोग।

હઠવું (क्रि.) हठना, पीछे सरकना, हारना, निर्बल होना, छोड़ना, फिरना, मुंहकीखाना।

હઠીલાઈ (सं.) हठ, चिढ़, अड़, भगराई, आग्रह, बलात्कार।

હઠીલું (वि.) जिद्दी, अड़ियल, हठी, आग्रही, हठधर्मी।

હઠીલોહનમાન (सं) बहुतही जिद्दी आदमी, अत्यंत आग्रही।

હઠે (सं.) आग्रह, बलात्कार, जिद।

હડકવા-ભવા (सं.) भड़कने का रोग, रोगविशेष जिसमें काटने को दौड़ता है, चिढ़चिड़ापन।

હડકવાહાલવો (क्रि.) चिढ़ चिढ़े और जल्द स्वभावका बनना।

હડકાયલું-યું (वि.) पागल, भड़काहुआ, चिढ़नेवाला खिझने-वाला।

હડકું (वि.) उन्मत्त, हड़कवा, पागल कुत्ते या गीदड़से काटने-पर हो जानेवाली दशासे ग्रस्त मनुष्य।

હડતાલ-ળી હરિતાળ (सं.) एक प्रकार का पीले रंगका रस, हर-ताल। बाजार तथा काम काज बंद।

હડતાલમારવી (क्रि.) लिखाहुआ काट देना नष्ट करना, बर्बाद करना। [रखा हुआ, अमानत,

હડપ-ટ (सं.) अमानत के रूपमें

હડપ (सं.) ठुड्डी, ठोढी, चिबुक, दाढी।

હડફાઉ (सं.) निकम्मा, मुफतिया।

હડફેટ (सं.) झपट, झरपट, फेंट, सपाटा, फटकार।

હડબડવું (क्रि.) घबराजाना, व्या-कुल होजाना, निराश होना।

હડસાંકળ (सं.) एक प्रकारकी चांदीकी सांकल।

હડસેલવું (क्रि.) धक्कामारना, जोरसे धकेलना, हटाना।

હડસેલો (सं.) धक्का।

હડહડ (अ०) कुत्ता भगानेके लिये यह वाक्य प्रयोग करते हैं। (सं.) प्रतिघात। तिरस्कारपूर्वक दूर करना। [बिलकुल, साफ, स्पष्ट।

હડહડતું (अ०) चुस्त, तल्लीन,

હડહડવું (क्रि.) गुस्सेमें बोलना, बड़बड़ाना। [गर्जना, गूंज, मेल।

હડાકો (सं.) प्रतिध्वनि, प्रति-

હડિયો (सं.) गलेका टेटुआ।

હડી (सं.) गड़बड़, दौड़धूप, मगदड़, (वि.) बराबर, समान।

હડીયાદોટ (सं) दौड़भाग, भाग दौड़, इधर उधर जल्दी जल्दी आना जाना।

હડીયાપાટી (सं.) भागदौड़।

હડીઆપાટીકરવી (क्रि.) ऊधम मस्ती करना, हुल्लड मचाना ।

હુડ (अ०) देखो હડ હડ ।

હુડહુડાટ (सं.) पेटमें वायुद्वारा गडबड ।

હડ્ડ (अ०) एकदम सपाटेसे ।

હડો (सं.) पाडोस, परौस पडोस, बैलगाडी का अग्र भाग विशेष जहां जुआ बंधता है ।

હણુકેખણુ (सं.) हां, या ना, खरा खोटा कहना ।

હણુવું (क्रि.) नाश करना, नष्ट करना, बरबाद करना, मारना, प्राण लेना ।

હણુહકેખણુહ (सं.) देखो હણુકેખણુ ।

હણુહણુવું (सं.) हिन हिनाना । (घोड़े घोडोका शब्द)

હણુહણાટ (सं.) हिन हिनाहट,

હણિયું (सं.) गाड़ी चलानेवालेके बैठनेकी पट्टी, कोचवानकी बैठक ।

હત (अ०) ढोरको भगाने के लिये यह शब्द काममें आते हैं । दुत्कार । [हुआ ।

હત (वि.) माराहुआ, वध किया

હતદૈવ (वि.) अभागा कमबख्त ।

હતભાગી (वि.) भाग्यहीन बद-किस्मत ।

હતભાગ્ય (सं.) दुर्भाग्य, दुर्दैव कम-नसीब ।

હતવું (क्रि.) नाश करना, मारना, वध करना, नष्ट करना ।

હતું (अ०) था ।

હતું નહોતું થઈ જવું (क्रि.) मर जाना, पैदा होकर खतम होजाना, लोप होना, अंतर्ध्यान होना गायब होना ।

હત્યા (सं) वध, घात, मार, हिंसा, खून, हनन, बधका पाप ।

હત્યા વહોરવી (क्रि.) व्यर्थकी हत्या अपने सिरलेना । [लगाना ।

હત્યા ચોંટવી (क्रि.) वधका पाप

હત્યારો (सं) पापी, खूनी, घातक ।

હથરોટા (सं.) भुजबंध, बाजूबन्द, एक प्रकारका जेवर ।

હથવાર (सं.) जो एक आदमीके वशमें रहे, ऐसा जानवर जो एक आदमीके द्वाराही दुहा जावे (दूध)।

હથિયાર (सं.) लोखर, कलकांटा, औजार, आयुध, अस्त्र, शस्त्र साधन ।

હથિયાર મોઢું છે (अ०) पक्ष जबरदस्त है, आधार बलवान है।

હથિયાર બાંધવો (क्रि.) लड़नेके लिये तय्यार होना, शस्त्र ग्रहण करना ।

હથિયાર ઉપાડવાં (क्रि.) मारनेके लिये हथियार उठाना ।

હથિયાર સજવાં (क्रि.) युद्धके लिये तय्यार होना ।

હથિયારબંધ (वि.) अस्त्र शस्त्रोंसे सुसज्जित, सशस्त्र ।

હથુ-થ્થુ (अ॰) हस्ते, द्वारा, मारफत ।

હથેળી (सं) हस्ततल, हाथका बीचका स्थान, करतल, हाथका अंगुली औ॰ कलाईके बीचका चपटा भाग ।

હથેળીમાં પૃથ્વી આવવી (क्रि.) बड़ा भारी संकट आपड़ना, घोर आपत्तिमें पड़ना ।

હથેળીમાં સ્વર્ગ બતાવવું (क्रि,) आलच दिखाना, बहलाना ठगना ।

હથેળીમાં હીરા બતાવવા (क्रि.) बड़ी बड़ी आशायें बंधाना जो कभी पूरी नहीं । ठगना, पोटना ।

હથોટી (सं॰) हाथकी निपुणता, हथौटी, चतुराई, निपुणता, बनावट ।

હથોડી (सं.) हथौड़ी, मोगरी ।

હથોડો (सं.) हथौड़ा, घन, बड़ा मार्तोल ।

હથોડાને ચીપિયા લઇને મંડવું (सं) आतुरतापूर्वक किसी कार्यमें लग जाना ।

હદ-દ્દ (सं.) सीमा, शमि, अवधि, आखिर, अंत, मर्यादा । (अ॰) पराकाष्ठा, बहुतही ।

હનકન सं,) आनाकानी, संदेह, शक ।

હનુમાન (सं.) मारुति, रामदूत, बन्दर । [उपवास करते हैं ।

હનુમાન હડિયો કાઢે છે (–) चूहे

હન્તા (वि.) मारनेवाला, खूनी, घातक, हत्यारा ।

હપતો-ફ્તો (सं.) सप्ताह, हफ्ता, ठहराहुआ समय, किश्त, खंड खंड रुपये, रुपया पैसा देनेका ठहराया हुआ समय । [उचित ।

હપરે (अ॰) बराबर, ठीक, सही

હબુસ (सं.) एक प्रकारका कलमी आम । [हौलदिल ।

હબક (सं.) दहशत, चमक,

હબકવું (क्रि.) चमकना, चौंकना, दहशत खाना ।

હબકી જવું (क्रि.) भयसे चमक जाना ।

હબકાવવું (क्रि,) चमकाना, डराना, चौंकाना, अचानक भयोत्पादन करना ।

હબ્બુ (वि.) मजबूत ।

હબશી-સી (सं.) एबीसीनियन, सिद्दी, सीधो. मूर, जंगली ।

હમણી મૂઠ (सं.) छूटाई न छूटे ऐसी मूठ।

હમસણ (सं.) हबूसीकी औरत।

હમહમાટ (सं.) आवाज, ध्वनि, शब्द।

હમચી (सं.) एक अगरणी नामक संस्कारके समय स्त्रियोंका गोल कुंडलके रूपमें खडे होकर गीत गाना।

હમડી (सं.) अहंकार, गर्व, मगरूरी।

હમણાં–ણે (अ०) वर्तमान समयमें, इसवक्त, सांप्रत, अभी, हालमें।

હમામખાનું (सं.) स्नानागार, नहानेकी जगह।

હમામદસ્તો (सं.) हमामदस्ता, कूटनेके लिये लोहेकी ऊखलमूसल।

હમાલ (सं.) बोझा उठानेवाला, व्यक्ति, भारवाही, मजदूर, हम्माल।

હમિયાણી (सं.) पूंजी, मूल धन, दौलत, द्रव्य, धन, भंडार, न्यौली, रुपयोंके भरनेकी थैली।

હમી (सं.) जामिनगिरी, एवज।

હમીદાર (वि.) जामिन अमानतदार, हांकनेवाला। [विशेष।

હમીર (सं.) कल्याण रागका भेद

હમેલ (वि.) गर्भ, ध्यान, हमल, पत्र, अपवाद।

હમેશ–મ્મેશ (अ०) हमेशा, नित्य, रोज, सदा, निरन्तर, सर्वदा।

હમેશગી (सं.) अविराम, हमेशा होना, नित्यता, अविच्छेद, यावच्चन्द्रदिवाकर, चिरस्थायित्व।

હમેશાં–મ્મેશાં (अ०) देखो હમેશ।

હય (सं) अश्व, घोड़ा, तुरग, वाजी।

હયમોચન (सं.) घोडेकोखोलना, छोड़ना।

હયશાળા (सं.) घोड़ेके बंधनेका स्थान, तबेला, घोड़ोंका ठान।

હયાત (वि.) जीवित, जानदार।

હયાતી (सं.) जीवन, जिन्दगी।

હર (सं.) महादेव, शंकर, (वि.) हरण करनेवाला, ले जानेवाला, प्रत्येक।

હરએક (वि.) कोईभी एक, प्रत्येक।

હરકોઈ (वि.) हरकोई।

હરખ (सं.) हर्ष, आनंद, उल्लास, प्रसन्नता, खुशी, सन्तोष।

હરખઘેલછા (सं.) अत्यानन्दके लिये पागल होना।

હરખઘેલું (वि.) हर्षके लिये पागल बना हुआ।

હરખવા (सं.) हर्षोन्माद, प्रसन्नताका पागलपन।

હરખવું–ખાવું (क्रि.) प्रसन्न होना, खुश होना, मुदित होना।

હરગીજ–સ (अ०) कभी, किसी दिन, किसी कारण, किसीभी तरह।

હરઘડી (अ०) बारम्बार, सदा, सर्वदा, हमेशा, घड़ीघड़ी।

હરઢું (वि.) पासका, नजदीकका, समीपका, सम्बन्धी, सुस्त।

હરડો (सं.) हर्र, एक प्रकारका फल, हरीतकी, अमृता।

હરડે (सं.) पूर्ववत्।

હરણ (सं.) मृग, हरिण, साबर, कृष्णसार, दूर करना, लेजाना, चोरी।

હરણી (सं.) हरिणी, मृगी।

હરણો (सं.) हरिण, काला और बड़ा टोल का मुखिया मृग।

હરદાસ (सं.) खड़ा रहकर गायनमें कथा कहनेवाला।

હરનીસ (अ.) रातदिन, रोजरोज अहर्निश, बारम्बार, हमेशा।

હરફ (सं.) अक्षर, हुरुफ, शब्द, बोल, उच्चारण, वर्ण।

હરફેર (सं.) बारम्बार आवा-गमन, हेरफेर, हेरफेरी औटपलट।

હરબડવું (क्रि.) डरना, चौंकना, घबरा जाना, घबराना।

હરબડવું (क्रि.) घबराना, व्याकुल करना। [मरोड़ना।

હરબાઉવું (क्रि) घबराना,

હરતુંફરતું (क्रि.) चलता फिरता, तन्दुरुस्तीमें आयाहुआ घूमता टहलता।

હરમું (वि.) हलदीके स्वादवाला

હરરોજ (अ०)प्रतिदिन रोजमर्रह।

હરવખત (अ०) हरघडी हमेश।

હરવર (सं.) याद स्मरण।

હરવરસ (सं.) प्रतिवर्ष, हरसाल।

હરવાયું (वि.) सुस्त, काहिल।

હરવું (वि.)हर, ताजा, हरण करना, छिना लेना, छीनना, चोरना, घटाना हारना, पराजित होना, इधर उधर फिरना।

હરવું ફરવું (क्रि.) घूमना फिरना चक्कर काटना, टहलना, हवा खोरी करना।

હરસ (सं.) अर्शरोग, गुदरोग विशेष बवासीर, मस्सेका रोग।

હરસફૂટણ (सं.) बवासीर मेंसे खून टपकना।

હરસાલ (अ०) देखो હરવરસ।

હરહરમહાદેવ (सं.) शत्रुपर आक्रमण करते समय तथा स्नान करते समय हिन्दू लोग इस वाक्यका उच्चारण करते हैं।

हरहुन्नर (सं.) प्रत्येक हुनर, हरेक कारीगरी ।

हराख (सं.) घोड़े बाँधनेका रस्सा, बेर नामक वृक्षका काँटा ।

हराज (वि.) निलामद्वारा बिका हुआ, माँगके साथ बिका हुआ ।

हराजु (सं.) नीलाम, तळ उपरकी माँग ।

हराड (वि.) अठ्ठारह, अठारह.१८।

हराडु (वि.) हराया, भटकता हुआ, परास्तकिया, मचलाहुआ, अड़ियल, हठी, निरंकुश ।

हराम (वि.) धर्म और नीति-विरुद्ध अन्यायका, खोटा ना जायज ।

हरामखोर (वि.) नमक हराम, अपने फर्जों (फरायज) को नहीं जाननेवाला, कृतघ्नी दुष्ट।

हरामखोरी (सं) कृतघ्नता, नमक हरामी, दुष्टता, लुच्चाई, ठगी ।

हरामचस्का (सं.) मुफ्त खानेकी टेव ।

हरामजादु (वि.) वर्णसंकर, रांडके गर्भसे उत्पन्न, जिसके बापका कुछ पता नहीं । जारज ।

हरामी (वि.) उत्पाती, तूफानी, बदमाश, धूर्त, लुच्चा, दगाबाज । (सं.) हरामखोरी, लुच्चाई ।

हरार (अ०) जरूर, ठीक, निश्चय ।

हरि (सं.) ईश्वर, परमात्मा, प्रभु । विष्णु, इंद्र, साँप, मेढक, सिंह, घोड़ा, सूर्य चन्द्रमा, सुग्गा, तोता, बानर, यमराज, हंस, अग्नि, कपूर, वरुण, मोर, ब्रम्हा, शिव, हरारंग, इन्द्रका घोड़ा, किरण, रश्मि ।

हरिक (सं) नीळे और पीळे रंगका घोड़ा ।

हरिकेलीय (सं.) बंगाल प्रान्त ।

हरिकेश (सं.) शिव, इस नामका एक यक्ष ।

हरिगीत (सं.) छन्दविशेष, अठ्ठाईस मात्राका मात्रिक छन्द विशेष ।

हरिचंदन (सं.) केसर, एक प्रकारका चन्दन, चाँदका उजाला ।

हरिजन (सं.) हरिभक्त, भगत ।

हरिण (सं.) देखो हरण, शिव, विष्णु, हंस, सफेद और पीळा रंग ।

हरिणाक्षी (सं.) मृगलोचनि, एक प्रकारका सुगन्धित द्रव्य ।

હરિત (वि.) हरा, हरा और पीला मिला हुआ । हरिद्रा, हल्दी, विष्णु, सिंह, सूर्यका घोड़ा ।

હરિતાલી (सं.) ध्रुव, आकाशरेखा ।

હરિદ્રા (सं.) हल्दी, हरदी ।

હરિદ્રુ (सं.) दारुहल्दी, औषधि विशेष ।

હરીનયની–નેણી (वि.) मृगलोचनि ।

હરિનેત્ર (सं.) सफेद कमळ ।

હરિપરાયણ (वि.) प्रभुप्रीत्यर्थ, ईश्वर के नामपर ।

હરિપર્ણ (सं.) मूळी, शाकविशेष ।

હરિપ્રિય (सं.) शिव, कदम्बवृक्ष, कादी प्रकृतिका आदमी, शंख, पोळा मंग । (वृक्ष विशेष) ।

હરિપ્રિયા (सं.) तुळसी, लक्ष्मी, पृथ्वी, (वि.) हरिको प्यारी ।

હરિયા (सं.) आम, आम्र, रसाळ, (कुम्हार गधोंको हांकते समय यह शब्द करता है)

હરિયાળી (सं.) नवपल्लवता, ताजा वनस्पतिकी शोभा, हराश ।

હરિયાળું (वि.) हरा हरित वर्ण ।

હરિવદની (वि.) चन्द्रमुखी, सुंदर मुंहवाली ।

હરિવલ્લભા (सं.) देखो હરિપ્રિયા ।

હરિસેવા (सं.) ईश्वर भक्ति ।

હરીક્ષ (सं) भाजी शाक (जैन धर्मावलम्बियोंका शब्द)

હરીફ (सं.) शत्रु, दुश्मन, प्रतिपक्षी, प्रतिवादी, वादी, प्रतिस्पर्द्धी, ईर्ष्यालु ।

હરીફાઈ (सं.) शत्रुता, दुश्मनी, स्पर्द्धा, इर्ष्या ।

હરીફરીને (अ०) इधर, या उधर ।

હર (अ०) यहाँ यहाँ । (वि.) हरा, ताजा, गीळा, (वनस्पति)

હરંપર (अ०) इधर उधर, आस पास रूबरू ।

હરેક (वि.) प्रत्येक, हरकोई, कोई भी एक ।

હરેડી–ર,રી (सं.) किसीका पीछा करना, दौड़, गड़बड़ी ।

હરેરું–રા (सं.) फलविशेष ।

હરેરા (सं.) वृक्षविशेष ।

હરોળ (वि.) सेनाका पिछला भाग, फौजके पीछेकी टुकड़ी । अगाऊ, पहिले, आगेसे, एकबांध हार, पंक्ति ।

હર્તા (सं.) हरनेवाला, लेनेवाला, नाश करनेवाला, दूरकरनेवाला, चोर ।

હર્ષુ (सं.) हरा सब्ज, ताजा।

હર્ષઘેલું (वि.) हर्षोन्मत्त, हर्षमें पागल। [आनन्द का विचार।

હર્ષતરંગ (सं.) आनन्द की

હર્ષનાદ (सं.) आनन्दध्वनि, जयघोष, जयजयकार, आनन्दसूचक शब्द।

હર્ષિત (वि.) प्रसन्न मुदित, आनन्दित आनन्दप्रिय।

હલક (सं.) आवाज,कंठ,सावँ,सुर।

હલકટ (वि.) नीचा, हलका.

હલકાઈ (सं.) हलकापना, निचाई लघुता। [शोर शब्द।

હલકાર (सं.) बडी आवाज,

હલકારવું (क्रि.) जोरसे बोलना, हांकना, फटकारना, नाराज होना चलाना।

હલકારો (सं.) दूत, सन्देशवाहक, जासूस, कासिद।

હલકું (वि.) वजनमें थोडा हलका, फुलका, सहज लघु, सुगम, क्षुद्र, तुच्छ, छोटा, अल्प नीचा उत्तम, कमजात, पाजी, फीका।

હલકું કરવું (क्रि.) मारना, पीटना। धमकाना, इज्जत कम करना।

હલકુંફુલ (वि.) फूलके समान हलका। [कमीना आदमी,।

હલકું લોહી (सं.)) नीचवृत्ति,

હલકે લોહી હલકારવું नामीचोर मारा जाय।

હલકું પડવું (क्रि.) इज्जत कम होना।

હલકું કામ (सं.) थोड़ा काम, नीच कार्य।

હલક (वि.)ऊंचा, बडा हुआ, वृद्धिगत।

હલફલવું (क्रि.) छटपटाना, तड़फडाना, तलफना, उत्तेजित होना।

હલબલ (सं.) होहल्ला, शोरगुल, घबराहटमें शब्दविशेष।

હલવા (सं.) एक प्रकारकी मछली।

હલવાઈ (सं.) मिठाई बेचनेवाला, मिठिया।

હલવાન (सं.) शालसे कमकीमतका ऊनीवस्त्र (जो ओढनेके काममें आता है।

હલવું (वि.) हलका, कमवजनदार।

હલવો (सं.) एक प्रकारकी मिठाई, हलुआ, मोहनभोग, सीरा, शीरा।

હલો (सं.) चाकू,काठका, चमचा।

હલાં-હલ્લો (सं.) चढाई,आक्रमण।

હલા (सं.) नाटकमें स्त्रियोंके लिये सम्बोधन, सखी, बहिन, आली, पृथ्वी।

હલાક (वि.) हैरान, दुखी, व्यथित।

હલાકી (सं.) परिश्रम, माथाफोड़, दुःख, खींच, तंगी।

હળવું (सं.) खेत जोतना।

હળામણ (सं.) खेत जोतनेकी मजदूरीके पैसे।

હલાલ (वि.) वाजिब, उचित, योग्य, धर्म और नीतिके अनुसार, कृतज्ञता (अ०) नियमानुसार, खरा, विधिपूर्वक मारा हुआ।

હલાલ કરવું (क्रि.) मारना, वध करना। [श्वपच।

હલાલખોર (सं.) भंगी, मेहतर,

હલાલી (सं.) स्वामिभक्ति, अनुराग, आसक्ति, प्रेम।

હલાવવું (क्रि.) हिलाना, डुलाना, कंपाना, डगमगाना, भुलाना, जागृत करना, उत्तेजित करना।

હલેતું (वि.) जीवन विषयक बातोंसे अनभिज्ञता, धीमा, मन्द, सुस्त। [लकड़ीका चमचा।

હલેસું-હલેસું (सं.) चाटू,

હલો (सं.) वैभव, ठाठबाठ, धूम, धूक। [धन शब्दविशेष।

હલ્યા (अ०) मित्रके लिये सम्बो-

હલ્લો (सं.) आक्रमण, धावा, हमला, चढ़ाई, धक्कानुकसान, धंधा, कामकाज।

હવ્યકવ્ય (सं.) हव्यकव्य, देव और पितृकार्यके लिये बलि। युक्ति प्रयुक्ति, दांवपेच।

હવડ (वि.) अछूता, जिसे किसीने भी काममें नहीं लिया हो।

હવણુ (सं.) चलते फिरते आनन्द करना, सहज, सरल। [इसीक्षण।

હવણાં (अ०) अभी, इसीवक्त,

હવન (सं.) होम, अग्निमें घृतादि पदार्थोंकी आहुति।

હવનપડી (सं.) होमके काममें आनेवाली सामग्रीकी पुड़िया।

હવસ (सं.) तृष्णा, हविस, लोभ, कामभिलाष, प्रबल इच्छा।

હવળઈ-બાઈ (सं.) देखो હવાઈ।

હવેણી (सं.) सामान रखनेके लिये दीवारमें लगाया हुआ तख्ता, आलमारी। प्रसवके दिनोंमें प्रसूताके खिलानेका पदार्थविशेष।

હવાં (अ०) अभी, इसीसमय, अब।

હવા (सं.) पवन, वायु, मरुत, ठंडक, शीतलता, आकाश, आस्मान।

હવાખાવી-લેવી (क्रि.) टहलना, घूमना, फिरना, चहलकदमी करना, हवाखाना ।

હવાફેર કરવી (क्रि.) तन्दुरस्ती ठीक करनेके लिये जहां अच्छी हवाहो वहां जाकर रहना ।

હવામાં ઉડી જવું (क्रि.) गायब होना, अदृश्य होना, व्यर्थजाना ।

હવામાંબાચકાભરવાં (क्रि.) मिथ्या प्रयास करना ।

હવામાંમારવું (क्रि.) पूर्ववत् ।

હવામાં હિંચકાખાવા (क्रि.) निराधार रहना, बेसहारे लटकते रहना।

હવાઈ કિલ્લા બાંધવા (क्रि.) शेख चिल्लीके से विचार करना, मनके लड्डूबनाना, खयाली पुलाव बनाना।

હવાઈછૂટવી(क्रि.) अफवाह फैलना किम्वदन्ती फैलना ।

હવાઈ (सं.) एक प्रकारकी, आतिशबाज़ी, जो आकाशमें उड़ती है ।

હવાટ (वि.) शीतलता, सर्दी, ठंड ।

હવાડું (सं.) दूध देनेवाले पशुके थनोंका वह भाग जिसमें दूध भरा होता है, औडी ।

હવાડો (सं.) पशुओं के पानी पीनेके लिये चूनेका बनायाहुआ पक्का गड्ढा, खेळ, हौज़, हौदी ।

હવાએલું-વડું (वि.) शीतलता युक्त, सर्द, ठंडगार।[गति, हकीकत

હવાલ (सं.) हालत, दशा, स्थिति,

હવાલદાર (सं.) पुलीस अथवा सेनाके नौकरोंका पद विशेष ।

હવાલદારી (सं.) हवालदारकाकाम ।

હવાલો (सं.) सत्ता, अख्तियार, कब्जा, रक्षा, पाळन, देखरेख, आटा छानने के लिये कपड़ेकी चलनी, तस्वीर उपसौम ।

હવાલેલેવું (क्रि.) कब्जेमें लेना ।

હવાલેકરવું (क्रि.) सौंपना देना।

હવાલેથવું (क्रि.) अधिकारमेंहोना ।

હવાલોઆપવો (क्रि.) जमानत देना ।

હવિ (अ०) अब, इससमय, यहांसे (कवितामें) [बलि देने योग्य ।

હવિષ્ય (वि.) भोग चढानें योग्य

હવિષ્યાન્ન (सं.) देवान्न, ऐसे अन्न जो देव और पितृकार्यमें काममें लाये जासकें । मूग, तील, जौ, चावल, उड़द, इत्यादि ।

હવિસ (सं.) घी, घृत, हवनमें डालने योग्य द्रव्य

હવું (अ०) होना, गुजरना ।
હવે (अ०) अब, फिरसे, इसके या इसके बाद, इन दिनों, इस समय ।
હવેજ (सं.) हलदी, हरिद्रा, हरद।
હવેથી (अ०) आजसे, अबसे, इसके बाद, आयन्दा ।
હવેઇ (वि) घबराया हुआ, व्याकुल।
હવેલી ऊँचा बड़ा मकान, अट्टालिका-वाला मकान, वैष्णव लोगोंका मंदिर । [बाह नहीं ।
હશે (अ०) होना, कुछ नहीं, पर-
હસકેતસકે (अ०) बारम्बार, घड़ी घड़ी, ठहरठहरकर, हरेककाममें।
હસણી(सं.)हंसनेकी रीति, मन्दमन्द हंसी, मुस्काना, मुस्कुराना ।
હસતાન-ખતાન-દતાન (सं.)दस्त, खत, हस्ताक्षर ।
હસદ (सं.) डाह, ईर्षा, स्पर्धा, वैर।
હસદખોર (वि.) ईर्षालु, देखकर कुढनेवाला ।
હસમુખું (वि.) जो सदा प्रसन्न रहे, खुशमिजाज, हंसमुख ।
હસવું (क्रि.) हंसना, खुशीप्रकट, करना, मुस्कराना, दांत निकालना दिल्लगी करना, मजाक करना, मसखरी करना, मसखरी करना, (सं.) हास्य, हंसी, मज़ाक, ठट्ठा।
હસતાલાડુ (सं.) कम घीके बने लड्डू ।
હસતુપક્ષી (सं.) हंसमुखव्यक्ति ।
હસતો લીલ (सं.) ठग, उठाईगीरा।
હસતો માર (सं.) दुखानेकी चोट, मुखसे ऐसे सुन्दर वचन बोलना जो सुननेमें प्रियहों किन्तु मर्म-स्पर्शीहों । [नेवाला ।
હસામણું (वि.) जो हंसावे, हंसा-
હસારત-થ (सं.) हंसी, मस्करी, दिल्लगी, मज़ाक, ठट्ठा । [करना ।
હસાવવું (क्रि.) हंसाना, प्रसन्न
હસી-સુ-હું (सं.) हांसी, हास्य, उपहास, फजीहत ।
હસીલ (वि.) भला, सीधा, निष्क-पट, शान्त, धीमा, मन्द ।
હસ્ત (सं.) हाथ, कर, पाणि, तेरहवां नक्षत्र । [मार्फत, जरिये ।
હસ્તક (अ०) हस्ते, द्वारा,
હસ્તકૃત (वि.) हाथका बनाया हुआ, मनुष्यकृत, कृत्रिम अप्रा-कृतिक । [चतुराई, होशियारी ।
હસ્તકૌશલ્ય (सं.) हाथचालाकी,
હસ્તક્રિયા (सं.) हाथद्वारा किया हुआ काम (यंत्रद्वारा नहीं ।)

હસ્તગત (वि.) अधिकारमें आया हुआ, हाथमें पहुंचा हुआ।

હસ્તદોષ (सं.) लिखते समयकी भूल।

હસ્તમેલાપ (सं.) विवाहके संस्कारके समय वरवधूका हाथ मिलाना।

હસ્તાક્ષરયુક્તવા (वि.) हस्ताक्षरद्वारा दिया हुआ।

હસ્તામળ (सं.) हाथमें रखा हुआ आमलेका फल। हाथमें रखाहुआ, सब तरफसे दिखताहुआ।

હસ્તિ (सं.) हाथी, हाथीदांत।

હસ્તિની (सं.) हथिनी, हाथी, (मादी) स्त्रियों के चार भेदोंमेंसे एक विशेष।

હસ્તિનખ (सं.) शहर, गांव, इत्यादि के द्वारके पास तय्यार कियाहुआ बड़ा मिट्टीका ढेर।

હસ્તિનાપુર (सं.) दिल्ली, देहली नामसे प्रसिद्ध भारतीय शहर।

હસ્તિમદ (सं.) गजमद, हाथी के गंडस्थलसे चूनेवाला रस।

હસ્તિ (सं.) हाथी, गज, कुंजर, वारण, उपस्थिति, मौजूदगी।

હસ્તું (वि.) हंसताहुआ, मुस्कराताहुआ, प्रसन्न, मुदित।

હસ્તે (अ०) हाथद्वारा, हाथसे, हाथोंमें।

હળ (सं.) हल, आंवला, बेरड़ी, हर, आंवला, अर्थात कोयलेका वैद्य विशेष।

હળડવું (क्रि.) झूलना, हिलना।

હળધર—ર (सं.) हल्दी, हरिद्रा, हरद। [बलदेव ।

હળભળ (अ०) उत्तेजित अवस्थामें

હળવટ (सं.) खेती, कृषिकार्य।

હળવું (क्रि.) मिलनसारहोना, मिलजाना, दोस्ती होना, फलना, (वि.) धीरा, धीमा, मन्दा, हलका, नरम, पोचा, मुलायम।

હળવે (अ०) धीरेसे, आहिस्तगीसे समझकेसाथ, सन्तोष पूर्वक।

હળવેરહીને (अ०) बहुतही धीरेसे आहिस्तासे, विनयपूर्वक, नम्रताद्वारा, बहुतही नर्म हाथसे।

હળાહળ (सं.) भयंकर विष, जहर गरळ, विख, माहुर, महाविष।

હળીયું (सं.) छोटाहळ।

હળુ-હળુ-હળુ (अ०) धीरेधीरे आहिस्तेसे, शनैःशनैः।

હળોતરો (सं.) भूमिको पहिलीही वर्षामें जोतना।

હાં (अ०) हां, ठीक, वाजिब, अच्छा, ऐसा ! ऐसाक्या ! हा।

હાંઉં (अ०) बस, हुआ, रहनेदो।

હાક (सं.) आवाज, लम्बाशब्द, आमंत्रण, बुलावा । [आवाज देना

હાકમારવી (क्रि.) बुलाना,

હાકણી (सं.) हाँकनेकी रीति।

હાકનાર (सं.) चलानेवाला, हाँकनेवाला, ड्राइवर ।

હાકવું (क्रि) हाँकना, चलाना, दूर करना, दुत्कार करना, धकेलना गप्पें मारना, अतिशयोक्ति करना ।

હાંકેડુ (सं.) सारथी, गाडीवान, कोचवान, गाडी हाँकनेवाला ।

હાંજા (सं.) गात्र, शरीरकी शक्ति, गाते, हिम्मत, आशा ।

હાંજાગગડીજવા (क्रि.) आशा अथवाहिम्मतछूटजाना।[छोड़ना ।

હાંજાભરવા (क्रि.) हिम्मत

હાંજી (अ०) अच्छी बात है, जी हाँ, ठीक है साहिब ।

હાંડલી (सं) छोटी हांडी मटकी।

હાંડલું (सं.) मटका, हाँडी, मिट्टीका पात्रविशेष ।

હાંડી (सं.) हंडी, ताम्बे या पीतलका कांचका दीपक विशेष, लटकता हुआ दीपक ।

હાંડીપાયો (सं.) बर्तन करनेवाला नौकर ।

હાંડો (सं.) हंडा, तांबीआ, पीतल बड़ा बर्तन, चरी, देग, आटे वगैरः का बनाया हुआ एक प्रकारका खाद्य पदार्थ मूर्खव्यक्ति ।

હાડવું (क्रि) कोठीमेंसे अन्न वगैरे: निकालने के लिये उसके नीचेके भागमें रखा हुआ छिद्र ।

હાંફ—ફુ (सं.) हाँपनी, साँस का जल्दी जल्दी आवागमन, कंप, स्फुरण ।

હાંફળું (वि.) व्याकुल, व्यग्र, जिसका साँस जल्दी जल्दी चल रहा हो ।

હાંફળું—ફાંફળું (वि.) पूर्ववत्।

હાંફવું (क्रि.) हांफना जल्दी जल्दी सांस छोड़ना और लेना घबराना ।

હાંલ્લી (सं.) देखो હાંડલી।

હાંલ્લું (सं.) देखो હાંડલું ।

હાંલ્લાં કુસ્તી કરે છે(—)घरमें खाने तकको नहीं है, चूहे मत करते हैं ।

હાંલ્લાં ખખેરી કઢાવીશ () माड़ेका घर खाली कराऊंगा ।

હાંલ્લાં ફોડવાં (क्रि) अनबन करना, झगड़ा पैदा करना ।

હાંલ્લું ફોડી નાંખવું (क्रि.) सिर उड़ा देना, माथा फोड डालना ।

હાંસ (સં.) સાંસ, श्वास, दम, इच्छा, चाह, हविस ।

હાંસ ઉડી જવા (क्रि) घबरा जाना, सांस भूल जाना ।

હાંસહાંસ (सं.) हृदयकी धड़कन ।

હાંસડી (सं.) गलेमें पहिननेका एक आभूषणविशेष । गलेकी नीचेकी हड्डी । घोड़ेके गलेमें पहिननेका सामान विशेष ।

હાંસલ (सं.) नफा,फल,फायदा,कर, महसूल,टेक्स, परिणाम, नतीजा।

હાંસવો (सं.) कुदाली, मिट्टी खोदनेका एक साधन ।

હાંસિયાઘઉં (सं.) ऊंची किस्मके अच्छे सफेद और मोटे गेहूं ।

હાંસિયો (सं.) कोर, किनार, कागज़का वह भाग जो मोड़कर छोड़ दिया जाता है और उसपर लेख लिखा जाता, हाशिया, मार्जिन।

હાંસી (सं.) हंसी, उपहास, दिल्लगी, फजीहत, मसखरी, चेष्टा ।

હાંસીલ (सं.) देखो હાંસલ ।

હા (अ०) देखो હાં ।

હાઉ (सं.) होवा बच्चों के डरानेके लिये एक शब्द विशेष ।

હાક (सं.) शब्द, आवाज, हांक, ध्वनि, प्रलाप, लपालापस्व ।

હાકમારવી (क्रि.) आवाज़ देना बुलाना । [धमकाना ।

હાકેટ્પ્યાડવી (क्रि.) डरबताना,

હાકમાનવી (क्रि.) डरमानना, भयमानना । [कारमें होना ।

હાકવાગવી (क्रि.) डरसे आधि-

હાકદેવી (क्रि.) डराना, मारनेकी धमकी देना, भयबताना ।

હાકટવું (क्रि.) धमकाना, डराना ।

હાકવું (क्रि.) खूब पुकार कर बोलना, चिल्लाना, जोरसे उत्तर देना ।

હાકેટવુ-કેટવું (क्रि.) देखो હાકટવું

હાકમ-કેમ (सं.) नवाब, सूबा, राजा, शासक, अफसर ।

હાકમી(सं.)हाकिमकी सत्ता हुकूमत ।

હાકોટો-કોટો (सं.) मोटा अवाज जोरकी ध्वनि, हांक ।

હાજત (सं.) जरूरत, आवश्यकता, पाखानेकी जरूरत ।[जरूरत होना ।

હાજતલાગવી (क्रि.) पाखानेकी

હાજતપડવી (क्रि.) आदत पड़ना ।

હાજર (वि.) मौजूद, उपस्थित, रूबरू, समक्ष, पास, नजदीक, विद्यमान, तैयार, हाजिर ।

હાજરજવાબ (सं.) हाजरजवाबी, समयचातुरी, चटपट जवाब देनेवाला व्यक्ति। [देनेकी होशियारी।
હાજરજવાબી (सं.) तत्काल उत्तर
હાજરજામીન (सं) अपराधीके सामने उपस्थित करनेके लिये तैयार जमानत देनेवाला। [क्रिया विशेष।
હાજરાત (सं.) जादू मंत्रकी एक
હાજરાહજુર (वि.) उपस्थित, प्रत्यक्ष, सन्मुख, सामने, साक्षात।
હાજરી (सं.) हाज़िर होना, उपस्थिति, मौजूदगी, हाजिर और गैर हाजिर जाननेका रजिस्टर, कलेवा, अल्पभोजन, प्रातःकालीन भोजन।
હાજરીલેવી (क्रि.) खबर लेना, मारने की अथवा नुकसान पहुंचानेकी तज़वीज करना।
હાજરીપત્રક (सं.) हाजिर है या नहीं इसबातका सूचक रजिस्टर।
હાજરીલેવી (क्रि.) खोजना, ढूंढना।
હાજરીભરવી (क्रि.) हाजिर होना यारहना, हाजिरी रजिस्टरमें लिखना।
હાજવું (क्रि.) अड़रहना, लगारहना।
હાજિયો (सं.) प्रत्येक बातमें "जीहुज़ूर" कहनेवाला, खुशामदी, चापलूस।

હાજી (अ०) देखो હાંજી।
હાજીહાજીકરવું (क्रि.) हरेक बातमें हां हां करना, खुशामद करना।
હાટ (सं.) दुकान, बाज़ार, पेंठ, हट्ट, लेनदेनकी जगह, चौक।
હાટમાંડવી (क्रि.) दूकान लगाना।
હાટક (सं) सुवर्ण, सोना, हेम, कंचन।
હાટકવું (क्रि.) गर्जना करना, हुंकार सिंहनाद करना।
હાટડું (सं.) छोटी दुकान, भंडारिया, दीवारमेंका ताक जिसको किवाड़ वगैरः लगेहों।
હાઢું (अ०) वास्ते लिये।
હાડ (स.) हड्डी, अस्थि, हृदय, जिगर, शरीरके भीतरकी कठोरवस्तु (अ०) बहुतही, अतिशय।
હાડજવું (क्रि) बहकजाना, असली रूप प्रकट होना।
હાડભાગવાં (क्रि.) शरीरसे अशक्त करना, मारमारना बहुत दुःखदेना।
હાડજ્વર (सं.) ऐसा ज्वर जो शरीरमें जमगयाहो, हड्ज्वर।
હાડગળવું (क्रि.) सूखना कृशहोना दुर्बल होना।
હાડવળવું (क्रि.) तन्दुरस्त होना।
હાડચરિયો (सं.) देखो હાડજ્વર।

હાડકી (सं.) छोटी हड्डी ।

હાડકું (सं.) देखो હાડ ।

હાડકાંભાંગીસરખાંકરવાં (क्रि.) मारमार के दुरुस्त करना, अधमरा करना ।

હાડકાં પાંસળાં ભાગવાં (क्रि.) दुर्बल होना, दुबले होना ।

હાડકાં રંગવાં (क्रि.) इतना मारना कि खून निकल आवे ।

હાડકાં રંગાવવાં (क्रि.) मेर बाद अस्थियोंकी योग्य क्रिया न हो ऐसा प्रयत्न करना ।

હાડકાં વાળવાં (क्रि.) शरीरका संगठन करना(व्यायाम वगैरः से)

હાડકાં શેકવાં (क्रि.) दुःख देना ।

હાડકાનો આખો (वि.) आलसी, सुस्त ।

હાડકાનો ભાગ્યો (वि.) पूर्ववत् ।

હાડકાંનો માળો (सं.) अस्थिपंजर, रक्तमांसरहित शरीर ।

હાડછેડ (सं.) तिरस्कार, फटकार ।

હાડમાર (सं.) पूर्ववत् ।

હાડવેર–वैर (सं.) पक्की शत्रुता, सख्त दुश्मनी ।

હાડવૈદ (सं.) टूटे हुए अस्थि भागको ठीक करनेवाला वैद्य ।

હાડવું (क्रि.) ढोरोंको चराने जाना ।

હાડિયાડુંડું (सं.) लड़कोंका एक प्रकारका खेल ।

હાડિયું (वि.) हाड सम्बन्धी, अस्थिविषयक, हाड़का ।

હાડિયું કરસણ (सं.) एक प्रकारका वर्षाऋतुमें उत्पन्न होनेवाला वृक्ष ।

હાડિયો (सं.) कौआ, काग, काक, वायस ।

હાડી (वि.) देखो હાડિયું, मजबूत, दृढ, पुष्ट, हठीला, परिश्रमी, शारीरिक कष्ट सहनेवाला ।

હાણ (सं.) हानि, नुकसान ।

હાથ (सं.) कर, हस्त, पाणि, कंधेसे लगाकर अंगुलियों तक शरीर से अलग लटकते हुए भाग । दस्त । आधा गज, मापविशेष, कोहनीसे अंगुलीके अग्र भाग तक की लंबाई । बाजू, भुजा, पक्ष, तरफ, ओर, सत्ता, अधिकार, शक्ति, बुद्धि, चातुर्य, मदद, सम्बन्ध, साथी, सहायक, कृपा, दया, रहम, महरबानी । दाँव, पाणिग्रहण, विवाह, सगाई, (अ०) खुद, स्वयम्, आप ।

હાથ આપવો (क्रि.) मदद देना, सहायता करना ।

હાથ ઉઠાવવો (क्रि.) अधिकार छोड़ना।
હાથ ઉપાડવો (क्रि.) पतिनेका इंतजाम करना।
હાથ કાપી આપવા (क्रि.) दस्त खत कर देना, हस्ताक्षर करना।
હાથકાળીકરવા (क्रि) कलंक लेना।
હાથખંખેરવા (क्रि.) आशा छोड़ देना।
હાથકરવું (क्रि.) अधिकारमें करना।
હાથચળવળવા (क्रि) मारनेके इच्छुक होना। [फिजूल खर्च।
હાથનું છુટું (वि.) मुक्त हस्त,
હાથ ઠોકવો (क्रि.) शर्तलेना, होड़ बदना।
હાથઘસવા (क्रि) पश्चात्ताप करना।
હાથચાટવા (क्रि.) भूखों मरना।
હાથ ચોખ્ખોહોવો (क्रि.) पवित्र, शुद्ध होना।
હાથચોળવા (क्रि.) पछताना।
હાથજવા (क्रि.) निराधार होना, हिम्मत हारजाना।
હાથજોડવા (क्रि.) क्षमा चाहना, नम्रता प्रदर्शित करना।
હાથજોડવો (क्रि.) ताक़त: देखना, बाहुबलकी परीक्षा करना।
હાથજોડાવવો (क्रि.) आशीष्य कहाना। [विवाह करना।
હાથઝાળવો (क्रि.) मदद करना,
હાથઠરવો (क्रि.) पूर्ण अनुभव होना।
હાથ દાબવો (क्रि.) घूस देना, रिश्वत देना।
હાથધોવા (क्रि.) निराश होना।
હાથનાપાકહોવા (क्रि.) रजस्वला होना। [राज होना।
હાથનીચા—હેઠાપડવા (क्रि.) नि-
હાથદેખાડવો (क्रि.) बळदिखाना।
હાથધરવો (क्रि.) मांगना।
હાથપગ (वि.) कर्त्ताहर्ता, मुख्य आधार। [तंग आना।
હાથભીડમાંહોવું (क्रि.) खर्चसे
હાથપરહેવું (क्रि.) पीछा खींचनेका निश्चय करना।
હાથનીકરામાત (सं.) खुदकाकाम।
હાથપીળાકરવા (क्रि.) विवाह-करना।
હાથફેરવીજવું (क्रि.) चोरी करके ले जाना।
હાથબાંધવા (क्रि) कामको रोकदेना।
હાથમારવા (क्रि) तैरना, पैरना।
હાથમારવો (क्रि.) चोरी करना।

હાથમાથેમુકવો (क्रि.) आशीर्वाद देना।

હાથલાગવો (क्रि.) पहुंचना।

હાથહાલ્યાં લેવાં (क्रि.) महा कठिन दशामें आना।

હાથનું પોલું (वि.) उड़ाऊ, खाऊ।

હાથેવાળોમેળવવો (क्रि.) पाणि-ग्रहण करना।

હાથપોલો તો જગપોલો (—) वाम कर काम बांधी करे सलाम, जर चाहे सोकर। [करना वैसा भरना।

હાથના કર્યાં હૈયાવાગ્યાં (—) जैसा

હાથઉછીનું (वि.) हाथउधार, थोडी देर के लिये ऋण।

હાથકડી (सं.) हथकडी।

હાથણી (सं.) हस्तिनी, हाथिनी, हाथी (मादा) [का रोग।

હાથધોણું (सं.) अतिसार, दस्तों-

હાથપોચિયું (सं.) कलाईपर पहिननेका आभूषण विशेष।

હાથરસ (सं.) हस्तक्रिया, हतलस।

હાથા (सं.) कुंकुमादि मंगल द्रव्य में सानकर हाथके छापे (चिन्ह)

હાથયો (सं.) हस्त नामक नक्षत्र, बैल घोड़ोंके बाल साफ करनेके क्रेमे हाथमें पहिननेका थैली।

હાથી (सं.) हस्ती, वारन, गज, कुंजर।

હાથીઝુલવા (सं.) धनवान होना।

હાથીનોપગ (सं.) ऐसा मनुष्य जिसके पीछे बहुतसे लोगोंका उदर पोषण होता हो।

હાથીનોબાર હાથીજ ઉઘાડે (अ०) खानदान तो खानदानही।

હાથીપાછળ ઘણાએ કુતરા ભસે છે (—) सूरजपर धूल फेंकने से उलटी उसीपर गिरती है।

હાથી દરબારેજશોભે (अ०) पुत्री ससुरालमेंही शोभा पाती है।

હાથીનામોંઆગળથીપુળોલેવો (क्रि.) अति दुष्कर काम करना।

હાથીનાદંતુ—ક્ષળ બહારનીકળ્યા-તે નીકળ્યા (-) बोला हुआ वचन बाहिर होगया।

હાથીના દાંત ચાવવાનાજુદા ને-બતાવવાના જુદા (—) कहनेका कुछऔर तथा करनेका कुछ और ही।

હાથેલી (सं.) हथेली, करतळ।

હાથેવાળો (सं.) लग्न विवाह, पाणि ग्रहण संस्कार। [बेंहा।

હાથો (सं.) दस्ता, मूठ, हेन्डल।

હાથોટોકનો (क्रि.) हीचकचना, शर्तकरना, कुंकुमादिसे सने हाथ का छापा देना, पञ्ज ।
હાથોહાથ (अ०) फुरफुर, जिसे देना हो उसीके हाथमें, एकके बाद दूसरेको हिलमिलकर, पास पास आकर, जल्दीसे, झट ।
હાન (सं) बाधा, हानि, नुकसान, घटी, खराबी, नाश, धक्का, विपत्ति, तंगी, कष्ट, मानता ।
હાનિકારક (वि.) नुकसान करने वाला, अहितकारी, नाशक, संहारक ।
હાફિકા (सं.) जँभाई, उबासी ।
હાબ્દુ (वि.) सब, तमाम, समस्त सारा । [उद्यत होना ।
હાબ્દુ થવું (क्रि.) तय्यार होना,
હામ (सं.) हिम्मत, साहस, पराक्रम, शौर्य, बहादुरी ।
હામભીડવી (क्रि.) साहस करना ।
હામહામનેહામજોઈએ (—) व्यापारमें हिम्मत पैसा और अच्छी जगह चाहिये ।
હામાકરતાં (अ०) हाँ ना करते हुए, आखीरमें, अन्ततोगत्वा ।
હામી (सं.) जमानत ।
હામીદાર (सं.) ज़ामिन, ज़मानतदार ।
હાય (अ०) दुःखबोधक शब्द, साँस शक्ति, यति, सत्ता, शाप, श्राप, बद्दुआ । [दुःख, रंज, खेद ।
હાયવરાળ (सं.) शोक, अफसोस,
હાર (सं.) पराजय, पराभव, शिकस्त, पंक्ति, श्रेणी, लाइन, समान, माला, पुष्पमाला, चाँदीका मांड कळक, कळप, खुराक ।
હારપડવું (क्रि.) चलना, आरंभ होना ।
હારભિતારવો (क्रि.) नरमकरना ।
હારક (वि.) हरण करनेवाला ।
હારજિત (सं.) जय पराजय फतह शिकस्त ।
હારડો (सं.) बड़ी पुष्पमाला, मोटे दानोंकी माळा, मिठाईका हार (होळी के दिनोंमें बनता है)
હારલ (वि.) कायर, हाराहुआ, पराजित ।
હારદ (सं.) मनकाभाव, मतलब, इच्छा, रहस्य, आंतरिक बात, भावार्थ, अशांस, हृदय ।
હારદોર (अ०) एकही पंक्तिमें, एकही कतारमें ।
હારબંધ (अ०) पूर्ववत् ।

હારવું (क्रि.) गुमाना, खोना, गमाना, नुकसान उठाना, मारखाना, थकना, कमजोर होना, हारना ।

હારિયું (वि.) समान, साथी, एक पंक्तिका, एक मार्गका, एक तर्जका ।

હારી (क्रि.) देखो હારડુ ।

હારીલ (सं.) एक प्रकारका पक्षी, (कहते हैं यह पक्षी जन्मसे मरण पर्यंत पैरमें एक लकडी रखता है)

હારે (अ०) साथमें, संगमें ।

હારેડું (वि.) तूफानी बदमाश, मस्ती करनेवाला, पाखण्डी, ।

હારો (सं.) सात मणका वजन ।

હારોડી (सं.) हार, माळ ।

હારોદોર (सं.) देखो હારદોર ।

હારોહાર (सं.) पूर्ववत् ।

હાર્દ (सं.) देखो હારદ ।

હાલ (सं.) दशा, हवाल, मुसीबत, आपदा, कष्ट, (अ०) अभी, इसी समय ।

હાલ જાય હવાલ જાય પણ ખંડો ખ્યાલજાય (—) जिनेक स्वभाव पड़ गया वे मरनेपरही मिटेंगे ।

હાલકડુલક (सं.) गड़बड़ तूफान ।

હાલચાલ (सं.) रोजगार, हेरफेर, आवागमन ।

હાલત (सं.) स्थिति, दशा, अवस्था हाल, अहवाल, टेव ।

હાલતેલિંગડે (अ०) तन्दुरस्तीमें, अच्छी दशामें ।

હાલંદું (वि.) हलताहुवा ।

હાલપોળ (वि.) सड़ाहुआ, गळा-हुआ, बिगड़ाहुआ, खराब ।

હાલમડાલ (वि.) देखो હલમલ ।

હાલમસ્ત (वि.) अलमस्त, निश्चित कंगाल किन्तु गर्विष्ठ ।

હાલરડું—રૂં (सं.) बच्चोंको पालनेमें सुलाकर गाया जानेवाला गीत, लोरी, समुदाय, जथा, अनाजदाने निकालनेकी गरजसे बैलोंसे उसे गुंधवाना ।

હાલવું (क्रि.) हिलना, चलायमान होना, चलना, जाना, दूरहोना, कांपना, थर्राना । [हानि ।

હાલસો (सं.) धक्का, नुकसान,

હાલહવાલ (सं.) दुर्दशा, आपत्ति ।

હાલહાલ (अ०) अभी अभी, तुरंत, तत्काळ ।

હાલી (सं.) झोली, झोरी ।

હાલીગોરી (सं.) देखो હાલરડું ।

હાલીમુવાલી (सं.) ओछे मनुष्य ।

હાંસો (અ०) મનુષ્યકો બુલાને સમય બોલા જાનેવાલા શબ્દ ।

હાવ (सं.) नखरा, चोंचला भाव, हावभाव, इच्छा, शृंगारचेष्टा, आशा ।

હાવભાવ (सं.) नखरा, लटका, अदा, चेष्टा, आकर्ष, चोंचला, दुलार ।

હાવરું (वि.) असन्तोषी, आशातुर, अतिलोभी ।

હાવરો (सं.) बुखारके बादकी भूख ।

હાવાં (अ०) अब, अभी, इससमय ।

હાશ–શ (सं.) किसी बातसे सतोष होनेपर यह शब्द काममें लाया जाता है । [ठठ्ठा, हास्य ।

હાંસી–હાસ્ય(सं.) दिल्लगी, मज़ाक,

હાસ્યકારક (वि.) जो हंसी करावे, उपहासास्पद । [त्पादक ।

હાસ્યજનક (वि.) विनोदी,हास्यो

હાસ્યરસ (सं.) नवरसमेंसे एक रस विशेष ।

હાસ્યરસપ્રધાન (वि.) जिसमें हास्य रसकी प्रधानताहो, जो हंसावे ।

હાસ્યવદન(सं.) हंसमुख, खुशदिल, (वि.) आनन्दी, हंसते हुवे मुहँ वाला।

હાસ્યવિનોદ (सं.) मज़ाक, दिल्लगी उल्लास, विलास ।

હાહાકાર (सं.) हाहाकार की ध्वनि, शोक सूचक शब्द ।

હાહો (सं.) कोलाहल, होहला, धूमधाम ।

હાળી (सं.) पुरुष, मर्द, हलवाहा

હિયાં (अ०) यहां, इसजगह ।

હિંગ (सं.) हींग, एक वृक्षका गोंदविशेष, हिंगु, गन्धद्रव्य, वासना।

હિંગડો हलके दर्जेका हींग ।

હિંગળો–ક (सं.) हिंगुर, शिंगरीफ, सिन्दूर ।

હિંગળોકિયું (सं.) हिंगरू भरनेकी डिब्बी (वि.) हिंगुरके रंगका ।

હિંગાષ્ટ (सं.) देखो હિંગાષ્ટ ।

હિંગોરૂં (सं) एक प्रकारका फळ, हिंगोट ।

હિંચકો (सं.) झोका, झोटा, मचका, झूलते हुएको धक्का, हिंडोला, झूला । [झोका खाना ।

હિંચવું (कि.) झूलना, लटकना,

હિંચાડવું (कि.) झलाना ।

હિંચોળવું (कि.) झुलाना ।

હિંડવું (सं) घूमना, फिरना, भटकना, कदमरखाना, जाना, चलना ।

હિંડોલ (सं.) रागविशेष ।

હિંડોળાખાટ (सं.) झूले–हिंडोलेदार पलंग । पलना ।

હિંડોળો (सं.) झूला, हिंडोला, पळना।

હિંસક (वि.) हिंसा करनेवाला, पापी, कसाई, बाधिक, खूनी, घाती।

હિંસવુ (क्रि.) प्रसन्नहोना, खुशी होना।

હિંસા (सं.) मारना, वध, घात, नुकसान, निरपराधीका वध करना।

હિંસારવું (सं.) हिनहिनाहट, गर्जना। [भक्षक।

હિંસારી (वि.) मांस भोजी, मांस

હિક (सं.) हिचकी, दम, पशुओंका दर्द, चीस, सांस।

હિકમત (सं.) युक्ति, करामात, रचना, योजना, कळा, कारीगरी यंत्र, तदबीर, इलाज, उपाय, बुद्धि।

હિકમતી (वि.) हिम्मतवाळा, करामती, युक्तिवाळा, योजक, शोधक।

હિકરાણુ (सं.) हल्ला, कोलाहल।

હિકાયત (सं.) बात, वार्त्ता, कहानी, किस्सा, इतिहास। [ठंड।

હિક્કળ (सं.) वर्षाके कारण अत्यंत

હિક્કાનાદ (सं) अव्यक्त, शब्द प्रतिध्वनि, हृदय के धाबकनका शब्द।

હિચકારૂં (वि.) भयभीत, नामर्द, हिजड़ा।

હિચોડો (सं.) देखो हिंडोळो।

હિજડો (सं.) नपुंसक, नामर्द, जनाना, क्लीब, बेहिम्मत, भयभीत व्यक्ति।

હિજરાવું (क्रि.) कुढना, खेदकरना मनहीमनमें स्पर्धा करना।

હિજરી (सं.) मुसलमानी सम्बत (इस्वी सनसे ६२२ वर्ष बाद)

હિણુકમાઉ (वि.) जो कुछभी नहीं पैदा करता हो।

હિણુપત (सं.) हीनत्व, अपयश, अपमान, लज्जा शर्म, बदनामी।

હિણુવર (सं.) पत्निसे छोटा पति, छोटा कंथ, अयोग्य वर।

હિણુવરૂ (सं.) बेमेळ जोड़ा। [करना।

હિણુવું (क्रि.) धिक्कारना, निन्दा-

હિત (सं.) उपकार, भलाई, लाभ फायदा, कल्याण, स्वार्थ, योग्य मतलब, वाजिबी।

હિતકર, હિતકર્તા, હિતકારી, હિતકારક (वि.) हितकरनेवाला, उपकारी, गुणकारी, लाभदायक, सुखद।

હિતશત્રુ (सं.) अशुभचिंतक, दुःख होगा यह समझ कर उचित शिक्षा नहीं देनेवाला। [लाभके वास्ते

હિતાર્થ (अ०) फायदेके लिये।

હિતુ (वि.) मित्र, हितकारी, हितेच्छु, शुभचिंतक, स्नेही, कल्याणेच्छु । [हितैषी ।

હિતેચ્છુ–હિતૈષી (वि.) शुभचिंतक,

હિતોપદેશ (सं.) शुभशिक्षा, अच्छा उपदेश, उत्तमपरामर्श ।

હિન્દવાણી (सं.) हिन्दूवाणी ।

હિન્દવી (वि.) हिन्दसम्बन्धी, भारतीय, हिन्दी नागरीभाषा ।

હિન્દી (वि.) पूर्ववत ।

હિન્દુ (सं.) वैदिक धर्मके माननेवाला भारतवासी ।

હિન્દુસ્તાની–સ્થાની (सं.) उत्तर भारतका निवासी, भारतीय मनुष्य उर्दूभाषा, (वि.) भारत सम्बन्धी ।

હિમ (सं.) शांत, पाळा, तुषार, ओस, चन्द्रन, मोती, ताजामक्खन, हेम, स्वर्ण । [कर्पूर ।

હિમકર (सं.) चान्द, चन्द्रमा,

હિમજ–જી (सं.) छोटीहर्रे, हर्र, हरांतकी ।

હિમજીહરડે (सं.) पूर्ववत ।

હિમરૂ (सं.) एक प्रकारका रेशमके ढंगका कपड़ा ।

હિમાયત (सं.) मदद, सहायता, आधार, सिफारिश, पक्ष ।

હિમાયતી (सं.) सहायक, मददगार, पक्षपाती ।

હિમાયલું (वि.) ठंडसे जला हुआ (वृक्ष) क्षीण, ठंडसे व्यथित ।

હિમાવું (क्रि.) अत्यंत ठंडसे जल जाना, सूखना, क्षीण होना, मनही मनमें जलना ।

હિમાળુ (वि.) अतिशय ठंडा, हिमालय पर्वत संम्बधी ।

હિમાંશું (सं.) चाँद, चन्द्र, शशि।

હિમ્મત (सं.) देखो હામ ।

હિમ્મતવાન (वि). शूर, बहादुर, साहसी, पक्की छातीका । [(बल)।

હિરકોરી (सं.) रेशमी किनोरदार

હિરણ્ય (सं.) सोना, स्वर्ण, कनक, कंचन । [ईश्वर ।

હિરણ્યગર્ભ (सं.) ब्रम्हा, प्रजापति,

હિરાકણી (सं.) हीरेका छोटासा टुकडा ।

હિરાકંઠી (सं.) हिरे सरीखे माणियोंकी माळा ।

હિરાકશી–સી (सं.) धातुसेस्सर, रंगके काममें आनेवाला क्षार विशेष ।

હિરાગળ (वि.) रेशमी ।

હિરાબોળ (सं.) एक प्रकारका गोंद ।

હીરાદખ્ખન (सं.) एक प्रकारकी औषधि ।

હિરાગ્રહ (सं.) एक प्रकारका पक्षी।

હિરાવેદ (वि.) होशियार चालाक।

હિલચાલ (सं.) हालचाल, रीति रिवाज कामकाज आनाजाना।

હિલવું (क्रि.) हिलना, इधर उधर आना जाना सरकना चलित होना।

હિલોળો (स.) मौज, आनन्द, उल्लास। [धक्का।

હિલ્લો (सं.) हानि, नुकसान।

હિસવું (क्रि.) प्रसन्न होना, रिझना, खुश होना, आतुर होना।

હિસાબ (सं.) अंक वगैरः गिनने की विद्या, गणित, लेन देन लिखा पढ़ी जमाखर्च, खाता, खुलासा, जवाब, भाव, दर, जोखिम, गणना, गिनती, मेळ, अन्दाज, योजना, आजमायश, खयाल, आश्रय।

હિસાબઆપવાજવું (क्रि.) मरजाना।

હિસાબનહોવો (क्रि.) महत्व न समझना। [बाटना।

હિસાબલઈનાખવો (क्रि.) धमकाना,

હિસાબહિતાબ (सं.) लेन देनका जमाखर्च।

હિસાબી (सं.) मुसलमान लोगोंका वर्ष विशेष, (इस वर्षके ३५४ दिन आठ घंटे ४८ मिनिट और चौंतीस सेकण्ड होते हैं) (वि.) गणित सम्बन्धी, गणित विद्यामें प्रवीण, खरा, ठीक।

હિસારવ—રો (सं.) हिन हिनाट, गर्जना। [साथी।

હિસ્સેદાર (सं.) भागी, पातीदार

હિસ્સો (सं,) भाग, पांती, बांटा। अंश।

હીંક (सं) देखो હિક। [समय)

હીકાં (सं.) हिचकियाँ (मरते

હીર (सं.) रेशम। देखो હીર।

હીણુ—ન(वि.) अधम, नीच, हीन, रहित, दीन, त्यक्त, कम, छोटा हुआ, तुच्छ, ओछा पात्र, कमजात। [क्षुद्रता।

હીણપણુ—ણું (सं.) नीचता,

હીણપત—પદ (सं.) हलकापना, हीनता। [अभागा।

હીણભાગી—ગ્ય (वि.) कमनसीब

હીણું (वि.) नीच, हलका, क्षुद्र, तुच्छ, नीरस। [पाडा।

હીનતા (सं.) न्यूनता, घटी, कमी,

હીનવાદી (सं.) मूक गूँगा।

હીરો (सं) हिम, एक प्रकारकी औषधि ।
હીરો (सं.) एक प्रकारका पक्षी ।
હીર (सं.) रेशम, तेजकांति, शोभा, सत्व, मानी, गुण, खासियत, शक्ति, रहस्य, दया, प्यार, प्रेम, हिम्मत ।
હીરચીર (सं.) मूल्यवान वस्त्र ।
હીરનીર (सं) पानी, जळ, हिम्मत । साहस ।
હીરાગળ (सं.) रेशमी । होशियार ।
હીરાવેધ (वि.) चतुर, चालाक ।
હીરો (सं.) हीरक, हीरा, रत्नविशेष, प्यारी वस्तु, सबसे उत्तम वस्तु ।
હીરો વટાવવો (क्रि.) रुपये लेकर कन्या बेचना । कन्याविक्रय करना ।
હીલો (सं.) धक्का, धचका, झटका, हानि नुकसान ।
હું (अ०) प्रथमपुरुष सर्वनाम, मैं, खुद, हां, शीघ्रतासूचक शब्द ।
હુંકવું (क्रि.) तड़पना, छटपटाना, जल्दी से पूरा करना ।
હુંકાર-રો (सं.) पुकार, हंकार, गर्जन ।
હુંડી (वि.) तूफानी, चाळंबी, अशुभ ।
હુંડું (सं.) घासका फुन्दा ।
હુંડ્લો (सं.) प्रेपका, बड़ी कालिमा बलाई
હુંડિયામણ (सं.) कूट, बिल-हुंडी पर ब्याज वगैरः ।
હુંડી (सं.) रुपयोंकी चिठ्ठी, बिल ।
હુંડી પાકવી (क्रि.) हुंडीके पैसे देने-लेने का समय होना ।
હુંડી સ્વીકારવી (क्रि.) हुंडीके पैसे देना, हुंडी सिकारना ।
હુંડીનું ખોખું (सं.) हुंडीके सिकरने के बादका कागज़ ।
હુંડે (अ० सब मिलाकर, कुलजोड़ ।
હુંઢિયું (सं.) हारी, मिट्टीके पात्रोंके गोल पेंदेके नीचे घास रस्सी इत्यादिका बनाकर लगाया हुआ कुंडळ सा जिससे वह लुढकने न पावे ।
હુંપણું-પદ-હું (सं.) आत्मश्लाघा, अहंकार, आत्मस्तुति, अपनी प्रशंसा ।
હુંફ (सं.) गर्मी, सहायता, मदद ।
હુંફાળું (वि.) कुछ कुछ गर्म, कुनकुना ।
હુંફાળું (वि.) गर्म, जो गर्मी पहुँचावे ।
હુંસ (वि.) हविस, इच्छा, लालसा ।
હુંસળમુંસળ (सं.) खलबत्ता, ऊखल और मूसळ ।
હુંશી (वि.) इच्छुक, अंबरयुक्त (बैल)
હુંશે (अ०) होशियारीसे, सावधानीसे, चैतन्यतासे ।

હુઈ (क्रि,) हुआ, बना।

હુઓ (क्रि) हुआ।

હુકમ (सं.) आज्ञा, इजाजत, शासन, सत्ता, फैसला, कानून, नियम। ताशके पत्तोंमें सबसे बड़ा पत्ता।

હુકમ કરવો (क्रि.) आज्ञा करना।

હુકમ માનવો-હુકમ ઉઠાવવો (क्रि) आज्ञानुसार चलना।

હુકમનામો (सं) आज्ञापत्र, फैसला।

હુકૂમત (सं.) सत्ता, आधिपत्य, प्रभुत्व।

હુકો-કો (स.) तम्बाकू पीनेका पानी चिलम अग्निका नलीदार यंत्र विशेष। हुक्का।

હુજત (सं.) तकरार, फिसाद, लड़ाई, हठ, जिद्द, आग्रह।

હુજતખોર-હુજતી (वि.) ज़िद्दी, फसादी, हठी।

હુજરેહો (सं.) देखो હુઅરડો, खटोंच, खरोंट।

હુડતાવવું (क्रि.) हुत्कारना, फट कारना, धमका देना न कुछ गिनना।

હુઠો (सं.) दिल्लगी, मज़ाक।

હુડો (सं.) वे पक्षी जो दल बांधकर खेतमेंका अन्न खानेको टूट पड़ते हैं।

હુડહુડ (सं.) मेढ़ोंकी लड़ाई, मेढ़ोंकी मुठभेड़।

હુડવું (क्रि.) कूटना (छाती)

હુત (वि.) होमा हुआ, हवनमें डाला हुआ, बलि दिया हुआ।

હુતકર્મ (सं.) होम, हवन, यज्ञ।

હુતદ્રવ્ય (सं.) हवनमें-अग्निमें डालनेकी वस्तुएँ। वे वस्तु जो होमी जावें।

હુતાશન (सं.) अग्नि, वह्नि, वैश्वानर।

હુતાશની (सं.) होली, होलीमें आग लगानेके लिये अलग सुलगाई हुई अग्नि।

હુતોને હુતી (सं.) पतिपत्नी, स्त्रीपुरुष।

હુનર-ન્નર (सं.) कारीगरी, कला, करामात, युक्ति, इलाज, तजवीज, उपाय, इल्म, तदबीर, विद्या।

હુનરી-ન્નારી (वि.) चतुर, निपुण दक्ष, प्रवीण, कारीगर।

હુનાળો (सं.) ग्रीष्मकाळ, ग्रीष्म-ऋतु, गर्मीका मौसिम।

હુનું (वि) गर्म उष्ण।

હુપકો-ભકો (सं.) उल्टी, कय, वमन, छर्दि, उबाक।

હુબેહુબ-હુબ (वि.) हूबहू, मिलता, जुलता, बराबर।

हुमलो (सं.) चढ़ाई, आक्रमण, हमला, धावा।

हुमायु (सं.) एक प्रकारका पक्षी विशेष। [प्रतिष्ठा।

हुरमत (सं.) आवरू, इज्जत,

हुर्रियो-हुर्रे (सं.) हुर्रा, आनन्द सूचक शब्द, जयजयकार दुर्दशा।

हुल्लडु (सं.) उत्पात, भय, उपद्रव उत्कापात।

हुल्लड-बल्लड (सं.) ऊधम, तूफान, दंगा, उपद्रव, शांतिभंग।

हुल्लडखोर-हुल्लडी (वि.) स्वामिद्रोही, राजद्रोही, उपद्रवी, ऊधमी तूफानी।

हुलरावvुं (क्रि.) बालकको गोदमें लेकर हिलाना-खेलाना।

हुलवुं (क्रि.) बन्द होना, फल आनेसे रुकना। [हुलराना।

हुलामणुं (सं.) प्यारमें खुशीसे

हुलाववुं (क्रि.) देखो हुलराववुं।

हुलावुं (क्रि.) समझाना, सम्मति देना। [हर्ष।

हुलास (सं.) उल्लास, आनन्द,

हुल्लड (वि.) अविचारी, अविवेकी, बिनाविचारे बीचमें बोलने वाला।

हुशियार (वि) देखो होशियार।

हुस्न (सं.) चेहरा, रूप, दिखावा, कान्ति, शोभा, हुस्न।

हुसहुस (अ०) जल्दीसे, शीघ्रतासे।

हूक (सं.) शूल, आंकड़ा, हुकका, बन्दरकी आवाज।

हूकवुं (क्रि.) हूहूकरना, शब्द विशेष करना बन्दरका बोलना।

हूप (सं.) वानरी बोली।

हूरी (सं.) अप्सरा, परी।

हूड (अ०) हिष्ट, धुत, छिट्, तिरस्कार, सूचक वाक्य विशेष।

हृदय (सं.) छाती, उर, वक्ष, अंतःकरण, कलेजा, जिगर, मन, पेट, रक्ताशय, गुलार्थ।

हृदय पिगळवुं (क्रि.) दया आना, चित्तपर प्रभाव होना।

हृदयकमळ (सं.) हृदयरूपी कमळ।

हृदयभेदक (वि) हृदयको विद्ध करने वाला, मर्मभेदक।

हृदयशून्य (वि.) निर्दय, क्रूर, पाषाण हृदयी, मूर्ख। [कंत।

हृदयेश (सं.) स्वामी, नाथ, पति,

हृदयेश्वा (सं.) पत्नि, भार्या, प्रिया।

हृषीकेश (सं.) सब इन्द्रियोंके प्रवर्तक विष्णु।

हृष्टपुष्ट (वि.) मोटा ताजा, प्रसन्न, और शरीरसे भी स्वस्थ ।

हें (अ०) ऐं विस्मयार्थ सूचक शब्द ।

हेंકવું (क्रि.) संगीमें आना ।

हेंકાર (सं.) अहंकार गर्व अभिमान

हेंકારી (वि.) घमंडी, गर्विष्ठ, अहंकारी ।

हेंડવું (क्रि.) जाना, चलना ।

हे (अ०) विवेकसूचक सम्बोधन शब्द, रे, अरे, (सं.) धैर्य, हिम्मत ।

हेજ (सं.) हेतु, प्रेम, स्नेह, प्यार । शीतलता, ठंडाई ।

હેઠ(अ०) नीचे, तळे नीचेका भाग ।

હેઠલાણુ (सं.) अधो भाग ।

હેઠળ-ળાં-ળું (अ०) देखो हेठ ।

હેઠાણું (सं.) नीचेवाली जगह, हलका, नीचा, निम्न ।

હેઠે (अ०) तळे, नीचे, उतरता हुआ, नीरस ।

હેડ (सं) कवा, पैर फंसानेका लकडीका साधन, काठ, कैदीखाना, जेल । बैलोंका झुंड (बिक्रीके लिये)

હેડકી (सं.) मृत्यु समयके अंतिम मास । जोरका श्वास ।

હેડંબા (सं.) लंबी और मोटी ताजा स्त्री, राक्षसी जो पांडु पुत्र भीमसेनकी पत्नी हुई थी ।

હેડિયો (सं.) बैलोंके टोळेका बच्चा, (वि.) बैलोंके झुंडवाला ।

હેડી (सं) बेचनेके बैलोंका झुंड । (वि.) बराबर, सरीखा, समान ।

હેત (सं.) प्यार, स्नेह, माया, प्रेम ।

હેણુ (सं.) बिछौना, गद्दी, तोशक, गद्दा ।

હેત (सं.) प्रीति, प्रेम, स्नेह, प्यार ।

હેતકનું (सं.) गाड़ा, बैलगाड़ी ।

હેતપ્રીત (सं.) प्यार, मोहब्बत, कृपा, मेहरबान ।

હેતસ્વી (वि.) हितेच्छु, शुभेच्छु ।

હેતાળ (वि) दयालु, कृपालु, प्रेमी ।

હેતુ (सं.) सबब, कारण, नियम, उद्देश, इच्छा, मनोरथ, मतलब, अर्थ ।

હેતેસરી-સ્વરી (वि.) हितेच्छु, हित चिंतक, कल्याण चाहने वाला ।

હેદલ (सं.) घुड़सवारोंकी फौज, अश्वसेना ।

હેબક (सं.) डर, भय, त्रास ।

હેબક ખાવી (क्रि.) डरना, भयभीत होना ।

હેમ (सं.) सोना, स्वर्ण, कांचन, नागकेसर, बर्फ, हिम।
હેમક (वि.) बेवकूफ, मूर्ख, शठ, अज्ञान, नासमझ, डर, भय।
હેમકર (सं.) पर्वतविशेष।
હેમખેમ(सं.)हर्षआनंद,सहीसलामत।
હેમકુંદ (वि.) बर्फ और मोगरेके समान सफेद।
હેમન્ત (सं.) हिमऋतु, सर्दीका मौसिम।
હેરક (सं.) भेदू भेदिया, जासूस, गुप्त दूत, नौकर।
હેરણ (सं.) ऐरण, लोहेका चौखूंटा मोटा टुकड़ा जो किसी वस्तुको रखकर हथोड़े से कूटनेके काममें आता है।
હેરણા (सं.) चोरवृत्ति, गुप्त अवलोकन, निरीक्षण, ढूंढना, देखना।
હેરફેર (सं.) अदलबदल, लौटपलट, अन्तर, फर्क, विरुद्धता। (वि.) बदलाहुआ, लौटाफेरा।
હેરવવું (कि.) मुलतवी करना।
હેરવું (कि.) छुपके देखना, गुप्त दृष्टि रखना।
હેરાન (वि.) दुखी, पीडित, घबराया हुआ, व्यग्र, आकुलव्याकुल।
હેરાનગતિ (सं.) पीडा, दुःख, कष्ट, नुकसान, हानि।
હેરાવવું (कि.) प्यारसे देखना।
હેરાવું (कि.) जंगलमें जाना।
હેરિયાં (सं.) गुप्त रीतिसे देखना, झोका, फटकारा।
હેરું (सं.) ढूंढ भाळ, तलाश, गुप्त रीतिसे देखना, सांप, भेदू, भेदिया।
હેરો (सं.) भेदू, भेदिया, छुपी बातोंका ज्ञाता।
હેરોફેરો (सं.) आनाजाना, आवागमन, देखने के इरादेसे चक्कर।
હેલ (सं.) बोझा, भार, स्त्रीके माथेपर पानी के पात्र। बेचने के लिये गाडीमें भरा हुआ घास, मजदूरी, हमाली, कविताके अंतमें।
હેલકરી (सं.) मजदूर, बोझा उठाने वाळा, हमाल, भारवाही।
હેલના (सं.) तिरस्कार, अवज्ञा, अनादर।
હેલપટો (सं.) व्यर्थका चक्कर, मजदूरी, मेहनत, परिश्रम।
હેળવું (कि.) हिलमिल के रहना, मिलजाना, मिलजुलकर रहना।
હેલા (सं.) सुख, विलास, क्रीड़ा।
હેલામાં (अ.) एक क्षणमें, फौरन, तत्काल।

हेवाली (सं.) मुसलमान लोगोंका ३५४ दिनका वर्षविशेष।

हेलि (सं.) सूर्य, सूरज, रवि।

हेली (सं.) झड़ी, लगातार जलवृष्टि, सहेली, सखी, आली। राग, भस्म (मुर्देकी), बगल, खलबल, गीतविशेष। [धक्का, झटपट।

हेलो (सं.) झपाटा, दबका, हानि,

हेल्लो (स.) गाड़ी के बैठने वालोंको गाड़ी के किसी गड्डे में या पत्थरसे टकरानेका धक्का।

हेवा (सं.) अभ्यास, मुहाविरा, टेव, आदत, प्रेक्टिस, सहवास।

हेवातन (सं.) सौभाग्य, अहिवात, सुहाग।

हेवान (सं.) पशु, ढोर, जानवर।

हेवा निवत (सं.) पशुता, मूर्खता, असभ्यता, अज्ञानता।

हेवाल (स.) हाल, वर्णन, आख्यान, कथा, प्रबंध, अवस्था, स्थिति, हालत। [लत।

हेळ (सं.) आदत, टेव, अभ्यास

हेडुं (सं.) देखो हृदय।

हेळियो—ळो (सं.) मृगशिर, नक्षत्रके तारे, हिरणी नामसे प्रसिद्ध छः तारे।

हैयाफूट (सं.) छातीकूट।

हैयाबळो (सं.) दुःखसे हृदयकी वेदना।

हैयाटवुं (क्रि.) पस्ताहिम्मत होना।

हैयात (सं.) देखो हयात।

हैयाती (सं.) देखो हयाती।

हैयातोड (सं.) अत्यंत शोक, हृदयका फटना (वि.) जीतोड़, छातीको तोड़ने वाला, अत्यंत कठिन। [चित्त समाधान।

हैया धारण (सं.) संतोष, तृप्ति,

हैया फाट (सं.) फुक्कल, क्रूर, हृदय फट जावे इतना (रोना)।

हैया फुटुं (वि.) मूर्ख, बेवकूफ, पागल, बुद्धिशून्य, अबुध।

हैयारखी (सं.) छातीतक चुनी हुई दिवार।

हैयारखुं (वि.) दिलका मैला, मनमें आँट रखनेवाला घूना, घुन्ना।

हैयासुनुं (वि) मूर्ख, मूढ़, भूलने स्वभावका।

हैयुं (सं.) छाती, दिल, हृदय, हिया, मन, अंतःकरण, स्मरणशक्ति, याददाश्त, हिम्मत, धैर्य, साहस, आंतरिक गुप्त चिंता।

हैयानी होळी (सं.) आंतरिक चिंताकी जलन।

હૈયાનું ફૂટયું (क्रि.) जिसे कुछ भी न सूझे और न कुछ स्मरण रहे। मूर्ख।

હૈયાનું મેળું (सं.) दिलका मैळा, दिलका पता न लगने देने वाला।

હૈયાનો હાશ (सं.) बहुतही प्यारा।

હૈયામાં અંગારા ઉઠવા (क्रि.) कलेजा जलना, छाती जलना।

હૈયામાં અગ્નિ કાતી છે (—) बहुतही बैर है (मनमें)।

હૈયામાં ગોખબો હોવો (क्रि.) मनकी बात किसीपर प्रकट न होने देना। [रखना।

હૈયામાં લખી રાખવું (क्रि.) याद

હૈયામાં હાથ મૂકયો હોય તો કોરો. કટ નિકળે (—) पेटमें कुछ कपटही नहीं है।

હૈયા સગડી કોટ બાંધી છે (—) रातदिन हृदय जलता रहता है।

હૈયું કબૂલ કરતી નથી (—) साहस नहीं होता।

હૈયું ખાલી કરવું (क्रि) मन के उद्गारों को प्रकटकरके हृदयको शांतकरना।

હૈયું ભરાઇ આવવું (क्रि.) जी भर आना। रोने की इच्छा हो आना।

હૈયું ઠાલવવું (क्रि.) जो कोई बात रातदिन दिलमें खटकती हो उसे अपने प्रेमीसे कहकर कलेजा ठंडाकरना।

હૈયું પડવું (क्रि.) आदत्, होना, टेव पडना।

હૈયું ફુટી જવું (क्रि.) कम अक्ल होना, अचेत होना, बेसुध होना।

હૈયે ધરવું (क्रि.) ध्यान देना, लक्ष्य करना।

હૈયે હાથ રાખવો (क्रि.) धैर्य रखना, शान्ति धारण करना।

હૈયે તેવું હોઠે (अ०) जैसा दिलमें वैसाही मुँहमें।

હૈયે દાબવું (क्रि.) छातीसे लगाना।

હોંસ (सं.) इच्छा, उत्साह, हविस, चाह।

હોંસાતોંસી (सं.) बढ़ाचढ़ी, प्रतिस्पर्द्धा।

હોંસીલું (वि.) इच्छुक, उत्साही, उमंगी।

હો (अ०) अच्छा, ठीक, बस, हुआ, अो, अरे, रे, ए।

હોઇયાં (सं.) भोजनोपरान्त, तृप्ति-सूचक डकार।

હોઇયાં કરવું (क्रि.) हजम करना, अनधिकार वस्तुको पचा जाना।

હોકાયંત્ર (सं.) जहाजवालके लिये मार्गसूचक यंत्र, मत्स्ययंत्र, दिशासूचकयंत्र ।

હોકારો (सं) हां, हूं, हुंकारा, सुनने या समझने की स्वीकृतिका सूचक । स्वीकृति, सम्मति, हुंकार ।

હોકારો કરવો (क्रि.) धमकाना, डाटना ।

હોકીરો(सं.)मोटी आवाज, चिल्लाना।

હોકો (सं.) हुक्का, देखो હોકાયંત્ર।

હોજ (सं.) हौज़, टंका, पानी भरनेका कुंड, हौद, हौदी, । खेल, खेली ।

હોજટ (सं.) लगना, प्रवेश, धप्पड़, तमाचा, चांटा । पटेल और गांवके लोगोंके बीचका वार्षिक हिसाब ।

હોજરી (सं.) जठराग्नि, उदर, पेट ।

હોઠ (सं.) ओंठ, ओष्ठ, पेट ।

હોઠ ફફડાવવો (क्रि.) बड़बड़ना ।

હોઠમાં ને હોઠમાં (अ०) धीरेसे, आहिस्तेसे, होठही होठोंमें ।

હોડ (सं.) शर्त, पण, बचन, दांव, पेच ।

હોડ મારવી (क्रि.) शर्त बदना ।

હોડ પડવી (क्रि.) शर्त होना ।

હોડકું (सं.) छोटी नाव, डोंगी ।

હોડવું (क्रि.) गन्ध आना, मन्द मन्द सुगंध आना, महँकना, । ओढना ।

હોઢણિયું (सं.) स्त्रियोंके ओढनेका वस्त्रविशेष ।

હોડી (सं.) नाव, डोंगी, नौका ।

હોડો (सं.) ढकन, आच्छादन ।

હોણ (सं.) इसवर्ष, वर्तमानसाल ।

હોતા (सं.) यज्ञमें ऋग्वेदके मंत्र बोलने वाला, हवनमें मुख्य ब्राम्हण । होम करनेवाला ।

હોદેદાર (सं.) ओहदेवाळा, अधिकारी पदवीप्राप्त ।

હોદો (सं.) ओहदा, पद, पदवी, सत्ता, अमल, अधिकार, हुकूमत ।

હોદો (वि.) हौदा, अंबारी, हाथी के ऊपर की बैठक । [सिक्का ।

હોન (सं.) एक प्रकारका सोनेका

હોનાર (सं.) होनहार, भविष्य, होनेवाला । [होनहार ।

હોનારત (सं.) बनाव, भविष्य,

હોફ (सं.) भय, डर, त्रास, खौफ ।

હોણ્યાણો(सं.) फजीहत, आहिस्ता ।

होम (सं.) हवन, यज्ञ, मंत्रपूर्वक अग्निमें आहुति देना । देवयज्ञ, आहुति, बलिदान ।

होमकुंड (सं,) हवन करनेका गड्ढा, यज्ञकुंड, बलिदानका कुंड ।

होमशाळा (सं.) यज्ञशाळा, हवन करनेका स्थान ।

होमवुं (कि.) अर्पण करना, हवन करना, बलिदान करना, जलाना ।

होमावु (क्रि) होमना, जलना ।

होय (अ॰) बेपरवाही में होंका प्रयोग । होगा, खैर, चलताही है, थकता है ।

होय होय (अ॰) हायहाय ।

होरववु (क्रि.) खुशी देना, शांत होना ।

होरवुं (क्रि.) बिकता हुआ लेना दुखी होना, सेरना, समेटना छीनना ।

होरा (सं.) एक घंटा, लग्न, ढाई घड़ीका समय, भविष्य, रेखा-गणित ।

होरानवु (स.) दुख, त्रास, कष्ट, पीड़ा, व्याकुलता । [विशेष ।

होरी (सं.) होली त्योहारका गायन

होल (सं.) जमीन में गढ़ा खोदकर बनाया हुआ चूल्हा, भय, डर ।

होलवणु (सं) देखो होलाणु, अग्नि का बुझना ।

होलववु (क्रि, बुझाना, गुल करना, नाश करना शांत करना, ठंडा करना समझाना, सान्त्वन देना ।

होलाणु (वि.) कूए के पास की ढालू जमीन जिसमें बैल पानी खींचते समय चलते हैं । गाना गोंण ।

होली (म) पक्षी विशेष, फाख्ता (मादा) पुड़कलिया ।

होलेदिल (वि) हृदय, शून्य, गहे दिलवाला, भ्रमित चित्तवाला ।

होलो (सं.) पुड़कळ, फाख्ता, मोढ़ी, कमेढ़ी, पक्षी विशेष । चूल्हे के अन्दरका छोटा चूल्हा कल्हा ।

होवा (सं.) गड़बड़, हल्ला होहल्ला।

होवावु (सं.) घबराहट में इधर उधर दौड़ना, चैन पड़ना, शांति होना ।

होवुं (क्रि) होना, बनना ।

होवे (क्रि.) हां बेशक, हकीकतमें, वास्तवमें ।

હોશ (સં.) सुधि, मान, चेत ।
હોશિયાર (वि.) सावधान, चतुर चालाक, विचक्षण, काबिल, कुशल, प्रवीण दक्ष ।
હોશિયારી (सं.) सावधानी, चालाकी, चतुराई, खबरदारी, काबिलियत, बुद्धि, अक्ल ।
હોશે (अ०) देखो હશે ।
હોસાન (सं.) देखो હુસન ।
હોહેળાઈ (स.) आलस्य, सुस्ती ।
હોહેળાવું (सं.) सुखाना, शुष्क कराना । [काहिल ।
હોહેળુ (सं.) आलसी, सुस्त,
હોહે। (सं.) हल्ला, होहल्ला, शोरगुल, गड़बड़, धामधूम, पूछताछ, खटपट ।
હોળવું (कि.) साफ करना, बाल बाना, केश सवारना, बिखरे हुए बालोंके कंधेसे ओंछना । कंघा करना ।
હોળાયા (सं.) होलीमें डालने के लिये बनाये हुए गोबर के पदार्थ ।
હોળાઇયો (सं.) पूर्ण, सब दिखाने का चिन्ह विशेष, बकार, (यह चिन्ह रुपयों पैसों पर लगाता है)
હોળાયા (सं.) देखो હોળાઈયો ।
હોળાયો (सं.) होलीमें गन्दे गीत गानेवाला होलीका भडुवा ।
હોળી (सं.) फाल्गुन मास का उत्सव विशेष, फाग के दिन, फागुन महिने की पूनम, फागुन सुदी १५ फाल्गुन मासकी पौर्णिमाके दिन लकड़ी कण्डे आदि इकट्ठे करके उसमें आग लगानेकी क्रिया । गायन विशेष, होरी ।
હોળી વાળવી (कि.) खराबी करना, धूलधानी करना, बरबाद करना ।
હોળીનું નાળિયેર (सं.) महाकठिन कार्यमें सबसे पहिले कूद पड़नेवाला व्यक्ति ।
હોળૈયો (सं.) देखो હોળાઇયો, और હોળિયો सोलह हाथ लंबा बांस या बल्ली-लकड़ी ।
હ્રદ (सं.) पानीका औंडा गड्ढा । झील, कुंड, अगाध जलाशय ।
હ્રસ્વ (वि.) एक मात्रिक स्वर, कम आवाजवाला, लघु, छोटा कम ।
હ્રાસ (सं.) नाश, क्षय, कमजोर होना, अवनति, धीरे धीरे घटना ।

હ્રીમ (अ०) लक्ष्मीका बीजमंत्र, शाक्त लोगोंका मूलमंत्र ।

હૈય્ય (सं.) घी, घृत, आज्य ।

ળ

ળ (ळ) गुजराती वर्णमालाका ४५ वाँ अक्षर, यह अक्षर गुजराती भाषाकी प्राचीन पुस्तकोंमें "ल" अक्षरकी जगह काममें लाया गया है, इस अक्षरसे आरंभ होनेवाला एक भी शब्द नहीं है ।

ક્ષ

ક્ષ (सं.) गुजराती वर्णमालाका ४६ वाँ अक्षर । यह संयुक्ताक्षर है । यह क और श के संयोग से बना है । [का चतुःपंचमांश ।

ક્ષણ (सं.) पल, लहमा, सेकण्ड

ક્ષણબુદ્ધિ (वि.) अस्थिरबुद्धि, जिसके विचारोंमें स्थिरता नहो ।

ક્ષણભંગુર (वि.) क्षणभरमें नाश होनेवाला, नाशमान, अस्थिर ।

ક્ષણભર (अ०) पलभर, थोड़ी सी देर ।

ક્ષણિક (वि.) क्षणभरका, एक क्षणका, अस्थायी, अनित्य ।

ક્ષણબુદ્ધિ (वि.) देखो ક્ષણબુદ્ધિ ।

ક્ષણે ક્ષણે (अ०) पल पलमें, बारम्बार ।

ક્ષત (सं.) घाव, जख्म, व्रण, चोट । (वि.) घायल, फाड़ा हुआ, तोड़ा हुआ, जख्मी ।

ક્ષતિ (सं.) हानि, नुकसान ।

ક્ષતોદર (सं.) एक प्रकारका रोग जो पेटमें होता है ।

ક્ષત્રાણી(सं.)क्षत्रियाणी क्षत्रिय (स्त्री)

ક્ષત્રાવટ (सं) देखो ક્ષત્રીવટ ।

ક્ષત્રીવટ (सं.) क्षात्रधर्म, क्षात्रिय जातिका स्वाभिमान ।

ક્ષત્રિય (सं.) द्वितीय वर्णका पुरुष, योद्धा, क्षत्री ।

ક્ષપણ (सं.) उपवास, व्रत ।

ક્ષપા (सं) रात्रि, रात, निशा ।

ક્ષમ (वि.) शक्तिसम्पन्न, काबिल ।

ક્ષમા (सं.) सबर, बरदाश्त, मुआफी । सहनशीलता, शांति, शम, तितिक्षा, माफी, पृथ्वी, धैर्य, रात्रि, रात, कृपा, दया ।

ક્ષમાપાત્ર (वि.) मुआफ करनेयोग्य, क्षम्य, क्षमायोग्य ।

ક્ષમાવાન (सं.) मुआफ करनेवाला, धैर्यवान, दयालु, कृपालु, सहनशील, संयमी ।

क्षमावंत (वि.) पूर्ववत् ।
क्षमाक्षमस्य (पं.) पंचांग नमस्कार ।
क्षमाशील (वि.) जो क्षमा स्वभाव वाला हो, बरदाश्त करनेवाला ।
क्षय (सं.) हानि, नाश, सर्ल्, कम होना, घिरावट, अन्त, प्रलय, राजयक्ष्मा, रोगविशेष, संवत्सरका नाम विशेष ।
क्षयतिथि (सं.) टूटी हुई तिथि मासिक तथा वार्षिक ।
क्षयवृद्धि (सं.) घटाबढी ।
क्षयी (वि.) रोगविष, राजरोग ।
क्षयोपशम (सं.) नाश, अन्त, हानि ।
क्षर (वि.) नाशवान् घटनेवाला ।
क्षात्र (वि.)क्षत्रिय सम्बन्धीक्षत्रिय वर्ण विषयक, क्षत्रिय जातिका ।
क्षात्रकर्म (सं.) क्षत्रियोंका काम, (प्रजाको रक्षा, दान, यज्ञ करना, वेदोंका स्वाध्याय, इंद्रिय दमन)।
क्षार (सं.) खार, नमक. लवण, नोन, राख, भस्म, खाक ।
क्षारण (सं.) यंत्रद्वारा सत्व खींचना, स्वर्ण वगैरः धातुकी भस्म। ।
क्षारभूमि (सं) समुद्र के पासकी भूमि, खारयुक्त भूमि ।
क्षाल (वि.) धोनेवाला, स्वच्छ करनेवाला । [छिड़कना ।
क्षालन (सं.) धोना. साफ करना,
क्षिति (सं.) भूमि, पृथ्वी, हानि, नुकसान, प्रलयकाल ।
क्षितिज (सं.) दृष्टि, मर्यादा, पृथ्वीके चित्रकी एक सिरेसे दूसरे सिरेतककी रेखा । दिगंत, आकाश और भूमि मिलते दिखते हैं, रेखा । [नरनाथ, भूप ।
क्षितिपाल (सं) राजा, भूपाल,
क्षितिधर (सं.) शेषनाग, पृथ्वीको धारण करनेवाला कूर्म ।
क्षितिमंडल (सं.) पृथ्वीका गोला, भूगोल - [फेंका हुआ ।
क्षिप्त (वि.) त्यागा हुआ,
क्षिप्र (वि.) तुरत जल्दी शीघ्र, ।
क्षिप्रा (सं.) खीर, दूधपाक खिचड़ी, एक नदीका नाम ।
क्षीण (वि.) पतला, दुबला, कमजोर, गरीब, शक्तिहीन कम नाजुक, खर्च किया हुआ, मृत, क्षत ।
क्षीणता (सं.) आसक्ति, कमजोरी निर्बलता, दुर्बलता, क्षुद्रिमांद्य ।

क्षीर (सं.) दूध, दुग्ध, पय, वृक्षरस, पानी, जल।

क्षीरोदक (सं.) स्त्रियोंके पहिननेका एक रेशमी बहुमूल्य वस्त्र।

क्षुद्र (वि.) छोटा कमीना क्रूर, गरीब, तुच्छ, कंजूस नाचीज, निर्दय।

क्षुद्रघंटाणी (सं) देखो क्षुद्रघंटिका।

क्षुद्रघंटिका (सं) छोटे घुघरोंवाली तागड़ी, कंदोरा, काटेसूत्र।

क्षुद्रता (सं.) हलकापन, नीचता, कमीनापन, अधमता, ओछापन।

क्षुधा (सं.) भूख, खाद्य पदार्थ, बुभुक्षा, अशनेच्छा, लोभ, आकांक्षा लालसा, उत्कंठा।

क्षुधित (वि.) भूखा, बुभुक्षित।

क्षुधा (सं.) भूखा, बुभुक्षित।

क्षुर (सं.) छुरा, अस्तुरा, उस्तरा, खुर, सुम, खुरी।

क्षुल्लक (वि.) थोड़ा ज़रा हल्का, नीच, तुच्छ, निर्जीव, अधम, क्षुद्र।

क्षेत्र (सं.) जमीन, भूमि, खेत, तीर्थस्थान, पवित्र जगह, शरीर, देह, स्त्री, इन्द्रिय समूह, मन, घर, बाड़ा उर्वरा, भूमि, भार्या।

क्षेत्रज(सं.)बारह प्रकारके पुत्रोंमें से एक, नियोग द्वारा उत्पन्न संतान।

क्षेत्रज्ञ (सं.) ज्ञाता, ज्ञानी, आत्मा, जीव, (वि.) सयाना, चतुर, होशियार, किसान।

क्षेत्रपति (सं.) कृषक, किसान जमीनका मालिक, जीव।

क्षेत्रपाळ (सं.) पृथ्वीकी रक्षा करनेवाला, रखवाला देवदेवीविशेष।

क्षेत्रफळ (सं.) क्षेत्रका परिमाण, क्षेत्रकी लंबाई चौड़ाईको गुणा करनेसे जो गुणन फळ आता है। रकबा किसीभी व्यापारसे फळप्राप्ति।

क्षेत्रस्थ (वि.) पुण्य भूमिमें रहनेवाळा

क्षेप (सं.) प्रेरण, व्यर्थ खोना, फेंकना, अपमान, निन्दा, देरी, लांघना।

क्षेपक (सं.) प्रक्षिप्त वाक्य, ग्रंथकर्ताके अतिरिक्त किसी अन्य लेखकका बढाया हुआ भाग।

क्षेपणु (सं.) निन्दा त्याग प्रेषण, बिताना गुजरना। अपवाद।

क्षेपणी (सं.) मछली पकड़नेका जाळ। नौकादण्ड।

क्षेम (सं.) कुशळ, राजी खुशी, खैरो आफियत, रक्षा, मुक्ति, कुनिंबाह, नक्षत्र, आरामगाह कल्याण।

क्षेमंकर (वि.) कल्याण कर्ता आनंद कर्ता, सुखी करनेवाला।

क्षोणी (सं.) पृथ्वी, भूमि अक्षौहिणी।

क्षोभ (सं.) व्याकुलता, उद्वेग। कम्प, घबराहट, कांपना, भड़काव।

क्षोभित (वि.) क्रुद्ध, व्याकुळ, क्षुभित। [आना।

क्षोभवुं (क्रि.) क्रुद्ध होना, गुस्सेमें

क्षौर (सं.) हजामत, मुंडन, बाळ बनवाना।

क्षौरी (सं) छुरा, उस्तरा, अस्तुरा।

क्ष्मा (सं.) पृथ्वी, भूमि, एक कीड़ा।

त्र

त्र (सं.) गुजराती वर्ण माळा का ४७ वां अक्षर। यह संयुक्ताक्षर है। यह त और र के मिलानेसे बना है। त+र=त्र।

नोट—

इस अक्षर के शब्द " त " में देखिये वहाँ लिखे गये हैं।

ज्ञ

ज्ञ (सं.) गुजराती वर्णमाला का ४८ वां अक्षर, । यह भी संयुक्ताक्षर है। यह ज और ञ के संयोग से बना है। (वि.) ज्ञाता, ज्ञानी, जानकार, (सं.) जाननेवाला, वेदान्ती, ब्रह्मदेव, चंद्र, बुध, ग्रह, पंडित।

ज्ञप्ति (सं.) समझ शक्ति, ज्ञान, बुद्धि, अकल, स्तुति जानना, समझना, अपमान करना, प्रतिज्ञा करना, अंगीकार करना स्वीकार करना, हुक्म करना, आज्ञा करना।

ज्ञात (वि.) समझा हुआ जाना हुआ ज्ञान प्राप्त, देखो ज्ञाति।

ज्ञातयौवना-मुग्धा (सं.) जिसको नव यौवन आता है ऐसा ज्ञानी हुई स्त्री, (काव्य शास्त्रमें)।

ज्ञातव्य (वि.) समझने योग्य जाननेके लायक, ज्ञान प्राप्त करने योग्य।

ज्ञातसिद्धांत (सं.) शास्त्रवेत्ता।

ज्ञाता (वि.) जानकार, समझदार, बुद्धिमान, चतुर, दक्ष, प्रवीण।

ज्ञाति (सं.) जात, जाति, कौम, वर्ण गोत्रज, एकजाती, बिरादरी।

ज्ञान (सं.) जानना, बुद्धि, समझ, जानकारी, माहिती शक्तिका विकाश।

ज्ञानकला(सं.) बुद्धिप्रकाश, समझ।

ज्ञानकांड (सं.) वेदके कांडों में से एक कांड, (कर्म कांड, उपासना काण्ड, और, ज्ञान कांड), ब्रह्मज्ञान, प्रत्येक वेदका भाग।

ज्ञानघन (सं.) ज्ञानका भरपूर ज्ञानसे भरा हुआ।

ज्ञानचक्षु (सं.) विचार चक्षु, चर्मनेत्र नहीं किन्तु ज्ञान नेत्र, बुद्धि।

ज्ञानतंतु (सं.) बुद्धितंतु, मास्तिष्कम की वह नस जो बुद्धिसे संबंध रखती है।

ज्ञानदर्पण (सं.) ज्ञानरूपी दर्पण।

ज्ञानदीप—क (सं.) बुद्धिका प्रकाश ज्ञानका उजियाला।

ज्ञानदृष्टि (सं.) ज्ञानकी दृष्टि, मानदृष्टि, बुद्धिपूर्वक अवलोकन।

ज्ञानपरंपरा (सं.) एकसे दूसरा और दूसरेसे तीसरा इस प्रकार तर्कद्वारा निश्चित ज्ञान।

ज्ञानप्रसारक (वि.) ज्ञान फैलाने वाला बुद्धिको विकास देनेवाला।

ज्ञानमय (वि.) ज्ञानयुक्त, ज्ञानवाला, (सं.) ईश्वर, परमात्मा।

ज्ञानमार्ग (सं.) ज्ञानका रस्ता, बुद्धिमार्ग।

ज्ञानमाला—ला (सं) अनेक विषयके अनेक ज्ञान। ज्ञान विषयक पुस्तक।

ज्ञानयोग (सं.) ब्रह्मप्राप्तिके लिये ज्ञान के अर्थकी एकनिष्ठा।

ज्ञानलक्षण (क्रि) प्रत्यक्ष साधन सन्निकर्षणका एक भेद।

ज्ञानरज्जु (सं.) ज्ञानतंतु, ज्ञान का सिलसिला।

ज्ञानवल्ली (सं.) जिस लता विशेषके खानेसे ज्ञानवृद्धि हो, सोमरस, भंगेडी लोग भाँगको ज्ञानवल्लि क ते हैं।

ज्ञानवान (सं.) ज्ञानी बुद्धिम न।

ज्ञानविज्ञान (सं.) ईश्वर तथा पंचतत्व विषयक ज्ञ न इह लौकिक और पारलौकिक ज्ञान। धर्माधर्म का ज्ञान। सृष्टिके पदार्थोंका धर्म सम्बन्धी मामान्य और विशेष ज्ञान।

ज्ञानाभिलाषा—षी (सं) ज्ञानकी इच्छा, फिलासफी, ज्ञानकी इच्छा वाला।

ज्ञानी (वि.) देवज्ञ, जाननेवाला, तत्वज्ञानी, ज्योतिषी, समझदार। विवेकी, चतुर, योगी। श्रेष्ठ।

ज्ञानीश्वर (सं.) ज्ञानी पुरुषोंमें

ज्ञानेन्द्रिय (सं.) जिनइंद्रियोंद्वारा पदार्थका बोध होता है, आँख, कान, नाक, जीभ, और त्वचा।

ज्ञानोदय (सं.) ज्ञानका विकाश, बुद्धिका उदय–वृद्धि। [सदुपदेश।

ज्ञानोपदेश (सं.) ज्ञानका उपदेश,

ज्ञानोपासना (सं.) वेदविहित उपासना, वैदिक उपासना।

ज्ञापक (वि.) बतानेवाला, जनी, बोधक, गुरु, शिक्षक, ज्ञान देनेवाला, (सं) अनुशासन, विधान।

ज्ञापन (सं.) शिक्षा, बोधन, जताना, बताना जतलाना।

ज्ञेय (वि.) जानने योग्य ज्ञातव्य।

" रहो देश अभिमानमें नित्य फूले।
सदा आर्य गौरव बढाओ बढाओ।
हिन्दी तुम्हारी अहै मातृ—भाषा।
इसे राष्ट्र-भाषा बनाओ बनाओ।

(शिवरात्रि)

इति शम्

वैदिक विज्ञान ग्रन्थमाला

लेखकः—राज्यरत्न आत्मारामजी व्याख्यानवाचस्पति
एज्युकेशनल इन्स्पेक्टर बड़ोदा.

अपने ढंग की अपूर्व वैज्ञानिक सचित्र पुस्तकें

सृष्टिविज्ञानः—यह आर्यजगत् में प्रसिद्ध पुस्तक आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान राज्यरत्न श्री. आत्मारामजी (अमृतसरी) एज्युकेशनल इन्स्पेक्टर बड़ोदा ने लिखी है। इसमें वैदिक प्रमाणों से यह दर्शाया गया है कि सृष्टि उत्पत्तिसम्बन्धी जो वर्णन पुरुषसूक्त में दिया गया है वही यथार्थ और वैज्ञानिक है। ग्रन्थ छः अध्यायों में विभक्त है। इसमें डारविन मत आलोचना तथा सत्यसनातनवैदिक सिद्धान्तों का मंडन है, वेदउत्पत्ति, ईश्वरसत्ता, जीवसत्ता आदिअमैथुनि ऐसे ऐसे अनेक विषयों पर जो आशंकाएं की जाती थीं उनके उत्तर युक्ति तथा प्रमाण के अतिरिक्त पश्चिमी विज्ञानदृष्टि से भी दिये गये हैं। एक नास्तिक भी इसे पढ़कर आस्तिक हो सकता है, विकासवाद का युक्तियुक्त खंडन है, विकासवाद जिसका प्रचार नास्तिकता के रूप में भारत में भी प्रचलित होता जाता है, इस अवैदिक लहर को रोकने के लिये यह पुस्तक रचकर ईश्वरवाद का सुदृढ़ मंडन किया गया है। यह पुस्तक उत्तम कागज़ पर छपी है और लगभग ३०० पृष्ठों की है इसमें पुरातत्व सम्बन्धी तीन चित्र भी दिये हैं। यह पुस्तक अपने ढंग की पहिली है। मूल्य केवल दो रुपये।

समालोचनाओं का सार

सरस्वती लेखकों ने बड़ी खोज और बड़ा श्रम किया है यह पुस्तक अवश्य पढ़ने योग्य है।

माडर्न रिव्यु " यह डारविन के विकासवाद की विस्तृत पूर्ण आलोचना है। ग्रन्थकार ने बहुतसी अंग्रेज़ी पुस्तकों की तथा हमारे प्राचीन संस्कृत साहित्य की सहायता ली है। उद्धृत वाक्य प्रकरणानुकूल हैं और ग्रन्थकार की युक्तियें प्रायः बहुत प्रबल हैं। निःसन्देह पुस्तक पढ़ने योग्य है।"

आर्य मित्र " प्रत्येक सत्यान्वेषी को इसे अवश्य खरीद कर पढ़ना चाहिए।"

" **भास्कर** इस पुस्तक के प्रकाशन से आर्य समाज के साहित्य में एक बहुत उपयोगी पुस्तक का समावेश हुआ है।"

वेद प्रकाश " पुस्तक बहुत अच्छी, वैदिक धर्मकी प्रतिष्ठा बढ़ाने वाली है। **ललिता** " पुस्तक मनन करने योग्य है।"

आर्यगजट " यह वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि के लिये बड़े मार्के की किताब है यह आर्य भाषा में अपनी किस्म की पहिली किताब है, जिस के पढ़ने से वैदिक सिद्धान्तों के दुश्मन भी दोस्त बन सकते हैं"

विद्यार्थी " यह पुस्तक अपने ढंगकी अद्वितीय रची है। इसमें वैज्ञानिक रीति पर वैदिक प्रमाणों और प्रबल युक्तियों से यह सिद्ध किया है कि मनुष्यजाति का पिता मनुष्य था बन्दर नहीं। बड़े परिश्रम से पूर्वीय और पश्चिमीय विद्वानों के मतों को उद्धृतकर उन पर बड़ी गंभीरता से विचार किया गया है। जिनके हृदयमें वेदों की कुछ भी प्रतिष्ठा बाकी है, उनके लिये यह पुस्तक बड़े कामकी है"।

MODERN REVIEW This is an elaborate criticism of Darwin's theory of evolution. The author has taken the help of many English books

as also of our own ancient Sanskrit literature. There are some very apt quotations and the author's reasonings are often very convincing. The book certainly requires perusal.

प्रकाश (उर्दू) "सृष्टिविज्ञान आर्य भाषा में यह किताब मास्टर आत्मारामजी अमृतसरी व महाशय एम. ए. दुदानी ने लिखी है। यह किताब उन चन्द किताबों में से एक है जो किसी साहित्य की शोभा हो सकती हैं। यह वेद के पुरुषसूक्त के आदिसृष्टि तथा वेदोत्पत्ति सम्बन्धी मंत्रों की वैज्ञानिक व्याख्या है किताब निहायत मेहनत व योग्यता से लिखी गई है और काबिल मुसन्निफान के लिये खुद बखुद दिल से तारीफ निकलती है। हम ज़बरदस्त सिफारिश करेंगे कि प्रत्येक आर्य पुरुष इस पुस्तक की एक प्रति खरीद करे। किताब की छपाई कागज़, ज़ाहिरी सूरत निहायत खूबसूरत है।

मर्यादा "हिन्दी में यह अपने ढंग की नई पुस्तक है। इसमें लेखकों ने सुप्रसिद्ध यूरोपीय विद्वान डारविन के विकासवाद का खण्डन करके सृष्टिसंबंधी वैदिक सिद्धान्त को प्रतिपादन किया है। पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये"

सृष्टिविज्ञान पर विद्वानों की सम्मतियां

श्री. नारायणस्वामीजी भू. पू. श्री नारायणप्रसादजी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल वृन्दावन "सृष्टिविज्ञान" नामक पुस्तक लिखकर श्रीमान् मास्टर आत्मारामजी ने आर्यभाषा के साहित्य का बड़ा उपकार किया है। पुस्तक में डारविन के विकासवाद का प्रतिवाद बड़ी मनन करने योग्य तर्कों से करते हुए पुरुषसूक्त के मंत्रों की उत्तम व्याख्या मास्टरजी ने की है। पुस्तक संग्रह करने योग्य है।"

रायबहादुर रायसाहेब ठाकुरदत्तजी धवन रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट जज लाहौर आनरेरी मैजिस्ट्रेट डेरा इस्माईलखान
" I find it full of instruction and varied information. It is a book for the English educated well versed in ' Hindi. '

रायसाहब डाक्टर श्यामस्वरूपजी बरेली—" सृष्टिविज्ञान बादलील पुस्तक है, डारविन मत-समीक्षा अच्छी तरह होगई है सचाई को बहुत लाभ हुआ ।

श्री. नन्दनाथ केदारनाथ दीक्षित बी. ए. M. C. P. विद्याधिकारी बड़ोदा राज्य बड़ोदा—

" It aims at giving a scientifie exposition of the Purshasukts in easy, chaste Hindi. Your interpretaion of the Vedic texts bearing on the subject of creation and evolution will be reäd by all with pleasure and profit. I have not the slightest hesitation in saying that your attempt at handling such a weighty and noble subject has been highly successful, your manner of presenting your point of view is at once winning and convincing, 1 wish every success to your publication.

श्री रघुनन्दन शर्माजी रचियता 'अक्षरविज्ञान' कानपुर
"सृष्टिविज्ञान " पुस्तक मिला, क्या कहना है, पुस्तक जिस गवेषणा बुद्धि से लिखी गई है उस बात को वही जानते हैं जिनको ऐसे विषयों से प्रेम है, आपने इस पुस्तक द्वारा वैदिक संसार का जो उपकार किया है

इस बात को भी वही जान सकते हैं जिनको वेदों से प्रेम है, वेदोंकी जिन्दगी ही आर्यों की जिन्दगी है, वेदों की जिंदगी अपौरुषेयता है। अपौरुषेयता की जिन्दगी विकासवाद का खण्डन है। आपने बड़ो किया है जो अत्यन्त आवश्यक सामायिक और उचित था। पुस्तक में एक भी जरूरी विषय नहीं छूटा और एसा भी विषय नहीं लिखा गया जिस में युक्ति प्रमाण की साक्षी न हो।"

श्री भागीरथप्रसाद दीक्षित मुख्याध्यापक नार्मल स्कूल कोटा राज्य कोटा-'आपकी 'सृष्टिविज्ञान' पढी अत्युत्तम निकली है"

श्रीयुत मुन्शी नारायण कृष्णजी गुजरांवाला:-

"सृष्टिविज्ञान मैंने अवल स आखीर तक पढा। वाके यह पुस्तक यथा नाम तथा गुण और वैदिक धर्मियों के लिये अपूर्व रत्न है। इसका एक एक लेख मर्कदों धन्यवाद के योग्य है"।

"आर्योपदेशक श्री स्वामी विश्वेश्वरानंदजी सरस्वती "आपकी पुस्तक प्रत्येक आर्य विद्वान् के पढने तथा मनन करने योग्य है। डारविन मत के उन विचारों से जो वैदिक धर्म के विरोध में हैं। आपने बड़ा परिश्रम कर के उनकी उत्तम समालोचना की है"

श्री डाक्टर कल्याणदास जे. देसाई बी. ए एल. एम. एन्ड. एस. फिजीशन तथा सर्जन मंत्री आर्यविद्या सभा बम्बई। 'इस पुस्तक के प्रकाशित करने से आपने आर्यसमाज के सौफिक लिटरेचर के बढाने में बड़ा भारी प्रशंसनीय काम किया है। प्रत्येक आस्तिक को यह पुस्तक देखनी चाहिये।"

वैदिक विज्ञान ग्रन्थमाला की द्वितीय सचित्र पुस्तक शारीरविज्ञान अर्थात् शरीर संबंधी यजुर्वेद अध्याय २५ के मंत्रों का स्वाध्याय इसमें दर्शाया गया है कि शस्त्रविद्याका आदि मूल वेद में है और भारतऋषि

ही इसके आदि प्रचारक हुए हैं ऋषियों के परम्भूत तथा वातपित्त कफ के सिद्धांत की सत्यता दिखाकर यूरोप सायन्स के मन्तव्यों को अमान्य ठहराया है । पठनीय उत्तम छपी पुस्तक का मूल्य ।≤)

THE STAR " The masterly way in which the author seems to have handled the subject shows his wide reading and sincere love of the ancient literature of the country. The book is interesting and valuable. It is moreover an acquisition to the Hindi literature. "

विद्यार्थी–' पुस्तक सब के देखने योग्य है "

ललिता–" आर्यों की चिकित्सा तथा शल्यकर्म सम्बन्धी उन्नति के विषय में बहुतसी गवेषणात्मक बातें लिखी हैं। पुस्तक पढ़ने योग्य है।"

प्रताप–" पुस्तक उपयोगी है ."

आर्य्यगज़ट " शरीर विज्ञान " यह एक किताब का नाम है जो श्री पंडित आत्मारामजीएज्युकेशनल इन्स्पेक्टर बड़ोदा ने तसनीफ की है और महाशय जयदेव ब्रदर्स बड़ोदाने आर्य्यभाषा में प्रकाशित की है। यह पुस्तक पहले बलप्राप्ति के नाम से उर्दू में छपी थी । शरीरविज्ञान में जो नया दीवाचा पंडित आत्मारामजी ने लिखा है यह बहुत अद्भुत है इसमें साबित किया गया है कि जिसमे के मुतलिक जो वाकफियत दुनिया को अबतक हुई है या होगी उसका मूलवेद भगवान है चुनांचे किताब में यजुर्वेद अध्याय २५ के पहले नौ मंत्रोंकी बड़ी खूबी से व्याख्या की गई है जिससे जाहिर होता है कि एनाटोमी और फिजिओलोजी के तमाम असूल उनके अन्दर पाये जाते हैं और जीवफाइनीज़ जस्मानी बनावट और नाड़ियों वगैरह का हाल यह सब वेद से जाहिर होता है।

इन मन्त्रों में से सातवें मंन्त्र के मुतअल्लिक एक तस्वीर भी किताब में दी गई है जो इन्सानी जिसमकी अन्दरूनी दुनियां का बखूबी हाल ज़ाहिर करती है।

किताब बहुत दिलचस्प और मुफीद है इससे पहिले पंडितजी ने ब्रह्मविज्ञान किताब लिखकर आर्य व हिंदु जनता पर बड़ा एहसान किया था और अब इस किताब के दुबारा छपवाने में और बढ़कर काम किया है जिसके मुताल्याओ वेदों की अज़मत का सिक्का दिल पर बैठ जाता है। कीमत सात आना है।"

आत्मस्थान विज्ञान मू० ।-) वैदिक विज्ञान ग्रन्थमाला की तृतीय पुस्तक है।

ब्रह्मयज्ञ:—लेखक राज्यरत्न आत्मारामजी.

अर्थात वैदिक स्तुति, प्रार्थना और उपासना की फिलोसोफी। यह प्रसिद्ध पुस्तक है जिसका उर्दु, गुजराती तथा बंगाली में अनुवाद हो चुका है इसमें अनेक शंकाओं के उत्तर ही नहीं दिये गये किन्तु वैदिक उपासना की पुष्टि में यूनान देश के तत्ववेत्ताओं पाइथागोरस, अफलातून के सिद्धान्तों का सार देते हुवे वर्तमान काल के विद्वानों के प्रमाण भी दिये हैं। जो संध्या करना चाहते हैं उनको संध्या की मीमांसा जानने के लिये यह ग्रन्थ अवश्य पढ़ना चाहिये। बढ़िया कागज़ के १७६ पृष्ठों पर मनोहर टाइप में छपी हुई पुस्तक का मूल्य बारह आने।

आर्यमित्र—" आर्यसमाज के उक्त विद्वान् ने यह पुस्तक प्रथमवार विक्रमाब्द १९५१ में छपाई थी। उसी पुस्तक को श्री शांतिप्रियजी ने संशोधन कर दुबारा छपने के योग्य कर दिया है। पुस्तक की उपादेयता अब के श्री गुरुदत्तजी के जीवन चरित्र से और भी बढ़ गई है।

ब्रह्मयज्ञ या सन्ध्या प्रार्थना स्तुति और उपासना का महत्व दार्शनिक रीति से अच्छे प्रकार सिद्ध किया है। हर्ष की बात है कि मास्टरजी की पुस्तकें अब फिर 'अजमेर मदर्स' द्वारा संशोधित संस्करणोंमें प्रकाशित होने लगी हैं।"

आर्यसेवक—"ब्रह्मयज्ञ–इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण हमारे सामने उपस्थित है। आर्यों की स्तुति प्रार्थनोपासना को वैदिक सिद्धांतानुकूल दर्शाने में रचयिता ने विशेष परिश्रम किया है। यूरप देशनिवासी फिलासफरों के सिद्धांत और वैदिक फिलासफी की श्रेष्ठता दर्शाने में किसी प्रकार की कमी नहीं की है। प्रत्येक आर्य्य सद्गृहस्थ को उचित है, इस पुस्तक को अवश्य मंगा कर तदनुकूल कर्तव्य पालन करे, मूल्य केवल ।।)"

भारतोदय—"ब्रह्मयज्ञ इस परमोपकारी पुस्तक में ब्रह्मयज्ञ अर्थात् ईश्वर की स्तुति प्रार्थना का संक्षिप्त अच्छी रीति पर किया है इसमें यूरोप के विद्वानों की सम्मतियां अधिकता के साथ उद्धृत की गई हैं जिनसे आजकल के शिक्षित समुदाय का मन ईश्वरभक्ति की ओर अधिक आकृष्ट हो सकता है।"

वेदप्रकाश—"मास्टर आत्मारामजी अमृतसरी आर्य समाज के सुलेखक मृदुलेखक का लिखा है, यह पुस्तक सुंदर सुआक्षरों में छपा प्राप्त हुवा, सब देशों सब जातियों के ईश्वराराधन की चर्चा दिखाकर आर्यों के ब्रह्मयज्ञ की उत्तमता इसमें दिखाई है।"

भास्कर—"ब्रह्मयज्ञ—यह पुस्तक श्रीयुत आत्माराम (अमृतसरी) एज्युकेशनल इन्स्पेक्टर बड़ौदा की रची हुई है। इस पुस्तक का यह द्वितीय संस्करण विकने, दबीज कागज पर मनोहर ढंग से प्रस्तुत किया है इसमें वैदिक ब्रह्मयज्ञ की व्याख्या नहीं किन्तु समालोचना की गई है

और अनेक विदेशियों की सम्मति से भी उसका श्रेष्ठत्व प्रतिपादन किया है। महाविद्यालुओं के पुस्तक पढ़ने योग्य है।

संस्कार चन्द्रिका—आर्य जगत में प्रसिद्ध पुस्तक तृतीयवार छपकर तय्यार है। पृ० सं० ८५० मू० ३॥)

श्री सयाजी साहित्यमाळा.

१ तुलनात्मक धर्मविचार अनुवादक राज्य रत्न व्याख्यानवाचस्पति आत्मारामजी इन्स्पेक्टर बड़ौदा मू. १) अंग्रेज़ी तथा यूरोप की भिन्न भिन्न भाषाओं में विविध देशों की भाषा, धर्म्म भावना, संसार घटना, पुराणकथा इत्यादि के अनेक ग्रन्थ तुलनात्मक परीक्षा करने वाले हैं परंतु खेद है की हमारी भाषाओंमें ऐसी तुलनात्मक पुस्तकों का एकदम अभाव ही है। अतः हमारा इस ओर प्रयत्न करना नवीन साहित्य तय्यार करना है तथा यह प्रथम प्रयास ही है। इस तुलानात्मक ढंग पर लिखी गई पुस्तक में यज्ञ, जादु, पितृपूजा, भावी जीवन, द्वंद्ववाद, बौद्धधर्म, एकेश्वरवाद, पर विवेचन किया गया है तथा अनुवादक महोदय ने अपनी भूमिका में विद्वत्तपूर्ण विचार प्रकट किए हैं जिससे कि प्रत्येक मनुष्य को विदेशीय विचारों के साथ साथ अपने धर्म विचार क्या हैं यह सहज मे मालुम हो जाता है। सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य १)

आर्यमित्र "हर्ष की बात है की इस समय हिन्दी साहित्य में भी तुलनात्मक पुस्तकें निकलने लगी हैं। हम अनुवादक के इस प्रयत्न को सर्वथा सराहनीय समझते हैं। इस पुस्तक में यज्ञ, जादु, पितृपूजा, भावी जीवन, द्वंद्ववाद, बौद्धधर्म तथा एकेश्वरवाद पर विवेचन किया गया है। इस पुस्तक से प्रत्येक मनुष्य को विदेशीय विचारों के साथ २ अपने धर्म विचार भी सहज में ही मालूम हो जाते हैं। पुस्तक सब दृष्टियों से

अच्छी है. जिल्द बंधो हुई है तथा छापाभी अच्छा है इससे पुस्तक की उपादेयता और बढ़ जाती है।

माडर्नरिव्यु " The cause of useful literature in Hindi is being furthered by the Gaekwar of Baroda who has inspired zeal for the uplift of vernacular literature. Both the translation and get up of the book under notice are praiseworthy. This book is a valuable addition to Hindi religious literature. "

माधुरी—"विषय नाम से ही स्पष्ट है। यह कंपेरेटिव रिलीजन पुस्तक का बढ़िया अनुवाद है। इसमें प्रायः संसार के सभी धर्मों के विचारोंकी संक्षिप्त रूप से तुलना की गई है। पुस्तक उपादेय और पढ़ने योग्य है। आशा है इसका भी यथोचित आदर होगा। कागज़ उत्तम चिकना, छपाई सफाई और जिल्द बढ़िया।"

२ " अवतार रहस्य, "—अर्थात् भारतीय तथा यूरोपीय पुराण कथाओं की तुलनात्मक समीक्षा मू० ॥।) यह एक दूसरी गवेषणात्मक अपने ढंग की अनूठी पुस्तक है। अनुवादक श्री शांतिप्रिय आत्मारामजी। इसमें निम्नलिखित विषय हैं। भाषाशास्त्र की उत्पत्ति, आर्य्यकुल और उसका आदि निवासस्थान, कूट प्रश्न और उसका समाधान, युगलक्षण तथा तज्जनित अनुमान, हिन्दू तथा पारसियों के पूर्वजों का सम्मिश्रण वस्तु विभाग, यूरोप की पूर्वकालीन तथा वेदकालीन कथायें, विश्वोत्पत्ति धौष्पितर, वरुण, इन्द्र, अग्नि, सूर्य, सोम, उषस, यम, वायु, अश्विनौ, हिन्दुओं के पुराण, पुराणोक्त विश्वोत्पत्ति, देवताओं की उत्पत्ति, ब्रह्मा, वरुण इन्द्र, अग्नि, सूर्य, विष्णु, मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन,

परशुराम, राम रामायण तथा इलियड, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि, चन्द्र, वर्षा, यम, वायु, अग्नि, प्रकीर्ण उपसंहार विषयान्वित, सुंदर छपी पुस्तक का मूल्य ॥≈) बिना जिल्द ॥)

Modern Review " The work is interesting and the introduction by the translator illuminating.

३ " समुद्रगुप्त "–भारतीय सम्राट् समुद्रगुप्त के इतिहास का वर्णन मू ॥≈) अनुवादक श्री रविशंकर छाया बी. ए. एस. टी. सी. डी.

माधुरी— ' कागज, चिकना और छपाई उत्तम । इस पुस्तक का विषय ऐतिहासिक है । इसमें आर्यों के प्राचीन देश भारत के प्राचीन इतिहास के साधन, प्रारम्भ के वंश आदि विषयों का वर्णन करके गुप्तवंश के अन्तर्गत महाराज समुद्रगुप्त से सम्बन्ध रखनेवाली प्रायः सभी बातों का समावेश बड़ी योग्यता से किया गया है । तीन चित्र भी हैं । जिनसे पुस्तक की उपादेयता बढ़ गई है । यह सयाजी साहित्यमाला की हिन्दी में पांचवी पुस्तक है । हर्ष की बात है यह पुस्तकमाला ऐसी हूं उत्तमोत्तम पुस्तकें निकाल कर हिन्दी का बड़ा उपकार कर रहा है । हिन्दीप्रेमियों और पुस्तकालयों को इस उपादेय पुस्तक की एक एक प्रति अवश्य मंगाकर रखनी चाहिये.

Modern Review.

" This is another publication of the above mentioned series and contains the description of the gupta emperor besides a detailed historical perspective. The several appendices which are reproductions and illustrations of inscriptions, coins & pillars etc are useful in forming an idea of the times described.

४ नीतिविवेचन अनुवादक श्री कांतिलाल एम. ए. हैं। इसमें छः प्रकरण हैं, जो नीतिशास्त्र की भिन्न भिन्न पद्धतियाँ तथा सामान्य स्वरूप, पाश्चात्य नीतिशास्त्र, हिन्दू आर्य, चार्वाक, जैन, बौद्ध नीति, नैतिक जीवन, आज्ञापालन, दयालुता उद्यम, साहस इत्यादि महत्वपूर्ण विषयों से पूर्ण ३०० पृष्ठ की पुस्तक है मू० १।) तथा १।॥)

सरस्वती—"श्रीमान् महाराजा गायकवाड़ ने साहित्य-सेवा के निमित्त दो लाख रुपये प्रदान किये हैं। उसके ब्याज से 'श्री सयाजी साहित्यमाला' के द्वारा अनेक विषयों के ग्रन्थ प्रकाशित किये जाते हैं। खुशी की बात है इस ग्रन्थमाला में हिन्दी की भी उत्तमोत्तम पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं इस पुस्तक में हमारे शास्त्रों द्वारा बताये गये कर्म तथा नीति के साथ पाश्चात्य देशों के नियमों का तुलनात्मक विचार किया गया है। इसमें आर्यनीति, जैननीति, पाश्चात्यनीति नैतिकजीवन, आदि विषयों पर अच्छी विवेचना की गई है। पुस्तक अच्छे ढंग से लिखी गई है। अच्छी विवेचना की गई है। छपाई और सफाई उत्तम है"

श्री सयाजी बाल ज्ञानमाळा

५ "कोष की कथा"—ले० श्री शान्तिप्रिय आत्मारामजी, सचित्र वैज्ञानिक पुस्तक कोष cell का पूर्ण परिचय देती है। जीवकोष क्या क्या कार्य शुरु से अन्ततक करता है, यह इस पुस्तक में भली प्रकार दर्शाया" है। आजतक हिन्दी भाषामें इस प्रकारकी कोई भी पुस्तक नथी यह पहिली ही पुस्तक है। पुस्तक बड़ी उपयोगी है मूल्य ॥) माडर्न रिव्यु की सम्मति इस प्रकार है

Kosh ki Katha "The munificence and far sightedness of maharaja Sayajirao Gaekwar of Baroda have instituted a very most useful and fascinating work in the shape of a seriesof juvenile

booklets called the Sayaji Bal gnana Mala. The booklet under notice is the sotry of the cell told most plainly. The illustrations will add to the utility of the work, and the glossary of technical terms is most helpful. The get up gives credit to the publishers."

श्रीयुत पुरोहित हरिनारायणजी शर्म्मा बी. ए. विद्याभूषण जयपुर कोषकी कथा की पढ़ाई से मेरा विद्याकोष बढ़ा है मेरा खयाल है की इस सम्बन्ध में पुस्तक रूपेण कोई चेष्टा नहीं हुई ।

आर्यमित्र "कोषकी कथा यह एक सुयोग्य लेखक की पुस्तक का अनुवाद है इस पुस्तक में यह दर्शाने का यत्न किया गया है की cell और कोष एक ही बात है प्राणिशास्त्र के विषय पर हिन्दी भाषा में ऐसी सरल पुस्तक निकलना अच्छी बात है यह पुस्तक प्राणिशास्त्र के छात्रों के लिये बड़ी सहायक होगी यूरोप के विद्वानों के विचारों का समावेश भी इसमें किया गया है । छपाई तथा कागज अच्छा है । मु० ॥)

ज्योति-" कोषकी कथा " प्राणविद्या में सेल cell शब्द कई बार प्रयोग होता है । आजकल के वैज्ञानिकों के मत में किसी भी जीवित वस्तु में उसका सब से सूक्ष्म भाग सेल अर्थात कोष है । इन्हीं अगनित कोषों के मेल से जीव जन्तु वनस्पति इत्यादि बनते हैं । इस पुस्तक में इसी कोषकी कथा दी गई है । कोष क्या है यह किस प्रकार जीवित शरीर में अपनी क्रिया करता है और किस प्रकार शरीर की भिन्न अवस्थाओं पर अपना प्रभाव डालता है और उनसे प्रभावित होता है यह बातें मनोरंजक भाषा में वर्णन की गई हैं, पुस्तक का विषय वैज्ञानिक है । यह हिन्दी भाषा के सौभाग्य की बात है कि अब इस में विज्ञान

सम्बन्धी पुस्तकों का निकलना भी आरंभ हो गया है। इस ओर ध्यान देने के लिए प्रकाशक हमारे धन्यवाद के पात्र हैं। "

सौरभ–" कोषों के क्रमिक विकास का नाम ही संसार है, इस पुस्तक में इस कोष की कथा का ही सरल भाषा में मनोरंजक वर्णन है। पुस्तक उपादेय है, एकबार अवश्य पढ़ें। "

६ श्री हर्ष–अनुवादक श्री आनन्दप्रियजी बी. ए. एल एल बी. इसमें निम्नलिखित विषय हैं। हर्ष के पूर्वज, पुष्पभूति प्रभाकर वर्धन, मौखरिवंश हर्षका जन्मकाल, प्रभाकर की मृत्यु, ग्रहवर्मा, राज्य वर्धन की मृत्यु हर्ष की दिग्विजय निमित्त कूंच, राज्यश्री की खोज हर्ष का राज्याभिषेक उन के दया धर्म के कार्य तथा मृत्यू हर्ष के समय के राजे आदि। यह पुस्तकें बड़ोदा और इन्दौर तथा मध्य प्रदेश और बरार के विद्याधिकारियों के द्वारा पाठशालाओं में इनाम तथा पुस्तकालयों के लिए मंजूर की गई हैं।

(Modern Review).

Sri Harsha This is another publication of the above named series. The history of the Emperor Harshavardhana is presented in this nicely got up little book. The autograph signature of the emperor and the two appendices which give Madhuvana and the Bansakhera inscriptions have enhanced the charm and utility of the work. Thus the book will be found useful not only by a little advanced students but also the general public. "

आर्यमित्र-" श्री हर्ष इस छोटी सी पुस्तक के पढ़ने से मालूम होजाता है कि भारत के प्राचीन इतिहास की सामग्री किस प्रकार संस्कृत साहित्य में भरी पड़ी है। इस पुस्तक के पढ़ने से बहुत सी ऐतिहासिक बातें मालूम होजाती है। पुस्तकबालकों के लिए लिखी गई है पर इस से सभी लाभ उठा सकते हैं। कागज़ तथा छपाई अच्छी है। मू० ।।)"

श्रीयुत पुरोहित हरिनारायणजी शर्म्मा बी. ए. विद्याभूषण जयपुर से लिखते हैं:-" श्री हर्ष को पढ़कर अतीव हर्ष हुआ। यह पुरातत्व में बड़े काम की पोथी हुई है। इस प्रकार की किताबों से हमारी जरूरतें पूरी होंगी।"

ज्योति-" हर्ष वर्धन भारत का अन्तिम आर्यसम्राट हुआ है, आदित्य जीवन, प्रखर प्रताप तथा समृद्धिशाली राज्य का वर्णन कविराज ने अपने श्रीहर्ष नामक काव्य में बड़ी ओजस्विनी और मधुर भाषा में किया है यह पुस्तक बाण की संस्कृत पुस्तक और चीनी यात्री हुयेनत्सग के विवरण तथा इसी प्रकार इधर उधर फैली हुई अन्य सामग्री के आधार पर लिखी गई है। पुस्तक के पाठ से एक बार हर्ष के समय का चित्र आंखों के सामने खिंच आता है। पुस्तक का विषय ऐतिहासिक है और अनुसंधान पूर्वक लिखी गई है। इसके पाठ से हिन्दी भाषा जानने वालों को उस समय के इतिहासका बड़ा अच्छा ज्ञान हो सकता है।"

हिन्दी केसरी-" इस पुस्तक में महाराज और महाकवि श्री हर्ष का जीवन वृत्तान्त है और ऐतिहासिक दृष्टि से लिखे जाने के कारण पुस्तक का महत्व बहुत बढगया है। इससे उस समय के इतिहास पर अच्छा प्रकाश पड़ता है और लेखक के अनुकरणीय अध्ययन का पता चलता है इतिहास प्रेमियों के लिये पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। विषयक्रम व्यवस्थित और लेख शैली उत्कृष्ट है हम लेखक के इस प्रयास का हृदय से सराहना करते हैं"

माधुरी–" श्री हर्ष कागज उत्तम छपाई सफाई मनोहर, बालकों के लिये लिखी श्रीहर्ष चरित पुस्तक और हियुनसांग तथा अन्य ऐतिहासिकों की एतत्संबंधी गवेषणा के आधार पर यह पुस्तक लिखी गई है। इसमें निपुण कवि श्रीहर्ष का वृत्तांत सविस्तर सप्रमाण वर्णित है। पुस्तक बालकों के लिए लिखी जाने पर भी बहुतसी बड़ों के काम की है"

सौरभ–" पुस्तक ऐतिहासिक तत्वों से पूर्ण और सुपाठ्य है इसकी वर्णन शैली उत्तम और सारगर्भित है। इसमें महाराज श्री हर्ष का जीवन वृत्तांत है जो कि प्रत्येक भारतवासी के पढने योग्य है। पुस्तक मुख्यतः बालकों के लिए लिखी गई है परन्तु इससे अनेक युवा और वृद्ध भी लाभ उठा सकते हैं।"